कादम्बिनी

1994 Feb, Arp, May, Jul-Sep

V.V. Giri

Jhajjar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078834

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078834

078834

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी-बड़ी सभी बीमारियों से निबटने के लिए
'स्वयं चिकित्सक पुस्तकें'

● होमियोपैथी द्वारा स्वयं चिकित्सा

यह पुस्तक असंख्य मरीजों का इलाज करने वाले सफल चिकित्सक श्री राजीव शर्मा, जिनके लेख अनगिनत पत्रिकाओं एवं अखबारों में छपते हैं, के विशाल अनुभव का निचोड़ है। इसमें 75 से अधिक रोगों के लक्षण, परहेज व दवा संबंधी संपूर्ण जानकारी चित्रों सहित दी गई है। इसके अतिरिक्त सेक्स एवं नशे से संबंधित भ्रांतियों एवं रोगों को दूर करने की विधियां भी इस पुस्तक में दी गई हैं।

पृ. 256/- • मूल्य: 32/- • डाकखर्च : 6/-

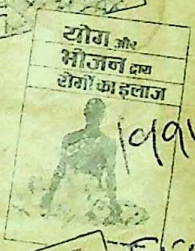

● योग और भोजन द्वारा रोगों का इलाज

सुप्रसिद्ध योगाचार्य श्री सतपाल ग्रोवर के 40 वर्षों के अनुभव के आधार पर लिखित अनमोल पुस्तक। इसमें रोग-निवारण हेतु योगासन, ध्यान एवं शुद्धि क्रियाओं, जैसे-जल नेति, सूत्र नेति आदि का सचित्र वर्णन व प्राकृतिक उपचार, जिनसे सभी रोगों का इलाज किया जा सकता है, दिए गए हैं।

पृ. 160 • मूल्य: 28/- • डाकखर्च: 6/-

● दिल का दौरा: बचाव आपके हाथ में

एक हृदय रोगी द्वारा लिखी गई अत्यंत ही प्रामाणिक एवं प्रैक्टिकल पुस्तक। दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे इस रोग के प्रति सचेत कराते हुए आपके इन प्रश्नों का सहज ही उत्तर देने में सक्षम – दिल का दौरा पड़ने की बीमारी किन कारणों से होती है; इस बीमारी से कैसे बचा जा सकता है; दौरा पड़ने के बाद क्या सावधानियां आवश्यक हैं ताकि दूसरा दौरा न पड़े; खान-पान व रहन-सहन की खराब आदतें कैसे सुधारें? नवीनतम शोध निष्कर्षों की जानकारी।

पृ. 144 • मूल्य: 24/- • डाकखर्च: 6/-

● फल-सब्जी एवं मसालों द्वारा चिकित्सा

घर-घर में उपलब्ध दैनिक प्रयोग के फल-सब्जी एवं मसालों द्वारा विभिन्न रोगों के निवारण के सफल उपाय के साथ-साथ दूध, घी, आदि पदार्थों के लाभकारी प्रयोगों की अचूक विधियां भी इसमें हैं।

पृ. 120 • मूल्य: 20/- • डाकखर्च: 5/-

अपने निकट के रेलवे स्टेशन बस-अड्डों पर स्थित बुक-स्टालों से खरीदें। न मिलने पर वी. पी. पी. द्वारा मंगाने हेतु इस पते पर लिखें:

पुस्तक महल 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002 फोन: 3268292-93, 3279900

शाखाएं:. ■ 22/2 मिशन रोड, बंगलोर-27 फोन: 2234025. ■ 23-25, जाओबा वाडी, ठाकुरद्वार, बम्बई-2 फोन: 2010941, 2053387. ■ खेमका हाउस, अशोक राजपथ, पटना-4 फोन: 653644

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी हाँ, ऐसा कुछ हो रहा है

दुश्चिंताओं और हताशाओं
की घेराबंदी तोड़कर, वे आ रहे हैं
एक एक कर
दुस्समय की परतों को चीरते हुए

पचास लाख आ चुके हैं
दस करोड़ लोगों को साक्षर बनाने के लिए
हमें एक करोड़ वालंटियर चाहिए

हमें आपकी ज़रूरत है

दो सौ से ऊपर ज़िले अब तक
इस जंग में शामिल हो चुके हैं
तीन करोड़ से ज्यादा लोग
अपनी तक़दीर बदलने के लिए
एक नया ककहरा, एक
नई शब्दावली सीख रहे हैं

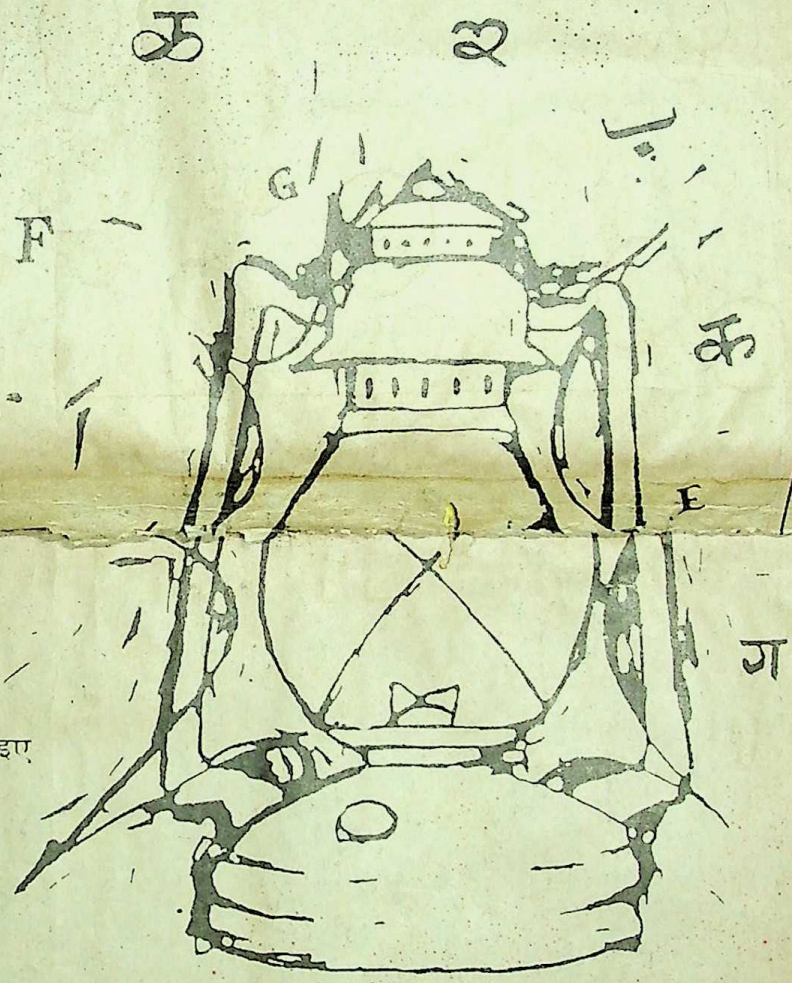

यदि आपके ज़िले में संपूर्ण साक्षरता
अभियान चल रहा है तो
वालंटियर बन कर आंदोलन में जुड़ जाइए

यदि नहीं, तो
आपस में बात कर, समझा कर
एक दूसरे की हौसला-अफ़ज़ाई कर
ज़िला प्रशासन की साझेदारी से
अपने ज़िले में आंदोलन शुरू करने की
कोशिश करें

इस पीढ़ी को भारत को पूर्ण साक्षर बनाने का
ऐतिहासिक मौक़ा मिला है

आइए हमारे साथ, आज ही

मानव जाति के इतिहास में अब तक की सबसे बड़ी
सामरिक या नागरिक लामबंदी

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन
आप हम सभी

davp 93/492

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. ध्यातव्य—क. पालन करने योग्य, ख. आवश्यक, ग. ध्यान देने योग्य, घ. दौड़ने लायक ।

२. ध्वजारोपण—क. ध्वजा की रक्षा करना, ख. झंडा फहराना, ग. झंडा गाड़ना, घ. आधिपत्य जताना ।

३. संरोपण—क. आरोप लगाना, ख. मलना, ग. क्रोध करना, घ. पेड़ लगाना ।

४. त्रासकर—क. भय देनेवाला, ख. अत्याचारी, ग. दमनकारी, घ. रक्षा न करनेवाला ।

५. अत्युक्ति—क. बहुत ज्यादा, ख. बहुत दूर का, ग. बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना, घ. चरमसीमा ।

६. अत्यारूढ़— क. तेज सवारी पर, ख. ऊंचाई पर, ग. उच्च-पदस्थ, घ. अत्यधिक रूढ़िवादी ।

७. तुच्छातितुच्छ— क. अत्यंत विनम्र, ख. अत्यंत गया-गुजरा, ग. बहुत छोटे आकार का, घ. उपेक्षित ।

८. ध्रुवता— क. तेजी, ख. चमकीलापन, ग. शक्ति, घ. अचलता ।

९. त्रिगुणातीत— क. तीन प्रकार के रोगों से रहित, ख. तीनों गुणों से परे, ग. अवगुणों से रहित, घ. जिसमें कोई गुण न हो ।

१०. आशक्त— क. कमजोर, ख. शक्ति प्राप्त होने तक, ग. अक्षम, घ. शक्तिशाली ।

११. त्रिकाल— क. तीन बार, ख. तीनों काल, ग. तीनों समय, घ स्थायी ।

१२. आव्रजन— क. एक स्थान से दूसरे को जाना, ख. व्यर्थ भ्रमण, ग. घूमने पर रोक, घ. आजीवन भ्रमण ।

१३. अत्याय— क. अतिक्रमण, ख. अधिक आमदनी, ग. आगे बढ़ जाना, घ. सुस्ती ।

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेंदु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

उत्तर

१. ग. ध्यान देने योग्य । राष्ट्रीय एकता सर्वोपरि रहे— यह बात प्रत्येक देशवासी के लिए **ध्यातव्य** है । (व्युत्. -ध्यै)

२. ग. झंडा गाड़ना । किसी देश की भूमि पर विदेशी शक्ति का **ध्वजारोपण** नितांत असह्य होता है । (ध्वजा +आरोपण)

३. घ. पेड़ लगाना । वातावरण का प्रदूषण रोकने के लिए वृक्षों का **संरोपण** आवश्यक है । (विशेषण-**संरोपित**)

४. क. भय देनेवाला । शत्रु के **त्रासकर** कृत्यों का डटकर मुकाबला करना चाहिए । (त्रास +कर)

५. ग. बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना । उसके कथन में सरासर **अत्युक्ति** है । (अति+उक्ति)

६. ग. उच्च-पदस्थ । किसी व्यक्ति के **अत्यारूढ़** होने पर उसका उत्तरदायित्व भी बढ़ जाता है । (अति+आरूढ़)

७. ख. अत्यंत गया-गुजरा । किसी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुच्छातितुच्छ समझना भारी भूल है।
(तुच्छ+अति+तुच्छ)

८. घ. अचलता, स्थिरता, निश्चय। उसके विचारों में **ध्रुवता** प्रतीत होती है। (व्युत्. -ध्रु)

९. ख. तीनों गुणों (सत्त्व, रज, तम) से परे (परमात्मा)। संसार-चक्र **त्रिगुणातीत** की ही लीला है। (त्रिगुण+अतीत)

१०. घ. शक्तिशाली, सक्षम। राष्ट्र के **आशक्त** होने से कोई उसका बाल बांका नहीं कर सकता। (आ+शक्त)

११. ख. तीनों काल (भूत, वर्तमान, भविष्य)। मानव को **त्रिकाल** का ज्ञान नहीं होता। ग. तीनों समय (प्रातः, मध्याह्न, सायं)। **त्रिकाल** के अनुसार ही दिनचर्या बनानी चाहिए। (**त्रिकालज्ञ**=सर्वज्ञ)

१२. क. एक स्थान से दूसरे को जाना, भ्रमण। उसके लिए **आव्रजन** लाभकारी सिद्ध हुआ। (आ+व्रजन)

१३. क. अतिक्रमण, सीमोल्लंघन। किसी देश को किसी अन्य देश का **अत्याय** नहीं करना चाहिएं। ख. अधिक आमदनी (लाभ)। उसे व्यापार में **अत्याय** होने का हर्ष है। (अति+आय)

पारिभाषिक शब्द

Headquarters	=	**मुख्यालय**
Sub-head	=	**उप-शीर्ष**
In-charge	=	**प्रभारी/भारसाधक**
Part-time	=	**अंशकालिक**
Whole-time	=	**पूर्णकालिक**
Watersupply	=	**जलपूर्ति**
Hydraulic	=	**चलजलीय**
Adverse	=	**प्रतिकूल**
Reverse	=	**उत्क्रम/प्रतिलोम/विपर्यास**

ज्ञान-गंगा

सम्यक् स्वापो वपुषः परमारोग्याय।

(काव्यमीमांसा १०)

अच्छी निद्रा शरीर के आरोग्य का उत्तम साधन है।

न हि पापं कतं कम्मं, सज्जु खीरं व मुच्चति।
डहन्तं बालमत्वेति, भस्माच्छन्नो व पावको।

(धम्मपद ५/१२)

पाप कर्म ताजा दूध की तरह तुरंत ही विकार नहीं लाता, वह तो राख से ढकी अग्नि की तरह धीरे-धीरे जलते हुए मूढ़ मनुष्य का पीछा करता रहता है।

चिरनिरूपणीयो हि व्यक्तिस्वभावः।

(पुरुष परीक्षा ४१)

व्यक्ति का स्वभाव बहुत दिनों बाद मालूम होता है।

पैशुन्याद् भिद्यते स्नेहः

(पंचतंत्र १/१०२)

चुगली करने से स्नेह टूट जाता है।

अथवाऽभिनिविष्टबुद्धिषु व्रजाति व्यर्थकतां सुभाषितम्।

(शिशुपाल वध)

जो लोग आग्रही होते हैं, उनसे कही हुई अच्छी बात भी व्यर्थ हो जाती है।

सुखमध्ये स्थितं दुःखं दुःखमध्ये स्थितं सुखम्।

(अध्यात्म रामायण २/६/१३)

सुख में भी दुःख रहता है और दुःख में भी सुख रहता है।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

'काल चिंतन' समय की रेखाओं को अंकित कर मन, चेतना, आत्मा को विचार स्फूर्लिंग द्वारा नव जागरण का संदेश 'कादम्बिनी' के माध्यम से देता आ रहा है । 'मेरा देश' पढ़कर जोश साहब का यह कथन याद हो आया—

पहले जिस चीज को देखा वो फजा तेरी थी
पहले जो कान में आयी वो सदा तेरी थी
पालना जिसने हिलाया वो हवा तेरी थी
जिसने गहवारे में चूमा वो सवा तेरी थी
अव्वली रक्स हुआ मस्त घटा में तेरी
भीगी हैं अपनी मसें आबो हवा में तेरी

अल्बर्ट श्वाइत्जर से किसी ने पूछा था कि आपके जीवन की मूल प्रेरणा क्या है, तो उन्होंने उत्तर दिया था कि मुझे भारतीय संस्कृति की नींव में एक बुनियादी मूल्य मिला जिसे मैंने मणि की तरह संजोकर मन में रख लिया है वह मूल्य है 'जीवन का सम्मान' । सच में, हमारे देश में शोर है, अंधकार है, अभाव है, सत्ता की होड़ है पर इस सबके बीच में 'जीवन को गम का [illegible] जीवन से पलायन की प्रवृत्ति नहीं पनपती, असफलता यहां मनुष्य को निराश अवश्य करती है पर तोड़ती नहीं है । जीवन के प्रति आस्था और विश्वास भारतीय मानव समाज में आज भी है । 'लहरों से लड़ो उत्तुंग शिखरों से जूझो कहां तक चलोगे किनारे-किनारे' की धारणा को अभी भी यहां का आदमी अपने मन में पालता है । बकौल जोश मलीहाबादी—

'गुलशन की रबिश पे मुस्कराता हुआ चल
बदमस्त घटा है लड़खड़ाता हुआ चल
कल खाक में मिल जाएगा ये जोरे शबाब
'जोश' आज तो बांकपन दिखाता हुआ चल ।

— श्रीकांत कुलश्रेष्ठ,
केंद्रीय विद्यालय कोलीवाड़ा बंबई-३७

सच्ची संपत्ति श्रद्धा

दिसम्बर अंक में 'मनुष्य की सच्ची संपत्ति श्रद्धा' पढ़कर यथार्थतः हृदय श्रद्धा के प्रति श्रद्धावनत हो गया । वस्तुतः किसी तत्त्व अथवा पदार्थ में आस्तिक बुद्धि होने को ही श्रद्धा कहते हैं— **'श्रद्धा-आस्तिक्यबुद्धया'** । वैदिक-ऋचाओं में श्रद्धा को मूर्तिमती देवी का रूप दिया गया है ।

श्रद्धा एक प्रकार की मनोवृत्ति है, जिसमें किसी बड़े अथवा पूज्य व्यक्ति के प्रति एवं वेद शास्त्रों और आप्त पुरुषों के वचनों पर भक्तिपूर्वक विश्वास के साथ उच्च और पूज्य भाव उत्पन्न होता है । यह एक ऐसा मनोभाव है जो हृदय से स्वतः स्फुरित होकर मानव को श्रद्धास्पद के प्रति पूर्ण समर्पित बनाता है । चरण-चिह्नों के अनुगमन की प्रेरणा देता है एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उसके जीवनादर्शों को अपने जीवन में उतारने को उत्प्रेरित करता है ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गेटे के अनुसार—'**केवल निष्ठा ही जीवन को शाश्वत बनाती है ।**'

शारांशतः जहां श्रद्धा है वहीं सत है, अश्रद्धापूर्वक किया गया शुभ कार्य भी असत होता है । अतः सकल सृष्टि के सम्यक उन्मेष हेतु श्रद्धा की तरलता एवं सघनता महत वांछनीय है ।

— कृष्णा कुमारी,
कोटा

दिसम्बर अंक में श्रद्धा संबंधी लेख पढ़ा, जिसमें गोस्वामीजी के महाकाव्य श्री रामचरितमानस का उदाहरण देते हुए लिखा गया है कि '**श्रद्धा विश्वास की जननी है ।**' जबकि प्रदत्त श्लोक स्वयं ही सत्य को पूर्ण रूपेण स्वीकार करता है— '**भवानी शंकरौ बंदे, श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ।**' इसमें जग जननी भवानी एवं जगत्पिता शंकर को श्रद्धा एवं विश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है । 'श्रद्धा विश्वास की जननी है ।' यह वाक्य केवल यह कहता है कि श्रद्धा के बिना विश्वास उत्पन्न नहीं हो सकता । जबकि गोस्वामीजी कहना चाहते हैं कि **श्रद्धा विश्वास की सहधर्मिणी है ।** ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं तथा एक-दूसरे के बिना अस्तित्वहीन ।

— कृष्णकांत 'मधुर',
दिल्ली

निराशा से घिरा १९९३

दिसम्बर अंक में 'निराशा और विभीषिकाओं से घिरा वर्ष १९९३' पढ़ा । यह सच है कि यह वर्ष विपदाओं एवं निराशाओं में बीता । जहां तक प्राकृतिक विपदाओं का सवाल है, उनके आगे हम विवश हैं । इसे ईश्वरीय अभिशाप समझकर समझौता करना पड़ता है किंतु जो दुर्घटनाएं चालकों की मनमानी, लापरवाही तथा जल्दबाजी के कारण घटती हैं और उनका शिकार अबोध शिशु या साधारण आदमी होते हैं इसके लिए जिम्मेदार किसको ठहराया जाएगा ? भाग्य को या व्यक्ति को ?

— कुंकुम गुप्ता,
भोपाल (म.प्र.)

'कादम्बिनी' के प्रत्येक अंक में 'शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए', 'कालचिंतन', 'हंसिकाएं', 'बुद्धिविलास', 'गोष्ठी' एवं देश-विदेश के सामयिक लेख अत्यधिक रुचिकर लगते हैं ।

—शिवनारायण चोकसे
भोपाल

जान पर खेलना

दिसम्बर अंक में 'जान पर खेलना... शीर्षक निबंध में मेवाड़ के नट की सही स्थिति का चित्रांकन किया गया है । सिर्फ मेवाड़ में ही नहीं, भारतवर्ष के हर कोने में नट-जाति की यही हालत है । पहले राजा-महाराजाओं के द्वारा पृष्ठपोषित एवं सम्मानित होने का इन्हें सुअवसर भी प्राप्त हो जाया करता था, परंतु अब तो फुटपाथ पर करतब दिखाने के सिवाय दूसरा कोई विकल्प नहीं है । मुख्यधारा से इनका कोई संबंध नहीं है ।

— मणिशंकर पाठक,
पो. सयाल (जिला–हजारीबाग)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

... फिर भी पूरी सुरक्षा प्रदान करें अपने परिवार को, बीमा संदेश के ज़रिए.

बीमा संदेश के पॉलिसीधारक अन्य पॉलिसियों से कम प्रीमियम अदा करते हैं. फिर भी उनके परिवार की पूरी सुरक्षा सुनिश्चित है.

यदि पॉलिसीधारक का असमय देहांत हो जाए तो उसके परिवार को बीमे की पूरी रकम मिलती है. पॉलिसी परिपक्व होने पर पॉलिसीधारक द्वारा अदा की गयी प्रीमियमों की पूरी राशि (दुर्घटना बीमे के प्रीमियमों को छोड़ कर) उसको लौटा दी जाती है.

बीमा संदेश पॉलिसी की अन्य विशेषताएं.

- अतिरिक्त प्रीमियम अदा करने पर बीमे की मूल राशि के बराबर दुर्घटना बीमे की सुविधा भी उपलब्ध
- बीमे की न्यूनतम राशि रु. 10,000 • पॉलिसी की अवधि 5 से 25 वर्ष तक.

बीमा संदेश

अधिक जानकारी के लिए कृपया अपने जीवन बीमा निगम के एजेंट अथवा नज़दीकी जीवन बीमा निगम शाखा से संपर्क कीजिए.

भारतीय जीवन बीमा निगम

R K SWAMY/BBDO LIC 2732 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी अंक—मार्च अंक कुछ विशिष्ट आकर्षण

- फील्ड मार्शलों को धूल चटानेवाला भारतीय
- प्रेमिकाएं भूलने के लिए होती हैं !
- महिलाओं का खतना : बहस अमरीका में
- प्रेम एक विलक्षण अनुभूति है !
- विमान इतने महंगे क्यों ?

और अप्रैल अंक में प्रस्तुत है सब रंग विशेषांक

स्वास्थ्य विशेषांक

'कादम्बिनी' का जनवरी अंक 'स्वास्थ्य विशेषांक' सचमुच पठनीय ही नहीं, संग्रहणीय भी है । आपने अत्यंत श्रमपूर्वक इस विशेषांक के लिए उपयोगी जानकारी उठायी है । प्रत्येक लेख हमें रोगों को समझने और उनकी चिकित्सा करने में सहायक होता है ।

—विनोद कुमार सिंह, पटना

'स्वास्थ्य विशेषांक' पर हमें इन पाठकों की भी प्रशंसात्मक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं :
श्यामलाल, वर्धा; रामकुमार गुप्ता, नागपुर; शरद मिश्र, कानपुर; डॉ. मधुर गर्ग, लखनऊ; शिवबचन, इलाहाबाद; रामकरण शर्मा, जयपुर; प्रदीप, रोहतक

वानर मूलतः मनुष्य

दिसम्बर अंक में प्रकाशित निबंध 'किष्किंधावासी वानर मूलतः मनुष्य थे' पढ़ा । मैं इससे सहमत हूं कि वानर मनुष्य थे, बंदर नहीं ।

नगर में रहनेवाले नागर कहलाते थे और वन में रहनेवाले वनवासी 'वानर' थे ।

शोधों से पता चला है कि ये वानर आज के छोटा नागपुर (दक्षिण बिहार) और उड़ीसा की सीमा में रहते थे । हनुमान का जन्म गुमला (रांची) के पास 'आंजन' ग्राम में माना जाता है । वहां अंजनी माता की बहुत पुरानी मूर्ति भी है । छोटा नागपुर के वनवासी आज भी हनुमान को हनुमान केट्टा या हनुमान चाचा कहते हैं । इन आदिवासियों में वानरा, कच्छप, नाग आदि गौत्र आज भी प्रचलित हैं । ये आज भी नृत्य में पूंछ लगाते हैं और मुखौटों का प्रयोग करते हैं ।

वानर आदिवासी थे । ये रामभक्त थे और सात्विकता तथा तेजस्विता के कारण भारतीय संस्कृति में इनका विशिष्ट स्थान बना ।

—डॉ. बच्चन पाठक 'सलिल'
जमशेदपुर ।

उपर्युक्त लेख पर हमें इन पाठकों के भी पत्र प्राप्त हुए हैं :
उत्तम कुमार शर्मा, मुरादाबाद; कीर्ति कुमार पांडे, लखनऊ; श्याम नारायण गुप्ता, कानपुर; सुधीर कुमार मिश्र, इटारसी; ब्रजभूषण शुक्ल, नागपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
कादम्बिनी
विशेषांक की तरह पठनीय एवं संग्रहणीय
वर्ष ३४, अंक ४, फरवरी १९९४
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आकल्प कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

संवाददाता / आखिर डुंकेल प्रस्ताव क्या है ?.....२३
अरविंद/ पगड़ी और चूनरी का साथ !.....३२
नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती/ वे दिगम्बर और भयमुक्त हैं ४३
रंजना सक्सेना/ सेना का उपयोग कब करना उचित है.....४४
मांगेराम शर्मा/ मानसिक व पागल मरीजों का इलाज/ ५२
प्रमोद भारतीय/ विश्व का प्रथम उपन्यास.....५६
नवीन पंत/ देश की सत्ता एक लेखक के हाथ.....६२
डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल/ उबटन से बने और पूजित हुए.....६८
डॉ. जगदीप सक्सेना/ रोगों से बचने के लिए कैक्टस.....७८
गुरमीत बेदी/ गुरु गोबिंद सिंह ने पूर्व जन्म में तपस्या की थी.....८४
एम.सी. भंडारी/ केवल योजनाएं न बनाएं.....९०
नारायण शांत/ वह प्रेम के कारण परेशान थी.....९२
कैलाश जैन/ निराले तलाकों की दिलचस्प दास्तानें.....९६
डॉ. डी.एन. तिवारी/ हंस उठी है कचनार की कली.....१०६
डॉ. मोहन परमार/ मध्यप्रदेश का पहला मालवा अखबार.....११२
ब्रह्मदेव/ वसंत की मस्ती और नगाड़ों की धमक.....११६
डॉ. नरेश प्रसाद तिवारी/ चौदह फरवरी : प्रेमोत्सव.....११८
ज्योति खरे/ जहां सब तीर्थों का जल समाहित है.....१२१
अशोक सुमन/ सरकारी बेरुखी से लुप्त हो रही पहाड़िया जनजाति १२८
मीना भंडारी/ ऐसा है अंकोर वाट १३४
डॉ. वि. शंकर/ कीड़े भी खाये जाते हैं.....१४१
सुधीर भटनागर/ अपराधी को कैसे पकड़ा जाए.....१४७
दीनानाथ मल्होत्रा/बिना अच्छी किताब के संस्कार नहीं १६०
डॉ. भोलानाथ चतुर्वेदी/कैरीबियन का नोबेल पुरस्कार विजेता.....१६४

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

मनोरमा जफा/ एड्स के रोगियों को सहानुभूति चाहिए.....३५
डॉ. तारकेश्वर मैतिक/ आंचल का स्वर ६०
पद्मा पल्लि चिदंबरा रेड्डी/ एक आई.एस.आई. कहानी का जन्म दिन.....७४
CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी/ माइक-माहात्म्य ९९
विलास गुप्ते/ सड़कों पर टहलता हुआ अतीत १०२
जसवंत सिंह 'विरदी'/ सोहनी और कच्चा घड़ा १२४
दिव्या/ सरस्वती माई १४२
गोपाल चतुर्वेदी/ अच्छी सेहत के गुर १५२

स्वास्थ्य विशेषांक— २

डॉ. हीरालाल बाछोतिया/ जोड़ों का इलाज १६८
डॉ. शीला गुप्ता/ बाल रोगों से कैसे बचा जाए १७०
डॉ. निर्मला दीक्षित/ वेदना रहित प्रसव १७२
डॉ. सुमित्रा शर्मा/सरदी और जुकाम. १८३
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा/ श्वास रोग का उपचार १७५
डॉ. दीपिका गुणवंत/ मीनोपाज कोई रोग नहीं १८४

कविताएं

पद्माशा/ सरसों एक बसंत है ..... ८३ डॉ. रेखा व्यास/ वंदन/व्यथा ११९

और सभी स्थायी स्तंभ

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गा प्रसाद शुक्ल वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, भगवती प्रसाद डोभाल
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह,प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी, चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त ।

संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८/२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१ ।
मूल्य : ९५ रुपये; द्विवार्षिक : १८५ रुपये;
विदेशों में : पाकिस्तान, भूटान और नेपाल, वायुसेना से ३४० रुपये, समुद्री जहाज से १४० रुपये ।
अन्य सभी देशों के लिए : वायुसेना से ५१० रुपये, समुद्री जहाज से १९० रुपये । शुल्क भेजने
का पता:प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

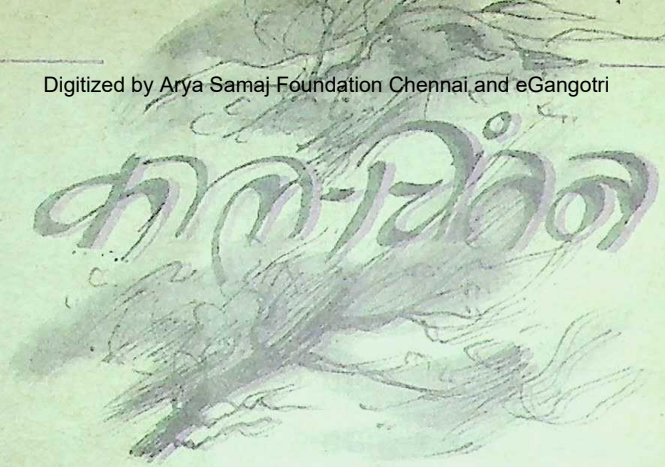

लो वसंत आया
संत, विसंत, कुसंत
सभी पर छाया !

□

— वसंत आ गया, हमने कहा न, आया या नहीं सभी कुछ परख और अर्थ पर होता है ।

— वसंत किसी अवसर विशेष पर आये, किसने कहा है ? मनुष्य की आत्म-परिदृष्टि और हृदय की अवधारणा वसंत की संज्ञा है —समय हो, या न हो !

— वसंत श्रमजीवी है ।

— श्रम फल देगा तो वसंत आ ही जाएगा । इसलिए वसंत का संबंध मौसम से संबद्ध नहीं है ।

— मौसम निकृष्टतम, अनिष्ठावान, अश्रद्धेय और अविश्वासी होता है ।

— अविश्वासी के साथ विश्वास की शाश्वतता का संपर्क कैसा ?

— इसके विपरीत वसंत है; आदिकाल से निरापद श्रृंगार बांटता रहा है । समय ने उसे भी बदल दिया है ।

— वसंत अब न मृगछौना है
वसंत न अब युवतियों का हास-परिहास है
वसंत न अब सरसों के फूलों का सुहाग है,
वसंत न ही टेसुओं का अधजला अंगारा है और न वसंत कोयले-से अधजले अंगारे के बीच सुरक्षा-कवच है ।

— वसंत अब अधजले कोयले को पलभर में खाक कर देगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

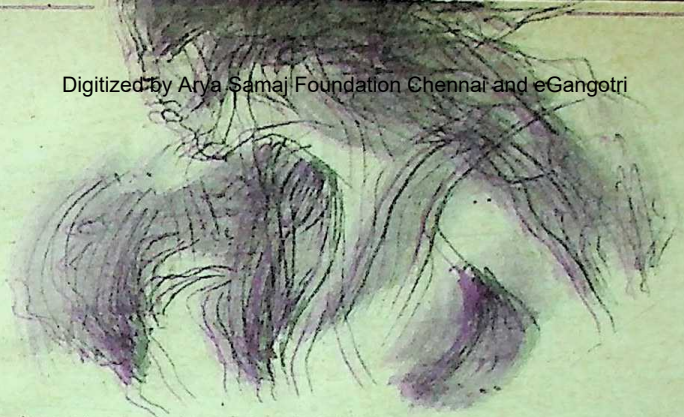

— मौसम अंगड़ाईयां लेता रहेगा, वसंत उसका समीकरण अब नहीं बनेगा ।
— अब क्या वसंत, क्या शरद और क्या पावस ?
— एक नयी सभ्यता ने जन्म ले लिया है, वह सबको निगल रही है ।
— नयी सभ्यता ने आस्था और विश्वास की दीवारें हिला दी हैं ।
— नयी सभ्यता ने अपने नंगे द्वार खोल दिये हैं । कभी एक कवि ने कहा था :

अनढके सोहैं सदा
कवि, नारी, कुच, केश !

सभी निर्वसन होगा तो 'सोहने' का पर्व कहां से आएगा ।
— निर्वसन होती यह सभ्यता मानव-मूल्यों को निर्वसन करने में आवृत्त है ।

□

— मनुष्य निर्वसन हुआ है, यह एक बात है; संस्कार भी निर्वसन हो रहे हैं ।
— संस्कार निर्वसन होंगे तो संस्कृति को जामा पहनाने के लिए कपड़े कहां ढूंढ़ेंगे हम ?
— जामा पहनी संस्कृति, वैसे भी, चलेगी कब तक ?

□

— समय बदल रहा है : अब नागों से डरने की जरूरत नहीं है ।
— बिच्छुओं से बचो, बिच्छुओं से डरो !
— जब 'बौने व्यक्ति' सत्ता-केंद्रित होते हैं और समाज के संचालक बनते हैं तो वह सर्वाधिक भय का समय होता है । बौने व्यक्ति टुटपुंजिए होते हैं —उनके पास न संपूर्ण स्वामित्व है और न वे पटरियों पर सोते हैं ।
— अधकचरे, कच्ची दीवारों में बैठे वे लूट-खसोट करने में लगे हुए हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके हाथ लंबे हैं, तब भी फुटपाथ पर सोनेवाले लुटेरों से कम नहीं हैं ! भीख किसे दोगे ?

— भीख उसी को दोगे न जिसे 'चाहना' है । भिखारियों के पास यदि हजारों रुपयों के बैंक के खाते हैं तो तुम्हारी भीख तथाकथित नरक-द्वार में जाकर सड़ी-गली और बदबूदार गलियों में नहीं फैलेगी तो कहां फैलेगी ?

□

— इस परिदृष्य से ऊपर उठना ही श्रेयस्कर है ।

— मैं ऊपर हूं तो मुक्त हूं ।

— मेरे पास अपरिमित प्यार है ।

— मेरा प्यार हजारों, लाखों तारों-जैसा बंटा नहीं है ।

— नील वातायन में झपकियां लेते तारे सोते हैं या जागते हैं, नींद के लिए या करवटें लेते हैं, नहीं जानता ।

— सोने और जागने की एक-एक प्रक्रिया में विश्वास तो करता हूं पर झपकियां लेता रहूं और न सोऊं और न जागूं —इससे अच्छा होगा, मैं नींद की गोलियां खाकर बेसुध हो जाऊं ।

— कैसे भूल सकता हूं मैं कि हम उस परिवेश में रहते हैं जहां भीड़ है, भीड़ है, बस भीड़, बस भीड़ और कुछ नहीं । भीड़ भेड़तंत्र है । भेड़तंत्र सार्थकता नहीं है ।

— भीड़ से बचना है तो हिमालय की गोद में चले जाइए । चले तो जाएंगे; बचेंगे वहां भी ?

— वर्षों से संजोये 'सोच' के झींगुर वहां भी पीछा नहीं छोड़ेंगे । नितांत एकांत में पीड़ा की वह वेदना होगी जिसके लिए किसी नये रोग का नाम अभी तक नहीं निकला ।

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

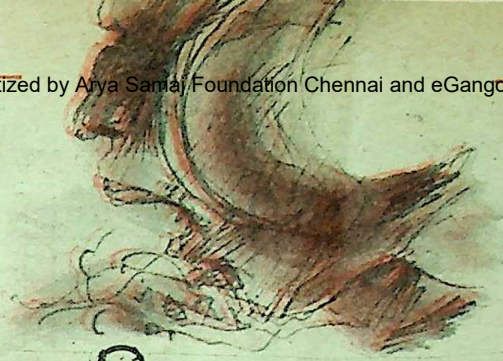

— मेरे पास अपरिमित प्यार है । उस प्यार को संजोकर रखना चाहता हूं, परंतु तारों की तरह नहीं ।

— प्यार को सूर्य की परिधि-रेखा में भी मैं नहीं बांधना चाहूंगा । सूर्य अत्यंत ज्वलनशील है । कब तक उसका ताप सहा जाएगा । वह कभी भी अपनी ज्वलनशीलता का शिकार बना सकता है; सकता नहीं,बनाकर रहेगा ।

— सूर्य वज्र है । वज्रता ही उसका प्रताप है और विवश कर देता है हमें अपने को महाप्रतापी कहने के लिए । सूर्य की परिधि इसलिए हमारे लिए वर्जित है ।

— रह जाता है मात्र चंद्रमा

— चंद्रमा कुछ भी, किसी पर, कैसे भी कुछ लादता नहीं । वह स्वयं घटता-बढ़ता रहता है, कभी महान संपत्तिशाली की तरह अपनी संपूर्णता में धरा को प्रकाशवान करता है, तो कभी दूज का चांद बिंदी-सा खिलता है और प्रेम के सभी आकर्षण सरेआम बिखेरता है ।

— तब भी चंद्रमा स्थायी-भाव नहीं है ।

— चंद्रमा संचारी भाव है ।

— संचारी भाव के बावजूद वह प्रेम का अनंत प्रतीक है । उसमें अपरिमित प्यार की क्षमता है । वह सब कुछ दे देता है, किसी से लेता नहीं । लेता है तो मात्र महासागर से, लेकिन उसकी श्रेष्ठता देखिए वह महासागर के अगाध जल को खींचकर ले तो लेता है, किंतु कुछ पल रखकर उसे ही दे देता है ।

□

— इनसे कुछ सत्य परिभाषाएं बनती हैं :
प्रेम सनातनता और बनी-सधी लकीर का प्रतीक नहीं है ।

— प्यार होता है, नहीं भी होता ।

— प्यार प्रगाढ़ बनकर आत्मा तक समा जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— प्यार टूट[illegible]नों-सा बिखर भी जाता है ।

— प्यार महामहिम है और चंद्रमा की भांति ही गलित और विगलित होता रहता है ।

— इसलिए एक प्यार को मैं कैसे सनातन सत्य मान लूं ।

— शारीरिक संपदाओं के अटूट बंधन के बावजूद प्यार कांच की तरह चटकता है और फूटकर चकनाचूर हो जाता है ।

— वही प्यार लोहे और फौलाद से भी घनत्व में भारी होता है और पारे की तरह सभी को चुनौती देता है । न वह टूटता है और न उसे जोड़ने का प्रयत्न करना होता है ।

□

— वसंत एक प्यार का नाम है ।

— प्यार की तरह वह हमेशा नहीं आता ।

— आज आया है तो समेट लें अंजुली में, समेट लें महलों, खेतों-खलिहानों में, निर्धन की झोपड़ी में, तारकोल और सीमेंट की सड़क से लेकर पगडंडी तक समेट लें हम उसे :

आया है वसंत खंजन-सा
आया है वसंत सरसों के
खेतों-सा ; जिनके ऊपर से
जब सरसराती हवा तैरती है
तो जवानी की उमंग में वह
तरंग बनकर भर जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्मते बंदगी लुट चुकी है बहुत

मेरे घर अकसर एक फोन आता है और वे पूछते हैं, "मेरे बचपन के बाल सखा हैं।" इस तरह की शुद्ध हिंदी से कोई भी आदमी चक्कर खा सकता है, लेकिन मुझे सचमुच बेहद प्रसन्नता होती है, क्योंकि यह फोन है श्री के. सी. सुदर्शन का। के. सी. यानि कुप्पलि सीतारमैया सुदर्शन। इन्हें लेकिन सुदर्शन नाम से ही जाना जाता है। और आजकल वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकारीवाह हैं। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण पद है और सुदर्शन के दर्शनों के लिए उनके कार्यकर्ता भी तरसते हैं।

दरअसल कहानी दूसरी है। सुदर्शन मेरे सहपाठी हैं और मंडला के जगन्नाथ हाईस्कूल में मैट्रिक तक एक ही बेंच पर बैठकर हमने शिक्षा पायी। उसके बाद उन्होंने इंजीनियरिंग का कोर्स ले लिया और मैं आर्ट्स कॉलेज में चला गया। सुदर्शन ने इंजीनियरिंग में बी.ई. की उपाधि फर्स्ट क्लास फर्स्ट दरजे में प्राप्त की लेकिन नौकरी करने की अपेक्षा उनकी सेवा भावना इतनी प्रबल हुई कि बचपन से शाखा में जानेवाले सुदर्शन ने पूरा जीवन वहीं समर्पित कर दिया। सुदर्शन दक्षिण भारत से कब, कैसे आये, मैं नहीं जानता। हां, यह जानता हूं, वे आज भी कुंवारे हैं और संघ परिवार के शीर्षस्थ व्यक्तियों में से हैं। सुदर्शन हिंदुत्व विचारधारा की हार को मानने के लिए कतई तैयार नहीं हैं। उनका कहना है कि ५ प्रदेशों में १० करोड़ वोट पड़े हैं, उसमें भाजपा को साढ़े तीन करोड़ वोट मिले हैं जबकि कांग्रेस (आई) को ढाई करोड़ वोट ही मिल पाये। उनका मानना है कि हिंदू समाज में जागृति आयी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिंदुत्व की भावना को उभारकर वोट पाने का हिमायती नहीं है।

जो हो, अपने बचपन के दोस्त जब कभी ऊंची जगह पहुंचते हैं, तो एहसास होता है कि हम भी वहां पहुंच गये। मेरे एक और मित्र थे लक्ष्मी सिहारे। वे भी मेरे साथ पढ़े थे और राष्ट्रीय संग्रहालय में महानिदेशक के पद पर थे। कुछ समय पूर्व अचानक उनका देहांत हो गया और जब मैं उनके घर गया तो उनके वे सारे रिश्तेदार मुझसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिपटकर दुःख प्रकट करते रहे, जिन्होंने हमें बचपन में गिल्ली-डंडा या लुका-छिपी के खेल खेलते देखा है ।

राज्यसभा के चुनावों के बाद

नरसिंहरावजी ने बहुत कुशलतापूर्वक अपनी स्थिति मजबूत कर ली है । इस समय वे एक मजबूत प्रधानमंत्री हैं । लेकिन राज्यसभा के चुनाव के बाद कांग्रेस की स्थिति में अंतर आएगा । निश्चित ही कांग्रेसी सदस्यों की संख्या कम होगी और दूसरे दलों की संख्या बढ़ेगी, तब यह 'बैलेंस' डगमगाएगा । संसद का बजट अधिवेशन उस समय चलता हो तो निश्चित ही संसद में शांति तो रहेगी नहीं, डुंकेल प्रस्तावों के बाद वैसे भी विरोधी दलों के भीतर की गरमी बढ़ी है । देखना यह है कि बजट सत्र में क्या समां बंधता है । जो हो कम-से-कम उत्तर प्रदेश की तरह नहीं होगा, जहां जूतम-जात, मारपीट तथा खून-खराबा पहले ही दिन शुरू हो गया था ।

अब भी आप शराब पिएंगे

किस्सा दमानिया एयरवेज का । ७३७ बोइंग कलकत्ता से बंबई जा रहा था । रात के ८ बजे थे । यह कंपनी अपने जहाजों में मुफ़ में शराब पिलाती है । मुफ़ में जब शराब मिले तो फिर क्या कहने ! एक यात्री जरूरत से ज्यादा शराब पीकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा, "मैं फिल्म प्रोड्यूसर हूं, एक-एक को देख लूंगा ।" चालक दल ने उन्हें शांत करने की कोशिश की, लेकिन वे ठहरे फिल्म प्रोड्यूसर । उन्हें अपनी किसी फिल्म की याद आ गयी होगी । तब यह हुआ कि एक यात्री ने खड़े होकर एक तगड़ा घूसा उन्हें जड़ दिया । घूसा पड़ा तो प्रोड्यूसर महोदय ने उलटी कर दी और लड़खड़ाकर गिर पड़े । साढ़े दस बजे रात जब जहाज बंबई पहुंचा तो सुरक्षा कर्मियों को उन्हें उठाकर बाहर करना पड़ा । यह संभवतः पहली घटना है, अभी आगे तो और भी घटनाएं होंगी क्योंकि हमारी सरकार इस देश की गरीबी को ताक में रखकर अमरीका बनाने में लगी है । सात-आठ प्राइवेट एयरलाइंस के विमान धड़ल्ले से हिंदुस्तान के आसमान में घूम रहे हैं । होड़ लगी है कि कौन-सी एयर लाइंस यात्रियों को कितनी अधिक सुविधा दे सकती है । सहारा एयर लाइंस तो बाकायदे विज्ञापन कर रही है कि हवाई जहाज के किराये में पांच सौ रुपये और तीन सौ रुपये की छूट दी जाएगी ।

इंडियन एयर लाइंस और एयर इंडिया की हालत तो वैसे ही खस्ता है । नयी कंपनियों में स्मार्ट एयर होस्टेस हैं और उनका व्यवहार अत्यंत विनम्र है । प्रायः हर एयर लाइन कुछ उपहार भी देती है । अब अगले साल पता चलेगा कि सरकारी विमान सेवाओं में कितना भारी घाटा हुआ है और सरकार की आय किस हद तक गिरी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखें फिर सरकारी मंत्री क्या सफाई देते हैं ।

शेषन ने एक और छक्का छोड़ा

मुख्य चुनाव आयुक्त टी. एन. शेषन के क्या कहने । पिछले अंक में भी मैंने उनके बारे में लिखा था । अब शेषन ने न जाने कितने मंत्रियों और राजनीतिज्ञों की नींद हराम कर रखी है । उनका आदेश कि चुनाव कोई भी व्यक्ति वहीं से लड़ सकता है, जहां उसका घर-बार हो । और इस समय पंद्रह-बीस मंत्री ऐसे हैं, जो दूसरे राज्यों से जाकर चुनाव लड़ते हैं । यह तो वैसे ही हुआ कि जैसे सांप अपना बिल कभी नहीं बनाता । वह बने बनाये बिलों पर कब्जा करता है । देखें, शेषन की इस तेज-तर्रार आज्ञा का क्या असर होता है ।

शेषन ने एक और शगूफा छोड़ा है । वे कहते हैं, आई. ए. एस. का मतलब है आई. एम. सॉरी सर्विस और वी. आई. पी. का मतलब है वेला इल्लाद प्यल जो तमिल का आम शब्द है, और जिसका अर्थ होता है एक बेकार लावारिस । अब तो यह सोचना पड़ेगा कि अपने को वी. आई. पी. कहा भी जाए या नहीं । एक शेर याद आ रहा है :

अस्मते बंदगी लुट चुकी है बहुत, और इसको न बे-आबरू कीजिए ।

भजनलाल का भी जवाब नहीं

हरियाणा की सीमा दिल्ली से इतनी मिलती है कि एक समय वह भी आता है जब एक पैर दिल्ली में होता है दूसरा हरियाणा में । हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल ने इन दिनों दिल्लीवालों को खासा धमकाकर रखा है । झगड़ा है सतलुज-यमुना लिंक नहर का । भजनलाल ने दिल्ली को पानी बंद करने की धमकी ही नहीं दी बल्कि कुछ सीमा तक करके भी दिखा दिया है । उनका कहना है कि हरियाणा के किसानों का पानी काटकर हम कब तक शहरी बाग़ों को देते रहेंगे । सही बात तो यह है कि रोज लगभग दस लाख लोग हरियाणा से दिल्ली आते-जाते हैं । केंद्रीय सरकार को भजनलाल से मिलकर इस मामले को तुरंत निपटाना चाहिए ।

मैं भजनलाल की भूमिका को लगातार देखता रहा हूं । वे चाणक्य से कम नहीं । फरीदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में कांग्रेस असंतुष्टों की कैसे मिट्टी पलीद हुई, यह बात छिपी नहीं है । भजनलाल ने एक और ऐतिहासिक काम किया । पहले तो रामलखन सिंह यादव को अपने साथियों सहित कांग्रेस में लाकर गिरती हुई सरकार को बचा लिया फिर उनके ही प्रयत्नों से अजीत सिंह का खेमा कांग्रेस में आया और केंद्र की अल्पमत सरकार बहुमत में बदल गयी । दिनेश सिंह को राज्यसभा में हरियाणा से लाने का श्रेय भजनलाल को है । हरियाणा पर्यटन के लिए स्वर्ग है । अब तो उद्योगों का केंद्र होता जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रहा है । गुड़गांव के पास जापान की कई कंपनियां उद्योग लगा रही हैं और एक बड़ा उद्योग नगर विकसित हो रहा है । जापानियों को हरियाणा ही क्यों पसंद आया यह बात अपने आप में महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमारे देश में कई बड़े-बड़े राज्य हैं और उनमें सुविधाओं की कमी नहीं है ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमाचार्य ब्रह्मलीन हुए

परमाचार्य श्री चंद्रशेखरेन्द्र सरस्वती के ब्रह्मलीन होने से मुझे बहुत सदमा पहुंचा है । साधारणतः ऐसा न होता लेकिन मुझे वास्तव में दुःख इसलिए हुआ कि तीन बार परमाचार्य के दर्शन करने का मुझे सौभाग्य मिला । इनमें दो बार मैं डॉ. शंकरदयाल शर्मा के साथ गया था, जब डॉक्टर साहब उपराष्ट्रपति थे । डॉक्टर शंकरदयाल शर्मा परम सात्विक और वैदिक परंपरा के अनुयायी हैं । परमाचार्य से मिलने हम सिल्क की धोती पहनकर ही गये थे और स्वामी जयेन्द्र सरस्वती के प्रयत्नों से बहुत देर तक परमाचार्य के पास बैठकर उनके आशीर्वाद हमने लिये थे । दूसरी बार तो परमाचार्य अर्धचेतन अवस्था में थे, इसलिए हमें उसी दिन तीन बार जाना पड़ा । तीसरी बार हाथ उठाकर उन्होंने आशीर्वाद दिया । परमाचार्य देवतुल्य थे और जब मैं मद्रास शहर में अपने कई मित्रों से मिला तो सबको इस बात की जानकारी मिल चुकी थी कि मुझे परमाचार्यजी ने दर्शन दिये हैं । एक बार तो साल के पहले दिन ही मैं उनसे मिला था और यह मद्रास शहर में चर्चा का विषय था । क्योंकि मद्रास में रहनेवाले उनके भक्तों को भी उतनी सहजता से दर्शन नहीं मिलते । मैं—इस समय वेदना में हूं और प्रार्थना करता हूं कि उनके आशीर्वाद सभी को सद्मार्ग दिखाते रहें । मैं प्रसन्न भी हूं कि उनके उत्तराधिकारी श्री जयेन्द्र सरस्वती अत्यंत योग्य व्यक्ति हैं और या तो शुद्ध हिंदी में बोलते हैं या तमिल में । अंगरेजी जानते हुए भी यथासंभव वे उसका बहिष्कार करते हैं । कांची कामकोटि का यह आश्रम निश्चय ही अपनी यह पवित्रता बनाये रखेगा ।

—राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डुंकेल प्रस्ताव में अंतर्निहित नयी व्यवस्था मुख्य रूप से मुक्त बाजार पर आधारित है । मुक्त बाजार के माहौल में वही देश आगे बढ़ सकते हैं जो कुशलता, कार्य क्षमता और उत्कृष्टता पर सर्वाधिक जोर देते हैं ।

- *भारत ११७ देशों की मंडी का सदस्य बना*
- *एकतरफा व्यापार प्रतिबंधों की समाप्ति ।*

आखिर डुंकेल प्रस्ताव क्या है ?

(हमारे खोजी संवाददाता द्वारा)

विश्व के ११६ अन्य राष्ट्रों की तरह भारत ने भी १५ दिसंबर को जिनेवा में डुंकेल प्रस्तावों के मसौदे का अनुमोदन कर दिया । समझौते पर आगामी अप्रैल में दस्तखत किये जाएंगे । इसी के साथ वामपंथी एवं दक्षिणपंथी विपक्षी पार्टियों ने डुंकेल प्रस्तावों का विरोध करने की घोषणा की है । डुंकेल प्रस्ताव 'गैट' —जी.ए.टी.टी., जनरल एग्रीमेंट आन टैरिफ्स एंड ट्रेड —अथवा सीमा शुल्क और व्यापार पर सामान्य समझौते की उपज हैं । इन प्रस्तावों को लेकर इस तरह की आशंकाएं व्यक्त की जा रही हैं कि शीघ्र ही विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियां देश की अर्थव्यवस्था पर छा जाएंगी । विदेशी प्रतियोगिता के कारण देशी कल-कारखाने बंद हो जाएंगे, बड़े पैमाने पर श्रमिकों की छंटनी होगी, किसानों को अपनी आवश्यकता के बीज विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों से खरीदने पड़ेंगे, खाद्यान्नों के दाम बढ़ेंगे, देश में वैज्ञानिक अनुसंधान बंद हो जाएगा और जीवन रक्षक दवाओं के दाम आसमान को छूने लगेंगे ।

द्वितीय महायुद्ध के बाद १९४८ में विश्व अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाने और बढ़ावा देने के लिए दो संगठनों का गठन किया गया । इनमें से एक था अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और दूसरा था 'गैट' । अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष विभिन्न देशों के केंद्रीय बैंकों के बीच आपसी संबंधों और उन देशों में वित्तीय और मुद्रा संबंधी समस्याएं होने पर उन्हें दी जानेवाली आपसी सहायता का नियंत्रण करता है । 'गैट' विभिन्न देशों के बीच बिना किसी बाधा के माल के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

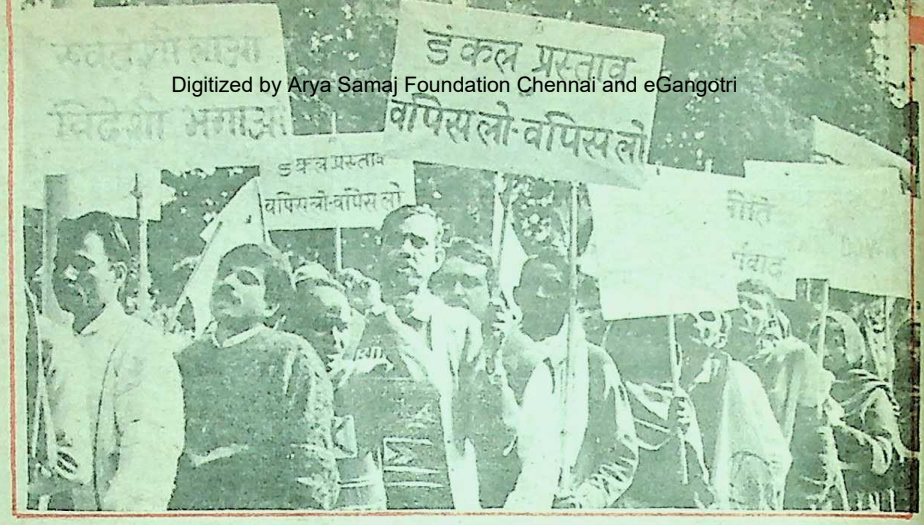

आदान-प्रदान को बढ़ावा देने का प्रयत्न करता है।

विश्व के विभिन्न देशों के बीच अबाध व्यापार में सीमा शुल्क, उत्पादन शुल्क, भेदभाव करनेवाले कानूनों और अन्य ऐसी ही व्यवस्थाओं से बाधा आती है। कुछ देश अपने देश की मंडियों के द्वार अन्य देशों के लिए नहीं खोलते, वह कुछ किस्म का तैयार माल, कृषि उपज अपने देश में नहीं आने देते, एक निश्चित सीमा से अधिक सामान अपने देश में नहीं आने देते और विदेशों से आनेवाले माल पर अत्यंत कठोर किस्म के मानक लागू करते हैं। इससे विश्व व्यापार के विकास में बाधा पड़ती है।

हवाना चार्टर

माल के अबाध व्यापार से सौदों की लागत में कमी आती है। नयी मंडियों के खुलने से उद्योगों को बढ़ावा मिलता है, रोजगार के नये अवसर पैदा होते हैं। १९४७ में विश्व व्यापार को बढ़ावा देने के लिए क्यूबा की राजधानी हवाना में विश्व व्यापार की पहले दौर की वार्ता हुई। इसमें २३ देशों ने भाग लिया और ४५,००० उत्पादों पर प्रतिवर्ष १० अरब डॉलर सीमा शुल्क की कटौती करने का निश्चय किया। 'हवाना चार्टर' (१९४८) में 'गैट' को व्यापारिक नीतियों के क्रियान्वयन का दायित्व सौंपा गया। चूंकि 'हवाना चार्टर' की घोषणा करनेवाले अधिकांश देशों को अमरीकी कांग्रेस संदेह की दृष्टि से देखती थी और संपूर्ण कार्रवाई को साम्यवाद के प्रसार की रणनीति का आवश्यक अंग समझती थी। अतः उसकी केवल वह व्यवस्थाएं लागू की जा सकीं, जिसके लिए अमरीकी कांग्रेस का अनुमोदन आवश्यक नहीं था। हवाना चार्टर की समाप्ति के बाद 'गैट' ने चुपचाप व्यापारिक संबंधों के नियमन का कार्य अपने हाथ में ले लिया।

पहली 'गैट' वार्ता से लेकर उरुग्वे दौर की आठवीं वार्ता तक गैट की सदस्य संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। हवाना चार्टर के समय केवल २३ देश गैट के सदस्य थे। उरुग्वे वार्ता की समाप्ति के समय ११७ देश इसके सदस्य हो गये थे। १९४७ में सीमा शुल्क लगभग ४० प्रतिशत थे। १९९३ तक इन्हें घटाकर ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिशत तक लाने का लक्ष्य शुरू कर दिया गया। खाद्य निर्यातक बन रहा था। अगर कृषि को

सीमा शुल्क के अलावा आयात किये जानेवाले सामान की मात्रा निश्चित करके, उसके तकनीकी मानदंड-मानक निर्धारित करके और अपने देश में निर्मित सामान को सरकारी सहायता प्रदान करके भी मुक्त व्यापार में बाधाएं उपस्थित की जाती हैं। 'गैट' ने इन समस्याओं के समाधान का भी प्रयत्न किया है।

गैट ने संरक्षणवादी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाया है। संरक्षणवाद एक सीमा तक लाभ पहुंचाता है, लेकिन फिर वह न केवल निरर्थक हो जाता है बल्कि उलटे हानि पहुंचाने लगता है।

अस्सी के दशक के शुरू में अमरीका को युद्ध के बाद की सबसे भयंकर मंदी का सामना करना पड़ा। बेरोजगारी निरंतर बढ़ती जा रही थी। यूरोप में भी लगभग इसी तरह का माहौल था। उस समय यह सोचा गया कि आपसी व्यापार को अधिक सहज, सरल और कारगर बनाकर इस मंदी से उबरा जा सकता है। अमरीका ने तीन विवादास्पद विषयों सेवाएं, कृषि और बौद्धिक संपत्ति को व्यापार वार्ताओं में शामिल करने का प्रस्ताव किया।

अमरीकी उद्देश्य

अमरीका औद्योगिक उत्पादन के क्षेत्र में जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान और कुछ दक्षिणी अमरीकी देशों से तेजी से पिछड़ रहा था। इन देशों में तैयार माल अमरीकी मंडियों और विदेशों में तेजी से छा रहा था। अमरीकी कृषि उत्पादों के लिए यूरोपीय समुदाय के सरकारी सहायता प्राप्त उत्पाद खतरा बन रहे थे। फ्रांस यूरोपीय समुदाय का सबसे बड़ा

व्यापार वार्ता के अंतर्गत ले आया जाए तो यूरोपीय देशों द्वारा किसानों को दी जानेवाली उदार आर्थिक सहायता बंद की जा सकती थी और यूरोपीय समुदाय के द्वार अमरीकी कृषि उपज के लिए खोले जा सकते थे।

कापी राइट भी इसी सीमा में

फिर, अमरीका बौद्धिक संपत्ति का विषय व्यापार वार्ता में शामिल करना चाहता था। बौद्धिक संपदा के अंतर्गत 'पेटेंट' और 'कापीराइट' जैसे विषय आते हैं। जिनका आम तौर पर व्यापार वार्ताओं से कुछ लेना-देना नहीं होता। लेकिन अमरीकी उद्योगों का आरोप था कि बौद्धिक चोरी के जरिए अमरीका को कमजोर किया जा रहा है। अमरीका नयी गैट वार्ता के जरिए बौद्धिक संपत्ति की रक्षा के अंतरराष्ट्रीय मानक लागू कराना चाहता था।

प्रारंभ में अधिकांश विकसित और विकासशील देश अमरीकी प्रस्तावों के विरुद्ध थे। एशिया के विकासशील देश सेवा क्षेत्र को व्यापार वार्ताओं के अंतर्गत लाने के विरुद्ध थे। भारत और ब्राजील के नेतृत्व में कुछ विकासशील देशों ने बौद्धिक संपत्ति को व्यापार वार्ता से अलग रखने का प्रयत्न किया। उनका तर्क था कि इससे प्रौद्योगिकी पर पश्चिमी देशों का वर्चस्व अनंतकाल तक कायम रहेगा।

उरुग्वे दौर

गैट वार्ताओं का आठवां दौर, जिसे उरुग्वे दौर की वार्ता भी कहा जाता है, १९८६ में शुरू हुई। प्रारंभ में इसमें १०५ देश शामिल हुए। यह अब तक हुई वार्ताओं में सबसे कठिन और जटिल थी। इसमें कृषि और बैंकिंग, बीमा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दूरसंचार सहित सेवाएं, और व्यापार से संबंधित निवेश की रक्षा जैसे विषय शामिल थे। वार्ता की समाप्ति के लिए अनेक तारीखें निर्धारित की गयीं और बढ़ायी गयीं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले तीन-चार वर्षों के दौरान व्यापार वार्ता में विशेष प्रगति नहीं हुई। लेकिन अस्सी के दशक के अंत और नब्बे के दशक के शुरू में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र और भारत में अनेक ऐसे परिवर्तन हुए, जिनसे भारत सहित विकासशील देशों के रवैये में उल्लेखनीय परिवर्तन आया। भारत को विदेशी मुद्रा की संकटपूर्ण स्थिति के कारण विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लेना पड़ा। ऋण लेने के लिए उसे अपने आर्थिक ढांचे में सुधार करना पड़ा, और उदारीकरण की नीति पर चलना पड़ा। इसी के साथ उरुग्वे दौर की बातचीत में भारत के विरोध के स्वर शांत हो गये। अप्रैल १९८९ में भारत बौद्धिक संपत्ति पर चर्चा करने को तैयार हो गया। १९९०-९१ के बजट के बाद तो भारत उरुग्वे दौर की वार्ता का प्रबल समर्थक बन गया। नब्बे के दशक के दौरान अमरीका को उरुग्वे दौर की बातचीत में मुख्यतः यूरोपीय समुदाय के विरोध का सामना करना पड़ा। यह विरोध मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र में सरकारी सहायता की समाप्ति को लेकर था।

डुंकेल प्रस्ताव

१९९१ के अंत तक जब उरुग्वे दौर की बातचीत में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई, तब स्विटजरलैंड के भूतपूर्व राजनयिक आर्थर डुंकेल ने भावी बातचीत का आधार तैयार करने के लिए एक मसौदा तैयार किया, जिसे डुंकेल प्रस्ताव कहा गया। अंत में यही प्रस्ताव

- *कृषि जिंसों के निर्यात से खाद्यान्नों के मूल्यों में वृद्धि की आशंका*
- *किसान पेटेंट बीजों की बिक्री नहीं कर सकेंगे।*

समझौते का आधार बना। आर्थर डुंकेल अब सेवानिवृत्त हो गये हैं। उनके स्थान पर पीटर सदरलैंड गैट के महानिदेशक हो गये हैं।

फ्रांस ने शुरू में डुंकेल प्रस्ताव को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया। लेकिन मई १९९२ में यूरोपीय समुदाय अपनी कृषि नीति में व्यापक सुधार करने को तैयार हो गया। इससे अंतिम समझौते का मार्ग प्रशस्त हुआ।

कृषि क्षेत्र के अलावा अमरीका और यूरोपीय समुदाय ने एक-दूसरे के लिए अपनी मंडियों के द्वार खोलने में भी काफी आनाकानी की। मुक्त व्यापार की वकालत करने के बावजूद दोनों अपनी मंडियों के द्वार दूसरों के लिए खोलने को तैयार नहीं थे। अंत में जब गैट वार्ता टूटने के लक्षण प्रकट हुए, तब दोनों पक्ष एक-दूसरे को मामूली रियायतें देकर समझौते के लिए तैयार हुए।

समझौते से क्या खोया, क्या पाया

'गैट' समझौते का अनुमोदन करने के बाद भारत ने क्या खोया, क्या पाया, इसका निश्चित पता कुछ समय बाद लगेगा। व्यापारिक सूत्रों और विश्व बैंक के अनुसार गैट वार्ताओं के सफल होने से विश्व व्यापार में प्रति वर्ष २०० से २७० अरब डॉलर की बढ़ोतरी होगी। इसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत का हिस्सा २ से ३ अरब डॉलर हो सकता है । भारत को अतिरिक्त आय समुद्री उत्पादों, कृषि उपज और अन्य वस्तुओं के निर्यात से होगी ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत को 'गैट' की व्यवस्थाओं के अनुसार अपने पेटेंट अधिनियम में संशोधन करना पड़ेगा । उसे कुछ किस्म की दवाओं, रासायनिक उत्पादों और अन्य वस्तुओं पर रायल्टी देनी पड़ेगी । इसके परिणामस्वरूप इन वस्तुओं के मूल्यों में दो से तीन गुनी वृद्धि हो सकती है । बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा निर्मित नयी दवाएं तो और महंगी हो सकती हैं ।

भारत को निर्यात से जो अतिरिक्त आय होगी उसका बड़ा हिस्सा उसे रायल्टी के रूप में देना पड़ेगा । इस स्थिति का एक सुनहरा पक्ष है । इस बोझ से बचने के लिए देश स्वावलंबन और अनुसंधान पर अधिक जोर देगा और भारत के वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को कुछ कर दिखाने का नया अवसर मिलेगा ।

भारत और कुछ अन्य देशों के प्रयत्नों से इस बात पर सहमति हो गयी कि मल्टी फाइबर व्यवस्था दस वर्ष के भीतर समाप्त कर दी जाए । अमरीका और पश्चिमी देश इस अवधि को १५ वर्ष तक बढ़ाना चाहते थे । भारत के दबाव में यह अवधि बढ़ायी तो नहीं गयी, लेकिन हमें अपनी मंडियां कुछ किस्म के अमरीकी सिंथेटिक कपड़ों के लिए खोल देनी पड़ीं । भारतीय मंडियों को अमरीकी वस्त्र भंडार के लिए खोल देने से भारतीय कपड़ा उद्योग को नयी चुनौती का सामना करना पड़ेगा ।

भारत के निर्यात व्यापार में कपड़ा उद्योग का विशेष स्थान है । हमें इस समय भी, जब हमारे कपड़ा निर्यात पर कोटा संबंधी अनेक प्रतिबंध हैं, अपनी निर्यात आय का २५ प्रतिशत कपड़ा निर्यात से प्राप्त होता है । 'मल्टी फाइबर' व्यवस्था के धीरे-धीरे समाप्त होने के साथ हमारे कपड़ा निर्यात में जबरदस्त वृद्धि हो सकती है । लेकिन इसके लिए हमें अपने कपड़ा उद्योग का पूरी तरह आधुनिकीकरण करना होगा ।

गैट समझौता विश्व व्यापार की अनेक अड़चनों-बाधाओं को समाप्त करता है । अब समूचे विश्व में आयात शुल्क की दरें समान हो जाएंगी । इससे भारत सहित विकासशील देशों में मशीनों और संयंत्रों की मांग बढ़ेगी और औद्योगीकरण में तेजी आएगी । जापान और ताइवान सहित कृषि की नयी मंडियां खुलने से भारतीय कृषि उपजों के निर्यात को बढ़ावा मिलेगा ।

'गैट' समझौता विश्व व्यापार में नयी व्यवस्था का सूचक है । इसका मुख्य लाभ शुरू में उन देशों को मिलेगा जो तकनीकी और प्रौद्योगिकी दृष्टि से आगे हैं । विश्व का ७५ प्रतिशत व्यापार थोड़े से विकसित देशों के हाथों में है । अतः शुरू में हमें गैट के लाभ कम मिलेंगे । लेकिन अगर हम प्राप्त अवसरों, सुविधाओं का लाभ उठाते हुए अपनी क्षमता बढ़ाएंगे तो हमें आगे इसका पूरा लाभ मिलेगा ।

बौद्धिक संपत्ति और सेवाओं संबंधी कुछ व्यवस्थाएं भारत सहित विकासशील देशों के लिए परेशानी पैदा कर सकती हैं । लेकिन इन्हें लागू करने का समय काफी लंबा रखा गया है । इस बीच भारत सहित सभी विकासशील देश इनसे निपटने के उपाय खोज सकते हैं । ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत रचनाकारों के साथ 'कादम्बिनी' संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी, श्री माधवराव सिंधिया एवं प्रसार व्यवस्थापक श्री राकेश शर्मा

ग्वालियर में कादम्बिनी महोत्सव

"आधुनिक विकास के साथ-साथ साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को भी बढ़ावा देना चाहिए और इस उद्देश्य के लिए 'कादम्बिनी' परिवार ने जो रुचि दिखायी है, वह सराहनीय है।"

—माधवराव सिंधिया

कादम्बिनी साहित्य महोत्सव से पाठक अपरिचित नहीं हैं। सन १९९१ में हमने पटना, इंदौर, जयपुर और लखनऊ में 'कादम्बिनी' साहित्य महोत्सव का आयोजन किया था और ८८ युवा प्रतिभाओं को पुरस्कृत भी किया था। इन चारों नगरों में कुल मिलाकर ढाई-तीन हजार युवा लेखक-लेखिकाओं ने भाग लिया। हमें इस बात से प्रसन्नता है कि 'कादम्बिनी' साहित्य महोत्सव में पुरस्कृत अनेक रचनाकार लेखन के क्षेत्र में अपना स्थान बना रहे हैं।

कहानी और काव्य-प्रतियोगिता

गत २५-२६ दिसंबर को ग्वालियर में कादम्बिनी साहित्य महोत्सव का आयोजन किया गया। मिस हिल स्कूल में आयोजित इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महोत्सव के प्रथम दिन कहानी और काव्य प्रतियोगिता संपन्न हुई जिसमें ग्वालियर और भिंड, मुरैना, डबरा आदि से पांच सौ से अधिक रचनाकारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । इनमें सभी वर्गों और आयु के लोग थे । इनमें चिकित्सक, इंजीनियर, गृहणियां, छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त अनेक स्थापित रचनाकारों ने भी भाग लिया । ग्वालियर में हमने पहली बार काव्य को भी प्रतियोगिता में शामिल किया ।

दूसरे दिन मिस हिल स्कूल के सभा कक्ष में पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री माधवराव सिंधिया ने पुरस्कृत रचनाकारों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार-राशि भेंट की ।

रायपुर, जबलपुर, भोपाल में महोत्सव

इस समारोह में प्रारंभ में 'कादम्बिनी' संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने सिंधिया जी का स्वागत किया । हिंदुस्तान टाइम्स लि. के प्रसार-व्यवस्थापक श्री राकेश शर्मा ने भी श्री सिंधिया का स्वागत किया और 'कादम्बिनी' साहित्य महोत्सव की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला । इस अवसर पर मंच पर आसीन मिस

कादम्बिनी साहित्य महोत्सव, ग्वालियर में पुरस्कृत रचनाकार

कहानी :

प्रथम पुरस्कार : कुमारी कुंदा जोगलेकर
द्वितीय पुरस्कार : अनुराग पाठक
तृतीय पुरस्कार : डॉ. श्रीमती राजरानी शर्मा
सांत्वना पुरस्कार : अंजना सिंह, डॉ. जॉनसन सी फिलिप, मृणाल अमरेश, संदीप दुबे, वंदना शुक्ल, सुदीप तोमर, उषा दीक्षित, सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा, अंशु चतुर्वेदी एवं सुनील गौड़

काव्य :

प्रथम पुरस्कार : रामप्रकाश चौधरी एवं अतुल अजनबी
द्वितीय पुरस्कार : त्रिभुवन सिंह जादौन एवं कुमारी सुमन गुर्जर
तृतीय पुरस्कार : देवेन्द्र सिंह राही एवं घनश्याम भारती
सांत्वना पुरस्कार : तृप्ति वर्मा, श्याम मनावत, राम पंजवानी, शाहिद खान, डॉ. अरविंद रुनवाल, कादम्बिरी आर्य, प्रियंका गुप्ता, अमरजीत कौर, अर्चना शर्मा, ऋचा सत्यार्थी

पुरस्कार वितरण के पूर्व भाषण करते हुए श्री माधवराव सिंधिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

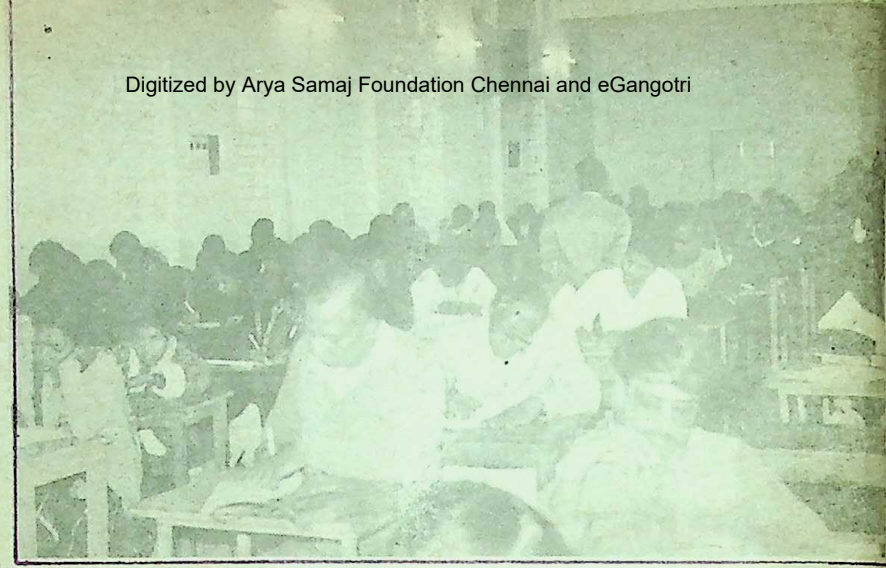

कहानी-काव्य प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले रचनाकार : सभी पीढ़ियां एक साथ

हिल स्कूल के अमरनाथ कौल का भी स्वागत किया गया । अपने भाषण में 'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेंद्र अवस्थी ने पिछले चार साहित्य महोत्सवों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और बताया कि इन महोत्सवों के बाद देश में ढाई सौ से अधिक कादम्बिनी-क्लबों की स्थापना की गयी है । अंदमान निकोबार से लेकर राजस्थान के सीमांतनगर अनूपगढ़, हिमालय के गढ़वाल क्षेत्र में नयी टिहरी, पुरुलिया के अतिरिक्त मद्रास-जैसे अहिंदी भाषी नगर में भी कादम्बिनी क्लब साहित्यिक-सांस्कृतिक चेतना का प्रसार कर रहे हैं ।

श्री अवस्थी ने बताया कि ग्वालियर के बाद मध्य प्रदेश में रायपुर, बिलासपुर, जबलपुर और भोपाल में कादम्बिनी साहित्य महोत्सव का आयोजन किया जाएगा ।

पुरस्कार-वितरण के पूर्व अपने उद्बोधन में श्री माधवरावजी सिंधिया ने ग्वालियर-जैसे नगर में कादम्बिनी-साहित्य महोत्सव के आयोजन के लिए 'कादम्बिनी-परिवार' की प्रशंसा की । उन्होंने कहा कि साहित्यिक गतिविधियों के विकेंद्रीकरण के लिए अवस्थीजी ने जो प्रयास किया है, वह सराहनीय है । इससे साहित्य में रुचि रखनेवाले नये लोग इधर खिचेंगे । कादम्बिनी साहित्य समारोह के आयोजकों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजकों से नयी पीढ़ी के नये साहित्यकारों को प्रोत्साहन मिलेगा ।

श्री सिंधिया ने कहा कि आधुनिक विकास के साथ-साथ साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को भी बढ़ावा देना चाहिए और इस उद्देश्य के लिए 'कादम्बिनी -परिवार' ने जो रुचि दिखायी है, वह सराहनीय है ।

कार्यक्रम का संचालन और अंत में काव्यपाठ 'कादम्बिनी' के उपसंपादक श्री सुरेश नीरव ने किया और आभार प्रदर्शन सहायक संपादक श्री दुर्गाप्रसाद शुक्ल ने ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

भारत की समृद्धि के प्रेरणा स्त्रोत

पूर्व मैसूर राज्य के कोलार जिले का नाम इसकी सोने की खानों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। इसी जिले के एक छोटे से गांव—है-मदनहल्ली में १५ सितम्बर, १८६१ को मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म हुआ था। गरीब परिवार व अभावों में पैदा होने के बाद भी विश्वेश्वरैया अपनी लगन व बुद्धि से हर भारतीय के अनुकरणीय हैं। अपनी अथाह सेवाओं के कारण इन्हें 'भारतरत्न' से भी विभूषित किया गया।

पेशे से इंजीनियर होकर इन्होंने उसकी शान में चार चांद लगाये।

सिंध अब जो पाकिस्तान में है, उसके रेगिस्तानी क्षेत्र को हरा-भरा करवाने में डॉ. विश्वेश्वरैया ने विशेष प्रयास किया। उन्होंने सन १८९४ में सक्कर बराज एवं वाटर-वर्क्स का निर्माण करवाया।

उस समय हैदराबाद एक बड़ी रियासत के नाम से जानी जाती थी। उस पर निजाम का शासन चलता था। वह धनी एवं शक्तिशाली शासक होते हुए भी एक छोटी-सी नदी 'मूसी' से बड़ा परेशान रहता था। प्रत्येक वर्ष वर्षा ऋतु में भयंकर बाढ़ से यह नदी पूरे हैदराबाद में तबाही मचाती थी। इससे सारा जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता था। डॉ. विश्वेश्वरैया की सेवाओं की निजाम को आवश्यकता पड़ी। वह विदेश में थे, स्थिति की गंभीरता को समझते हुए, वह शीघ्र हैदराबाद लौट आये। उन्होंने 'मूसी' नदी पर नियंत्रण पाने के लिए योजना तैयार की और शीघ्र ही नियंत्रण भी पा लिया। आंध्र प्रदेश की सुंदर राजधानी हैदराबाद को बचाने का श्रेय मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को ही है।

मैसूर में कावेरी नदी पर उन्होंने एक बांध बनाया। इस बांध का नाम कृष्णराज सागर बांध है। इससे रियासत को बहुत लाभ हुआ।

कारखाने द्वारा इन्हें लाखों रुपया मेहनताना मिला, परंतु उन्होंने एक भी रुपया अपने पास नहीं रखा। सारा धन एक तकनीकी संस्था खोलने के लिए दे दिया। आज भी यह संस्था मैसूर में—'जयचाम राजेन्द्र आक्यूपेशनल इंस्टीट्यूट' के नाम से प्रसिद्ध है।

डॉ. विश्वेश्वरैया ९० वर्ष की उम्र तक नियमित रूप से कार्य करते रहे। उनकी सेवाओं को देखते हुए सन १९५५ में भारत सरकार ने उन्हें 'भारत रत्न' के सर्वोच्च अलंकरण से सुसज्जित किया। राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने १४ अप्रैल, १९६२ को उनकी मृत्यु पर कहा था, "एक ऐसा महान शक्ति चल बसा है, जिसने हमारे राष्ट्रीय जीवन के अनेक पहलुओं में अमूल्य योगदान दिया।"

—किशोर नैथानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष में ऋतु संबंधी उत्सव मनाये जाते थे, इसका प्रमाण प्राचीन काव्यों, नाटकों, आख्यायिकाओं तथा कथाओं से भलीभांति मिलता है । इसमें वसंतोत्सव की प्रधानता देखी जाती है । संस्कृत के लगभग प्रत्येक उल्लेख योग्य कवि ने वसंत की चर्चा अवश्य की है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बताया है कि कालिदास ने तो अपनी किसी भी रचना को वसंत के वर्णन के बिना नहीं छोड़ा । मेघदूत वर्षा का काव्य है, किंतु यक्षप्रिया के उद्यान का वर्णन करते समय प्रिया के चरणों के आघात से फूट उठनेवाला अशोक और मुख की मदिरा से सिंचकर खिल उठनेवाले वकुल के बहाने कवि ने वहां भी वसंत को याद किया है । वस्तुतः, फागुन से लेकर चैत्र तक समूची वसंत ऋतु ही उत्सवों से भरी होती थी ।

सरस्वती कंठाभरण के अनुसार सुवसंतक वसंतावतार के दिन को कहते हैं, अर्थात जिस दिन प्रथम बार वसंत पृथ्वी पर उतरता है । इस प्रकार, आजकल के हिसाब से यह

पलाश और कामदेव

पगड़ी और चूनर का साथ

● अरविंद

दिन वसंत पंचमी को पड़ना चाहिए । मात्स्यसूक्त और हरिभक्तिविलास, आदि ग्रंथों के अनुसार प्रथम वसंत का प्रादुर्भाव इसी दिन होता है । मदन की पहली पूजा भी इसी दिन विहित है । इसी दिन उस युग की विलासनियां कंठ में दुष्प्राप्य नव आम्र मंजरी धारण करके ग्राम को जगमग कर देती थीं :

छणपिट्ठ धूसरत्प्पणि महुम अतम्बच्छि कुवल आहरणे ।
कंठक अचूअमंजरि पुत्ति तुए मंडियो गामो ।।

—सरस्वती कंठाभरण

कालिदास के ऋतु संहार से स्पष्ट है कि स्त्रियां पुराने गरम कपड़े फेंककर कोई लाक्षारस से या कुंकुम के रंग से रंजत और सुगंधित कालागुरु से सुवासित हल्की लाल साड़ियां पहनती थीं, कोई कुसुंभी दुकूल धारण करती थीं और कोई कानों में नवीन कर्णिकार के फूल, नील अलकों (केशों) में लाल अशोक के फूल और वक्षस्थल पर उत्फुल्ल नवमल्लिका की माला धारण करती थीं ।

वसंत की हवा कुसुमित आम की शाखाओं को कंपाती हुई आती थी, कोकिल की हूक भरी कूक दसों दिशाओं में फैला देती थी और शीतकालीन जड़िया से मुक्त मानव चित्त को बलात हरण कर ले जाती थी :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकम्पयन् कुसुमिताः सहकारशाखाः,
विस्तारयन् परभृतस्य वचांसि दिक्षु ।
वायुर्विवांति हृदयानि हरन्नराणां
नीहारपातविगमात् सुभगो वसन्ते ॥ (ऋतुसंहार, ६-२२)

कालिदास ने वसंत का वर्णन सर्वाधिक मनोयोग से किया है । वसंत के मदनोद्दीपक स्वरूप की व्यंजना ही कवि का प्रधान अभीष्ट रहा था । इसी कारण यदि वसंतागमन से वृक्ष पुष्पयुक्त हो गये हैं, सलिल कमलों से अकीर्ण हो गया है, पवन सुरभित हो गया है, दिन रम्य एवं संध्याएं सुहावनी बन गयी हैं तो स्त्रियां भी कामयुक्त बन गयी हैं— 'स्त्रियः सकामः ।' वसंत ने वापियों के जलों को, मणि-निर्मित मेखलाओं को, चांद्र ज्योत्सना को, प्रमदाओं को,तथा मंजरियों से लदे ग्राम वृक्षों को, सभी को एक साथ नये भाग्योदय का संदेश दिया है । लाल-लाल कोपलों के गुच्छों से झुके हुए और सुंदर मंजरियों से लदे रसाल जब पवन के झोंकों से हिलने लगते हैं, तब अंगनाओं के मानस

वसंत : कवि कुल गुरु कालिदास के शब्दों में 'श्रृंगार दीक्षा गुरु' । वसंत आता है तो पलाश खिल उठते हैं । वसंत कामदेव का सखा भी है । शिव द्वारा कामदेव को भस्म किये जाने के बाद रति पति के बाल सखा वसंत से ही अपनी व्यथा-कथा कहती है ! वसंत में पगड़ी और चूनर के रंग भी एक हो जाते हैं !

उमंग से उछलने लगते हैं । अशोक के जिन वृक्षों में नयी कोपलें फूट आयी हैं और जिनमें मूंगे-जैसे लाल फूल खिल गये हैं, उनको देखते ही नवयुवतियों का हृदय शोक से भर जाता है ।

अपनी प्रियाओं के सुंदर शरीरों पर रीझे हुए प्रेमियों के हृदयों को, सुगे की ठोर के समान लाल टेसू के फूलों ने अथवा कनैर के कुसुमों ने पहले से ही दग्ध कर दिया था, अब यह कोयल पुनः अपनी मधुर काकली से उनके प्राणों को मार रही है । कामनियों की हंसी के समान उज्ज्वल कुंद-कुसुमों से चमकते हुए उपवन जब मोह-माया-विमुक्त मुनियों के मन भी हर लेते हैं, तब नवतरुणों के राग-मलिन चित्तों की दशा अवर्णनीय हो जाती है :

चित्तं मुनेरवि हरन्ति निवृत्तरागं प्रागेव रागमलिनानि मनांसं यूनाम् ॥

वसंत के उद्दीपन का प्रभाव पथिकों पर इतनी गहराई से पड़ता है कि आम्र वृक्षों को देखकर वे नेत्र मूंदकर बिलखने लगते हैं और हाथों से नाक बंद कर लेते हैं कि मंजरियों की महक नाक में पहुंचकर कहीं प्रेमिका की याद न दिला दे :

नेत्रे निमीलयति रोदति याति शोकं घ्राणं करेण विरुणद्धि विरौति चोच्चैः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालिदास ने वसंत ऋतु में प्रमदाओं की विलास रचना करते हुए स्त्री शरीर के प्रत्येक अंग का श्रृंगार पुष्पों तथा आम्र-मंजरियों से किया है । जूड़ों को चंपे के फूलों से गूंथा है, कानों में कनेर के फूल लटकाये हैं, नीली घुंघराली लटों में अशोक के फूल एवं नवमल्लिका की कलियों को खोंसा है, स्तनों पर धवल चंदन से भीगे मोतियों के हार पहनाये हैं, नितंबों पर कुसुंभ के अरुण कुसुमों से रंगे महीन कपड़े की चोली धारण करायी है, मुखों पर बेल-बूटे बनाये तथा गोरे स्तनों पर प्रियंगु, कालीयक एवं कुंकुम के घोल में कस्तूरी मिलाकर चंदन का लेप किया है । कवि ने कतिपय श्लोकों में कामिनियों की विलास-चेष्टाओं के चित्र अद्वितीय श्रृंगारिक शब्दों में प्रस्तुत किये हैं ।

आग की लपटों के समान दिखायी पड़नेवाली कुसुमान्वित शाखाओं से युक्त पलाश वृक्षों से ढकी पृथ्वी को लाल साड़ी पहने हुई नववधू से उपमित करके ('रक्तांशुका नववधूरिव भाति भूमिः') कवि ने ललित छवि का दर्शन कराया है । वसंत को कवि ने 'श्रृंगारदीक्षागुरु' बताया है और इसी कारण, कामिनियों को नानाभाव से लजाता हुआ चित्रित किया है—

"पर भृतकलगीतैर्हृदिभिः सद्वचांसि,
स्मितदशनमयूखान्कुन्द पुष्प प्रभाभिः ।
करकिसलयकान्तिं पल्लवैर्विद्रुमाभैरुपहसंत,
वसन्तः कामिनीनामिदानीम् ।।

—'इस समय कोयल के आह्लादकारी गीत सुनाकर, यह वसंत सुंदरियों की रसभरी वाणियों की हंसी कर रहा है, कुंद के फूलों की चमक दिखाकर मुसकान से दीप्त हो उठनेवाले उनके दांतों की दमक का उपहास कर रहा है, और मूंगे-जैसे लाल-लाल पल्लवों की लाली दिखाकर, उन कामिनियों की कोमल हथेलियों को निरादृत कर रहा है ।'

वसंत मदन का मित्र है, और वसंत में पाग और चूनर का साथ है, पलाश और कामदेव अभिन्न हैं । शरीरहीन होने पर भी कामदेव लोकजेता है । ऐसे कुसुमायुध मदन के रसायनों का कथन कर कवि ने काव्य- कामियों को जीतने का उपक्रम किया है :

रम्यः प्रदोषसमयः स्फुटचन्द्रभासः
पुंसकोकिलस्य विरुतं पवनः सुगन्धिः ।
मत्तालियूथविरुतं निशि सीधुपानं
सर्वं रसायनमिदं कुसुमायुधस्य ।।

—*'रमणीय संध्या, प्रस्फुटित चंद्रिका, कोयल की काकली, सुरभित पवन, मतवाले भंवरों का गुंजन तथा रात में वारुणी पान, ये सभी कुसुम-वाणों को धारण करनेवाले भगवान कामदेव के उद्दीपक रसायन हैं ।'*

—सी २बी/११२ सी, जनकपुरी, नयी दिल्ली-५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

एड्स के रोगियों को सहानुभूति चाहिए

रंग

● मनोरमा जफा

"राधिका बहनजी, आंटी का फोन है", कहता हुआ हॉस्टल का चपरासी मेरे कमरे के आगे बढ़ गया। राधिका बालों में कलर्स लगा रही थी। फोन का नाम सुनते ही छूटे स्प्रिंग की तरह उछली और भागी। जैसी फुरती से गयी थी उसी फुरती से राधिका लौट आयी।

"शुचि, प्लीज क्लास में मेरी प्रेजेंस लगवा देना, अभी-अभी आंटी ने बुलाया है, नाइट आउट भी करनी है।" कपड़े उठाकर राधिका नहाने चली गयी।

सुबह का समय था। हॉस्टल की लड़कियां कॉलेज जाने की तैयारी कर रही थीं। चारों तरफ भाग-दौड़ मची थी। मैं भी राधिका की प्रतीक्षा में थी। मैं नहा-धोकर तैयार थी।

राधिका मेरे कमरे में भी रहती थी और मेरे क्लास में भी थी। वह बड़ी हंसमुख और जिंदादिल थी। पैसे खर्च करने में भी तेज, जहां दो पैसों से काम चले, वहां वह आठ खर्चती थी। एक दिन मैंने उससे पूछा, "राधिका !

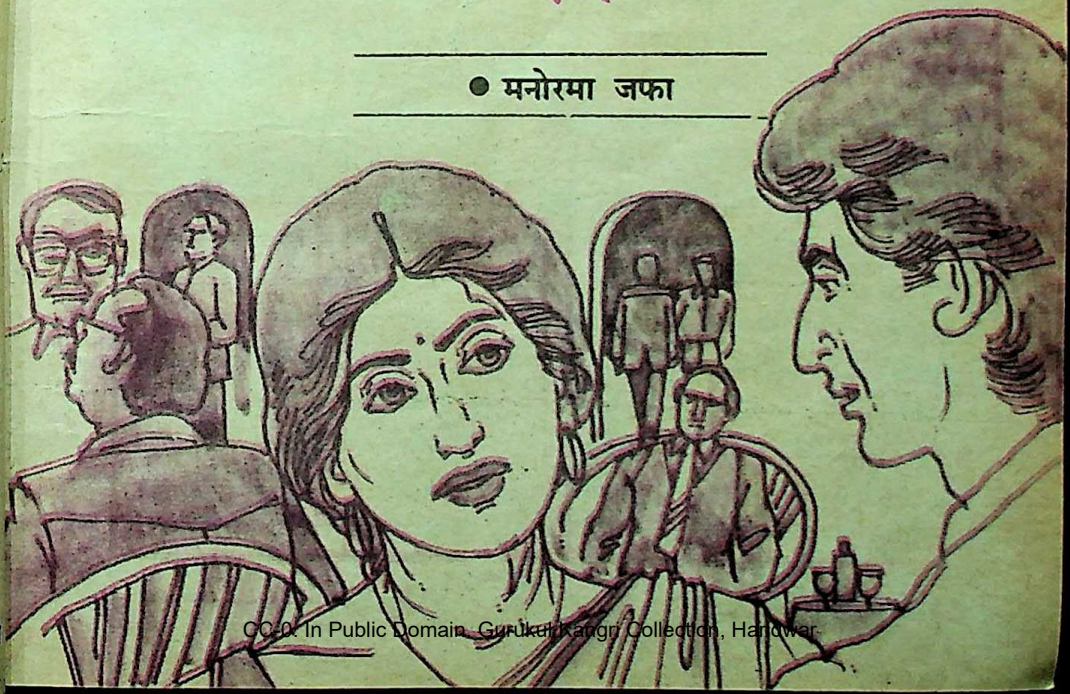

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा हाथ थर-थर कांप रहा था । साहस बटोरकर, नाइट आउट के लिए मैंने रजिस्टर पर सिगनेचर किया और चटपट गेट के बाहर चली गयी । नीली कार खड़ी थी । ड्राइवर घिसा-पिटा घाघ था । उसने गौर से मुझे देखा, जेब से तसवीर निकालकर मेरी शक्ल मिलायी और कार के पीछे का दरवाजा खोल दिया ।

तुम्हारे पापा कितना पैसा भेजते हैं ?''

''पापा क्या देंगे ? देता तो ऊपरवाला है'', उसने आकाश की तरफ हाथ उठा दिया ।

राधिका का खर्चीलापन मुझे परेशान किये था । मैं बंबई से आयी थी । मेरे पापा बिजनेस करते थे । हम लोग अमीर तो नहीं थे, पर ऐसे गरीब भी नहीं थे । पर पापा-मम्मी पैसों की हर समय बात करते थे ।

मम्मी मुझसे मॉडलिंग भी करवाती थी कभी-कभी । मम्मी-पापा ने मेरा भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए ही मुझे दिल्ली के इस नामी कॉलेज में इतिहास में बी. ए. ऑनर्स के लिए भेजा था । जब मुझे हॉस्टल में भी जगह मिल गयी तब तो मम्मी-पापा और मैंने 'दिल्ली का एडमिशन' दोस्तों को पार्टी देकर सेलीब्रेट किया ।

दिल्ली में, राधिका मेरा आदर्श थी । उसकी तरह मैं भी तारे तोड़ने का स्वप्न देखती । उसकी उछल-कूद, खुशी देखकर एक बात मेरी समझ में आयी कि उसकी हर खुशी के पीछे उसके पास पैसा होना है । वह हर वस्तु पैसे से खरीद सकती थी और मैं नहीं । उसके पैसे उसकी 'आंटी' के टेलीफोन से जुड़े थे । आखिर एक दिन कॉलेज से लौटते समय जब टेलीफोन आया और वह अपनी किताबें मुझे पकड़ाकर भागने को हुई, ''राधिका किसका फोन है ?'' मैंने पूछा ।

''आंटी का ।'' कहकर वह बेतहाशा भागी । जब वह लौटकर आयी, मैं उसे पकड़कर बैठ गयी ।

''राधिका मुझे भी आंटी से मिलाओ न ।''

राधिका सोच में पड़ गयी, फिर बोली, ''शुचि ! वायदा करो सारी बात अपने तक रखोगी ।''

मैंने राधिका के सिर की कसम खायी और उसने आंटी रूपी कल्पतरु का राज बता दिया ।

राधिका का भोलापन हवा में उड़ गया था । वह अपने बाल पीछे करती हुई बोली, ''तत्काल पैसा कमाने का इससे सरल तरीका और कोई नहीं है । पैसे की दुनिया है शुचि ! पैसे की'', और उसने बेपरवाही से अपने बाल पीछे झटक दिये ।

एक सप्ताह के बाद बिस्तर पर लेटे-लेटे हम दोनों इधर-उधर की बातें करते रहे । बात ही बात में मैंने स्वयं ही कहा, ''मैं भी तत्काल रुपया कमाना चाहती हूं राधिका ! बता मुझे क्या करना होगा ।''

''शुचि ! सोच ले ।''

''क्या बड़ा कठिन है ?''

''कठिन तो नहीं, अपने को तैयार करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है," वह उठकर मेरे पलंग के पास आयी, मुझे ऊपर से नीचे तक देखा फिर मेरे चेहरे पर आंखें गड़ाकर बोली, "शुचि ! तू तो हजारों में एक है, भोली-भाली प्यारी गुड़िया-सी," और उसने आगे बढ़कर मेरा माथा चूम लिया । हम दोनों खिलखिलाकर हंसे । तभी उसका फोन आ गया । वह जल्दी से तैयार हो गयी । शीघ्र ही वह लौट आयी ।

"अच्छा शुचि ! निकालकर दे अपने फोटो ।"

मैं पलंग से कूद पड़ी । मैंने सूटकेस खोला और मॉडलिंग के लिए ली गयी चार तसवीरें राधिका को पकड़ा दीं ।

क्लास में मैंने राधिका की प्रोक्सी की । अगली सुबह राधिका लौटी, बड़ी थकी-सी ।

"तसवीरें दे दीं ?" मैंने हिम्मत करके पूछा ।

"अरे हां यार, वह पांच सितारा होटलवाला लट्टू हो गया । बोला, 'बड़े मौके से मिस राधिका आप यह फोटो लायी हैं । आज ही सुबह एक फिरंगी आया है, अभी-अभी उसको एलबम भेजना है ।' शुचि ! राम भजो । हां, अपने को तैयार करो । मैं तो सोने जा रही हूं," कहकर राधिका कंबल तानकर लेट गयी ।

शाम होते ही वही हॉस्टल का चपरासी राधिका के फोन की आवाज लगाकर आगे बढ़ गया । राधिका फोन लेने भागी, लौटकर मेरी पीठ पर धौल जमाते हुए बोली ।

"आंटी ने तुझे आज ही बुलाया है, बड़ी लकी है शुचि । तू ।"

"हाय भगवान ! मैं कैसे जाऊं ? बड़ी घबड़ाहट हो रही है ।"

राधिका की भंवें तन गयीं, "सोच ले, ऐसा मौका बार-बार नहीं आता... पर तू नयी खिलाड़ी है । सुन, आधे घंटे बाद एक नीली कार गेट के बाहर खड़ी मिलेगी । नंबर नोट कर ले ।"

मैंने अपनी बायीं हथेली पर कार का नंबर नोट कर लिया । राधिका के बताये कपड़े पहने । उसी ने मेरा मेक-अप किया ।

हॉस्टल से छुट्टी आदि का प्रबंध राधिका ने ही किया, इन सब कामों में राधिका पारंगत है । हॉस्टल की मेट्रन को महंगे-महंगे गिफ्ट देकर उसने उन्हें मुट्ठी में कर रखा है ।

मेरा हाथ थर-थर कांप रहा था । साहस बटोरकर, नाइट आउट के लिए मैंने रजिस्टर पर सिगनेचर किया और चटपट गेट के बाहर चली गयी । नीली कार खड़ी थी । ड्राइवर घिसा-पिटा घाघ था । उसने गौर से मुझे देखा, जेब से तसवीर निकालकर मेरी शक्ल मिलायी और कार के पीछे का दरवाजा खोल दिया । ठीक दस मिनट बाद, कार होटल के पोर्टिको में रुकी । ऊंचा साफा पहने दरबान ने कार का दरवाजा खोला । वहीं एक होटल बॉय खड़ा था । वह मुझे रिसेप्शन काउंटर पर ले गया । काउंटरवाले ने कहा, "इन्हें २०२ नंबर कमरे में ले जाओ ।"

मैं यंत्रवत होटल बॉय के पीछे चली गयी । एकदम से मुझे फिर बड़ी घबड़ाहट हुई । मन हुआ कि भाग जाऊं, यह मैं क्या करने जा रही हूं । तभी चलते समय राधिका की कही अंगरेजी की दो पंक्तियां कान में गूंज गयीं, "कुछ भी अच्छा-बुरा नहीं होता केवल सोचने का ढंग है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दो पंक्तियों ने मुझे हिम्मत के कैक्टस पर खड़ा कर दिया । होटल बॉय ने दरवाजा खटखटाया, खटखटाने के साथ ही दरवाजा खुला । सामने नीली धारी का नाइट सूट पहने एक गोरा पुरुष खड़ा था । होटल बॉय ने कहा, "मिस्टर जेम्स ! यह आपसे मिलने आयी हैं ।"

"आइए आपका स्वागत है ।"

होटल बॉय चला गया । जेम्स ने कमरे के बाहर 'डू नाट डिस्टर्ब' का छोटा-सा बोर्ड लगाकर अंदर से दरवाजा बंद कर लिया । मैं सिर नीचा किये खड़ी रही ।

"बैठिए । आप कुछ पियेंगी ?"

मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया ।

"आप तो बड़ी प्यारी हैं । हिंदुस्तानी लड़कियां मुझे बहुत पसंद हैं । इस बार मैं बिलकुल नयी लड़की चाहता था—फ्रैश, बिना अनुभववाली ।"

पैर के अंगूठे से मैं मैरून कालीन को कुरेदे जा रही थी ।

"अरे, आपको तो पसीना आ रहा है । घबड़ाइए नहीं । जाइए, कपड़े बदल लीजिए ।"

मैं अपना वैनिटी केस लेकर बाथरूम में चली गयी और राधिका की दी हुई पारदर्शक सफेद नाइटी पहनकर बाहर आ गयी ।

"आइए, बिस्तर में बैठकर बातें करते हैं ।"

जेम्स की मीठी-मीठी बातें—मेरा शरमाना, शरमाकर मुंह छिपा लेना, जेम्स का गुदगुदाना फिर... फिर... फिर । आंसुओं की अविरल धार और जेम्स का करवट बदलकर सो जाना । पूरी रात मेरी आंखों में बीती । जाने कौन-सा हीरा मैंने खो दिया था ।

सुबह जेम्स उठे, बोले, "बहुत थक गयी हो न ? आई एम सॉरी (मुझे अफ़सोस है) यह पी लो, बैटर हो जाओगी ।" जेम्स ने जबरदस्ती मुझे एक पैग पकड़ा दिया । जेम्स ने सांस खींची, "यह रात मुझे जीवनभर याद रहेगी ।" चलते समय जेम्स बड़े गंभीर थे, "शुचि ! तुम कभी इस धंधे में न जाना ।" उन्होंने अपना कार्ड थमा दिया, "कभी जरूरत हो, तो मुझे कांटेक्ट कर सकती हो", कहकर जेम्स ने पांच सौ डॉलर मेरे पर्स में डाल दिये । मैं जेम्स की तरफ बिना देखे दरवाजा खोलकर बाहर गयी और सीढ़ियों से नीचे उतर गयी । किसी की तरफ देखने को मन नहीं चाहा, मैं सीधी पोर्टिको में गयी । वही नीली कार खड़ी थी । मुझे देखते ही ड्राइवर कार ले आया, उसने पीछे का दरवाजा खोला । कार में बैठते ही ड्राइवर ने मुझे खूबसूरत-सा लिफाफा पकड़ा दिया—जेम्स के साथ बितायी रात की कीमत

मन ग्लानि से भरा था । अपने से प्रश्न-पर-प्रश्न पूछे जा रही थी ।

आखिर मैंने क्यों पैसों के लिए अपने शरीर को बेच डाला ? पापा ने मुझे पढ़ने के लिए भेजा था । पैसे भी कम तो नहीं देते थे । क्या पैसा जिंदगी में इतना महत्त्व रखता है ? मैंने ही अपने को छला । मैं अपवित्र शुचि । लगा अपने को कहां छिपा लूं ? क्या करूं ? कार कॉलेज के गेट के सामने रुक गयी । ड्राइवर ने दरवाजा खोला । जल्दी-जल्दी अपने कमरे में आ गयी । राधिका कॉलेज जाने की तैयारी में थी ।

हाय शुचि ! कैसा रहा ?"

मैं चुप थी । मैं तो अपनी ही अग्नि में भस्म हुई जा रही थी । कटे पेड़ के समान चारपाई पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिर गयी । राधिका कॉलेज चली गयी । उसके जाने के बाद मैं भी तैयार होकर बाहर निकली । क्लास जाने को मन नहीं किया । कॉलेज के लॉन में सोशल सर्विस लीग की कुछ लड़कियां बैठी थीं । मैं उन्हीं के पास चली गयी । वे सब खून देने (ब्लड डोनेशन) का प्रोग्राम बना रही थीं । मैंने लिस्ट में अपना नाम लिखवा दिया । अगले महीने की चार तारीख को सुबह-ही-सुबह सरकारी ब्लड बैंक से खून लेनेवाले आ गये । मैं लाइन में सबसे आगे थी । मैं मेज पर लेट गयी । खून लेनेवाले ने मेरी बायीं बांह में ट्यूब बांधकर, नस ढूंढ़कर सुई लगा दी । ऊपर टंगी बोतल में टप-टप करता मेरा खून गिरने लगा । मन में अजीब-सा संतोष था, मैं किसी के काम आऊं, इससे अच्छा क्या प्रायश्चित्त हो सकता है । आधी बोतल भरने के बाद मुझे छुट्टी मिली ।

ठीक सात दिन के बाद एक दिन कॉलेज की प्रिंसिपल ने मुझे बुलवा भेजा । मैं उनके कमरे में गयी । फाइल देखते-देखते वह बोलीं, "तुम शुचि हो ? सेकेंड इयर हिस्ट्री ऑनर्स ।"

"यैस मैडम ।"

"तुमने चार तारीख को खून दिया ? तुम्हारा खून बी. ओ. है ?"

"यैस मैडम ।"

प्रिंसिपल ने फाइल एक तरफ खिसका दी और मेरे चेहरे पर दृष्टि गड़ाकर बोलीं, "क्या कभी तुमको खून चढ़ा था ?"

"नहीं मैडम ।"

"वैल, तुम्हारे खून में एच. आई. वी. पोजिटिव है । तुम एड्स की मरीज हो ।"

"क्या ?"

प्रिंसिपल ने अपना कहा वाक्य दोहराया । मेरे पैरों के नीचे से धरती खिसक गयी । एक आधार-सा छूट गया । मैंने घबड़ाकर कहा, "मैडम ? क्या करूं ?"

"फौरन घर चली जाओ, वहीं इलाज कराना," और उन्होंने खून की रिपोर्ट मेरे हाथ में पकड़ा दी । जेम्स के साथ बितायी रात का प्रसाद ।

राधिका से मैंने कुछ न बताया । अपना सूटकेस लेकर बंबई की गाड़ी पकड़ ली । पापा-मम्मी अचानक मुझे आया देखकर घबड़ा गये । मैंने घर की याद का बहाना कर दिया ।

पर मैं आत्मग्लानि की आग में झुलसती जा रही थी । एकाकीपन खाने को दौड़ रहा था । भविष्य में क्या होगा ? विचार सांप की तरह डसे जा रहा था । आत्महत्या करने को सोचा पर साहस न बटोर सकी ।

दो दिन के बाद पापा ने एक पार्टी की ।। उसमें कुछ विदेश से आये अतिथियों को निमंत्रित किया था । मैं पार्टी के लिए तैयार हो गयी । मैंने फिरोजी रंग की कांजीवरम की साड़ी पहनी । शीशे में चेहरा देखा । चेहरे पर उदासी का काला पाउडर लगा था । लिपस्टिक व पाउडर लगाकर मुसकराने का यत्न किया । मुसकराहट एक खिसियानी हंसी बनकर रह गयी । मैं शीशा छोड़कर बाहर आ गयी ।

मेरी बहन रिंचि व पापा मेहमानों की प्रतीक्षा में थे । मम्मी ड्रिंक्स के लिए गिलास आदि का प्रबंध कर रही थीं । ड्राइंगरूम का दरवाजा खुला था । तभी एक टैक्सी रुकी और तीन अतिथि बाहर आ गये । पापा ने परिचय कराया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

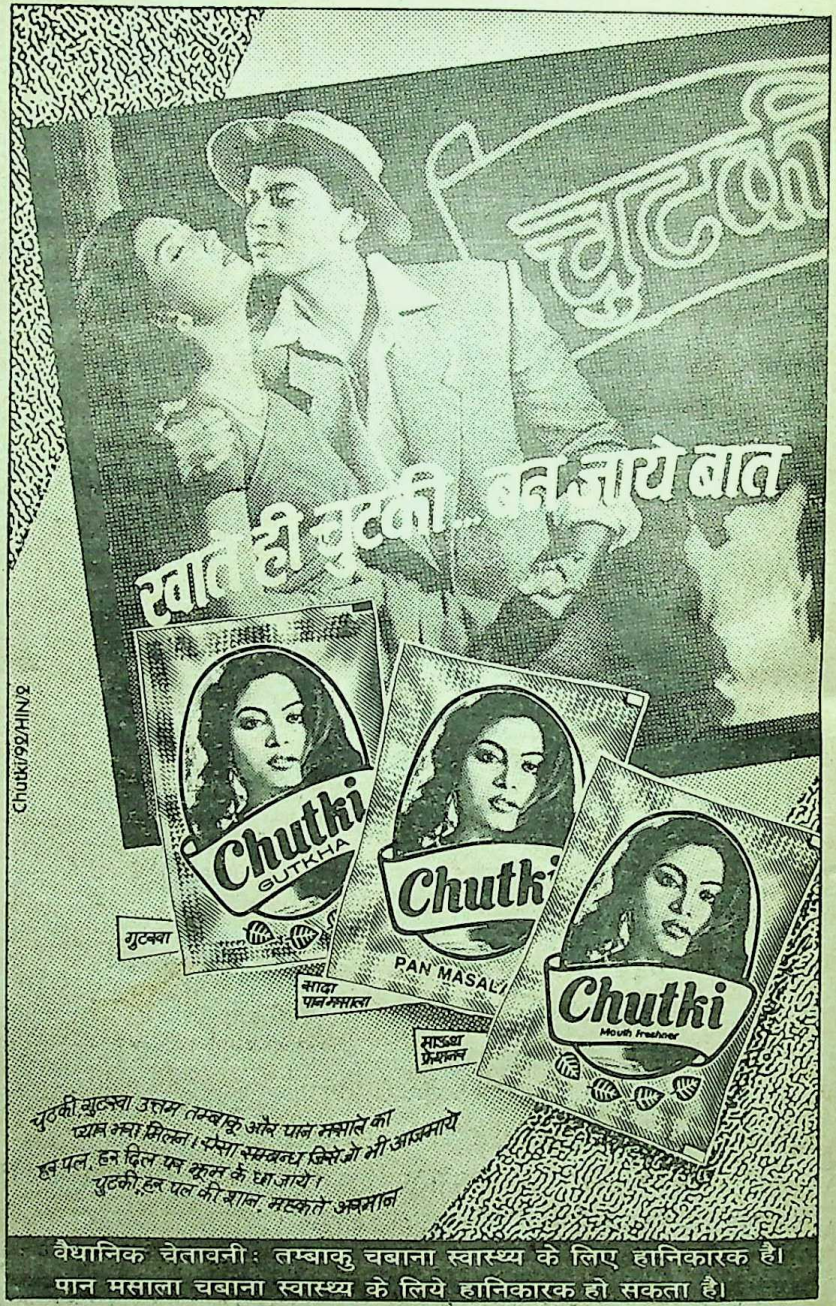

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहाना बनाकर शीघ्रता से मैं घर के बाहर आ गयी । एक टैक्सी पकड़कर ठीक साढ़े आठ बजे जेम्स के सामने पहुंच गयी ।निस्संकोच मैंने दरवाजा खटखटाया । दरवाजा खुला । सूटेड-बूटेड, टाई पहने जेम्स सामने खड़े थे । मुझे देखते ही उनके मुंह पर हवाइयां उड़ने लगीं ।

"मिस्टर जेम्स, मेरी बड़ी बेटी शुचि ।"

"आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई", जेम्स ने लापरवाही से कहा । हाथ मिलाते हुए उन्होंने एक क्षण मुझे गौर से देखा, उनकी भंवें सिकुड़ीं फिर उन्होंने हाथ झटके से खींच लिया, हलके से पूछा, "आपको कहीं देखा है ?"

"नहीं, मुझे याद नहीं पड़ता," कहकर मैं अंदर चली गयी । मस्तिष्क में महाभारत मच गयी । अनोखी परिस्थिति में थी । जेम्स धोखेबाज । स्वयं एच. आई. वी. का शिकार थे और मुझे भी एड्स लगा गये । न मैं घर की ही, न घाट की । जेम्स से इस औपचारिक रूप से भेंट होगी ऐसा मैंने नहीं सोचा था । पापा ने मुझे पुकारा और उनकी पुकार सुनकर मैं फिर लौट आयी ।

रिचि ने अनान्नास का रस लिया । मम्मी ने बियर । पापा ने व्हिस्की का गिलास मुझे भी थमा दिया, "अब तुम कॉलेज में हो, व्हिस्की पी सकती हो ।"

'चियर्स' कहकर हम सबने गिलास होंठों से लगा लिये । पापा बोले, "टु जेम्स हैल्थ" (जेम्स के स्वास्थ्य के लिए) और जेम्स बोले, "जलानी के स्वास्थ्य के लिए ।" मेरे पापा का नाम मिहिर जलानी था ।

गयी रात तक पार्टी चलती । पार्टी के बाद पापा अपनी कार से अतिथियों को पहुंचाने चले गये । पापा से पता चला कि जेम्स अगली रात को जापान जा रहे हैं । इस शिष्टमंडल के प्रतिनिधि जेम्स ही थे । मैंने जेम्स के होटल व कमरे का नंबर नोट कर लिया था । अगले दिन पापा, मम्मी, रिचि सब अपने-अपने काम में लगे थे । मैंने सुबह-सुबह जेम्स को फोन मिलाया । घंटी बजी उधर से आवाज आयी, 'जेम्स ।'

"मैं आपके मित्र मिहिर जलानी की बड़ी बेटी शुचि बोल रही हूं, आपसे मिलना चाहती हूं ।"

"अभी सुबह आ सकती हो ?"

"हां ।"

बहाना बनाकर शीघ्रता से मैं घर के बाहर आ गयी । एक टैक्सी पकड़कर ठीक साढ़े आठ बजे जेम्स के कमरे के सामने पहुंच गयी ।निस्संकोच मैंने दरवाजा खटखटाया । दरवाजा खुला । सूटेड-बूटेड, टाई पहने जेम्स सामने खड़े थे । मुझे देखते ही उनके मुंह पर हवाइयां उड़ने लगीं ।

"आपने मुझे पहचाना ?" मैंने तड़ाक से पूछा ।

जेम्स ने सिर हिलाकर "हां" कर दी ।

"मैं वहीं हूं जो आपके पास दिल्ली के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होटल में आयी थी और आपने मेरे पर्स में पांच सौ डॉलर डाल दिये थे ।''

जेम्स चुप थे । मैंने क्रूरता से जेम्स की तरफ देखा, ''तुम धोखेबाज, बेईमान । भोली-भाली लड़कियों को पैसे से खरीदनेवाले । तुमको तो जहर दे देना चाहिए ।'' अंगरेजी, हिंदी जो भी भाषा मुंह में आयी मैंने अपनी सारी कड़ुवाहट उगल दी ।

जेम्स का मुंह लाल था, उन्होंने एक सिगरेट जला ली । मैंने पर्स से चौपर्त किया कागज निकालकर उनके सामने कर दिया,

''पढ़िए मेरी ब्लड रिपोर्ट । इसमें एच. आई. वी. पोजिटिव आया है !'' मैंने चिल्लाकर कहा ।

जेम्स ने अधजला सिगरेट ऐशट्रे में डालकर, रगड़कर बुझा दिया । और वे आग पर रखे बर्फ के टुकड़े-से पिघलने लगे । एक लंबी सांस खींचकर आगे बढ़े और दोनों हाथ मेरे कंधे पर रखकर बोले, ''मुझसे बड़ी गलती हुई है । मैं क्या कर सकता हूं ?''

जेम्स की हारी हुई आवाज सुनकर मेरा बांध टूट गया । मैं फूट-फूट कर रोने लगी । जेम्स मुझे छोड़कर कमरे में टहलने लगे । वे बार-बार कह रहे थे, ''यह मैंने क्या किया ?'' फिर मेरे पास आये, ''मैंने बड़ा अन्याय किया है । मुझे पता था मुझे एड्स का रोग है । ओह गॉड, हैल्प मी (हे ईश्वर, मेरी मदद करो) ।''

जेम्स की बेबसी देखकर मैंने अपने आंसू पोंछे । पर्स में से जेम्स का दिया पांच सौ डॉलरवाला लिफाफा निकालकर उनके सामने कर दिया ।

''यह तुम्हारी सौगात, लौटाती हूं । इसे ही लौटा सकती हूं । तुमने और जो भी दिया है, काश कि मैं उसे भी लौटा पाती । अब मैं चलती हूं ।''

जेम्स ने लिफाफा नहीं लिया । मैंने लिफाफा मेज पर रख दिया और 'धन्यवाद' कहकर दरवाजा खोलने को आगे बढ़ी । तभी जेम्स ने बढ़कर मेरा हाथ पकड़ लिया ।

''शुचि ! मैं तुम्हे अधिक नहीं जानता । हां, इतना जानता हूं कि हम दोनों एक ही रोग से पीड़ित हैं । हम एक ही रोग से बंधे हैं । यदि तुमको आपत्ति न हो...'' जेम्स बोलते-बोलते रुक गये ।

''हम लोग आत्महत्या कर लें,'' मैंने वाक्य पूरा कर दिया ।

''नहीं शुचि । मुझ पर विश्वास करो ।''

''अब मैं कर ही क्या सकती हूं ?''

''मैं तुमसे विवाह करूंगा,'' जेम्स निर्णय ले चुके थे ।

मैं इस प्रस्ताव के लिए तैयार नहीं थी । जेम्स गंभीर हो गये । लंबी सांस खींचकर बोले, ''तुम्हारी समस्या मेरी बनायी हुई है । उसका इलाज भी मुझे ही करना होगा । मैं तुम्हारा विश्वास चाहता हूं । मैं तुम्हें हर तरह से प्रसन्न रखूंगा, यदि तुम 'हां' कर दो ।''

लाचारी, समस्या और उसका हल । मैंने भी निर्णय ले लिया ।

—डी१-५७ सत्य मार्ग, चाणक्यपुरी,
नयी दिल्ली-११००२१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

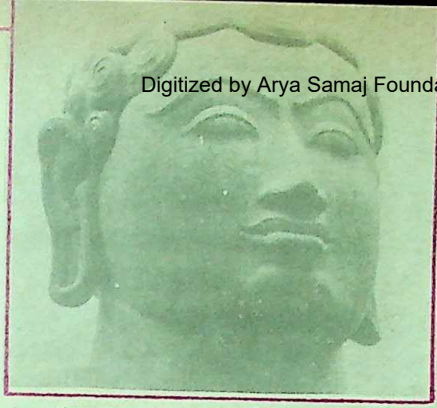

श्रवणबेलगोला : बाहुबली का भव्य मुखमंडल

गोम्मटेश थुदि

वे दिगंबर और भयमुक्त हैं !

बाहुबली की स्तुतियों में गोम्मटेश थुदि (स्तुति) का विशेष महत्व यह है कि इसे बाहुबलि की प्रतिमा के निर्माता चामुंडराय के गुरु नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती (९५० ई.-१०२५ ई.) ने स्वयं लिखा था। ये आठ पद शौरसेनी प्राकृत में लिखे गये थे और खेकड़ा पांडुलिपि से प्राप्त हैं। इस संक्षिप्त स्तुति में ही नेमिचंद्र ने बाहुबली के समस्त गुणों को बांध लिया है।

(१)

जिनके नेत्र पुष्प की पंखुड़ियों समान हैं,
जिनका मुख चंद्रमा समान सुदर्शन है,
और जिसकी नासिका चंपक से भी अधिक सुंदर है,
उन गोम्मटेश के समक्ष मैं सर्वदा नत हूं।

(२)

जो पवित्रता से आच्छादित है, जिनके गाल जल समान स्वच्छ हैं,
जिनके सुकर्ण कंधों तक पहुंचते हैं,
जिनकी विशाल बाहु गज के शुंड समान हैं,
उन गोम्मटेश के सामने मैं सर्वदा नत हूं।

(३)

जिनका सुंदर कंठ दिव्यशंख से भी चारु है,
जिनके ऊंचे कंधे हिमालय से भी उन्नत हैं,
जिनकी कमर अचल और दर्शनीय है,
मैं उन गोम्मटेश के सामने सर्वदा नत हूं।

(४)

विंध्य की चोटी के ऊपर प्रभासित,
सभी आकृतियों से श्रेष्ठ
त्रिलोक को आनंद देने वाले पूर्णचंद्र,
उन गोम्मटेश के सामने मैं सर्वदा नत हूं।

(५)

बेलों से बंधे महाशरीर,
मुक्ति के लाखों इच्छुकों के दाता-वृक्ष,
जिनके कमल-चरण देवों द्वारा पूजित हैं,
उन गोम्मटेश के सामने मैं सर्वदा नत हूं।

(६)

वे दिगंबर और भयमुक्त हैं,
जिन्हें वस्त्र की आवश्यकता नहीं,
जिनका मन विशुद्ध है,
जो सर्पों की फांस से भी विचलित नहीं,
उन गोम्मटेश के सामने मैं सर्वदा नत हूं।

(७)

जिनकी सत्यदृष्टि हर स्थान पर समान पड़े,
जिनके दोष और जिनकी वांछा समूल समाप्त है,
भरत पर जिनकी विजय वैराग्य भाव बन चुकी है,
उन गोम्मटेश के सामने मैं सर्वदा नत हूं।

(८)

उपाधियों से मुक्त-धन-धाम से मुक्त,
माया मोह को हरा कर, समत्व को प्राप्त,
बारहों मास उपवास रखनेवाले,
उन गोम्मटेश के सामने मैं सर्वदा नत हूं।

नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती

प्रस्तुति : रत्नाकर त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना का उपयोग कब करना

देश निश्चय ही एक गंभीर चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रहा है । ऐसे मौके पर निर्णयों का विशेष महत्त्व है । हमारा एक गलत निर्णय गलत परंपरा को विकसित कर सकता है । सोची-समझी रणनीति से लिये गये निर्णय कभी भी प्रश्न वाचक मुद्रा में मुंह बाये नहीं खड़े रहते, क्योंकि उसके पीछे एक सुदीर्घ चिंतन प्रक्रिया काम करती है, पर जब निर्णय हड़बड़ाहट अथवा जल्दबाजी में लिये जाते हैं, तब समस्या टालू मिक्स्चर पिलाने को सचेष्ट दिखायी देती है ।

स्थिति बेहतर होने के स्थान पर दुःखद परिस्थितियों की जनक होती है ।

संस्थाओं के प्रति अविश्वास

आज हमारी संसदीय कार्यप्रणाली की भूमिका इतनी लचीली तथा पिलपिली हो गयी है कि आम आदमी के मन में इन संस्थाओं के प्रति अविश्वास की भावना बलवती हो रही है, यदि हम विगत वर्ष के दौरान सेना के उपयोग पर कोई खाका बनाना चाहें,तो हमें यह देखकर आश्चर्य होगा कि सेना का उपयोग आंतरिक स्थिति को बरकरार रखने, कानून और व्यवस्था की स्थिति को चुस्त तथा दुरुस्त रखने में विशेष रूप से किया गया है ।

सेना का उपयोग क्योंकर जरूरी हो गया ? यह आज का यक्ष प्रश्न है । इस प्रश्न के साथ अनेक प्रतिप्रश्न जुड़े हुए हैं । क्या सेना के बिना काम नहीं चल सकता था ? क्या नागरिक प्रशासन अपना काम सही ढंग से नहीं कर पा रहा ? क्या सेना को सुपुर्द करने से स्थिति बेहतर होगी ? क्या यह समस्या का विकल्प है ? क्या नागरिक प्रशासन तथा सेना के बीच असामंजस्य का प्रतिफलन तो नहीं बन जाएगा ? सेना का प्रयोग किन परिस्थितियों में

आज हमारी संसदीय कार्यप्रणाली की भूमिका इतनी लचीली तथा पिलपिली हो गयी है कि आम आदमी के मन में इन संस्थाओं के प्रति अविश्वास की भावना बलवती हो रही है, यदि हम विगत वर्ष के दौरान सेना के उपयोग पर कोई खाका बनाना चाहें,तो हमें यह देखकर आश्चर्य होगा कि सेना का उपयोग आंतरिक स्थिति को बरकरार रखने, कानून और व्यवस्था की स्थिति को चुस्त तथा दुरुस्त रखने में विशेष रूप से किया गया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

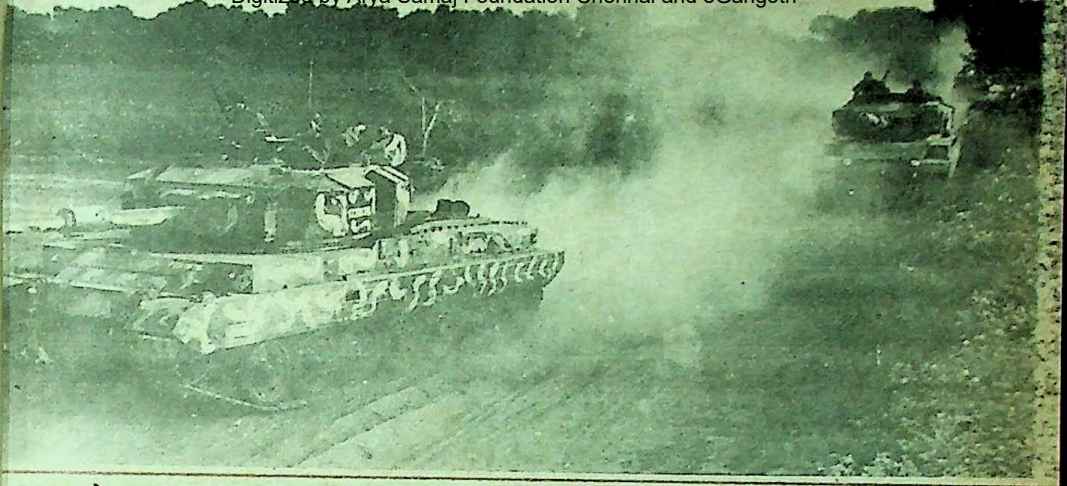

होना चाहिए । ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की जड़ें कहीं अपनी जमीन छोड़ती जा रही हैं, वे अपना काम मजबूती से नहीं कर पा रही हैं । जहां कोई दंगा हुआ, कोई घटना घटी, तुरंत सेना की डिमांड स्थानीय लोगों द्वारा होने लगती है । यह स्थिति

उचित है ?

● रंजना सक्सेना

क्या इन विचारों को परिपुष्ट नहीं करती कि हमारा पुलिस प्रशासन जिस पर कानून और व्यवस्था को बनाये रखने की जिम्मेदारी है, अपनी जिम्मेदारी निभाने में चूक कर रहा है । उसे शक के घेरे में क्यों रखा गया ?

बाहरी हस्तक्षेप के समय ही

सेना की भूमिका देश की बाहरी सीमा की सुरक्षा से विशेष रूप से जुड़ी हुई है। उसका विशेष कार्य बाहरी हमलों से देश की हिफाजत करना रहा है । जब सेना को आंतरिक सुरक्षा के तहत किसी विशेष स्थान पर लगाया जाता है, तब जरूरी हो जाता है कि सेना का समुचित सदुपयोग किया जाए ।

सेना का शानदार काम

भूतपूर्व चीफ ऑफ द आर्मी जनरल एस. एफ. रौड्रिग्स ने पिछले दिनों सैनिक समाचार पत्रिका को दिये साक्षात्कार में सेना के उपयोग पर एक टिप्पणी की है । उनसे जब यह पूछा गया, "वर्ष १९९२ इन अर्थों में एक घटनापूर्ण वर्ष रहा,जिसमें भारतीय फौजें आंतरिक सुरक्षा के दायित्व हेतु बुलायी गयीं, इन दायित्वों के निर्वाह में सफलता की दृष्टि से आप किन शब्दों में अपने विचार व्यक्त करेंगे ?" उनका जवाब था, "सन १९९२ में व्यापक रूप से बड़े पैमाने पर कानून और व्यवस्था की स्थिति को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए फौज को बुलाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

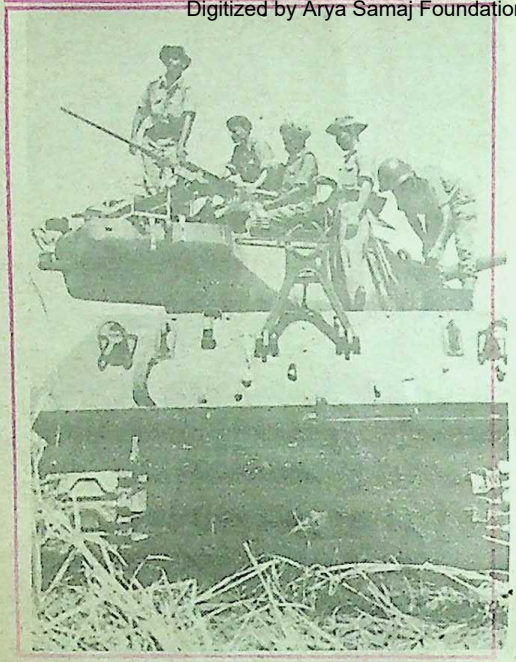

गया । ऐसे विभिन्न मौकों पर फौज ने अपेक्षानुसार शानदार काम किया । पंजाब में स्थानीय जनता में विश्वास पैदा होने के कारण नगरपालिका तथा राज्य विधानसभा के स्वतंत्र तथा निष्पक्ष चुनाव संभव हो सके । जम्मू-कश्मीर, असम और उत्तर-पूर्वी राज्यों में युद्धप्रिय (संघर्षरत) और विद्रोही गुटों पर निष्ठुर क्रिया द्वारा नियंत्रण पाया गया । लोगों के दिल और दिमाग को जीतने के लिए व्यापक पैमाने पर नागरिक कार्यक्रम आयोजित किये गये । मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि राष्ट्र निर्माण एक संयुक्त प्रयास है और हमारा काम दुर्भाग्यपूर्ण नहीं कहा जा सकता ।''

अवकाश प्राप्त लेफ्टीनेंट जनरल बिलमोरिया का मानना है कि हमारे लिए नागरिक सुरक्षा हेतु कानून और व्यवस्था की स्थिति को बरकरार रखने का काम कोई विशेष चीज नहीं है । जब हम देश के लिए जान देते हैं, तब अगर देश में कानून और व्यवस्था कमजोर होती है और हमें स्थिति को सामान्य बनाने हेतु बुलाया जाता है,तो हम पूरी मुस्तैदी से काम करते हैं । हमें मौका मिलता है कि हम प्राथमिक भूमिका अदा करें । राष्ट्रीय एकता का मामला हो अथवा देश का कोई और दुःख हमारी सेना हमेशा तैयार रहती है ।

आंतरिक रोल सेना का नहीं

पर पूर्व लेफ्टीनेंट जनरल वाई. एस. तोमर का मानना इससे बिलकुल भिन्न है, वे कहते हैं कि यह अच्छा नहीं है । बाहर से देश के खतरे का सामना करना तथा आंतरिक स्थिति को सुदृढ़ बनाना दोनों रोल हमारे अवश्य हैं, पर दूसरा रोल हमारा मुख्य काम नहीं है बल्कि हमारा मुख्य काम तो विदेशी खतरे से देश की सुरक्षा व्यवस्था कायम रखना है । बार-बार आंतरिक सुरक्षा एवं कानून-व्यवस्था को कायम करने हेतु फौज का इस्तेमाल, फौज पर अच्छा असर नहीं डालता । इससे उनकी ट्रेनिंग तथा उनकी बाह्य देशों के हमले से अपनी क्षमता और योग्यता में भी फर्क आता है । इस समस्या का हल फौज के बार-बार इस्तेमाल करने से नहीं बल्कि कानून और व्यवस्था के लिए जिम्मेदार प्रादेशिक पुलिस, रिजर्व पुलिस की क्षमता शक्ति को बढ़ाने और विश्वास पैदा करने में है । चूंकि लोगों का काम उस भरोसे को दुबारा कायम करना है । जितना ही भरोसा बढ़ेगा उतना ही फौज को बुलाने की जरूरत कम पड़ेगी ।

विश्वसनीयता समाप्त होती है

नेवी के अवकाश प्राप्त अधिकारी शर्मा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान्यता है कि सेना का उपयोग नागरिक सुरक्षा के तहत किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है, इससे सेना की विश्वसनीयता व कार्य-क्षमता पर आंच आने की संभावना तो है ही, साथ ही भविष्य में दुःखद संकेतों की वाहक भी है । सन १९६७ के कोचीन के बंदरगाह में सेना का प्रयोग नागरिक सुरक्षा एक कानून के तहत किया गया था, जिसमें ४०० नागरिक मारे गये । लोगों के बीच सैन्य बलों को अपनी इमेज बनाने में काफी समय लगा । लोग आज तक उस घटना को भुला नहीं पाये हैं, बल्कि सेना के प्रति आम आदमी के असंतोष के स्वर भी उभरे । अतः जरूरत इस बात की है कि सेना का उपयोग किन्हीं विशेष परिस्थितियों में होना चाहिए और यदा-कदा ही किया जाए तो श्रेयस्कर है । अधिकतर उपयोग से तो बाद में परेशानी ही बढ़ेगी ।

पुलिस सांप्रदायिक

समाज सुधारक स्वामी अग्निवेश का मानना है कि सैन्य बलों की मांग का मुख्य कारण यह है कि पुलिस प्रशासन अपने प्रांतीय संदर्भों में सांप्रदायिक होता जा रहा है इसलिए स्थानीय लोग पहले अर्द्धसैनिक बलों को पुकारते हैं, जब उनका भी रवैया साफ नहीं होता, तब पूर्व सैनिक बलों को याद किया जाता है । आमतौर से सेना को देश के अंदरूनी दंगे आदि सवालों पर हरगिज नहीं बुलाना चाहिए । सिवाय ऐसे मौके के जहां स्थानीय पुलिस का रवैया पूरी तरह अविश्वसनीय हो गया हो । अपवाद के रूप में कहा जा सकता है, जब बंबई पूरी तरह जल रही थी, तब ऐसी स्थिति आ गयी थी कि सेना को स्थिति नियंत्रण हेतु सौंपना चाहिए था, पर सेना को बुलाकर भी अधिकार नहीं सौंपा गया ।

पुलिस ही पर्याप्त

वरिष्ठ समाजशास्त्री डॉ. श्यामाचरण दुबे के शब्दों में, "किसी भी सदस्य देश में कानून और व्यवस्था बनाये रखने के लिए उसकी पुलिस ही पर्याप्त होनी चाहिए । पिछले दशकों में भारत में सामाजिक हिंसा इतनी अधिक बढ़ गयी है कि तरह-तरह के सशस्त्र रक्षाबलों का निर्माण आवश्यक हो गया है । केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, बी. एस. एफ., तिब्बत सीमा सुरक्षा बल, औद्योगिक सुरक्षा बल इत्यादि का गठन विशेष उद्देश्य से किया गया था, किंतु असामान्य स्थितियों में शांति और सुरक्षा के लिए भी बड़े

आंतरिक सुरक्षा के लिए लगायी गयी सेना आवश्यक रूप से विवादों के घेरे में आ सकती है । उस पर तरह-तरह के आरोप भी लगाये जा सकते हैं, यह एक दुःखद स्थिति है । हाल ही में पंजाब में सेना और पुलिस के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई थी जो न पंजाब के हित में थी और न देश के हित में । सेना को अपने मुख्य उत्तरदायित्व के लिए सजग और सक्षम बनाये रखना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापक रूप से उसका उपयोग किया जाता है । इन केंद्रीय बलों के अतिरिक्त राज्यों ने भी सशस्त्र बल गठित किये हैं । इन सबके होते हुए भी कई स्थितियां ऐसी आती हैं कि जिनमें सेना का आना अनिवार्य हो जाता है ।

वस्तुस्थिति का विश्लेषण हमें दो निष्कर्षों पर पहुंचाता है । पहला यह कि पुलिस सशस्त्र बल स्थिति का मुकाबला करने को सक्षम नहीं है । दूसरा सेना को भी आंतरिक स्थिति के लिए लगाया जाना जरूरी हो गया है ।

सेना आंतरिक सुरक्षा के लिए गठित नहीं की जाती । उसका उद्देश्य होता है बाहरी हमले से देश की रक्षा करना । सेना के उच्चाधिकारी इस बात से दुःखी हैं कि उनकी शक्ति का उपयोग पुलिस के सामान्य कार्य के लिए किया जाता है । इससे सेना के प्रशिक्षण में व्यवधान होता है और बाहरी सुरक्षा के लिए पर्याप्त रूप से तैयारी नहीं की जा सकती । सेना जब बाहरी आक्रमण का सामना करती है, तब वह देश के लिए लड़ती है और उसके सामने शत्रु का रूप स्पष्ट होता है । आंतरिक सुरक्षा के कार्य में शत्रु की छवि विभाजित होती है । ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद कुछ सिख टुकड़ियों में आक्रोश बढ़ा था और विद्रोह के लक्षण भी दिखायी पड़े थे । धार्मिक, क्षेत्रीय और जातीय विवादों में सेना का उपयोग उचित नहीं है, इससे उसकी निष्ठा विभाजित होती है । बार-बार सेना का उपयोग करना शासन की छवि को भी धूमिल करता है साथ ही पुलिस का भी मनोबल गिरता है, हमारी सेना अभी तक भारतीय एकता का प्रतीक रही है । निष्ठाओं का विभाजन उसके लिए घातक होगा ।

आंतरिक सुरक्षा के लिए लगायी गयी सेना आवश्यक रूप से विवादों के घेरे में आ सकती है । उस पर तरह-तरह के आरोप भी लगाये जा सकते हैं, यह दुःखद स्थिति है । हाल ही में पंजाब में सेना और पुलिस के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई थी जो न पंजाब के हित में थी और न देश के हित में । सेना को अपने मुख्य उत्तरदायित्व के लिए सजग और सक्षम बनाये रखना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए ।

—सेक्टर-४, फ्लैट नं.-८, पॉकेट नं. बी-८,
रोहिणी, दिल्ली-८५

मशरूमों से कैंसर की दवा

कैंसर जैसे खतरनाक रोग के उपचार के लिए रोजाना ही अनेक देशों में अनुसंधान हो रहे हैं, कैंसर का नाम लेते ही रोग की भयावहता के दर्शन से होने लगते हैं ।

दक्षिणी-कोरिया की 'कांगडान फार्मास्युटिकल' कंपनी ने अपने गहन-अनुसंधान के बाद मशरूमों के अर्क से कैंसर के इलाज की दवा विकसित की है ।

पुणे से प्रकाशित 'हैराल्ड ऑफ हैल्थ' में प्रकाशित विवरण-अनुसार कैंसर की रोकथाम के लिए यह दवा अत्यंत उपयोगी है । इससे आमाशय, मलाशय, ग्रसनी और बड़ी आंत के कैंसर का इलाज सुगमतापूर्वक किया जा सकता है ।

□ ऋषि मोहन श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

मो. निजामुद्दीन, वारंगल (आ. प्र.), किशोरी लाल आर्य, डुमका ; रेखा पांडेय, जबलपुर

● **झंडा गीत—'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा'—के रचयिता कौन थे ?**

☐ झंडा-गीत के रचयिता स्वर्गीय श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' थे । इनका जन्म १६ सितंबर, १८९५ को नरवल, जिला कानपुर, में हुआ था । यह गीत लिखने के लिए 'प्रताप' (कानपुर) के संपादक अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी ने अप्रैल,१९१४ में इनको प्रेरित किया था । इन्होंने दो गीत लिखकर गणेश शंकरजी को दिये, जो राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन के पास भेज दिये गये । टंडनजी ने एक गीत, 'राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति, राष्ट्रीय पताका नमो-नमो', को अस्वीकार कर दिया और 'विजयी विश्व' को कुछ संशोधनों के बाद स्वीकार कर लिया । श्यामलालजी नरवल की ही एक पाठशाला में अध्यापक थे और स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक बार जेल भी गये । उन्होंने व्रत लिया था कि स्वतंत्रता प्राप्ति तक न वह पैरों में जूता-चप्पल पहनेंगे और न छाता आदि इस्तेमाल करेंगे ।

झंडा-गीत के रचयिता
स्वर्गीय श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

विजयकुमार कर्वा, हसपुरा (औरंगाबाद)

● **अगले ओलिंपिक खेल कहां होंगे ?**

☐ सिडनी (आस्ट्रेलिया) में । इसके लिए मैनचेस्टर (इंगलैंड) और बेजिंग (चीन) भी दावेदार थे, किंतु सुविधाओं की दृष्टि से सिडनी को पसंद किया गया ।

संजय कुमार द्विवेदी, अजयगढ़ (पन्ना)

● **साबूदाना की फसल होती है या किसी विधि से तैयार किया जाता है ?**

☐ सागू के बीजों का सत निकालकर उसकी लुगदी बनाते हैं । इसको उबालकर फिल्टर करने के बाद महीन छेदोंवाले सांचों में डालते हैं जिससे बूंदी के आकार में सागूदाना बनता है । (विस्तृत उत्तर सितम्बर, १९८८ अंक में देखें) ।

रामेश्वर वर्णवाल, झुमरी तिलैया (बिहार)

● **भूकंप के मूल कारण क्या हैं ?**

☐ पृथ्वी की सतह का अचानक ठंडा होकर सिकुड़ जाना, कुछ प्रसुप्त ज्वालामुखियों का सक्रिय हो जाना और पृथ्वी के गर्भ में अत्यधिक गरमी से जल का भाप में बदल जाना, जिसके कारण भाप के बाहर निकलने की कोशिश में पृथ्वी की परतें टूटने लगती हैं—ये कुछेक मूल कारण बताये जाते हैं । विस्तृत जानकारी के लिए 'कादम्बिनी' के 'गोष्ठी' स्तंभ के पिछले अंक देखें ।

धर्मेन्द्र कुमार दूबे, बड़हलगंज

● **भारत में प्रकाशित सर्वप्रथम दैनिक समाचारपत्र का क्या नाम था ?**

☐ 'द बेंगाल गजेट' को भारत का प्रथम समाचारपत्र बताया जाता है । इसका प्रकाशन २९ जनवरी, १७८० से प्रारंभ हुआ था । आगे चलकर इसका नाम 'द इंग्लिश मैन' हो गया था । (नॉलेज-बैंक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वंदना डोभाल, काशीपुर

● **सूर्य के केंद्र और उसकी सतह के तापमान में कितना अंतर है ?**

☐ सूर्य के केंद्र का तापमान १ करोड़ ४० लाख से २ करोड़ अंश सेंटिग्रेड तथा सतह का मात्र ६ हजार अंश सेंटिग्रेड है ।

संजय कथूरिया, नयी दिल्ली

● **अपनी आवश्यकताभर जल ग्रहण करके हमारा शरीर अतिरिक्त जल कहां रखता है ?**

☐ यह शरीर के विभिन्न भागों में जमा हो जाता है, जिनमें हमारी आंतें, यकृत, मांसपेशियां और गुरदे शामिल हैं । जो पानी हम पीते हैं, वह हमारे पेट और आंतों से हमारे रक्त में सम्मिलित होता जाता है । मानव शरीर में लगभग ६० प्रतिशत पानी होता है ।

संजीव कुमार सज्जन, मुजफ्फरपुर

● **'मरणं विन्दुपातेन जीवनं विंदुधारणात' का अर्थ क्या है और कहां से उद्धृत है ?**

☐ इसका अर्थ है बूंद-बूंद के क्षरण से मृत्यु, और संचयन से जीवन प्राप्त होता है । यह आप्त वाक्य है । इस प्रकार के अनेक वाक्य मिलते हैं जिनके स्रोत का पता नहीं है । ऋषियों ने कभी कहे थे, जो स्फुट रूप में संकलित हो गये ।

अभय कुमार, सीतामढ़ी

● **भारत में कितने रेलवे स्टेशन हैं ?**

☐ भारत में ७,०९३ रेलवे स्टेशन बताये जाते हैं, किंतु यह संख्या अद्यतन नहीं हो सकती, क्योंकि रेलवे विकास के क्रम में है अतएव यह संख्या बढ़ती रह सकती है ।

अमरेन्द्र कुमार, पुपरी (सीतामढ़ी)

● **शास्त्रीय नृत्य के आद्य ज्ञाता और आद्य-नर्तक कौन हैं ?**

☐ भगवान शंकर को आद्य ज्ञाता एवं आद्य नर्तक माना जाता है ।

श्यामाकांत पाठक, आरा

● **ब्रिटेन में एशियाई क्या द्वितीय श्रेणी के नागरिक हैं ?**

☐ अब स्थिति बदल चुकी है । संघर्ष करके वे अपने बहुत कुछ अधिकार प्राप्त कर चुके हैं । अब वे डरकर नहीं रहते । चित्र में आंदोलनकारी भारतीयों का एक जुलूस देखा जा सकता है ।

भूपेश कुमार मिश्र, हजारीबाग

● **भारत के शास्त्रीय नृत्य और संगीत विदेशों में कितने सीखे जाते हैं ?**

☐ भारतीय नृत्य और संगीत के प्रति पश्चिमी देशों में अत्यधिक आकर्षण है । सितारवादक रवि शंकर, सरोद वादक अमजद हुसैन और तबलावादक जाकिर हुसैन यूरोप और अमरीका में कितने पसंद किये जाते हैं यह सर्वविदित है । भारतीय नृत्यों की नियमित शिक्षा के लिए भारत और ब्रिटेन की सरकारें संयुक्त रूप से प्रयासरत हैं तथा लंदन स्थित भारतीय विद्या भवन आर्ट्स इंस्टिट्यूट की भूमिका विशेष महत्त्व की है ।

बंबई की प्रिया पवार जो अपने पति प्रताप के साथ ग्लास्गो में कथक और ओडिसी नृत्य सिखाने के लिए भेजी गयी थीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदकिशोर नेताम, आष्टा (म. प्र.)

● हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई के प्रतिफल क्या हैं ?

☐ हड़प्पा और मोहनजोदड़ो आदि स्थानों में १९२२ में हुई खुदाई से पहले यह माना जाता था कि भारतीय सभ्यता का जीवनकाल ४००० वर्ष से अधिक नहीं है । किंतु उक्त स्थानों में हुई खुदाई से प्राप्त अवशेषों ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत में सभ्यता का विकास वेदों की रचना से बहुत पहले हो चुका था । सिंधु सभ्यता के बारे में पुरातत्वविदों का मत है कि वह अब से ५००० वर्ष पूर्व भी विद्यमान थी । इस खोज से पहले प्राचीनतम सभ्यताओं में केवल सुमेर, अक्काद, बेबीलोन, मिस्र और असीरिया का नाम लिया जाता था ।

विश्वनाथ शर्मा, धार

● शहद का उपयोग कब से किया जाता है ?

☐ प्रकृति के अद्भुत उत्पादों में शहद भी एक है । इसका उपयोग प्राचीनकाल से होता आया है, क्योंकि शर्करा प्राप्ति का यह तब एकमात्र साधन था । आयुर्वेद के ग्रंथों में इसका उल्लेख औषधि के रूप में किया गया है । फलों को सुरक्षित रखने तथा कई प्रकार के अन्य खाद्य पदार्थों को तैयार करने के संबंध में भी इसका उल्लेख किया गया है । मिस्र में शवों को 'ममी' के रूप में सुरक्षित रखने के लिए भी इसकी चर्चा की गयी है । बाइबिल, कुरआन तथा यूनान के अनेक प्राचीन ग्रंथों में इसका उल्लेख मिलता है । विषरोधी होने के कारण शहद का उपयोग प्राचीनकाल से हो रहा है । घावों को ठीक करने के लिए इसका उपयोग किया जाता था ।

सुशील गुप्त, ग्वालियर

● संयुक्त राष्ट्र संघ की वर्तमान सदस्य संख्या क्या है ?

☐ मैसेडोनिया के सदस्य बनने से यह संख्या १८१ हो गयी है ।

रघुवंश उपाध्याय, डाल्टनगंज

● चैतन्य महाप्रभु का जन्म संबंधी तथा अन्य परिचय क्या है ?

☐ चैतन्य का जन्म बंगाल के नवद्वीप में सन १४८६ की पूर्णिमा के दिन हुआ था । उनका वास्तविक नाम विश्वम्भर था । इनको लोग निमई तथा गौरांग के नाम से भी जानते हैं । इनके पिता का नाम जगन्नाथ मिश्र और माता का शचि था । अपनी पहली पत्नी लक्ष्मी के निधन के बाद इन्होंने एक संपन्न परिवार की कन्या विष्णुप्रिया के साथ विवाह किया था ।

विक्रम यादव, सहरसा

● डिश एंटेना क्या हैं ?

☐ डिश एंटेना एक पैराबोलीय एंटेना है जो भूस्थिर उपग्रहों से परावर्त्तित दूरदर्शन संकेतों को ग्रहण करता है । चूंकि उपग्रहों द्वारा परावर्तित संकेतों की तीव्रता कम होती है, इसलिए साधारण एंटेना से चित्र स्पष्ट नहीं दिखते । डिश एंटेना सभी उपग्रह संकेतों को अपने नाभिक पर संकेंद्रित करके केबल द्वारा टी. वी. सेटों पर स्पष्ट तौर पर पहुंचा देता है ।

चलते-चलते

● किसी महिला के हाथ में बेलन और स्टिक दोनों हों तो क्या समझेंगे ?

☐ आप निश्चिंत रहिए, वह समर्पित होना चाहती है, बचाव करना नहीं ।

—सूत्रधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अद्भुत कला

मानसिक और एकदम पागल मरीजों का इलाज

● मांगेराम शर्मा

और अधिक कर पाने की लालसा, आसमान को पकड़ने की इच्छा, और फिर उसमें मिलनेवाली असफलता मानसिक बीमारियों को जन्म देती है । शरीर में व्याप्त वायु, पित्त, कफ का जब संतुलन बिगड़ जाता है तो इनसान मानसिक संतुलन खो बैठता है । नशीले पदार्थ स्मरण शक्ति को कमजोर करते हैं । दूषित वायु भी मानसिक रोगियों की संख्या में बढ़ोत्तरी का एक कारण है ।

फरीदाबाद जिले के बल्लभगढ़ खंड में, बी.टी. रोड पर स्थित झाड़सेंतली में मानसिक रोगियों का आयुर्वेदिक औषधालय है, जिसमें एम.बी.बी.एस. डॉक्टर सहित उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान से आये मानसिक रोगी भरती हैं । औषधालय के वैद्य श्री नरोत्तम शास्त्री के अनुसार यहां महीने में १०० से १५० रोगी आते हैं, जिनमें अधिकतर मानसिक विकारों से ग्रस्त होते हैं । ८४ वर्षीय नरोत्तम शास्त्री का जन्मस्थान अल्मोड़ा है । काशी से इन्होंने 'शास्त्री' की उपाधि प्राप्त की तथा १९५२ में लखनऊ से वैद्य की डिग्री ली । वैसे १९४२ से वे यहां रोगियों का इलाज कर रहे थे ।

हर बीमारी का इलाज

शास्त्रीजी नाड़ी की गति एवं धड़कन से बीमारी ढूंढ़ निकालने में सिद्धहस्त हैं । मरीज को शब्दों से बीमारी बखान करने की आवश्यकता नहीं पड़ती । वैद्यजी हर प्रकार की बीमारी का इलाज करते हैं, जो ला-इलाज हो, उसे स्पष्ट तौर पर मरीज को बता देना इनकी विशेषता है । झाड़सेंतली तथा आसपास के गांव में 'बाबा' के नाम से जाने-जानेवाले वैद्य शास्त्रीजी का लोग अपने परिवार के बुजुर्ग की तरह सम्मान करते हैं ।

शास्त्रीजी ने वेदों सहित अनेक प्राचीन ग्रंथों का गहन अध्ययन किया है । वे बताते हैं कि प्राचीन ग्रंथ आयुर्वेद का खजाना हैं, उनके अध्ययन के बिना कोई भी वैद्य अपने मरीजों के साथ न्याय नहीं कर सकता । अथर्ववेद आयुर्वेद का ही ग्रंथ है । औषधियों का गुण-धर्म बतानेवाले ग्रंथों को निघंटु कहते हैं, औषधियों के निर्माण अथवा मिश्रण का ज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

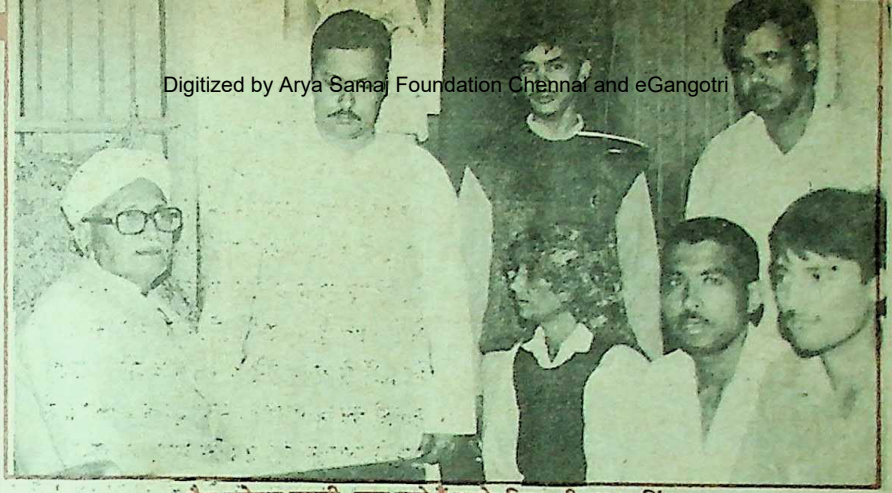

वैद्य नरोत्तम शास्त्री, पास खड़े हैं उनके शिष्य श्री जगत सिंह

यहां से प्राप्त होता है । वैद्यजी ने महाप्रकाश, सरंगधर, सुरसत महाप्रकाश आदि अनेक ऐसी पुस्तकों का अध्ययन किया है ।

चिकित्सक और रोगी

उनका मानना है कि केवल औषधियों का ज्ञान होना ही वैद्य के लिए काफी नहीं है, वैद्य को नैतिक दृष्टि से भी पूर्ण होना चाहिए । उसका मन एवं आत्मा शुद्ध होनी चाहिए । योग दर्शन एवं न्याय दर्शन का पूर्ण ज्ञान वैद्य को होना चाहिए । वे दावा करते हैं कि चिकित्सक के व्यवहार एवं चरित्र का प्रभाव रोगी पर पड़ता है । अगर चिकित्सक मन, वचन, कर्म, आस्था एवं लगन से रोगी के साथ न्याय करता है, उसका इलाज करता है, तो सवाल ही पैदा नहीं होता कि रोगी को निरोगी न कर सके ।

चिंता—चिता समान

चिंता चिता समान है । इसका सीधा संबंध पेट एवं मस्तिष्क से है । व्यक्ति जहां चिंतित हुआ, वहीं चंद मिनटों में ही पेट दर्द एवं सिर दर्द ने उसे जकड़ा । उसके शरीर में व्याप्त वायु, पित्त, कफ का संतुलन डगमगा जाता है, इसी संतुलन को बनाना आयुर्वेद का गुण है । वैद्य नरोत्तम शास्त्रीजी अंगरेजी चिकित्सा पद्धति के कट्टर विरोधी हैं । उनका मानना है कि ये दवाइयां अस्थायी तौर से रोगी को राहत देती हैं तथा स्थायी तौर पर एक नयी बीमारी उसकी झोली में डाल देती हैं । अंगरेजी दवाइयां व्यक्तियों को निराशावादी बनाती हैं, उसे जिंदगी से मौत की ओर ले जाती हैं । लंबे समय से एलोपैथी दवाइयां ले रहे व्यक्ति मौत के इंतजार में शेष जीवन काट देते हैं । तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी वैद्य नरोत्तम शास्त्री ने कभी एलोपैथी दवाइयों का सेवन नहीं किया है और न ही वे अपने औषधालय में एलोपैथिक दवाइयां रखते हैं ।

चिकित्सा-विधि

रोगियों का इलाज करने की अपनी विधि के बारे में वैद्यजी कहते हैं कि वे सर्वप्रथम रोगी की नब्ज देखते हैं, जिससे उन्हें पता चलता है कि शरीर के कौन से अंग में क्या विकार है और इसकी जड़ कहां है । बीमारी की सही जड़ की पहचान ही आयुर्वेद का मूल मंत्र है । आयुर्वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झाड़सैंतली ग्राम में स्थित वैद्य श्री नरोत्तम शास्त्री का औषधालय, चिकित्सालय कम एक आश्रम अधिक लगता है । यों तो वैद्यजी प्राय: हर रोग की चिकित्सा करते हैं, पर उनके यहां मनोरोग से ग्रस्त लोगों की भीड़ अधिक होती है, इसलिए कि ऐसे रोगी उनके उपचार से पूर्ण स्वस्थ होकर लौटते हैं ।

में जड़ से बीमारी को उखाड़ा जाता है । उन्होंने खेद व्यक्त किया कि यहां मरीज हर तरफ से निराश हो जाने के बाद आता है । पहले जमाने में आयुर्वेद पद्धति के प्रति लोगों का विश्वास था, यह लंबा चलता है, तत्काल राहत नहीं दे पाता, आज लोगों की रफ़्तार तेज है, जीवन छोटा है, इच्छाएं अधिक हैं, सब-कुछ जल्दी चाहिए । जब जल्दी के चक्कर में देर हो जाती है, चल पाने की हिम्मत खतम हो जाती है,तो देशी दवाइयां देनेवाले वैद्यों के ठिकानों की खोज-खबर की जाती है ।

वैद्य को पहले अंगरेजी दवाइयों द्वारा पैदा किये गये शरीर के भीतरी प्रदूषण को शुद्ध करना पड़ता है, तब उसका इलाज किया जाता है । उन्होंने कहा कि ऐसे मानसिक रोगी जिनके दिमाग में बिजली लगायी जा चुकी है, और जिनकी धमनियां क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं, उनका आयुर्वेद में इलाज संभव नहीं है ।

ग्रामीण अंचल में स्थित औषधालय

श्री नरोत्तम शास्त्री का मानसिक औषधालय लगभग चार कनाल जमीन पर है । झाड़सेंतली ग्राम पंचायत ने उन्हें दी है । बिलकुल ग्रामीण वातावरण, आवश्यक सुविधाओं के अभाव में उनका यह औषधालय उनके गुणों के प्रयास से वर्षों से अनगिनत परिवारों के बुझते दीपकों को प्रकाशमान कर रहा है । जब हम उनके औषधालय में गये, तो हमें वहां हिसार के एक एम.बी.बी.एस. डॉक्टर मानसिक रोगी के रूप में मिले । वे देश के बड़े-बड़े शहरों में इलाज करवाने के बाद अब वे वहां भरती थे । हमने उनसे मुलाकात की । गांव में लोगों ने बताया कि पहले से इनकी स्थिति काफी ठीक है । भैंसरावली गांव से एक मानसिक रोगी निरोग होकर, उस दिन अपने गांव वापस जा रहा था । उसने १५ दिनों तक वैद्यजी से इलाज करवाया ।

औषधालय से अधिक आश्रम

मुजफ्फरनगर के चिरकावल कस्बे से २१ वर्षीय मानसिक रोगी को उसके माता-पिता वैद्यजी के पास लेकर आये थे । उन्होंने हमें बताया कि चार वर्ष पहले उनके कस्बे के दो रोगियों को वैद्यजी ने नया जीवन दिया । इसी विश्वास के साथ वे वैद्यजी के पास आये हैं । मथुरा, पानीपत, गाजियाबाद, दिल्ली, नजफगढ़, देशाऊ तथा भरतपुर से आये मानसिक रोगी वैद्यजी के औषधालय में भरती थे । ये लोग ७ से १० दिनों से यहां थे । उनके परिवार के लोगों ने बताया कि उनके रोगियों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत सुधार हुआ है । हमने भी रोगियों से बातचीत की और उनमें निराशा का अभाव देखा, आशा उनकी आंखों में पढ़ी जा सकती थी । हमें यह स्थान औषधालय से अधिक आश्रम-सा लगा । पेड़ों के नीचे चारपाइयों पर लोग बैठे हैं, सब बातचीत में मशगूल. बातचीत का विषय घर के दुःख-दर्द से लेकर अंतरराष्ट्रीय समस्याएं । यह ढूंढ़ पाना मुश्किल था कि कौन बीमार है और कौन तीमारदार । वैद्य हर एक के पास जाकर उसके सिर पर हाथ फेरते हैं और उसका कुशलक्षेम पूछते हैं, जैसे वह उनके अपने जिगर का टुकड़ा हो ।

झाड़सेंतली गांव की एक महिला वैद्यजी एवं यहां रहनेवाले लोगों के लिए भोजन लेकर आयी थी । उसके घर भोज हुआ था ।

वैद्य श्री नरोत्तम शास्त्री ने बताया कि झाड़सेंतली, जाजरू तथा कलेश गांव के लोग हर फसल पर उन्हें अनाज देते हैं, जिन्हें बेचकर वे औषधालय का खर्च चला रहे हैं । उन्होंने पलवल के छज्जू नगरवासी चेतीलाल वर्मा का विशेष उल्लेख किया, जिनसे उन्हें नियमित धनराशि मिलती रहती है । उन्होंने बताया कि वे हरिद्वार, देहरादून तथा दिल्ली से जड़ी-बूटियां लेकर आते हैं, तथा उन्हें देशी विधि से पीसकर दवाइयां बनायी जाती हैं । उनका कहना है कि मिक्सी में मिश्रण गरम हो जाता है, जिससे उसकी तासीर बदल जाती है । वैद्यजी ने कहा कि वे अंबर, मोती, सोने से बनायी जाने वाली महंगी दवाइयों का पैसा मरीजों के घरवालों से लेते हैं । कम कीमत की दवाइयां निशुल्क दी जाती हैं । यहां केवल उन्हीं रोगियों को रखा जाता है, जिन्हें उनके घरवाले घर में संभाल नहीं पाते । इलाज के साथ परहेज जरूरी है अन्यथा दवाई कई बार बेअसर भी हो जाया करती हैं । उन्होंने बताया कि यहां रहने वाले लोग अपने खाने-पीने का इंतजाम स्वयं करते हैं ।

वैद्यजी के शिष्य जगत सिंह पिछले बाईस वर्षों से यहां उनका हाथ बंटा रहे हैं । आयुर्वेद रत्न की डिग्री प्राप्त जगत सिंह वैद्यजी के सभी गुणों को समेट लेने के लिए कमर कसे हुए हैं और वैद्य नरोत्तम शास्त्री भी उन्हें सर्वगुण संपन्न बनाने में लगे हैं । वे चाहते हैं कि उनके न रहने पर भी इस औषधालय से रोगी निरोग होकर जाए । भावनात्मक रूप से भी वैद्यजी इस औषधालय के साथ जुड़े हुए हैं । सुविधाओं का अभाव है । जमीन में खारा पानी है । धनाभाव के कारण वे रोगियों को वे सुविधाएं नहीं दे पा रहे हैं, जैसी कि वे देना चाहते हैं । फिर भी लोगों की श्रद्धा, आस्था, विश्वास और प्रेम वैद्यजी को हालात के साथ समझौता करने पर मजबूर कर रहा है । वैद्यजी आयुर्वेद के माध्यम से भारत को दुनिया के क्षितिज पर उसी स्थान पर लाना चाहते हैं, जहां से भारत को सोने की चिड़िया का नाम मिला था ।

—प्रेस सलाहकार (राजनीतिक), हरियाणा सरकार, कमरा नं. २४ए, हरियाणा भवन, कापरनिक्स मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

नाशान्तो नासमाहितः ।

(कठोपनिषद् १/२/२३)

अशांत और असमाहित मनुष्य मूलतत्व का साक्षात्कार नहीं कर सकता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व का प्रथम उपन्यासकार

सुबंधु

● प्रमोद भारतीय

साहित्य में उपन्यास पिछली दो शताब्दियों से एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित हुआ है। 'उपन्यास' शब्द वैसे तो एक भारतीय शब्द है, परंतु यह अंगरेजी के 'नॉवल' के रूपांतर के रूप में सर्वप्रथम बंगला और उसके अनंतर गुजराती, मराठी, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में आया। और इस प्रकार हम इस बिंदु पर पहुंचते हैं कि भारतीय साहित्य में उपन्यास की इस विधा के पल्लवित व पुष्पित होने में हम पाश्चात्य साहित्य के ऋणी हैं।

बहुत कम लोगों ने इस ओर ध्यान दिया होगा कि जिस विधा को आज उपन्यास अथवा 'नॉवल' कहा जा रहा है, वह आज से चौदह-सौ वर्ष पूर्व से ही हमारे साहित्य में विद्यमान है। छठी-सातवीं शताब्दी के तीन महान साहित्यकार—सुबंधु, दंडी तथा बाणभट्ट—ने गद्य साहित्य प्रणयन की जिस परंपरा का सूत्रपात किया था वह आज भी निर्बाध गति से अपनी मंजिलें तय कर रही है। संस्कृत के इन तीनों साहित्यकारों की तीनों कृतियां, 'वासवदत्ता', 'दशकुमारचरित' तथा 'कादम्बरी'—आज के उपन्यास ही तो हैं। अंतर केवल शब्दों तथा लेखन-शैली का हो सकता है। उन दिनों इन्हें 'आख्यायिका' अथवा 'कथा' कहा जाता था और आज इन्हें उपन्यास अथवा 'नॉवल' कहते हैं। अन्यथा उपन्यास के लिए आज जिन छह तत्वों की आवश्यकता होती है, वे सभी-कथानक, चरित्र-चित्रण, संवाद, देश-काल, शैली तथा उद्देश्य इन तीनों रचनाओं में विद्यमान हैं। और इस आधार पर यदि यह अनुमान लगाया जाए कि पाश्चात्य उपन्यासकार इन्हीं आख्यायिकाओं व कथाओं से प्रेरित होकर उपन्यास लेखन की ओर प्रवृत्त हुए होंगे, तो कोई विस्मय नहीं होना चाहिए।

संस्कृत के अन्य साहित्यकारों की भांति हम इन तीनों कृतिकारों के विषय में भी पर्याप्त जानकारी नहीं रखते। इनमें यदि थोड़ी-बहुत सूचना मिलती भी है तो वह बाणभट्ट के ही विषय में है। बाणभट्ट ने अपनी आख्यायिका 'हर्षचरित' में अपने विषय में प्रायः पर्याप्त सूचना दी है। इसके अनुसार वह पुष्पपुर (बिहार प्रदेश के गया जिले के निकट) के निवासी थे और राजा हर्षवर्धन के राजकवि थे। चूंकि सम्राट हर्षवर्धन का काल सातवीं शताब्दी है इसलिए बाणभट्ट का काल भी स्वतः सातवीं शताब्दी सिद्ध हो जाता है। सुबंधु के विषय में अधिकांश मतों के आधार पर यही कहा जा सकता है कि वह छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुए होंगे। उन्हें कुछ विद्वान मालवा के निवासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानते हैं और यह विचार प्रकट करते हैं कि वह महान वैयाकरण वररुचि के भतीजे तथा महाराज विक्रमादित्य के राजकवि थे । गया के पास के एक अभिलेख का भी अध्ययन करने पर उन्हें छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध का साहित्यकार ठहराया जा सकता है । बाणभट्ट ने भी अपनी रचना में चूंकि इनका उल्लेख किया है अतः यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वह बाण के पूर्ववर्ती हैं । कुछ लोग इन्हें बंगाल से भी जोड़ने की चेष्टा करते हैं, क्योंकि एक स्थल पर ये मछली तथा उसे पकड़ने की भी चर्चा करते हैं । सुबंधु वैष्णव मत के माननेवाले थे क्योंकि इनकी 'वासवदत्ता' में आरंभिक मंगल-श्लोक में विष्णु की स्तुति की गयी है ।

सुबंधु के नाम से केवल 'वासवदत्ता' नाम की ही कृति पायी जाती है । वैसे कहने को तो यह एक राजकुमार और राजकुमारी की प्रणयकथा है, परंतु इसकी वर्णनशैली, शब्द-चयन, रस-परिपाक तथा अलंकारों के अद्‌भुत प्रयोगों ने इसे बड़ी ही रोचक व ऐतिहासिक कृति बना दिया है । संक्षेप में इसकी कथावस्तु कुछ इस प्रकार है—

किसी चिंतामणि नाम के राजा का कंदर्पकेतु नाम का बड़ा ही तेजस्वी पुत्र था । एक बार इस सुंदर राजकुमार ने स्वप्न में एक अनिंद्य सुंदरी को देखा । इस सुंदरी का नाम वासवदत्ता था । इस रमणी के रूप-यौवन ने राजकुमार के हृदय पर आक्रमण कर दिया । फलस्वरूप प्रातः उठते ही वह उसकी खोज में निकल पड़ा । उसके मित्र मकरंद ने जब उसकी यह दशा देखी, तब उसे बहुत समझाया परंतु जब उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा, तब उसके पीछे उसकी सुरक्षा में वह भी निकल गया । थोड़ी देर बाद वे विंध्यपर्वत को पहुंचे जिसकी एक ओर रेवा नदी बहती थी । जब संध्या हुई तब दोनों मित्र जामुन के

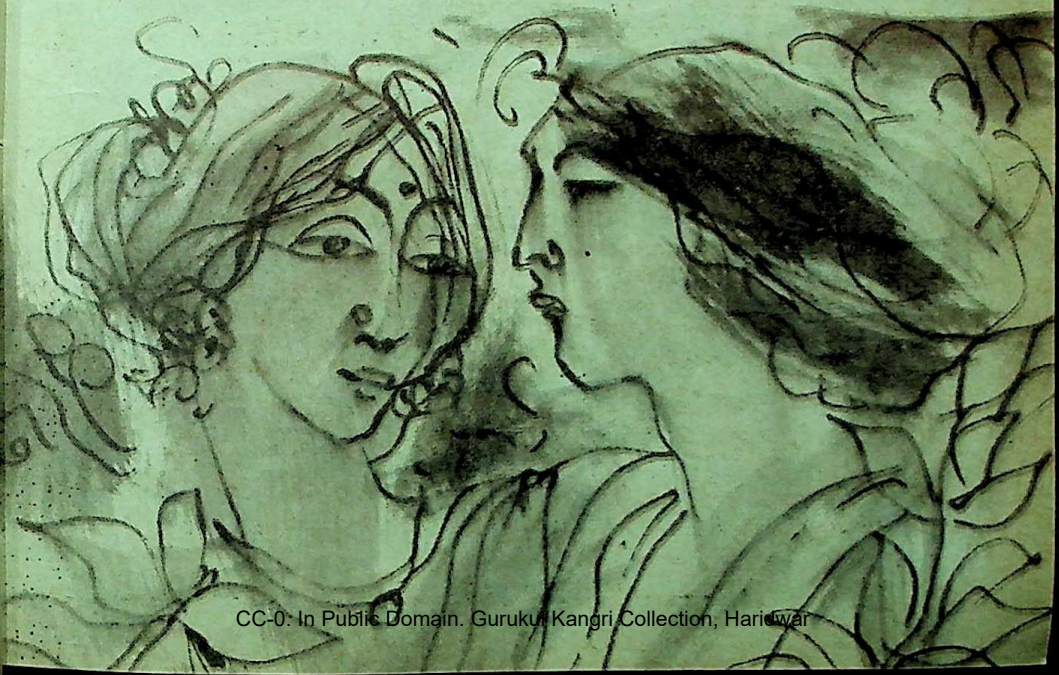

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पेड़ के नीचे विश्राम करने लगे। रात्रि में जब दोनों सो रहे थे तभी पेड़ पर एक शुक अपनी सारिका से कह रहा था कि मैं आज देर से इसलिए नहीं आया कि मैं किसी और प्रिया के साथ रमण कर रहा था, बल्कि सत्य तो यह है कि मैं एक कहानी सुनकर आया हूं जो तुम्हें सुना रहा हूं।

गंगा के किनारे कुसुमपुर नाम की एक नगरी है। वहां के राजा शृंगारशेखर को बहुत काल के बाद अपनी प्रमुख रानी अनंगवती से एक कन्या हुई। इस रूपवती कन्या का नाम वासवदत्ता रखा गया। देखते ही देखते राजा की यह कन्या अठारह वर्ष की युवती हो गयी और उसका मादक यौवन चीख-चीख कर भटकते हुए भ्रमरों को निमंत्रण देने लगा। उसके लिए रचाये गये स्वयंवर में उसने किसी राजा को नहीं सुना। उसी रात उसने स्वप्न में एक वीर व तेजस्वी राजकुमार को देखा। वह राजकुमार कोई और नहीं बल्कि कंदर्पकेतु ही था। बस क्या था उसका समस्त शरीर काम की अग्नि में दहकने लगा। इस अवस्था को देखकर उसकी एक विश्वस्त सखी तमालिका उसकी इस अनुरक्ति के प्रति कंदर्पकेतु की प्रतिक्रिया जानने के लिए चल पड़ी और वह मेरे साथ ही यहां तक आयी है और वृक्ष के नीचे खड़ी है। इसके बाद शुक चुप हो गया।

फिर वृक्ष के नीचे मकरंद ने वासवदत्ता के प्रेम में विक्षिप्त अपने मित्र की दयनीय अवस्था का वर्णन किया, तब तमालिका न केवल प्रसन्न हुई अपितु अनुगृहीत भी हुई। फिर उसने कंदर्पकेतु को वासवदत्ता का एक प्रेम-पत्र दिया। पत्र पढ़कर वह बहुत आह्लादित हुआ और तमालिका के साथ एक रात तथा एक दिन बिताकर तथा अपनी प्रिया के विषय में जी भर कर बातें कर तीनों वासवदत्ता के पिता को मिलने चल पड़े। तब एक सूर्य अस्ताचल की ओर जा चुका था। थोड़ी ही देर पश्चात आकाश में चांद उदित हुआ और रोशनी से जगमगाते उस नगर में कंदर्पकेतु ने अपनी वासवदत्ता की एक झलक पायी। वासवदत्ता भी उसे देखकर झूम उठी। फिर वासवदत्ता की एक सखी कलावती ने आकर राजकुमार को बताया कि किस प्रकार उसकी सखी उन्हें देखकर छटपटाती रही।

राजा ने स्वयंवर में उसके अनिश्चय को देखकर किसी मुख्य विद्याधर के बेटे पुष्पकेतु के हाथ में वासवदत्ता का हाथ देने का निर्णय कर लिया था। प्रेमालाप का उपयुक्त समय न देखकर दोनों प्रेमी-युगल मनोजव नाम के एक स्वर्गिक अश्व पर चढ़कर विंध्यपर्वत की ओर चल पड़े और मकरंद को यह पता करने के लिए कि वासवदत्ता के विवाह के विषय में राजा फिर क्या निर्णय लेते हैं, वहीं छोड़ दिया।

दिनभर की थकन के बाद दोनों एक निकुंज में सो गये हैं, जब राजकुमार की नींद टूटी, तब वह अपनी प्रिया को न पाकर उसकी खोज में इधर-उधर भटकने लगा। निराश होकर जब वह प्राण त्यागना ही चाहता था तभी एक आकाशवाणी ने उसे ऐसा करने से रोका और कहा कि शीघ्र ही तुम्हें अपनी प्रिया के दर्शन होंगे। तदनंतर वर्षा ऋतु के प्रारंभ होने पर एक दिन अचानक भटकते-भटकते उसके पैर वासवदत्ता-स्वरूपा एक पत्थर की मूर्ति से टकरा गये। पैर के स्पर्श होते ही वह मूर्त्ति उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तविक वासवदत्ता के रूप में पहिचान की और इस प्रकार पुनः प्रेमी-युगल का मिलन हुआ ।

लंबे आलिंगन के पश्चात कंदर्पकेतु ने अपनी प्रिया से बिछड़ने का कारण पूछा । तब वासवदत्ता ने वियोग की कथा कुछ यों सुनायी—पिछले मिलन के समय जब दोनों आलिंगनबद्ध सो रहे थे, तब अचानक मेरी नींद टूटी और मैं आपके लिए तथा स्वयं के लिए कुछ फल लेने निकल पड़ी । इतने में देखा कि सामने के सैनिकों के एक शिविर से एक सेनापति निकल कर मेरी ओर दौड़ा आ रहा था । इसी बीच किरातों का एक दूसरा सेनापति आया और उस पर आक्रमण कर दिया, और इस प्रकार दोनों मृत्यु को प्राप्त हुए । निकट के आश्रम में रह रहे एक मुनि ने इस विनाशलीला के लिए मुझे उत्तरदायी मान कर मुझे पाषाण हो जाने का शाप दे दिया । बहुत अनुनय-विनय करने के बाद उन्होंने शाप-मुक्ति का उपाय यह बतलाया कि जब तुम्हें अपने प्रियतम का स्पर्श होगा, तब तुम पुनः अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त कर सकोगी । इस कथा को सुनकर कंदर्पकेतु वासवदत्ता तथा अपने मित्र मकरंद के साथ अपने महल की ओर प्रस्थान कर गया ।

सुबंधु की 'वासवदत्ता' के बाद दंडी की 'दशकुमारचरित' तथा बाणभट्ट की 'कादम्बरी' भी काफी लोकप्रिय कृति के रूप में चर्चित हुई । इन तीनों 'क्लासिकीय उपन्यासों के पश्चात आनंद धर (१०वीं शताब्दी) की मद्यवानन, धनपाल तथा सोड्ढल (११वीं शताब्दी) की क्रमशः 'तिलकमंजरी' व उदयसुंदरीकथा, वादीभसिंह की 'गद्यचिंतामणि (१२वीं शताब्दी), विद्याचक्रवर्ती (१३वीं शताब्दी) की गद्यकर्णामृत, अगस्ति (१४वीं श.) की 'कृष्णचरित', वामनभट्ट बाण की 'वेमभूपालचरित' (१५वीं श.), देवविजयगणि (१६वीं श.) की वीरनारायण चरित तथा रामचरित अनंत शर्मा की 'मुद्राराक्षसपूर्वसंकथानक (१७वीं श.) तथा विश्वेश्वर पाण्डेय (१८ वीं श.) की मंदारमंजरी—जैसी कृतियां काफी चर्चित हुईं ।

जहां तक आधुनिक उपन्यासों का प्रश्न है तो उसमें १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पंडित अम्बिका दत्त व्यास का शिवराजविजय, महाराज शिवाजी के जीवन पर लिखा गया प्रथम आधुनिक उपन्यास है । इसके पश्चात संस्कृत में भी उपन्यासों की बाढ़ आ गयी । अब तक साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली संस्कृत के दो उपन्यासों को पुरस्कृत कर चुकी है । ये उपन्यास हैं—श्रीनाथ हसूरकर का सिंधुकन्या (१९८४) तथा विश्वनारायण शास्त्री का अविनाशि (१९८७)

उपन्यास लेखन की दिशा में सुबंधु ने जो रोशनी दिखायी है उसके लिए न केवल भारतीय साहित्य अपितु विश्व साहित्य उनका सदैव ऋणी रहेगा ।

— डी-१२०, रीड्स लाइन,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-७

विवेकानुसारेण हि बुद्धयो मधु निस्यन्दन्ते । **(काव्यमीमांसा)**
बुद्धि, विवेक के अनुसार ही मधु देती है, फल देती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

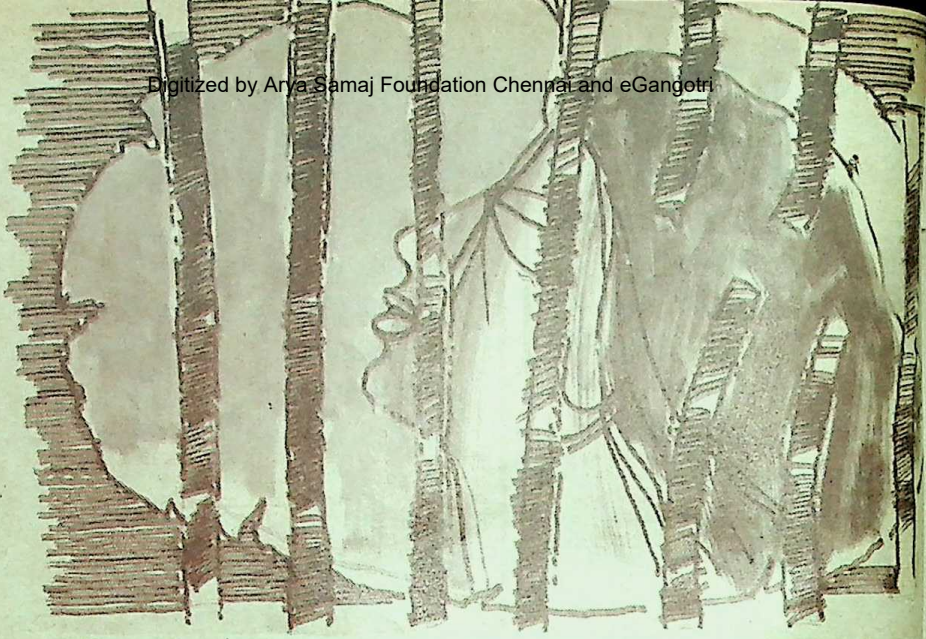

यों तो ऐसा रोज ही होता है । लेकिन कल की बात कुछ निराली थी । सुख के दो-चार क्षणों के लिए छछनता मन बार-बार सुबक उठता था । ममता की छाया और स्नेह की परछाईं भी खामोश थी । लगता था कि कहीं कुछ ऐसा हुआ है जो आज सागर भी सिमट आया है, शांत हो गया है— न कहीं कोई उछलती-उमड़ती लहरें और न कहीं-कोई तड़पती-मचलती धारा ।

और आंचल का दूध सूख गया था, तब अचानक नींद उचट गयी । एक स्वर, एक प्रतिध्वनि— कब तक ? आखिर कब तक निराशा की बेड़ियों में जकड़ा, आशा की महः एक बूंद के लिए तड़पता, सुख के चंद क्षणों लिए ठिठुरता मन, कब शांत होगा ? कब मिलेगी मंजिल ? कहां रुकेगा दर्द का यह ल कारवां ? कौन अपनी नरम हथेलियों से सह सकेगा मेरे मन को ताकि जीवन रुके नहीं,

लघु कथा

आंचल का स्वर

●डॉ. तारकेश्वर मैतिन

हुआ तो बस इतना था कि रात के घने अंधेरे में, जब बत्ती भी गुल हो चुकी थी, चारों ओर सन्नाटा छा चुका था, दर्द के रिश्ते सो चुके थे

बढ़े । विश्वास साथ दे, मनुष्यता अधिकार दे

अंधेरे में भी जो आंखें परछाईं देख लेती भला उनकी ज्योति का क्या कहना ? बंद अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों ही रात कटती है, सवेरा आता है । जीवन आगे बढ़ता है और सुख के लिए तड़पता मन संतोष की थपकियों से सो जाता है । कहीं सुनहले सपनों में फिर खो जाता है । न कहीं कोई दूर भागता है, और न कहीं कोई पास आता है । सब कुछ अनायास धन बन जाता है । अपने मन की संपत्ति सोना हो जाती है ।

जो देखती हैं, वह भला खुली आंखों से क्या दिखता ? समय ठहर गया, रात रुक गयी, सन्नाटा टूटने लगा । मन ने एक अंगड़ाई ली । कानों में घुंघरू-जैसे स्वर गूंजे, और अचानक सब कुछ शांत हो गया । फिर न तो कहीं कोई पीड़ा थी, न स्नेह के बंधनों की निर्मम जंजीरें । हमेशा की तरह सत्य तैरने लगा, और मन की कालिमा धीरे-धीरे तह में बैठती चली गयी, मिटती चली गयी ।

हुआ बस इतना था कि खामोश रात के अंधेरे में आस्था की घंटी टुनटुना उठी । मंदिर की दीवारों से प्रार्थना के स्वर टकराने लगे और लगा कि सब कुछ कहीं केंद्रित है । एक सार्वभौम सत्ता के संकेतों पर सतत गतिशील है । वहां कहीं कोई बिखराव नहीं । सिमटता-सिकुड़ता मन, जो मात्र जीने के संबल की तलाश कर रहा है । जो भविष्य के प्रति विश्वास पर ही आश्रित है ।

ज्योति बुझी, लेकिन भोर की किरणें दौड़ पड़ीं । उजाला फैलने लगा । मन भटकने की बजाय बंधने लगा । एक कोने से आवाज आयी— शांति ही सुख का आधार है । जो मन अशांत है, उसे भला सुख कहां ? मन को बांधो, स्नेह समेट लो, ममता बटोर लो । आंचल की छाया तले सब कुछ शांत है, गंभीर है । दिन के उजाले के सामने वह चमक फीकी है जिसके पीछे मन दौड़ता है । उसे पाने को मचलता है जो छिछला है, खोखला है । जो अपने चंगुल में समेटता है और फिर ठोकरों से गिरा देता है । सत्य ही स्वर है, सत्य ही शब्द है । तृष्णा तो कभी मिटती नहीं । पेट तो भरता है लेकिन भूख नहीं मिटती । जब तक मन के बंधन नियंत्रण का अंकुश नहीं पाते, तब तक सारा बिखराव व्यर्थ है, मात्र अंधेरे में भटकती एक दिशाहीन यात्रा है ।

यों ही रात कटती है, संवेरा आता है । जीवन आगे बढ़ता है और सुख के लिए तड़पता मन संतोष की थपकियों से सो जाता है । कहीं सुनहले सपनों में फिर खो जाता है । न कहीं कोई दूर भागता है, और न कहीं कोई पास आता है । सब कुछ अनायास धन बन जाता है । अपने मन की संपत्ति सोना हो जाती है ।

सत्य, शांति, सुख और संतोष के चिंतन का धन ! जो अपने मन के आंचल तले पनपता है और जागरण के फूल खिलाता है ।

— प्राचार्य, वाणिज्य महाविद्यालय
पटना विश्वविद्यालय, पटना-८००००५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संत, साहित्यकार, सत्य के खोजी, क्रांतिकारी नेता और चेक देश के राष्ट्रपति ये सब वात्सलाव हावेल के बहुआयामी व्यक्तित्व के विभिन्न रूप हैं । सत्य के प्रति प्रतिबद्ध जीवन और असाधारण साहस के कारण लोग उनका अत्यधिक सम्मान करते हैं । सिद्धांत-निष्ठा के कारण उनकी नैतिक वाणी को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है । कुछ लोग उन्हें ग्रीक दार्शनिकों द्वारा वर्णित 'दार्शनिक-नरेश' के रूप में देखते हैं । चेक देश की अधिकांश जनता के लिए वह लोकनायक हैं । प्राह (प्राग) की जनता तो उन्हें संत वात्सलाव कहकर पूजती है । वहां की सभी

और आत्मगौरवपूर्ण मानव में फिर से स्थापि करना है । अगर छोटा-सा चेक गणराज्य वि को कोई योगदान कर सकता है, तो वह है यूरोपीय अध्यात्मवाद के स्तंभ के रूप में स होना ।

करोड़पति के बेटे

वात्सलाव हावेल का जन्म ५ अक्तूबर १९३६ को प्राह के एक प्रसिद्ध और करोड़ घराने में हुआ था । उनके जीवन और विचा को समझने के लिए समकालीन इतिहास को जानना जरूरी है । सितम्बर, १९३८ के म्यू समझौते के साथ चेक जनता के दुर्दिन शुरू हुए । इसके बाद शांति, रक्षा के नाम पर

देश की सत्ता एक लेख

दूकानों की खिड़कियों के शीशों से बाहर को उनके चित्र झांकते हैं ।

उनके नाटकों ने कम्युनिस्ट शासन के अंधकारपूर्ण दिनों में चेक जनता को आशा और साहस का संदेश दिया । सच्चाई और नैतिक आदर्शों पर डटे रहने की सीख दी । उनकी रचनाओं का मूल और प्रमुख स्वर है : शांति, प्रेम और सत्य की खोज । उनका कहना है कि हमारे सामने साम्यवाद और पूंजीवाद, गरीबी और अमीरी का विकल्प नहीं है । हमारे सामने एक ही विकल्प है : सत्य की खोज । हमारी मुख्य समस्या समाज को पिछले झूठों से मुक्ति दिलाना और लोगों का विश्वास स्वायत्त, संपूर्ण

सूडेटनलैंड जरमनी को सौंप दिया गया । इ बाद समस्त चेक क्षेत्र पर जरमनी ने अधिक कर लिया । १९४५ में जरमनी की पराजय बाद चेकोस्लोवाकिया फिर से मुक्त हो गया लेकिन वह अधिक समय तक इस आजाद उपभोग नहीं कर सका । २५ फरवरी, १९ को कम्युनिस्टों ने सरकार का तख्ता पलटक सत्ता पर अधिकार कर लिया ।

कम्युनिस्ट शासन की स्थापना के बाद हावेल परिवार की समस्त संपत्ति ज़ब्त कर गयी । यही नहीं, करोड़पति बाप का बेटा के कारण उन्हें अपनी इच्छानुसार पढ़ाई क की इजाजत नहीं दी गयी । वात्सलाव हावे

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके नाटकों ने कम्युनिस्ट शासन के अंधकारपूर्ण दिनों में चेक जनता को आशा और साहस का संदेश दिया । सच्चाई और नैतिक आदर्शों पर डटे रहने की सीख दी । उनकी रचनाओं का मूल और प्रमुख स्वर है : शांति, प्रेम और सत्य की खोज ।

के हाथ

● नवीन पंत

को चार वर्ष तक एक रासायनिक कारखाने में मिस्त्री का काम सीखना और करना पड़ा । वह दिन में कारखाने में काम करते थे और शाम को नियमपूर्वक 'ग्रामर स्कूल' में पढ़ाई करते थे । ग्रामर स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें मानविकी में उच्च अध्ययन करने की अनुमति नहीं दी गयी । इस पर वह एक तकनीकी

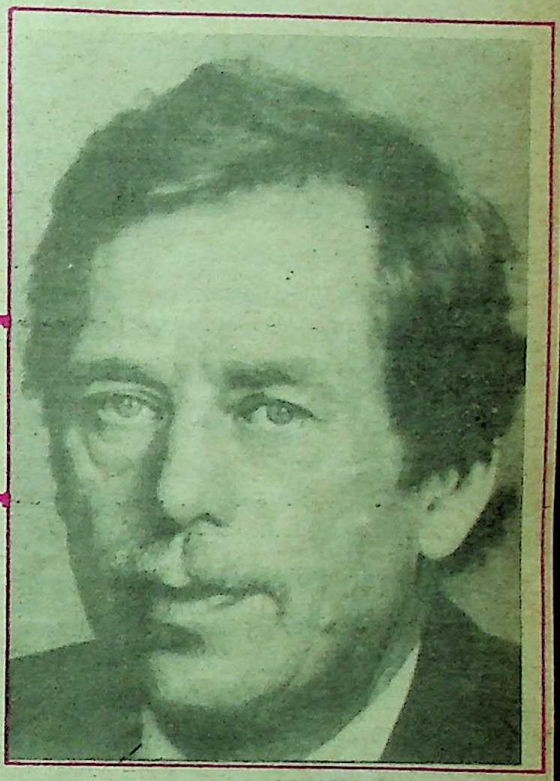

विश्वविद्यालय में भरती हो गये । वहां उन्होंने दो वर्ष बिताये । इसके बाद उन्होंने अनिवार्य सैनिक सेवा पूरी की ।

रंगकर्मी और नाटककार

साठ के दशक के शुरू में वह बालूस्ट्रेड थियेटर के साथ जुड़ गये । इसी थियेटर में उनके पहले नाटक 'दि गार्डन पार्टी' (१९६३) का मंचन किया गया । इस नाटक में चेक संस्कृति और चेक अस्मिता की रक्षा करने की चेक जनता की इच्छा-आकांक्षाओं को बड़े सूक्ष्म और प्रखर ढंग से प्रकट किया गया था । १९६५ में उनका नाटक 'दि मेमोरंडम' प्रकाशित हुआ । इसमें निरंकुशता और तानाशाही पर बड़े सशक्त ढंग से प्रहार किया गया था । इन नाटकों से देश में व्याप्त भय और आतंक का वातावरण समाप्त हुआ । लोग समसामयिक विषयों पर चर्चा करने लगे । विरोध के स्वर प्रकट करने लगे । इन नाटकों से जनता को अपने मूल अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा मिली । इसकी चरम परिणति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी, १९६८ में 'प्राग स्प्रिंग' में हुई।

प्राग स्प्रिंग के साथ देश के जीवन का नया अध्याय शुरू हुआ। देश में स्वतंत्रता, मुक्त विचार और असहमति के सम्मान की ताजा शुद्ध हवा चलने लगी। लेकिन 'प्राग स्प्रिंग की यह भावना अधिक समय तक नहीं रह सकी। अगस्त, १९६८ को वार्सा पैक्ट (सोवियंत संघ, पूर्वी जरमनी, पोलैंड, हंगरी और बलगारिया) के सैनिकों और टैंकों ने चेकोस्लोवाकिया को रौंद दिया। जिस किसी ने विदेशी सैनिकों के प्रवेश, एक दलीय शासन और निरंकुशता का विरोध किया उसका कठोरता से दमन किया गया। दर्जनों लेखकों को भागकर विदेशों में शरण लेनी पड़ी। जो विदेश नहीं जा सके उन्हें जेल में बंद कर दिया गया। उनकी रचनाओं के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

साहित्यकार क्रांतिकारी

अगस्त, १९६८ से नवम्बर,१९८९ की इस अवधि के दौरान चेकोस्लोवाकिया की जनता को असहनीय दमन, आतंक और अत्याचार का सामना करना पड़ा। इस काल में किसी को भी चेकोस्लोवाकिया के पहले राष्ट्रपति तोमाश गरिक मसारिक और अन्य राष्ट्रीय नेताओं का नाम लेने की अनुमति नहीं थी। सरकार विरोधी विचारों के प्रकाशन पर रोक लगा दी गयी। लेकिन इसका वात्सलाव हावेल के विचारों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अपनी रचनाओं के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगने के बावजूद वह न तो निराश हुए और न उन्होंने लिखना बंद किया। वह अपने टाइपराइटर पर एक दर्जन कार्बन लगाकर नये नाटकों की रचना करते रहे। इन नाटकों का मंचन तो नहीं हो पाता था, लेकिन इनकी प्रतियां हाथों-हाथ सैकड़ों बुद्धिजीवियों, छात्रों और रंगकर्मियों के पास पहुंच जाती थीं। इस काल में हावेल के कुछ नाटकों का पेरिस में मंचन हुआ। अपने स्वतंत्र और निर्भीक लेखन के लिए हावेल विश्वभर में सरकार विरोधी चेकोस्लोवाक बुद्धिजीवियों के नेता के रूप में प्रसिद्ध हो गये।

हावेल ने कथित सामान्य स्थिति बहाल करने के नाम पर किये जा रहे अत्याचारों का कड़ा विरोध किया। उन्होंने १९७५ में चेकोस्लोवाकिया के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. गुस्ताव हुसाक को समाज की संकटपूर्ण स्थिति और उसके लिए सरकार की जिम्मेदारी के बारे में खुला पत्र मिला। इस पत्र ने सरकार विरोधी आंदोलन को नया बल मिला। जनवरी, १९७७ में मानव अधिकारों की रक्षा में संघर्षरत कुछ प्रमुख नागरिकों की सहायता से उन्होंने 'चार्टर ७७' की स्थापना की। इस चार्टर पर हस्ताक्षर करनेवाले फौरन ही सरकारी कोप के शिकार हो गये। इन लोगों को जेल भेज दिया गया और अनेक तरह से परेशान किया गया। हावेल को तीन बार कैद किया गया। वह कुल मिलाकर पांच वर्ष तक जेल में रहे।

जेल में भी उनका लेखन अविच्छिन्न रूप से चलता रहा। उन्होंने इस काल में अपनी पत्नी को अनेक पत्र लिखे, जो पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए हैं। २१ जुलाई, १९७९ को एक पत्र में हावेल ने लिखा, "मुझे यह विचित्र भावना हो रही है कि मैं इस स्थान को छोड़ना नहीं चाहता। कम-से-कम फिलहाल नहीं। यहां आप शीतनिद्रा की स्थिति में पहुंचते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घिसे-पिटे जेल जीवन का अनुसरण करने लगते हैं, एक तरह की मधुर मानसिक सुस्ती के गर्त में डूब जाते हैं और दुष्ट दुनिया में, जो आपसे निरंतर निर्णायक होने की अपेक्षा करती है, फिर से पहुंचने की संभावना भय पैदा करती है ।''

१५ दिसम्बर, १९७९ को उन्होंने एक अन्य पत्र में लिखा, ''मैंने खोजी बायर्ड की पुस्तक 'एलोन' (एकाकी) पढ़ ली है । इसमें बताया गया है कि वह किस तरह दक्षिण ध्रुव में छह महीने तक अकेला रहा । एकाकीपन के बारे में उनकी अनेक बातें मेरे अपने अनुभवों से मिलती हैं । मैं बहुत ध्यान से कम्युनिस्ट पार्टी का मुख पत्र 'आरमी' पढ़ता हूं और उसमें प्रकाशित सामग्री का विश्लेषण करता हूं । उदाहरण के रूप में परसों मैंने पूरा दिन अगले वर्ष के बजट के बारे में पढ़ने में लगाया । यह बहुत ही दिलचस्प है । मैं जो कुछ लिखा होता है, उससे जो लिखा नहीं होता, वह समझना सीख रहा हूं ।''

शक्तिहीनों की शक्ति

लगभग इसी काल में उनके एक लेख 'दि पावर आफ दि पावरलेस' (शक्तिहीनों की शक्ति) ने देश-विदेश में हलचल मचा दी । उन्होंने इस लेख में तानाशाही कम्युनिस्ट अत्याचार का सैद्धांतिक विवेचन और विश्लेषण किया । उन्होंने स्पष्ट किया कि कम्युनिस्ट शासन किन तौर-तरीकों और साधनों का इस्तेमाल करके कार्य और भ्रष्ट लोगों के शक्तिहीन और संतुष्ट समाज के निर्माण का प्रयास करता है । हावेल ने यह मत प्रकट किया कि इस तरह की अनैतिक शासन व्यवस्था को हम नैतिक सिद्धांतों के सहारे आसानी से पराजित कर सकते हैं । उनके इस लेख से अन्य साम्यवादी देशों की जनता ने भी प्रेरणा ली और अपना मुक्ति अभियान तेज किया ।

मखमली क्रांति

नवम्बर, १९८९ में चेक जनता का गौरवपूर्ण मुक्ति अभियान चरम शिखर पर पहुंच गया । १७ नवम्बर को नाजी अत्याचार के शिकार डॉक्टरी के छात्र जान आपलेटाल की शहादत की पचासवीं वर्षी पर एक विशाल अहिंसक रैली आयोजित की गयी । उसी रात सरकार

चेक देश

जनसंख्या : १०,२९८,७३१ (१९९१ की जनगणना के अनुसार)
क्षेत्रफल : ७८,८६४ वर्ग किलोमीटर
राजभाषा : चेक
राज्याध्यक्ष : श्री वात्सलाव हावेल
प्रधानमंत्री : श्री वात्सलाव क्लास
राष्ट्रीय दिवस : २८ अक्तूबर
जनसंख्या का घनत्व : १३१ प्रति वर्ग किलोमीटर
राजधानी : प्राह (प्राग)

चेक गणराज्य का राष्ट्रगान

मेरी मातृभूमि कहां है ?
मेरी मातृभूमि कहां है, मेरी मातृभूमि कहां है ?
घासस्थली के बीच गर्जन करता बहता पानी,
चट्टानों के ऊपर वनों का गुंजन,
उद्यानों में खिलता वसंत,
धरती पर स्वर्ग के समान,
यह सुंदर भूमि है,
चेक भूमि, मेरी मातृभूमि,
चेक भूमि, मेरी मातृभूमि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोधी हड़ताल की योजना को अंतिम रूप दिया गया । १९ नवम्बर को 'चार्टर ७७' के समर्थकों ने 'सिविक फोरम' या नागरिक मंच का गठन किया । प्राह और अन्य स्थानों पर हर दिन मानव अधिकारों और स्वतंत्र चुनावों के पक्ष में अहिंसक प्रदर्शन किये गये । देशभर में आम हड़ताल को गयी । नवम्बर के अंत तक कम्युनिस्ट सत्ता और संगठन के बिखरने के लक्षण प्रकट होने लगे । दिसम्बर के शुरू में सरकार में पांच गैर कम्युनिस्ट शामिल किये गये । लेकिन प्रदर्शन न रुके । २९ दिसम्बर को गुस्ताव हुसाक ने राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया । चुनावों तक वात्सलाव हावेल देश के नये राष्ट्रपति निर्वाचित किये गये । कम्युनिस्ट शासन इतनी जल्दी, सरलता और बिना रक्तपात के समाप्त हो गया कि हावेल ने अपनी नाटकीय शैली में उसे 'वेलवेट रिवाल्युशन' अथवा मखमली क्रांति नाम दे दिया ।

अद्भुत राष्ट्रपति

वर्ष १९९० के शुरू में नये विधायकों के चुनावों के बाद संसद में कम्युनिस्टों का बहुमत समाप्त हो गया । फरवरी में देश से सोवियत सैनिकों की वापसी शुरू हो गयी । जून, १९९० में ४१ वर्ष बाद देश में पहली बार स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हुए । ९७ प्रतिशत मतदाताओं ने इन चुनावों में भाग लिया । वात्सलाव हावेल फिर से दो वर्ष के लिए राष्ट्रपति निर्वाचित किये गये ।

चेक और स्लोवाक जनता की भाषा और संस्कृति समान है । प्रथम महायुद्ध के बाद चेक और स्लोवाक क्षेत्रों को मिलाकर चेकोस्लोवाकिया का गठन किया गया था । लेकिन स्लोवाक इस विलय से संतुष्ट नहीं थे । वे अपना पृथक संपूर्ण प्रभुसत्ता संपन्न राज्य चाहते थे । हावेल ने इस विभाजन को रोकने का प्रयत्न किया किंतु जब उन्हें लगा कि विभाजन टाला नहीं जा सकता, तो उन्होंने २० जुलाई, १९९२ को अपने पद से इस्तीफा दे दिया । इससे पहले १७ जुलाई को अपने इस्तीफे के कारणों को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि मैं अब चेक और स्लोवाक गणराज्य के प्रति अपनी निष्ठा और अपने विचारों, दृष्टिकोण और आत्मा के आदेशों के बीच सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकता । अतः इस्तीफा दे रहा हूं । त्यागपत्र के बाद दो महीने तक उन्होंने सार्वजनिक जीवन में हिस्सा नहीं लिया । इसके बाद वह पुनः राजनीति में सक्रिय हो गये । देश के वरिष्ठ राजनीतिज्ञों और राजनीतिक दलों के साथ मिलकर उन्होंने राष्ट्रपति की निर्वाचन प्रणाली और उनके अधिकारों की व्याख्या कराया ।

पिछले वर्ष पहली जनवरी को चेकोस्लोवाकिया का आपसी सहमति और सद्भाव से दो भागों में विभाजन हो गया । विभाजन के बाद वात्सलाव हावेल को चेक गणराज्य का राष्ट्रपति निर्वाचित किया गया ।

वात्सलाव को अपनी साहित्यिक रचनाओं और मानव अधिकारों के संघर्ष में योगदान के लिए अनेक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है । उन्हें विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों ने सम्मानार्थ मानद डिग्री प्रदान की है ।

—२२, मैत्री एपार्टमेंट्स
ए/३, पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-११००६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

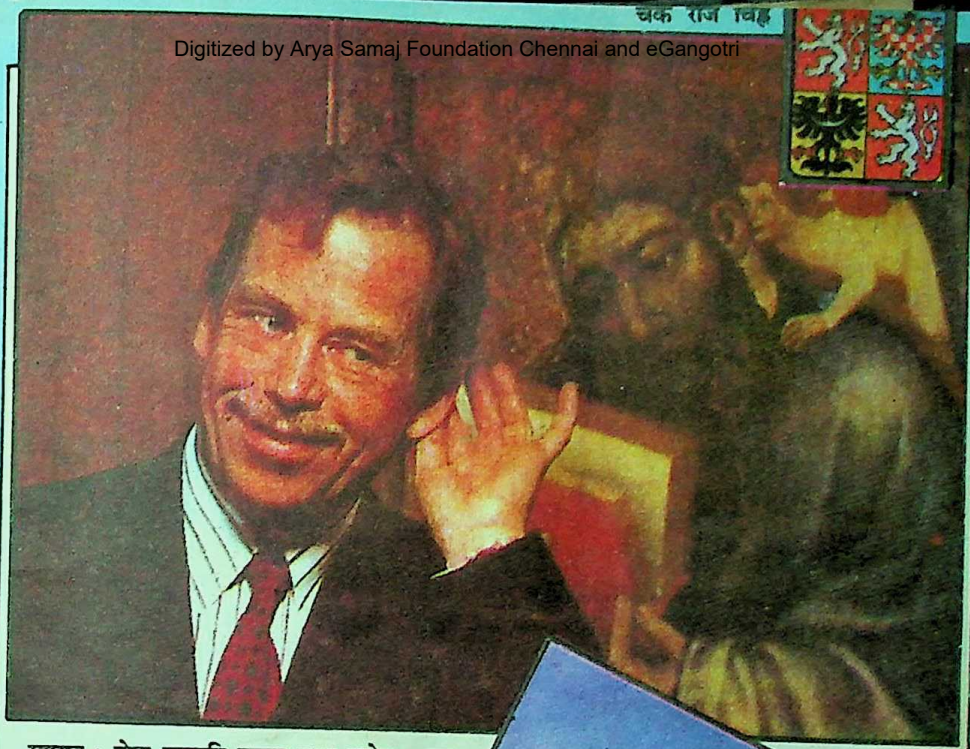

स्वागत : चेक राष्ट्रपति वाल्स लाव हावेल : बहु अयामी व्यक्तित्व—संत—साहित्यकार, सत्यान्वेषी और राज नेता

त्रिगा नदी के तट पर स्थित नेशनल थियेटर की अन्य इमारत के बाहर बनी अश्व-प्रतिमा

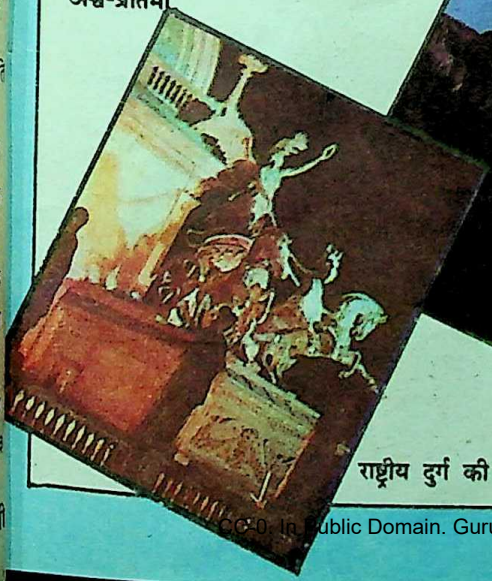

राष्ट्रीय दुर्ग की प्रतिमाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारंपरिक शैली में बना एक चित्र : गणेश ऋद्धि-सिद्धि सहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

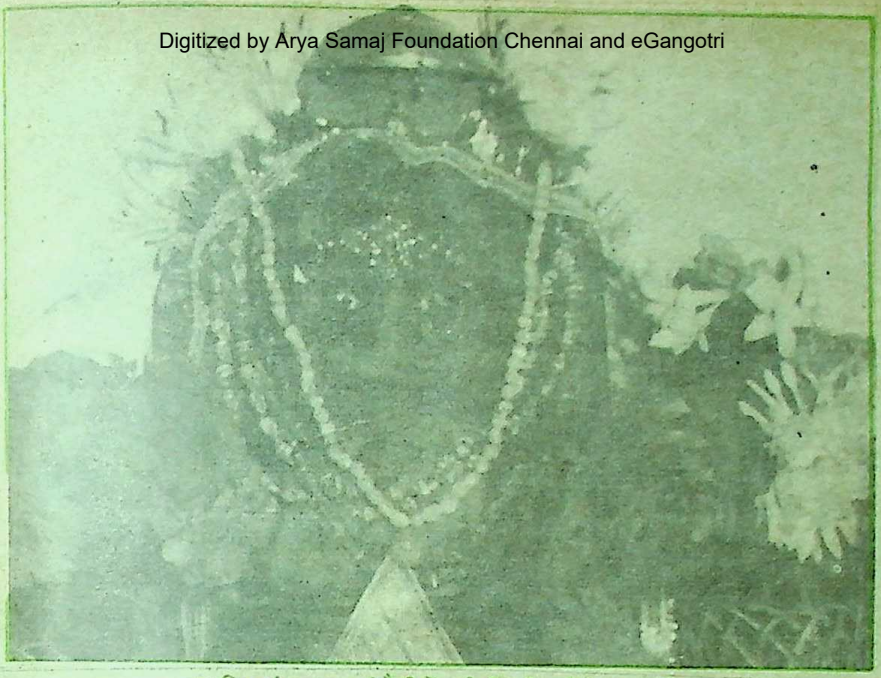

अप्रमिस संग्रहालय, चंदौसी में रखे सिंदूरी वर्ण के गणपति

उबटन से बने और पूजित हुए !

● डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल

गणपति का जन्म पुराण कथाओं के अनुसार :

एक बार कैलाश पर अपने अंतःपुर में पार्वती विराजमान थीं । सेविकाएं उन्हें उबटन लगा रही थीं । शरीर से गिरे उबटन को आदि-शक्ति पार्वती ने एकत्र किया, एक बालक की मूर्ति बना डाली और चेतना डाल दी । जीवंत बालक ने माता को प्रणाम किया और आज्ञा मांगी । उसे कहा गया कि बिना आज्ञा कोई अंदर न आने पाये । बालक डंडा लेकर द्वार पर खड़ा हो गया । कुछ देर बाद जब शंकर अंतःपुर में जाने लगे तो उसने उन्हें रोक दिया । शंकर ने त्रिशूल उठाया और बालक का मस्तक काट दिया । 'मेरा पुत्र !' पार्वती का स्नेह, रोष में परिणित हो गया । पुत्र का शव देखकर माता कैसे शांत रहे ! भयभीत देवताओं ने शंकर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तुति की । निर्देश मिला, किसी नवजात शिशु का मस्तक उसके धड़ से लगा दो । एक गजराज का नवजात शिशु मिला उस समय । उसी का मस्तक पाकर वह बालक 'गजानन' हो गया । यह कमाल था उन दिनों की सर्जरी का । अपने अग्रज कार्तिकेय के साथ संग्राम में उनका एक दांत टूट गया और तब से गणेशजी 'एकदंत' कहे जाने लगे ।

अरुणवर्ण, एक दंत, गजमुख, लंबोदर, अरुण-वस्त्र, त्रिपुंड्र-तिलक, मूषकवाहन ये देवता माता-पिता सबके प्रिय हैं । ब्रह्मा जब 'देवताओं में पूज्य कौन हो' इसका निर्णय करने लगे, तब पृथ्वी प्रदक्षिणा ही शक्ति का निदर्शन मानी गयी । गणेशजी का मूषक कैसे आगे दौड़े, उन्होंने देवर्षि नारद के उपदेश-अनुसार अपने माता-पिता की प्रदक्षिणा की और सबसे पहले पहुंचे थे । ब्रह्मा ने उन्हें प्रथम पूज्य बनाया । प्रत्येक कर्म में उनकी प्रथम पूजा होती है । वे शंकर के गणों के मुख्य अधिपति हैं । 'गणाधिप' की प्रथम पूजा न हो तो कर्म के निर्विघ्न पूर्ण होने की आशा कम रहती है ।

गणनायक —राष्ट्रनायक

गणेशजी की मां का नाम 'पार्वती', पिता 'महादेव', 'मूषक' उनका वाहन है । दूर्वा, लड्डू प्रिय पदार्थ हैं । 'सिंदूरी' उनका 'वर्ण' है । 'दूर्वा' पेट के रोगों का शमन करती है तथा लड्डू एक सूत्र में बांधे रखने का प्रतीक है । गणपति राष्ट्र नायक भी हैं । गण व्यवस्था भारतीय मनीषा की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है और गणेश निश्चय ही किसी न किसी रूप में देवगण के श्लाका पुरुष रहे होंगे । उनका प्रतीकात्मक रूप भी यही प्रमाणित करता है । गणों की तृप्ति के प्रतीक रूप में वे लंबोदर हैं और निर्णय की एकनिष्ठता के लिए एकदंत हैं । उनके हाथ में परशु है, जो विघ्नों को काटता है, दूसरे में पाश है,जो बाधाओं को बांधकर सिद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है । तीसरे में मोदक है, जो गणों को मोद देने का प्रतीक है और चौथा अभय मुद्रा में उठा हुआ है । उनका वाहन मूषक उस सूक्ष्मकाल का प्रतीक है,जो समय को क्षण-क्षण में कुतरता रहता है । मूषक से विघ्नों

गणपति-गणनायक, प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारंभ में जिनकी पूजा-अर्चना का विधान है । गणपति की प्राचीन प्रतिमाएं न केवल भारत वरन अन्य देशों में भी प्राप्त हुई हैं ।

श्रीलंका के डाक टिकट पर गणेश

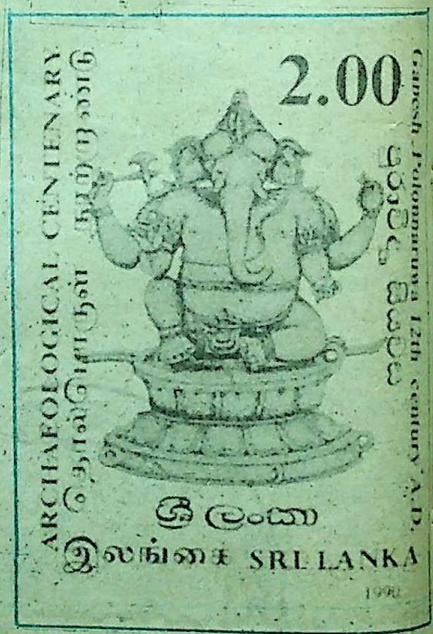

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठे हुए चतुर्भुज गणपति

पद्म तथा त्रिशूलधारी गणपति

का भी बोध होता है । मूषक बिना कारण के भी मूल्यवान वस्तुओं को कुतर-कुतरकर नष्ट कर देता है, उस लघु जीव पर आरूढ़ होकर ही गणेश उसे अनुशासन में रखते हैं । इसी कारण गणेश जीवन की संपूर्णता और सफलता के पर्याय हैं ।

विभिन्न रूपों में उपासना

गणपति की विभिन्न रूपों में उपासना की जाती है । शायद ही ऐसा कोई पदार्थ होगा, जिससे गणपति की मूर्ति न बनायी जा सके । गणपति की विभिन्न धातु और पदार्थ से मूर्ति बनायी जा सकती हैं । पर भाद्रपद मास (सिद्धि विनायक चौथ) को पीली मिट्टी से गणपति मूर्ति बनाने का विधान है । मूर्ति बनाने को मिट्टी भाद्रपद मास में इकट्ठी करनी चाहिए । इस समय वर्षा होने के कारण भूतत्व (शिव) में सूर्य के अत्यधिक ताप तेजतत्व (दुर्गा) और जल तत्व (गणेश) यानि पूरे परिवार का पूजन हो जाता है । पृथ्वी पर वर्षांत के जल एवं सूर्य के तेज के कारण मिट्टी से विशेष गंध निकलती है, जो सूक्ष्म कीटाणुनाशक और रक्त का शमन करती है । इसको सूंघने मात्र से कई प्रकार के रोगों में लाभ होता है ।

गणेश गर्भ से उत्पन्न नहीं हुए थे, वे पार्वती की मानसिक सृष्टि थे । आयुर्वेद शास्त्र में वीर्य को पारद तथा रज को गंधक कहा है । दोनों के मिश्रण से सिंदूर बनता है,जो गणेश का कारक है । गंधक और पारे का मिश्रण भूगर्भीय अग्नि से मिलकर पृथ्वी के गर्भ की जठराग्नि से पक्व होता हुआ स्वर्ण का स्वरूप धारण कर लेता है ।

चार प्रकार की सृष्टि होती है

—(१) स्वेदज (जूं-खटमल), (२) प्राणिज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(मनुष्य, चूहा, हाथी, बंदर), (३) अंडज (मुरगी, कबूतर —पक्षी), (४) उद्भिज (वृक्ष, लता आदि) । गणेश में पिंडज सृष्टि का सबसे छोटा रूप चूहा और सबसे बड़ा रूप हाथी दोनों ही सम्मिलित हैं ।

प्रत्येक देवी-देवता का कोई न कोई वाद्य होता है पर गणेश का नहीं । उनका स्वयं 'ग' कार मंत्र 'गं' नाद ही है,जिसका मन ही मन उच्चारण करने से नाद ब्रह्म के दर्शन होते हैं । वेद में गणेश का बीजमंत्र बहुत-सी ऋचाओं में लगा हुआ है और उसमें उसका स्वरूप(ँ) है जिसका उच्चारण गूंग है ।

गणेश का 'ग' कार गुरु गण गत् (काल) का भी वाचक है । ऊं (प्रणव) ही गणेश है जो 'उ' उदर का प्रतीक है, 'मात्रा', सूंड का, ऊपर 'अर्धचंद्र' चंद्र का तथा 'अनुस्वार' लड्डू है । प्रत्येक समय लड्डू खाते रहना भी उच्चिष्ट गणपति का प्रतीक है । (卐) इसे स्वस्तिक कहते हैं यही गणेशजी के चारों हाथ हैं और यही चतुर्मुख ऊं कार भी हैं ।

लक्ष्मी और गणेश

लक्ष्मी के साथ गणेश का पूजन सार्वभौम है । बिना गणपति के लक्ष्मी की पूजा नहीं होती । लक्ष्मी क्रिया शक्ति की अधिष्ठात्री हैं, जो रक्त कमल पर पद्मासन मुद्रा में बैठी हुई गज द्वारा पूजित हैं तथा उनके हाथ वर तथा अभय प्रदान करते हुए हैं ।

हाथी का पूर्वज ऐरावत समुद्र मंथन से प्राप्त चौदह रत्नों में से एक है । प्राणि जगत में हाथी के समान विशालकाय और बुद्धिमान पर अहिंसक दूसरा जीव नहीं है । वह अपनी सूंड से प्रत्येक वस्तु को तोल-नाप और परीक्षा करके ही उसे मुख तक जाने देता है । इसके अतिरिक्त भारी से भारी बाधक वस्तु को दूर फेंक सकता है । बड़े कानों से वह हलकी से हलकी आहट सुन सकता है । भारत की वस्तुकला, ललितकला, अलंकरण आदि में उसे महत्त्वपूर्ण स्थान मिलता रहा है ।

मूलाधार चक्र के द्वारपाल

योग में कुंडलिनी जागृत करने में सबसे पहले मूलाधार चक्र को जागृत करते हैं । मूलाधार चक्र के द्वारपाल गणपति हैं । मूलाधार चक्र की चार पंखुड़ियां गणेशजी के चार हाथ की प्रतीक हैं । गणपति सारी विघ्न-बाधाओं को दूर करते हैं । मूलाधार चक्र का स्थान कटि प्रदेश की नाड़ी संस्थान मुद्रा तथा जननेंद्रिय के बीच का भाग, रीढ़ का अंतिम नीचे का भाग है, जहां पर पीले रंग चतुष्कोण सम चतुर्भुज चार रक्त वर्ण कमल दल सहित नारंगी रंग की पृष्ठभूमि पर स्वर्ण आभा से युक्त (लं) आकार का बीज है, जो ऐरावत हाथी पर विराजमान है।

जयपुर के एक मंदिर में विराजमान गणपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस चक्र के जागृत होने पर साधक को दिव्य गंधों की अनुभूति होती है । मूलाधार चक्र संपूर्ण सृष्टि का मूल है ।

मूलाधार चक्र का यंत्र चतुर्भुज का भौतिक जागृति में बड़ा महत्त्व है क्योंकि,यह पृथ्वी की चारों विधाओं और चारों दिशाओं का बोधक है । प्रतिवर्ष २१ मार्च और २१ सितंबर दो दिन ऐसे होते हैं, जब दिन-रात बराबर १२-१२ घंटे होते हैं । इस दिन सूर्य की किरणें सीधी भूमध्य रेखा पर पड़ती हैं । उत्तरी दक्षिणी दोनों ध्रुव सूर्य की ओर झुके नहीं रहते हैं । ये दोनों तिथियों वसंत तथा शरद ऋतु के समान दिवस कहलाते हैं । २१ दिसंबर को उत्तरी ध्रुव सूर्य से अधिकतम दूरी पर रहता है । अतः शीत प्रधान है । २१ जून जो उत्तरी ध्रुव सूर्य की ओर अधिकतम झुक जाता है और सूर्य से अधिकतम गरमी प्राप्त होती है ।

मूलाधार चक्र कुंडलिनी शक्ति परम चैतन्य शक्ति जीवनी शक्ति का पीठ स्थान है । कुंडलिनी सर्पिणी के रूप में स्वयंभू लिंग (जो स्वयं पैदा हो) के साढ़े तीन फेरे मारकर चारों ओर लिपटी हुई है ।

बुद्धि के अधिष्ठाता

गणेश बुद्धि के अधिष्ठाता हैं । उनके श्री विग्रह का ध्यान, उनके मंगलमय नाम का जप और उनकी आराधना मेधा-शक्ति को तीव्र करती है ।

यही कारण है, चीन, जापान, ब्रह्मा, नेपाल, थाईलैंड, सुमात्रा, अफगानिस्तान, मध्य एशिया, मंगोलिया आदि सब जगह विद्यमान हैं 'गणपति' ।

गणेश : यक्ष देवता ?

डॉ. कुमार स्वामी के मतानुसार गणेश प्रारंभ में यक्ष देवता रहे होंगे । उन्होंने अपने कथन की पुष्टि के लिए अमरावती स्तूप के एक चित्रण को प्रस्तुत किया है, जिसमें एक मोटी लहरदार माला ढोने वाले अनेक गणों के साथ एक हाथी के सिरवाले का चित्रण है । यह मूर्ति भग्न है तथापि इसके गजानन होने में कोई संदेह नहीं है । इससे यह प्रतीत होता है कि यह मूर्ति देवता कोटि की नहीं अपितु गण या यक्ष कोटि की है । दक्षिण भारत में नृत्य गणपति की मूर्तियां अधिक मिलती हैं । मैसूर के होयलेश्वर मंदिर में नृत्य गणपति की जो नयनाभिराम मूर्ति हैं, उसमें उनके हाथों में परशु, पाश, मोदक पात्र, दंत, सर्प और पद्म हैं, शेष दो हाथों में से एक की मुद्रा गजहस्त और दूसरे की 'विस्मय हस्त' के रूप में है । उनके मस्तक पर मुकुट है और सिर पर कलापूर्ण छत्र तना है । तंजोर के वृहदीश्वर मंदिर में भी नृत्य गणपति की प्रतिमाएं हैं । कलचुरी कलाकृतियों में नृत्य गणेश की एक बहुत सुंदर प्रतिमा भेड़ाघाट में भी है । कलकत्ता संग्रहालय में नृत्य गणपति की अनेक भावमयी मूर्तियां उत्तर मध्यकालीन शिल्प का सुंदरतम उदाहरण हैं । वाराणसी के भारत कला भवन की नृत्य गणपति की प्रतिमा में गणेश तनिक तिरछे खड़े हैं और बड़े प्रसन्न जान पड़ते हैं । त्रावणकोर में कुछ विशिष्ट मंदिर हैं, जिन्हें होमकुल कहा जाता है । इनमें कुछ विशिष्ट अवसरों पर महागणपति होम की व्यवस्था की गयी है ।

—श्रीधाम, ४७-हुसैनी बाजार,
चंदोसी-२०२४१२

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायल सीमा में एक सरकारी कार्यालय में तबादले पर आये लोकनाथ के मन में सारे स्टॉफ के प्रति सद्भाव पैदा हुआ, मगर अटेंडर लिली को देखकर वह आगबबूला होने लगा ।

लिली को आंखों से न अच्छी तरह दिखायी देता और न कानों से सुनायी देता । फाइल एक टेबल से दूसरे टेबल तक पहुंचाते समय और हस्ताक्षर करते समय उसके हाथ कांपते हैं । या तो छुट्टी लेकर घर पर रह जाती है या दफ़्तर में देर से आती रहती है, लेकिन समय पर काम पर नहीं आती ।

लिली से किस तरह काम करवाया जाए यही सोचकर लोकनाथ परेशान हो रहा था । तभी संबंधित उच्च अधिकारी ने सभी कर्मचारियों के 'सर्विस पर्टिक्युलर्स' मांगे ।

मौन रह गये । थोड़ी देर के बाद प्रकृतिस्थ होकर सबने लोकनाथ को सलाह दी कि इस विषय संबंधित उच्च अधिकारी को बता देना ही उचित है ।

तुरंत उच्च अधिकारी को तार भेजा गया । वहां से लोकनाथ को डाक द्वारा सूचना मिली कि लिली का ट्रांसफर सर्टिफिकेट देखकर जन्म की तारीख सर्विस पुस्तक में दर्ज की जाए ।

दो दिन घर की छानबीन करने के बाद लिली ने टी. सी. न मिलने की सूचना लोकनाथ को दी । उसने अपने सभी कर्मचारियों को लिली के घर भेजा ताकि वे टी. सी. ढूंढ़ सकें ।

तिलचटों और टिड्डियों—जैसे अन्य जीवों को तितर-बितर कर, गुदड़ियों को उतारकर, अलमारियों को सरकाकर, उस धूल को, जो

तेलुगु हास्य

एक आइ.एस.आइ. कहानी या जन्मतिथि

● सड्ला पल्लि चिदंबर रेड्डी

सब की सर्विस पुस्तकें देखते हुए बैठे लोकनाथ उस समय एकदम चौंक उठा जब लिली की सर्विस पुस्तक में जन्म की तारीख नहीं दिखायी पड़ी । उसकी समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए, इसलिए सारे स्टॉफ की बैठक बुलायी गयी ।

असली बात जानकर सबके सब मुंह बाये

मानो युगों से जम गयी हो, झाड़-पोंछकर, तीखी गंध की वजह से खांसते, छींकते, आंख पोंछते कर्मचारियों ने किसी तरह टी. सी. ढूंढ़ निकाला ।

यद्यपि टी. सी. मिल गया फिर भी उन्हें जिस विवरण की आवश्यकता थी वह न मिला, जहां जन्म की तारीख दर्ज की गयी थी उस स्थान को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूहे खा गये थे ।

टी. सी. में जन्म की तारीख तो नहीं मिली, फिर भी उस पर लिखित स्कूल और गांव के नाम से यह जानने की सहूलियत हुई कि वह टी. सी. कहां से लाया गया है । उस विवरण के मुताबिक वह गांव ढूंढ़ता हुआ स्वयं लोकनाथ चला गया ।

वह न तो छोटा गांव है और न शहर । एक कस्बा है । पूछताछ कर जब तक लोकनाथ स्कूल के पास पहुंचा तब तक स्कूल बंद हो गया था । लोकनाथ सीधे स्कूल के प्रधान अध्यापक के घर गया ।

यह जानकर कि लोकनाथ टी. सी. के लिए आया है, उसे कुरसी पर बैठाकर प्रधान अध्यापक ने लोकनाथ के हाथ एक तालिका थमा दी । वह अलग-अलग वर्गों के टी. सी.

लिली को न आंखों से दिखायी देता था और न कानों से सुनायी पड़ता था । सर्विस बुक में उसकी जन्म-तिथि दर्ज नहीं थी । जब उसकी उम्र का पता लगाने के लिए रेडियोलॉजिस्ट के पास भेजा गया तो उसने उसकी उम्र निर्धारित की बीस वर्ष जबकि उसकी बेटी की उम्र तीस वर्ष थी । आगे क्या हुआ ? पढ़िए

सर्टिफिकेटों के दाम की तालिका थी ।

लोकनाथ की समझ में नहीं आया कि असली विषय न पूछकर उसे तालिका क्यों दी गयी ।

उसे समझने के लिए यहां और एक विषय

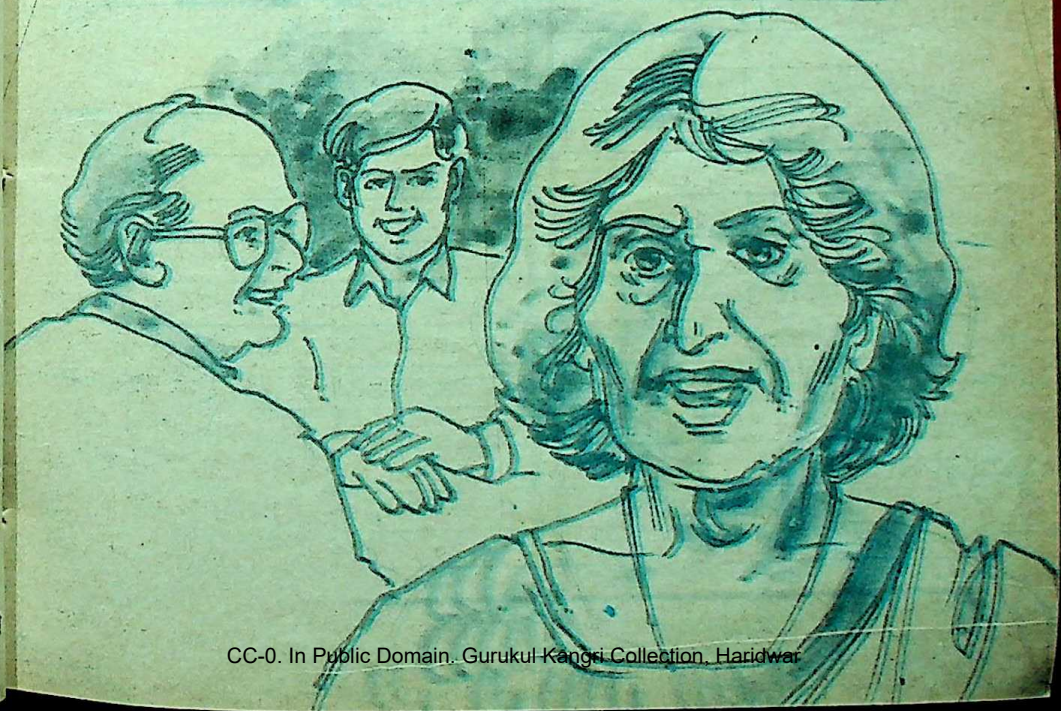

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानना जरूरी है ।

लगभग दस साल के पहले की बात है । एक बार उस स्कूल के प्रधान अध्यापक को खबर मिली कि अमुक दिन इंस्पेक्टर आ रहे हैं । साथ ही यह भी मालूम हुआ कि इंस्पेक्टर रिश्वतखोर नहीं हैं । उनके आने के तीन दिन के पहले रातों रात स्कूल में आग लग गयी । भूखी आग की लपटों ने तत्काल स्कूली रेकॉर्ड को लील लिया ।

उस समय से वह स्कूल केवल स्कूल न रहकर एक कारखाना बन गया है । उस कारखाने में टी. सी. सर्टिफिकेटों की उत्पत्ति होती है । जो भी व्यक्ति उस स्कूल के प्रधान अध्यापक के रूप में आना चाहता है, उसे नीलाम में यह पद जीतकर तबादले पर आना पड़ता है । प्रधान अध्यापक के लिए वह स्कूल करेंसी नोटों का अक्षर भंडार है ।

लोकनाथ को भी इसी तरह टी. सी. के लिए आये शरीफ समझकर प्रधान अध्यापक ने दाम की तालिका दी ।

यह जानकर कि पुराने रेकॉर्ड्स राख बन गये लोकनाथ हताश हो गया । निराश हो लौट आये लोकनाथ ने संबंधित अधिकारियों को वही बात बता दी ।

इस विषय पर सोच-विचारकर अधिकारियों ने जो निर्णय किया, वही लोकनाथ को डाक द्वारा भेजा गया ।

उनकी सूचना के मुताबिक लोकनाथ ने लिली को आफिस खर्च पर सरकारी रेडियालोजिस्ट के पास भेज दिया ।

हम नहीं कह सकते कि पैसे की महिमा है अथवा उसकी पढ़ाई का बल है, रेडियालोजिस्ट ने लिली की जांच करके जो उम्र निर्धारित की वह देखकर यदि लोकनाथ रक्तचाप का मरीज होता तो तुरंत इहलोक यात्रा समाप्त करके परलोक यात्रा की तैयारी में लग जाता ।

लिली की उम्र, जिसकी तीस साल की बेटी है, बीस साल की निर्धारित की गयी । लोकनाथ इस निर्णय पर पहुंचा कि ऐसी असंगत उम्र सर्विस पुस्तक में दर्ज करना असंगत होगा । इसलिए विषय बताते हुए लोकनाथ ने सर्विस पुस्तक संबंधित उच्च अधिकारी को भेज दी और पत्र के द्वारा बताया कि सर्विस पुस्तक में लिली की उम्र दर्ज करें ।

उस दफ़्तर में पहुंची लिली की सर्विस पुस्तक मेज, फाइल और अधिकारियों के हाथ बदल-बदलकर आखिर गायब हो गयी ।

यह आरोप लगाते हुए कि सरकारी डॉक्टरों ने ही अपनी उम्र निर्धारित करते हुए प्रमाणपत्र दिया है और अधिकारी जान बूझकर अपनी सर्विस पुस्तक छिपाकर, तनख्वाह न देकर अपनी जिंदगी से आंखमिचौनी खेल रहे हैं—लिली अनशन करने लगी ।

यह रायलसीमा है । मई महीने की धूप अपना प्रताप दिखा रही है । पार्लियामेंट के चुनाव अंगार बरसा रहे हैं । जिस लिली को कोई नहीं जानता था, वह अब गांवभर में चर्चा का विषय बन गयी । सभी पार्टियों के राजनीतिक नेता लिली के जन्म के संबंध में तलाशने लगे ।

लैला जब नव यौवना थी, तब स्त्री-पुरुष भेद के सिवा कुछ न जानती थी । जाति-पांत और धर्म की जानकारी उसे कतई न थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए उसने रिक्शेवाले रंगडु से आनंद बाँट लिया ।

बात अपने मां-बाप को मालूम हुई तो उसे रंगडु से अलग करने की योजना बना ही रहे थे कि वह रातों रात उसके साथ भाग गयी ।

फॉदर की शरण में जाकर गिरजाघर में लैला लिली के रूप में और रंगडु डेनियल के रूप में बदल गये ।

डेनियल रिक्शा चलाता तो लिली छात्राओं के छात्रालय में वॉचमेन की हैसियत से काम करने लगी ।

बहुत वर्षों तक काम करने के बाद पदोन्नति करके अटेंडर के रूप में उसकी नियुक्ति की गयी । उसी समय खोली गयी सेवा पुस्तक में न जाने किस कारण से जन्म तिथि दर्ज न की गयी थी । वही बात इतने साल के बाद प्रकट हुई ।

अब लिली केवल अटेंडर ही नहीं बल्कि मुसलमानों की बेटी, हिंदुओं की बहू और ईसाई धर्म में दीक्षित नारी है ।

हालत इतनी बिगड़ गयी कि मुख्यमंत्री की कुरसी भी हिलने की नौबत आ गयी । फलस्वरूप आदेश आये कि लिली को तुरंत नौकरी पर रख तनख्वाह दी जाए ।

लोकनाथ के ही नहीं बल्कि,उस कार्यालय से अवकाश प्राप्त करनेवालों की छोटी बहन के रूप में और नये आनेवाले कर्मचारियों की बड़ी बहन के रूप में लिली आज भी काम कर रही है लेकिन किसी को सूझ नहीं रहा है कि उसे क्या करना है । खो गयी उसकी सेवा पुस्तक अभी भी नहीं मिली ।

जनाब ! यह है एक 'इंडियन स्टैंडर्ड इंस्टीट्यूट' की कहानी ।

मूल लेखक का पता :
बी. एन. आर. बिल्डिंग्स, किरेकेरा-५१५२११
अनुवाद : वाई. सी. पी. वेंकटारेड्डी

बस या विमान द्वारा लंबी यात्रा से जानलेवा रोग

बस या विमान में बैठकर लंबी यात्रा करने के परिणामस्वरूप धमनियों में खून के थक्के बन सकते हैं और इस प्रकार रक्त संचालन में अवरोध पैदा होने से जानलेवा हृदयरोग हो सकता है । खून के थक्के पहले तो पैरों की नसों में पैदा होते हैं मगर धीरे-धीरे ऊपर उठकर हृदय के निकट की धमनियों में पहुंच जाते हैं और हृदयरोग का कारण बन जाते हैं ।

उक्त प्रकार के थक्के अगर छोटे आकार में रहते हैं तो असह्य दर्द पैदा करते हैं और यदि बड़े आकार के बन जाते हैं तो तुरंत मृत्यु होने का खतरा पैदा करते हैं । अधिकांश मामलों में बस-यात्रियों और विमान-यात्रियों के शरीरों में खून के छोटे थक्के ही बनते हैं ।

लंबी बस यात्रा या विमान यात्रा से खतरा पैदा होने का एक कारण यह भी रहता है कि यात्रीगण इस बात से सतर्क नहीं रह पाते हैं कि यात्रा के कई सप्ताह बाद भी उसका उक्त प्रकार का बुरा नतीजा हो सकता है । अगर सतर्कता बरती जाए और व्यायाम या मालिश का क्रम जारी रखा जाए तो इस खतरे से आसानी से बचा जा सकता है ।

— रमेश कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिकता की रोगों भरी सौगात

रोगों से बचने के लिए कैक्टस उगाएं

● डॉ जगदीप सक्सेना

आजकल घरों के भीतर कांटोंभरे कैक्टस (नागफनी) उगाने का फैशन-सा चल पड़ा है। पर कुछ आधुनिक वैज्ञानिक खोजें बताती हैं कि ऐसा करना हमारी सेहत के लिए भी फायदेमंद है। खास तौर से तब जब घर में बिजली से चलनेवाले कई उपकरणों का इस्तेमाल होता हो। उल्लेखनीय है कि बिजली से चलनेवाले उपकरण अपने चारों ओर एक विद्युत चुंबकीय क्षेत्र विकसित करके हमारी सेहत को कई तरह से नुकसान पहुंचाते हैं।

स्विट्जरलैंड स्थित अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग के तहत देखा कि अगर एक खास कैक्टस (वैज्ञानिक नाम सीरियस पेरूवियानस) को कंप्यूटर के परदे के पास रखा जाए, तो उससे निकलनेवाली ज्यादातर हानिकारक विद्युत-चुंबकीय तरंगों को यह सोख लेता है। इस वजह से दिनभर कंप्यूटर पर काम करनेवालों को सिरदर्द या थकान की शिकायत नहीं होती। वैज्ञानिकों की राय में प्रकृति ने कैक्टस की रचना इस प्रकार की है कि ये हानिकारक विद्युत-चुंबकीय तरंगों को सोखकर भी भले-चंगे बने रहें। तभी तो ये रेगिस्तान में उस सूरज का सामना करते हुए डटे रहते हैं, जो धरती पर विद्युत-चुंबकीय ऊर्जा का सबसे प्रमुख स्रोत है।

बिजली के तारों से कैंसर

हम तक बिजली पहुंचानेवाले तार भी कम खतरनाक नहीं हैं। इसका पता सबसे पहले सन १९७९ में लगा। हुआ यह कि अमरीका की कोलोराडो यूनिवर्सिटी के चिकित्सा केंद्र से जुड़ी चिकित्सक नैंसी वर्थीमर को कैंसर के कुछ चौंकानेवाले आंकड़े दिखायी दिये। उन्होंने देखा कि डेंवर क्षेत्र के बच्चों में कैंसर का प्रकोप अन्य क्षेत्रों की तुलना में ज्यादा है। सोचा कि खोजबीन करनी चाहिए। सो उन्होंने डेंवर क्षेत्र में जाकर वहां के लोगों के खान-पान, रहन-सहन और अड़ोस-पड़ोस के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारियां इकट्ठी करनी शुरू कर दीं। पता लगा कि अपराधी न तो खान-पान में छिपा है और न ही रहन-सहन में। कैंसर पैदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का अपराधी घरों के पास लगे बिजली के ट्रांसफार्मरों को पाया गया ।

गहन अध्ययन और सर्वेक्षण के बाद वर्थीमर ने बताया कि बिजली वितरण के मुख्य तार या ट्रांसफार्मर के पास स्थित घरों में रहनेवाले बच्चों में कैंसर की संभावना अन्य घरों में रहनेवाले बच्चों की तुलना में दुगुनी होती है । यहां 'पास' का मतलब है मुख्य तार से १३० फुट या ट्रांसफार्मर से ५० फुट की दूरी के भीतर । इन नतीजों ने अमरीका समेत सभी विकसित देशों में सनसनी फैला दी । नतीजों की पुष्टि के लिए कोलोराडो यूनिवर्सिटी के ही एक अन्य चिकित्सक डेविड सेविज को उसी क्षेत्र में अनुसंधान दोहराने के लिए कहा गया । इस बार भी नतीजे लगभग वैसे ही मिले ।

परिणामस्वरूप दुनियाभर में बिजली से उत्पन्न खतरों पर वैज्ञानिक शोध प्रारंभ हो गया । बिजली बनाने और बेचनेवाली कंपनियों ने भी इस पहलू पर खोज करवानी शुरू कर दी । सन १९८२ में सैमुएल मिलैम ने 'न्यू इंगलैंड जर्नल ऑव मेडिसिन' में प्रकाशित एक शोध निबंध में बताया कि बिजली कंपनियों में काम करनेवालों में रक्त कैंसर के प्रकोप की दर सामान्यजनों की तुलना में कहीं ज्यादा होती है ।

सवाल उठता है ऐसा क्यों है ? दरअसल, विद्युत धारा का प्रवाह विद्युत चुंबकीय तरंगें उत्सर्जित करता है । इससे बिजली के तार के चारों ओर एक अदृश्य विद्युत चुंबकीय क्षेत्र पनप जाता है । यह अपने भीतर स्थित किसी भी जीव या निर्जीव पर अपना प्रभाव छोड़ता है । इसी वजह से अगर किसी ज्यादा शक्तिवाले बिजली के तार के पास कोई ट्यूब लाइट लायी जाए तो वह बिना 'करंट' के ही दमकने लगती है । कारण कि विद्युत-चुंबकीय तरंगें उसके भीतर भरी गैस का आयनीकरण कर देती हैं । इस 'चमत्कार' का प्रदर्शन किया जा सकता है ।

अपने ऐशो-आराम के लिए मानव ने अनेक यंत्रों-उपकरणों की रचना की है । बिजली से चलने वाले ये घरेलू उपकरण हमारी सेहत को भारी नुकसान पहुंचाते हैं । वैसे खुद बिजली भी कम खतरनाक नहीं है । बिजली के तारों का साया कैंसर पैदा कर सकता है । गर्भवती महिलाओं के लिए कंप्यूटरों की संगत गर्भपात का कारण बन जाती है । वातानुकूलन यंत्र स्थायी सिरदर्द की वजह हैं । अनेक घरेलू साजो-सामान घर के भीतर रोगकारी प्रदूषण फैलाते हैं ।

फ्रिज कमरे से बाहर कर दें

विद्युत चुंबकीय क्षेत्र सिर्फ ज्यादा शक्तिवाले बिजली के तारों से ही नहीं पनपता । देखा गया है कि टोस्टर, कॉफी मेकर, मिक्सी— जैसे घरेलू उपकरण भी अपने चारों ओर विद्युत-चुंबकीय क्षेत्र विकसित करते हैं । इनसे निकलनेवाली विद्युत-चुंबकीय तरंगों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवृत्ति कम होती है । वैज्ञानिक ३०० हर्ट्ज से कम आवृत्तिवाली तरंगों को 'एक्स्ट्रीमली लो फ्रीक्वैंसी' (ई. एल. एफ.) यानी 'बेहद कम आवृत्ति' वाली तरंगों के नाम से पुकारते हैं । आजकल इन्हीं तरंगों के प्रभाव पर ज्यादा शोध हो रहा है ।

वैज्ञानिकों ने प्रयोगशालाओं में मानव और अन्य प्राणियों की कोशिकाओं पर ई. एल. एफ. का प्रभाव परखा है । पता लगा है कि ये कोशिकाओं में मौजूद आनुवंशिक सामग्री डी. एन. ए. को प्रभावित कर कोशिका की जनन-क्रिया में बाधा उत्पन्न करते हैं । परिणामस्वरूप जनन संबंधी विकार उत्पन्न होने के साथ ही शिशु में जन्मजात शारीरिक विकृतियां भी उपज सकती हैं । विद्युत-चुंबकीय तरंगें कैंसर को बढ़ावा देनेवाले जैव-रसायनों को सक्रिय कर देती हैं । ये तरंगें हमारे दिमाग में स्थित जैविक घड़ी की रफ़्तार को गड़बड़ाकर कई मानसिक विकार उत्पन्न करती हैं । टेक्सास यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक जेरी फिलिप्स के अनुसार ई. एल. एफ. से उत्पन्न कैंसर कोशिकाओं में हमारे शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को धता बताने की क्षमता बहुत ज्यादा होती है । इसीलिए विद्युत चुंबकीय तरंगें चमड़ी के कैंसर से लेकर रक्त-कैंसर, स्तन-कैंसर और मस्तिष्क-कैंसर तक उत्पन्न करने में सक्षम होती हैं ।

इन्हीं कारणों से वैज्ञानिकों ने बिजली से चलनेवाले घरेलू उपकरणों को अपने से दूर रखने की सलाह दी है । अगर फ्रिज आपके शयन-कक्ष में है तो उसे तुरंत बाहर कर दें । अपने सिरहाने बिजली से चलनेवाली अलार्म घड़ी भी न रखें । वातानुकूलन यंत्र हमेशा अपने बिस्तर से ज्यादा से ज्यादा दूरी पर लगवाएं । 'माइक्रोवेव ओवेन' से दूर ही रहें । मकान बनवाते समय दीवारों में बिजली के तारों की स्थापना इस तरह करवायें कि ये हमेशा अधिकतम दूरी पर रहें । इन सावधानियों के साथ ही बेहतर यह होगा कि हम बिजली के उपकरणों का इस्तेमाल कम से कम करें ।

चमकते परदों से गर्भपात

आजकल कार्यालयों में कंप्यूटरों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है । ये भी अपने चारों ओर विद्युत-चुंबकीय क्षेत्र पनपाकर घरेलू उपकरण की ही तरह हमारी सेहत को नुकसान पहुंचाते हैं । पर इनमें एक अतिरिक्त दोष भी है । कंप्यूटर की स्क्रीन या परदा कुछ विशेष किरणों और चमक के कारण हमारे स्वास्थ्य को अलग ढंग से प्रभावित करता है । परदे से पराबैंगनी किरणें फूटती हैं, जो त्वचा-कैंसर उत्पन्न करने के लिए कुख्यात हैं । इससे कुछ मात्रा में एक्स-किरणें भी निकलती हैं । कंप्यूटर पर काम करने के लिए व्यक्ति को काफी निकट बैठना पड़ता है । इसलिए इन तरंगों से बचने का कोई मौका भी नहीं मिल पाता ।

'इंटरनेशनल जर्नल ऑव कैंसर' में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार कंप्यूटर पर काम करनेवाली महिलाओं में मस्तिष्क के ट्यूमर का प्रकोप अन्य महिलाओं की तुलना में पांच गुना ज्यादा होता है । ओन्टारियो की वाटरलू यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक डॉ. हरि शर्मा ने कंप्यूटर पर काम करनेवाली सात गर्भवती महिलाओं की निगरानी की । नतीजा चौंकानेवाला और गंभीर रहा— तीन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भपात हो गया और तीन के शिशुओं में शारीरिक विकृतियां पायी गयीं । इस नतीजे के बाद ओन्टारियो में गर्भवती महिलाओं को कंप्यूटर से दूर रखने के लिए नियम-कानून बनाये गये । अमरीका के नेशनल फाउंडेशन ने कंप्यूटर जनित स्वास्थ्य विकारों पर १४० से ज्यादा वैज्ञानिक अध्ययन करवायें हैं । इनसे पता लगा है कि कंप्यूटर और मस्तिष्क-कैंसर, रक्त-कैंसर व गर्भपात के बीच सीधा संबंध है । कंप्यूटर पर लगातार काम करने से कई चर्म रोग भी पनप सकते हैं ।

कंप्यूटर के परदे की चमक कई नेत्र-विकार उत्पन्न करने में समर्थ हैं । दिनभर कंप्यूटर पर काम करने के बाद आंखों में जलन और सिरदर्द होना एक आम शिकायत है । पर अगर इस ओर ध्यान न दिया जाए, तो अंत में मोतियाबिंद पनप सकता है । अस्पतालों से मिलनेवाले आंकड़े बताते हैं कि कंप्यूटर पर काम करनेवाले नेत्र-रोगियों की तादाद लगातार बढ़ रही है ।

सुन्न पड़ती अंगुलियां

कंप्यूटर के साथ जुड़े 'की-बोर्ड' पर लगातार ठक-ठक करते रहने से अंगुलियों के सिरे धीरे-धीरे सुन्न पड़ने लगते हैं । इससे बाद में 'कार्पेल टनेल सिंड्रोम' नामक एक तंत्रिका-विकार पनप जाता है । साथ ही अंगुलियों को कलाई से जोड़नेवाली नसों में लगातार तनाव के कारण एक विकृति उत्पन्न हो जाती है । इस कारण अंगुलियां अपने-आप कंपकंपाने लगती हैं ।

यह भी देखा गया है कि अकसर कंप्यूटर के सामने बैठनेवाली कुरसी की डिजाइन वैज्ञानिक अपेक्षाएं पूरी नहीं करती । इस कारण कंप्यूटरकर्मियों को जल्दी ही जोड़ों के दर्द की शिकायत जकड़ लेती है । घंटों तक लगातार काम करनेवालों की रीढ़ की हड्डी में वक्रता उत्पन्न हो सकती है । कुल मिलाकर कंप्यूटर पर काम करनेवाले पेशियों और हड्डियों के कई विकारों से ग्रस्त हो सकते हैं । इनमें सबसे प्रमुख हैं— 'रिपीटीटिव स्ट्रेन इंजरी' । इसकी वजह से कंप्यूटर कर्मियों को पूरे शरीर में दर्द की शिकायत हो जाती है ।

कंप्यूटर चलायें हैलमेट लगाकर

कंप्यूटर विकारों से बचने के लिए वैज्ञानिकों ने कई उपयोगी सुझाव दिये हैं । आजकल विदेशी बाजारों में कुछ ऐसी 'शील्ड' बिकने

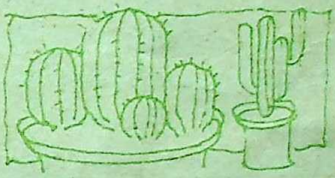

लगी हैं, जिन्हें कंप्यूटर के दोनों ओर लगाने से इनका विद्युत-चुंबकीय क्षेत्र सीमित हो जाता है । इनका उपयोग अनिवार्य रूप से करना चाहिए । सिर को विद्युत-चुंबकीय तरंगों से बचाने के लिए विशेष 'हैलमेट' लगाने की सलाह दी गयी है । कंप्यूटर कर्मियों के लिए खास विकिरण रोधी जैकेटें भी बनायी गयी हैं ।

कंप्यूटर के परदे पर कम से कम चमक रखनी चाहिए । इसके लिए चमकरोधी स्क्रीन भी लगायी जा सकती है । ऐसी व्यवस्था करें कि सफेद परदे पर काले अक्षर उभरें । परदे को रंगीन बनाने की कोशिश न करें । परदे पर ऊपर से रोशनी न पड़े तो बेहतर होगा । अंगुलियों को आराम देने के लिए 'की-बोर्ड' के पास एक पैड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखकर, उस पर हथेली टिकायें । पर सबसे बेहतर यह होगा कि कंप्यूटर पर लगातार घंटों काम न करें । हर दो घंटे पर पंद्रह मिनट का अंतराल आपको कई कंप्यूटर विकारों से बचा देगा ।

फर्नीचर से सांस के रोग

क्या आपको अकसर आंखों में जलन और सिरदर्द की शिकायत रहती है ? साथ ही सांस लेने में भी तकलीफ होती है ? यह आपके नये फर्नीचर या दीवारों के रंग-रोगन की करामात हो सकती है । दरअसल फर्नीचर पर की गयी पॉलिश, दीवारों के पेंट, पार्टिकिल बोर्ड, कालीन और प्लाईवुड वगैरह फार्माल्डिहाइड नामक एक गैस छोड़ते रहते हैं । इस रंगहीन गैस में एक तीखी गंध होती है । नये फर्नीचर में इसका आभास होता है । लगातार फार्माल्डिहाइड के संपर्क में रहने से उपर्युक्त शिकायतें पनपते देर नहीं लगती ।

हाल में अमरीका की 'लारेंस बर्कले लेबोरेट्री' से आयी एक रिपोर्ट के अनुसार वातानुकूलन यंत्र भी कई जहरीले कण उत्पन्न करते हैं, जो बहुत लंबे समय तक कमरे के भीतर ही घुमड़ते रहते हैं । कारण कि वातानुकूलन यंत्रों से सुसज्जित कमरे चारों ओर से बंद रहते हैं । साथ ही ये कमरे की हवा में धन और ऋण आयनों की संख्या में भी असंतुलन पैदा कर देते हैं । इससे स्थायी रूप से सिरदर्द और थकान की शिकायत हो जाती है । वातानुकूलन यंत्रों के हानिकर प्रभाव को कम करने के लिए दो सुझाव दिये गये हैं । वातानुकूलित कमरे की कम से कम एक छोटी खिड़की जरूर खुली रखें और कमरे में आयनीकरण यंत्र लगवायें । कमरे में आयनों का संतुलन बनानेवाले ये यंत्र आजकल बाजारों में बिकने लगे हैं ।

कमरे के भीतर होनेवाले प्रदूषण में सीसे का भारी हाथ है । अनेक पेंटों और बैटरियों में सीसे का इस्तेमाल किया जाता है । अमरीका के 'सेंटर फॉर डिसीज कंट्रोल' के अनुसार सीसा बच्चों की बुद्धिमत्ता घटाता है और उनके व्यवहार पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है । इसलिए पेंट का चुनाव करते समय कम-से-कम सीसेवाले पेंट का चुनाव बेहतर होगा । बैटरियों को हमेशा बच्चों से दूर रखें ।

आधुनिकता से उत्पन्न होनेवाले विकारों और रोगों की सूची बहुत लंबी हो सकती है । दरअसल हम जैसे-जैसे प्रकृति से दूर होते हैं, वैसे-वैसे रोगों से हमारी निकटता बढ़ती जाती है । प्रकृति के निकट रहना ही उत्तम स्वास्थ्य की कुंजी है ।

—क्यू.यू.-२३०ए, विशाखा एनक्लेव,
पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४

आंखों के रोग : उपचार

- लौंग पानी में घिसकर लगाएं ।
- इमली के बीज की गिरी पानी में घिसकर लगाएं ।
- छुआरे की गुठली पानी में घिसकर लगाएं ।
- आरोग्यवर्धिनी वटी एक-एक गोली सुबह, दोपहर, रात पानी से लें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरसों— एक बसंत है

पलकें गीली क्यों हुईं
जब अनायास तुम फूली
सरसों ! तुम क्यों फूली !
यह कैसा मौसम ! कैसा देस
कैसी यह अनजान सुबह
यह सूरज कैसा
कैसी हवा— मदिर मदिर
यह कैसी पीड़ा
सरसों ? जब तुम फूली ?
किसकी याद आयी
इस तरह कि जैसे
धरती की छाती में
उमड़-घुमड़कर
आंधी आयी
अनायास किरणें फूटी
लहलहायी सरसों ?
कौन जीता है इतना
दर्द झेलकर
किसका भग्न हृदय
बहलाने, कैसी आस दिलाने
चांदी-सी पगडंडी पर
नंगे पैर धूल धूसरित
झमकाती झांझर
महमहाती चली आयीं
तुम सरसों ! क्यों फूली ।
फिर पीला आंचल—
पीली बिंदी
काजलवाली काली आंखें— गोरी बाहें—
गोरी शाखें ।
फिर ऋतु का अनकहा निमंत्रण
याद दिलाने आ गयीं
झकझोरकर कंचन देह/कुरेदकर
भूली बात/सोया बसंत जगाने आ गयीं
सरसो तुम फूली— क्यों फूली ?

—पद्माशा

८/७३, आर-ब्लाक, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

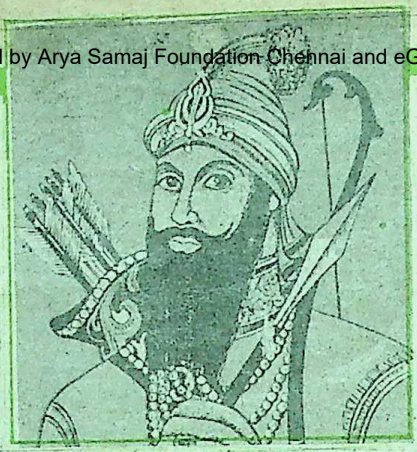

जहां गुरु गोबिंद सिंह ने पूर्वजन्म में तपस्या की थी

● गुरमीत बेदी

दशम गुरु गोबिंद सिंह ने अपने काव्यात्मक ग्रंथ 'विचित्र नाटक' में एक जगह अपने पूर्वजन्म के स्थल का हवाला देते हुए कहा है, ' अब मैं अपनी कथा बखानूं, तप साधत जेहि विधि मोही जाना, हेमकुंड पर्वत है जहां, सप्तश्रृंग सोहत है वहां, सप्तश्रृंग तेहि नाम कहाना, पांडुराज जहां लोग कमावा, तहं हम अधिक तपस्या साधी, महाकाल कालिका आधारी ।' अर्थात हेमकुंड (हिमालय पर्वत) की एक चोटी सप्तश्रृंग, जहां सात मनोहारी चोटियों का मिलन होता है, जहां पांडव बंधुओं के पिता पांडुराज ने तप किया था, वहीं मैंने तपस्या की और महाकाल की आराधना की । 'विचित्र नाटक' में ही गुरु गोबिंद सिंह जी ने आगे लिखा है कि महाकाल की आराधना करने के बाद जब वह और महाकाल एकाकार हो गये, तब प्रभु ने उन्हें पृथ्वीलोक में जाने का आदेश दिया ।

तपस्या स्थली की खोज

गुरु गोबिंद सिंह द्वारा वर्णित यह स्थल कहां हो सकता है ? इतिहासकार और सिख श्रद्धालु किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पा रहे थे ।

यह घटना सन १९३० की है । टिहरी में रहनेवाले एक सिख फौजी सोहन सिंह ने उस स्थल को ढूंढ़ने का निश्चय किया और घर से निकल पड़े । धर्मग्रंथों के अध्ययन के अलावा वह कुछ पहुंचे हुए साधु-संतों से मिले और खोजबीन शुरू की । वर्षों तक वह साधु-संतों के संग हिमालय के क्षेत्रों में भटकते रहे और उनकी निगाहें हिमालय पर्वत की श्रृंखलाओं में उन सात शिखरों को ढूंढ़ती रहीं, जिनका उल्लेख गुरुजी ने 'विचित्र नाटक' में किया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

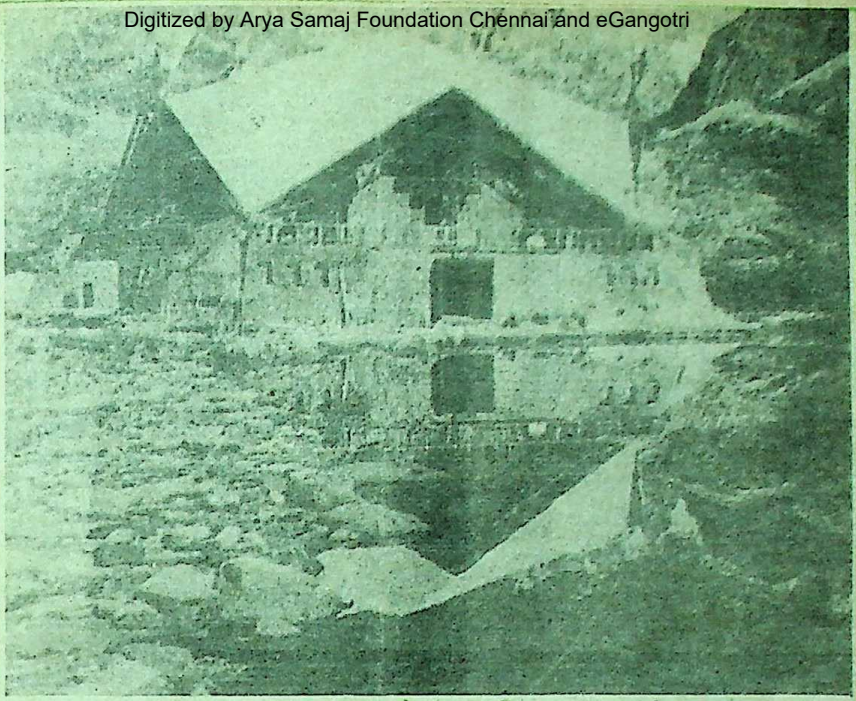

गुरुद्वारा हेमकुंड साहिब

इसी बीच एक रात साधु-संतों के काफिले सहित सोहन सिंह 'पांडुकेश्वर' नामक जगह पर रुके । वहां रात को सत्संग के दौरान उन्हें जानकारी मिली कि जिस स्थल पर वह ठहरे हुए हैं, वहां पांडव-पिता राजा पांडु ने तप किया था । सोहन सिंह के चेहरे पर रौनक आ गयी । उन्हें लगा कि जिस स्थल की उन्हें वर्षों से खोज थी, आखिर उक्त स्थल को खोजने में वह कामयाब हो गये हैं । सत्संग वाले आश्रम से सोहन सिंह यह देखने के लिए बाहर आये कि सप्तश्रृंग किस ओर है । लेकिन बाहर घने अंधकार की वजह से हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था, तो सात पर्वत चोटियां कहां नजर आतीं । मन मसोसकर वह पौ फटने का इंतजार करने लगे ।

सुबह जैसे ही अंधकार की काली चादर सिमटनी शुरू हुई, सोहन सिंह ने चारों दिशाओं में निगाह दौड़ायी । चारों ओर विशालकाय पर्वतमाला दृष्टिगोचर हो रही थी लेकिन सात शिखरों का मिलन होते कहीं नहीं दिख रहा था । तभी उनकी निगाह लोगों के एक झुंड पर पड़ी, जो कतार बनाकर पहाड़ी पगडंडियों पर चला जा रहा था । उन्होंने वहां से गुजर रहे एक साधु से उन लोगों के बारे में जानना चाहा, तो पता चला कि श्रद्धालुओं का यह समूह 'लोकपाल' के दर्शनार्थ जा रहा है ।

सोहन सिंह भी उन श्रद्धालुओं में शामिल हो गये । लोकपाल पहुंचकर जब काफिला रुका, तो शाम ढल रही थी । सूर्य की डूबती किरणें सामने पर्वतों पर पड़कर स्वर्णिम रंग बिखेर रही थीं । सहसा सोहन सिंह की निगाहें प्रकृति के इस अनुपम रूप को देखने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वत-शिखरों पर ठहर गयीं । सात मनोहारी शिखरों का मिलन होता दिख रहा था और सोहन सिंह गद्‌गद् हुए जा रहे थे । आखिर उन्होंने अपना लक्ष्य पूरा कर लिया था । श्रद्धालु वहां कुंड में स्नान कर रहे थे और सोहन सिंह जल में पड़ते सप्तश्रृंग के प्रतिबिंब को देखकर अभिभूत हो उठे थे । यही लोकपाल 'हेमकुंड' था और यही वह स्थल था, जहां दशम गुरु गोबिंद सिंह जी ने पूर्वजन्म में तपस्या की थी ।

एकता का प्रतीक

उत्तर प्रदेश के चमोली जिले में १५,११० फुट की ऊंचाई पर स्थित हेमकुंड को हिंदू-सिख एकता का प्रतीक भी माना जाता है । यह भी धारणा है कि राम-रावण युद्ध के बाद लक्ष्मण ने भी यहां आकर तपस्या की थी । करीब आठ महीने बरफ की चादर में लिपटे रहनेवाले इस स्थल पर एक भव्य गुरुद्वारा और लक्ष्मण का मंदिर बना है, जहां जून से अक्तूबर के मध्य तक श्रद्धालुओं की आमद रहती है । लक्ष्मण को यहां लोकपाल कहते हैं, अतः यह मंदिर लोकपाल के नाम से मशहूर है । हेमकुंड साहिब गुरुद्वारा दुमंजिला है और इसका आकार दूर से देखने पर कमल के उल्टे फूल की तरह लगता है । इस गुरुद्वारे का निर्माण भी सोहन सिंह ने,जो कि बाद में संत सोहन सिंह के नाम से विख्यात हुए, अपनी देखरेख में करवाया ।

इस बरफीले और निर्जन स्थल पर गुरुद्वारे के निर्माण के पीछे संत सोहन सिंह की दृढ़ इच्छाशक्ति और अथक प्रयासों को सारा श्रेय जाता है । हेमकुंड में गुरुद्वारे के निर्माण के लिए चंदा और मानव-शक्ति जुटाने के लिए संत सोहन सिंह पंजाब आकर गांव-गांव घूमे । लेकिन किसी ने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया । १९३३-३४ में वह फिर निकले । देहरादून, मसूरी, सहारनपुर, अंबाला, दिल्ली, लाहौर, लुधियाना, जालंधर, तरनतारन इत्यादि बहुत से शहरों में घूमे । दानियों और सिख श्रद्धालुओं से मिले । लेकिन जो वह चाहते थे, वह मदद कहीं से नहीं मिली । वह पांच-पांच या दस-दस रुपये इकट्ठे करने की बजाय किसी ऐसे दानी व्यक्ति या संस्था की तलाश में थे, जो गुरुद्वारे के निर्माण का सारा व्यय वहन कर सके ।

लगभग दो साल उन्होंने प्रयत्न किया, लेकिन उनकी योजना सिरे न चढ़ी । १९३५ में अचानक उनकी भेंट अमृतसर में भाई वीर सिंह से हुई । संत सोहन सिंह ने उन्हें हेमकुंड साहिब का पता लगाने, वहां की अपनी यात्रा के अनुभवों और वातावरण से परिचित करवाते हुए वहां गुरुद्वारा बनाने की अपनी इच्छा जतायी। गुरु गोबिंद सिंह के प्रति संत सोहन सिंह की अगाध श्रद्धा से भाई वीर सिंह बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने संत सोहन सिंह को यकीन दिलाया कि उनके पुण्य प्रयास अवश्य सफल होंगे ।

भाई वीर सिंह जी ग्रंथों का गूढ़ अध्ययन करके इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि गुरु गोबिंद सिंह जी ने जिस स्थल पर पूर्वजन्म में तपस्या की थी, संत सोहन सिंह सचमुच उसी स्थल की यात्रा कर आये हैं । उन्होंने संत सोहन सिंह को वचन दिया कि वह जाकर गुरुद्वारे का निर्माण कार्य शुरू करवा दें, धन की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी । संत सोहन सिंह को उन्होंने गुरु ग्रंथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश के चमोली जिले में १५,११० फुट की ऊंचाई पर स्थित हेमकुंड को हिंदू-सिख एकता का प्रतीक भी माना जाता है । यह भी धारणा है कि राम-रावण युद्ध के बाद लक्ष्मण ने भी यहां आकर तपस्या की थी । करीब आठ महीने बरफ की चादर में लिपटे रहनेवाले इस स्थल पर एक भव्य गुरुद्वारा और लक्ष्मण का मंदिर बना है, जहां जून से अक्तूबर के मध्य तक श्रद्धालुओं की आमद रहती है ।

साहिब की बीड़, गुरुद्वारे के लिए आवश्यक सामान, कुछ पुस्तकें और एक छोटा तंबू बाजार से खरीद दिया ।

संत सोहन सिंह टिहरी रवाना हो गये । बाद में आवश्यक सामान, इमारती लकड़ी और धनराशि उन्हें समय-समय पर सिख श्रद्धालुओं के हाथों भिजवायी जाती रही । सन १९३६ के अंत तक संत सोहन सिंह ने १०×१० फुट का एक कमरा तैयार करवा दिया । चूंकि सरदियां नजदीक थीं । अतः सोहन सिंह को मजबूरन वापस लौटना पड़ा । १९३७ में अगस्त-सितंबर के महीनों में वह फिर हेमकुंड साहिब गये और गुरुद्वारे में गुरु ग्रंथ साहिब का पहला 'प्रकाश' किया । संत सोहन सिंह अपना मिशन पूरा देखकर बहुत प्रसन्न थे । शीघ्र ही उन्होंने गुरुद्वारे से तीन किलोमीटर पीछे श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए सराय का निर्माण कराया । उनकी इच्छा हेमकुंड साहिब के दर्शनार्थ आनेवाले श्रद्धालुओं के लिए और अधिक सुविधाएं जुटाने की थीं । लेकिन भाग्य को शायद कुछ और ही मंजूर था । तपेदिक की बीमारी का शिकार होने पर वह अमृतसर आ गये, जहां इलाज के लिए भाई वीर सिंह ने उन्हें अस्पताल में दाखिल करवा दिया । लेकिन बीमारी बढ़ती ही गयी और अंततः वह प्रभु चरणों में जा विराजे ।

हेमकुंड दर्शन

सेना की नौकरी के दिनों में संत सोहन सिंह के एक अभिन्न मित्र थे —हवलदार मोहन सिंह । उन्होंने संत जी के साथ हेमकुंड साहिब की यात्राएं की थीं और हेमकुंड साहिब के प्रति उनके दिल में अगाध श्रद्धा थी । संत सोहन सिंह के निधन के बाद उन्होंने हेमकुंड साहिब की सेवा का भार संभाल लिया । उन्हीं की देखरेख में यहां गुरुद्वारे का विस्तार हुआ । आजकल मोहन सिंह के सुपुत्र नंदी सिंह गुरुद्वारे की सेवा करते हैं । सिख इतिहास और हेमकुंड साहिब से जुड़े पौराणिक इतिहास के जानकार डॉ. तारा सिंह ने अपनी पुस्तक 'श्री हेमकुंड दर्शन' में इस स्थल की महिमा का चित्रण करते हुए लिखा है —

'सरदी जब पूरे यौवन पर होती है, तब इस १५,११० फुट ऊंचाईवाले पर्वत पर जल की वर्षा नहीं होती । केवल कभी कम और कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक बरफ ही गिरती है । कई बार तो बरफ इतनी पड़ती है, मानो बादल ही नीचे आकर टिक गये हैं । अनुमान है, चालीस फुट से अधिक बरफ पड़ जाती है । गुरुद्वारा, निशान साहिब और सरोवर भी बरफ से ढक जाते हैं । बरफ जमकर सख्त हो जाती है, इसलिए गुरुद्वारे पर बोझ नहीं पड़ता तथा अंदर से शुष्क रहता है । बरफ ढलने के बाद जब बारिश शुरू होती है, तब बादल नीचे होने के कारण बहुत धुंध रहती है । रात का पूरा अंधेरा छा जाने से पहले जब यहां के एकांत में घनेरी संध्या छा जाती है, तो सारा दृश्य तथा वातावरण किसी और प्रकार का हो जाता है । एक तरह का सन्नाटा-सा छा जाता है । असली दृश्य किसी अन्य रूप में नजर आने लगते हैं । ऐसे समय एकांत किसी के लिए दिल दहला देनेवाला भयानक समय होता है, लेकिन डर के अभाव में इस समय आनंद और बढ़ जाता है । कई प्रकार की आवाजें, जिनका इस ऊंचाई से संबंध है, पहचानी नहीं जा सकती हैं । बड़े-बड़े पत्थरों, पहाड़ों तथा हिमखंडों के गिरने की आवाजें नजदीक से आती हुई प्रतीत होती हैं ।'

दुर्लभ प्राकृतिक संपदा

हेमकुंड पर्वत के आगोश में ढेरों दुर्लभ जड़ी-बूटियों और रंग-बिरंगे सुगंधित फूल बरबस ही मन मोह लेते हैं । दुर्लभ प्रजाति का 'ब्रह्म कमल' भी यहां बहुतायत में देखने को मिलता है । जल से बाहर पैदा होकर भी ब्रह्म कमल की खूबसूरती एवं सुगंधि बेमिसाल है । यहां उगने वाली जड़ी-बूटियों में अतिविषा, कुटकी, जटामासी, पाषाणभेद, चौरा, गंधायण, धूप, भूतकेश, सालमपंजा, सालममिश्री इत्यादि प्रमुख हैं । यही नहीं, दुर्लभ कस्तूरी मृग भी यहां देखने को मिलता है । जिस शिला पर बैठकर गुरु गोबिंद सिंह जी ने पूर्व जन्म में तपस्या की थी, वह आज भी यहां विद्यमान है । यह भी मान्यता है कि महाभारत युद्ध के बाद पांडवों ने यहीं आकर समाधि ली थी ।

हेमकुंड साहिब के लिए मुख्य मार्ग ऋषिकेश से आरंभ होता है । ऋषिकेश से यहां की दूरी तीन सौ किलोमीटर के आसपास है । रास्ते में गोबिंदघाट, देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नंदप्रयाग, जोशीमठ, गोबिंदधाम (घांघरिया) आदि पड़ाव हैं । श्रीनगर, जोशीमठ, गोबिंदघाट के भव्य गुरुद्वारे हैं, जहां श्रद्धालुओं के ठहरने और लंगर की पूरी सुविधा है । घांघरिया से एक रास्ता विश्व प्रसिद्ध 'फूलों की घाटी' की ओर मुड़ जाता है । यहां से यह घाटी कुल चार किलोमीटर दूर है । दूसरा रास्ता हेमकुंड साहिब को जाता है । यहां से हेमकुंड साहिब की दूरी साढ़े पांच किलोमीटर है और आधा रास्ता तय करते ही हेमकुंड घाटी की चोटी पर निशान साहिब के दर्शन होने लगते हैं ।

जिस तरह हिंदू धर्म में 'और तीर्थ बार-बार, गंगासागर एक बार' वाली कहावत प्रचलित है, उसी तरह सिख धर्म में इस तीर्थ को मान्यता प्राप्त है । हेमकुंड पर स्थानीय निवासियों द्वारा वर्ष में तीन बार मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें लोग यहां स्थित लोकपाल (लक्ष्मण) मंदिर में पूजा-अर्चना करते हैं ।

—राना निवास,
बैजनाथ-१७६१२५
जिला कांगड़ा (हि.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि विलास

१. १५८० में से कम से कम कितना घटाया जाए कि बाकी संख्या १५, २५, ३५ से पूरी तरह विभाजित हो जाए ?

२. क. **चंद्रमा** पृथ्वी की परिक्रमा करता है। साथ ही और किसकी परिक्रमा लगातार करता रहता है ?

ख. चंद्रमा और पृथ्वी में दीप्ति-पिंड कौन-सा है ?

३. क. **यूरोप** का कौन-सा नगर सात पहाड़ियों पर अवस्थित है और जिसके बारे में कहा जाता है कि उसकी संरचना ब्रह्मांड की संरचना की नकल है ?

ख. 'नरक बहुत कुछ लंदन से मिलता-जुलता कोई नगर है— बहुत आबादी और धुएं वाला'— ये शब्द अपने जमाने के लंदन के बारे में किस प्रसिद्ध कवि के हैं ?

४. **भारत** में पैगंबर मुहम्मद के पवित्र स्मृति-चिह्न किन-किन स्थानों में सुरक्षित हैं ?

५. क. **बीरबल** का जन्म कहां हुआ था ? उनका पहले क्या नाम था ?

ख. अकबर ने उन्हें कहां का जागीरदार बनाकर राजा बीरबल की पदवी दी थी ?

६. **हाल** में पुरातत्ववेत्ताओं ने एक प्राचीन नगर की स्थिति का कहां पता लगाया है, जिसके विषय में कहा जाता है कि वह ईसा से हजार वर्ष पूर्व कुषाण-युग में बसा था ?

७. क. **गोमटेश्वर** भगवान बाहुबली की प्रतिमा कहां स्थित है ?

ख. उसे दुनिया का आठवां आश्चर्य क्यों कहा जाता है ?

८. क. **भारत** में निर्मित किस प्रक्षेपास्त्र का विगत नवंबर के अंत में कौन-सा सफल परीक्षण किया गया ?

ख. वह कितनी दूरी तक मार कर सकता है ?

९. **निम्नलिखित** पुरस्कार किसे मिले हैं ?
क. शांति, निरस्त्रीकरण और विकास के लिए १९९३ का इंदिरा गांधी पुर., **ख.** १९९३ का कलिंग पुर., **ग.** १९९३ का राष्ट्रमंडल लेखक पुर. ।?

१०. क. **गत** वर्ष हुए हीरो कप क्रिकेट टूर्नामेंट किसने कप जीता, किसको हराकर ?

ख. पिछले साल विश्व शतरंज खिताब पर किसने कब्जा किया था ?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिये और बताइये यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल योजनाएं न बनाएं

● एम. सी. भंडारी

क्षमता का स्वयं विकास करें

● प्रत्येक व्यक्ति एक स्वतंत्र इकाई है । उसकी अपनी विशेष क्षमता है । उसे चाहिए कि अपनी क्षमता का वह विकास करे ।

नैतिकता मूलभूत सिद्धांत नहीं

● प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छाएं और स्वाभाविक महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति कर सकने की स्वतंत्रता होनी चाहिए । कुछ भी बुरा नहीं है, यदि उससे स्वयं का पतन, दूसरों की हानि न होती हो । नैतिकता सामाजिक अवधारणा है,जो मनुष्यकृत ही है, इसलिए वह मूलभूत सिद्धांत नहीं है ।

उत्तम मुहूर्त्त

● उत्तम मुहूर्त्त वही है जिस समय कार्य करने का उत्साह जाग उठे । व्यक्तिगत रूप से मनुष्य अपने सुख-दुख के संबंध में स्वयं ही जिम्मेवार है । न तो कोई दूसरे को सुखी बना सकता है और न उसका सुख छीन सकता है ।

आध्यात्मिकता विकास है

● क्रियाकांड बंधन है : आध्यात्मिकता विकास । परंपरा, रीतिरिवाज और पूजा-पाठ भी बंधन ही तो हैं । मनुष्य को चाहिए कि इन सब से ऊपर उठकर सीधे सर्वसत्ता से संबंध जोड़े ।

ज्योतिष का मंत्रतत्त्व

● ज्योतिष-शास्त्र मनुष्य की क्षमता और सीमा को इंगित करता है— इससे ज्यादा उसमें नहीं खोजना चाहिए ।

जीवन का आनंद लें

● जीवन परिपूर्ण और प्रवाहमान होना चाहिए । प्रत्येक दृष्टि से उसका आनंद लेना चाहिए ।

केवल योजनाएं न बनाएं

● केवल सोचते रहने और योजनाएं बनाते रहने से काम नहीं बनता ! अपना काम यथाशीघ्र प्रारंभ कर देना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्य का ज्ञान रखें

- दूसरे क्या सोचते हैं, इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए । जिसे अपने लक्ष्य का ज्ञान है, उसे आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता ।

व्यक्ति एक छोटा ब्रह्मांड

- सारे ब्रह्मांड को प्रभावित करनेवाली अपार शक्ति तुम्हीं में निहित है, क्योंकि तुम संपूर्ण ब्रह्मांडीय शक्ति के ही अंशभूत हो । जैसे ही संपूर्ण विकारों का क्षय होगा, तुम ब्रह्मांडीय शक्ति में परिणित हो जाओगे और चरम आनंद में समा जाओगे ।

आत्म-निरीक्षण के लाभ

- अपने सुख या दुख का कारण मनुष्य स्वयं ही है । दुखों को भोगना या दूर करना तुम्हारे ही हाथ में है । कोई भी बाहरी व्यक्ति, तुम से अधिक तुम्हारा सहायक नहीं हो सकता । यह कहावत सच है कि 'ईश्वर उसी की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करता है ।'

अंतरात्मा की आवाज सुनो

- तुम्हारी अंतरात्मा जैसा करने को प्रेरित करे— वैसा ही करो । प्रकृति के विरुद्ध जाने से व्यर्थ ही शक्ति का अपव्यय होता है और कार्य सिद्धि में विलंब होता है । अपने स्वभाव के अनुसार जीना ही धर्म है । इसके विरुद्ध या विपरीत जाना बाधाओं को निमंत्रित करना है ।

सच्ची सजा

- किसी अपराधी को उसके अपराध का इस तरह ज्ञान करा देना कि वह उसका पश्चाताप व प्रायश्चित करे— यही उसकी सच्ची सजा है ।

सच्चा न्याय

- सच्चा न्याय वही है जो पानी को पानी और दूध को दूध कर सके ।

— संयोजक भारत निर्माण,
४, सीनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरे राज्य की प्रजा रानी को प्यार से बंझुली कहती थी। यह राज्यभर के लिए वैसा ही प्यारा संबोधन था, जैसे किसी अंधे को प्यार से सूरदास और बच्चे को प्यार से परिवार के तमाम लोग गुड्डू, पिंटू, मुन्ना-राजा जैसे संबोधित करके सुखानुभूति करते हैं। आप भी देखिए अपने घर, पड़ोस, गांव में कोई ऐसी स्त्री-देवी हो तो बांझ कहकर उसका अपमान मत कीजिए, बल्कि बंझुली कहकर उसका मान कीजिए।

बंझुली रानी को उसकी प्रजा वैसा ही प्यार देती, जैसा कोई मां अपने लाडले पुत्र से प्यार पाती है। इस प्यार से बंझुली वैसे ही लजा जाती, जैसे किसी नन्हीं बच्ची को 'मां' सुनकर लाज आती है। बच्ची को इस बात का अहसास हो जाता है कि उसमें एक 'मां' की संभावना मौजूद है, ऐसे ही रानी का बंझुली कहाकर लजाने के अंतस् में उसका उज्ज्वल मातृत्व कूट-कूटकर भरा है। निराकार नहीं बल्कि साकार और सशरीर मौजूद है।

घर कइथे बंझुली
बाहीर कइथे बंझुली
बंझुली कहाते लागे लाज हो माय

संतानहीन होने के बाद भी बंझुली को एक माता के रूप में जो सम्मान और स्नेह प्रजा और राजा से मिल रहा था, इसके कारण उसका मन विभोर था। आत्म-विभोर बंझुली को लगता कि इतना स्नेह तो कोई पुत्रवती अपने पुत्र से भी नहीं पा सकती। बंझुली इस प्रेम में डूबकर अकबका रही थी। एक दुखदायी मौत प्रेम के अभाव और निरंतर उपेक्षा से होती है, लेकिन यहां पर बंझुली प्रजा-प्रेम की महानदी में आयी बाढ़ में डूबकर मर रही है, उसे यह मौत शिशु जन्म की तरह सुखदायी लगती है।

राजा जगत के
दुई झन रनिया
इक पुतरौतिन
इक बांझ हो माय

राजा जगत पाल की दो रानियां थीं। एक पुत्रवती और दूसरी रानी यही बंझुली थी। आखिर बंझुली भी एक स्त्री थी। उसमें भी मातृत्व और पुत्र की अभिलाषा थी। अपनी इस कमी को जब दूर न कर सकी, तो उसने अपने राजवैद्य और राजगुरु की सलाह से हिंगलाज देवी की यात्रा का निर्णय लिया। वह राजा से बोली—

वह प्रेम के कारण परेशान थी

● नारायण शान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब का रहिहौं राजा
तोर महलन मां
निकल चलवं परदेश हो माय

हे राजाजी, मैं आपके लिए एक पुत्र और अपनी प्रजा के लिए एक कर्मठ और प्रजा-सेवी उत्तराधिकारी पैदा करके रानी मां नहीं बन सकती, तो मुझे राजपाट भोगने का कोई हक नहीं है । पुत्र के बिना यह सुख-ऐश्वर्य, धन-दौलत, राज-पाट, धरती-धर्म सब कुछ तुच्छ है, इसलिए मुझे अपने राज्य-प्रदेश को छोड़कर सुदूर प्रदेशों की यात्रा पर जाने दो ।

दइदे तैं दइदे राजा
सोने चंगुरिया
निकल चलव परदेश हो माय

हे राजा, मैं अपनी उस मातृभूमि की यात्रा पर जाना चाहती हूं, जो सोने की चिड़िया है, इसलिए तू मुझे सोने की एक टोकनी चंगोरा दे । मैं उसमें पूजा के फूल चुनकर रखूंगी और मातृभूमि के प्रतीक सभी देवी-मां को चढ़ाकर पुत्रवती होने का वर मांग लूंगी ।

सोन के चंगोरा धरे
वा रे बंझुलिया
गली मां धरन लागे
पांव हो माय

भारतीय संस्कृति में जो शक्तिस्वरूप देवियों की पूजा होती है, इन देवियों का विराट-स्वरूप मातृभूमि और धरती माता है । माताएं अपनी मनोकामना के लिए भिन्न-भिन्न रूपोंवाली, इन्हीं देवियों की आराधना करतीं और इच्छित वस्तु की मांग करती हैं —

आही मां छोड़े हावय
अब दूरी हटरी
बांही मां गोल बाजार
नाहके हवेली अब बनियन के
सोनरा के जोड़ा हे दूकान हो माय

लोक मान्यता है कि बंझुली की यह यात्रा ऐतिहासिक नगरी राजिम से शुरू हुई थी । यहां से चलकर रायपुर पहुंचने का जिक्र लोक-गीत करता है । वर्तमान में भी लोकगीत में आये स्थानों की प्रामाणिकता है जैसे दूरी हटरी, गोल बाजार, सदर और सराफा बाजार आदि आज भी रायपुर नगर में जस के तस मौजूद हैं ।

बसती ले बाहीर होगे
वा रे बंझुलिया
हिंगलाजे के
धरे बाट हो माय

रायपुर से हिंगलाज के लिए रवाना हो गयी । छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति, जन-मानस और राष्ट्रीय चेतना को भी अपने साथ लेकर बंझुली चली थी । वह अपनी पुत्रहीनता को अपने राज्य और अपने देश के लिए भी एक कमी समझने लगी थी । जरूर उसकी संपूर्ण भारत यात्रा की इच्छा थी । वह सभी देवी-माताओं का दर्शन कर मातृभूमि का ऋण उतारना चाहती थी ।

शायद वह जनसंपर्क करते हुए इस बात के लिए क्षमा याचना भी करना चाहती थी कि हे मातृभूमि के जनों, मैं देश की खातिर सपूत पैदा नहीं कर सकी । वह सादा भोजन और उच्च-विचार के साथ चली जा रही थी । राजसी ठाट-बाट, खान-पान त्यागकर एक आम आदमी की तरह चली जा रही थी—

कबहूं तो खाये बंझुली
अब गुड़ चिंवरा
कबहूं तो परे हे
उपास हो माय ।
रतिहा तो रेंगे बंझुली
अब दिन दउड़े
गढ़ हिंगलाज चले जाय
हो माय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठे अठोरिया के
रेंगे हे बंझुली
गढ़ हिंगलाज
नियराये हो माय ।

रात-दिन एक करके बंझुली हिंगलाज को बढ़ती गयी । इस तरह पूरे दो महीने में बंझुली हिंगलाज जा पहुंची । हिंगलाज का उल्लेख आल्हा खंड में इस प्रकार आया है :—

''हम हैं जोगी बंगाले के
आगे हिंगलाज को जाय...''

जैसे निष्कासित सीताजी को वन-देवी ने शरण दी । ठीक ऐसे ही बंझुली ने स्वयं ही अपने लिए निष्कासन की इच्छा की थी । वह निष्कासन से अवश्य ही सीताजी की तरह लव-कुश-जैसे पुत्र की कामना भी करती थी ।

जैसे अपनी तकलीफ को सारी धरती की पीड़ा सिद्ध करनेवाली सीताजी को मातृभूमि ने छाती फाड़कर अपनी गोद में स्थान दिया था, ठीक ऐसे ही सदिच्छा इस अंचल की सीता, छत्तीसगढ़ की लोक धारणा की सीता बंझुली की भी थी ।

लगे हे कछेरिया
केवल भवानी के
घमड़ लगे हे दरबार
जाय के पहुंचे
वा रे बंझुलिया
डंडा शरण लगे पांव

हिंगलाज पहुंचते ही बंझुली मातृभूमि स्वरूपा देवी मां भवानी के चरणों में डंडाशरण पड़ गयी ।

धर्म-शास्त्रों में मातृभूमि को भिन्न-भिन्न देवी के रूप में शायद इसलिए अभिव्यक्त किया गया है क्योंकि आम-आदमी मातृभूमि को आंचलिक और भारत माता को राजनीतिक दृष्टि से देखता है । उसे अंधविश्वासी और शासित बने रहने के लिए धर्म का ढोंग दिखाया जाता है ।

हिमालय की सबसे ऊंची चोटी गौरी शंकर, एवरेस्ट है । माता गौरी मातृभूमि और शंकर जी राष्ट्र पिता हैं । धर्म का ढोंग हटाकर जिस तरह की देवी-देवताओं का सांस्कृतिक और राष्ट्रीय स्वरूप उभारा जाना अति आवश्यक है तभी आम आदमी राष्ट्र धारा से जुड़ सकता है :—

जब मुख बोलत हावे
केवल भवानी मां
सुन बंझुली मोर बात
काहे कारण बंझुली
तुम चले आए
कोन परे हे तोला काम

जिस मिट्टी में अन्न पैदा होता है, तो अन्न को अपनी उस भूमि से बेहद प्यार हो जाता है । बंझुली का प्यार भी भवानी के आमने-सामने होते ही ऐसे ही जग पड़ा । वह मंत्र-मुग्ध होकर देवी मां की ओर देखने लगी । तभी उसे लगा कि मां उससे जान-बूझकर पूछ रही है कि बंझुली तुम्हें क्या

पूरे राज्य की प्रजा रानी को प्यार से बंझुली कहती थी । यह राज्यभर के लिए वैसा ही प्यारा संबोधन था, जैसे किसी अंधे को प्यार से सूरदास और बच्चे को प्यार से परिवार के तमाम लोग गुड्डू, पिंटु, मुन्ना-राजा जैसे संबोधित करके सुखानुभूति करते हैं ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तकलीफ है और तू मेरे पास कौन-सा काम लेकर आयी है ।

जब मुख बोलत हावे
वा रे बंझुलिया
सुन जननी मोर बात
तोर दिये हावे
अन्न-धन लछमी
पुतुर बिना अंधियार
हो माय

हे मातृभूमि, तुम्हारा दिया हुआ मेरे पास अन्न-धन, लक्ष्मी, सुख-वैभव सब कुछ है । सिर्फ एक पुत्र के बिना मेरा जीवन अंधकारमय है, इसलिए हे माता तू मुझे एक पुत्र देकर मेरे जीवन को आलोकित कर दे :—

जब मुख बोलत हावे
केवल भवानी मां
सुन बंझुली मोर बात
तोला मां देयेंव बंझुली
कोरव मां बलकवा
रहि जाबे सकट उपास
हो माय

बंझुली के लिए मानो आकाशवाणी हुई और मां उसे कह रही है कि बंझुली मैं तुझे पुत्रवती होने का आशीर्वाद देती हूं । तू मेरे इस शुभाशीष को फलित करने के लिए सकट का उपवास कर ।

वोतका ल सुने
वा रे बंझुलिया
अपन राऊर चले जाय
हो माय

इस तरह विश्वास में पाकर बंझुली अपने राज्य को वापस हो गयी ।

इस संबंध में एक लोक-धारणा यह भी है कि बंझुली एक रानी थी । जरूरत से ज्यादा सख-ऐश्वर्य के कारण बंझुली का शरीर काफी स्थूल और चरबी-युक्त हो गया था । उसे मेहनत करने की आदत बिलकुल नहीं थी इसलिए राज्य

वैद्य ने उसे दो-चार महीने पैदल चलकर व्यायाम करने की सलाह दी थी । इसके पीछे जन विश्वास भी था कि यदि कोई बांझ स्त्री पैदल यात्रा करके मातृभूमि की आराधना करे या किसी प्रसिद्ध देवी मां का दर्शन लाभ उठाये तो अवश्य ही पुत्र लाभ होता है ।

छत्तीसगढ़ी लोक-साहित्य के अंतर्गत माता-सेवा यानी मातृभूमि की सेवा के प्रसंग में बंझुली की कथा लोक गायक गा-बजाकर गाता सुनाता और मातृभूमि की सेवा करता है ।

बंझुली को उसकी प्रजा ने बांझ, वन्ध्या या निपूती कहकर कभी भी अपमानित नहीं किया, ठीक ऐंसे ही उसने भी अपनी प्रजा का ख्याल किया और अपने सारे सुख-वैभव त्यागकर एक प्रजा-सेवक उत्तराधिकारी की इच्छा लेकर राजिम से हिंगलाज तक पैदल यात्रा की ।

पुत्र-रत्न की प्राप्ति में मातृभूमि देवी मां का आशीर्वाद औपचारिक था, इसके पीछे मातृभूमि के प्रति सद्भावना, राष्ट्र प्रेम और छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति को भारतीय संस्कृति से जोड़कर देखने की प्रबल इच्छा थी । इसके पीछे सैद्धांतिक बात यह थी कि यदि लोक-संस्कृति निपूती हो जाए तो वह अपनी भारतीय संस्कृति के संपर्क में आकर दूधो नहा और पूतो फल सकती है !

ऐसी ही उच्चादर्शोंवाली छत्तीसगढ़ की सीता बंझुली रानी के प्रति हमारा माथा सहज श्रद्धा से झुक जाता है, हम बंझुली को सादर नमन करते हैं ।

—पोस्ट— राजिम, जिला—रायपुर (म.प्र.)
पिन-४९३८८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

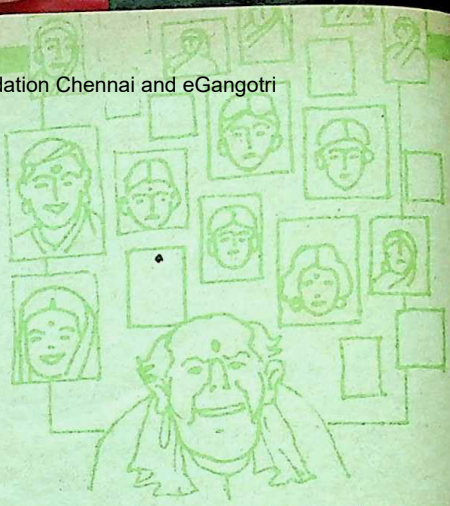

निराले तलाकों की दिलचस्प दास्तानें

● कैलाश जैन

मनुष्य जाति द्वारा विकसित संस्कारों में 'विवाह' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्कार है। विवाह का बंधन एक भावनात्मक और नाजुक बंधन होता है। किंतु आपसी समझदारी के अभाव में जब दांपत्य-संबंध दरकने लगते हैं, तो नौबत तलाक तक जा पहुंचती है। तलाक की पृष्ठभूमि में कई व्यक्तिगत, आर्थिक और सामाजिक कारण हो सकते हैं। किंतु आज आपको हम चंद ऐसे महारथियों से मिलवाने जा रहे हैं, जिन्होंने महज अपनी सनक की वजह से तलाक लिया।

चौंसठ तलाक

कुछ दिनों पूर्व नीस (फ्रांस) की ९९ वर्षीया वृद्ध महिला ने अखबार में वैवाहिक विज्ञापन कालम में विज्ञापन छपवाया— 'जरूरत है, अधिक से अधिक २२ वर्षीय एक सुंदर, स्वस्थ एवं सलौने नौजवान की। मैं अब तक ६४ तलाक ले चुकी हूं।'

उड़ीसा के औराली गांव का ६२ वर्षीय उदयनाथ अब तक ८८ विवाह कर चुका है। उदयनाथ की ५९ पत्नियां उसे विवाह के कुछ ही समय बाद तलाक दे चुकी हैं। चौदह पत्नियों की मृत्यु हो गयी तथा दस उसे छोड़कर भाग गयीं।

प्राग के तीस वर्षीय कार्ल लुन्माक ने अपनी शादी के सिर्फ ९० मिनट बाद अपनी पत्नी से तलाक लेने की दरख्वास्त अदालत में दायर कर दी। अपने तलाक के प्रार्थना पत्र में उसने तलाक लेने का कारण यह बताया कि उसकी पत्नी विवाह के वक्त चर्च में एक खूबसूरत

साइबेरिया में किसी भी व्यक्ति को अपनी पत्नी से तलाक लेने के लिए सार्वजनिक समारोह में अपनी पत्नी के चेहरे का नकाब फाड़ना होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौजवान को टकटकी बांधे घूरे जा रही थी। अदालत ने कार्ल की अर्जी मंजूर करते हुए उसे पत्नी के बंधन से मुक्त कर दिया।

सिडनी (आस्ट्रेलिया) के चालीस वर्षीय फिन हेरिस ने अदालत के सामने इनसाफ की गुहार करते हुए कहा कि उसकी पत्नी उसके कंधे पर खड़ी होकर लकड़ी से शयन कक्ष का पंखा घुमाती है। इससे उसे बहुत अधिक तकलीफ होती है। न्यायालय ने हेरिस की पीड़ा को समझते हुए उसका तलाक का प्रार्थना-पत्र स्वीकार कर लिया।

न्यूयार्क की एक महिला ने अपने शौहर को इसलिए तलाक दे दिया कि उसके पति ने अपने पालतू तोते को रटा रखा था कि 'भूतनी जल्दी उठ।'

बेहद महंगा तलाक

जूझोनाईता (नारवे) की रहनेवाली एक चालीस वर्षीया महिला है। उसने अपने पति को उसके गंजेपन के आधार पर तलाक दे दिया। उसने अदालत में कहा कि शादी के वक्त उसका पति गंजा नहीं था। पति महोदय ने भी अदालत से दरख्वास्त की कि मुझे तलाक दे दिया जाए। क्योंकि मैं अपनी पत्नी से तंग आ

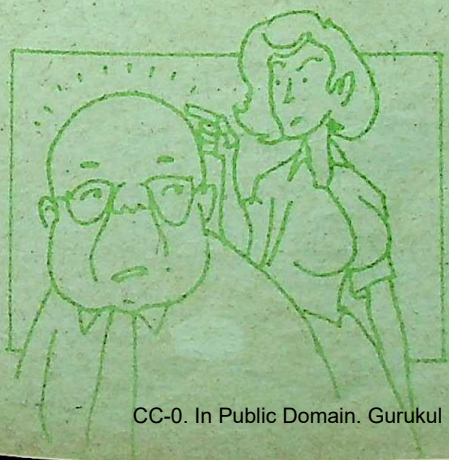

चुका हूं। वह मेरे गंजे सिर से बेहद चिढ़ती है तथा जब तब मेरी गंजी खोपड़ी पर चपत लगाती रहती है। अदालत ने दोनों की सहमति से तलाक मंजूर कर लिया।

लॉस एंजिल्स की एक दीवानी अदालत में एलविन आकमेन की तलाक की अर्जी इसलिए स्वीकार कर ली गयी, क्योंकि उसके लेखक पति ने अपनी पुस्तक 'आत्महत्या के सैकड़ों तरीके' की भूमिका में लिखा था कि इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा उसे अपनी पत्नी से मिली है।

लॉस एंजिल्स में ही ३१ अगस्त, १९८५ को एक बहुत ही महंगा तलाक हुआ। अमरीका के सर्वाधिक मशहूर टी. वी. स्टार जौहिनी केरसन ने अपनी पत्नी को तलाक दिया, उसकी एवज में उसने अपनी पत्नी को २२ लाख डॉलर नकद, ३० मकान, २ कारें तथा स्टाक के आधे शेयर अदा किये।

विचित्र परंपराएं

आइए, अब हम विभिन्न देशों के कबीलों में प्रचलित तलाक की विचित्र परंपराओं का जायजा लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका में रेड इंडियन कबीलों में विवाह के वक्त लकड़ियों का एक छोटा-सा गट्ठर नव-विवाहित युगल को दिया जाता है । इसे वह अपने सुखद वैवाहिक जीवन के प्रतीक के रूप में हमेशा सहेजकर रखते हैं, लेकिन जब उस गट्ठर की कुछ लकड़ियों को तोड़ दिया जाता है, तो उसे विवाह विच्छेद का प्रतीक माना जाता है ।

आस्ट्रेलिया के कुछ कबीलों में तलाक प्राप्त करने की शर्त के रूप में पति को निशानेबाजी की परीक्षा देनी होती है । यदि पत्नी पति से तलाक लेना चाहती है, तो उसे एक वृक्ष के सहारे खड़ा कर दिया जाता है । पति उससे चालीस कदम की दूरी पर खड़ा होकर उसकी ओर भाला फेंकता है । पत्नी को अपने बचाव में इधर-उधर हटने का अधिकार होता है । किंतु वह भाग नहीं सकती । पति को दस मौके दिये जाते हैं । यदि इस दौरान भाला पत्नी को नहीं लगता, तो वह युवती अपने पति को छोड़कर अन्यत्र विवाह करने को स्वतंत्र होती है ।

बर्मा के शान कबीले में पत्नी को तलाक संबंध में पति से कहीं अधिक अधिकार प्राप्त हैं । यहां पत्नी अपनी इच्छा से अपने शराबी पति को घर से निकाल सकती है, उसकी संपत्ति हड़प कर सकती है । इसके साथ ही वह किसी अन्य व्यक्ति से विवाह करने के लिए भी स्वतंत्र रहती है ।

नये कपड़े न देने पर तलाक

मध्य अफरीका के कबीलों में तलाक के लिए बड़ा विचित्र तरीका प्रचलित है । यदि किसी पुरुष को अपनी पत्नी से तलाक लेना होता है तो वह उसे अपने घर के दरवाजे के बाहर बिठा देता है । एक निश्चित समयावधि के बाद उनमें तलाक मान लिया जाता है ।

साइबेरिया में किसी भी व्यक्ति को अपनी पत्नी से तलाक लेने के लिए सार्वजनिक समारोह में अपनी पत्नी के चेहरे का नकाब फाड़ना होता है । मध्य पूर्व अफरीका में यह प्रचलन है कि यदि पति अपनी पत्नी की मांग पर उसे नये वस्त्र सिलवाकर न दे, तो वह इस आधार पर पति से तलाक मांग सकती है ।

मलाया के दूरवर्ती जंगली इलाकों में रहनेवाले कबीलों में तलाक की एक अत्यंत अश्लील परंपरा प्रचलित है, यदि किसी व्यक्ति को अपनी पत्नी से तलाक लेना होता है, तो उसे पूरे कबीले के लोगों को इकट्ठा करके दावत देनी होती है । इस दावत के दौरान लोग खाते-पीते, नाचते-गाते हैं । इस समारोह में पति सार्वजनिक रूप से अपनी पत्नी को पूरी तरह निर्वस्त्र कर देता है । पूरे समारोह के दौरान वह स्त्री नग्नावस्था में रहती है । इस बीच यदि कोई अन्य युवक उससे विवाह करने को इच्छुक हो, तो वह उसे वस्त्र दे देता है ।

और अंत में तलाक और विवाह की एक दिलचस्प घटना । डेनमार्क के कैप्टन आगे कार्लसन का विवाह सन १८११ में हुआ था । तभी उसको सागर पर जाना पड़ा । चूंकि उसकी पत्नी उसके साथ नहीं जाना चाहती थी, इसलिए उसने उसे तलाक दे दिया । वह सन १९०३ में वापस लौटा और फिर अपनी पत्नी से विवाह कर लिया । दोनों की उम्र इतनी लंबी थी कि सन १९११ में उन्होंने अपने विवाह की सौवीं वर्षगांठ मनायी ।

—३४, बंदा रोड़, भवानीमंडी (राज.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

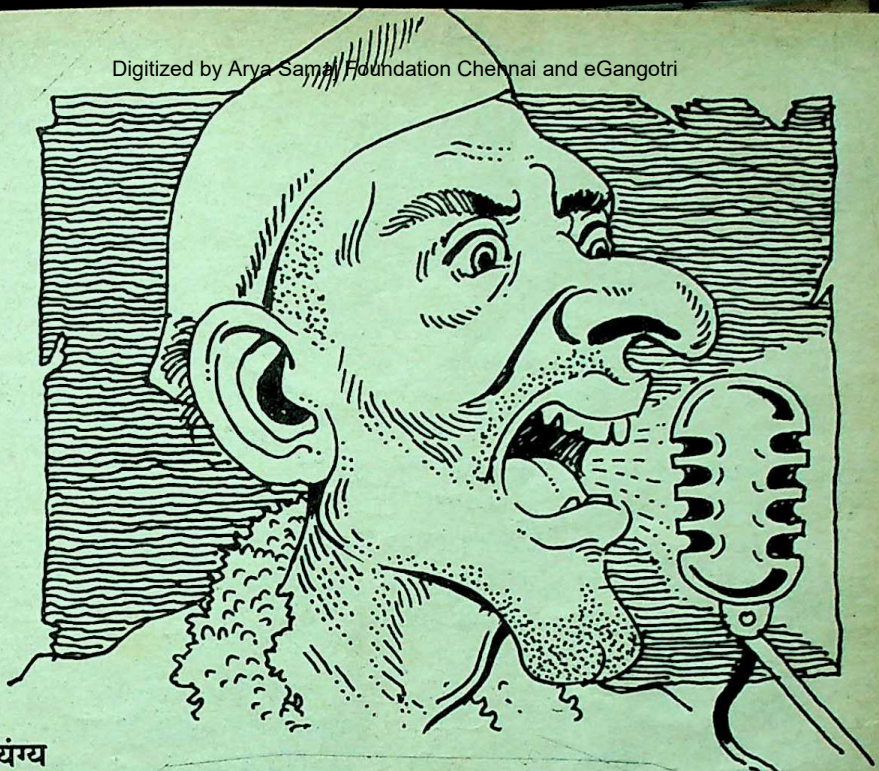

व्यंग्य

माइक-माहात्म्य

● डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी

बिजली कभी भी और कहीं भी चली जाए, आप क्या कर सकते हैं ? सड़क पर अंधेरे में आप किसी से टकरा सकते हैं । मर सकते हैं । "अब तो टकरा के यूं कहते हैं कि मर जाएंगे, मर के भी चैन न पाया तो कहां जाएंगे ?" नौटंकी का आपने नाम अवश्य सुना होगा । नगाड़ा इसका प्राण होता है । कल्पना कीजिए, एक लाख श्रोता बैठा हुआ है, अभिनेता-अभिनेत्री सजधजकर तैयार हैं, नगाड़ावाला गायब । 'नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ढूंढूं रे सांवरिया ।' बाद में पता चला वे बिना सूचना दिये रूठी हुई पत्नी को लिवाने ससुराल चले गये थे । श्रोताओं ने आयोजकों की क्या दुर्गति की होगी, ये सोचने की जिम्मेदारी आपकी है ।

अब मुख्य विषय पर आ रहा हूं जिसके कारण बिजली और नगाड़े के उदाहरण देकर आपको 'बोर' किया । हुआ ये कि 'फिल्म फेस्टीवल' के मौके पर माननीय अतिथि को बोलना था । उन्होंने ज्योंही 'माइक' पर बोलना प्रारंभ किया, 'माइकजी' मौन हो गये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल राजनीति के भी वी. वी. आई. पी. मौन व्रत का सहारा लेने लगे हैं । उनको वांछित लाभ भी हो रहा है । 'एक चुप सौ को हरावे' । हां, तो बड़े-बड़े डिग्रीधारी इंजीनियर फटाफट बुलाये गये, उन्होंने 'माइकजी' को साम, दाम, दंड, भेद से मनाने की कोशिश की किंतु वे तो असंतुष्ट नेता की भांति राजी नहीं हो रहे थे ।

'इश्क में मर मर के जीना, है कमाले जिंदगी वरना मर जाने को मर जाना, कोई मुश्किल नहीं

'माइकजी' के मौन की गाज गिरी एक बड़े अफसर पर जिसे निलंबित कर दिया गया । एक 'डीलक्स' अफसर जो इसी सिलसिले में उसी दिन फ्रांस-दर्शन को रवाना होनेवाले थे, रोक दिये गये । मैं सोचता हूं हमारे यहां कर्मचारी केवल वेतन-प्रेमी होते हैं, जिम्मेदारी-जैसी वस्तु उनके शब्दकोश में नहीं मिलती । जहां देखो, ये ही कलाकार नजर आते हैं ।

'माइक' महाराज विभिन्न स्थानों पर अजब तरह के करतब दिखाते हैं । कवि-सम्मेलन में 'माइक' जब मौन धारण करते हैं तो श्रोतागण वीभत्स-रस प्रधान कवि-सम्मेलन प्रारंभ कर देते हैं । कहीं-कहीं वे जीवित दिखलायी पड़ते हैं, किंतु जो इनके द्वारा प्रसारित ध्वनि को सुनने को व्याकुल होते हैं, उन्हें कृतार्थ नहीं करते, उनकी ध्वनि कोई और ही सुन पाते हैं । 'वाल्यूम' कभी-कभी अधिक, कहीं-कहीं इतना क्षीण कि आपको बहरे होने का भ्रम होने लगे । पंकज उधास गजल गा रहे हैं, दीख रहा है कि वे इस समय जोरों पर हैं, वे इतने रसमग्न हैं कि उनको दुनिया का पता नहीं । उनका ध्यान-योग तब टूटता है जब श्रोता समवेत स्वर में 'माइक', 'माइक' का आलाप लगाते हैं ।

'माइक' मौन धारण नहीं करते, कभी-कभी अपने मधुर स्वर का आस्वादन भी कराते हैं । कभी भैरवी राग तो कभी आसावरी और मस्ती में आ जाए तो ऐसे स्वर निकालते हैं मानो उनका कंठ अवरुद्ध है और उन्हें किसी अच्छे अस्पताल में दाखिल करना आवश्यक है, कार्यक्रम स्थगित भी कराना पड़े तो कोई हानि नहीं ।

कुछ लोगों की आवाज ऐसी होती है मानो वे 'माइक' पर ही बोल रहे हों । एक हास्य-कवि का उपनाम ही 'भोंपू' है । राजधानी में देवी

मैं सोचता हूं हमारे यहां कर्मचारी केवल वेतन-प्रेमी होते हैं, जिम्मेदारी-जैसी वस्तु उनके शब्दकोश में नहीं मिलती । जहां देखो, ये ही कलाकार नजर आते हैं ।

जागरण होते हैं, उनमें 'माइक' अपना पूर्ण योगदान देते हैं जबकि लोग अपने घरों में सोना चाहते हैं । आप क्या कर सकते हैं ? कुछ नहीं कर सकते सिवाय इसके कि मन-मन में चने से भुनते रहिए ।

'माइक' के 'प्लस प्वाइंट' भी हैं । नेता के लिए माइक 'टानिक' का कार्य करता है । रेशमी खद्दर का चुस्त पायजामा, घुटनों तक नीची काली शेरवानी, सुनहरी फ्रेम का चश्मा और तिरछी टोपी, जेब से निकलता हुआ रूमाल ये शब्द-चित्र है आज के सुरक्षा गार्डों से घिरे हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे लोकप्रिय/अलोकप्रिय नेता का । 'माइक' इनके सहोदर भाई हैं । जब नेता 'माइक' के सामने खड़े होकर अपनी कोमल अंगुली से इसे 'टैस्ट' करता है तो मानो कहता है, 'थैंक्स कामरेड, तुम न होते तो हमारे ये भक्त चाहे स्वयं आये हों या पकड़वाकर इकट्ठे किये गये हों, मेरे मधुर वचनों को, प्यारे-प्यारे आश्वासनों को कैसे सुनते ? कुछ दिनों जब तुम्हारा साथ नहीं मिलता तो जीवन निरर्थक लगने लगता है, तुम ही जीवनदायिनी शक्ति हो, तुम्हारा साथ बराबर मिलता रहे,यही प्रभु से कामना है ।'

चुनाव की रितु में 'माइक' का महत्त्व वी. आई. पी. से कम नहीं होता । रिक्शा पर इनको बैठाया जाता है एक प्रत्याशी के चमचा-लिखित संदेश को इनकी सहायता से घर-घर पहुंचाया जाता है । दिन-रात एक कर देता है । चुनावी गणित के हिसाब से मतदाता के कर्णकुहरों से जिस प्रत्याशी का नाम जितनी अधिक बार प्रवेश करता है,उतनी मात्रा में उसकी विजय की संभावना बढ़ती जाती है । आप निद्रा में निमग्न हैं, रात का एक बजा है,'माइकजी' आपके घर के सामने प्रत्याशी का नाम ले-लेकर इतनी बार सिंहनाद करते हैं जब तक कि आप जग न जाएं । इनकी बला से, बाद में आप सारी रात करवटें बदलते रहें और इनको कोसते रहें ।

आधुनिक युग में 'माइक' केवल मात्र भोंपू नहीं रहा । इसका महत्त्व किसी उच्चस्तरीय अथवा निम्नस्तरीय नेता से कम नहीं रहा । नेता के निर्माण में इसकी अनिवार्यता को कोई नकार नहीं सकता ।

एक जननायक को दुनिया में भला क्या चाहिए
चार छह चमचे रहें, माइक रहे, माला रहे ।

—१३/७, शक्तिनगर, दिल्ली-११०००७

नये उपकरण की उपयोगिता

वैसे तो बिजली के तार को छूना मौत को बुलाना है, लेकिन भविष्य में ऐसा करना मुश्किल नहीं होगा । एक भारतीय कंपनी ने ऐसे उपकरण का आविष्कार किया है, जिससे औद्योगिक इकाइयों और घरों में बिजली का नंगा तार छू जाने पर भी करंट नहीं लगेगा । उपकरण निर्माता कंपनी 'इंगलिश इलेक्ट्रिक' के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक ने हाल में यहां संवाददाताओं को बताते हुए कहा, 'एशिया में इस तरह का उपकरण बनानेवाला भारत ही पहला देश है । पश्चिमी देशों में प्रचलित इस उपकरण 'सेफ और सुपर ट्रिप' को मुख्य स्विच बोर्ड पर लगाया जा सकता है और किसी भी रूप में नंगा तार छूने पर यह स्वयं करंट काट देता है ।'

उनके अनुसार लगभग १००० रुपये की लागतवाले इस उपकरण से बिजली से चलनेवाली घरेलू उपयोग की वस्तुओं या दीवार में करंट आने के खतरे से बचाव हो सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

सड़कों पर टहलता हुआ अतीत

● विलास गुप्ते

'घर' शब्द गंदी हवा के तेज झोंके की तरह उनमें एक किस्म की उबकाई पैदा कर देता है। जिस स्थान पर उनका होना महज एक मजबूरी हो, उसे घर कैसे कहा जा सकता है ?

जिस क्षण से अपना होना निस्सार लगने लगता है, उसी क्षण से जीने का आनंद जाता रहता है।

कब आता है वह क्षण—

जीवन के सब कर्त्तव्य पूरे कर चुकने पर ? जीवन में अकेले रह जाने पर ? दुखों के हेमोग्लोबिन की मात्रा बेहद बढ़ जाने पर ? या, जीवन की सारी अंतःप्रेरणाएं शांत हो जाने पर ?

जो भी कारण हो, आदमी फिर भी जिंदा रहता है। चरम विरोधी और परम निराश परिस्थितियों में भी जीवन को तो नहीं त्यागा जा सकता।

दद्दा की जिंदगी में भी अब क्या बच रहा है ? फिर भी जी रहे हैं। ऐसा नहीं है कि अपने निरर्थक हो जाने की जानकारी उन्हें नहीं है— पर जीने के अलावा कोई दूसरा चारा भी तो नहीं है। कितना अरसा हो गया ऐसी जिंदगी जीते ! ठीक-ठीक तो याद नहीं; पर लगता है कि अभी कल-परसों तक तो जिंदगी एक मांसल सुख थी... सर्वथा अनचखे दांपत्य-सुख का स्वाद... पितृत्व का अनोखा अहसास... गृहस्थी की जिम्मेदारी का कष्टभरा आनंद... सारी दुनिया से एक तरह का जुड़ाव महसूस होता था। तब अपने बारे में सोचने का कभी मौका ही नहीं मिलता था दद्दा को। जिंदगी जीने के कई उद्देश्य थे— पत्नी के समर्पण भरे प्रेम का प्रतिदान... दोनों बेटियों का विवाह... बेटे की पढ़ाई और कैरियर। धीरे-धीरे जिंदगी के मूलभूत उद्देश्य पूरे होते गये। जब जिंदगी में ऐसा मुकाम आया कि आराम से हाथ-पैर फैलाकर चैन की सांस ले सकें— कि पत्नी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर का बुलावा आ गया ! बच रहे केवल दद्दा ।

दंपत्ति में किसी एक के न रहने पर दूसरे पक्ष को पक्षाघात-सा आभास जरूर होता है; लेकिन शेष आधे भाग में जीने की इच्छा बराबर सुगबुगाती रहती है । पंक्चर हो जाने पर भी सायकल को हाथ में पकड़कर गंतव्य स्थान तक चलाया जा सकता है । दद्दा भी जिंदगी को घसीटते रहे—वंश-वृद्धि की याद लिये, बेटे-बेटियों की समृद्धि का साक्षी बनने की याद लिये । शुरू-शुरू में कोई समस्या नहीं थी । धीरे-धीरे परिवार बढ़ता गया और घर में उनकी जगह भी सिकुड़ने लगी । पहले पिछला बरामदा उनका अपना हुआ करता था । फिर उसमें बच्चों का स्टडी रूम बन गया । उन्हें बगल के गलियारे में स्थानांतरित कर दिया गया । फिर गलियारे में बच्चों की साइकलें रखी जाने लगीं । दद्दा की सार्थकता घटने के साथ-साथ उनका आकार भी घटता गया । पहले रात को सोते समय गिलास में दूध मिलता था, जो बाद में कम होते-होते चाय के कप के बराबर रह गया । अपनी अधिकांश पेंशन तो वे बहू को— नहीं, कोई प्रश्न नहीं पूछा जा सकता इस बारे में । अगर पूछ भी लिया तो एक साथ कई उत्तर तैयार रखे हैं । धीरे-धीरे दद्दा ने सभी प्रश्नों, शंकाओं, समस्याओं के बारे में मौन रहना सीख लिया था । जीवन के उतार पर आकर वृद्धजनों की स्थिति सिर्फ कर्त्तव्य की रह जाती है— अधिकार की भाषा तो क्रमशः लुप्त होती जाती है । दद्दा ने कभी कोई शिकायत नहीं की । जैसा रखा, रहे । बेटे ने जब प्रॉविडेंट फंड

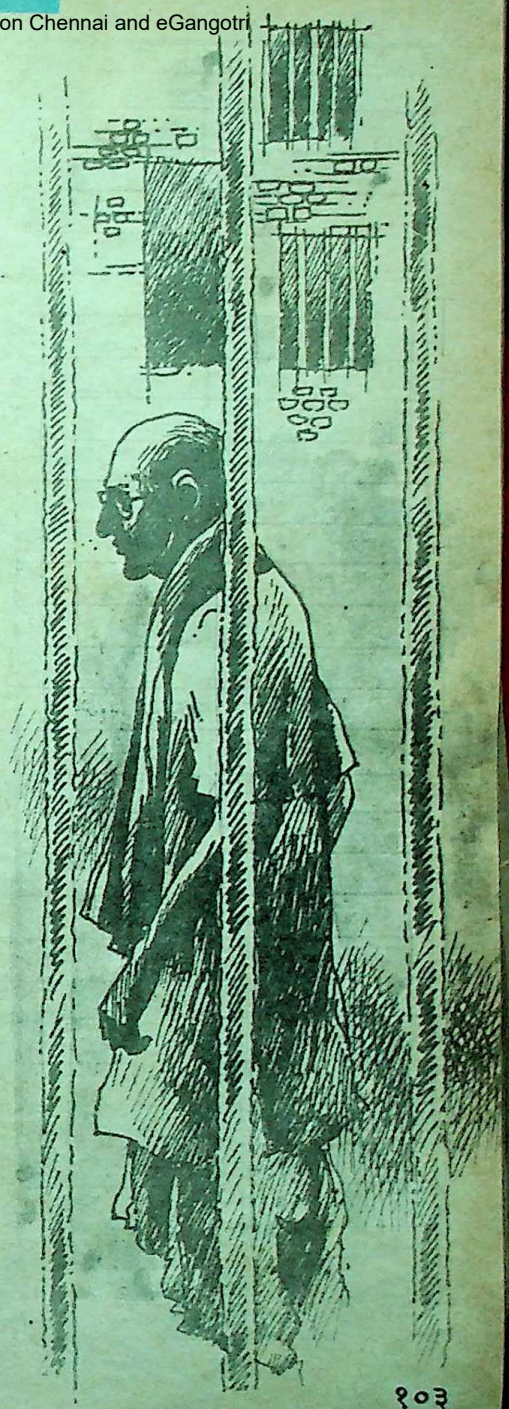

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकालकर और दूसरी जगहों से कर्ज लेकर एक छोटा-सा फ्लैट खरीदा, तो वे वहां रहने चले आये । अपनी तरफ से भी आठ-दस हजार लगा दिये ।

नये मकान में आकर दद्दा विस्थापित-से हो गये । कुल जमा दो कमरे और एक रसोईघर । उनके हिस्से में बैठकघर से लगी गैलरीनुमा लॉबी आयी थी— वह भी पूरी नहीं । सिर्फ रात को उनका बिस्तर वहां लगता था । दिन में उस जगह कपड़े सुखाये जाते या दूसरे-दूसरे काम होते । यहां आकर दद्दा को पहली बार लगा कि यह घर उनके अस्तित्व से मेल नहीं

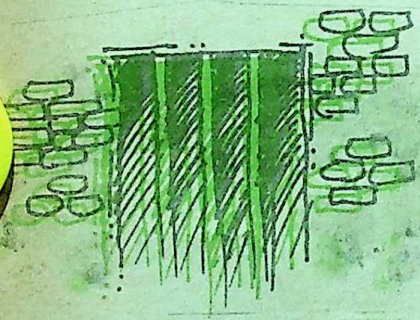

बिठा पा रहा है । शुरू-शुरू की उपेक्षा की स्थिति धीरे-धीरे असहनीयता में बदलने लगी । क्रमशः ये बैठकघर से भी वंचित कर दिये गये । बेटे, बहू या बच्चों से मिलने-जुलनेवाले बैठकघर में ही बैठते थे । परिचितों-रिश्तेदारों के सामने दद्दा का आलथी-पालथी मारकर बैठना या तख्त पर लेटे रहना बड़ा अजीब लगता था । घर भर को सबसे अधिक शर्मनाक लगती थी उनकी वह आदत । अब दद्दा भी क्या करें ? पेट की गैस पर उनको कोई नियंत्रण तो है नहीं ! सबकी नाराजी का ख्याल कर दद्दा ने किसी मेहमान के आते ही रसोईघर से लगी लॉबी में मुड्डा रखकर बैठना शुरू किया । बहू को यह भी पसंद नहीं आया । यहां बैठे-बैठे दद्दा को रसोई का पूरा-पूरा कार्यकलाप दिख जाता था— बच्चों के लिए लाये जानेवाले फल... शुद्ध घी के परांठे... दूध में डाला जाता औषधिक पावडर । उसने तकाजे लगाने शुरू किये, "दिनभर घर में बैठे रहते हैं, कहीं घूम-फिर क्यों नहीं आते ? व्यायाम का व्यायाम हो जाएगा और मन भी बहल जाएगा ।" सही बात तो यह थी कि नाश्ते के समय उनकी उपस्थिति बहू को खलने लगी थी । उन्हें बैठकघर में अलग से नाश्ता पहुंचा दिया जाता और बाकी लोग रसोईघर में नाश्ता करते ।

किसी एक दिन नाश्ते के ठीक पहले दद्दा को कोई काम बताकर बाहर भेज दिया गया । अगले दिन भी वही हुआ... उससे अगले दिन भी । चौथे दिन दद्दा बिना किसी के कुछ कहे आप ही घर से बाहर निकल लिये । फिर वह उनकी दिनचर्या का अंग ही बन गया । उन्होंने जान लिया कि अब उनकी सक्रिय भूमिका समाप्त हो गयी है । अब तो उन्हें जो-जो हो रहा है या होनेवाला है, उसका निष्क्रिय साक्षी मात्र बने रहना है । उनके सामने समस्या यह थी कि आखिर समय व्यतीत कैसे किया जाए ? उन्हें न कभी फिल्मों का आकर्षण रहा, न ताशपत्ती का । किसी के घर जाकर बैठो, तो सब अपने-अपने श्रम में व्यस्त । मंदिर में भी कब तक बैठा जा सकता है ? लिहाजा उन्होंने सड़कों पर निरुद्देश्य घूमना शुरू कर दिया । पहले-पहले अजीब जरूर लगा, फिर आदत में आ गया । घर के सामने की सड़क से शुरू हुआ वह सफर धीरे-धीरे पूरी कॉलोनी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सड़कों को समेटता हुआ आसपास की सड़कों तक फैल गया ।

अब हाल यह है कि सुबह की चाय और दैनंदिन के कर्मों से निवृत्त होते ही दद्दा बाहर निकल पड़ते हैं । फिर डेढ़-दो घंटे बाद ही घर पहुंचते हैं । फिर चाय-नाश्ते के बाद जो निकलते हैं, तो दोपहर के भोजन के समय ही लौटते हैं । बहू की नींद में खलल न पड़े, इसलिए बाहर से जालीदार दरवाजे से हाथ अंदर डालकर ताला खोल लेते हैं । खाना खाकर आध-पौन घंटे आराम हो पाता— नहीं हो पाता है कि सिलाई क्लास की लड़कियां-महिलाएं आ जाती हैं । दद्दा फिर बाहर निकल आते हैं । चाय के वक्त थोड़ी देर के लिए घर पर रुकते हैं कि बच्चों के स्कूल से आने का समय हो जाता है— दद्दा फिर बाहर । रात के भोजन या कभी-कभार कोई टी.वी. सीरियल देखने के बाद फिर घंटे-आध घंटे के लिए बाहर ! पूरे घर को यह रूटीन रास आ गया है । दद्दा की उपस्थिति अब बेमायना हो गयी है और अनुपस्थिति किसी तरह के अभाव का अहसास नहीं कराती ।

जब सड़कों से वैसा संबंध जुड़ गया, तो दद्दा ने वैसे तर्क भी तैयार कर लिये । कोई पूछे या न पूछे, वे खुद होकर टहलने का महत्त्व बताने लगते । अपने स्वास्थ्य का राज अपनी पाचनशक्ति में और पाचनशक्ति का राज अपने नियमित घूमने में बताते । धीरे-धीरे कुछ और भी आदतें विकसित कर लीं उन्होंने । सड़कों पर बिना रुके, निरंतर तो टहला नहीं जा सकता— उन्होंने रुककर खड़े होने और समय व्यतीत करने की कुछ और युक्तियां खोज निकालीं । हर आने-जानेवाले को नमस्कार करना शुरू किया और थोड़ा-सा परिचय होते ही घरबार से लेकर राजनीति तक चर्चा करने लगते । इतनेभर से जीवन के वृहदाकार शून्य को भरा जाना संभव नहीं था । वे लोगों की हस्तरेखाएं देखने लगे ।

दद्दा की उस दिनचर्या में कोई विशेष अंतर नहीं आता— चाहे जो दिन हो या चाहे जो महीना हो । हां, कभी-कभार की बीमारी या दो-चार दिन के लिए कभी किसी बेटी के यहां चले जाने पर वह सड़क-संवाद खंडित अवश्य हो जाता है । उसके बाद फिर वही चक्र... घर से अधिक-से-अधिक समय तक बाहर रहने के प्रयास !

कभी-कभी किसी विशेष परिचित या नजदीकी रिश्तेदार के आ जाने पर यह क्रम टूट भी जाता है । किसी सड़क पर उन्हें ढूंढ़कर पोता संदेश देता है, "चलिए, आपको घर बुलाया है ।" आम तौर पर 'घर' का नाम लेते ही, शरीर पर आनंद का जो रोमांच हो आना चाहिए, दद्दा को वह कभी महसूस नहीं होता । इस शब्द का नाम सुनकर तेजी से पलटने की कभी इच्छा नहीं होती । इसके विपरीत 'घर' शब्द गंदी हवा के तेज झोंके की तरह उनमें एक किस्म की उबकाई पैदा कर देता है । जिस स्थान पर उनका होना महज एक मजबूरी हो, उसे घर कैसे कहा जा सकता है ? दद्दा अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हें लौटकर फिर यहीं आना है— अपने तब तक के जीवन का भार सिर पर ढोते हुए इसी तरह सड़कों पर टहलते रहने के लिए ।

—७२, पत्रकार नगर,
इंदौर-४५२००१ (मध्यप्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसंत ऋतु के आगमन की सदैव प्रतीक्षा की जाती है । इसके आते ही वृक्षों की कमनीयता एवं कुसुमों का सौंदर्य मुखरित हो जाता है । वसंत ऋतु में प्राकृतिक दृश्यों तथा उपादानों को साहित्य में उतारकर कवियों तथा लेखकों ने आनंद के अक्षय कोष का निर्माण किया । जीवन में त्याग, परोपकार, पावनता, निरीहता आदि सद्गुणों की स्थापना वृक्षों के साहचर्य से ही संभव हो सकी । वैदिक साहित्य में राष्ट्र के सांस्कृतिक, सौंदर्यवर्धक एवं आर्थिक विकास में पेड़-पौधों के योगदान की भूरि-भूरि सराहना की गयी है । सभी धर्मों तथा भाषाओं में प्रकृति के प्रति स्नेह एवं आदर दर्शाया गया है ।

महाकवि शेक्सपियर ने प्रकृति की पावन गरिमा का वर्णन निम्नानुसार किया है—

'प्रकृति का हलका-सा स्पर्श
बना देता दुनिया को एक'

आचार्य लक्ष्मी नारायण ने वनों की शोभा का वर्णन करते हुए लिखा है—

नैसर्गिक सुषमा का द्योतक हरित कुंज कमनीय प्रदायक
शीतल मंद सुगंध मनोहर जंगल की शोभा मन लोभक

वसंत ऋतु में नव-पल्लवों एवं फूलों से सुशोभित पेड़-पौधे सदैव से कवियों को लुभाते रहे हैं । हिंदी के प्राचीन एवं आधुनिक कवियों ने वृक्षों एवं पुष्पों का वर्णन वसंत ऋतु की बहार में निखार आने पर किया है ।

हंस उठी है कचनार की कली

● डॉ. डी.एन. तिवारी

वसंत ऋतु में नव-पल्लवों एवं फूलों से सुशोभित पेड़-पौधे सदैव से कवियों को लुभाते रहे हैं । हिंदी के प्राचीन एवं आधुनिक कवियों ने वृक्षों एवं पुष्पों का वर्णन वसंत ऋतु की बहार में निखार आने पर किया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

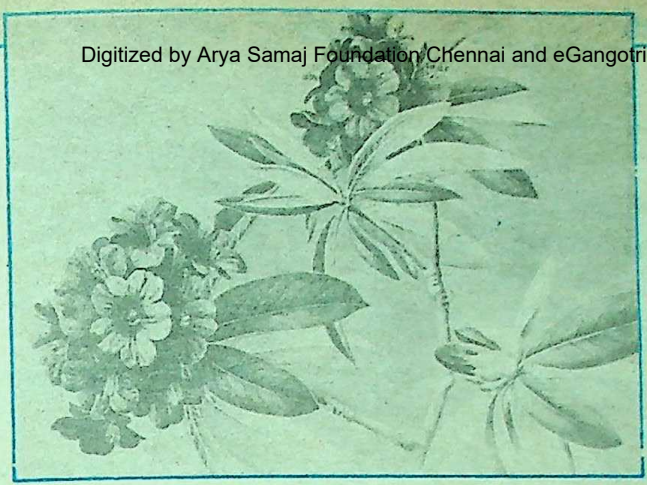

महाकवि तुलसीदास ने लता, वृक्ष, फूल, भौरों एवं पक्षियों का वर्णन करते हुए लिखा है—

विटप बेलि नव किसलय कुसुमित सघन सुजाति
कंद मूल जल थल रूह अगनित अनवल भांति
मंजुल मंजु बकुल कुल सुरतरु तरल तमाल
कदलि कंदव सुचंपक, पाटल पनस रसाल
सरित सरन सरसीरुह, फूले नाना रंग
गुंजत मंजु मधुप गन कूजत विविध विहंग

कवि सूरदास ने वसंत ऋतु में घास, आम तथा लताओं के फूलों का सौंदर्य एवं मादकता का अनुभव करते हुए लिखा है—

सुंदर संग ललना विहरी वसंत सरल ऋतु आई
लै लै छरी कुंवर राधिका, कमल नयन पर धाई
द्वादस वन रतनारे देखियत, चहुंदिसि टेसू फूले
बौरे अकुंवा औ द्रुम वेली, मधुकर परिमल चूलें

कवि जायसी ने वसंत को सबका त्यौहार मानते हुए लिखा है—

कंवल सहाय चली फुलवारी
फर फूलन सव करहिं धमारी
आयु आयु मंह करहिं जोहारू
यह वसंत सबकर तिवहारू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि विद्यापति वसंत ऋतु के आगमन की सूचना आम के बौरों तथा कोयल के पंचम गान से पा जाते हैं—

आएल ऋतुपति राज वसंत
धाओल अति कुल माधवि पंथ
मौलि रसाल मुकुल मेल ताम
मुमुखहिं कोकिल पंचम गान

कवि सेनापति में प्लास के फूलों को देख कविता के नये मनोभाव जागृत हो रहे हैं—

लाल लाल टेसू फूलि रहे हैं विलास संग
श्याम रंग भई मानो मसि में मिलाये हैं
तहां मधुकाज आई बैठे मधुकर पुंज
मलय पवन उपवन वन धाये हैं
सेनापति माधव महीना में प्लास तरु,
देखि देखि भाव कविता के मन आये हैं

'वसंत श्री' का वर्णन करते हुए कवि पदमाकर का सौंदर्यबोध तारलयित हो उठता है, वसंत की बहार उन्हें सभी स्थानों पर दिखायी देती है : —

कूलन में कलि में कारन में कुंजन में
क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है
कहें पदमाकर परागन में पौनहूं में
पातन में पिक में पलासन पंगत है
द्वारे में दिसान में दुनी में देस देसन में
देखों दीप दीपन में दपित दिगंत हैं
वीथिन में ब्रज में नबेलिन में बेलिन में
वनन में बागन में बगरयो वसंत है

कवि पदमाकर के अनुसार वसंत में लता, पादप, फूल सभी मस्ती में झूलने लगते हैं—

कदम अनार आम अगर अशोक ओक
लतनि समेत लोने लोने लगि झूमि रहे
फूलि रहे फल रहे फैलि रहे फवि रहे
झपि रहे झलि रहे झुकि रहे झूमि रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

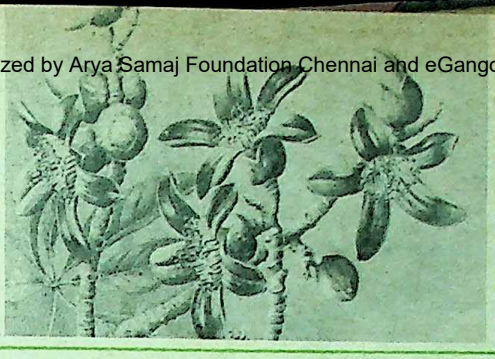

कविवर सुमित्रानंदन पंत ने 'वसंत' की शोभा का वर्णन निम्नानुसार किया है—

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से लद गई आम्र तरु की डाली
झर रहे ढाक, पीपल के दल, हो उठी कोकिला मतवाली
महके कटहल, मुकलित जामुन, जंगल में झरवेरी झूली
फूले आड़ू, नीबू दाड़िम, आलू गोभी, बैगन, मूली

कवि रामनरेश त्रिपाठी ने कदंब वृक्षों को वसंत ऋतु में फूलों से लदा देखकर उनके आसपास के पर्यावरण का वर्णन निम्नानुसार किया है :—

लटक रहे हैं धवल सुगंधित कंदुक से फल फूले
गूंज रहे हैं अलि पीकर मकरंद मोह में भूले
आसपास का पथ सुरभित है महक रही फुलवारी
बिछी फूल की सेज बाजती वीणा है सुखकारी

कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने वसंत को इंद्रधनुष का रंग उतारने की कल्पना की है—

चलो आज इन मौन वृक्ष के हिलमिल कर सब चरण पखारें
ऋतुओं की मारे सहने के इसके वृत पर तन मन वारें
यह वसंत का ढीठ छोकरा टेढ़ी सीधी रीत संवारे
हरियाली पर खिलता है यह इंद्रधनुष का रंग उतारे

छायावादी कवि निराला ने वसंतागमन पर वन के मन में हर्ष एवं पक्षियों के उल्लास का वर्णन निम्नानुसार किया है—

सखि, वसंत आया
भरा हर्ष वन के मन, नवोत्कर्ष छाया
किसलय वसना नववय लतिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिली मधुर प्रिय-उर तरु पतिका
मधुर-वृंद वृंदी पिक-स्वर नभ सरसाया

'बावरा अहेरी' कविता संग्रह में अज्ञेय ने वसंत का वर्णन निम्नानुसार किया है —

पीपल की सूखी खाल स्निग्ध हो चली
सिरिस ने रेशम से वेणी बांध ली
नीम के बौर में मिठास देख
हंस उठी है कचनार की कली
टेसुओं की आरती सजा के
बन गई वधू वनस्थली

कवि हरिवंशराय बच्चन मधुवन में 'मधुशाला' का आनंद ले रहे हैं—

हर मधु ऋतु में अमराई में
जग उठती है मधुशाला
मंद झकोरों के प्याले में मधु ऋतु सौरभ की हाला
भर भर कर है अनिल पिलाता वनकर मधुमत मतवाला
हरे भरे नव पल्लव तरुगण, नूतन डाले वल्लरियां
छक-छक झुक झुक झूम रही है मधुवन में है मधुशाला

प्राकृतिक सुषमा के प्रमुख आधार वृक्ष तथा वन हैं । वृक्षों ने सदैव कभी भी अपनी चिंता न करके लोगों को सुख, समृद्धि एवं स्वच्छ पर्यावरण देने का प्रयास किया । महाकवि जयशंकर प्रसाद ने वृक्षों की महिमा का वर्णन निम्नानुसार किया है—

सरिता सुकूलन में तपसी बने से तरु
सरल सुभाव खड़े हृदय उदार ते
छाया देत काहू को पथिक जौन तापित है
तहिन दिवाकर ते दुखित दवारते
नवल प्रमोद सों करत हिय मोद मय
सुंदर सुस्वादु फल देत निज डार ते
स्वारथ में मूढ़ नर थोड़े निज़ लाभ हेतु
तऊ ताहि काटत हैं कुमति कुठार ते

— महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता कोना

पुलिस : तुम हमेशा साइकिल ही चोरी करते हो, मोटर या स्कूटर क्यों नहीं ?

चोर : मुझे मोटर या स्कूटर चलाना नहीं आता है ।

● ● ●

मरीज : डॉक्टर साहब, ऑपरेशन के बाद फीस दे सकता हूं !

डॉक्टर : क्यों नहीं, पर किससे लेनी है, ठीक से बता दीजिए !

" 'जेबकतरा' के नाम से आपने एक फिल्म बनायी थी, उसका क्या हुआ ?"

'सेंसर बोर्ड ने काट-पीटकर इतना ही वापस किया है ।"

● ● ●

चोर : बहुत जरूरी दो-तीन चीजें निकाल लीजिए, फिर यह न कहना कि मैंने कुछ भी नहीं छोड़ा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय आंदोलन में भारतीय पत्रकारिता के अवदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता है। जनचेतना को जागृत करने का कार्य पत्रकारिता के माध्यम से जितनी सरलता और सुगमता से किया जा सकता है, उतना दूसरी जनसंचार की प्रविधि द्वारा नहीं। पत्रकारिता अपने समय के सत्य को केवल उदघाटित ही नहीं करती, अपितु वह सच का साक्षात्कार भी जनता को कराती है। पत्रकारिता चेतना व शक्ति का पुंज है। जिसके आसपास समाज और सत्ता उपग्रह की तरह चक्कर काटते रहते हैं। पत्रकारिता की विषयवस्तु न केवल पृथ्वीलोक की गतिविधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि अंतरिक्ष, सौरमंडल से समुद्र के अंतस तक का व्यापक प्रक्षेत्र है।

मालवांचल : देश का हृदय स्थल

मालवांचल देश का हृदय स्थल है, जिसका राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिकता के साथ ही वैविध्य पत्रकारिता की दृष्टि से विशिष्ट महत्त्व है। देश के प्रथम हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' (सन १८२६) के तेइस वर्ष के अंतराल के बाद इंदौर से साप्ताहिक 'मालवा अखबार' (सन १८४९) के प्रकाशन से यह स्वतः प्रमाणित हो जाता है कि मालवा देश के अन्य अंचलों के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सहयोगी रहा है।

मध्य प्रदेश का पहला मालवा अखबार

● डॉ. मोहन परमार

मालवांचल देश का हृदय स्थल है, जिसका राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिकता के साथ ही वैविध्य पत्रकारिता की दृष्टि से विशिष्ट महत्त्व है। देश के प्रथम हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' (सन १८२६) के तेइस वर्ष के अंतराल के बाद इंदौर से साप्ताहिक 'मालवा अखबार' (सन १८४९) के प्रकाशन से यह स्वतः प्रमाणित हो जाता है कि मालवा देश के अन्य अंचलों के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सहयोगी रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

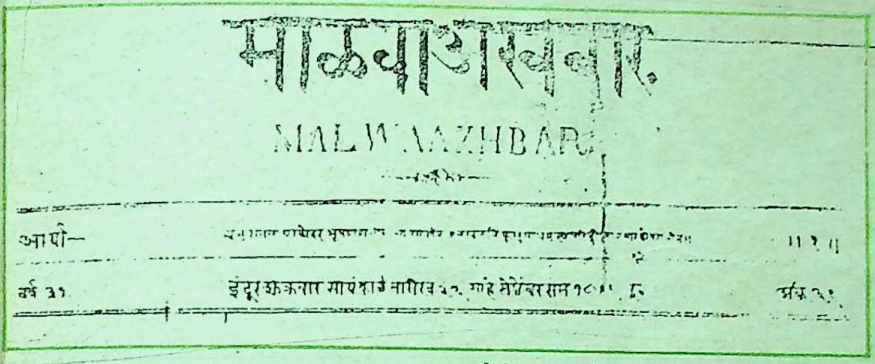
मालवाअखबार
MALWAAKHBAR

'मालवा अखबार' के प्रथम अंक के प्रकाशन की तिथि के बारे में विद्वानों में मत वैभिन्न है । 'वीणा' के अप्रैल-मई १९५२ के अंक में पं. गणेशदत्त शर्मा 'इंदु' के अनुसार 'मालवा अखबार' का प्रथमांक जनवरी १८४८ में प्रकाशित हुआ, जबकि श्री राजकुमार जैन ने इसका प्रथम अंक ६ मार्च १८४९ को प्रकाशित होना प्रतिपादित किया है । संपादकाचार्य पं. अंबिका प्रसाद बाजपेयी ने 'मालवा अखबार' का प्रकाशन वर्ष १८४८ माना है । विश्वमित्र ने भी सन १८४९ को ही मान्य किया है । श्री शिव अनुराग पैंटेरिया व राजेश बादल ने जिल्द वर्ष ५ का नवंबर अंक १७ मई १८५३ के तदनुसार 'मालवा अखबार' का प्रकाशन १८४८ से ठहराया है ।

इस प्रकार उपरोक्त विद्वजनों के 'मालवा अखबार' के संबंध में प्रस्तुत तथ्यों का वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण करने के लिए इस बात को सप्रमाण प्रस्तुत करने हेतु 'मालवा अखबार' ६ मार्च १८४९ के इश्तहार का अविकल स्वरूप प्रस्तुत करना हम समीचीन मानते हैं ।

इस्तिहार

"सब लोगों को मालुम है कि मालवेभर में कोई अखबार ऐसा नहीं है जिसमें देश की खबरें और जानने लायक बातें यहां के रहने वालों को मालुम होवें जो धनवान है वो तो अपने-अपने अखबार नवीसों के वसिलते कुछ कुछ हाल इधर-उधर का दर्याफ़ कर लेते होंगे मगर सबको इतना कहा मकदूर के बहुत रुपया खरच करके खबरें मंगवायें इसलिए सबके नफे के वास्ते जनाबवाला हिम्मत बुजुर गनी नत खेरखवा है रेय्यत मिस्तर मिल्टन साहेब बहादुर ने मेरे तरफ इशारा किया एक अखबार उर्दू और नागरी में निकाल के मालवेवाले और हिंदुस्तान के लोग पढ़ सकें इसलिए मैंने उनके हुकुम के व मुजविये तदवीर की है के हर आठवें दिन एक अखबार महाराज होलकर बहादुर के छापेखाने से निकला करे उसका नाम 'मालवा अखबार' मुर्करर हुआ है, उसकी कीमत रुपए बारह साल है ।

'मालवा अखबार' का आकार फुल स्केप ११" गुणित ८" यानि ४ रूपे उर्दू, ४ रुपे हिंदी नागरी में द्विभाषी समाचार पत्र था जो पृष्ठ के आधे भाग बायीं ओर हिंदी तथा दाहिनी ओर आधे भाग में उर्दू में छपता था । एक प्रति चार आनेवाला यह साप्ताहिक पत्र प्रति मंगलवार तथा बाद में हर बुधवार को और अंतिम वर्षों में प्रति शुक्रवार को प्रकाशित होता था, यह स्थल श्रीकृष्ण टॉकिज इंदौर के सामने है, जहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

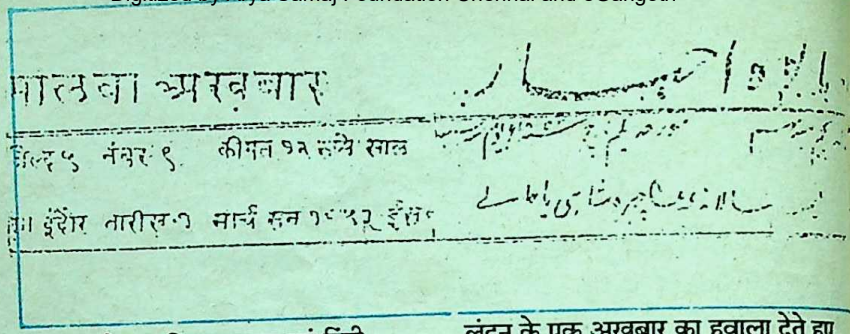
मालवा अखबार
जिल्द ५ नंबर ९ कीमत १२ रुपये साल
इंदौर तारीख ७ मार्च सन १९५२ ईसवी

आजकल लेखा प्रशिक्षणशाला एवं हिंदी मा.वि. लगता है ।

मध्य भारत का प्रथम समाचार पत्र

अंत में १९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 'मालवा अखबार' के संचालकों ने इसका प्रकाशन बंद कर दिया तो तत्कालीन होलकर महाराज तुकोजीराव द्वितीय ने सन १८७३ में इसे खरीद लिया और अपने पूर्व स्थान मोती बंगले ले आये । वहां से मालवा अखबार 'मराठी' भाषा में प्रकाशित होने लगा था । मालवा अखबार का विस्तृत उल्लेख इसलिए भी आवश्यक है कि १९वीं शताब्दी में मध्य भारत से मालवा अखबार को छोड़कर कोई भी हिंदी पत्र नहीं निकला । अभी तक हुए शोध कार्य के आधार पर यह कहना कठिन है कि मालवा अखबार के पूर्व या पश्चात कोई हिंदी पत्र प्रकाशित हुआ था ।

मालवा अखबार वैसे तो होल्कर राज और आसपास के राज्यों के समाचार प्रकाशित करता था, किंतु पाठकों में समाचार जानने की जिज्ञासा को दृष्टिगत करते हुए अंतरराष्ट्रीय समाचारों को भी आवश्यकतानुसार यथोचित स्थान दिया जाता था । कागज के आविष्कार के संबंध में मालवा अखबार ने जुलाई १८६० के अंक में लंदन के एक अखबार का हवाला देते हुए लिखा है कि 'मुल्क फराश में किसी औरत ने लकड़ी कागद बनाने की तभी तदबीर निकाली है । पहले लकड़ी को काटकर टुकड़े-टुकड़े करती फिर उसमें कुछ मसाला मिलाकर और गलाकर कलाऊ नाम एक कल से उसका कागद बनाती है । ये कागद चीन के कागद के बराबर होता है ।' ग्वालियर राज में अनाज की तंगी के कारण प्रजा परेशान थी उस समय के प्रजावत्सल नरेश ने अभिषेक किया इस संबंध में मालवा अखबार ने १७ अक्तूबर १९६० के अंक में समाचार प्रकाशित किया 'ग्वालियर राज्य में गल्ले की भयंकर तंगी हो गयी, व्यापारियों ने गल्ला छिपा लिया तथा १४ सैर का बैचने लगे,राजा ने स्वयं बाजार में जाकर छापा मारकर अनाज बरामद किया और १६ सैर का नाज बिकवाया इससे प्रजा बहुत खुश हुई ।' जब भारत में पहली बार आयकर लागू किया गया, तब प्रतिक्रियास्वरूप पुने एवं अन्य बड़े नगरों में इसका विरोध किया गया इस संबंध में मालवा अखबार ने सार समाचार प्रकाशित किया है ।

पत्रकारिता : पवित्र अध्यव्यवसाय

जब भारत में पत्रकारिता अपने युवा अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के संक्रमणकाल से गुजर रही थी तब मालवा अखबार २३ जनवरी १८६१ के अंक में पत्रकारिता के बारे में उस समय पत्रकारिता का अर्थ, दायित्व, सिद्धांत, प्रतिमान क्या होने चाहिए और उसका उद्देश्य क्या हो यह बताते हुए जन शिक्षण के साथ ही जनता से संवाद स्थापित करता था । तत्कालीन पत्रकारिता पवित्र एवं आदर्श अध्यव्यवसाय मानी जाती थी । इस संबंध में मालवा अखबार ने चार पेज का एक विशेष आलेख प्रकाशित किया इसमें भारतीय पत्रकारिता और विदेशी पत्रकारिता के बीच अंतर और देशी और विदेशी भाषा के बीच महत्ता को प्रतिपादित किया गया है ।

इंदौर में चोरी की घटनाओं पर मालवा अखबार १६ जनवरी १८६१ में समाचार प्रकाशित किया है । ''यहां खूब चोरियां होती हैं और इसके सबब हैं पहले तो कोतवाली का अमला मौज हो गया । छावनी बढ़ गयी, हिंदुस्तानी पलटन न पहले इस्तुर के मुवाफिक नहीं । रिसाले के जवान भी चले गये और जैसे ही और सबब है पहले तो कोतवाली का अमला बढ़ाना चाहिए थोड़े दिन हुए पाटन से एक रंडी आकर यहां रही थी उसकी ७ हजार की चोरी हुई, ये किसी घर भेदी का काम है ।''

उच्चकोटि की पत्रकारिता

एक डिप्टी कलेक्टर ने एक अखबार नवीस को पत्र भेजा, अखबार नवीस ने उसका उत्तर अपने पत्र में प्रकाशित किया जो उच्चकोटि की पत्रकारिता का उदाहरण है, उसने लिखा 'अखबार नवीस किसी हाकिम का नौकर नहीं है, वह प्रजा है तथा उसका अपमान करने का किसी हाकिम को अधिकार नहीं ।' मालवा अखबार ने इस साहसी एवं निर्भीक पत्रकार की खूब प्रशंसा की है ।

विश्व की प्रसिद्ध स्वेज नहर की निर्माण कथा के संदर्भ में मालवा अखबार में समाचार छपा है, मिस्र के शाह ने फ्रांस के बादशाह से करार कर एक नहर बनाने का करार किया है, कई भागीदार हैं । इसकी लागत ३ करोड़ रुपये है तथा इसमें दस हजार मजदूर काम करते हैं ।

(देखिये मालवा अखबार ३१ जुलाई १८६१ का अंक) इस प्रकार मालवा अखबार ने देश और दुनिया में होनेवाले वैज्ञानिक आविष्कार परीक्षण आदि समाचार समय-समय पर प्रकाशित किये हैं ।

तदनुसार उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मालवा अखबार ने उस समय जब भारत में हिंदी पत्रकारिता विकसित अवस्था के दौर से गुजरकर अपने पड़ाव की ओर अग्रसर हो रही थी तब मालवांचल से प्रकाशित इस पत्र ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में तत्कालीन अंगरेज सरकार के विरुद्ध समाचार प्रकाशित किये हैं । जिसके कारण सन १८७८ में तत्कालीन वायसराय ने मालवा अखबार के समाचारों को लेकर गुस्सा जाहिर किया । इससे यह बात प्रमाणित हो जाती है कि मालवा अखबार ने अपने स्तर पर सार्थक प्रयास किये हैं । जो भविष्य की पत्रकारिता को दिशादर्शन देने में मील का पत्थर साबित हुई है ।

—जन संपर्क अधिकारी
गोदावरी तट,
१४८, काटजूनगर, रतलाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसंत की मस्ती और न

⇧ मध्य प्रदेश

गारो हिल्स (मेघालय) ⇩ ⇧ हरियाणा

⇩ असम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगाड़ों की धमक

मिजोरम ⇧ ⇩ गुजरात

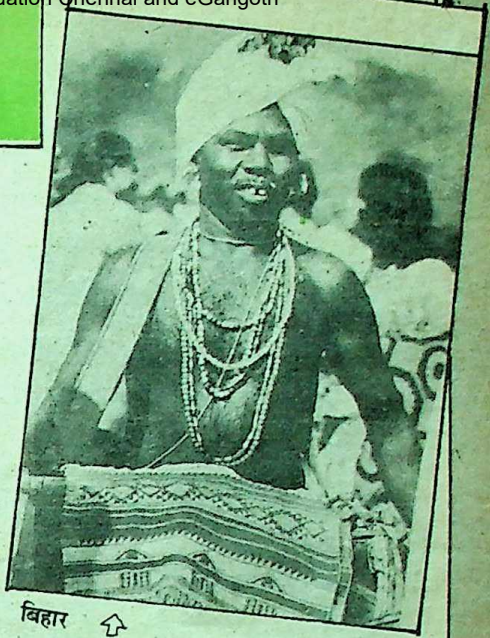

बिहार ⇧

हिमाचल ⇩

चित्र : ब्रह्मदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोमन सम्राट क्लाडियस की मान्यता थी कि विवाह करने से पुरुष का बल और विवेक घट जाता है; अतएव तत्कालीन रोमन-साम्राज्य में सैनिक अफसर और फौजी शादी नहीं कर सकते थे । यदि कोई सैनिक या अधिकारी शादी करता था, तो न केवल उसे वरन उसकी पत्नी और पादरी तीनों को सूली पर टांग दिया जाता था ।

चौदह फरवरी : प्रेमोत्सव

● डॉ. नरेश प्रसाद तिवारी

आप मानें या न मानें, यह इतिहास का सत्य है कि किसी की मृत्यु पूरे संसार के लिए उत्सव बन जाती है । चौदह फरवरी एक ऐसा दिन है जब संत वेलेन्टाइन को फांसी पर लटकाया जाता है । सन २६९ ई. की एक फरवरी को उन्हें मृत्युदंड का आदेश मिलता है । अपराध ?

अपराध है राजाज्ञा का उल्लंघन । रोमन सम्राट क्लाडियस की मान्यता थी कि विवाह करने से पुरुष का बल और विवेक घट जाता है; अतएव तत्कालीन रोमन-साम्राज्य में सैनिक अफसर और फौजी शादी नहीं कर सकते थे । यदि कोई सैनिक या अधिकारी शादी करता था, तो न केवल उसे वरन उसकी पत्नी और पादरी तीनों को सूली पर टांग दिया जाता था । यह थी क्लाडियस की क्रूर एवं निरंकुश राजाज्ञा ।

यह थी क्लाडियस की क्रूर एवं निरंकुश राजाज्ञा । किंतु संत वेलेन्टाइन ने इस राजाज्ञा का निर्भयतापूर्वक उल्लंघन किया । उन्होंने सैनिक अफसरों और फौजियों का विवाह कराना आरंभ किया । देखते-देखते हजारों सैनिक विवाहित हो गये । यह निरंकुश सम्राट के लिए चुनौती था । सम्राट ने इस सुकर्म हेतु मृत्यु दंड का पुरस्कार तय किया संत वेलेन्टाइन के लिए ।

संत चले गये । पर उनका कर्म रह गया । चिरस्मरणीय कर्म । चौदह फरवरी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविस्मरणीय दिवस, जिसे संसार के युवा-वर्ग प्रेम-रोमांस-पर्व के रूप में मनाते हैं । सत्रहवीं शताब्दी में इंगलैंड में एक परंपरा थी कि चौदह फरवरी की सुबह कोई युवती जिस युवक को सबसे पहले देख लेती थी, वही युवक उस युवती का 'वेलेन्टाइन' हो जाता था । वेलेन्टाइन एक व्यक्ति (संत) न रहकर प्रेम-रोमांस का पर्याय बन गया । एक अमर और अमूर्त्त तत्त्व ।

रोमन ईसाईयों के लिए चौदह फरवरी 'विवाह-दिवस' बन गया । अधिकांश युवक-युवती इसी दिन विवाह संस्कार में बंधने लगे । प्राचीन रोम के अनुसार प्रेम की देवी जूना है । जूना की याद में भी प्रणय-उत्सव चौदह फरवरी को ही मनाया जाता है । इसलिए 'वेलेन्टाइन डे' या विवाह-दिवस को प्रेम-रोमांस-पर्व भी कहा जाने लगा । अब तो प्रायः सभी देशों के किशोर-किशोरियों, युवक-युवतियों के लिए चौदह फरवरी सबसे प्यारा त्योहार बन गया है । अपने हृदय के भावों को प्रकट करने और मनपसंद साथी का चुनाव करने के लिए युवा प्रेमियों ने वेलेन्टाइन डे (चौदह फरवरी) को शुभ मुहूर्त्त माना है । इस पवित्र दिवस को वे अपनी पसंद का बधाई कार्ड खरीदते हैं । उस पर किसी रोमांटिक कविता की कुछ पंक्तियां लिखते हैं, और अपने हृदय की रानी या राजा को भेज देते हैं ।

निरंकुशता पर प्रेम की विजय, प्रणयोत्सव, मदनोत्सव, वेलेन्टाइन का बलिदान व्यर्थ नहीं गया ।

ई—/५२ ए रिजर्व बैंक स्टाफ क्वार्टर्स
राजेंद्रनगर, पटना-८०००१६

वंदन

आओ वंदन करें
उस क्षण का
जिस क्षण में
समर्पित हुए थे
मन देह बुद्धि
जैसे सब कुछ
एक-दूसरे से
बदल लिये थे
हम क्षण को
समर्पित थे या
क्षण हम को
रूपांतरण का प्रकृति में
हम यह जान ही
कहां पाये थे...

व्यथा

तुम्हें चाहना
अब पश्चात्ताप का
मोती बनकर
कभी आंख से
कभी याद बनकर
स्मृति से
और अक्सर
अंतर्व्यथा बनकर
अनुभूति की कोख में
फूट पड़ता है ।

● डॉ. रेखा व्यास
क. नं. ४४४ दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदन

नंदन

नंदन

बच्चे पढ़ें
किशोर पढ़ें
माता-पिता और दादा-दादी भी
चार पीढ़ियां पढ़ती हैं नंदन को साथ-साथ

बच्चों को
कान्वेन्ट में पढ़ाइए या सरकारी स्कूल में
उन्नति और विकास के लिए
नंदन का हर अंक उन्हें अवश्य दें

नंदन जब भी घर में आया
तरह-तरह की खुशियां लाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुवनेश्वर : शिव मंदिरों का नगर, जिसके बिंदु सरोवर में देश के सभी तीर्थों का जल समाहित है । भुवनेश्वर के निकट ही है, वह स्थल जहां इतिहास-प्रसिद्ध कलिंग युद्ध हुआ था ।

जहां सब तीर्थों का जल समाहित है !

● ज्योति खरे

भुवनेश्वर उड़ीसा प्रदेश की राजधानी । यह शिव मंदिरों का नगर है । कहा जाता है कि पहले यहां लगभग सात सहस्र मंदिर थे जिनमें से अनेक गिर गये । इन मंदिरों की शिल्पकला उड़ीसा-शैली के लिए प्रसिद्ध है । भुवनेश्वर को 'उत्कल वाराणसी' और 'गुप्तकाशी' भी कहते हैं । पुराणों में इस क्षेत्र का वर्णन 'एकाग्र क्षेत्र' के रूप में हुआ है । शंकर ने स्वयं इस क्षेत्र को प्रकट किया है इसलिए इसे 'शांभव क्षेत्र' भी कहते हैं ।

शंकर और वासुदेव

धार्मिक पृष्ठभूमि के अनुसार काशी में सभी तीर्थाधिदेवों के बस जाने पर शंकर को एकांत में रहने की प्रबल इच्छा हुई । देवर्षि ने एकाग्र क्षेत्र की बहुत प्रशंसा की । यहां आकर शंकर ने क्षेत्रपति अनंत वासुदेव से कुछ समय के लिए निवास की अनुमति मांगी । वासुदेव ने शंकर को यहां हमेशा ही निवास करने का अनुरोध करके रोक लिया ।

श्री लिंगराज मंदिर ही भुवनेश्वर का मुख्य मंदिर है । श्री लिंगराज का ही नाम भुवनेश्वर है । यह मंदिर लगभग ५२० फुट लंबा तथा ४६५ फुट चौड़ा है । मंदिर एक विशाल भूखंड में बना है, जिसके चारों ओर ऊंचा परकोटा है । इसका निर्माण लगभग सन १०९०-११०४ के बीच में हुआ, सिंहद्वार के प्रवेश करने पर पहले गणेश का मंदिर मिलता है । इसके आगे वृषभ-स्तंभ, भोगमंडप, नृत्यमंडप, जगमोहन और अंत में गर्भगृह है, गर्भगृह का शिखर लगभग १२६ फुट ऊंचा है । इसमें लिंगराज का चपटा विशाल लिंग विग्रह है, जो बीच से फटा हुआ दो भागों में है । इसके एक भाग को विष्णु रूप एवं दूसरे भाग को शिवरूप माना जाता है । इसीलिए इसे हरिहरात्मक लिंग कहते हैं । मंदिर का महाप्रासाद केवल मंदिर के घेरे के भीतर स्पर्श दोष से मुक्त माना जाता है । इस घेरे के भीतर कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, जिनमें लक्ष्मीजी, गोपालिनी, महाकालेश्वर, नृसिंहजी, विश्वकर्मा, यमेश्वर, भुवनेश्वरी आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

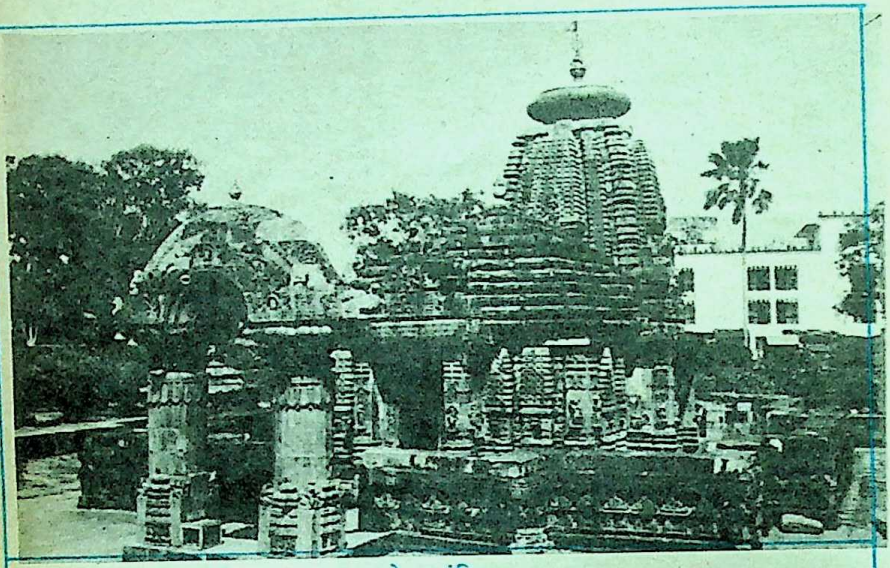
मुक्तेश्वर मंदिर

प्रमुख हैं । गर्भगृह के बायीं ओर बारह सीढ़ियों के ऊपर एक मंदिर में गणेश की विशाल मूर्ति स्थापित है ।

बिंदु सरोवर : सब तीर्थों का जल

लिंगराज मंदिर के समीप ही एक सरोवर है, जिसे बिंदुसरोवर कहते हैं । कहा जाता है कि समस्त तीर्थों का जल इसमें डाला गया होने से इसे बहुत पवित्र माना जाता है, सरोवर के बीच में एक मंदिर है । वैशाख माह में यहां चंदन यात्रा अर्थात जलविहार का उत्सव बड़े धूमधाम से होता है । सरोवर के चारों ओर बहुत से मंदिर हैं ।

बिंदु सरोवर के तट पर ही अनंत वासुदेवजी का मंदिर स्थित है । इसमें भगवान नारायण, लक्ष्मी तथा सुभद्रा के विग्रह हैं । भुवनेश्वर (एकाग्रक्षेत्र) के यही अधिष्ठाता हैं । शंकर इन्हीं की अनुमति से इस क्षेत्र में पधारे थे ।

रामेश्वर मंदिर अनंतवासुदेव से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्टेशन जाने के राजमार्ग में पड़ता है । इसको गुंडीचा मंदिर भी कहते हैं । इसमें रामेश्वर नामक शिवलिंग प्रतिष्ठित है । चैत्र शुक्ल अष्टमी को श्री लिंगराज की यात्रा होती है और उनका रथ इसी मंदिर तक आता है ।

परशुरामेश्वर मंदिर लिंगराज मंदिर से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । इस क्षेत्र के समस्त मंदिरों में यही मंदिर सबसे प्राचीन है । इसकी भित्तियों पर शिल्पकला देखने योग्य है । इस मंदिर के समीप ही नागेश्वर मंदिर तथा राजा-रानी मंदिर है । राजा-रानी मंदिर पहले विष्णु मंदिर था, यह कटक-भुवनेश्वर मार्ग पर स्थित है । इसमें कोई आराध्य मूर्ति तो नहीं है किंतु मंदिर बहुत सुंदर है । इसकी भित्तियों पर उड़ीसा-शैली की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

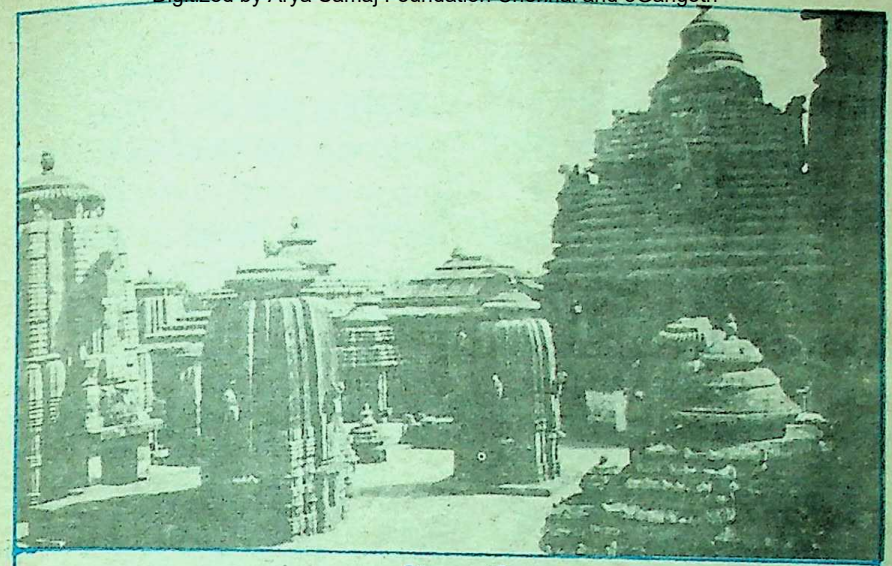

लिंगराज मंदिर

शिल्पकला दर्शनीय है ।

पवित्र कुंडों का महत्त्व

इस क्षेत्र में पांच पवित्र कुंड हैं । प्रत्येक कुंड के समीप मंदिर भी है । लिंगराज मंदिर से लगभग १ कि.मी. की दूरी पर दुग्ध कुंड है । यह पवित्र कुंड है, जिसमें स्नान नहीं किया जाता । यात्री इसका जल पीते हैं । कुंड के समीप केदारेश्वर, पार्वती, हनुमान आदि देव मंदिर हैं । इसके पास गौरीकुंड नामक विशाल सरोवर है, जिसमें स्नान किया जाता है । इसका जल हमेशा स्वच्छ रहता है । इसी के सामने केदारकुंड है । दुग्धकुंड के घेरे के बाहर एक अलग घेरे में मुक्तेश्वर कुंड एवं सिद्धेश्वर कुंड है । इन तटों पर सिद्धेश्वर तथा मुक्तेश्वर नामक शिव मंदिर हैं । यहां से थोड़ी दूरी पर कोटितीर्थ नामक एक सरोवर है, जिसके तट पर कोटेश्वर शिव मंदिर है, इसके अलावा इस क्षेत्र में अनगिनत मंदिर भी हैं । कई मंदिर तो ऐसे खड़े हैं कि उनमें प्रवेश करना भी खतरनाक है । वे कभी भी गिर सकते हैं ।

भुवनेश्वर से लगभग १० किलोमीटर दूर धौली की पहाड़ियों पर स्थित शांति स्तूप बना है । इसके चारों ओर महात्मा बुद्ध की प्रतिमाएं हैं । इसी पहाड़ी के पास इतिहास प्रसिद्ध कलिंग का युद्ध हुआ था, जहां सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ था ।

भुवनेश्वर से लगभग ५ किलोमीटर दूर स्थित खंडगिरि और उदयगिरि की बौद्ध गुफाएं, खंड गिरि का गुलाबी जैन मंदिर तथा पारसनाथ का मंदिर सभी हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों की उन्नति और प्रभुत्व के प्रतीक हैं ।

—आर. बी.-२/९९६/सी, रानी लक्ष्मी नगर, झांसी (उ.प्र.)-२८४००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सैर के लिए... अथवा किसी प्रेरणा की तलाश में ?' और कमल देव उठने से पहले ही बैठ गया । उसकी आवाज में तरलता तथा चेहरे पर एक रहस्यपूर्ण भाव था । मगर कहकहे-जैसा कुछ नहीं । यह बात उसने शायद अकस्मात ही कह दी थी । उसके उत्तर में मोहनी ने कहकहे लगाते हुए कहा— 'प्रेरणा तो घर में ही काफी है... फिर भी, इस उद्देश्य से भी जाना चाहते हों, तो मुझे इस तरह नहीं सोचना चाहिए ।'

सोहनी और कच्चा घड़ा

● जसवंत सिंह 'विरदी'

नवंबर की आखिरी शाम डूब गयी थी । इसलिए केवल कमरों में ही नहीं, देह-मन में भी सरदी का प्रभाव बढ़ता जा रहा था । मगर इस सरदी में भी खिड़की से बाहर के खंबे की रोशनी अंदर आ रही थी और भीतर की लौ बाहर जा रही थी । भीतर की लौ और बाहर के प्रकाश के प्रभाव से कवयित्री मोहनी और प्रकाशक कमल देव की युवा आकृतियां कोने में रखे हुए आदमकद दर्पण में साकार हो रही थीं । मगर बातें नहीं । वैसे बातें उनमें कुछ इस किस्म की हो रही थीं—

'कविता के लिए आपको कहां से प्रेरणा मिलती है ?' कमल देव पूछ रहा था, जिसके उत्तर में मोहनी गदगद होकर कह रही थी—

"मैं अवश्य बता दूं, अगर आप इंटरव्यू बनाकर प्रकाशित न कर दें तो... ।"

"इंटरव्यू तो बातें किये बिगैर भी छप सकता है ।" कमल देव ने कहा, और इस बात पर एक जोरदार कहकहा लगा, और दोनों की आकृतियां दीवार पर कांपने लगीं । फिर खामोश हो गयीं । बिलकुल स्थिर । जैसे कोई साजिश हो रही हो ।

"यदि कम शब्दों में कहूं तो मुझे अकसर, आकस्मिक घटनाओं से प्रेरणा मिली है ।" मोहनी ने कहा तो कमल देव ने उसकी पुष्टि की —'मैं भी यही सोचता था ।'

मगर उस समय मोहनी उसकी ओर न देखकर खिड़की से बाहर देख रही थी, उसका ध्यान बाहर था । जहां स्ट्रीट लैंप की रोशनी से पार्क की झाड़ियों की परछायीं घास की पत्तियों से गलगीर हो रही थीं ।

बाहर देख रही मोहनी कह रही थी —"मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कई वर्षों तक इन रोशनियों के खंबों के बारे में भी सोचती रही हूं । ये एक न एक दिन अवश्य ही कमरे में आ जाएंगे... उसके बाद की बात... कविता है । अगर कोई अनुभव कर सके तो ।''

आज मोहनी बहुत प्रसन्न थी । क्योंकि कमल देव उसकी कविताओं की प्रथम पुस्तक प्रकाशित करके लाया था । इस पुस्तक —'तुम्हारे नाम' को वह डाक द्वारा भी भेज सकता था, मगर वह खुद ही उस पुस्तक की प्रथम-प्रति कवयित्री को प्रस्तुत करके उस द्वारा प्रशंसा प्राप्त करना चाहता था । अपनी पुस्तक को देख मोहनी के चेहरे पर विस्मय-भाव फैल गया था । उस विलक्षण प्रभाव को देखकर कमल देव अत्यंत प्रसन्न हो रहा था । क्योंकि इस तरह का प्रभाव किसी उपलब्धि के पश्चात ही जन्म लेता है ।

चाय खतम हो गयी थी और कमल देव चाहता था कि जल्दी से उठकर बुक मार्केट के बंद होने से पूर्व कुछ लोगों से मिल ले और बिलों के बारे में बात कर ले । हो सकता है कि उसका मन इस दुविधा में भी हो कि बुक मार्केट में लोगों से मिलना बेहतर है या मोहनी की कविताएं सुनना ।

''अभी तक बत्तरा साहिब नहीं आये ?' कमलदेव ने उठने के प्रयत्न में पूछा । वह देख रहा था कि मोहनी का पति अभी तक दिखायी नहीं दिया था । मोहनी ने मुसकराकर कहा—

''वह तो परसों से दिल्ली गये हुए हैं । कल आएंगे ।''

''सैर के लिए... अथवा किसी प्रेरणा की तलाश में ?'' और कमल देव उठने से पहले ही बैठ गया । उसकी आवाज में तरलता तथा चेहरे पर एक रहस्यपूर्ण भाव था । मगर कहकहे-जैसा कुछ नहीं । यह बात उसने शायद अकस्मात ही कह दी थी । उसके उत्तर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहनी ने कहकहे लगाते हुए कहा —'प्रेरणा तो घर में ही काफी है... फिर भी, इस उद्देश्य से भी जाना चाहते तो मुझे इस तरह नहीं सोचना चाहिए ।''

''क्यों ?''

''जीवन में विश्वास की भी तो जगह है ही... ।''

''हां, यह तो है ही... ।''

''इसलिए... ।'' वह कुछ और कहती-कहती रुक गयी ।

उस समय उसने गुलाबी साड़ी बांधी हुई थी और उससे मैच करता ब्लाउज । उसके कानों में गोल तथा चौड़े आकार के ईयर-रिंग झूल रहे थे और जो नेकलेस झूल रहा था, उसमें पान-पत्ते-जैसी हृदय की तसवीर थी । उस पान-पत्ते जैसे हृदय में से एक ओर से दूसरी तरफ एक तीर निकलने ही वाला था । कमल देव उस पान-पत्ते में फंसे हुए तीर को देख आंखों ही आंखों में पूछ रहा था—

''यह तोहफा बत्तरा साहब लाये थे ?''

इसके उत्तर में मोहनी की मचल रही नजरें कह रही थीं—

''क्या इसमें कोई संदेह है ?''

''संदेह तो नहीं... मगर ?''

''यह पूछना जरूरी है ?''

''नहीं ।''

''तब... फिर ?''

दोनों की नजरें मिलीं, तो उनके कहकहे फिर दीवार पर साकार हो गये । और फिर आपस में, एक-दूसरे में विलीन ।

कमल देव ने जब अपने पिता की मृत्यु के पश्चात पुस्तकें छापने और बेचने का धंधा संभाला था, तब उसे यह काम बहुत ही उबा देनेवाला लगा था । तब उसे इस बात का पता नहीं था कि लेखकों में भी कभी-कभी उसकी दिलचस्पी हो सकती है । कुछ लेखक अपनी रचना से भी अधिक आकर्षक होते हैं ।

''कविता तो यह खुद ही है ।'' कमल देव ने पान पत्तेवाले नेकलस को देखकर सोचा —'और इस पे उपन्यास लिखना चाहिए, फिर तीर चाहे पान-पत्ते के दूसरे सिरे तक न ही पहुंच सके । मैं उपन्यास अवश्य छाप लूंगा ।' मगर उसने यह बात मोहनी को कही नहीं ।

न तो खंबा ही कमरे के अंदर आया और न ही घास की पत्तियां झाड़ियों की परछायी की पकड़ से बाहर जा सकीं । परंतु बातें अचानक ही रुक गयी थीं । कमल देव कमरे की दीवारों से चिपकी हुई तसवीरें देख रहा था । हर बार उसकी दृष्टि कच्चा घड़ा लेकर चिनाब नदी की ओर बढ़ रही सोहनी की तसवीर पर रुक जाती थी । तसवीर में थिरक रही सोहनी का लहंगा हवा से सरसराहट पैदा कर रहा था, मगर वह अभी तक नदी की लहरों में कूदकर पानी में नहीं खोयी थी । कमल देव ने सोचा —'जब मैं पांडुलिपि लेने आया था, तब भी यह सोहनी कच्चा घड़ा लिए नदी की ओर जा रही थी... और अब भी... । पता नहीं यह नदी में कब कूदेगी... ।

उस समय मोहनी की नजर भी कमल देव पर ही लगी हुई थी । वह मुसकरा रही थी । उसका काव्य-संकलन 'तुम्हारे नाम' बहुत खूबसूरत छपा था । उसके हरेक पृष्ठ पर एक विरहणी नारी की आकृति फैली हुई थी, जैसे वह नारी मोहनी ही हो । अपनी कृति के पन्नों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक भी तो होता ही है । और मोहनी पुस्तक को देखकर अत्यंत प्रसन्न थी । इससे पूर्व कि वह कहे —'अच्छा, फिर मैं चलता हूं... ।'

मोहनी ने कहा —'आज इधर ही रह जाइए ।' उसकी मुसकान में संगीत तथा मधुरता तो थी ही —"इस वक्त कहां जाएंगे ?"

"मैं रह तो जाऊं," कमल देव ने सोहनी की तसवीर की ओर देखकर गंभीरता से कहा —"मुझे डर है कि यह सोहनी कहीं कच्चा घड़ा छोड़कर रात्रि में नीचे न उतर आये ।"

मोहनी ने तसवीर की ओर देखे बिना ही मुसकराकर कहा—

"आप रहिए । यह उतरकर नहीं आएगी ।"

"इसका क्या विश्वास है ।"

"कोई बात नहीं ।"

"अच्छा... ।"

"हांऽऽ... ।"

उस समय शायद कमल देव की आत्मा ने बुक मार्केट के लोगों से मिलने के विरुद्ध निर्णय दे दिया था । और शायद, कविता के पक्ष में भी ।

रात्रि के खाने के बाद मोहनी ने कविताएं सुनायीं और दाद वसूल की । कमल देव ने भी दाद की दाद वसूल की ।

फिर वह मोहनी को बताता रहा कि वह मोहनी के प्रथम काव्य-संकलन की प्रसिद्धि के लिए क्या कुछ करने जा रहा है ।

मोहनी ने हंसकर पूछा —"क्या कोई स्त्री एक ही पुस्तक लिखकर कवयित्री बन सकती है ?"

"क्यों नहीं ?" कमल देव ने गंभीरता से उत्तर दिया — 'कई बार तो कोई एक कविता ही किसी सुंदरी को कवयित्री बनाने के लिए काफी होती है ।'

"यदि वह भी न हो... ?"

"तब भी... ।" कमल देव ने मुसकराकर उत्तर दिया —"कोई न कोई ऐसा स्कैंडल... ।"

इस बात पर फिर कहकहा उभरा और रात्रि के शून्य में हलचल मच गयी ।

'जीवन यही है... ।' वह कहकहे कह रहे थे... ।

'यही जीवन है... ।'

दिसंबर की पहली सुबह को जब मोहनी नाश्ता लेकर आयी, तो कमलदेव ने धीरे-से कहा—

"मैंने कहा नहीं था कि यह सोहनी कच्चा घड़ा छोड़कर रात्रि में नीचे उतर आएगी ।"

इसके उत्तर में मोहनी ने एक निर्लिप्त व्यक्ति की भांति आहिस्ता से कहा —'वह नहीं आयी थी ।'

—९६, गुरजीत नगर, गढ़ारोड
जालंधर शहर-१४४०२२

जीवाणुओं की मदद से दीवारों का परीक्षण

फ्रांस के वैज्ञानिकों ने दीवारों के परिरक्षण के लिए कुछ ऐसे सूक्ष्म जीवाणुओं की खोज की है, जो मकानों की दीवारों का क्षरण रोकने और उनका परिरक्षण करने में समर्थ हैं । इन जीवाणुओं को एक विशेष ताप के प्रभाव से दीवारों पर छोड़ दिया जाता है, जहां ये अपना प्रभाव दिखाना प्रारंभ कर देते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी बेरुखी से लुप्त

● अशोक सुमन

स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद से ही आदिवासियों के जीवनस्तर में सुधार लाने और उन्हें देश की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों के प्रयास जारी हैं। केंद्र एवं राज्य सरकारों के अतिरिक्त विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों की विकासात्मक योजनाएं भी आदिवासियों के दशा-परिवर्तन तथा उत्थान पर सक्रियता से कार्य कर रही हैं। इस कार्य के ऊपर अब तक अरबों रुपये खर्च किये जा चुके हैं। आदिवासियों के चहुंमुखी विकास के आंकड़े भी सरकार द्वारा अखबारों में प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अस्तित्व पर मंडराता खतरा

ये आंकड़े निश्चय ही प्रभावशाली हैं। लेकिन इसका सही-सही जायजा लेने के लिए बिहार के उन आदिवासियों की स्थिति पर भी नजर डालना जरूरी है, जिनकी जनसंख्या दिनोंदिन घटती जा रही है। बिहार की प्रमुख आदिम जनजातियों में से एक 'बिरहोर' का तो लगभग सफाया ही हो चुका है। १९५१ में इस जनजाति की कुल जनसंख्या लगभग ५५ हजार थी, लेकिन भूख, बीमारी, कुपोषण तथा गैर-आदिवासियों के लगातार शोषण के कारण अब उनकी संख्या घटकर १ लाख ९१ हजार हो गयी। सन १९८१ में सिर्फ ४३८ रह गयी है। ठीक यही खतरा स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभानेवाली पहाड़िया जनजाति पर भी मंडरा रहा है। सन १९५१ में पहाड़िया जनजाति की आबादी लगभग सवा तीन लाख थी जो सन १९७१ में और भी घटकर सवा लाख हो गयी। सन १९९१ की जनगणना के अनुसार यह आबादी घटकर ९५,००० के करीब पहुंच गयी है। जनसंख्या विशेषज्ञों का कहना है कि अगर तुरंत आवश्यक कदम नहीं उठाये गये तो अगली सदी के पूर्वार्द्ध तक यह जनजाति भी विलुप्त हो जाएगी।

पहाड़िया जाति आदिवासी वर्ग के अंतर्गत नौ आदिम जनजातियों में से एक है। पहाड़िया की तीन उपजातियां हैं—सावरिया, माल तथा कुमार भाग। वैसे इन तीनों उपजातियों में कोई खास अंतर नहीं है।

गौरवशाली अतीत

पहाड़िया जनजाति का अतीत अत्यंत ही समृद्ध और गौरवशाली रहा है। ब्रिटिशकाल में अंगरेजों के विरुद्ध जेहाद छेड़नेवाली यह पहली जनजाति थी। इतिहासकारों के मुताबिक ईसा पूर्व ३०२ ई. से ही पहाड़िया जनजाति संथाल परगना प्रमंडल में निवास करती आ रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही है पहाड़िया जनजाति

उस समय पहाड़िया जनजाति को मालेर जनजाति के नाम से जाना जाता था । इनकी अपनी राजव्यवस्था थी और वे वर्तमान संथाल परगना के महेशपुर, पाकुड़, अंबर, राजगढ़, गिद्धौर राजमहल तथा उधवानाला इत्यादि क्षेत्रों के शासक थे । यूनानी दार्शनिक सेल्यूकस, चीनी यात्री फाहियान और हवेनसंग की यात्रा के विवरण में भी इस जाति के अस्तित्व का वर्णन मिलता है । पहाड़िया जाति मूलतः खेतिहर थी और समतल क्षेत्र में रहती थी । ऐतिहासिक दस्तावेजों से पता चलता है कि पहाड़िया जनजाति ने मुगल सम्राट अकबर के सेनापति मानसिंह और अफगान सरदार शेरशाह के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ी थी और कभी परास्त नहीं हुई थी । सन १९६५ में अंगरेजों ने बिहार के संथाल परगना क्षेत्र की दीवानी मुगल बादशाह से खरीद ली । तत्पश्चात पहाड़िया जनजाति पर अंगरेजों का अत्याचार शुरू हुआ । अंगरेजों के अत्याचार के विरुद्ध रमना आहड़ी नामक एक पहाड़िया सरदार ने सन १७६६ में संघर्ष का बिगुल फूंका और युद्ध में अंगरेजों का वीरतापूर्वक सामना किया । लेकिन अंततः अंगरेजों को विजय हासिल हुई और रमना आहड़ी की हत्या कर दी गयी । रमना आहड़ी की हत्या के बाद भी पहाड़िया जाति के युवकों ने अंगरेजों के खिलाफ संघर्ष जारी रखा । सन १७७२ में करिया पुजहर के नेतृत्व में पहाड़ियों और अंगरेजों के बीच उधवानाला के पास ऐतिहासिक संग्राम हुआ । इस संग्राम में अंगरेजों को शर्मनाक पराजय का सामना करना पड़ा । इससे अंगरेज घबरा उठे और उन्होंने सुनियोजित ढंग से पहाड़ियों के इलाके में संथालों को बसाना आरंभ किया । धीरे-धीरे संथालों की संख्या बढ़ती गयी । बाद में अंगरेजों ने संथालों को उकसाकर पहाड़ियों से लड़वा दिया । संथालों से परास्त होने के बाद पहाड़ियों को आत्मरक्षार्थ पहाड़ों की ऊंची चोटियों पर शरण लेनी पड़ी । तभी से वे मालेर की जगह पहाड़िया कहलाने लगे । आज भी संथाल परगना प्रमंडल के बोरिया, लिटीपाड़ा, अमलापाड़ा, बरहेट, तालझंडी, बरहरवा, शिकारीपाड़ा, मसलिया और रावणेश्वर प्रखंडों में स्थित पहाड़ों पर पहाड़ियों के हजारों गांव बसे हुए हैं ।

प्रचलित रीति-रिवाज

पहाड़ियों के गांव समुद्रतल से ४५० मीटर से ५०० मीटर की ऊंचाई पर लहरदार पहाड़ों की चोटियों पर अवस्थित हैं । इनके गांव छोटे-छोटे व बिखरे हुए हैं । प्रत्येक गांव में दस से लेकर पचीस परिवार रहते हैं । इनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीति-रिवाज हिंदुओं से काफी मिलते-जुलते हैं। उनमें हिंदुओं की प्रथाएं जैसे-जनेऊ धारण, एक ही देवता की पूजा इत्यादि प्रचलित है। पहाड़ों पर रहने के कारण इनके पास कृषि योग्य भूमि का अभाव है। इसलिए पहाड़ी ढालों पर जो थोड़ी भूमि उपलब्ध है, उसी पर कृषि कार्य कर यह जनजाति अपना जीवन निर्वाह करती है। इनकी मुख्य फसल धान है। फसल तैयार होने पर वे पहले खेतों में भूतों की बलि देते हैं, फिर फसल काटना आरंभ करते हैं। चूंकि पहाड़ों पर काफी अल्प मात्रा में उत्पादन होता है इसलिए वे छोटे-छोटे जंगली जानवरों का शिकार और फल-फूल खाकर भी अपना गुजारा करते हैं।

अपनी भूमि में ही अल्पसंख्यक

आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि पिछले दो-तीन दशकों में भारत विशेषकर बिहार ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। लेकिन पहाड़िया जाति के मामले में ठीक इसका उल्टा हुआ। नदियों पर बांध निर्माण, सिंचाई संसाधन, औद्योगीकरण इत्यादि के कारण पहाड़िया भूमि अधिग्रहण के शिकार हुए ही, कई कानूनों द्वारा जंगल पर से भी उनका खतियानी हक छीन लिया गया। औद्योगीकरण के चलते पहले पहाड़ों से पत्थर तोड़ने का काम शुरू हुआ, फिर इमारती कामों के लिए चट्टानें तोड़ी गयीं और बाद में सीमेंट की फैक्टरियों के लिए पत्थर का उपयोग शुरू हुआ। इससे पहाड़ों पर कहर टूट पड़ा और इसका स्वाभाविक प्रभाव पहाड़िया जनजाति पर पड़ा। पहाड़िया जनजाति की आय का एक मुख्य स्रोत लकड़ी व्यवसाय था, पर निरंतर जंगलों की हो रही कटाई से उनका यह सहारा भी समाप्त हो गया है। सरकार ने भी पर्यावरण के संतुलन को बनाये रखने के लिए जंगल से लकड़ी काटने पर पाबंदी लगा दी। क्षेत्र में तेजी से बढ़ते औद्योगीकरण से जितना उपार्जन हो रहा है, उसका लाभ गैर-आदिवासियों के हाथ में चला जा रहा है। नतीजन पहाड़िया अपनी मातृभूमि पर ही अल्पसंख्यक होते जा रहे हैं जबकि अन्य जातियों (मारवाड़ियों, पंजाबियों) की संख्या इस क्षेत्र में तेजी से बढ़ी है।

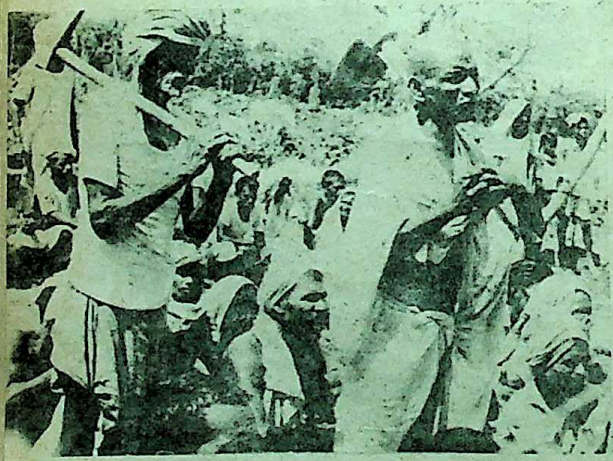

ऐसा नहीं है कि पहाड़िया जाति को पुनः समतल क्षेत्र में बसाने का प्रयास नहीं किया गया।

बताया जाता है कि सन १९५० के दशक में एक बार आद्रो, लोहंगा इत्यादि कुछ पहाड़ी गांवों के लोगों को पहाड़ से नीचे उतारकर पांचगढ़ में बसाया गया था। लेकिन गैर-आदिवासियों ने उनकी बहू-बेटियों को इतना सताया कि वे फिर पहाड़ों पर भाग खड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़िया जाति मूलतः खेतिहर थी और समतल क्षेत्र में रहती थी। ऐतिहासिक दस्तावेजों से पता चलता है कि पहाड़िया जनजाति ने मुगल सम्राट अकबर के सेनापति मानसिंह और अफगान सरदार शेरशाह के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ी थी और कभी परास्त नहीं हुई थी । सन १९६५ में अंगरेजों ने बिहार के संथाल परगना क्षेत्र की दीवानी मुगल बादशाह से खरीद ली । तत्पश्चात पहाड़िया जनजाति पर अंगरेजों का अत्याचार शुरू हुआ ।

हुए ।

शोषण के शिकार

कहने को तो यूनिसेफ से लेकर केंद्र सरकार एवं बिहार सरकार की अनेक योजनाएं पहाड़िया जनजाति के उत्थान पर कार्य कर रही हैं । वर्ष १९५४ में पहाड़िया जनजाति कल्याण विभाग की स्थापना की गयी थी । सिर्फ इस विभाग द्वारा पहाड़िया जनजाति के कल्याण के ऊपर लगभग १३ करोड़ रुपये खर्च किये जा चुके हैं ।

इसके अतिरिक्त भी पहाड़िया जनजाति के लिए चलाये गये विभिन्न कल्याण कार्यक्रमों पर अरबों रुपये खर्च किये जा चुके हैं लेकिन सच तो यह है कि नौकरशाही की मेहरबानी से पहाड़ियों के कल्याण की सारी योजनाएं विकलांग बनकर फाइलों में ही कैद हैं । इतनी बड़ी राशि के खर्च के बावजूद पहाड़िया कई तरह की विकृतियों से नहीं उबर पाये हैं ।

दरअसल सरकार के किसी भी विभाग में यह क्षमता नहीं है कि वह दुर्गम पहाड़ी रास्तों से चलकर पहाड़ियों को आवश्यक सुविधाएं मुहैय्या करा सके । पहाड़ियों में साक्षरता तो नाममात्र की नहीं है । बिहार में जनजातियों की सामान्य साक्षरता दर १६.९९ प्रतिशत है जबकि पहाड़ियों में साक्षरता की दर महज दो प्रतिशत है ।

परिणामस्वरूप वे महाजनों और सूदखोरों के जाल में बुरी तरह फंसे हुए हैं । उनके आर्थिक शोषण के साथ दैहिक शोषण के कई मामले भी प्रकाश में आये हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकालमृत्यु के शिकार

पहाड़िया जाति के युवकों को पर्याप्त पोषण सामग्रियों और शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के सरकारी दावे भी खोखले साबित हुए हैं। संथालपरगना प्रमंडल में पहाड़ियों का शायद ही कोई ऐसा गांव है, जहां शुद्ध पेयजल की कोई समुचित व्यवस्था है। सभी गांवों में पहाड़िया झरने के पानी से ही काम चलाते हैं। वे सख्त जंगली जड़ 'वैजनकुंडा' खाकर गुजारा कर रहे हैं। यह धीमे जहर का काम करती है। साहिबगंज कॉलेज के प्राध्यापक डॉ. रामप्रवेश चौधरी की एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार ८७% पहाड़ियों को रात में भूखे सोना पड़ता है।

उन्हें खाने के भी लाले पड़ रहे हैं। गंदा पानी पीना और विषयुक्त जंगली जड़ खाकर गुजारा करना इनकी मजबूरी बन चुकी है। फिलहाल यह जनजाति अपने अस्तित्व के नाजुक दौर से गुजर रही है। पिछले एक दशक के अंदर कालाजार, मलेरिया, टी. बी., इंसेफलाईटिस, टिटनस और घेंघा रोग के कारण इस जनजाति के कम-से-कम ३५ हजार लोग अकालमृत्यु के शिकार हो चुके हैं। एक पहाड़िया की औसत उम्र घटकर ३५-४० वर्ष रह गयी है।

एक तो घोर पिछड़ेपन के शिकार होते आये हैं पहाड़िया, उस पर से गैर-आदिवासियों के शोषण चक्र में इस बुरी तरह से फंसे हुए हैं कि उनकी उन्नति के सारे मार्ग बंद हो गये हैं। एक सर्वेक्षण रपट के अनुसार भूख-कुपोषण, बीमारी और भयानक शोषण के कारण उनकी आबादी दशमलव आठ प्रतिशत की दर से घट रही है। आर्थिक कशमकश के कारण उनकी संस्कृति का प्रमुख हिस्सा तीरंदाजी तथा नृत्य आदि भी तेजी से लुप्त होते जा रहे हैं।

कुल मिलाकर पहाड़िया अब पहाड़ों पर रहते-रहते थक चुके हैं। आज उनके पास न खेत है, न फसल है न ही शिक्षा। वे आत्महीनता के शिकार हैं। उनके चेहरों पर खीज और लाचारी है। उनकी सूजी आंखें निराशा और बेबसी का प्रतिबिंब बनती जा रही हैं। विडंबना तो यह है कि वन्यजीवों की घटती संख्या पर जहां पूरे विश्व में हाय-तौबा मचायी जा रही है, वहीं विलुप्त हो रही पहाड़िया जनजाति की ओर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है।

पहाड़िया जनजाति, पूर्व मुख्यमंत्री बिंदेश्वरी दुबे से लेकर वर्तमान मुख्यमंत्री लालू प्रसाद तक से मुलाकात कर उन्हें अपनी दुर्दशा से अवगत करा चुकी है। प्रायः सभी मुख्यमंत्रियों ने समुचित कार्रवाई का आश्वासन भी दिया लेकिन किसी का आश्वासन फलीभूत नहीं हुआ। सत्ता के उदासीन रवैये का इससे बेहतर उदाहरण और क्या हो सकता है ? काश रामायण के कुंभकर्ण की तरह सोती सत्ता को जगाने के लिए कोई ढोलमंजीरों की व्यवस्था कर पाता।

—द्वारा : श्री बीरेन्द्र कुमार सिंह,
नव विकास कॉलोनी,
आशियाना नगर, दीघा रोड,
पटना-८०००१४

चित्र : ललित त्रिलोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही साथी है, यही खिलौना !

एक पहाड़िया वृद्ध

एक पहाड़िया परिवार :

चित्र : ललित त्रिलोक

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

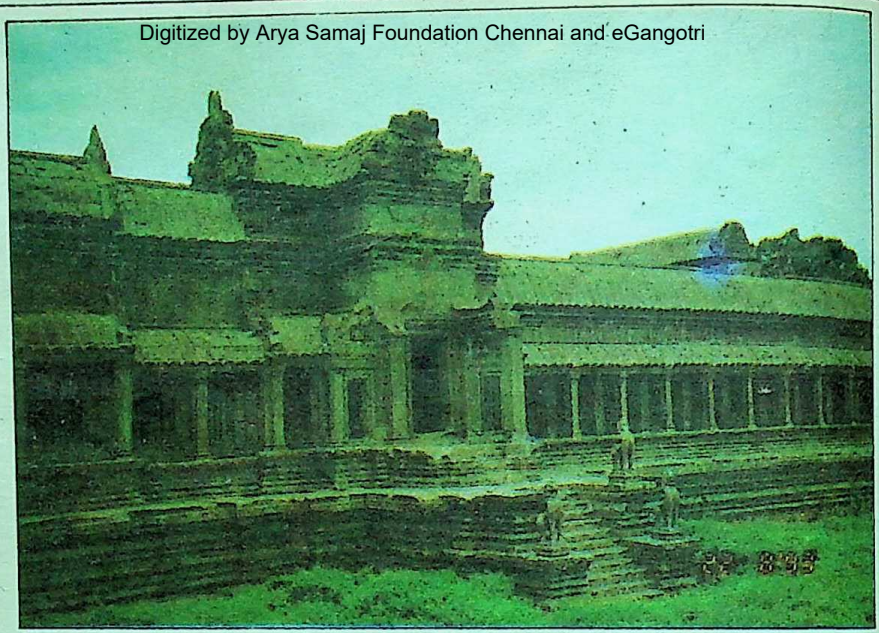

अंकोर वाट के चारों ओर बनी तीन दीर्घाओं में से तीसरी दीर्घा का दक्षिण-पश्चिम भाग, जिसमें उत्कीर्ण है कुरुक्षेत्र युद्ध का दृश्य।

भित्तियों पर उत्कीर्ण अप्सराएं यहां डेढ़ लाख से भी अधिक ऐसी अप्सराएं भवन के कोने-कोने में अंकित हैं ।

पारदर्शी : मीना भंडारी

अंकोर वाट के पश्चिमी मुख्य प्रवेश द्वार से लिया गया दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा है अंकोर-वाट

● मीना भंडारी

अंकोर वाट ।

एक शिव मंदिर । विष्णु मंदिर ।

बौद्ध मंदिर । भारत से सैकड़ों मील दूर, कंबोडिया में । विश्व का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर ।

हम इसके प्रांगण में खड़े हैं । भारत में बद्रीनाथ से लेकर कन्याकुमारी और रामेश्वरम् तक के कई भव्य मंदिरों के दर्शन किये थे, किंतु इतना विशाल भी कोई मंदिर हो सकता है, इसकी कल्पना भी सहज नहीं लग रही है ।

जब मेरे पति ने सूचना दी कि भारत के राजदूत के रूप में उनकी नियुक्ति अब कंबोडिया में होने जा रही है, तो मेरे मन में जो सबसे पहला विचार कौंधा वह था—अंकोर वाट के अद्वितीय मंदिरों को देखने का ।

और एक दिन वह भी आया, जब हमारा सपना सच हुआ । हम रवाना हो गये कंबोडिया की राजधानी प्योम-पैंह के लिए । उड़ान लंबी थी । सबसे पहले हम थाइलैंड की राजधानी बैंकाक पहुंचे । फिर वियेतनाम और अंत में प्योम-पैंह के हवाई-अड्डे पर उतरे ।

चारों ओर हरियाली का एक छत्र साम्राज्य । एक नयी दुनिया । नया देश । नया वातावरण । पर शहर में पहुंचते-पहुंचते बुरी तरह थक चुके थे । उस पर गरमी और पसीना ।

चलते-चलते चारों ओर का नजारा देखते हुए मुझे लग रहा था कि न तो कंबोडिया इतना समृद्ध है, न वियेतनाम ही, जितना थाइलैंड । भाषा की भी यहां किसी सीमा तक समस्या लग रही थी । अंगरेजी जाननेवाले भी गिने-चुने लोग ।

भारतीयों ने दिया नया प्रकाश

'हम तो जन-जातियों की तरह थे । वह भारतीय ही थे, जिन्होंने हमें संस्कृति एवं संस्कार का नया प्रकाश दिया था ।' कंबोडिया के राजकुमार नरोत्तम सिंहानुक ने एक बार कहा था । भारत और कंबोडिया के सांस्कृतिक संबंध सदियों पुराने हैं । इतने अटूट कि आज भी भारतीय प्राचीन संस्कृति की स्पष्ट छाप वहां के जन-जीवन में दीखती है । जहां-जहां हम गये, हमें इसका गहरा अहसास होता रहा । किसी भी कंबोडियन से मिलने पर, वह अपने दोनों हाथ जोड़कर किंचित सिर झुकाकर आदर के साथ नमस्कार करता है । बहुत से लोगों के नाम,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानों के नाम, वस्तुओं के नाम विशुद्ध भारतीय हैं । प्योम पैंह के एक होटल का नाम 'सुखालय' है । महिलाएं अपने पारंपरिक परिधान में रहती हैं । भारतीय महिलाओं की तरह उन्हें भी आभूषणों के प्रति विशेष लगाव है । वे लोग भी हम भारतीयों की तरह धर्म भीरू हैं । अपनी परंपराओं के प्रति उनका भी गहरा अनुराग है ।

'अप्सराओं का देश'

'अप्सराओं का देश' भी कहा जाता है कंबोडिया । यहां की भूमि उपजाऊ है । आबादी लगभग पचास लाख और क्षेत्रफल एक लाख बारह हजार वर्ग किलोमीटर ।

'मां गंगा' कहते हैं वे लोग पवित्र नदी मीकांग को । गंगा की तरह कंबोडिया की 'मां गंगा' भी पूजी जाती हैं । कंबोडिया के

अंकोर वाट : उच्चकोटि का

अंकोर वाट मंदिरों के पुनरुद्धार में भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की महत्त्वपूर्ण भूमिका की अनेक विदेशी पुरातत्ववेत्ताओं ने प्रशंसा की है । इटली के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता प्रोफेसर मारिजियो तोसी ने अंकोर वाट की यात्रा के बाद पुनरुद्धार-कार्य में जुड़े भारतीयों की प्रशंसा करते हुए कहा कि अंकोर वाट का पुनरुद्धार हर दृष्टि से उच्चकोटि का और अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुरूप है ।

अंकोर वाट के पुनरुद्धार पर भारत विगत सात

अंकोर वाट : पुनरुद्धार के पूर्व और पश्चात भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के योगदान का प्रमाण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन-जीवन की स्रोत है यह । इसके हरे आंचल में हजारों वर्षों से कंबोडियाई सुख और शांति से रहते आये हैं । प्रायः हर साल बाढ़ भी अपना रंग अवश्य दिखलाती रहती है, परंतु अंत में विनाश से अधिक विकास में सहायक सिद्ध होती है । भूमि और उपजाऊ हो जाती है ।

कंबोडिया की अर्थ-व्यवस्था का आधार है—कृषि । मछली पालन भी पर्याप्त मात्रा में होता है । वन-संपदा भी अतुल है । यहां के घने वनों में ऐसे वृक्षों की भरमार है जैसे हमारे उत्तर भारत में नहीं दीखते । यहां के मीठे आम और सुगंधित लीचियों के लिए विश्व-बाजार के द्वार हमेशा खुले रहते हैं ।

महिलाओं के हाथ में व्यापार

भारतीय संस्कृति का वहां के जन-जीवन पर व्यापक प्रभाव रहा है । किंतु भारतीय संस्कृति

पुनरुद्धार कार्य

वर्षों में तीस लाख डॉलर व्यय कर चुका है । अंकोर वाट मंदिरों के पुनरुद्धार के दूसरे चरण में अब फ्रांस भारत की भूमिका पर अड़ंगे लगा रहा है । इसमें जापान भी उसका साथ दे रहा है । कंबोडिया के ऐतिहासिक स्मारकों की सुरक्षा के उपायों पर विचार करने के लिए टोक्यो में एक सम्मेलन हुआ था । इसमें भारत की आलोचना करते हुए फ्रांस तथा जापान ने दूसरे चरण के लिए एक-एक करोड़ डॉलर देने की तत्परता दर्शायी । लेकिन सम्मेलन में स्वीकृत एक प्रस्ताव में अंकोर वाट के पुनरुद्धार-कार्य में भारतीय भूमिका एवं सहायता की सराहना की गयी ।

जानकार लोगों के अनुसार फ्रांस और जापान द्वारा भारत के योगदान की आलोचना का पुरातत्व से कम राजनीति से अधिक संबंध है । भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग अफगानिस्तान में बमियाक की गुफाओं का सफलतापूर्वक पुनरुद्धार कर चुका है । यूनेस्को ने भी उसे इंडोनेशिया के मध्ययुगीन बोरोबुदूर मंदिरों के पुनरुद्धार के लिए निमंत्रित किया है ।

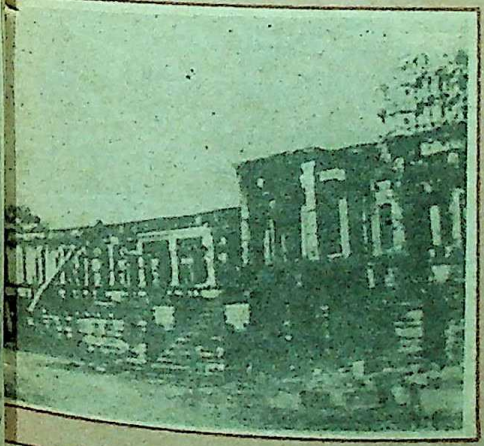

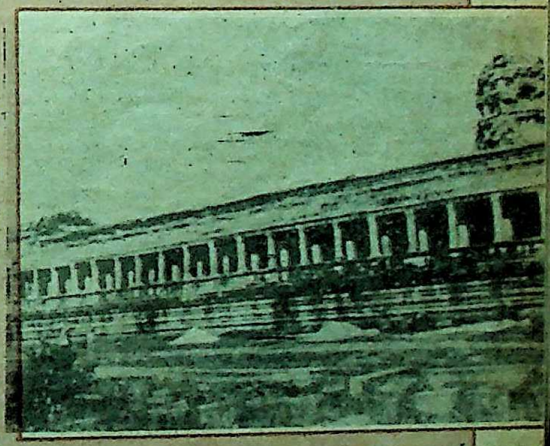

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन मंदिरों के अधिकांश भाग खंडहरों में परिवर्तित हो चुके हैं। भला हो हमारी भारत सरकार का, जिसने यूनेस्को से मिलकर इनके जीर्णोद्धार का बीड़ा उठाया है। बौद्ध मठों में भिक्षु पूजा-अर्चना में लीन दीखते हैं दीप जल रहे हैं। किंतु मंदिर वाले भाग में उगी हुई घास और पंख फड़फड़ाते पक्षी। अंकोर वाट को देखने के लिए सचमुच एक संपूर्ण जीवन चाहिए।

अंकोरवाट के मुख्य मंदिर के पथ पर दो बौद्ध भिक्षु

का मात्र उन्होंने स्वीकार किया, जो उनके लिए उपयुक्त था। जाति प्रथा हिंदू धर्म का मूल आधार रहा, किंतु उसे इन्होंने नहीं अपनाया। महिलाओं को समाज में ऐसी प्रतिष्ठा का स्थान दिया, जैसा भारत में भी कभी नहीं रहा। समाज के विकास में सदियों से उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। संपूर्ण दक्षिण-पूर्व एशिया में महिलाओं की गरिमामयी इस छवि को देखा जा सकता है। कंबोडिया में लगभग सारा व्यापार महिलाओं के हाथ में है। पुरुष युद्ध में जाते हैं या अन्य कार्य करते हैं। खेतों में हल जोतते या धान रोपते दिखलायी देते हैं। महिलाएं जब एक-एक या दो-दो बच्चों को मोटर साइकिल में लादकर फर्राटे से निकल जाती हैं, तो वह दृश्य बड़ा ही आल्हादकारी लगता है।

साइन रीप—मंदिरों का शहर

कंबोडिया पहुंचने के पश्चात सबसे पहले हमने योजना बनायी पांच मंदिरों का शहर 'साइन रीप' देखने की। एक छोटा-सा विमान था, जिसे रूसी चालक चला रहा था। कुछ ही समय की यात्रा के पश्चात हम साइन रीप के हवाई अड्डे पर थे। मंदिर ही मंदिर हैं यहां। अंकोर थाम, पनाम कुलर कोहकर, साम्बोर, काक, प्रर्या, प्रचाह हान, बेतेय श्री आदि। ये सारे मंदिर अंकोर वाट के ही हिस्से हैं। 'अंकोर' संस्कृत शब्द है। 'वाट' का अर्थ है मंदिर।

प्राचीन कंबोडिया के अनेक शासकों में तीन प्रमुख थे— यशो वर्मन प्रथम (सन ८८०-९००), सूर्य वर्मन द्वितीय (सन १११३-११५०) और जय वर्मन (सन ११८१-१२१९)। इन्होंने स्थायी रूप से शासन किया था। ये तीनों शिव, विष्णु तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्ध के उपासक थे। इन्होंने अपने-अपने ढंग से इन विशाल भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया था। किंतु कालांतर में समय ने करवट ली। सन १४३१ में थाई लोगों ने आक्रमण किया और खमेर शासकों को बलपूर्वक शासन त्यागने के लिए विवश किया।

सदियों तक उपेक्षित

उसके पश्चात ये मंदिर सदियों तक उपेक्षित रहे। घने वन यहां घिर आये और धीरे-धीरे सब खंडहर के रूप में परिवर्तित होने लगे। दुनिया के लोग पूरी तरह भूल गये, इन मंदिरों के अस्तित्व को। ये अतीत के गर्त में कहीं खो गये। सन १८६० में फ्रांस का विख्यात वनस्पति शास्त्री हेनरी माउट अपने अनुसंधान के सिलसिले में इस क्षेत्र में आया। वन में घने वृक्षों के बीच सूखे पत्तों से घिरा, भूरे पत्थरों का ढेर दिखलायी दिया उसे। यह मंदिर का 'गोपुरम' था शायद।

उसके आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने विशाल पत्थरों पर उत्कीर्ण की गयी विश्व की विशालतम जीवंत प्रतिमाएं देखीं। सच का नहीं उसे सपने का-सा अहसास हुआ। कालांतर में आधुनिक विश्व को पहली बार उसने इन मंदिरों के अस्तित्व का परिचय दिया। सन १८७८ में फ्रांस की सुप्रख्यात संस्था 'दी-ऐकत्रीओने-ओरियंत' ने इनके जीर्णोद्धार की दिशा में सक्रिय भूमिका निभायी। १९०७ में शासन एवं कई संस्थानों के सहयोग से इनकी सुरक्षा की व्यवस्था के लिए अंकोर-थान में एक कार्यालय स्थापित किया गया। बाद में इसी ने जीर्णोद्धार एवं स्मारकों की देख-भाल का कार्य भी संभाला।

ये मंदिर सदियों तक उपेक्षित रहे। घने वन यहां घिर आये और धीरे-धीरे सब खंडहर के रूप में परिवर्तित होने लगे। दुनिया के लोग पूरी तरह भूल गये, इन मंदिरों के अस्तित्व को। ये अतीत के गर्त में कहीं खो गये।

सबसे पहला कार्य यहां किया गया इन मंदिरों में उगे वृक्षों की सफाई का। फिर गिरती दीवारों का संरक्षण। जैसे-तैसे ये जीवित रहें—इसका भगीरथ प्रयास। भारत सरकार ने सन १९८० में इस समस्या के विषय में गंभीरता से सोचा। तीन सदस्यों का एक दल इनके संरक्षण के संबंध में अध्ययन करने के लिए 'अंकोर वाट' भेजा। बाद में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की ओर से नौ सदस्य विस्तृत अध्ययन के लिए भेजे गये। यह कार्य जून १९८२ में पूरा हुआ। यूनेस्को ने भी इसमें सक्रिय सहयोग दिया।

मंदिरों में आज भी जगह-जगह मरम्मत का काम चल रहा है। भारतीय कुशल कारीगर कंबोडियाई श्रमिकों के साथ मंदिरों में जीर्णोद्धार में व्यस्त हैं, तन्मयता के साथ। उनसे हम बात करते हैं तो पता चलता है कि खमेर भाषा के बोल-चाल के कुछ शब्द भी उन्होंने सीख लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं । शेष कार्य इशारों की भाषा से चल रहा है ।

मंदिरों की निर्माण-विधि

राजा सूर्य वर्मन द्वितीय ने मेरु-पर्वत के सिद्धांत के आधार पर इनका निर्माण करवाया था । पहले कभी इस भूमि को समतल करने के लिए ढेर सारी चिकनी मिट्टी यहां बिछायी गयी थी । चारों ओर से गलियारों एवं क्रॉस के आकार के आंगनों एवं पांच विशाल गोपुरमों से ऊपर उठा हुआ यह ऐसा प्रतीत होता है, जैसे किसी दानवाकार पर्वत की चोटियां हों । वास्तव में मंदिरों के पांच केंद्रीय गोपुरम मेरु पर्वत के पांच शिखरों के प्रतिमान हैं ।

दूसरी ओर खंडहरों के चारों ओर विस्तृत खाइयां हैं । बिल्कुल सही, संतुलित अनुपात में ऊपर उठी हुई, समतल छतें बनायी गयी हैं । मंदिरों का निर्माण इस वैज्ञानिक कुशलता के साथ किया है कि भीतरी भागों में भी प्रकाश पहुंच सकें । दीवारों पर, द्वारों पर, छतों पर इतना सुंदर चित्रांकन किया गया है कि लगता है कहीं सब सजीव तो नहीं । दर्शक क्षण भर के लिए विस्मित-सा खड़ा देखता रह जाता है ।

हर कोने में एक कहानी

हमारे सामने अब देवताओं और अप्सराओं की दिव्य प्रतिमाएं एकल एवं युगल रूपों में, खंभों पर उत्कीर्ण बोलती-सी नजर आ रही हैं । मंदिर का हर कोना, स्वयं में एक कहानी लिए हुए है । बहुत-सी दीवारों पर रामायण एवं महाभारत की कालजयी कहानियां अंकित हैं । राजा सूर्य वर्मन ने अपने जीवन से संबंधित घटनाओं को भी साकार किया है । हम घूमते-घूमते दक्षिण-पूर्वी गलियारे की ओर बढ़ते हैं । समुद्र-मंथन के दृश्य जीवंत होकर उभर रहे हैं । असुर और सुर अपनी-अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए, अनेक फन वाले नागों के ऊपर बैठे हैं ।

समुद्र के गर्भ से अमृत बाहर निकल रहा है । ऐसा लोमहर्षक दृश्य कहीं अन्यत्र नहीं देखा है हमने । राजा सूर्य वर्मन के पत्थर पर उत्कीर्ण दो चित्र अद्‌भुत हैं । एक में वे स्वयं राज सिंहासन पर विराजमान हैं । दूसरे में अपने सिंह-सेनापतियों के साथ राजसी जुलूस में हैं । अब हम मुख्य मंदिर में प्रवेश करते हैं । क्रॉस के आकार का है यह । प्रत्येक भुजा पर, हर ओर लंबा गलियारा । पहले यहां पर भगवान विष्णु की प्रतिमा थी परंतु अब तथागत की है । बाद में यहां पर हजारों बुद्ध मूर्तियां स्थापित की गयीं । यह तरह कालांतर में एक मंदिर मठ के रूप में परिवर्तित हो गया ।

इन मंदिरों के अधिकांश भाग खंडहरों में परिवर्तित हो चुके हैं । भला हो हमारी भारत सरकार का, जिसने यूनेस्को से मिलकर इनके जीर्णोद्धार का बीड़ा उठाया है । बौद्ध मठों में भिक्षु पूजा-अर्चना में लीन दीखते हैं दीप जल रहे हैं । किंतु मंदिरों वाले भाग में उगी हुई घास और पंख फड़फड़ाते पक्षी । अंकोर वाट को देखने के लिए सचमुच एक संपूर्ण जीवन चाहिए । जल्दी-जल्दी सब देखकर हम लौटने लगते हैं । चलते-चलते पीछे मुड़कर देखते हैं तो अहसास होता है—शताब्दियों से शांत अंकोर वाट शताब्दियों तक इसी तरह भविष्य में भी खमेर-वैभव और प्राचीन भारतीय संस्कृति का विजय ध्वज फहराता रहेगा ।

—सी-४३ विदेश मंत्रालय आवास,
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीड़े भी खाये जाते हैं

● डॉ. वि. शंकर

पृथ्वी पर मनुष्य की बढ़ती हुई जनसंख्या की भोजन की पूर्ति के लिए कीड़ों का योगदान प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यद्यपि कीड़े छोटे आकार के होते हैं, फिर भी अपनी विशाल संख्या के कारण ये पृथ्वी के थल भागों के अन्य सब जंतु पदार्थों से भार में, संभवतः अधिक हैं। हमारे सामान्य थल पक्षियों के भोजन का औसतन २/३ भाग कीड़े ही हैं। एक अनुसंधान से, जिसमें इलीनोय के सब प्रकार के पानी में रहनेवाली १२०० से अधिक मछलियों का परीक्षण किया गया, यह पता लगा कि अलवण जल की प्रौढ़ मछलियों के भोजन का २/५ भाग कीड़े ही हैं। मछलियों के लिए भोजन के रूप में महत्त्वपूर्ण कीड़े निम्नलिखित हैं (अ) छोटे आकार के सुतमा मिज लार्वी जिन्हें रक्त कृमि कहते हैं। (ब) मई मक्खी के निम्फ, (स) डिंब कीट।

संसार के विभिन्न भागों में कीड़े मानव द्वारा भी नियमित रूप से खाये जाते हैं। कम सभ्य जातियों में कीड़ों को प्रधान विलास वस्तुओं में गिना जाता है। मैक्सिको में कतिपय बड़े जलीय-बग के अंडों की नहर के बाजार-हाट में नियमित बिक्री होती है। इन अंडों का आकार प्रायः पक्षी मारनेवाले छर्रे के बराबर होता है। अंडों को एकत्र करने के लिए पानी में चटाई के पत्तर बिछा दिये जाते हैं जिन पर जलीय-बग दसियों लक्ष की संख्या में अंडे देते हैं। तत्पश्चात इन अंडों को सुखाकर थैलों में भर लेते हैं। बाजार में इन्हें पौंड के हिसाब से बेचा जाता है। ये अंडे केक बनाने में प्रयोग होते हैं। जमैका निवासी अपने सबसे अधिक विशिष्ट अतिथि के लिए भोजन में झींगरों का थाल परोसना विशेष आदर की बात समझते हैं।

भारतीय और अनेक देशों के अर्ध-सभ्य देशज चींटियों तथा टिड्डों के अलावा मधुमक्खियों, माथो, क्रेन मक्खियों के लारवा तथा प्यूपा को और काष्ठ वेधक गुबेरेलों को पकड़कर उनको कच्चा सुखाकर या भूनकर खाते हैं। स्केल-कीटों और एफिड्स द्वारा उत्सर्जित शर्करायुक्त मधुरस का टर्की, ईरान और इराक के किसानों द्वारा मिठास के लिए प्रयोग किया जाता है। एक अनुमान के अनुसार इराक में प्रतिवर्ष लगभग ७०,००० पौंड मधु रस एकत्र तथा विक्रय किया जाता है। आस्ट्रेलिया के देशज एग्रॉटिस इनपयूजा नामक कीटों को थैलों में इकट्ठा कर के कोयलों की आंच पर भूनते हैं और दावा करते हैं कि इनका स्वाद गिरीदार फलों की भांति होता है।

— एच-१५-ए,एच आई जी फ्लैट्स, शिवलोक कॉलोनी हरिद्वार-२४९४०३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

सरस्वती माई

● दिव्या

"बेटी, मेरी बड़ी अभिलाषा है कि एक गाय मैं तुम्हें दूं ताकि महानगर में रहकर भी तुम दोनों तथा तुम्हारे दोनों बच्चे हमारे-जैसा दूध पीने का आनंद उठायें, पर मैं जानता हूं, तुम पत्र पढ़कर हंसोगी कि पिताजी आप भी क्या सोच रहे हैं— आपको तो अच्छी तरह मालूम है कि महानगर की पोश कॉलोनी में गाय या भैंस जैसा दुधारू पशु रख ही नहीं सकते । न हम इन पोश कॉलोनी का साथ छोड़कर किसी पास के छोटे गांव में जाकर रह सकते हैं, न दूध पीने का भरपूर आनंद उठा सकते हैं ।" एक जरसी गाय छोटी बहन गीता को दे दी तथा एक जरसी गाय बड़े बेटे की दस वर्षीया बेटी नीना को बाकायदा पंडित बुलाकर मंत्र पढ़वाकर दान के रूप में दे दी । कितना स्नेह है पिताजी को गोधन से । पत्र पढ़कर श्रुति न जाने बचपन की किन यादों में खो गयी ।

जगनीशदास सरकारी पद पर उच्चाधिकारी रह चुके हैं । अब रिटायरमेंट के बाद एक छोटे-से गांव में बहुत शांति से रह रहे थे । जितने साल अपनी सर्विस में रहे, सुबह सबसे पहले उठकर वे कोठी के उस भाग में जाते थे, जहां पर उनकी माई सरस्वती रहती थी— हां, वे अपनी गाय को माई ही कहते थे । उसके माथे से अपना माथा लगाना, उसकी पूंछ अपने सिर पर लगानी तथा उसका चारापानी सब

उनकी पत्नी दुर्गा भी अपने पति से पीछे नहीं थीं । सुबह-सुबह बाल्टी उठाकर वे पति के पीछे-पीछे आ पहुंचती थी दूध दोहने के लिए । वे रोज अपने पति से शिकायत करती, "किसकी ?" 'माई की' । "देखिए आप मेरी बात की तरफ ध्यान नहीं देते— माई रोज ही अपना दूध खुद ही पीती है मुझे वहम-सा होता है । कई लोग कहते हैं, जो गाय खुद अपना दूध पी जाती है । वह शुभ नहीं होती," सुनते ही जगनीशदास खिलखिलाकर हंसते हुए कहते, "जो लोग तुमसे ऐसा कहते हैं उन्हें भी एक-एक सेर दूध रोज मुफ़्त में पिला दिया करो । फिर वे नहीं कहेंगे कि हमारी माई अशुभ है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने हाथ से देखना । सरस्वती भी अपनी बड़ी-बड़ी काली स्नेहमयी आंखों से जगनीशदास को दूर से देखकर प्यार से रंभाती थी । घर का काम-काज करने के लिए चार सरकारी नौकर भी मिले हुए थे, लेकिन जो काम जगनीशदास ने खुद करना ही आत्मसंतोष समझा उसे वे ठीक समय पर करते थे ।

उनकी पत्नी दुर्गा भी अपने पति से पीछे नहीं थीं । सुबह-सुबह बाल्टी उठाकर वे पति के पीछे-पीछे आ पहुंचती थी दूध दोहने के लिए । वे रोज अपने पति से शिकायत करती ।

किसकी ? माई की । "देखिए आप मेरी बात की तरफ ध्यान नहीं देते— माई रोज ही अपना दूध खुद भी पीती है मुझे वहम-सा होता है । कई लोग कहते हैं, जो गाय खुद अपना दूध पी जाती है । वह शुभ नहीं होती," सुनते ही जगनीशदास खिलखिलाकर हंसते हुए कहते, "जो लोग तुमसे ऐसा कहते हैं उन्हें भी एक-एक सेर दूध रोज मुफ़्त में पिला दिया करो । फिर वे नहीं कहेंगे कि हमारी माई अशुभ है ।"

—"हां-हां आप तो बड़े दानी ठहरे, आपको क्या," कहकर दुर्गा बाल्टी भरकर दूध निकालकर रसोईघर की तरफ चल देतीं ।

दुर्गा के जाने के बाद जगनीशदास माई की गरदन से लिपटकर शिकायत करने लगते, "देखा माई, मुझे तुम्हारी शिकायत सुनना बिलकुल पसंद नहीं" । सरस्वती भी आंखें नीची कर लेती कि सचमुच दुर्गा ठीक ही कहती हैं ।

यह एक ऐब ही था सरस्वती में । जगनीशदास अनदेखा कर देते थे, क्योंकि उनकी माई उनके घर में दूध की नदिया का काम कर रही थी । कभी-कभी वे उसे प्यार से कामधेनु भी पुकारते थे । जब घर में दुर्गा खीर, पुए, दही-बड़े, रबड़ी तथा मावा बनाकर शुद्ध

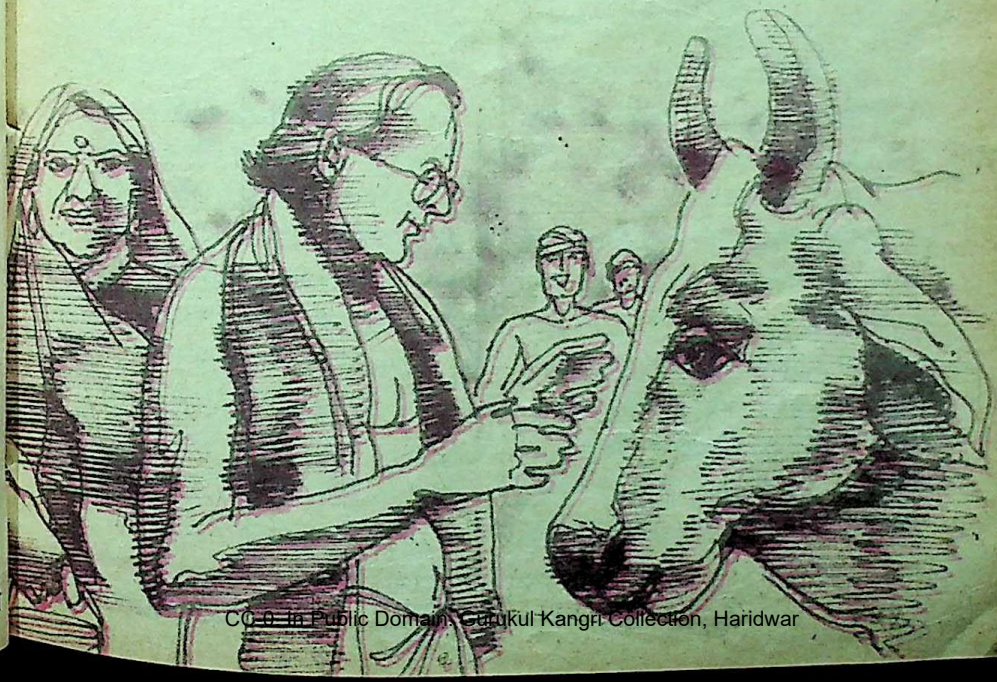

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घी की पिन्नी भी बनाकर सबको खिलाती थी। घी-मक्खन-दही की कभी कमी नहीं थी। घर में आनेवाले प्रत्येक मेहमान को गिलासभर दूध दिया जाता था। पत्नी की बात को ध्यान में रखते हुए वे बाजार से रस्सी की बनी हुई छीकली खरीदकर लाये— जो माई के मुंह पर पहनाकर ऊपर सींगों से बांध दी गयी। ऐसा सुझाव उनके आफिस में ही कार्यरत एक कर्मचारी ने दिया था जो गांव में बकरी तथा गाय की देखभाल में माहिर था।

छीकली तो माई के मुंह पर पहना दी गयी पर समय-समय पर उसे खोलकर पानी पिलाना तथा चारा खिलाना तो एक समस्या-सी बन गयी। सबसे ज्यादा तकलीफ तो जगनीशदास को होने लगी यह सब देखकर कि माई की खाने-पीने की स्वतंत्रता पर अंकुश लग गया— उन्होंने रस्सी की इस छीकली को उतारकर फेंक दिया।

फिर वही क्रम शुरू हो गया सरस्वती का। चाहे वह दिन में तीन बार दूध देती थी पर फिर भी इस बीच यदि उसे दूध का उफान-सा महसूस होता था तो बस चार-छह घूंट दूध खुद भी पी जाती थी। स्वभाव से इतनी सीधी थी कि वह छोटे बच्चों के सामने तो सिर नीचा करके उनके हाथों से अपने सिर को सहलाना तथा बच्चे भी उससे शिकायत करते कि माई अपना दूध खुद क्यों पीती हो; अम्मा परेशान होती है। बच्चे उसकी गरदन से प्यार से लिपट जाते थे। नन्हा श्याम तो उल्टा अम्मा से शिकायत करता, "अम्मा तुम तो फालतू ही माई को टोकती हो। क्या हुआ जो वह खुद भी थोला-सा दूध पी जाती है— मैंने देखा है हमारा पतीला लबालब भरा होता है।" उसकी बात सुनकर सब खिलखिलाकर हंस देते।

दुर्गा तो अब कई बार अपने पति जगनीशदास से माई को बेच देने की कहती थी। पत्नी का यह प्रस्ताव सुनकर वे विचलित होने लगते थे— उन्हें तो माई से बेहद लगाव हो गया था। कई साल से अपने हाथों से उसकी सेवा करते आ रहे थे— "पता नहीं, कोई दूसरा सेवा करेगा उनकी तरह या नहीं। लोग तो गाय का दूध निकालकर दिनभर बाहर डंडे खाने के लिए छोड़ देते हैं उसे। वह खुद ही अपने बछड़े की ममता से बंधी शाम को फिर खूंटे से आ लगती है तथा जब गाय दूध देना बंद कर देती है तो उसकी तरफ किसी का ध्यान ही नहीं जाता कि उसे चारा-पानी मिला भी कि नहीं।

इसी सोच में एक दिन उन्होंने अपने एक कर्मचारी से कोई अच्छा-सा ग्राहक ढूंढ़कर लाने को कहा। ऐसा ग्राहक जिसे सचमुच गाय की सेवा करने का सच्चा शौक हो।

आखिर वह दिन भी आ गया था जब माई को घर से विदा कराने वाले दो आदमी जगनीशदास के बंगले पर आ पहुंचे— उन्हें माई के भरपूर गुणों के साथ जो एक अवगुण था, वह भी बता दिया गया था। उन्हें उसका रोज का २० सेर दूध देना वह भी चाहे तीन बार निकाले चाहे चार बार, बेहद लुभा गया था। वे किसी भी तरह उसे खरीद लेना चाहते थे। जगनीशदास स्वयं उन दोनों को माई के कमरे में लेकर गये।

अजनबी पुरुषों को अपने सामने पाकर माई जोर से रंभायी फिर जगनीशदास की तरफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाचार नजरों से देखने लगी । उसकी नजरों से साफ झलक रहा था कि वह सब जान गयी है कि उसे अब इस घर से भेजा जा रहा है । वह मानो वहां पर हो रही बातचीत को भलीभांति समझ रही थी । पहले माई को गुड़ खिलाया गया, मानो जगनीशदास उसे शुभ-शुभ विदा करने जा रहे थे । माई ने गुड़ थोड़ा-सा चाटकर छोड़ दिया, नहीं खाया । जगनीश समझ रहे थे कि माई बेहद उदास है, वे कर भी क्या सकते थे, लाचार थे । लोगों ने उनकी पत्नी के मन में वहम भर दिया था कि ऐसी गाय जो अपना दूध खुद पी जाती है, अशुभ होती है ।

भारी मन से खूंटे से रस्सी खोलकर जब वे उस ग्राहक के हाथ में देने लगे तो माई ने जोर से सिर झटक दिया । जिससे रस्सी उनके हाथों से छूट गयी । जगनीश थोड़ा चने का आटा तथा गुड़ लेने बंगले की तरफ गये । दोनों ग्राहक भी बात कर रहे थे कि जरा मुश्किल से ही जाएगी यह गाय । उन्हें क्या पता था कि वह ऐसी-वैसी गाय नहीं है जो जहां हांक दी, वहीं चली जाएगी ।

बंगले से श्रुति, उसके तीनों छोटे भाई भी पिता के साथ-साथ माई को देखने आ गये । बच्चों को देखकर तो मानो माई ने मन में ठान लिया कि वह बंगले से बाहर एक भी कदम नहीं बढ़ाएगी । श्रुति ने प्यार से माई को आगे बढ़कर पुचकारा— माई ने भी उसका हाथ अपनी जिह्वा से चाट लिया । श्रुति का सारा शरीर सिहर उठा । वह भी उसे जाने नहीं देना चाहती थी । उसने धीरे से माई का कान चूमकर कहा, "माई मत जाना" शायद माई का इरादा अब और दृढ़ हो चुका था ।

जगनीश रस्सी पकड़कर कमरे से बाहर उसे ले जाने लगे । कमरे से बाहर तो माई आ गयी । ग्राहक के हाथ में रस्सी थमाते हुए जगनीश बोले, "ले जाइए आप लोग, ठीक से रखना हमारी माई को ।" माई ने एक झटके से रस्सी छुड़ा ली, दूसरे आदमी ने आगे बढ़कर एक धप्प दिया माई की पीठ पर— फिर तो माई ने जो रूप दिखाया था, उसे आज भी याद करके श्रुति का सारा शरीर कांप उठा आंखें नम हो आयीं ।

आगे बढ़कर अब माई को शांत करने की

बारी जगनीशदास की थी । पर यह क्या जैसे ही उन्होंने उसकी रस्सी कसकर पकड़ी, माई तो विकराल रूप से पूंछ ऊपर उठाकर लगी थी भागने । भागते-भागते उसने दोनों ग्राहकों को अपने बड़े-बड़े सींगों पर उठाकर जमीन पर पटक दिया । उनको बचाने के ध्यान से जगनीश रस्सी नहीं छोड़ना चाहते थे । शरीर से बेहद मजबूत ऊंचे, लंबे, लाल रंग था उनका सेब-जैसा । बड़ी मजबूती से रस्सी खींचकर उन्होंने माई को दूर खींचा । अब माई ने रस्सी छुड़ाकर सारे बंगले के बगीचों में कूदना शुरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया— श्रुति तो चीख उठी थी कि 'हम माई को नहीं जाने देंगे । इन ग्राहकों से कहिए ये अपनी जान की खैर मनाकर चले जाएं ।' तीनों छोटे भाई तालियां पीट रहे थे— 'देखो-देखो माई क्या रेस लगा रही है ।' माई विकराल रूप धारण कर फुंफकारती हुई भागी जा रही थी । पीछे-पीछे जगनीश भाग रहे थे— बंगले के चारों ओर लोग जमा होने लगे । आखिर जगनीश ने लपककर फिर से माई की रस्सी कसकर पकड़ ली, लेकिन यह क्या— माई एक झटके से जगनीश को गिराकर खींचती हुई ले गयी । जगनीशदास ने रस्सी को हाथ से छोड़ा ही नहीं तथा थोड़ी दूर तक घिसटते गये । यह देखकर बंगले के बाहर खड़े लोगों में से एक जवान लड़का उनकी तरफ भागा आया । माई अपनी रस्सी छुड़ाने का प्रयास कर रही थी ।

जगनीश छोड़ नहीं रहे थे । उनके पेट, पीठ पर वह बराबर सींग मारती जा रही थी ।

यह सब देखकर चारों बच्चे चीखें मार-मारकर रो रहे थे । दुर्गा चिल्ला रही थी— 'कोई बचाओ, कोई बचाओ ।' सब लोग हैरान थे कि क्या करें । उस जवान लड़के ने बड़े प्रयत्न से माई की गरदन से रस्सी निकाल दी तथा जगनीश को उठने में सहारा देने लगा । बच्चे व दुर्गा भी भागकर उनके पास आ पहुंचे । चारों चपरासी भी उनके पास आ पहुंचे । एक जाकर आरामकुरसी उठा लाया तथा कुशन लगाकर उन्हें बैठने में सहारा दिया । दुर्गा ने दूसरे चपरासी को गरम दूध में हल्दी डालकर लाने को कहा । तथा डॉक्टर को बुला लाने को कहा । सब लोग अब उन्हें घेरकर वहीं घास पर बैठे थे ।

माई अब तक अपने खूंटे पर अपने आप जाकर खड़ी हो गयी थी । अपने कमरे में खड़ी होकर बार-बार धीरे-धीरे रंभाती जा रही थी । शायद अपने किये पर उसे अफसोस हो रहा था । बार-बार दरवाजे में से बाहर बैठे समूह में झांक रही थी । उसने जैसे ही जगनीश को आरामकुरसी पर सिर टिकाकर लेटे हुए देखा । वह धीरे-धीरे कमरे से निकल उनकी तरफ बढ़ने लगी । उसे आते देखकर लोग उठकर थोड़ा परे सरक गये । श्रुति और तीनों भाई पिता की हालत देखकर रो रहे थे । श्रुति पिता के पास सरक आयी, कहने लगी, "पिताजी, देखो माई आ रही है ।" जगनीश अपनी सारी चोटें भूल गये । माई को पास में गरदन नीची किये खड़े देखकर वे कुरसी से उठकर उसकी गरदन से लिपट गये तथा बच्चों के समान सिसक-सिसककर रोने लगे, "माई, अब तू कभी भी हमसे दूर नहीं जाएगी"— माई की बड़ी-बड़ी आंखों से अश्रुओं की धारा बह रही थी ।

देखनेवाले सब लोग हैरान हो रहे थे इस अभूतपूर्व मिलन को देखकर । श्रुति की आंखें आज भी वही दृश्य याद कर अविरल आंसू बहाती जा रहीं थीं— पत्र आंसुओं से भीग चुका था— पत्र में पिताजी ने उसी सरस्वती माई के परिवार की ललनाओं का जिक्र जो किया था ।

—७७, शिवालिक अपार्टमेंट
नयी दिल्ली-११००१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कॉटलैंड यार्ड नाम एक चुस्त-दुरूस्त पुलिस का पर्यायवाची बन गया है । १९वीं शती में स्थापित इस संगठन को आम जनता के न केवल विरोध, वरन घृणा का भी शिकार बनना पड़ा ।

इंगलैंड का विश्व-प्रसिद्ध स्कॉटलैंड यार्ड—

अपराधी को जल्दी कैसे पकड़ा जाए ?

● सुधीर भटनागर

विश्व-प्रसिद्ध स्कॉटलैंड यार्ड के सी.आई.डी. अर्थात क्रिमिनल इनवेस्टीगेशन डिपार्टमेंट का जन्म अब से लगभग ११५ वर्ष पूर्व सन १८७८ में हुआ । यह वह समय था जब सारे इंगलैंड और मुख्य रूप से लंदन शहर में अपराधियों का आतंक फैला हुआ था । तत्कालीन पुलिस निकम्मी साबित हो रही थी और जनता के मन में पुलिस के प्रति घृणा का भाव व्याप गया था । अंततः इन अपराधों और अपराधियों को मूल रूप से समाप्त करने के लिए स्कॉटलैंड यार्ड के अधिकारियों ने कमर कस ली । कठोर आदेश जारी कर दिया गया कि अब हर हालत में अपराधों को बढ़ने से रोकना है । लेकिन ऐसा हो नहीं सका ।

पुलिस कर्मचारी ही भ्रष्ट

उच्चाधिकारी अपने प्रशासन के भीतर ही झांककर देखने लगे, तब उन्हें पता लगा कि अपराधों की बढ़ोत्तरी के लिए स्वयं स्कॉटलैंड यार्ड ही जिम्मेदार रहा है । स्कॉटलैंड यार्ड के पूरे प्रशासन में भ्रष्टाचार व्याप्त है । स्कॉटलैंड यार्ड के इंस्पेक्टर अपराधियों से घूस लेते थे और बदले में उन अपराधियों को पकड़ने के बजाय उनकी रक्षा करते थे ? इसका रहस्य तब खुला जबकि स्कॉटलैंड यार्ड अधिकारियों ने तीन इंस्पेक्टरों की गतिविधियों पर नजर रखनी शुरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

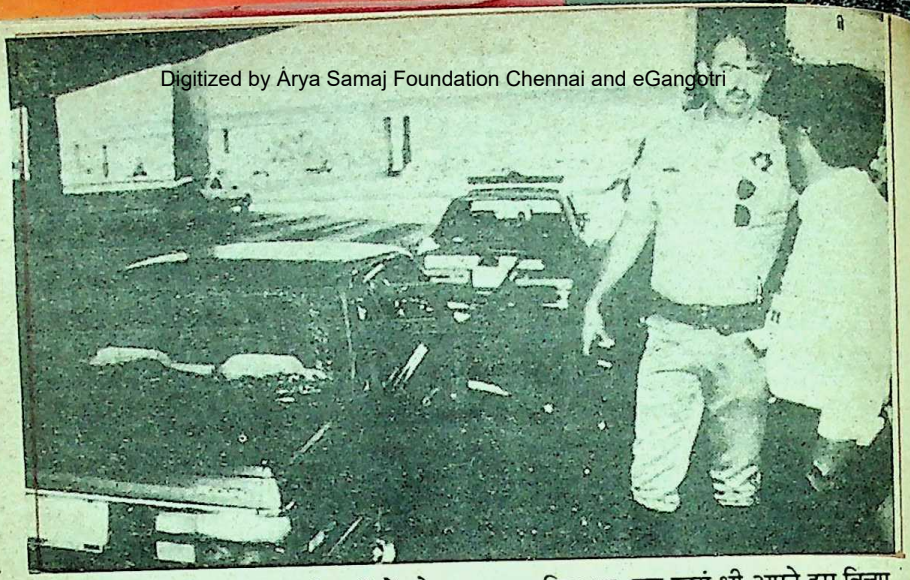

की, क्योंकि इनका व्यवहार उच्चाधिकारियों को संदिग्ध लगा था । आखिर खोजबीन के बाद यह साबित हो ही गया कि वे तीनों इंस्पेक्टर जुआघर के जुआरियों और उनके मालिकों से लगातार रिश्वत लेते रहते थे । यही नहीं, वे बड़े-बड़े अपराधियों से भी रिश्वत खाते थे ।

यह रहस्य खुलते ही समूचे स्कॉटलैंड यार्ड में तहलका-सा मच गया । यही नहीं, जब उन तीनों इंस्पेक्टरों से पूछताछ की गयी तो और भी अधिक चौंका देनेवाले तथ्य प्रकाश में आये ।और पता चला कि केवल वही तीन नहीं, बल्कि स्कॉटलैंड यार्ड के अधिकांश इंस्पेक्टर अपराधियों के साथ मिलकर उनसे अपराध करवाते थे, फिर अपने हिस्से के रूप में उनसे मोटी रकम वसूलते थे ।

जासूसों की नियुक्ति

आखिर उच्चाधिकारियों की एक समिति बनायी गयी जिसने सारी स्थितियों का अध्ययन करने के बाद यह सिफारिश की कि बड़ी संख्या में जासूसों की एक टीम नियुक्त की जाए । हालांकि उच्चाधिकारियों की जिस समिति ने यह सुझाव दिया था, वह स्वयं भी अपने इस विचार से पूर्णरूप से आश्वस्त नहीं थी कि इससे समस्या का समाधान हो ही जाएगा, फिर भी गोपनीय रूप से स्कॉटलैंड यार्ड में सी.आई.डी. की नींव रखी गयी । यह सन १८७८ था । लेकिन आम जनता ने स्कॉटलैंड यार्ड पुलिस के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया कि वह इन गुप्तचरों को स्वीकार नहीं करेगी ।

जासूसों का विरोध

आखिर क्यों ?

कारण बहुत स्पष्ट था । पुलिसवाले तो वरदी में होते थे, अतः जहां कहीं भी पुलिसवाला दिखता, लोग उसे पहचान लेते थे, लेकिन सी.आई.डी. के जासूस एकदम आम आदमी की तरह साधारण वेशभूषा में होते थे । साधारण आदमी और एक जासूस में प्रकट रूप से कोई भी अंतर नहीं प्रतीत होता था । लोगों का कहना था कि इस तरह तो ये जासूस शरीफ आदमियों की जिंदगी में भी दखल देने लगेंगे । अनेक प्रतिनिधिमंडलों ने स्कॉटलैंड यार्ड के अधिकारियों से भेंट की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराधी कौन ?

इंगलैंड में १९०५ में एक रोचक मामला सामने आया, जब एक अपराध के सिलसिले में अदालत के सामने दो भाई पेश किये गये । उन दोनों भाइयों की सूरत-शक्ल में अद्भुत साम्यता थी । यहां तक कि उनके कान-नाक आदि अंग भी एक समान ही थे । अदालत के सामने समस्या यह थी कि दोनों भाइयों में से एक ही अपराधी था, लेकिन वह कौन-सा भाई है— यह नहीं जाना जा सकता था । दोनों जुड़वां भाई थे । आखिर स्कॉटलैंड यार्ड ने अंगुलियों के निशानों द्वारा दोनों भाइयों में से एक को असली अपराधी सिद्ध कर दिखाया ।

जनता का यह असहयोगी रुख देखकर स्कॉटलैंड यार्ड के उच्चाधिकारी और भी परेशान हो उठे, लेकिन कुछ अधिकारियों ने जासूसी का यह प्रयोग छोटे पैमाने पर चलता रहने दिया ।

पत्नी का हत्यारा

इन्हीं दिनों एक व्यक्ति ने न जाने किस बात पर क्रोध में आकर अपनी पत्नी की हत्या कर डाली । इस कांड की सूचना पाकर जब तक पुलिस घटनास्थल पर पहुंची, तब तक अपराधी फरार हो चुका था । वैसे इस हत्याकांड से जनता पर कोई असर नहीं हुआ, क्योंकि इस प्रकार के अपराध होना तो एक साधारण बात बन चुकी थी । अपराधी भी कभी नहीं पकड़ा जा सका था, अतः जनता ने सोच लिया कि अपराधों की लंबी कड़ी में यह एक और छोटी-सी घटना जुड़ गयी, जिसका हल नहीं हो सकेगा, बस ।

वास्तव में ऐसा नहीं था । स्कॉटलैंड यार्ड के जासूसों ने चुपचाप बड़ी तत्परता से इस हत्याकांड से संबंधित सभी सूत्र एकत्र कर लिए थे और फरार हत्यारे को पकड़ने की कोशिश में लग चुके थे । पुलिस के ऐसे ही एक उच्चाधिकारी जो सी.आई.डी. में जासूस के रूप में कार्यरत था, की नजर एक दिन उस हत्यारे पति पर पड़ गयी ।

लेकिन अदालत में उसे हत्यारा प्रमाणित करने के लिए प्रमाणों की जरूरत थी फलतः अधिकारी अपराधी को गिरफ़्तार न कर उसके विरुद्ध प्रमाण जुटाने में जुट गया । जासूस मजदूर का भेष बनाकर उसी के साथ मजदूरी करने लगा और देखते-देखते ही उसका परम मित्र बन गया । आखिर उसे अपने उद्देश्य में सफलता मिली । एक दिन बातों ही बातों में हत्यारे ने उसे सब कुछ बता दिया कि उसने कैसे अपनी पत्नी की हत्या की और फरार हो गया । उसने बातों के दौरान यह भी बता दिया कि जिस हथियार से उसने हत्या की थी, उसे कहां छिपाया है और पुलिस अभी तक उसे खोज भी नहीं पा रही है ।

सफलता से जमी साख

गुप्तचर अधिकारी का उद्देश्य पूरा हो गया था, अतः उसने तुरंत उस हत्यारे पति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरफ़्तार कर लिया और अगले दिन सभी समाचार-पत्रों में यह खबर सुर्खियों में छापी गयी कि हत्यारा पकड़ लिया गया । हत्यारा कैसे पकड़ा गया था— इस विषय में सभी समाचार-पत्रों में अलग से पूरा एक लेख भी छपा था, जिसमें बताया गया कि किस प्रकार पुलिस का एक अधिकारी जासूस के रूप में हत्यारे के साथ कई दिनों तक मजदूरी करता हुआ एक मजदूर की भांति ही जीवन बिताता रहा और इस प्रकार उसने उक्त हत्याकांड का सारा रहस्य भेदकर अपराधी को पकड़ लिया था ।

इस प्रसंग के बाद जासूसों के प्रति जनता की धारणा एकदम बदल गयी । जिन्हें वे 'घृणित प्राणी' कहकर पुकारते थे, उन्हीं का लोगों ने स्वागत सत्कार करना शुरू कर दिया । इसके बाद तो एक के बाद एक न जाने कितने केस इसी प्रकार हल होते रहे । समाचार-पत्रों में नियमित रूप से स्कॉटलैंड यार्ड के जासूसों की कहानियां छपने लगीं । फलतः समाचार-पत्रों की प्रसार संख्या कई गुना बढ़ गयी ।

ऑपरेशन जूली

प्रारंभिक अवस्था में ही सी.आई.डी. के जासूसों ने जिन केसों को हल किया, उनमें 'ऑपरेशन जूली' नामक केस बहुत महत्त्वपूर्ण था । उन दिनों लंदन में एक ऐसा गिरोह सक्रिय था जो विश्वभर में होनेवाले नशीले पदार्थ के अवैध उत्पादन और उसकी तस्करी के लिए जिम्मेदार था । यह गिरोह सारे संसार में मादक पदार्थों की कुल अवैध बिक्री के पचास प्रतिशत का स्वयं व्यापार करता था । यह गिरोह कई वर्षों से सक्रिय था, फिर भी तब तक कानून के शिकंजों में नहीं आ पाया था । इसका रहस्योद्घाटन करना सी.आई.डी. के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी, लेकिन सी.आई.डी. को इसके लिए कोई महत्त्व नहीं दिया गया ।

स्कॉटलैंड यार्ड के अधिकारी सी.आई.डी. की उपयोगिता समझ रहे थे, पर उन्होंने ध्यान दिया कि सी.आई.डी. के जासूसों में पर्याप्त उत्साह की कमी थी । इसका कारण यह भी हो सकता था कि जासूसों को उचित पारिश्रमिक नहीं मिलता था । आखिर सी.आई.डी. कमिश्नर ने सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया, पर सरकार से उनके संबंध खराब हो गये, क्योंकि सरकार उसी वेतन पर जासूसों से काम लेना चाहती थी । सच बात तो यह थी कि सरकार स्वयं भी उस समय तक इस नवनिर्मित संस्था सी.आई.डी. से कोई अधिक आशा नहीं रखती थी । परिणामस्वरूप जासूसों के वेतन को लेकर सरकार के साथ सी.आई.डी. कमिश्नर का यह तनाव लगभग दस वर्ष तक चलता रहा ।

रहस्यमय 'जैक द् रिवर'

इन्हीं दस वर्षों में 'जैक द् रिवर' ने लगातार हत्याएं कर पूरे लंदन में तहलका मचा दिया था । 'जैक द् रिवर' कौन था, एक व्यक्ति या गिरोह, इसका पता आज तक नहीं चल पाया है ।

कालांतर में स्कॉटलैंड यार्ड के नये कमिश्नर सर एडवर्ड ब्रेडफोर्ड ने सरकार से जासूसों के लिए बेहतर वेतन और अन्य सुविधाओं की सहमति प्राप्त कर ली । इस तरह बारह वर्षों बाद सी.आई.डी. की टीम ठीक तरह से पनप पायी । जासूसों को अच्छा वेतन और अन्य सुविधाएं मिलने लगीं । वे भी उत्साह से कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने लगे। इसका एक परिणाम यह हुआ कि अपराधों की संख्या कुछ हद तक घटने लगी।

वास्तव में बीसवीं शती के प्रारंभिक वर्षों में ही स्कॉटलैंड यार्ड की सी.आई.डी. का असली रूप निखरा और इसे प्रसिद्धि मिली। उसने अनेक जटिल और रहस्यमय मामले सुलझाये।

नील क्रीम : प्रतिदिन हत्या

इन्हीं मामलों में एक मामला नील क्रीम नामक नकली डॉक्टर का था। वह वेश्याओं के प्रति आसक्त था और प्रतिदिन एक नयी वेश्या को अपने क्लीनिक में लाता था। वहां वह उस वेश्या को स्ट्राइक नाईन नामक जहर खिला देता। तड़प-तड़पकर धीरे-धीरे मौत के मुंह तक जाती वेश्याओं को देखने में उसे विशेष आनंद आता था। नील क्रीम को स्कॉटलैंड यार्ड की सी.आई.डी. ने ही पकड़ा।

एक अन्य मामले में जॉर्ज जोजेफ स्मिथ नामक एक क्रूर हत्यारा भी सी.आई.डी. के जासूसों से नहीं बच सका। वह अमीर युवतियों से विवाह रचाता था और उनसे प्यार जताकर उनकी सारी संपत्ति अपने नाम करवाने के बाद उन्हें समुद्र में डुबोकर मार डालता था। अंत में स्कॉटलैंड यार्ड के जासूसों ने ही उसे कानून के शिकंजे में जकड़ा। सन १९०० और १९०५ के बीच स्कॉटलैंड यार्ड के जासूसों को तकनीकी सहायता भी प्राप्त होने लगी। सन १९०५ में फिंगरप्रिंट (अंगुलियों की छाप) द्वारा अपराधियों को पकड़ने के तरीके को भी अपना लिया गया। प्रारंभ में इस विधि को 'डैक्टाईलोग्राफी' नाम दिया गया।

अंगुलियों की छाप

विश्वभर में अपराधियों का पता लगाने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो रही 'फिंगरप्रिंट विधि का जन्म वास्तव में भारत में हुआ। फिर इस विधि को १९०० में स्कॉटलैंड यार्ड ने अपनाया। यह विधि अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई। अतः स्कॉटलैंड यार्ड के मुख्यालय में विभिन्न अपराधियों की अंगुलियों के निशान एकत्र किये जाने लगे। इससे पूर्व स्कॉटलैंड यार्ड के जासूस अपराधियों के कान, नाक, हाथ, पांव आदि के नाप के आधार पर उनका रेकॉर्ड रखते थे, लेकिन यह विधि दोषपूर्ण थी। लेकिन दो व्यक्तियों की अंगुलियों के निशान कभी भी एक जैसे नहीं हो सकते। अतः सही अपराधी को पकड़ने के लिए यह एक अचूक विधि थी। लेकिन तत्कालीन अदालतें फिंगरप्रिंट को मान्यता नहीं देती थीं। इसके लिए सी.आई.डी. को अदालत से काफी संघर्ष करना पड़ा, और अंत में उसे सफलता मिल ही गयी।

स्कॉटलैंड यार्ड के जासूसों को १९२० के आसपास कारें भी उपलब्ध कर दी गयीं। परिणाम यह हुआ कि स्कॉटलैंड यार्ड ने अपना एक 'फ्लाईंग स्क्वाड' (उड़नदस्ता) तैयार कर लिया, जो तुरंत घटनास्थल पर पहुंच सकता था।

आज स्कॉटलैंड यार्ड की जासूसी संस्थाएं पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। यह विभाग स्कॉटलैंड यार्ड के 'सी' विभाग के नाम से जाना जाता है। इसका कार्यालय इंगलैंड में ब्राडवे वेस्ट मिंसटर पर है, जिसमें अनेक विभाग हैं।

—पो. बॉ. २८१०
३०/८, राजेन्द्र नगर, नयी दिल्ली-११००६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-व्यंग्य

अच्छी सेहत के गुर

● गोपाल चतुर्वेदी

अपना निजी अनुभव है । हर रोग की जड़ में प्रेम के कीटाणु हैं । जब भी हमारा देश-प्रेम का जज्बा जोर पकड़ता है, हम बीमार पड़ जाते हैं । हमें अपने बारे में कोई गलतफहमी नहीं है । अपन जानते हैं । मुगल बादशाह और हम में ताज और तख्त का फर्क है । उन्होंने अपने बेटे की बीमारी ओढ़ ली थी । अपन में तो अपनी बीमारी सहने की हिम्मत भी नहीं है, मुल्क तो बहुत बड़ी हस्ती है । यों भी देश से अपना रिश्ता बेटे-बाप का तो है नहीं । यह कूवत तो राष्ट्रपिता बापू की ही थी । जब भी मुल्क को आपसी नफरत का नजला-जुकाम होता, वह अनशन उपवास की दवा-दारू में जुट जाते । इस महानता के आगे अपन बेहद सामान्य हैं । कहां झाड़, कहां खर-पतवार । पर हमें इतना पता है । अपनी बीमारी देश से एकाकार होने का ही नतीजा है । काजीजी शहर के अंदेसे दुबले होते थे, हम रोगी से हमदर्दी में बीमार । यह तो ऊपरवाले की हम पर और हमारे परिवार पर कृपा है ।

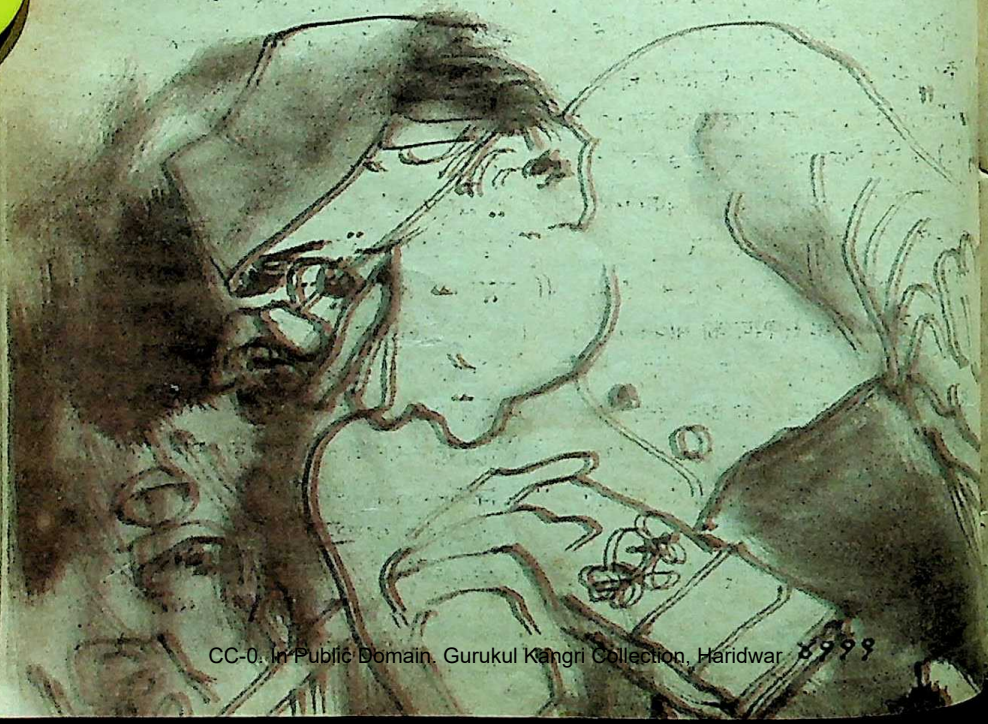

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तो यह आलम है कि मक्खियां लीडर के घर में घुसने से डरती हैं। नेता को प्रतियोगिता से नफरत है। वह मक्खियों को देखते ही हवा में हाथ हिलाता है और बंद मुट्ठी में कैद मक्खी को मसल देता है। बचे जानवर। उनकी सेहत का अंदाज तो गाय को देखने से ही लग जाता है। ऐसी दुबली-पतली मरियल गाय-भैंस कहां होगी दुनिया में। यह तो तब है जब हम उन्हें पूज्य मानते हैं। नेताओं ने देश को दुहा है और लालची लोगों ने गाय-भैंस को। अब दोनों का ही हाल खस्ता है।

हमारे मन में राष्ट्रप्रेम का ज्वारभाटा अधिकतर क्रिकेट सीजन के दौरान ही उभरता है।

ऐसा नहीं है कि हमें देश से लगाव नहीं है। हम निष्ठा और लगन से छब्बीस जनवरी और पंद्रह अगस्त को राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री का प्रेरक संदेश सुनते हैं। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते कभी-कभी चुनाव में वोट दे आते हैं। कहीं सूखा पड़े, बाढ़ आये। लू चले या शीत लहर। दुर्घटना रेल की हो या जहाज की। हादसा कैसा भी हो, हम सरकार की तरह दूसरे देशों को दोष देकर हमेशा अपना कर्त्तव्य निभाते हैं। वह दिन दूर नहीं है जब हम अपने सिर दर्द का इलजाम पड़ौसी मुल्क के सिर मढ़ दे। जाहिर है कि हम मन, वचन, कर्म से देश को समर्पित हैं। पर यह समर्पण की भावना राष्ट्रीय इतिहास के महत्त्वपूर्ण दिनों पर ही उजागर होती है। वैसे ही जैसे मां-बाप का दूसरे बच्चों के प्रति दुलार अपने लाड़ले की बर्थ-डे पार्टी पर उनके द्वारा लायी भेंटों के अनुपात के अनुसार झलकता है।

यों हमें यह सब ख्याल इसलिए आ रहे हैं कि आजकल हम फिर बीमार हैं। इस बार हमारी शानदार क्रिकेट टीम की अपेक्षित हार की जगह रोग की वजह आतंकवाद की वारदात है। बस हमारे अंतर में राष्ट्रप्रेम ने हिलोरें ली और हमें बुखार आ गया। तीन-चार दिन से हम बिस्तर पकड़े हैं। हमारी पत्नी औपचारिक तौर पर स्कूल में टीचर है और अनौपचारिक रूप से होम्योपैथी की पूरे वख्त की डॉक्टर। बच्चों से लेकर उनके मां-बाप तक उन्हीं से दवा लेते हैं। महल्ले में अपना रुतबा है। उन्हें कोई डॉक्टरनी नहीं कहता है। भूले-भटके लोग हमें 'डॉक्टर साहब' कहने लगे हैं। हम भी पत्नी की देखा-देखी गाहे-बगाहे लोगों को मीठी गोली बांटने लगे हैं।

हमें अस्वस्थ देखकर उन्होंने पूरी खोज-खबर ली। क्या पुलिसवाले ऐसे विस्तार से कत्ल के जुर्म में पकड़े गये मुजरिम से तफशीश करते होंगे। खाने-पीने में क्या पसंद है। मीठा भाता है कि नमकीन। बुखार में सरदी लगती है कि गरमी। किस रंग का कफ है। बीमारी के ठीक पहले कैंटीन में भजिया खाया था कि बरफी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमने उन्हें बीच में टोका—

'अपनी शादी के इतने साल हो गये । अब तक तुम हमारा कच्चा चिट्ठा जान गयी हो । फिर यह फालतू के सवाल पूछकर क्यों मगज चाट रही हो ।'

'इस समय मैं तुम्हारी पत्नी नहीं डॉक्टर हूं । पुरुष आदतन झूठ बोलता है । यदि तुम्हें इलाज करवाना है तो बतौर पेशेंट तुम शायद सच बोल दो', उन्होंने हम पर लांछन लगाया । हमने निश्चय किया कि उनसे उलझने की मेहनत-मशक्कत से बेहतर उनको 'हां-ना' में उत्तर देना है । यों भी अपना साबका आजतक ऐसे किसी भी पति से नहीं पड़ा है जो बहस में अपनी पत्नी से जीता हो ।

हमने घर के अमन-चैन को बरकरार रखने के लिए दो दिन पत्नी की बनायी पुड़िया फांकी । चाय, कॉफी, सिगरेट बंद की । हम बस बिस्तर पर पड़े खांसते और अपनी किस्मत को कोसते । दूसरे डॉक्टर का सोचते भी कैसे ! डॉक्टर बदलते-बदलते कहीं बीवी न बदल जाए । इस बुढ़ापे में कौन हमसे शादी करेगा । बहरहाल एक दिन हमने हिम्मत कर ही डाली । पत्नी अपनी क्लिनिक चलाने स्कूल गयी थी, हम डॉक्टर माथुर के दवाखाने चले गये । उन तक पहुंचते-पहुंचते अपनी बीमारी सिर्फ कष्टप्रद न होकर कीमती भी हो गयी । हमने तो सोचा था कि अंदर घुसते ही डॉक्टर मिलेंगे । पर वहां एक भद्दी महिला दिखी । उसने हमारा नाम, पता, उम्र आदि लिखी और सौ रुपये धरवा लिये । उसके बाद एक कुरसी पर बैठने का आदेश दिया । सौ रुपये जाने के सदमे से हमारा खांसना भी रुक-सा गया । हमें डॉक्टरी इलाज की सफलता का रहस्य समझ आने लगा । जिसे ऊपर से बुलावा आता है, उसे तो कोई रोक नहीं पाता है, पर पैसे गवाने के सदमे से बाकियों को होश आ जाता है । बीमारी वाकई रईसों की अय्याशी है ।

बहरहाल अब तो जेब कट ही चुकी थी । हम 'लुटित' मुद्रा में डॉक्टर माथुर के सामने पेश हुए उन्होंने अपने डॉक्टरी ज्ञान के सारे लटके हम पर दिखाये । ब्लड-प्रेशर लिया । नब्ज देखी । हमारा मुंह चिरवाकर गले में झांका । आला पीठ और सीने पर रखकर लंबी सांसें खिचवायीं । बस दंड-बैठक की कसर थी । वह और करवा लेते तो पूरी कसरत हो जाती ।

'आपको सिर्फ खांसी ही है कि बुखार भी है', उन्होंने जानना चाहा । अपने मन में आया कि कहें कि डॉक्टर तो आप हैं । इतनी देर से क्या भाड़ झोंक रहे थे जो यह प्रश्न कर रहे हैं । क्या हमें किसी पागल कुत्ते ने काटा है कि यों ही जेब कटाने हाजिर हो जाएंगे । पर हमें डर लगा । ज्यादा चूं-चपड़ की तो दूसरे दिन बुलाकर फिर सौ रुपये की चपत न लगा दें । हमने खांसकर बताया कि खांसी है और कराहकर जताया कि ज्वर भी है ।

'कोई घबराने की बात नहीं है । आजकल मौसम ही ऐसा है । सभी बीमार पड़ रहे हैं । मैं कुछ 'टैस्ट' लिखे देता हूं । बगल में हमारा जांच केंद्र है । वहां चले जाइए । कल शाम रिजल्ट लेकर आइएगा । दवा लिख दूंगा', उन्होंने हमें रूख्सत किया ।

हम लुटे-से गये थे और पिटे-से लौटे । ब्लड, यूरिन, स्टूल और पता नहीं परची पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या-क्या अजनबी नाम लिखे थे । एक डॉक्टर के दर्शन का टिकट सौ रुपये है । तो इतने टैस्टों का क्या होगा । हमने अपनी कम गुणा-भाग की जानकारी के बावजूद निष्कर्ष निकाला कि एक-डेढ़ हजार रुपये का चूना है । अपनी खांसी खुद-बखुद कम हो गयी । हमें पसीना-सा आने लगा । गरीब का बुखार भी समझदार होता है । खर्चे की संभावना से उतरने लगता है ।

घर के रास्ते में हमें सिर्फ एक चिंता थी । डॉक्टर को दिया 'बयाना' कैसे वसूलें । हमारी तो उसने कुंभ के नाई-सी हजामत कर दी । आधा सिर मूड़ा और क्यू में बिठा दिया । चलिये सौ रुपये गंवाये और घर के बुद्धु घर को आये । हमें ख्याल आया कि जब जेब भारी हो तभी हारी-बीमारी सताती है । वरना कोई सोचे तो हिंदुस्तान में कौन बीमार नहीं है । आबादी, प्रदूषण, गंदगी, कुपोषण, मक्खी, मच्छर, खटमल, नेता, कॉकरोच क्या नहीं है अपने देश में । वातावरण में बीमारी के सारे साधन हैं । इन सबके रहते अच्छी सेहत का भ्रम पालना अपने आप में एक असाध्य रोग है ।

आदमी तो आदमी, हमें तो कभी-कभी लगता है कि हिंदुस्तान के भुनगे, जानवर भी बीमार हैं । हमने तो ऐसे कमजोर मच्छर कहीं देखे ही नहीं हैं । बिचारे काटते हैं तो मलेरिया तक नहीं होता । कॉकरोच तक चलने-फिरने से कतराते हैं । मक्खी बैठी तो उड़ तक नहीं पाती है । सुनते हैं कि एक मूर्ख मक्खी ने एक बार किसी नेता को काटने की जुर्रत की थी । तब से पीढ़ी दर पीढ़ी मक्खियां सिर्फ भिनभिना रही हैं । न नेता भाषण के अलावा कुछ करते हैं, न मक्खियां । अब तो यह आलम है कि मक्खियां लीडर के घर में घुसने से डरती हैं । नेता को प्रतियोगिता से नफरत है । वह मक्खियों को देखते ही हवा में हाथ हिलाता है और बंद मुट्ठी में कैद मक्खी को मसल देता है । बचे जानवर । उनकी सेहत का अंदाज तो गाय को देखने से ही लग जाता है । ऐसी दुबली-पतली मरियल गाय-भैंस कहां होगी दुनिया में । यह तो तब है जब हम उन्हें पूज्य मानते हैं । नेताओं ने देश को दुहा है और लालची लोगों ने गाय-भैंस को । अब दोनों का ही हाल खस्ता है ।

इस माहौल में आम आदमी की क्या बिसात है । उसे गांधी ने दरिद्रनारायण का दरजा दिया था । आजादी के बाद नेता और अफसर नारायण बन बैठे और वह सिर्फ दरिद्र रह गया । किसे फिक्र है कि वह बीमार है या भला-चंगा । काफी है, उसकी सांस चलती रहे । आज की भूख वह कल के वादों से मिटाये । भविष्य के सपनों को ओढ़े-बिछाये । चुनावों में कच्चे माल की तरह काम आये ।

यह सब सोचते-सोचते हम घर पहुंचे तो पत्नी स्कूल से वापस आ चुकी थी. 'देखो हौम्योपैथी का कमाल । दो-तीन दिन में चलने-फिरने लगे' उन्होंने अपने इलाज के गुण गाये । हमें साहस नहीं हुआ कि उन्हें असलियत बतायें । दुनिया के छोटे-बड़ों में एक ही समानता है । घर की शांति के लिए सब झूठ बोलते हैं ।

इस छोटे-से रोग से अच्छी सेहत के कुछ बड़े गुर अपने पल्ले पड़े हैं । हिंदुस्तान में सिर्फ काम से छुट्टी लेने के लिए बीमारी उपयोगी है । यदि कोई बेकार या गरीब है तो उसे बीमार होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का हक नहीं है । अपनी सारी इच्छा-शक्ति और जन्मजात कूवत के बाद भी अगर कोई रोगग्रस्त हो ही जाए तो उसे आंखें मूंदकर डॉक्टर का ध्यान करना चाहिए । संकट के समय संकट-मोचन के स्मरण का हम सबको अभ्यास है । यदि ध्यान से काम न चले तो डॉक्टर की फीस सोचिए । बीमारी दो-तीन दिन में स्वयं हिरन हो जाएगी ।

हिंदुस्तान में न डॉक्टरों की कमी है न खैराती और सरकारी अस्पतालों की । यदि आप अपनी खैर चाहते हैं तो भूले से भी इनकी ओर रुख न करे । न सरकार के दफ़्तर से कोई अरजी बाहर आती है न उसके अस्पतालों से बीमार । अक्सर देखने में आया है कि इस तरह के अस्पतालों में लोग अपने दो पैरों से प्रवेश करते हैं और दूसरों के चार कंधों के सहारे वापस आते हैं । फिर भी इनसानों के मन में ऐसी संस्थाओं के प्रति गहरा लगाव है । वैसा ही जैसा उर्दू शायरी में परवानों का शमा के प्रति है । इस आकर्षण की जड़ में भारतीय मानस की मुफ़्तखोरी की कमजोरी है । हिंदुस्तान में ऐसे दीवानों की भरमार है जो मुफ़्त की रोटी पाने के चक्कर में जान की बाजी लगा दें । कृपया मुफ़्त की दवा से बचें, वरना दवा की जरूरत ही नहीं रहेगी ।

अगर मन बहुत ही ललचा रहा हो तो मीठी गोली का सेवन करें । जब से समाजसेवा की भावना नेताओं ने तजी है, जनता में हौम्योपैथी का शौक बढ़ा है । हर महल्ले में दो-तीन ऐसे डॉक्टर जरूर बसते हैं जो मुफ़्त में हौम्योपैथी की मीठी गोली दें । कुछ यह काम पुण्य कमाने की खातिर करते हैं, कुछ पुराने पापों के प्रायश्चित के लिए । यदि किसी की पत्नी को ऐसा शौक है तो उसका बेड़ा पार है । जब से हमारी पत्नी की डॉक्टरी चली है, उन्होंने हमसे साड़ी-जेवर की फरमाइश नहीं की है । डॉक्टर की पत्नी की मीठी गोली खाइए । तन को आराम मिले न मिले, मन को बड़ा संतोष और आनंद मिलेगा । आपकी देखभाल के स्तर में सुधार होगा । लड़ाई-झगड़े जल्दी निपटेंगे । आपकी पत्नी आपको बीमार जानकर यों ही 'वाक-ओवर' दे देगी । ज्यादातर पति अपनी सेहत में सुधार के लिए दूसरी महिलाओं का सहारा लेते हैं । आपकी पत्नी के लिए इससे बढ़कर सौभाग्य और सुअवसर क्या हो सकता है कि शादी के इतने वर्षों बाद भी आप अपने इलाज के लिए पूरी तरह से उस पर निर्भर हैं ।

जब भी आपके साथ ऐसा हादसा हो, आप कृपया पूरे अनुभव के विशद नोट अवश्य लें । आपको दवा देने के पहले, दूसरे और तीसरे दिन पत्नी की क्या प्रतिक्रिया थी । क्या उन्होंने खाने में आपकी पसंद की चीजें पकायीं । क्या बिना बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव की चर्चा किये आपको टी. वी. पर 'बोल्ड एंड ब्यूटी फुल' जैसे सीरियल देखने दिये । आपका हालचाल कितनी बार दरयाफ़्त किया । अच्छी सेहत के बारे में बुजुर्गों की नसीहत के तहत आपके सिगरेट पीने पर पाबंदी पूरी तरह से लागू की कि नहीं । आप याद रखें कि पत्नी की दवा पर भरोसा कर आप इतिहास रच रहे हैं । कहीं आप बिना किसी चेतावनी टें बोल गये तो भविष्य की पीढ़ियों के लिए सनद तो रहे कि एक ऐसा भी पति था जिसने अपनी पत्नी की डॉक्टरी पर यकीन किया और अपनी जान से खेल गया ।—डी-१/५ सत्य मार्ग, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

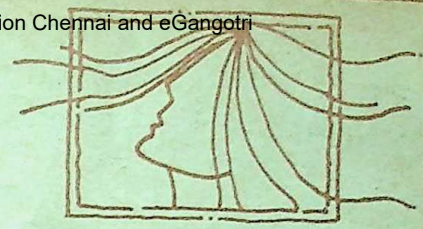

सोच

क्या
यह गलत है कि
जो मेरे प्रति
जैसा सोचता है
वैसा सोचना
जो मेरे प्रति
जैसा करता है
वैसा करना
अगर गलत है
तो सही क्या है
अपना एक आदर्श बनाना
जिसकी चक्की में पिसकर
हम लुटे
समाज टूटे
मगर हम अपनी
पाखंडी धारणा को
बरकरार रखें ।
अगर इसे यथार्थ के
धरातल पर देखा जाए
न्याय के तराजू पर
तौला जाए
तो निश्चित रूप से
यह लगेगा कि
पीसने, टूटने और लुटने
से अच्छा है
जो मेरे प्रति जैसा
करता है वैसा करे ।
जो मेरे प्रति जैसा
सोचता है वैसा सोचे ।

● **सिम्मी रानी**

शिक्षा : छात्रा (गृह विज्ञान, प्रतिष्ठा)
आत्मकथ्य : अपनी रक्षा हेतु एक हथियार है... कविता मेरे लिए ।
पता : द्वारा— श्री रत्नेश्वरी नंदन सिंह
ग्रा.+पो.— अथरी (गरगट्टा)
वाया— रूत्रीसैदपुर
जिला— सीतामढ़ी (बिहार) ८४३३११

'जिंदगी'

जिंदगी...
समय के सलीब पर लटका कैलेंडर
जिसके उतरने का
कोई नियत समय नहीं... ।
जिंदगी...
समय की बैसाखियों
पर टंगी सांसें
जो न जाने कब लड़खड़ा उठें
और चूक जाए धीरे-धीरे-धीरे ।
जिंदगी...
चित्रकार की एक मॉडर्न पेंटिंग
जिसकी रेखाओं में भरे रंग ।
कोई नहीं पहचान सका
न हम— न तुम— न कोई और... ।

● **सविता मिश्रा**

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), डॉक्टरेट
आत्मकथ्य : कविता लिखना मन के एकाकीपन को भरकर कहीं पूर्णता का अहसास अवश्य कराता है । अनायास ही जन्मी अनुभूति अभिव्यक्ति की यात्रा तय कर ही लेती है ।
पता : साहित्य विहार, बिजनौर उ.प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौन पीड़ा

घायल स्मृतियां
किसी शातिर चोर की तरह
हृदय की कच्ची दीवारों में
सेंध मार
दबे पांव
मन के आंगन तक उतर आयी
स्मृतियों के कटे घुटनों से
रिसता हुआ खून ।
मन के अहाते को
पूरी तरह तर कर गया
और तभी
बचपन के कसैले दिनों की यादों में
हृदय से कभी काला कभी सफेद-सा
धुंआ उठने लगा ।
साहूकार के सादे पन्नों पर
अंगूठा बोड़ते हुए बाबूजी का कुम्हलाया चेहरा
मिट्टी की दीवारों से लगकर बैठी
मां की आंखों की मौन पीड़ा ।
बहन की पैबंद लगी साड़ियां
और भाई की फटी कमीज,
बरसों बाद भी याद है मुझे ।

● सुरेश वर्मा

शिक्षा : बी.एससी.

आत्मकथ्य : भीतर की छटपटाहट बाहर आती है तो कविता बन जाती है ।

पता : द्वारा श्री जंग बहादुर वर्मा,
ग्राम-पोस्ट— बैलाही नीलकंठ
वाया-अथरी (जिला सीतामढ़ी, बिहार)

'प्रवेश' स्तंभ के लिए हमें प्रतिदिन काफी अधिक संख्या में रचनाएं प्राप्त होती हैं । लेकिन अधिकांश रचनाकार अपनी केवल एक रचना ही भेजते हैं । ऐसी रचनाओं पर विचार नहीं किया जाता है ।

कृपया 'प्रवेश' स्तंभ के लिए अपनी पांच रचनाएं भेजिए । साथ में आत्मकथ्य, पूरा परिचय तथा पता होना भी आवश्यक है । पांच कविताओं से कम प्राप्त होनेवाली प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

सामंजस्य

मैं एक समंदर हूं
मत डूबो मुझमें,
विलीन हो जाओगे
ढूंढ़ नहीं पाओगे मेरा तल,
डूबते-उतराते रहोगे
कभी मेरे ऊपर,
कभी मेरी गहराई में
यदि थाहना चाहते हो मुझे,
छूना चाहते हो मेरा तल,
तो मेरी ही तरह बन जाओ
मेरा पानी बनकर ।

● रामकुमार सिन्हा

शिक्षा : स्नातक (प्रतिष्ठा— इतिहास)

आत्मकथ्य : मेरी चेतना, संवेदना, मेरे भावावेग एवं जिंदगी की जद्दोजेहद में मेरे अनुभव ही मेरी कविता हैं ।

पता : एस. नाथ होमियो क्लिनिक,
कमरशाली. चैताडीह, गिरिडीह (बिहार)-८१५३०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन का सूनापन

सन्नाटा !
अब उसे डराता नहीं
अकेलेपन का अहसास कराते-कराते
वह स्वयं
शायद,
डरने लगा है अपने
भीतर की उस अनंत
नीरवता से
भयाक्रांत है वह
कि
कहीं से फिर कोई आकर
उसके आगोश में सिमटने का प्रयत्न करे
और
दे जाए उसे अपने
मन का सूनापन ।

● डॉ. बृजकिशोर शर्मा

शिक्षा : डॉक्टरेट (जीव विज्ञान)
आत्मकथ्य : महानगर दिल्ली में देखी, भोगी जीवन शैली और स्वयं के कटु अनुभवों और संघर्षों के साथ-साथ पत्नी की प्रेरणा ने कविताएं लिखने पर मजबूर कर ही दिया ।
पता : डी-१८८, जुगल भवन, कांती चंद्र रोड, बनी पार्क, जयपुर-३०२०१६

आशीष

रात के अंधेरे
और सुबह के उजाले में
तुम्हें ही ढूंढ़ती हूं
हर घड़ी
तुम्हारे स्नेह/ आशीष की छायाएं
मेरे सिर में
हाथ रखकर
हंसा/रुला देती हैं मुझे
चुपचाप ।

***

आज जबकि सभी प्रश्नों के
अनुमानित परिणाम...
मेरे सामने बैठ गये हैं
एक पराजित शासक की तरह
फिर भी एक विरोध
जीवन की मृगतृष्णाएं
फैलकर असीम हो गयी हैं
तप्त रेगिस्तान की तरह ।

● सिम्मी मधवाल

शिक्षा : एम.ए. (अध्ययनरत)
आत्मकथ्य : कविता मेरा एक प्रयास है, जीवन को अधिकतम गहराई तक जान लेने का, हृदय के संपूर्ण त्रास, भावों को एक सूत्र में बांध देती है कविता ।
पता : ९४/१६, धर्मपुर, (स्टेट बैंक ट्रेनिंग सेंटर के सामने), देहरादून

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक साक्षरता अभियान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । जिस प्रकार एक सिपाही बिना बंदूक के लड़ नहीं सकता, उसी प्रकार हम बिना अच्छी किताब के किसी व्यक्ति को साक्षर नहीं बना सकते और न संस्कार पैदा कर सकते । सरकार वयस्क निदेशालय, नेशनल बुक ट्रस्ट के माध्यम से पठन सामग्री उपलब्ध करवा रही है । निजी प्रकाशन उद्योग भी इसमें अलग से संलग्न है । महात्मा गांधी का कथन है, 'शिक्षा समाज के पुनर्निर्माण तथा चेतना के विकास में एक औजार है ।'

आज के सभ्य समाज में निरक्षरता एक अभिशाप है । इसी दृष्टि से सरकार का यह दायित्व है कि वह इस ओर ध्यान दे तथा प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी सुविधाएं प्रदान करे कि वह साक्षर बने और अधिक फलदायक जीवन व्यतीत कर सके । महान विचारक एल्डस हक्सले ने कहा है :

'प्रत्येक व्यक्ति, जो पढ़ना जानता है, उसे ऐसी शक्ति प्राप्त हो जाती है कि वह कई प्रकार से अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है और जीवन को अधिक सार्थक, उल्लेखनीय एवं आनंदमय बना लेता है ।'

प्रारंभिक शिक्षा के लिए विश्वस्तरीय संघर्ष एक शताब्दी से चला आ रहा है । तमाम औद्योगिक देशों के लोग बच्चों के लिए माध्यमिक शिक्षा का आग्रह करते हैं, जबकि तीसरी दुनिया के देशों के लिए प्रारंभिक शिक्षा आज भी दूर का सपना है । जनसंख्या वृद्धि भी एक मुख्य कारण है, जिससे साक्षरता की दर में कोई सुधार नहीं हो रहा, बल्कि समूचे विश्व में निरक्षरों की संख्या बढ़ती जा रही है । सोवियत संघ ने अपना वयस्क साक्षरता अभियान १९१९ के अंत में चलाया । सारी दुनिया में इस ओर द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद ही ध्यान दिया जाने लगा । तीसरी दुनिया के देशों के स्वाधीनता संघर्षों को इससे सफलता मिली । वियतनाम,चीन, क्यूबा और तनजानिया तथा दूसरे देशों ने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के साधनों की

बिना अच्छी किताब के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टि से इसे महत्त्व दिया ।

निरक्षर बच्चे भी हैं : वयस्क भी

साक्षरता, उत्तर-साक्षरता तथा जीवनपर्यंत शिक्षा के योजनाकर्त्ताओं के सामने १९८० में चुनौतियां थीं । ८१५० लाख से अधिक निरक्षर १५ वर्षीय आयु समूह और उससे बड़े आज भी मौजूद हैं । ये अधिकांश तीसरी दुनिया के देशों के ही हैं । इन्हें साक्षर बनाना आवश्यक है । यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि जो स्नातक बन चुके हैं या वयस्क साक्षरता की कक्षाओं की शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं, उन्हें इस योग्य बनाया जाना चाहिए कि वह अपनी शिक्षा का उपयोग व्यक्तिगत उन्नति, आर्थिक विकास तथा राजनीतिक सहभागिता में कर सकें ।

स्वतंत्रता के बाद भी अंधेरा

अब हम २१वीं शताब्दी में प्रवेश करने जा रहे हैं । हमें राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त किये आधी शताब्दी बीत चुकी है, किंतु अभी सब तरफ अंधेरा है । अभी भी लगभग आधे देश में लोग लिखने-पढ़ने के मूल अधिकार से वंचित हैं ।

सन १९७२ में यूनेस्को ने अपने 'चार्टर आफ बुक' में 'प्रत्येक को पढ़ने का अधिकार' के अंतर्गत पुस्तकों के प्रकाशकों तथा वितरकों को इस दिशा में उनकी हिस्सेदारी के बारे में अवगत कराया । साक्षरता में सरकारी भागीदारी एवं प्रत्येक व्यक्ति पढ़ने के लाभों का फल उठा सके, यह सब दो दशक पूर्व चार्टर में उल्लिखित कर दिया गया था ।

संस्कार नहीं बन सकते !

● दीनानाथ मल्होत्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब भारत स्वतंत्र हुआ तो साक्षरता केवल १४ प्रतिशत थी । आज साक्षरता की दर ५२ प्रतिशत है । विद्यालयों में प्रवेश में सवा दो करोड़ से १३ करोड़ ६० लाख की वृद्धि १९५१ के वर्ष में हुई । सन १९५०-५१ में जहां २,०९,६७१ प्राथमिक स्कूल थे, वहां १९९२ में बढ़कर ५,६५,७८६ तक पहुंच गये । यह बात सही है कि ऐसे स्कूलों में न तो अच्छी सुविधाएं ही हैं, न उत्तम शिक्षा ही जुटा पा सकते हैं ।

गांव-गांव में स्कूल

सरकार ने 'आपरेशन ब्लैक बोर्ड' योजना १९८६ में आरंभ की । यह शिक्षा सुधार का एक महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम है । योजना बनी कि एक किलोमीटर के भीतर स्कूल हो । ३०० की आबादी को स्कूल मिले । पर्वतीय और रेगिस्तानी क्षेत्रों में २०० की आबादी का हिसाब रखा । आठवीं पंचवर्षीय योजना में लगभग चालीस हजार नये स्कूल स्थापित करने का आकलन किया गया ।

संपूर्ण साक्षरता अभियान

भारत सरकार वयस्क शिक्षा के कार्यक्रम बनाती रही है । अब बड़े पैमाने पर 'राष्ट्रीय साक्षरता मिशन' पर काम हो रहा है । यह मिशन १९८८ में आरंभ हुआ था । लक्ष्य था १५ से ३० वर्ष के आठ करोड़ लोगों को साक्षर बनाना । सीमित ही सही, पर यह व्यावहारिक और उद्देश्यपूर्ण है । केरल के कोट्टायम के लोगों ने प्रण किया कि नगर को संपूर्ण साक्षर बनाएंगे, और एक दिन सचमुच उन्होंने यह कर दिखाया । यह १९८९ की बात है । इसके बाद एर्नाकुलम जिला के लोगों ने सारे जिले को साक्षर बनाने की प्रतिज्ञा की, और १९९० में उनका यह सपना पूरा हुआ । अब हमारे सामने एक माडल टी.सी.एल. है; यानी संपूर्ण साक्षरता अभियान । यह माडल लोकप्रिय हो रहा है । स्वयंसेवी संस्थाएं सामने आ रही हैं, और परिणाम भी आने लगे हैं । यह कार्यक्रम सभी राज्यों में सघन रूप से चल रहा है । आठवीं पंचवर्षीय योजना में लगभग ३४५ जिलों में यह कार्यक्रम चलना है तथा प्रस्ताव है कि दस करोड़ लोग साक्षर बन जाएं ।

शिक्षा पर आधा खर्च क्यों ?

अभी हाल ही में यूनेस्को और यूनीसेफ ने चेतावनी दी है कि हमारे देश में इस सदी के अंत तक एक तिहाई जनसंख्या को साक्षर बना लेना चाहिए । हम अपने कुल राष्ट्रीय उत्पाद का जो ३.२ प्रतिशत शिक्षा पर खर्च करते हैं, वह वास्तव में छह प्रतिशत होना चाहिए । इसके लिए हमें साक्षरता और शिक्षा को प्राथमिकता तथा महत्त्व देना होगा ।

हम दिल्ली प्रदेश का उदाहरण लें । सन १९९१ की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या ६३.७ लाख है और साक्षरता ७६.१ है । मुख्यमंत्री ने घोषणा की है कि जून १९९६ तक दिल्ली को संपूर्ण साक्षर बना दिया जाएगा । इस निमित्त स्वयंसेवी संगठनों को आगे आना चाहिए और अपनी मिशनरी भावना के साथ कार्यक्रम कर समाज को आगे बढ़ाने का काम करना चाहिए । केरल ऐसा राज्य है, जिसने साक्षरता अभियान में सर्वप्रथम सफलता पायी । उसके बाद बंगाल का स्थान है । पश्चिमी बंगाल सरकार के शिक्षा मंत्री से बात करने पर उन्होंने बताया कि साक्षरता अभियान तीव्र गति से चल रहा है । यह अब सरकारी आंदोलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, वरन जन-आंदोलन बन गया है । यह भारत के सुंदर भविष्य के अच्छे संकेत हैं ।

पढ़ने का समय क्या हो ?

पिछले ढाई वर्षों में देश के साक्षरता के परिदृश्य में परिवर्तन नजर आने लगा है । परंपरागत केंद्र आधारित कार्यक्रम देखें । संपूर्ण साक्षरता के लिए सघन अभियान से ही लक्ष्य पाया जा सकता है । ये अभियान क्षेत्रवार, समयबद्ध, स्वयंसेवक आधारित तथा परिणाम देनेवाला और इस पर राष्ट्रीय साक्षरता मिशन एक सैद्धांतिक रूपरेखा तैयार हो सके । कोई भी अभियान एक वर्ष का हो । छह मास योजना को समर्पित हों और बाकी के छह मास पढ़ने-लिखने को (दो सौ घंटे । प्रतिदिन एक से डेढ़ घंटा) ।

दो सौ घंटे के पाठ्यक्रम में बुनियादी अक्षर-ज्ञान एवं अंक-ज्ञान हो जाना चाहिए । नव-साक्षर यही माने जाएंगे । एक अभियान में साक्षरता कार्यक्रम थोड़े समय का हो और परिचयात्मक भी । उत्तर साक्षरता तथा शिक्षा की निरंतरता के सिलसिलेवार कार्यक्रम द्वारा आंशिक साक्षरता कार्यक्रम संपन्न हो सकता है ।

पर्याप्त मात्रा में सुंदर, चित्रित तथा अच्छी दिखायी पड़नेवाली सामग्री, पुस्तकालयों, अध्ययन कक्षों और अन्य संस्थानों में आसानी से उपलब्ध हो । ये सामग्री विभिन्न विषयों की हो, जैसे कि जीवनी, आत्मकथा, कथा साहित्य, हास्य-व्यंग्य, काव्य, लोकगीत, धर्मशास्त्र, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, शरीर विज्ञान, शिशुरक्षा, प्राकृतिक चिकित्सा, कृषि, पशु-विज्ञान, प्रसूति, भू-संरक्षण तथा अन्य अनेक विषय हो सकते हैं ।

लाखों के लिए भारी मात्रा में किताबें उपलब्ध कराना प्रकाशकों के लिए निश्चय ही चुनौतीभरा है । इस राष्ट्रीय अभियान में इन्हें काम करना है । पुस्तकें केवल साक्षरता कार्यक्रम के लिए ही नहीं, बल्कि उत्तर साक्षरता कार्यक्रम के लिए भी बहुत जरूरी हैं । पुस्तकों और नव-साक्षरों के लिए अन्य पठन सामग्री की तैयारी, उत्पादन और वितरण चुनौतीभरा है । प्रकाशक इसे योजनाबद्ध ढंग से संपन्न कर सकते हैं ।

बंदूक और किताब

नवसाक्षरों के लिए सामग्री तथा उत्तर साक्षरता सामग्री का वितरण पुस्तक प्रसार में एक कमजोर सूत्र है । इसका कारण है कि नव-साक्षरों का अधिकांश हिस्सा गांवों में रहता है । दूसरा कारण यह है कि ग्रामीण मेलों में जो सामग्री पहुंचती है, उसे खरीदने की क्षमता उनमें नहीं होती । 'जन शिक्षा निलयम' इस ओर अग्रसर है । यह आवश्यक होगा कि जी.एस.एन. में पठन सामग्री सदैव उपलब्ध हो तथा वह बाजार में निरंतर मिलती रहे ।

प्रकाशक साक्षरता अभियान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । जिस प्रकार एक सिपाही बिना बंदूक के लड़ नहीं सकता, उसी प्रकार हम बिना अच्छी किताब के किसी व्यक्ति को साक्षर नहीं बना सकते और न संस्कार पैदा कर सकते । सरकार वयस्क निदेशालय, नेशनल बुक ट्रस्ट के माध्यम से पठन सामग्री उपलब्ध करवा रही है । निजी प्रकाशन उद्योग भी इसमें अलग से संलग्न है । महात्मा गांधी का कथन है, 'शिक्षा समाज के पुनर्निर्माण तथा चेतना के विकास में एक औजार है ।'

—३० जोरबाग, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैरीबियन का नोबेल पुरस्कार विजेता- डेरेक वालकाट

● डॉ. भोलानाथ चतुर्वेदी

उत्तरी अमरीका के फ्लोरिडा प्रांत के ठीक पूर्व की ओर है कैरीबियन समुद्र, जहां पर है एक छोटा-सा द्वीप-समूह जो वैस्ट-इंडीज के नाम से जाना जाता है । इन्हीं में से एक छोटे द्वीप का नाम है सैंट लूसिया, जो अपने सुंदर वातावरण के लिए प्रसिद्ध है । इस द्वीप के दो निवासियों के नाम अखबारों में चर्चित रहे हैं, एक करोड़पति अंगरेज लार्ड ग्लेनकानर जिसने सेंट लूसिया के पास ही एक और द्वीप जलौसी को खरीदकर वहां आलीशान महल बनाया है और वहां के वातावरण को अपने शाही रहन-सहन से दूषित कर रहा है और दूसरा सैंटलूसिया के मूल निवासी डेरेक वालकाट, जिन्हें सन ९२ में साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिया गया है । वह एक कवि तथा नाटककार हैं जिन्हें बहुत कम लोग जानते हैं लेकिन जिनके लेखन ने अपने देश की सांस्कृतिक धरोहर तथा वातावरण के प्रति अपनी आस्था को अपनी रचनाओं में इस प्रकार प्रस्तुत किया कि नोबेल पुरस्कार के निर्णायकों को उन्हें वह पुरस्कार देने के लिए बाध्य होना पड़ा । अपने छोटे द्वीप के प्रदूषण से क्षुब्ध होकर वालकाट ने निम्न पंक्तियों में प्रदूषण-कर्त्ताओं पर इस तरह वार किया है:

सौदागरो और देश-द्रोहियो
परिवेषकों को बनानेवाले
और परिवेषिकाओं को बनाने
वाले वैश्यायें,
हमार दुःख अगाध है
जलौसी ही सात महान
पापों में एक है ।

यही है वह जलौसी, जहां लार्ड ग्लेकावर का आलीशान प्रासाद है ।

कुछ वर्षों से नोबेल पुरस्कार की ऐसी परंपरा रही है कि पश्चिमी देशों के महान अंगरेजी लेखकों को भी यह पुरस्कार नहीं दिया गया है जिनमें ग्राहम ग्रीन तथा अमरीका के फाकनर जैसे लेखक शामिल हैं । विकासशील देशों जैसे दक्षिणी अफरीका तथा अब वैस्टइंडीज की ओर इसलिए ध्यान दिया गया है क्योंकि यहां के लेखक अपने देश की संस्कृति से, चाहे वह अविकसित तथा पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित रही हो, पूरी तरह से जुड़े हुए हैं, ऐसी संस्कृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें कई देशों के निवासी हैं जैसे भारतीय, योरोपीय और दक्षिण अफरीका निवासी, कैरीबियन द्वीप समूह के निवासी भी इस मिश्रित रूप के हैं जिन्होंने वहां की भाषा तथा संस्कृति दोनों को प्रभावित किया है । यहां की अंगरेज़ी भाषा का रूप भी पश्चिम की मूल अंगरेजी से भिन्न है जिससे इस भाषा में लिखनेवालों की कठिनाई और भी बढ़ जाती है । वालकाट ने इन दोनों चुनौतियों को स्वीकार किया है और वे अपने लेखन में सफलता प्राप्त कर सके हैं ।

कवि और नाटककार

वालकाट मूल रूप से अफरीकन हैं और उनका जन्म सेंट लूसिया में १९३० में हुआ था । उनका जन्म किसी संपन्न परिवार में नहीं हुआ जो उनके इस वक्तव्य से सिद्ध होता है कि जब उन्होंने अपने लेखक जीवन के आरंभ में अपनी मां से एक पुस्तक प्रकाशित करने के लिए ४०० डॉलर मांगे तो वह रो पड़ीं और बहुत कोशिशों के बाद वे इतना धन इकट्ठा कर अपने पुत्र को दे सकीं जो वापस भी करना पड़ा ।

कविता लिखने के अलावा वालकाट की रुचि रंगमंच में भी रही और उन्होंने १९५९ में ट्रिनीडाड में थियेटर वर्कशाप स्थापित की जिनमें उनके कई नाटक प्रस्तुत किये गये । उनके प्रसिद्ध नाटकों में हैं **हेनरी क्रिस्टोफी** (१९५०) , **हेनरी डरनियेर** तथा **रिमेम्बरेंस विद पैंटोमाइम** (१९८०) । एक और नाटक **ओ बैबीलोन** (१९७८) जमैका की बस्टाफेरियन जाति से संबंधित है जो वेस्टइंडीज की प्रमुख जातियों में से एक है । उनके नाटकों की विशेषता यह है कि वे गद्य तथा पद्य दोनों के

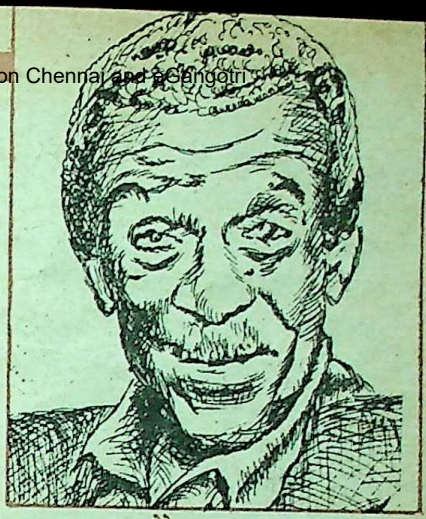

डेरेक वालकाट

डेरेक वालकाट—
कैरीबियन के कवि-नाटककार जिन्हें १९९२ में साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया । वालकाट ने प्रदूषण और शोषण-उत्पीड़न के खिलाफ प्रभावपूर्ण साहित्य सृजन किया है !

मिश्रण में लिखे गये हैं और उनमें उनके अपने देश की भाषा क्रियोल के शब्द भी शामिल हैं तथा अंगरेजी का प्रयोग भी मौलिक है । अपनी भाषा के बारे में वालकाट का कहना है कि उन्होंने प्रस्तुत की है 'जहां कुछ नहीं थी / वहां एक जाति की भाषा ।' एक मिश्रित संस्कृति के परिवेश में जहां योरोपीय, अफरीका निवासी तथा भारतीय रहते हैं, ऐसी भाषा का प्रयोग करना कितना कठिन है यह वालकाट ही जानते हैं । **ड्रीम ऑफ मंकी माउंटेन** जो एक प्रयोगवादी नाटक है, उसकी '**व्हाट द ट्वालाइट सेज**' नामक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह मिश्रित संस्कृति गौधूली बेला की तरह ही है जिसके परिवेश में उनका पालन-पोषण हुआ और उनके लेखन को प्रोत्साहन मिला है ।

अनेक काव्य-संग्रह

अट्ठारह साल की उमर में ही वालकाट ने कविता लिखना आरंभ कर दिया था और १९४८ में उनका पहला संकलन **इन ए ग्रीन लाइट** नाम से प्रकाशित हुआ । इसके बाद **द कास्टअवे** (१९६५) तथा **ए गल्फ** (१९६९) प्रकाश में आये जिनमें व्यंग का विशेष रूप से प्रयोग हुआ है तथा कैरिबियन के प्राकृतिक दृश्यों का सुंदर-चित्रण । इन कविताओं में वालकाट ने कम से कम भौतिक धरातल पर अपनी मातृभूमि से तादात्म्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है जिसमें वे सफल हुए हैं । उन्हीं की एक कविता के अनुसार :

जैसे मौसम अपना विशेष
रूप है खोजता, वैसे ही लिखना
काव्य जो हो चुस्त
और सुस्पष्ट,
सूर्य के प्रकाश की भांति
और हो शीतल
बल खाती लहरों
की तरह ।

चूंकि कैरिबियन संस्कृति पूर्व और पश्चिम का मिश्रण है जिसमें भारतीयता भी शामिल है, वालकाट अपनी एक कविता में उसका वर्णन करते कहते हैं कि 'यह है एक झूला दो देशों के बीच' । अपने **कास्ट अवे** नामक संग्रह में वह 'क्रूसोज जर्नल' कविता में एक विशेष प्रकार की अंगरेजी शैली प्रयोग करते हैं जिसमें 'पैट्वा' नामक स्थानीय बोली के शब्द भी शामिल हैं । 'पेन्टेकास्ट' नामक एक और कविता में वह कहता है :

यह रात्रि का समुद्री उफान
ही अति सुंदर है,
बालू, जैसे धर्म-ग्रंथ से
हों पंक्तियां, जो देवदूत
तो न भेज सकें लेकिन
एक जल-कौवा ही सही ।

ऐसी ही अनासक्ति से पूर्ण और धार्मिक-भावोंवाली कविताएं वालकाट ने **सी ग्रेप्स** (१९७६), **द स्टार एपल किंगडम** तथा **द अनफौर्टूनेट ट्रेवेलर'** (१९८२) में लिखी है । उनमें जहां औपनिवेशिक दबाव के विरुद्ध क्षोभ है वहां प्रकृति के प्रति एक अद्भुत आसक्ति भी । उसकी कविताओं और नाटकों में उसके अंदर का द्वंद्व भी प्रकट होता है जिन्हें वह कहते हैं **'घर तथा निर्वास के बीच का विकल्प, अपने को पाना या देश के प्रति विश्वास-घात ।'** उनकी सबसे हाल की रचना 'ओमेरस' की तुलना, जिसके ऊपर उसको नोबेल पुरस्कार मिला है, होमर के **ओडिसी** महाकाव्य से की गयी है और इसीलिए वालकाट को 'कैरिबियन का होमर' कहा गया है ।

— सी-६६-ए
निरालानगर, लखनऊ-२२६०२०

न्यूयार्क स्थित कार्नेल विश्वविद्यालय ने हृदय रोगियों के लिए कोलेस्ट्रोल रहित दूध के निर्माण के लिए एक नयी विधि विकसित की है । इस विधि के प्रयोग से दूध में से कोलेस्ट्रोल को आसानी से पृथक किया जा सकता है और इसमें दूध की स्वादिष्ट वसाओं को भी अलग नहीं किया जाता, जिससे दूध के स्वाद में कोई अंतर नहीं आता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य विशेषांक— २

'कादम्बिनी' के जनवरी अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य विशेषांक' के लिए हमने देश के अनेक प्रख्यात एवं अनुभवी चिकित्सकों, वैद्यों और हकीमों से विशेष रूप से रचनाएं मंगवायी थीं। यहां प्रस्तुत हैं— स्वास्थ्य विशेषांक के शेष लेख।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलरि

जोड़ों में दर्द का बेजोड़ इलाज

● डॉ. हीरालाल बाछोतिया

कहते हैं जब हनुमानजी संजीवनी-बूटी लेकर लंका की ओर जा रहे थे तब पर्वत का कुछ हिस्सा भारत के दक्षिणी भू-भाग पर टूटकर गिर पड़ा था । वह दक्षिणी भू-भाग आज का केरल ही है तथा जड़ी-बूटियों के विशेषज्ञ कहते हैं कि जो जड़ी-बूटियां हिमालय क्षेत्र में पायी जाती हैं, वे केरल में भी पैदा होती हैं । ठेठ जड़ी-बूटियों से उपचार करना केरल के चिकित्सकों की एक विशेषता है । प्राकृतिक चिकित्सा भी इसी के समानांतर पर्याप्त विकसित होती रही है । एक अन्य चिकित्सा व्यवस्था 'कलरि' भी अस्तित्व में है ।

क्या है कलरि ?

केरल में पुराने सामंती शासनकाल में सशस्त्र सैनिकों सिपाहियों का योगदान रहा है । ग्राम रक्षा के साथ स्वरक्षा हेतु हर ग्राम में शस्त्र शिक्षा की व्यवस्था थी । शस्त्रविद्या सिखानेवाले इन ग्रामीण विद्या केंद्रों के लिए मलयालम में 'कलरि' शब्द का प्रयोग होता था । शरीर के हर अंग की चुस्ती-फुरती बरकरार रखना तथा विविध शस्त्रास्त्रों के प्रयोग में निपुणता प्राप्त करना इस शिक्षा का उद्देश्य था ।

कलरि में उपचार

एक तरह से यह व्यवस्था उत्तर में अखाड़ों में उपलब्ध व्यवस्था जैसी थी । किंतु केरल में इस व्यवस्था में एक अंतर देखा जा सकता है । शस्त्र अभ्यास करते समय या संघर्ष में चोट आ जाने, हड्डी क्षतिग्रस्त हो जाने, मोच आने या अन्य कोई विकार होने पर कलरि में चिकित्सा या उपचार कालांतर में संस्थागत व्यवस्था का अंग बन गयी । ऐसी 'कलरि' ग्रामों/नगरों में देखी जा सकती है । त्रिवेंद्रम में फोर्टक्षेत्र में सी. वी. एन. कलरि में ऐसी व्यवस्था को मूर्त्त देखा जा सकता है । यहां सूर्योदय के साथ कसरत-मालिश, शस्त्र अभ्यास का क्रम शुरू होता है । इनमें स्थानीय ही नहीं बाहर के शिक्षार्थियों के साथ विदेशी शिक्षार्थी भी देखे जा सकते हैं । इनमें विशेष रूप से मालिश उपचार का अंग है । कलरि के अधीष्ठाता श्री नायर तलघर के हाल में स्थित देवताओं की वंदना के साथ मालिश द्वारा उपचार प्रारंभ करते हैं । एक बड़े कम ऊंचाई के तख्तनुमा प्लेटफार्म पर साइटिका या वातादि जैसे रोग से ग्रस्त मरीज को पेट के बल लिटा दिया जाता है । फिर पीठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलरि : केरल के प्राचीन ग्रामीण विद्या केंद्र जहां शस्त्र-शिक्षा के साथ-साथ उपचार की भी शिक्षा दी जाती थी । त्रिवेंद्रम की सी. वी. एन. कलरि में अनेक रोगों की परंपरागत चिकित्सा की जाती है ।

पैरों और भुजाओं पर वे पहले अपने हाथों से मालिश शुरू करते हैं । पृष्ठ भाग या पीठ पर हाथों से मालिश में अपेक्षित दबाव नहीं आ सकता । अतः वे पैर के तलुवे से आवश्यक दाब के साथ मालिश करते हैं । निश्चय ही शरीर में नाड़ी तंत्र तथा अस्थि तंत्र की खासी जानकारी के अभाव में यह मालिश संभव नहीं है ।

कलरि के अंतर्गत उपचार का दूसरा हिस्सा जड़ी-बूटियों या आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति द्वारा उपचार की व्यवस्था है । पूरे केरल में ज्योतिष अथवा वैद्यक सीखना भी यहां की परंपरा रही है । अनेक नपूतिरि विद्वान आयुर्वेद के गहरे जानकार होते हैं । इन्हें 'मूसु' की उपाधि दी जाती थी । केरल के अष्ट वैद्यों के तौर पर आठ मूसु परिवारों के प्रति केरलवासियों की असीम श्रद्धा है । आयुर्वेद को वैद्यों ने वेद तुल्य माना है । वाग्भट्टाचार्य का ग्रंथ अष्टांग हृदय केरल की आयुर्वेदिक चिकित्सा का मुख्य प्रामाणिक ग्रंथ है । यद्यपि यहां के वैद्य सुश्रुत, चरक आदि से भी परिचित रहे हैं किंतु औषधि निर्माण में 'सहस्र योग' और ऐसे ही कुछ अन्य ग्रंथों को अधिक महत्त्व दिया गया है । केरल के ग्रामवासी बुजुर्ग भी आयुर्वेद की चिकित्सा के सामान्य तत्व जानते थे । क्वाथ (काढ़ा) चूर्ण, चेह्य और घृत के रूप में दवाई ली जाती थी । आयुर्वेद की विशेष चिकित्सा विधि पंचकर्म की है । धारा, पिचिच्चिल, नवरत्रिषृषि और शिरोवस्ति के पांच प्रयोग पंचकर्म कहे जाते हैं । वात रोग के लिए आयुर्वेद चिकित्सा सर्वाधिक प्रभावकारी एवं सफल मानी गयी है । किंतु कलरि आयुर्वेदिक औषधियों तक ही सीमित नहीं है इसमें उपलब्ध विविध विकल्प इसकी अपनी विशेषता है ।

अस्थियों के क्षतिग्रस्त होने पर

एक्सीडेंट आदि में हड्डियों के क्षतिग्रस्त या उनमें टूट-फूट मोच आदि का इलाज सी. वी. एन. कलरि में जड़ी-बूटियों तथा तेल के अनुलेप और बांस की खपच्चियों से पट्टी बंधन द्वारा किया जाता है ।

रक्त वाहिकाओं में रक्त के अपेक्षित बहाव में विभिन्न कारणों से समस्याएं पैदा हो जाती हैं । इसके कारण पैरों-पिंडलियों आदि में तीव्र शूल होता है । इसके उपचार के लिए कलरि में लंबी टेबिल पर रोगी को पेट के बल लिटाकर सिकाई की जाती है । इसके लिए पोटलियों में बंधी जड़ी-बूटियों को औषधियुक्त तेल में गरम किया जाता है । इन पोटलियों से मेरूदंड तथा अस्थियों और शिराओं की सिकाई की जाती है । । सी. वी. एन. कलरि के अधिष्ठाता श्री नायर प्रचार से दूर केवल कार्य करते रहने और परंपरा को बनाये रखने में विश्वास रखते हैं ।

—के-४० एफ, साकेत
नयी दिल्ली-११०००१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल रोगों से कैसे बचा जाए

● डॉ. शीला गुप्ता

बालकों में उत्पन्न होनेवाले अनेक रोगों का प्रमुख कारण माता की अनभिज्ञता होती है । जो माता वातवर्धक या पित्त प्रकोपक अथवा कफवर्धक अन्नपान का सेवन करती है उसके स्तनों से दूध पीनेवाले शिशुओं में तदनुसार वातज, पितज और कफ रोगों की उत्पत्ति होती है । वात से दूषित दूध को पीनेवाले बालक निर्बल, कृश, क्षीणस्वर और मलावरोध तथा मूत्रावरोधग्रस्त पाये जाते हैं । पित्त से दूषित दूध पीनेवाले बालकों में स्वेद की अधिकता, अतिसार का होना, पिपासा, शरीर के अंगों में अत्युष्णता का रहना आदि उपद्रव होते हैं, कफ से दूषित दूध को पीनेवाले शिशु मुख से लार का अधिक बहना, निद्रा की अधिकता, मेदोवृद्धि, शोथ आदि रोगों से पीड़ित देखे जाते हैं ।

कुछ माताएं शिशु को शीघ्र हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिए अत्यधिक मात्रा में दूध एवं अन्य आहार देने लगती हैं । ऐसे बालक अजीर्ण, अतिसार, वमन आदि रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं । बालकों के लिए उचित मात्रा में आहार दिया जाना अभीष्ट है । यदि दूध, अन्न, जल आदि को युक्ति युक्त योजना के साथ सेवन कराया जाए तो प्रायः बालक स्वस्थ रहते हैं । उनके पहनने-ओढ़ने और बिछाने के वस्त्रों को जल से स्वच्छ धोना, सूर्यताप देना और उनमें गुग्गुल, अगर, तगर, घृत आदि सुगंधित तथा रोगनाशक द्रव्यों की धूनी देनी अति उत्तम है । आहार के समान ही स्नान, निद्रा, क्रीड़ा आदि आरोग्यपद अंगों पर ध्यान देना भी महत्त्वपूर्ण है । प्रारंभ में कुछ काल तक गुनगुने (अल्पोष्ण) जल से स्नान कराने के पश्चात बालकों को शीतल जल से स्नान करने का अभ्यास स्वास्थ्यप्रद होता है ।

कुछ माताएं शिशु को शीघ्र हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिए अत्यधिक मात्रा में दूध एवं अन्य आहार देने लगती हैं । ऐसे बालक अजीर्ण, अतिसार, वमन आदि रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं । बालकों के लिए उचित मात्रा में आहार दिया जाना अभीष्ट है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशुओं के लिए अधिक निद्रा की आवश्यकता होती है । उपयुक्त निद्रा से बालकों के संपूर्ण अंगों की वृद्धि तथा पुष्टि होती है । इसके विपरीत अल्प निद्रा से उनके शरीर में कृशता तथा मस्तिष्क आदि अंगों में दुर्बलता आदि रोग उत्पन्न होते हैं ।

उपचार

कब्ज के लिए — मात्र हरड़+ काला नमक घिस कर दें, भुना सुहागा शहद से चटाएं ।

वमन में — भुना सुहागा मां के दूध में दें ।

— संजीवनी वटी + बालचतुर्भद्र मधु से दें ।

अतिसार में — जायफल घिसकर दें ।

— बेलगिरी घिसकर दें ।

ज्वर में — संजीवनी + गोदन्ती भस्म मधु से दें ।

बहमूत्रता में — खजूर घिस कर दें ।

हड्डियों की कमजोरी व सूखा रोग में — जहरमोहरा खताई जल में घिस कर दें ।

उदर कृमि होने पर — विड़ंग, कमीला गुड़ या मधु में मिला कर दें ।

खांसी में — बालचतुर्भद्रिका मधु से चटायें या सितोपलादि मिला कर दें ।

इस प्रकार घरेलू उपचार से बच्चा स्वस्थ एवं हृष्ट-पुष्ट बनेगा । तेज औषध बच्चों को आरंभ में न दें,क्योंकि इनमें उनके दुष्प्रभावों से शरीर में विकृति चलती रहती है । अतः सबसे पहले दादी मां के नुस्खे अवश्य प्रयोग करें ।

— बी-१७०२, शास्त्री नगर, दिल्ली-११००५२

इनके भी बयां जुदा-जुदा

जो जहर पी चुका हूं तुम्हीं ने मुझे दिया
अब तुम तो जिंदगी की दुआएं मुझे न दो

अहमद फराज

मेहरबां होके बुला लो मुझे चाहो जिस वक्त
मैं गया वक्त नहीं हूं फिर आ भी न सकूं

गालिब

हम छीन लेंगे तुझ से अंदाज बेनयाजी
फिर मांगते फिरोगे हमसे गुरूर अपना

इबने इनशा

फिर उसके बाद कई लोग मिलके बिछुड़े हैं
किसी जुदाई का दिल पर असर नहीं होता

अख्तर इमान

बंद कमरे की घुटन जान भी ले सकती है
खिड़कियां खोल के बाहर की हवा ली जाए

हैदर शेराजी

बिछुड़ा कुछ इस अदा से कि रूत ही बदल गयी
इक शख्स सारे शहर को वीरान कर गया

खालिद शरीफ

खुद जिनकी हथेली पे हों सुराख हजारों
वह देना भी चाहेंगे तो क्या देंगे किसी को

शमीम आरा

जिंदगी एक गुजरती हुई परछाई है
आईना देखता रहता है तमाशा अपना

साकी फारूनी

● प्रस्तुति : कुलदीप तलवार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई डॉक्टर पैसे के लालच में केस 'सिजेरियन' बना देते हैं । प्राइवेट प्रैक्टिस कर रहे डॉक्टरों में तो यह प्रवृत्ति प्रायः दिखायी पड़ती है ।

वेदना रहित प्रसव

● डॉ. निर्मला दीक्षित

बच्चे को जन्म देना शरीर की एक स्वाभाविक क्रिया है जो गर्भावस्था के अंत में स्वतः और सहज ढंग से होती है । गर्भकाल लगभग नौ माह का होता है । प्रसव के समय छोटा-सा चीरा देकर बच्चे के सुगमता से बाहर आने का मार्ग तैयार कर दिया जाता है । प्रसव के पश्चात दो-तीन टांके लगाकर उस स्थान को सी दिया जाता है । जच्चा और बच्चा दोनों का पूर्ण स्वस्थ होना सामान्य प्रसव की पहली शर्त है ।

फौरसेप तथा अन्य उपकरण

सामान्य प्रसव में स्त्री को पीठ के बल लेटाकर ही प्रसव किया जाना पसंद किया जाता है । आधुनिक प्रसूति विज्ञान में चिकित्सक फौरसेप तथा वेनट्ज ऑपरेट्स, यह उपकरण एक कप की भांति होता है जो बच्चे के सिर पर चिपक-सा जाता है जिससे बच्चा बिना किसी क्षति या विशेष प्रयत्न के बाहर आ जाता है, का प्रयोग करते हैं । फौरसेप का प्रयोग अनुभवी चिकित्सक को ही करना चाहिए अन्यथा इससे जच्चा अथवा बच्चा को नुकसान होने का अंदेशा रहता है । प्रसव सामान्य हो सके इसके लिए स्त्रियों को अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए । स्त्री द्वारा संतुलित भोजन, उचित व्यायाम, मानसिक रूप से स्वयं को प्रसव के लिए तैयार करना भी स्वाभाविक प्रसव के लिए उपयोगी रहता है । प्रसव पूर्व और प्रसव पश्चात जच्चा को अपने स्वास्थ्य और स्वच्छता पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए । प्रसव से पूर्व स्त्री को अपने 'रक्त-वर्ग' के विषय में भी पूर्ण जानकारी लेकर रखनी चाहिए । ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसे किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े ।

सिजेरियन

यद्यपि 'सामान्य प्रसव' प्रत्येक दृष्टि से अधिक उपयुक्त है परंतु प्रायः लोगों में 'सिजेरियन' का प्रचलन अधिक दिखायी देता है । मजे की बात यह है कि आज से कुछ वर्ष पूर्व सिजेरियन के नाम से ही लोग डरते थे पर आजकल सिजेरियन ९९.९% सफल ही रहते हैं । इसलिए लोग इसे न केवल सामान्य ही लेते हैं अपितु इसे सबसे अधिक सुरक्षित समझते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अतिरिक्त नौसिखिये डॉक्टर भी सामान्य प्रसव को 'सिजेरियन' बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ते । कई बार तो वह अनुभव प्राप्त करने के चक्कर में 'सिजेरियन' कर डालते हैं और कई बार अनुभवहीनतावश बच्चे की नाल खींच लेते हैं जब नाल सामने हो तो सिजेरियन ही एकमात्र विकल्प रह जाता है । ऐसे लोग डॉक्टरी जैसे महान पेशे पर धब्बा है ।

वैसे 'सिजेरियन' की बढ़ती प्रवृत्ति के तीन कारण हैं :

(१) कई बार तो यह आवश्यक होता है । क्योंकि कुछ स्त्रियों की बच्चादानी इतना फैलाव नहीं ले पाती कि सामान्य प्रसव संभव हो सके । इसके अतिरिक्त कुछ स्त्रियां विशेषकर वे युवतियां जो पहली बार बच्चे को जन्म देने जा रही हों वह प्रसव के दौरान होनेवाली पीड़ा-परेशानी को सहन करने में शारीरिक दृष्टि से सक्षम नहीं होतीं अतः उनको राहत देने के लिए सिजेरियन का सहारा लेना पड़ता है ।

सिजेरियन के संबंध में यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि एक बार सिजेरियन केस होने पर अवश्य ही दूसरी डिलीवरी भी सिजेरियन हो— यह आवश्यक नहीं है । हां, यदि अगर दो बार केस सिजेरियन हो तो तीसरा सिजेरियन मां के लिए खतरनाक भी हो सकता है ।

सिजेरियन कई बार आवश्यक होता है मगर आजकल इतने सिजेरियन केस दिखायी पड़ते हैं, उन सबके बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता । कई डॉक्टर पैसे के लालच में केस 'सिजेरियन' बना देते हैं । प्राइवेट प्रैक्टिस कर रहे डॉक्टरों में तो यह प्रवृत्ति प्रायः दिखायी पड़ती है ।

इसके अतिरिक्त नौसिखिये डॉक्टर भी सामान्य प्रसव को 'सिजेरियन' बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ते । कई बार तो वे अनुभव प्राप्त करने के चक्कर में 'सिजेरियन' कर डालते हैं और कई बार अनुभवहीनतावश बच्चे की नाल खींच लेते हैं जब नाल सामने हो तो सिजेरियन ही एकमात्र विकल्प रह जाता है । ऐसे लोग डॉक्टरी जैसे महान पेशे पर धब्बा है ।

प्रायः लोगों के पास तो यह जानने का कोई उपाय नहीं होता कि उनका 'केस' कैसा है, अतः डॉक्टर के नाम की ख्याति की परख अवश्य कर लेनी चाहिए ।

वेदना रहित प्रसव

सामान्य प्रसव के अंतर्गत 'पेनलेस' डिलीवरी अर्थात वेदना रहित प्रसव आजकल महिलाओं में लोकप्रिय हो रहा है । इसमें एपिडयूरिल (दो-तीन इंजेक्शन को मिला कर) जच्चा को दिया जाता है । जच्चा और बच्चा की स्थिति पर निरंतर चौकसी की जाती है । प्रसव के समय महिला को दर्द सहने का विशेष कष्ट नहीं उठाना पड़ता । प्रसव आराम से हो जाता है ।

— मेडिकल सुपरिंटेंडेंट नायर अस्पताल सायन (बंबई)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० ज्योतिष शास्त्र के नवीनतम प्रकाशन ०

तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग

-- बी० वी० रमन

यह पुस्तक हमें विभिन्न प्रचलित योगों से अवगत कराती है। सब महत्त्वपूर्ण, सुव्यस्थित तथा क्रमबद्ध योगों का वर्णन इस एक पुस्तक में मिलता है ताकि इन योगों से व्यावहारिक जन्मकुण्डली बनाई जा सके। अतः इस पुस्तक की यही मान्यता है कि यह प्रथम पुस्तक है जो सब प्रकीर्ण जानकारी को व्यावहारिक तथा सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करती है। मूल्य: रु० ६०

सन्तानसुख सर्वाङ्गचिन्तन

--मृदुला त्रिवेदी

सन्तानहीनता के ज्योतिषीय कारणों को उजागर करते हुए इच्छित संतान के निमित्त आशुफलप्रदायक परीक्षित एवं दुर्लभ मंत्रों की सविधि व्याख्या। विशिष्ट प्रयोजन हेतु तंत्र-मंत्र के साथ-साथ यंत्र की सुगम तथा उपयोगी कार्यविधि, दैवी-आराधना तथा शास्त्रोक्त आयुर्वेदिक औषधि-प्रयोग का विशद् विवेचन। दुर्लभप्राय पुत्रेष्टियज्ञ सहित अनेक अनुष्ठानों के विधि-विधान का शास्त्रसम्मत विश्लेषण।

रू० (सजिल्द) १९०; (अजिल्द) रु० १३०

वैवाहिक विलम्ब के विविध आयाम एवं मंत्र

--मृदुला त्रिवेदी

प्रस्तुत पुस्तक में वैवाहिक विलम्ब एवं वैवाहिक विघटन के यथा संभावित ज्योतिषीय कारण, मंगल दोष की सांगोपांग व्याख्या, मंत्र की सैद्धांतिक व्यावहारिक मीमांसा, प्रासंगिक विशिष्ट स्तोत्र तथा प्रयोग एवं सन्दर्भित व्रतों का बहुपक्षीय विश्लेषण सन्निहित है। मन्त्र चयन की शास्त्रीय विधि, उचित मन्त्र का निर्धारण, समर्थ स्तोत्रों एवं प्रखर प्रयोगों का क्रियान्वयन सघन स्वरूप में प्रथम बार प्रकाशित हुआ है। रू० (स) ८५; (अ) रु० ५५

जातक निर्णयः कुण्डली पर विचार करने की विधि

--बी० वी० रमन

डॉ० बी० वी० रमन द्वारा रचित 'हाउ टू जज ए होरोस्कोप' में ज्योतिष के सिद्धान्तों के आधार पर जन्म कुंडलियों के दक्षतापूर्वक विश्लेषण का प्रयास किया गया है। फलित ज्योतिष पर यह एक अत्यन्त लाभप्रद एवं उपयोगी पुस्तक है। इस पुस्तक में जन्म कुंडली के अलग-अलग बारह भावों का विश्लेषण अति वैज्ञानिक ढंग से किया गया है जिसे पढ़कर पाठक सुगमता से बारह भावों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। (अ) रु० ४५; (स) रु० ८०

सचित्र ज्योतिष शिक्षा

--बी० एल० ठाकुर

ज्ञान खण्ड: रु० ५५; *गणित खण्ड*-प्रथम भाग: रु० १००, द्वितीय भाग: रु० ४०; *फलित खण्ड*-भाग-१: रु० ८५, भाग-२: रु० ८५, भाग-३: रु० ९५; *वर्ष फल खण्ड:* रु० ४५; *प्रश्न खण्ड:* रु० ४०; *मुहूर्त खण्ड:* रु० ६०; *संहिता खण्ड:* रु० ६५

लघु पाराशरी सिद्धान्त

--एस० जी० खोत

पाराशर की विंशोत्तरी पद्धति तर्क संगत तथा अनुभव सिद्ध है। इसके निर्देशों के आधार पर फलादेश प्राप्त करना सरल हो जाता है। इस पुस्तक में इन आधारभूत सिद्धान्तों की व्याख्या की गई है। (स) रु० २००; (अ) १४५

मोतीलाल बनारसीदास

चौक, वाराणसी (उ० प्र०)

मुख्यालय: बंगलो रोड, दिल्ली-११० ००७

शाखाएं: अशोक राजपथ, पटना * बंगलौर * मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वास रोग कारण और निवारण

● वैद्य राजेंद्र प्रसाद शर्मा

श्वास रोग—प्राणवह स्रोतस्‌की विकृति का परिणाम है । प्राणवह स्रोतस्‌से संबंधित श्वास नलिकाओं,फेफड़ों आदि में कफ की अधिकता हो जाती है । जिससे श्वास नलिका संकीर्ण हो जाती है व श्वास नलिकाओं में संकोचन होकर श्वास तेज आता है और यह संकोचन धूल, धुंआ आदि के क्षोभ अथवा मानसिक स्नायु के क्षोभ से श्वास वेग बढ़ता है और सांस लेने में कठिनाई होती है । इस प्रकार कफ की अधिकता से युक्त वायु जब प्राणवह स्रोतों में अवरोध उत्पन्न कर फेफड़ों में घूमता है तो शब्द के साथ सांस अर्थात घुर-घुर करता हुआ कठिनाई के साथ आता है । यही श्वास रोग की उत्पत्ति है । इसे ही ब्रोंकियल अस्थमा भी कहते हैं ।

आयुर्वेद विज्ञान श्वास रोग के पांच प्रकार मानता है : (१) महाश्वास, (२) उर्ध्वश्वास, (३) छिल श्वास, (४) क्षुद्र श्वास, (५) तमक श्वास । महाश्वास, उर्ध्व श्वास व छिल श्वास असाध्य होता है । क्षुद्र श्वास-धातु दोर्बल्यता का प्रतीक है जो पोषक आहार एवं आराम देने मात्र से ठीक हो जाता है । तमक श्वास के रोगी अधिकतर चिकित्सक के पास श्वास कृच्छता लेकर आते हैं ।

श्वास रोग दूषित कफ एवं वातजन्य रोग है । श्वास नलिकाओं में संकोचन एवं संकीर्णता कफ की अधिकता के कारण होती है । धूल, धुआं इस रोग का प्रमुख कारण है । धुल-धुआं श्वास मार्ग में प्रवेश कर कफ के निकलने में बाधक होता है । श्वास रोग पर ऋतुओं का भी प्रभाव पड़ता है । शीत ऋतु में, वर्षा ऋतु में, यह अधिक होता है । शीतल व नमीवाले स्थान में रहने से, शक्ति से अधिक व्यायाम करने से, अधिक मैथुन करने से, अधिक रुक्ष एवं विषम भोजन करने से, आमदोष बढ़ जाने से, रात देर से भोजन करने से श्वास रोग होता है, क्योंकि देर से किया गया भोजन ठीक तरह से पच नहीं पाता है, जिससे आमदोष बढ़ जाता है, जिससे कफ की वृद्धि हो जाती है । किसी मर्म स्थान तथा वक्ष पर आघात लगना अथवा ज्वर, प्रतिश्याय उरःक्षत, धातुक्षय, रक्ताल्पता, राजयक्ष्मा, निमोनिया, ब्रोंकाईटिस, फेफड़े के रोग आदि संक्रामक जन्य भी श्वास रोग होता है । अधिक गुरु, विदाही एवं अधिक स्निग्ध भोजन करने, अधिक मांस, दही व अन्य कफवर्धक आहार-विहार करने से भी श्वास रोग होता है । आहार-विहार और ऋतुओं के प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असात्मयता होने से एलर्जी होती है । यह एलर्जी भी श्वास का एक महत्त्वपूर्ण कारण है । इसलिए इसे एलर्जी जन्य श्वास रोग भी कहा जाता है ।

लक्षण :- सांस लंबा खींचकर तथा रुक-रुक कर लेना पड़ता है । सांस लेने में दर्द होता है, आवाज भी आती है । रोगी बार-बार खांसता है, जोर लगाना पड़ता है, खांसने से कफ निकल जाता है तो आराम अनुभव करता है, अन्यथा बेचैनी, मानसिक थकान, बार-बार छींकें आना, अचानक घुटन महसूस करता है । सांस बड़ी कठिनाई से आता है ।

यह रोग किसी भी अवस्था में हो सकता है । महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होता है । श्वास-रोग वंशानुगत भी होता है । अन्य व्याधियों के लक्षण स्वरूप में भी होता है

चिकित्सा : सबसे पहले कारण का निवारण करना चाहिए । धूल-धुएं से बचना, वर्षा व सरदी से बचना बहुत जरूरी है । उसी मौसम में श्वास का वेग अधिक आता है । पेट साफ रखें, कब्ज न होने दें ।

श्वास के रोगी को स्वेदन एवं वमनादि पंचकर्म का चिकित्सा करना उपर्युक्त होता है । ऐसे रोगी को सैंधव लवण मिश्रित तेल छाती एवं कमर में मलकर थोड़ी देर के लिए धूप में बैठना चाहिए, इससे छाती का कफ ढीला होता है और खांसने से कफ आसानी से बाहर निकल आता है ।

यदि रोगी निर्बल है तो उसे दशमूल घृत १०-१५ मि. ली. प्रातः-सायं २-३ दिन तक खाने को दें, इससे रोगी का स्नेहन हो जाता है, वाष्प द्वारा शरीर से पसीना

महाश्वास, उर्ध्व श्वास व छिल श्वास असाध्य होता है । क्षुद्र श्वास-धातु दोर्बल्यता का प्रतीक है जो पोषक आहार एवं आराम देने मात्र से ठीक हो जाता है । तमक श्वास के रोगी अधिकतर चिकित्सक के पास श्वास कृच्छता लेकर आते हैं ।

लाना चाहिए । पसीना आने से कफ ढीला होकर बाहर निकलने में दिक्कत नहीं करता । श्वास कफ जन्य रोग है और आयुर्वेद कफ का स्थान आमाशय मानता है । अतः आमाशय का शोधन वमन द्वारा करना चाहिए । रोगी की शक्ति को देखते हुए नमक का जल, मदन फल अथवा मुलेठी द्वारा हलका वमन लाभदायक होता है । तत्पश्चात अमल-ताक्ष का गूदा, हरितकी, एरण्ड तेल आदि से विरेचन भी लाभकारी होता है ।

इस प्रकार श्वास के रोगी का बल, प्रकृति, आयु, स्थान आदि थोड़ा पंचकर्म कर शरीर का शोधन करने से रोगी को बड़ी राहत मिलती है । ये सभी उपक्रम आयुर्वेद चिकित्सक के परामर्श द्वारा ही करने चाहिए ।

औषधियों में : (१) श्वास कुणर रस—१०० मि. ग्राम, टंकण भस्म—२०० मि. ग्राम, प्रातः-सायं ऊष्ण जल से, सितोपलादि—५०० मि. ग्रा., मयूरपुच्छ भस्म—५०० मि. ग्रा. ।

(२) श्वास चिंतामणि—१०० मि. ग्रा.,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यवक्षार—२०० मि. ग्रा., शु. निशान हल्दी—१०० मि. ग्रा., श्रृंगादि चूर्ण—१० ग्राम ।

दशमूलारिष्ट, द्राक्षासव, कनकासव, वासासव, इनमें से कोई एक-अथवा दो २०-३० मि. लि. मिलाकर समान जल से भोजन के बाद लेना लाभदायक है । वसावलेह कन्टकार्यवलेह, भांगीं गुड़ भी श्वास के रोगी को आराम देता है ।

इयोसिनोफिलिया :- बढ़ जाने पर घी में भुनी हल्दी 'निशा ५००' मि. ली. प्रातः-सायं जल से लेने से पर्याप्त लाभ होता है । शुरू में उसका प्रभाव कम नजर आता है । लेकिन निरंतर लेने से अवश्य लाभ मिलता है । दशमूल क्वाथ, सौंठ, अतीस, कांकडा श्रीगी, पीपल, मुनक्का मिलाकर काढ़ा भी बहुत लाभकारी है । उपरोक्त चिकित्सा वैद्य की देखरेख में ही होनी चाहिए ।

पथ्य :- वक्षस्थल पर हल्का स्निग्ध स्वेदन (वाष्प) करना हितकर होता है । गेहूं, जौ और स्निग्ध एवं उष्ण पुराने साठी चावल का सेवन जिसमें लोंग, काली मिर्च आदि पाचन द्रव्यों का छोंक लगा हो । लिसौड़े का शरबत भी कफ को ढीला कर बाहर निकालता है । शहद, बकरी का दुग्ध, लहसुन, अदरक, सौंठ, पीपल, अजवायन, नींबू, द्राक्षा बार-बार ऊष्ण जल पीना भी पथ्य है । इस प्रकार का अन्न-पान, औषध एवं विहार करना उपयुक्त है । जो वात एवं कफ का नाश करे ।

अपथ्य :- श्वास के रोगी को शीतल हवा, कूलर, एयरकंडीशन वातावरण से बचना चाहिए । धूल-धुआं तथा अधिक व्यायाम तथा सभी प्रकार की तली हुई एवं ठंडी जैसे—पूरी, कचौड़ी, पकौड़ा, समोसा, चाय, मठरी आदि का सेवन न करें । श्वास के रोगी को ठंडे चावल एवं दही भी निषेध है ।

—आयुर्वेदाचार्य
लोधी कॉलोनी, नयी दिल्ली

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. (५), २. क. सूर्य की, ख. कोई नहीं— दोनों सूर्य के प्रकाश के परावर्तक हैं, ३. क. मास्को, ख. पी. बी. शेली के, ४. हजरतबल दरगाह, श्रीनगर (मूए-मुकद्दस-पवित्र बाल), दक्षिण में खुलदाबाद स्थित हजरत बाइस ख्वाजा दरगाह (पैदहन-ए-मुबारक—पवित्र वस्त्र), कटक में कदम-ए-रसूल इबादतगाह (पवित्र पद-चिह्न), ५. क. कालपी (उ. प्र.) में—महेशदास दुबे, ख. कालिंजर का, ६. उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के गांव भोरगढ़ में, ७. क. श्रवण-बेलगोला (कर्नाटक), ख. संसार की सबसे ऊंची (५७ फुट) प्रतिमा एक ही शिला से निर्मित, ८. क. जमीन से जमीन पर मार करनेवाले 'पृथ्वी' प्रक्षेपास्त्र का १२ वां परीक्षण, ख. २५० कि. मी. तक, ९. क. वाक्लाव हावेल— चेक नेता तथा साहित्यकार, ख. पियरो अंजेला— इटली के पत्रकार, ग. गीता हरिहरन (भारत)— 'थाउजैंड फेसेज आफ नाइट' उपन्यास पर, १०. क. भारत ने—वेस्ट-इंडीज को १०२ रनों से हराकर, ख. कास्पारोव ने, ११. कोको के बीज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

एक महिला, ''मैं तो अपने जन्म दिन के केक पर केवल एक मोमबत्ती ही लगाऊंगी ।''

''हां भई, वैसे भी इतना बड़ा केक कहां मिलेगा, जिस पर पूरी मोमबत्तियां आ सकें,'' सहेली ने उत्तर दिया ।

● ●

एक कंपनी का सेल्स मैनेजर (सेल्समैन की मीटिंग में) : यह हमारा नया उत्पादन प्रत्येक विवाहित व्यक्ति के लिए उपयोगी है । हम चाहते हैं कि हमारे उत्पादन की विशेषता प्रत्येक विवाहित स्त्री जान जाए । क्या करना चाहिए हमें ?

''मेरे विचार से हमें यह संदेश विवाहित पुरुष के नाम 'व्यक्तिगत' लिखकर भेज देना चाहिए,'' एक उत्साही सेल्समैन ने राह सुझायी ।

● ●

एक व्यापारी अपने क्लर्क को सौ रुपये का चैक देते हुए बोला, ''यह तुम्हारी मेहनत का फल है । यदि अगले वर्ष भी हमें लाभ रहा, तो मैं इस चैक पर हस्ताक्षर कर दूंगा ।''

— वीणा श्रीवास्तव

''डॉक्टर साहब एक दांत उखड़वाना है, और हां उसे सुन्न करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम बहुत जल्दी में हैं, आपको कोई परेशानी तो नहीं है ।

उस महिला के साहस पर डॉक्टर हैरान रह गया, बोला, ''आप बहुत बहादुर हैं, बताइए कौन-सा दांत है ?''

महिला पीछे खड़े पति को आगे की ओर धकेलते हुए बोली, ''वहां क्यों खड़े हो ? अपना दांत दिखाओ न ।''

''क्या तुम्हारे पति को घुड़दौड़ की अच्छी जानकारी है ?'' एक महिला ने दूसरी से पूछा ।

''अरे बहुत अच्छी, घुड़दौड़ शुरू होने से पहले ही वह बता देते हैं कि कौन-सा घोड़ा जीतेगा, और घुड़दौड़ समाप्त होते ही यह बता देते हैं कि वह घोड़ा क्यों नहीं जीता,'' दूसरी ने मुसकराते हुए जवाब दिया ।

●

प्रेमी : तुम्हारे पिताजी से तुम्हारा हाथ मांगने के लिए किस समय बात करना ठीक होगा ।

प्रेमिका : मेरे विचार से जब उनके पांव में जूते न हों ।

— वैंकटेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंग

पसंद

महिलाओं को
चटपटी चीजें
बहुत भाती हैं,
हर बात में
मिर्च-मसाला
लगाती हैं ।

—पीयूष पाचक

कारण

सहकारी उचित मूल्य की
दूकानों पर
आम लोगों के लिए
कैरोसिन घट रहा है
क्योंकि
शहर के खास लोगों में
रातों-रात बट रहा है

—अशोक कपूर

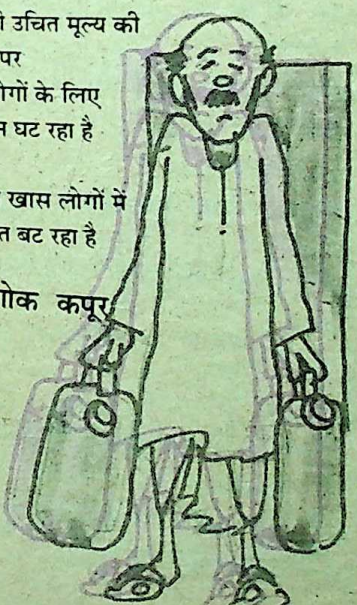

अंतिम इच्छा

वयोवृद्ध नेता
जीवन के अंतिम समय में
अपने पुत्रों को बता रहे थे अंतिम इच्छा,
हे पुत्रो—
जब हो रही हो मेरी
मातमपुर्सी,
तब भी मेरे शव के नीचे
होनी चाहिए कुरसी ।

'वादी'

'वादी' वाले शब्द
उन्हें बहुत भाये हैं,
क्योंकि, वे स्वयं
अवसरवादी का पर्याय हैं ।

मैल

पैसा, हाथों का मैल है
ऐसा, वे कहते हैं ।
इसलिए जब देखो
हाथ रगड़ते रहते हैं ।

कारण

वे
जनता के कंधों पर
खड़े हैं,
अतः
बड़े हैं ।

—दीपक गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

● अजय भाम्बी

एस. त्रिवेदी, उज्जैन

प्रश्न : क्या इस कुंडली में आनेवाले समय में मारकेश है ?

उत्तर : हमें तो ऐसा नहीं लगता ।

सूरज प्रकाश धवन, जोधपुर

प्रश्न : वृद्धावस्था कैसी रहेगी ?

उत्तर : जवानी से बेहतर रहेगी ।

इन्द्र मल्होत्रा, नयी दिल्ली

प्रश्न : मुझे अपने इष्ट मां के दर्शन साक्षात कब होंगे ?

उत्तर : अगले वर्ष ।

भुवनेश्वरी, हल्द्वानी

प्रश्न : तीन कन्याएं हैं, पुत्र प्राप्ति का योग कब तक ?

उत्तर : इस बार संभावना है ।

संगीता, जयपुर

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : विवाह योग चल रहा है । इसी वर्ष विवाह होने की संभावना है ।

चक्रेश अखेपुरिया, जबलपुर

प्रश्न : रुका हुआ पैसा कब तक प्राप्त होगा ?

उत्तर : अभी समय लगेगा ।

पंकज कुमार, दरभंगा

प्रश्न : वायुसेना में पायलट अफसर कब बनूंगा ?

उत्तर : प्रयास करें, १९९४ में संभावना बलवती हो रही है ।

प्रशांत माथुर, कोटा

प्रश्न : उच्च शिक्षा हेतु विदेश कब जाऊंगा ?

उत्तर : जब आपकी कुंडली में बुध की अंतर्दशा आएगी ।

शशि शर्मा, रीवा

प्रश्न : पी. सी. एस. में चयन कब होगा ?

उत्तर : इस वर्ष संभावना है ।

पुनीत कुमार, लखनऊ

प्रश्न : अधिक सफलता व्यवसाय में या नौकरी में ?

उत्तर : व्यवसाय बेहतर रहेगा ।

इंदु शेखर, सेंदुआर (सारण)

प्रश्न : दो पुत्रियां हैं, पुत्र प्राप्ति होगी अथवा नहीं ? यदि हां तो कब तक ? रत्न सुझायें ?

उत्तर : १९९५ में संभावना है । पुखराज पहनें ।

नरेश कुमार गौड़, झुंझुनूं (राज.)

प्रश्न : क्या वकालत का योग है ?

उत्तर : जी हां ।

राजकुमार, झज्जर (हरियाणा)

प्रश्न : बी. डी. एस. मेडिकल कोर्स में दाखिला कब तक ?

उत्तर : आपकी कुंडली गलत है । अगली बार सही कुंडली भेजें ।

सीमा पाठक, झांसी

प्रश्न : प्रतियोगिता में सफलता के योग हैं या नहीं ?

उत्तर : सफलता का योग १०-६-९४ के बाद बनता है ।

नमिता, दिल्ली

प्रश्न : सी. ए. कब पास होगा ?

उत्तर : मेहनत करेंगे तो ही सफलता मिलेगी ।

उषा गुप्ता, मीरजापुर

प्रश्न : संतान प्राप्ति कब होगी ?

उत्तर : १५ माह के भीतर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेज नारायण, देहरादून

प्रश्न : नौकरी में परिवर्तन कब तक व कैसा रहेगा ?

उत्तर : परिवर्तन का समय आ गया है । निश्चय ही वह सुखद रहेगा ।

सारिका, दरभंगा

प्रश्न : विवाह कब होगा ? वैवाहिक जीवन कैसा रहेगा ?

उत्तर : विवाह इसी वर्ष होगा और वैवाहिक जीवन ठीक रहेगा ।

राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, छतरपुर

प्रश्न : मुकदमा जीतेंगे अथवा नहीं, कब तक ?

उत्तर : मुकदमा जीत जाएंगे ।

मुकुल रस्तोगी, मुरादाबाद

प्रश्न : अपना व्यापार कब तक, उपाय बतायें ?

उत्तर : अपना व्यापार अभी नहीं करना चाहिए—अगस्त '९५ तक । हीरा पहनें ।

ऋषभ कुमार जैन, दिल्ली

प्रश्न : नये दवाइयों के काम में सफलता, पैसा कब तक मिलेगा ?

उत्तर : जुलाई '९४ के बाद काम ठीक चलने लगेगा ।

ऋचा माथुर, सहारनपुर

प्रश्न : क्या मैं विदेश यात्रा कर सकती हूं ? कब तक ?

उत्तर : विदेश यात्रा होगी ।

सतीश यादव, कानपुर

प्रश्न : मानसिक बीमारी कब ठीक होगी ?

उत्तर : १७-८-९४ के बाद आपका समय अच्छा प्रारंभ हो जाएगा ।

— 'नक्षत्र निकेत'
८४४/३, नाईवाला,
फैज रोड करोलबाग, नयी दिल्ली-११०००५

प्रविष्टि—१४४

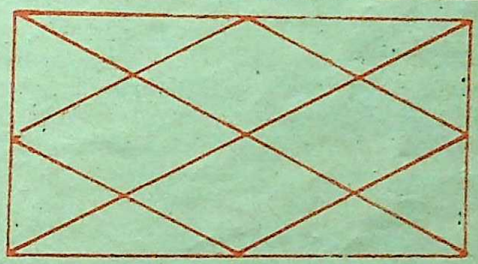

नाम.....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख).....महीना.....सन्.....

जन्म-स्थान.....जन्म-समय.....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण.....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १४४) 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० फरवरी, १९९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों का गिरना? असमय पकना? खुश्की होना?

बालों की समस्या?

यह सब बालों की बिमारी है ही नहीं, यह केवल लक्षण मात्र हैं। इसलिए इनके उपचार के लिए बालों की जड़ों में औषधि लगाने के साथ-साथ सटिक खाने की भी औषधि नितान्त आवश्यक हैं। ...डा० सरकार

न हो खुश्की, घने काले बाल अगर हो पाना, तो आर्निकाप्लस लगाना और होगा ट्रायोफर खाना।
इस दोनों के करने से बालों का गिरना होगा बन्द, असमय पकना रोकेगा, और खुश्की होगी कोसों दूर।
सर मे होगी ठडक, पेट की गड़बड़ी होगी दूर, बालों में भी होगी मजबूती, बालों के बढ़ने में होगी मदद,
तभी तो नये, घने और काले बाल बढ़ेगे। इससे आपके रूप में जगेगा एक आभा नयी,
डर नही क्योंकि होगा ही लाभ, नुकसान नहीं।

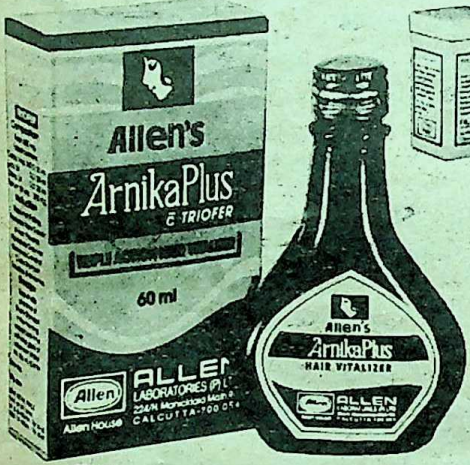

विश्व में पहली बार

बालों के सम्पूर्ण उपचार के लिए

डा० सरकार का-एक लाभकारी अविष्कार - **आर्निकाप्लस**-तेलविहीन हेयर लोशन और खाने के लिए होमियो हेयर टॉनिक-**ट्रायोफर** टेवलेट दोनों, एक ही पैकेट में।

पैक – ६० मि.लि. और १०० मि.लि.

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर

ट्रिपल ऐक्शन हेयर वाइटलाइजर

बालों की समस्या के, समाधान के लिए शोध से प्रमाणित होमियो औषधि।

सेवन विधि :
पैकेट के भीतर

लीवोसीन निर्माता की सहयोगी संस्था Allen का होमियो रिसर्च का एक उपहार।

एलेन लेवोरेटरीज प्रा० लि०
एलेन हाउस, २२४/एच, मानिकतल्ला मेन रोड,
कलकत्ता-५४, फोन : ३६-३०९६

Dr. Sarkar Group

एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषधि निर्माता :
जिसके प्रयत्न से ही मिले आपको आरोग्य और विश्वास।

Marketed by :
Allen's India Marketing Pvt. Ltd.
ArnikaPlus Apartment, Sealdah
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

Allen's Ad. India

84/77B, Narayan Bag, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph-242844.
Branch Offices : Halwai Lane, Raipur-492001, Ph-26263
(Behind Post Office) East Boring Canal Road, Patna-800 001, Ph.-236078

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरदी-जुकाम आसानी से छुटकारा पाइए

● डॉ. सुमित्रा शर्मा

प्रतिश्याय अर्थात सरदी-जुकाम एक आम समस्या है । शीत ऋतु में तो यह व्याधि शीघ्र ही होने की संभावना रहती है । सरदी-जुकाम का कोई समय नहीं है, न कोई उम्र का बंधन ।

सरदी-जुकाम का एक विशेष कारण है पर्यावरण का दूषित होना । वातावरण में धूल के कण इस तरह फैले रहते हैं कि हमारी श्वसन क्रिया में बाधा पड़ जाती है । नगरों और महानगरों में आटो वाहन, मोटर-बसें जो दूषित धुआं छोड़ती हैं उसके दुष्प्रभाव से भी सरदी-जुकाम का प्रकोप होता है । कारखानों से उड़ते हुए मिट्टी, रेत, रेशे के कण भी हानिकारक होते हैं । पेयजल भी कीटाणु रहित न होने के कारण नुकसान पहुंचाता है ।

असंतुलित भोजन भी इस व्याधि का एक कारण है । जिन हरी साग-सब्जियों तथा फलों का हम प्रयोग करते हैं, उन पर जहरीली कीटाणु-नाशक औषधियों का छिड़काव होता है, जो हानिकारक सिद्ध होता है ।

दिनचर्या भी सरदी-जुकाम के लिए उत्तरदायी है । देर रात को सोना और सुबह देर से उठने पर भी जुकाम हो सकता है । इसी तरह बहुत ऊंचा सिरहाना लेकर सोने, नये स्थान का पानी पीने, अधिक जलक्रीड़ा करने, अतिवाचालता, अतिशय सोने या अतिशय जागने, आंसुओं के वेग को रोकने आदि कारणों से भी जुकाम हो सकता है ।

इससे बचने के लिए सामान्यतया रोगी के बैठने का स्थान अग्नि के निकट रहना चाहिए । उष्ण या गरम वस्त्र जैसे स्वेटर, मफलर, शाल आदि को धारण करना चाहिए । सीधी हवा में नहीं बैठना चाहिए तथा थोड़ी मात्रा में उष्ण भोजन लेना चाहिए ।

कुछ औषधियां

इस रोग में निम्नलिखित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग लाभकारी है यथा लक्ष्मी विलास रस, त्रिभुवन कीर्ति रस, संजीवनी वटी, व्योषादि वटी आदि । इनमें से किसी भी एक औषधि का सेवन करें । एक-एक गोली दिन में तीन बार शहद, गरम पानी या गरम दूध के साथ सेवन करवायें । प्रतिश्याय पुराना हो गया हो तो रोगी को हरिद्राखंड, स्फटिका भस्म, श्रृंग भस्म का सेवन करवायें । इस रोग से बचने हेतु अणु तेल की एक-एक बूंद यदि प्रातःकाल दोनों नथुनों में डाली जाए तो रोग दूर रहता है ।

—ए-२/८ तिब्बिया कॉलेज
करोलबाग, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीनोपाज, जिसे आयुर्वेद में आर्तवनाश या रजो निवृत्ति नाम से जाना जाता है। इसका तात्पर्य है कि स्त्री में प्रतिमास आनेवाला मासिकस्राव बंद हो जाता है। यह प्रायः ४० से ५० वर्ष की आयु में होता है परंतु कभी-कभी ५५ वर्ष में भी मिलता है। प्रायः मीनोपाज के पश्चात स्त्री गर्भ धारण नहीं कर सकती, उसके शरीर में प्रजनन स्थान एवं शारीरिक अंग-प्रत्यंगों एवं संस्थानों के क्रिया कलाप एवं

स्त्री के बाह्य जननांगों में त्वचा शुष्क योनि ओष्ठ का छोटे होना। श्रोणी प्रदेश के बाल शुष्क एवं भूरे होना। कभी-कभी योनि प्रदेश में वृद्धावस्था जन्य जलन एवं खुजली तथा मैथुन कष्ट आदि परिवर्तन मिलते हैं।

सामान्यतः शरीर की त्वचा रुक्ष हो जाती है, झुर्रियां पड़ जाती हैं। शरीर की बनावट बेडौल हो जाती है। ओष्ठ एवं ठोड़ी पर बाल उगने लगते हैं।

यह प्रायः ४० से ५० वर्ष की आयु में होता है परंतु कभी-कभी ५५ वर्ष में भी मिलता है। प्रायः मीनोपाज के पश्चात स्त्री गर्भ धारण नहीं कर सकती, उसके शरीर में प्रजनन स्थान एवं शारीरिक अंग-प्रत्यंगों एवं संस्थानों के क्रिया कलाप एवं व्यवहार में विभिन्न प्रकार के लक्षण एवं परिवर्तन प्रकट होते हैं। यह अवस्था कोई रोग नहीं वरन अवस्थागत परिवर्तन है।

स्वास्थ्य

घबराइए मत मीनो पाज कोई रोग नहीं है

● डॉ. दीपिका गुणवंत

व्यवहार में विभिन्न प्रकार के लक्षण एवं परिवर्तन प्रकट होते हैं। यह अवस्था कोई रोग नहीं वरन अवस्थागत परिवर्तन है।

रोग नहीं अवस्थागत परिवर्तन

इस अवस्था में शरीर के अंगों में निम्न परिवर्तन होते हैं।

शरीर में आग-सी निकलती है। चेहरा लाल हो जाता है। पसीना अधिक आता है। चिड़चिड़ापन और बेचैनी की शिकायत रहती है।

घबराहट एवं कभी-कभी सीने में दर्द होना।

सामान्यतः नींद कम आने लगती है, कभी-कभी वहमपन बढ़ जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर में दर्द, आंखों में जलन, एवं प्यास की अधिकता भी पायी जाती है ।

पाचन क्रिया भी प्रभावित होती है, फलस्वरूप कब्ज एवं गैस तथा उदर में भारीपन आदि लक्षण मिलते हैं ।

जोड़ों में दर्द, कमर में दर्द तथा कभी-कभी जोड़ों में जकड़ाहट एवं क्रियाहीनता भी मिलती है ।

मानसिक तनाव एवं नाड़ी अवसाद 'डिपरेशन' के साथ स्त्री अधिक संवेदन शील हो जाती है ।

कभी-कभी रक्त-चाप भी बढ़ जाता है । उपरोक्त अधिकतर लक्षणों की चिकित्सा की इतनी आवश्यकता नहीं है, कुछ परिवर्तन स्वयमेव ही ठीक हो जाते हैं । इन लक्षणों को देखकर स्त्री का इतिहास लेकर वैज्ञानिक तरीके से स्त्री को स्थिति एवं परिवर्तन के कारण समझाने चाहिए । मानसिक तौर पर उसे सहानुभूतिपूर्वक समझना चाहिए ।

- भोजन में सामान्य प्रोटीन तथा कार्बोहाइड्रेट एवं चिकनाई कम लेने की सलाह है ।
- लघु सुपाच्य एवं पौष्टिक भोजन का प्रयोग करें । गरिष्ठ एवं तले, मसालेदार व्यंजन अहितकर है ।
- प्रातःकाल खुली हवा में भ्रमण एवं हल्का व्यायाम हितकर है ।
- जननांगों में विकार जैसे खुजली या मैथुन असहिष्णुता की स्थिति में जननांगों का परीक्षण कर उचित चिकित्सा का निर्देश देना चाहिए ।
- निद्रा संबंधी समस्या, बेचैनी एवं चिड़चिड़ापन दूर करने के लिए नाड़ी बल्य औषध जैसे ब्राह्मी, शंखपुष्पी, जटामांसल एवं बच के योग प्रयोग करने चाहिए ।

स्त्रियों की इस अवस्था में रसायन औषध एवं धातु वृद्धि वृहिद कर औषध का सेवन करना चाहिए— जैसे धागी लौह, आमलकी रसायन, शतावर पाक, च्यवनप्राश, चंद्रप्रभा वटी इत्यादि । इनके अतिरिक्त गर्भाशय पोषक द्रव्य जैसे अशोकारिष्ट, दशमूलारिष्ठ एवं धातु पुष्टि कर रसायन आदि ।

उदर विकार होने पर दीप्त पाचन गुणवाली औषधों के साथ पैतिक उग्रता में साम्य स्वभाव की औषधियों का सेवन करना चाहिए ।

जद : स्वर्ण सूतशेखर रस
प्रवाल पंच्चामृत ।

- अविपात्रिका चूर्ण दिन में दो बार ।
- इन सब के अतिरिक्त जीवनशैली में परिवर्तन की अति आवश्यकता है । तनाव मुक्ति के लिए ईश्वर उपासना, हल्का व्यायाम एक शरीर एक मन के अनुकूल हल्का कार्य अवश्य करें, जिससे वह व्यस्त रहे । युक्तायुक्त आहार-विहार का सेवन ही अधिक लाभकर सिद्ध होता है ।

काम में लग जाओ । तब तुम अपने अंदर इतनी प्रचंड शक्ति का जागरण पाओगे कि उसे धारण करना भी तुम्हें कठिन जान पड़ेगा । —स्वामी विवेकानंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

□ डॉ. सतीश मलिक

मानसिक असंतुलन ?

पंकज कुमार सिंह, वैशाली : आयु २० वर्ष बी. एस-सी. का छात्र हूं । जब मैट्रिक की परीक्षा दे रहा था, तब मानसिक संतुलन बिगड़ गया, फिर कुछ ठीक हो गया । आई. एस-सी. परीक्षा के बाद पुनः बिगड़ गया । मेरे मन में भावना उठती है कि देवी-देवता को गाली दूं, फिर माफी मांगने लगता हूं । माता-पिता को लेकर अश्लील विचार उत्पन्न होते रहते हैं । कभी बैठे हुए लगता है कि पीछे से थप्पड़ मारने कोई आ रहा है । राह चलते किसी को मारने, छेड़ने व गाली बकने आदि का मन करता रहता है । कभी-कभी रोने का मन, चिंता व अस्थिरता बनी रहती है ।

बराबर दुविधा में रहता हूं, ताला बार-बार देखना ; एक बात को बार-बार पूछता हूं । इससे मित्रगण मेरा मजाक उड़ाते हैं । यदि वह हंसकर आपस में बात करें तो लगता है मेरा मजाक उड़ाया जा रहा है । यह क्या रोग है, कृपया दवा लिख भेजें ।

परीक्षा एक तनावपूर्ण स्थिति है । आपकी बीमारी ऐसी स्थिति में उभरकर सामने आ गयी है । आप इस स्थिति के हटने के पश्चात सही भी हो गये । इससे आपको प्रसन्न होना चाहिए कि आप तनावपूर्ण स्थिति के हटने के पश्चात स्वयं को उस स्थिति से उभार लेते हैं । आपको 'आबसैसिव कंपंल्स्व' अस्थिर अवस्था में है । इस बीमारी के लक्षण आपने लिखे हैं । आप पागल कदापि नहीं, यह भी आपके पत्र को पढ़कर कहा जा सकता है । इस बीमारी का आजकल कुछ नयी दवाएं व 'बिहेवियर थैरेपी' द्वारा इलाज संभव है । जिनसे आप बार-बार पूछते हैं अपनी तसल्ली के लिए, उन्हें आपके इस इलाज में 'को-थैरापिस्ट' बनकर सहयोग देना पड़ेगा ।

जीने की राह ?

विजय पाटिल, बड़ौदा : आयु १७ वर्ष व १२वीं का छात्र हूं । मुझ में दूसरों पर क्रोध न करने, शरम व न लड़ने की प्रवृत्ति विद्यमान है । मेरी कक्षा के विद्यार्थी मुझे चिढ़ाने के साथ-साथ धमकी देने पर उतर आते हैं । ऐसे में मैं अपने आपको कोसता हूं, तथा मुझे आत्महत्या करने की बात सूझती है । कृपया जीने की राह बतायें ।

आपको अपने आपको कोसने व आत्महत्या करने की सोचने की आवश्यकता नहीं । ऐसी समस्या बहुत लोगों को होती है । क्रोध करना, लड़ना भी बहुत अच्छी बात तो नहीं, वह भी एक समस्या है । वास्तव में आपकी समस्या है अपने आप को दृढ़ न कर पाना । इसके लिए दृढ़निश्चयी बनने की आवश्यकता है । यही इसका सही इलाज भी है ।

संक्षिप्त रूप में इस समस्या का मूल कारण बचपन में पड़ता है, जब बच्चे को अपनापन जताने का प्रोत्साहन नहीं मिलता, तब वह पहले मां-बाप से, फिर सभी बड़े लोगों से डरने लगता है । आप धीरे-धीरे अपनी बात को खुलकर कुछ ऐसे वातावरण व लोगों में कहना प्रारंभ करें,जहां से विरोध प्रकट होने की गुंजाइश न हो । आपको खेल इत्यादि भी खेलना चाहिए । धीरे-धीरे आप में प्रतिस्पर्धा की भावना जागेगी । आप अपनी आयु के लड़के-लड़कियों के बीच हिचकिचाहट पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काबू पा सकेंगे । यदि आप यह सब सहजता से धीरे-धीरे करेंगे, तब ही धीरे-धीरे क्षमता भी बढ़ेगी व सफलता भी मिलेगी । यदि जल्दी में एकदम बड़ा कुछ पाना चाहेंगे, तो फिर ऐसा न कर सकने पर अपने को कोसेंगे । इससे तनाव, उदासीनता व नकारात्मक सोच के चक्कर में पड़ जाएंगे । इसी से आपको बचना है ।

आपका ही सहारा ?

क. ख. ग. दिल्ली : १७ वर्ष की १२वीं कक्षा की छात्रा हूं । पहले पढ़ाई में बहुत तेज थी तथा मेरी अध्यापिका भी इसी कारण बहुत प्यार करती थी । १०वीं कक्षा में ४ नंबर से प्रथम श्रेणी से रह गयी । ११वीं ठीक थी । १२वीं में बहुत मेहनत की तथा प्रथम श्रेणी की उम्मीद थी । किंतु सप्लीमैंटरी आयी । वास्तव में मुझे छठी कक्षा में ही एक साधु ने बताया था कि १२वीं तक पढ़ोगी । दो लड़कियां और भी वहीं थीं । उसके बारे में जो बताया वह गलत निकला । परंतु मेरे बारे में क्यों सही निकल रहा है । जब भी मैं हंसने की कोशिश करती हूं, तब ही मेरी किस्मत मुझे रुला देती है । सिरदर्द भी बहुत होता है । पढ़ना खूब चाहती हूं, शायद भाग्य में लिखा नहीं । मरने के सिवा कोई रास्ता नहीं दिखायी देता । या फिर अब आपकी सहायता का ही सहारा है ।

साधु की बात जब और लड़कियों के लिए सही नहीं तो आपके लिए कहां सही है ? वास्तव में हम लोग ज्योतिषी, साधु आदि की बात को 'होनी' समझ इसी भावना के वशीभूत हो जाते हैं । और मान लेते हैं कि उनका कहना एक पत्थर की लकीर हो गया है । वास्तव में इसी ग्रंथि को लेकर हम जब कर्म करते हैं, तब डर तो सदैव मन में रहता ही है । आप पहले तो इस ग्रंथि से बाहर निकलें । दूसरे इस बात को समझें कि १०वीं व १२वीं परीक्षा दोनों ही बोर्ड की परीक्षा हैं । महत्त्वपूर्ण होने के नाते वह तनाव भी अधिक पैदा करती हैं । अति अधिक तनाव कार्यकुशलता व क्षमता बढ़ाने के बजाय इनको कम करता है । साथ में सिरदर्द व उदासीनता की भावना उत्पन्न करता है । इन बातों को अच्छी प्रकार समझ लेने के पश्चात, आशा है आप अपने कार्य में जुट जाएंगी । इससे फल भी ठीक मिलेगा ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

क्या मैं रोगी हूं ?

विजय कुमार, कलकत्ता : मेरे चाचा ५० वर्ष के तथा चाची ३२ वर्ष की हैं । चाची से अवैध संबंध थे । अब एक वर्ष के पश्चात वह घर छोड़ आया हूं । परंतु हस्तमैथुन अधिक (कम से कम चार बार रोज) करता हूं । चाची का सुंदर रूप नहीं भुला पाता । वैश्याओं के पास भी जाता हूं । साथ ही सिगरेट, तंबाकू, गांजा, भांग आदि की लत है । दिन में चार बार चिलम पीता हूं । गुस्सा, चिड़चिड़ापन, आंखों में अंधेरा, लिंग में ढीलापन रहना व जलन, यह सब क्या रोग के लक्षण हैं । क्या मुझे यह रोग चाची के शाप से है । क्या करूं ?

आपकी चाची व चाचा की उम्र में बहुत अंतर होने के कारण ही आपसे अवैध संबंध स्थापित हुए । इसमें शाप की कोई बात नहीं, हां आप के मन में जो अपराधबोध भावना है, उससे भी आप परेशान हैं । वैश्यालय जाने से या फिर नशीले पदार्थों के सेवन से कई तरह के रोग उत्पन्न होते हैं, समस्याएं और बढ़ती हैं, कम नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी आंखों में बसे सपने साकार आपके.
आपके हाथों में है उसका भविष्य.

बाल उपहार वृद्धि निधि.

आपके प्यार की तरह,
यह बढ़ता जाए, बढ़ता जाए, बढ़ता ही जाए.

कितना लाड़, कितना दुलार उसकी हर ज़रूरत के लिए. दिनभर का हर पल आप सुरक्षित बनाते हैं उसके लिए. क्या यही वह सही समय नहीं जब आप उसके भविष्य के बारे में भी सोचें ? आज, छोटी सी योजना बनाइए और उसे उज्ज्वल भविष्य का उपहार दीजिए. आप सोचते होंगे. कैसे ? सीधी बात है. आपके लिए हमारे पास है–बाल उपहार वृद्धि निधि. जिसमें आप एक बार निवेश कीजिए या हर साल थोड़ी थोड़ी रकम जोड़ते जाइए. फिर आपके लाड़ले के 21 वर्ष के होने तक निवेश को बढ़ता हुआ देखिए. जबकि आपका लाड़ला लखपति बन जाएगा. जरा सोचिए, यह उपहार उसके कितने काम आएगा ? ऊंची शिक्षा के द्वार खुल जाएंगे. या अपने खुद के बिजनेस में काम आएंगे या अपना छोटा सा घर बनाने में सहायता पहुँचाएगा यह उपहार. 18 साल के होने पर यदि वह चाहे तो साल में दो बार पैसा निकाल सकता है. जबकि बकाया रकम उसके 21 वर्ष के होने तक बढ़ती जाएगी. बाल उपहार वृद्धि निधि. एक दिन आपका लाड़ला आपके गुण गाएगा.

14% डिवीडेंड. हर 3 वर्ष में बोनस

भारतीय यूनिट ट्रस्ट
आपके बेहतर कल के लिए

सभी सिक्योरिटी निवेश के साथ बाज़ार का जोखिम होता है. किसी भी निवेश से पहले अपने निवेश सलाहकार या एजेंट से सलाह अवश्य ले लें.

मुख्य कार्यालय : बम्बई. आंचलिक कार्यालय : जीवन भारती, 13वीं मंजिल, टावर-II, 124, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001. शाखा कार्यालय : ❑ नई दिल्ली : तेज बिल्डिंग, 8-बी, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, फोन : 3712539, 3327339. ❑ जयपुर : आनंद भवन, तीसरा तल, संसार चंद्र रोड, फोन : 65212. ❑ कानपुर : 16/79 ई, सिविल लाईन्स, फोन : 311858. ❑ लुधियाना : सोहन पैलेस, 455, माल रोड, फोन : 50373. ❑ लखनऊ : रिजैंसी प्लाज़ा बिल्डिंग, 5, पार्क रोड, फोन : 232501. ❑ चंडीगढ़ : जीवन प्रकाश, सैक्टर 17-बी, फोन : 543683. ❑ शिमला : 3, माल रोड, फोन : 4203. ❑ आगरा : सी-ब्लाक, जीवन प्रकाश, संजय पैलेस, महात्मा गांधी रोड. ❑ इलाहाबाद : यूनाईटेड टावर्स, 53, लीडर रोड, फोन : 53849. ❑ वाराणसी : पहला तल, डी-58/2ए-1, भवानी मार्किट, रथयात्रा, फोन : 64244. ❑ देहरादून : दूसरा तल, 59/3 राजपुर रोड, फोन : 23620.

UTI-4162-H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होतीं । आप अवश्य ही रोगी हो गये हैं । आपको मनोचिकित्सक द्वारा इलाज की जरूरत है । नशीले पदार्थों की लत भी छुड़ाने के लिए खास नशामुक्ति केंद्र हैं—कलकत्ता में भी यह सेवाएं उपलब्ध हैं । आपको चाहिए कि तुरंत अपना इलाज कराएं । अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें । तब ही कुछ कर पाएंगे । इसमें शाप की कोई बात नहीं ।

मुक्ति दिलाएं।

रमेश कुमार, दरभंगा : १९ वर्ष का बी. ए. का छात्र हूं । करीब १ वर्ष से पेशाब बार-बार आता है । सर में भारीपन व स्मरण शक्ति भी कमजोर हो गयी है । मन इधर-उधर भटकता है । भूख में कमी हो गयी है । ऐसे लगता है कि मेरी ओर कोई देख रहा है । और मेरे बारे में ही सोच रहा है । इससे मुक्ति दिलाएं । आपका आभारी रहूंगा ।

यह सब लक्षण तनाव व अवसाद के हैं, जिसके कई कारण हो सकते हैं । यदि आप हमारा 'तनाव से मुक्ति' कालम पढ़ते रहते हैं तो इन कारणों से भी आप परिचित होंगे । इलाज तो तब ही संभव है, जब आप स्वयं मनोविश्लेषण कर, कुछ हद तक यह जान लें कि आपके तनाव का क्या कारण है । अभी तो यह जान लेना आवश्यक है कि वास्तव में कोई आपकी तरफ नहीं देखता, न ही सोचता है । तत्पश्चात किसी मनोचिकित्सक से संपर्क भी स्थापित करें, ताकि सही इलाज करा सकें ।

कामुक तो नहीं ?

अ. बिलासपुर, म. प्र. : मैं बीस वर्षीया विज्ञान स्नातक हूं । समस्या है कि जब मैं खाली होती हूं, तब मन में कई प्रकार के गलत विचार आते हैं । ज्यादातर सैक्स के बारे में ही सोचती हूं । पिछले तीन वर्षों से हस्तमैथुन की आदत है । कई बार इसे छोड़ने का असफल प्रयास कर चुकी हूं । मन विचलित रहता है । एकाग्रता व संकल्प की शक्ति क्षीण हो गयी है । पिछली गरमी की छुट्टियों में दीदी का १९ वर्षीय लड़का आया तो उससे लगाव हो गया व सहवास के अतिरिक्त शारीरिक सुख लिया । क्या यह सब पाप था ? मैं उससे बड़ी थी, मुझे आत्मग्लानि होती है । सब भूलना चाहती हूं । कहीं यह सब फिर न हो जाए ? क्या मैं कामुक हूं ? कृपया अच्छी सलाह दें ।

कामुकता तो सभी स्त्री-पुरुषों में होती है, परंतु अब खुले वातावरण में सैक्स संबंधी समस्याएं भी सामने आ रही हैं । पहले अपने भीतर ऐसी इच्छाएं दबायी जाती थीं । स्त्रियां पुरुषों से कहीं अधिक इस प्रकार का व्यवहार करती रहीं । अब और भी आवश्यकता हो गयी है कि आप समझें कि आप वास्तव में अपने जीवन को क्या मोड़ देना चाहती हैं ? आत्मग्लानि व पाप की भावना से जीना भी तो अच्छी बात नहीं । मन में द्वंद्व व तनाव के कारण एकाग्रता व संकल्प करने की क्षमता में कमी आयी है । संयम बरतने की इस समय सबसे अधिक आवश्यकता है । चूंकि आपके समाज में अभी पूरी तरह स्वच्छंदता भी नहीं । आपकी सैक्स इच्छा घर की चारदीवारी में अपने से छोटे लड़के को लेकर सामने आ गयी । यदि यह इच्छा किसी संबंधी को न लेकर किसी और लड़के को लेकर सामने आती तो आपको शायद ऐसा महसूस न होता ।

फिर भी ऐसी स्त्रियां कम ही होंगी जो अपनी सैक्स समस्याओं को खुलकर व्यक्त कर पाती हैं । यही क्षमता आपको इस स्तर से ऊपर भी ले आएगी । ऐसा हमारा विश्वास है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

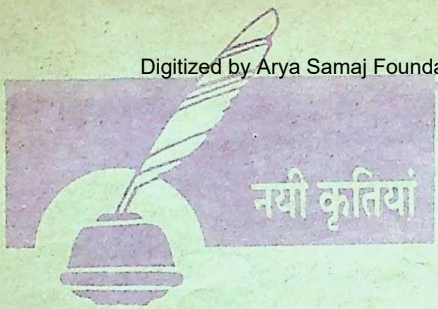

सबको सन्मति दे भगवान : म. प्र. के वरिष्ठ पत्रकार श्री मायाराम सुरजन के समकालीन राजनीति को आधार बनाकर समय-समय पर लिखे गये विभिन्न लेखों का संकलन है, इनका मध्य प्रदेश के दैनिक पत्र देशबंधु में प्रकाशन हो चुका है । देश के मौजूदा हालात आज की राजनीतिक व्यवस्था, मर्यादाहीन नीतियां, सांप्रदायिकता, जातिवाद को बढ़ावा देती स्वार्थगत राजनीति का स्पष्ट चित्रण करने के साथ-साथ उसकी सटीक आलोचना व इससे होनेवाली दूरगामी हानियों के विषय में चेताते हुए ये लेख अनायास ही आम पाठक का ध्यान देश की दुरावस्था की ओर दिलाकर इस विषय में 'गहन सोच की आवश्यकता' पर बल दिये जाने का आग्रह करते हैं । लेखक की खूबी यह है कि ये लेख विषय की दृष्टि से ही नहीं पठनीयता एवं प्रस्तुतीकरण की कसौटी पर भी खरे उतरते हैं ।

सबको सन्मति दे भगवान :
लेखक : मायाराम सुरजन. प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, मूल्य : ९० रुपये ।

श्रेष्ठ आंचलिक कहानियां— ऋता शुक्ल की आंचलिक भावभूमि पर आधारित कहानियों का संकलन है । अधिकतर कहानियों के पात्र गांव की धरती से जुड़ा आम व्यक्ति हैं जिनकी समय-समय पर उठनेवाले विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति लेखिका ने सशक्त ढंग से की है । मानव-हृदय की सोच, मानवीय संबंध और पात्रों की मूल संवेदनाओं का सहज एवं स्वाभाविक चित्रण इन कहानियों की खास विशेषता है । विचार अभिव्यक्ति के लिए लेखिका ने सहज, सरल भाषा शैली का सहारा लिया है, जो पढ़ने की ललक अनायास जागृत करता है ।

श्रेष्ठ आंचलिक कहानियां—
लेखिका : ऋता शुक्ल, प्रकाशक : कादम्बरी प्रकाशन, दिल्ली, मूल्य : ७० रुपये ।

शब्दार्थ विचार कोष

प्रायः हम बातचीत करते समय अज्ञानवश ऐसे शब्दों का प्रयोग कर जाते हैं, जो अर्थों में मूलतः समान होते भी कई बार आशय में भिन्न होते हैं जिससे एक के स्थान पर दूसरे का प्रयोग करके हम बात का अर्थ ही बदल देते हैं— प्रस्तुत पुस्तक में सुप्रसिद्ध भाषा-तत्वज्ञ आचार्य रामचंद्र वर्मा ने ऐसे ही कुछ पर्याय शब्दों का विवेचन, उनके सूक्ष्म भेदों-उपभेदों का तुलनात्मक निरुपण किया है, जिसका अध्ययन पाठकों के लिए निस्संदेह ज्ञानार्जन का अवसर होगा । यह पुस्तक उन जिज्ञासु प्रबुद्ध पाठकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगी जो अपनी भाषा, अभिव्यक्ति क्षमता का सुधारकर उसमें निरंतर विकास करना चाहते हैं ।

शब्दार्थ विचार कोष :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक : आचार्य रामचंद्र वर्मा, प्रकाशक : राजपाल एंड संज, दिल्ली, मूल्य : ३५० रुपये ।

सचित्र वन्य प्राणी और पर्यावरण—

पर्यावरण से संबंधित विषयों में लेखक की विशेष रुचि तथा पकड़ रही है । यही कारण है कि इससे पूर्व भी उनके द्वारा 'गंगा और उसका पर्यावरण' तथा 'मध्य हिमालय में वनस्पति पर्यावरण' पर पुस्तकें लिखी गयी हैं । प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने 'पर्यावरण और वन्य प्राणियों' के मध्य अनन्य संबंध पर प्रकाश डालने की सफल चेष्टा की है । विभिन्न पशु-पक्षियों के विषय में विस्तार से जानकारी देते हुए लेखक ने बताया है कि वे पर्यावरण का एक हिस्सा हैं, उसके सुरक्षा व संरक्षण में सहयोगी हैं अतः मनुष्य को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इन्हें भी जीवन-यापन का उचित अवसर व सुविधा मिल सके ताकि इनका अस्तित्व बना रहे ।

सचित्र वन्य प्राणी और पर्यावरण —
लेखक : डॉ. चन्द्रशेखर आजाद, प्रकाशक : तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली, मूल्य : १०० रुपये ।

लोकतंत्र : नया व्यक्ति नया समाज—

युवाचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखी गयी यह पुस्तक उनकी पूर्व-पुस्तकों की ही भांति अध्ययन और गहन चिंतन का परिणाम है । आज की भ्रष्ट व्यवस्था, दूषित राजनीति और भ्रमित युवामानस तथा उनसे उत्पन्न युगीन समस्याएं—का विस्तार से उल्लेख किया है लेखक ने इस पुस्तक में । किंतु इतना ही नहीं इन समस्याओं से मुक्ति के मार्ग काभी सहज ही वर्णन है इसमें। व्यवस्था बदलने के लिए आवश्यक है— समाज में बदलाव, समाज का बदलाव मनुष्य के परिवर्तन पर आधारित है और मनुष्य के हृदय-परिवर्तन के लिए आवश्यकता है।उसमें पुनः नैतिकता, अहिंसा, अपरिग्रह जैसे गुणों का संचार हो । युवाचार्य महाप्रज्ञ एक प्रबुद्ध चिंतक हैं । उन्होंने जीवन-विकास के नये क्षितीज उन्मुक्त किये हैं । उनके प्रवचन और उनके लेख हमेशा एक नयी दृष्टि देते हैं । उनकी कृतियां मात्र जैन समाज के लिए नहीं अपितु संपूर्ण भारतीय समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी ।

लोकतंत्र : नया व्यक्ति नया समाज—
लेखक : युवाचार्य महाप्रज्ञ, प्रकाशक : जैन विश्व भारती, नागौर (राज.) मूल्य २५ रुपये ।

अख्तर शीरानी : फन और शख्सियत

सुप्रसिद्ध शायर जांनिसार अख्तर के शब्दों में 'अख्तर शीरानी को बीसवीं शताब्दी का सबसे प्रमुख रोमांसवादी शायर कहा जा सकता है ।' अख्तर शीरानी टोंक में जन्मे थे और उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप यह कृति,टोंक के ही एक साहित्य प्रेमी श्री हनुमान सिंहल ने लिखी है । यह कृति दो खंडों में विभाजित है । पहले खंड में अख्तर शीरानी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन के अनेक प्रसंग दिये गये हैं । दूसरे खंड में उनकी नज्में हैं । प्रस्तुत हैं उनकी कुछ पंक्तियां :

जिंदगी की हकीकत आह न पूछ
मौत की वादियों में एक आवाज
जो कभी ख्वाब में भी आ जाएं तो कुम्हला जाएं
ऐसी परियों में गुजारी है जवानी हमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

davp 93/437

गर्भ निरोधक गोलियां

दो रुपये प्रति पैकेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ओ देस से आनेवाला' अख्तर शीरानी की एक प्रसिद्ध नज़्म है । इसे प्रकृति पर लिखी गयीं कुछ बेहतरीन नज़्मों में शामिल किया जाता है ।

लेखक : हनुमान सिंहल, प्रकाशक : साहित्य कला संगम, १ मास्टर रामनिवास मार्ग, टोक-१, मूल्य : प्रचास रुपये ।

जपसूत्रम : स्वामी प्रत्यगात्मानंद सरस्वती की यह महत्त्वपूर्ण कृति मूल रूप से संस्कृत और बंगला में छह खंडों में प्रकाशित हुई थी । अब इस कृति के चार खंडों का हिंदी में अनुवाद उपलब्ध है । अनुवादक हैं श्री एस. एन. खंडेलवाल । श्री खंडेलवाल महा महोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराज की अनेक कृतियों को भी हिंदी में प्रस्तुत कर चुके हैं । स्वामी प्रत्यगात्मानंद का पूर्व नाम श्री प्रभथनाथ मुखोपाध्याय था । वे श्री अरविंद के भी साथ रहे । स्वाधीनता-संग्राम में भी उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया । वे पार्वात्य एवं पाश्चात्य दर्शन के उद्‌भट विद्वान थे । 'जप सूत्रम' उनकी एक महत्त्वपूर्ण कृति है । म. म. प. गोपीनाथ कविराज ने इसे एक 'अपूर्व ग्रंथ' निरूपित किया था ।

('जप सूत्रम' के दो खंडों का अनुवाद सुश्री प्रेमलता शर्मा ने भी किया है । इन खंडों के प्रकाशक हैं—विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी । ये सजिल्द हैं ।)

जप सूत्रम (चार खंड)
लेखक : स्वामी प्रत्यगात्मानंद सरस्वती; अनुवादक : एस. एन. खंडेलवाल; प्रकाशक : भारतीय विद्या भवन, पो. बा. नं. ११८८, कचौड़ी गली, वाराणसी । मूल्य : प्रत्येक खंड सौ रुपये ।

कुछ पठनीय उपन्यास एवं कहानी संग्रह

(१) यादों का कारवां, लेखक— कनकलता, जागृति प्रकाशन (बिहार), मूल्य— ४० रुपये; (२) हिंदी की चर्चित लघु कथाएं, सं.— डॉ. सतीशराज पुष्करणा, राम यतन प्रसाद यादव, अयन प्रकाशन (नयी दिल्ली), मूल्य— ७० रुपये; (३) धापू, लेखक— चन्द्रशेखर दुबे, दिशा प्रकाशन (दिल्ली), मूल्य— ६० रुपये; (४) कब सोता है यह शहर, लेखक— रूप देवगुण, अयन प्रकाशन (नयी दिल्ली), मूल्य— ४० रुपये, (५) राज श्री, लेखक श्याम नारायण विजयवर्गीय, विवेक पब्लिशिंग हाउस (जयपुर), मूल्य— ७५ रुपये ।

कुछ नये काव्य संग्रह

(१) कीर्ति कुमार सिंह की दार्शनिक कविताएं, लेखक— कीर्ति कुमार सिंह, अवध प्रकाशन (इलाहाबाद), मूल्य— ७० रुपये, (२) और कितनी दूर लेखक— विद्या गुप्ता, श्री प्रकाशन दुर्ग (म. प्र.), मूल्य— ५० रुपये, (३) उत्तरायणयान, लेखक— ऋषिवंश, साहित्य भवन प्रा. लि. (इलाहाबाद), मूल्य— ६० रुपये, (४) मंथन, लेखक— बृजलाल हांडा, साहित्य भवन प्रा. लि. (इलाहाबाद), मूल्य— ४० रुपये, (५) सप्त पदी-१, सं.— देवेन्द्र शर्मा 'इंद्र', अयन प्रकाशन (नयी दिल्ली), मूल्य— ६० रुपये, (६) कुहासे की धूप, लेखक— डॉ. मधु भारतीय, इंडोविजन प्राइवेट लिमिटेड (गाजियाबाद), मूल्य—६० रुपये, (७) पाटल प्रिय, लेखक— हरीशंकर द्विवेदी, प्रिय दर्शिनी प्रकाशन (नयी दिल्ली), मूल्य— २५ रुपये, (८) जिंदगी के चांद सूरज, लेखक— डॉ. गोपाल बाबू शर्मा, पाठक प्रकाशन (अलीगढ़), मूल्य— ६० रुपये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष

आर्थिक एवं सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी । पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । नवीन कार्यों में उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा । न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा । प्रवास में पीड़ा के बावजूद उपलब्धि होगी । मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यों में धन व्यय होगा ।

वृषभ

उच्चाधिकारियों की अनुकंपा रहेगी । आजीविका की दिशा में अभीष्ट पूर्ति होगी । वांछित पद-परिवर्तन अथवा पदोन्नति का योग है । संभाषण में संतुलन हितकर होगा । प्रवास में परेशानियों की अधिकता होगी । अतिथि आगमन से प्रसन्नता होगी । संपत्ति कार्यों में सावधानी हितकर होगी । परोपकारी कार्यों से पीड़ा होगी ।

मिथुन

पुरुषार्थ तथा पराक्रम से प्रतिकूल स्थितियों में विजय मिलेगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा । प्रवास की अधिकता होगी । रक्त संबंधियों से संतुलित व्यवहार रखें । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करें । आमोद-प्रमोद में व्ययों की अधिकता होगी । उत्तराधिकारियों के सहयोग से शत्रु-पक्ष का शमन होगा ।

कर्क

मास में आर्थिक उन्नति होगी । आय के नवीन संसाधनों का योग होगा । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक रहेगा । नवीन कार्यों की अधिकता होगी । संपत्ति कार्यों में प्रियजनों के सहयोग से सफलता मिलेगी । प्रवास से मांगलिक कार्यों की पूर्ति होगी । परोपकारी कार्यों से यश वृद्धि होगी ।

सिंह

मास में अभीष्ट पूर्ति होगी । प्रियजनों के सहयोग से शत्रु पक्ष का शमन होगा । पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । मांगलिक एवं धार्मिक कार्यों में धन व्यय होगा । अधीनस्थजनों के सहयोग से उल्लेखनीय प्रगति होगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से अभीष्ट प्राप्ति होगी । व्यर्थ संभाषण से विरोधाभास होगा ।

कन्या

मास में नवीन योजनाओं से भाग्योदय होगा । आजीविका की दिशा में प्रयास सार्थक होंगे । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी । परोपकारी कार्यों से पीड़ा होगी । विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय

ग्रहस्थिति : सूर्य १३ फरवरी से कुंभ में, मंगल २६ से कुंभ में, बुध कुंभ में, शुक्र ८ से कुंभ में, शनि कुंभ में, राहू वृश्चिक में, केतु वृषभ में, हर्षल ९ से मकर में, नेप्च्यून धनु में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व और त्योहार

३ कालाष्टमी, ६ षटतिला एकादशी, ८ भौम प्रदोष, १० स्नानदान, श्राद्ध की दर्श अमावस्या, मौनी अमावस्या, १४ वैनायकी गणेश चतुर्थी, वरद चतुर्थी, १५ बसंत पंचमी, १८ अचला सप्तमी, २२ जया एकादशी, २३ प्रदोष व्रत, २५ माघी पूर्णिमा, २८ संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत ।

होगा । शत्रु पक्ष के गुप्त षड्यंत्रों से सावधानी रखें । मनोरंजन, भ्रमण, आमोद-प्रमोद से व्ययों की अधिकता होगी ।

तुला

नवीन योजनाओं के क्रियान्वयन से प्रसन्नता होगी । प्रियजन के सहयोग से प्रतिपक्ष से सुलह होगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । शत्रु-पक्ष का शमन होगा । परोपकारी कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी । संपत्ति संबंधी लंबित समस्या का समाधान होगा । आजीविका की दिशा में उच्चाधिकारियों से सहयोग मिलेगा ।

वृश्चिक

मास उल्लास तथा उत्साहवर्धक होगा । साहसिक प्रयासों से उत्कृष्ट सफलता मिलेगी । कार्यों की अधिकता से अस्थिरता का उदय होगा । पारिवारिक सहयोग से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । शत्रु पक्ष का पराभव होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी ।

धनु

आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । नवीन स्थान की यात्रा होगी । संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय होगा । प्रवास में सतर्कता हितकर होगी । वाणी पर नियंत्रण रखें । उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी ।

मकर

आत्म विश्वास तथा साहसिक प्रयासों से उत्कृष्ट सफलता मिलेगी । धनागम के अतिरिक्त संसाधनों का उदय होगा । प्रवास से कीर्ति तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी । पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । संपत्ति कार्यों में विद्यमान अवरोध दूर होगा । प्रियजनों कीअस्वस्थताचिंतनीय होगी ।

कुंभ

मास में सावधानी तथा संयम रखें । आंतरिक शत्रुता से स्वल्प पीड़ा होगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से प्रतिकूल स्थितियों का शमन होगा । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता रहेगी । जोखिमपूर्ण कार्यों में सतर्कता रखें । न्यायालयीन कार्यों में विद्यमान अवरोध दूर होगा ।

मीन

मास में कार्यों की अधिकता होगी । पारिवारिक एवं मांगलिक कार्यों की अधिकता होगी । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में उपलब्धिदायी अवसरों का उदय होगा । आत्मविश्वास तथा साहसिक प्रयासों से शत्रु पक्ष का पराभव होगा । आमोद-प्रमोद की अधिकता होगी । न्यायालयीन विवादों में विजय मिलेगी ।

— ज्योतिषधाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर,
गोविंदपुरा, भोपाल (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक समाचार

के.के. बिड़ला फाउंडेशन पुरस्कार

सरस्वती सम्मान

नयी दिल्ली । प्रख्यात नाटककार विजय तेंडुलकर को वर्ष १९९३ के सरस्वती सम्मान के लिए चुना गया । श्री तेंडुलकर को उनकी कृति 'कन्यादान' के लिए पुरस्कृत किया जाएगा । उल्लेखीय है यह सम्मान प्रतिवर्ष किसी भारतीय नागरिक की एक ऐसी उत्कृष्ट साहित्यिक कृति को दिया जाता है, जो भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित किसी भी भाषा में सम्मान वर्ष से ठीक पहले के दस वर्ष की अवधि में प्रकाशित हुई है । इसकी सम्मान राशि ३,००,००० रुपये है ।

शंकर पुरस्कार

प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. रघुवंश को वर्ष १९९३ के शंकर पुरस्कार के लिए चुना गया । प्रो. रघुवंश को उनकी कृति 'मानवीय संस्कृति का रचनात्मक आयाम' के लिए पुरस्कृत किया जाएगा । इसके लिए उन्हें एक लाख रुपये की पुरस्कार राशि दी जाएगी ।

व्यास सम्मान और श्री माथुर

हिंदी के प्रख्यात कवि गिरिजा कुमार माथुर को वर्ष १९९३ के व्यास सम्मान के लिए चुना गया । श्री माथुर को उनके कविता संग्रह 'मैं वक्त के हूं सामने' के लिए पुरस्कृत किया जाएगा ।

दुर्भाग्य से श्री माथुर का अचानक निधन हो गया और यह पुरस्कार वे स्वयं नहीं ले सकेंगे । यह पुरस्कार मिलेगा उनके परिवार को ।

अन्य पुरस्कार

वाचस्पति पुरस्कार (१९९३) : प्रो. राजेन्द्र मिश्र : संस्कृत काव्य-कृति : जानकी जीवनम्
बिहारी पुरस्कार (१९९३) : हरीश भादानी : काव्य कृति पितृकल्प

क्रीड़ा के लिए

के.के. बिड़ला फाउंडेशन पुरस्कार के लिए बिलियर्डस चैंपियन गीत सेठी और शतरंज के ग्रैंड मास्टर विश्वनाथन आनंद को चुना गया । इसके लिए उन्हें पचास हजार रुपये की पुरस्कार राशि दी जाएगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजत जयंती समारोह

हिंदी की प्रमुख प्रकाशक संस्था 'किताबघर' के रजत जयंती समारोह के तत्वावधान में कथा-प्रसंग का आयोजन किया गया । इस अवसर पर 'कहानी के विगत पच्चीस वर्ष : दशा और दिशा' विषय पर सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. शिवप्रसाद सिंह की अध्यक्षता में चर्चा हुई । लगभग तीन घंटे तक चलनेवाले इस कथा-प्रसंग में राजधानी तथा बाहर से आये अनेक लेखक कई पत्रकार, प्रकाशक आदि उपस्थित थे ।

बाल-साहित्यकार शमशेर अ. जान पुरस्कृत

नयी दिल्ली । 'एसोसिएशन ऑफ राइटर्स एंड इलेस्ट्रेटर्स का चिल्ड्रेन (ए. डब्लयू आई. सी.) द्वारा वर्ष १९९३ का 'ए. डब्लयूं. आई. सी. सोनिया मेमोरियल एवार्ड' बाल-साहित्य के लिए श्री शमशेर अ. खान एवं बाल-साहित्य चित्रकारिता के लिए श्री जगदीश जोशी को दिया गया । यह पुरस्कार प्रथम बार शुरू किया गया है ।

ज्ञानपीठ पुरस्कार

उड़िया के उत्कृष्ट कवि डॉ. सीताकांत महापात्र को वर्ष १९९३ के प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए चुना गया । डॉ. महापात्र को पुरस्कार स्वरूप दो लाख रुपये की राशि, वाग्देवी की प्रतिमा तथा प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जाएगा । ज्ञानपीठ पुरस्कार पानेवाले वह उन्तीसवें लेखक हैं ।

प्रथम यूरोपीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

चित्र में बायें से दायें—
डॉ. सुरेंद्र अरोड़ा, डॉ. मारिया नेगीयेसी, लेखक सुरेश चन्द्र शुक्ल, डॉ. रूपर्ट स्नेल, विद्वान लेखक एवं हाईकमीश्नर डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी, मैनचेस्टर (यू.के.) में आयोजित प्रथम अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में ।

कादम्बिनी क्लब समाचार

संगोष्ठी का आयोजन

अनूपगढ़ । कादम्बिनी क्लब द्वारा एक सफल संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. एस. पी. शर्मा (सर्जन) ने की एवं मुख्य अतिथि थे पंडित हरिशचन्द्र शर्मा । संगोष्ठी में भाग लेने वालों में मुख्य गणमान्य व्यक्तियों में श्री नरेन्द्र सिंह एडवोकेट, श्री विशनदास चुग, भगवाना राम सारस्वत पत्रकार, मोहनलाल चौहान महामंत्री भाजपा चेतराम सेवदा सदस्य ब्लाक कांग्रेस (इ) सतीश शर्मा ग्रामीण बैंक व्यवस्थापक श्री सुरेश अग्रवाल, डॉ. दीवान चंद अरोड़ा, मदनगोपाल चुग थे । कार्यक्रम का सफल संचालन श्री गोपाल भारती ने किया । इस संगोष्ठी के बाद इस क्लब के प्रति नये-नये लोगों में उत्सुकता जागृत हुई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

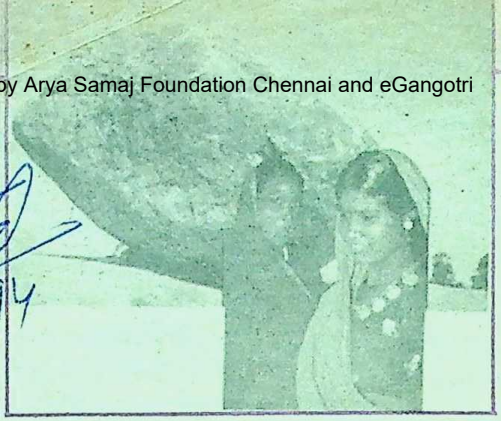

समस्या पूर्ति : १७३ ◆ वन में पत्थर में

प्रथम पुरस्कार

नीला अंबर पसरा ऊपर, भू से मिला क्षितिज में ।
मानो नील चंदोवा ताने, खड़ी प्रकृति है वन में ।।
शिला भार-सी निर्धनता भी, पैठ सकी न मन में ।
पत्थर में हों भले दरारें, दरक नहीं है इनमें ।।
श्रम, संतोष, सरलता आदिक भूषण इनके तन में ।
क्यों न खिलें ये फूल अनोखे, इस वन में पत्थर में ।।

—केशव प्रसाद वाजपेयी
टाइप III/६,
डाक—तार कॉलोनी, मवाना रोड, मेरठ (उ. प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

ऊपर नीला आकाश, धरा का नीरव प्रांतर है
झिर-झिर शिशिर समीर, कांपता तन-मन थर-थर है
ऐसे में आ, पास ; बहुत कुछ आंखें कहती हैं ।
गगन मापने तभी थिरकतीं पांखें रहती हैं ।
युग-युग से विश्वास संजोये आतुर अंतर में—
क्या कुछ ढूंढ़ रही बनजारन,वन में पत्थर में ।

—मतिकांत मधुव्रत
११ प्रोफेसर्स कॉलोनी
आशानंदपुर, भागलपुर (बिहार)

तृतीय पुरस्कार

ढूंढ़-ढूंढ़ कर हार गया नर पता नहीं पाया उसका ।
लखा अलख को उसी नूर को सत्य एक ही था सबका ।।
मंदिर-मसजिद,तीरथ पानी आसमान में घर-घर में ।
घट-घट व्यापी सदा अलेपा देखा वन में पत्थर में ।।

—इंदुबाला बाड़मेरा
बाठड़ियों का चौक, पो. नागौर (राज.)

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

होली पर विशेष

मासिक प्रकाशन अप्रैल ९४

कादम्बिनी

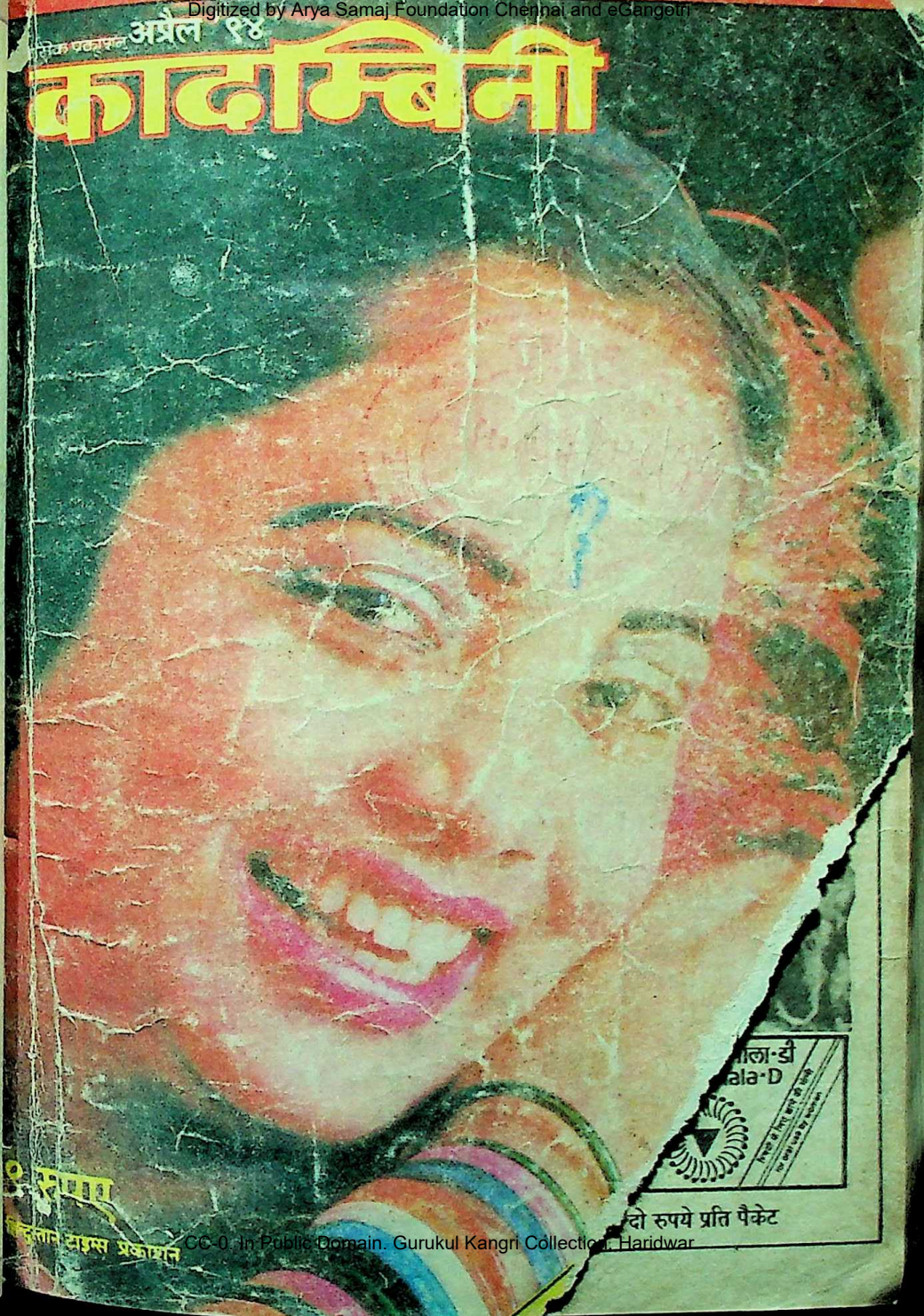

मूल्य

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होमवर्क भी साथ-साथ, और सवाल भी साथ! जब ड्राइंग भी साथ-साथ, तो मॉर्टन क्यों न साथ!

MORTON
SWEETS

वे
स्कूल के दिनों का आनन्द कुछ अलग
बढ़जाता है। मेरे परिवार की तो
कृष्ट शुद्धता और स्वादिष्ट तथा
ढूंढ़-ढूंढ़ रोज़ और चीनी की पौष्टिकता
लखा अल एवं कोकोनट कुश्रीज़
सबका ॥ रोन्स, मैंगोकिंग एवं
मंदिर-मसजिद, त ज़ाज़वाव स्वाद !
घट-घट व्यापी सदा

ही है। फिर मॉर्टन मिल-बाँट कर खाने से
सदा से ही यह पहली पसंद
साथ ही अनेकानेक
से भरपूर।
रोज़ एक्लेयर्स,
अन्य अनेकों सुप्रीम
मनलुभावन

टिफिन का आनन्द और भी
रही है—मॉर्टन।
जायकों में उपलब्ध—क्रीमयुक्त दूध,
चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ,
स्वादों में उपलब्ध।

मन का
नूपम माधुर्य

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड
मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार

दी हिन्दुस्तान टाइ
कस्तूरबा

यू. ईगल गैंगेज मुगर एण्ड इन्डस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापारचिन्ह है। किसी भी प्रकार से व्यापारचिह्न अधिकारों का उल्लंघन अभियोजनीय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक गोली रोज

गर्भ निरोधक गोलियां

दो रुपये प्रति पैकेट

KVP 93/437

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

१. अदम्य—क. वीर, ख. धृष्ट, ग. जो दबाया न जा सके, घ. साहसी ।

२. आशातीत—क. बीती आशा, ख. आशा करने योग्य, ग. पूरी होने की आशा, घ. आशा से अधिक ।

३. धृष्टमानी—क. ढीठ, ख. अवज्ञाकारी, ग. उद्दंड, घ. निर्लज्ज ।

४. परिपंथ— क. उल्टा चलनेवाला, ख. मार्ग रोकनेवाला, ग. चक्कर काटनेवाला, घ. लंबा मार्ग ।

५. कुलांगार— क. लंपट, ख. उछलकूद करनेवाला, ग. कुल का नाश करनेवाला, घ. जिसके कुल का क्षय हो गया हो ।

६. ध्येय— क. ध्यान करने योग्य, ख. धारण करने योग्य, ग. सीमा, घ. उद्देश्य ।

७. संलोड़न— क. लोटना, ख. ढुलकाना, ग. झकझोरना, घ. हिलना ।

८. ध्वंसन— क. जमीन में दबाना, ख. नाश, ग. विलोप, घ. भंग ।

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हो, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

९. संरोधन— क. झगड़ना, ख. मुकाबला करना, ग. रोकना, घ. दमन ।

१०. कुलकानि— क. कुल की मर्यादा, ख. पारिवारिक परंपरा, ग. कुल की समाप्ति, घ. परिवार की उन्नति ।

११. अदायाद— क. जो बदलने योग्य न हो, ख. चुकाने में असमर्थ, ग. जो कुछ देने में असमर्थ हो, घ. उत्तराधिकार-रहित ।

१२. परिनिष्ठित— क. शुभ, ख. कुशल, ग. पूर्णतया निपुण, घ. सुरक्षित ।

१३. परिणेया— क. पत्नी, ख. ब्याहने योग्य, ग. जिससे प्रेम किया जाए, घ. प्रीति करने योग्य ।

१४. परिपूत— क. स्वच्छ, ख. पवित्र, ग. बिलकुल शुद्ध किया हुआ, घ. पौत्र ।

उत्तर

१. ग. जो दबाया न जा सके, प्रबल । उसने **अदम्य** साहस का परिचय दिया । अ+दम्य (व्युत्.-दम्) ।

२. घ. आशा से अधिक । परीक्षा में उसे **आशातीत** सफलता मिली । आशा (व्युत्.-अश्) +अतीत (व्युत्.-अति) ।

३. क. ढीठ, घमंडी । **धृष्टमानी** होना शौर्य का प्रदर्शन नहीं है । धृष्ट (व्युत्.-धृष) +मानी (व्युत्.-मान् ।

४. ख. मार्ग रोकनेवाला, अवरोधक । उन्नति के मार्ग में कोई **परिपंथ** होना घातक है । (परि+पंथ) ।

५. ग. कुल का नाश करनेवाला । **कुलांगार** का जीवन अभिशप्त है । कुल+अंगार (अंग्+आरन्) ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. क. ध्यान करने योग्य । महापुरुषों के कथन **ध्येय** होते हैं । घ. उद्देश्य, लक्ष्य । जीवन का **ध्येय**सदैव उच्च होना चाहिए । (व्युत्.-ध्यै)

७. ग. झकझोरना, हिलाना । संकटमय जीवन के **संलोड़न** से मनुष्य बहुत कुछ सीख सकता है । (व्युत्-सम्+लोड्) ।

८. ख. नाश, क्षय । युद्ध मानव-सभ्यता के **ध्वंसन** की कुचेष्टा है । (व्युत्-ध्वंस) ।

९. ग. रोकना, घ. दमन करना । दुष्प्रवृत्तियों के **संरोधन** का प्रयास करना चाहिए । (व्युत्-सम्+रुध्) ।

१०. क. कुल की मर्यादा । मनुष्य को **कुलकानि** का सदैव ध्यान रखना चाहिए ।

११. घ. उत्तराधिकार-रहित । यह संपत्ति **अदायाद** है । अ+दायाद (व्युत्.-दा) ।

१२. ग. पूर्णतया निपुण । सतत् परिश्रम से ही मनुष्य किसी कला में **परिनिष्ठित** होता है । (परि+निष्ठित) ।

१३. ख. ब्याहने योग्य (लड़की) । निर्धन परिवार में **परिणेया** पुत्री प्रायः चिंता का कारण होती है ।

१४. ग. बिलकुल शुद्ध किया हुआ । यह **परिपूत** धान्य है । (परि+पूत) ।

पारिभाषिक शब्द

Elementary	=प्रारंभिक
Basic	=आधारी/मूल/बुनियादी
Breach of law	=विधि-भंग/कानून तोड़ना
Breach of trust	=विश्वास-भंग
Vote of censure	=निंदा-प्रस्ताव
Vigilance	=सतर्कता
Channel	=माध्यम
Ensuing	=आगामी
Ensure	=आश्वस्त करना
Entitle	=हकदार होना या बनाना

ज्ञान-गंगा

नास्य क्षीयन्त ऊतयः ।

(ऋग्वेद ६/४५/३)

भगवान के रक्षणों में कभी कमी नहीं आती ।

असिद्धार्था निवर्तन्ते न हि धीराः कृतोद्यमाः ।

(कथासरित्सागर ५/३/१४)

उद्यमी धीर काम पूरा किये बिना नहीं लौटते ।

नियन्ता चेन्न विद्येत न कश्चिद् धर्माचरेत् ।

(विदुर नीति ६८/४५)

यदि कोई नियम और नियंत्रण में रखनेवाला न हो, तो कोई धर्म न करे ।

ऋते नियोगात् सामर्थ्यमवबोद्धुं न शक्यते ।

(वाल्मीकि रामायण ६/१७/५२)

काम में लगाये बिना किसी की क्षमता नहीं जानी जा सकती ।

नोदयाय विनाशाय बहुनायकता ध्रुवम् ।

(व्यास सुभाषितसंग्रह ८४)

किसी समाज में बहुत लोगों का नायक हो जाना उसके विनाश का कारण होता है, उदय का नहीं ।

सुखं स्वपित्यनृणवान् व्याधिमुक्तश्च यो नरः ।

(शौनकीय नीतिसार ६९)

जो मनुष्य ऋण से तथा व्याधि से मुक्त होता है, वह सुख की नींद सोता है ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

राजदूत हों तो ऐसे

मंगोलिया में भारत के राजदूत श्री रेव कुशोक बकुला की नियुक्ति प्रधानमंत्री राजीव गांधी के शासनकाल में हुई थी । तब मंगोलिया सोवियत यूनियन से अलग होकर स्वतंत्र राष्ट्र बनने जा रहा था । भारतीय राजदूत श्री बकुला ने वहां जाकर अपने कार्यकाल में जो छवि भारत की बनायी वह भारत की सांस्कृतिक विरासत को विदेशों में पहुंचाने का एक सुखद प्रयास है ।

मंगोलिया में प्रतिदिन प्रातः हजारों श्रद्धालु लोग उनसे आशीर्वाद लेने पहुंचते हैं । वह तब तक आशीर्वाद देने के लिए अपना हाथ उठाये रखते हैं, जब तक थक नहीं जाते हैं । ७७ वर्षीय लामा मंगोलिया में अपना कार्य बड़ी कुशलता से कर रहे हैं । वहां उनको भेंटस्वरूप भेड़ें, घोड़े आदि मिलते हैं, पर वह भेंटकर्त्ताओं को वापस देते हैं । साथ ही उनसे आश्वासन लेते हैं कि उन्हें बूचड़खाने न पहुंचाएं और उनका लालन-पालन ठीक ढंग से करें ।

रेव बकुला को मंगोलिया में अरहत बकुला को २०वें अवतार के रूप में मानते हैं । क्योंकि सोवियत यूनियन के समय वहां पर बौद्ध-धर्म का प्रचार-प्रसार एकदम बंद था । जैसे ही मंगोलिया स्वतंत्र हुआ, वैसे ही बौद्ध-धर्म की शिक्षा के लिए अच्छे शिक्षक की वहां के लोगों को आवश्यकता थी । इस कमी को रेव कुशोक बकुला ने पूरा किया । क्योंकि उनका लद्दाख में पेथुब मठ का लंबा अनुभव मंगोलिया के लोगों को पसंद आया ।

रेव बकुला कहते हैं कि मैंने कूटनीति और धर्म को साथ नहीं मिलाया । दोनों अपने-अपने स्थान पर हैं ।

पिछले वर्ष रेव बकुला मंगोलिया में गोबि अल्ताई गये वहां लोगों ने उन्हें एक पहाड़ का नाम अपनी यादगार में रखने को कहा । उन्होंने पहाड़ का नाम 'रत्ना' रखा और साथ में यह भी वचन लिया कि इस पर्वत पर कोई भी शिकार करने नहीं जाएगा । तब से लोग वहां शिकार करने नहीं जाते । आजकल उन्होंने वहां बौद्ध मंदिर बनाने का कार्य हाथ में लिया हुआ है ।

बुढ़ापा मन का अधिक तन का कम

विश्वेश्वरैया सभी के लिए प्रेरणा-स्रोत थे । विश्वेश्वरैया सौ साल से भी अधिक जिए और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर तक चुस्त-दुरुस्त बने रहे । एक बार उनसे किसी ने पूछा, "आपके चिर यौवन का रहस्य क्या है ?" वह छूटते ही बोले, "जब बुढ़ापा मेरा दरवाजा खटखटाता है, तब मैं भीतर से जवाब देता हूं कि विश्वेश्वरैया घर पर नहीं हैं, और वह निराश होकर लौट जाता है ।"

बुढ़ापे से मेरी मुलाकात ही नहीं हो पाती, तो वह मुझ पर कैसे हावी हो सकता है ।"

जैसा मन वैसा तन । जब कोई बूढ़ा न होने की ठान लेता है, तब वह अंत तक सक्रिय व सक्षम बना रहता है । वास्तव में बुढ़ाई मन की अधिक होती है, तन की उतनी नहीं, तभी तो कहा है —

'Man is as old as he feels'

— डॉ. समर बहादुर सिंह,

अजीब कैदी

एक बार अमरीका की एक जेल में जार्ज बिरगस नाम का एक कैदी था । उसे उम्रकैद की सजा हुई थी परंतु वह हर समय मुसकराता रहता था ।

एक दिन आधी रात को जार्ज बिरगस मौका पाकर जेल की दीवार फांद कर भाग गया । अनेक प्रयत्नों के बावजूद जेल के कर्मचारी उसे न खोज सके । कई अधिकारियों तथा पहरेदारों की छुट्टी कर दी गयी । कुछ दिनों के पश्चात फरार बिरगस मुसकराता हुआ जेल के मुख्य द्वार पर आ खड़ा हुआ । उसे देख जेल के अधिकारी और पहरेदार चकित हो गये ।

एक अधिकारी ने चौंककर कहा, "अरे बिरगस ! तुम यहां कैसे ? कहीं मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूं ?"

बिरगस ने मुसकरा कर कहा, "सर, यह स्वप्न नहीं हकीकत है । मुझे तो आना ही था । आ गया ।" "तुम यहां से भागे ही क्यों थे ?" जेल अधिकारी ने कहा । बिरगस ने कुछ गंभीर होकर कहा, "सर आप तो जानते ही हो, मैं विज्ञान का विद्यार्थी रहा हूं । मैंने जेल में रहकर समुद्री पानी को पीने के योग्य बनाने का सरल ढंग खोजा था । इसलिए भाग गया ।" कुछ सोचकर बिरगस फिर बोला, "सर ! आपने ही तो मुझे भागने के लिए विवश किया था ।" "क्या बक रहे हो तुम ।" जेल अधिकरी ने हकलाते हुए कहा । "सर ! याद करो । मैंने इस विषय में प्रयोगशाला जाने के लिए आपसे दो बार आज्ञा मांगी पर न मिलने के कारण विवश होकर यह कदम उठाना पड़ा । यहां से भागकर मैं सीधा मिसौरी विश्वविद्यालय पहुंचा । वहां के वैज्ञानिकों ने मुझे प्रयोग करने की अनुमति दे दी । मैं अपना काम समाप्त कर के दुबारा सजा काटने के लिए यहां आया हूं ।" अब की बार जेल अधिकारी ने मुसकराते हुए उसकी पीठ थपथपाकर कहा "बिरगस, तुमने मानव कल्याण के लिए वैज्ञानिक आविष्कार किया है, इसलिए तुम्हें यहां से मुक्त कर के पुरस्कार देना चाहिए ।" तथा कुछ ही दिनों के पश्चात जेल अधिकारियों की प्रशंसात्मक टिप्पणी के आधार पर बिरगस जेल से रिहा हो गया ।

—इन्द्रा बंसल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

विद्यार्थी-जीवन से ही 'कादम्बिनी' का नियमित पाठक रहा हूं । विभिन्न विषयों पर ढेरों रोचक एवं उपयोगी सामग्री देकर हिंदी प्रेमी पाठकों के बीच इसने गहरी पैठ बनायी है । हिंदी-क्षेत्र में निःसंदेह यह प्रसंशनीय प्रयास है 'काल-चिंतन' स्थायी स्तंभ साहित्यिक क्षुधा को शांत करता है । वास्तव में यह बहुमूल्य धरोहर है ।

मार्च '९४ अंक में 'आखिर कब तक' शीर्षक नये स्तंभ में चेक गणराज्य के राष्ट्रपति डॉ. हावेल के अपने देश की राष्ट्र भाषा चेक में भाषण पढ़ने एवं साथ ही भारतीय नेताओं के ठेठ अंगरेजी में भाषण पढ़ने का समाचार पढ़ा । संपादकजी, इसी कड़ी में हाल ही में अंगरेजी भाषा में प्रस्तुत हमारे माननीय वित्तमंत्रीजी का 'बजट भाषण' भी जुड़ गया है ।

यह भाषण मैंने अपने गांव (जिला-सीवान, बिहार) में अपनी बूढ़ी मां एवं अन्य ग्रामवासियों के साथ दूरदर्शन पर देखा व सुना । मेरी मां एवं ग्रामवासी तो सिर्फ मेजों का थपथपाना एवं मंत्रीजी के होंठों के हिलने-डुलने तथा बोलने के अंदाज को ही देख-समझ पाये । हां, अपनी जिज्ञासा मुझसे पूछकर अवश्य शांत करते रहे । समझ नहीं पा रहा हूं कि यह भाषण किसके लिए था ? देश के देहातों-कस्बों में बसनेवाली ८०% अर्धशिक्षित तथा अंगरेजी भाषा से अनभिज्ञ भारतीय आम जनता के लिए अथवा पूंजीपतियों, विदेशी कंपनियों तथा विदेशी नियंताओं के लिए, जो हमारी अर्थव्यवस्था में अब सीधी दखल रखते हैं । देश के विकास में बहुमूल्य योगदान करनेवाले कृषकों, मजदूरों या गरीब जनता के लिए यह अंगरेजी का बजट भाषण तो नहीं ही था । तो क्या वित्तमंत्रीजी इन्हें चुनावी दंगल का रबड़ मोहर मात्र समझते हैं ? क्या इनके अधिकार में अपने राष्ट्र की भाषा 'हिंदी' में बजट भाषण सुनना नहीं है ? असली भारत की तसवीर तो ये ही लोग हैं । वित्तमंत्रीजी ने चंद विदेशी नियंताओं के लिए राष्ट्र भाषा की 'गरिमा' को ठेस पहुंचायी है । शायद ही कोई देश एवं उसके नीति निर्धारक अपनी राष्ट्र भाषा के प्रति इतने गैर-जिम्मेदार हों । आजादी की लड़ाई इसलिए नहीं लड़ी गयी कि अंगरेजियत का बुखार सत्ता के गलियारों को आज तक ग्रसित किये रहे । कब समझेंगे इस जन-भावना को हमारे नेतागण ?

— एच. एस. द्विवेदी

निर्माण रसायनज्ञ, उ. प्र. राज्य चीनी निगम लि., बुलंदशहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदूषित वातावरण में बसंत

आदरणीय अवस्थीजी, क्या सचमुच आपको बसंत के आगमन की पदचाप सुनायी दी ? महानगरों के प्रदूषित वातावरण में बसंत की कल्पना कवि करें तो करें, 'कालचिंतन' के दूसरे पक्षों में इस कटु सत्य को भी समाहित करते तो एक स्वप्न और टूटता । सामाजिक दायरे संकुचित होते जा रहे हैं । गांवों की चौपालें भी अब उपग्रह दूरदर्शन के कार्यक्रमों के अनुरूप ही भरती हैं; आपसी कलह, तनाव, दुश्चिंता की आपाधापी के मौसम में बसंत बयार/कोकिला कलरव क्या सचमुच सुनायी देता है ? और अगर सुनायी भी दे तो क्या ? क्या सचमुच बसंत का आनंद हृदय से प्रस्फुटित हो पाता है । और प्यार, उसका यथार्थ तो और भी भयानक है । छल और बल के बल पर मानवीय संवेदनाएं डूबती जाती हैं । क्या यह भी एक सनातन सत्य नहीं ? लिखना तो और भी था ... फिर भी यदि आपने एक अंजुरी बसंत समेटा हो तो एक चम्मच 'कोरियर' से भिजवाने का कष्ट करें । बहुत दिन हुए बसंत का स्वाद चखे । हां कभी पलास, सरसों और कामदेव के साथ गांवों की पगडंडी में लहराती चूनर बासंती बयार में उड़-उड़कर चेहरे से टकरायी थीं ।

—प्रमोद गौतम, रीबा

दिल्ली में पूरे साल वसंत का मौसम रहता है और यह वासंती बयार संसद से लेकर रंग-बिरंगी कुरती-सलवारों में नित नूतन बदलते हुए परिधानों के साथ भीड़भरी सड़कों पर धक्के खाती सुंदरियों के माध्यम से बिखरती है, चम्मचों की बात मत कीजिए, यहां आइए और अंजुरीभर पीजिए—संपादक

काल चिंतन

'कादम्बिनी' फरवरी अंक के 'काल-चिंतन' की प्रारंभिक पंक्तियां मन को छू गयीं ।

'लो बसंत आया
संत, विसंत, कुसंत
सभी पर छाया ।

—विद्या भूषण मिश्र, छपरा ।

फरवरी अंक में प्रकाशित 'काल चिंतन' पर हमें इन पाठकों की भी प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं :
वेणी शंकर पटेल 'ब्रज' साईंखेड़ा (नरसिंहपुर), श्री कांत कुलश्रेष्ठ, बंबई, विजयकुमार श्रीवास्तव, फतेहपुर;

फरवरी अंक में 'कलरि-जोड़ों में दर्द का बेजोड़' इलाज पढ़ा । सदियों से भारत पर विदेशी शासकों का प्रभुत्व रहने से आयुर्वेद के व्यावहारिक ज्ञान के प्रसार के लिए अनुकूल अवसर उपलब्ध न हो सके । हां, कुछ परिवारों में आयुर्वेद चिकित्सा के कुछ उपक्रमों का प्रयोग परंपरागत रूप से होने के कारण वहां की क्षेत्रीय विशिष्टता बन गये हैं । कलरि चिकित्सा व्यवस्था के अंतर्गत पैर के तलवे से आवश्यक मालिश वस्तुतः वाग्भट्ट के ऋतुचर्या अध्याय में वर्णित 'पादाघात' उपक्रम ही है । आज भी देश के विभिन्न क्षेत्रों में परंपरागत विधियों द्वारा अनेक व्याधियों का सफलतापूर्वक इलाज किया जा रहा है जिनका मूल आयुर्वेद ग्रंथ बृहत्रयी (चरक, सुश्रुत व वाग्भट्ट) और लघुत्रयी (भाव प्रकाश, माधव निदान व शार्गधर) में ही निहित है ।

—डॉ. अनूप कु. गक्खड़, जालंधर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कादम्बिनी' के फरवरी अंक में मेरे साक्षात्कार पर आधारित 'वेदना रहित प्रसव' शीर्षक से कई डॉक्टर व प्राइवेट प्रेक्टिस कर रहे डॉक्टरों एवं नौसिखिए डॉक्टरों पर लगाया हुआ आक्षेप मेरे द्वारा व्यक्त विचारों के अनुरूप नहीं है ।

—डॉ. निर्मला दीक्षित, बंबई

सेना का उपयोग कब करना चाहिए

फरवरी अंक में रंजना सक्सेना का लेख 'सेना का उपयोग ...' समयानुकूल है तथा नीति-निर्धारकों के लिए ध्यान देने योग्य है । आये दिन सेना का उपयोग आंतरिक शांति-व्यवस्था कायम करने में करने से सेना का ध्यान 'बाह्य खतरों से देश की रक्षा' जैसे वृहत्तर लक्ष्यों से हटने लगता है । इसके अतिरिक्त जनता का पुलिस प्रणाली से विश्वास भी उठने लगता है, पुलिस के आत्मबल में कमी आती है तथा सेना और पुलिस के बीच मतभेद की संभावनाएं बढ़ने लगती हैं । मगर चाकू की धार ठीक नहीं है तो उसकी धार ठीक कराना जरूरी है, न कि उसका काम तलवार से लेना । अतः जरूरत पुलिस बल की कुशलता-दक्षता बढ़ाने की है ताकि बार-बार सेना की मदद न लेनी पड़े ।

—रुद्र नाथ मिश्र, गाजियाबाद, उ.प्र.

इस लेख में व्यक्त विचारों के समर्थन में हमें इन पाठकों के भी पत्र प्राप्त हुए हैं : डॉ. शकुनचंद गुप्त आर्य, लालगंज, मधुसूदन 'आत्मीय' मुंगेर; रामशंकर त्रिपाठी, मनकापुर (गोंडा); अजय कौशिक, देहरादून; विजयकुमार शुक्ला, कानपुर;

फरवरी अंक में पहाड़िया जन जाति पर लेख पढ़ा

छोटा नागपुर और संथाल परगना में कई जन जातियां हैं ।इनमें बिरहोर, खरिया और पहाड़िया अल्पसंख्यक और सर्वाधिक पिछड़ी हैं । इनके पिछड़ने के प्रमुख कारण हैं— अन्य जन जातियों के नेताओं की राजनीति, जो विकास का सारा पैसा अपने समुदाय पर खर्च कराते हैं । और गैर आदिवासी नेताओं द्वारा झारखंड की राजनीति का संचालन । ये नेता मौखिक सहानुभूति के अतिरिक्त कुछ नहीं देते ।

जो आदिवासी पढ़-लिख जाते हैं या नौकरी करते हैं, वे शहरों में चले जाते हैं, तथा अपनी जाति को भूल जाते हैं ।

सरकारी योजना का कार्यान्वयन लाल फीताशाही के द्वारा होता है, जहां आदिवासियों का मनोविज्ञान नहीं समझा जाता ।

विदेशी मिशनरियों द्वारा ही आदिवासियों पर सांस्कृतिक संकट आया है । उन्हें उन्हीं की आस्था के अनुसार पूजा करने देना चाहिए ।

संथाल पहाड़िया सेवा-मंडल ने इस दिशा में अच्छा कार्य किया है । आज आदिवासियों का एक वर्ग हिंसक और उग्र हो उठा है । इसका कारण सभी दलों की सस्ती राजनीति है ।

—डॉ. बच्चन पाठक सलिल, जमशेदपुर ।

आखिर कब तक

फरवरी अंक में 'अस्मते बंदगी लुट चुकी है बहुत' शीर्षक के अंतर्गत आपके नैसर्गिक, सात्विक विचारों और संस्मरणों की निर्भीक अभिव्यक्ति को पढ़कर मुझे वैसी ही प्रसन्नता हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसी आपने अपने बालसखा के शुद्ध हिंदी के प्रयोगयुक्त 'दूरभाष' (फोन) और उनके ऊंची जगह (आर. एस. एस. के सरसहकार्यवाह के पद) पर पहुंचने तथा श्री सिहारे के परिवारजनों से मिलने के संदर्भ में व्यक्त की है ।

आपके द्वारा दी गयी जानकारी से ज्ञात होता है कि श्री सुदर्शन ने उच्चस्तर की शैक्षणिक योग्यता होने के बावजूद, भौतिक सुखों का मखमली मार्ग छोड़कर सच्चे देशसेवक का कंटकाकीर्ण मार्ग आर.एस.एस. के माध्यम से चुना और आजीवन समाज-सेवा देश सेवा का व्रत लिया । 'फोन प्रसंग' के वर्णन से राष्ट्र-प्रेम के साथ, राष्ट्रभाषा का प्रेम भी स्पष्ट होता है ।

अ. ना. सर्वटे, सागर ।

फरवरी अंक में मनोरमा जफा की कहानी 'रंग' (एड्स रोगियों को सहानुभूति चाहिए) पढ़ी । कहानी वर्तमान के यथार्थ को उजागर करती,संबंधित संदर्भों को एक दिशा प्रदान करती है ।

—विजय जोशी, कोटा

डुंकेल प्रस्ताव

फरवरी अंक में आखिर 'डुंकेल प्रस्ताव है क्या' पढ़ा, वैसे कोई भी चाहे कितनी ही दलीलें क्यों न दे किंतु डुंकेल के द्वारा भविष्य में होने वाले दुष्प्रभावों एवं असम्मानजनक स्थिति को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता । दवाओं की कीमतों में वृद्धि, अनाज की आपूर्ति में ह्रास एवं कपड़ा उद्योग के अंतरराष्ट्रीय बाजार में नतमस्तक हो जाने की संभावाएं कम भयावह नहीं हैं । क्योंकि इससे आर्थिक परतंत्रता का एक द्वार खुलने की आशंका बलबती होती जा रही है ।

इस तरह के समझौतों से सत्तासीन नेताओं पर तो कोई प्रभाव पड़ता नहीं । ये तो समझौतों पर सिर्फ हस्ताक्षर करके अलग हट जाते हैं, झेलना पड़ता है जनता को ।

—योगेन्द्र वर्मा सरायतरीन (उ.प्र.)

इस लेख पर हमें इन पाठकों के भी पत्र प्राप्त हुए हैं :

कृष्णमुरारी गोयल, गढ़वा (बिहार), अशीश कुमार चौधरी, बलभद्रपुर (बिहार), श्यामनंदन सक्सेना, इटारसी, राम अवध तिवारी, कानपुर, अतुल शर्मा, भोपाल, विजयकुमार सिंह, पिठौरा (बिहार), अवध किशोर साहू, मुजफ्फरपुर, बिहार ।

प्रत्येक अंक विशेषांक

'कादम्बिनी' का प्रत्येक अंक एक विशेषांक होता है । इसका स्वरूप दिनों-दिन निखार पर है । सामग्रियों का चयन एवं प्रस्तुतीकरण स्तुत्य है । हिंदी साहित्य में इसका स्थान अद्वितीय है । 'आखिर कब तक' का समावेश करके इसमें और भी चार चांद लगा दिये गये हैं ।

—रामेश्वर बर्णवाल ,झुमरी तिलैया (बिहार) ।

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

मूल्य : **९५ रुपये; द्विवार्षिक : १९५ रुपय;**
विदेशों में : **पाकिस्तान, भूटान और नेपाल; विमान से ३४० रुपये, समुद्री जहाज से १४० रुपये ।** अन्य सभी देशों के लिए : **विमान से ५१० रुपये, समुद्री जहाज से १९० रुपये ।** शुल्क भेजने का पता : **प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'**
हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी वर्ष ३४, अंक ६, अप्रैल १९९४

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

अनिता 'अनिलाभ'/स्त्री-पुरुष मैत्री, शरीर तो साधनमात्र..... २४
सुधा पांडेय/उपनिषद् की कहानियां-२ .....३६
सुधारानी श्रीवास्तव/बुढ़ापे को प्रेम संच्चो होत है..... ४४
अभय कुमार जैन/हंसो-हंसो और खूब हंसो..... ४७
डॉ. अरुणा शास्त्री/रहिए ऐसी जगह जहां कोई न हो ६१
स्वामी वाहिद काजमी/गौहर जान हाजिर, गौहर जान गायब..... ६४
सुधीर शाह/होली-प्रारंभिक दौर के पत्रों में..... ६९
दामोदर अग्रवाल/भंग की गलियों में बनारस के रईसों की रईसी..... ८२
प्रो. परशुराम शुक्ल/स्त्रियां बकरी की तरह पीछे चल देती हैं..... ८६
महेश कुमार झा/ससुराल हो तो मिथिला में हो १०२
डॉ. संसार चंद्र/बहुत पछताए घर जमाई बनकर..... ११३
राजेश्वरी चौधरी/हरियाल उसका मायका है..... ११८
नारायण शांत/गीतोंभरी गालियां १२४
अरुण सिंह/लीजिए, हाजिर है गालिब की प्रेमिका १३१
मंजुला/प्रेम से भरे ये मूक पशु १३४
धर्मेन्द्र गौड़/दो-दो ब्रिटिश फील्ड मार्शलों को धूल चटानेवाला..... १३८
रामू शर्मा/चौवन वर्षों बाद अधूरी दौड़ पूरी की..... १४६
शिव रैना/'प्रेरक' गालियों का पंचदिवसीय पर्व..... १४८
अनिता कथूरिया/विवाह आठ प्रकार के होते हैं..... १५०
योगेश प्रवीन/मुजरे के दर्पण में लखनऊ १५६
सुरेंद्र त्रिपाठी 'सुमन'/फिल्मों में हिंसा, सेक्स और अपराध १७०

कहानियां एवं हास्य-व्यंग्य

काका हाथरसी/प्यार किया तो मरना क्या ४०
डॉ. फकीरचंद शुक्ल/बिना लिखे सम्मान मिलता है ५२
डॉ. इंदिरा 'नूपुर'/स्मृतियों के पल..... ७४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

जगदीश सहाय/संपादक के नाम सातपत्र ९२
हरीश नवल/जान बची तो लाखों पाये ९६
राजकुमारी यादव/गलालेंग की कहानी : जोगियों के मुंह पर १०८
अश्विनी कुमार दुबे/देख लेंगे कबीर हमारा क्या बिगाड़ लेते हैं १२०
हरीश पुजारी/रग-ठग आज भी रे ! १५२
दिमितर पेत्रोवा/बेलचो का सपना १६३

कविताएं

मणि मधुकर, डॉ. हरिमोहन/संक्षेप, अज्ञात, फागुन मचा है ...३४
हरी बाबू बिंदल/अमेरिका ३५
हुल्लड़ मुरादाबादी/पुरानी शायरी : आधुनिक संदर्भ ५१
गोपाल चतुर्वेदी/बांधो मत बांध, बंधु ६६
शिव प्रसाद 'कमल', दिनेश शुक्ल/फागुनी दोहे, सपनों के एकांत १५५
डॉ. गोपाल बाबू शर्मा/ गुलछर्रे उड़ाते जाइए १५५
एस. के. स्वामी/डॉ. बनवारी लाल मिश्र/सर्पदंश, फाग १८९

विशेष : कादम्बिनी हास्य कवि सम्मेलन

मधुप पांडेय, बरसानेलाल, प्रकाश प्रलय, भौंपू, नजर बरनी, इंदिरा 'इंदु', पॉपुलर मेरठी, डॉ. सरोजनी 'प्रीतम', सूर्य कुमार पांडेय, प्रेम किशोर 'पटाखा', सुरेश 'नीरव'

सभी स्थायी स्तंभ *आवरण चित्र : विजय 'अमन'*

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गा प्रसाद शुक्ल वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, भगवती प्रसाद डोभाल
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, प्रूफ रीडर : प्रदीप कुमार, कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी, चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त ।
संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८/२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।
फोन : 3318201/286, टेलेक्स : 31-66327, फैक्स : 011-3321189

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-चिंतन

— मेरे सामने एक वृक्ष है । वृक्ष की शाखाओं पर दो पक्षी बैठे हैं ।
एक : उस वृक्ष का भरपूर स्वाद लेता है । छाया से लेकर फलनेवाले फलों के रसों तक ।
दूसरा : वह भोगता नहीं है, मात्र दर्शक है ।
— मैं सोचता हूं, यह विकार या विचार, चिंतन-मनन या प्रवृत्ति क्या है ?

□

— वास्तव में सारे रहस्य इसी में मिलते हैं : मछुआरा अपने जाल में जब फंसा लेता है तो वह पहली स्थिति होती है । मछुआरे का जाल जहां धोखा दे जाता है वहीं दूसरी स्थिति स्पष्ट होती है । वह मुक्त, विमुक्त, निर्भय, निश्छल , अपने सपनों और विचारों का स्वयं अध्येता है और स्वयं साक्षी भी है । इस स्थिति में जो पहुंच जाए, वह इस निर्मम भौतिकता में रहते हुए भी उसके ऊपर उठ जाता है; जैसे वह देखता तो सब है, करता वही है जो करना चाहिए ।
— दृष्टा से कर्त्ता अधिक महत्त्वपूर्ण है । सामान्यतः कर्त्ता यानी भोग्यता आकर्षक लगता है किंतु जो मात्र दर्शक-सा दीखता है, वह सभी का समन्वयक है, इसे कितने व्यक्ति या विचारक सोचते हैं ।

□

— सोचने की इस प्रक्रिया में शब्द अवतरित होता है ।
— शब्द स्पर्श है, शब्द रस है, शब्द गंध है, शब्द रूप है ।
— शब्द नित्य है, शब्द अनादि है ।
— शब्द अविनाशी है, शब्द अनंत है ।
— शब्द अनश्वर है, शब्द अशरीरी है ।
— शब्द मात्र ध्वनि और तरंगें उत्पन्न करता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

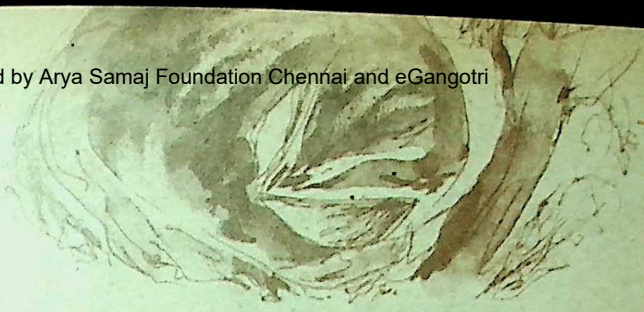

— इतना होते हुए भी कितना प्रबल अधिशासी है कि मौन को भी स्वर देता है, मौन को भी भाषित करता है ।

□

— इसे समझने के लिए मिट्टी को देखिए : मिट्टी आखिर है क्या ? सब कुछ और कुछ भी नहीं । लेकिन, नहीं, मिट्टी मूलतत्त्व है :

□ मिट्टी से मनुष्य का जीवनाधार शरीर संबद्ध है ।

□ मिट्टी से तृष्णा का अमर वरदान घड़ा बंधा है ।

□ मिट्टी से अंधकार का विद्रोही दीपक प्रज्ज्वलित होता है ।

— मिट्टी से झोंपड़ियां बनती हैं, मिट्टी से महल बनते हैं, मिट्टी से बने दस्तावेज इतिहास और समय के अमिट साक्षी होते हैं ।

— सच पूछिए तो, मिट्टी जीवनाधार है । वही मिट्टी अंत में हमारे लिए अनंत छाया बनती है ।

— मिट्टी न होती तो विश्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती । वृक्ष, पेड़, पौधे, फूल, फल, वनस्पति के समग्र समन्वय, प्राणवायु और हमारा जीवनाधार ।

— अर्थ हुआ कि मिट्टी मनुष्य के समर्पण की परिभाषा है ।

□

— मिट्टी और शब्द दोनों ही अन्योन्याश्रित हैं ।

— समूची धरा का अस्तित्त्व एक के साथ जुड़ा है तो अनंत आकाश में विस्तीर्ण लहरें दूसरे से संबद्ध हैं ।

— अंतरिक्ष में जो होता है, पृथ्वी पर उसकी प्रतिध्वनि अप्रत्याशित नहीं, सर्वमान्य और सर्वजनीय है ।

— कितने जुड़े हैं ये दोनों केंचुए की तरह : पृथ्वी और अंतरिक्ष ! इन्हें प्रजनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए तीसरे उपादान की आवश्यकता नहीं है ।

— समवेत हो जाएं दोनों तो संज्ञा दी जाती है : स्वर्ग कहीं है तो वह मात्र धरा पर है ।

— अंतरिक्ष यात्रियों ने अपने संस्मरण लिखे हैं : पृथ्वी से श्रेष्ठ, सुंदर और आकर्षक कुछ भी नहीं है । यह भी कहते हैं वे कि जब अपने यान में घूमते हुए चंद्रमा के पृष्ठ भाग में पहुंचते हैं तो वहां मात्र घोर अंधकार होता है । घूमते हुए जब वे फिर चंद्रमा की परिक्रमा कर लेते हैं तो प्रकाशवान धरती होती है ।

— धरती या पृथ्वी से अधिक सौंदर्य किसी ग्रह-उपग्रह, लोक और परलोक में नहीं है ।

— पृथ्वी पर रहकर ही मौसमों का एहसास होता है । यहीं ज्ञात होता है कि अग्नि का भी स्वरूप है और अग्नि शरीर का प्राणतत्त्व है ।

— प्राणतत्त्व होगा तभी प्रतिभा का उदय होगा ।

— प्रतिभा का उदय मस्तिष्क की ऊर्जा शक्ति से होता है ।

— कई बार ऊर्जा और मस्तिष्क का यांत्रिकीकरण एकाकीकरण में सनिध्य हो जाता है ।

— तब कुछ अर्थ निकलते हैं : अनेक तत्व समन्वययार्थी हैं :

- ☐ आदिम हो या अग्नि
- ☐ प्रकाश हो या ब्रह्म
- ☐ जल हो या प्रजापति
- ☐ वायु हो या चंद्रमा
- ☐ आत्मा हो या चेतना
- ☐ ज्ञान हो या विज्ञान
- ☐ प्रतिभा हो या प्राणवायु
- ☐ जीवन हो या ज्योति
- ☐ दृष्टि हो या दर्शन
- ☐ अणु हो या परमाणु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

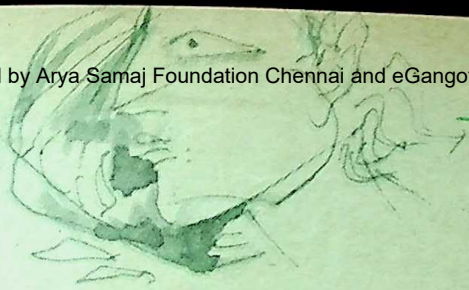

□ राग हो या विराग

— जीवन के प्रति तटस्थता या वितष्टथता इन्हीं पारिभाषित कोषों से उत्पन्न होती है ।

— यहीं सिद्धि और पराजय की सीमा साथ-साथ चलती है; क्षमता और अक्षमता का व्यापार पनपता है और मनुष्यता का उदित सूर्य विजित तो होता है, पराजित भी होता है ।

— जय और पराजय की क्षमता न अंतरिक्ष में है और न अनंत आधार-आधारित हीरों से टके विहानों में ।

— क्षमता का आगार मात्र धरित्रि है, पृथ्वी ! इसी से हम गर्व से कहते रहे हैं : हम पृथ्वी पुत्र हैं, कौन हो तुम जो अंतरिक्ष से आये हो ? भयभीत होकर भाग जाते हैं वे, या करते हैं आत्म-समर्पण ।

□

— मेरे मन में इन तथ्यों के उजागर होने के बाद प्रश्न ही नहीं उठते कि मृत्यु के बाद जीवन क्या होगा ?

— मृत्यु के बाद जीवन क्या है, यह प्रश्न मैं मंदबुद्धियों पर छोड़ता हूं ।

— मैं पूछता हूं, जीवन जितना मिला है, वह जिया कैसे गया है ?

— जिया हुआ जीवन ही संपूर्ण ब्रह्मांड और जीवन के यथार्थ तथा उसके मूलभूत तथ्यों की सार्थकता की पहचान है ।

— तभी तो मैं कहता हूं :

□ हमें आनंद दो, अमरता हमें नहीं चाहिए

□ साहस दो हमें, समृद्धि नहीं चाहिए

□ पौरुष दो, बल हमारा प्रतिगामी होगा

□ शक्ति दो, शत्रु सड़ी-गली नाली में बिलबिलाते कीड़े होंगे

□ स्वच्छ मानसिकता के लिए विचार के अवरोधक तत्व, अर्थहीन हैं । हमें अर्थ चाहिए; अर्थहीनता घिसे-पिटे काल-कवलित अनजाने, अनपहचाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अनचीन्हे सड़े-गले नालों में बहने दीजिए । उनकी बाढ़ आएगी, सामना कर लेंगे हम ।

□ मेरे सहचरो ! मेरे पाठको ! अब भी समझने के लिए कुछ रह जाता है : वेद, उपनिषद्, भाष्य या पुराण । ये सब कथा के माध्यम हैं । इनका मनन कथा-मंथन के लिए कीजिए ।

□ पहचानिए सत्य को, सत्य की परिभाषाओं को ।

— पूजनीय है वृक्ष की शाखा पर बैठा वह पक्षी जो भोगता नहीं ।

— तटस्थता सदैव स्वीकार भले न हो पर पहचान के लिए वह मूलबीज तत्त्व है ।

— तटस्थ रहने की सलाह किसी को नहीं दूंगा, परंतु शब्दों की मितव्ययता और अपनी सामर्थ्य की पहचान इतनी प्रबल हो कि स्वयं प्रकाश बनें हम सब; प्रकाश-स्तंभ नहीं ।

□

— तटस्थ पक्षी को किसी गुरु की आवश्यकता नहीं है, कालांतर में वह स्वयं अध्येता बनेगा, गुरुश्रेष्ठ से विभूषित होगा ।

— फिर आप ?

— कहां भटक रहे हैं सदियों के जीने-मरने के जाल में ?

— सत्य सदियातीत होता है; सदियां सत्य की सहचरी बनती हैं ।

रमेन्द्र अकल्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लालू : कितने भालू हैं आपके पास

बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव अकसर समाचार-पत्रों की सुर्खियों में रहते हैं । मैं निजी रूप से उन्हें जानता हूं । लालू भाई की आदत है, अपने ऊपर किये हुए व्यंग्यों को खूब मजे से सुनते हैं वे,और मजा भी लेते हैं । एक बार उन्होंने बताया था कि वे जब भैंस पर बैठते थे तो मुंह हमेशा भैंस के पीछे रखते थे । भैंस का क्या भरोसा, कब उछाल भरने लगे । पीछे बैठने से डर तो नहीं लगेगा । फिर यह भी बताया कि 'लालू बहुत भाग्यवान है किसी ज्योतिषी से उसने राय नहीं ली । जगन्नाथ मिश्र ने अपने जमाने में चौदह उड़नखटोले खरीदे थे । उन्हें क्या पता था, एक दिन लालू भैंस की पीठ से सीधे जगन्नाथ मिश्र के उड़नखटोलों में हवा में तैरेगा । ज्योतिषियों से पूछता तो कोई यह भविष्यवाणी कर ही नहीं पाया ।'

एक बार कृष्णा साही ने अशोक होटल में पार्टी दी तो लालू भाई अपने ढेर-से विधायकों के साथ चले आये । सीताराम केसरी लालू को छेड़ना चाहते थे पर सीधे न छेड़कर उन्होंने मुझसे कहा कि मैं पहल करूं । मैंने कहा, 'लालू भाई, आप कुछ दिन पहले इंडिया इंटरनेशनल में क्या करने गये थे ? वह तो पढ़े-लिखे लोगों की जगह है ?'

तत्काल लालू बोले, 'यहां भी मैं गलत तो नहीं आ गया', आखिर हूं तो आप लोगों के साथ ।'

बस सीताराम केसरी ने छेड़ दिया, 'लालू में सबसे बड़ी गलती यह है कि वह भला-बुरा नहीं समझते । देखिए न, अपने साथ ये जितने विधायक लाये हैं सब इनके विरोधी हैं ।'

लालू भाई ने सिर खुजलाते हुए कहा, 'जो मेरे समर्थक हैं वे तो हमेशा मेरी जेब में रहेंगे, इन विरोधियों को अशोक होटल दिखाकर मैंने कौन-सी मूर्खता का काम किया है ।'

मान गये लालू भाई, आपकी इसी मासूमियत पर तो पूरा देश न्योछावर है ।

0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लो एक नयी फिल्म

राजनीति में फिल्मी नेताओं की घुसपैठ अब पुरानी हो गयी । तमिलनाडु में तो एम. जी. रामचन्द्रन ने अपने तबलचियों तक को मंत्रीपद देकर एक मिसाल कायम कर दी । एन. टी. रामाराव,रामकृष्ण हेगड़े भी इसके उदाहरण हैं । हमारे आदरणीय प्रधानमंत्रीजी को भी खूबसूरत चेहरे देखने का शौक है, इसलिए संसद में एक न एक अभिनेत्री को रख ही लेते हैं ।

लालू प्रसाद यादव ने तो सारे रेकॉर्ड तोड़ दिये । मुख्यमंत्री रहते हुए अब वे फिल्मी अभिनेता के रूप में भी परदे पर दिखायी देंगे । साफ कुरता-पायजामा और हीरोकट बाल बनाकर एक फिल्म में लालू भाई नायक रूप में पूरे देश के फिल्मी परदे पर दिखायी देंगे । डायलाग होंगे :

'बेघरों के लिए घर, गरीबों के लिए चरवाहा विद्यालय, पिछड़ों के लिए आरक्षण— हमारे प्रमुख कार्य हैं ।'

'गुदड़ी के लाल' फिल्म का यह डायलाग है । फिल्म दो घंटे बारह मिनट की है । हाल ही इसका मुहूर्त पटना में संपन्न हुआ । फिल्म निर्माता हैं— विजय सिंह और अनिल । दोनों जनता दल के पिष्टपोषक हैं । निर्देशन कर रहे हैं पी. एन. घोषाल । लालू ने मुहूर्त के बाद बयान दिया कि अगर हमें मुख्यमंत्री पद से निकाला गया और हम फिल्मों में चले गये तो बेचारे शत्रुघ्न सिन्हा बेरोजगार हो जाएंगे ।

है ऐसा कोई मुख्यमंत्री इस देश में । एक बात लालू यादव के बारे में न लिखी जाए तो फिल्म अधूरी रह जाएगी । यह हम लोग जानते हैं कि लालू यादव के नौ बच्चे हैं । एक बार वे पूरी टीम के साथ दिल्ली आये तो उनकी छवि उभारने के लिए उनके प्रेस सलाहकार ने पत्रकारों को निरोध के डिब्बे भेंट में दिये । भेंट में लिखा था :

'मान्यवर को सप्रेम भेंट, भारत के सुपर मुख्यमंत्री की ओर से ।'

पत्रकारों ने भेंट तो ले ली लेकिन बाद में लालू यादव के पास वापस भेज दी— यह लिखकर कि आपके लिए यह ज्यादा उपयोगी है । इस्तेमाल कीजिए ।

लालू पुराण विराट है इसलिए मैं यहीं समाप्त करूंगा । पाठक ज्यादा पढ़ना चाहें तो लालू चालीसा और लालू पचासा पढ़ें । दोनों बिहार की हर दूकान पर उपलब्ध हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार में कुंवारों के लिए

हमारे कम पाठक यह जानते होंगे कि बिहार में हर साल एक हजार शादियां जबरन होती हैं । लगन के महीनों में कुंवारे नौजवानों का अपहरण किया जाता है और किसी भी अपरिचित लड़की से उनका जबरन विवाह कर दिया जाता है । अभी एक ताजा घटना है । बैंक के क्लर्क सुभाष कुमार कहीं अकेले टहल रहे थे । कुछ लोग आये और सुभाष् का जबरन अपहरण कर उसे एक वीरान स्थान में ले गये । कहते हैं कि उसे मारा-पीटा और भूखा रखा और फिर एक अनजान लड़की से उसकी जबरन शादी कर दी । मजेदार बात तो यह है कि शादी की रस्म के समय उसकी कमर में एक रस्सी बांध दी गयी ताकि वह भागने की कोशिश न कर सके । ऐसे ही सुहागरात बीती और आखिर उस लड़की को अपनी पत्नी के रूप में लेकर उसे अपने घर वापस आना पड़ा ।

पटना के एक सामाजिक कार्यकर्ता ने मुझे बताया कि बिहार में कम-से-कम एक हजार शादियां ऐसे ही होती हैं । ये सारी शादियां अपहरण करके की जाती हैं । अपहरण का तरीका आसान है । पहले किसी नौजवान को तलाशा जाता है । फिर एक ऐसे गिरोह की तलाश की जाती है जो पेशेवर अपहरणकर्ता है । यहां तक कि बिहार के कई राजनीतिक बंदूक की नोक पर यह काम कराते हैं । अपहरणकर्ताओं को बंधी हुई रकम बाकायदे दी जाती है । शादी के मौसम में बिहार के कुंवारे लड़के अब बाहर निकलने में डरने लगे हैं ।

महिला दिवस पर बिहार का यह रवैया कितना सटीक है ।

क्या सचमुच महिलाएं स्वतंत्र रहना चाहती हैं

हाल ही में राजधानी में अंतरराष्ट्रीय महिला-दिवस बहुत जोर-शोर से मनाया गया । नारे लगाये गये कि महिलाएं गुलामी सहन नहीं करेंगी । दूरदर्शन केंद्र पर प्रदर्शन किया गया कि भौंडे और अश्लील गीत तथा दृश्य बर्दाश्त नहीं किये जाएंगे । यह लिखना जरूरी है कि भारतीय जनता पार्टी के महिला मोरचे की महामंत्री मीरा अग्रवाल ने जंतर-मंतर से यह जलूस निकाला । जलूस पटेल चौक तक ही पहुंच पाया था कि पुलिस ने आगे जाने से रोक दिया । कई महिलाओं ने वहां जोरदार भाषण दिये । मैं कुछ महिलाओं के नाम न लूं तो महिलाओं के प्रति अत्याचार होगा— सांसद गीता मुखर्जी, प्रमिला दंडवते, अमरजीत कौर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की अनुराधा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्चना तथा हमारी लेखिका मृदुला सिन्हा । उत्सुकतावश मैंने यह जलूस स्वयं देखा था ।

मुझे एक ही बात कहनी है कि 'चोली के पीछे क्या है' और 'चढ़ गया ऊपर रे' जैसे गाने किसने गाये तथा अर्धनग्न कपड़ों में नाच किसने किया है ।बंबइया फिल्मों में होड़ लगी है कि कौन लड़की कितने कपड़े उतार सकती है । ममता कुलकर्णी, नीना गुप्ता, माधुरी दीक्षित और जूही चावला—जैसी अभिनेत्रियों ने अपनी कीमत बढ़ाने के लिए क्या-क्या नाटक अब तक नहीं किये ! दोपहर को सिनेमा हालों में फिल्म देखनेवाले व्यक्तियों में सबसे अधिक संख्या महिलाओं की होती है । फिर फैशन परेड का सिलसिला बहुत पुराना है, जो अब धड़ल्ले से चल रहा है और बड़े-से-बड़े घर की लड़कियां अर्धनग्न प्रदर्शनों में खुलेआम भाग लेती हैं । भाई, ईश्वर ने आखिर आंखें किस लिए बनायी हैं । हे गुणवंती, लीलावती कन्याओं, पुरुषों पर भी तो कुछ तरस खाओ । हमारी भी आंखें हैं और ईश्वर ने हमारे शरीर की सारी इंद्रियों का निर्माण भरपूर उपयोग करने के लिए किया है । मेरा सुझाव है कि महिलाएं खूब जोर-शोर से महिला दिवस मनाएं, लेकिन पुरुषों के बिना वे नहीं रह सकतीं । इसलिए समारोह में हमें भी शामिल कर लें ।

याद है मुझे पहले महिला मुक्ति दिवस की

कुछ वर्ष पहले मैं ठीक उस दिन लग्जमबर्ग में था, जिस दिन वहां महिला मुक्ति दिवस मनाया जा रहा था । यह अंतरराष्ट्रीय समारोह था लेकिन इसकी अध्यक्षता कर रहे थे एक पुरुष, नोबल पुरस्कार विजेता महोदय । मैं उस देश की सरकार का आदरणीय मेहमान था, इसलिए उस हॉल में प्रवेश करनेवाला मैं ही एकमात्र दूसरा पुरुष था । वह दृश्य मैं अब भी नहीं भूल पाता । स्टेज पर टिन का एक बड़ा डिब्बा रखा था । पूरे हाल में कमसिन युवतियां बैठी थीं । एक के बाद एक वे स्टेज पर आती थीं और अपने कपड़े उतारकर अपनी ब्रेजियर उस डिब्बे में डाल देती थीं । उसके बाद हाथ उठाकर आवाज लगाती थीं 'हेल विद मैन' जब सभी लड़कियों ने यह काम पूरा कर लिया तब अध्यक्ष महोदय ने पैट्रोल डालकर उस डिब्बे में आग लगा दी । लीजिए, महिला दिवस संपन्न हुआ । मैं यूरोप कई बार गया और लग्जमबर्ग भी । लेकिन वहां के किस्से कम-से-कम इस समय तो अपने पाठकों को नहीं बताऊंगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा में उल्लुओं की कमी नहीं है

हरियाणा विधानसभा में हाल ही में कांग्रेस विधायिका चंद्रावती ने एक चिंता जतायी कि हरियाणा राज्य में उल्लुओं और शिकारीबाजों की संख्या घट रही है । इसलिए उनकी नस्ल की सुरक्षा के लिए सरकार को प्रयत्न करना चाहिए । इसका उत्तर दिया वनमंत्री इंद्रजीत सिंह ने । उन्होंने कहा कि हरियाणा में उल्लुओं और शिकारी बाजों की कोई कमी नहीं है । इसलिए उनकी नस्ल को सुरक्षित करने का प्रश्न ही नहीं उठता । मान्य वनमंत्री की स्पष्टवादिता से विधानसभा ठहाकों से गूंज उठी और एक स्वर उभरा, 'वाकई हरियाणा में उल्लुओं की कोई कमी नहीं है ।' चंद्रावती इस पर भी नहीं मानी । उन्होंने प्रश्न किया कि किसी ने उल्लू देखे हैं ? कांग्रेस विधायकों ने एक स्वर में उत्तर दिया, 'देखे क्या हैं, सामने बैठे हैं ।' पशोपेश में पड़ गये बेचारे भजनलाल । उन्होंने बाद में पत्रकारों से कहा कि पहले उड़नेवाले उल्लू होते थे अब उल्लू चलने लगे हैं ।

अंत में एक बार फिर लालू यादव के पास

लालू भाई, एक छोटी-सी जानकारी में देना चाहता हूं । बिहार में एक बहुत प्रसिद्ध लेखक हुए हैं, कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु । रेणु के साथ बैठकर मैंने 'तीसरी कसम' फिल्म में बहुत कुछ लिखा-पढ़ी का काम किया है । रेणु असमय चल बसे । उनका गांव पूर्णिया जिले में आरोही हिगना में है । मुझे एक दर्दनाक सूचना मिली है कि उनकी पहली पत्नी पदमादेवी टूटी-फूटी झोंपड़ी में निहायत गरीबी के दिन बिता रही हैं । रेणु ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था । प्रकाशकों ने उनकी पुस्तकें धड़ल्ले से छापीं, लेकिन उन्हें कोई रायल्टी देता नहीं । रेणु की पत्नी पदमादेवी ने तो कसम खा ली है कि अब इस घर में किसी को साहित्यकार नहीं बनने दूंगी । रेणु नाम धोखा देनेवाला है । इसलिए यह बता देना जरूरी है कि रेणु का पूरा नाम है फणीश्वर नाथ मंडल । मंडल कमीशन को लागू कराने के एक पुरोधा लालू यादव भी रहे हैं । लालू भाई, आपको अपने राज्य पर गर्व होना चाहिए कि उसने बहुत बड़े-बड़े साहित्यकार पैदा किये हैं उसमें रेणु भी एक हैं । कम-से कम एक बार तो आप आरोही हिगना गांव का दौरा तो कर लीजिए और अपने चहेते मंडलों में से इस बेचारे मंडल के परिवार को बचा तो लीजिए । आप फिल्म अभिनेता बनने जा रहे हैं, कम-से-कम एक फिल्मी कथाकार के परिवार को और गांव को बचा तो लीजिए !

— राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-पुरुष मैत्री :

शरीर तो साधन मात्र है !

● आयोजिका : अनिता 'अनिलाभ'

स्त्री-पुरुष संबंधों का इतिहास बहुत प्राचीन रहा है । दोनों की यात्रा साथ-साथ होते हुए भी नियति अलग-अलग है । आज स्त्री-पुरुष की मित्रता पर नये सिरे से विचार किया जा रहा हो, ऐसा नहीं है । पांच हजार साल पहले भी यह संबंध इतना रोमांचकारी था । कोई भी सभ्यता, विकास या जीवन-शैली इन संबंधों के जादू को खतम नहीं कर पायी ।

औद्योगिक क्रांति ने पुरुष व स्त्री दोनों का ही मार्ग प्रशस्त किया है । भारतीय समाज की सबसे बड़ी समस्या तो भौतिक दरिद्रता है, लेकिन जिन्हें आर्थिक समस्याएं नहीं हैं, उनकी छटपटाहटें भी कम नहीं हैं । दांपत्य जीवन के कलह व असंतोष, भौतिक सुविधाएं जुटाने की होड़ व स्वयं को आधुनिक मानने की प्रतिस्पर्धा ने औरत को बाहर निकलने के लिए प्रेरित किया है । स्त्री को अपनी गृहस्थी जो कभी मंदिर लगती थी, समय के साथ 'जेल' होती जा रही है । पाश्चात्य जीवन का भारतीयता पर प्रभाव भी इसका महत्त्वपूर्ण अंग है ।

स्त्रियों में खुलापन

मध्यवर्गीय स्त्रियां अब ज्यादा बाहर निकलने लगी हैं । पहनावे व मिलने-जुलने की उन्मुक्तता ने स्त्री-पुरुष संबंधों को प्रगाढ़ ही किया है । अब स्त्रियां खुले रूप से पुरुष मित्रों का अस्तित्व स्वीकारती हैं, भले ही सभ्यता की शुरूआत स्त्री की गुलामी से हुई हो लेकिन उसका घर से बाहर निकलने का विद्रोह पहली बार का नहीं है । जहां अधीनता अपने विकराल जबड़ों से अस्तित्व दबोचेगी, वहां विद्रोह तो होगा ही । मनुष्यता सदैव स्थिति को बेहतर बनाने की कोशिश में रहती है ।

मनु स्मृति के अनुसार— स्त्री कभी स्वतंत्र होने योग्य नहीं है । वैदिक युग में पुरुष-स्त्री

मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन में कलह और टकराव स्त्री व पुरुष दोनों की बाहर की दौड़ मजबूत कर रहा है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण बजाज सुनील जावेरी उषा खुराना अंजना कपूर

काफी हद तक समान थे । महाभारतकाल में भी स्त्री-पुरुष के समान स्वतंत्र व स्वच्छंद थी । धर्म का स्त्री को अधीन बनाने में विशेष योगदान रहा । भले ही बारहवीं से सोलहवीं शताब्दी तक भक्ति-आंदोलन में स्त्रियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है ।

स्त्री-पुरुष की जटिलताएं

आधुनिक युग में स्त्री-पुरुषों के साथ खट रही है, किंतु शिक्षित व आर्थिक रूप से सुखी वर्ग व्याकुल है । मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन में कलह व टकराव स्त्री व पुरुष दोनों की बाहर की दौड़ को मजबूत कर रहा है । स्त्री की स्थिति निश्चय ही आज इतनी गयी-गुजरी नहीं है ।

स्त्री-पुरुष की समस्याएं, जटिलताएं व रोमांच शाश्वत हैं । यही संबंध आज के मामाजिक परिवेश में क्या रूप ले चुके हैं ? इनकी उपादेयता व सीमाएं क्या हों ? दांपत्य जीवन में इनका क्या महत्त्व है ? लगभग इन्हीं प्रश्नों को लेकर हमने समाज के भिन्न-भिन्न प्रतिष्ठित वर्गों से बातचीत की ।

समाज-सुधारक प्राचीनकाल के दकियानूसी विचारों का भी विद्रोह करते थे और आज के खुले वातावरण से भी नाखुश हैं, तो इन संबंधों का क्या रूप होना चाहिए । वस्तुतः इन संबंधों की छानबीन केवल दो व्यक्तियों के रिश्तों की ही नहीं, समूचे रिश्तों को समझने का प्रयत्न है ।

स्त्री-पुरुष मैत्री पूरक है !

कृष्ण बजाज एक सफल व्य वसायी हैं । विभिन्न सामाजिक व समाज सुधारक संस्थाओं से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं । उनके अनुसार—

स्त्री-पुरुष संबंध सहज प्राकृतिक व नैसर्गिक हैं फिर इन्हें इतनी महत्ता क्यों ? स्त्री-पुरुष की मित्रता परस्पर पूरक है, सहज, स्वाभाविक है और साथ-साथ आकर्षक भी है । 'इस मित्रता के क्या लाभ हैं ?' पूछने पर उन्होंने कहा कि, वही जो दो भिन्न-भिन्न जातियों की मित्रता से लाभ होता है । दोनों ही शारीरिक व सामाजिक दृष्टि से भिन्न हैं । दोनों के कार्य क्षेत्र अलग-अलग हैं तो दोनों को एक-दूसरे को जानने-समझने की जिज्ञासा रहती है । साथ-साथ घर से बाहर मिलकर काम करने से मित्रता होना स्वाभाविक है, प्राकृतिक है । जो प्राकृतिक है, वही मानवीय है तो वह असहज क्यों ? इस मित्रता का लाभ यह भी है कि यह स्वयं चुने हुए संबंध होते हैं, थोपे हुए नहीं । यदि किसी कारणवश मित्रता नहीं चल पा रही तो आप उसे छोड़ने के लिए स्वतंत्र हैं । बाकी

"घुटन में जीने से तो अच्छा है, परिवार टूटे !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिश्तों की तरह जैसे पत्नी, बहन, रिश्तेदार, इनके साथ ही आप जीने के लिए बाध्य हैं, भले ही घुटन हो ।

जहां तक सीमाओं का प्रश्न है तो मित्रता में सीमाएं कैसी ? यदि दोनों पक्षों की सहमति है तो ठीक है । संस्कारों के कुंठित रूप को लेकर मेरे मन में कोई हीनता नहीं है ।

स्त्रियों को अपनी शिक्षा, कार्य-क्षेत्र व जीवनसाथी चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी चाहिए । पुरुष व स्त्री स्वतंत्र व समान हों तब भी शारीरिक भिन्नताएं तो हैं ही । स्त्री जब पुरुष बनने की चेष्टा करती है तो वह बदसूरती है उसी तरह जैसे कोई पुरुष स्त्री बनना चाहे । दोनों को ही अपना-अपना रोल अपने-अपने कार्य-क्षेत्र में बखूबी निभाना चाहिए । इस मित्रता का परिवार पर बुरा असर तब ही नहीं पड़ेगा जब परिवार में आपसी तालमेल है । यदि नहीं है तो घुटन में जीने से अच्छा है कि परिवार टूटे ।

शरीर तो साधन मात्र है

उषा खुराना एक लेखिका, पत्रकार व अध्यापिका हैं । उनके अनुसार— मित्रता का सही मायने में अर्थ निस्वार्थ प्यार है । यही मित्रता, यही प्यार,दो पुरुषों में भी हो सकता है, और दो स्त्रियों में भी हो सकता है तो स्त्री-पुरुष की मित्रता को क्यों गलत दृष्टि से देखा जाता है ? हमारे रीति-रिवाज, धार्मिक आस्थाएं, हमारा समाज इस मित्रता को अपराध व पाप मानता है । जब हमारे पूर्वजों ने यह नियम-कानून बनाये थे तो स्त्री घर से बाहर कदम भी नहीं रखती थी, नौकरी करना तो दूर की बात थी । आज स्त्री-पुरुष मिलकर काम

"शारीरिक संबंधों को मित्रता में स्थान नहीं देना चाहिए ।"

करते हैं तो मित्रता होना स्वाभाविक है । आकर्षण भी सहज है लेकिन मित्रता में यही आवश्यक नहीं कि सदैव शारीरिक आकर्षण हो, एक-दूसरे के व्यवहार व गुणों से आकृष्ट होकर भी मित्रता हो सकती है । प्रत्येक व्यक्ति की अपनी दुनिया, अपनी कल्पना व अपना सपना होता है । यदि कोई उस कल्पना का साकार रूप सामने हो तो मित्रता स्वाभाविक है। कोई भी मित्रता यदि कर्त्तव्य पूर्ण करने में रुकावट है तो वह मित्रता नहीं है ।

जहां तक मित्रता में शारीरिक संबंधों का प्रश्न है तो यदि संबंध अंतरंग हैं तो कोई पाप नहीं । चूंकि मित्रता जब प्रगाढ़ रूप ले लेती है तो वह प्यार में परिवर्तित हो जाती है । हालांकि यदि प्रेम हो तभी मित्रता है और प्रेम परमात्मा का रूप है फिर शरीर तो साधन मात्र है ।

हमारे समाज में, पति को परमेश्वर मानने का आदर्श है । यही परमेश्वर यदि स्त्री को पग-पग पर अपमानित करे तो कोई पाप नहीं ! कोई अपराध नहीं । यही स्त्री यदि अपने जीने का कोई मार्ग ढूंढ़े, सहारा ढूंढ़े तो वह पाप है !

वैसे भी आज हमारे समाज में यह मित्रता फल-फूल रही है, सभी रूपों में, लेकिन सब कुछ परदे के पीछे, सामने आने की हिम्मत कोई नहीं करता, क्योंकि अपना झूठा आदर्श हर कोई प्रस्तुत करता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधकचरी संस्कृति हानिप्रद

सुनील जावेरी एक सफल व्यवसायी हैं। उनके विचार से स्त्री-पुरुष की मित्रता अवश्य होनी चाहिए। पुरुष मित्रों की अपेक्षा स्त्रियां अधिक संवेदनशील व ईमानदार होती हैं, वह व्यक्ति को अधिक समझने की शक्ति रखती हैं। इस मित्रता से आत्मविश्वास बना रहता है। यदि यह मित्रता परिवार में फूट डालती है तो इसका कोई अर्थ नहीं। छिपकर मित्रता की तो वह सही मायने में मित्रता नहीं है। जो हो खुलकर हो। पति-पत्नी को आपस में विश्वासघात नहीं करना चाहिए। यदि पुरुष पत्नी से छिपकर स्त्री मित्र बनाता है तो वह पत्नी से धोखा कर रहा है, जो उसी के लिए अपना घर छोड़कर आयी है, फिर जहां धोखा है वहां प्यार कहां होगा ? परिवार कहां होगा ?

"मित्रता जब प्रगाढ़ रूप ले लेती है तो वह प्यार हो जाती है !"

शारीरिक संबंधों को मित्रता में स्थान नहीं देना चाहिए। शादी से पहले भी नहीं, तो बाद में क्यों ? कारण पूछने पर उन्होंने कहा कि हमारे संस्कारों में है इसलिए। हमारा समाज पश्चिम की नकल करने की होड़ में है जिससे घुटन होती है क्योंकि न तो हम पूरी तरह अपनी संस्कृति जी पा रहे हैं और न ही विदेशी। अधकचरी संस्कृति सदैव हानि ही देती है। आज इसलिए तनाव बढ़ रहे हैं लेकिन उन्हें दूर करने के लिए हम बहुत कुछ रचनात्मक व कलात्मक कर सकते हैं। ऐसा नहीं है कि स्त्री-पुरुष मित्रता ही सारे तनावों को दूर करने का एकमात्र मार्ग है।

जीने का हक सभी को है

अंजना कपूर एक कुशल गृहिणी और व्यवसायी हैं। यह स्त्री-पुरुष मित्रता को आवश्यक मानती हैं। इनके अनुसार स्त्रियां कितना भी घर से बाहर निकलें, काम करें किंतु उनकी सोच सीमाबद्ध होती है। पुरुषों का कार्य-क्षेत्र व दायरा विस्तृत होता है। उनसे

"मैंने तो पुरुष मित्रों से जीवन में बहुत कुछ सीखा है।"

बहुत कुछ सीखने को मिलता है। अपने अनुभवों के आधार पर उन्होंने कहा कि बहुत से उच्च पदों की स्त्रियां थोड़ी देर बाद ही गहने-कपड़ों के विषय पर उतर आती हैं, मैंने तो पुरुष मित्रों से जीवन में बहुत कुछ सीखा है। आज समाज बदल रहा है, विचारधाराएं बदली हैं। स्त्री-पुरुष साथ-साथ काम करेंगे तो मित्र तो बनेंगे ही। नहीं तो स्त्रियां बाहर ही न निकलें।

शारीरिक संबंधों के प्रश्नों का मित्रता में कोई स्थान नहीं है। मित्रता मित्रता ही है। यदि कोई स्त्री अपना पारिवारिक जीवन घुटन में जी रही है और किसी पुरुष मित्र से वह हर रूप में जीकर प्रसन्न है तो कोई अपराध नहीं, चूंकि जीने का हक तो सभी को है। बाकी अपने-अपने विचार हैं क्योंकि जैसा किसी का जीवन होगा, वैसी विचारधारा बन जाती है।

— १६८ एस. डबल स्टोरी, न्यू राजेन्द्र नगर, नयी दिल्ली-१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी हास्य कवि सम्मेलन

कवि सम्मेलन के विषय

१. केंद्रीय मंत्रिमंडल के बीच कवि-सम्मेलन । २. पशु-मेले में कवि सम्मेलन । ३. सह-शिक्षण संस्थान (को-एज्यूकेशन कॉलेज) में कवि सम्मेलन । ४. मूक-बधिर संस्थान में कवि सम्मेलन । ५. जेल में डाकुओं के बीच कवि सम्मेलन ।

होली हो या दीवाली, वर्षगांठ हो या अभिनंदन, नुमाइश हो या प्रदर्शनी, तुलसी जयंती हो या बालमेला, मुंडन हो या पशुमेला, कवि सम्मेलन का 'उत्सव' हर जगह देश की महंगाई की तरह विद्यमान है, और उसमें 'हास्य कवि सम्मेलन' का बाजार तो 'लॉटरी बाजार' की तरह गरम रहता है, हर 'सीजन' में । अभी हाल ही में 'कादम्बिनी' ने भी देश के भिन्न-भिन्न 'डिजायन' वाले हास्य कवियों को लेकर एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें कुछ वरिष्ठ थे, कुछ गरिष्ठ थे और कुछ कनिष्ठ थे । कोई विख्यात था तो कोई 'कुख्यात' ! कवियों के अलावा कवयित्रियां और मज़ाइया शायरों ने भी इस कवि सम्मेलन में शिरकत की । इस हास्य कवि सम्मेलन की एक विशेषता और थी और वह थी कि दिये हुए विषयों पर ही काव्य-पाठ करना था । कविराज आते अपने विषय की परची उठाते और फिर उस पर ही अपनी कविता श्रोताओं को सुनाते । संचालक ने क्रिकेट के बल्ले की स्टाइल में माइक घुमाया और नागपुर निवासी अंबाझरी पार्क प्रवासी, संतरों के शहर के हास्यरसी संत्री **मधुप पांडेय** को बुलाया, उनका विषय था सह शिक्षण संस्थान में कवि सम्मेलन । यानी कवि सम्मेलन और सहशिक्षण संस्थान, तो सुनिए श्रीमान—

सह-शिक्षण संस्थान में, बनकर चतुर सुजान
कहा गुरु ने शिष्य से, दो विद्या पर ध्यान
ध्यान से ज्ञान बढ़ेगा
ज्ञान का सूर्य चढ़ेगा

किया शिष्य ने ज्ञान का, ऐसा काम तमाम
गुरु की कन्या षोडशी, 'विद्या' उसका नाम
उसी पर ध्यान लगाकर
ले गया उसे भगाकर

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी किसी ने एक
संपादक से
कहा था, 'आप
कविताओं
का संपादन करेंगे ?'
वे संपादक घबरा गये थे
पर हमने
मनमाना संपादन
किया है, कविताएं
तब भी बरकरार हैं। —सं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

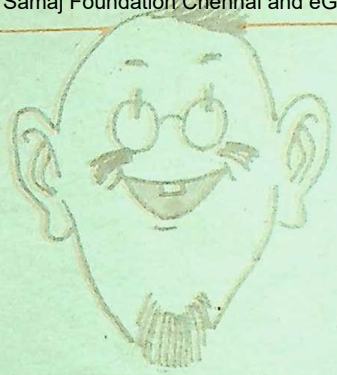

इनकी कविताओं से जब गूंज उठा कवि सम्मेलन का हॉल तो मंच पर आये **बरसाने लाल**। साठ बरस में भी पूरी तरह से ये 'फिट' हैं । हास्य रस के पहले डी. लिट हैं। इनको संचालक ने विषय दिया कवियों के रेले में/कवि सम्मेलन पशु मेले में—

पशु-मेला में आनंद भयो
मानवाधिकार के हिमायितिन के कवि-सम्मेलन हू करवायो
घोड़ा, गधा, गाय, बैलन सबकूं न्यौतो दिलवायो
एक राजकीय साँड़ से वाकौ उद्घाटन करवायो
गज़लकार, वीररसवारे, हास्य कविन् कूं गयो बुलायो
गर्दभजी की तान सुरीली, सुन गीतकार शरमायो
घोड़ा ने दोनों चरण उच्च करि, कश्मीर पे अलख जगायो
भेड़न ने वोटर के रूप में अपनो राग सुनायो
पशु एवं कविन ने मिलिकर एकता को भाव फैलायो
कविन कूं दीनी फीस पशुन कूं इच्छा-भोजन करायो ।

सभागार में गूंज रही थी जब ब्रजभाषा की लय/तो मंच पर प्रकट हुए कटनी के **प्रकाश 'प्रलय'**।संयोग भी क्या रंग लाया, 'पशु मेले में कवि सम्मेलन' वाला ही विषय/इनका भी आया/इन्होंने फरमाया—

शेर और कुत्ते की
जंगल में लड़ाई देख
चुपचाप बैठा-बैठा
गधा मुसकराता है
आदमी में गुण
तेरे हैं कि मेरे हैं
एक दूसरे को कुछ
ज्यादा ही जताता है

बोला— गधा, शेर जी,
शादी से पहले आदमी
आपकी तरह देख
सबको गुर्राता है
भूल जाता चौकड़ी
पत्नी के आते ही
कुत्ते-जैसी दुम
सामने हिलाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

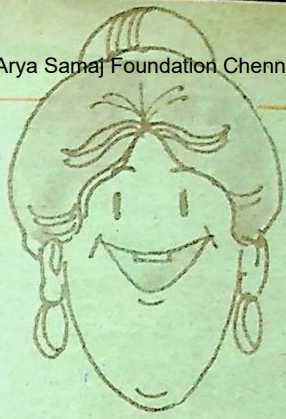

इसके बाद भाई/मुजफ्फरनगर वाले कवि **भौंपू** की बारी आयी । इनकी किस्मत भी क्या खूब खिली, इनको विषय वाली परची/इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अनुरूप ही मिली । विषय था कवि सम्मेलन और मूक बधिर संस्थान/भौंपूंजी ने छेड़ी तान/श्रोता परेशान...

हमने उनके सामने जाकर
अपने ओंठ खोले और कुछ-कुछ बुदबुदाए
और उटपटांग ढंग से अपने अंग मटकाए
अपनी आंखों पर उंगली रखकर इशारा किया
कि हमारी आंखें चिलगोजा हैं, पिस्ता हैं
क्या आप खायेंगे ? उन्होंने इशारे से समझाया
कि जी नहीं, हम इन्हें बाजार में बेच आएंगे
बदले में रंग-बिरंगे गुब्बारे लाएंगे
हमारी ये हरकतें देखते ही मूक बधिर तो क्या,
वाणीवाले खानदान के खानदान ठहाका लगाने लगे
और बोले— हम हैं आपके सगे ।

भौंपूजी की श्रोताओं के समक्ष हुई प्रकट जब कथनी और करनी तो फिर प्रकट हुए जनाब **नज़र बरनी**। कवि सम्मेलन और मुशायरे दोनों में ये दिखते हैं/ये बात अलग है कि ये उर्दू में लिखते हैं/श्रोताओं को करते हुए सलाम/इन्होंने पेश किया अपना कलाम—

यह कवि सम्मेलन है या पशु सम्मेलन ?
न कोई कवियत्री, न गायिका है
विज्ञापन जिस वस्तु का छपवाया
न वह है न नायिका है ।

टेंडर में जो माल दिखाया,
उसको आखिर कहां छिपाया ?
कवि सम्मेलन के नाम पर
पशु सम्मेलन ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

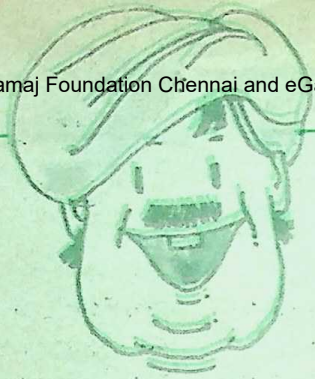

जब जौहर दिखा चुके नज़र बरनी अपने उन्वान से/तो पत्थर लगे बरसने जी हां आसमान से । इस परेशानी के आलम को देखकर जब भर आये श्रोताओं के नैना/तब मंच पर आयीं **इंदिरा 'इंदु'** बाया मुरैना/बहरों की आंखें भी हो गयीं सजल/जब पढ़ी उन्होंने अपनी ये गज़ल—

हम तो चले थे दो ही कदम बस मकान से
पत्थर बरसने लग गये क्यूं आसमान से
निकले खरीदने को हम मुसकान की किरन
लेकिन खरीद लाये हम आंसू दूकान से

फूलों के हार से हुआ सम्मान उन्हीं का
सौदा हुआ था कत्ल का जिनके मकान से
गालिब औ मीर तो गज़ल के बादशाह थे
'इंदु' सुना रही है गज़ल स्वाभिमान से।

इंदुजी के बाद आये चेहरे से मासूम, स्वभाव से हठी/मेरठ के शायर **पॉपुलर मेरठी** । एक पशु मेले का वाकया जब उन्हें याद आया, तब उन्होंने कुछ इस तरह सुनाया—

किसी जलसे में एक लीडर ने ये एलान फरमाया
हमारे मंत्री आने को हैं तैयार हो जाओ

यकायक लाउडस्पीकर से गूंजा फिल्म का नगमा
यहां पर डाकू आनेवाले हैं होशियार हो जाओ

पॉपुलर के एलान का करने को कम गम, मंच पर अवतरित हुईं **डॉ. सरोजनी 'प्रीतम'**/चेहरे पर आस लिये, अंखियों में प्यास लिये वे बोलीं, मंदिर में मंडल में/केंद्रीय मंत्री मंडल में—

मंत्रियों को देख-देख अंखियों की प्यास बुझी
'एक-एक मंत्री, म्हारे आंखन के तारे हैं...'
सबसे विनम्र कर जोर कहे 'प्रीतम'
'जेते तुम तारे, प्रियतम नभ में न तारे हैं'

तारे की बात हुई तो सूरज भी मंच पर खिला/लखनऊ के **सूर्य कुमार पांडेय** को काव्य पाठ का मौका मिला । भैंस पर भजन और गधे पर गज़लें लिखने के 'स्पेशलिस्ट' ने पशु मेले में अपनी खूंख्वार प्रतिभा का परिचय यों दिया—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेले में आते ही फूटी किस्मत हाय ! अभागी
गीतों की डायरी पुरानी एक भैंस ले भागी
पशु मेले में कविताई का गुड़-गोबर कर डाला
महंगे हैं पशु, कवि सस्ता है, देखा खेल निराला
क्या बतलाएं, सम्मेलन में हम कितना रोये हैं
किसे सुनाएं, श्रोता घोड़े बेच-बेच सोये हैं ।

पांडे की हास्य कविताएं सनकर श्रोता जब कवि की ओर लपके तो मंच पर अलीगढ़ वाले **प्रेम किशोर 'पटाखा'** टपके । बोले— जेल के डाकुओं पर कविता बनायी है । श्रोता बोले— बधाई हो !! आप किस डाकू के भाई हो ?? छोड़ते हुए पटाखे की लड़ी उन्होंने कविता पढ़ी—

शक्ल से वे ना तो कवि थे और ना शायर
मंच पर आ गये करते हुए फायर
वीररस की कविता से पंडाल की बिजली उड़ सकती है
पब्लिक उखड़ सकती है
हास्य रस के नाम पर चुटकुलेबांज छा जाते हैं
भरपूर पारिश्रमिक झपटकर उड़ जाते हैं
वे अपनी कविताओं से छल कर रहे हैं
हम उनके लिए निकल रहे हैं ।

इसके बाद कवि सम्मेलन के भूमिगत अध्यक्ष का भी बोलने का मौका आया! उन्होंने यह कहकर संचालक **सुरेश 'नीरव'** को बुलाया—

संचालक में देखते इस तरह का जोश
'नीरव' होकर बोलता रहता ना खामोश

सुरेश नीरव ने अपनी भयानक प्रतिभा का झंडा गाड़ दिया । जमा-जमाया कवि सम्मेलन अपनी चार लाइनों से उखाड़ दिया—

आती है आज भी याद
वो घटना अकेले में
जब हमने किया था काव्य पाठ
एक पशु मेले में
श्रोताओं में आदमी थे कम
ज्यादा थे जानवर
आप खुश होंगे ये जानकर
कि पशु भी हमारी हास्य कविताओं के साथ
अपना स्वर मिलाते थे
खुशी में श्रोता हंसते थे
तो पशु अपनी पूंछ हिलाते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन प्रेम कविताएं

निरंतर नीर

खाली-खाली ताल के वक्ष पर
जब
उमड़ती है बारिश
तो
वह जलाशय हो जाता है
छलछला कर
भर जाता है
उत्कंठाओं आकांक्षाओं की
चंचल
लहरियों से
आकंठ भर जाता है !
और
सच है यह भी
कि
जब-तब वह
अपनी छलछलाहट अपनी संतुष्टि
अपनी नीम बेहोशी के उन्माद से
डर जाता है !

संक्षेप

नि:शब्द मरना और झरना
अलग रह कर
नहीं होता है बार-बार
किंतु
साथ रह कर
होता
है !

—मणि मधुकर

—अध्यक्ष,
नेशनल प्रेस इंडिया,
९ पूसा रोड
नयी दिल्ली—११०००५

अज्ञात

कुछ तो था जो तुमने छोड़
अपने पीछे
प्रेस क्लब में
कि
चलता रहा वार्तालाप
उसी तरह
उसी मेज
पर
अविराम
तुम्हारे साथ
यमन कल्याण-सा
उसी अमृता शेरगिल के स

फागुन मचा है

देह के
इस फूल में
फागुन मचा है ।

बंधी थी
अब तलक,
कस्तूरी गंध, वह-
फैली दस दिशाओं में
भटकती सूनी
हवाओं में
फागुन बसा है

पलाश फूटे
या आग फैली
जले दीये-
क्षितिज के पार तक
हिय-थाल और
सुघड़ बाहों में
फागुन सजा है

आंखों में
ठहरे अभी तक
न जाने कितने सपन
दरपन देखती
निगाहों में
फागुन रचा है

—डा. हरिमो

पो. बॉक्स नं.—
श्रीनगर (गढ़वाल
उ. प्र.—२४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अ' लगाने से किसी चीज का
उल्टा है,
या फिर किसी बावले का भाग्य
पलटा है

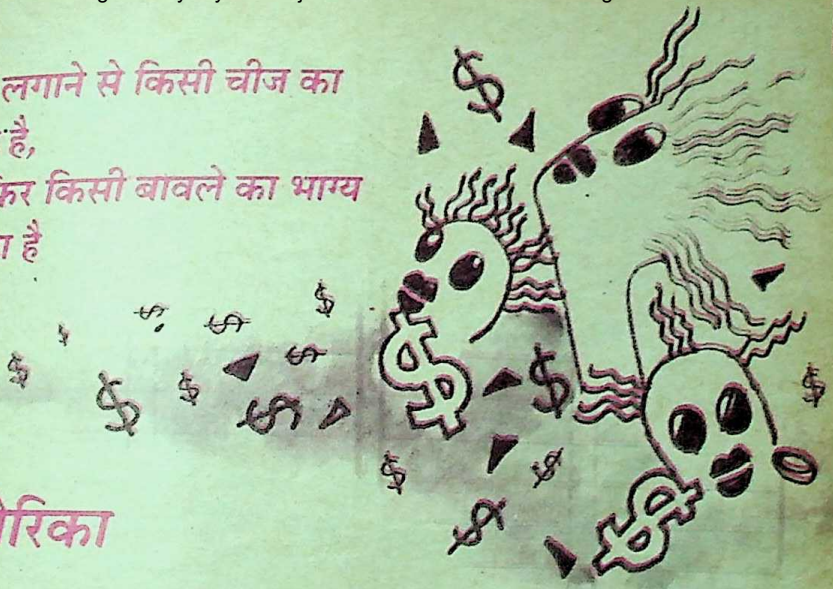

अमेरिका

जैसे अकहानी, अकविता, अनाम या अनाम्निका
वैसे अमेरिका
'अ' लगाने से उल्टा किसी चीज का
भारत से तिहाई जनता,
तीन *गुनी* भूमि बहुत खाली पड़ी है
फिर भी !
सौ-सौ मंजिल इमारत बनाने की पड़ी है ।
फैशन यहां बड़ी जल्दी बदलता है
आज का हटाकर,
फिर कल का निकलता है
आदिवासियों-जैसा
यह फैशन है, इसमें शरमाना कैसा
विज्ञान और गणित के जोर पर
कैलक्यूलेटर और कंप्यूटर बनाते हैं,
रॉकेट उड़ाते हैं
चंद्रमा पर पहुंचकर,
ठीक समय पर वापस आ जाते हैं
किंतु मुंहजबानी,
दस और दो जोड़ने में, चकराते हैं ।
बिजनेस यहां का बड़ा अजीब है
किंतु बड़ा सौम्य और सजीव है ।
पोलाइट, प्रैक्टिकल ।
लोहे की एक सीधी-सी छड़ी
आग कुरेदने की ।
छह डॉलर की
छोटे-छोटे हजार पुरजों की घड़ी
दो डॉलर की
कुछ चीजें फिफ्टी परसैंट सेल कर देते हैं
बाकी में ग्राहक की जेब झटक लेते हैं
साधन व शक्ति, खनिज और संपत्ति
दुनिया में सबसे बढ़कर है
किंतु फिजूलखर्ची, उससे भी बढ़कर है
इसीलिए लोगों की जेबें
अक्सर खाली मिलेंगी
कुछ क्रेडिट कार्ड, और बस कार की चाबी मिलेगी
इसीलिए अमेरिका 'अ' लगाने से, किसी चीज का
उल्टा है
या फिर किसी बावले का भाग्य पलटा है ।

—हरीबाबू बिंदल

4787 RIVER VALLEY WAY
BOWIE MD 20720

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपनिषद की कहानियां-२

आपद्धर्म

● डॉ. सुधा पांडेय

भाई मुझे धर्मशास्त्र की शिक्षा न दो । मनुष्य का सबसे प्रधान धर्म है प्राणों की रक्षा । मुझे भोजन देने से तुम्हें पाप नहीं लगेगा अपितु एक जीवनदान का पुण्य मिलेगा ।

प्राचीनकाल का संदर्भ है कि एक समय कुरुप्रदेश में भीषण वर्षा हुई और ओलों से सब नष्ट-भ्रष्ट हो गया । सारी फसल नष्ट हो गयी, निवासियों के घर-बार भी बाढ़ में बह गये । उसी कुरु प्रदेश के एक ग्राम में सरस्वती नदी के तट पर एक विद्वान ब्राह्मण चक्र निवास करते थे, उनकी विद्वत्ता की ख्याति पूरे देशभर में फैली थी । चक्र की मृत्यु के बाद उनके पुत्र 'उषस्ति' उनके गुरुकुल का कार्य देखने लगे ।

प्राकृतिक विपदा से त्रस्त 'उषस्ति' के शिष्यगण आहारादि की खोज में कहीं अन्यत्र चले गये । उषस्ति भी अपनी पत्नी के साथ वहां से दूसरे स्थान को चल पड़े । सारे प्रदेश में दुष्काल की भयावह छाया थी । अतिथि, गुरु और पुरोहित किसी के लिए भी कोई व्यक्ति कोई उपाय नहीं कर पा रहे थे । सभी विवश थे और सभी समस्याओं से ग्रस्त । आहार न मिल पाने के कारण उषस्ति की पत्नी प्राण त्यागने को तत्पर हो गयी । इस क्षण आचार्य उषस्ति का हृदय नियति की क्रूर विडंबना पर वेदना से भर गया कि सहस्रों विद्यार्थियों का पोषण करनेवाले आचार्य की पत्नी विपन्नावस्था में हैं और वह उनकी कुछ सहायता नहीं कर पा रहे । इस मध्य थककर वे दोनों पति-पत्नी वृक्ष की छाया में विश्राम करने लगे ।

संयोगवश पूर्व देश के कुछ पथिक वहां से निकले । उन्हें उषस्ति और उनकी पत्नी की कठिनाई देखकर उन पर दया आ गयी और उन्होंने अपना बचा-खुचा अन्न उनके लिए दे दिया । इस अन्न से कुछ भूख मिटने पर आचार्य प्रवर को आशा बंधी और उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि 'कोशल प्रदेश में इतना अकाल नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

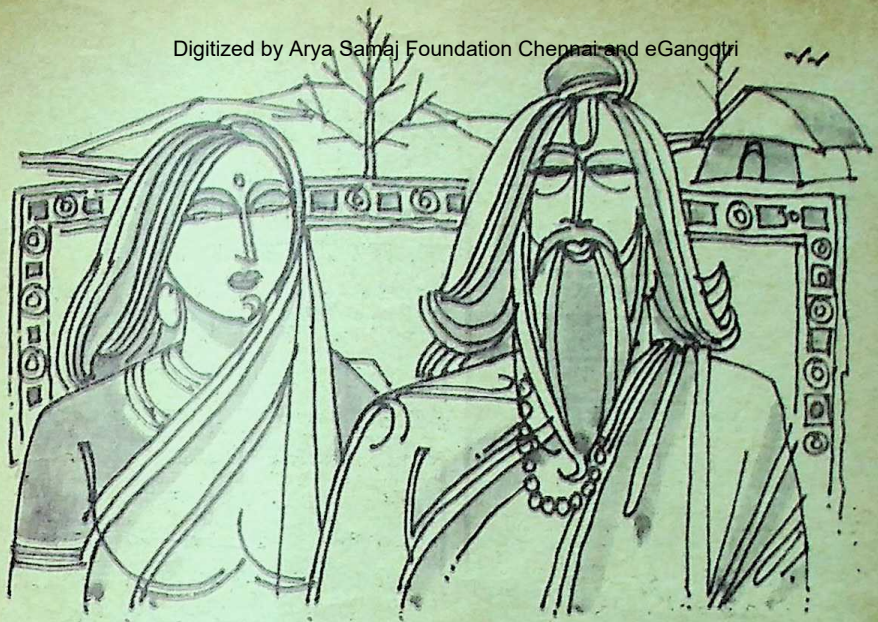

पड़ा है । हम ब्राह्मणों को वहां खाने-पीने की कमी न होगी । अतः अब वहीं चलने का प्रयास करें ।' कई दिनों तक भूखे रहने के कारण दोनों प्राणी इतने अधिक दुर्बल हो गये थे कि उनमें चलने की शक्ति भी न रह गयी थी । संध्या समय हो गया था, उषस्ति दंपत्ति ने संध्यावंदन किया और आगे बढ़े । अगले ग्राम तक पहुंचते-पहुंचते काफी रात्रि हो गयी । यह ग्राम हाथीवालों का था और अकाल का प्रभाव यहां भी था । उषस्ति की शक्ति यहां तक पहुंचते-पहुंचते क्षीण पड़ने लगी, फलतः दोनों ने इसी गांव में रुकने का निश्चय कर ग्राम के सबसे संपन्न महावत के द्वार पर जाकर अपना पड़ाव डाल दिया । वह धनवान महावत भी कहीं से याचना करके लाये उड़द को खा रहा था, उसकी थाली में वे ही उड़द बचे थे । वह चिंतामग्न था कि आज मैं अपने आतिथ्य धर्म का पालन किस प्रकार कर पाऊंगा । तभी उषस्ति ने उसके समीप जाकर कहा—"भाई ! मुझे भी कुछ खाने को दो, दस-बारह दिनों से मुझे कुछ भी खाने को नहीं मिला है ।"

महावत भी उसकी स्थिति को देखकर अवसन्न रह गया । उनके समक्ष हाथ जोड़कर खड़ा हो गया तथा विनीत स्वर में बोला—"महाराज ! कई दिनों से मेरे घर में खाने-पीने को कुछ भी नहीं था, आज कई दिनों बाद बड़ी कठिनाई से यह उड़द मिले हैं । इन्हें पकाकर खा रहा हूं । ये जूठे हैं एवं पड़ोस में भी कोई घर ऐसा नहीं है कि जो आपकी सहायता कर सके । आप मुझे क्षमा करें ।"

उषस्ति की आंखों से क्षुधा की ज्वालाएं मानो निकल रही थीं । उन्होंने महावत से कहा—"सौम्य । मेरी दशा ऐसी नहीं है कि मैं और धैर्य धारण कर सकूं । तुम मुझे अपना जूठा उड़द दे दो, उसमें तुम्हें कोई दोष नहीं होगा ।"

महावत पुनः विनीत स्वर में बोला—"महाराज मैं निम्न वृत्ति से अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

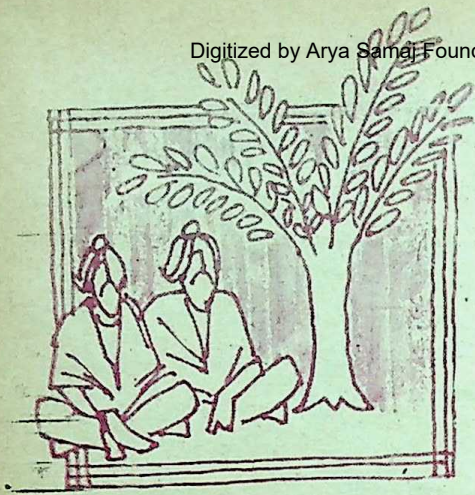

आजीविका पालन करनेवाला हूं । आप-सदृश ब्राह्म । ऋषि को मैं अपना जूठा कैसे दे सकता हूं ?''

उषस्ति और अधीर हो उठे और कठोर स्वर में बोले—''भाई मुझे धर्मशास्त्र की शिक्षा न दो । मनुष्य का सबसे प्रधान धर्म है प्राणों की रक्षा । मुझे भोजन देने से तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा अपितु एक जीवनदान का पुण्य मिलेगा ।''

महावत निरुत्तर हो गया, उसने थाली का बचा हुआ उड़द उषस्ति के सामने रख दिया । शीघ्र ही उषस्ति ने वह सारा भोजन खा लिया । उनकी पत्नी पहले ही भिक्षा मांगकर खा चुकी थी, अतः बचे उड़द को उसने दूसरे दिन के लिए रख लिया । उड़द खाने के बाद उषस्ति ने पानी मांगा । महावत ने कहा, ''महाराज उस पात्र में जल भी रखा है ।''

उषस्ति ने उत्तर दिया कि ''भाई मैं तुम्हारा जूठा जल नहीं पी सकता ऐसा करने से मुझे और तुम्हें दोनों को पाप लगेगा ।''

महावत पुनः विस्मय में पड़ गया और विनीत स्वर में बोला—''महाराज आपने मेरे जूठे उड़द तो खा लिये, पर पानी पीने में क्या हानि है ?''

उषस्ति ने उत्तर दिया, ''यदि मैं तुम्हारे जूठे उड़द को न खाता तो थोड़ी देर में मेरे प्राण पखेरू उड़ जाते, जल के बिना तो मेरे प्राण रह सकते हैं, उड़द की तरह यदि मैं तुम्हारे जूठे जल को भी पी लूं तो यह मेरा स्वेच्छाचार होगा, आपद्धर्म नहीं । प्राणों को बचाने के लिए मैंने जो कुछ किया उसमें यदि धर्म की मर्यादा कुछ कम हुई हो तो दोष नहीं लगता ।'' उषस्ति के ये वचन सुनकर महावत धन्य हो गया ।

अगले दिन पुनः वे बचे हुए उड़द खाकर आजीविका की तलाश में चले । मार्ग में उन्हें पथिकों से ज्ञात हुआ कि यहां से दस कोस दूर एक राजा बृहत यज्ञ का आयोजन कर रहे हैं उस यज्ञ में कई ब्राह्मण आमंत्रित किये गये हैं और उन्हें प्रभूत धन, वस्त्र दान में दिया जाएगा । राजा विद्वानों का सम्मान भी करनेवाले हैं । हर्ष और आशा से आह्लादित वे दोनों राजद्वार पर पहुंचे, राजा का यज्ञ छह-सात दिनों से चल रहा था । यज्ञ में प्रस्तोता, उद्गाता, प्रतिहर्ता सभी अपने-अपने कार्य में संलग्न थे । राजा भी पवित्र वेदी पर आसीन हो यज्ञाग्नि में आहुति देने जा रहे थे, तभी उषस्ति ने पूर्व द्वार पर पहुंचकर यज्ञ-मंडप में प्रवेश किया । उनके तेजस्वी रूप को देखते ही सभी पंडित विस्मित रह गये । उसके साथ ही उषस्ति ने यह भी जान लिया कि ये सभी पंडित यज्ञ विधि से अनभिज्ञ हैं । आचार्य उषस्ति ने उन पंडितों से कुछ ऐसे प्रश्न किये, जिनका वे लोग उत्तर न दे सके । उषस्ति ने जान लिया कि सभी पंडित दक्षिणा के लोभ में राजा के यज्ञ को विकृत कर रहे हैं । उषस्ति ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्गाता को पुकारकर कहा—"हे उद्गीथ की स्तुति करनेवाले विप्र ! यदि आप उद्गीथ भाग के देवता का स्वरूप पहचाने बिना यों ही उद्गान करेंगे तो आप सबका मस्तक नीचे गिर पड़ेगा।"

उसी समय भयभीत राजा उषस्ति के चरणों में नतमस्तक होकर पूछने लगे कि 'भगवन आप कौन हैं ? आप अपना परिचय तो दें।'

उषस्ति ने उत्तर दिया, "महाराज मैं उषस्ति चक्रायण हूं।"

राजा प्रसन्नता से गद्गद हो उठे और बोले कि 'भगवन ब्रह्मर्षि चक्र के सुपुत्र उषस्ति आप ही हैं जिनके पांडित्य की ख्याति संपूर्ण जगत में थी। मैंने आपको ढूंढ़ने के लिए दूत आपकी सेवा में भेजा था किंतु ज्ञात हुआ कि बाढ़ में आश्रम बह जाने के कारण आप अन्यत्र कहीं चले गये हैं। मैं धन्य हूं कि आप यहां पधारे हैं। अब इन ऋत्विजों के साथ मिलकर आप मुख्य ऋत्विज बन इस यज्ञ का संपादन करें।'

उषस्ति ने कहा, "हे राजन ! जिन ऋत्विजों का आपने पहले वरण किया है वे ही मेरी देख-रेख में यज्ञ कराएंगे और साथ ही जितनी दक्षिणा उन्हें देनी तय हुई है मैं भी उतनी ही दक्षिणा लूंगा, उससे अधिक नहीं।"

राजा ने कहा—"तथास्तु।"

आचार्य उषस्ति की इस उदारता को देखकर सभी पंडित विनम्र भाव से उनके पास आये और अपनी-अपनी कमी पूछने लगे। अनंतर उन पंडितों ने यज्ञ की सभी विधियों की यथोचित शिक्षा प्राप्त कर उस विषय का संपूर्ण ज्ञान हृदयंगम किया और उषस्ति के आचार्यत्व में राजा का यज्ञ पूर्ववत चलने लगा।

इस प्रकार उषस्ति ने अनेक संकटों को पार कर आपद्धर्म द्वारा अपने प्राणों की रक्षा की और द्विविधा से यज्ञ का श्रेय नष्ट करनेवाले अज्ञानी धार्मिकों से राजा का पथ भी प्रशस्त किया।

(छांदोग्योपनिषद से)

एक बच्चा, एक पेड़

रोम की नगर पालिका पंजीयक कार्यालय ने एक कानून पारित किया है, जिसके अनुसार एक बच्चे के पैदा होने के एक वर्ष के भीतर एक पेड़ लगाया जाएगा और बच्चे के जन्म प्रमाण पत्र में उस स्थान को दर्ज किया जाएगा, जहां पेड़ लगाया गया है। यह कानून इस मान्यता पर आधारित है कि बच्चे और पेड़ का विकास साथ-साथ होने से यह आपसी सहजीविता का सबक होगा। वर्ल्ड आर्गेनाइजेशन फॉर चाइल्डहुड एड्यूकेशन के अध्यक्ष के अनुसार "बच्चे के अधिकारों को मानना अर्थात प्राकृतिक पर्यावरण का सम्मान करना है। बच्चे और वृक्ष के प्रति एक जैसी भावना होने से हम हर एक लिए के बेहतर भविष्य की तैयारी कर रहे हैं।"

हमारे देश में प्रतिवर्ष एक करोड़ बीस लाख से अधिक बच्चे पैदा होते हैं। यदि ऐसा ही कानून हमारे देश में हो तो हम आनेवाली संतति के लिए हरा-भरा भविष्य तैयार कर सकते हैं। हम जो वनमहोत्सव मनाते हैं उसके लिए इससे अच्छा उपाय और क्या हो सकता है ? (सीईईएनएफएस)

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-व्यंग्य

प्यार किया तो मरना क्या...

● काका हाथरसी

जब मैं बीस बरस का था तो एक ज्योतिषी ने मेरा हाथ देखकर मेरी मां से कहा था कि 'यह चालीस बरस पार कर ले तो बहुत समझो।' मेरे ऊपर इस घोषणा का कोई खास असर नहीं पड़ा था क्योंकि मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब था। हर समय कफ़ की शिकायत रहती थी, दांतों में पायरिया था। मैंने एक-एक करके दांत निकलवाना शुरू कर दिया। नियमित रूप से प्रातः और सायं आठ-दस किलोमीटर टहलना, दौड़ लगाना, नीम की पत्तियां चबाना, बकरी का दूध पीना तथा हरे पत्तों की सब्जियों का सेवन चालू कर दिया।

इन सब चीजों का अनुकूल प्रभाव हुआ और उमर चालीस को पार कर गयी। पुस्तकालय में बैठकर नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन, विद्वान, कलाकार और महात्माओं के सत्संग इत्यादि के कारण मेरा झुकाव साहित्य, संगीत और कला की ओर होने लगा। कवि सम्मेलनों के निमंत्रण आने लगे, फिर तो पता ही नहीं लगा कि हम कब साठ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठा हो गये । ज्योतिषी की भविष्यवाणी भी भूल गये । लेकिन जब सत्तर पार हो गये, तो हमने देखा कि हमारे अनेक साथी भगवान को प्यारे हो गये, हम स्वस्थ-मस्त बने हास्य-व्यंग्य में और अधिक व्यस्त हो गये । मरना तो अलग, बीमार होने के लिए भी अवकाश नहीं मिलता था । धीरे-धीरे जीवन की नैया अस्सी के किनारे आ लगी । अब लोगों ने कहना शुरू कर दिया— 'असिया सो रसिया' । वास्तव में हम कुछ रसीले हो भी गये थे । इतनी उमर में भी अपने को सही-सलामत देखकर हमें खुद ताज्जुब होता । कहीं नजर न लग जाए, इसलिए हमने कहना शुरू कर दिया कि 'अब हम मरना चाहते हैं ।' हमारे मुंह से निकलना था कि लोगों में खुशी की लहर दौड़ गयी ।

युवा हास्य कवि सोचने लगे कि बस काका के मरते ही अपनी तूती बोलने लगेगी । साहित्यकार सोचने लगे कि काका की वजह से गीत मर गये हैं और मंच पर हास्य की धारा बहने लगी है, वह समाप्त होगी तो गीतकारों का कल्याण होगा । परिवार के लोग सोचने लगे कि अच्छा है, भगवान सुन ले तो बीमे की रकम मिल जाए । हमें लगने लगा कि अब हमारा वक्त नजदीक आ गया है अतः ऐसे स्थान पर चले जाना चाहिए जहां गंगा नजदीक हो, क्योंकि गंगा से हमारा लगाव शुरू से ही रहा है । हमने लोगों से कहना शुरू कर दिया कि 'अब हम मरनेवाले हैं, इसलिए हाथरस छोड़कर बिजनौर रहा करेंगे । वहां गंगा है और हमारी भतीजी के पति डॉ. गिरिराज शरण भी हैं, जो हमें बड़े प्यार से रखेंगे ।'

जब हम बिजनौर पहुंचे तो डॉ. गिरिराज बोले— 'काका अच्छा हुआ, जो आप इधर आ गये । बिजनौर मरने के लिए बहुत अच्छी जगह है लेकिन यहां मेरे चेले कुछ डॉक्टर हैं, जो आपको आसानी से नहीं मरने देंगे ।' हम निराश हो गये और कुछ दिन वहां बिताकर दिल्ली चले आये । दिल्ली में अपनी दूसरी भतीजी के पति डॉ. अशोक चक्रधर के घर हम ठहरे ।

अशोक चक्रधर बोले— "काका आपने मरने की ठान ली है, तो फिर दिल्ली में मरना ठीक रहेगा । नेता टाइप लोग सब राजधानी में ही मरते हैं । आप देख लेना, जिस दिन आपकी मृत्यु होगी, उस दिन मैं सारी दिल्ली बंद करा दूंगा । राजघाट से धोबीघाट तक जुलूस ही जुलूस दिखायी पड़ेगा । केंद्रीय मंत्रिमंडल आपके शव पर पुष्प चढ़ाने आएगा । मैं आपके

धीरे-धीरे जीवन की नैया अस्सी के किनारे आ लगी । अब लोगों ने कहना शुरू कर दिया — 'असिया सो रसिया' । वास्तव में हम कुछ रसीले भी हो गये थे । इतनी उमर में भी अपने को सही-सलामत देखकर हमें खुद ताज्जुब होता । कहीं नजर न लग जाए, इसलिए हमने कहना शुरू कर दिया कि 'अब हम मरना चाहते हैं ।'

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

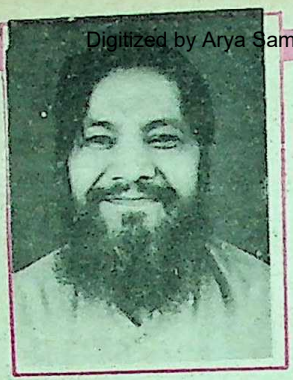

रथ पर खड़ा होकर कमेंट्री करूंगा जिसे दूरदर्शनवाले दिखाते रहेंगे । आपका हो जाएगा काम और मेरा हो जाएगा नाम । बोलो मंजूर हो तो इंतजाम करूं ।''

इतने में ही वहां कर्णवास गंगा तटवाले एक पंडा आ गये जो गत ५० वर्षों से हमसे परिचित थे । पंडाजी बोले, ''देखो काका, आप कवि हैं, गंगा प्रेमी हैं और किसी महात्मा से कम नहीं हैं । मरने का विचार आपका उत्तम है, हमारे देश में अनेक मुनियों ने इच्छा मृत्यु का वरण

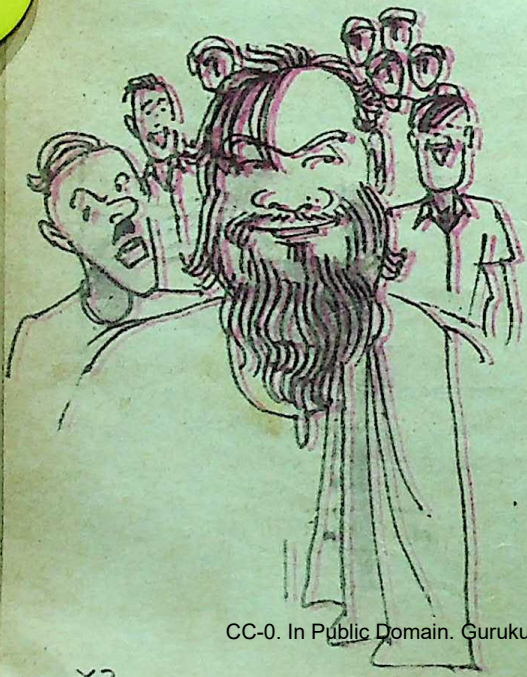

किया है, जब भी आप चाहेंगे तो हम कर्णवास में पहले से ही आपकी चिता सजवा देंगे या चाहेंगे तो जल समाधि दिलवा देंगे । लेकिन जब तक आपके होशोहवास दुरुस्त हैं तब तक हमारी राय मानें, तो एक गाय पुन्न कर दें ।''

हमें पंडितजी की बात जंची नहीं । गरमी भी काफी पड़ने लगी थी, इसलिए मसूरी चले गये । वहां नित्य प्रति बड़े-बड़े लोग कैमिल्स बैक रोड पर टहलने जाते हैं । उनसे भी हमने चर्चा करके राय मांगी । उनका कहना था कि 'मैदानी इलाकों में तो सभी मरते हैं लेकिन पहाड़ पर मरना सबके नसीब में नहीं होता । यहां मरने का मजा ही कुछ और है । यहां न लकड़ियों का झंझट है और न चिता सजाने का झगड़ा । डॉक्टर भी आसानी से नहीं मिलता, जो मरते को बचा ले । चार-पांच मित्र मिलकर लाश को पहाड़ की चोटी से लुढ़का देंगे । चारों ओर बर्फ से ढकी हुई श्वेत धवल चोटियां आपका स्वागत करेंगी । बड़े-बड़े तीर्थयात्रियों की बसें जब यहां खड्ड में गिरती हैं तो सभी सीधे स्वर्ग चले जाते हैं । अजी और तो और, पांडव तक यहां गलने को चले आये थे । आप भी जीवन-मुक्त हो जाएंगे, बार-बार मनुष्य योनि में नहीं भटकना पड़ेगा ।'

इसी बीच हमें मथुरा रेडियो से एक कार्यक्रम का निमंत्रण मिल गया । हम मथुरा चले आये, वहां ब्रजकला केंद्रवाले भैयाजी से भेंट हुई । भैयाजी से जब बात छिड़ी तो वे बोले— ''काका, मरने के चक्कर में आप इधर-उधर क्यों भटक रहे हैं, पूरा बंगाल इस शुभकर्म के लिए यहां आता है । ब्रज में सभी देवी-देवताओं का निवास है । मथुरा में आप मरेंगे तो सीधे मोक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को प्राप्त होंगे । उस दिन हम नौटंकी भी करा देंगे । होली दरवाजे पर झंडा लगवा दिया जाएगा । आप मोक्षधाम को जाएंगे और हम रबड़ी खुरचन उड़ाएंगे । फिर आपकी पुण्यतिथि पर प्रति वर्ष नगाड़ा बजता रहेगा । चंदा होता रहेगा और धंधा चलता रहेगा । बोलो मंजूर हो तो आज आखिरी घुटवा दूं बादाम-पिस्ते की केसरिया ठंडाई ।'' हमने सोचकर जवाब देने के लिए कहते हुए उनसे विदा ली और हाथरस आ गये ।

हाथरस में हमारे मरने की चर्चा आग की तरह फैल गयी । सभी शुभचिंतक इकट्ठे हो गये । हमारा बेटा लक्ष्मी नारायण बोला—
''काकू, आपको सब लोग बहका रहे हैं, आपकी कुंडली साफ कह रही है कि आप जमीन पर मर ही नहीं सकते । अभी तो आपको एक अमरीका यात्रा और करनी है । मैं प्रोग्राम बना देता हूं । जाने से पहले पचास लाख का बीमा भी करा दूंगा । अगर हवाई जहाज गिर गया, तो आपको बिना कष्ट मौत मिलेगी, और इधर मैं बीमा की रकम डकार जाऊंगा । ब्याज से प्रतिवर्ष श्राद्ध कर दिया करूंगा, फिर सैकड़ों विशिष्ट व्यक्तियों के साथ मरने का मजा ही कुछ और है ।''

इस चकल्लस में कुछ लोगों ने गोष्ठी जमा ली । कविता पाठ हुए और पत्रकार सम्मेलन हुआ । हमें महसूस हुआ कि अभी तो हमारी आवाज में पूरी कड़क है, तभी सामने बैठी एक बुढ़िया पर हमारी नजर गयी, जिसकी सफेद जुल्फों पर लाइट मार रही थी । हम उस पर मर गये और मंच पर ही अड़ गये, मित्र लोग ताड़ गये और सबने मिलकर घोषणा कर दी...
''काका अठासी के हो गये हैं । अब पूरा शतक बनाएंगे और हाथरस में ही मरेंगे ।''
शोर-शराबा सुनकर काकी आ गयी तो सब भाग लिये और हम भीगी बिल्ली बनकर उसके साथ बैडरूम में यह कहते हुए चले गये...

बुढ़िया मन में बस गयी, लाइट मारें केस
चल काका घर आपुने, बहुत रह्यो परदेस

—संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.)

पुरुष ने सात महिलाओं को पछाड़ 'सौंदर्य की रानी' का खिताब जीता

कौन कहता है कि रूप और सौंदर्य की स्वामिनी सिर्फ महिलाएं हो सकती हैं । यौन समानता के समर्थक एक पुरुष ने विगत दिनों ऑस्ट्रेलिया में सात महिलाओं को पछाड़ते हुए 'सौंदर्य की रानी' का खिताब जीतकर युगों-युगों से चले आ रहे इस विश्वास का अंत कर दिया ।

होटल में दरबान का काम करनेवाले २४ वर्षीय डेमियन टेलर ने ब्रिसकेन से ५० किलोमीटर दूर टॅविड हेड्स समुद्र तट पर विंटरसन सौंदर्य प्रतियोगिता जीती । इस प्रतियोगिता में व्यक्तित्व, व्यवहार ज्ञान को भी आधार बनाया गया । कुछ महिला प्रतिस्पर्धी इस बात से काफी नाराज हैं कि एक पुरुष ने उनका हक छीन लिया । हालांकि टेलर इन आलोचनाओं से बिलकुल परेशान नहीं है । उसका अगला लक्ष्य मिस ऑस्ट्रेलिया प्रतियोगिता में हिस्सा लेना है ।

—रमेश कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुढ़ापे को प्रेम सच्चो होत है !

अवस्थी लाला हे भौजी की राम राम,

अपरच समाचार जे है कि तुमाये भइया सठियान लगे हैं । कछू कहो तो कछू करत हैं । मोड़ियें सबई ब्याह गईं, घर में बस हम दोनोइ रह गये । सो लड़त रहत हैं । हम आम कहत हैं तो बे इमली कहत हैं । बुढ़ापे में तो जे घर-घर होतइ है । अकेले बुढ़ापे को प्रेम सच्चो होत है, और काय न होय, अंग सिथिल भये सो दुनिया वारों को साथ छूटो । काका हाथरसी भी कहत हैं बुढ़ापे को प्रेम निस्काम होत है ।

तुम केहो होली पे बुढ़ापे की बात कह दी । अरे ! नई ! लाला ! तुमाये भैया बूढ़े भये हैं अबे भौजी को तो सत्रहवों साल लगो, ई नईयां और पिछले पैंतालीस बरस से हम तुम देवरों के कारन सोला साल पे ऐसे अटके हैं कि आगे बढ़इ नई रहे हैं । कौनउ ने कई है :

तुम प्यार को जिंदगी की निशानी समझो,
जो बहता है उसे तुम पानी समझो,
और जब दिल बुढ़ापे में रंगीन रहे,
ऐसे बुढ़ापे को तो तुम जवानी समझो ।

अरे ! जिंदगी तो हंसबे-खेलबे की है, जबरन को थुथरा चढ़ाबे की तो है नई । कई मनइयन को हमनें देखी है ऐसे थुथरा चढ़ाये रहत हैं कि भरी जमानी में बूढ़े दिखत हैं । एक पते की बात बतायें लाला जो थुथरा चढ़ात हैं, बे सांचउ जल्दी बूढ़े हो जात हैं ।

कचहरी में आधे से ज्यादा वकील भौजी कहत हैं । हम भी कम नईं यां । हम तो ठहरे पुराने कांगरेसी जब कौनउ भाजपाई देवर हमसे 'जय श्री राम' कहत है तो तुरतइ हम अपनो 'पंजा' उठा के ओहे आसीरवाद दे देत हैं । पर लाला । जित्ते गांधारी के पुत्र हते उसे कई गुना हमरे देवर हैं । ई हे, जनसंख्या को कमाल कहो जा सकत है । हमाये जान में जैसे जैसे गणत की गिनती बढ़त गई, जनसंख्या भी बढ़ गई । लाख-करोड़ तो ऊ जमाने में हतेइ नई ते । करोड़ से एक बात आद आ गई । जे चुनाव में जो तरह तरह के गाना चले तो एक जो भी हतो :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमाई समझ में आज तक जो नईं आओ कि लुगवन को पराई लुगाई काय अच्छी लगत है दूसरों पे डोरे डारत फिरत हैं ।

चोली के पीछे क्या है छोड़
अटैची मे क्या है हर्षद एक करोड़

अब मनइ केवल नईं, पैसा भी खूब बढ़ो है । कोई के बाप को का जात है छापे जाओ नोट और बढ़ात जाओ महंगाई । जनता हे महंगाई की मार से चित्त करबे के लाने तो बित्त मंत्री जी तोड़ तोड़कर लगे रहत हैं ।

देखो तो कहां बहक गये । जा राजनीति कछु ऐसी चिपकी है कि बस ई के सिवा जीवन-ज्ञान सब निररथक है । हम कह रये ते कि इत्ते अनगिनती देवरों के बीच में होली पे बस तुमइ जी में बसे रहत हो । तुमें भी जबलपुर नई भूलो हे दिसम्बर ९३ की 'कादम्बिनी' में समस्या पूर्ति में तुमने मदनमहल की पहाड़ी की संतुलन सिला की फोटो दई है । बचपन की कोमल भावना की लकीरें गहरी होत हैं । सुभद्रा मौसी ने भी कई है :—

मैं बचपन को बुला रही थी,
बोल उठी बिटिया मोरी ।
नंदन वन-सी कूक उठी
नन्ही-सी कुटिया मोरी ।

लाला ! बिटिया की बात आई तो के रये हैं कि जैसे जैसे हम आगे बढ़ रये हैं लुगाइन की हालत और खराब हो रई है । बुरो न मानियो लाला ! जे लुगवा औरई जंगली होत जा रये हैं । पढ़ी-लिखी नौकरीवारी लड़किया चाहत हैं, उनकी पूरी कमाई पे डाकुअन जैसो हक समझत हैं, जबकि कानूनन स्त्री धन पे उनको कोई अधिकार नईं है । फिर उनकी लुगाई साथ वारों से बात कर ले तो उनको मूड़ फिर जात है । पहरत तो पैंट हैं, टेबुल पे खात हैं, मोटरगाड़ियों में घूमत हैं पर लुगाइयों के लाने अठारवी सताब्दी के सामंत हैं । अरे ! जब औरत बाहर निकरहे तो चार जनों से बोलहे-बताबे बिना काम कैसे चलहे । आदमी काय दूसरी लुगाइयों से सैन चलात है । एक बात बताओ लाला । हमाई समझ में आज तक जो नईं आओ कि लुगवन को पराई लुगाई काय अच्छी लगत है दूसरों पे डोरे डारत फिरत हैं । अपने 'ईसुरी' कवि ने भी कई है :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बेर कौनियां के दीवान की रानी ने ईसुरी हे बुला भेजो । परेम से भोजन कराओ । रानी हे अनयनी देख ईसुरी ने कारन पूछो तो रानी ने बताओ कि दीवान को मन दूसरी ठकुरान पे आ गओ है । ऐइसे रानी ने कछु जुगत करबे के लाने ईसुरी हे बुलाओ तो । ईसुरी ने दीवान हे फाग सुनाई :—

भौंरा जात पराये बागे
तनक लाज नहिं लागे
घर की कली कौन कम फूली
काय न लेत परागे
कैसे जात लगाउत हुरहें
औरन अंग ते अंगे
जूठी जाठी पातर 'ईसुर'
आवे कूकर कागे

अब कहां धरे ऐसी सुनबे सुनाबे और मानबे बारे । टी बी ने तो सत्यानास कर दओ है । बारा-तेरा बरस के भये नईं कि उन्हें सब पता हो जात है । एक हम ओरे हते । तुमाई बात ले लो । तुम फड़फड़ाये जात ते औ बहू कहीं हमाये पास सो जात ती तो कबउं खटिया के नीचे । तब कहां हते जे सोफा-डबल बेड, जब सब सो जात ते तब घरवारो दबे पांव अपनी गोरी धना की कुठरिया में जात तो । फिर होत ते साठा सो पाठा, अब तो पैंतीस-चालीस के होत होत निपुर कर चुसी गड़ेरी हो जात है । लाला हमें कैसे मालूम भई सो हम बतात हैं कि हमाये पास तलाक के केस वारीं लुगाइयें आतीं हैं तो सब बताती हैं ।

चलो भोत कह सुन लई अब जियत रये तो अगले साल फिर मिलहें ।

का कहैं आज के दिन तुमें, मान लो

—तुमाई भौजी

कुमारी सुधारानी श्रीवास्तव, अधिवक्ता

—२०८/२ गढ़ाफाटक जबलपुर (म.प्र.) ४८२००१

ब्रिटेन में चल रहे वैज्ञानिक अनुसंधानों के बदौलत बहरे लोग भी सुन पाने में समर्थ हो सकेंगे । कई बार अनेक लोग इस वजह से नहीं सुन पाते क्योंकि उनके कानों के भीतर की संवेदी रोम कोशिकाएं निष्प्राण हो जाती हैं । कुछ समय पहले तक यह विकार असाध्य माना जाता था, किंतु ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने इन संवेदी कोशिकाओं को पनपाने में सफलता हासिल की है । इस वैज्ञानिक सफलता की बदौलत ८० प्रतिशत बहरे लोगों के कानों में जान फूंकी जा सकती है, जिनमें ज्यादातर बूढ़े लोग होंगे, जिनकी श्रवण शक्ति संवेदी रोम कोशिकाओं की क्षीणता के कारण समाप्त हो गयी है ।

—रमेश कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसो-हंसो और खूब हंसो

● अभय कुमार जैन

हंसी जीवन का प्रभात है, यह शीतकाल की मधुर धूप है, तो ग्रीष्म की तपती दुपहरी में सघन छाया, इससे आत्मा खिल उठती है, इससे आप तो आनंद पाते ही हैं, दूसरों को भी आनंद प्रदान करते हैं। हास-परिहास पीड़ा का दुश्मन है, निराशा और चिंता का अचूक इलाज और दुःखों के लिए रामबाण है।— स्वेट मार्टन।

लखनऊ के रेलवे स्टेशन से जब आदमी बाहर निकलता है, तो बड़े अक्षरों में लिखे बोर्ड पर नजर टिकती है—

'मुसकराइए कि आप लखनऊ में हैं।'

यह वाक्य पढ़ते ही यात्रियों के चेहरे पर मुसकराहट फैल जाती है। इस एक वाक्य में लखनऊ की जिंदादिली, खुशमिजाजी और नवाबों के समय से चली आ रही लखनऊ की नजाकत के दर्शन होते हैं।

हंसना एक मानवीय लक्षण

हंसना एक मानवीय लक्षण है। सृष्टि का कोई भी जंतु-जीवधारी नहीं हंसता। किसी ने तो मानव की परिभाषा यह दी है कि वह

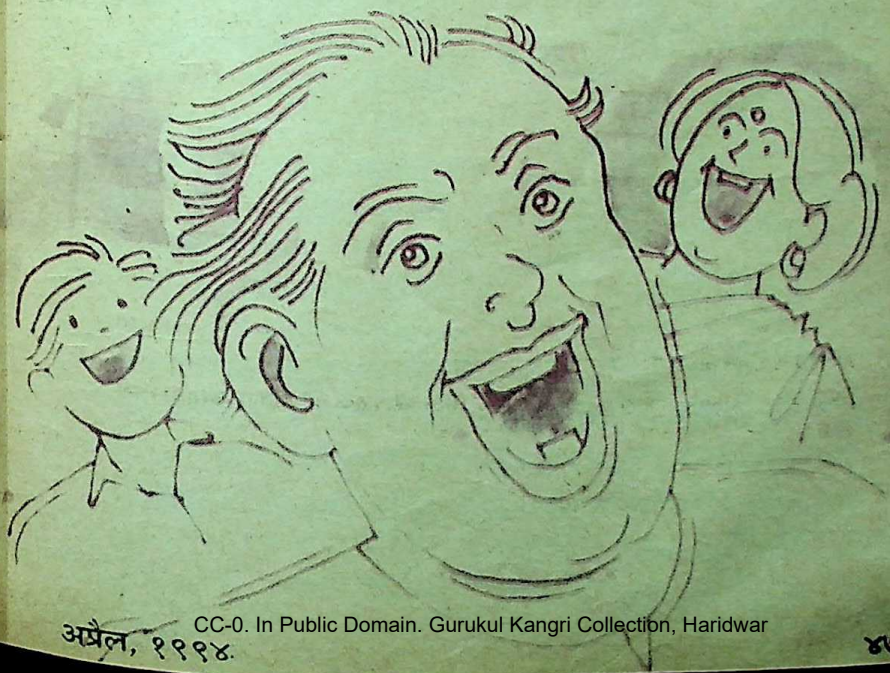

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसनेवाला प्राणी है । जीवन में निरोग रहने के लिए हमेशा मुसकराते रहना चाहिए । खाना खाते मुसकराइए । आप यह महसूस करेंगे कि भोजन अधिक स्वादिष्ट लगेगा । थैकर नामक विचारक ने कहा है—

"प्रसन्नता ऐसी पोशाक है, जो हर समाज, सोसायटी में, हर मौसम में पहनी जा सकती है । मनुष्य की आत्मा की संतुष्टि, शारीरिक स्वास्थ्य और बुद्धि की स्थिरता नापने का एक ही थर्मामीटर है, चेहरे पर लिखी प्रसन्नता ।"

शेक्सपीयर ने कहा है— "प्रसन्नचित्त आदमी अधिक जीता है । दुःखी, चिंतातुर और उदास मुखवाला, सभी को ऐसा मायूस लगता है, जैसे कोई मौत की खबर लेकर आया हो ।"

गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है—

प्रसादे सर्व दुःखाना हानिरस्योपजायते,
प्रसचेतसो साहाश बुद्ध पर्थवतिष्ठे ।

चित्त प्रसन्न रहने से सब दुःख दूर हो जाते हैं, जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है, उसकी बुद्धि तुरंत ही स्थिर हो जाती है । सेन फ्रांसिस्को में २२ मार्च, १९८७ को ए. पी. द्वारा प्रसारित समाचार में कहा गया है कि एक्जीक्यूटिव, डॉक्टरी तथा चिकित्सा क्षेत्र में लगे अधिकारियों और विद्वानों का कहना है कि हंसी को गंभीरता से लीजिए, यह आपके स्वास्थ्य और संपत्ति की वृद्धि में सहायक सिद्ध होगी ।

बकली (केलिफोर्निया) स्थित प्लेफेयर इनकारपोरेट के संस्थापक अध्यक्ष मेटवीरस्टीन कार्यभार को विनोदपूर्वक हलके-फुलके ढंग से लेने का प्रशिक्षण देने का काम करते हैं । प्रतिवर्ष वह विभिन्न कंपनियों में कार्यरत एक लाख व्यक्तियों को इस कार्यविधि का प्रशिक्षण देते हैं, उन्होंने अपने भाषण में कहा कि— "मैं सभी को यही सलाह देता हूं कि आप अपने काम को गंभीरता से न लें, हलके-फुलके मन से काम को स्वीकार करें, व्यवस्था की प्रवीणता का यह अत्यावश्यक गुर है, उन्होंने बताया कि शोध से यह बात प्रकाश में आयी है कि हंसने-हंसाने से शरीर को रोगमुक्त रखनेवाली शक्ति को बढ़ावा मिलता है, तथा मस्तिष्क में पीड़ा नाशक का उत्पादन होता है ।

स्वास्थ्य के लिए अच्छा टॉनिक

हंसना, स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा टॉनिक है । शरीर में पेट और छाती के बीच एक डायाफ्राम होता है जो हंसते समय धुकधुकी का काम करता है । नियमित रूप से हंसना, शरीर के सभी अवयवों को ताकतवर और पुष्ट करता है । खुलकर हंसने से मनुष्य के रक्त संचार की गति बढ़ जाती है तथा पाचनतंत्र अधिक कुशलता से कार्य करता है । हंसी, श्वसन क्रिया

"खुलकर हंसने से मनुष्य के रक्त संचार की गति बढ़ जाती है तथा पाचनतंत्र अधिक कुशलता से कार्य करता है । हंसी, श्वसन क्रिया को तेज करती है । हंसने के कारण फेफड़े के रोग नहीं होते । हंसने से ऑक्सीजन का संचार अधिक होता है और दूषित वायु बाहर निकलती है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''प्रसन्नता ऐसी पोशाक है, जो हर समाज, सोसायटी में, हर मौसम में पहनी जा सकती है । मनुष्य की आत्मा की संतुष्टि, शारीरिक स्वास्थ्य और बुद्धि की स्थिरता नापने का एक ही थर्मामीटर है, चेहरे पर लिखी प्रसन्नता ।''

को तेज करती है । हंसने के कारण फेफड़े के रोग नहीं होते । हंसने से ऑक्सीजन का संचार अधिक होता है और दूषित वायु बाहर निकलती है ।

हंसने का एक महत्त्वपूर्ण लाभ यह भी है कि यह जीवन की नीरसता, एकाकीपन, दुष्कृत भावना, थकान, मानसिक तनाव और शारीरिक दर्द में राहत दिलाता है । हंसने से पसीना अधिक आता है और शारीरिक गंदगी सरलता से बाहर निकल जाती है ।

डॉक्टर फ्रेंच का कहना है कि अपने बच्चों को हमेशा प्रसन्न रहने की शिक्षा देनी चाहिए । कई माता-पिता अपने बच्चों को जोर से हंसने पर मना करते हैं । इससे बच्चों का स्वाभाविक उत्साह नष्ट हो जाता है । यदि बच्चों में हंसी का विकास नहीं हुआ, तो आगे जाकर वह अपने आसपास हंसी-खुशी का वातावरण नहीं बना पाएगा, जिससे सैकड़ों व्यक्ति हंसने से वंचित हो जाएंगे । यदि बच्चे में हास्य चेतना का विकास होगा, तो स्वयं पर हंसने का अभ्यास हो जाएगा, जो कि मनुष्य को अपनी खामियां दूर करने के लिए काफी सहायक होगा ।

अधिक बुद्धिमान होते हैं, हंसनेवाले बच्चे

मनोवैज्ञानिक प्रयोगों से यह स्पष्ट हुआ है कि अधिक हंसनेवाले बच्चे अधिक बुद्धिमान होते हैं । हंसना, बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है । जापान के लोग अपने बच्चों को प्रारंभ से ही हंसते रहने की शिक्षा देते हैं, वे इस सिद्धांत को मानते हैं कि दुनिया में जय-पराजय, सफलता-असफलता, सुख-दुःख दोनों जीवन में धूप-छांव की भांति आते हैं । यदि मनुष्य दोनों परिस्थितियों में हंसमुख रहता है तो उसका मन सदैव काबू में रहता है ।

स्टेनफलोर्ड मेडिकल स्कूल में मनोवैज्ञानिक डॉ. विलियम फ्राय का तो यहां तक कहना है कि हंसी के बिना जीवन ही नहीं । यदि रोगी व्यक्ति हंसता नहीं है, तो वह प्रायः और अधिक रोगग्रस्त हो जाता है । हंसना शरीर को झकझोर देता है, जिससे शरीर में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाली (एंडोफ्रीम) हारमोन दाता प्रणाली सुचारू रूप से चलने लगती है । यह रोग से छुटकारा दिलाने में काफी सहायक सिद्ध हो सकती है ।

चैन की नींद आती है हंसने से

रोग निवारण का अचूक उपाय है, हंसना । यदि प्रत्येक मनुष्य हंसने का प्राकृतिक रहस्य समझ ले, तो उसे कभी डॉक्टर, चिकित्सक या वैद्य के पास जाने की आवश्यकता नहीं है । प्रसन्न रहने के लिए मनुष्य को एक कौड़ी भी खर्च नहीं करनी पड़ती है । प्रख्यात सामाजिक चिंतक और लेखक डेल कारनेगी का कथन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है— हंसी या मुसकराहट पर हमें कुछ खर्च नहीं करना पड़ता, परंतु यह बहुत कुछ पैदा कर सकती है । पानेवाला मालामाल हो जाता है और देनेवाला कभी गरीब नहीं होता ।

नार्मन कर्जिस ने अपनी लोकप्रिय पुस्तक 'एनाटामी ऑव अनइलनेस' में लिखा है कि २० मिनट के लिए दिल खोलकर कहकहे लगाने के बाद वह दो घंटे तक चैन की नींद सो सकते हैं । न्यूजर्सी के डॉ. मार्विन ई हेरिंग के अनुसार जब जोर से कहकहा लगाया जाता है, तो उदर, फेफड़े, और यकृत की मालिश हो जाती है ।

मुसकराता चेहरा सभी को पसंद है । बड़े-बड़े संघर्षों, मुसीबतों में भी मुसकराएं । किसी से मिलें तो मुसकराकर मिलें । हंसी-मजाक में बात कीजिए । सामनेवाला व्यक्ति आपसे अवश्य ही प्रभावित होगा । होंठों की हलकी-सी मुसकान और प्यारभरे शब्द किसी को इतनी शांति और मानसिक राहत दे सकते हैं, जितनी हजारों रुपया खर्च करने पर भी प्राप्त नहीं हो सकती । आप दिनभर में शारीरिक और मानसिक कार्य से थके-हारे घर लौटें और आपका स्वागत हलकी-सी मुसकान के साथ हो, तो यह निश्चित मानिए कि आपकी थकावट आधी रह जाएगी ।

हंसने से तनाव और यंत्रणा से मुक्ति

पंजाब के विख्यात हास्य सेवी भाई गुरुनाम सिंह तीर ने लिखा है— "हमारी हास्यप्रियता में लगातार गिरावट आती जा रही है । यदि हाजिरजवाबी, हास्य और व्यंग्य को जीवित रखने के लिए युद्धस्तर पर प्रयास नहीं किये गये, तो भारतीय जनता तनाव और यंत्रणा की शिकार बन जाएगी ।"

चार-पांच वर्ष पूर्व हैदराबाद की हास्य संस्था जिंदा दीवान-ए-हैदराबाद ने विश्व हास्य सम्मेलन आयोजित किया था, जिसमें अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था । सम्मेलन का लक्ष्य था कि हंसने के रोग को संक्रामक बीमारी की तरह फैलने दिया जाए । तनाव के क्षणों में महात्मा गांधी मजाक करने से बाज नहीं आते थे, उनका कहना था कि 'अगर मैं हंसना नहीं जानता, तो कभी का पागल हो जाता ।' एक बार गांधीजी लंदन में गरीबों की बस्ती में ठहरे हुए थे । पड़ोसी के बच्चे गांधीजी के पास आये ।

गांधीजी ने सुबह उठने के बाद तीन मिनट तक खूब हंसने को कहा । सुबह हर गली-कूचे के बाहर बच्चों के खिलखिलाने की आवाज आने लगी । महल्ले के लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ । जब यह बात मालूम हुई, तो महात्मा गांधी के पास कुछ लोग आये और पूछा, "आपने बच्चों को क्या सिखा दिया" गांधीजी ने कहा— "एक सप्ताह बाद आना ।" एक सप्ताह के बाद महल्लेवालों ने देखा कि बच्चों का स्वास्थ्य पहले से बहुत अच्छा है ।

जो आदमी प्रकृति से हाथ मिलाकर चलता है, उसे जल्दी कोई बीमारी हो, यह संभव नहीं है ।

जितना खाओ, उससे दो गुना हंसो और जितना हंसो, उससे दो गुना टहलो, फिर देखो कि तुम कभी बीमार नहीं पड़ोगे ।

— ४४, बंदा रोड, भवानी मंडी (राजस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

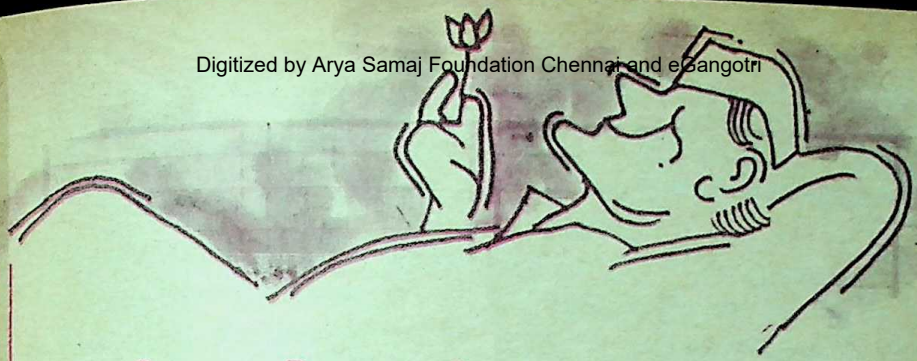

पुरानी शायरी :आधुनिक संदर्भ

अभी तो मैं जवान हूं

जिंदगी में मिल गया, कुरसियों का प्यार है
अब तो पांच साल तक, बहार ही बहार है
कब्र में हैं पांव, पर
फिर भी पहलवान हूं
अभी तो मैं जवान हूं

×××

मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरे महबूब न मांग

सोयी है तकदीर ही, जब पीकर के भांग
महंगाई की मार से, टूट गयी है टांग

तुझे फोन अब नहीं करूंगा, पी.सी.ओ. से हांगकांग
मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरे महबूब न मांग

×××

ऐ गमे दिल क्या करूं ?

मिल नहीं पाया टिकट है क्या करूं
भीड़ भी काफी विकट है क्या करूं
लखनऊ तो अब तलक खामोश है
पर नवम्बर तो निकट है क्या करूं
ऐ गमे दिल क्या करूं

×××

ऐ इश्क मुझे बरबाद न कर

तू पहले ही है पिटा हुआ, ऊपर से दिल नाशाद न कर
जो गयी जमानत जाने दे, वह जेल के दिन अब याद न कर
तू रात फोन पर डेढ़ बजे विस्की-रम की फरियाद न कर
तेरी लुटिया तो डूब चुकी ऐ इश्क मुझे बरबाद न कर

×××

अब लाद चलेगा बंजारा

इक चपरासी को साहब ने, कुछ खास तरह से फटकारा
औकात ना भूलो तुम अपनी, यह कहकर चांटा दे मारा
वह बोला कस्टमवालों की जब रेड पड़ेगी तेरे घर
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा

—हुल्लड़ मुरादाबादी

२, पंचशील कॉलोनी, सिविल लाइंस
मुरादाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना लिखे सम्मान मिलता है तो...!

● डॉ. फकीरचंद शुक्ल

प्रातः समाचार-पत्र आते ही मुंशीराम घायल जोंक की तरह उससे चिपक जाते हैं तथा एक-एक पृष्ठ की एक-एक पंक्ति जब तक पढ़ नहीं लेते समाचार-पत्र से आंख तक नहीं उठाते। लेकिन आज का समाचार-पत्र मिलते ही घायलजी की नजर एक समाचार से गुजरने लगी, तो उसी हिसाब से उनके चेहरे की रंगत फीकी पड़ने लगी थी।

"यह तो सरासर अन्याय है। धोखाधड़ी है।" अनायास ही घायलजी के मुंह से निकल पड़ा। भला ऐसा कौन-सा लेखक होगा जिससे घायलजी परिचित न हों या जो घायलजी से परिचित न हो। और इस गिरधारी के बच्चे को तो वह बचपन से जानते हैं। गिरधारी ने कुछ छुट-पुट कविताएं तथा गीत तो लिखे हैं लेकिन कहानीकार तथा उपन्यासकार के तौर पर तो कभी उसका नाम तक नहीं सुना। मुंशीराम घायल ने मस्तिष्क पर कई किंटल भार डालकर सोचा, मगर फिर भी उनके जहन में यह तसवीर नहीं उभरी कि गिरधारी ने कभी कोई कहानी भी लिखी हो, उपन्यास की तो बात ही क्या करें। तो यह साहित्य के प्रति अत्याचार नहीं तो और क्या है कि उपन्यास लिखा भी नहीं और बतौर उपन्यासकार सम्मान प्राप्त कर लिया।

घायलजी की नजर फिर से अखबार के उस पन्ने पर जा टिकी थी, जहां गिरधारी की, सम्मान प्राप्त करते हुए की, फोटो प्रकाशित हुई थी। साथ में विस्तृत वर्णन भी था कि गिरधारी लाल को बतौर उपन्यासकार कथा भारती इंटरनेशनल (रजिस्टर्ड) द्वारा सम्मानित किया गया है तथा अभिनंदन स्वरूप उन्हें २१०० रुपये नकद, दोशाला तथा स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। फोटो में जिले के डिप्टी कमिशनर उन्हें दोशाला ओढ़ाते हुए दिखायी दे रहे थे।

घायलजी के तन-बदन को तो जैसे आग लग गयी। यह तो मां सरस्वती का घोर अपमान है। जिन लोगों ने उपन्यास लिखा भी नहीं, उन्हें तो सम्मानित कर दिया तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

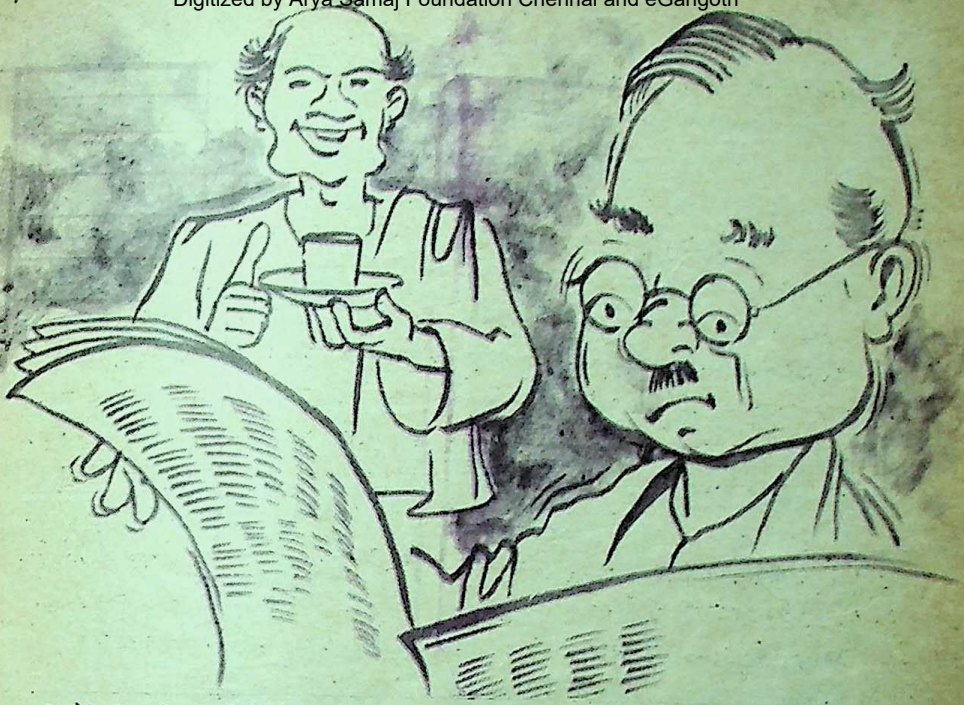

घायलजी-जैसे लेखकों की कोई कदर नहीं ।

देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में घायलजी की कहानियां प्रायः प्रकाशित होती रहती हैं । कुछ कहानियां तो अन्य भाषाओं में अनुदित होकर प्रकाशित हुई हैं । साहित्य जगत को दो कहानी संग्रह भी घायलजी प्रदान कर चुके हैं । लेकिन उनका सम्मान क्यों नहीं किया गया । बार-बार यही विचार उनके मस्तिष्क में हथौड़ों की तरह बज रहा था ।

समुद्र में रहकर मगरमच्छ से बैर ! वह आज ही लेख लिखकर पत्र-पत्रिकाओं को भेजेंगे तथा इस संस्थान का बखिया उधेड़ देंगे । लेकिन आज न जाने क्यों उनसे कलम उठायी नहीं जाती थी । आज तो भगवान कृष्ण की तरह अन्याय का विनाश करने के लिए उनका मन शस्त्र उठाने को कर रहा था । मगर शस्त्र के नाम पर घर में एकमात्र शस्त्र चाकू था जिससे आलू भी बुरी मुश्किल से छिल पाते थे ।

जब मन का आक्रोश उनके लिए असहनीय हो गया, तो उनके कदम स्वयं ही संस्था के संरक्षक निहालचंद के घर की ओर बढ़ने लगे थे, मानो स्वयं भगवान परशुराम वज्रपात करने जा रहे हों ।

"अरे घायल साहिब, आइए-आइए... धन्यभाग हमारे, आज आप हमारे यहां", निहालचंद उन्हें देखते ही उठ खड़े हुए ।

"आज का अखबार देखा है आपने ?"

"ओह हो, आप भीतर तो आ जाइए... कुछ ठंडा-गरम..." निहालचंद ने फिर आग्रह किया ।

"मैं जो पूछता हूं, पहले उसका जवाब दीजिए । क्या मैं लेखक नहीं ? वह गिरधारी

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का बच्चा क्या मुझसे बेहतर लिखता है ?''

''अरे-अरे घायल साहिब, आप क्या बात करते हैं । आपसे किसी का मुकाबला करवाना तो सूर्य को दिया दिखाना होगा ।''

''तो फिर उसे सम्मानित कैसे कर दिया ?'' घायलजी अभी तक घोड़े पर सवार थे ।

''आप भीतर तो आइए न...आप तो यहीं मैदाने-जंग बनाना चाहते हैं ।'' और घायलजी का हाथ पकड़कर भीतर की ओर खींचते हुए निहालचंद ने कहा— ''आपके पांव हमारे घर में पड़ जाएंगे, तो यह गंगाजल की तरह पवित्र हो जाएगा'' और घायलजी न चाहते हुए भी उनके साथ भीतर चले आये ।

''अजी सुनती हो'', निहालचंद ने अपनी पत्नी को पुकारा— ''देश के महान लेखक श्री मुंशीराम घायल आये हैं । बढ़िया-सी चाय और नाश्ता भिजवा देना ।''

''इसकी क्या आवश्यकता है । मैं तो खा-पीकर आया हूं'' कहना चाहकर भी घायलजी नहीं कह पाये । दरअसल सुबह समाचार-पत्र पर नजर पड़ते ही उनका मन चाय के पानी की तरह खौलने लगा था । अब थोड़ा शांत हुए थे, तो पेट ने भी अपनी आवश्यकता उन तक पहुंचा दी थी ।

चाय आने से पहले घायलजी को शुद्ध शीतल जल पिलाया गया । थोड़ा शांत होने बातों का सिलसिला चल पड़ा और तब निहालचंद ने घायलजी को संस्था की विवश के बारे में बताना शुरू कर दिया था— ''हम संस्था चाहकर भी अभी तक आपका सम्मान क्यों नहीं कर पायी, इसका मुझे अत्यंत खेद है लेकिन हम भी क्या करें । हमें कौन-सा सरकार अनुदान मिलता है । आप-जैसे लब्ध-प्रतिष्ठित लेखक के सम्मान के लिए तो काफी बड़ा फंक्शन करना होगा । लेकिन आजकल संस्था के उज्ज्वल भविष्य पर आर्थिक संकट के काले बादल मडंरा रहे हैं ।''

घायलजी को अनुभव होने लगा था कि संस्थावाले उनका सम्मान अवश्य करना चाहते हैं, बस थोड़ा खर्च उन्हें सहन करना पड़ेगा । लेकिन जब निहालचंद ने उन्हें दस हजार रुपये का अनुदान बताया तो घायलजी के पांवों तले से जैसे जमीन सरकने लगी थी । इतने पैसों का प्रबंध कैसे कर पाएंगे । बैंक बैलेंस तो पहले नगण्य है ।

''अरे-अरे घायल साहिब, आप चिंतित हो होते हैं । इनमें से ५१०० रुपये तो आपको बतौर सम्मान राशि मिल जाएगी । बाकी का खर्च तो आपकी एक पुस्तक की रायल्टी से निकाल देना है । सम्मानित होते ही आपकी पुस्तक प्रकाशित करने के लिए प्रकाशकों में होड़ लग जाएगी और इतनी राशि तो कोई भी प्रकाशक आपको सहर्ष भेंट करना चाहेगा ।

''लेकिन राशि बहुत...''

''आप सोच-विचार कर लीजिएगा । हम संस्था अंतरराष्ट्रीय स्तर की है तथा रजिस्टर्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घायलजी के तन-बदन को तो जैसे आग लग गयी । यह तो मां सरस्वती का घोर अपमान है । जिन लोगों ने उपन्यास लिखा भी नहीं, उन्हें तो सम्मानित कर दिया तथा घायलजी-जैसे लेखकों की कोई कदर नहीं ।

है । हमें अपनी संस्था की प्रतिष्ठा का भी तो ध्यान रखना है । हमें क्या लेना-देना है इस झमेले से । आप-जैसे साहित्यकारों की सेवा करना ही हमारी संस्था का उद्देश्य है । प्रेसवालों की आवभगत नहीं करेंगे तो बात अधूरी रह जाएगी । जिन आलोचकों ने पत्र लिखने हैं, उन्हें भी तो 'मूड' में लाने के लिए 'कुछ' करना पड़ेगा । आप तो स्वयं लेखक हैं । विद्वानों के ज्ञान-चक्षु खोलने के लिए कुछ खिलाना-पिलाना तो पड़ेगा ही ।''

खैर ! घायलजी तुरंत कोई निर्णय नहीं ले पा रहे थे । इसलिए सोच-विचारकर बतलाने को कहकर घर लौट आये ।

कई दिनों तक घायलजी इसी चौरासी के चक्रव्यूह में फंसे रहे । पत्नी से एक-दो बार उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से बात भी की थी, मगर वह तो भूखी शेरनी की तरह उन पर टूट पड़ी थी— ''घर में दो जून खाने के लिए मुश्किल हो रही है और आप झूठी शान के लिए बरबाद करने पर तुले हैं ।'' उसके बाद तो घायलजी ने पत्नी से इस विषय पर बात करना उचित नहीं समझा था । औरत जाति है । इसमें इतनी बुद्धि कहां कि लेखकों की बात समझ सके ।

कई बार घायलजी के मन में आता कि पत्नी के एक-दो जेवर चुराकर बेच डालें । उसे पता चलने से रहा । और अगर कहीं पता चल भी गया तो बोल दूंगा कि कहीं भूल आयी होगी । पर तभी उनका मन बोल उठता— ''मुंशीराम घायल तू भी मूर्ख है । एकदम गधा है । क्या तुझे इतनी-सी समझ नहीं कि औरत को जेवर से कितना लगाव होता है । अरे मूर्ख आदमी, आभूषणों की तुलना में तो औरतें पतियों को भी तुच्छ समझती हैं । और अगर गहने चुराने तथा बेचने के बाद किसी मित्र ने भंडा फोड़ दिया तब क्या करोगे बे-अकल आदमी ! क्या कुरुक्षेत्र का मैदान बनाना चाहते हो अपने घर को ?''

इसी उधेड़बुन में घायलजी का समय गुजर रहा था । उन्होंने मित्रों से भी उधार मांगा था लेकिन कोई भी सौ-पचास से अधिक देने को तैयार न था । मगर सौ-पचास से क्या होना था । यहां तो हजारों रुपयों की समस्या थी ।

...आखिरकार एक मित्र की सलाह ने तो जैसे घायलजी के लिए कुबेर के खजाने का द्वार खोल दिया । और सबसे बड़ी बात यह थी कि पत्नी को भी उसका पता न चलेगा ।

और अगले ही दिन उन्होंने भविष्य निधि से पैसे निकलवाने के लिए आवेदन पत्र भर दिया । बीस वर्ष की नौकरी में इतने पैसे तो अवश्य जमा हो गये होंगे । ...और कुछ दिनों पश्चात कार्यालय की ओर से उन्हें बारह हजार के लगभग मिल गये थे । अंधा क्या चाहे दो आंखें !

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिरकार घायलजी की वर्षों की प्यास बुझाने का अवसर आ ही गया । शहर में जगह-जगह पोस्टर लगे थे— 'साहित्यिक सेवाओं के लिए घायलजी का नागरिक अभिनंदन ।'

शहर का सबसे बढ़िया हॉल खचाखच भरा हुआ था । दूरदर्शन के निदेशक को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया गया था । इसलिए दूरदर्शन की कैमरा टीम भी उस मनोहर दृश्य को सेल्यूलाइड पर उतार रही थी । विद्वानों ने उनकी साहित्यिक उपलब्धियों पर भरपूर लेख पढ़े । आलोचकों ने तो उनकी प्रशंसा में जमीन-आसमान एक कर दिये थे । जब घायलजी को ५१०० रुपये की थैली भेंट की गयी, तब तो सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से इस कदर गूंज उठा था, मानो सरहद पर टैंक-गोलों का युद्ध शुरू हो गया हो ।

और अगले दिन समाचार-पत्र में उनकी रुपयों की थैली प्राप्त करते हुए की तसवीर प्रकाशित हुई थी । साथ में उनकी साहित्यिक उपलब्धियों का भरपूर वर्णन था । घायलजी के बारे में बहुत-सी बातें ऐसी भी लिखी हुई थीं जिनके बारे में उन्हें स्वयं भी मालूम न था । अपने बारे में पढ़कर उन्हें स्वयं से ही रश्क होने लगा था ।

पत्नी रामदुलारी वास्तविकता से परिचित न थी । इसलिए वह खुशी से फूलकर कुप्पा हुए जा रही थी । रामदुलारी को स्वयं पर गुस्सा भी आ रहा था कि वह तो बेवजह घायलजी से झगड़ा करती रही है । उसका पति इतना विद्वान है, उसे विदित ही न था । कल फंक्शन में घायलजी को साहित्यिक शिखर पर पहुंचाने में विद्वानों ने उसके योगदान की भरपूर प्रशंसा की थी । पति को पुरस्कार स्वरूप मिले ५१०० रुपयों को अपने ढंग से खर्च करने के मनसूबे वह मन-ही-मन बना रही थी । एक-दो नयी साड़ियां तो अवश्य खरीद लेगी । पुरानी साड़ियों को तो पैबंद लगाकर थक चुकी है ।

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई । घायलजी एकदम उछल पड़े— "अरी भागवान देख तो कौन आया है । बधाई का तार हुआ, तो तारवाले को बख्शीश दे देना ।"

"जी अच्छा" कहते हुए रामदुलारी दरवाजे की ओर बढ़ने लगी ।

दरवाजा खोला तो एकदम बधाई की बौछार हुई— "अरी बिटिया बहुत-बहुत बधाई हो" घायल साहिब के चाचाजी थे— "अरे कहां भई हमारा लल्लू...म...म...मेरा मतलब मुंशी बेटा ।"

"आप भीतर तो आ जाइए...वह घर पर ही हैं ।"

भीतर पहुंचते ही चाचाजी ने घायल साहिब को बाहों में भर लिया— "वाह बेटे चिरंजीवी रहो ! तुमने तो हमारे कुल का नाम रौशन कर

आखिरकार घायलजी की वर्षों की प्यास बुझाने का अवसर आ ही गया । शहर में जगह-जगह पोस्टर लगे थे— 'साहित्यिक सेवाओं के लिए घायलजी का नागरिक अभिनंदन ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया ।"

रामदुलारी उनके लिए चाय बना लायी ।

"भई आज सुबह अखबार में तुम्हारी फोटो देखी तो अपनी खुशी नहीं रोक पाया । तुम्हारी चाची ने भी साथ ही आना था मगर गठिया के दर्द के कारण सुबह-सुबह नहीं आ पायी । दिन-चढ़े बच्चों के साथ आएगी ।"

खूब इधर-उधर की चलती रही । तब चाचाजी के कंठ से न जाने ऐसा क्या निकल गया कि घायल साहिब और रामदुलारी की तो मानो बोलती बंद हो गयी । घायल साहिब की आंखों के सामने तो अंधेरा छाने लगा था । कल हॉल में बजनेवाली तालियों की गड़गड़ाहट-जैसे हथौड़ों की तरह उनके सिर पर बजने लगी थी ।

लेकिन चाचाजी अब भी कहे जा रहे थे—"बेटे मैं तो यह बात शायद तुमसे न भी कहता मगर तुम्हारी चाची कहने लगी कि कौन-सा पराया है । अपना बेटा है । सच पूछो, अब तो यूं लगने लगा है, कि किसी भी पल मकान मालिक हमारा सामान बाहर फिंकवा देगा । उसका छह महीने का किराया बकाया रहता है । भगवान झूठ न बुलाये । तुम्हारे पैसे दो-तीन महीनों में अवश्य लौटा दूंगा ।"

"लेकिन चाचाजी..."

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं बेटे...बस दो हजार की तो बात है । फिर तुम्हें तो मुफ़्त के ही इक्यावन सौ मिले हैं ।"

घायल साहिब की सूझबूझ-जैसे जवाब दे रही थी । उनका सिर चकराने लगा था । उन्होंने दोनों हाथों से सिर को थाम लिया और वहीं निढाल होकर कुरसी पर पसर गये ।

—२३०-सी, भाई रणधीर सिंह नगर
लुधियाना-१४१००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

दिनेश रघुवंशी, ग्वालियर

● **अपराधी अपना रूप बदलते रहते हैं, इसका विवरण पुलिस का फोटो विभाग कैसे रखता है ?**

□ एडवांस्ड ग्रैफिक्स डिस्प्ले टर्मिनल, जिसे बोलचाल की भाषा में 'बगस्टोर' कहते हैं, एक ऐसा कंप्यूटर यूनिट है जिसमें अपराधी के समस्त रूपों का विवरण रहता है ।

उदाहरणतया, अपने बालों को संवारने की शैली वह बदल ले तो कैसा लगेगा, दाढ़ी बढ़ा ले तो वह कैसा दिखेगा, दाढ़ी के भी कई रूप होते हैं उनमें उसकी मुख-मुद्रा किस प्रकार परिवर्तित हो जाएगी, आदि । इस प्रकार उसका हुलिया चित्रों के माध्यम से बनाया जाता रहता है । प्रस्तुत चित्र में यही दर्शाया गया है ।

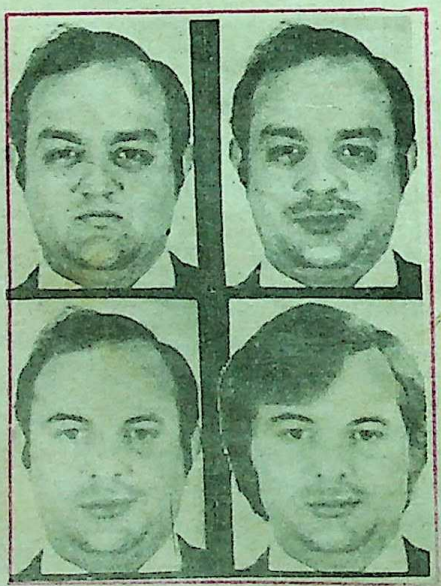

विनय कुकरेती, कोटद्वार (गढ़वाल), फखरुद्दीन, गुना

● **गिरगिट रंग कैसे बदलता है ?**

□ गिरगिट की त्वचा की ऊपरी परत पारदर्शी होती है । इसके नीचे की परत में पीली काली और लाल रंग के द्रव्योंवाली कोशिकाएं होती हैं । ये रंग कणिकाओं के रूप में होते हैं जो शरीर में एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थानांतरित होते रहते हैं । गिरगिट जब क्रुद्ध होता है तो मस्तिष्क से संदेश प्राप्त करके काली कणिकाएं एक स्थान पर एकत्रित हो जाती हैं जिससे गिरगिट का रंग काला दिखायी देता है। इसी प्रकार उत्तेजना और भय की स्थिति में यह पीला तथा गरमी और अंधेरे में यह लाल हो जाता है ।

नीरज गौड़, इलाहाबाद

● **क्या सांप के फेफड़े होते हैं ?**

सांप के फेफड़े विचित्र प्रकार के होते हैं। इसका बायां फेफड़ा बहुत छोटा और दाहिना अपेक्षाकृत बड़ा होता है ।

रामेश्वर बर्णवाल, झुमरी तिलैया

● **सागर का जल खारा क्यों होता है ?**

□ भूपृष्ठ पर स्थित नमक तथा अन्य खनिज वर्षा से बहकर नदियों में आ जाते हैं. जिन्हें वे सागर में ले आती हैं । सागर का जल वाष्पित होकर वातावरण में मिलकर पुनः वर्षा के रूप में पृथ्वी पर आ जाता है । किंतु नमक फिर भी सागर में ही रह जाता है । यह क्रम लाखों वर्षों से चला आ रहा है ।

राजेंद्र अयोग्य, कुकड़ेश्वर (म.प्र.)

● **फिलीपींज की मुद्रा का नाम क्या है ?**

□ फिलीपींज की मुद्रा को 'पेसो' कहते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजशेखर परमार, सोलन

● डबल रोटी कब से और कहां-कहां खायी जाती है ? उसमें छेद क्यों होते हैं ?

● डबल रोटी की शुरुआत ईसा से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व मिस्र में हुई थी। डबल रोटी के आटे में खमीर पैदा होता है जो पकाये जाने पर गैस उत्पन्न करता है। यह गैस बुलबुलों के रूप में फटकर बाहर निकलती है। इसी कारण उसमें छेद हो जाते हैं।

रुद्र प्रकाश शांडिल्य, भागलपुर

● भारत से पूर्व के देशों में हिंदू संस्कृति की पहचान थी, पश्चिम में क्या स्थिति है ?

□ पश्चिमी देशों, विशेषतया ब्रिटेन और अमरीका में, भारतीय हिंदू प्रवासियों की बढ़ती संख्या के कारण वहां भी हिंदू संस्कृति का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। इस दिशा में अमरीका स्थित हिंदुओं ने विशेष प्रगति की है। वहां भारत के लगभग सभी मुख्य तीर्थ स्थानों के मंदिरों की प्रतिकृतियां स्थापित हो चुकी हैं। वाशिंगटन की फ्रीअर गैलरी ऑव आर्ट में हिंदू संस्कृति और कला से संबंधित संग्रह संसार में दुर्लभतम माना जाता है। इसी प्रकार ब्रिटिश संग्रहालय में भी हिंदू कला पर छह माह के लिए एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी है जिसे स्थायी किया जाना है।

माधुरी यादव अधिवक्ता, पटना

● आजाद हिंद फौज सैनिकों के मुकदमें में बचाव पक्ष का तर्क क्या था ?

□ इन सैनिकों पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया था। बचाव पक्ष के वकील थे भूला भाई देसाई (सन १८७७-१९४६) जो दस घंटे धाराप्रवाह अदालत में बोले थे। उनका पहला मुख्य तर्क था कि प्रत्येक भारतीय सैनिक का यह अधिकार है कि वह अपने देश की आजादी के लिए ब्रिटिश राजमुकुट की वफादारी छोड़ दे। इसके पक्ष में वकील ने अनेक अंतरराष्ट्रीय कानूनों के उद्धरण दिये (२) अमरीका के लोगों ने भी १७७६ में ब्रिटिश सम्राट की वफादारी त्यागकर स्वतंत्रता की घोषणा की थी, तो क्या उन पर मुकदमा चला था ? (३) कर्नल हंट ने भारतीय सैनिकों को आत्मसमर्पण के समय कहा था कि अब वे जापानी अधिकारियों के आदेश मानेंगे। उन्होंने यही किया (४) आजाद हिंद सरकार के पास १५ वर्ग मील क्षेत्र का स्वतंत्र राज्य क्षेत्र था, अतः वह एक स्वतंत्र राष्ट्र था जिसकी सरकार सेना गठित कर सकती थी।

राजकुमार कश्यप, कानपुर

● महाराज जनक को 'विदेह' क्यों कहते हैं ?

□ महाराज निमि के शरीर का मंथन कर ऋषियों ने एक कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न किया था, जिसका नाम 'जनक' पड़ा। वह माता के शरीर से उत्पन्न नहीं हुआ इसलिए विदेह' कहलाया, और मंथन से उत्पन्न हुआ इस कारण उसकी संज्ञा 'मिथिल' हुई

इस कुल में आगे उत्पन्न होने वाले सभी राजाओं को 'विदेह' और 'जनक' कहा गया। इसी कुल में सीता जी के पिता, महाराज सीरध्वज जनक भी उत्पन्न हुए थे। ('कल्याण'— श्री रामभक्त अंक-४६)।

प्रभात कुमार नौटियाल, टिहरी-गढ़वाल

● **भारत के कितने अभियान दल अब तक अंटार्कटिका जा चुके हैं ?**

☐ अब तक भारत के तेरह अभियान दल अंटार्कटिका जा चुके हैं। तेरहवां दल ७ दिसम्बर, १९९३ को गोआ से प्रस्थित हुआ था।

जयंती सरकार, इलाहाबाद

● **देश में एड्स रोगियों की सबसे अधिक संख्या किस राज्य में है ?**

☐ विश्व स्वास्थ्य संगठन के भारत संबंधी एक सर्वेक्षण के अनुसार एक नवम्बर, १९९३ तक भारत में एड्स के ५२२ रोगी थे, और इनकी सर्वाधिक संख्या १५२ तमिलनाडु में थी।

देवेंद्र सिंह परमार, इटावा

● **रानी गैडिनल्यु कौन थी ?**

☐ नागालैंड की रानी गैडिनल्यु ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंगरेजों से विद्रोह किया था। उन्हें गिरफ़्तार करके सन १९३२ में आजन्म कारावास का दंड दिया गया था। उस समय उनकी अवस्था मात्र १३ वर्ष थी। देश के स्वतंत्र होने पर उन्हें आजाद किया गया था। उन्हें सन १९३७ और सन १९४६ में भी लोकप्रिय शासन की स्थापना के बाद रिहा के प्रयास हुए थे, किंतु अंगरेज शासक सहम नहीं हुए थे। मार्च, १९९३ में उनका देहाव हुआ।

नरेश मिश्र, वाराणसी

● **नीला रक्त क्या होता है ?**

☐ नीले रक्त, अर्थात 'ब्लू ब्लड' की खोज श्रेय अमरीका के राइट विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को है। जब शरीर से, किसी कारणवश, रक्त अधिक मात्रा में निकल जा है, या किसी अन्य कारण से शरीर में नया र पहुंचाना होता है तो नीले रक्त, जिसे वैज्ञानि भाषा में फ्लोर कॉर्बन इमल्शन कहते हैं, का उपयोग किया जाता है। इस रक्त को किसी रक्त समूह के व्यक्ति का शरीर स्वीकार कर है। इससे किसी प्रकार के विकार की समस नहीं रहती।

सुदर्शन अग्रवाल, कालपी

● **रिवाल्वर किसने बनाया था ?**

☐ अमरीकी इंजीनियर सैमुअल कोल्ट (सन १८१४-६२) ने यह शस्त्र सन १८३ बनाया था।

जगदंबिका पाल, बेगूसराय

● **संस्कृत में पंचतंत्र की कहानियों का रच कौन था ?**

☐ विष्णु शर्मा।

चलते-चलते

● **तीव्रतम गति से चलनेवाला तत्व क्या**

☐ मन। उसकी गति वायु से भी तेज

—सु

कादि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उनको देखे से जो आ जाती है चेहरे पे रौनक
वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है ।"

मिजाजपुरसी का प्रचलन शायद ऐसे ही किसी बीमार शायर के इस शेर को सुनकर हुआ होगा, जिसके चेहरे पर

रहिए ऐसी जगह जहां कोई न हो !

● डॉ. अरुणा शास्त्री

मिजाजपुरसी के लिए आयी अपनी मेहबूबा को देखकर रौनक आ गयी होगी । पर हर मिजाजपुरसी करने आनेवाले को देखकर हर बीमार के चेहरे पर तो रौनक नहीं आ सकती !

यदि आपको बीमार पड़ने का कोई अनुभव है, तो आपने महसूस किया होगा कि अपनी बीमारी से आप इतना नहीं घबराये होंगे, जितना इन मिजाजपुरसी करनेवालों से घबरा गये होंगे और घबराकर आपके मुंह से बरबस यही निकला होगा कि 'भगवान बचाए इन मिजाजपुरसी करनेवालों से ।'

मिजाजपुरसी करनेवालों का क्या है । बस उनको आपके बीमार पड़ने की खबर मिलने की देर है कि वे परिवार और मित्रों सहित आपको देखने चले आएंगे । मानो आप बीमार नहीं पड़े हों, बल्कि एक दर्शनीय सामग्री बन गये हों, जिसे देखने हर कोई चला आ रहा हो ।

आते ही हर आगंतुक एक ही प्रश्न की तोप दागता है, 'अब तबियत कैसी है ?'

अब उन्हें क्या बताएं कि अगर तबियत अच्छी होती, तो भला बिस्तर पर यों पड़े रहते ? पर मन मसोसकर हर मिजाजपुरसी करनेवाले के सामने हर बार अपनी बीमारी का वही रेकॉर्ड नये सिरे से बजाना पड़ता है कि किस तरह बीमारी ने दरवाजे पर दस्तक दी, किस तरह झुरझुरी चढ़कर बुखार आया और कितने दिन हो गये बिस्तर पर पड़े हुए आदि-आदि ।

इसके बाद उनका दूसरा प्रश्न रहता है कि किस डॉक्टर का इलाज चल रहा है ? अब आप जिस किसी भी डॉक्टर का नाम लेंगे, उसके लिए वे यही कहेंगे कि 'अरे, आप भी किस बेकार के डॉक्टर के चक्कर में पड़े हैं, उसके इलाज से आज तक कोई ठीक हुआ है, जो आप होएंगे ?' इसके बाद वे अपनी पसंद के डॉक्टरों के नामों की लंबी लिस्ट आपको सुना देंगे ।

इतना ही नहीं, यदि आपका एलोपैथी इलाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल रहा है, तो वे होमियोपैथी इलाज कराने का सुझाव देंगे और यदि होमियोपैथी इलाज चल रहा है, तो वे आयुर्वेदिक या यूनानी या प्राकृतिक चिकित्सा की सलाह देंगे । आप पशोपेश में पड़े यह समझ ही नहीं पाएंगे कि आप जो इलाज करा रहे हैं, वह सही भी है या नहीं या बिलकुल बेकार है । कहीं आप मौत के मुंह में तो नहीं धकेले जा रहे हैं ? क्या मालूम अब बिस्तर से उठना हो या न हो ।

इस तरह मिजाजपुरसी के लिए आये लोग अपने-अपने तरीके से 'ओपनहार्ट सर्जरी' से लेकर घरेलू नुस्खों तक पर बड़े दावे के साथ अपने-अपने इलाज बतला जाएंगे । यदि सबकी सलाह और नुस्खों का पालन करते हुए आप अपना इलाज कराने लग जाएंगे तो अंत में आप यहीं पाएंगे कि 'मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की ।'

ये मिजाजपुरसी करनेवाले इतने पर भी बाज नहीं करते । वे मरीज के सिरहाने बैठे चाय की चुस्कियों का आनंद लेते हुए, यह कहकर उसे डराने से भी बाज नहीं आते— "अरे, जानते हो, सुरेश के साथ भी तो ऐसा ही हुआ था । बिलकुल भला-चंगा था । बस, ऐसे ही उसके भी जोरों से सर में दर्द हुआ, तेजी से बुखार

मिजाजपुरसी करनेवालों का क्या है । बस उनको आपके बीमार पड़ने की खबर मिलने की देर है कि परिवार और मित्रों सहित सहित आपको देखने चले आएंगे । मानो आप बीमार नहीं पड़े हों, बल्कि एक दर्शनीय सामग्री बन गये हों, जिसे देखने हर कोई चला आ रहा हो ।—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

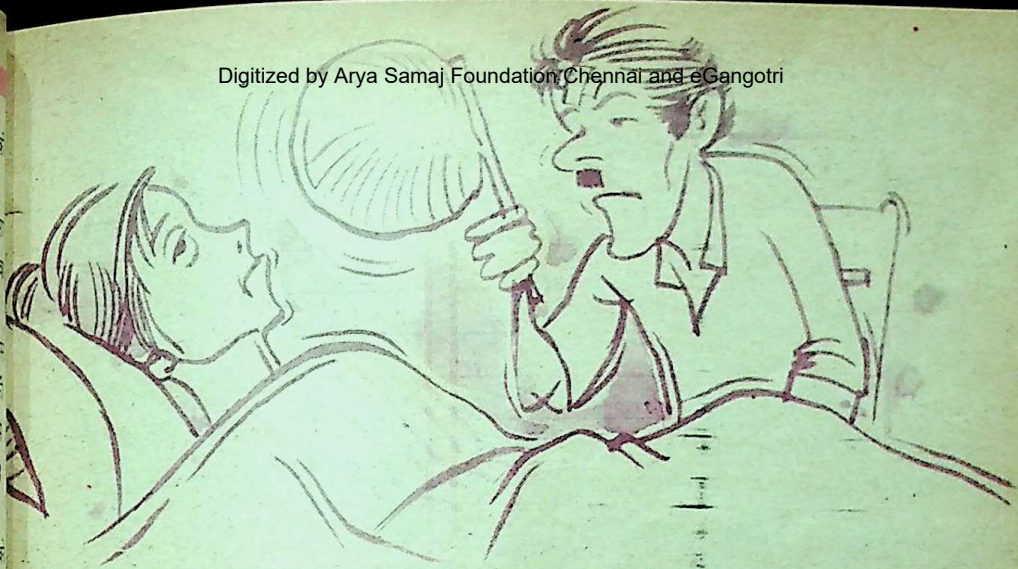

चढ़ा और... और बेचारा दो ही दिन में दुनिया से कूच कर गया । कितना समझाया था उसे, पर वह भी आपकी ही तरह महल्ले के डॉक्टर से इलाज कराता रहा...''इस तरह वे दुनिया छोड़कर जानेवाले कितने ही मरीजों के किस्से एक के बाद एक करके सुनाते रहेंगे और ऐसी भयानक केस हिस्ट्री को सुनकर बेचारा मरीज स्वयं भी मौत के पास आते कदमों की आहट सुनने लग जाएगा । अब आप ही बतलाइए ऐसी मिजाजपुरसी से क्या लाभ, जो मरीज के लिए उसके मर्ज से भी ज्यादा मुसीबत बन जाए ।

इस संदर्भ में एक सज्जन का किस्सा हमेशा याद आता है— उनका एक्सीडेंट हुआ था और उन्हें तीन महीने तक प्लास्टर में बंधे बिस्तर पर पड़े रहना पड़ा था । रोज सुबह-शाम, रात-दिन उनके घर पर उनके नाते-रिश्तेदारों, अड़ोसी-पड़ोसियों, यार-दोस्तों का तांता-सा लगा रहता— एक जाता, दूसरा आता । दूसरा जाता, तीसरा आता । लोग सपरिवार उन्हें देखने आते । लोग इतनी दूर से उन्हें देखने, उनकी मिजाजपुरसी करने आ रहे हैं, यह सोचकर उनकी पत्नी सबका चाय-शरबत और जलपान से स्वागत अवश्य करती । अब हुआ यह कि उनकी पत्नी अतिथियों का स्वागत-सत्कार, घर के काम-काज, बच्चों की देखभाल और फिर मरीज की सेवा करते हुए स्वयं ही ऐसी बीमार पड़ी कि अगले एक महीने तक वह खुद भी बिस्तर से नहीं उठ सकी । और इन मिजाजपुरसी करनेवालों के स्वागत-सत्कार के कारण घर का बजट गड़बड़ाया सो अलग ।

अब समझ में आता है कि गंभीर बीमारियों में डॉक्टर हवा-पानी बदलने की और पहाड़ जाने की सलाह क्यों देते हैं ? शायद इसीलिए कि वहां कोई अपना न होगा और मिजाजपुरसी के लिए आ न सकेगा, तो रोगी अपने आप ही ठीक हो जाएगा । किसी शायर ने ठीक ही कहा है कि :

रहिए अब ऐसी जगह चलकर जहां कोई न हो
नोहाख्वा कोई न हो, और हमनवां कोई न हो

— ११, नंदलालपुरा,
इंदौर (म.प्र.)-४५२००४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आध्यात्मिक प्रसंग

गौहरजान हाजिर गौहरजान गायब

● स्वामी वाहिद काजमी

राजस्थान की तत्कालीन नवाबी रियासत टोंक में एक बुजुर्ग सैयद सौलत साहब मशहूर रहे हैं। यद्यपि उनकी ख्याति बतौर एक सिद्ध पुरुष के नहीं थी, पर यह सच है कि उन्हें अलौकिक व आध्यात्मिक शक्तियां प्राप्त थीं, जिनका उपयोग वह लोगों के कष्ट-निवारण के लिए ही करते थे। सौलत साहब के माता-पिता अरब से भारत आये थे, और टोंक के तत्कालीन नवाब की प्रार्थना पर आपने टोंक में ही स्थायी निवास करना स्वीकार कर लिया था। नवाब साहब ने आपके जीवन-यापन के लिए एक जागीर उन्हें दी, जो 'अरब जागीर' के नाम से मशहूर रही। आप चूंकि श्यामवर्ण के थे अतः कल्लू मियां उर्फ अरब साहब के नाम से प्रसिद्ध हुए।

अरब साहब पहुंचे हुए दरवेश थे, किंतु साधारण दुनियादार लोगों की भांति ही रहते थे। अपनी आध्यात्मिक व अलौकिक शक्तियों को किसी पर जाहिर भी नहीं करते थे। उर्दू शायरी के दिल्ली-स्कूल के अंतिम प्रतिनिधि शायर नवाब मिर्जा 'दाग' देहलवी के एक शागिर्द 'आशिक' टोंकी, अरब साहब के परम श्रद्धालु थे। उन्होंने एक विलक्षण घटना बयान की है।

आशिक मियां रोजाना शाम को अरब साहब की खिदमत में हाजिर होते और कुछ बातचीत न कर बस उनके पैर दाबते रहते। इस तरह जब एक सप्ताह गुजर गया, तो अरब साहब ने पूछा— "भई आशिक मियां, क्या बात है? तुम्हें कुछ कहना हो, कोई जरूरत हो, कोई मसला या मुश्किल दरपेश हो, तो कहो।"

पहले तो उन्होंने यही कहा कि 'हुजूर, ऐसी कोई बात नहीं है ?'

"नहीं, तुम कुछ छिपा रहे हो," अरब साहब बोले— "कुछ-न-कुछ बात तो जरूर है। और बात भी शायद ऐसी जिसे कहते तुम शरमा रहे हो। उलझन में मत पड़ो। जो बात है बेझिझक कह डालो।"

रौशन जमीर दरवेश से अपना राज छिपाना ऐसा ही होगा जैसे दाई से पेट छिपाना।

आशिक मियां ने साहस जुटाया और बड़े अदब से हाथ बांधकर अपने मन का भेद खोला— "हुजूर, बात यह है कि कुछ अरसा पहले नवाब साहब के साथ यह गुलाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ता गया था । इत्तिफाक से वहां मशहूरे-जमाना तवायफ गौहरजान का गाना सुनने को मिल गया । बस हुजूर तभी से तबियत बेचैन रहती है । यही ख्वाहिश है कि जैसे भी हो, बस एक बार उसका गाना सुनने को और मिल जाए । मेरी इतनी हैसियत कहां कि कलकत्ता जाऊं और गौहरजान-जैसी रौब-दाब एवं रुतवेवाली तवायफ का गाना सुन पाऊं, जो अक्सर-ओ-बेश्तर रियासती राजे-महाराजे तक को खातिर में नहीं लाती हैं । लिहाजा हुजूर, मेरे हाल पर तरस खाइए और दुआ फरमाइए कि नवाब साहब जल्द ही फिर कलकत्ता जाएं और अपने साथ मुझे भी ले जाएं, ताकि एक बार मुझे गौहरजान का गाना सुनना नसीब हो सके ।''

सारी बात सुनने के बाद अरब साहब ने एक बड़ा लंबा हुंकारा-सा भरा और आंखें बंद कर लीं । उन पर गहरी तंद्रा-जैसी एक अजीब-सी कैफियत आ गयी । आशिक मियां समझे शायद सो गये हैं । फिर भी खामोशी से पैर दबाना जारी रखा ।

कोई एक घंटे बाद अरब साहब ने आंखें खोलीं और बोले— ''अंदर जाकर हमारी शेरवानी की जेब से जरा बटुआ तो निकाल लाओ । पान खाने को तबियत चाह रही है ।''

आदेश का पालन करने के लिए आशिक मियां बिजली की-सी तेजी से कमरे के भीतर गये, तो यह क्या ! जो कुछ सामने नजर आ रहा था, वह इतना आश्चर्यजनक था कि पलकें झपकाना तक भूल गये । एकदम से यकीन आता भी कैसे । सारा नक्शा ही बदला हुआ था ।

चांदनी के बेदाग उजले फर्श पर मानो दूध से धुले गावतकिये और मसनदें करीने से सजी थीं । इत्र और अन्य सुगंधियों से सारा कमरा सुरभित था । जगर-मगर करती रौशनियां । कमरा क्या जन्नत का कोई गोशा था । सबसे बढ़कर हैरानी की बात यह कि एक कीमती गलीचे पर जर्क-बर्क पेशवाज और छत्तीस अभरन, सोलह सिंगार से सजी, नोक-पलक से संवरी खुद गौहरजान भी शोभायमान थीं । उनके साथ वही साजिंदे और साज थे जो उन्होंने पहले देखे थे । और तो और, गौहरजान वही गजल उसी दिलनवाज अंदाज के साथ गा रही थीं, जो उन्होंने कलकत्ते की महफिल में सुनी थी ।दीन-दुनिया से बेखबर आशिक मियां मानो किसी अप्सरा-लोक में पहुंच गये और एक अजीब मस्त-ओ-बेखुद बना देनेवाली कैफियत के साथ गौहरजान का गाना सुनते रहे । ऐसे में समय बीतने का भान किसे होता है ।

कोई पौना घंटा गुजर गया कि बाहर से अरब साहब ने पुकारा— ''अमा आशिक मियां ! भई बड़ी देर लगा दी । पानों का बटुआ लाओ न ।''

ये फौरन उठे । लपककर शेरवानी की जेब से बटुआ निकाला । बाहर आकर बड़े अदब से अरब साहब को दिया और लपककर अब जो कमरे में पहुंचे तो सिवाय सूनेपन के कुछ भी न था ।

आशिक मियां बाहर आये और गद्गद स्वर में आभार मानते हुए अरब साहब के पैरों को, भावातिरेक में बह रहे आंसुओं से धोने लगे ।

— १०, राज होटल, पुल चमेली, अंबाला छावनी-१३३००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांधो मत बांध, बंधु

बांधो मत बांध, बंधु
बाढ़ें आ जाएंगी
कौन कहे क्या डूबे
अंतर के गांव में

अपने को दर्पण में जो
जो देखा बार-बार
कोमल है कांच, कहीं
पड़ जाएगी दरार

मन तो बौराया है
मौसम भी मचलेगा
भंवरे लेंगे पनाह
जाने किस छांव में

अंदर जो गंगा है
उसे मुक्त बहने दो
कोयल को कूक और
नयनों को सपने दो

जीवन के पल चंचल
गये फिर न आएंगे
डालो मत रीतों की
बेड़ी अब पांव में

हृदय जुड़े अपने यों
परिचय के छंद से
महक उठी सांस, सांस
चंदन की गंध से

हर दुःख अंधियारे से
दूर एक द्वीप है
मन पांखी जा बैठे
सुधियों की छांव में

वह उरोज, आलिंगन
अमृत उन अधरों का
उर में मधु सिंचित है
शहद के कटोरों का

आमंत्रण देती है
यह मादक चांदनी
होम करें, आओ सब
साधों के दांव में

—गोपाल चतुर्वेदी

डी-१/५, सत्य मार्ग, चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली है, भई होली है

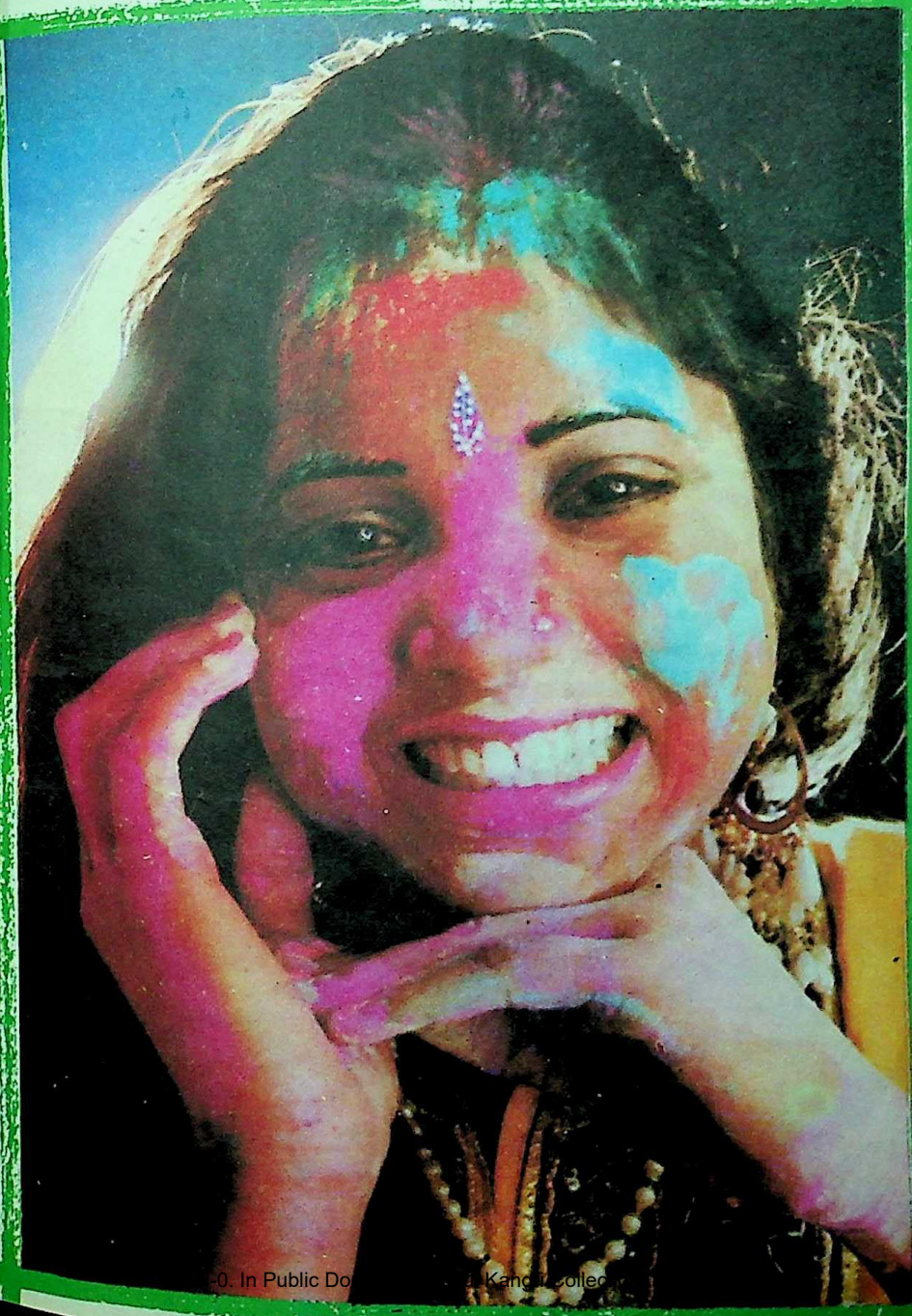

-0. In Public Do... Kangri Collec...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

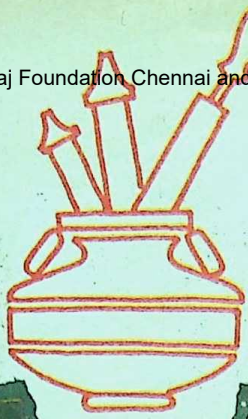

होली की रंग-बिरंगी टोपियां

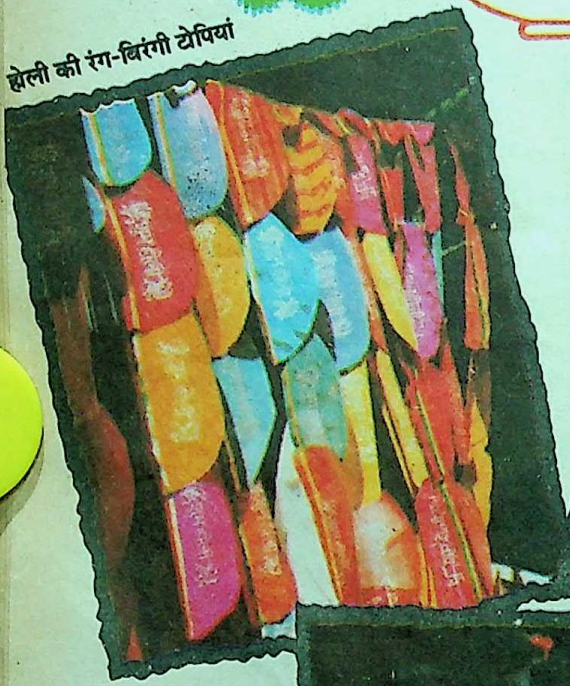

होलिका की पूजा

होली-दहन

चित्र : योगेश आनंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली-प्रारंभिक दौर के पत्रों में

● सुधीर शाह

होली के संदर्भ में, हिंदी पत्रकारिता का इतिहास अनूठा और रोचक है। राष्ट्रीयता का विकास और हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा समानांतर रही अतः उस युग की पत्रकारिता में, राष्ट्रीय पर्व होली को भी देश की दशा के संदर्भ में देखा गया।

हिंदी पत्रकारिता के दूसरे दौर भारतेंदुयुगीन पत्रकारिता की मूल प्रवृत्ति में, देश दशा का ही मुखर स्वर जीवंत था। २० मार्च १८७४ के 'कविवचनसुधा' के 'होलिकांक' में स्वदेशी आंदोलन के संदर्भ में जो 'प्रतिज्ञापत्र' प्रकाशित हुआ था, उसका अविकल रूप इस प्रकार है।

"हम लोग सर्वान्तदासी सत्र स्थल में वर्तमान सर्वद्रष्टा और नित्य सत्य परमेश्वर को साक्षी देकर यह नियम मानते हैं और लिखते हैं कि हम लोग आज के दिन से कोई विलायती कपड़ा नहीं पहिनेंगे और जो कपड़ा पहिले से मोल ले चुके हैं और आज की मिति तक हमारे पास है उन को तो उन के जीर्ण हो जाने तक काम में लावेंगे पर नवीन मोल ले कर किसी भांति का भी विलायती कपड़ा न पहिनेंगे हिन्दुस्तान का ही बना कपड़ा पहिरेंगे।"

१३ जनवरी १८७९ में कलकत्ता से प्रकाशित होने वाला 'सारसुधानिधि' लोकपरक पत्र था। लोक हित में देश-दशा का यह यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता था। इस पत्र ने अपने ३ मार्च १८७९ के ८वें अंक में 'जहां लखी वहां होरी' शीर्षक से होली के माध्यम से तत्कालीन देश-दशा का सटीक चित्रण इस प्रकार किया था—

"हिन्दुस्तान में आगे क्या था ? होली, वह आनंद से चंदन केशर कपूरों की बौछार पड़ा करती थी, गाने बजाने का ठाठ जुड़ता जमता था, जहां देखिये वहां आनंद बरसता था, युद्धों के सहारे पूर्व पुरुषगण केसरिया सजे, हाथों में कंगन बांधे, मतवाले झूम-झूमकर बंदूकों की पिचकारी और गोले के कुमकुमे चलाते थे और सब शत्रुओं को स्वाहा करके कहते थे होली है।

और भारत वर्ष का नाश भी इसी से हुआ, लोगों में फूट हुई, मुसलमान बुलाये गये जयचंद के मुंह में चोआ चंदन पोता गया होली है— और भला काबुल में क्या हो रहा है ? होली। पतझार हो गई, लोगों के मुंह पर सरसों फूली है। खास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

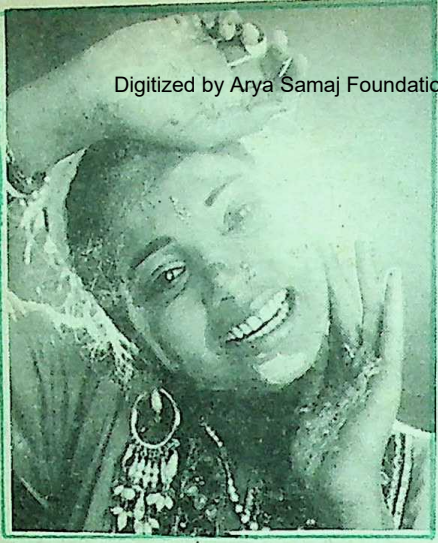

आम सब बौराए हैं, काफिर हब्शी इत्यादि गलियों की पुकार हैं, गुलाल के बदले धूल उड़ रही है, बसंत बने है, लाज सब छोड़ दी है, धन बल विद्या सब होली में जला दिया है, बस धुरहड़ी और जमघण्ट मना रहे हैं, होली है ।''

राष्ट्रीय जनजागरण के अनुक्रम में, सन १८७४ में प्रकाशित 'हरिश्चंद्रचंद्रिका' के होली अंक में छपे होली गीत के कुछ अंश देखें ।

''होली ।
भारत में मची है होरी ।।

लोकमान्य तिलक ने यदि गणेशोत्सव के माध्यम से राष्ट्रीय जन-जागरण का कार्य किया तो हिंदी मासिक पत्रों एवं समाचार-पत्रों के संपादकों ने होली के पर्व पर हास्य-व्यंग्य के बहाने देश की दुर्दशा का चित्र खींचा ।

इक ओर आग अभाग एक दिसी होय रही झकझोरी ।
अपनी अपनी जय सब चाहत होड़ परी दुहुं ओरी ।
दुंद सखि बहुत कठोरी ।।१।।

.....

धिक वह माता पिता जिन तुमसो कायर पुत्र जन्योरी ।
धिक वह धरी जनम भयो जामे यह कलंक प्रगटोरी ।।
जनमतहिं क्यों न मरोरी ।।९।।

.....

आलस में कुछ काम न चलि है सब कछु तो विनसोरी ।
कित गयो धन बल राजपाट सब कोरो नाम बचोरी ।।
तउ नसिं सुरत करोरी ।।११।।''

होली को ही संदर्भ बनाकर 'हरिश्चंद्रचंद्रिका' के होलीकांक में देश की दुर्दशा पर जो ध्वनि मुखरित हुई, उसकी बानगी—

''होली ।
है दुर्दशा न थोरी, कहां खेलें हम होरी ?
रह्यो न राज हमारो तिल भर करत चाकरी कोरी ।
पराधीनता में सुख मानत, तानत लम्बी वोरी ।।

.....

अब विद्या रंग रंगोचित में गुण गुलाल प्रघटोरी
अकल अबीर कुरीति कुंकुमा देहु भूमि में फोरी ।
निडरता उफ धुधुकोरी ।।
कर उत्साह राह में आओ मैं भ्रम सब बिसरोरी ।
स्वाधीनता करो सम्पादन भारत जै उचरोरी ।
राधिका चरन चहोरी ।।''

तत्कालीन दौर का प्रमुख राष्ट्रीयवादी 'उचितवक्ता' (१८८३) बहुत तेजस्वी पत्र था । राष्ट्रीय एकता एवं स्वदेशी के प्रति आग्रह इसका आदर्श था । ब्रिटिश सरकार के चाटुकारों का यह पत्र खुलकर विरोध करता था । एक बार उदारवादी राजा शिवप्रसाद ने सरकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाटुकारिता के नशे में भारतवासियों को 'भेड़' कह डाला । होली पर्व पर 'उचितवक्ता' के हास्य-व्यंग्य रूपी वाणों की फुहार छूटी । देखें, १७ मार्च १८८३ का 'संपादकीय'—

—*''खुसामद ने हमारे राजा साहब को भी बहुत दिनों से अपना चेला बना रक्खा है और उसी खुसामद के प्रसाद से आज राजा साहब का ऐसा सम्मान है और अंगरेजी वर्णमाला के कतिपय अक्षरों (सी.एस.आई.) का पुछल्ला नाम के पीछे फहरा रहा है और इसमें संदेह नहीं और राजा जी भेड़ प्रतिनिधि होने में समर्थ हुए हैं और आज समग्र भारतवासियों को भेड़ बनाकर आप उनमें श्रेष्ठ बन गालियों की बौछाड़ प्रकाश्य काउंसिल में करते हैं ।*

...हम सर्वसाधारण से यह प्रार्थना करते हैं कि इनके स्थानापन्न करने के निमित्त एक प्रतिनिधि निर्वाचन करें और इण्डिया गवर्नमेंट से प्रार्थना करके इनकी बदली करा दें नहीं तो किसी दिन इनके द्वारा बड़ी क्षति होगी । कुशल तो इतनी हुई कि, ये महापुरुष रिपन के समय काउंसिल के सभ्य हुए यदि कहीं लिटन के समय होते तो सोना सुगन्ध हो जाता और अभी कौन कह सकता है कि, रिपन के बाद एक महालिटन नहीं आ सकते हैं ।''

१७ मई सन १८७८ में प्रकाशित 'भारतमित्र' अपने समय का शीर्ष उग्र राजनीतिक पत्र था । 'भारतमित्र' में प्रकाशित 'शिवशम्भु के चिट्ठा', 'शाइस्ता खां के खत' और 'टेसू' द्वारा राजनीतिपरक व्यंग्य ने सारे देश में राष्ट्रीय आंदोलन को मुखर स्वर प्रदान किया । ऐसा ही 'कर्जन-फुलर' शीर्षकनुमा टेसू दृष्टव्य है—

''नानी बोली टेसू लाल,
कहती हूं तुझ से सब हाल ।
मास नवम्बर कर्जन लाट ।
उलट चले शासन का हाट ।
किया मातरम् वन्दे बन्द ।
और सभाएं रोकी चन्द जोर स्वदेशी का दबवाया ।
जगह-जगह पर लठ चलवाया ।''

सन १८७८ के 'भारतमित्र' के 'पोलिटिकल होली' विशुद्ध होली न होकर, उग्र राजनीतिक विचारधारा की पोषक थी यथा—

''करते कुलर विदेशी वर्जन, सब गोरे करते हैं गर्जन
जैसे मिण्टो जैसे कर्जन, होली है भई होली है ।
वराडरिक ने हुक्म चलाया, कर्जन ने दो टूक कराया
मर्ली ने अफसोस सुनाया, होली है भई होली है ।''

सन १९०४ में कलकत्ता से प्रकाशित होने वाला 'वैश्योपकारक' स्वदेशी आंदोलन का पोषक एवं समाज सुधारक पत्र था । युगीन चेतना के प्रति सचेत रहते हुए 'वैश्योपकारक' साहित्य एवं भाषा के प्रति भी समर्पित था । राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण इस पत्र के वर्ष-२, अंक-१२ से 'फाग' शीर्षक से सामयिक होली का एक गीत दृष्टव्य है—

''अब तो चेत करो रे भाई ।
जब सरवसु कढ़ि गयो हाथ तैं
तब न उचित हरिहाई ।।
उपज घटै धरती की दिन दिन
नाज नितहिं महंगाई ।।
कहा खाय त्यौहार मनावें, भूखे लोग लुगाई ।।
सब धन बोयो जात विलायत, रह्यो दलिहर छाई ।
अन्न वस्त्र कहं सब जन तरसैं, होरी कहां सुहाई ।।''

राष्ट्रीयता की यह धारा जिसका विकास राजनीति के माध्यम से हो रहा था —पत्रकारिता की रचनात्मक शक्ति से प्रेरित एवं संपन्न थी । आधुनिकता और पुनर्जागरण इस पत्र का उद्देश्य था । इस पत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि विशेष थी । हिंदी साहित्य के उन्नायक महत् उपक्रमों में 'वैश्योपकारक' की सक्रिय रुचि थी । साहित्य आंदोलन में इस पत्र की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एतहासिक भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। सन १९०५ के 'होली विशेषांक' में चैती ठेकाहोरी की तर्ज में 'वैश्योपकारक' में छपे साहित्यिक अवदान का राष्ट्रीय चेतना से समन्वित एक उदाहरण—

''खुलिहैं नैन तिहारे हो रामा कौने दिनवां खुलि हैं
बहुत काल सोवत ही बितायो,
अब जागहु पिय प्यारे हो रामा, कौने दिनवां खुलि हैं ।।
कैसी कहूं कहु कहत न आवे
बने हो अजब मतवारे हो रामा,
कौने दिनवां खुलि हैं ।''

१५ मार्च १८८३ को कानपुर से प्रकाशित होने वाला पं. प्रतापनारायण मिश्र का 'ब्राह्मण' मासिक पत्र हास्य-व्यंग्य प्रधान । साहित्य और संस्कृति का विचारवान पत्र था । इसमें छपे हास्य-व्यंग्य बड़े चुटीले और अर्थवान होते थे। अपने प्रथम वर्ष के 'होली विशेषांक' में हास्य-व्यंग्य और ठिठोली से भरा, प्रस्तुत मूढ़ों पर एक अवतरण दर्शनीय है यथा—

''सच है —सबसे भले हैं मूढ़, जिन्हें न व्यापै गति । मजे से पराई जया गयक बैठना । रंडिका देवी की चरण सेवा में तन-मन-धन से लिप्त रहना, खुशामदियों से गप्प मारना, जो कोई तिथि त्यौहार आ पड़ा तो गंगा में चूतड़ धो आना, वहां भी राह पर पराई बहू-बेटियां ताकना... संसार परमार्थ दोनों तो बन गये अब काहे की है, है काहे की खै खै''

— परमेश्वरी भवन,
खजांची मुहल्ला,, अल्मोड़ा (उ.प्र.)

एस्प्रीन खायें, दिल के दौरे से बचें

एस्प्रीन खाने से दिल का दौरा पड़ने की आशंका, अनियमित धड़कनों तथा दिमाग में खून के प्रवाह में होनेवाली गड़बड़ी की वजह से पड़नेवाले दौरों की आशंका काफी कम रहती है । दिन में एस्प्रीन टिकिया का आधा अंश हृदयरोगी नियमित रूप से खायें तो दिल का दौरा नहीं पड़ता । प्रतिवर्ष भारत में हजारों हृदयरोगियों को मरने एवं हजारों को अपंग होने से बचाया जा सकता है, बशर्ते यदि रोगियों को प्रतिदिन एस्प्रीन टिकिया का आधा अंश व्यापक रूप से उपलब्ध कराया जाए । यह तथ्य एक प्रमुख नये अनुसंधान से प्रकाश में आया है ।

एस्प्रीन उन लोगों को ही दिया जाना चाहिए, जिन्हें दिल का दौरा पड़ चुका है । अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान के डॉ. के.एल. रेड्डी के अनुसार, लंबे समय तक एस्प्रीन की टिकिया लेने का परामर्श साधारण रूप से किसी डॉक्टर द्वारा ही दी जानी चाहिए । उन लोगों को एस्प्रीन लेने की हिदायतें नहीं दी जानी चाहिए जिन्हें निश्चित रूप से हृदयरोग की बीमारी नहीं हुई है ।

आमतौर पर ३५ से ७० वर्ष की उम्र तक के सभी पुरुष हृदयरोगियों को एस्प्रीन का सेवन करना चाहिए । महिलाओं को भी यदि रक्तचाप, वर्द्धित कोलेस्ट्रोल, मधुमेह आदि के कारण दिल के दौरे का खतरा है तो उन्हें भी एस्प्रीन का सेवन करना चाहिए ।

—रमेश कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला दीर्घा

समुद्री झाग से बनी कलाकृतियां

गणेश

उदयपुर की अशोक नगर कॉलोनी में रहते हैं हर्ष छाजेड़ ! गोरा रंग, फ्रेंच कट दाढ़ी और सादगीभरा जीवन । हर्ष छाजेड़ समुद्री झाग से मनमोहक कलाकृतियां बनाते हैं ।

"बड़ी जटिल है इन कलाकृतियों की रचना ! सर्वप्रथम झाग के टुकड़े पर चढ़ी सख्त परत को किसी पैने औजार से खुरच-खुरचकर अलग कर दिया जाता है । इसके बाद उसे वांछित आकार में काटकर उस पर पेंसिल से आउट लाइन बनाते हैं ! फिर धीरे-धीरे कल्पना शक्ति एवं कौशल से वह साधारण-सा टुकड़ा मनमोहक रूपाकारों में ढलता चला जाता है ।" हर्ष छाजेड़ अपनी कलाकृतियों के बारे में बताते हैं ।

श्रेष्ठ शिल्पी के पुरस्कार से सम्मानित हर्ष छाजेड़ ने देश के कई नगरों में इस कला की प्रदर्शनियां लगाकर कला-प्रेमियों की प्रशंसा अर्जित की !

— श्याम सुंदर जोशी

तिरुपति के बालाजी

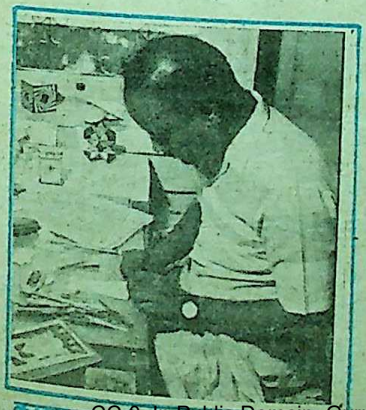

कलाकार हर्ष छाजेड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

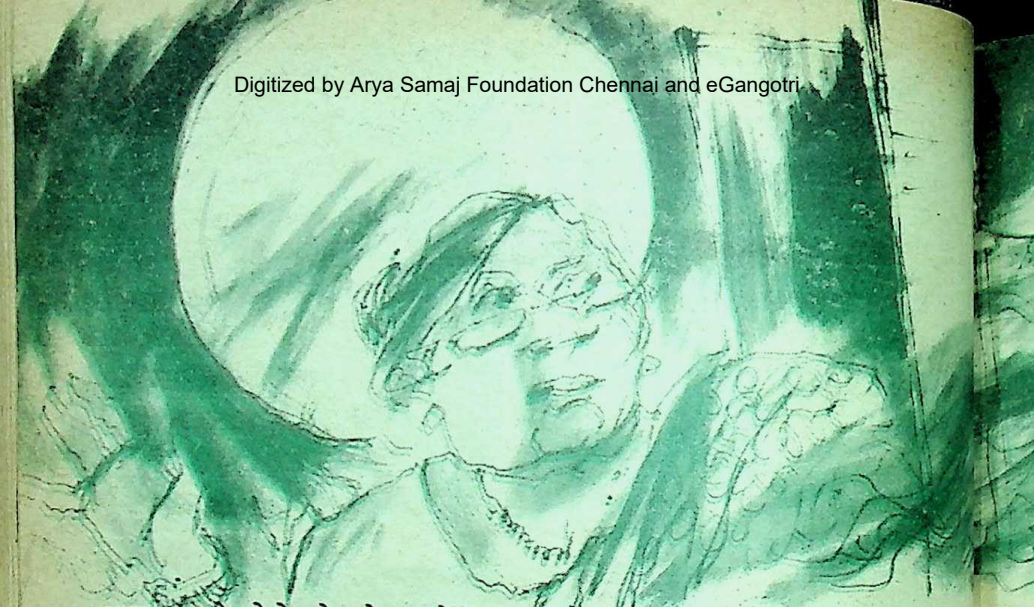

कहां चले गये वे नन्हे-नन्हे पल, वे छोटे-छोटे क्षण, और उनसे फूट पड़ने को आतुर वे छोटी-छोटी खुशियां ? अनुभूति को लगा, जैसे वह कांच के पीछे से केवल उन्हें दूर तक समय के सागर में डूबते देख रही है, किंतु हाथ बढ़ाकर वह उन्हें बचा नहीं सकती । रो को सांत्वना दे पाये ?

अनुभूति की आंखें जैसे अतीत का पीछा करती हुई कहीं दूर, अंधेरे कुएं में डूब गयीं। वह स्वयं कितनी छोटी थी तब शायद नौ वर्ष की, अब झरझर बरसती आधी रात को दादी मां ने उसे झकझोरकर जगा दिया था और कहा था—

कहानी

स्मृतियों के पल

● डॉ. इंदिरा 'नूपुर'

नहीं पाती वह, कि मन हलका हो जाए । सोचती है बार-बार, कि कैसे उन आंखों का सामना कर पाएगी वह, कैसे उन निगाहों के अनकहे प्रश्नों का उत्तर दे पाएगी, और कैसे अपने मन-हृदय को ऐसा वज्र बना पाएगी कि एक भयावह सत्य, जो अजगर की तरह मुंह फाड़े सामने खड़ा है, उसे झुठलाकर वह श्रुति

"अरी उठ ! तेरी मां..."

"मां ? कैसी है मां ?" अचानक नींद की पाखी फुर्र से उड़ गयी, उसकी आंखों से, और वह चौकन्नी होकर उठ बैठी । उसे तो मां को दवा देनी थी न साढ़े ग्यारह बजे ? घड़ी की ओर देखा एक बज रहा था । छटपटाकर वह उठ खड़ी हुई और मां के कमरे की ओर जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

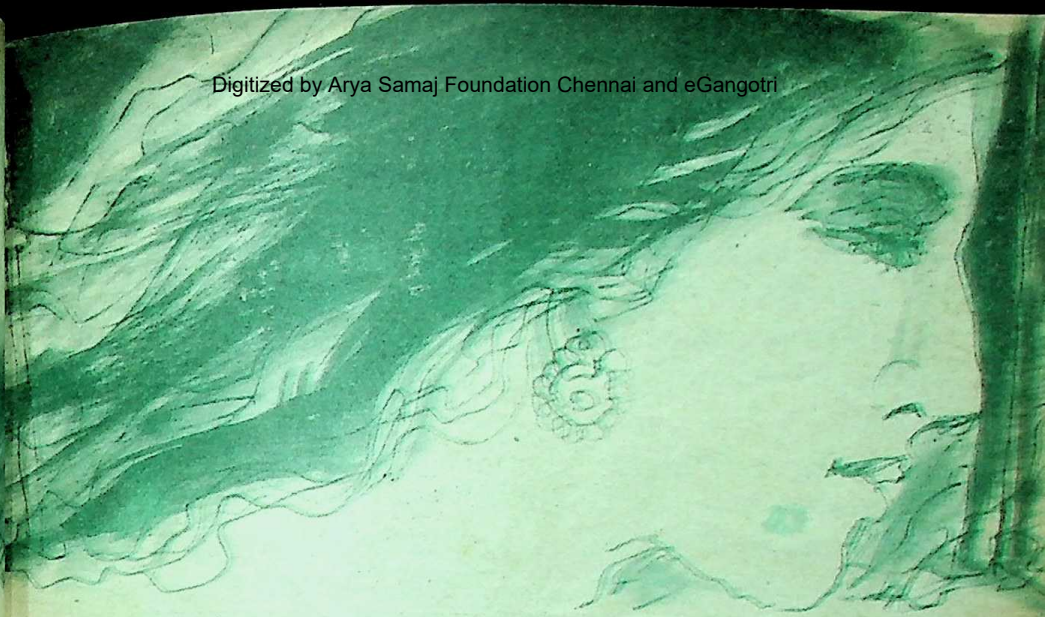

लगी, कि दादी मां ने हाथ पकड़कर उसे पीछे खींच लिया और नितांत रूखे स्वर में कहा—

"कुछ नहीं हुआ तेरी मां को ! वहां मत जा !" और फिर जैसे स्वयं को सुनाकर बोलीं—"फिर एक भवानी आ गयी इस घर में !" अचानक अनुभूति सजग हो उठी । तो क्या सचमुच भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली, और एक नन्हीं गुड़िया को भेज दिया मां के पास ? उसने दादी मां का आंचल थामकर पूछा—

"सच्ची दादी ? मेरी बहन ही आयी है न ? कहीं भइया तो नहीं आ गया फिर से ?" और दादी मां ने चिढ़कर कहा—"हां, हां ! कहा तो अभी कि भवानी आयी है । ...मेरे ही भाग खोटे हैं कि लड़कियों के अंबार लग गये हैं इस घर में ।"

...तो यह था स्वागत उस नन्हीं-सी जूही की कली का, जो अभी कुछ देर पहले संसार में आयी थी । अनुभूति की समझ में नहीं आ रहा था कि दादी इतनी दुःखी क्यों हैं ? अब देखेगी वह कि भइया इसे कैसे चिढ़ाएगा ?

"मेरी तो एक बहन भी है, और एक भाई भी । दीदी ! तुम्हारी तो कोई बहन नहीं है ।" वह प्रत्युत्तर में कहती—"देख अत्तू ।" गुस्से में हमेशा अतिरेक को वह अत्तू ही कहती थी । मेरे दो भाई हैं—"एक तू और दूसरा विवेक ।"

"हेलो ! मैं अनुभूति..." कि उधर से किसी ने कहा—"आंटी ! मैं अशोक बोल रहा हूं बंबई से—चाची अभी-अभी गुजर गयीं...सुबह दस बजे यहीं संस्कार होगा । आप तुरंत आ जाइए...उन्होंने कहा था जब तक आप नहीं आएंगी..." आगे वह सुन नहीं पायी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर दीदी ! तुम्हारी बहन तो नहीं है न कोई ?" अतिरेक फिर उसे छेड़ता है और वह रूआंसी हो उठती । मन-ही-मन कहती, "हे भगवानजी, मुझे कहीं से एक बहन भेज दो न । यह अत्तू तो हमेशा मुझे चिढ़ाता ही रहता है ।" ...और आज भगवानजी ने उसकी विनती सुन ही ली ।

अब उसने नन्हीं-सी गुड़िया को मां के पलंग पर सोते देखा, तो वह अवाक रह गयी थी । सुख का कैसा निराला क्षण था वह । कैसा प्यारा-सा चेहरा था, लाल-लाल गाल और छोटी-सी नाक के आस-पास बड़ी-बड़ी बिंदिया-जैसी आंखें । नन्हीं हथेलियां मुट्ठी में बंधी-सी, कैसी अवश पड़ी थी बिचारी ! उसे इतनी दया लगी कि मन हुआ—झट से उसे गोद में उठा ले, कि तभी न जाने कहां से पके आम-सी टपक पड़ीं दादी मां, और बोलीं—

"खबरदार जो उसे छुआ तो । चल बाहर । किसने कहा था तुझसे यहां आने को ?" और उसे वहां से खदेड़ दिया गया । जाते-जाते उसने पीछे मुड़कर देखा—शायद सो रही थी मां । फिर उसने देखा, उस नन्हीं बच्ची को मां के पास नहीं आने दिया जाता । मां उदास आंखों से उसे देखती रहती हैं और अवश पड़ी रहतीं । रोज डॉक्टर आते हैं मां को देखने,दवाइयों की छोटी-बड़ी शीशियों से मेज भरी पड़ी है और रोज एक सुई मां की बांहों में घोंपी जाती है । अनुभूति के जैसे रोंगटे खड़े हो जाते । मां को कित्ता दर्द होता होगा न जाने । कैसे बड़े-बड़े नील पड़ गये हैं उनकी बांहों में । अब उसे कोई मां के पास भी जाने नहीं देता—बस, वह दरवाजे से झांकभर सकती है । मां कैसी चुप-चुप-सी पड़ी रहती हैं, और पापा...कैसे मजे से उनके कमरे में जाते हैं । मां का हालचाल पूछते हैं, नन्हीं बच्ची के गाल सहलाते हैं—बस एक वही है, जिसे मां से दूर रखा जाता है ।

एक दिन दादी मां पूजा कर रही थीं तो मौका पाकर वह मां के पास चली गयी । मां जाग रही थीं । उसे देखते ही उनके चेहरे पर मुसकान थिरक उठी । बहुत धीमे स्वर में उन्होंने कहा—

"अनु, तुझे बहन अच्छी लगती है न ?"

"हां मां ! बहुत अच्छी ! मां, मैं उसे गोद में उठा लूं ?" उत्साहित होकर उसने कहा । "नहीं अनु । अभी यह बहुत कमजोर है ।" फिर एक क्षण बाद दीर्घ निःश्वास लेकर बोली—"अनु, मैं न रहूं तो तू इसे अच्छी तरह रख सकेगी न ?"

अनुभूति ने बिना समझे तुरंत उत्तर दिया—"हां मां ! तुम मत घबराना । वैसे मुझे तो गुड्डे-गुड़िया खेलना अच्छा नहीं लगता, पर मां, ये कोई गुड़िया थोड़े ही है, कपड़ों वाली । ये तो बहन है मेरी ! अच्छा उसका नाम क्या है मां ?"

मां ने अपने कमजोर हाथों से उसके सिर को सहलाया और बोलीं—"इसका नाम श्रुति है...लेकिन अब तू जा अनु ! मेरी बात याद रखेगी न ?..."

"रखूंगी मां ! खूब याद रखूंगी !" और वह गेंद की तरह उछलती बाहर आ गयी ।

शायद मां को कोई खतरनाक बीमारी हो गयी थी । उसने डॉक्टर को कहते सुना था कि उनके फेफड़ों में पानी भर गया है—बच्चों को उनके पास किसी हाल में नहीं जाने देना ! दादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां को तो श्रुति भी एक रोग-सी लगती थी । उसे छूना तो दूर, वे तो उसके लिए दूध तक गरम करने में झींकती थीं...अनायास ही नौ वर्ष की अनुभूति नन्हीं श्रुति की मां बन बैठी । अपने नन्हे-नन्हे हाथों में उसे झुलाती, लोरियां गा-गाकर उसे सुलाती, उसका पालना ठीक करती । वह तो जैसे श्रुतिमय हो उठी थी । जब नाइन काकी उसे नहलाने आतीं, तो कैसे टकटकी लगाकर वह देखती कि एक बड़े से प्लास्टिक के तसले में बच्ची को गुनगुने पानी में नहलाया जाता, और रुई की बत्ती से उसे बकरी का दूध पिलाया जाता । पापा ने श्रुति के लिए ही तो बकरी पाली थी । बच्ची सो जाती और अनुभूति उसे देख-देखकर गद्‌गद् होती रहती ।

समय ने पंख फैलाये और आठ महीने जैसे पलक झपकते ही बीत गये । धीरे-धीरे मां अच्छी हो गयीं, पर अभी भी वे बहुत कमजोर थीं । श्रुति जैसे ही अपनी दीदी की गोद में जाती, तो चिरैया की तरह दुबककर आंखें मूंद लेती । मां ने एक दिन पापा से कहा—

"अब तो मुझे मेरी बच्ची को गोद में ले लेने दो," और पापा ने मुसकराकर अनुभूति के हाथों से लेकर श्रुति को मां की गोद में डाल दिया । मां जैसे निहाल हो गयीं । सुख का एक और पल चुपके से खिसक गया ।

धीरे-धीरे श्रुति बड़ी होने लगी । कभी-कभी वह अपनी हिरनी-सी आंखें घुमाकर अपनी दीदी को ढूंढ़ती और उसे देखते ही हाथ फैला देती, तो कभी अपनी नन्हीं-सी मुट्ठी में उसका फ्राक थाम लेती । अनुभूति विभोर हो उठती । उसकी दुनिया बच्ची के इर्द-गिर्द सिमटकर रह गयी थी । अतिरेक और विवेक स्कूल जाते, तो एक पल के लिए उसे लगता, अरे ! वह तो जाने कब से नहीं गयी स्कूल ! दूसरे ही पल उसकी आंखों में श्रुति छा जाती और वह उसी में मगन हो जाती ।

अब अंधा क्या चाहे ? दो आंखें ही न । दादी मां खुश थीं कि बेटे का पैसा उसकी पढ़ाई पर खर्च नहीं हो रहा, किंतु मां को ताने देना वह कभी नहीं भूलती थीं । एक दिन पापा ने उनसे कहा—"अनु ! तेरी पढ़ाई चौपट हो रही है । मैं तुझे बनारस भेज रहा हूं । वहीं बड़ी बुआ के पास रहकर पढ़ना । मैं आऊंगा तुझसे मिलने । यह छोटी जगह है बेटी, यहां लडकियों के

अच्छे स्कूल नहीं हैं न...इसीलिए...मैं छुट्टी शुरू होते ही तुझे लेने आऊंगा । मन लगाकर पढ़ेगी न ?..."

और एक दिन उसका बिस्तर गोल करके उसे भी एक सामान की तरह बुआ के पास भेज दिया गया । वहां पहुंचकर उसे कुछ ही दिनों में समझ में आ गया कि दादी मां ने उसे पापा से जिद करके वहां क्यों भेजा था...उसका और श्रुति का कसूर यही था, कि उन्होंने बेटी बनकर जन्म लिया था । बुआ तो दादी के एक हाथ आगे थीं । जब-तब कहतीं—"देख री छोकरी । भइया ने तुझे पढ़ने भेजा है, पर घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का काम-काज सिखाने की तो जिम्मेदारी मेरी है न ? समझी ?'' ...और फिर उसे जोत दिया जाता कोल्हू के बैल की तरह घर के काम-काज में । बुआ का क्या गया ? हींग लगी न फिटकरी, रंग चोखा आया ।

अब पापा आये, तो उसका कुम्हलाया चेहरा खिल उठा । महीनों बाद वह हंसी, खिलखिलायी और पापा के गले में बांहें डालकर झूल-सी गयी । सबसे पहले उसने श्रुति के बारे में पूछा, फिर अत्तू और विवेक के बारे में, और तब मां के बारे में । फिर उसने पापा की आंखों में झांककर कहा—''पापा !

हमें ले चलिए न ! हम यहां नहीं रहेंगे । हमें गुड़िया की, और भइया की याद आती है पापा...'' दुःख के आवेश से उसका गला रुंध गया और झील-सी आंखें डब-डब करके भर आयीं । पापा ने देखा—बेटी कमजोर भी हो गयी है...बोले—''अच्छा अनु, परीक्षा के बाद मैं लेने आऊंगा तुझे । फर्स्ट आएगी न क्लास में ? खूब बड़ा इनाम दूंगा तुझे—लेगी न ?''

''हां पापा ! जरूर लूंगी । तुम मुझे यहां से ले चलना मां के पास, भइया और गुड़िया के पास ! वही मेरा इनाम होना चाहिए !'' सुनकर पापा को लगा जैसे अनुभूति अचानक ही बड़ी हो गयी है । परीक्षा के बाद वह लौटी, तो फिर पापा ने उसे बड़ी बुआ के पास नहीं भेजा । समय पंख लगाकर उड़ने लगा । वह भी धीरे-धीरे परीक्षाओं की सीढ़ियां चढ़कर एक दिन उस दौराहे पर जा पहुंची जहां से एक सपाट सड़क इस घर की चौखट से निकलकर दूसरे घर की देहली पर खत्म हो जाती थी—और दूसरी सड़क कंकड़-पत्थर, कंटीली झाड़ियों से भरी, ऊबड़खाबड़ पगडंडी-जैसी थी, जिस पर चलकर उसे अपना गंतव्य खुद ही खोजना था । उसने पापा से कहा—

''पापा ! सपाट चिकनी सड़क पर तो सभी चल लेते हैं । मुझे तो आप दूसरे ही रास्ते पर चलने दीजिए । पापा, मैं खुद को पहचानना चाहती हूं । प्लीज पापा ।'' और पापा की मुसकराहट के साथ खुशी और विश्वास का एक नन्हा-सा पल उसे धीरे से सहला गया । कुछ कर गुजरने की तमन्ना ने धीरे-से उसके मन में अपनी आंखें खोली थीं । उसे लगा जैसे प्राची का सूर्य उसका पथ आलोकित कर रहा है । अब उसे अपनी मंजिल दिखायी देने लगी थी । उसके इतने दिनों की साधना पूरी होनेवाली थी ।

वह बंबई गयी ट्रेनिंग के लिए, तो पांचवें दिन ही पापा का खत आया । लिखा था—''अनु, श्रुति कॉलेज नहीं जाती, न घर में किसी की बात मानती है । वह अड़ियल टट्टू-सी जिद ठाने है कि तुम्हारे ही पास रहेगी...'' और अनुभूति के मन में अपने बचपन की यादों की फुलझड़ियां-सी झरने लगी थीं । उसने तुरंत पापा को लिखा था—''उसे भेज दीजिए पापा । यहां मैंने एक अलग कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का इंतजाम कर लिया है ।...'' और उसके बंबई आने के दस दिन बाद ही श्रुति उसके पास आ गयी । गौरैया-सी चहकती रही—''दीदी ! जानती हो दादी अम्मा कित्ती नाराज हुईं ?'' फिर उनकी नकल उतारती हुई कहने लगीं— बोलीं—''एक छोरी तो हाथ से बाहर हुई गयी है, दूसरी भी पंख निकारन लगी ।...'' वह हंसते-हंसते बेहाल हो गयी, फिर खिलखिल करती बोली—''और दीदी । सच्ची मानो जब मैं आ रही थी न, उनका चेहरा देखने लायक था—एकदम तानपूरे के तंबूरे-जैसा !'' श्रुति की खिलखिलाहट से जैसे अनुभूति का मन उजियारे से भर उठा था ।

तीन वर्ष बाद वह विदेश में थी । जब पापा का खत आया, तो उन्होंने लिखा—''श्रुति अड़ी हुई है कि जब तक तुम नहीं आओगी, वह शादी नहीं करेगी'' और अनुभूति की आंखों में गुड़िया की आकृति साकार हो उठी । फिर भी उसने लिखा—''देखो श्रुति, जिद छोड़ो । मुझे लौटने में कम-से-कम एक साल तो लग ही जाएगा, और तुम इस प्रकार जिद करने में लगी हो । आखिर अत्तू ने मेरे वहां आये बिना ही ब्याह कर लिया है न ? तुम्हें क्या जिद है ? बात की गंभीरता को समझने की कोशिश करो...'' और उधर से आया दो टूक जवाब—

''हमें कुछ नहीं सोचना दीदी । जब तक तुम नहीं आओगी, तो हम शादी तो क्या करेंगे, मरेंगे भी नहीं...'' और तब हारकर अनुभूति ने पापा को ही लिखा—''पापा ! मैं आठ महीने तक लौटने की कोशिश करती हूं । आप बात तो पक्की कर लें...'' लेकिन उत्तर में उधर से आया श्रुति का फर्राता हुआ जवाब—

''दीदी ! एक बात अच्छी तरह समझ लो ! तुम तो जानती हो न कि हम तुम्हारे आये बिना न शादी के लिए तैयार होंगे और न किसी ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे के सामने अपनी नुमायश ही लगने देंगे । क्या हम ही इत्ते पराये हो गये तुम्हारे लिए कि तुम हमारी सगाई पर भी नहीं आओगी ?...हम सौगंध खाते हैं तुम्हारी, कि हम कुछ कर बैठेंगे ! पापा को लिख दो, हमें मजबूर न करें...''

अब अनुभूति के पास पापा को केबिल भेजने के सिवा चारा ही क्या था—''प्लीज पापा वेट !'' ...आठ महीने बाद जब वह दिल्ली के हवाई अड्डे पर उतरी तो हवा के साथ लहराता हुआ स्वर उसे आह्लादित कर गया—''दीदी !'' जैसे कहीं से मधुर संगीत तैरता हुआ आकर कानों में गूंज उठा हो ।

''चार महीने बाद ही उसने अपने हाथों से श्रुति को दुल्हन का जोड़ा पहनाया । वह अपनी दीदी से लिपटकर रोयी भी, और तब अपने मन में सपनों का जाल बुनती हुई चल पड़ी उस सड़क पर, जो सपाट थी, और जिसके उस छोर पर एक चौखट थी, जहां उसका भविष्य बंधा था ।

समय कालचक्र की तरह घूमता चला गया । धीरे-धीरे वे सब जो बहुत अपने थे—दादी मां, पापा, मां...दूर कहीं बादलों के गुबार में जाकर खो गये और अब आज यह कड़वा सच कि उसकी गुड़िया-सी श्रुति को कैंसर हो गया है । मन पर बोझ लिये वह बंबई गयी...कैसी अमरबेल की तरह फैलकर इस बीमारी ने जकड़ लिया था, उसकी श्रुति को ? उसका फीका चेहरा, अबोध बेबस-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसकान, अपने बच्चों की ओर देखती-तरसती-सी हसरतभरी निगाहें और आंखों में आनेवाले भयानक 'कल' की परछाईं...अनुभूति सिहर उठी । उसने श्रुति के सिर पर अपना हाथ फेरकर कहा—

"तू घबराना मत गुड़िया । मैं हूं न तेरे पास । तू जल्दी अच्छी हो जाएगी । हौसला रख..." कहते-कहते उसका अपना गला भर आया ।

"ना दीदी, ना ! तुम इतनी कमजोर कब से हो गयीं ? तुम ही मन छोटा करोगी, तो मैं हिम्मत कैसे रखूंगी ? मैं जानती हूं दीदी, मेरे पास समय बहुत थोड़ा रह गया है । पर दीदी, मैं आऊंगी न तुम्हारे पास, तुम्हारे सपनों में, तुम्हारे खयालों में ! ...और दीदी, हम वादा करते हैं कि जब तक तुम नहीं आओगी, हम मरेंगे भी नहीं..." अनुभूति भरभराकर रो पड़ी ।

बंबई...दिल्ली... फिर बंबई, फिर दिल्ली... एक दूसरा चक्र शुरू हुआ अनुभूति की जिंदगी में । फिर एक दिन चिट्ठी आयी—श्रुति को बंबई ले जा रहे हैं, वह बड़ी कमजोर हो गयी है...उसने हवाई जहाज का टिकट मंगाया । फोन पर अलार्म लगाया । आधी रात में फोन घनघनाया तो वह उठ बैठी । चार बजे की फ्लाइट पकड़नी थी । आज श्रुति का चेकअप होना था । उसने रिसीवर उठाया और कहा—

"हेलो ! मैं अनुभूति..." कि उधर से किसी ने कहा—"आंटी ! मैं अशोक बोल रहा हूं बंबई से—चाची अभी-अभी गुजर गयीं...सुबह दस बजे यहीं संस्कार होगा । आप तुरंत आ जाइए...उन्होंने कहा था जब तक आप नहीं आएंगी..." आगे वह सुन नहीं पायी ।

नहीं...उसने तो वादा किया था..."दीदी, जब तक तुम नहीं आओगी, हम मरेंगे भी नहीं..." और अब थरथराते हाथों से उसने रिसीवर रख दिया । उसकी अपनी सोनचिरैया चुपके से पंख फैलाकर उन्मुक्त आकाश की ओर उड़ गयी थी और यहां वह अकेली रह गयी थी, स्मृतियों के फटे हुए पन्नों को सहेजने के लिए । उसने कुछ देर बाद टैक्सी के लिए फोन किया—और सर्पदंश से पीड़ित, हताश, आहत, हारी हुई, एयरपोर्ट की ओर चलने को तैयार हो गयी । अभी उसे अपनी मुंहबोली बेटी को विदा करना था । उसने विगत स्मृतियों के हर एक पल को अपने अंतर में सहेज लिया था ।

—१४४ एस. एफ. एस. अपार्टमेंट
हौज खास
नयी दिल्ली-११००१६

कीट-पतंग भी देते हैं अपराध की 'गवाही'

तेरहवीं शताब्दी में चीन में एक किसान की हत्या कर दी गयी । अपराध की जांच का काम एक अधिकारी को सौंपा गया । उसने आसपास के सभी किसानों को एकत्रित होने का आदेश दिया । साथ में अपने हंसिए भी लाने को कहा । जब सभी किसान आ गये तब उनको अपने-अपने हंसिए जमीन पर रखने का आदेश दिया गया । मक्खियां एक हंसिए पर बैठने लगीं । जांच अधिकारी ने हंसिए के मालिक को हत्या का दोषी ठहराया । उस व्यक्ति ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया, अपराध विज्ञान का यह शायद प्रथम रेकॉर्ड है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्भुत घटनाएं

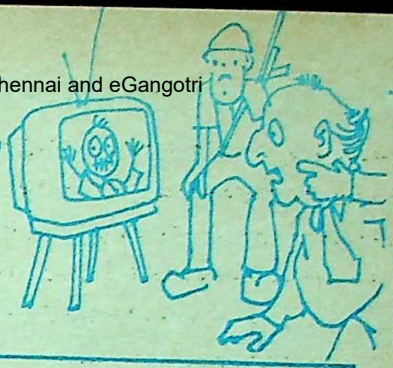

फिजी की संसद में 'भूत'

भूत की कहानियां सुनकर व पढ़कर अब तक लोग रोमांचित हो उठते थे, लेकिन इससे भी आगे—भूत दूरदर्शन के पर्दे पर दिखने लगे तो इसे आश्चर्यचकित कर देने वाली घटना ही कहा जा सकता है ।

हाल में ही ऐसी घटना फिजी देश की संसद में देखने को मिली ।वहां के राष्ट्रीय संसद के सुरक्षा गार्डों ने बल देकर कहा है कि उन्होंने संसद के बड़े-बड़े कमरों में भूत को टहलते हुए देखा है । प्रधानमंत्री सितिवेनी राबुका और विपक्ष के नेता जयराम रेड्डी ने भूत की छाया का वीडियो टेप देखा । वहां के दूरदर्शन ने भी इसका प्रसारण अपने कार्यक्रमों में किया । वीडियो टेप में संसद के बैठक वाले कक्ष में भूत की छाया को घूमते दिखाया गया है । संसद के सुरक्षा गार्ड पोल क्यूनीवाला ने इस बात का रहस्योद्घाटन किया कि उन्होंने व उनके दो साथियों ने अपने मानीटर स्क्रीन पर लगभग पांच मिनट तक भूत को चलते-फिरते देखा है । सुरक्षा गार्ड का कहना था कि मैं इतना कभी नहीं डरा । वह आगे वर्णन करता है कि वह फिजी की प्राचीन पारंपरिक वेशभूषा में था ।

पीपल का पेड़ स्वयं उठ गया

श्रद्धावान माने या वास्तविक रूप में, उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले में एक गांव है—कुमाहीं, वहां एक आश्चर्यजनक घटना देखने को मिली । वहां से आये कुछ प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि २८ मई, ९३ को आये तूफान में पीपल का एक वृक्ष जमीन पर आ गिरा । पास के लोगों ने उसकी शाखाएं काटनी चाहीं, तो उन्हें परेशानियां झेलनी पड़ीं । जिस ट्रैक्टर में पेड़ की टहनियां ले जा रहे थे वह उलट गया और जिन औजारों से काट रहे थे, वे टूट गये ।

अब उसी स्थान पर अगस्त के अंतिम सप्ताह में बचाखुचा पेड़ अपने आप खड़ा हो गया । इस घटना को कुमाहीं गांव के लोगों ने प्रत्यक्ष देखा ।

अब आस-पास के गांव के लोग उस आश्चर्यजनक पीपल के पेड़ को देखने के लिए प्रतिदिन आ रहे हैं । पेड़ २२ फुट लंबा और उसका घेरा दस फुट चौड़ा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनारस के रईसों की रईसी उनके पैसे, उनके विलास और वैभव से नहीं, उनकी तबीयत से आंकनी चाहिए । उनकी नजाकत और नफासत भी उसी में है ।

भंग की गलियों में बनारस के रईसों की रईसी

● दामोदर अग्रवाल

बनारस के छात्र, बनारस के कवि, बनारस के जुलाहे, बनारस के नेता, बनारस के पंडित, बनारस के ठग, बनारस के गुंडे और बनारस के लंगड़े की बात तो अकसर चलती है, पर बनारस के रईसों की कोई अलग पहचान अब तक बिना बने ही रह गयी है । पर बनारस में रईस हैं और खूब हैं, और इतने हैं कि लखनऊ के नवाब भी झूठे पड़ जाएं । फर्क सिर्फ इतना है कि पहले तो बनारस के रईस अपनी रईसी का बखान नहीं करते, दूसरे करने पर आ जाएं तो किसी से पीछे भी नहीं रहते ।

देखने में जाहिर होता है कि बनारस में रईसी की परंपरा रही है । भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, डॉ. भगवान दास और राय कृष्णदास उसी परंपरा की कड़ी थे । बनारस में पुराने रईसों की अब कई शाखाएं हो गयी हैं, और कुछ तो अपने-अपने नये-नये काम धंधों में लग गये हैं, किंतु बहुत से अब भी वसीयत में मिले जमीन-जायदाद के भरोसे श्री गोपाल मंदिर में भगवद्-भजन करते हुए अपनी जीवन-लीला काट रहे हैं । पर उन सभी में रईसी की एक बू है, जो रस्सी के जल जाने पर भी ऐंठन बचे रहने के चलते मौजूद है ।

प्रशासन हाथ में

कुछ पुराने रईसों के वंशज अब बनारसी साड़ियों और रेशम के धंधे में भी लग गये हैं, और वे साड़ीवालों की कोठी, रेशमवालों की कोठी, मऊवालों की कोठी, रसड़ावालों की कोठी और चांदीवालों की कोठी के नामों से मशहूर हैं । आम चुनावों में राजनीतिक दल उनसे चंदे भी लेते हैं और चुनावों की दौड़-धूप के लिए नौकर-चाकर भी । बदले में वे कोठीवाले उनसे हर तरह का काम निकलवाते हैं, और बजरिए उनके बनारस का जिला प्रशासन भी उनके हाथ में होता है ।

साड़ियों की सट्टी का वक्त

रोज शाम को जब बनारसी साड़ियों की सट्टी का वक्त होता है, और ठठेरी बाजार, लक्खी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौतरा और गोलघर में मऊ, मुबारकपुर और आजमगढ़ से अपना-अपना नया माल लेकर आये लुंगीधारी, पाजामाधारी और टोपीधारी मुसलमान बुनकरों की भीड़ लगती है, तब साड़ी का काम करनेवाले रईसों की रौनक और दबदबा देखने की चीज होती है । अपने-अपने सादे कपड़ों में अपनी-अपनी गद्दियों पर बैठे ये रईस दो-ढाई घंटों में ही लाखों का माल खरीदकर कलकत्ता, बंबई, दिल्ली और सैकड़ों दूसरे नगरों से पधारे व्यापारियों को हाथों-हाथ बेचकर हजारों की दलाली कमा लेते हैं । कहते हैं कि ये व्यापारी बनारस से हर साल ७०० करोड़ का माल उठाते हैं ।

चेक का काम

बनारस के रईसों का एक अपेक्षाकृत साड़ियां रोज खरीदनेवाले स्थानीय आढ़तिए बुनकरों को तुरंत नगदी न देकर अगली तिथि का चेक दे देते हैं । चेक का काम करनेवाले ये रईस गद्दी के नीचे लाखों का नोट दबाकर बैठते हैं, और कमीशन काटकर बुनकरों से उन चेकों को कम दाम में खरीदकर नगदी भुगतान कर देते हैं । अपने ढंग की एक छोटी-मोटी निजी अधिक आराम-तलब तबका कुछ नहीं करता, क्योंकि उनके पास पुरानी कोठियां, पुरानी संपत्ति और पुराना रुपया-सोना और गिन्नियां हैं । फिर भी ये रईस अपनी-अपनी गद्दियों पर आसीन कुछ न कुछ तो करते हैं, और इनको जो काम सबसे अधिक रास आता है उसे वहां के लोग 'चेक का काम' कहते हैं । बनारस की अर्थव्यवस्था में बुनकरों से लाखों रुपये की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंकिंग-व्यवस्था बनारस में बहुत लोकप्रिय है ।

सफाई भी, ईमानदारी भी

रहन-सहन के मोटे तरीकों में आस्था रखनेवाले ये रईस लेन-देन में सफाई और ईमानदारी के कायल हैं । दूसरों के साथ भी ये बड़े अदब से पेश आते हैं । साथ ही बेईमानी और हेराफेरी को ये कभी माफ नहीं करते । अपनी सहज-बुद्धि से ये भांप लेते हैं कि कौन कैसा है, और किसको कितना दिया जा सकता है ।

शादी-ब्याह के अवसरों पर इनकी रईसी खुलकर सामने आती है । अग्रवाल, खत्री तथा गुजराती रईस घरानों की स्त्रियां बारातों में शामिल होने के लिए सही अर्थों में 'रत्न-जड़ित' होकर आती हैं । लेकिन उनके बनाव-सिंगार में कहीं कोई बनावट या दिखावा नहीं नजर आता है और सब-कुछ स्वाभाविक जान पड़ता है । शालीनता के साथ उनका थोड़ा झुककर करबद्ध अभिवादन करना बड़ा ही मोहक लगता है । ऊपर से भोजपुरी के रंग में रंगी उनकी मीठी खड़ी बोली, और आंखों में एक अजब आकर्षक लावण्य ।

पुरुष भी ऐसे अवसरों पर, और दूसरे सामाजिक कार्यक्रमों में अपनी पूरी सजधज के साथ पधारते हैं । जाड़ों के दिन हों तो पश्मीने और शाहतूश में लहराते बदन, और गरमियों में लकदक कुरते-पाजामे । पांवों में कीमती चप्पलें । नौजवान सूट-टाई और नये जूतों में, कुलफी -बहार, केवड़े और गुलाबजल का मजा लेते हुए ।

ललित कलाओं को प्रश्रय

नयी पीढ़ी के, अंगरेजी पढ़े-लिखे और बाप-दादों से अधिक आधुनिक, और मुक्त होते हुए भी, बनारस के वर्तमान रईस पाश्चात्य सभ्यता या संगीत को अच्छा नहीं समझते, और गजल, ठुमरी, दादरा तथा मिर्जापुरी कजरी के दीवाने हैं । बनारस घरानों की संगीत-संपदा पर भी इन्हें पूरा नाज है, और वहां के कलाकार चाहे वह बिरजू महाराज हों या गिरिजा देवी, जब कभी दूरदर्शन पर राष्ट्रीय कार्यक्रमों में आते हैं तब बहुत गर्व से उनकी छाती फूल जाती है। बनारस के रईसों के चलते ही, बनारस में संगीत तथा दूसरी कलाओं को संरक्षण-प्रोत्साहन मिलता रहता है और रईसों के खर्चे पर बड़े-बड़े कार्यक्रम चलते रहते हैं । रईस घरानों के महिला-मंडलों द्वारा आयोजित संगीत और गायन कार्यक्रमों में रईसों की बहू-बेटियों को गाते-बजाते देखकर लगता है कि जहां सुरीली आवाजों की इतनी प्रतिभा बिखरी पड़ी है, वहां सरकारी प्रोत्साहन और व्यावसायिक ढंग से प्रशिक्षण का इतना अभाव क्यों है ?

बनारस के रईसों की रईसी उनके पैसे, उनके विलास और वैभव से नहीं, उनकी तबीयत से आंकनी चाहिए । उनकी नजाकत और नफासत भी उसी में है । पान की गिलौरियों में सौंफ, इलायची, कस्तूरी, सुवास और कत्था-चूना का संतुलन बिगड़ते ही उनका पारा चढ़ जाता है। जो भंग छानने के शौकीन हैं उन्हें पिस्ता, बादाम, केसर और शुद्ध दूध में ही छानी गयी भंग अधिक रास आती है । मिठाइयों तथा अन्य पकवानों में भी छप्पन भोग के मसाले न बोलें तो वे उन्हें कहां रास आते हैं ?

विदेशी इत्रों का शौक

लेकिन पारंपरिक जूही, गुलाब, केवड़े, बेल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमेली, टेसू और हरसिंगार की जगह अब उन्हें लंदन और पेरिस के मादक इत्र ज्यादा पसंद आने लगे हैं ।

भारतेंदु और जयशंकर प्रसाद के समय कस्तूरी-इत्र का भी बड़ा चलन था । जाड़ों में उस समय के रईस हाथ में उनके फाहे लेकर चलते थे, रास्ते में मिलनेवाले परिचितों को एक-एक फाहे भेंट भी करते थे । पूरी की पूरी ठठेरी गली और गोपाल मंदिर के रास्ते में पड़नेवाला पूरा चौखंभा कस्तूरी की गरम खुशबू से गमकता रहता था । पर आज के रईस कस्तूरी-मृग की नाभि को गरम कपड़ों के संदूकों में रखते हैं, ताकि अगले साल जब कपड़े निकलें तो सुवासित और तरोताजा रहें ।

बनारस के अति आधुनिक रईसों में भंग की गोलियों का इस्तेमाल अब कम होता जा रहा है । उसका कारण यह है कि इसके साथ एक तरह का भदेसपन जुड़ गया, जो उनकी शान के खिलाफ है । उनकी जगह वे अपने-अपने घरों में चुनी हुई विदेशी शराबों की बोतलें रखते हैं, जो वे स्वयं तो बहुत कम पसंद करते हैं, पर अपने शौकीन प्रियजनों को परोसने में परम सुख का अनुभव करते हैं । भंग का इंतजाम वे खास-खास मौकों पर (शिवरात्रि, होली, दशहरा आदि) उसका विशेष चाव रखनेवालों के लिए ही करते हैं ।

बदल रहे हैं शौक

वैसे भी नये रईसों के शौक अब तेजी से बदल रहे हैं । वे अपना पैसा अपने शहर में नहीं, दिल्ली, बंबई और कलकत्ता में जाकर कुछ दिनों के लिए पांच-सितारा होटलों के आरामगाहों में खर्च करते हैं । अब उन्हें न इक्कों की गहरेबाजी रास आती है न नियमित गंगा-स्नान, न मक्खन-मलाई-पान न दंड-बैठक, न लंगोट-गमछा और न 'बाहरी अलंग' के सैर-सपाटे । इनकी जगह आ गये हैं वीडियो-टीवी और शहर के दो बड़े होटलों में पार्टियां और बैठकें —एक अंतर के साथ । अंतर यह कि न चीनी भोजन न अंगरेजी । बस वही, इन होटलों में भी, पिस्ते और मलाई की कुल्फियां गरमियों में, और जाड़ों में पूरे हाल में अपनी सुवास फैलाते बादाम के हलुवे, तीन-चार किस्मों की कचौरियां और चांदी-सौने की पन्नियों में लिपटे पान के बीड़े ।

१३-बी, पाकेट ए
सुखदेव विहार, नयी दिल्ली-११००२५

खतरे में हैं कछुए

ऐसा माना जाता है कि कछुए में भारी मात्रा में चिकित्सीय गुणवत्ता विद्यमान है । परंपरागत दवाइयों में अनेक बीमारियों के लिए इसकी अनुशंसा की गयी है । आंतों और पेट की बीमारियों के लिए, पित्त और चर्म रोगों के लिए, अल्सर या छालों के इलाज के लिए कछुए का खून, दमे के लिए इसके अंडे और मांसपेशियों को दुरुस्त करने के लिए कछुए के जले हुए कवच का उल्लेख है । भारी संख्या में कछुए विशेषकर तारांकित कछुए पालतू कछुओं का व्यवसाय करनेवाली दुकानों पर मिलते हैं । इस जाति के कछुए की यूरोप के देशों में भारी मांग है । वहां इन्हें पालकर रखा जाता है । एक तारांकित कछुए की हालैंड में कीमत ६०० अमरीकी डॉलर है । प्राकृतिक आवासों का अतिदोहन या विनाश कछुए की नस्ल के लिए एक गंभीर खतरा है । (सीईईएनएफएस)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुंदेलखंड के लोक कवि

बुंदेली के विद्यापति, रससिद्ध लोक कवि ईसुरी बुंदेलखंड के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं । ईसुरी के पूर्व भी बुंदेलखंड की धरती पर कवि केशव, पद्माकर आदि हुए, परंतु इनकी भाषा बुंदेली से प्रभावित ब्रजभाषा थी, जबकि ईसुरी ने लोकजीवन में प्रचलित शुद्ध बोलचाल की बुंदेली को अपनी काव्य भाषा बनाकर फागें गायीं । यही कारण है कि उत्कृष्ट शब्द चयन एवं अनेक शब्दों के अर्थ विस्तार से बुंदेली

पूरा नाम ईश्वरी प्रसाद था । 'ईसुरी' इसी का बुंदेलीकरण है ।

विभिन्न मत-मतांतरों के उपरांत डॉ. नागेन्द्र चौरसिया ने ईसुरी की जन्म कुंडली के आधार पर ईसुरी का जन्म संवत् १८९८ में चैत्र शुक्ल दशमी माना है । डॉ. चौरसिया के अनुसार उन्हें यह कुंडली पं. राजाभइया, बिजावर, छतरपुर सौजन्य से प्राप्त हुई थी और राजा भइया को यह कुंडली बिजावर नरेश सावंत सिंह जू देव

रजऊ मांसल शरीर की सुंदरी है । पुष्ट पिंडलियों और मांसल जंघाओं की स्वामिनी है । उसके पेट में त्रिबली पड़ती है । गोरे शरीर पर सांवली साड़ी पहने वह बहुत सुंदर लगती है । ईसुरी कहते हैं कि वह ऐसे चली आ रही है, जैसे हाथी मस्ती में झूमता हुआ चलता है ।

स्त्रियां बकरी की त

अपनी प्रादेशिक सीमाओं को लांघकर सारे हिंदी भाषियों में प्रतिष्ठित हुई है ।

भेंड़की में पैदा

बुंदेली को इतना सम्मान, स्नेह व प्रतिष्ठा का गौरव प्रदान करनेवाले कवि ईसुरी का जन्म झांसी के निकट भऊरानीपुर कस्बे से लगभग दस किलोमीटर दूर भेंड़की ग्राम के एक जुझौतिया ब्राह्मण परिवार में हुआ । ईसुरी का

के खानसामा वाकर से मिली थी । वाकर ईसुरी को अपना गुरु मानते थे । उन्होंने ईसुरी से प्रभावित होकर थोड़ी-बहुत काव्य रचना भी की । वाकर ने अपनी एक फाग में लिखा है

'संवत अठारा सै अठान्वे, दिना हतो गुरुवार ।
चैत सुदी दसमी रई, भयो ईसुर अंवतार ।

चूंकि जन्मकुंडली किसी भी व्यक्ति के जन्म का प्रामाणिक आधार माना जा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः अधिकांश विद्वानों ने ईसुरी का जन्म १८९८ माना है ।

ईसुरी के पिता का नाम भोलेनाथ अड़जरिया और माता का नाम गंगाबाई था । यह अपने पिता की अंतिम संतान थे । इनसे बड़े दो भाई— सदानंद और रामदीन थे । ईसुरी के कोई पुत्र नहीं था, अतः वंशपरंपरा भाइयों से आगे बढ़ी ।

साथ सारे दिन खेलना-कूदना ही इनकी दिनचर्या थी, अतः पढ़ने से इन्हें लगाव नहीं के बराबर था । वास्तव में ईसुरी ने जो कुछ भी पढ़ा— गुना वह जीवन के अनुभवों से ही ।

ईसुरी का विवाह भी उनके मामा ने ही किया । उनकी पत्नी के नाम के संबंध में भी विवाद है । बगौरा ग्रामवासी इनकी पत्नी का नाम स्यामाबाई बताते हैं, तो कुछ विद्वानों के अनुसार उनका

पीछे चल देती हैं !

● प्रो. परशुराम शुक्ल

ईसुरी के बचपन में ही इनके माता-पिता का देहांत हो गया था । इनका पालन-पोषण मामा भूधर नायक ने अपने घर लुहरगांव (हरपालपुर के पास) रखकर किया । चूंकि मामा भी निःसंतान थे । अतः ईसुरी को ही उन्होंने अपनी संतान समझा । मामा के अत्यधिक प्रेम में पलने के कारण ईसुरी वैसे भी चंचल एवं शरारती हो गये थे । अपने ग्राम सखाओं के

नाम राजाबेटी प्रामाणिक माना गया है । रामचरण हयारण 'मित्र' ने ईसुरी की पत्नी के स्यामा नाम का उल्लेख ईसुरी की निम्न फाग के आधार पर किया है—

स्यामा भई दोज को चंदा, डार गरे में फंदा ।
रातई दिन वैसे राती, ज्यो गैर भाय गल गंदा ।

ईसुरी के कोई पुत्र नहीं था । इनके चार पुत्रियां थीं । कुछ लोगों के अनुसार उनके मात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पुत्री थी । ऐसा शायद इसलिए माना गया है, क्योंकि ईसुरी ने अपनी कुछ फागों में एक ही पुत्री गुरन के नाम का उल्लेख किया है । डॉ. नाथूराम चौरसिया ने यह प्रमाणित किया है कि ईसुरी के चार पुत्रियां थीं । ईसुरी ने विलासी पाठक को अपने दत्तक पुत्र के रूप में अपनाया था । किंतु इस तथ्य को भी सभी विद्वान एक मत से नहीं स्वीकारते ।

अपमानजनक घटना

ईसुरी अपने विवाह के कुछ वर्षों बाद तक मामा के यहां रहे, फिर अपनी आजीविका के लिए वह अपनी ससुराल धौर्रा आकर रहने लगे । यहां दो वर्ष तक इन्होंने गल्ले की दूकान की देखभाल की, फिर धौर्रा के ही जगजीत सिंह मुसाहिब के यहां कारिदा की नौकरी करने लगे । यहीं ईसुरी के जीवन में एक अप्रिय एवं अपमानजनक घटना जुड़ गयी । मुसाहिब की ही एक परिचारिका ने मुसाहिब की मां के आभूषणों का डिब्बा चुराया और दोष ईसुरी पर लगा । इसका संकेत ईसुरी की इस फाग में मिलता है—

रुक्मिण डब्बा काय न रानो, भेजो जेहजखानो ।
भीतर बैठे से का होने, काए चुरा लओ गानों ।
जो खा जाय खेत को बारी,
जेउ इक बड़ो अलोनो ।
जो तुम चाओ जिन्दाहमखों, जल्दी देव बतानो ।
नाहक हो रई दसा हमारी, फिर परहें पछतानो ।
मोरो जानों गओ न 'ईसुर' है रुक्मिण को जानो ।

इस घटना से दुखी होकर ईसुरी जगतजीत सिंह की नौकरी छोड़कर पास के गांव ठढेवरा में भुंदो माफीदार के यहां रहने लगे । यहां आकर वह बीमार हो गये और उनके संबंधी उन्हें पुनः धौर्रा ले आये । धौर्रा में यह चतुर्भुज किलेदार के यहां कारिदा का काम करने लगे । चतुर्भुज किलेदार ने बगौरा में कुछ जमीन खरीदी और उस जमीन की देख-रेख हेतु ईसुरी को नियुक्त किया ।

जब बगौरा की जमींदारी इंस्पैक्टर रज्जब अली ने कुर्क कर ली तो ईसुरी रज्जब अली के कारिदा बन गये । इस तरह वह पहले धौर्रा और फिर बगौरा से ही पूरी तरह जुड़े रहे । बगौरा से उनका इतना लगाव था कि उन्होंने मरने के बाद अपना अंतिम संस्कार भी बगौरा में करने की इच्छा व्यक्त की—

गंगा जू लौं मरे ईसुरी, दाग बगौरा दीजे ।

असाधारण प्रतिभा संपन्न ईसुरी का व्यक्तित्व ग्रामीण परिवेश में रचा-बसा, सरल, प्रभावपूर्ण व आकर्षक था । एक तो कवि हृदय और दूसरी ओर मालगुजारी वसूल करने का कार्य करनेवाले ईसुरी ने दोनों विरोधाभासों को कैसे समन्वित किया ? यह वास्तव में आश्चर्य का विषय है ।

ईसुरी की काव्य प्रतिभा प्राकृत थी । यद्यपि उन्होंने कवित्त, कुंडलियां और सैर विधाओं में भी रचना की है, किंतु उनका प्रतिनिधि काव्य फागों में ही है । उस समय जब प्रमुख कवि ब्रजभाषा में काव्य रचना कर रहे थे, तब ईसुरी ने बुंदेली को भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया और लोकभाषा की लोक काव्य विधा के माध्यम से जीवन की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी ।

ऐसे प्रतिभाशाली आशु कवि का निधन संवत् १९६६ अर्थात सन १९१० में हो गया ।

यद्यपि ईसुरी ने भक्ति, श्रृंगार, नीति तथा लोक जीवन से संबंधित सैकड़ों फागों की रचना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यावसायिक रूप से जमींदारी से जुड़े ईसुरी वास्तविक रूप में लोक जीवन जीते हुए सामाजिक दायित्वों एवं मर्यादाओं का निर्वाह करनेवाले व्यक्ति थे ।

की है, तथापि ईसुरी की श्रृंगारिक फागों की रससिद्धता अद्वितीय है । इनकी शब्दावली इतनी मधुर व सटीक है कि एक-एक पंक्ति रसिकों को अभिभूत कर देती है और श्रोता काव्यानंद में आकंठ डूब जाता है ।

मानस प्रेमिका

जिस प्रकार सुजान विरही घनानंद ने अपने काव्य में सहज रूप से सर्वत्र सुजान शब्द का प्रयोग किया है एवं उसे अपने काव्य का आलंबन प्रतिष्ठित किया है, उसी प्रकार ईसुरी ने 'रजऊ' को लेकर श्रृंगारिक फागें लिखी हैं । रजऊ के बिना ईसुरी अधूरे हैं । रजऊ ईसुरी की मानसप्रेमिका थी । लोगों का मानना है कि बगौरा ग्राम की कोई युवती थी, जिस पर ईसुरी आसक्त थे, लेकिन ईसुरी की लिखी निम्न पंक्तियों से ईसुरी-रजऊ विषयक यह भ्रम टूटता है—

देखी रजऊ काउ ने नइयां, कौन बरन तन मुइयां ।
कां तो उनकी रहस-रास है,
कां दये जनम गुसइयां ।
पैलऊं भेंट हमइं से ना भई, सई कृपा हम पइयां ।
'ईसुर' हमने रजऊ की फागें,
कर दई मुलकन मइयां ।

रजऊ को किसी ने देखा नहीं है, कोई नहीं जानता कि वह कैसे रूप-रंग की है ? कहां रहती है ? माता-पिता कौन हैं ? उनकी भेंट पहले तो मुझसे ही नहीं हुई । मैंने तो उसे भगवान की कृपा से प्राप्त किया है । ईसुरी कहते हैं हमने तो उस पर फागें लिखकर उसे जगत में प्रसिद्ध कर दिया ।

ईसुरी की रजऊ रूप आगरी है । उसको देखकर जन्म सार्थक और जीवन धन्य हो जाता है—

नग नग कैसो बनौ बंदवारौ,
रजऊ कौ डील दुरारौ ।
अड़ियां जबर मसीली जांगें, कबजन कोद निहारौ ।
ओलें तेहरी परैं पेट में, माफिक कौ तुंदवारौ ।
गोरौ बदन स्यामली सारी, लगे लिपड़तन प्यारौ ।
ईसुर नचत मांय से आगइं, गजघूमत मतवारौ ।

रजऊ मांसल शरीर की सुंदरी है । पुष्ट पिंडलियों और मांसल जंघाओं की स्वामिनी है । उसके पेट में त्रिबली पड़ती है । गोरे शरीर पर सांवली साड़ी पहने वह बहुत सुंदर लगती है । ईसुरी कहते हैं कि वह ऐसे चली आ रही है, जैसे हाथी मस्ती में झूमता हुआ चलता है ।

वस्तुतः सौंदर्य का उद्भास आकारगत ही है । अतः उसमें मांसलता स्वाभाविक है । फाग का संबंध भी श्रृंगार से है, अतः ईसुरी ने इस मुक्त श्रृंगार का वर्णन अपने काव्य में पूर्णतया निर्बाध रूप से किया है । श्रृंगार वर्णन में ईसुरी विद्यापति के समकक्ष हैं । यद्यपि ईसुरी में प्रेम की पीड़ा व एकनिष्ठा घनानंद के समान है, किंतु उन्मुक्त श्रृंगार वर्णन उन्हें घनानंद से अलग कर देता है । ईसुरी ने सौंदर्य चित्रण में नेत्रों व उरोजों का ही सर्वाधिक वर्णन किया है । 'रजऊ' के यौवन उभार व भावों की उत्तेजना की चरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमा निम्न पंक्तियों में अभिव्यक्त हुई है—

छाती करे जुबन के डेरा, जस करबे की बेरा ।
कइयक तीरा से ही झांकें, कैऊ देत भौतेरा ।
प्रानन प्यारी रजऊ के ऊपर, कैसे होय हतफेरा ।
लग लो आन गले से गुइयां, मन नई मानत मेरा ।
गदिया दे के 'ईसुरी' मसकें, मिठिया कैसे पेरा ।

अपनी गजगामिनी रजऊ के नेत्रों का वर्णन भी ईसुरी ने अपने काव्य में अनेक स्थानों पर किया है । ईसुरी ने उसके नेत्रों के लिए पारंपरिक उपमानों का प्रयोग न करके उनके आकर्षण व प्रभाव का वर्णन अधिक किया है । उन्होंने नेत्रों के मादक प्रभाव को तलवार, पिस्तौल, संगीन, वाण, बरछी जैसा बताया है—

अखियां पिस्तौलें-सी भरकें, मारत जात समर कें ।
दारु दरस, लाज की गोली, गज कर देत नजर सें ।
देत लगाय सैन की सूजन, पल की टोपी धर कें ।
'ईसुर' फैर होत फुरती में, कोउ कहां नौं बरकें ।

ग्रामीण जीवन का सौंदर्य भी

ईसुरी ने रजऊ के अतिरिक्त भी ग्रामीण जीवन का सौंदर्य चित्रण किया है । उनकी फाग गानेवाली रंगरेजिन बहनें, धोबिन, तंबोलिन, ग्वालिन आदि के सौंदर्य पर भी ईसुरी ने सुंदर फागों की रचना की है ।

पेड़ों की रक्षा भी

ईसुरी बुंदेली माटी के कवि हैं अतः यहां का सौंदर्य व मांसलता तो इनके काव्य का प्राण है ही, किंतु इसके साथ ही लोक जीवन के अन्य पक्षों पर भी ईसुरी की पैनी दृष्टि गयी है । ईसुरी अपने समकालीन समाज के सजग दृष्टा थे । अतः उनके काव्य में जीवन की गहन और व्यापक अनुभूतियों का समावेश हुआ है । आज की पर्यावरण प्रदूषण समस्या व उसके निवारण हेतु वन रक्षण का दृढ़ संकल्प पर्यावरण प्रेमियों के लिए आज कितना आवश्यक है, यह चिंता उस समय ईसुरी को थी । इस पद को पढ़कर यह कहा जा सकता है कि ईसुरी केवल श्रृंगारिक फागों के रचयिता ही नहीं थे, समाज के प्रति सजग, जागृत एवं सतर्क कवि भी थे । बड़े ही कोमल, अनुनय भरे शब्दों में वह पेड़ों की रक्षा की बात करते हैं—

इनपै लगे कुलरियन घालन, भैया ये तो मानस पालन ।
इन्हें काटबो नई चइयत तो, काट देत जो कालन ।
ऐसे रूख भूख के लाने, लगवा दए नंदलालन ।
जे कर देत नई-सी 'ईसुर' मरी मराई खालन ।

लोग व्यर्थ ही वृक्ष को काटते हैं । ये तो हमारा पालन-पोषण करते हैं । हमें इन्हें काटना नहीं चाहिए । मानव की भूख शांत करने के लिए विधाता ने पेड़ उपजाये हैं । इन पेड़ों की हरीतिमा निर्जीव शरीर में सजीवता का संचार करती है ।

यह सत्य है कि जीवन में कर्मठ होना चाहिए । लेकिन काम के साथ विश्राम का भी अपना महत्त्व है । काम की थकान के बाद विश्राम, और-वह भी प्रिय के साथ, सुख-दुख की कहते-सुनते हो तो कितना भला लगता है इस अछूते विषय पर भी ईसुरी का ध्यान गया है—

ऐंगर बैठ लैओ कछु कानें, काम जनम भर रानें ।
सब खौं लागो रात जियतभर,
जो नहीं कभऊं बढ़ानें ।
करियो काम घरी भर रै कें, बिगर कछु नईं जानें ।
ई धन्धे के बीच 'ईसुरी' करत करत मर जानें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलों के विषय में ईसुरी ने लिखा—

मंईं तो उतरत चढ़त मुसाफिर,
होत सिमिट के भेले ।
मंईं से लेत कोयला पानी, देबे बोल दले ले ।
जां चाओ तां जाओ ईसुरी, पइसा होय अकेले ।

– अपने देश में अंगरेज बादशाह ने रेलें चलायी हैं, जिस स्टेशन पर जब आने-जाने का नियम है, तब आती-जाती हैं, वहां मुसाफिर उतरते-चढ़ते हैं । यहीं पर रेल कोयला-पानी लेती है । रेल से जहां चाहो आ-जा सकते हो, बस पास में पैसा होना चाहिए ।

अकाल और लोगों की दुर्दशा का चित्रण इन पंक्तियों में बहुत मार्मिक और सजीव बन गया है, जो हमें बरबस नागार्जुन की कविता 'अकालके बाद'— 'कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास' की याद दिला देती है—

आसों होस सबई के भूलें, कइयक कांखें कूलें ।
कच्चे बेर बचे हैं नइयां, कंगीरन ने रूलें ।
दो-दो दिन के फांके पर गये, परचत नइया चूले ।
मरे जात भूखन के मारें, अंदरा, कनवा लूले ।
मारे-मारे फिरत ईसुरी बड़े-बड़े दिन दूले ।

कवि ईसुरी की संवेदना विकलांगों के प्रति विशेष सक्रिय रही है, इसलिए उपरोक्त पंक्तियों में उनका विशेष रूप से उल्लेख किया है ।

लोकरागिनी के अमर गायक, रसिक एवं प्रतिभाशाली लोक कवि ईसुरी के काव्य में अपने युग की रसप्रियता के साथ मानसिक तटस्थता, समसामयिक प्रभाव एवं कला साधना के दर्शन एक साथ होते हैं । ईसुरी अपने समय के सहज और स्वाभाविक रचनाकार हैं । जिस प्रकार वात्सल्य वर्णन में सूर और राम-कथा में तुलसी प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार बुंदेली फाग साहित्य में ईसुरी का कोई समकक्ष नहीं है । इनके फाग साहित्य की प्रभावात्मकता को निम्न पंक्तियों में अभिव्यक्त किया जा सकता है—

सुनके फाग ईसुरी तेरी, तिरिया पाछू हेरी ।
झिन्ना झिरत काम करआवे,
बिरिया तफत अबेरी ।
लगत काउ को फीकी नइयां, नीकी लगे सबेरी ।
चाये जहां लै जाओ ईसुरी, कान धरे की छेरी ।

ईसुरी तेरी फागें सुनकर ग्राम वधुएं पीछे मुड़कर देखने लगती हैं । वे जल्दी से झरने पर काम करके उस समय का इंतजार करती हैं, जब एकांत हो और वे निश्चिंत होकर ईसुरी की फागें सुन सकें ।

ईसुरी की फागें सुनकर स्त्रियां मोहित होकर उसी प्रकार पीछे-पीछे चल देती हैं, जैसे हम कान पकड़कर बकरी को ले जाते हैं ।

— ३, गोविंदगंज दतिया (म. प्र.) ४७५६६१

नवजात शिशुओं में बहरेपन की वजह प्रसूति में देरी अथवा ठीक से स्तनपान न कराना हो सकती है । पिछले दिनों बहरेपन के कारणों का पता लगाने के लिए दिल्ली में एक अध्ययन किया गया । १३६० में १७५ लोग गूंगे और बहरे निकले । इनमें से ४० से ४५ प्रतिशत तो जन्म से इस रोग के शिकार थे, लेकिन २० से २५ प्रतिशत में वृद्धावस्था के कारण यह दोष उत्पन्न हुआ ।

— रमेश कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम सात पत्र

संपादक
'कादम्बिनी'

(एक)

संपादक महोदय,

मेरे एक मित्र हैं जिनकी निष्पक्ष समालोचना एवं साहित्यिक रुचि का मैं कायल हूं। उन्होंने मेरी कुछ कहानियां पढ़ी हैं और मुझे राय दी है कि मैं अपनी नवीनतम कहानी 'जग्गू ने गांव छोड़ा' आपके पास प्रकाशनार्थ भेजूं। इस कहानी में उन बदलती हुई परिस्थितियों का वर्णन है जिनके कारण जग्गू को गांव छोड़ कर नगर जाना पड़ा और नागरिक जीवन एवं नागरिक सभ्यता पर जबर्दस्त व्यंग्य है।

आपका विनम्र
ज. सहाय

संपादक
'कादम्बिनी'

(दो)

संपादक महोदय,

मेरी कहानी के साथ आपकी 'अभिवादन और खेद सहित' की चिट मिली, मुझे निराशा हुई। अवश्य ही यह कहानी आपके सहायकों में से किसी ने बिना पढ़े लौटा दी हो या संभव है उसे समझ ही न आयी हो। इसलिए यह कहानी मैं आपके नाम से अन्य पत्र में प्रकाशित करने भेज रहा हूं। मुझे पूरी आशा है कि आपके नाम की कहानी लौटाना किसी भी संपादक के वश में नहीं है।

आपका ही
ज. न. सहाय

संपादक
'कादम्बिनी'

(तीन)

संपादक महोदय,

मेरी कहानी पुनः उसी प्रकार की चिट के साथ वापस आ गयी है। मुझे निराशा तो हुई

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

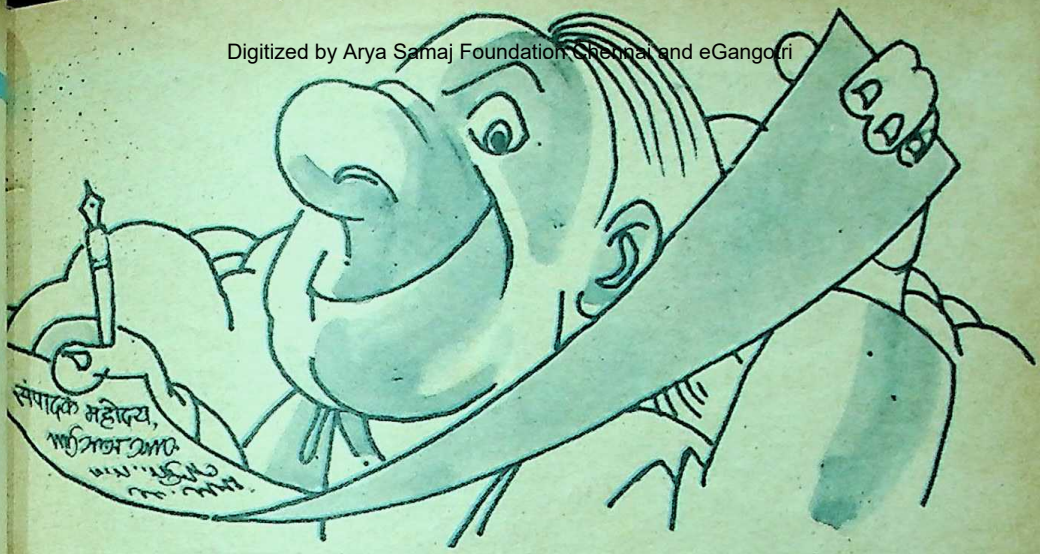

है, परंतु सच बताऊं तो पहले पहल गुस्सा भी कम नहीं आया, पर जब मैंने अपने मित्र के साथ इसकी चर्चा की तो उन्होंने समझाया कि संभव है मेरी इस कहानी की शैली उस पत्र के अनुरूप नहीं रही ।

सो, इस पत्र के साथ मैं अपनी एक और नवीनतम कहानी भेज रहा हूं । इसका शीर्षक है 'जग्गू गांव को लौटा' । नगर से असंतुष्ट होकर तथा वहां के लोगों को अपनी अछूती एवं परंपरागत संस्कृति का पाठ पढ़ाकर कैसे वह अपने गांव लौटता है, इसे इस कहानी में खूबी से दर्शाया गया है । गांव पहुंचकर वहीं की भाषा में वह लोगों को नगर की बातें बताता है, इसलिए यह कहानी आंचलिक कहानियों की श्रेणियों में भी आ सकती है ।

आप आरंभ से ही आंचलिक कहानियों को प्रोत्साहन देते रहे हैं और उनके पक्ष में न जाने कितने विद्वानों के लेख भी प्रकाशित कर चुके हैं, इसलिए मुझे पूर्ण आशा है कि आपको यह अवश्य पसंद आएगी और आप अपने पत्र में मेरी प्रथम कहानी को प्रकाशित करने का गौरव भी प्राप्त करेंगे ।

आपका
जगदीश सहाय

(चार)

संपादक
'कादम्बिनी'
संपादक महोदय,
'अभिवादन और खेद सहित' की एक और चिट मेरी कहानी के साथ मिली । अपनी नवीनतम कहानी इस पत्र के साथ भेज रहा हूं । इसका शीर्षक है 'जग्गू की आत्मा ही गांव थी ।' इसमें जग्गू का गांव का जीवन दर्शाया गया है । जब उसके कुत्ते के बच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

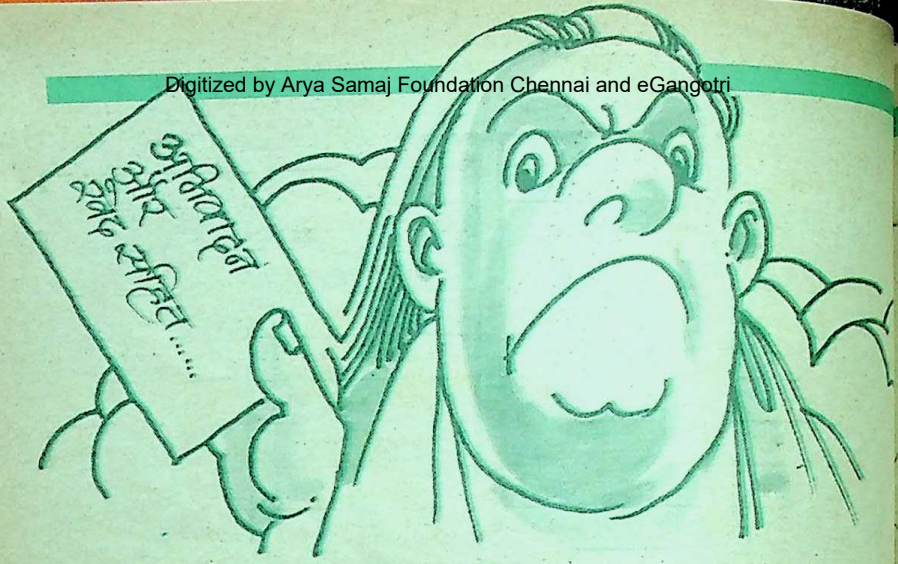

होते हैं और ठंड से उन्हें बचाने का पूरा ध्यान रखने पर भी उनमें से एक मर जाता है, वह स्थान बड़ा ही मार्मिक बन पड़ा है । वहां एक विशाल स्मारक बना दिया गया है ताकि ग्रामवासी कुत्तों की पूजा करना सीखें ।आशा है इस कहानी की शैली, मूड और वार्तालाप आपको पसंद आएगा ।

सस्नेह

ज. न. स.

(पांच)

संपादक

'कादम्बिनी'

संपादक महोदय,

जब आपकी और से पैंतीस दिनों तक कोई उत्तर नहीं आया तो मैंने समझा कि आपने आखिर एक नवोदित लेखक की लेखनी को मान्यता दे दी है क्योंकि आपके नियमों में हर अंक में यह प्रकाशित रहता है कि अस्वीकृत रचनाएं एक मास के अंदर लौटा दी जाती हैं । लेकिन आज जब वह रचना 'अभिवादन और खेद सहित' लौटी तो मुझे क्रोध ही आ गया । उसमें थोड़ा-बहुत रद्दो-बदल करके मैं वही रचना पुनः आपके पास भेज रहा हूं । मैंने शीर्षक भी बदल दिया है । अब शीर्षक है 'गांव : जग्गू की आत्मा' । आप अब इसे अवश्य पसंद करेंगे, विश्वास है ।

भवदीय

जगदीश नंदन सहाय

(छह)

संपादक

'कादम्बिनी'

संपादक महोदय,

आपकी कहानियों की पसंद का मैं सदा प्रशंसक रहा हूं । परंतु इस बार भी 'खेद' वाली चिट मिलने से मुझे अपनी इस राय में संदेह होने लगा है । जग्गू की प्रेरणाप्रद जीवनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सारी कहानियां आप लौटाते रहे हैं । मेरे इतने श्रम तथा समय में लिखी रचनाओं के साथ आपका एक छपी-छपाई चिट लगाकर लौटा देना अन्याय ही है ।

मैं वास्तव में जो कुछ कहना चाहता हूं, उस पर संयम रखकर मैं अपनी नवीनतम कहानी 'बेचारा जग्गू' इस पत्र के साथ भेज रहा हूं । इसमे जग्गू के जीवन की सारी कुंठाएं उसके सामने चलचित्र की भांति घूम जाती हैं । आज का युग कुंठाओं का युग है और आपके पत्र में कई कहानियों के पात्र केवल एकाध कुंठा से ही घिरे लगते हैं जबकि मेरा नायक जग्गू उन सभी कुंठाओं के घेरे में कैद है । एक ही कहानी में इतनी सारी कुंठाओं का वर्णन हिंदी की अब तक की कहानी के इतिहास में आपको खोजे नहीं मिलेगा । मैं चाहती हूं कि आपको यह एक अवसर और दूं जिससे आपके पत्र पर यह जो दोषारोपण किया जा रहा है कि यह केवल कुछ अपने मित्र लेखकों की रचनाएं हैं, उससे आप दोषमुक्त हो सकें । सुना है आप लड़कियों की रचना सुधारकर भी छापते हैं, मैं लड़की हूं, आयु बीस बरस से अधिक नहीं है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप पूरा लाभ उठाएंगे ।

सादर आपकी

ज. न. स. 'कुंठित'

संपादक
'कादम्बिनी'

(सात)

संपादक महोदय,

आज मेरी अंतिम कहानी भी आपने लौटा दी । आप शहरी सभ्यता में जन्मे, पले और बड़े हुए, इसलिए गांव के एक पात्र जग्गू की विवशताएं, अभिलाषाएं, कामनाएं, गम, सुख, दुख, कुंठाएं आपके हृदय को छू नहीं पातीं ।

खैर कारण कुछ भी हो, भविष्य में भी मैं अपनी रचनाएं आपके पास विचारार्थ भेजता रहूंगा । आप लगातार वापस करते रहें तब भी । हां, आपकी पत्रिका नियमित लेना मैं जरूर बंद कर रहा हूं ।

भवदीय

जगदीश नंदन सहाय

एक अंतिम पत्र और

सर्कुलेशन मैनेजर
'कादम्बिनी'

आपके संपादक के साथ कुछ नवीनतम सर्वोत्तम कहानियों की शैली तथा उनके मूल्यों में मतभेद हो गया है ।

इस कारण मेरा नाम अपने ग्राहकों की सूची से काट दें ।

भवदीय

ज. न. सहाय

—पो. बो.-६६, एसलेहॉल, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान बची तो लाखों पाये

● हरीश नवल

उस दिन अचानक राधेलाल कॉफी हाऊस में मिल गये । मैं कॉफी हाऊस जाने का आदी नहीं हूं । जाने क्यों मुझे शादी और कॉफी हाऊस में एक समानता यह लगती है कि जो इन्हें अपनाता है, वह भी पछताता है, और जो नहीं अपना पाता, वह भी पछताता ही है । एक समय था जब बुद्धिजीवी वही माना जाता था, जो कॉफी हाऊस में काफी जाता हो । तब बुद्धिजीवी और कॉफी-जीवी एक ही माने जाते थे ।

पर अनेक साहित्यिक मित्र हर शनिवार की दोपहर से रात्रि तक कॉफी हाऊस की शरण में होते हैं । उनके प्रति मेरा ईर्ष्या भाव सहज ही था । मुझमें व मेरी पत्नी में समझौता हुआ था कि जहां जाएंगे साथ जाएंगे, मैंने शादी के बाद एक प्रस्ताव रखा कि कॉफी हाऊस जाया करेंगे । सो एक शनिवार मैं पत्नी के साथ वहां चला गया । मित्रों ने स्वागत भी दिखाया और बिल भी भरा, लेकिन मेरे यह घोषित करने पर कि हम दोनों प्रति शनिवार आएंगे, मैं सांप द्वारा उन्हें सूंघा जाना भांप नहीं पाया । रविवार को ही तीन मित्रों के संदेश आ गये कि 'कॉफी ह में भाभी को क्यों तकलीफ देते हो, हमारी साहित्यिक बातों से वे ऊब जाएंगी या कि औपचारिकताओं में डूब जाएंगे, अकेले आओगे तो सार्थक बात होंगी और यदि के साथ कॉफी हाऊस का शौक ही है तो कहीं और बैठना आरंभ कर देंगे ।'

लिहाजा मेरा कॉफी हाऊस में नियमि का स्वप्न, स्वप्न ही रह गया । अलबत्ता प्रति शनिवार 'सेल' में ले जाना मेरी आद गयी । मेरे किसी मित्र को उन दिनों यदि मिलना होता था तो वे अखबार में 'सेल' विज्ञापन देख मुझसे वहीं मेल कर लिया थे ।

...पर उस दिन जो मैं मौका पाकर क हाऊस में आया तो मैंने बताया था न कि अचानक राधेलाल मिल गये । गले से हुए बोले, 'अरे चिमन भाई, आज हमारे में कैसे आ टपके ? बहुत खुश लग रहे भाभी ने छोड़ा कैसे ?' और यह कहते वह ठहाका लगाने लगा, उसका ठहाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोस्तो मैं खुदा को हाजिर नाजिर मानकर सच कहता हूं कि मुझे कोई गम नहीं है, पुनः किराये के मकान में रहता हूं, किसी भी संस्था की सदस्यता प्राप्त करने का स्वप्न नहीं देखता । मेरी पत्नी कहती है कि नये घर में सांस तो ठीक-सी चलती है वहां तो जान पर बन आयी थी ।

अट्टहास से कम नहीं होता ।

राधेलाल पुराने मित्र हैं— लंगोटिया कहना भी अपर्याप्त रहेगा । बातें होने लगीं, बातों-बातों में टॉपिक 'मकान-समस्या' हो गया । मेरी किराये के मकान की दर्दनाक कथा सुनकर उन्होंने दर्दनाशक दवा छिड़कते हुए कहा, 'तुम लाखों रुपये अब तक किराये के रूप में डुबो चुके हो, क्यों नहीं किसी आवासीय संस्था के सदस्य बनकर अपने फ़्लैट में रहते ?' मैंने उन्हें अपनी अदूरदर्शिता, आलस्य, नासमझी आदि के विषय में सविस्तार बताते हुए कहा, "सब मौके निकल गये, अब तो शहर में किसी भी नयी सहकारी आवासीय संस्था की सदस्यता खुली हुई नहीं है, यदि किसी संस्था में कोई सदस्य सदस्यता छोड़ गया हो— तभी मिल सकती है, वह भी अत्यधिक शल्क चुकाने पर, इसलिए किराये से ही संतोष करना पड़ रहा है ।' मैंने राधेलाल को यह भी निवेदन किया कि वह भी ध्यान रखें, क्योंकि मैंने अपने सभी शुभेच्छु मित्रों को कह रखा है ।

पर सभी शुभेच्छु मित्र राधेलाल तो नहीं होते । उनके-जैसा होना दुष्कर है । घोर कलयुग में भी वे सतयुग की धरोहर लगते हैं । वे जोर-शोर से मेरे लिए पुण्य पर उतारू हो गये ।

तब मैंने कॉफी हाऊस का महत्त्व परख लिया था, जो उस तीर्थ-सा लगा था जहां अनेक संत मिल जाते हैं । राधेलालजी ने तीर्थयात्रा के ठीक पंद्रहवें दिन ही मुझे सूचित कर दिया कि एक संस्था में सदस्यता मिल सकती है । एक सौ आठ फ़्लैटों की संस्था है, संस्था केवल अध्यापकों के लिए है, चाहे वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल के हों या कॉलेज के ।

मैं बताये गये पते तथा दिये गये वचन के अनुसार पत्नी को लेकर आगामी रविवार को ही संस्था में पहुंच गया । हम दोनों उत्कंठा से चकवा-चकवी हो रहे थे और स्वाति नक्षत्र के उदित होने की अभिलाषा में थे । संस्था के फ़्लैट आकर्षित कर रहे थे ।

अध्यापकों की इस संस्था की सचिव एक भद्र महिला श्रीमती देवकन्या थीं जिनकी विशाल लौह काया को देख मेरे चौक्के छूट गये थे । मैं उनके नाम से प्रभावित हो किसी अत्यंत आकर्षक महिला के दर्शन की उम्मीद कर रहा था जिस पर पानी फिर गया था । मेरी पत्नी उनसे मिलकर हर्षित हुई । मेरी पत्नी की सौंदर्य चेतना शोध का विषय है । जो मुझे सुंदर लगता है, वह उसे असुंदर । वह जिसको असुंदर बताती है— मैं जान जाता हूं कि निस्संदेह सुंदर ही होगा । आप समझ ही गये होंगे कि उसकी यह चेतना केवल स्त्रियों के संदर्भ में ही है ।

श्रीमती देवकन्या ने बताया, 'चिमनलालजी को सदस्यता मिल सकती है । मुझे भी राधेलालजी ने सब बतला दिया था, पर हमारी एक शर्त है ।'

'जी कैसी ?' मैंने आशंकित स्वर में पूछा ।

'शर्त बहुत छोटी-सी है जिसके पूर्ण होते ही आपके व्यक्तित्व के विकसित होने की संभावनाएं बढ़ जाएंगी— आपको संस्था के अध्यक्ष पद का निर्वाचन लड़ना होगा ।'

मैंने संकुचित होते हुए कहा, 'मैं इतना योग्य कहां ? यहां तो विश्वविद्यालय के प्राध्यापक रहते हैं । वे सब अत्यंत विद्वान हैं । वे ही बनें तो ठीक है । स्कूल में पढ़ानेवाला अर्थशास्त्र का अदना-सा अध्यापक मैं कैसे यह पद वहन कर सकता हूं ?'

देवकन्या के होंठ खुलने से ही पूर्व मेरी आंखें के खुल गये, 'नहीं जी, यह सब कर लेंगे— वहां स्कूल की एसोसिएशन के भी प्रेजिडेंट हैं— ये जरूर इलेक्शन लड़ेंगे । हारें या जीतें— हमें मंजूर है ।' यह कहकर वह मेरी पसलियों में अपनी कोहनी दबाने लगी ।

देवकन्याजी ने बताया कि जो फ़्लैट खाली हुआ है, वह ग्राउंड फ़्लोर में है तथा उसमें बगीचा भी है । यह सुन चकवा-चकवी उड़ान भरने लगे— इतना सम्मान और सौभाग्य कि अध्यक्ष पद भी प्राप्त हो सकता है तथा बगीचा भी । हमारे मन के बगीचे की समस्त कलियां खिल गयीं ।

बहरहाल औपचारिकताएं आदि पूरी होने कुछ दिन लगे और मैं तदर्थ सदस्य बना लिया गया, सामान शिफ्ट किया और ज़िंदगी की बहार के मजे लूटने लगे ।

चुनाव का दिन आया । अध्यक्ष पद के लिए मात्र एक ही प्रत्याशी था— मैं अर्थात् चिमनलाल बंसल । मेरा कितना प्रभाव कि निर्विरोध चुन लिया गया । मैं बहुत प्रसन्न हुआ और अपने भाग्य पर फूल उठा । मुझे ऐसा लगा मानो विश्व बैंक ने बिना आवेदन के ही भारत को ऋण दे दिया हो ।

मुझे सपने में भी यह विचार नहीं आया कि इस ऋण के बदले भारत को क्या-क्या कैसे-कैसे विश्व बैंक को चुकाना होगा । अगले ही दिन मेरे तत्कालीन पड़ोसी श्री धीर मेरे घर आये और अपने ब्लॉक की ग्यारह समस्याओं की सूची मुझे पकड़ा गये और जो कुछ कहकर गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका अर्थ यही निकलता था कि यदि बारह दिन तक समस्याएं न सुलझीं तो उन-सा बुरा कोई न होगा । मैंने पूछा, 'बारह दिन क्यों ?' वह बोले, 'एक दिन समस्याएं समझने के लिए दिया है ।'

ठीक तेरहवें दिन वह मेरे घर में आये कि मुझे लगा मेरी तेरहवीं है । उनकी सूची की समस्याओं में केवल तीन ही सुलझ पायी थीं । वह धीर साहब मेरे पड़ोसी आते ही मुझ पर ऐसे चढ़े जैसे इराक पर अमरीका । वह धमकी भी देकर या कि यदि अध्यक्ष ठीक काम नहीं करेगा तो वह बोरिया-बिस्तर उठवा देंगे । बोरिया की चिंता तो मुझे नहीं थी पर बिस्तरा नया ही बनवाया था ।

खैर साहब यह तो शुरुआत थी अध्यक्षता की । कुछ ही दिनों में बेमौसम कई गुल खिले । न दिन को चैन था न रात को आराम । उसी दिन की सुन लीजिए । दोपहर को सिर दर्द की दवा खाकर लेटा ही था कि पचपन नंबर वाले सैनीजी आ धमके । घंटी बजायी, पत्नी ने बताया कि मैं आराम कर रहा हूं अतः शाम को आएं । वह तो मानो ललकारने लगे, 'अरे अध्यक्ष होकर आराम कर रहे हैं— संस्था का काम कौन करेगा ? वह जो पानी की मशीन चल रही है, उसे कौन बंद करेगा ?'

अध्यक्ष को अध्यापक होते हुए भी आराम करने का हक नहीं । दिन में तीन बार टंकियों पर पानी चढ़ाने के लिए मशीन खोलने-बंद करने की जिम्मेदारी भी अध्यक्ष पर ही थी । पत्नी ने निवेदन कर दिया, 'उनके सिर में दर्द है, कृपया आप ही मशीन रोक दीजिए, बटन ही तो दबाना है ।'

सैनीजी तो परशुराम हो गये । उनका धनुष जैसे कि छू लिया गया हो, 'मेरी ड्यूटी नहीं है, चार साल से अध्यक्ष ही खोल-बंद कर रहा है, मेरी ड्यूटी होती या मैं अध्यक्ष होता तो जरूर कर्त्तव्य निभाता । दूसरे के अधिकार क्षेत्र में मैं घुसना नहीं चाहता । मेरा क्या है— मत बंद कीजिए मशीन, जल जाएगी, फुंक जाएगी— अध्यक्ष का क्या है— उसकी जेब से तो कुछ नहीं जाएगा, पैसा तो सबका है— नयी मशीन लाएंगे तो पैसा भी तो खाएंगे, इसीलिए तो सो रहे हैं ।'

मैंने सिरदर्द से तड़पते हुए भी स्वयं मशीन बंद करने की जहमत उठायी । अजब स्थिति थी, यदि संस्था का काम करो तो सदस्य कहते थे— पैसा खाता है । काम न करो तो सुनने को मिलता, 'काम नहीं करता है, बेकार का अध्यक्ष बना हुआ है ।'

एक संध्या बासठ नंबर वाले कपूर साहब आये और बोले, 'तेहत्तर नं. वालों की जीप से नाली का पत्थर टूट गया है ।' मैंने वचन दिया, 'आज ही लगवा दूंगा', कपूर साहब ने कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वो तो आप लगाएंगे ही पर उसकी वजह से मेरे पप्पू की साइकिल टूट गयी है, उसे कौन ठीक कराएगा ?' मैंने उत्तर दिया, 'तेहत्तर नं. वालों से पूछता हूं, दो-चार दिन में सब ठीक हो जाएगा ।' वह बोले, 'तब तक मेरा पप्पू किसकी सवारी करेगा ? ऐसा करें, कि अपनी पिंकी की साइकिल तब तक मेरे पप्पू को दे दें, जब तक उसकी ठीक न हो जाए', वे मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना पिंकी की साइकिल उठाकर चलते बने ।

मैं तेहत्तर नंबरवालों के पास जाने ही वाला था कि वह मुझ तक पहुंच गये । इसके पहले कि मैं कुछ बोलता, वह बोल पड़े, 'कैसे अध्यक्ष हैं आप ? कैसे हैं आपकी नाली के पत्थर जो मेरी जीप से लगकर जीप को क्षतिग्रस्त कर गये ? आप संस्था की ओर से मेरी जीप ठीक करवा दें वरना मैं संस्था पर मुकदमा ठोक दूंगा ।' यह कहकर उन्होंने अपने भुजदंड भी ठोके । उनके जाने के बाद मैंने उनके विषय में जानकारी प्राप्त की तो ज्ञात हुआ कि उनके बड़े भाई शहर के नामी वकील हैं । दो दावे उन्होंने पहले भी संस्था पर किये हैं जिनकी तारीखों पर संस्था के अध्यक्ष को ही जाना पड़ता है । पहले दावे के अनुसार संस्था का नक्शा इतना खराब है कि उसकी वजह से उनकी बहुमूल्य मेज बैठक में लाने से पूर्व दीवार से टकराकर टूट गयी । दूसरे दावे के अनुसार संस्था का पानी का टैंक खराब है जिससे पानी दूषित हो जाता है तथा जिसके प्रयोग से उनकी पत्नी का पेट बिगड़ा रहता है । संस्था का बीस हजार रुपया अभी तक मुकदमे की भेंट चढ़ चुका है ।

...और उस दिन ? उस दिन तो हद ही हो गयी, जब संस्था की सचिव श्रीमती देवकन्या ने मेरे नाम चौरासी हजार पांच सौ छियासी रुपये तथा साठ पैसे का बिल भेजा और तुरंत भुगतान के लिए स्मरण-पत्र । यह राशि बिजली विभाग को संस्था की ओर चुकानी थी जो संस्था की स्ट्रीट लाइटों का बिल मय जुर्माना था । यह बिल पिछले पांच वर्षों का था और संस्था के अध्यक्ष के नाम था ।

मैं नर्वस महसूस करने लगा था । मुझे संस्था का फ्लैट जेल लगने लगा था जहां मुझे बंदी बनाने की साजिशों का बाहुल्य था । मैं कुछ कह पाता कि श्रीमती देवकन्या ने सूचित किया, 'पिछले अध्यक्ष महोदय बिना यह बिल चुकाये अमरीका भाग गये थे और वहीं से उन्होंने संस्था की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया था तथा फ्लैट का कब्जा भी संस्था को ग्रहण करने के लिए कहा था । उनकी सदस्यता समाप्त होने से ही तो आपको यह फ्लैट मिला, अध्यक्षता भी मिली तथा यह बिल भी, वरना यहां तो अध्यक्ष बनने के लिए कोई भी तैयार नहीं था ।...'

मेरी स्थिति उस त्रिशंकु-सी हो गयी थी जो न पृथ्वी पर था और न ही स्वर्ग पर । मेरी बुद्धि में जब कुछ न आया तो मैंने पूर्ण आस्था से उन्हें को परमेश्वर मानते हुए उसकी सलाह मांगी । उनकी बहुमूल्य सलाह के मुताबिक चार दिन बाद मैंने न केवल संस्था की सदस्यता और फ्लैट ही छोड़ा अपितु शहर ही छोड़ दिया ।

आमीन !

—६५, साक्षरा अपार्टमेंट्स, ए-३, पश्चिम विहार
नयी दिल्ली-११०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि विलास

१. एक दलाल को किसी माल के बेचने पर ४ प्रतिशत के हिसाब से ४०० रु. कमीशन मिलता है। उसने कुल माल कितने रुपये का बेचा ?

२. क. तंबाकू का प्रचार भारत में किसके राजकाल में हुआ था ?

ख. इसका एक नाम 'सुरती' कैसे पड़ा ?

३. प्राचीन भारत में धातु-शिल्प के विकास और उन्नति के दो उदाहरण दीजिए, जो वर्तमान युग में भी मौजूद हैं ?

४. क. विगत जनवरी में भारत के किस प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण हुआ, जिससे यह देश विश्व में इस तरह की तकनीक की उपलब्धिवाले तीन देशों की श्रेणी में आ गया है ?

ख. इस प्रक्षेपास्त्र की क्या विशेषता है ?

५. भारत की किन यातायात सेवाओं को राष्ट्रपति के अध्यादेश द्वारा पब्लिक लिमिटेड कंपनियों में तब्दील कर दिया गया है ?

६. अमरीका और रूस के बीच विगत जनवरी में मास्को में किस उल्लेखनीय संधि पर हस्ताक्षर हुए थे ?

७. वह किस देश का और कौन-सा अंतरिक्ष-यान था जिसमें दो अंतरिक्ष-यात्री ६ महीने तक अंतरिक्ष में रहने के बाद गत जनवरी में पृथ्वी पर लौटे ?

८. क. इस समय विश्व में सर्वाधिक आबादीवाला एकमात्र शहर कौन-सा है, जिसकी आबादी दो करोड़ है ?

ख. भारत में सर्वाधिक आबादीवाला शहर कौन-सा है ? उसकी आबादी कितनी है ?

९. गणतंत्र-दिवस पर, वीरता के लिए सर्वोच्च सैनिक पुरस्कार किसे प्रदान किया गया ? किस उपलक्ष्य में ?

१०. निम्नलिखित पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता कौन हैं ?—

क. १९९३ का ज्ञानपीठ पुरस्कार, ख. १९९२ और १९९३ के 'साधना सम्मान' पुरस्कार, ग. १९९३ का साहित्य अकादमी पुरस्कार (हिंदी)

११. क. क्रिकेट खिलाड़ी कपिल देव की विश्व में क्या उल्लेखनीय उपलब्धि हुई ?

ख. उनकी अन्य उपलब्धि क्या है ?

१२. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिये और बताइये यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससुराल हो तो मिथिला में हो

● महेश कुमार झा

दामाद बनने का जो सुख मिथिला में मिलता है, वह विश्व में अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है । विवाह की मधुर स्मृतियां जीवनभर इस कदर अपनी गरमाहट का अहसास कराती हैं कि मनुष्य तड़प उठता है ।

यूं तो विवाह सारी दुनिया के लोग करते ही हैं, चाहे जिस विधि से हो लेकिन, मिथिला में दामाद बनने के अनुभव इतने दिलचस्प होते हैं कि एक बार जो मिथिला में विवाह करता है, वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करता है कि जब भी वह इस धरती पर जन्म ले, तो विवाह मिथिला में ही हो । दामाद बनने का जो सुख मिथिला में मिलता है, वह विश्व में अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं । दूल्हे के रूप में प्रथम बार ससुराल पहुंचने से लेकर जिन रोचक दास्तानों का सिलसिला प्रारंभ होता है, वह बरस-दर-बरस चलता रहता है तथा उसकी मधुर स्मृतियां जीवनभर मनुष्य को इस कदर अपनी गरमाहट का अहसास कराती रहती हैं कि मनुष्य तड़प उठता है, काश ! दो-तीन बार और विवाह संभव हो पाता ।

विवाह की प्रथा खासकर ब्राह्मणों में बहुत दिलचस्प है । दूल्हा बनकर लड़कीवाले के दरवाजे तक पहुंचने तक तो सब कुछ वैसा ही होता है जैसा हिंदुस्तान के अन्य इलाकों या धर्मों में होता है । यहां पर प्रमुख अंतर यही है कि मिथिला में आज भी दूल्हा धोती-कुरता ही पहनकर विवाह करने जाता है, चाहे वह कितना ही अमीर या रईस परिवार का क्यों न हो जबकि अन्य इलाकों में या शहरों में सूट-बूट पहनने का फैशन जोरों पर है । आमतौर पर लड़कों को आजकल धोती पहननी आती नहीं, क्योंकि बचपन से पैंट-शर्ट या पाजामा-कुरता पहनने के आदी होते हैं । फिर भी विवाह से पहले धोती पहनने का तरीका सिखना ही पड़ता है क्योंकि, विवाह के समय तो कोई भी धोती पहना देगा, लेकिन बाद में ससुराल में बार-बार कौन धोती पहनाएगा । मिथिला में घोड़ी पर सवार होकर बारात ले जाने का रिवाज नहीं है । यहां दूल्हा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

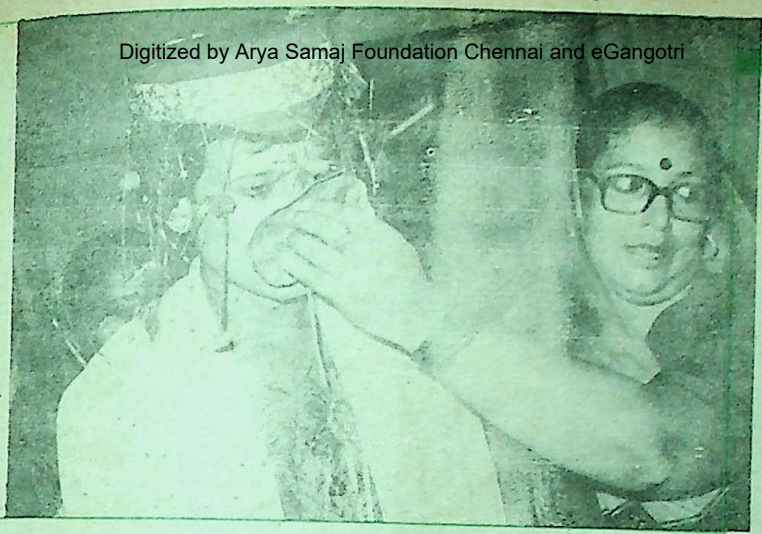

परिछन के वक्त विधकरी पान के पत्ते से दूल्हे की नाक पकड़ती हुई

अपनी हैसियत के अनुसार कार, जीप, टैक्सी, ट्रैक्टर आदि पर सवार होकर जाता है । पुराने जमाने में तो हाथी से भी दूल्हेराजा पहुंचते थे ।

परिछन

लड़कीवाले के दरवाजे पर पहुंचने के थोड़ी देर बाद जब नाश्ता, चाय, पान आदि का कार्यक्रम संपन्न हो जाता है, तो दूल्हे को वहां की महिलाएं अपने कब्जे में ले लेती हैं और सबसे पहले दूल्हे को भरपेट खिला देने की कोशिश की जाती है क्योंकि, इसके बाद रातभर खाने को कुछ भी नहीं दिया जाता । अजनबी महिलाओं-लड़कियों से घिरा दूल्हा उस वक्त कुछ लजाता तो जरूर है, किंतु यह सोचकर कुछ खा लेता है कि इसी पर रातभर तपस्या करनी है । इसके बाद दूल्हे के तमाम ऊपरी वस्त्र उतार देती हैं महिलाएं, सिर्फ धोती को छोड़कर । माघ महीने में खून जमा देनेवाली सरदी क्यों न हो, महिलाओं को दूल्हे पर कोई दया नहीं आती । फिर काजल-टीका लगाकर समूह में गीत गातीं हुई दूल्हे का 'परिछन' करती हैं । 'परिछन' दरवाजा और आंगन के बीचवाली गली में ही संपन्न किया जाता है । वस्तुतः यह 'परिछन' एक प्रकार का परीक्षण ही है, जिसमें दूल्हे के शरीर पर यही देखा जाता है कि शरीर में कोई व्याधि तो नहीं । अगर सीधे किसी दूल्हे के शरीर पर से कपड़े उतरवाकर उसकी शारीरिक जांच की जाती तो निश्चित रूप से दूल्हे के लिए यह अपमानजनक होता । इसी कारण से संभवतः मिथिलावासियों ने इसे विवाह की परंपरा में ही शामिल कर लिया है, ताकि सांप भी मर जाए और लाठी भी बच जाए । इसके साथ ही महिलाएं दूल्हे से उसके खानदान की कई पीढ़ियों (दादा, परदादा...) के नाम पूछती हैं, सटीक जवाब न देने पर खूब चिढ़ाती हैं ।

विधकरी

परिछन के बाद 'विधकरी' दूल्हे की नाक को पान के पत्ते से पकड़कर तथा गले में गमछी (पतला तौलिया) डालकर दूल्हे को आंगन में ले जाती है । 'विधकरी' उस महिला को कहते हैं, जो पूरे विवाह के दौरान दूल्हा और दुल्हन की सहायता करती हैं । वह आमतौर पर दुल्हन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ली या तो बड़ी बहन होती है या भाभी । 'विधकरी' जब दूल्हे को आंगन की ओर लेकर चलती है, तो उस समय भी दूल्हा नंगे बदन ही रहता है, और पीछे से महिलाओं की भीड़ गीत गाते हुए । आंगन में ले जाकर दूल्हे से विवाह-स्थल की तीन परिक्रमा करवायी जाती है । फिर दूल्हे को एक कमरे में ले जाया जाता है, जहां उसकी होनेवाली दुल्हन पहले से बैठी रहती है । दुल्हन की बगल में एक और युवती को ठीक उसी प्रकार की साड़ी व वेश-भूषा में बैठा दिया जाता है । घूंघट से दोनों का चेहरा पूरी तरह ढंका होता है । दूल्हे से यह पहचानने को कहा जाता है कि उसकी होनेवाली दुल्हन कौन-सी है ? वह भी बिना घूंघट हटाये व बिना किसी पूछताछ के । हां, इस वक्त महिलाएं जो गीत गाती हैं, उन गीतों में ये संकेत छिपे होते हैं कि उसकी होनेवाली दुल्हन कौन-सी है । जो उन गीतों को समझ जाता है, वह तो अपनी दुल्हन को पहचान लेता है, किंतु जो नहीं समझ पाता है वह अकसर धोखा खा जाता है । ऐसे में महिलाएं और लड़कियां दूल्हे का मजाक जमकर उड़ाती हैं । यह भी एक प्रकार का परीक्षण ही है, जिसमें दूल्हे की मानसिक क्षमता की जांच की जाती है । इस प्रक्रिया को 'नैना-जोगिन' कहते हैं । यहीं पर अंत में दूल्हे को दुल्हन का चेहरा भी एक नजर दिखा दिया जाता है, ताकि अपनी दुल्हन को देखने की उत्सुकता से धड़कता दिल कुछ हद तक शांत हो सके । और तब दूल्हे को विवाह की वेदी पर ले जाया जाता है, जहां पंडितजी दूल्हा-दुल्हन के इंतजार में बैठे होते हैं ।

विवाह की वेदी भी आंगन के मध्य में बनायी जाती है, जहां ऊपर खुला आसमान होता है । यहां विवाह मंडप-जैसी कोई चीज नहीं बनायी जाती और न ही शहरों की तरह किराये की शानदार कुरसियां दूल्हा-दुल्हन के लगायी जाती हैं । बस विवाह-स्थल को गोबर से लीपकर कुछ हलकी-फुलकी चित्रकारी कर दी जाती है तथा दो-चार ट्यूब लाइट, बल्ब व पैट्रोमैक्स जला दिये जाते हैं । बैठने के लिए कंबल बिछा दिये जाते हैं, जिस पर दूल्हे को नंगे बदन बैठना पड़ता है तथा बगल में घूंघट में सिमटी हुई दुल्हन बैठी रहती है । पंडितजी मंत्र पढ़ना प्रारंभ करते हैं और साथ ही दूल्हा भी मंत्रोच्चारण करता जाता है । अगल-बगल में बैठी महिलाएं गीत गाती रहती हैं । यह प्रक्रिया आमतौर पर सुबह तक चलती रहती है । इस बीच अगर अधिक सरदी हुई, तो दूल्हे के ऊपर ऊनी चादर डाल दी जाती है । अग्नि के चारों ओर दूल्हा अपनी दुल्हन के साथ सिर्फ तीन फेरे लगाता है, जबकि हर जगह सात फेरों का रिवाज है । इस प्रक्रिया के बाद दूल्हे को 'कोहबर' यानी दूल्हे के ठहरने के लिए विशेष ढंग से सजाये गये कमरे में ले जाया जाता है तथा दुल्हन को अलग कर दिया जाता है ।

सालियों-सरहजों के बीच

कोहबर में सालियों-सरहजों के बीच घिरा दूल्हा यह भी भूल जाता है कि वह रातभर का जगा हुआ है और उसे आराम की सख्त जरूरत है । सालियों-सरहजों की बातें इतनी दिलचस्प होती हैं कि दूल्हा उन बातों में उलझकर सब-कुछ भूल जाता है । लेकिन सालियां-सरहजें सिर्फ बातें ही नहीं बनातीं, बल्कि दूल्हे की हर सुविधा का खयाल रखती

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

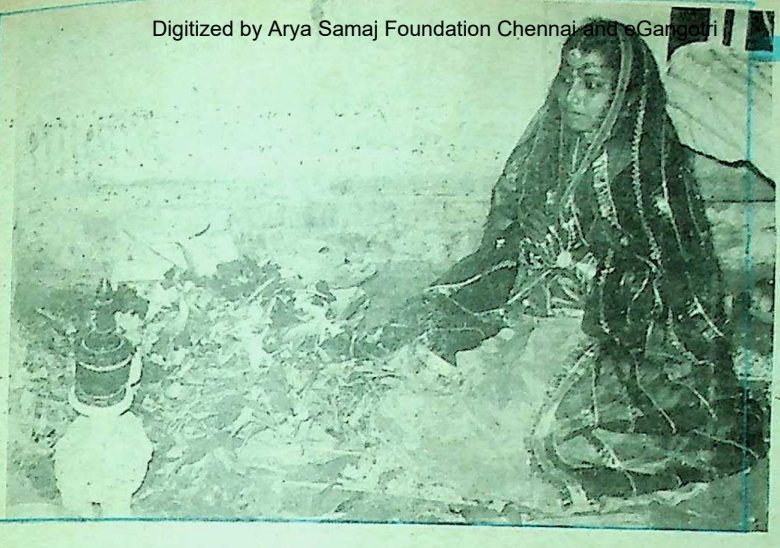

पूजन करती हुई दुल्हन

हैं। गरमी के मौसम में सालियां दूल्हे पर पंखा झेलने में स्वयं को गौरवान्वित महसूस करती हैं। भोजन हेतु तरह-तरह की चीजें प्रस्तुत की जाती हैं, लेकिन बिना नमक के क्योंकि, चार दिनों के बाद ही दूल्हे को भोजन में नमक दिये जाने का रिवाज है। पहली रात के विवाह को अधूरा विवाह ही माना जाता है। 'चतुर्थी' के दिन पंडितजी दूल्हा-दुल्हन के विवाह को दुबारा संपन्न कराते हैं और तब विवाह को 'पूर्ण' माना जाता है। और 'चतुर्थी' संपन्न होने के बाद ही नवयुगल को भोजन में नमक दिया जाता है। दूल्हा-दुल्हन के साथ 'विधकरी' को भी चार दिनों तक बिना नमक के भोजन करना पड़ता है। हालांकि, मिथिला के ९५ प्रतिशत से भी अधिक मर्द स्वभाव से ही मीठा खाना पसंद करते हैं, किंतु जब लगातार चार दिनों तक सिर्फ मीठा ही खाने को मिलता है तो अच्छे-अच्छे के पसीने छूट जाते हैं।

विवाह-रात्रि से चतुर्थी की रात्रि तक ऐसा लगता है मानो दूल्हे के धैर्य की परीक्षा ली जा रही हो। एक तो दिनभर सिर्फ रसगुल्ले, मलाई, सूखे फल आदि खाने से मन ऊबा हुआ रहता है और रात में दुल्हन अलग। अपनी तमाम उत्सुकताओं को, शांत करने की क्षमता के बावजूद, दबाने की कोशिश करते सोने की वेदना का अनुभव सचमुच बड़ा दिलचस्प होता है ऐसे समय में, हालांकि दूल्हा-दुल्हन होते तो एक ही कमरे, यानी कोहबर में लेकिन उनके साथ 'विधकरी' भी सोयी रहती है। कभी-कभी तो 'विधकरी' के साथ दो-तीन अन्य महिलाएं भी सो जाती हैं। एक अजीब-सी कशमकश की स्थिति होती है यह दूल्हे के लिए। विवाह रात्रि के तीसरे दिन दूल्हे के सारे संबंधी बारात सहित वापस चले जाते हैं। अब दूल्हा अजनबियों के बीच बुरी तरह से घिर जाता है।

दशरथ की प्रतीक्षा में

कहते हैं कि चार दिनों में विवाह संपन्न होने की परंपरा की शुरूआत अयोध्या नरेश राम और मिथिला की बेटी सीता के विवाह से ही हुई। स्वयंवर में शिव के धनुष को तोड़ देने के बाद राम और सीता की शादी उसी रात हो गयी थी, किंतु यह खबर पाकर राजा दशरथ जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथिला आये, तो उनकी पुत्र विवाह को देखने की भावनाओं की संतुष्टि की खातिर राजा जनक ने फिर से राम और सीता के विवाह के मुख्य अंशों को राजा दशरथ की आंखों के सामने दुहरा दिया । तब तो राजा दशरथ इतने मुग्ध हुए कि बाकी पुत्रों लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का विवाह भी राम की सालियों से करवा दिया । उस समय से ही विवाह को पूर्ण मान्यता चार दिनों के बाद ही दी जाने लगी है । खैर, इस परंपरा की शुरूआत के कारण जो भी हों किंतु इस परंपरा के ये चार दिन जीवन में अविस्मरणीय बनकर रह जाते हैं ।

विवाह का 'फाइनल टच'

चतुर्थी के दिन पुनर्विवाह के लिए नवयुगल को सूर्योदय के पहले ही जगा दिया जाता है और विवाह पूर्व ही इसी उद्देश्य से रखे गये पानी से नहलाया जाता है । इस वक्त नवयुगल को हल के अगले हिस्से पर (अगले हिस्से को जमीन पर रख दिया जाता है) पर बैठाया जाता है, यानी अब दोनों को समान रूप से बोझ ढोते हुए जीवन का हल चलाना है । जरा कल्पना कीजिए कि माघ के महीने में चार दिनों पूर्व रखे पानी से नहानेवाले का क्या हाल होता होगा । फिर भी दूल्हा बड़े प्रेम से महिलाओं द्वारा गाये जा रहे मधुर गीतों के बीच इन तमाम कठिनाइयों को हंसकर झेलता है । महल्लेभर की औरतें फिर जमा हो जाती हैं तथा विवाह के मंगल गीतों के बीच पंडितजी फिर मंत्रोच्चारण व हवन आदि से 'फाइनल टच' देने में मशगूल हो जाते हैं । करीब चार घंटे इस कार्य में दुबारा लग जाते हैं । विवाह पूर्ण होने के बाद दूल्हा-दुल्हन को अपने कुलदेवता या ग्रामदेवता के साथ-साथ उपस्थित तमाम वरिष्ठ संबंधियों को पांव छूकर आशीर्वाद लेना होता है । सारे संबंधी आशीर्वाद के साथ-साथ नकद राशि तथा आभूषण देते हैं ।

चतुर्थी की रात ही सुहागरात के रूप में जानी जाती है, जिसका भोजन भी बेमिसाल होता है। तरह-तरह के नमकीन व्यंजन विशेष रूप से तैयार किये जाते हैं । भोजन के वक्त तमाम साले भी साथ ही बैठ जाते हैं और एक साला थाली में साथ खाने को बैठ जाता है । फर्श पर पड़े श्रृंगारयुक्त पिरही (गांवों में लकड़ी से बनी सबसे कम ऊंची बैठने की चीज) पर ही बैठकर भोजन करना पड़ता है । भोज्य सामग्री देखते ही दूल्हा 'कंफ्यूजन' (भूल-भुलैया का) का शिकार हो जाता है । कम से कम अठारह तरह की तो सब्जियां ही परोसी जाती हैं । एक से बढ़कर एक स्वादिष्ट व मजेदार । इसके अलावा मांस, मिठाइयों व दूध के व्यंजन अलग से, यानी थाली के चारों ओर कटोरियों की कई पंक्तियां नजर आती हैं । प्रत्येक 'आइटम' को चखते-चखते ही पेट भर जाता है । भोजन कम से कम दो घंटे में समाप्त होता है तथा दूल्हा मजाक और मीठी गालियों को झेलते-झेलते खुद भी सराबोर हो जाता है । भोजन के वक्त कमरे के बाहर महिलाएं गीतों में गाली दे-देकर दूल्हे को चिढ़ाती हैं और दूल्हा मंद-मंद मुसकराता रहता है । कमरे के अंदर साले मजाक करते रहते हैं । एक अविस्मरणीय भोजन बनकर रह जाता है यह ।

विवाह के बाद कम से कम चौदह-पंद्रह दिन ससुराल में दूल्हे का रहना अनिवार्य-सा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है । विदाई के वक्त भी ढेर-सारे रिवाजों को निभाते हुए आखिरी बार गली से बाहर होते दूल्हे को दुल्हन के चेहरे की एक झलक दिखा दी जाती है, ताकि जाने के बाद अपनी जिंदगी के रंजोगम में उलझकर अपनी प्यारी-सी दुल्हन को भूल न जाए । विदाई के वक्त दूल्हा का अकेले लौटना भी एक पुरानी परंपरा है, जिसके तहत विवाह के एक, ढाई जा पांच साल के बाद ही द्विरागमन (विवाह की आखिरी प्रक्रिया) होता है, और तब दुल्हन ससुराल आती है ।

विवाह के बाद चौदह-पंद्रह दिनों की अवधि दूल्हे के लिए जीवन के सबसे अधिक खुशीवाले दिन होते हैं । पृथ्वी पर अगर कहीं स्वर्ग है, तो मिथिला में सिर्फ इन्हीं दिनों में । दिनभर स्वादिष्ट भोजनों को चखते-चखते ही बुरी तरह संतुष्ट रहता है । दूल्हा और उस पर साले-सालियों का जबरदस्त आग्रह ! गप्प देते-देते जी उब जाए तो ताश, शतरंज आदि इनडोर खेल खेलने का प्रबंध । नये दामाद को गांव में अधिक घूमने-फिरने की इजाजत नहीं दी जाती है कि कहीं कोई नजर न लगा दे । हमेशा संगीतमय माहौल रहता है । एक तो रिवाजों का जाल और उस पर रिवाजों के प्रत्येक कदम के लिए तरह-तरह के प्यारे-प्यारे लोकगीत । उन गीतों की गहराई में उतरकर ही पता चलता है कि लोकगीतों में कितनी मिठास है ।

दुबारा ससुराल में

विवाह के बाद दुबारा ससुराल जाने का अवसर दूल्हे को मधुश्रावणी में ही मिलता है, जो सावन के महीने में नवविवाहित महिलाओं के लिए एक जोरदार उत्सव के समान होता है । दूसरी बार भी ससुराल में प्रवेश करते वक्त 'परिछन' से गुजरना पड़ता है, लेकिन यह प्रथम बार की तरह का परीक्षण नहीं, बल्कि स्वागत की तरह होता है । मधु श्रावणी भी मधुमास यानी हनीमून ही है, फर्क सिर्फ इतना ही है कि हनीमून के लिए नवयुगल बाहर चले जाते हैं और मिथिला में घर पर ही रहते हैं । मधुश्रावणी के बाद ही दूल्हा कभी भी ससुराल आने-जाने के लिए स्वतंत्र हो जाता है ।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है दूल्हे को ससुराल में सम्मान । यह सम्मान अस्थायी नहीं बल्कि स्थायी होता है, जो जीवन-पर्यंत मिलता रहता है । दामाद के मुंह से जो बात निकल गयी, वह आखिरी बात होती है जिससे कोई काट नहीं सकता है । दामाद को सबसे अधिक स्नेह सास की ओर से ही मिलता है और साली सबसे अधिक जीजाजी का ध्यान रखती है । कभी-कभी तो किसी परिवार में अपनी बेटी की शादी के लिए उस परिवार के दामाद के पीछे लोग महीनों लगे रहते हैं कि वो कम से कम इस रिश्ते के लिए हां कर दे तो फिर सब लोग तैयार हो ही जाएंगे । सास-ससुर की मृत्यु के बाद भी साले-सरहजें परिवार में दामाद की गरिमा को बनाये रखने का पूरा प्रयत्न करते हैं । आमतौर पर दामाद को परिवार के सिर का मुकुट समझा जाता है, जिसकी एक अलग ही इज्जत होती है, एक अलग ही शान होती है । विवाह के बीस-पच्चीस वर्षों के बाद भी मिथिला में दामाद के आवभगत में गरमाहट एवं उत्साह में कमी नहीं होती है ।

— द्वारा श्री सहजानंद स्टेट बैंक ऑव पटियाला,
हथुवा मार्केट के सामने, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गलालेंग की कहानी : जोगियों के मुंह पर

● राजकुमारी यादव

राजस्थान के दक्षिण में स्थित आदिवासी जनसंख्या बहुल क्षेत्र को वागड़ प्रदेश के नाम से जाना जाता है । इस वागड़ प्रदेश को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो यहां के जनजीवन में कई लोक गाथाएं प्रचलित हैं । ये सत्य लोक गाथाएं यहां के लोक जीवन में ऐसी रची-बसी हैं कि उनको भुलाये नहीं भुलाया जा सकता ।

वागड़ प्रदेश के लोक मानस में अजर-अमर लोक गाथाओं में से ही एक है— गलालेंग की वीर गाथा । यह ऐतिहासिक वीर रस का काव्य राजस्थान के डूंगरपुर, बांसवाड़ा और उदयपुर जिलों के क्षेत्र में फैले वागड़ प्रदेश में रावल जोगियों द्वारा परंपरागत मौखिक रूप से गाया जाता चला आ रहा है । यहां गलालेंग के ऐतिहासिक लोक काव्य को बड़े चाव के साथ सुना जाता है । रावल जोगियों तक ही सीमित इस वीरतापूर्ण, श्रृंगारिक और करुण रस काव्य को जब जोगी गाते हुए निकलते हैं अथवा जहां गाते हैं, तो वागड़वासी भावविभोर हो जाते हैं ।

गलालेंग की वीर गाथा का आरंभ यों होता है—

लाल सेंग ना सवा गलालेंग तारु—
धरती जग में मोगू नामे जियु
पुरबिया पूरब गढ़ ना राजा तमे
आंसलगढ़ ना राणाए जीयु...

वागड़ प्रदेश में गलालेंग अर्थात गलालसिंह नाम का योद्धा वीर पुरुष के रूप में वि.सं. १७३० से १७५१ तक बहुचर्चित रहा है । गलालेंग पूर्बिया राजपूत आंसलगढ़ के राजा लालसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था । उस समय राजस्थान के मेवाड़ भू-भाग पर महाराणा जयसिंह तथा डूंगरपुर राज्य में महारावल रामसिंह का शासन था । आपसी बंटवारे को लेकर लालसिंह के कुटुंब में कुहराम मचा । लालसिंह का स्वर्गवास हो जाने के बाद गलालेंग अपनी मां से आज्ञा प्राप्त कर अपने अनुजों गुमानसिंह व चचेरे भाई बखतसिंह सहित कुछ सेवकों के साथ पूरब देश से चित्तौड़गढ़ पहुंचा । महाराणा जयसिंह का इस समय मुकाम उदयपुर में था, सो गलालेंग चित्तौड़गढ़ से उदयपुर पहुंचा । तेज व रौब देखकर महाराणा ने गलालसिंह को अपने अधीन रखकर खैराड़ का क्षेत्र उसकी जिम्मे

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सौंप दिया ।

खैराड़ के इलाके में पानी की बहुत कमी थी । गलालसिंह ने महाराणा से इस बात की चर्चा की, तो उन्होंने ढ़ेबर झील (जयसमंद) के निर्माण की जिम्मेदारी गलालसिंह को सौंप दी । गलालेंग ने मालवा के ओड़ों तथा वागड़ के सलावटों की सहायता से जयसमंद झील का निर्माण कार्य पूरा करा दिया । अब झील के निर्माण का थोड़ा-सा काम बाकी रह गया था । इसी बीच ओड़ों ने गलालेंग की आज्ञा का उल्लंघन किया तो उसने कुछ मजदूरों को मौत के घाट उतार दिया । इसकी शिकायत ओड़ों ने महाराणा जयसिंह से की । महाराणा ने गलालसिंह से खैराड़ का पट्टा छीन लिया और उसको मेवाड़ की सरहद छोड़कर चले जाने का हुक्म दे दिया ।

गाथा वीरता की

महाराणा के इस अप्रत्याशित निर्णय को सुन गलालेंग *किंकर्त्तव्यविमूढ़* हो गया, परंतु कुछ सोचकर वह डूंगरपुर जाने का निश्चय कर चल पड़ा । वह जयसमंद से सलूंबर, जैलाना होते हुए डूंगरपुर रियासत की सीमा सोम नदी पर पहुंचा । इसके बाद गलालेंग व उसके साथियों ने आसपुर की धोली बाव पर पड़ाव डाला । यहां से वह डूंगरपुर की ओर बढ़ा । गलालेंग को विश्वास था कि उसके सगे जीजा डूंगरपुर के महारावल रामसिंह उसको गले लगा लेंगे । आशा के अनुरूप महारावल ने गलालेंग का डूंगरपुर की गैप सागर की पाल पर जोरदार स्वागत किया । महारावल गलालेंग की वीरता व पराक्रम से परिचित थे, इसलिए उन्होंने गलालसिंह को बड़ा पचलासा की जागीर एवं गलियाकोट क्षेत्र की सुरक्षा का दायित्व सौंप दिया ।

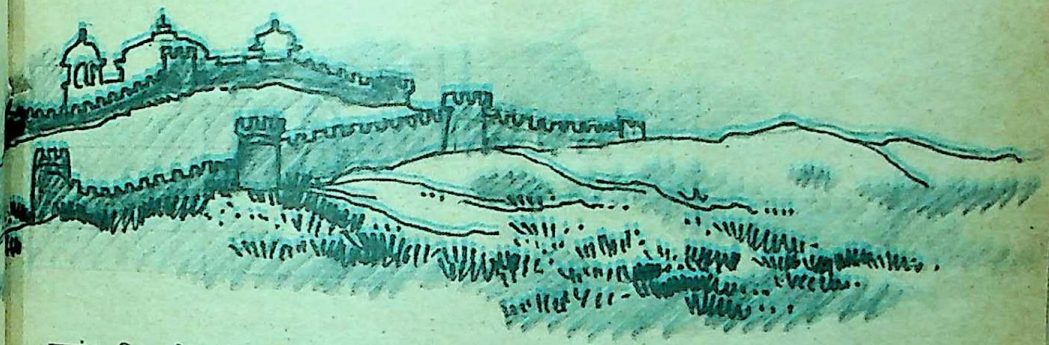

जीवन में आये इस मोड़ से गलालेंग विचलित नहीं हुआ और उसने पचलासा में जीवा पटेल की जमीन लेकर उस पर अपना महल बना दिया । इस पर जीवा पटेल कुआं गांव के जागीरदार के पास पहुंचा, जहां उसको लालजी की जमीन दे दी गयी । इसके बाद नाराज होकर लालजी ने डूंगरपुर राज्य की सीमा छोड़ दी और वह कडाणा से ठाकुर कालूसिंह की शरण में चला गया । लालजी ने कालूसिंह से शर्त रखी कि वह कुआं के ठाकुर पर आक्रमण करेगा । शर्त के मुताबिक कालूसिंह ने दशहरे के दिन कुआं पर धावा बोल दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुआं के ठाकुर इस दिन डूंगरपुर में थे, साथ ही गलालसिंह भी वहीं मौजूद था । कालूसिंह द्वारा आक्रमण करने का समाचार डूंगरपुर पहुंचा तो गलालेंग यह सुनकर आगबबूला हो गया । महारावल ने उस समय तो गलालेंग को शांत कर दिया, परंतु सभी जमींदारों की राय के बाद उन्होंने एक माह बाद कडाणा पर आक्रमण करने का निश्चय किया ।

करुण कथा प्रेम की

इसके बाद शुरू होती है गलालेंग की प्रेमभरी करुण कहानी । डूंगरपुर के महारावल ने गलालेंग का विवाह छाजा की मेड़तनी व चांदरवाड़ा की जाली के साथ तय कर दिया था । कडाणा पर आक्रमण और गलालेंग के विवाह की तारीख आगे-पीछे थी । इसके बावजूद गलालेंग यह निश्चय कर कि वह विवाह करके समय पर कडाणा में युद्ध के लिए पहुंच जाएगा, बारात लेकर छाजा-चांदरवाड़ा (बांसवाड़ा) पहुंच गया । छाजा-चांदरवाड़ा के लोग विवाह करने आये गलालेंग के रूप और सौंदर्य को देखकर भौंचक्के रह गये । लग्न विधि चल रही थी कि गलालेंग को कडाणा की याद आ गयी । वादे के अनुसार उसे महारावल को कडाणा के आक्रमण में सहयोग करना था ।

ज्यों-त्यों लग्नविधि पूर्ण कराके, दान-दक्षिणा देकर गलालसिंह सीधा युद्ध में जाने के लिए तैयार हो गया । इसके साथ बारात वापस हो रातों-रात पचलासा पहुंची । मोड़-मींढ़ल (कंकन-डोरा) खुले बिना ही गलालेंग ने पचलासा से युद्ध के लिए प्रस्थान कर दिया । इस तरह गलालेंग ने अपनी नव ब्याहता पत्नियों के साथ सुहागरात भी नहीं मनायी थी कि वह अपने कर्त्तव्य को प्राथमिकता देकर कडाणा की ओर प्रस्थान कर गया ।

लीलाधर घोड़े पर सवार होते समय गलालेंग की पत्नियां रो-बिलख उठीं, पर वे उसे युद्ध पर जाने से न रोक सकीं । रास्ते में गलालेंग को सागवाड़ा में नगर सेठ की पत्नी ने रोकने की कोशिश की । बाद में भी पग-पग पर उसके साथ अपशकुन होते गये, परंतु वह कहां ठहरनेवाला था ? लीलाधर घोड़े को हवा से बातें कराता हुआ, तूफान की तरह वह पहुंचा करगसिया तालाब की पाल पर और यहीं पर वह महारावल की फौज में शामिल हो गया। एक दिन देरी से पहुंचने पर महारावल की सेना के लोगों ने गलालेंग पर फब्तियां कसीं । गलालेंग को यह बुरा लगा और उसने महारावल की सेना से सवा कोस दूर अपना डेरा डाल दिया ।

इधर महारावल की सेना ने फिर से एक नया षड्यंत्र किया और आधी रात को ही रणभेरी बजा दी । गलालेंग व उसका भाई बख्तेंग रणभेरी को सुनकर युद्ध के लिए चल पड़े । माही नदी के किनारे पहुंचने पर गलालेंग को पता लगा कि उनके साथ धोखा हुआ है । माही नदी में गलालेंग ने सात युवतियों को पानी भरते हुए देखा, तो उसने रात्रि में उनसे पानी भरने का कारण पूछा । इन युवतियों ने गलालेंग को दूत समझा और उसको मठों की तरफ इशारा करते हुए बताया कि सारा धन मठों की बावड़ियों में छिपा रखा है । इसके बाद बख्तेंग ने इन सातों युवतियों को मौत के घाट उतार दिया व मठों पर धावा बोल दिया । मठ की बावड़ियों से गलालेंग व उसके भाई को जो धन प्राप्त हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें से सात ऊंटों पर धन लादकर, एक को बहन जीवे (महारावल की पत्नी), एक को सागवाड़ा में सेठानी के यहां, एक को पादरड़ी की बहन पटलाणी को, एक को महारावल रामसिंह को तथा शेष तीन ऊंटों को पचलासा में दोनों पत्नियों, भाई गुमान सिंह व माता पियोली के लिए भिजवा दिया ।

इसके बाद गलालेंग ने माही नदी को पार किया तो उसको कडाणा के महल नजर आने लगे । लक्ष्य को करीब देखकर गलालेंग के शरीर में जोरदार स्फूर्ति-सी दौड़ गयी । वह पूरे आवेश में आ गया और देखते-देखते गलालेंग ने अपने साथियों के साथ अकेले ही कडाणा पर धावा बोल दिया, जबकि महारावल की सेना अभी करगसिया तालाब की पाल पर ही विश्राम कर रही थी ।

अट्टहास करके गलालेंग ने जो धावा बोला था, उसको देखकर कडाणा के ठाकुर कालूसिंह व उसका पुत्र अनूपसिंह डरकर महल में जा छिपे । गलालेंग कहां रुकनेवाला था ? उसने अपने साथियों के सहयोग से पूरे कडाणा में तहलका मचाकर उसे तहस-नहस कर दिया, पर चौराहे पर रणभेरी बजानेवाले जोधिया व ड्यौढ़ी पर बख्तेंग भी वीर गति को प्राप्त हो गये । इधर लीलाधर घोड़े पर सवार गलालेंग को महल में जाने का रास्ता नजर नहीं आया । महल चारों ओर ऊंचे कोट से घिरा हुआ था । प्रवेश का कोई मार्ग न पाकर जोशीले गलालेंग ने लीलाधर घोड़े को तेज गति से हवा की तरह दौड़ाया और कोट की फलांग लगाकर महल के चौक के अंदर कूद गया । फलांग लगाकर गलालेंग कडाणा के महल में तो प्रवेश पा गया पर उसके प्रिय लीलाधर घोड़े की टांगें टूट गयीं ।

घोड़े की दयनीय स्थिति भी गलालेंग के जोश को विचलित नहीं कर सकी । उसने कडाणा के महल में फिर से अट्टहास किया और कडणिया ठाकुर कालूसिंह को ललकारा । इस पर ठाकुर की पत्नी ने कालूसिंह को कहा कि, 'छिपे क्यों बैठे हो, बाहर जाकर वीर गलालेंग का मुकाबला करो । पत्नी द्वारा उलाहना दिये जाने पर कालूसिंह को जोश आया और उसने

महल से बाहर निकलते ही गलालेंग पर गोली दाग दी । इससे गलालेंग घायल हो नीचे गिर पड़ा ।

गलालेंग के साहस और वीरताभरे कारनामों को महल से कडणिया ठाकुर कालूसिंह की पुत्री फूलां देख रही थी । वह गलालेंग की वीरता को देख उसे मन ही मन अपना पति मान बैठी । गलालेंग के घायल होते ही फूलां महल से नीचे उतरी और उसके पास पहुंचकर सर्वप्रथम उसके चरण स्पर्श किये और फिर उसके हालचाल पूछे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलवार के साथ फेरे

इसके बाद फूलां ने पानी के दो लोटे रखकर गलालेंग को खड़ा किया व घायल अवस्था में ही उसका हाथ पकड़कर मंगल फेरे फिरने लगी । इस तरह फूलां ने गलालेंग से विवाह कर लिया । इतने में कालूसिंह व अनूपसिंह अपने शत्रु गलालेंग के पास पहुंचे । इन्होंने फूलां की गोद में गलालेंग का सिर रखा हुआ देखा तो वे आगबबूला हो उठे । गलालेंग यद्यपि बेहोश था पर अर्द्धचेतन अवस्था में था । मौका पाकर कालूसिंह और अनूपसिंह ने गलालेंग के शरीर पर से जेवरात लूटना शुरू किर दिया । अर्द्धचेतन अवस्था में पड़े गलालेंग ने कालूसिंह और अनूपसिंह को फिर ललकारा कि बुझदिलो जेवर क्या लूटते हो, हिम्मत हो तो मर्दों की तरह युद्ध करो । इतने में कालूसिंह ने आवेश में आकर तलवार खींच ली और जैसे ही वार करने को हुआ वैसे ही गलालेंग ने अपनी तलवार के एक झटके से ही पिता-पुत्र दोनों का काम तमाम कर दिया । साथ ही वीर गलालेंग भी मृत्यु को प्राप्त हुआ । फूलां ने इसके बाद गलालेंग की तलवार को अपने पति का स्वरूप मानकर उसके साथ भी फेरे खाये और अपनी विवाह की इच्छा पूरी की ।

महारावल रामसिंह को कडाणा पर गलालेंग द्वारा आक्रमण कर दिये जाने की सूचना मिली, तो वे अपने दल-बल सहित कडाणा पहुंचे, परंतु तब तक सब खेल खत्म हो चुका था । फूलां ने महारावल रामसिंह को सारी हकीकत सुनायी तो उनकी आंखों में आंसू आ गये और वे गलालेंग के मृत शरीर के समक्ष नतमस्तक हो गये । इसके बाद गलालेंग की पत्नी फूलां ने महारावल से कहा कि गलालेंग की पगड़ी पचलासा पहुंचा दो, क्योंकि वहां दो नव परिणिताएं उसका इंतजार कर रही हैं । इसके बाद फूलां ने महारावल से विनती की कि वे ठाकरड़ा गांव में अमरिया जोगी के पास जाएं । वह मेरे पति गलालेंग की वीरगाथा को कविता के रूप में गूंथ देगा, जिसे लोक में चलाना । महारावल ने ठाकरड़ा पहुंचने पर अमरिया तथा उसके दो सहयोगियों जुइता जोगी व भीखा जोगी ने साढ़े तीन दिन में गलालेंग की काव्य गाथा केन्द्रा (वाद्य यंत्र) पर गाकर गूंथ दी । इस काम के बदले में महारावल ने इन जोगियों को पुरस्कार के रूप में जमीन आवंटित की । डूंगरपुर राजधानी में पहुंचकर महारावल ने फरमान जारी किया कि जोगी लोग बहादुर चौहान गलालेंग की गाथा को गाकर आजीविका कमा सकेंगे ।

जोगी आज भी गांव-गांव जाकर अपने परंपरागत वाद्य यंत्र केन्द्रा पर गाते हैं और इस गाथा को अमर बनाये हुए हैं ।

कडाणा गांव आज गुजरात में है । गलालेंग की वीरता का प्रतीक वह महल भी आज ध्वस्तावस्था में मौजूद है । गलालेंग की मृत्यु के बाद उसकी पगड़ी जब पचलासा गांव में पहुंची तो उस गांव में इंतजार कर रही रानी मेड़तनी व रानी झाली विलाप कर उठीं । बाद में इन दोनों रानियों की समाधियां पचलासा गांव के समीप गमेला तालाब की पाल पर बनायी गयीं । कडाणा के महल में गलालेंग की गाथा आज भी सुनायी देती है ।

—१५९, राजकीय आवास गृह
न्यू कॉलोनी डूंगरपुर-३१४००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत पछताए घर जमाई बनकर

● डॉ. संसार चंद्र

'बहुत पछताए घर जमाई बनकर' इस नवीन और दिलचस्प विषय पर कोई तमहीद बांधने से पूर्व एक अत्यंत जरूरी सवाल बार-बार दिमाग में कौंध उठता है कि 'घर जमाई बनकर भी न पछताते तो और क्या करते ?' आप शायद आस लगा रहे हैं कि इस दारुण अग्नि-परीक्षा में कूदकर भी हम बाल-बाल बच जाते । घर के बुद्धू घर आ जाते । चैन की बंसी बजाते, गुलछर्रे उड़ाते, और न जाने क्या मौज-मस्ती मारते । पर भाई साहिब, आप किस जमाने की बात करते हैं । यह कलयुग है, घोर कलियुग । यहां मां बेटे को भी नहीं पहचानती । इस भयानक युग में कोई सबसे ज्यादा बेयार-मदगार व्यक्ति है, तो वह है— घर जमाई । जिसको न किसी वकील की, न किसी दलील की और न किसी अपील की सुविधा है । आपको विदित होना चाहिए कि ओखली में सिर देने के बाद मूसलों की मार से डरना जवांमर्दी नहीं । इन शादियों के यही अंजाम हैं, यही ढोल-नगारे हैं । पर आप भी क्या खूब दिलचस्प इनसान हैं, जो मुहर्रम को ईद में बदलना चाहते हैं । जल में रहकर मगर से बचना चाहते हैं । राख में से तेल निकालना चाहते हैं । मृगतृष्णा से प्यास बुझाना चाहते हैं । फूल की पत्ती से हीरे का जिगर चाक करना

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते हैं । पर ठहरिए, यह सब कैसे हो सकता है ?

हां, एक बात जरूर है । यदि आप अभी तक घर जमाई नहीं बने । मात्र घर जमाई पद के लिए कैंडिडेट बनने की ही तैयारी कर रहे हैं, तो प्रिय महोदय, अभी कुछ नहीं बिगड़ा । सुबह का भूला, शाम को घर आ जाए, तो उसे भूला हुआ नहीं कहते । यदि तीर हाथ से निकल चुका है और आप घर जमाइयों की नेक बिरादरी में अपना नाम लिखवा चुके हैं और इस सारे-सवाब के खट्टे-मीठे जायके भी लूट चुके हैं, तो मेहरबान ! हमें आपसे पूरी हमदर्दी है । हम आपका हौंसला पस्त नहीं करेंगे बल्कि, आपकी दीदा-दिलेरी की भरपूर दाद भी देंगे । याद रखिए, हम आपके लिए जोखिम उठाने को तैयार हैं । यदि आप हमें अपनी दर्दभरी दास्तान, जो अलिफ-लैला के किस्से से भी ज्यादा तवील होगी, सुनने पर मजबूर कर देंगे तो भी हम उफ तक नहीं करेंगे और एक श्रद्धालु अंधभक्त की तरह दत्तचित्त होकर आपका भाषण सुनते रहेंगे । किस्सा-कोताह यह है कि 'डोली किसकी और गहने किसके', सब कुछ आप का ही तो है 'सरे तसलीम खम हैं, जो मिजाजे यार में आए ।'

'घर जमाई' विषय पर जमकर कुछ बात करने से पहले मैं कहना चाहूंगा कि यह विषय एकदम अछूता और तरोताजा है । मैंने इस विषय पर किसी भले आदमी को कुछ कहते, लिखते या बहस करते बहुत ही कम देखा है । घर जमाई तो दूर रहा, मात्र जमाई पर भी किसी कवि ने, जिनके बारे में मिसाल मशहूर है, 'जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि', अपनी कलम का जौहर नहीं दिखाया । यदि ऐसा न होता तो अब तक जमाई राजा की शान में सैकड़ों अभिनंदन ग्रंथ, स्रोत, कसीदे और विरुदावलियां भेंट हो चुकी होतीं । संसार की नामी-गरामी लाइब्रेरियों के शैल्फ भर चुके होते । मगर कुदरत को ऐसा मंजूर न था । दरअसल, सोचा जाए तो दामाद का रिश्ता भी बड़ा नर्मो-नाजुक है । फूलों-मोतयों की तरह रंगीन और बेशकीमती । इस पर कलम उठाना कोई हंसी-खेल नहीं है । संभवतः इसीलिए बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, ज्ञानी-ध्यानी, पंडित-महात्मा, जो चींटी से लेकर हाथी तक और राई से लेकर पर्वत तक, सभी विषयों पर बड़े-बड़े ग्रंथ लिखकर भी नहीं अघाते थे, इस चुनौतीपूर्ण विषय पर अव्वल तो लिखने की जहमत ही गवारा नहीं करते और यदि किसी धर्मसंकट की वजह से लिखने पर मजबूर भी हो जाएं, तो बगलें झांकने लगते हैं । आखिर, दामाद भी तो हमारे जीवन की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है । प्यार और दुलार में पली बेटी— अपने जिगर का नाजुक टुकड़ा— कुर्बान करके ही इस अनूठे उपहार को हासिल किया जाता है । फिर इससे परहेज क्यों ? इसमें जरूर कोई गहरा राज है, जो गहरी तहकीक की मांग करता है ।

तो सुन लीजिए ! मैंने भी इस गहरी तहकीक में हाथ डाल दिये हैं । हाथ ही नहीं, बल्कि तन-मन से रम गया हूं । ग्रंथों-शास्त्रों का चप्पा-चप्पा छान मारा है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत साहित्य सागर की तरह अगाध एवं अपार है । इसमें डुबकियां लगाते चलो, कोई न कोई मुक्तामणि, जरूर हाथ लग जाएगी । परंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब दूसरा साल भी बीत रहा था। उधर मां-बाप भी हमारे वियोग में सूखकर कांटा हो रहे थे। इधर मेरे पास हनुमान चालीसा पढ़ने के अतिरिक्त और कोई उपाय शेष नहीं रह गया था कि 'हे पवन पुत्र ! मेरी धर्मपत्नी को, जो अब धरम पलटिनी की भूमिका अदा कर रही है, सुबुद्धि दीजिए...

आश्चर्य का विषय है कि लाख सिर पटकने पर भी कहीं भी घर जमाई का यशोगान नहीं मिल पाया। यह निरीह प्राणी इस संपूर्ण साहित्य से इस तरह गायब है, जिस तरह गधे के सिर से सींग। हां, तो मात्र जमाई के संबध में चाहे व्यंग्य के लहजे में ही सही, एक मारकाखेज जुमला जरूर हाथ लग गया है, जिसमें इसको दसवें ग्रह का दर्जा दिया गया है— 'जामाता दशमो ग्रहः' अर्थात— नौ ग्रह तो गगन में विहार करते हुए ही हम पर सितम ढाते रहते हैं, जबकि हमारी ही सरे जमीन का बाशिंदा यह दसवां ग्रह भी, जो हमारे इतना करीब है, हमें चैन से जीने नहीं देता। इससे चाहे जो भी मतलब आप निकालें, एक बात तो साफ जाहिर है कि प्राचीन युग में भी जमाई का तेज और दबदबा बदस्तूर कायम था। इसीलिए साहित्यकार उसके पक्ष या विपक्ष में कुछ भी लिखने का साहस नहीं जुटा पाते थे। वे मौन बने रहने में ही अपनी खैरियत समझते थे।

दूरे हिता भवति

यद्यपि संस्कृत साहित्य में घर जमाई के संबंध में कोई प्रत्यक्ष संकेत नहीं मिलता, परंतु बेटी के लिए 'दुहिता' शब्द का प्रचलन इस सामाजिक कुरीति पर निश्चय ही एक अत्यंत वेदनापूर्ण छींटाकशी कर जाता है। शास्त्रों में 'दुहिता' शब्द का अर्थ— 'दूरे हिता भवति' अर्थात 'बेटी दूर ब्याही जाने पर ही हितकर होती है', यह साबित करता है कि उस युग का समाज घर जमाई की प्रथा से प्रायः असंतुष्ट ही था। दामाद को अपने घर पर रखना तो दूर रहा, लोग उसके एक ही शहर में रहने के भी हक में नहीं थे। इसीलिए 'जामाता दशमो ग्रहः' वाली थ्यूरी पूरी तरह मेल खा जाती है। ग्रह की तरह दामाद को भी दूर से ही नमस्कार करने में अपनी खैरियत समझी जाती थी।

हिंदी के प्रसिद्ध कवि बिहारी को सभी जानते हैं। वह एक चोटी के व्यंग्यकार थे, जिन्होंने बड़े-बड़े वैद्य, पंडित, राज-ज्योतिषी, साहूकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसिकाएं

पर्याय

लड्डुओं और विधायकों में समानताएं
दोनों फोड़े जा सकते हैं, जब जितने चाहें

कालबोध

अध्यापक ने पूछा— काल कितने प्रकार के होते हैं ?
प्रश्न सुनकर छात्र हंसे
बोले "काल तो काल है... प्रकार कैसे ?"

ऊब

घंटों पुराने किस्से दोहराती रही
कहती रही— दुख दर्द... व्यथा जो भोगी
किसे पता था...
उनकी आपबीती भी, इतनी गयी बीती होगी ।

नोट

नये कर्मचारी से कहा
'जो भी साहब कहें, कृपया नोट करें,
... नोट करते-करते... सहसा रुका
सोचने लगा 'इतने ढेर नोट...
फिर भी रंगे हाथ कोई न पकड़ सका ।

मरम्मत

मंत्रीजी की पत्नी ने हकलाकर कहा
"सड़कों की मरम्मत... भवनों की मरम्मत
...इनकी मरम्मत का काम
जोरों पर चल रहा है ।"

प्रशंसा

डाकू भी नेताओं की प्रशंसा करने लगे तथा स्वयं
भूखों मरने लगे

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

आदि समाज के विभिन्न कारिंदों को अपनी तीरंदाजी का शिकार बनाया था । समाज का कोई विरला ही वर्ग था, जो उनके मर्म-भेदिनी दृष्टि से बच सका हो । बिहारी अपने जीवन में कभी घर जमाई बनकर रहे हों, ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता, परंतु इसमें संदेह नहीं कि उनके जीवन का एक महत्त्वपूर्ण भाग उनके ससुराल— मथुरा में जरूर व्यतीत हुआ था। इसीलिए वह घर जमाई की शख्सियत, किरदार, शाऊर, फितरत और मनोविज्ञान से पूरी तरह वाकिफ थे । उन्होंने अपने एक दोहे में पौष के दिन की तुलना घर जमाई से की है, जो उत्तरोत्तर दीन-हीन होकर अपनी मान-मर्यादा खो देता है । सामाजिक प्रतिष्ठा में घर जमाई पौष के दिन-मान की तरह किस प्रकार बौना हो गया है, इसका दृश्य कवि के एक दोहे में बड़ा मार्मिक बन पड़ा है—

आवत जात न जानियतु, तेजहिं तजि सियरानु
घरहं जंवाई लौं घट्यौ खरौ पूस-दिन-मानु

लगे हाथों एक अपना जाती किस्सा भी सुन लीजिए । एक दिन मेरी जो शामत आयी, तो एक अखबार में 'वर की आवश्यकता' कालम में एक विज्ञापन हाथ लग गया । एक करोड़पति सेठ की सुंदर-सुयोग्य कन्या के लिए वर की फरमाइश की गयी थी । उम्र, कद, जाति-पांति आदि सभी दृष्टियों से काम फिट नजर आता था । अपने में थोड़ी-सी रोजगार की कमी जरूर थी । फिर भी लड़कीवालों ने इंटरव्यू भेज दी थी । हम सजधज कर पहुंचे और शक्ल-सूरत अच्छी होने के कारण कामयाब भी हो गये। लड़कीवालों की भी एक ही शर्त थी कि बेरोजगार होने के कारण मुझे उनके यहां नौकरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी करनी पड़ेगी और घर के मैंबर की तरह उनके पास रहना भी होगा । 'घर जमाई' शब्द उन्होंने जानबुझकर प्रयुक्त नहीं किया था । इसलिए हमें यह सौदा बुरा नहीं लगा बल्कि, हमने समझा कि हमारे दोनों हाथों में लड्डू थमा दिये गये हैं । विवाह और रोजगार एक ही दिन में ! कैसा सुखद संयोग ! नौकरी क्या थी हम सेठ साहब के होम डिपार्टमेंट के परचेज अफसर नियुक्त हुए थे । हमें मंडी जाकर सस्ते दामों में राशन, फल-सब्जियां आदि खरीदनी पड़ती थीं । यह काम मात्र सुबह-शाम का था । बीच में आठ घंटे दूकान पर मुनीमी का काम भी करना पड़ता था क्योंकि, मेरे आते ही मुनीमजी की छुट्टी कर दी गयी थी । मेरे ससुर साहब रुपये-पैसे और हिसाब-किताब के मामले में किसी गैर को राजदार नहीं बनाना चाहते थे, परंतु अपनी तो काम के बोझ से खाल खिंच रही थी । मरता क्या न करता ! रो-धोकर पूरा एक साल निकाल लिया था । अब समस्या यह थी कि इस माया जाल से कैसे छुटकारा हो, मगर सेठ साहब की लाड़ली थी कि हमारी एक नहीं चलने देती थी ।

अब दूसरा साल भी बीत रहा था । उधर मां-बाप भी हमारे वियोग में सूखकर कांटा हो रहे थे । इधर मेरे पास हनुमान चालीसा पढ़ने के अतिरिक्त और कोई उपाय शेष नहीं रह गया था कि 'हे पवनपुत्र ! मेरी धर्मपत्नी को, जो अब धरम पलटिनी की भूमिका अदा कर रही है, सुबुद्धि दीजिए ताकि इस सोने के पिंजरे से नजात मिल सके ।'

जाहिर है कि आज तक मेरे भाग्य की डोरी केवल पवनपुत्र के ही हाथ में है । आशा में हूं कि पवनपुत्र आएंगे, पवन वेग से ही आएंगे, और मेरी पीड़ा हरेंगे । हां, उनके आने में देर तो हो सकती है, मगर अंधेर नहीं ।

—१३०७/१९ बी, चंडीगढ़-१६००१९

अस्थमा (दमा) का भारतीय पद्धति से इलाज

इलेक्ट्रोकेमिकल थेरापी एक नयी भारतीय चिकित्सा पद्धति है, जिसका आविष्कार कोयम्बटूर में बसे डॉ. पी.बी. माथुर ने किया है और इस चिकित्सा पद्धति से डॉ. माथुर अस्थमा, मधुमेह, वात, गुरदे तथा हृदय के असाध्य रोगों का इलाज करते हैं । ८० प्रतिशत रोगियों को उनके उपचार से आराम हुआ है और असाध्य रोगों से छुटकारा मिला है ।

डॉ. पी.बी. माथुर विगत कई वर्षों से इस चिकित्सा पद्धति द्वारा कोयम्बटूर में तथा देश के विभिन्न भागों में कैंप लगाकर हजारों को निरोग कर चुके हैं ।

गत १९ सितंबर से २२ अक्तूबर तक समाजसेवी रामअवतार गुटगुटिया की पहल पर अपनी पत्नी स्व. गायत्री देवी की स्मृति में ऐसा ही एक चिकित्सा कैंप आसनसोल के अशोकनगर कॉलोनी में लगाया गया जिसमें डॉ. माथुर की चिकित्सा से हजारों रोगी लाभान्वित हुए । इन रोगियों में अधिकांश वे लोग थे जो विभिन्न असाध्य रोगों से न सिर्फ वर्षों से पीड़ित थे अपितु अपने जीवन से निराश व हताश भी हो चुके थे, उन्हें डॉ. माथुर की चिकित्सा से चमत्कारिक लाभ हुआ तथा जीवन में आशा की नयी किरण का संचार हुआ ।

—रमेश कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

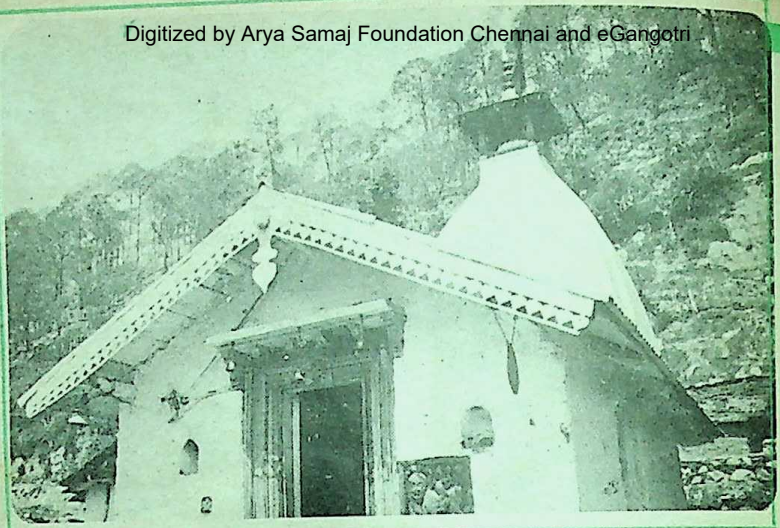

जसोली स्थित हरियाली देवी का मंदिर

हरियाल उसका मायका है !

● राजेश्वरी चौधरी

हिमालय की गोद में स्थित गढ़वाल मंडल पांच जनपदों में विभाजित किया गया है —पौड़ी, टिहरी, उत्तरकाशी, देहरादून और चमोली । इन पांचों जनपदों में स्थित पवित्र धाम अपनी ख्याति के लिए प्रसिद्ध हैं । इन्हीं जनगदों में एक जनपद चमोली में एक खूबसूरत स्थान है —गौचर । बदरीनाथ मार्ग से अलग कच्ची सड़क पर सत्तर किलोमीटर दूर 'हरियाल' नामक एक स्थान है, जहां पर हरियाली देवी का मंदिर है ।

इस मंदिर में सालभर में दो बार धार्मिक मेले लगते हैं । पहला मेला जन्माष्टमी को तथा दूसरा मेला दीपावली को । दूर-दूर से दर्शनार्थी आते हैं । इसी देवी का एक रूप जसोली गांव में स्थित है, लेकिन सुविधा की दृष्टि से इस देवी की पूजा-अर्चना इसी गांव से लगती है । जसोली गांव हरियाली देवी की ससुराल माना जाता है । 'हरियाल' उसका मायका है । दीपावली के एक दिन पहले देवी की डोली, गाजे-बाजे के साथ 'हरियाल' जाती है । श्रद्धालु नंगे पांव चलकर सरदी की रात में हरियाल जाते हैं और दीपावली के दिन वापस देवी के ससुराल जसोली आते हैं । प्रातः जब सूर्य की किरणें इस चोटी को छूती हैं, तब देवी को नीचे ले आया जाता है । हरियाल नामक स्थान पर नारियों का जाना शुभ नहीं माना जाता । प्याज, लहसुन, मांस-मछली, मदिरा इत्यादि का निषेध है ।

देवी को चुनौती

पुराने समय में यह देवी परिभ्रमण के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यत्र चली जाती थी, लेकिन किसी व्यक्ति ने इस देवी को चुनौती दी कि यदि तू सच्ची देवी है, तो इस पेड़ को हरा-भरा करके दिखा दे । फल लगा दे । देवी ने वैसा ही कर दिखाया । और वह अन्यत्र घूमने चली गयी । उसके पीछे वह पेड़ फिर सूख गया । इससे देवी को शर्मिंदा होना पड़ा । इसलिए देवी अब भ्रमण नहीं करती और नहीं बकरे की बलि लेती है ।

इस मंदिर के निर्माण के विषय में कुछ भी अनुमान लगाना संभव नहीं है । संकटकालीन स्थिति में सभी इस देवी को स्मरण किया करते हैं । मनोकांक्षा पूर्ण होने पर छत्र, घंटा इत्यादि भेंट चढ़ाते हैं । समुद्र तल से २,८०० मीटर ऊंची चोटी पर स्थित इस मंदिर का अपना सौंदर्य अनुपम है । चोटी पर स्थित होने के कारण यह मंदिर सभी जगह से दिखायी पड़ता है । बर्फ से ढकने पर यह चोटी ऐसी सुशोभित होती है कि जैसे देवी के गले में चंद्रहार सुशोभित हो । प्रातःकाल सूर्य उदय होते हुए स्वर्ण-किरणें उस चोटी पर गिरती हैं और घाटी में बुरांश के फूल खिल जाते हैं, तब यह दृश्य ऐसा लगता है जैसे कोई रूपवती स्त्री शृंगार करके चांदनी धोती पहने, गले में लाल मूंगे की माला धारण किये बैठी हो । और चोटी के ऊपर छाये बादल मानो उस स्त्री का घूंघट हो । जब यहां वायु तेज गति से चलती है तो यहां के घने जंगल के पेड़-पौधों के टकराने का स्वर ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वे किलोल क्रीड़ाएं कर रहे हों । उस चोटी की घास का रंग भी अलग से पहचाना जाता है, जिसे तेया खड़ों नाम से पुकारते हैं । यहां के जंगल को हरिणों का घर माना जाता है । जगह-जगह साथ-साथ विचरण करते हुए हरिणों के झुंड दिखायी देते हैं । पक्षियों के चहचहाने से संपूर्ण जंगल गूंजता रहता है ।

हरियाली देवी के मायके हरियाल में महिलाओं का जाना शुभ नहीं माना जाता । अगर कोई महिला लाल, नीले, पीले वस्त्रों को धारणकर उस जंगल में चली जाती है, तो माना जाता है कि आछरी ने उसे अपने प्रभाव में ले लिया है ।

उस स्थान पर हरियाली देवी के अतिरिक्त अन्य देवियां भी निवास करती हैं, जिन्हें 'आछरी' कहते हैं ।

अकेला कोई भी व्यक्ति उस स्थान पर नहीं जाता । अगर कोई स्त्री लाल, नीले, पीले वस्त्रों को धारण कर उस जंगल में चली गयी, तो समझ लिया जाता है कि 'आछरी' ने उसे अपने प्रभाव में ले लिया है । उस स्त्री को लोग अखाड़ा लगाकर नाचते हैं, पूजा-अर्चना करते हैं, तब जाकर वह स्त्री ठीक होती है ।

—शोधार्थिनी, हिंदी विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर (गढ़वाल)-२४६१७४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख लेंगे कबीर हमारा क्या बिगाड़ लेते हैं !

● अश्विनी कुमार दुबे

मेरे प्यारे देशवासियों, बहुत दिनों से मैंने राष्ट्र के नाम कोई संदेश नहीं दिया था, इसलिए पिछले दिनों से मेरी अंतर्आत्मा, जो भीतर पता नहीं किस कोने में लुकी-छुपी बैठी रहती है, वह छटपटा रही थी । कभी-कभार यह यूं ही छटपटाया करती है, तभी मुझे पता लगता है कि मेरे पास भी एक अदद अंतर्आत्मा है ।

पहले कई दिनों से सोच रहा था कि मैं अपने प्यारे राष्ट्र के नाम एक संदेश दे डालूं परंतु इसके लिए कोई ठीक-ठाक कारण या कोई उचित अवसर नहीं मिल पा रहा था । अब होली आ गयी है,तो मैंने सोचा इस शुभ अवसर पर अपने प्यारे देशवासियों के नाम एक संदेश दे ही डालो ।

बहुत दिनों से घर पर पत्नी उलाहना दे रही थी कि आये दिन दूरदर्शन पर ऐरा-गैरा कोई भी भाषण, वार्ता या संदेश देता रहता है और एक तुम हो कि महीनों हो गये टी. वी. पर तुम्हारी एक झलक तक नहीं दिखी । इतने बड़े नेता फिर काहे को बने फिरते हो,जब दो घड़ी टी.वी. पर संदेश देने तक की फुर्सत नहीं है तुम्हें ! बच्चे भी आये दिन पूछते रहते हैं कि पापा टी.वी. पर क्यों नहीं दिखते ?

इस प्रकार घर, परिवार, प्रशंसक, पार्टी और देश के लिए मैं आज दूरदर्शन के माध्यम से अपना यह संदेश राष्ट्र को समर्पित करता हूं।

भाइयो तथा बहनो, सन सैतालीस में हमें आजादी मिली । तब से आज तक हम आजादीपूर्वक होली मनाते आ रहे हैं । गुलामी के दिनों में होलिका दहन के रूप में लोग आसपास का कचरा और पुरानी लकड़ियां जलाया करते थे । उन दिनों हम गुलाम थे इसलिए अपने मन मुताबिक कुछ भी न कर पाते थे । आजादी के बाद हमने प्रसन्नतापूर्वक बहुएं जलाना आरंभ कर दिया । हमारी औरत है, हम चाहें तो उसे जूतों से मारें या मिट्टी का तेल डालकर जला डालें— किसी को इससे क्या ? आजाद देश में हमें अपने ढंग से जीने का हक अवश्य मिलना चाहिए । खुशी की बात है कि इस दिशा में हमने बहुत प्रगति कर ली है ।

होली एक धार्मिक त्योहार है । आजादी के बाद हमने सबसे ज्यादा यदि किसी बात पर ध्यान दिया है तो वह 'धर्म' ही है । वैसे भी हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिज्ञों के लिए 'धर्म' बड़े काम की चीज है। धर्म की शक्ति को इस देश में सबसे पहले अंगरेजों ने ठीक से समझा था। मुट्ठीभर अंगरेज करोड़ों लोगों पर सैकड़ों सालों तक सिर्फ अपनी धार्मिक नीति के कारण ही सफलतापूर्वक राज्य कर सके। उन्होंने सबकी अलग-अलग पहचान बनायी, उन्होंने ही बताया कि तुम हिंदू हो, *तुम* मुसलमान और तुम सिख हो। इसलिए तुम सब अलग-अलग रहो। अंगरेजों की भांति सदियों तक हमें भी इस देश पर राज करना है। इसलिए आजादी के बाद हमने अंगरेजों द्वारा रोपे गये अलगाववाद के नन्हें पौधे को पर्याप्त हवा-पानी देकर आज एक वृक्ष बना दिया है। अब तो उस वृक्ष में मीठे फल भी आ गये हैं।

होली के इस महान धार्मिक पर्व पर हमारा यही संदेश है कि विभिन्न धार्मिक समुदाय के लोगों को अपनी अलग-अलग पहचान बनाये रखना चाहिए। हमारा यह भी कहना है कि सभी धर्मावलंबियों को अपने-अपने पूजा स्थल, भले ही वे खंडहर हो गये हों, उन्हें बचाकर रखना चाहिए। इसके लिए भले ही हमें सैकड़ों जानों की बलि क्यों न चढ़ानी पड़े। धार्मिक उत्थान के लिए यह जरूरी है कि सभी समुदाय के लोग सदा आपस में लड़ते रहें। यह लड़ाई बड़ी काम की चीज है। इससे हमें पता चलता है कि हम गुलाम नहीं रहे। अब हम आजाद हो गये हैं।

होली का त्योहार हंसी-खुशी, उल्लास और नाचने-गाने का त्योहार है। किसी कवि ने कहा

आजादी के इन चवालीस बरसों में हमारी यही महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां हैं कि हमने सबके दामन कीचड़ से भर दिये और सब उजले चेहरे पोत दिये। नेता, व्यापारी, कर्मचारी और बुद्धिजीवी सबके चेहरे यहां पुते हुए हैं। कुछ विरोधी लोग भी हैं, जो हमारी इन विकासशील नीतियों की आलोचना करते फिरते हैं। हमें उनका डटकर मुकाबला करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, 'मन चंगा तो कठौती में गंगा ।' आजादी के बाद हमने मनोरंजन के क्षेत्र में बड़ी उपलब्धियां अर्जित कीं । हमने इस देश के गांव-गांव में वीडियो प्रणाली पहुंचा दी । गुलामी के दिनों में गरीब गांववाले मनोरंजन के लिए चौपाल में मिल-बैठकर भजन-कीर्तन किया करते थे । वे घटिया नाटक, नौटंकी देखा करते थे । उन दिनों गांव-गांव में रामायण मंडलियां हुआ करती थीं । इन मंडलियों की वही घिसी-पिटी एक ही कहानी सदियों तक गांववाले देखने के लिए विवश रहे । हमने अब देश के कोने-कोने में ब्लू फिल्मों के कैसेट पहुंचा दिये । कभी लुक-छुपकर लोग ऐसी-वैसी फिल्में बमुश्किल देख पाते थे । अब मोहल्ले-मोहल्ले में सब जगह इस प्रकार के कैसिट उपलब्ध हैं । यह सब हम न करते तो आप ही सब जगह चिल्लाते फिरते कि आजादी के इन चवालीस सालों में देश ने कोई तरक्की नहीं की ।

बचपन में हमने सुना था कि भारतीय संस्कृति बहुत महान है । विदेशों को कैसे पता चलता कि हम अब आजाद हो गये हैं और हमारे पास एक महान संस्कृति भी है । इसके लिए सबसे पहले हमने अपने देश में संस्कृति की तलाश की । हमने पाया कि कोई कहीं भी नाच रहा है । कोई कुछ भी गाये-बजाये जा रहा है । लेखक और साहित्यकार कुछ तो भी अपने मन से लिखे जा रहे हैं । संस्कृति के इन बिखरे हुए सूत्रों को समेटकर हमने इन्हें अपने और पराये उत्सवों के विशाल मंचों पर प्रदर्शित किया । कल तक जो कलाकार मंदिरों और देवालयों में नाच-गा रहे थे, जो लेखक स्वांतः सुखाय कलम घिस रहे थे, वे सबके सब अब राजधानी के चक्कर लगा रहे हैं । किसी को रेडियो में जाना है । किसी को दूरदर्शन पर चमकना है । कोई विदेश जाने के जुगाड़ में है। कोई साहित्य अकादमी में घुसना चाहता है। इस प्रकार संस्कृति को हमने एक दिशा दी है। अब आजाद देश में वही लिखा, बोला और दिखाया जाएगा, जो हम चाहते हैं ।

होली पर एक-दूसरे पर रंग डालने की पुरानी परंपरा है । जो मजा कीचड़ उछालने में है, वह इन रंगों में कहां । आजादी के बाद हमने इस कीचड़ उछाल परंपरा का भरपूर विकास किया। जैसे कभी विरोधी पार्टी ने हमारी नीतियों की आलोचना की तो झट हमने उनके ऊपर कीचड़ उछाल दी कि ये तो विदेशी ताकतों के एजेंट हैं ।

जब उनके मुखमंडल पर कीचड़ पुता तो उन्होंने भी हमारे श्वेत वस्त्रों पर टोकरीभर कीचड़ दे मारा— ये सब तो दलाल हैं । विदेशी बैंकों में इनके खाते हैं । फिर हमने पैंतरा बदलकर कीचड़ का एक लौंदा उन पर दे मारा, 'ये घोर सांप्रदायिक हैं ।' उन्होंने जवाबी बौछार की,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आतंकवादियों से इनके गठबंधन हैं ।' इस प्रकार यह कीचड़ की होली अभी तक हम राजनीतिज्ञ ही खेलते थे । इधर यह परंपरा समाज के सभी क्षेत्रों में व्याप्त हुई है । जिसे देखकर हम अत्यंत प्रसन्न हैं । छात्र अपने गुरुजनों पर कीचड़ उछाल रहे हैं । महिलाएं अब पुरुषों पर कीचड़ उछाल रही हैं । जनता नेताओं पर कीचड़ उछाल रही है । इस प्रकार पूरे देश में क्या बढ़िया कीचड़ की होली खेली जा रही है । अहा ! मजा आ गया ।

आजादी के इन चवालीस बरसों में हमारी यही महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां हैं कि हमने सबके दामन कीचड़ से भर दिये और सब उजले चेहरे पोत दिये । नेता, व्यापारी, कर्मचारी और बुद्धिजीवी सबके चेहरे यहां पुते हुए हैं । कुछ विरोधी लोग भी हैं, जो हमारी इन विकासशील नीतियों की आलोचना करते फिरते हैं । हमें उनका डटकर मुकाबला करना है ।

आज सुबह ही किसी कबीरदास की वाणी रेडियो पर बज रही थी, 'अंगिया काहे न धुबाई...' अंगिया हमारी है । हम धुबायें या न धुबायें । तुम्हारे बाप का क्या जाता है, ये सब हमारे विरोधियों की साजिश है । हमारा मार्ग अंगरेज पहले से निश्चित कर गये हैं । उससे हमें कोई विचलित नहीं कर सकता । देख लेंगे ये कबीरदास हमारा क्या बिगाड़ लेगा । आप सबको हमारी तरफ से होली की ढेर-सारी शुभकामनाएं । आप तो मजे में कीचड़ की होली खेले जाओ । रही कबीर की बात, सो उससे हम निपट लेंगे । जय हिंद !

— रेस्ट हाऊस के पीछे, जांजगीर ४९५-६६८ (म.प्र.)

कैंसर का उपचार : शिथिलीकरण और आत्मनिरीक्षण से

अमरीका के रोचेस्टर विश्वविद्यालय द्वारा किये गये अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि किसी व्यक्ति का जीवन के प्रति अतिशय निराशाजनक चिंतन कैंसर रोग को जन्म दे सकता है । फोर्टवर्थ टेक्सास के डॉ. कार्ल साइगंटन ने कैंसर के रोगियों का उपचार 'रेडियेशन', 'केमोथेरेपी' तथा 'शल्यक्रिया' की परंपरागत उपचार पद्धति से अलग हटकर रिलैक्सेशन (शिथिलीकरण) और विजुवलाइजेशन (आत्मनिरीक्षण) पद्धति से कर रहे हैं । इन रोगियों को नियमित रूप से दिन में तीन बार प्रातः उठते समय, दोपहर और रात्रि सोते समय १५-१५ मिनट का ध्यान करने को कहा जाता है । इस साधना में रोगी 'आटो सजेशन' का अभ्यास करता है तथा यह भावना करता है कि उसका मन शांत, संतुलित और स्वस्थ हो रहा है । दूसरे चरण में उसे कैंसरग्रस्त स्थान पर ध्यान करना पड़ता है, जिसमें वह प्रबल भावना का आरोपण करता है कि शरीर के श्वेत कण कैंसरग्रस्त स्थान पर एकत्रित हो रहे हैं तथा रुग्ण कोशिकाओं को शरीर के बाहर निकाल रहे हैं । रोगियों को सदा प्रसन्नचित्त रहने तथा आशावादी दृष्टिकोण अपनाये रखने का ही निर्देश दिया जाता है । डॉ. साइगंटन को अब तक डेढ़ सौ से भी अधिक कैंसर के रोगियों के उपचार में पूर्ण सफलता मिली है । स्वस्थ रोगियों में से अधिकांश वे हैं, जो आशावादी विचारधारा के थे ।

—शैलेंद्र भार्गव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीतों भरी गालियां

● नारायण शांत

गाली देना तो बुरी बात है, लेकिन जब कोई गाली रिश्ते में आ जाती है, तो वह बड़ी स्वादिष्ट और जायकेदार हो जाती है। जैसे, साला और साली। सारी खुदाई एक तरफ और जोरु का भाई एक तरफ। साली दूसरी घरवाली भी एक तरह से गाली ही है, लेकिन यह काव्यमय गाली है, तो हर रिश्तेदार, कहने और सुननेवाले दोनों को मीठी लगती है। किसी का जीजा होना, किसी की साली होना, किसी की समधन होना और किसी का समधी हो जाना, बड़ा स्वादिष्ट लगता है। ऐसे रिश्तों को संबोधित कर शादी-विवाह के समय फब्तियां कसी जाती हैं, ताने मारे जाते हैं, व्यंग्य और हास्य किये जाते हैं। ऐसी उक्तियों को छत्तीसगढ़ के विवाह में भड़ौनी-गीत कहते हैं।

यह गाली गीत है। जीजा, साली, समधी, समधिन, दूल्हा आदि सबों पर भड़ौनी-गीत है। तरह-तरह के नेग और रिवाजों के समय बननेवाले नये-नये रिश्तों पर कटाक्ष किये जाते हैं। कटाक्ष करने में स्त्रियों का सर्वाधिक हाथ होता है। मधुर स्वर में स्त्रियों के मुख से भड़ौनी गाये जाना बड़ा सुखद और परम सुखदायी लगता है। सबसे ज्यादा भड़ौनी के शिकार समधी और समधिन होते हैं। लड़के के माता-पिता पर ये गाली-गीत भड़ौनी अधिकतर केंद्रित हैं। एक तरह से भड़ौनी समधी और समधिन के लिए सम्मान ही है। जैसे, होली के अवसर पर समाज के, बस्ती के, सबसे सम्मानीय व्यक्ति को महामूर्ख की उपाधि दी जाती है, कुछ-कुछ इसी भाव-मुद्रा के होते हैं छत्तीसगढ़ी भड़ौनी-गीत।

विवाह भी एक उत्सव है। ऐसे अवसर पर जब कोई पिता बिना बाजे-गाजे के ही बेटे का विवाह संपन्न कराने आ जाए, तो वह गाली खाएगा ही—

दार करे चाँउर करे लगिन ल धराय रे
बेटा के बिहाव करे बाजा न डराय रे

दुनियाभर का खर्च किया लेकिन, बाजे का खर्चा उठाने में कायरता दिखाना सचमुच में गाली खाने और निंदा का कार्य है। इस तरह भड़ौनी के डर से दूल्हा के बाप ने जल्दबाजी में बाजा लगा ही लिया, तो उसमें एक मामूली वाद्य 'दमाऊ' ही नहीं है—

बाजा लगाये दमाऊ नइये
तोर घर के महाटी समाऊ नइये

लोक-संगीत वाद्यों में 'दमऊ' एक बहुत ही छोटा बाजा है, जो इन वाद्यों का तालमेल और प्रवेशद्वार है। जैसे बहुत बड़ा मकान है, लेकिन दरवाजा घुसने लायक न हो तो निंदा होगी ही।

कन्या पक्ष की स्त्रियां दूल्हा को निशान बनाकर भड़ती हैं कि दूल्हे मियां मैंने तो तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा और भला जानकर शादी की बात पक्की करके मंडपाच्छान किया, लेकिन तुमने हमारे लिए जो भाजी-पाला की तरह साड़ियां लाकर अपनी नाक कटवा ली—

बने-बने तोला जानेंव दुलरू
मड़वा मं डारेंव बांस रे
आला-पाला लुगरा लाने
जर गे तोर नाक रे

बिना बाजे-गाजे और फौज-फटाखे के चुपचाप चोरों की तरह आये बारातियों का क्या सम्मान किया जा सकता है । ऐसे बाराती तो आदमी कम जानवर अधिक होते हैं, तो उन्हें कोठा या गोशाला में ही जनवासा दिया गया—

आये बरदिया चुप्पे-चुप
पैरा दसा के सुत्ते-सुत
सरबर दरबर आए बरतिया
कोठा मं समाए रे
सूपा-सूपा किरनी चाबे
भितिया मं खजुवाए रे

झुंड के झुंड आये बाराती और गौशाला में ठहरा दिये गये, जहां जानवरों के रक्त-पिपासु कीड़ों ने जब काटना शुरू किया, तो वे अपनी खुजली मिटाने के लिए दीवालों में अपना शरीर रगड़-रगड़कर खुजली मिटाने का प्रयास कर रहे हैं । यह देख-सुनकर हास्यास्पद स्थिति बनती है ।

मेरा अनुभव

आप भी अगर छत्तीसगढ़ के गांव में बाराती बनकर गये हैं, तो कुछ अनुभव तो होगा ही, यदि नहीं तो आप मुझसे ही मेरा अनुभव सुनकर लाभ उठा लीजिए । छत्तीसगढ़ की भाजी बड़ी प्रसिद्ध है । इसी पर भड़ौनी गीत—

नदिया तीर के पटवा भाजी
पट पट पट करथे रे
दूल्हा डौका के दाई ह
मट-मट--मट करथे रे

समधिन होती है दूल्हा की मां, इस पर

भड़ौनी-गीतों का एक संदेश यह भी है कि आदमी गीत मनोरंजन के लिए सुनता-गाता है, लेकिन गाली-गलौज में मनोरंजन तत्त्व का अभाव है इसलिए गाली और गीत दोनों को मिलाकर, एक गाली-मनोरंजन करना भी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भड़ौनी-गीत का खजाना है । उपरोक्त भड़ौनी में उसे मटकनेवाली कहा गया है और आगे लंबी चोंचवाली चिड़िया तथा काली-कलूटी करार दिया जा रहा है—

समधिन हावे कारी बिलई
कारी बिलई लमचोची चिरई

हमारी समधन भी बड़ी नाटकवाली है । तभी तो वह कद्दू को साबुत लीलकर पेट फुला लेती है और दर्द होने पर उसे प्रसव-पीड़ा बताती है—

खाय बर मखना पिराय पर पेट रे
का लइका ल होबे समधिन हंसिया के बेंठ रे

ऐसे प्रसव पीड़ा में समधिन को बच्चा भी हुआ तो हंसिया की मूंठ हुआ, फिर हमें हंसी तो आनी ही आनी है ।

भड़ौनी-गीत चाहे समधी-समधिन की चमड़ी भी उधेड़ ले, फिर भी बुरा मानना ना-समझी और मूर्खता मानी जाती है । कोई अपनी बेटी किसी को ब्याहेगा, तो ऐसे ही थोड़े हो जाएगा । उसे सचमुच में नहीं तो हंसी-मजाक में कुछ-न-कुछ तो सुनना ही पड़ेगा । बेटी पराया धन होती है, तुम्हारे इस धन को हमने पाल-पोसकर तुम्हारे लायक किया, तो इस अहसान के बदले कुछ न कुछ चुकाना ही पड़ेगा । यह भड़ौनी-गीत इसी की भरपायी है—

समधीन दुखाही ह का बुता करथे वो का बुता करथे
चूल्हा ल दूल्हा बनाथे भौजी ह चूल्हा ल दूल्हा बनाथे

इस भड़ौनी में समधन चूल्हा को दूल्हा बना रही है, ऐसे ही आगेवाली पंक्तियों में उसे कोई राजपूत हरण करके ले जाता है—

आती गाड़ी जाती गाड़ी
गाड़ी मं भरे सूत रे
दूल्हा डौका के दाई ल
लेगे रसपूत रे
आती मोटर जाती मोटर
मोटर मे लगे तारा रे
दूल्हा डौका के दाई ल
लेगे मोटरवाला रे
मिठाई खाहूंमिठाई खाहूं कथे समधिन
कहां के मिठाई ल पाबे रे
मिठाईवाला ल डौका कहिबे
तभे मिठाई खाबें रे

भड़ौनी-गीतों का सर्वाधिक निशान समधन ही होती है, जिसे कन्या पक्ष की स्त्रियां तरह-तरह से गाली-गीत सुनाकर, नये बनते हुए रिश्तों को और मजबूत बनाती है ।

लड़की पक्ष में जब सभी स्त्रियां अपने आपको छरहरी और पतली-दुबली इकहरी बदन की मानने लगती है, तब दूल्हे की मां पर मोटापे का व्यंग्य देखिए—

कइसे मिलबो कइसे भेंटबो
जीव करे पोट-पोट रे
दूल्हा चौकी के दाई ह
हावे याहा रोंठ रे

अत्यधिक मोटी हुई तो क्या हुआ, वह तो नाचने-मटकने और घूंघरू बांधने में किसी से कोई कम नहीं है—

खीरा फरीस जोंधरा फरीत
फरीस हावे कुंदरू रे
समधिन डौकी छम-छम नाचे
पांव मं बांधे घुंघरू रे

भड़ौनी-गीतों की प्रथम पंक्ति और दूसरी पंक्ति का भाव-मेल नहीं है, लेकिन सिर्फ प्रथम पंक्ति उद्देश्यहीन है लेकिन दूसरी पंक्ति का उद्देश्य भड़ौनी-गीत है । कहीं-कहीं दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंक्तियों की सार्थकता नजर आती है । जैसे नीचे भड़ौनी-गीत है, जिसमें समधी-समधिन दोनों को साथ-साथ ही गालियां दी जा रही हैं—

मेंछा हावे लाम-लाम
मुंहू करिया-करिया रे
समधिन पहिरे नावा-नावा
समधी पहिरे फरिया रे
मेंछा हावे कर्रा-कर्रा
आंखी चिरई खोंदरा रे
भोभली समधिन मांगे गोई
पाक्का-पाक्का जोंधरा रे

बिना दांतवाली समधन का खाने का शौक भी अजीब है । वह जोंधरा (भुट्टा) खाना चाहती है । अजीब बात है, भड़ौनी-गीत भी लगता है कि गालियों और फब्तियों का अजायबघर है । जीवन के हर प्रसंग, हर चरित्र और हर स्थिति पर वह अपनी पहुंच रखती है । वह भड़ौनी-गीत खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन और तमाम क्रिया-कलापों पर अत्यधिक चुटीला और मारक है । इससे संबंधियों पर कोई आंच नहीं आती, बल्कि संबंधियों के लिए ये गाली-गीत स्मरण किये जाते हैं—

दार बोरे थोरे-थारे
बरा भइये थारे रे
आए हे समधिन डौकी
दांत ल निपारे रे
आमा पान के तुलरू
लिमोवा छू-छू जाय रे
हमर समधिन चटक चंदेनी
गांव-गांव डौका बनाय रे
बड़े-बड़े रमकेलिया चानी
बीच मं गुदा भराय रे
चटक चंदैनी समधिन हमर
रेंगत कन्हिया मटकाय रे

चांदनी-सी छिटकी हुई चटक चंदैनी-जैसी हमारी समधन की बात निराली है । वह गांव-गांव घूम-घूमकर कमर लचकाती-मटकाती और दूल्हे बनाती है ।

छत्तीसगढ़ के इन भड़ौनी-गीतों की विशेषता एवं मनोवैज्ञानिक सच यह है कि शादी-विवाह के बाद मायके-ससुरालवालों में विभिन्न व्यवहारों, आचार-विचारों, लेन-देन और खान-पान को लेकर जो बखेड़ा उठता है, उसे तो बेटी-दामाद और बहू-बेटे का ख्यालकर दोनों पक्ष को काफी आत्मनियंत्रण और संयम से काम लेना पड़ता है । कोई भी झगड़ा, गाली-गलौज और तू-तू, मैं-मैं को भी खून का घूंट पीकर भी सहना पड़ता है, इसलिए जो भी ऐसी स्थिति है उस भावी स्थिति के बदले में भड़ौनी-गीत गाकर पहले से मीठी गालियां देने का एक नेग, एक रस्म रख दिया गया है, ताकि यह दस्तूर लड़ाई-झगड़े और गाली-गलौज की सचाई को झुठला सकने में कुछ योगदान करें ।

भड़ौनी-गीतों का एक संदेश यह भी है कि आदमी गीत मनोरंजन के लिए सुनता-गाता है, लेकिन गाली-गलौज में मनोरंजन तत्त्व का अभाव है इसलिए गाली और गीत दोनों को मिलाकर, एक गाली-मनोरंजन करना भी है ।

भड़ौनी-गीत से विवाह में बेहद हास्य, व्यंग्य और भरपूर मनोरंजन होता है, पूरे रस्मो-रिवाज में भड़ौनी-गीत ही सर्वाधिक मनोरंजक और दिलचस्प है ।

— पो.—राजिम, जिला—रायपुर, ४९३८८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तबादला दूसरे राज्य में

प्रभात किरण, अरेराज (बिहार) मेरी मां पश्चिम बंगाल में प्रखंड विकास कार्यालय में कार्यरत है, जबकि मेरे पिता बिहार में राजकीय माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक हैं। क्या मेरी मां का तबादला बिहार के प्रखंड विकास कार्यालय में हो सकता है ?

आपकी माताजी पश्चिम बंगाल और पिताजी बिहार सरकार के अंतर्गत कार्य कर रहे हैं। दोनों विभागों का एक-दूसरे से कोई संबंध नहीं है। एक ही विभाग या सेवा में एक स्थान से दूसरे स्थान पर तबादला हो सकता है। एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाना तबादले के अंतर्गत नहीं आता। उसके लिए आपको बिहार में नियमानुसार आवेदन देकर अपनी मां की बिहार में नियुक्ति के प्रयास करने होंगे।

बिजली की चोरी

असलम बेग : हमने एक दूकान किराये पर दे रखी है। उसमें बिजली का कनेक्शन हमारे नाम से है। किरायेदार विद्युत चोरी करता है। यदि ऐसी दशा में कभी वह पकड़ा जाए तो जुर्माना या दंड किस पर होगा ? यदि हम पर होगा, तो हमें क्या करना चाहिए ?

आपका किरायेदार विद्युत चोरी कर रहा है। एक संभ्रांत नागरिक का उत्तरदायित्व है कि वह कानून तोड़नेवाले लोगों के बारे में विभाग को जानकारी दे। इसलिए अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए आपको विद्युत विभाग को जानकारी दे देनी चाहिए, जिससे चोरी करनेवाले के खिलाफ आवश्यक कार्यवाही हो सके।

यह ठीक है कि चोरी आपका किरायेदार कर रहा है, परंतु यह कार्य आपकी जानकारी में हो रहा है और मीटर कनैक्शन आपके नाम से है। आपके नाम से चल रहे मीटर पर चोरी होने के कारण आपके विरुद्ध कार्यवाही की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

संपत्ति का बंटवारा

मनोज कुमार श्रीवास्तव, पटना : बात आज से ४० वर्ष पहले की है। मेरे दादाजी दो भाई थे। दादाजी के छोटे भाई वन विभाग में काम करते थे। कार्य करते हुए वे किसी असामाजिक तत्व के हाथों मारे गये। सरकार ने अनुकंपा के आधार पर उनकी पत्नी को एक बीघा जमीन दे दी। उक्त जमीन में से मेरे दादाजी के परिवार अर्थात उनके पुत्रों को हिस्सा नहीं दिया गया। विदित हो कि दोनों दादाजी के बीच कोई अदालती बंटवारा संपत्ति का नहीं हुआ था। क्या कानूनी कार्यवाही कर हम उक्त जमीन में से हिस्सा ले सकते हैं ?

आपके दादाजी के भाई की हत्या कर दी गयी और उसके कारण अनुकंपा के आधार पर उनकी पत्नी को सरकार ने एक बीघा जमीन दे दी। यह जमीन उनकी पत्नी की निजी संपत्ति हो गयी और इस पर उसका पूर्ण स्वामित्व हो गया। आपके परिवार में बंटवारा हुआ या नहीं, यह एक अलग बात है परंतु वस्तुस्थिति यह है कि जमीन पर आपके शेष परिवार का अधिकार नहीं माना जा सकता। अतः इस मामले में कानून आपकी कोई मदद नहीं कर सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

धर्म परिवर्तन : गुजारा भत्ता

आर. के. लाल, चमोली (गढ़वाल) : मेरा विवाह दस वर्ष पहले हुआ जिससे पांच साल की एक लड़की है। मैंने जनवरी ९३ में ईसाई धर्म स्वीकार किया तो मेरी पत्नी ने मेरे साथ रहने से इनकार कर दिया और मुझसे गुजारा भत्ता की मांग का मुकदमा दायर कर दिया। मैं राजकीय कर्मचारी हूं। क्या मुझे धर्म-परिवर्तन के बावजूद गुजारा भत्ता देना पड़ेगा ? क्या मैं कानूनन दूसरा विवाह कर सकता हूं ?

आपने हिंदू पद्धति में विधिवत विवाह किया। उसके दस साल बाद आपने अपना धर्म-परिवर्तन कर लिया। इससे आपकी वैवाहिक स्थिति पर कोई अंतर नहीं पड़ता। आपकी पत्नी ने आपके धर्म परिवर्तन के बाद भी आपको तलाक नहीं दिया, न ही आपसे तलाक लेने की कोई इच्छा ही व्यक्त की। पत्नी के आपके साथ नहीं रहने से भी आपका वैवाहिक संबंध समाप्त नहीं हो जाता। किस कारण से आपकी पत्नी आपके पास नहीं रहना चाहती, इसका उल्लेख आपने नहीं किया। धर्म परिवर्तन के कारण गुजारा भत्ता देने का आपका उत्तरदायित्व समाप्त नहीं हो जाता। आपकी पत्नी अपने जीवनयापन के लिए भत्ता मांगने की अधिकारी हैं। धर्म परिवर्तन को गुजारा भत्ता नहीं देने के लिए ढाल नहीं बनाया जा सकता। वर्तमान स्थिति में आप दूसरा विवाह करने का भी अधिकार नहीं रखते।

प्रमाण-पत्र में गलती

सुनील, सागर : पिताजी की मृत्यु के बाद मेरी माताजी की नौकरी शिक्षिका पद पर हुई। गत दिनों मुझे आय प्रमाण-पत्र की आवश्यकता हुई तो मैंने फार्म में माताजी की कुल वार्षिक आय ३५,४१२ रुपये दर्शायी थी, और उसी आधार पर प्रमाण-पत्र बन गया, लेकिन मेरी भूल के कारण इस आय में माताजी को मिलनेवाली पिताजी के निधन के बाद मिल रही २०० रुपये प्रतिमाह की पेंशन राशि नहीं जुड़ पायी है। कहीं प्रमाणपत्र की इस गलती से माताजी पर कोई विभागीय कार्यवाही तो नहीं हो जाएगी ? क्या इस प्रमाण-पत्र को निरस्त कराया जा सकता है ?

प्रमाण-पत्र में हो गयी भूल का अब जब आपको आभास हो गया है, तो अब आप या तो उक्त प्रमाण-पत्र के संशोधन के लिए आवेदन कर दें या पूरी आय के आधार पर नया प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए आवेदन कर दें। भविष्य में आप पूरी आय प्रदर्शित करनेवाले प्रमाण-पत्र का उपयोग करें। आपकी माताजी ने अपनी नौकरी में उक्त प्रमाण-पत्र का उपयोग कोई लाभ उठाने के लिए नहीं किया है, इसलिए साधारणतयः उनकी नौकरी पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

प्रमाणपत्र विकलांगता का

एक बदनसीब छात्र, रांची : मैं बी. ए. का छात्र हूं। गत वर्ष एक मोटर दुर्घटना के कारण मेरे बायें पैर की बीचवाली अंगुली काट दी गयी जिसके कारण नसों के कटने एवं अंगुलियों की मुख्य हड्डी के टूटकर चूर हो जाने के कारण मैं पैर घसीटकर ही चल पाता हूं क्योंकि बची हुई अंगुलियां काम ही नहीं करतीं। मैंने रांची स्थित असैनिक शल्य मुख्य चिकित्सक के पास विकलांगता के प्रमाणपत्र के लिए आवेदन किया था, पर मुझे उन्होंने विकलांग श्रेणी में नहीं रखा। बताएं कि मैं क्या करूं ?

विकलांगता का निर्धारण सरकार द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोनीत डॉक्टर, सर्जन या चिकित्सालयों में किया जाता है । विकलांगता किस सीमा तक है तथा क्या संबंधित व्यक्ति को विकलांग मानना चाहिए या नहीं, यह निर्णय वही अधिकारी करते हैं । शरीर के किसी भी अंग पर आघात लगने के आधार पर किसी व्यक्ति को विकलांग मानकर विशेष सुविधा का पात्र नहीं माना जा सकता ।

साझी जमीन

सै. हफीजुर्रहमान, जनपद मऊ (उ. प्र.) : मैंने एक दोस्त के साथ मिलकर नगरपालिका क्षेत्र में २६६ वर्गगज जमीन खरीदी है । जमीन की रजिस्ट्री दोनों के नाम से हुई है । क्या मैं और मेरा दोस्त जमीन को बराबर-बराबर बांटकर अपने-अपने मकान बनवा सकते हैं । बाद में कोई कानूनी परेशानी तो नहीं खड़ी होगी ।

नगर पालिका क्षेत्र में आनेवाली जमीन पर मकान बनाने के लिए नगरपालिका की पूर्व स्वीकृति आवश्यक है । आप दोनों अपने प्रस्तावित मकान के नक्शे नगरपालिका में स्वीकृति के लिए भेज दें । स्वीकृति प्राप्त होने के बाद मकान बनाने में कोई परेशानी नहीं होगी । साधारणतयः जमीन के एक प्लाट का विभाजन नगरपालिका की अनुमति से ही किया जा सकता है । इसलिए आपको प्लाट के विभाजन की अनुमति लेने के लिए भी आवेदन देना होगा ।

वैध टिकट होने पर भी

ओमप्रकाश पांडेय, सिद्धार्थ नगर : पिछले दिनों हम कई लोगों ने रेलवे के सर्कुलर रूट पास के माध्यम से गोरखपुर-हरिद्वार-बैजनाथधाम-गोरखपुर की यात्रा की थी, परंतु आरक्षण नहीं करा सके थे । हर स्थल पर स्लीपर क्लास के डिब्बे में शायिका या सीट उपलब्ध होने पर आरक्षण कराकर यात्रा करते रहे । एक स्थल पर रात्रि में डिब्बे के परिचालक ने हमें स्लीपर क्लास में यात्रा करने से रोक दिया क्योंकि हमारे पास आरक्षण नहीं था, जबकि हम लोगों ने डिब्बे में खड़े होकर या जमीन पर बैठकर यात्रा की अनुमति चाही थी, और यह भी अनुरोध किया कि आगे कहीं सीटों के खाली होने पर हमारा आरक्षण कर दें, परंतु उसने मना ही नहीं किया, बल्कि बलात हम लोगों को उतरवा दिया । जिससे हम सभी को बहुत ही मानसिक आघात पहुंचा ।

शायिकावाले डिब्बे में आरक्षण होने पर ही यात्रा की अनुमति दी जाती है । स्थान उपलब्ध होने पर परिचालक डिब्बे में आरक्षण शुल्क लेकर आरक्षण कर देते हैं । स्थान उपलब्ध न होने की स्थिति में किसी भी व्यक्ति को रात्रि में उक्त डिब्बों में रहने की अनुमति नहीं दी जा सकती ।

इसलिए आपको उस डिब्बे से नीचे उतारना नियमानुसार ठीक ही था । आप ऐसे डिब्बे में जो बगैर आरक्षणवाले व्यक्तियों के लिए रहता है, बैठ सकते थे और जिस स्टेशन पर आरक्षण हेतु स्थान उपलब्ध होने की संभावना थी, परिचालक से मिलकर आरक्षण करवाकर, आरक्षणवाले डिब्बे में यात्रा प्रारंभ कर सकते थे । आपका टिकट वैध अवश्य था परंतु वह एक विशेष डिब्बे में, जिसमें आरक्षण के आधार पर ही यात्रा की जा सकती है, बैठने का अधिकार नहीं देता था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

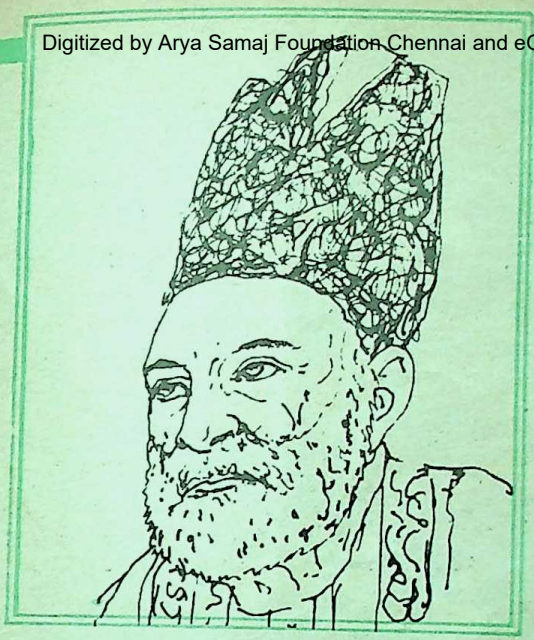

लीजिए, हाजिर है गालिब की प्रेमिका !

● अरुण सिंह

अपनी मृत्यु से दो तीन वर्ष पूर्व गालिब ने अपने दोस्त को लिखे एक पत्र में अपनी हालत को फारसी शायर अनवरी की कुछ पंक्तियों से कुछ इस तरह दर्शाया था

ज''अफसोस ऐसा कोई संरक्षक नहीं है जो मेरी तारीफों के काबिल हो, अफसोस ऐसी कोई महबूबा नहीं जो मेरी शायरी को प्रेरित कर सके !''

वलेकिन शायद ऐसा नहीं था । गालिब के कई प्रेम संबंध रहे थे । तभी तो अपने प्रेम दर्शन के बारे में गालिब ने अपने दोस्त हातिम अली बेग मिहिर को एक पत्र में लिखा था

''जब मैं जवानी से भरपूर युवक था तो एक समझदार व्यक्ति ने मुझे एक नेक सलाह दी थी 'संयम का मैं अनुमोदन नहीं करूंगा । आवारागर्दी के लिए मैं मना नहीं करूंगा । खाओ, पियो और मौज मनाओ । लेकिन याद रखो । समझदार मक्खी चीनी पर बैठती है, शहद पर नहीं' सो मैं हमेशा उसकी सलाहों पर चला—अगर तुम प्रेम के बंधन से बंधना ही चाहो तो मुन्ना जान उतनी ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी है, जितनी चुन्ना जान । मैं जब भी जन्नत के बारे में सोचता हूं और इस बात पर गौर करता हूं कि अगर मेरे गुनाह माफ कर दिए जाएं और मुझे एक महल में एक हूर के साथ हमेशा के लिए रख दिया जाए तो मैं यह सोचकर डर जाता हूं कि हमेशा एक ही औरत के साथ कैसे रह पाऊंगा । इस विचार से ही मेरा कलेजा मुंह को चला आता है—मेरे भाई, होश में आओ, और अपने लिए किसी दूसरी को ले आओ । हर आने वाले बसंत के लिए एक नयी महबूबा लाओ ।''

गालिब की परिस्थितियों ने शायद उन्हें ऐसा सोचने को मजबूर कर दिया था । मिर्जा गालिब के वालिद अब्दुल्लाबेग खां का देहांत, जब वे चार वर्ष के थे, तभी हो गया था । उनका तथा उनका परिवार उनके चाचा नसरूलाबेग खां के संरक्षण में आ गया । नसरूल्लाबेग खां आगरा किले के नायक थे । वे अक्सर जंग के मैदान में रहते थे । एक दिन वे हाथी से गिर पड़े और उन्हें इतनी चोट आयी कि उनकी मृत्यु हो गयी । उनकी मृत्यु से गालिब और उनका परिवार का कोई संरक्षक नहीं रह गया । परिवार के लिए रोटी जुटाने की जद्दोजहद उन्हें ही करनी पड़ी और दूसरी कि उनकी शादी भी जब वे सिर्फ तेरह वर्ष के थे, फिरोजपुर झिरका और लोहारू के नवाब अहमदबख्श खां के छोटे भाई इलाहीबख्श खां की लड़की के साथ हो गयी थी । ये लोग दिल्ली में रहते थे । संभवतः इन्हीं परिस्थितियों में गालिब ने अपने ऊपर नियंत्रण रखने का फैसला कर लिया था । वह खुद को किसी के प्यार में खो नहीं देना चाहते थे । इसलिए उन्होंने अपने आवेगों पर नियंत्रण रखा । लेकिन फिर भी एक नाचने-गाने वाली हिंदू लड़की (डोमनी) थी, जिसका गहरा असर

गालिब की परिस्थितियों ने शायद उन्हें ऐसा सोचने को मजबूर कर दिया था । मिर्जा गालिब के वालिद अब्दुल्ला बेग खां का देहांत, जब वे चार वर्ष के थे, तभी हो गया था । ...वह खुद को किसी के प्यार में खो नहीं देना चाहते थे । इसलिए उन्होंने अपने आवेगों पर नियंत्रण रखा ।

गालिब के दिलो दिमाग पर था । वे उससे बेइंतहा मुहब्बत भी करते थे । डोमनी का अर्थ है—'नाचने-गाने वाली' । तभी तो उसकी अकाल मौत पर मर्माहत हो उन्होंने एक मरसिया लिखा था । मरसिया की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है :—

दर्द से मेरे है तुझको बेकरारी हाय हाय
क्या हुई जालिम तिरी गफलत शिआरी हाय हाय
तेरे दिल में गर न था आशोबे-गम का हौसला
तूने फिर क्यों की थी मेरी गमगुसारी हाय हाय
शर्मे रूसवाई से जा छुपना नकाब-खाक में
खत्म है उल्फत की तुझ पर परदादारी हाय हाय
इश्क ने पकड़ा न था, 'गालिब' अभी वहशत का रंग
रह गया था दिन में जो कुछ जौके-ख्वारी हाय हाय—

डोमनी किसी अच्छे खानदान से थी, क्योंकि इस मरसिये में ऐसा संकेत है कि उसने इस डर से कि उसका और गालिब का प्रेम संबंध उनके घरवालों और दुनिया वालों की नजरों में बदनामी का कारण बन रहा है, संभवतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गालिब अकादमी, निजामुद्दीन, नयी दिल्ली, में गालिब और डोमनी की प्रतिमाएं

आत्महत्या कर ली थी । अगर वह कोई मामूली नाचने-गाने वाली होती तो शायद ऐसा नहीं करती । गालिब के युवा हृदय पर इस प्रेम संबंध ने जर्बदस्त प्रभाव डाला था । किंतु गालिब इस स्थिति से उबरना चाह रहे थे । अपने आप को बहलाने के लिए उन्होंने एक नया दर्शन गढ़ लिया था ।

मोमबत्ती के बुझने पर पतंगे को क्यों दुखी होना चाहिए...एक गुलाब के मुरझाकर बिखर जाने पर बुलबुल क्यों शोक मनाये...

उन्हीं दिनों उन्होंने अपने एक दोस्त को लिखा था, ''हालांकि दुःख अभी तक मेरी आत्मा को चीर रहा है और जुदाई का दर्द मेरे हृदय को चूर-चूर कर रहा है, फिर भी सच तो यह है कि सच्चे व्यक्ति के लिए सत्य दुःखदायी नहीं होता है । मोमबत्ती के बुझने पर पतंगे को क्यों दुखी होना चाहिए । एक गुलाब के मुरझाकर बिखर जाने पर बुलबुल क्यों शोक मनाये । एक व्यक्ति को चाहिए कि वह रंग और खुशबुओं के संसार को अपने हृदय को जीत लेने दे, न कि उसे एकाकी प्रेम की बेड़ियों में बंधने दे । अच्छा तो यह है कि इच्छाओं के समूह में से वह अपने लिए खुशियां और शांति तलाशे । और अपने आगोश में कुछ आह्लादकारी सौंदर्य समेट लो जो उसके टूटे हुए दिल को फिर से जोड़ दे और उसे अपना ले ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

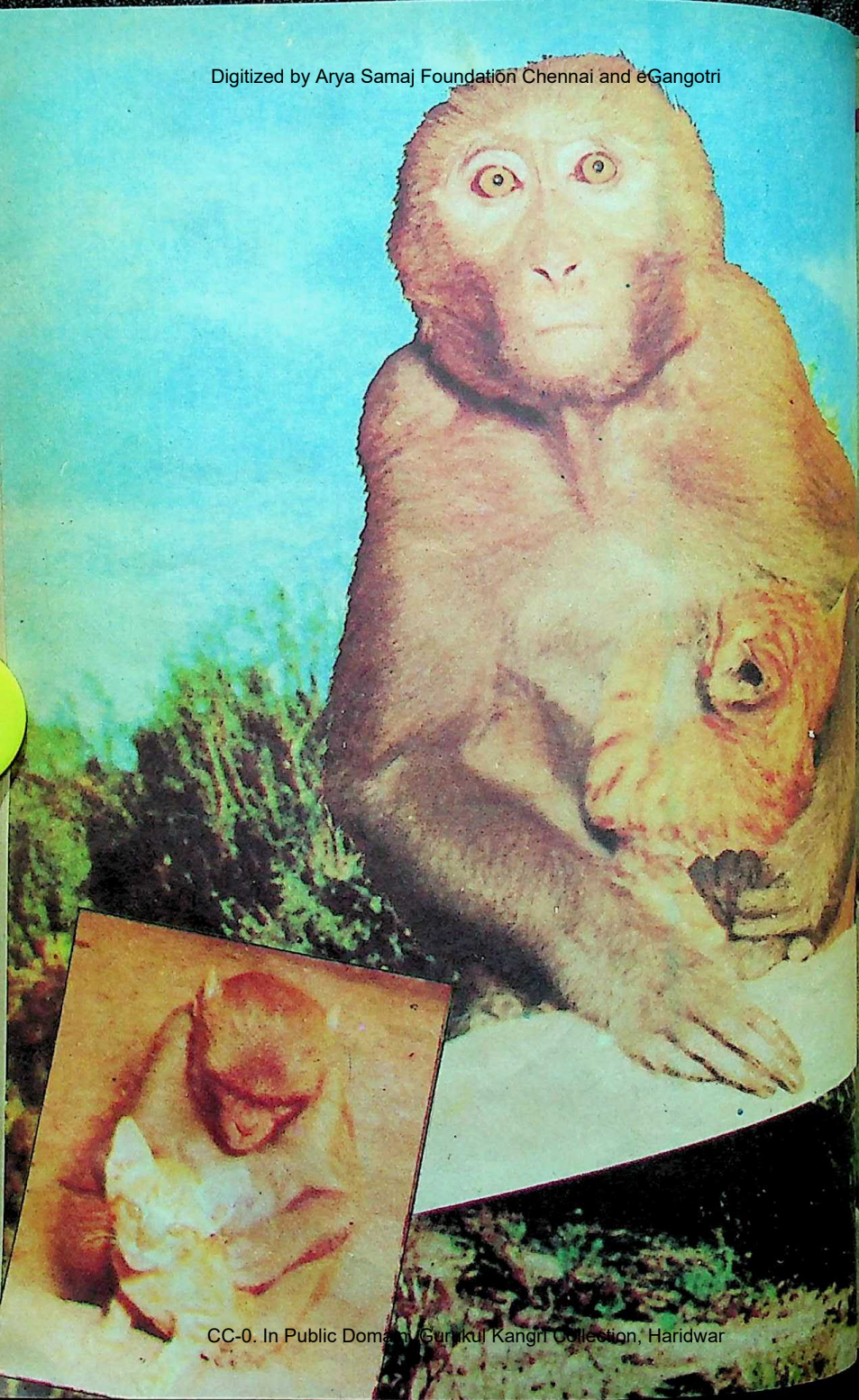

आ
के
व
है

मा
है
लिए दुनि
को तैयार
मातृत्
अपने बच
विस्तार भ
भावना से
आपस
मातृत्व-भा
वह बड़ी
प्यार व दुर
प्रकार जन्
रोचक घट
मादा गोरि

अमरीक
गोरिल्ला है
भाषा सीखी
करती थी,
उस बिल्ली
एक कार दु
उदासीन रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपसी जातीय दुश्मनी होते हुए भी मातृत्व-भावना से दूसरी जाति के बच्चे की रक्षा वह बड़ी सहजता से करती है । उसे मां का प्यार व दुलार वह उसी प्रकार देती है, जिस प्रकार जन्म देने वाली मां देती है । इसकी कुछ रोचक घटनाएं इस प्रकार हैं—

प्रेम से भरे ये मूक पशु

मातृत्व की भावना प्राणिमात्र में प्रबल होती है । इसके लिए मादा अपने बच्चे के लिए दुनिया की कठिन से कठिन यातना सहने को तैयार रहती है ।

मातृत्व की यह भावना सिर्फ प्राणियों में अपने बच्चे तक ही समिति नहीं रहती, यह विस्तार भी लेती है । संपूर्ण प्राणी जगत इस भावना से ओत-प्रोत है ।

आपसी जातीय दुश्मनी होते हुए भी मातृत्व-भावना से दूसरी जाति के बच्चे की रक्षा वह बड़ी सहजता से करती है । उसे मां का प्यार व दुलार वह उसी प्रकार देती है, जिस प्रकार जन्म देने वाली मां देती है । इसकी कुछ रोचक घटनाएं इस प्रकार हैं—

मादा गोरिल्ला कोको की नन्हीं सहेली लिपिस्टिक

अमरीका में कोको नाम की एक मादा गोरिल्ला है, १४ वर्षों तक उसने संकेतों की भाषा सीखी है । कोको एक बिल्ली से प्यार करती थी, उसको छाती से चिपकाकर रखती । उस बिल्ली का नाम था ऑल बाब । ऑलबाब एक कार दुर्घटना में मर गयी । इससे कोको उदासीन रहने लगी । सहेली का बिछड़ जाना उसके लिए सहनीय न था । उसका मन बहलाने के लिए दूसरी बिल्ली लायी गयी । उसका नाम लिपिस्टिक था । पहले तो उसने उस पर गौर नहीं किया, लेकिन धीरे-धीरे कोको का उसके लिए स्नेह उमड़ पड़ा । बिल्ली डर के मारे उसके पास नहीं जाती थी, लेकिन समय के साथ-साथ अब कोको उसे दुलारती है । उससे खेलती है और उसे गुदगुदाती भी है ।

जंगली जानवरों ने पाला

इसी प्रकार की एक घटना भारत में घटी । उत्तर प्रदेश का एक बच्चा रामू अपने मां-बाप से बचपन में ही बिछुड़ गया । जंगल के जानवरों के साथ वह रहा । किसी जंगली मां ने उसे दूध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिलाया । पाला-पोसा और बड़ा किया । समय और संगति के साथ वह जब बड़ा हुआ, तब वह पैरों से चलकर जंगली जानवरों की तरह चार पांव जैसा चलने लगा । उनके बीच रहने से वह उन्हीं की मूक भाषा जानता है । मनुष्य की बोली वह नहीं बोल सकता । जब बालक को जंगली जानवरों से अलग किया गया, तब उसे मनुष्यों की तरह रहने-सहने का प्रशिक्षण दिया जाने लगा ।

दोस्त से भी बढ़कर

मनुष्य जानवरों पर चाहे कितने ही जुल्म कर दे, पर जानवर मनुष्य के साथ वफादारी निभाते हैं । माना जाता है कि मनुष्य के प्रति सबसे ज्यादा वफादार जानवर कुत्ता और घोड़ा होता है । मालिक के लिए तो वह अपनी जान तक दे देता है, लेकिन ऐसी भी मिसालें हैं, जहां कुत्तों ने मनुष्यों की जानें भी बचाई हैं । हाल ही में दिल्ली में कुत्ते के पालक को किसी ने मार दिया, कुत्ता घर न आकर एक गटर के ऊपर बैठ गया, और वापस आने को तैयार ही न था । इससे पुलिस को कुछ संदेह हुआ, तो उन्होंने गटर को खोला तो उसमें कुत्ते के मालिक की मृत देह मिली ।

ऐसे ही उदाहरण हैं—स्वीट्जरलैंड और इटली के बीच आल्पस पर्वत के ऊंचे-ऊंचे शिखर । इन शिखरों पर वर्षभर बर्फ गिरी रहती है । भूमि बर्फ से ढकी रहती है । वहीं एक मठ है । उस मठ के पादरी कुत्ते पालते हैं । इनके पास सेंटबरनार्ड जाति के दो कुत्ते हैं । यह वहां बर्फ में फंसे हुए व्यक्तियों का पता लगाते हैं और उन्हें ठिकाने तक पहुंचाते हैं । इस कार्य में जब पादरी देखते हैं कि शिखरों की ओर गया व्यक्ति वापस नहीं आया, तब दो कुत्तों को लेकर उसकी ढूंढ़ होती है । इसमें एक कुत्ते के गले में शराब की बोतलें लटका दी जाती हैं और दूसरे कुत्ते पर गरम कपड़े लाद दिए जाते हैं । फिर इनको बर्फ से ढकी पहाड़ियों पर छोड़ दिया जाता है । वह कुत्ते ढूंढ़ते हुए फंसे हुए लोगों के पास जाते और उन्हें शराब और गरम कपड़े देते हैं । इस प्रकार एक कुत्ते ने २२ व्यक्तियों की जान बचायी ।

पहले इंगलैंड और स्काटलैंड में भागे हुए कैदियों तथा अपराधियों की खोज का काम कुत्तों से लिया जाता था । महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल में आयरलैंड के राजद्रोह के दमन के लिए भेजी गयी सेना में ८०० खूंखार हाउंड भी थे । आज दुनिया का हर देश कुत्तों के माध्यम से अपराधियों की खोजबीन करता है ।

कुत्तों को जासूसी के लिए प्रशिक्षित भी किया जाता है । ब्रिटिश सेना में अल्सेशियन और लेब्रोडोर नस्ल के कुत्तों को जासूसी का प्रशिक्षण दिया जाता है ।

हमारे अस्तित्व को बनाये रखने में यह मूक जानवर हमारा साथ निरंतर दे रहे हैं । आज चाहे मनुष्य ने विज्ञान को ऊंची से ऊंची चोटी को पार क्यों न कर दिया हो, पर गौर से देखें तो उन शिखरों तक पहुंचाने में जानवरों का हाथ रहा है । विज्ञान के नये-नये प्रयोगों का शिकार बेचारा पहले मूक जानवर ही होता है, पूर्व सोवियत यूनियन ने अंतरिक्ष में 'लाइका' नाम की कुतिया को भेजा था । आज भी अंतरिक्ष में बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाओं को स्थापित कर मनुष्य उसमें पारिस्थितिकीय अध्ययन के लिए सभी जीवधारियों को अंतरिक्ष में ले जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता है। प्रकृति में हर प्राणी एक दूसरे के पूरक हैं।

वर्षों पहले अमरीका में एक सर्वेक्षण हुआ उसमें पाया गया कि कुत्ते के परिवार का प्राणी भेड़िया अमरीकी भूमि से समाप्त हो रहा है, यह प्राणी बड़ा बुद्धिमान है। अमरीका के ४८ राज्यों में केवल गिनती के १,७५० बचे हैं। अठारवीं शताब्दी के अंतिम दौर में जिन स्थानों पर भेड़िए जंगलों में रहते थे, उन स्थानों के जंगली जानवरों को मनुष्यों द्वारा मारा गया। इस कारण जब उनका शिकार छिन गया, तब भेड़ियों ने भेड़-बकरियों और अन्य पालतू जानवरों को अपना शिकार बनाया। वहां के लोगों को यह क्षति बर्दाश्त नहीं हुई, फलस्वरूप भेड़ियों का सफाया होने लगा। आज अमरीका में इस जाति को बचाने की कोशिश हो रही है।

बिल्ली

इसी प्रकार उत्तरी मध्य एवं दक्षिण अमरीकी निवासी जंगली बिल्ली 'जगुआरूंदी' का जीवन भी समाप्ति पर है। जंगली छोटी बिल्लियों की २८ प्रजातियों में से यह एक है। यह पेड़ों पर चढ़ने के बजाय तैरना पसंद करती है। यह लाल-भूरी व काले रंग की होती हैं। वैसे पालतू बिल्ली मनुष्य की अच्छी दोस्त होती है। मूक भाषा में उनका व्यवहार बहुत कुछ अपने मालिक को बताता है।

ध्रुवीय भालू

आज ध्रुवीय भालुओं का जीवन भी संकट में पड़ गया है। जब से आर्कटिक प्रदेश में मनुष्यों की गतिविधि तेज हुई है, तब से ध्रुवीय भालुओं की संख्या कम हो गयी है। चार पैरों वाले प्राणियों में सबसे तीव्र गति के तैराक यह

भालू हैं। यह उत्तरी ध्रुव का प्राणी है। उत्तरी कनाडा, रूस, नार्वे, ग्रीनलैंड और संयुक्त राज्य अमरीका के तटीय क्षेत्रों में भी यह रहता है। यह छह मील प्रति घंटे की रफ़्तार से तैरते हैं।

वह मां न बन सकी

हाल ही में एक समाचार पढ़ने को मिला—कलकत्ता में मुख्यमंत्री निवास से सटा एक अभयारण्य है। यहां एक मादा लोमड़ी प्रसव पीड़ा से कराह रही थी, उसके कारण मुख्यमंत्री निवास के लोगों की नींद में खलल मची, पुलिस ने शीघ्र उस बाड़े में जाकर बेचारी को डंडों से बुरी तरह पीटा। इस कारण बेचारी का गर्भपात हो गया। वन विभाग ने दुर्लभ जानवर की तरह उसे वहां पाला-पोसा था, लेकिन प्रशासनिक क्रूरता ने बेचारी का मातृत्व ही उजाड़ दिया।

क्या हम ऐसी क्रूर हमलों से अपनी पृथ्वी की रक्षा कर पाएंगे ? — मंजुला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो-दो ब्रिटिश फील्ड-मार्शलों को धूल चटानेवाला भारतीय

● धर्मेन्द्र गौड़

घोष ने अपना काम बड़ी तेजी से शुरू किया। एक-से-एक धाकड़ शातिर बदमाशों की भरती की और उन्हें जबरदस्त तोड़-फोड़, आगजनी के कामों में ईस्टर्न वारफेयर स्कूल, खड़गवासला में प्रशिक्षित किया जाने लगा। ट्रेनिंग हासिल किये हुए पहले बैच को बेनजीर की सुपुर्दगी में दिया गया और वे चार-चार, छह-छह की टोलियों में युद्ध-रेखा के पीछे मांगडान, बुथीडांग, रुथीडांग, क्याक्ताँ, द्वावाइक और आक्याब के इलाकों में अराकानी मुसलमानों के बीच प्रचार करने के लिए चारों ओर फैल गये। उन दिनों यह इलाका पूरी तरह से जापानियों के कब्जे में था। घोष के इन तोड़-फोड़ करने वालों की संख्या पूरी पचास हजार थी, जिनका न्यूनतम वेतन पांच सौ रुपये मासिक था और अधिक से अधिक की कोई सीमा नहीं थी।

बेनजीर का योगदान

इन एजेंटों को कॉक्स बाजार, अराकान योमा, आदि पहाड़ी इलाकों से भरती किया गया था। वे बेनज़ीर का बड़ा सम्मान करते थे और उसके इशारे को हुक्म मानते थे। उन्हें जंगल-युद्ध में माहिर करके तीन भागों में बांटा गया—१, 'गोरिल्ला'। इनका काम था लगातार जंगल-युद्ध करके दुश्मन की 'सप्लाइन', काटना और तोड़फोड़ करके उनकी रसद, गोला-बारूद, हथियारों आदि से वंचित रखना। २. 'फिलीबस्टर्स'। इन का काम लड़ना और तोड़फोड़ करना तो था ही, अपने गोरिल्लों को खाना-पानी, हथियार, गोला-बारूद भी लगातार पहुंचाते रहना। ३. 'सैटिलर्स'। इन का काम अराकान में दाखिल होकर खेतिहर भूमि पर कब्जा करके उनमें अपनी फसलें उगाना। इस प्रकार दुश्मन के आगमन पर अपने घरवालों की रक्षा करने के लिए वे उनसे पूरी तरह मोरचा भी ले सकते थे। देखते-देखते असम, बंगाल, बरमा, ब्रिटिश मलाया और सिंगापुर में फोर्स वन-थ्री-सिक्स एजेंटों का जाल-सा बिछ गया।

बेशुमार रुपया-पैसा खर्च करने की ओर पूरी छूट थी। मिनटों की नोटिस पर किसी मात्रा में अपने निकटतम आर्मी हेडक्वार्टर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वी क्षेत्र में कार्यरत एक ऐसे इंडियन सिविल सर्विस अफसर की दास्तान है यह, जिसकी अनोखी सूझबूझ से अराकान मोरचे पर अंगरेजों को अप्रत्याशित सफलता मिली, वरना सुंदर वन के रास्ते भारत पर कब्जा करने में जापानियों को देर ही कितनी लगती । जिस काम में अंगरेजों के दो-दो मशहूर फील्ड मार्शल (वेवल और अलेक्ज़ेंडर) सफल न हो सके, उस सफलता का सेहरा बंधा इस आई. सी. एस. अफसर के सिर पर । लेकिन, इस अहसान का बदला दिया गया उस अफसर पर झूठे-सच्चे इलजाम थोपकर, उल्टी-सीधी तोहमत जड़कर, भरी अदालत में रुसवा करके ।

लड़ाई का साजो-सामान, हथियार, गोला-बारूद, गोलियां, ग्रिनेड, ट्रांसमीटर, दवा-दारू, राशन-पानी हासिल कर सकते थे ।

खान बहादुर फजलुल करीम और अफजल करीम पूरी लगन और पक्के इरादे से घोष का काम कर रहे थे । खान बहादुर ने रोशन जान पेशावरी नामक एक लाजवाब एजेंट भी घोष को नजर किया । उसे फौरन एक हजार रुपये मासिक वेतन पर रख लिया गया । बरमा में मुसलमानों का प्रभावशाली नेता लंगड़ा सुलतान और टेंबे भी घोष की मदद करने में लग गये । इन तीनों ने घोष के एजेंटों के लिए बरमा में विध्वंसकारी अभियानों की गहरी और मजबूत नींव डाली थी ।

घोष ने अपने कुछ एजेंटों को बड़े शिकार के मामलों में तो ट्रेनिंग दी ही, उन्हें यह भी बताया कि किस प्रकार झूठे निशान पीछे छोड़े जाते हैं, जिससे पीछा करनेवाले उनका पता ही न लगा सकें और वे गलत रास्ता अपनाकर भटक जाएं । बांसों से पीने का पानी निकालना और बेतों से भोजन उपलब्ध करना भी बताया । इस प्रकार घोष ने 'साइलेंट किलर्स (चुपचाप हत्या करने वालों) की पूरी फौज ही खड़ी कर दी, जिसे न राशन-पानी की चिंता थी, न सवारी की । वे जंगल में जहां चाहते छिपते, और दुश्मन को चुपचाप मौत की गोद में सुलाकर उनके पेट्रोल-भंडारों में आग लगाकर फिर छिप जाते । चूंकि उन्हें दुश्मन से अपने आप को पूरी तरह छिपाते हुए ही सब काम करने थे, इसलिए धारदार लंबे चाकुओं, कम बोर की राइफलों और ग्रिनेडों का ही इस्तेमाल किया गया ।

फोर्स वन-थ्री-सिक्स को जापानी हाई कमांड के 'ऑपरेशन सी' की पूर्व सूचना मिल चुकी थी, जिसके अनुसार उन्हें १० फरवरी, १९४३ तक अराकान की ओर से भारत में दाखिल हो जाना था । ७ फरवरी, १९४३ को विंगेट ब्रिगेड के चिंडिटों ने इम्फाल (भारत) से तामू (बरमा) की ओर मार्च किया । उन्हें जापानियों के यातायात साधन, पुल, सड़कें आदि नष्ट करनी थीं, जिससे दुश्मन को फौजी साजो-सामान, रसद आदि मुहैया न हो सके । लेकिन इस तोड़फोड़ और मारकाट के लिए तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोष अपने एजेंट पहले ही अराकान की ओर रवाना कर चुके थे ।

जापानियों से चोरी-छिपे मोरचा

घोष का खास मकसद था जापानियों से छिपे-छिपे मोरचा लेते हुए ब्रिटिश फौज को सांस लेने का मौका देना, जिनकी बुरी तरह पिटाई हो चुकी थी । जापानियों ने उनकी कसकर धुनाई की थी, एकमात्र यही तो उपाय था जिससे ब्रिटिश आर्मी बरमा में फिर से दाखिल हो । इन्हीं भूमिगत गोरिल्लों की वजह से विजेता जापानी सैनिक, जो तूफान की तरह अराकान में आ धमके थे, चटगांव में दाखिल हो ही नहीं पाये । जिन्होंने आगे बढ़ने का दुस्साहस किया, वे घोष द्वारा सुचारू रूप से फैलाये गये जाल में मकड़ी की तरह फंसते गये । लेकिन फोर्स वन-थ्री-सिक्स और घोष की असली तैयारी तो थी जापानियों को अराकान से खदेड़ने की, क्योंकि उसी रास्ते उन्हें बंगाल पर कब्जा करना था ।

ब्रिटिश सेना के गोरिल्ला कमांडर जनरल फेलेक्स विलियम से घोष की मुलाकातें होती रहीं । मेजर-जनरल सर ऑर्डे चार्ल्स विंगेट, जिन्हें मेजर ऑर्ड्स के ही नाम से जाना जाता था, से घोष के संबंध बहुत मधुर रहे । ७ मार्च १९४२ को जापानियों के हाथों बरमा से खदेड़े जाने के बाद फील्ड मार्शल वाइकाउंट आर्चिबाल्ड वेवल इस नतीजे पर पहुंचे कि बरमा—जैसे जंगली, सीधे और सपाट ढलानोंवाले पहाड़ी प्रदेश में जंगल-युद्ध किये बगैर छुटकारा नहीं । तभी तो अफरीका से जनरल विंगेट को तलब करके यह कठिन कार्य उन्हीं को सौंपा । अबीसीनिया के बीहड़ जंगलों में वेवल खूब देख चुके थे उनके जौहर । फ... आगमन के तुरंत बाद विंगेट ने पहले सेंट्रल इंडिया (वर्तमान मध्य प्रदेश) में छिंदवाड़ा, फिर पूना के निकट खड़गवासला में 'ईस्टर्न वारफेयर स्कूल' स्थापित किया, जिसे 'विंगेट गोरिल्ला सेंटर' के नाम से पुकारा जाने लगा । अगस्त १९४२ में अपनी पूरी ब्रिगेड के गुप्त सैनिकों को विंगेट ने यहीं गोरिल्ला युद्ध और अंदर घुसकर मार करने में प्रशिक्षित किया । कालन्तर में यही सैनिक 'विंगेट रेडर्स, 'विंगेट चिंडिट्स' और 'विंगेट सांभर्स' के नाम से विश्वविख्यात हुए ।

गोरिल्ला युद्ध

गोरिल्ला युद्ध में विंगेट ने भी घोष की महारत बेहिचक तसलीम की । वे भी घोष ... अराकान में गोरिल्ला युद्ध के बारे में घंटों विचार-विमर्श करते रहते थे । इसी आधार प... फोर्स वन-थ्री-सिक्स की 'चिंडिट आर्मी' खड़ी करके विंगेट ने तामू (बरमा) में प्रवेश किया उन्होंने उस क्षेत्र में तो जापानियों की रीढ़ की हड्डी ही तोड़कर रख दी । घोष की विंगेट से ... खूब पटती थी, लेकिन जनरल फेलेक्स विलियम उनके कारनामों, उनकी उपलब्धि... सदा जलते ही रहे । इसकी एक खास वजह थी । घोष चाहते थे कि पूर्वी बंगाल के हिंदू-मुसलिम सभी किसानों को ट्रेनिंग देकर हथियारों से लैस कर दिया जाए, जबकि विलियम बंगाली हिंदुओं को असलाह देने के सख्त खिलाफ थे । उन्हें तो बस मुसलमानों ही पूरा भरोसा था, जो उन दिनों अंगरेजों के पिट्ठू बने हुए थे । घोष अड़े रहे अपनी ... पर कि मेरी सभी बातें माननी ही होंगी । ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन-मुटाव की बस यही खास वजह थी । उधर, ब्रिटिश-इंडियन आर्मी में भी हिंदू-मुसलिम तनाव दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा था । घोष ने इन सभी बातों की शिकायत ऊंचे जनरलों से कर दी और उन्हें चेतावनी भी दे दी कि मेरे कामों में दखलंदाजी कतई न हो, वरना अंजाम अच्छा नहीं होगा ।

इस बिंदु पर घोष और ईस्टर्न आर्मी के जनरल-ऑफिसर-कमांडिंग जनरल सर जॉर्ज गिफर्ड के बीच भयंकर मतभेद पैदा हो गया । उन्होंने तभी जनरल सर एन. एम. एस. इरविन का कार्यभार संभाला था । घोष और इरविन के संबंध निहायत आलीशान रहे थे, मगर अब वह बात नहीं रही । जनरल गिफर्ड जलते थे घोष से, कि एक हिंदुस्तानी सिविलियन अफसर को यह गुरुतर भार कैसे सौंप दिया गया, जो बात-बात में हमें धौंस देता रहता है । घोष ने यह हकीकत भी लंदन के युद्ध-विभाग को लिख भेजी । युद्ध-विभाग ने घोष से माफी तो मांगी ही, जनरल गिफर्ड को भविष्य में ऐसा न करने के लिए कड़ी चेतावनी भी दी ।

सन १९४२ में जब घोष ने गोरिल्ला लड़ाकुओं की स्कीम पेश की थी, तो उसमें यह भी शामिल था कि अपने एजेंटों के जरिए असम और बंगाल की कुछ रेलवे लाइनों में तोड़फोड़ हमें स्वयं करानी होगी । हार्डिंज पुल के अलावा चटगांव, नारायणगंज और कलकत्ता के बंदरगाह भी बरबाद करने होंगे । इस क्रिया से बंगाल में दाखिल होने पर दुश्मन इनका लाभ ही नहीं उठा सकता था । संकीर्णता और ओछापन तो देखिए विचारों का, कि इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए भी अंगरेजों ने हिंदुओं

को हथियार देना मुनासिब नहीं समझा । घोष को तो यह पता नहीं था कि हिंदू-मुसलिम झगड़े कराकर अंत में अंगरेजों को भारत के टुकड़े कर ही देने हैं ।

आजाद हिंद फौज

नवम्बर १९४३ में आजाद हिंद फौज की पहली और दूसरी डिवीजनें रंगून से मार्च करके इम्फाल के मोरचे पर आ डटीं, तथा दो बटालियनें भयंकर बमबारी के बावजूद बीहड़ जंगलों, ऊंचे-ऊंचे पर्वतों, उत्तर से दक्षिण की ओर तेजी से बहती नदियों को पार करती हुई २९ दिसम्बर को जा पहुंचीं अराकान मोरचे पर । अपने अग्रिम मोरचों का दौरा करके २६ दिसम्बर को नेताजी सुभाष चंद्र बोस पोर्ट ब्लेयर पहुंच ही चुके थे अंदमान-निकोबार द्वीप समूहों की सैनिक स्थिति का जायजा लेने । अपने एजेंटों द्वारा घोष को ये सभी जानकारियां हासिल हो रही थीं, जिन्हें तुरंत रियर हेडक्वार्टर्स फोर्स वन-थ्री-सिक्स, ५३ ए, गरियाहाट रोड, बालीगंज कलकत्ता भेजा गया ।

आजाद हिंद फौज की गतिविधि देखते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७ नवम्बर १९४३ को स्टुअर्ट ने घोष को चीफ रिफ्यूजी अफसर नियुक्त करा दिया। शत्रु-अधिकृत क्षेत्र में अपनी जासूसी के खौफनाक इरादों को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लिए घोष और उनके साथियों का छद्मवेश अपनाना निहायत जरूरी था। शानदार तो था ही घोष का यह 'कवर' (छद्मवेश), अंत में जानलेवा भी बन गया।

जनरल सर जॉर्ज गिफर्ड की कमान में भारत-बरमा सीमा पर युद्ध की विभीषिका रंगत ला रही थी। दोनों ओर से घमासान युद्ध हो रहा था अंगरेजी सेना ने बुथीडांग पर जबरदस्त बमबारी की और हुकांग घाटी में ६२ वर्षीय लेफ्टिनेंट-जनरल स्टिलवैल के चीनी सैनिकों ने भयंकर मारकाट मचाई। इतना होते हुए भी उत्तरी बरमा के मोगांग और मिचिना क्षेत्रों में उमड़ती अनंत जापानी सेना का तो कहीं अंत ही नजर नहीं आ रहा था।

तभी अराकान के विजेता कर्नल तानाहाशी की नियुक्ति शाही जापानी सेना की ५५वीं डिवीजन के 'टास्क फोर्सेज' के कमांडर मेजर-जनरल सीजो सुकराई के साथ कर दी गयी। फिर तो दोनों ने मिलकर और भी गजब ढाया।

जापानियों द्वारा किये गये इस भीषण विनाश से स्टुअर्ट चिंतित हुए और मिकेंजी से सलाह-मशविरा करके तुरंत बर्बर हथियार अपनाने का आदेश दिया। पुणे के निकट देहू रोड स्थित 'पॉयजनस सब्सटेंस हेडकार्टर्स' पर गोलियों में विषैले फास्फोरेट पदार्थ मिलाये जाने लगे। इस क्रिया से इनकी आक्रामक शक्ति बेतहाशा बढ़ गयी। जापानी सैनिक कई-कई दिनों तक निकम्मे बने रहे। मस्टर्ड गैस इस्तेमाल करके उनमें मानसिक विकृति पैदा की जाने लगी। जहां तक मेरी व्यक्तिगत जानकारी है, इसका चंद रोज इस्तेमाल केवल अराकान फ्रंट पर ही किया गया था।

दिसम्बर १९४३ में घोष चटगांव की ओर बढ़े। जनरल इरविन ने घोष की जासूसी गतिविधि से मेजर जनरल लॉयड का परिचय कराया और आशा व्यक्त की कि उन्हें उनका और भी जोरदार समर्थन प्राप्त होता रहेगा। मिकेंजी के एक अति गोपनीय और व्यक्तिगत आदेश के अनुसार उस समय घोष, सोहराबजी और खान बहादुर फजलुल करीम ही पूर्व में तीन ऐसे विश्वसनीय भारतीय थे, जिनसे फोर्ट वन-थ्री-सिक्स उस समय भी संपर्क कायम रखता, जब यदि बंगाल भी अंगरेजों के हाथ से निकलकर जापानियों के कब्जे में चला जाता।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस

यह बात जनवरी १९४४ की है। इससे पहले १ जनवरी १९४४ को नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज का एडवांस हेडकार्टर्स रंगून में स्थापित कर लिया था। वे वहां जापानी कमांडर किबाने से मिले भी थे। फिर १८ मार्च १९४४ को आजाद हिंद फौज के बांके जवान मारते-काटते, सड़कें तोड़ते, पुल उड़ाते कोहिमा और मणिपुर तक आगे बढ़ गये और १४ अप्रैल १९४४ को नेताजी ने स्वयं अपने ही हाथों मोइरंग में भारत भूमि पर राष्ट्र झंडा फहराया था। लगातार दो महीनों तक घास खाकर, पत्ते चबाकर, नदी-नालों का पानी पीकर जूझे थे ये भारतीय वीर।

इस घटना से पहले अराकान युद्ध ने और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी भयंकर रूप धारण कर लिया था । जांबाज जापानी अपनी जान पर खेल रहे थे । अंगरेज बौखला गये और फरवरी १९४४ में रिजर्व में रखीं अपनी २६वीं और ७०वीं डिवीजनें भी लड़ाई के मैदान में झोंक दीं । लिबरेटर, मिचिल, वेलिंग्टन, ब्लेनहेम्स, वल्टीवेंजनेंस बमवर्षकों से अंधाधुंध बमबारी करके जापानियों की युद्ध-सामग्री लानेवाले सभी स्थल और जल-मार्ग रोक दिये । फोर्स वन-थ्री-सिक्स एजेंटों ने, जिनमें घोष के गोरिल्ले भी शामिल थे, उनकी रेलों और सड़कों को काम आने लायक नहीं रखा । यही वजह थी कि अधिकांश जापानी सैनिकों को बैंकाक से इम्फाल तक पंद्रह सौ किलोमीटर की दूरी पैदल ही तय करनी पड़ी । हमने उनकी रेलों और मोटरगाड़ियों का तो दौड़ना बंद कर दिया, लेकिन हमारा शक्तिशाली रॉयल एयरफोर्स जापानी सैनिकों को यह असंभव दूरी पैदल तय करने से रोक न सका ।

गले में लटकते केवल मुट्ठी-भर चावल के दानों के सहारे ही वे जूझ रहे थे । उनकी युद्ध-सामग्री खत्म हो चुकी थी । घोष के एजेंटों ने उनकी सप्लाई लाइन काटकर उनकी रसद का आना भी बंद कर दिया था । फिर भी उनकी दिलेरी सचमुच ऊंची थी-बहुत ऊंची ।

हसन सोहरावर्दी की भूमिका

मुसलिम लीगी नेता हसन शहीद सोहरावर्दी घोष से दुश्मनी रखने लगा । इसकी खास वजह थी कि जब घोष युद्ध-रेखा के पीछे होते तो सोहरावर्दी घोष के शरणार्थी शिविरों में जाकर राजनीतिक भाषण देता और मुसलमानों के बीच हिंदुओं के प्रति घृणा के बीज बोता । इस प्रकार वह वहां के मुसलमानों में अपना सिक्का जमाना चाहता था । घोष ने इस बात का एतराज किया । सरकार को भी आगाह कर दिया कि देश-विभाजन के बीज बोये जा रहे हैं, फिर बंगाल प्रांत के मुसलिम लीगी नेताओं को चेतावनी भी दे दी कि वे भूलकर भी उनके शरणार्थी शिविरों में कदम न रखें । लेकिन, सोहरावर्दी को इस बात की कहां परवाह । उसके कंधे पर तो अंगरेजों का हाथ था । वह घोष के शरणार्थी कैंपों में बिना उसकी पूर्व अनुमति के ही दाखिल होने लगा । ऐसे ही एक मौके पर घोष की गैरहाजिरी में उन्हीं के आदेश से सोहरावर्दी और उसके साथियों को मामूली घुसपैठियों की तरह पकड़ लिया गया । फिर घोष के आने पर ही सबको छोड़ा गया, इस चेतावनी के साथ कि भविष्य में फिर यहां आने की जुर्रत न करें । सोहरावर्दी इस बात को कभी भूला नहीं और घोष को मटियामेट करने की तदबीरें भिड़ाने लगा ।

आर. बी. लेगडन के माध्यम से फोर्स वन-थ्री-सिक्स घोष को बहुत ही अच्छा पारिश्रमिक देता था । लेगडन असम में कई चाय बागानों के मालिक थे । वे घोष के पुराने मित्र भी थे । लेगडन इस धनराशि का एक बड़ा भाग घोष के सॉलिसिटर-फाउलर एंड कंपनी के मालिक हेरी फाउलर के पास जमा कर दिया करते थे । यह सब सर गाल्विन स्टुअर्ट की सिफारिश पर ही किया गया था । घोष ने फाउलर से इतना अलबत्ता कहा था कि इस रकम को अच्छे से अच्छे काम में लगाया जाए । फाउलर ने घोष के लिए कलकत्ता में बिल्डिंगें खरीदनी शुरू कर दीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बेहतरीन कारगुजारी के फलस्वरूप सन १९४५ के शुरू में घोष की महत्ता काफी बढ़ गयी थी । और, लड़ाई खत्म होने पर घोष को दी गयी ताकत, रुतबा, धन-दौलत से अंगरेज चौंके । घोष हिंदू-मुसलिम एकता के प्रबल समर्थक थे । उन्होंने पहाड़ी आदिवासियों को जापान के खिलाफ करने में जबरदस्त कामयाबी हासिल की थी । यह काम था भी उन्हीं के बस का । सर गाल्विन स्टुअर्ट और सर कॉलिन मिकेंजी घबरा गये कि कहीं घोष इन्हीं को हिंदू-मुसलिम एकता के लिए आगे न खड़ा कर दें । इससे उनका बंगाल-विभाजन का ख्वाब हमेशा के लिए मिट्टी में मिल जाएगा । फोर्स वन-थ्री-सिक्स बंगाल-विभाजन के पक्ष में था और घोष उसके बेहद खिलाफ । बंगाल पर जापानी अधिकार भी नहीं हो पाया । अंगरेजों का घोष से मतलब भी निकल चुका था । फिर तो आनन-फानन में घोष को मिटा डालने का फैसला कर लिया गया । फैसला करनेवालों में थे सर गाल्विन स्टुअर्ट, जनरल सर गिफर्ड, हसन शहीद सोहरावर्दी, जो बाद में अविभाजित बंगाल का मुख्यमंत्री बना, खान बहादुर ई. ए. रे, और उनके साथी ।

घोष का विरोध

फोर्स वन-थ्री-सिक्स ने धन और रुतबे का लालच देकर कुछ और लोग तैयार किये । उन्होंने झूठे-सच्चे इलजाम लगाकर घोष के खिलाफ उल्टी-सीधी शिकायतें जड़ीं । लाखों सरकारी रुपयों की फिजूलखर्ची और गोलमाल के जुर्म में घोष को दंड का भागी बनाया गया । सामने से घोष की मुखालफत करनेवाले प्रमुख व्यक्ति थे इंडियन मेडिकल सर्विस के मेजर फिच (इन्हीं हजरत ने मेजर ड्रेक बोजमैन के सहयोग से भारत में हिंदू-मुसलिम दंगों और देश विभाजन की रूपरेखा तैयार की थी, जिसे 'पोस्ट क्विट प्लान' के नाम से जाना गया), चटगांव-ढाका के कमिश्नर मिस्टर जेमिसन । फिर अंत में तो बरमा के लिए अमरीकी और चीनी फौजों को छोड़कर ब्रिटिश लैण्ड फोर्सेज के कमांडर इन चीफ जनरल सर जॉर्ज गिफर्ड तक इस घिनौने काम पर उतर आये ।

इस साजिश को कार्यान्वित करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने खासतौर पर सन १९४४ का ऑर्डिनेंस ३८-ओ. एस. ५३/१९४४ पास किया, केवल घोष को सताने और उन्हें जलील करने के लिए । घोष की जमीन-जायदाद, शेयर, बीमे आदि जब्त कर उन्हें कटघरे में ला खड़ा किया, घोष की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर वे करें भी तो क्या ? सीधे पहुंचे सर गाल्विन स्टुअर्ट के पास । उन्होंने भी ठेंगा दिखा दिया और बोले, "आपको भरती करते समय ही पूरी तरह से आगाह कर दिया गया था कि अगर जाल में फंसते हो तो खुद ही निकलना होगा । आपकी सहायता करने का मतलब ही है फोर्स वन-थ्री-सिक्स—जैसी ब्रिटिश गुप्तचर संस्था को बेनकाब करना, जो हम किसी भी कीमत पर नहीं कर सकते ।" घोष ऐसे डूबे कि कहीं के न रहे । अराकान युद्ध की सफलता में उनका कितना महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, यह भूलने में अंगरेजों को तनिक देर न लगी ।

स्टुअर्ट ने सच ही कहा था । घोष भी जानते थे कि दुश्मन द्वारा पकड़े जाने पर असह्य यातनाएं सहने पर और मौत के मुंह में जाने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी फोर्स वन-थ्री-सिक्स उनकी मदद करके अपने आपको बेनकाब कभी नहीं करेगा ।

तभी घोष को पता चला कि उनके पुराने मित्र और फोर्स वन-थ्री-सिक्स के साथी आर. बी. लेगडन, जो उन दिनों इंगलैंड में थे, घोष की तरफ से अदालत के रू-ब-रू गवाही देने भारत आ रहे हैं । लेगडन को पूरी जानकारी थी कि यह पैसा कहां से और कितना आता था, और वे ही इसे घोष को देते थे । घोष की खुशी का ठिकाना न रहा । लेकिन, उनके भाग्य में तो कुछ और ही बदा था । फोर्स वन-थ्री-सिक्स को लेगडन के आने की सूचना मिल गयी । अतः भारत आते समय कराची में ही उनके यान का 'एयर क्रैश' हो गया, ऐसी खबर कुछ अखबारों में छपा दी गयी । लेकिन हकीकत यह थी कि कराची में ही फोर्स वन-थ्री-सिक्स के एजेंटों ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी ।

जिस समय कलकत्ता में घोष के मुकदमे की सुनवाई हो रही थी, लीगी नेता हसन शहीद सोहरावर्दी बंगाल सरकार का पहला मुख्यमंत्री था । ब्रिटिश सरकार द्वारा घोष पर दायर किया गया यह मुकदमा कलकत्ता और दिल्ली की अदालतों में दस वर्षों से कुछ अधिक समय तक चला । विद्वान न्यायाधीशों ने घोष का फोर्स वन-थ्री-सिक्स—जैसी ब्रिटिश गुप्तचर संस्था से संबद्ध होना माना ही नहीं । बरमा शरणार्थी शिविरों का भी पूरा हिसाब-किताब सही निकला । कहीं कोई गड़बड़ी नहीं । फिर भी घोष को सजा मिली ।

१५ दिसम्बर १९४७ को अदालत में दाखिल किये गये अपने लिखित बयान में घोष ने फोर्स वन-थ्री-सिक्स में अपने गुप्त कार्यकलापों का हवाला देते हुए ब्रिटिश सेना के कमांडरों की गतिविधियां और लड़ाई में जापानियों के दांव-पेंच का भी इजहार किया था । चार वर्षों बाद सन १९५१ में ब्रिटिश सरकार ने दक्षिण-पूर्व एशिया कमांड के सुप्रीम अलाइड कमांडर अर्ल माउंटबैटन ऑव बरमा की रिपोर्ट प्रकाशित की थी । कहा जाता है कि उसमें भी वही सब बातें लिखी थीं, जो चार वर्ष पूर्व घोष ने अदालत के समक्ष अपने लिखित बयान में कही थीं । फिर घोष के साथ यह अन्याय हुआ ही क्यों ?

अराकान युद्ध में घोष का योगदान इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा । जिस क्षेत्र में ब्रिटिश साम्राज्य के दो-दो फील्ड मार्शलों को जापानियों ने धूल चटा दी थी, वहीं घोष और उनके एजेंट दुश्मन को लगातार ग्यारह महीनों तक बीहड़ जंगलों में फंसाये रहे, और कमाल यह कि ब्रिटिश फौज उनसे सैकड़ों मील दूर रही । अराकान युद्ध की जीत का पूरा-पूरा श्रेय घोष और उनके चतुर जासूसों को है ।

इंडियन सिविल सर्विस के शौत्तेन्द्रो कुमार घोष—जैसे विद्वान विशेष सूझ-बूझ वाले अफसर से केवल एक ही बार भेंट हुई थी जुलाई १९४३ में । स्टुअर्ट ने एक निहायत जरूरी पार्सल उनके हवाले करने उनकी कोठी पर भेजा था । क्या था उसमें ? यह तो मुझे आज तक मालूम न हो सका । ऐसी सुरक्षा बरती जाती थी फोर्स वन-थ्री-सिक्स में ।

ऐसे उच्चकोटि के गुप्तचर को मेरे नमन् ।

—रूंगटा बिल्डिंग, सिनेमा रोड
गोरखपुर-२७३००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल के मैदान से रोचक प्रसंग

चौवन वर्षों बाद अधूरी दौड़ पूरी की

● रामू शर्मा

खेल के मैदान : जहां रेकॉर्ड टूटते हैं, बनते हैं, और इतिहास के पृष्ठों पर दर्ज हो जाते हैं। खेल के मैदान पर कुछ अविश्वसनीय प्रसंग भी घटते हैं, दिलचस्प और मुसकराने-हंसानेवाले ! पर उनके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं।

आजकल दुनिया के हर देश में मैराथन दौड़ों का रिवाज है। सैकड़ों लोग मीलों की दूरी एक साथ तय करने के लिए निकलते हैं, कुछ आगे होते हैं और कुछ पीछे।

मैराथन रेस से जुड़े कई रोचक प्रसंग हैं। ईसा से ४९० वर्ष पूर्व फिडीपाइड्स में इनका प्रचलन शुरू हुआ था। एक समय था जब यूनानी दौड़ाक बकरे से लिफ्ट ले, यह दौड़ पूरी करते थे। अब यातायात के और भी अच्छे साधन उपलब्ध हैं, जैसे घोड़ा गाड़ी, मोटर गाड़ी तो दौड़ाक आज मैराथन दौड़ों में इनकी भी सहायता लेने से 'परहेज' नहीं करते !

गाड़ी में बैठकर दौड़ में हिस्सा

उदाहरण के लिए १८९६ में १० अप्रैल को एक मैराथन रेस हुई। इसमें प्रथम स्थान पर थे सिप्रोस लुई और दूसरे स्थान पर थे सी. वास्सिलाकोम। तीसरे स्थान पर थे दिमित्तिस वे लोकॉस, पर इस क्रम पर आने के लिए उन्हें कोई पुरस्कार नहीं मिला, क्योंकि उनके पीछे अर्थात चतुर्थ क्रम पर आनेवाले जी. केलनर ने अपना विरोध प्रदर्शित करते हुए बताया कि दिमित्तिस दौड़ के अंतिम स्थल से कुछ दूरी पर एक गाड़ी से उतरकर दौड़ में शामिल हुआ था। यानी जनाब ने पूरी दौड़ दौड़ी ही नहीं, आराम से गाड़ी में सफर करते रहे। जांच में केलनर की बात सत्य पायी गयी और दिमित्तिस को तीसरे क्रम के पुरस्कार से वंचित होना पड़ा।

पुरस्कार में पत्नी भी

इस दौड़ में प्रथम स्थान पर आनेवाले सिप्रोस लुई को बधाइयों और पुरस्कारों से लाद दिया गया— वर्षभर मुफ़ भोजन के लिए कूपन, आजीवन जूतों पर पालिश करने की सुविधा। सिप्रोस लुई की एक लखपति की बेटी से शादी भी हो जाती, पर दुर्भाग्य, सिप्रोस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुई पहले से विवाहित था ।

चौवन वर्षों बाद अधूरी दौड़ पूरी की

सन १९१२ में स्टाकहोम में मैराथन दौड़ हुई । इसमें शिजो कानाकुरी नामक एक दौड़नेवाला भी शामिल था । दौड़ते-दौड़ते जब वह तुरेबर्ग नगर के बाहरी हिस्से से गुजर रहा था तो उसने देखा कि एक कोठी के बाहर बागीचे में कुछ लोग बड़े-बड़े गिलासों में कुछ पी रहे हैं । उसे प्यास लगी थी । वह बागीचे में गया । मेहमाननवाजी करते हुए लोगों ने उसे एक गिलास पेय दिया । वह एक घूंट में ही उसे पी गया । फिर दूसरा गिलास, और फिर तीसरा गिलास ! और इसके बाद अब कौन दौड़ने की जहमत उठाये । उसने ट्रेन पकड़ी और स्टाकहोम लौट आया । पर उसे अपने किये पर ग्लानि भी हो रही थी । वह बिना किसी से कुछ कहे, जापान लौट गया ।

सन १९६२ में एक स्वीडिश पत्रकार शिजो, कानाकुरी का पता लगाते-लगाते दक्षिणी जापान में तमाना नामक स्थान पर पहुंचा । और उससे मिलने के बाद कानाकुरी ने अपनी अधूरी दौड़ पूरी करने का निश्चय किया— चौवन वर्ष आठ मास, छह दिन, आठ घंटे, बत्तीस मिनट, २०.३ सेकंड बाद कानाकुरी ने उसी कोठी से अपनी अधूरी दौड़ पूरा करना शुरू किया । इतने दीर्घ विलंब का कारण ? इस अवधि में कानाकुरी ने शादी की थी, छह बच्चों को पाला-पोसा था और दस नाती-पोतों को गोद में खिलाया था !

काला जादू बनाम सफेद जादू

रेडियो पर कमेंट्री करनेवाले ब्रियान जॉनस्टन एक दिलचस्प प्रसंग सुनाते हैं ।

हुआ यह कि टांगाविका का एक ओझा यानी भूत-प्रेत उतारनेवाला, जादू करनेवाला, इंगलैंड आया । वह यह जानने को उत्सुक था कि क्या सफेद जादू काले जादू से ज्यादा बेहतर होता है ! जब वह स्वदेश लौटा तो उसके एक साथी ओझा ने पूछा कि, "क्या उसने इंगलैंड में सफेद जादू का कोई कमाल देखा ।" उसने जवाब दिया, 'हां, बेहद चमत्कारिक जादू ! फिर उसने बताया कि वह एक दिन एक स्टेडियम में गया । वहां हजारों लोग बैठ गये थे । घास बेहद हरी थी, धूप में चमकती हुई । आधा घंटे बाद एक आदमी मैदान के बीचोबीच आया । उसने मैदान के बीचोबीच तीन लकड़ियां गाड़ीं । उसके बाद उसने कुछ कदम नापे और तीनों लकड़ियों के सामने तीन और उसी तरह की लकड़ियां गाड़ीं । इसके बाद एक कुटिया से सफेद कोट पहने दो व्यक्ति आये । उन्होंने उन छहों लकड़ियों पर कुछ और टुकड़े रखे । इसके बाद कुटिया से ग्यारह व्यक्ति बाहर आये और इधर-उधर फैल गये । इसके बाद दो व्यक्ति हाथ में बल्ला लिये आये और उनमें से एक-एक तीनों लकड़ियों के पास खड़े हो गये । अब एक आदमी ने अपनी पेंट पर एक लाल-सी गेंद रगड़ना शुरू किया । उसने जैसे ही वह गेंद एक व्यक्ति की ओर फेंकी, ऐसी वर्षा शुरू हुई कि लगातार पांच घंटों तक पानी बरसता ही रहा । वर्षा लाने के लिए ऐसा जादू मैंने कहीं और नहीं देखा ।

—ए.-४, प्रेस एपार्टमेंट्स
२३, आई.बी. एक्सटेंशन,
पटपड़गंज, कांपलैक्स,
दिल्ली-११००९२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचित्र किंतु सत्य

'प्रेरक' गालियों का पंचदिवसीय पर्व !

● शिव रैना

'टूटे चांद की धरती' लद्दाख, जम्मू-कश्मीर राज्य का गगनचुंबी मुकुट है। विश्व का यह सबसे सर्द रेगिस्तान, विलक्षणताओं के सारे रेकॉर्ड तोड़ चुका है। नव वर्ष (दिसंबर के अंत) के बाद मनाया जाता है। लद्दाख का नववर्ष है— 'लोसर'। इन दिनों खट्टी शराब 'छंग' व मक्खन-मिश्रित सत्तू (गिरिम) का अपना ही मजा होता है। लद्दाख में 'लोसर' की सतरंगी तैयारियां अपने यौवन पर होती है। लद्दाख में ग्रामीण इलाकों के शरारती किशोर अपनी अलग खिचड़ी पका रहे होते हैं। उत्तरी भारत की हंसती-नाचती 'लोहिड़ी' (त्यौहार) की तरह, लद्दाखी किशोर घर-घर से सूखी लकड़ी और खाद्य-सामग्री मांगते हैं। लकड़ी और रोटियों को एक जगह एकत्रित करते हैं। आग जलाते हैं। चुनी हुई गालियां निकालते और चीखते-चिल्लाते हैं। और जोर-शोर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाली देते हैं, 'जो व्यक्ति हमारे इस नववर्षीय हंगामों में हिस्सा नहीं लेगा, वह अपनी... !' आगे ऐसी-ऐसी गालियों का प्रयोग होता है, कि संभ्रांत व्यक्ति कानों में अंगुलियां ठूंस लेते हैं। सभी लोग यथासंभव, किशोरों के बचकाना कार्यक्रम में शामिल होने लगते हैं।

इतना ही नहीं, 'लोसर' नववर्ष समारोह से ठीक पांच दिन पूर्व, लद्दाखी साजिंदों और तबला-वादकों की मौजूदगी में, मुंहजोर किशोर संगीतमय सवाल-जवाब का, एक गाली-गलौज लदा प्रोग्राम पेश करते हैं। लद्दाखी अभिभावक भी इन किशोरों को लगाम देने में प्रायः नाकाम रहते हैं। अनेक घरों की ओर इशारा करके 'नवीं मंजिल पर रहनेवाली सुंदरी के साथ मनुहार करने के लिए मैं क्या करूं ?'

"सीढ़ी लगा लो और प्रेमिका को अंक में भर लो !" दूसरा किशोर सुर-ताल में गाता है।

"सुंदरी के घर कुत्ता हो, तो क्या करें ?" गायक पूछता है।

"कुत्ते को मांस के टुकड़े खिला दो। प्रेमिका को बाहुपाश में कस लो !"

"नवयुवती के घर के दरवाजे 'चीं-चीं' की अप्रिय आवाजें करनेवाले हों, तो नवयुवती को कैसे पाये ?"

"दरवाजों को कड़ुवे तेल से सींच दो और नवयुवती की कोमल कलाई थाम लो !"

इस प्रकार पांच दिनों तक यह उत्तेजक और गर्मागर्म समां बंधा रहता है। असंख्य लोग मकानों के दरवाजे और खिड़कियां बंद कर लेते हैं। किशोर इन गालियों से, लोगों को पवित्र

लद्दाख में नव वर्ष 'लोसर' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर ग्रामीण इलाकों के शरारती किशोर अपनी अलग खिचड़ी पका रहे होते हैं। चुनी हुई गालियां निकालते और चीखते चिल्लाते हैं।

और सच्चरित्र रहने की 'ताकीद' करते हैं।

'लोसर' वाले पांचवें दिन लद्दाखी कामधेनु गाय 'याक' के आकार का, एक बड़ा पुतला बनाकर जलाते हैं। यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माना जाता है। नववर्ष में कर्मठ, संयत तथा एकजुट होकर रहने की सामूहिक शपथ ली जाती है।

किशोरों के इस उत्तेजक गाली-गलौज के पीछे भी, एक कहानी छिपी है। कहते हैं, डिंकिरुन नामक एक प्राचीन राजा, लद्दाख का सबसे लंपट और हृदयहीन शासक था। वह अपनी दो युवा बहनों के साथ रहता था। परंतु, अपहरण और बलात्कार का वह रसिया था। उसने लद्दाखियों का जीना दूभर कर दिया था। आखिर लद्दाखी नवयुवकों ने भांति-भांति के अपमानसूचक सामूहिक गीतों, कटाक्षों तथा विद्रोहों द्वारा, डिंकिरुन को मौत के घाट उतारा और उसकी युवा बहनों के साथ विवाह रचाया। डिंकिरुन का एक पांव आदमी-जैसा था और दूसरा गधे-जैसा।

— ८७, रघुनाथ स्ट्रीट,
जम्मू-१८०००१
(कश्मीर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह आठ प्रकार के होते हैं

● अनिता कथूरिया

समाज में सदाचार की वृद्धि एवं व्यभिचार को रोकने हेतु विवाह सर्वोत्तम प्रथा है। वेदों में गृहस्थाश्रम को सर्वोपरि स्थान दिया है, जिसमें विवाह पश्चात ही प्रवेश हो पाता है।

विवाह आठ प्रकार के होते हैं।

१. ब्रह्म विवाह, २. दैव विवाह, ३. आर्य विवाह, ४. प्राजापत्य, ५. आसुर विवाह, ६. गांधर्व विवाह, ७. राक्षस विवाह, ८. पैशाच विवाह।

ब्रह्म विवाह

वर एवं कन्या ने यदि यथावत ब्रह्मचर्य रखते हुए पूर्ण शिक्षा को प्राप्त किया हो, वे विद्वान एवं धार्मिक विचारों को ग्रहण करनेवाले हों। व्यवहार कुशल एवं सुशील हों तथा उनका विवाह भी परस्पर सहमति से हो। ऐसे विवाह को ब्रह्म विवाह कहते हैं। प्राचीनकाल में राम-सीता, नल-दमयंती, द्रौपदी-पांडव आदि के विवाह ब्रह्म विवाह के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

दैव विवाह

यज्ञ एवं ऋत्विक कर्म करते हुए जयमाला को अलंकारयुक्त कन्यादान देना दैव विवाह कहलाता है।

आर्य विवाह

वर पक्ष से कुछ धनादि लेकर कन्या का विवाह करना आर्य विवाह होता है। अनेक जनजातियों में इस प्रकार की प्रथा प्राचीनकाल से चली आ रही है और आज भी इसका यथोचित पालन हो रहा है।

कई बार इसका रूप विकृत हो जाता है। कन्या का पिता अपने स्वार्थ के लिए भोली-भाली कन्या का विक्रय कर देता है। कुमाऊं तथा हिमाचल प्रदेश की जनजातियों में विवाह तय होने के पश्चात कन्या का आधा दाम चुकाने का रिवाज है।

प्राजापत्य विवाह

इस रीति में विवाह बुद्धि व धर्म के लिए होता है। अर्थात वर एवं कन्या एक-दूसरे के लिए रूप, आयु, गुण आदि में सर्वथा उपयुक्त होते हैं। ऐसे विवाह प्रसन्नतापूर्वक एवं सफल होते हैं। इन दंपत्तियों की संतान भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम होती है ।

अ'सुर विवाह

आधुनिक विवाह अ'सुर विवाह ही कहलाते हैं । इस प्रकार के विवाह में वर एवं कन्या पक्ष एक-दूसरे को कुछ न कुछ लेते-देते हैं, जिसे आधुनिक भाषा में दहेज कहते हैं । दहेज की विभीषिका से सभी परिचित हैं ।

राक्षस विवाह

लड़ाई कर, बलात्कार कर अथवा बलपूर्वक कन्या को ग्रहण करना राक्षस विवाह होता है । प्राचीनकाल में भी इस प्रकार के विवाह को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं थी । आज तो इस प्रकार के विवाह को कानूनी अपराध माना जाता है ।

गंधर्व विवाह

अनियम, असमय, किसी कारण से वर-कन्या का इच्छापूर्ण परस्पर संयोग होना गंधर्व विवाह कहलाता है । प्राचीनकाल में इस प्रकार के विवाह का अत्यधिक चलन था तथा काफी हद तक सामाजिक मान्यता भी इन्हें प्राप्त हो जाती है ।

आज के समाज में ऐसे गंधर्व विवाह शायद पहले से अधिक होते हैं परंतु उन्हें समाज में सबके सम्मुख स्वीकृत करने का दुःसाहस इक्का-दुक्का व्यक्तियों में ही है ।

पैशाच विवाह

शयन करती हुई, नशे में चूर कन्या अथवा पागल कन्या के साथ बलपूर्वक अथवा उसकी अनभिज्ञता में यौन संबंध करना पैशाच विवाह होता है । इस प्रकार के विवाह को समाज में व्यभिचार का नाम ही दिया जा सकता है ।

ब्रह्म विवाह सर्वोत्कृष्ट, दैव एवं प्राजापत्य मध्यम, आर्य, अ सुर, गंधर्व निकृष्ट, राक्षस अधम एवं पैशाच विवाह महाभ्रष्ट माने गये हैं ।

—२२, नेहरू नगर, खलासी लाईन,
सहारनपुर-२४७००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रग-ठग आज भी रे !

● हरीश पुजारी

बहुत पुरानी बात है अलकनंदा नदी के तट पर बसा हुआ बहुत बड़ा गांव, गांव में दो शातिर रग व ठग अलग-अलग मकानों पर रहते थे । रग का पेशा राहगीरों व अड़ोस-पड़ोस के गांव में लूट-पाट व डकैती डालना था व ठग अपनी बुद्धि से अपना काम चलाता था ।

एक दिन ठग ने रग की अकल ठिकाने लगाने की सोची, एक रात जब रग पड़ोस के गांव से डाका डालकर जंगल में साथियों सहित धन का बंटवारा कर रहा था, तब ठग अपना घोड़ा दौड़ाते हुए वहां पहुंच गया, दोनों की दुआ सलाम हुई, तब ठग ने बहाना बनाया कि वह श्रीनगर आ रहा था तो रात में रोशनी देखकर रुक गया । रग ने उसे वहीं रात रुकने को कहा तो इस पर ठग ने घोड़े को समीप पेड़ के तने से बांधकर वहां आकर रुकना कबूल किया, जब काफी देर हो गयी और ठग घोड़ा बांधने से वापस नहीं लौटा, तब रग ने अपने साथी से कहा कि जाकर ठग को देख आओ, कहीं अंधेरे में जंगली जानवर उसे खा न गये हों । जब रग का साथी ठग को रोशनी लेकर ढूंढ़ने पेड़ों के समीप गया तो उसने देखा कि ठग घोड़े की लीद, जो जगह-जगह बिखरी थी, तोड़ रहा था, और उसमें से चांदी के चमाचम रुपये निकालकर अपनी जेब में डाल रहा था । रग के साथी के पूछने पर ठग ने बताया कि आज तो वह अत्यंत नुकसान में रहा । मात्र चांदी के २१ रुपये ही घोड़े ने लीद में दिये, जबकि उसे उम्मीद ४० सिक्कों की थी । आश्चर्य से ओत-प्रोत वह डाकू दौड़कर रग के पास पहुंचा व उसे पूरा किस्सा बयान किया ।

रग पूरी डकैत मंडली के साथ उसके पास पहुंचा और घोड़ा खरीदने के लिए ठग की मिन्नतें करने लगा, आखिर दस हजार रुपये लेकर ठग ने चांदी के सिक्के देनेवाला घोड़ा रग के हवाले कर दिया ।

अब दूसरे दिन गांव में रग ने खूब सारी हरी-हरी घास व चना दिनभर घोड़े को खिलाया और इंतजार करने लगा उसकी लीद निकलने का, घोड़े ने खूब सारी लीद कर दी, तब रग ने चांदी के रुपये गिनने के बजाय गिन-गिन कर अपना माथा फोड़ना शुरू किया । अब भला घोड़ा चांदी के सिक्के निकालता कैसे ? वह तो ठग ने रात लीद में चांदी के सिक्के रग को उल्लू बनाने के लिए छिपा दिये थे । आगबबूला रग अपनी चांडाल चौकड़ी के साथ ठग के घर पहुंचा, ठग गायब । ठग की पत्नी से पूछने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना कि वह तो नदी के किनारे मछली पकड़ने गया है । रग व उसके साथी काफी इंतजार करके गुस्से में उफनते वापस हो गये ।

देर रात ठग अपने घर वापस आया तो उसकी भयभीत पत्नी ने उसे रग व उसके गुस्से के बारे में बताया, ठग ने मुसकराते हुए कहा कि तू चिंता मत कर आज मैं दो खरगोश जंगल से पकड़कर लाया हूं, कल फिर मैं मुंह अंधेरे एक खरगोश लेकर नदी के किनारे चला जाऊंगा व एक खरगोश तू पिंजरे में बंद कर देना । यदि रग आये तो कहना कि मैं रात भी घर नहीं आया और फिर उसके कान में फुस-फुसाकर कोई बात कही ।

अब दूसरे दिन सुबह फिर रग आग बबूला होकर ठग के घर धमक आया और जब उसे पता चला कि ठग रात भी घर नहीं आया तब वह गुस्से में कांपकर गालियां बकने लगा । इस पर ठग की बीवी ने रग से कहा कि तुम गुस्सा मत करो मैं अभी अपने पति को बुला लाती हूं । यह कहकर उसने पिंजरे में बंद खरगोश निकाला और उसे दुलारकर कहा, 'जा बेटा अपने कका को बुला ला, रात भी घर नहीं आये, यहां लोग इंतजार पर चौक में बैठे हैं' और खरगोश छोड़ दिया । खरगोश सरपट दौड़कर चौक से निकलकर जंगल में गायब हो गया ।

जब २-३ घंटे रग को इंतजार करते हुए बीत गये, तब वह अपने साथियों सहित ठग की खोज में नदी किनारे चल पड़ा ।

नदी किनारे उसने ठग को घूमते हुए देखा तो दौड़कर उसे पकड़ने के लिए समीप गया ही था कि रग ने चुपके से कोट के खीसे से दूसरा खरगोश निकालकर उसे पुचकारना शुरू किया और ठग को सुनाते हुए खरगोश को डांटने लगा, "क्या बात है कि तेरी काकी से सब्र नहीं हुआ तो तुझे दौड़ा दिया, और रात की ही तो बात थी मैं आ ही रहा था, चल अब चलते हैं घर," और घर की ओर लौटने लगा खरगोश

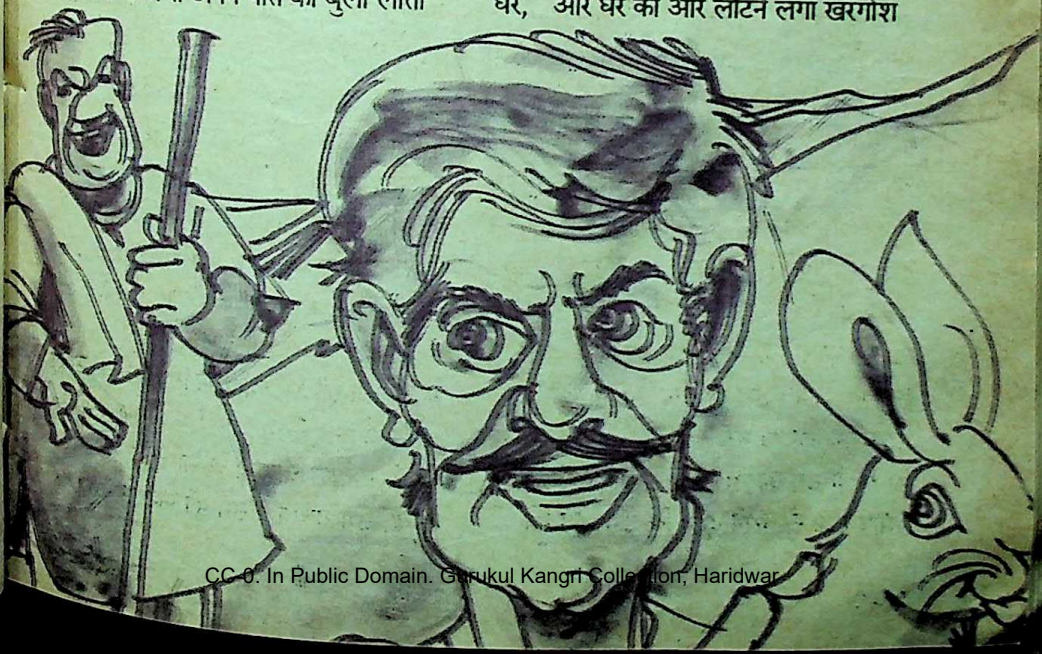

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को थामे ।

रग व चंडाल चौकड़ी ने यह सारा तमाशा देखा तो उनका गुस्सा काफूर हो गया । रग मन ही मन सोचने लगा कि बड़ा करामाती खरगोश है यह उसकी डकैती की योजनाओं में बड़ा लाभकारी सिद्ध होगा । अब रग पुनः खरगोश हथियाने के लिए ठग की मिन्नतें करने लगा । फिर नकद चांदी के पांच सौ रुपये देकर खरगोश ठग से खरीद लिया ।

दूसरे दिन रग ने खरगोश को प्रयोग में लाने की सोची । अकेले ही खरगोश को लेकर डाका डालने पड़ोस के गांव में रात को पहुंचा, चोरी करके रुपये, जेवरात, नाज-पानी कब्जे में किया और सोचा कौन इसे लादकर घर पहुंचाये, क्यों न खरगोश भेजकर साथियों को अपने घर से बुला डालें । खरगोश निकालकर उसे गांव में अन्य डकैतों को तुरंत बुलाने का हुक्म दनदना दिया । खरगोश आजाद होते ही अंधेरे में गुम हो गया, अब रग महाशय करने लगे साथियों का इंतजार । इंतजार करते-करते संगी-साथी तो आये नहीं, 'बल्कि निंद्रा महारानी ने रग को समेट लिया, सुबह जैसे ही रग की आंख खुली तो देखा गांव के लोगों ने उसे घेर रखा है । जब मार पड़ने लगी तब नानी याद आ गयी, फिर पटवारी, वकील, कचहरी का चक्कर, जेल गये, सो अलग । जमानत हुई और अब तो रग ने ठग को जिंदा गाड़ने की कसम खा ली । पहुंच गया ठग के घर और जबरन उसे टाट के बोरे में बंद कर कंधे पर लादकर नदी में डुबोने चला ।

चलते-चलते बोझ से उसकी पीठ दुख गयी, लघुशंका भी सताने लगी, नदी के किनारे बोरे को पटककर दूर झाड़ियों में हलका होने को चल दिया । किस्मत का खेल ! इसी बीच एक बकरीवाला बकरी हांकते हुए बोरे में बंद ठग के बगल से गुजरा । अब ठग लगा रोने-चिल्लाने बकरीवाले के पूछने पर ठग ने बताया कि उसकी जबरन शादी कराने के लिए बोरे में बंद कर उसे ले जाया जा रहा है । बकरीवाला था कुंवारा और शादी की तमन्ना थी दिल में, पर शादी हो ही नहीं रही थी । लालच में उसने शीघ्र बोरा खोला और ठग को आजाद कर स्वयं उसमें बंद हो गया, रही-सही कसर ठग ने पूरी कर दी थी बाहर से डोरा बांधकर बंद कर दिया और ठग महाराज बकरियां हांकते हुए इसी रात गांव लौट आया । रग महाशय ने बोरा पकड़ा उसे गंगा शरण कर दिया और इत्मीनान से घर लौट आया ।

गांव में आग की तरह खबर फैल गयी कि ठग रातों रात ४०-५० बकरियों का मालिक बन बैठा है ।

रग व संगी डकैत आश्चर्यचकित, खबर सुनकर ठग के घर पहुंच गये । ठग महाशय ने उन्हें देखते ही शिकायत करनी शुरू कर दी 'अरे, फेंकना ही था तो पुल से बीच नदी में डालते, वहां कम से कम हजार बकरियां तो मिलतीं । अब ४०-५० से क्या काम चलेगा !'

रात को रग व सभी डकैतों ने अपने आपको बोरों में बंद कर बीच पुल से गंगा के गहरे पानी में 'जै गंगा माई' कहकर हजार बकरियों को हथियाने कूद पड़े और डूबकर मर गये ।

तब से गढ़वाल में ऐसे लोगों के जमाव को 'रग-ठग' कहकर आज भी पुकारा जाता है ।

— एडवोकेट

गोपेश्वर चमोली (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फागुनी दोहे !

फागुन की देहरी हुआ, पाहुन है रसराज
गंध रंगीली उड़ रही, फिर सांसों पर आज

सात रंग की देह लग रही, इतना उड़ा गुलाल
नील हरित नदिया हुई, झील बन गयी लाल

पीत रंग सरसों खिली, पीले खिले गुलाब
केसरिया रंग धूप हो गयी, टेसू चढ़ा शबाब

हुई जुगलबंदी सुधर, बजते बाजूबंद
कंठ-कंठ गुंजित हुए, पद्माकर के छंद

एक-एक मुसकान पर, आज बिरिज के द्वार
कुंकुम और अबीर संग, बरसे रस की धार

—शिव प्रसाद 'कमल'

कल्पना-मंदिर
चुनार (मिर्जापुर) उ.प्र.

सपना के एकांत

तन से रहे विदेह हम, मन से कोमल शांत
समय नदी में बह गये, सपनों के एकांत

गंध, पांखुरी, रोशनी, धूप, छांव, आकार,
छोटे, छोटे डर हमें, चौंकाते हर बार

कैसे रस्ते आ गये, कैसे आये मोड़
बीच डगर में चल दिए, पांव तुम्हारे छोड़

रहे आंख में तैरते, छवियों के संसार
मन में गहरी चुप्पियां, बो गये नमस्कार

कुछ पीला, कुछ मूंगिया, कुछ बादामी बेर
पगडंडी पर झुक गया, हंसता हुआ कनेर

मन सीपी सागर हुआ, कभी हुआ ये शंख
कभी हुआ आकाश में, तेज हवा का पंख

हंसकर बोली अलविदा, पगडंडी की धूल
सन्नाटा बुनते रहे, गुल-मोहर के फूल

—दिनेश शुक्ल

रामेश्वर रोड, खंडवा-४५०००१

गुलछर्रे उड़ाते जाइए

जो मिले उल्लू बनाते जाइए
गुलों में भी गुल खिलाते जाइए

शर्म की चादर उतारें फेंक दें
खूब गुलछर्रे उड़ाते जाइए

शान से चांदी का जूता मारकर
काम सब अपने बनाते जाइए

गरज हो तो बाप गदहे को कहें
अन्यथा आंखें दिखाते जाइए

झांकिए मत खुद गिरेबां में कभी
गैर पर अंगुली उठाते जाइए

बाल बनकर सिर्फ ऊंची नाक के
चैन की वंशी बजाते जाइए

दिन नहीं बीड़ा उठाने के रहे
शौक से बीड़ा चबाते जाइए

— डॉ. गोपाल बाबू शर्मा

८२, सर्वोदय नगर, सासनी गेट,
अलीगढ़ (उ.प्र.)-२०२००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुजरे के दर्पण में लखनऊ

● योगेश प्रवीन

लखनऊ इनसानियत के संदर्भ में शायद सबसे मालामाल है । उसके पास है मेल-जोल की सुंदर सीख, जीवन की कड़वाहट में मिठास लाने का बेहतरीन हुनर, और कला के इंद्रधनुषी रंग से रंगे हुए कुछ सुंदर पल, कुछ न होने पर भी कुछ न कुछ को कायम रखना यहां की तालीम है । इस शहर ने सोने के तारों से या चांदी की चादरों पर नहीं, कच्चे सूत के धागों से मलमल पर बनायी गयी चिकन-जैसी बेहतरीन और नाजुक दस्तकारी से दुनिया को चौंका दिया है ।

लखनऊ सिर्फ देखने-सुनने की चीज नहीं है बाकायदा महसूस किये जाने के लिए है । इसमें संदेह नहीं कि इनसान के मन और मस्तिष्क को सबसे अधिक प्रभावित करता है इनसान का सलीका जो लखनऊ की जिंदगी में हमेशा से बहुत था और आज भी कुछ कम नहीं है ।

'शामे अवध' के नाम से मशहूर लखनऊ की रंगभरी शामें यहां की बेल बांकड़ीदार गगन रेखा के पीछे गोमती पर डूबते हुए सूरज के नजारे के लिए ही मशहूर नहीं हैं । यहां के कोठों की रंगीन शामें भी उसका प्रमुख आकर्षण रही हैं और उनके साथ है यहां होनेवाले मुजरों का सिलसिला, वो स्वप्निल बहारों के रौनकभरे जमाने थे।

मुजरा का शाब्दिक अर्थ है 'सादर प्रणाम' या फिर साजो रक्स का सुंदर प्रदर्शन । वैसे जो विशेष आशय मुजरा शब्द से जुड़ा है वह है किसी गानेवाली या नाचनेवाली का मर्दों की महफिल में कला प्रदर्शन ।

ये सच है कि मुजरे का स्वरूप कुछ भी हो इसमें कला पक्ष प्रधान होता है । हमारे देश की ललित कलाएं प्राचीन समय में मंदिर प्रांगण से संबंधित थीं । कालांतर में वे अलग-अलग खेमों में चली गयीं । उनमें से गायन और नृत्य आदि कलाएं राज दरबारों में पहुंच गयीं । जब राजशाही के डेरे उजड़े तो ये सारे हुनर वेश्याओं के कोठों पर जाकर बस गये, जहां सदियों तक उनकी परवरिश होती रही ।

जीने की कला का दार्शनिक प्रतीक

मुजरा कोठों पर ही पैदा होनेवाला एक परंपरागत प्रदर्शन है जिसमें गीत और संगीत के साथ-साथ लोगों का रसिक मनोरंजन भी किया जाता है । ऐसे में नृत्यांगना एक दायरे में बराबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूम-घूम कर नाचती भी है । इसी कारण तवायफ शब्द का प्रयोग किया जाता है क्योंकि तवाफ का अर्थ है परिक्रमा और तायफ का अर्थ है परिक्रमा करनेवाला ।

यह प्रदर्शन जीवन जीने की कला का दार्शनिक प्रतीक भी है क्योंकि इसमें कलाकार दर्शकों से बराबर की दूरी और बराबर का नाता बनाये रखता है । मुजरे की संस्कृति बड़ी मोहिनी संस्कृति है क्योंकि इसमें कला की अभिव्यक्ति बड़े सुकोमल ढंग से की जाती है ।

रूप,यौवन, मिलन, विछोह, श्रृंगार, मनुहार, इशारा, छेड़छाड़—जैसे रूमानी मधुर विषय मुजरे के खास तत्व हैं । गीत नृत्य संगीत का ये मिला-जुला प्रदर्शन, अनुकूल हाव-भाव और मुहब्बतभरे नखरों के साथ कुछ ऐसे अंदाज में पेश किया जाता है कि देखनेवालों के दिल पर इसका बड़ा जादूभरा असर होता है । कत्थक नृत्य की कमनीयता भी मुजरे में शामिल रहती है । इस नृत्य शैली में गीतों की बड़ी विविधता रहती है ।

प्रणय गीतों गजलों के अलावा ठुमरी, दादरा या फिर कज़री होरी, चैती, खभटा, नकटापूरवी-जैसे लोकगीत मुजरे में गाये जाते हैं जिनका व्यवहार आंचलिक लोगों की अभिरुचि के अनुकूल होता है और जिससे सब के सब बंधे रहते हैं ।

मुजरे के ठिकाने

मुजरे के ठिकानोंवाले कमरे, झाड़फानूस, कुमकुमे, कंदील से सजे-सजाये कमरों की दीवारें, खुशनुमा तसवीरों, बड़े-बड़े आइनों और दीवार गीरियों से आरास्ता रहती थी । फर्श पर कीमती कालीनों पर मखमली गाव तकिये लगे होते थे जिनके साथ शमांदानों के अलावा खातिरदारी के लिए पानदान, खासदान, गिलौरीदान तश्तरियों और हुक्के पेचवानों का भी इंतजाम रहा करता था । गाने-नाचने वालियों के अलावा साजिंदों की बैठक रहती थी और साथ ही साथ मेहमाननवाजी के लिए भी कुछ लोग तैनात कर दिये जाते थे । सारा का सारा वातावरण अगर लोबान से मुअत्तर रहता था ।

मुजरों की महफिलों से सजे कोठे तहजीब के घराने हुआ करते थे, जहां बड़े-बड़े नवाबजादे, ताल्लुकेदारों के बेटे और लाट साहब के लड़के शऊर सलीका और तौर- तरीके सीखने के लिए भेजे जाते थे ।

उस पर से गुलाब टंके मोतिया, बेला, चमेली, जूही, मोगरा, कुंद नेवारी के गजरे अंजुमन को रश्के जन्नत बनाये रखते थे ।

मुजरों की महफिलों से सजे कोठे तहजीब के घराने हुआ करते थे, जहां बड़े-बड़े नवाबजादे, ताल्लुकेदारों के बेटे और लाट साहब के लड़के शऊर सलीका और तौर- तरीके सीखने के लिए भेजे जाते थे ।

मुजरे में अभद्र व्यवहार का कोई चलन नहीं रहा है । हां, हौसला अफजाई के लिए बीच-बीच में कुछ इनाम या रुपये पुरस्कार स्वरूप देते रहने की परंपरा इस प्रोग्राम की प्रमुख आवश्यकता होती है ।

लखनऊ चौक की चांदनी

उत्तर मध्य काल में लखनऊ का चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी गुलजार बाजारों के लिए ही नहीं नाच-गाने और मुजरों के घरानों के लिए भी बहुत प्रसिद्ध रहा है । चौक, ठंडी सड़क के आस पास शाहगंज, बिल्लोचपुरा, कंघीवाली गली, चावल वाली गली, बजाजा, टकसाल, सराय बांस मेवे वाली सराय, हिरन बारा वगैरह इलाकों में तमाम तवायफें रहती थीं ।

लखनऊ के नवाबी दौर में सुंदरी, उजागर, मुंन्नी बेगम, मोती खानम, पियाजू, महबूबन और हुसैनी डोमनी नाम की प्रसिद्ध तवायफें हुई हैं । चूनेवाली हैदरी हुसैन बांदी और कनीजजान के इमामबाड़े आज न होकर भी मशहूर हैं । इससे उनकी हैसियत और शोहरत का अंदाजा लगता है ।

चौक में डोमिनियां, कंचनिया, डेरेदार तवायफें पतुरिया आदि सभी स्तर की पेशेवर नाचनेवालियां या रंडियां रहा करती थीं । बचुवा और नन्हुवा दो बहनें 'बड़ी चौधराइन' तथा 'छोटी चौधराइन' के नाम से जानी जाती थीं और जिनका कोठा सारे चौक में सबसे सदर मकाम था । उनके ही घराने में रश्के मुनीर और बद्रे मुनीर हुई हैं । उमराव जान के दौर में ही लखनऊ नवाबी के पांव उखड़े थे और अंगरेजी हुकूमत अमल में आयी थी ।

ब्रिटिश शासनकाल में भी लखनऊ में नाच-गाने का ये स्कूल बराबर कायम रहा । अल्ला रखी, शमीम बानों, और दिलरुबा उस वक्त बड़ी नामदार तवायफ थीं । बाद में अल्ला रखी की बेटी कमरजहां और कनीज जान की बेटी बेनजीर ने भी खूब-खूब शोहरतें हासिल कीं लेकिन मुजरे में 'खीरे वाली मुनीर' का बड़ा नाम रहा है । इसी दौर में बड़ी जद्दन, छोटी जद्दन, वहीदन, रेहाना ने भी मुजरा नृत्य शैली का भरपूर विकास किया ।

जद्दन बाई का योगदान

नरगिस की मां जद्दन बाई छोटी जद्दन कही जाती थीं और वो चौक के कोठे पर बहुत दिनों तक मेवेवाली सराय में आबाद रही हैं । यहीं पंजाब से लखनऊ मेडिकल कॉलेज में डॉक्टरी पढ़ने के लिए आये हुए एक ऊंचे खानदान के नौजवान से उनकी मेल-मुहब्बत हो गयी और वे थे डॉ. मोहन बाबू । लखनऊ में ही गोमती के किनारे उनका प्रेम परवान चढ़ा और फिर मोहन बाबू को ही नरगिस का पिता होने का अवसर मिला । यहां कहा जाता है कि जद्दन बाई ने ही महफिल में बैठकर गजल या दादरा सुनाने की रीत शुरू की, नहीं तो पहले तवायफें और भांड़ अपना पूरा कार्यक्रम खड़े-खड़े ही प्रस्तुत करते थे । यहां तक कि साजिंदे भी तबला, सारंगी आदि साज कमर में फेटे से बांधकर खड़े रहते थे । उनका ये अंदाज लखनऊ में बनाये जाने वाले मिट्टी के खिलौनों के नमूनों में या फिर अंगरेजों द्वारा आरेखित पुराने चित्रों में आज भी देखने को मिलेगा ।

रेहाना जो अपने समय की मशहूर फिल्म ऐक्ट्रेस रही है लखनऊ चौक की देन थी । रेहाना के दीवानों की बड़ी-बड़ी दास्तानें हैं । फिल्मकार पंचोली के साथ रेहाना के प्रगाढ़ संबंध रहे हैं । उन्होंने ही उसे सितारे की तरह चमका दिया था । इस चुलबुली शोख अंदाज अभिनेत्री का अभिनय आज भी भुलाया नहीं जा सका है, जिसने 'ऐक्ट्रेस', 'रंगीली', 'सगाई', 'खिड़की', 'बिजली', 'दिलरुबा', 'सुनहरे दिन', 'छम छमा छम', 'नई बात', 'नतीजा', 'सम्राट'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और 'शिन शिना की बूबलाबू'—जैसी नामदार फिल्में की हैं।

रेहाना अपने उस्ताद लड्डन मिर्जा (चांदी की कलई के कारखानेवाले) के साथ तीस रुपये पर अपने कान के बुंदे चौक सर्राफ में गिरवी रखकर बंबई गयी थीं, जो फिर उन्होंने दस बरस बाद आकर वापस लिये थे।

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री निम्मी जो 'बरसात', 'आन', 'अमर', 'अंजली', 'आंधियां', 'मेहमान', 'डंका', 'राजधानी', 'उड़नखटोला', 'सोहनी महिवाल', 'बसंत-बहार', 'कुंदन', 'शमां', 'दाग', 'सजा', 'मुहब्बत' और 'खुदा'—जैसी फिल्मों के लिए हमेशा याद की जाएंगी, मशहूर गायिका वहीदन बाई की बेटी थी। वहीदन बाई लखनऊ चौक में बहुत दिनों तक रही हैं और फिर आगरे चली गयी थीं।

स्वाधीनता के बाद

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद १९५८ में जब मुजरे के यह आईनाखाने तोड़े जा रहे थे तो हस्सों, बिग्गन, मोतीजान, पहाड़िन और शीरीं उस समय की लखनवी महफिल की सुप्रसिद्ध कलाकार थीं।

उसके बावजूद जो गिने-चुने घराने मुजरे को लखनऊ में जिंदा रखे रहे हैं, उनमें मुनीर बेगम की लड़कियों जरीना बेगम, अनवरी बेगम, मुन्नी बेगम और सुरैया का नाम लेना ही होगा, जिनके साथ ही सलमा बेगम और नसीम बेगम का नाम भी जुड़ा हुआ है।

मुजरे की संस्कृति को बहुत बदनाम भी किया गया है और अब वह लगभग समाप्त हो चुकी है, लेकिन स्त्रियों के सम्मान का भरपूर शोषण करनेवाले तमाम तरह के नंगे और फूहड़ नाचों ने अब अपना जोर दिखाया है और आज के पतनशील समाज में बड़े शान की चीज समझे जाते हैं।

कुछ भी हो, मुजरे का नाजो अंदाज अपनी जगह अलग था और उसकी जगह बस वही ठहरता है।

एक हसीं आईना यूं आईने से कहता है
तेरा जवाब तो मैं हूं मेरा जवाब नहीं

—पंचवटी : ८९, गौसनगर, लखनऊ-२२६०१८

साढ़े सात करोड़ वर्ष पुराने डायनासोर के दुर्लभ अंडे का एक्सरे

धरती पर कभी डायनासोर राज करते थे। सात करोड़ वर्ष पहले वे अचानक गायब हो गये, लेकिन हाल ही में उन विलुप्त डायनासोर के दुर्लभ अंडे दक्षिणी चीन में मिले हैं। वैज्ञानिकों ने अपने शोध में इसे साढ़े सात करोड़ वर्ष पुराना निरूपित किया है। वैज्ञानिकों को विश्वास है कि इसमें अभी भी भ्रूण सुरक्षित है।

उक्त अंडे का विश्लेषण करने के लिए अमरीकी वैज्ञानिक अत्याधुनिक एक्सरे मशीन सी.टी. स्कैनर का इस्तेमाल करेंगे, ताकि इसे नष्ट किये बिना इसके भीतर देखा जा सके।

इस अंडे के भीतर की संरचना को सही ढंग से समझने के लिए त्रिआयामी चित्र भी उतारे जाएंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि जीवाश्म बन चुके भ्रूण का अध्ययन करने से डायनासोर के बारे में काफी चीजें पता चलेंगी कि यह भ्रूण क्यों डायनासोर के रूप में विकसित नहीं हुआ अथवा डायनासोर का अस्तित्व क्यों समाप्त हो गया। अब तक विश्वभर में डायनासोर के करीब ५०० अंडे मिल चुके हैं, जिनमें अधिकांशतः अंडे दक्षिणी चीन में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

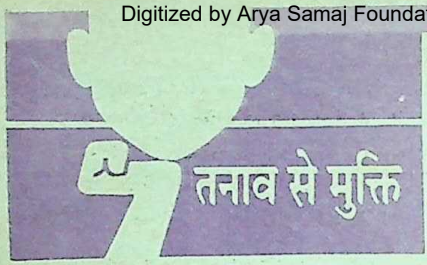

● डॉ. सतीश मलिक

आत्मविश्वास खो गया !

राकेश, चमोली गोचर (उ. प्र.) : २२ वर्ष का बी. एस-सी. फाइनल का छात्र हूं । प्रभावशाली लोगों अथवा मित्रों के साथ बात करते समय अधिक घबरा जाता हूं । बार-बार आंखों में पानी आता है । कोई भी मजाक में या हकीकत में असहनीय बातें बोलता है तो वह बातें मन में बैठ जाती हैं । अकेले में उन्हीं को सोचता रहता हूं कि क्या मैं इतना तुच्छ हूं । यह बातें पढ़ाई में बाधक होती हैं । पहले समस्या इतनी गंभीर नहीं थी । अब एक वर्ष से अतीत के बारे में ही सोचता रहता हूं । बचपन में अज्ञानवश जो अनेक कार्य किये उनके बारे में गहन पछतावा होता है । आत्मविश्वास खो बैठा हूं । एक वर्ष में सभी पिछड़े छात्र भी मुझ से आगे निकल गये हैं । काफी कुंठित हूं तथा अतीत के कारण बरबाद हो गया हूं ।

आपमें पहले अपने व्यक्तित्व को लेकर समस्या थी अब आपको अवसाद नामक मानसिक रोग है । इसका इलाज अवसाद अवरोधी दवा तथा मनोचिकित्सा है । अवसाद का रोगी अतीत की बातें लेकर पछतावे में पड़ जाता है तथा बराबर स्वयं को कोसता रहता है । ठीक होने पर आप स्वयं देखेंगे कि मैं क्योंकर इन अनावश्यक बातों में ही डूबा रहा । इसलिए आप तुरंत अपना सही इलाज कराएं ।

मोटा नहीं हो पाता

एक पाठक, पटना : १६ वर्ष का छात्र हूं । मुझे स्वप्नदोष होता है । इससे मैं कमजोर हो गया हूं । कितना भी अच्छा भोजन करूं मोटा नहीं हो पाता । स्वप्नदोष १० दिन के भीतर होता है, पर कोई समय निश्चित नहीं रहता । कृपया उचित उपचार बताएं ।

आपका उचित उपचार यही है कि अपनी स्वाभाविक शारीरिक क्रिया को समझें । जो सामान्य स्थिति है उसी को दोषी ठहराना तथा अपने को रोगी समझ चिंता करना ही मूल रोग है । यदि १६ वर्ष के होकर भी स्वप्नदोष न हो तो अवश्य चिंता की स्थिति है । १६ वर्ष की आयु में कोई व्यक्ति मोटा नहीं होता, क्योंकि भोजन द्वारा प्राप्त शक्ति उसकी वृद्धि व विकास में लग जाती है । हड्डी, मांसपेशी आदि सभी बढ़ रही हैं । यदि आप १६ वर्ष में मोटे होने लगें तो डॉक्टरी जांच करानी चाहिए क्योंकि मोटापा एक रोग है । वैसे भी मोटे होने की आयु ३०-३५ वर्ष के पश्चात है तथा मोटापा और कई रोगों को जन्म देता है । हल्के-फुल्के व चुस्त रहें, व्यायाम करें तथा व्यर्थ कुंठाग्रस्त न हों, न ही व्यर्थ कोई ग्रंथि पालें ।

गंदगी से नफरत

क ख ग, नैनीताल : मेरी आयु १९ वर्ष की है तथा मैं बी. ए. द्वितीय वर्ष का छात्र हूं । मुझे गंदगी से सख्त नफरत हो गयी है । डेढ़ वर्ष पहले मैं जमीन पर या रास्ते पर या अन्य कहीं कोई चीज गिर जाने पर पहले उसे धोता था, वह भी साबुन से, तब ही उसे प्रयोग में लाता । यदि मक्खी शरीर के किसी भाग में बैठ जाती तो वह भाग मुझे धोना पड़ता । सार्वजनिक मूत्रालय व शौचालय में कुछ छींटे पैरों में व जूतों में न पड़ जाएं, इसलिए जूते धोये बिना नहीं पहन सकता था । मैंने अपनी इन समस्याओं पर काबू पाया है । सार्वजनिक मूत्रालय में जाना शुरू कर दिया है और जूतों पर नजर नहीं डालता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु जितनी परेशानी उठाता हूं, केवल मैं ही ऐसा अभागा पुरुष दुनिया में हूं, जिसकी समस्या इतनी विचित्र है ।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि आपकी समस्या से पीड़ित दुनिया के सभी देशों में हैं । पहले ऐसा सोचा जाता था कि शायद भारत में इनकी संख्या कम है, परंतु वास्तव में ऐसा नहीं, हमारे देश में भी बहुत लोगों को यह समस्या है । आपने हिम्मत न हार, इन समस्याओं पर काबू पाने की कोशिश की । यह बहुत सराहनीय है । आपको चाहिए कि सार्वजनिक सुविधाएं प्रयोग में लाएं, कतरायें नहीं तथा जूते आदि कदापि न धोएं । जिससे मन डरता हो उस स्थिति में अपने को न डालें । आजकल इस रोग की कुछ दवाएं भी उपलब्ध हैं । इस रोग पर काबू पाया जा सकता है ।

संतुलन खोना

जोरावर सिंह, हिमाचल प्रदेश : मेरा इकलौता लड़का जिसे मैं बहुत प्यार करता हूं तथा उसकी खुशी के लिए कुछ भी कर सकता हूं, मेरे मामा के लड़के की लड़की से प्रेम करने लगा है । हमारे समाज में तीनों गोत्रों को बचाना आवश्यक है । इसलिए उनके मिलने पर पाबंदी लगा दी है । परंतु वह दोनों ही अपना मानसिक संतुलन खो बैठे हैं । मेरे बेटे के चेहरे से मुसकराहट चली गयी है तथा उसकी हालत मेरे से देखी नहीं जाती । मेरे मित्र के घर में ठीक ऐसी घटना हो चुकी है तथा दोनों बच्चों ने आत्महत्या कर ली थी । यदि मेरे बेटे ने भी ऐसा किया तो मैं कहीं का न रहूंगा । परंतु क्या करूं, परंपरा को भी तोड़ा नहीं जा सकता । मैं कई महीनों से अब अपनी नौकरी पर नहीं जा रहा हूं । लगता है बेटे की चिंता से मैं भी अपना मानसिक संतुलन न खो बैठूं ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें । —संपादक

आपकी द्वंद्वपूर्ण मानसिक स्थिति है, परंतु आप बच्चों को समझा-बुझाकर अपनी मानसिक स्थिति से अवगत कराकर उन्हें मना लें । यदि नहीं मना सकते तो बच्चों का जीवन अधिक मूल्यवान है । परंपरा को निभाने से क्या लाभ, यदि बच्चे ही न रहें । परंपरा मनुष्य के लिए बनी है न कि मनुष्य परंपरा के लिए । परंपरा का अर्थ था कि बहुत नजदीक रिश्तेदारी में विवाह से रोग आदि बढ़ सकते हैं, परंतु इनका रिश्ता बहुत नजदीकी नहीं माना जा सकता । जैसा कि आपने लिखा है कि आपको डर है कि यह दोनों कोई गलत कदम न उठा लें, जिससे आपको बाद में पछताना पड़े । इसलिए अपने रूढ़िवादी परंपरागत विचार को छोड़ दें तथा अपने बच्चों के जीवन व सुख का सोचें ।

गंदी हरकतें

एक बहन, जयपुर : संयुक्त परिवार है । ६-७ बहन-भाई, माता-पिता, भाभियां व बच्चे एक साथ रहते हैं । एक और आदमी जो हमारे रिश्ते में है, साथ रहता है तथा सभी उसे पिता की तरह सम्मान देते हैं । लेकिन वह आदमी अकेले में बच्चों के साथ गंदी हरकतें करता है । यहां तक कि तीन वर्ष के बच्चे के साथ, जो मेरा भतीजा है, उसी के साथ सोता है । रात में वह गंदी हरकत करता है । बच्चों को चीज व पैसे का लालच देता है । विश्वासपात्र होने के कारण मेरी कोई नहीं सुनता । मैं मन ही मन कुढ़ती रहती हूं । कृपया समस्या सुलझाएं । वास्तव में जो आप कह रही हैं इस ओर सारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाश्चात्य देशों में ध्यान दिया जा रहा है कि सबसे बड़ा खतरा घर के तथा और विश्वासपात्र लोगों से ही होता है । साथ ही कुछ लोग होते हैं जो केवल बच्चों से ही ऐसे कार्य करते हैं । सजग व सतर्क रहना ही उचित है । आपको अपनी बात जोर-शोर से कहनी चाहिए या उसे रंगे हाथों पकड़ पर्दाफाश करें । वास्तव में हमारे देश में अभी इन बातों की ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता और सोचते हैं कि यह सब तो पाश्चात्य देशों में होता है । वास्तव में समस्याएं हमारे यहां भी हैं । यह जानना आवश्यक है । आशा है आप हिम्मत नहीं हारेंगी तथा अबोध बालकों को इस तरह के अपराधों से दूर कर पाएंगी ।

जिंदगी व्यर्थ

बबली झंझारपुर, बिहार : १५ वर्ष की छात्रा हूं । माता-पिता रूढ़िवादी हैं । लड़की का घर से बाहर कदम रखना भी गुनाह समझते हैं । मैं अपनी पहचान बनाना चाहती हूं । सातवीं कक्षा से ही कविता/शायरी लिखती आ रही हूं । उसे प्रकाशित करवाना चाहती हूं । माता-पिता कहते हैं कि शादी के बाद यह सब करना । लड़की को प्रोत्साहन देने के बजाय अरमान का गला भारतीय परिवारों में घोट दिया जाता है । क्या शादी और जिंदगी का मकसद एक ही है । जिंदगी व्यर्थ न हो—सलाह दें ।

आप १५ वर्ष की हैं । अपनी पहचान बनाना चाहती हैं । बहुत सराहनीय है । कविता-शायरी लिखें, उसे प्रकाशित कराएं । वास्तव में वह डरते हैं कि आपके कोई कार्य आपकी शादी में बाधक न हों, कविता करना तो विवाह में बाधक नहीं होता । विवाह पूर्ण जिंदगी का आवश्यक अंग अवश्य है, परंतु केवल विवाह ही सब कुछ है ऐसा गलत है । आशा है अपने रूढ़िवादी माता-पिता को भी आप अपने तर्क व अथक कार्य द्वारा बदल पाएंगी, संघर्ष करना सीखें न कि हिम्मत हारना । हमारे देश की महिलाएं और कई देशों से कहीं आगे व स्वच्छंद हैं । पिछड़ी नहीं । आशा है आप अपनी पहचान अवश्य बना लेंगी ।

अदृश्य शक्ति का रोक

आलोक अग्रवाल, आगरा : १९ वर्ष का एक व्यापारी व विद्यार्थी हूं । प्रारंभ से ही कुशाग्र बुद्धि का छात्र रहा । विगत तीन-चार वर्ष पूर्व से पढ़ाई से आकस्मिक रूप से ऐसा मन उचाट हुआ है कि पुस्तकें देखने मात्र से ही सिरदर्द होने लगता है । ऐसा प्रतीत होता है कि कोई अदृश्य शक्ति मुझे पढ़ाई करने से रोकती है । इसीलिए लाख चाहने पर भी मैं पढ़ नहीं पा रहा । हालांकि मैं एक उच्च मध्यमवर्गीय व्यावसायिक परिवार से संबंधित हूं ।

वास्तव में यह अदृश्य शक्तियां कोई बाहरी शक्ति नहीं, वह आपके भीतर अचेतन मन में आपकी अपनी समस्याओं, द्वंद्व के रूप में हैं जो प्रत्यक्ष रूप में केवल उचाट मन व सिरदर्द बनकर ही सामने आती हैं । आपने लिखा है कि नहीं पढ़ सका तो भी कोई बात नहीं । क्योंकि आप एक उच्च मध्यम वर्ग परिवार से संबंधित हैं । क्या इसके पीछे यह मानसिकता तो नहीं । कहीं ऐसा तो नहीं कि आपके माता-पिता या और परिवार के लोग चाहते हों कि शीघ्रातिशीघ्र व्यवसाय संभालें । कहीं पढ़ाई में रमकर व्यवसाय से ही उचाट मन न हो जाए । और

आपके भीतर ऐसी क्या समस्याएं हैं, आप स्वयं या फिर मनोचिकित्सक की मदद से समस्या से निवारण पा सकते हैं । ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलगारिया की व्यंग्य कथा

बेलचो का सपना

● दिमितर पेत्रोवा

काफी खोजबीन के बाद पता चला कि वह दक्षिण अफरीका के उत्तर पश्चिमी प्रदेश में बोली जानेवाली एक भाषा है। बेलचो का ब्रिटेन जाने का सपना तो टूट गया था। पर यह ज्ञात होते ही कि उसने दक्षिणी अफरीका की एक भाषा सीख ली है, तब उसने दक्षिण अफरीका का राजनयिक बनने की ठानी।

कुछ समय पहले हमारे कार्यालय में किसी ने टिप्पणी की कि हमें अपना सांस्कृतिक स्तर सुधारना चाहिए। फल यह हुआ कि अंगरेजी के अध्ययन के लिए एक छोटा-सा समूह बना डाला गया। शीघ्र ही उसमें सोफिया की चार लड़कियां, ब्रेज मिन के दो कर्मचारी और त्रुन से दो व्यक्ति शामिल हो गये। मैं राडोमीर से था। मैं भी उसमें शामिल हो गया। हम सभी पश्चिमी बलगारिया से थे और हमारा विश्वास था कि पश्चिमी यूरोप की अन्य भाषाओं की तरह अंगरेजी सीखने में भी हमें कोई दिक्कत न होगी। हममें से प्रत्येक के अंगरेजी सीखने के अलग-अलग उद्देश्य थे। लड़कियां चाहती थीं कि जब वे विदेश यात्रा पर जाएंगी तो दुकानदारों से मोल-तोल अच्छी तरह कर सकेंगी। साथ ही जब वे अंगरेजी में बात करेंगी तो विदेशों के लोगों को भी सुखद आश्चर्य में डाल देंगी।

हम सब में बेलचो सोतीरोव सबसे अधिक उम्र का था। अंगरेजी सीखने के लिए वह बेहद अधीर था। इसका भी एक कारण था। बेलचो अंगरेजी सीखकर राजनयिक बनना चाहता था। वह कल्पना किया करता कि अंगरेजी सीखने के बाद जब वह ब्रिटेन में राजनयिक के पद पर नियुक्त होगा तो किस तरह ब्रिटिश रानी के सामने अपना परिचय-पत्र प्रस्तुत करेगा।

शेष हम सब अंगरेजी साहित्य के अध्ययन के लिए ही इस समूह में शामिल हुए थे।

लेकिन शीघ्र ही हमारे सारे प्रयास संकट में पड़ते नजर आये। हमें नागरिक सुरक्षा आयोग के सामने पेश होने के लिए कहा गया। हमें जाना ही पड़ा।

"तो आप सब अंगरेजी सीख रहे हैं !" आयोग के अध्यक्ष ने कुछ व्यंग्यात्मक स्वर में कहा, "आपको यदि कोई विदेशी भाषा सीखनी ही है तो आप साम्राज्यवाद विरोधी वारसा-संधि वाले देशों की भाषा क्यों नहीं सीखते ?"

हम सब असमंजस में पड़ गये। सहसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

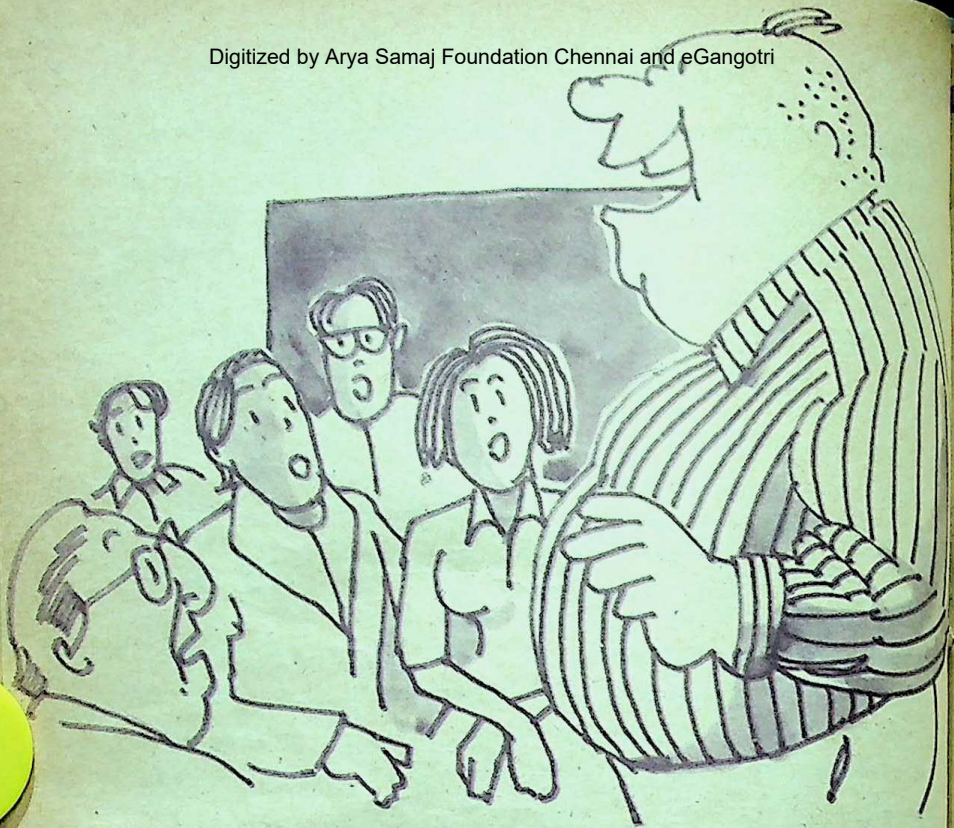

मुझे ध्यान आया कि हमें तो पार्टी आफिस ने ही अंगरेजी-शिक्षक से संपर्क करने का सुझाव दिया था। इसका अर्थ यह भी था कि हमारे इस प्रयास को सरकारी आशीर्वाद प्राप्त था। मैंने तत्काल आयोग के अध्यक्ष को यह बात बतायी।

सहसा उसका स्वर बदल गया। वह उत्साह से बोला, "तुम ठीक कहते हो। साम्राज्यवादियों से लड़ने के लिए हमें उनकी भाषा भी सीखनी ही चाहिए।"

प्रतिष्ठा भी बढ़ गयी। हम लोगों ने सप्ताह में दो दिन कक्षाएं शुरू कर दीं।

इस तरह कई महीने बीत गये। हमारे अंगरेजी के शिक्षकों ने हमें अंगरेजी सिखाने के लिए सारे हथकंडे अपना लिये पर हमारी रफ़्तार धीमी की धीमी रही। अतः तय पाया गया कि इस पढ़ाई को थोड़ा विराम दिया जाए। बेलचो बेहद नाराज हुआ। उसे अपने सारे सपने ध्वस्त होते नजर आये। पर उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने आफिस का टेप रिकार्डर लिया और कैसेट की सहायता से अंगरेजी सीखना जारी रखने का संकल्प किया।

कुछ दिनों बाद की बात है।

बेलचो ने हमें एक दिन कक्षा में एकत्र किया और फिर बीस मिनट तक धाराप्रवाह बोलने लगा। हमें प्रतीत हुआ कि बेलचो जो भाषा बोल रहा है, वह शायद अंगरेजी ही है। हम सब उसकी इस सफलता से प्रसन्न तो थे, पर उससे ईर्ष्या भी अनुभव कर रहे थे। हमें लगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेलचो का राजनयिक बनने का स्वप्न पूरा हो जाएगा। हमने अपने अंगरेजी-शिक्षक की ओर देखा। वह भी आश्चर्यचकित था। उसने कहा, 'मैंने किसी को भी इतने कम समय में किसी विदेशी भाषा पर ऐसा अधिकार करते नहीं देखा।' फिर क्षण भर रुककर उसने कहा, 'पर एक बात है, बेलचो ने जो भाषा सीखी है, वह अंगरेजी तो हो नहीं सकती। हां, भले कोई दूसरी भाषा जरूर हो।'

बेलचो का चेहरा उतर गया। वह अस्फुट स्वरों में बोला, "यह कैसेट मैंने एक कर्मचारी से लिया था। वह अफरीकी भाषाओं के विभाग में काम करता है।"

हमारे अंगरेजी-शिक्षक ने उसे सांत्वना दी, 'कोई बात नहीं। अंगरेजी न सीख पाये तो क्या हुआ। तुम पहली बलगारियन हो, जिसने एक अफरीकी भाषा पर इतने कम समय में अधिकार कर लिया है।'

इसके बाद वह बेलचो के साथ यह पता लगाने गया कि आखिर वह भाषा कौन-सी है?

काफी खोजबीन के बाद पता चला कि वह दक्षिण अफरीका के उत्तर पश्चिमी प्रदेश में बोली जानेवाली एक भाषा है। बेलचो का ब्रिटेन जाने का सपना तो टूट गया था। पर यह ज्ञात होते ही कि उसने दक्षिणी अफरीका की एक भाषा सीख ली है तो उसने दक्षिण अफरीका में राजनयिक बनने की ठान ली।

वह अपना सबसे अच्छा सूट पहनकर विदेश मंत्रालय गया और वहां उच्चाधिकारियों से अनुरोध किया कि उसे प्रिटोरिदा (दक्षिण अफरीका) में राजनयिक नियुक्त कर दिया जाए।

अधिकारियों ने उसकी प्रशंसा की पर साथ ही यह भी बताया कि दक्षिण अफरीका के साथ देश के कूटनीतिक संबंध हैं ही नहीं, इसलिए उसके अनुरोध को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

पर बेलचो आसानी से हार माननेवाला नहीं था। उसने तय किया कि पहले वह दक्षिण अफरीका के साथ देश के कूटनीतिक संबंध स्थापित करने के लिए आंदोलन छेड़ेगा। फिर नियुक्ति तो अपने आप हो जाएगी।

अब हमें यह पता लगा कि किसी रसूखवाले व्यक्ति ने कहा है कि उसकी इस मांग पर विचार किया जाएगा। **अनु: प्रदीप शुक्ला**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों का गिरना? असमय पकना? खुश्की होना?

बालों की समस्या?

यह सब बालों की बिमारी है ही नहीं, यह केवल लक्षण मात्र हैं। इसलिए इनके उपचार के लिए बालों की जड़ों में औषधि लगाने के साथ-साथ सटिक खाने की भी औषधि नितान्त आवश्यक हैं। ...डा० सरकार

न हो खुश्की, घने काले बाल अगर हो पाना, तो आर्निकाप्लस लगाना और होगा ट्रायोफर खाना।
इस दोनों के करने से बालों का गिरना होगा बन्द, असमय पकना रोकेगा, और खुश्की होगी कोसों दूर।
सर मे होगी ठडक, पेट की गड़बड़ी होगी दूर, बालों में भी होगी मजबूती, बालों के बढ़ने में होगी मदद,
तभी तो नये, घने और काले बाल बढ़ेगे। इससे आपके रूप में जगेगी एक आभा नयी,
डर नहीं क्योंकि होगा ही लाभ, नुकसान नहीं।

विश्व में पहली बार

बालों के सम्पूर्ण उपचार के लिए

डा० सरकार का-एक लाभकारी अविष्कार-
आर्निकाप्लस-तेलविहीन हेयर लोशन और
खाने के लिए होमियो हेयर टॉनिक-**ट्रायोफर** टेबलेट
दोनों, एक ही पैकेट में।

पैक – ६० मि.लि. और १०० मि.लि.

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर

ट्रिपल ऐक्शन हेयर वाइटलाइजर

बालों की समस्या के, समाधान के लिए शोध से प्रमाणित होमियो औषधि।

सेवन विधि :
पैकेट के भीतर

लीवोसीन निर्माता की
सहयोगी संस्था Allen का
होमियो रिसर्च का एक उपहार।

एलेन लेवोरेटरीज प्रा० लि०
एलेन हाउस, २२४/एच, मानिकतल्ला मेन रोड,
कलकत्ता-५४, फोन : ३६-३०९६

Dr. Sarkar Group

एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषधि निर्माता :

Marketed by :
Allen's India Marketing Pvt. Ltd.
ArnikaPlus Apartment, Sealdah
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

Allen's Ad. Jaipur

जिसके प्रयत्न से हीं मिले आपको आरोग्य और विश्वास।

84/77B, Narayan Bag, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph-242844.
Branch Offices : Halwai Lane, Raipur-492001, Ph-26263
(Behind Post Office) East Boring Canal Road, Patna-800 001, Ph.-236078

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

जिंदगी

जिंदगी
एक श्मशान है,
जलती है
वक्त की चिता,
चांडाल है,
पैसा वहां,
कफन है,
अतीत यहां,
देखता हूं,
जलती चिता यह,
जाने कौन,
कब, आना होगा,
इस श्मशान में दोबारा !

—संजय कठल

शिक्षा : ए.एम.आई.ई. (सिविल इंजीनियरिंग)
आत्मकथ्य : कविता शब्द नहीं हैं । हृदय के भाव ही शब्दों के रूप में बाहर आते हैं ।
पता : ४७८, लिंक रोड, गढ़ाफाटक, जबलपुर

नदी और विद्रोह

नदी के नीचे भी
एक नदी बहती है
पत्थर से टकरा-टकरा कर
अकस्मात ही नीचे की ओर
उतर आती है नदी
किनारे से हिलकोरें खेलती हुई
फैलने की चाह में कभी-कभी
किनारे से लड़ती है नदी
मगर किनारा कहता है
'मत फैल नदी तू
अनर्थ हो जाएगा
व्यवस्था का अंत हो जाएगा
तेरे लिए मार्ग सुनिश्चित है,
नदी चुपचाप बहती चली जाती है
भीतर की नदी उफनती है
हाहाकार करती है
विद्रोह करती है
पर ऊपर की नदी शांत
बहती चली जाती है
भीतर की नदी की हाहाकार लिए
एक नदी ऊपर बहती है
नदी के नीचे भी एक नदी बहती है ।

—सरिता

शिक्षा : स्नातकोत्तर (हिंदी)
आत्मकथ्य : जब मन रूपी पंछी पिंजरे से निकल खुला आसमान एवं रोशनी चाहता है तब उसे अपने पर के काटे जाने का अहसास होता है । उसकी आंखों से निकलने वाले अनवरत आंसू कविता बन जाती है ।
पता : द्वारा, डॉ. ए. के. सिंह, ३१७, पाटलीपुत्र कॉलोनी, पटना-८०००१३, बिहार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म युद्ध

आदि युग और कलियुग को
बांट दो दो कालों में फिर देखो
एक युद्ध का काल होगा और दूसरा
युद्ध की तैयारी का
जरा खोजो तो इतिहास के गर्भ में
कोई शांति का काल
कृष्ण, राम, मूसा या मुहम्मद के
युगों को खंगालो.... या फिर
द्वापर, सतयुग और कलियुग की
कथाओं से पूछो कि.... कब ।
इतिहासकार ने मानव सभ्यता के इतिहास में
शांति का काल लिखा.... ।
कभी धर्म युद्ध कभी धन युद्ध
और अब
परमाणु, रासायनिक युद्ध की कगार पर
खड़ा है विश्व
आंगन की हद हो या देश की सरहद
सारी दीवारें गिरा दो... इसलिए कि
जहां-जहां सीमाएं हैं वहां-वहां युद्ध हैं
और अगर ऐसा न हुआ तो
आइंस्टीन का कथन सच हो जाएगा कि
चौथा विश्व युद्ध
पत्थरों और लाठियों से लड़ा जाएगा

—खालिद जमां 'एकलव्य'

शिक्षा : स्नातक
आत्मकथ्य : शब्दों का ईंधन जुटाकर पकायी हैं लाल सुर्ख रचनाएं । हम भट्टियों में जलते हुए अयस्क हैं और कुंदन की कसौटियां आपके हाथों में हैं ।
पता : ईदगाह रोड, बांदा (उ.प्र.)

दुःख लौट आओ

दुःख/ कहां,चले गये तुम
कई दिन बीते 'दर्शन' नहीं दिये
तुम्हारा बैरी, सुख
तो अकसर आ जाता है
तुम क्यों नजर नहीं आते
तुम्हारी मित्र/सखा पीड़ा/चिंता
कभी आ जाती है
फिर तुम ही क्यों
'ईद का चांद' बने हुए हो
जिंदगी के रंग भी तुम्हारे बिना
फीके लगते हैं
दुःख कहां चले गये तुम
चलो लौट आओ ।

—मोनिका सें

शिक्षा : बी.ए. तृतीय वर्ष ।
आत्मकथ्य : कविता दिल में पैदा हो रही उत्तज को शब्दों के माध्यम से बाहर लाना है ।
पता : द्वारा श्री टी. के. सेठी, २८१ सेठी सदन, जगदीश होटल के पास, लाड़पुरा, कोटा-३२४००६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां

मां, क्या जिंदगी है यह
कि हर रोज गुजरता हूं
परीक्षा के दौर से
कि हर रोज साबित करता हूं
कि मैं ठीक हूं

मां, क्या जिंदगी है यह
कि हर रोज जूझता हूं
जीवन और मौत से
कि ढूंढ़ता रहता हूं
वो मंजिल जो दूर है

मां, क्या जिंदगी है यह
कि जो मृगमरीचिका है
जो सच है वही झूठ है
कि जो झूठ है वही सच है
समझ नहीं पाता हूं

मां, क्या जिंदगी है यह
कि जो दुःख है पल-पल
जहां सुख एक कदम आगे है
हमेशा जैसे कोल्हू के बैल से
उसका चारा

● रजत मिश्र 'एकलव्य'

आत्म कथ्य : मेरी तीव्र भावनाएं ही मेरी कविताओं की जननी हैं। मेरे लिए कविताएं भावनाओं के सागर से चंद समय के लिए ही सही, निकलने का माध्यम है।

शिक्षा : बी.ए. (दर्शन शास्त्र, अंतिम वर्ष)

पता : १८ सी, पाकेट ए-९, कालकाजी एक्स. नयी दिल्ली-१९

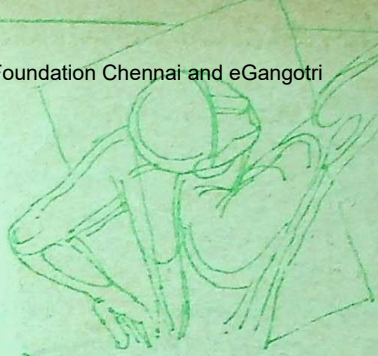

मैं संघर्षरत हूं

मेरी आशाओंका सूरज
करेगा इक दिन
तम घनघोर परास्त
मैं प्रतीक्षारत हूं,
मैं संघर्षरत हूं
और होगा अवश्य नवल प्रभात
ये तीक्ष्ण, विषैले बंध
इस जीर्ण समाज के
कब तक करेंगे निर्धारित
मापदंड मेरे जीवन के
मैं प्रतीक्षारत हूं
मैं संघर्षरत हूं
और होगा अवश्य नवल प्रभात

● अर्चना सालेचा आरजू

आत्म कथ्य : मेरी मौन पीड़ा मेरे विद्रोह को स्वर देने के लिए लेखनी ही मेरा राग है और लेखनी ही मेरा साज

शिक्षा : बी.एस.सी., एम.ए. (उत्तरार्द्ध)

पता : डी १/१०३, कमल अपार्टमेंट्स पी.एच. रोड, बनीपार्क, जयपुर।

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मों में हिंसा, सेक्स औ

भारत की हालीवुड नगरी बंबई में भीषण बम विस्फोटों के बाद सुनने में आया कि सिने जगत से जुड़े कुछ बड़े निर्माता, वितरक और अन्य दिग्गज दिल्ली के काफी चक्कर लगाते तथा राजनेताओं के पास मंडराते देखे गये। कारण कुछ भी रहा हो किंतु यह एक हकीकत है कि 'बंबई कांड' के बाद सरकार पर इस बात के लिए जबरदस्त दबाव पड़ा कि वह अपराध जगत के सरताजों, तस्करों, देश-विरोधी तत्वों तथा फिल्म उद्योग के प्रगाढ़ संबंधों की गंभीरता से जांच करवाये।

कौन से राजनीतिज्ञ

यह सुनिश्चित करे कि इस देश की आंतरिक सुरक्षा एवं उससे जुड़ी हुई एजेंसियां सब ठीक ठाक हैं, सक्षम और सजग हैं। साथ ही इस बात की भी जांच होनी चाहिए कि वे कौन-से राजनीतिज्ञ हैं जिनका नाम गाहे-बगाहे इस चंडाल चौकड़ी से जोड़कर लिया जाता है। वैसे इस संबंध में जहां तक लोगों का प्रश्न है कुछ ने तो सिने जगत, अपराधी और तस्करों की सांठ-गांठवाली बात पर विश्वास ही नहीं किया। कुछ ने कहा कि अगर ऐसी बात है तो हमारी सरकार इस बात के लिए सक्षम है कि इनका भंडाफोड़ कर इन्हें सबक सिखाये। किंतु साथ ही जनता के एक वर्ग ने दबी जबान यह भी कहा कि साहब चुपचाप बैठिए और देखते जाइए, बड़े लोगों का कुछ नहीं होता। आरोप-प्रत्यारोप लगेंगे, थुक्काफजीहत होगी, जांच की जाएगी, बाद में सब टांय-टांय फिस्स। जनता भी सब कुछ भूल जाएगी तथा नेता अपने कामों में व्यस्त हो जाएंगे। इसी बीच सिनेमावाले दो-चार और भड़काऊ सिनेमा दिखा डालेंगे, परिणामस्वरूप देश एवं समाज विरोधी तोड़-फोड़ एवं हिंसा, कुछ लोगों को राजनीति करने का मौका मिलेगा फिर सब कुछ सामान्य हो जाएगा।

वैसे यहां पर एक सवाल जो उभरता है कि यह कहीं समाज-विरोधियों (अथवा देश-विरोधियों) तथा फिल्म जगत के कुछ लोगों की मिली भगत तो नहीं? आज का पहलेवाले नायक जैसा सौम्य, भद्र एवं धार्मिक तथा सामाजिक मान्यताओं पर विश्वास करनेवाला न होकर आते ही मारधाड़ शुरू कर देता है, स्टेनगन चलाता है एवं हत्याओं का बदला हत्या से लेता है। ऐसा हीरो देश, समाज एवं कानून से ऊपर है, व्यवस्थाओं से बड़ा है। उसकी कानून, व्यवस्था और सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों पर कोई आस्था नहीं, वह तो अपनी स्टेनगन के बल पर सबको सीधा कर सकता है एवं सब कुछ बदलकर रख सकता है। वास्तविक जीवन में इस तरह के चरित्र और फिल्मवालों की कितनी छनती है, यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमान का विषय है ।

कहा नहीं जा सकता कि संजयदत्त की गिरफ़ारी एक 'तसल्ली' थी या असली आकागण परदे के पीछे ही रहे, संजयदत्त तो शतरंज का एक छोटा-सा मोहरा था ।

भयंकर परिणामों की ओर

बहुत दिनों से मांग उठ रही थी कि फिल्मों में मारधाड़, हिंसा, बलात्कार और चोरी-डकैती रोकी जाए । ये देश को गलत दिशा की ओर ले जा रहे हैं एवं देश के भविष्य-युवाओं तथा किशोरों को दिग्भ्रमित कर रहे हैं । हिंसा और सेक्स की बढ़ती प्रवृत्ति को देखकर कुछ बुद्धिजीवियों ने इसे 'अमरीकी नकल' या

सोच या नकल का जहां तक प्रश्न है, यह तो सच है कि हमारे ऊपर सांस्कृतिक आक्रमण हो रहा है । इस बात के निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं कि इस तरह के आक्रमणों से देश और समाज को लुंज-पुंज कर दिया जाए तथा युवा शक्ति की रीढ़ तोड़कर रख दी जाए ।

औ अपराध

● सुरेंद्र त्रिपाठी 'सुमन'

पाश्चात्य सोच का परिणाम बतलाया । इस बात से पूर्णतया असहमत न होते हुए भी कहा जा सकता है कि यह भी तो संभव है हमारी फिल्मों में कुछ विदेशी तत्वों तथा उनके हमदर्दों ने घुसपैठ बना ली है । अब यदि अन्य तमाम स्वार्थों विवशताओं को त्यागकर ईमानदारीपूर्वक सख्त कदम न उठाये गये तो हमारे देश व समाज के लिए परिणाम भयंकर ही होंगे । इस विषय पर बोलते हुए एक साहब ने कहा, 'मसलन, यह बिना कारण ही नहीं है कि अचानक हमारी भारतीय फिल्मों को पाकिस्तानी कलाकार बड़े अच्छे लगने लगे थे ।' 'क्लर्क' फिल्म (जो काफी पहले बनी थी) में आये मु. अली तथा जेबा अली, फिर 'हिना' से आयीं जेबा बख्तियार—उसके बाद सोमाअली और अनीता अयूब । ध्यान देने योग्य है कि बंबई बम कांड के काफी पहले अनीता अयूब अपनी एक फिल्म की सूटिंग के दौरान राजस्थान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमावर्ती इलाके में घूमते-घूमते मिलिट्री-एरिया में घुस गयीं थीं । उन पर जासूसी का आरोप भी लगा । बाद में यद्यपि वह निर्दोष घोषित कर दी गयीं, किंतु फिर भी सोचने के लिए तो बहुत कुछ रह ही जाता है ।

सोच या नकल का जहां तक प्रश्न है, यह तो सच है कि हमारे ऊपर सांस्कृतिक आक्रमण हो रहा है । इस बात के निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं कि इस तरह के आक्रमणों से देश और समाज को लुंज-पुंज कर दिया जाए तथा युवा शक्ति की रीढ़ तोड़कर रख दी जाए । किंतु साथ ही स्वाभाविक-सी जिज्ञासा उभरती है कि हम अपने ऊपर ये आक्रमण होने ही क्यों दे रहे हैं क्यों हम अपने सिनेमा द्वारा देश को हिंसा और 'सेक्स' का मीठा जहर देते जा रहे हैं ।

इस पर भी गंभीरतापूर्वक विचार होना चाहिए कि दाऊद और मेमन-जैसे लोगों का हमारे सिने जगत से संबंध, उनका अथाह धन सिने-इंडस्ट्री में लगा है, जिसके कारण समय-समय पर उन्होंने सिनेमा की सोच एवं दिशा को विधिवत प्रभावित किया है ।

माध्यम से खिलवाड़

यह भी सही है कि बंबइया ब्रांड सिनेमा में सेक्स और हिंसा कुछ लोग तो पैसा बनाने के चक्कर में ठूंसते हैं । उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि सिनेमा लोकमत एवं देश तथा समाज निर्माण का एक अति सशक्त माध्यम है । इसकी उनके प्रति गंभीर जिम्मेदारियां हैं तथा वह इनसे मुंह नहीं मोड़ सकता । अंधाधुंध अंगप्रदर्शन, कामुक दृश्य, कामुक गीत तथा मार-धाड़ इन सबसे अब उसे बचना होगा । सभी स्वीकार करते हैं कि भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, नैतिकता में जबरदस्त गिरावट आयी है तथा व्यवस्थाएं कमजोर पड़ी हैं । गरीब आदमी छोटे-मोटे अपराध करता है तो सजा काटता है जबकि बड़े लोग संगीन जुर्म करके भी कई बार बच जाते हैं । राजनीतिज्ञ और अधिकारी भ्रष्ट हुए हैं । अभी भी इस देश में बहुत से

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. (१० हजार रु. का), २. क. जहांगीर के समय से, ख. पहला गोदाम अंगरेजों की सूरतवाली कोठी थी, जिससे 'सूरती' या 'सुरती' नाम पड़ा, ३. लौह-स्तंभ (दिल्ली), कांस्य-स्तंभ (मोहेन जोदड़ो), ४. क. टैंक-रोधक 'नाग' का, ख. टैंक तथा युद्धक वाहनों पर ऊपर से भी हमला कर सकता है, मार ४ हजार मीटर तक, ५. इंडियन एयरलाइंस और एयर इंडिया, ६. अधिक दूरी तक मार करनेवाले प्रक्षेपास्त्रों को नष्ट करने का समझौता, ७. रूस का सोयूज टी.एम.-१७, ८. क. मेक्सिको सिटी, ख. कलकत्ता— १ करोड़ २० लाख ९. थल सेनाधिकारी कर्नल नीलकंठन जयचन्द्रन नायर को (मरणोपरांत), नागालैंड के विद्रोहियों से जूझते हुए बलिदान हो गये, १०. क. उड़िया कवि डॉ. सीताकांत महापात्र, ख. जानकी वल्लभ शास्त्री तथा निर्मल वर्मा, ग. विष्णु प्रभाकर ('अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास पर) ११. क. टेस्ट मैचों में ४३१ विकेट लेने का न्यूजीलैंड के रिचर्ड हैडली का विश्व-रेकॉर्ड तोड़ दिया, ख. ४३१ विकेट लेने और ५ हजार से ज्यादा रन बनाने वाले एकमात्र खिलाड़ी, १२. तंबाकू के पत्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

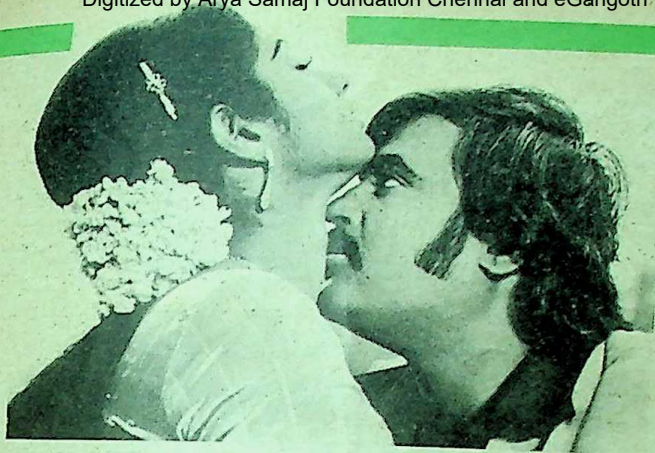

राजनीतिज्ञ और अधिकारी सच्चरित्र एवं ईमानदार हैं, तभी तो यह देश चल रहा है । अतः ऐसा दिखाया जाना कि ये सभी कमजोर और खोखले हो चुके हैं, सिर्फ स्टेनगन द्वारा ही इंसाफ लिया जा सकता है तथा इंसाफ दिलवाया जा सकता है, न तो देश के बारे में अच्छा है और न ही इस तरह के दृश्यों की बारंबार आवृत्ति अपेक्षित है ।

बदलाव का कारण

फिल्मों में इस तरह के परिवर्तन, उसके स्वाद और प्रस्तुति में आये बदलाव को केंद्र में रखते हुए इस विषय में सामान्यतः चार अनुमान लगाये जा सकते हैं । प्रथम, हमारे सिनेमा की बढ़ती हुई तरक्की से कुछ लोगों को सख्त चिढ़ हो रही थी अतः उन्होंने इसे तहस-नहस करने के लिए शतरंजी चालों का एक क्रमवार सिलसिला चलाया । दूसरा कारण हो सकता है कि यह सब ऐसे ही नहीं वरन शत्रु देशों एवं उनके समर्थकों की सोची-समझी चाल के तहत किया जा रहा हो । तीसरी सोच का मानना है कि परिवर्तन तो सृष्टि का स्वभाव है, समाज का नियम है । अतः सिनेमा के स्वरूप में भी परिवर्तन होना आवश्यक है । वैसे यह तर्क का विषय है कि समाज सिनेमा को परिवर्तित कर रहा है या सिनेमा समाज को । चौथा और अंतिम (किंतु महत्त्वपूर्ण) कारण है कि इस कला से जुड़े लोगों की करोड़पति बनने की लालसा, अपराधियों और तस्करों का पैसा, शायद कुछ राजनीतिज्ञों द्वारा प्रदत्त अभयदान एवं शीघ्रातिशीघ्र अधिकाधिक प्रसिद्धि पा लेने की ललक सिनेमा में बदलाव की प्रकृपा को अतिगतिशील बना रही है ।

सिनेमा एक तरह का दृश्य और श्रव्य साहित्य है । और कहा भी गया है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है । स्पष्ट है यदि दर्पण कुरूप है तो चेहरा मोहक दिखने से रहा । दोषी सिर्फ सिनेमा ही नहीं, दोषी समाज और व्यवस्था भी बराबर के ही हैं । इसलिए अपेक्षा की जाती है कि जनसंचार के इस सबसे सशक्त माध्यम को कम से कम कुछ वर्षों के लिए देश के निर्माता का रोल अदा करना पड़ेगा । तब ही हम अपने सिने जगत पर गर्व कर सकेंगे ।

— एन.सी.आर.बी.
ईस्ट ब्लाक-७, सेक्टर-१
आर.के.पुरम्, नयी दिल्ली-६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल की बहार न होगी अगस्त में

ऐसा भी होता है

एक बार चंद बेतकल्लुफ शायरों में पैरोडियों का जिक्र हो रहा था। एक साहब कहने लगे पैरोडी का लुत्फ तब होता है जब असल शेर में मामूली-सा परिवर्तन कर देने के बाद उसमें हास्य पैदा हो जाए।

यह सुनकर वहां बैठे प्रसिद्ध शायर कतील शफाई ने कहा, 'मैं आपसे इत्तिफाक करता हूं। पैरोडी में एक-आध शब्द ही की तरमीम से बात पैदा करनी चाहिए। जैसे 'अदम' का एक शेर है—

शायद मुझे निकाल के पछता रहे हों आप,
महफिल में इस खयाल से फिर आ गया हूं मैं

मैंने इसकी पैरोडी यों की है—

शायद मुझे निकाल के कुछ खा रहे हों आप,
महफिल में इस खयाल से फिर आ गया हूं मैं

'कतील' साहब का शेर सुनकर सभी शायर खिलखिलाकर हंसने लगे लेकिन चंद लमहों के बाद एक शायर 'कतील' साहब से यूं मुखातिब हुए—

"कतील साहब ! आपका एक शेर है न—

उड़ते-उड़ते आस का पंछी दूर उफक में डूब गया,
रोते-रोते बैठ गयी आवाज किसी सौदाई की

मैंने इसकी पैरोडी इस प्रकार की है, लेकिन एक की बजाय आपके शेर के दो लफ़्ज़ों में तरमीम कर दी है। वह यूं है कि

उड़ते-उड़ते-आस का पंछी दूर उफक में डूब गया,
रोते-रोते बैठ गयी आवाज 'कतील' शफाई की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औलाद की बदौलत

हजरत जौक को दिन-रात शेर-गोई के सिवा कोई दूसरा काम ही न था। बादशाह के यहां से तनख्वाह मिलती थी। खुशहाली से जिंदगी बसर करते थे। उन्हें अपने लड़के की कोई परवाह नहीं थी। उनके दोस्तों ने कहा, "हजरत फिक्रे— सुखन तो करते रहिएगा, बच्चे की पढ़ाई का ध्यान रखिएगा। उससे ही आपका आगे नाम चलेगा।"

इस पर जौक साहब ने फरमाया—

रहता सुखन से नाम कयामत तलक है 'जौक'
औलाद से तो है यही दो पुश्त, चार पुश्त

बुढ़ापे में जवानी की बहार

एक हजरत काफी बूढ़े थे। एक दिन वे बनाव-श्रृंगार में मशगूल थे। उन्हें देखकर हजरत अकबर इलाहाबादी साहब ने फरमाया—

मसरूफ हैं हुजूर यह किस बन्दोबस्त में
अप्रैल की बहार न होगी अगस्त में

प्रस्तुति— बृज अभिलाषी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिव प्रसाद पाठक

मेष :

विवादास्पद कार्यों में सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी । पारिवारिक विषमताओं से खिन्नता का उदय होगा । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करें । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता चिंतनीय होगी । परोपकारी प्रयासों में सावधानी रखें । प्रियजन की अस्वस्थता से पीड़ा होगी । साहसिक प्रयास तथा पुरुषार्थ से दुष्कर कार्यों की पूर्ति होगी । सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी । नवीन मित्र का समागम उपलब्धिदायी होगा ।

वृषभ :

नवीन दायित्वों से प्रसन्नता होगी । विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से लंबित समस्या का समाधान होगा । आजीविका संबंधी परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । शत्रु पक्ष गुप्त षडयंत्र कर प्रतिष्ठा को प्रभावित करेगा । अतिथि आगमन से प्रसन्नता होगी । आमोद-प्रमोद की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । प्रवास में परेशानियों के बावजूद उपलब्धि होगी । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । रचनात्मक एवं सामाजिक कार्यों में धन व्यय होगा ।

मिथुन :

आजीविका की दिशा में विद्यमान अवरोध दूर होगा । नवीन स्थान की यात्रा से लाभ होगा । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । चिकित्सादि पर व्ययाधिक्य होगा । आध्यात्मिक सत्संग का सुअवसर मिलेगा । सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा । संपत्ति के कार्यों में शत्रु पक्ष से सुलह होगी । परोपकारी कार्यों से यश-वृद्धि होगी । पारिवारिक असंतुलन से खिन्नता होगी ।

कर्क :

मास में नवीन योजनाओं में धीमी उन्नति होगी । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से कार्यों में अवरोध होंगे । संपत्ति कार्यों में धन व्यय होगा । न्यायालयीन कार्यों में संतुलन रखें । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । निकटजन से भावनात्मक पीड़ा होगी । परोपकारी कार्यों में सर्तकता रखें । व्यर्थ जोखिम पूर्ण कार्यों में संयम रखें ।

सिंह :

नवीन योजनाओं से भाग्यवृद्धि होगी ।

ग्रह स्थिति :

सूर्य १३ अप्रैल से मेष में, मंगल ६ से मीन में, बुध ५ से मीन में, २२ से मेष में, गुरु तुला में, शुक्र २१ से वृषभ में, शनि-कुंभ में, राहु-वृश्चिक में, केतु-वृषभ में, हर्षल मकर में, नेप्चयून धनु में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व और त्यौहार

१-अप्रैल-एप्रिल फूल, गुड फ्राइडे, ३-शीतलाष्टमी, ६-पापमोचनी एकादशी, ८-प्रदोष, १०-अमावस्या, ११-श्री संवत २०५१ 'सर्वजित' आरंभ, गुडी पड़वा, १२- वर्षपति पूजा ध्वजारोहण, १३-वैशाखी, १४-गणगौरी व्रत, १५-वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, १६-श्री पंचमी, १९-महाष्टमी, २०-श्री राम नवमी, २२-कामदा एकादशी, २३-शनि प्रदोष, २४-महावीर जयंती, २५-चैत्री पूर्णिमा श्री हनुमान जयंती, २८-संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी ।

उच्चाधिकारी अथवा राजनेता का सहयोग मिलेगा । संपत्ति विवाद अथवा न्यायालयीन कार्यों में विजय मिलेगी । लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों से प्रतिष्ठा वृद्धि होगी । जोखिमपूर्ण कार्यों से आकस्मिक धन लाभ होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति होगी । प्रवास उपलब्धिपूर्ण तथा उत्साहवर्धक होगा । शत्रु पक्ष से सावधानी रखें । आमोद-प्रमोद में संयम रखें ।

कन्या :

आर्थिक दिशा में चल रहे प्रयासों की पूर्ति होगी । विशिष्ट राजनेता से संपर्क होगा । आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन होगा । न्यायालयीन कार्यों में अनपेक्षित उपलब्धि होगी । प्रियजन की अस्वस्थता होगी । प्रवास की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । व्यर्थ संभाषण से शत्रु वृद्धि होगी । धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा । जोखिमपूर्ण कार्यों से धन लाभ होगा ।

तुला :

आजीविका की दिशा में मनोवांछित परिवर्तन होगा । व्यक्तिगत प्रभाव तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । संपत्ति कार्यों में अनुकूल अवसर मिलेगा । सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । धार्मिक स्थान के प्रवास से आनंद अनुभूति होगी । नवीन संपर्कों से आर्थिक संसाधन में वृद्धि होगी । विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा । आमोद-प्रमोद की अधिकता रहेगी ।

वृश्चिक :

मास में आत्मविश्वास तथा साहस से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से शत्रु पक्ष का शमन होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यस्तता होगी । सामाजिक प्रभाव बढ़ेगा । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्द्धक होगा । स्वजनों के सहयोग से संपत्ति समस्या का समाधान होगा । परोपकारी प्रयासों में जोखिम पीड़ादायीहोगा ।

धनु :

मास में विषम स्थितियों का उदय होगा । पुरुषार्थ तथा पराक्रम से प्रतिकूल स्थितियों पर विजय मिलेगी । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से चिंता होगी । पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । प्रियजन की अस्वस्थता पर व्ययाधिक्य होगा । संपत्ति कार्यों में विलंब हितकर होगा । प्रवास में सावधानी रखें । नवीन मित्र का समागम होगा ।

मकर :

मास में नवीन वाहन अथवा संपत्ति-क्रय का योग है । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से लंबित कार्य पूर्ण होगा । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके भी बयां जुदा-जुदा

दिल के आईने में इस तरह उतरती है निगाह
जैसे पानी में लचक जाए किरण क्या कहना
—फिराक

चली है थाम के बादल के हाथ को खुशबू
हवा के साथ सफर का मुकाबला ठहरा
—परवीन शाकर

दोस्तो ! तुमसे गुजारिश है यहां मत आओ
इस बड़े शहर में तन्हाई भी मर जाती है
—जावेद नासिर

तेरा गम हर गमे दुनिया की दवा देता है
एक शोला है जो शोलों को बुझा देता है
—कासिम शब्बीर नकवी नसीराबादी

इस सादगी पे कौन न मर जाए ए खुदा
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं
—गालिब

अगर कुछ भी जले अपना बड़ी तकलीफ होती है
बड़ा आसान होता है, किसी का घर जला देना
—नित्यानंद तुषार

मेरी रुसवाई से हो जाओगे तुम भी रुसवा
बात मानो मेरी रुसवाई का चर्चा न करो
—सालखीन फेमी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

होगी । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । प्रवास का योग उपस्थित होगा । परोपकारी कार्यों से प्रतिष्ठा वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर प्रतिष्ठा को प्रभावित करेगा । संपत्ति विवाद अथवा न्यायालयीन कार्य में सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण से खिन्नता होगी ।

कुंभ :

नवीन योजनाओं की पूर्ति हेतु अनुकूल स्थितियों का उदय होगा । सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों की अधिकता होगी । धार्मिक स्थान की यात्रा होगी । मास उत्तरार्ध में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । वाहनादि का प्रयोग सावधानी से करें । पारिवारिक अस्वस्थता से चिंता तथा व्यय की अधिकता होगी । शत्रु पक्ष के गुप्त षड्यंत्रों से सतर्क रहें । न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा । प्रियजन से भेंट होगी ।

मीन :

मास में विग्रहकारी स्थितियों का उदय होगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से दायित्व में वृद्धि होगी । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता रहेगी । रक्त तथा उदर विकार से पीड़ा होगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा । व्यर्थ संभाषण से पारिवारिक वैमनस्य बढ़ेगी । प्रवास में व्यर्थ पीड़ा होगी । निकटजन के सहयोग से आर्थिक समस्या का निराकरण होगा ।

—ज्योतिषधाम पत्रिका
१४४, ओल्ड सुभाष नगर, गोविंदपुरा, भोपाल

मूढानामेव भवति क्रोधो ज्ञानवतां कुतः
(विष्णु पुराण १/१

मूर्खों को ही क्रोध होता है, ज्ञानियों को नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तालियां मोल बेचना धंधा था

● सुरेन्द्र श्रीवास्तव

तालियों का आज के युग में विशेष स्थान हो गया है । इसमें कोई शक नहीं कि प्रशंसा के लिए बजायी गयी तालियों द्वारा उत्पन्न संगीत बेहद कर्णप्रिय लगता है । 'यदि आप किसी की प्रशंसा नहीं कर सकते, तो दूसरों की प्रशंसा को खरीद लें, चाहे वह दिखावटी प्रशंसा ही क्यों न हो ।' —इस सिद्धांत का पालन मनोरंजन जगत में कार्य कर रहे वे लोग खूब करते हैं, जो दूसरों का मनोरंजन करके अपनी जीविका कमाते हैं ।

आजकल तो यह एक आम धारणा बन गयी है कि राजनीतिक नेताओं की छोटी या बड़ी, सभी प्रकार की जनसभाओं में भीड़ बढ़ाने के लिए किराये पर लोग लाये जाते हैं । ये

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किराये के लोग नेताजी की सभा में भीड़ तो बढ़ाते ही हैं, साथ ही साथ उनके अच्छे तो अच्छे, यहां तक कि ऊट-पटांग भाषण पर भी तालियां बजाते हैं । इस कथन में सत्य है और इसकी सत्यता राजनीतिक नेताओं की किसी भी सभा में जाकर आसानी से परखी जा सकती है ।

कहा जाता है कि रोम के विश्व प्रसिद्ध सम्राट नीरो ने भी अपने राज्य में काफी संख्या में ताली बजानेवाले लोग रख रखे थे । 'जलता रोम व वंशी बजाता नीरो' जग जानी बात है । उसी नीरो ने अपने कार्यों की प्रशंसा में तालियां बजवाने के लिए रोम में ऐसे पांच हजार वेतनभोगी रखे हुए थे, जो सम्राट नीरो के मुंह से एक भी शब्द निकलने पर जोरों से तालियां पीटने लगते थे ।

इसी प्रकार अधिकांश सम्राट व शासक अपने राज्य में अपनी प्रशंसा करनेवाले व्यक्ति रखते थे । हालांकि सभी शासक तालियां बजवाने के शौकीन नहीं थे, लेकिन किसी न किसी रूप में अपना गुणगान करवाना वे पसंद करते थे ।

ब्रिटेन में किराये पर तालियां पीटनेवाले प्रथम युद्ध से पहले प्रमुख बैले नर्तकियों द्वारा नियुक्त किये गये थे । ये किराये के लोग नर्तकियों के प्रत्येक नृत्य पर प्रशंसा में जमकर तालियां बजाते थे । यह वस्तुतः उन दिनों प्रसिद्धि का एक तरीका था ।

१९वीं शताब्दी में एक थियेटर दर्शक ने ऐसे ही किराये पर तालियां पीटनेवाले एक व्यक्ति के बारे में समाचार-पत्र 'दि टाइम्स' में शिकायत के रूप में एक पत्र लिखा । उस व्यक्ति द्वारा दिये

आलोचना करनेवाले इस प्रकार किराये पर ताली बजाने की लाख आलोचना करते थे; किंतु समय के साथ-साथ तालियां बेचने का यह धंधा बढ़ता ही जा रहा था । इस पर कोई रोक न लग सकी ।

गये विवरण में इस प्रकार पैसे लेकर वक्त-बेवक्त तालियां बजाने के विषय पर रोचक प्रकाश पड़ता है । समाचार-पत्र में प्रकाशित उसकी शिकायत के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश इस प्रकार थे—

'मार्केट थियेटर में गंदे कपड़े पहने हुए पीले चेहरेवाला वह व्यक्ति अनावश्यक रूप से 'वाह-वाही' करते हुए हास्यास्पद और बेवक्त फिकरे कस रहा था । ...यदि कुछ विशेष व्यक्तियों के कार्य की सराहना करने के लिए उस व्यक्ति को पैसे दिये जाते हैं, तो उसे जरा अक्ल से काम लेना चाहिए । ...उसे अपने रवैये से इस शक की पुष्टि नहीं करनी चाहिए कि उसके द्वारा बजायी जा रही तालियों के पीछे पैसों की खनक बोल रही है । ...यह सचमुच बड़ा हास्यास्पद लगता था ।'

इससे स्पष्ट होता है कि तब किराये के ताली बजानेवाले इतने प्रसिद्ध न थे और न ही झूठी प्रशंसा के लिये ताली बजवाने में इतनी बेशर्मी होती थी, जितनी आज के समय में मिलती है । दरअसल आज यह पेशा व परंपरा इतने विस्तृत रूप में अपना ली गयी है कि हम सब जान-सुनकर भी इसे कतई सामान्य रूप में लेते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दि टाइम्स' में उपरोक्त पत्र छपने पर इस ओर लोगों का विशेष ध्यान गया और लोगों को ताली बजाने का यह धंधा लाभदायी धंधा महसूस हुआ। इसी से प्रेरित होकर लोगों ने किराये पर ताली बजाने का व्यवसाय शुरू कर दिया। स्थिति यह पहुंची कि ऐसे लोग अपनी सेवाएं भी बेचने लगे। इस प्रकार तालियां मोल बेचने की परंपरा जोर-शोर से शुरू हो गयी।

स्थिति यहां तक पहुंची कि फिलिप्स नामक एक पेशेवर तालियां पीटनेवाले व्यक्ति ने एक गायक को अपनी सेवाएं स्वीकार करने के लिए सूचित करते हुए लिखा —'रायल इतालवी और इंगलिश आपेरा कंपनियों के सभी प्रमुख कलाकारों के लिये तालियां पीटनेवाले लोगों का मैं कई वर्षों से नेता हूं। क्या इस उद्देश्य के लिये (प्रशंसा में किराये पर तालियां बजवाने के लिए) आपको किसी की सेवाओं की आवश्यकता है ? बहुत ही वाजिब और थोड़े-से मुआवजे पर आपके लिए यह काम करके मुझे हर्ष होगा।'

इटली में किराये पर तालियां बजानेवाले लोगों का धंधा तो खूब चल निकला, यहां तक कि इस शताब्दी के शुरू में तो वहां किराये के ऐसे लोगों ने अपनी दरें भी निश्चित कर दी थीं। यानि, विभिन्न अवसरों के लिये व विभिन्न स्तर की तालियां बजाने के लिए अलग-अलग रेट तय कर दिये गये थे। आप उचित कीमत दीजिए और आवश्यकतानुसार अपने कार्यों की प्रशंसा में तालियां बजवाइये। उस समय की कुछ दरें इस प्रकार तय की गयी थीं—

* शाबास के साथ ताली पीटना — हर बार की उजरत १५ लीरा
* कार्यक्रम के दौरान प्रोत्साहन के लिए ताली बजाना — उजरत १५ लीरा
* एक महिला के पधारने पर स्वागत करने हेतु जमकर ताली बजाना — उजरत १७ लीरा
* किसी पुरुष के पधारने पर बजनेवाली तालियां — उजरत २५ लीरा
* किसी गीत, गजल की पंक्तियां या शेर को दोबारा सुनाने की मांग हेतु 'मुकर्रर-मुकर्रर' कहने के लिए — उजरत ५० लीरा।

लोग इसका फायदा उठाते थे और आवश्यक फीस देकर जमकर ऐसे किराये के लोगों का उपयोग करते थे।

लेकिन, उन दिनों जहां कई लोग इन पेशेवर प्रशंसकों की सेवाएं प्राप्त करके प्रसन्न होते थे, वहीं कुछ लोगों को इस पर गुस्सा भी आता था। ऐसे लोग इस कार्य पर प्रतिकूल टिप्पणी भी करते थे। अमरीका में १९२३ में न्यूयार्क सिम्फनी आर्केस्ट्रा के जरमन संचालक वाल्टर डैमरीज को यह कार्य बहुत बुरा लगता था। इसके विरुद्ध शिकायत करते हुए उन्होंने कहा था—

'न्यूयार्क में मैट्रोपोलिटन आपेरा हाउस के कुछ गायक और कंडक्टर हट्टे-कट्टे किराये के कई आदमी रखते हैं, जो मशीन की तरह उनके प्रदर्शन पर अंधाधुंध ताली बजाते हैं। उन्हें देखकर कई बार तो बड़ी कोफ़्त होती है।'

आलोचना करनेवाले इस प्रकार किराये पर ताली बजाने की लाख आलोचना करते थे, किंतु समय के साथ-साथ तालियां बेचने का यह धंधा बढ़ता ही जा रहा था। इस पर कोई रोक न लग सकी। —केसोराम काटन मिल्स,
४२-गार्डेन रीच रोड,
कलकत्ता-७०००२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

युवा पत्नी ने दरवाजा खोला और पति को सामने देखकर सुबककर रो पड़ी, फिर बोली तुम्हारी मां ने मेरा अपमान किया है ।

पति ने आश्चर्य से कहा, ''मां तो सैकड़ों मील दूर है ।''

पत्नी ने कहा, ''मैं जानती हूं आज सुबह तुम्हारे नाम उनका पत्र आया था । पत्र के अंत में लिखा था, प्रिय एलिस यह पत्र जार्ज को देना मत भूलना ।''

● ● ●

एक शिकारी अपनी पत्नी और सास के साथ अफरीका के जंगलों में गया । एक रात उनके शिविर से सास लापता हो गयी । पति-पत्नी उसे ढूंढ़ने निकले । एक जगह उन्होंने देखा कि सास तो सही सलामत है लेकिन उसके सामने एक सिंह खड़ा है ।

पत्नी ने रोते हुए पति से कहा, ''कुछ तो करो आखिर अब हम क्या करेंगे ।'' पति ने कहा, ''कुछ नहीं शेर खुद असमंजस में पड़ा है जो करना है वही करेगा ।''

—मनोज मिश्र

एक बार एक नेताजी पेट्रोल पंप का उद्घाटन करने गये । जब उद्घाटन की रस्म पूरी हो गयी तब नाश्ता-पानी का कार्यक्रम चल रहा था । अचानक नेताजी ने पेट्रोल पंप के मालिक से पूछा, ''भाई, बाकी सब तो ठीक है, लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आयी कि आपको यह कैसे पता चला कि इसी स्थान पर जमीन में पेट्रोल भरा हुआ है ।''

एक अविवाहित उद्योगपति मरने लगा तो उसने अपनी सारी संपत्ति 'एक'-संपादक के नाम वसीयत कर दी । जब वसीयतनामा उन्हें प्राप्त हुआ तब बिना देखे एक स्लिप लगाकर इस प्रकार वापस कर दिया, ''खेद सहित ... हम इसका उपयोग नहीं कर पाएंगे, कृपया अन्यत्र भेजें ।''

● ● ●

पत्नी पति से बोली, ''जब मैं विधवा हो जाऊंगी, तो क्या करूंगी ? यह सोचती हूं, तो रोना आता है ।''

''जब तक मैं जिंदा हूं, तब तक तुम्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है ।'' पति ने जल्दी में कहा ।

''बहुत खोज करने के बाद मैंने हर तरह के तलाक का कारण ढूंढ़ ही लिया ।'' एक दार्शनिक ने गर्व से अपने मित्र को बताया ।

''क्या ?'' मित्र ने उत्सुकता से पूछा ।

''विवाह !'' दार्शनिक ने शांत स्वर में उत्तर दिया ।

● ● ●

प्रेमी, ''प्रिये, अपने विवाह की बात बिलकुल गुप्त रखना, किसी को भी नहीं बताना ।''

प्रेमिका, ''सिर्फ गीता को बताऊंगी, जरूर बताऊंगी । उसकी सारी हेकड़ी भुला दूंगी । पता है, उसने मुझसे क्या कहा था ? कहा था कि कौन मूर्ख होगा, जो तुमसे शादी करेगा ?''

—पुष्पेश कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंग

ईर्ष्या

कपड़े पहनकर नये-नये,
अब तक
बहू जलाती थी उन्हें ।
बदला लेने का मन किया,
एक दिन
बहू को जला दिया ।

एक-दाम

हम लोग मिल-बांट कर खाने के हैं आदी
नहीं परेशान हो कोई भी फरियादी
हर काउंटर पर देता जाए भेंट
यहां तो सभी के फिक्सड् हैं रेट

—डॉ. अरविंद रूनवाल

शार्टकट

वह युवा शिक्षक
शार्टकट राह अपनाता है
लड़कियों को
पूरे कोर्स की जगह
सिर्फ ढाई अक्षर पढ़ाता है ।

बजट नीति

वे
उदार बजट नीति
अपनाते हैं
बजट पूर्व ही
जिंसों की कीमत
बढ़ाते हैं ।

—देवेन्द्र नाथ

लीडर

जो भ्रष्टाचार को
बिना 'डर' के
करता है 'लीड'
उसी के पीछे
चलती है
प्रजातंत्र में भीड़

नारी

जो समानता का
नारा लगाने में
कभी न हारी
वही नारी

—शरद नारायण खरे

रोटी

हर पहली को
मेरी जेब से एक चांद निकलता है
फिर छोटा होता जाता है
तीन चौथाई
आधा, और आधा
और अंत में
उधार की अमावस में डूब जाता है ।

—उदय ठाकुर

गजल

रौनक लगी है चले आइए ।
बाजार में आप छले जाइए ।।

'बैनर' से टंगे हैं तन-नग्न
'सेल' में आइए और ले जाइए ।

'पोस्टर' की तरह चिपकी है बेबसी
देखिए, पढ़िए और निकल जाइए ।

'साईन बोर्ड' की भांति हुई जिंदगी
आप चौराहे से दायीं ओर आइए ।

—दीपक गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिया गये परदेस : आधुनिक प्रेयसी को परदेश से मतलब नहीं ?

● आशा श्रीवास्तव

प्राचीनकाल में पिया नाम का एक प्राणी हुआ करता था, जिसका मुख्य काम था, पहले प्रेम करना और फिर परदेश चले जाना। वह अपने दोनों काम बखूबी करता था, यानी पहले अपनी प्रेयसी से पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी से प्रेम करता था और फिर उसी निष्ठा व ईमानदारी से अपने दूसरे कर्त्तव्यों अर्थात परदेस जाने का काम भी करता था। परदेस जाने के लिए वह मानसिक रूप से पहले से ही तैयार रहता था, क्योंकि वह अपने आसपास रहनेवाले समस्त पियाओं को ऐसा करते बचपन से देखा करता था। स्वयं उसके पिता जो एक पिया भी थे, ऐसा कर चुके थे। लगता है उसे इसके कीटाणु वंशानुक्रम से प्राप्त हुए थे या फिर उसने यह वातावरण से सीखा हो। यह भी हो सकता है कि दोनों का ही उस पर गहरा असर पड़ा हो, जैसे हम किसी की मृत्यु पर दसवीं और तेरहवीं करते अवश्य हैं, चाहे इच्छा से करें, या अनिच्छा से।

हां तो बात पिया की चल रही है। वह प्रेम करना और फिर परदेस जाना दोनों काम पूर्ण क्षमता से संपन्न करता था। यह नहीं कि प्रेम कर रहे हैं, तो किये ही जा रहे हैं, परदेश जाना ही भूल गये। वह बहुत फास्ट वर्कर हुआ करता था। प्रथम दृष्टि में प्रेम करके वह समय के मूल्य का ज्ञान प्रदर्शित करता था। साथ ही वह यथासंभव किसी आसपास की सुंदरी से प्रेम करता था। यों उस समय खाड़ी संकट पेट्रोल की किल्लत जैसी कोई बात नहीं थी। शायद वह अधिक व्यावहारिक होता था। अब अगर प्रेयसी १०-२० किलोमीटर दूर रहे, तो उससे दिन में एक बार मिलना ही कठिन है, ऊपर से इतनी लंबी यात्रा करने से पिया का मेकअप बिगड़ने का डर है और प्रेयसी से बार-बार मिलना तो संभव ही नहीं है, यानी सीधे लव-फ्रीकवेंसी पर असर पड़ने का डर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। सो प्राचीन पिया इन सब झंझटों से बचने के लिए बगलवाली कन्या से प्रेम कर लेता था। वह अपनी प्रेयसी की ओर से एकदम बेफिक्र होता है,वह जानता है कि वह बरसों विरह व्यथा में झुलसती रहेगी पर किसी और को अपने मन-मंदिर में नहीं बिठाएगी। मैंने किसी को कहते सुना था कि भारतीय नारी जोंक की तरह होती है, जिसके चिपक गयी, सो चिपक गयी। वैसे यह कथन भले ही अपने बाहरी रूप में भद्दा हो, पर नारी की अटूट श्रद्धा अवश्य उजागर करता है, परंतु आधुनिक अपनी प्रेयसी की ओर से इतना निश्चिंत नहीं होता। वह जानता है उसकी प्रेयसी इतनी बेवकूफ नहीं कि अपनी इकलौती जिंदगी दिया ताकते या डाल पकड़े गुजार दें। उसने गालिब पढ़ा है, वह जानती है 'तू नहीं और सही' भी एक रास्ता है।

आधुनिक प्रेयसी विरह भी करती है तो बड़े शानदार ढंग से। विरह के दुख भरे पल वह पिया की अनुपस्थिति में बढ़िया खाना खाकर टी.वी. वीडियो पर फिल्म देखकर गुजारती है। उसे अपनी सेहत व समय का पूरा-पूरा ध्यान रहता है।

वैसे प्राचीन ग्रंथों के अवलोकन से पता चलता है कि प्रेयसी का अर्थ पत्नी कतई नहीं होता था, जबकि पिया शब्द पति व प्रेमी दोनों के लिए उपयुक्त होता था। यानी पति के प्रेमी हो सकने की तो संभावना हो सकती है, परंतु पत्नी कभी भी प्रेयसी नहीं हो सकती। इसका कारण यह भी है कि आमतौर पर पत्नी विरह शब्द को ही व्यर्थ समझती है और अपना सारा ध्यान घर गृहस्थी की देखरेख, बच्चों की परवरिश, सामाजिकता के निर्वाह में ही लगाये रखती है, जबकि विरह व्यथा झेलना एक फुल टाइम जाब है। विवाह के पश्चात पत्नित्व के निर्वाह में पति की अपेक्षा परिवार उसे अधिक आकर्षित करता है, ऐसी अवस्था में पति जैसी कम जरूरी वस्तुओं के लिए विरह करना उसे अनावश्यक लगता है। विरह में दिन-रात आंसू बहाना, पत्र लिख-लिखकर फाड़ना, बार-बार दरवाजा झांकना, क्षीण काय होना, एक पत्नी के बस का रोग नहीं,इसे तो प्रेयसी ही संपन्न कर सकती है, जिसे केवल यही सब करना है।

पिया भी जैसे ही पति बनता है, वह एकदम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतर्क हो जाता है और पियावाला मेकअप खूब रगड़-रगड़कर छुड़ा देता है । पिया व पति का अंतर इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगा । मान लीजिए हम किसी ट्रेन,बस या कार से यात्रा कर रहे हैं । यात्रा के दौरान हम बड़े चाव से गांव, पेड़-पौधे, खेत, गांव व गोरी जो भी दिखता है, उसका बड़े चाव से आनंद लेते हैं, परंतु जैसे ही हमारा स्टेशन आता है, हम बच्चे व सामान गिनने लगते हैं, टिकिट तलाशने लगते हैं,और रिक्शा-तांगा स्टैंड की ओर लपकने लगते हैं । यात्रा का आनंद प्रेम है और स्टेशन पर वास्तविकता के प्रति सजगता विवाह है ।

प्राचीन प्रेयसियों को विरह करने में उनका परिवार व समाज भी मदद करता था । वह केवल एक ही काम करती थी पिया की बाट जोहने का और उसके परिवारवाले उसे इसके लिए डांटते, डपटते भी नहीं थे । आधुनिक प्रेयसी के परिवारजन इतने सहृदय नहीं होते । वे उसे स्कूल, कॉलेज में भरती करा देते हैं और उस पर कड़ी नजर रखते हैं, ताकि वह अकेली बैठी अपना दिमाग न खराब करे । शायद प्राचीन प्रेयसी के परिवारवाले ही सही हों । उनका यह सोचना कि प्रेयसी दिमागी तौर पर कोई भी काम ठीक से नहीं कर सकती । सो

इस पागल से कौन काम कराये । न जाने क्या तोड़फोड़ डाले ।

वैसे विरह करना किसी एक क्रिया के द्वारा नहीं किया जा सकता । इसकी अनेक उपक्रियाएं हैं, जिन्हें संपन्न करना जरूरी है, जैसे छोटे से दिन बिताने में१२० उपक्रियाएं होती हैं। जैसे विरहिन का द्वार पर दीपक जलाये रखना। गहराई से सोचा जाए तो यह कितना जटिल काम है । इसके लिए रात भर द्वार पर जागते हुए बैठे रहना, बार-बार दिये में तेल डालना, बाती उसकाते रहना, हर भीतर-बाहर आनेजानेवाले से दिये को बचाना, आंधी-तूफान में इसे आंचल की आड़ देना पड़ता है जो बहुत खतरनाक काम है, आंचल में आग लगने का डर है । हवा ये तो सोचने से रही ये तो विरहिन है वैसे ही जल रही है, इसे मैं क्या जलाऊं।

दूसरा आवश्यक कार्य जो प्रेयसी को करना पड़ता था, वह था २४ घंटे सोलह श्रृंगार किये रहना । पिया का क्या भरोसा जाने कब आ जाए और यदि पिया जिस समय आया और प्रेयसी का श्रृंगार १६ से घटकर १०-११ रह गया, तो पिया के मन में प्रेयसी के प्रति विरक्ति का भाव आ सकने का अंदेशा रहता था । २४ घंटे मेकअप बिगड़ने देना बड़ा दुश्वार काम है । प्राचीन प्रेयसी शायद यह काम बड़ी आसानी से कर लेती थी । यह हो सकता है, उस समय मेकअप को लंबे समय तक ताजा बनाये रखने की कोई विशेष तकनीक रही हो । बहरहाल आधुनिक प्रेयसी के लिए यह बेहद कठिन काम है । आजकल इतने अधिक रासायनिक पदार्थों से बने मेकअप के सामान मिलते हैं कि यदि आधुनिक प्रेयसी उन्हें लंबे समय तक लगाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक प्रेयसी विरह भी करती है, तो बड़े शानदार ढंग से । विरह के दुख भरे पल वह पिया की अनुपस्थिति में बढ़िया खाना खाकर टी.वी. वीडियो पर फिल्म देखकर गुजारती है । उसे अपनी सेहत व समय का पूरा-पूरा ध्यान रहता है ।

रहे, तो वे उसके चेहरे को इतना बिगाड़ दें कि वह प्रेयसी से प्रेतनी नजर आने लगे ।

अभी प्रेयसी के दीपक जलाए रखने के कार्य की विस्तृत व्याख्या बहुत जरूरी है । प्राचीन प्रेयसी अपने अड़ोस-पड़ोस की प्रेयसी को देखकर दीपक बिना बुझे जलाए रखने की कला सीख जाती थीं । कुछ स्त्रियां तो इस काम में विशिष्टता भी प्राप्त कर लेती थीं । जैसे आजकल होते हैं आई स्पेशिलिस्ट, हार्ट स्पेशिलिस्ट इत्यादि । वे इसकी बकायदा कक्षाएं भी लिया करती थीं । प्राचीन काल में कन्याओं को पिता व पति की आज्ञा मानना, तीज त्योहार मनाना और सावन में झूला झूलना जैसे गिने-चुने काम थे, जिन्हें वे बखूबी निभा लेती थीं, परंतु आजकल की कन्या को पढ़ाई, नौकरी, महंगाई से जूझना, वाहन चालन, हाट बाजार सभी करना पड़ता है, इसलिए वे प्रेम क्षेत्र के लिए वक्त नहीं दे पातीं, विरह करना तो दूर की बात है । वे पिया की पाती भी उतनी तन्मयता से नहीं पढ़तीं, जितनी 'वन डे' पढ़ती हैं । वे जानती हैं हाथ में नौकरी रही, तो एक नहीं सौ पिया आ जाएंगे । प्राचीन कन्या नौकरी तो करती नहीं थी, सो एक पिया को हासिल करना और उसे हाथ से जाने न देना उसके लिए जरूरी होता था । दीपक जलाये रखने में आधुनिक प्रेयसी के अक्षम होने का कारण तेल के भाव भी हैं । छौंक बघार को तेल नसीब नहीं होता दीपक कौन जलाये रख सकता है । इस अक्षमता के मूल में एक और बात है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता । आजकल असामाजिक तत्व इतने क्रियाशील हैं, कि कोई भी पहलवान अपने घर के द्वार खुले रखने की हिम्मत नहीं कर सकता । १६ श्रृंगार किये प्रेयसी क्या करेगी । प्राचीन काल में प्रेयसी सरेआम अपने इस अधिकार का प्रयोग करती थी । शायद उन दिनों पुरुषों में गुंडे बनने का फैशन नहीं था, या उनमें उस काल में गुंडे बनने की ललक ही नहीं थी, या हो सकता है इसकी जरूरत ही नहीं रही हो, क्योंकि जरूरत ही आविष्कार की जननी होती है, सो उन दिनों गुंडों का अभाव था । परंतु आधुनिक काल गुंडा संस्कृति का स्वर्णकाल कहा जा सकता है । इसलिए आधुनिक प्रेयसी घर के द्वार पर दीपक जलाकर बैठे रहने के बदले दरवाजा बंद करके भीतर से घर रोशन रखती है; बिजली जला के । वैसे पिया को दीपक ज्यादा पसंद भी नहीं होता, तेल जो जलता है और सारा ध्यान इसी में लगा रहे तो प्रेमालाप में बाधा पड़ती है । आधुनिक प्रेयसी पिया के घर के बाहर निकलते ही आराम से टी. वी. या वीडियो पर फिल्मों का आनंद लेती है, ठीक से खाना खाती है और पड़ोसन से गपशप करती है, कुछ आधुनिक पिया तो बाहर जाते हैं, ठीक से दरवाजा बंद कर लेना, कोई आये तो पहले की होल से देखना ऐसे पिया के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलते विरह और दिया दोनों ही व्यर्थ हो जाते हैं ।

कुछ आधुनिक पिया प्रेयसी को खाली समय में और आगे पढ़ने, कोई ट्रेनिंग कर लेने की भी सलाह देते जाते हैं, ताकि बाद में काम आ सके । इससे एक यह भी फायदा है कि प्रेयसी व्यस्त रहने के कारण किसी अन्य के प्रति आकृष्ट भी नहीं होती । आधुनिक प्रेयसी भी मन ही मन ऊंह किसी और से भी शादी कर सकती हूं कि मानसिकता को हवा देती रहती है, और इसे सेकंड लाईन आफ डिफेंस के बतौर रिजर्व रखती है, ताकि वक्त पड़ने पर गालिब की यह पंक्तियां दुहरा सके 'तू नहीं और सही' पहले बताया जा चुका है कि कुछ प्रेयसियां पेड़ की डाल पकड़े खड़ी रहनेवाली हुआ करती थीं । यह काम भी कोई जीवट ही कर सकता है । ५-१० साल सरदी-गरमी, बारिश, आंधी, तूफान में एक डाल पकड़े हुए ठंडी सांसें लेते रहना सहज काम नहीं है । प्राचीन विरहन प्रेयसियों के ऐसे बहुत से चित्र उपलब्ध हैं, परंतु इनमें से किसी में भी हम विरहन के आसपास कोई छाता नहीं देखते । वातावरण में प्रदूषण भी नहीं के बराबर हुआ करता था । प्राचीन प्रेयसी का विज्ञान का अज्ञान भी उसे विरह करने में सहायता देता था । उसे पता ही नहीं होता था कि पेड़ कार्बन डाइआक्साइड ग्रहण करते हैं और प्राण वायु छोड़ते हैं । उसे पेड़ की सुरक्षा की ओर अधिक ध्यान नहीं देना पड़ता था । आधुनिक प्रेयसी पहले तो खुले आम घर के बाहर खड़े रहने की बात सोच भी नहीं सकती, पेड़, डाल की तो दूर रही आज नारी घर के अंदर तक तो सुरक्षित नहीं है बाहर की बात कहे । हां तो हम पेड़ की डाल की बात कर रहे थे । आज के पेड़ भी तो इतने मजबूत नहीं होते कि उन्हें सहारा बनाया जा सके । एक खतरा और भी है एक ही डाल को पकड़े रहने से उस पर प्रेशर बढ़ सकता है और उसके टूटने का डर है, जिससे प्रेयसी बाहर से भी घायल हो सकती है । पेड़ को खाद पानी देते-देते प्रेयसी की रुचि बागवानी में बढ़ सकती है, और वह पिया-विरह को छोड़कर बागवानी करने लगे ।

आधुनिक प्रेयसी पिया से कहती है कि कहां परदेश फरदेश के चक्कर में पड़े हो शहर में ही काम ढूंढ़ लो । पहले पिया कमा सकता था परदेश में धन, आज तो देश के किसी भी हिस्से में ईमानदारी से धन नहीं कमाया जा सकता । परदेश जाने के बदले दो नंबरी धंधा सीखो । आज जीवन की सुरक्षा का भी तो राम ही मालिक है । तुम टाइम से परदेश तो जा नहीं सकते गाड़ियां ही लेट चलती हैं, वापस आने पर क्या जाओगे ।

सो आधुनिक प्रेयसी पिया का परदेश जाने का पूरा कार्यक्रम ही रद्द कर देती है और उसे समझा देती है प्रेम, विरह, पिया, धन, परदेश ठंडी सांसें इत्यादि-इत्यादि या तो परीकथाओं में मिलेंगे या समाज के ऊंचे तबके में । आम आदमी को इससे क्या लेना-देना । आधुनिक पिया प्रेयसी की बात आत्मसात करता है और दोनों साइकिल पर शहर के ही किसी प्राइवेट स्कूल में टीचर या क्लर्क की नौकरी तलाशने निकल पड़ते हैं ।

—व्याख्याता (अंगरेजी) रायपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्पदंश

सर्पदंश की कल्पना
कितनी भयावह
धमनियों में बहता रक्त
बर्फ बन जाए
आंखों में मौत का
अंधेरा छा जाए
फिर भी इनसान भूख के
हजारों दंश सह रहा है
इस हलाहल को पी
कंकाल बन रहा है
इस विवशता को
कोई क्यों समझे
क्यूं सर खपाए
आखिर वह
जी तो रहा है
शेषनाग बन व्यवस्था को
ढो तो रहा है

— एस. के. स्वामी
डी- II/३६०, पंडारा रोड,
नयी दिल्ली-११०००३

फाग खेलते सुमन

कूक उठी कोयलिया वन, रे
शिशिर त्रास से नग्न डाल पर, नवल पात निकले तरुवर पर
फाग खेलते सुमन सुवासित, रंग बिरंगे किसलय दल पर
तरुण विभाकर लगे उमगने, तपन लगे वियोगिन तन, रे
कूक उठी कोयलिया वन, रे
सुरभित शीतल मंद बसंती, मलयानिल मदमाता डोले
नयन मनोहर सरस कटीले, अल्हड़ नव कलियों ने खोले
डाल-डाल पर तितली नाचे, मुदित हुए जोगिन के मन, रे
कूक उठी कोयलिया वन, रे
द्रुम बेली से सज अलबेली, हरी-भरी वसुधा लहराये
फूलों का रस पी मतवाला, गुन गुन करता छलिया गाये
अवनी पर अमृत-वर्षाकर, झूम रहे अंबर में घन, रे
कूक उठी कोयलिया वन, रे

— डॉ. बनवारी लाल मिश्र
राजाधिराज बाजार, मथुरा (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी क्लब

लघुकथा गोष्ठी हुई

सहारनपुर । कादम्बिनी क्लब के तत्त्वावधान में लघु कथा-गोष्ठी का आयोजन किया गया । इसमें लघुकथाओं के माध्यम से सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों व विसंगतियों पर कठोर प्रहार किये गये ।

कथाकार कृष्णशंकर भटनागर, लेखिका अनिता कथूरिया, पत्रकार रमेश चंद्र छबीला ने रचनाएं पढ़ीं ।

गोष्ठी में विजेश जोशी, डॉ. कुमुद शर्मा, सुरेश सपन, प्रीति कथूरिया, विजय सपन, सुषमा बजाज, अखिलेश भार्गव, बी. के. चड्ढा आदि उपस्थित थे । गोष्ठी की अध्यक्षता बी. पी. सिंघल व संचालन रमेश चंद्र छबीला ने की ।

कादम्बिनी क्लब सोनीपत

कादम्बिनी क्लब सोनीपत की बैठक ओजपूर्ण विचारों के साथ संपन्न हुई । इस अवसर पर श्री शालिगराम शास्त्रीजी के अप्रकाशित कविता ग्रंथ में से श्रृंगाररस एवं आत्मा-परमात्मा एवं ईश्वर के निराकार एवं साकार स्वरूप पर चार कविताएं पढ़ी गयीं । प्रो. धर्मपाल ने अपने द्वारा लिखित नये नाटक के कुछ अंश पढ़कर सुनाये । डॉ. सत्यपाल कपूर द्वारा गाया गया गीत बहुत ही मधुर रस एवं स्वर से ओतप्रोत था । डॉ. गणपत राये ठाकुर की कविता आजकल के झूठ-सत्य को खोलती थी । श्रीमती शर्मा की कविता एवं श्रीमती राजपति, श्रीमती पूनम चावला की कविता भी रसरंग से भरपूर थी ।

बैठक की अध्यक्षता सत्यपाल कपूर ने की ।

जनसंख्या विस्फोट पर संगोष्ठी आयोजित

कादम्बिनी क्लब द्वारा जनसंख्या विस्फोट पर संगोष्ठी आयोजित की गयी । संगोष्ठी में क्लब के संयोजक डॉ. रमेश कुमार यादव,सदस्य सर्वश्री सुरेश अग्रवाल, विशनदास चुग, रामप्रसाद शर्मा, गोपाल भारती एवं शहर के गणमान्य व्यक्ति सर्वश्री राकेश परनामी, सतीश शर्मा, भगत शर्मा, मोती मित्तल, बंशीलाल सारस्वत, मोहनलाल चौहान एवं डॉ. पी. एन. कटियार, गोरालाल सिंगला, दीनदयाल शर्मा एवं के. डी. कविया ने भाग लिया । अध्यक्षता श्री राजेन्द्र सारड़ीवाल विकास अधिकारी पंचायत समिति ने की व मुख्य अतिथि थे केंद्रीय विद्यालय के प्रिंसीपल श्री सी. बी. जोशी । संचालन श्री गोपाल भारती ने किया ।

कवि सम्मेलन आयोजित

कादम्बिनी ने नगर के नये-पुराने कवियों को एक साथ मंच पर प्रस्तुत किया । अनूपगढ़ में कवि सम्मेलन का यह पहला प्रयास था । कवि सम्मेलन में सदस्य कवि थे श्री भरत्री राय भाटिया, भगवाना राम सारस्वत एवं गोपाल भारती, वृजेश 'दर्द' एवं श्री गोविंद सिंह राठौड़ । संचालन गोपाल भारती ने किया ।

वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

क्लब ने वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की । इसमें विभिन्न विद्यालयों के २८ छात्र-छात्राओं ने भाग लिया । उसमें जूनियर वर्ग में प्रथम हेमंत शुक्ला, द्वितीय कु. जागृति स्वामी एवं तृतीय कु. निर्मला भादू रहीं । सीनियर वर्ग में प्रथम हनुमान सिंह, द्वितीय कु. एकता गोयल एवं तृतीय कु. हवा कवंर रहीं । अध्यक्षता श्री अमर सिंह फील्ड आफीसर 'रा' ने की । संयोजक डॉ. रमेशकुमार यादव ने विजेताओं को पुरस्कार एवं सभी प्रतियोगियों को प्रमाणपत्र दिये । निर्णायक थे प्रिंसीपल (सीनियर सेकेंडरी स्कूल) श्री अब्दुल अजीज, डॉ. पी. एन. कटियार एवं कु. अंजना चुग । संचालन श्री सुरेश अग्रवाल ने किया ।

पिकनिक का कार्यक्रम

संयोजक डॉ. रमेशकुमार यादव के फार्म पर एक पिकनिक का कार्यक्रम रखा गया जिसमें सभी सदस्यों ने भाग लिया । राजस्थान का विशेष पकवान दाल-बाटी, चूरमा बनाया गया । क्लब के सभी सदस्यों ने मिलकर पकवान तैयार किया । क्लब को सक्रिय करने के बारे में विचार-विमर्श हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

राधिका मेहरा, फरीदाबाद

प्रश्न : उम्र ६२ वर्ष । हाथ-पांव में दर्द होता है, हड्डियां बढ़ गयी हैं । मुंह पर सूजन आ गयी है । दवा लिखें ।

उत्तर : योगराज गूगल एक वटी, केशोर गूगल एक वटी, सुबह-शाम गरम पानी से लें । अर्जुनारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पिएं । दही, चावल, शीतल पेय का परहेज कर औषधियों का नियमित छह माह सेवन करें ।

विनिता नायक, दुर्ग

प्रश्न : उम्र ३० वर्ष । कमजोरी, चक्कर, सांस लेने में परेशानी । खून की कमी बतायी है । एलोपैथी इलाज कराकर थक गयी हूं ।

उत्तर : पुनर्नवामंडूर तीस ग्राम, शोथारि लौह दस ग्राम, प्रवाल पंचामृत दस ग्राम, सभी औषधियों की साठ मात्रा बना लें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मालती बसंत दस ग्राम, गिलोय सत्व दस ग्राम इनकी साठ मात्रा बनाएं, दिन में दो बार शहद से लें । आहार-विहार का परहेज कर छह माह औषधि सेवन करें ।

रश्मि, भावनगर

प्रश्न : उम्र २५ वर्ष । हाथ-पैर में जलन, सिर दर्द, पेट के निचले हिस्से में दर्द, कमजोरी बहुत अधिक महसूस करती हूं । भूख कम लगती है, मासिक के समय भी परेशानी होती है ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मुक्ता शुक्तिभस्म दस ग्राम, इनकी साठ मात्रा बनाएं, एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । अशोकारिष्ट दो चम्मच, द्राक्षारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पिएं । तीन माह नियमित औषधियों का सेवन करें ।

एस. के. वर्मा, जसीडीह

प्रश्न : पुत्री की उम्र १० वर्ष । पैर के तलवे हर समय फटे रहते हैं । गरमी में कम होते हैं, सरदियों में यह परेशानी अधिक हो जाती है ।

उत्तर : अमृता गूगल १५ ग्राम, केशोर गूगल, पंद्रह ग्राम, गोदंती भस्म दस ग्राम, इनकी साठ मात्रा बनाएं, सुबह-शाम पानी से दें ।

प्रद्युम्न तिवारी

प्रश्न : उम्र २८ वर्ष । पेट में दाहिने, छाती के नीचे दर्द होता है । शौच साफ नहीं होता है । दिन में दो बार जाता हूं । बारह महीने शरीर में खुजली होती है । ५ वर्ष से उपचार करा रहा हूं । कोई लाभ नहीं है ।

उत्तर : स्वर्णसूतशेखर रस दस ग्राम, रसमाणिक्य दस ग्राम, प्रवालपंचामृत रस, दस ग्राम की अस्सी मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक भोजन के बाद पानी से लें । आविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच रात को दूध से लें ।

विजय कुमार, मेहसोडी

प्रश्न : लगभग २५ वर्ष से पेट का रोगी हूं । आंव बराबर आता है । शौच कभी कब्ज से आता है, दिन में दो-तीन बार जाना पड़ता है । पेशाब में जलन होती है । भूख कम लगती है । दिन पर दिन कमजोरी महसूस होती है ।

उत्तर : हरड़ चूर्ण साठ ग्राम, पीपल चूर्ण तीस ग्राम की साठ मात्रा बनाएं । एक-एक माशा सुबह-शाम गरम पानी से लें । कुटजरिष्ट दो-दो चम्मच सम भाग पानी मिलाकर भोजन के बाद पिएं । रात सोने से पहले एक चम्मच इसबगोल दूध से लें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरिंदर कौर, बिलासपुर

प्रश्न : उम्र चालीस साल । चार साल से कमर में बायीं ओर दर्द रहता है । चल नहीं सकती । चलने की कोशिश करती हूं तो पैर में भारीपन होने लगता है । एलोपैथी इलाज किया, लाभ नहीं । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : रास्ना गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पिएं । समीपत्रग रस दस ग्राम, गिलोय सत्व दस ग्राम इनकी अस्सी मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा दोपहर, रात शहद से लें । आहार-विहार का परहेज कर नियमित तीन माह औषध सेवन करें ।

एक परेशान युवती, बांका

प्रश्न : उम्र २२ वर्ष । उम्र के हिसाब से प्रेम के चक्कर में आ गयी, परिणामस्वरूप ऐसी स्थिति में हूं । बहुत परेशानी है । कई प्रकार की दवा ली, कोई प्रभाव नहीं हुआ । किसी से कह भी नहीं पा रही हूं, निकट भविष्य में विवाह होनेवाला है । आसान-सी दवा बताएं ।

उत्तर : परिवार की किसी महिला को विश्वास में लेकर योग्य महिला चिकित्सक से उचित चिकित्सा करें ।

मनोरमा, जालोन

प्रश्न : उम्र ३२ वर्ष । चार संतान, मासिक अनियमित, कमर दर्द, पैरों में खिंचाव, स्तन सौंदर्य प्रायः समाप्त हो रहा है । शरीर में बेहद कमजोरी । कृपया अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : पुष्पानुग चूर्ण साठ ग्राम, मुक्ताशक्ति भस्म पंद्रह ग्राम इनकी साठ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, अशोकारिष्ट दो चम्मच, भोजन के बाद पिएं । चंद्रप्रभावटी एक रात दूध से आहार-विहार का परहेज कर तीन माह औषधियां सेवन करें ।

श्रीमती एस. मिश्रा, गोरखपुर

प्रश्न : उम्र ४५ वर्ष । गले सूखी खराश, कानों में सनसनाहट की तीव्र आवाज, सोने पर सूखी खांसी, कभी-कभी चक्कर भी आने लगते हैं ।

उत्तर : व्योशादि वटी एक-एक सुबह-शाम गरम पानी से लें । च्यवनप्राश एक-एक चम्मच रात को दूध से लें ।

आर. के. जैन, डबोली

प्रश्न : उम्र ५९ वर्ष । रक्त चाप के संबंध में कुछ औषध बताएं । नीचे का ९५-१०० तक हो जाता है ।

उत्तर : आंवला चूर्ण आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । नमक कम मात्रा में सेवन करें ।

दिनेश, नाथद्वारा

प्रश्न : पुत्र की उम्र १२ वर्ष । मंद बुद्धि बालक है । अभी दूसरी कक्षा में ही पढ़ता है । कृपया औषध सुझाएं ।

उत्तर : शंखपुष्पी चूर्ण तीस ग्राम, अश्वगंधा चूर्ण पंद्रह ग्राम, आंवला चूर्ण पंद्रह ग्राम, इन सभी औषधियों की नब्बे मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-दोपहर-रात पानी से लें ।

विभुषित्र शास्त्री, दांतपुर

प्रश्न : मेरी २५ वर्षीय सुपुत्री है । उसको सूखा एग्जिमा हो गया है । जाड़े में बहुत बढ़ जाता है । नर्स का कार्य करती है । अनेक डॉक्टरों को दिखाया लाभ नहीं ।

उत्तर : गंधक रसायन दो-दो वटी, सुबह-शाम पानी से लें । सारिवाद्यासव दो चम्मच समभाग पानी मिलाकर भोजन के बाद पियें । महामरिच्यादि तेल यथा स्थान लगाएं । छह माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

कविराज वेदव्रत शर्मा,
बी-५/७, कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ कहानी संग्रह

चुकने का दर्द—लेखक ने इन कहानियों में कथा तत्त्व के साथ-साथ विशिष्ट शैली एवं भाषा की अद्भुत भाव भंगिमा से पाठकों का परिचय करवाया है । इनके लेखन की विशेषता है गतिशीलता । ये सारी कहानियां मनोरंजक एवं उद्देश्यपूर्ण तो हैं ही, इनकी प्रवाह-मन्यता भी प्रशंसनीय है । पाठक को आदि से अंत तक बांधने की क्षमता इन कहानियों में विद्यमान है ।

डॉ. मिश्र की ये कहानियां एक ओर विशुद्ध रागात्मक संबंधों को उजागर करती हैं तो दूसरी ओर यथार्थ बोध को भी रेखांकित करने में नहीं चूकतीं ।

चुकने का दर्द
लेखक : डॉ. भगवती शरण मिश्र
प्रकाशक : अयन प्रकाशन, १/२०, महरौली, नयी दिल्ली-११००३०, मूल्य साठ रुपये ।

शिलालेख : लेखिका ने इन कहानियों के माध्यम से एक संवेदनशील नारी मन की मार्मिक और विचारोत्तेजक प्रतिक्रिया व्यक्त की है । अपनी इन कहानियों में उन्होंने जो भाव-प्रवणता, संवेदना और मार्मिकता व्यक्त की है, वह समकालीन महिला कथा-लेखन में उनकी विशिष्ट पहचान का द्योतक है । अपनी हर कहानी में पीड़ितों और शोषितों-उपेक्षितों के प्रति उन्होंने अपनी सहानुभूति और संबद्धता प्रकट की है । शोषकों के प्रति इनकी कलम ने विरोध उगला है ।

इनकी कहानियों में समाज के प्रायः सभी वर्गों के पात्र नजर आते हैं । इनके लेखन में विविधता और व्यापकता है । भाषा की दृष्टि से भी लेखिका ने अपनी पहचान बनायी है ।

शिलालेख
लेखिका : उर्मिला कौल,
प्रकाशक : शुभदा प्रकाशन, १/११०५१ पश्चिमी सुभाष पार्क, शाहदरा, दिल्ली-३२, मूल्य : पचास रुपये ।

आश्वस्त : डॉ. अनीता कुमार की ये कहानियां गहरी संवेदना से उपजी हैं । उनकी यह अभिव्यक्ति बड़े सहज ढंग से पाठक तक पहुंचती है । उनकी 'मानुष की जात', 'टुकड़ा-टुकड़ा संबंध' कहानियां विशेष प्रभाव छोड़ती है ।

सामाजिक कुरीतियों-विसंगतियों पर लेखिका की मजबूत पकड़ इन कहानियों से परिलक्षित होती है । यह कृति कथा-साहित्य में अपनी पहचान अंकित कराएगी ।

आश्वस्त
लेखिका : अनीता मनोचा कुमार
प्रकाशक : प्रति-मंदिर-प्रकाशन १/६८१६, पूर्वी रोहतास नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२, मूल्य : पैंतीस रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

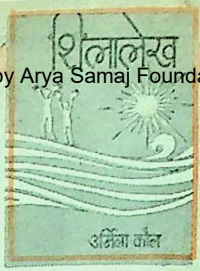

तपिश : भारतीय समाज में नारी और पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं । दोनों के सामंजस्य से ही समाज में पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह होता है, समाज में नारी को पुरुष के समान सभी अधिकार प्राप्त हैं ।

'तपिश' की कथा भूमि में भी एक ऐसी ही दृढ़ विचारोंवाली महिला शोभा की हृदयस्पर्शी गाथा है । शोभा संवेदनशील, अनुरागी और समर्पित नारी है, वह अपनी दुःखमयी परिस्थितियों से जूझती हुई अंत में अपने सपनों को साकार करने में सफल हो जाती है । स्वतंत्र और उन्मुक्त ढंग से सोचने-विचारने और उन्मुक्त वातावरण से प्राप्त दृढ़ मनोबल के सहारे वह प्रेममय जीवन जीने में समर्थ हो जाती है ।

तपिश
लेखिका : कान्ता डोगरा, प्रकाशक : राजेश प्रकाशन, जी ६२, गली नं.५, अर्जुन नगर, दिल्ली-३२, मूल्य : ४५ रुपये

कुछ नये काव्य संग्रह

उर्मि : ओम प्रकाश भार्गव
प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, मूल्य : पचास रुपये

नूर और खुशबू : काजी तनवीर
प्रकाशक : सापेक्ष प्रकाशन, ४०/१ बी गोल मार्केट, नयी दिल्ली-१, मूल्य : पचास रुपये ।

एक भोर जुगनू की : नर्मदाप्रसाद उपाध्याय,
प्रकाशक : ज्ञान साहित्य घर, १२१६/१ मढ़ाताल, मिर्जा गालिब मार्ग, जबलपुर ४८२००१, मूल्य : साठ रुपये

प्रलय प्रपंच : प्रकाश प्रलय
प्रकाशक : तूलिका प्रकाशन, २०/११, वार्ड नं.-१, महरौली नयी दिल्ली-३०, मूल्य : पैंतीस रुपये ।

कुछ कथा साहित्य

जो गलत है : दिनेश पाठक
प्रकाशक : दिशा प्रकाशन, १३८/१६ त्रिनगर, दिल्ली, मूल्य : साठ रुपये

हारू : मदन मोहन
प्रकाशक : उपर्युक्त, मूल्य : पचास रुपये

सन्नाटा भंग : जयनंदन
प्रकाशक : उपर्युक्त, मूल्य : साठ रुपये

मेरी चुनिंदा कहानियां : विकेश निझावन
प्रकाशक : पारूल प्रकाशन, ८८९/५८, त्रिनगर, दिल्ली-३५, मूल्य : साठ रुपये

हमला : जयनंदन
प्रकाशक : दिशा प्रकाशन, १३८/१६, त्रिनगर, दिल्ली, मूल्य : चालीस रुपये

विविध

तमिल शैव भक्त कवि : नायनमार : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ,
प्रकाशक : साहित्य शोध संस्थान, ८ए/१४१, पश्चिमी विस्तार क्षेत्र, नयी दिल्ली-५, मूल्य : एक सौ पचास रुपये

नील सरस्वती तंत्रम : एस. एन. खंडेलवाल
प्रकाशक : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, के. ३७/११७, गोपाल मंदिर लेन, वाराणसी

संस्कार-विधि : महर्षि दयानंद सरस्वती
प्रकाशक : मधुर प्रकाशन, २८०४, गली आर्य समाज बाजार, सीताराम, दिल्ली-६, मूल्य : तीस रुपये

चतुर्वेद शतकम : संपादक—राजपाल शास्त्री,
प्रकाशक : उपर्युक्त, मूल्य : तीस रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

— अजय भाम्बी

संजीव कुमार मल्होत्रा, गाजियाबाद

प्रश्न : क्या मैं योगी बन सकता हूं ? लगभग कितने शिष्य होंगे । रत्न भी बतायें ?

उत्तर : पहले यह तय करें कि आप योगी बनना चाहते हैं या भोगी । क्योंकि जो योग में जी रहा है, उसके लिए शिष्यों की लालसा कहां ?

शोभा रावत, देहरादून

प्रश्न : भाग्योदय कारक रत्न सुझायें ?

उत्तर : पुखराज धारण करें, लाभदायक रहेगा ।

संगम गुप्ता, बंबई

प्रश्न : ऋणों से मुक्ति कब और व्यापार कब ठीक होगा ?

उत्तर : मई '९४ से अच्छा समय प्रारंभ होगा और धन का आगमन सहज होने लगेगा ।

श्रीकांत एम., जबलपुर

प्रश्न : चुनाव में भाग ले रहा हूं ? हार या जीत ?

उत्तर : चुनाव की दृष्टि से समय बहुत अच्छा नहीं है ।

केशरी सुनीता देवी, जमुई

प्रश्न : संतान की प्राप्ति कब तक ?

उत्तर : संतान का योग चल रहा है ।

अमित भारद्वाज, रोहतक

प्रश्न : क्या एम. बी. बी. एस. में चयन होगा ?

उत्तर : इसी दिशा में प्रयत्नों में गहनता लायें, सफलता मिलेगी ।

पिताम्बरी, ग्वालियर

प्रश्न : पति के साथ समझौता कब तक होगा ?

उत्तर : आपकी कुंडली गलत है । अगली बार सही कुंडली भेजें ।

जयंत प्रकाश, बोकारो स्टील सिटी

प्रश्न : रोग से छुटकारा है, तो कब तक ?

उत्तर : योग्य चिकित्सक से परामर्श लें । अब लाभ प्राप्त होगा ।

कल्पना मिश्रा, वाराणसी

प्रश्न : विवाह कब होगा ? पति कुंआरा या विधुर मिलेगा ?

उत्तर : पति कुंआरा होगा और विवाह इसी वर्ष संपन्न होगा ।

बी. एल. वर्मा, हाथरस

प्रश्न : प्रमोशन व ट्रांसफर कब होगा ?

उत्तर : अगस्त और फरवरी '९५ के मध्य ।

प्रियदर्शिनी, बंबई

प्रश्न : दूसरी संतान कब और क्या ?

उत्तर : १९९५ में पुत्र ।

मनोज कुमार पाठक, बेगुसराय

प्रश्न : सूर्य अंतर्दशा में, भाग्योदय कैसा ?

उत्तर : सूर्य की अंतर्दशा में भाग्य सहायक रहेगा ।

आशा, दिल्ली

प्रश्न : गृहस्थ जीवन सुखमय है या नहीं ? है तो कब से ?

उत्तर : पारिवारिक सुख की दृष्टि से १९९५ से अच्छा समय प्रारंभ होगा ।

उदयराज, लखनऊ

प्रश्न : क्या १९९४ में आई. ए. एस. या आई. एफ. एस. का योग है ?

उत्तर : इस बार तो मुश्किल लग रहा है ।

मुकेश बोहरा, कोटा

प्रश्न : मुकदमा कब तक चलेगा, एवं इसमें सफलता मिलेगी अथवा नहीं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्तरेखा, ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र का अनुठा साहित्य, सरल हिन्दी भाषा टीका सहित :

- हस्तरेखा का गहन अध्ययन — 80 रु.
  अमरीकी विद्वान **बेनहम** का प्रमाणिक ग्रंथ (दो भाग)
- हस्तरेखाएं बोलती हैं : (कीरो) (CHEIRO) — 40 रु.
- अंकों में छिपा भविष्य : (-'') — 40 रु.
- भाग्य त्रिवेणी : (-'') — 40 रु.
- नास्त्रेदाम की भविष्यवाणियां— — 40 रु.
- अंक विद्या रहस्य—(सेफेरियल) — 40 रु.
- आपकी राशि भविष्य की झांकी— — 40 रु.
- हस्त संजीवन, प्राचीन पुस्तक — 40 रु.
- मंत्र शक्ति— 25 रु. महामृत्युंजन साधना एवं सिद्धि — 40 रु.
- तंत्र शक्ति— 25 रु. दत्रात्रेय तंत्र भा.टी.— — 80 रु.
- यंत्र शक्ति (दो भाग)—50 रु. रुद्रयामल तंत्र— — 100 रु.

लाल किताब-साइक्लोस्टाइल (उर्दू की प्राचीन, अब हिन्दी में) — **600 रु.**

ज्योतिष सर्वस्व :—डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र
ज्योतिष शिक्षा के लिए क्रमबद्ध सम्पूर्ण ग्रंथ, पृष्ठ 500 — 150 रु.

वृद्ध यवन जातकम : आचार्य मीनराज कृत हिन्दी टीकाकार, डॉ. सुरेशचन्द्र
1800 वर्ष पूर्व लिखा गया फलित ज्योतिष का
4500 संस्कृत श्लोकों का महान संदर्भ ग्रंथ,
सर्वप्रथम हिन्दी व्याख्या सहित
पृष्ठ 1000 से अधिक दो भागों में सम्पूर्ण ग्रंथ मूल्य — 400 रु.

जातक तत्वम् : पं. महादेव पाठकविरचितम्
फलित ज्योतिष का सौ वर्षों से अधिक प्राचीन ग्रंथ — 100 रु.

जैमिनिसूत्रम सम्पूर्ण : महर्षि जैमिनिकृत
अनेक फलित पद्धतियां—अन्यत्र दुर्लभ — 100 रु.

रत्न प्रदीप : डॉ. गौरीशंकर कपूर,
नवरत्नों एवं उपरत्नों का विस्तृत विवेचन— — 80 रु.

- डाक व्यय अलग लगेगा, बेहद् सूची पत्र मंगायें।
- वी.पी. से मंगाने के लिये पत्र लिखें।

रंजन पब्लिकेशन्स

16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्लरोग? भूख की कमी? कब्ज़?

पेट की गड़बड़ी?

स्वास्थ्य और सुन्दरता का रक्षक-लिवर।

सर्वाधिक रोगों का कारण — पेट की खराबी, अस्वस्थ्य लिवर, और अनिद्रा। स्वस्थ्य लिवर हर रोग का निदान।

....डा. सरकार

पेट की गड़बड़ी दूर करने और लिवर सुरक्षित रखने के लिए

डा. सरकार का एक अनोखी खो
आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक।

लिवोसि

लिवोसिन

एक आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक

सेवन विधि :
जब तक सीने की जलन, पाचन शक्ति में वृद्धि, अम्लरोग, कब्ज़ियत, भूख की कमी, पेट की गड़बड़ी यकृत की अस्वस्थ्यता दूर न हो तब तक एक चम्मच गुनगुने पानी के साथ **लिवोसिन** सुबह खाली पेट और रात को सोने के समय नियमित सेवन करें।

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर निर्माता का सहयोगी संस्था Jupiter - की आयुर्वेदिक खोज का एक अनोखा उपहार।

जुपिटर फार्मासिटिकल्स प्रा० लि०
२५, इडन हॉस्पिटल रोड़, कलकत्ता-७३
दूरभाष-२६०१५६/२७-०२२४

Jupiter
Emars Allen
allen's india
Dr. Sarkar Group

एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषध प्रस्तुतकारक

Marketed by :
allen's india
Allen's Ind
Marketing Pvt. L
ArnikaPlus Apartment, S
35, A. P. C. Road, Calcutta
Phone : 350-902

Allen's Ad.

जिसके सहयोग से आपको मिले आरोग्य में विश्वास।

Branch Office : Duggal House, Bank Road, Patna-800 001, Ph : 23-4953
Branch Office : 84/77B, Narayan Bagh, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph : 24-284

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता से सीधा सम्पर्क—
दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री मदन लाल खुराना

दिल्ली में आई ऐसी सरकार
जो सबकी सुधि ले, सबका साथ दे !

वे कहते थे दिल्ली का माहौल इतना बिगड़ गया है कि अब कुछ सुधार नहीं हो सकता ! हमने कहा अगर मन पक्का हो तो मौसम भी बदल सकता है। और आते है दिल्ली की नई सरकार ने जो कुछ किया, उससे आम आदमी भी कह उठा— वाह ! बदल गया मौसम !

लेकिन अभी तो शुरूआत है । लक्ष्य है दूर, यात्रा है लम्बी ... जिसे पूरा करना है आप सबके साथ मिल जुलकर ! इस तरह... !

- भ्रष्टाचार रहित प्रशासन के लिए कृत संकल्प । गृह-कर एवं बिक्री-कर प्रणाली का उदारीकरण एवं गृह कर की दरों में भारी छूट ।
- सभी झुग्गी-झोंपडणी बस्तियों में मीटर सहित अधिकृत बिजली कनेक्शन की सुविधा ।
- विशेषकर अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़े वर्ग की महिलाओं के लिए अनेक योजनाएं, जैसे इस वर्ग की विधवाओं की बेटियों के विवाह में पांच हजार रुपये की आर्थिक सहायता ।
- बिना चारित्र्य के ज्ञान अधूरा है । नई पीढ़ी में नैतिकता के संस्कार देने के लिए सभी विद्यालयों में नैतिक शिक्षा अनिवार्य ।
- देश के आर्थिक चक्र को परम्परागत रूप से गतिशील करने वाली एवं राष्ट्रीय संस्कृति में पूज्या मानी गयी गायों के लिए दस गो-सदन ।
- राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् से विधान सभा की कार्यवाही और हर दिन समस्त विद्यालयों में पठन-पाठन का श्रीगणेश ।
- राष्ट्रीय संस्कृति की प्राणवाहिनी देवभाषा संस्कृत के विकास हेतु सरकार का संकल्प पूरा करने की दिशा में पहला कदम-संस्कृत अकादमी के अनुदान में अन्य अकादमियों के समकक्ष वृद्धि ।
- हरिद्वार की पवित्र हर-की-पौड़ी की तरह दिल्ली के ऐतिहासिक यमुनातट पर सुन्दर घाटों का निर्माण ।
- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' के आदर्श का अनुसरण करते हुए महिलाओं के विकास हेतु राज्य महिला आयोग की स्थापना एवं नौकरी पेशा महिलाओं के लिए छात्रावास ।
- अनुसूचित जाति/जनजाति के सभी मेधावी छात्रों (परीक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों) को छात्रवृत्ति ।

Rajnitya

आपकी सरकार, आपके द्वार

सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली सरकार द्वारा जारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

१. अक्रम— क. जो करने योग्य न हो, ख. अपराध, ग. अव्यवस्थित, घ. गतिहीन ।

२. आच्छन्न— क. बिखरा हुआ, ख. ढका हुआ, ग. आश्रित, घ. सटा हुआ ।

३. इतिकथ— क. ऐसा कहा गया, ख. अविश्वसनीय, ग. असत्य, घ. मिसाल के तौर पर ।

४. उद्वेग— क. क्षोभ, ख. उत्तेजना, ग. जोश, घ. साहस ।

५. हड़कंप— क. उपद्रव, ख. परिवर्तन, ग. तहलका, घ. परेशानी ।

६. तदनंतर— क. फासला, ख. पश्चात, ग. उसके बाद, घ. परिणामस्वरूप ।

७. तथोक्त— क. दृष्टांत के लिए, ख. कथनानुसार, ग. प्रमाण के तौर पर, घ. जो कहने भर के लिए हो ।

८. यशस्कर— क. प्रसिद्ध, ख. पुण्य कमानेवाला, ग. कीर्तिजनक, घ. यश की लालसा रखनेवाला ।

९. यष्टिप्राण— क. मरणासन्न, ख. बहुत कमजोर, ग. वृद्ध, घ. जिसके प्राण का कोई मूल्य न हो ।

१०. लक्ष्यसिद्धि— क. लक्ष्य की कामना, ख. एक मंत्र, ग. उद्देश्य की प्राप्ति, घ. एक प्रकार की सिद्धि ।

११. पादारविंद— क. उच्च पद का, ख. प्रतिष्ठा, ग. चरणकमल, घ. पैरों की सजावट ।

१२. यवनिका— क. यवनों से संबंधित, ख. नाटक का परदा, ग. दृश्य, घ. तंबू ।

१३. भंडाफोड़— क. विश्वासघात, ख. षड्यंत्र, ग. भेद का प्रकट हो जाना, घ. रास्ता काटना ।

१४. बंटाधार— क. उलट-पुलट, ख. उथल-पुथल, ग. चौपट, घ. फेरबदल ।

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हो, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

उत्तर

१. ग. अव्यवस्थित, क्रमरहित । ये संख्याएं **अक्रम** ढंग से रखी गयी हैं । (संज्ञा के तौर पर भी प्रयोग) । अ+क्रम ।

२. ख. ढका हुआ, छिपा हुआ । आकाश मेघों से **आच्छन्न** है । (छन्न—व्युत्. छद्)

३. ख. अविश्वसनीय । यह कथन नितांत **इतिकथ** ही है । (इति+कथ)

४. क. क्षोभ, ख. उत्तेजना । जनता का उद्वेग जन-आंदोलन का रूप धारण कर लेता है । (व्युत्.—उद्, विज्)

५. ग. तहलका, आतंक । भूकंप से लोगों में **हड़कंप** मच गया । (बोलचाल)

६. ग. उसके बाद, तदुपरांत । वह वाक् प्रतियोगिता में प्रथम घोषित हुआ, **तदनंतर** उसे पुरस्कार मिला । (तद्+अनंतर)

७. घ. जो कहनेभर के लिए हो, नाममात्र का ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह समस्या का **तथोकत** हल ही है ।
(तथा +उक्त)

८. ग. कीर्तिजनक । सच्ची समाजसेवा **यशस्कर** कार्य है । (यशस् +कर)

९. ख. बहुत कमजोर । रोग ने उसे **यष्टिप्राण** बना दिया है । (यष्टि +प्राण)

१०. ग. उद्देश्य की प्राप्ति । अथक परिश्रम से ही किसी कार्य में **लक्ष्यसिद्धि** होती है ।
(लक्ष्य +सिद्धि)

११. ग. चरण-कमल । गुरु के **पादारविंद** की सेवा का सुफल प्राप्त होता है ।
(पाद +अरविंद)

१२. ख. नाटक का परदा । इस अपराध-कांड का सहसा **यवनिका पात** हो गया ।

१३. भेद (किसी छिपी बात) का प्रकट हो जाना । इस षड्यंत्र का **भंडाफोड़** हो ही गया ।
(बोलचाल)

१४. ग. चौपट, सत्यानाश । किये-कराये काम का **बंटाधार** हो गया । (बोलचाल में 'बंटाढार' भी प्रयुक्त)

पारिभाषिक शब्द

Advice	=परामर्श/सलाह
Agreement	=अनुबंध/करार
Defy	=अवज्ञा करना
Favouritism	=पक्षपात
Vote of censure	=निंदा-प्रस्ताव
Good offices	=मध्यस्थता
Gratis	=निःशुल्क/मुफ़्त
Gratuitous	=आनुग्रहिक/मुफ़्त
Despatch	=प्रेषण/रवानगी
Equipment	=उपस्कर

ज्ञान-गंगा

दोषा : परं वृद्धिमायन्ति संततं गुणास्तु मुंचन्ति विपत्सु पुरुषम् ।

(सुर्जन-चरितम् १५/४)

विपत्तियों में पुरुष के दोष बढ़ जाते हैं तथा गुण साथ छोड़ देते हैं ।

क्षिपेद्वाक्यशरांस्तीक्ष्णान्न पारुष्यव्युपप्लुतान् ।

(चारुचर्या २९)

— कठोर और तीक्ष्ण वचन-बाणों को दूसरों पर नहीं फेकना चाहिए ।

दुर्विनीतः श्रियं प्राप्य विद्यामैश्वर्यमेव च । न तिष्ठति चिरं स्थाने... ।।

(स्कन्दपुराण ७/१०४)

— दुर्विनीत व्यक्ति श्रेय, विद्या और ऐश्वर्य को पाकर शुभ स्थान से भ्रष्ट हो जाता है ।

दुष्टेन चेत् सख्यमवश्यभाव्य— मोषद्विधेयं न तु गाढबन्धनम् ।

(सूक्तिमुक्तावली)

— दुष्ट से मित्रता करना अनिवार्य हो जाए, तो ऐसी दशा में बहुत ही सावधानी से थोड़ा-सा ही मित्रता-संबंध जोड़ना चाहिए, न कि गाढ़ी मित्रता ।

तमः पतनकाले हि प्रभवत्यपि भास्वतः ।

(हरिवंश पुराण १४/४०)

— सूर्य के पतन का जब समय आता है तब अंधकार की प्रबलता हो जाती है ।

(प्रस्तुति : महर्षिकुमार पाण्डेय)

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यागी माता-पिता के पुत्र

आधुनिक शिक्षा-शिल्पी भाऊराव पाटिल महाराष्ट्र की अनपढ़ जनता की शिक्षा-समस्या के प्रति अधिक सचेत रहे और लगातार इसके लिए कार्य करते रहे ।

भाऊराव का जन्म कोल्हापुर रियासत के कुंभोज गांव में २२ सितंबर, १८८७ को हुआ था । कुंभोज भाऊराव की ननिहाल थी, यहीं उन्होंने अपने बचपन का अधिकांश समय गुजारा ।

अशिक्षित वर्ग के बच्चों के लिए कुछ कर दिखाने की तीव्र भावना ने उन्हें एक शिक्षा शास्त्री बना डाला । सन १९०९ में सतारा जिले के दूधगांव में 'शिक्षा प्रसार संस्था' को जन्म देकर वे शिक्षा-क्षेत्र में कूदे । शिक्षा-प्रसार और उसके माध्यम से समाज सेवा तथा सामाजिक परिवर्तन का कार्य करते समय भाऊराव ने महात्मा जोतिबा फुले का आदर्श अपने सामने रखा था । कोल्हापुर में स्कूली जीवन से ही वह महात्मा फुले के कार्य के बारे में बराबर सुनते आये थे । इसलिए उनके जीवन पर महात्मा फुले की गहरी छाप पड़ी थी ।

सन १८८२ में हंटर कमीशन के सामने बयान देते हुए महात्मा फुले ने सर्वसुलभ, मुफ्त तथा अनिवार्य शिक्षा पर विशेष जोर दिया था ।

भाऊराव पाटिल ने सन १९०७ से सन १९४२ तक जन-साधारण के लिए शिक्षा क्षेत्र में मौलिक कार्य किये । संस्था का प्रारंभिक कार्य आमतौर पर साधारण समाज के छात्रों के लिए छात्रावास खोलना तथा पढ़ाई की व्यवस्था करना ही रहा ।

अपने संकल्प को मूर्त्त रूप देने के लिए भाऊराव ने सन-१९४२ में सतारा में 'स्त्री-शिक्षिका' विद्यालय शुरू किया । इस विद्यालय का नाम भाऊराव ने छत्रपति शिवाजी की माताजी—'जिजामाता' के नाम पर रखा ।

हाईस्कूलों की शिक्षा-प्रणाली भाऊराव की मान्यताओं से मेल नहीं खाती थी । अतः उन्होंने अपनी मान्यताओं के अनुकूल माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था के लिए 'महाराजा सयाजीराव फ्री एंड रेजिडेंशियल हाई स्कूल' की स्थापना की ।

भाऊराव को जन-साधारण के बच्चों की शिक्षा की सदैव चिंता थी । इस धुन में उन्होंने अपने पुत्र की उपेक्षा भी की । इसका उल्लेख नांदनी मठ के जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य द्वारा अक्तूबर, १९३३ को भेजे पत्र से मिलता है—'आपने तो अपना जीवन-सर्वस्व संस्था को ही समर्पित कर दिया है । परंतु आपके इकलौते बेटे की शिक्षा ढंग से नहीं हो पायी है । इसलिए हम अपनी ओर से छात्रवृत्ति प्रदान कर उसकी अधूरी शिक्षा को पूरा करने की कामना करते हैं ।'

लेकिन भाऊराव ने यह सहायता ठुकरा दी । उन्होंने अपने लिए तथा अपने परिवार के लिए समाज से कुछ लेने का सदैव विरोध किया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार भाऊराव ने अपने बेटे को लिखा था—'पिता होने की हैसियत से मैं तुम्हारे लिए जन्म देने के सिवा अधिक कुछ नहीं कर पाया। तुम्हारी माता का पवित्र अलंकार-मंगलसूत्र भी मैंने ले लिया। तुम्हारी माता भी आजीवन सेवारत रहकर चल बसीं। तुम्हें खुशी होनी चाहिए कि तुम त्यागी माता-पिता के पुत्र हो।'

'संस्था के जिस स्टोर में तुम काम करते हो, उसे इस वर्ष विशेष मुनाफा नहीं हो सका...। इस दशा में स्टोर अपने कुछ कर्मचारियों को अवश्य ही सेवा मुक्त करेगा। मेरा यह सप्रेम सुझाव है कि तुम स्टोर की नौकरी अपने-आप ही छोड़ दो।

'कुछ दिन तुम्हें जरूर कठिनाई होगी, मगर इस प्रकार अपने पांवों पर खड़ा होने का आनंद मिलेगा।'

'अंत में मेरी यह भी प्रार्थना है कि तुम मेरी पूज्य माताजी का खयाल रखो। शायद ऐसा वक्त भी आ जाए जब तुम्हें मेरा भी भार उठाना पड़े। इसलिए स्वावलंबी हो जाओ।'

भाऊराव ने स्वेच्छा से अछूतोद्धार का कार्य किया था। इससे प्रभावित होकर बंबई सरकार ने सन १९५३ में उनके लिए प्रतिमास ३०० रुपये का मानदेय मंजूर किया। परंतु उन्होंने मानदेय स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

—भ. प्र.

जीत आत्मविश्वास की

बात उस समय की है, जब राजाजी अविभाजित मद्रास प्रांत के मुख्यमंत्री थे। मद्रास विधानसभा में स्पीकर के पद के लिए चुनावों की घोषणा हुई। एक उम्मीदवार श्री जे. सिवशंमुगम पिल्लै, जो मद्रास म्युनिसिपल कारपोरेशन के मेयर रह चुके थे, राजाजी के पास उनका आशीर्वाद लेने आये।

राजाजी ने कहा, "आपके विरोध में जाने-माने राजनीतिज्ञ खड़े हैं। आप स्वयं को उनके मुकाबले में किस तरह योग्य मानते हैं।"

श्री सिवशंमुगम पिल्लै ने उत्तर दिया, "मैं म्युनिसिपल कारपोरेशन का मेयर रह चुका हूं और अनेक संस्थाओं से भी संबद्ध रहा हूं। मुझे राजनीति का भी पूरा अनुभव है तथा सभाओं को संचालित करने की पूरी योग्यता रखता हूं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि मुझे अवसर मिला तो मैं इस पद पर अपनी पूरी योग्यता से संतोषजनक कार्य करूंगा।"

इस पर राजाजी ने न केवल उन्हें आशीर्वाद दिया, बल्कि उन्हें विजयी बनाने में पूरा सहयोग देने का भी वचन दिया।

श्री पिल्लै के जाने के बाद राजाजी ने अपने सहयोगियों से कहा, "यह व्यक्ति पिछड़े वर्ग का होते हुए भी यह नहीं कह रहा कि मैं पिछड़े वर्ग का हूं, मुझे आरक्षण के अंतर्गत इस पद पर चुनाव लड़ने का पूरा अधिकार है। इसने अपनी योग्यता के आधार पर मुझे विश्वास दिलाया कि वह इस पद के लिए पूरी तरह योग्य है। यदि, इसी तरह का आत्मविश्वास लोगों में आ जाए तो पिछड़े वर्गों की उन्नति के लिए न किसी आरक्षण की आवश्यकता है और न ही सरकारी सहायता की।"

—बलराम दुबे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत-पत्र

समाज का प्रदूषण

दो-तीन वर्षों से 'कादम्बिनी' की ग्रामीण पाठिका हूं। विज्ञापन और फिल्मों में नग्न प्रदर्शन से समाज प्रदूषित हो ही रहा है। अकसर कोई उदंड बच्चा मिठाई या कोई और चीज खाते वक्त दूसरे बच्चे को ललचाकर कहता है— लेबअ-लेबअ। ठीक यही हाल आप लोग नारी अधिकार या नारी मुक्ति का प्रसंग उठाकर करते हैं— लेबू-लेबू। आप तो बच्चे नहीं हैं, फिर यह नादानी क्यों ? कहनेवाला ही अपना गांसा खोलकर जरा-सा बूंद नहीं टपकाना चाहता। लगभग हर घर में यही बात है। 'शराब के साथ पत्नी का खून पीना' कोई नयी बात नहीं है। शारीरिक, मानसिक हर तरह से उसका खून ही खून तो पिया जाता है। विडंबना तो यह है कि नारी के खून की सबसे अधिक जिम्मेदार स्वयं नारी है। अपना खून पिलाते रहो— 'बड़ी भलगर मेहरारू हा' जरा-सा जवाब दे दिया— चढ़वांकिन हिय ! किस अधिकार की बात करेंगे आप। कभी किसी बहू को भूख लगे और पहले खा ले, बात हवा-सी गांव में फैल जाती है— फलनवा कै पतोहिया कंघ के पहिलहीं खा ले ले।

'आखिर कब तक' एड्स का बचाव निरोध से करेंगे ? निरोध के माध्यम से एड्स को रोकना असामाजिक एड्स की आग को हवा देना है। बेहतर है संयम का ही प्रचार-प्रसार किया जाए।

—सुशीला सिंह,
गोपालगंज (बिहार)

अवस्थी लाला

जैराम जी की,

अप्रैल की 'कादम्बिनी' मिली। अच्छी होली खेली तुमने, एक तरफ भौजाई और दूसरी ओर 'कुमारी' पढ़बे वारे का सोचत हुइहें कि हमें बुढ़ाई दार कुमारी बनबे को सौक चर्रानो है।

ऐसेई तो लड़का लोग हमें प्रेम पाती लिखत रहत हैं। नाती-नतरों की उमर के लड़का लिखत हैं 'सुधा की सुधि में सुध-बुध खो बैठो अरे ! बेटाहरो कहीं देख लेहो तो सांचऊं में सुध-बुध भूल जेहो। अब बताओ जब हम 'कुमारी' हो गये तो तुमाये भैया ऽऽऽऽ जबसे 'कुमारी' पढ़ो हे खावो-पीवो छूट गओ है। हमसे पूछत हैं "काय तुम अब हमाओ साथ छोड़ देहो। तुमने कानून की कौन सी धारा फिट कर लई कि फिर 'कुमारी' हो गयी।" हमने कई, 'न घबराओ' पहले कहत ते कि १०० बरस पूरे हो जात हैं तो फिर से नये दांत आत हैं फिर से ब्याह होत है। अपने बखत में जयमाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई होत ती अब अपन नकली दांत निकार के रख देहें और गोभी, करेला, मिरचा की माला की जयमाल पहराहें ।

एक बात कहें लाला, हमाये लाने २०-२२ बरस को लड़का ढूंढ़ो । फिर मुस्किल है । कहीं लड़का ने 'अम्मा जी' कह के पांव पड़ लये तो ! अरे ! कौन ससुर कहत है कि लोग-लुगाई एक से होत हैं । एक साठ बरस के बूढ़े, अरे तुमई सही लाला, कोई बीस-बाइस की लड़किया मिल जेहे तो तुमाओ जी तो बस 'गार्डन' 'गार्डन' हो जेहे ।जेई तो मरदों की जात कहात है और हमें २०-२२ को लड़का मिल हे तो हमतो ऊहे बेटा कहके आसीरवाद देहें ।

जे 'कुमारी' लिखके तुमने हमें सांसत में डार दओ है । अब जित्ते प्रेम पत्र आहें हम सब तुम्हें भेज देहें ।

अच्छी फाग खेली है, ठहरो अगले बरस जियत रेहें तो हम भी तुम्हें देख लेहें और केहें 'अइयो लला अब खेलन होरी'

तुमाई भौजाई
श्रीमती सुधारानी श्रीवास्तव
जबलपुर

मान्यवर, 'कादम्बिनी' के मार्च' ९४ के अंक में 'काल चिंतन' में देहरादून के एक पाठक के पत्र का जवाब देते हुए आपने लिखा कि 'प्रायश्चित के बाद अतीत...हस्ताक्षर किये जा सकते हैं ।' अतीत गया तो अतीतातीत तत्व अपने आप चले गये ।'

आदरणीय आपके शब्दों और वाक्यों के संदर्भ में लिखना मेरी मूर्खता है फिर भी विवश हूं, अवश्य मेरी शंका का समाधान करने की कृपा करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है । मान्यवर अतीत क्या किसी प्रकार भूला भी जा सकता है जहां तक मैं समझता हूं—

अतीत अपनी संपूर्ण दृश्यात्मकता के साथ सजीव रहता है । अतीत केवल गुजरा हुआ काल खंड ही नहीं, वह हमारी चेतना के साथ चाहे पाप पूर्ण हो, विशिष्ट अनुभव एवं स्मृति के रूप में सदैव जुड़ा ही रहता है ।

यदि अतीत के तत्व सुखद होते हैं तो वर्तमान में भी उसी प्रकार की अपेक्षा मन करता है । यदि तत्व दुखद होते हैं तो उनसे प्रेरणा लेकर उनसे बचने का प्रयास करता है । पर अतीत मानस में आत्मसात हो जाता है । उसे कोरा कागज कैसे बनाया जा सकता है ?

मान्यवर मार्गदर्शन करें । मैं भी अतीत को विस्मृत करना चाहता हूं ।

—सुनील कुमार अवस्थी
उन्नाव

(अतीत को यदि गांठ बना लेंगे तो कैंसर-जैसे रोग हो जाते हैं । अतीत से मुक्त होइए—सं.)

धर्म का स्थान

मैं लगभग २२ वर्षों से 'कादम्बिनी' की नियमित पाठिका हूं । मार्च अंक में 'धर्म निरपेक्ष राज्य में धर्म का स्थान' पढ़ा । राष्ट्रपतिजी का स्पष्ट अभिमत है कि अंगरेजी के 'सेक्यूलर' शब्द के लिए हिंदी में 'सर्व धर्म समभाव' शब्द अधिक उपयुक्त होगा बजाय 'धर्म निरपेक्ष' के । इसमें कोई शंका नहीं कि सारा संशय व भ्रम 'धर्म निरपेक्ष' शब्द के कारण ही पैदा हुआ है । 'धर्म निरपेक्ष' से शब्दार्थ यही ध्वनित होता है कि जहां धर्म की अपेक्षा न हो । अर्थात दूसरे रूप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मविहीनता की स्थिति पैदा होती ही है ।

वस्तुतः आज सबसे बड़ी आवश्यकता 'धर्म' को सही अर्थों में ग्रहण करने की है ।

संत कवि तुलसीदास ने बड़े ही सहज रूप से एक अर्धाली में धर्म की व्याख्या कर दी है —**'परहित सरिस धर्म नहिं भाई'**, जबकि आज धर्म के नाम पर 'परहित' के बजाय परपीड़ा को ही ध्येय बना लिया गया है ।

—डॉ. पुष्पा रानी गर्ग,
इंदौर

फिल्मों में देह प्रदर्शन

मार्च अंक में प्रकाशित फिल्मों में देह प्रदर्शन लेख काबिलेगौर है । इसमें रंचमात्र भी संदेह नहीं कि सिने-तारिकाओं के खुले संवेदनशील अंगों के प्रति विकृत वासनात्मक भावों का ही संचार होगा जो मानसिक विकृतियों को जन्म देगा तथा दूषित माहौल का ही सृजन करेगा ।

—जयप्रकाश मिश्र,
शिवहर, सीतामढ़ी

इस लेख पर हमें इन पाठकों की प्रतिक्रियाएं भी प्राप्त हुई हैं :

प्रणय मिश्र; जमालपुर, सुरेन्द्र सेंगर; जबलपुर, नलिनी रंजन; हाजीपुर, भगवंत सिंह चौबे; धनौरा सिवनी, चंदन कुमार सिन्हा; साहेब टोला, विदिशा, डॉ. राज गोस्वामी; दतिया, हरिशंकर एन. उपाध्याय; घिमोदा (खाचरोद), आशीश दलाल; खरगौन

महिलाओं का खतना

मार्च में प्रकाशित लेख 'महिलाओं का खतना : बहस अमरीका में' के अंतर्गत उठाये गये सवाल विचारणीय लगे ।

लोगों को (खासकर मुसलिम समाज को) इस संबंध में जागरूक होना चाहिए । अगर वे इसलाम की आधारभूत नीतियों और विश्वासों का अध्ययन करें तो उन्हें महिलाओं का खतना कतई इसलाम के विरुद्ध लगेगा ।

—नलिन कुमार सिंह
मलहीपुर, (बिहार)-८५१११६

इन पाठकों ने भी इस लेख पर हमें अपने विचार लिखकर भेजे हैं :

आलोकनाथ झा, दरभंगा, अंजना, धरहरा (बिहार), जानकीनाथ शर्मा, लखनऊ, एस. चौबे, इलाहाबाद, नयन मनार, आगरा

कालचिंतन

मैं 'कादम्बिनी' का नियमित पाठक हूं । जब कभी भी जानने की ललक हो या चित्त अशांत हो तो 'कादम्बिनी' से राहत मिलती है । मार्च '९४ का अंक इस दृष्टि से बहुत अच्छा लगा । मेरे-जैसे तमाम लोग जो व्यक्तिगत, सामाजिक और नाना प्रकार की अन्य प्रकार की चिंताओं से निरंतर घिरे रहते हैं, उनके लिए रामबाण का काम करेगा छंदबद्ध आपका 'कालचिंतन' । मैंने इसे कई बार पढ़ा और जब-जब पढ़ता हूं तब-तब नये अर्थ प्रकट होते हैं । मुझे नहीं मालूम कि क्यों आपने १०८ पंक्तियां लिखी हैं, पर निश्चय ही ये १०८ पंक्तियां माला के १०८ दानों की तरह हैं, जितनी बार इन्हें फेरता हूं, ध्यान करता हूं, उतनी बार संबल, उत्साह, ऊर्जा और शांति की अनुभूति होती है । मेरी हार्दिक कृतज्ञता स्वीकारें ।

—रामकिशोर
वादिराज नगर, उडुपी (कर्नाटक)

मार्च में प्रकाशित 'कालचिंतन' पर हमें इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के भी पत्र प्राप्त हुए हैं :
चंद्रप्रकाश दरमोड़ा, चमोली, मीनू शर्मा, पो. नंदरामपुर धारुहेड़ा, रामसमुझ त्रिपाठी, ग्राम.पो. मदरिया, गोरखपुर, दिवाकर मिश्र, लखनऊ, नीलम, नयी दिल्ली, संतोष कुमार, श्रीनगर (गढ़वाल), निधि रस्तोगी, दिल्ली ।

आखिर कब तक

'कादम्बिनी' के मार्च के अंक में 'आखिर कब तक' स्तंभ के अंतर्गत आपने कांसीराम और मुलायम सिंह यादव के संदर्भ में वर्तमान में हो रही विकृत राजनीति पर विचारोत्तेजक टिप्पणी प्रकाशित की है । यदि जनता अपने ही जन-प्रतिनिधियों की उपेक्षा की शिकार हो जाए तो यह प्रश्न उभरता है कि जनता के प्रति अपने दायित्वों का एहसास न करनेवाले जन-प्रतिनिधियों को जन-प्रतिनिधित्व करने का क्या हक है ?

जनता को सजग होकर राजनीतिबाजों को बाध्य करना चाहिए कि वे जन-समस्याओं को हल करें ।

—ललित शर्मा,
भोपाल

तृष्णा की तृप्ति नहीं

बरसों 'कादम्बिनी' का न केवल पाठक हूं बल्कि संग्रहकर्ता भी हूं । उसके लेख, कहानियां, कविताएं तथा अन्य स्तंभ साहित्यिक तृष्णा की तृप्ति ही नहीं करते बल्कि तृष्णा को और अधिक भड़कानेवाले होते हैं । जब यह तृष्णा सीमा से बाहर हो जाती है और कलश में जल समाप्त हो जाता है, तब पाठक की मनोदशा के संबंध में बस यही कहा जा सकता है कि 'घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय' ।

—वैद्य श्यामलाल कौशिक,
सरसावा (सहारनपुर)

साधुवाद !

ऐसे दौर में जब पत्र-पत्रिकाएं शुद्ध रूप से व्यावसायिक चोला ओढ़कर मिजाज को रंगीन बनाने में सभी मानदंडों और मर्यादाओं को नकार रही हैं, आपने तमाम दबावों के बावजूद 'कादम्बिनी' की गंभीरता को कायम रखा है, इसके लिए साधुवाद स्वीकार करें ।

—भोलानाथ कुशवाहा,
मीरजापुर

संग्रहणी : बिना औषध चिकित्सा

मार्च अंक में 'संग्रहणी का सहज उपचार' पढ़ा । यह एक ऐसा रोग है जिसकी चिकित्सा केवल आयुर्वेदिक पद्धति में ही संभव है । बिना औषध चिकित्सा के भी मात्र तक्र (मठा) के समुचित प्रयोग से भी इस रोग की चिकित्सा की जा सकती है । यह अपने दीपन, ग्राही तथा लघुता जैसे गुण कर्मों के कारण संग्रहणी में विशेष लाभ पहुंचाता है । रोग तथा दोष के बल और ऋतु, अहोरात्र आदि काल को लक्ष्य में रख एक निश्चित अवधि तक तक्र सेवन करवाया जाता है । लहसुन के कंद का छौंका इसकी प्रक्रिया को बढ़ा देता है ।

उत्तर भारत में आम्र कल्प व खरबूजे के कल्प का प्रयोग भी इस रोग के लिए प्रचलित है । दाड़िम, चीकू व पपीते का सेवन भी इस रोग में लाभदायक है । पर्पटी कल्प के अतिरिक्त दुग्ध वटी, तक्र वटी, नृपतिवल्लभ रस, पीयूषवल्ली रस, बृहन्नायिका चूर्ण, कनकसुंदर रस, अगस्तिसूतराज सर्जरस चूर्ण का प्रयोग भी श्रेयस्कर है । औषध चिकित्सा से ज्यादा महत्त्व पथ्य-अपथ्य का है ।

—डॉ. अनूप गक्खड़,
(एम.डी. आयुर्वेद), जालंधर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
कादम्बिनी
विशेषांक की तरह पठनीय एवं मननीय
वर्ष ३४, अंक ७, मई, १९९४

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

अनंतराम गौड़
लाल पेटी के गोपनीय दस्तावेज ---------- २८
प्रभाशंकर उपाध्याय 'प्रभा'
प्रेमिका की लाश का राज्याभिषेक-------- ३२
नवीन खन्ना
रेशमी खतों में छिपे गोपनीय संदेश ------ ३५
पाकिस्तान मुसलमानों के लिए घातक होगा ४०
कमलेश भट्ट 'कमल'
काम की नगरी ही नहीं है खजुराहो --------४२
अमरनाथ राय
आखिर महिला ने अपने केश क्यों बेचे ? ४६
रमेश सर्राफ
जहां पांडवों के हथियार गले थे लोहार्गल ६५
राज जोतवाणी
तोतों ने बसा दी एक प्रासाद नगरी -------६८
जानकी वल्लभ शास्त्री
मैं गरीबी में जीता हूं----------८६
डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्मा
रजक वंश अवतंस ----------९०
शहजाद अहमद
आधी हकीकत आधा फसाना ---------११०
सुरेश नीरव
एक पुस्तकालय जिसे परहेज है पुस्तकों से ११४
अशोक सरीन
जब अंधे ने विमान उड़ाया----------१२६
प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'
ऊंचाई पर सिखों का अकेला तीर्थ हेमकुंड १२८
अर्चना सोशल्य
चुटकीभर नमक बनाता है ----------१३५
राम गुप्ता
रेलगाड़ी से होड़----------१४१
ज्योतीन्द्र मिश्र
बाबा बकराहा नाथ ----------१४२
इंदु शेखर त्रिपाठी
कागज के टुकड़े का चमत्कार ---------१४९
स्व. माखनलाल चतुर्वेदी
चीन में हिंदी का सम्मान----------१५२
दिलीप मेहरा
बैंकों का घाटा कैसे देखा जाता ...१६८
न.ख.
भारत सरकार ने कोयले की दलाली ... १७६
भारत भूषण
खिलाड़ियों का फिल्मों में योगदान... १८०

कहानियां एवं व्यंग्य

कुंदा जोगलेकर
मरीचिका----------[illegible]
राजरानी शर्मा
करवट----------[illegible]
अनुराग पाठक
नारी उत्पीड़न और बिखरते परिवार-------[illegible]
नीला पद्मनाभन
वह भोलापन----------[illegible]
डॉ. सुधा पांडेय
संवर्ग विद्या (उपनिषद् की कहानियां—३)[illegible]
धर्मपाल गांधी
बहुत देर हो चुकी थी----------[illegible]
अल्लाम अल हिंदी
कारागार ----------[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

मुनि प्रशांतकुमार
मां का सांया ---------- ११७
डॉ. मोतीलाल जोतवाणी
बदला ---------- १५८
राधाकृष्ण प्रसाद
शून्यबोध ---------- १८५

कविताएं

गंगा प्रसाद विमल
अकसर याद आता है ---------- ३४
शशि शर्मा
भीड़ ---------- ८५
डॉ. अय्यप्प पणिक्कर
मुझे खून दो ---------- १००
डॉ. पूर्णिमा पूनम
चारों तरफ सिंह और बकरी ---------- १७०

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य—६, ज्ञान-गंगा—७, आस्था के आयाम—८, प्रतिक्रियाएं—१०, काल चिंतन—१६, आखिर कब तक—२१, गोष्ठी—६२, विधि-विधान—९५, बुद्धि-विलास—१०१, वैद्य की सलाह—१२४, इनके भी बयां जुदा-जुदा—१३१, तनाव से मुक्ति—१४६, प्रवेश—१५५, कला दीर्घा—१६७, सांस्कृतिक समाचार—१७२, हंसिकाएं— १७७, ज्योतिष : समस्या और समाधान—१७८, व्यंग्य-तरंग—१९०, नयी कृतियां—१९२, यह महीना और आपका भविष्य—१९६, समस्या-पूर्ति—१९८।

आवरण चित्र : विजय अमन।

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गा प्रसाद शुक्ल, वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, भगवती प्रसाद डोभाल, उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, प्रूफ रीडर : प्रदीप कुमार, कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी, चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त।

संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८/२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

मूल्य : ९५ रुपये; द्विवार्षिक : १९५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, भूटान और नेपाल; विमान से ३४० रुपये, समुद्री जहाज से १४० रुपये। अन्य सभी देशों के लिए : विमान से ५१० रुपये; समुद्री जहाज से १९० रुपये।

शुल्क भेजने का पता :
प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोण-चिंतन

—आस्था, विश्वास, अध्यात्म और विज्ञान : ये कुछ ऐसे अवयव हैं, जिन्हें लेकर चर्चा होती है और जो विरोधाभास के तिमिर-जाल में फंसकर मनुष्य से मनुष्य को विभाजित करने में सहायक होते हैं ।

—आस्था और विश्वास : इन पर अनेक बार मैंने विचार प्रस्तुत किये हैं ।

—वास्तविक तथ्य यह है कि आस्था के बिना विश्वास उत्पन्न नहीं होता; विश्वास के बिना आस्था जागृत नहीं होती । ये अन्योऽन्याश्रित हैं ।

—आस्था का बीजारोपण हुआ नहीं कि अचानक विश्वास की जड़ें तीव्रता से उभरने लगती हैं ।

—जड़ें उभरेंगी तो उनसे अद्भुत तत्वों को सीमित नहीं किया जा सकता । वह प्रकृति-साध्य है और प्रकृति के ऊपर ऐसी कोई अस्मिता नहीं है जो अपनी सीढ़ियां बना सके ।

—सीढ़ियां बनाने के प्रयत्न किये जाएंगे तो वे रेत के टीले ही सिद्ध होंगे ।

—अर्थ हुआ कि आस्था का बीजारोपण अपनत्व और समीपता को जन्म देता है ।

—अपनत्व और समीपता: यथार्थबोध के प्रतिद्वंद्वी हैं ।

—अपनत्व को स्वीकारते ही हमारी अपनी चेतना समाप्त हो जाती है । हमारी संपत्ति दीमकों की बामी में कैद होकर हमारी बौद्धिकता को किसी व्यापारी के पास गिरवी रख देती है ।

—यहीं से समर्पण का भाव उदित होता है और समर्पण सभी विवेकों को नेत्रहीन बना देता है ।

—मैं समर्पण का प्रतिरोधी हूं । अपनी विवेकशून्यता का परिचय नहीं देना चाहता और न अपनी मानसिक चेतना को गिरवी रखना चाहता ।

—इसके पीछे कोई विपरीत भाव नहीं है : अपने को समाप्त कर सर्वस्व पा लेने की चेतना मृत्युदंश है । कामनाओं को छोड़कर मिथ्या-भ्रम नहीं पालना चाहता कि मेरा चेतन-मनुष्य अवचेतन हो गया है । अपने प्रभाव की आभा-रश्मियों से विमुक्त होकर शांति पाना मेरा श्रेय नहीं है । अपने को पतित कर महान बनने की कल्पना मेरे स्वप्न-जगत में ही नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

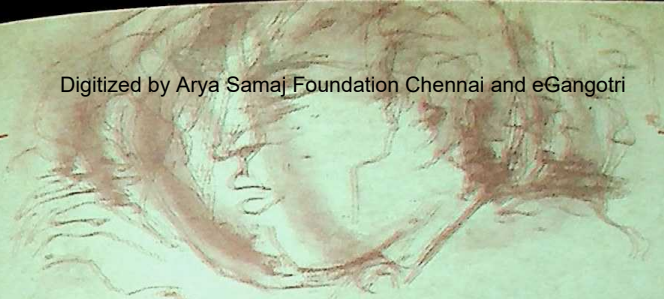

—मैं जो हूं, वह हूं : किसी के समकक्ष नहीं, किसी से निम्न नहीं, किसी से उच्च नहीं ।

—मेरा अपना 'स्व' धर्मकांटे के लिए नहीं है ।

—धर्मकांटा धर्म का निकृष्टतम पराभव है । पराभव और पराजित की सीमा में वे जाएं, जो संज्ञाशून्य हैं ।

□

—अध्यात्म और विज्ञान की परिभाषाएं और सीमाएं आस्था और विश्वास से बहुत दूर नहीं हैं ।

—अध्यात्म जीवन के साथ या जीवनेत्तर बंधा हुआ पारिभाषिक शब्दांकन नहीं है ।

—विज्ञान का अपना अस्तित्व है, वह आस्था, विश्वास, अध्यात्म, निराशा और आशाओं के बीच न तो पनपता, न फूलता और न फल देता ।

—विज्ञान का स्वीकार्य इन सभी संदर्भों को स्पर्श कर सकता है; करता है; करना होगा, लेकिन वह उनका अधिशासी नहीं है ।

□

—एक गली से दो हाथी जा रहे थे । दोनों समन्वय से ओतप्रोत थे । एक स्थान आता है कि गली अत्यंत सूक्ष्म हो जाती है । तब ? तब हाथी आपस में टकराकर अपने निजी अस्तित्व बोध को विसर्जित नहीं करते ।

—हाथियों अथवा हाथियों की तरह जीव-मात्र का अत्यंत निकटकर देहधर्मिता से टक्कर लेना, जीवन के परम सत्य को स्वीकारना है ।

—दोनों प्यार की उच्चतम चरम शक्ति में पहुंचते हैं । तब मार्ग की अवरोधकता अर्थहीन है ।

—सत्य तो यह है चरमसिद्धि के मार्ग 'मेन हाइम' यानी महान सड़कें नहीं हैं ।

—मार्ग की सूक्ष्मता से उत्पन्न घर्षण उस अमोघ विद्युत का जन्म स्रोत है— जो अंधकार को चुनौती देता या तो चकमक प्रस्तर-सा काम करता है अथवा जुगनुओं-सा सूचीभेद अंधकार में तारों की वितान बिछा देता है ।

—यही तो सामर्थ्य और सीमा है । होनी और अनहोनी को जो प्रश्नों से ऊपर

मई, १९९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धकेल द, वहां शेष क्या रहेगा ?

□

—प्रश्न नहीं होंगे तो उत्तर का प्रश्न कहां है ? उत्तर होंगे तो वे अनंत प्रश्नों को जन्म देंगे और केंचुए की तरह अनियंत्रित प्रजनन के जन्मदाता होंगे ।

—तब ?

—तब क्या होगा मनुष्य-चेतना का ।

—मस्तिष्क चेतना को पराजित नहीं किया जा सकता ।

—समय, काल, स्थान, कालखंड और विवेक के लघुतम क्षण तभी यहां आकर अपना अस्तित्व नष्ट कर देते हैं और शरीर से अशरीरी बन जाते हैं ।

—उनकी अपनी प्रक्रियाएं हैं । उन प्रक्रियाओं के सामने भ्रमित आवरण प्रश्नों के घेरे बनाते हैं ।

□

—शरीरी और सामान्य मनुष्यता के रूप में वे अपने निजी प्रकाश-स्तंभ हो सकते हैं जैसे जहाजों के मार्ग-प्रदर्शन के लिए महासागरों में प्रकाश-स्तंभ होते हैं ।

—प्रकाश-स्तंभ मात्र महासागरों की अनंत लहरों में से किसी एक लहर का एक बिंदु मात्र है ।

—तब हम प्रश्न उठा सकते हैं, लेकिन इन प्रश्नों में उत्तर भी अंतर्निहित हैं । यथा :

- विश्वास असीम नहीं, विश्वास की भी सीमा है
- पाप और पुण्य पृथक इकाई नहीं हैं; वे संभवतः परिधि के साथ घूमते हुए काल-चक्र हैं जो कभी भी अपना मार्ग बदलने में सार्थक हैं ।
- महान पुण्यात्मा को पापी होते किसने देखा
- किसने नहीं देखा रक्त-रंजित इतिहास पुरुष को शांति और सद्भाव को महान अध्येता बनकर सदियों तक अपने पूर्व कार्यों को प्रच्छालित कर परमपवित्रता का द्योतक बनना
- जन्मना मनुष्य तोड़-फोड़ करनेवाला अबोध बालक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

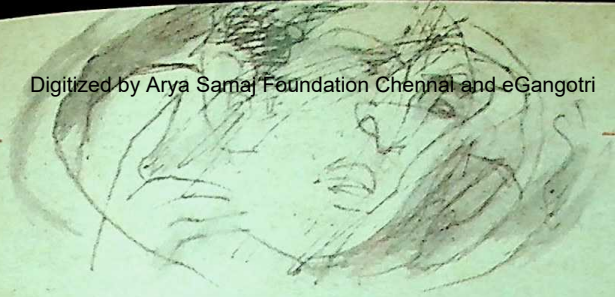

- कर्मणा अबोधता के इतिहास को किन पृष्ठों में प्रश्रय देती है, यह भी अज्ञात नहीं है
- डाकू से दुर्दांत कोई नहीं, डाकू से संभ्रांत कोई नहीं
- मनुष्य की चेतन-प्रक्रिया से बड़ा कोई पुण्यात्मा नहीं है
- मनुष्य की चेतन-प्रक्रिया से कोई अधम आत्मा नहीं है
- महासागर की विशालता और वातायन की अनंत सीमाएं मात्र दृष्टिभ्रम हैं
- शोषण से बड़ा पाप कहां है और शोषण से बड़ा पोषण कहां है ?
- मनुष्य सृष्टि संहारक है, वही मनुष्य सृष्टि नियंता है

□

—अध्यात्म और विज्ञान समदृष्टि से इसी परिधि के परिचालक हैं ।

—अध्यात्म चेतना के द्वार खोलता है, मनुष्यता का मार्गदर्शक बनकर उसके हृदय की संवेदनाओं में अनबिधे मोती की तरह ऐसे आविष्ठ होता है कि वहीं एक कीड़ा पनपता है जो लिंग-भेद के परे है ।

—उदाहरण दूंगा :

अध्यात्म की चरम ऊंचाई तक पहुंचनेवाले महाचार्य ने संवेदनाओं के वे अनंत द्वार खोल दिये कि विश्व की समग्र-शक्तियां उस क्षण पुरुष-श्रेष्ठ की वाणी की सहचरी हो गयीं । वह श्रेष्ठिमार्ग का श्रेष्ठिपति भी बना सकता था और समस्त क्षेत्र के विनाश का अकारण शब्दों की अठखेलियों में अधम सहचर भी बन सकता था ।

—विज्ञान, ज्ञान सम्मत है ।

—ज्ञान हर क्षण कारण और अकारण खोजता है । यह खोज या शोध अध्यात्म की खोज से भिन्न नहीं है ।

—शोध भिन्न नहीं है तो परिणामों का सहज आकलन किया जा सकता है ।

—प्रश्न हैं तो उसके कारण हैं ।

—कारण हैं तो उनसे ही प्रश्न उद्भूत होते हैं ।

—दो तत्व जहां होंगे— कारण और प्रश्न— समाधान के परिणाम-वाचक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषण संज्ञा और क्रिया के साथ आबद्ध होंगे ।

—आबद्ध होना समर्पण है ।

—समर्पण साध्य, असाध्य और सीमाओं के परे है ।

—समर्पण मूक और बधिर है ।

—मूक और बधिर के कितने संकेतों को पहचाना जा सकता है । अतः अध्यात्म की तरह विज्ञान को भी समकक्ष संज्ञा देनी होगी ।

□

—प्रतिफल :

—सोचते हैं क्यों ? प्रयोग करते हैं क्यों ?

—आवश्यकता सोच और चिंतन या अध्यात्म की है ।

—आवश्यकता प्रयोग और प्रयोगों के उन प्रतिफलों की भी है जो मशीनी प्रतिकांक्षाओं से उत्पन्न नहीं हुए, उनका स्रोत मनुष्य का मस्तिष्क रहा है।

—मशीनें मात्र मनुष्य-स्रोत के नीर-क्षीर विवेचन का साध्य बनने का प्रयत्न करती रहीं हैं, अभी तक बन नहीं सकीं ।

—अध्यात्म सदियों से सोचता रहा है, अभी तक किसी स्थिर-बिंदु में नहीं पहुंचा ।

—दोनों के मार्ग सोच और असोच की अंधी गलियां हैं जहां जो दो हाथी स्वच्छंद विचरते हैं और स्वच्छंद टकराते हैं ।

□

—हमारे पास कोई उत्तर नहीं है, कोई निष्कर्ष नहीं है, क्योंकि कारण नहीं था, कारण के बिना अकारकता न विजयी होगी और न पराजित ।

ओम !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

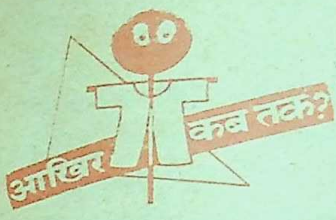

काश ! कसाईखाने में आदमी भी कत्ल होते !

आखिर कितने जानवर मारे जाएं ? भारत सबसे मजेदार देश है । यहां ऐसे प्रश्न उठाये जाते हैं, जिनकी कल्पना कोई विदेशी कभी नहीं कर सकता । पिछले दिनों ईदगाह के कसाईखाने को लेकर दिल्ली राज्य के मुख्यमंत्री, ले. गवर्नर और हाईकोर्ट, तीनों के बीच एक ऐसी रस्साकसी चलती रही जैसे बच्चे रस्साकसी का खेल खेल रहे हों । मुख्यमंत्री यदि चाहते थे कि कुछ निर्धारित बकरियां और भैंसें ही प्रतिदिन काटी जाएं तो ले. गर्वनर महोदय कसाइयों के हाथ की कठपुतली बन गये और कहने लगे कि यह संख्या बहुत कम है । इससे ज्यादा जानवर काटे जाने चाहिए । दोनों के बीच मतभेद और झगड़े का कारण सामान्य नहीं है— यह राजनीतिक पार्टियों का झगड़ा है । श्री दवे की नियुक्ति केंद्र से हुई है और वर्तमान सत्ता दल केंद्र विरोधी है । ऐसे में बेचारे निरीह जानवरों के कत्ल करने के मामले कितनी बेरहमी से अखबारों में उठाये जा रहे हैं । इस मतभेद को देखते हुए मामला न्यायालय तक पहुंच गया है । दिल्ली की जनता कुछ कहती हो या न कहती हो, अखबारों ने गुहार मचा रखी है कि गोश्त के बिना दिल्ली वाले बेहाल हैं ।

डॉक्टरों ने बार-बार यह चेतावनी दी है कि हृदय-रोग का बहुत बड़ा कारण बकरों, भेड़ों और भैंसों का गोश्त है । जगह-जगह सम्मेलन हो रहे हैं और विदेशों में भी खानपान में यहां तक बदलाव आ रहा है कि शाकाहार भोजन की तरफ अधिक से अधिक लोगों का ध्यान जा रहा है । दिल्ली में कसाईखाने के बवंडर को लेकर तो मेरा यहां तक कहने का मन होता है कि यदि आदमी का गोश्त खाया जाता तो शायद अखबारों की बिक्री का यह भी एक जरिया होता कि रोज कितने आदमी कसाईघर में काटे जाएं । यह लगभग प्रमाणित हो चुका है कि आदमी का गोश्त सबसे ज्यादा स्वादिष्ट होता है । उदाहरण के लिए शेर को लीजिए । जो शेर एक बार नरभक्षी बना, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर मनुष्य का ही गोश्त खाएगा, दूसरे जानवर को कभी नहीं मारेगा । और फिर अखबारों में सुर्खियां होंगी— 'नरभक्षी शेर से पीड़ित गांव' ।

इस प्रसंग पर मुझे एक घटना और याद आ रही है— वह है आल्पस पर्वत में वर्षों पहले हुई विमान दुर्घटना । दुर्घटना कहां हुई, इसकी खोज न जाने कितने हेलीकॉप्टर और दूरबीन करते रहे और इसमें १५ से २० दिन लग गये, तब तक घायल यात्री मरे यात्रियों का गोश्त खाते रहे । जब किसी तरह खोजी विमानों ने घटनास्थल का पता लगा लिया तो उन्होंने पाया कि केवल २ व्यक्ति किसी तरह जीवित हैं । दोनों को विमान से लाया जा रहा था । अन्य यात्रियों की तरह एयर होस्टेस ने इन यात्रियों को भी खाना परोसा, लेकिन तत्काल उनमें से एक यात्री ने एयर होस्टेस का हाथ पकड़ लिया और वह उसे चबाने लगा । यदि विमान के अन्य यात्री व अधिकारी तुरंत रक्षा के लिए न दौड़ते तो आखिर विमान सुंदरी का गोश्त कहां से बचता ? दोनों यात्रियों को खासी मसक्कत के साथ हाथ-मुंह बांधकर किसी तरह विमान रोककर हवाई अड्डे पर उतारा गया । देखिए न इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है कि मनुष्य का गोश्त सबसे ज्यादा स्वादिष्ट होता है । हमारे देश के कर्णधार नेताओं को कौन बताये इस देश में कितनी समस्याएं हैं— बकरियां, भेड़ें और भैंसें प्रतिदिन कितनी काटी जाएं यह भी कोई समस्या है ।

खरीदारो ! मायावती की कीमत दुगुनी हो गयी है !

हमारे देश में बहुत कुछ हो रहा है । कांशीराम और उनकी सहयोगी मायावती इन दिनों पानी पी-पीकर महात्मा गांधी को कोसने में लगे हुए हैं । मायावती को कल तक कोई नहीं जानता था । कांशीराम ने दावा किया है कि उत्तर प्रदेश में मायावती की कीमत पांच हजार रुपये से बढ़कर एक लाख रुपये हो गयी है । कीमत कैसे बढ़ी इसका प्रमाण भी दिलचस्प है । कांशीराम कहते हैं— उत्तर प्रदेश में यह प्रथा है कि अपने नेता को

CC-0..In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनने आये लोग उसके भाषण के बाद उसे १ रु. चंदा देते हैं । यही राज है मायावती की कीमत बढ़ने का ।

महात्मा गांधी जेल गये, उन्होंने यातनाएं भोगीं, सबसे अधिक भूख हड़ताल की, अपनी वकालत का पेशा छोड़ा और नंगे बदन हाथ में लाठी लिए नुआखाली-जैसी जगह पर गये जहां भीषण दंगे हो रहे थे। अंगरेजों की सत्ता तभी दहल गयी थी कि भारत में अब उनके दिन लद गये हैं । महात्मा गांधी के पीछे सैकड़ों बड़े नेता थे तो यह पूरा देश भी था और उसमें कांशीराम के वंश का कोई आदमी अवश्य रहा होगा । गांधी एक ऐसा व्यक्तित्व है जो न कभी कार में चला, न बंगले में रहा और जिसने अपने पेशे को छोड़ा । जिस देश में गांधी, सुभाष चंद्र बोस, राम तीर्थ, विवेकानंद, मदन मोहन मालवीय-जैसे अनगिनत निस्वार्थ सेवी रहे हों, वहां कांशीराम और मायावती का यह ढोल पीटना आजादी की कौन-सी शर्त को पूरा करता है ? जब मायावती गर्व से कहती है कि यदि गांधी को गाली देने से इतना नाम मिलता है तो मुझे यह काम पहले ही शुरू कर देना चाहिए था । मायावती के लिए मेरी सलाह है कि नाम कमाने के लिए और भी बहुत-से रास्ते हैं । राम का विरोध ये दोनों करें तो उन्हें पता लग जाएगा कि जनता के साथ खिलवाड़ करने का अर्थ क्या होता है । अरे भई सत्ता मिल गयी है तो भिस्ती राम क्यों बनते हो, मजे में ऐश करो, जितने दिन मिल गये हैं वही काफी हैं ।

भारत के मीडिया में दीमक वर्ग

इस देश में जितना कुछ हो रहा है सब मीडिया की कृपा से । मायावती और कांशीराम भर ही नहीं भिंडरवाला को किसने हीरो बनाया । भिंडरवाला पहले बहुत शिष्ट आदमी थे । मुझे याद है उन्होंने स्टेटमेंट दिया था, "मैं सरकार के खिलाफ नहीं बोलना चाहता । यहां की जनता कहती है और अखबार कहते हैं संतजी कुछ और बोलिए ।" देखिए न यह स्पष्ट है कि साहस और वीरता के कारनामों के सिवाय इस देश का मीडिया, इस तरह भड़काने में विश्वास करता है । टी.एन. शेषन-जैसे सामान्य अफसर को मीडिया ने अभी से नेता बना दिया है । इन सबको देखते हुए यदि यह मांग जोर पकड़ रही है कि बाहर के अखबार भारत से भी निकलें तो इसका विरोध क्यों किया जाना चाहिए । भारत का मीडिया सुधरेगा और मीडिया का दीमक वर्ग नष्ट भी होगा ।

खरीदिए चेस्टी बेल्ट

मार्च के अंक में हमने लारेना बॉबिट के साथ अश्विनी भावे की फिल्म पुरुष का जिक्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था जिसमें पुरुष के गुप्तांग काटने की घटना थी । संभवतः लारेना बॉबिट का किस्सा दुनियाभर के अखबारों में छपा होगा । तभी तो रोम के एक अखबार ने एंजिलो कैमेरिनो के नाम से एक खबर छापी है कि उसने पुरुषों के लिए स्टील और चमड़े का चेस्टी बेल्ट बनाने का धंधा शुरू कर दिया है । वह अब तक १००० से ज्यादा चेस्टी बेल्ट रोम बेच चुका है और अब कुछ अमरीका के लिए भी बना रहा है । उसका कहना है कि रात को जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी या प्रेमिका के पास जाए तो चेस्टी बेल्ट का उपयोग जरूर करे, क्योंकि रोम की अदालत ने लारेना बॉबिट को मानसिक विकृति के आधार पर निर्दोष घोषित कर दिया है । चेस्टी बेल्ट की कीमत फिलहाल लगभग दस लाख लीरा (इटली की मुद्रा) है जो बहुत ज्यादा नहीं । यह घटना बहुत छोटी है, लेकिन इससे पता चलता है कि अपराधों की दुनिया में किस तरह विकास हो रहा है।

रोम में माफिया गिरोह का राज्य

रोम में हाल ही में आम चुनाव हुए हैं, जिसमें रिश्वतखोर और अपराधियों की बहुत बड़ी संख्या है जो चुनाव जीते हैं । जीतनेवालों में माफिया के गिरोह हैं और ऐसे बहुत से लोग हैं, जिनका नाम अपराध की दुनिया में रोम में छापा गया है । यह प्रक्रिया रोम में ही नहीं, दुनिया के कई देशों में शुरू हो गयी है । भारत में भी यह सत्य नहीं है कि लोकतंत्र का चीरहरण यहां की जनता हस्तिनापुर के किसी विवश सभासद की भांति देख रही है ।

अस्पताल मरने के लिए हैं !

डॉक्टर का पेशा सबसे पवित्र माना जाता है लेकिन इन दिनों जिनकी कोई सिफारिश नहीं है, उन्हें लेकर जो घटनाएं सुनने को मिलती हैं वे इस पूरे पेशे पर प्रश्न चिह्न लगाती हैं । हमें श्रीमती कात्यायनी का एक अत्यंत द्रवित करनेवाला पत्र मिला है जिसके कुछ अंश अपने-आप एक बहुत बड़ा प्रश्न चिह्न छोड़ जाते हैं । मैं समझता हूं कि इस पत्र का एक विशिष्ट अंश यहां प्रकाशित करना आवश्यक है, ताकि यह पता लग जाए कि हमारे अस्पतालों में और कमाई करनेवाले डॉक्टर क्या कर रहे हैं ।

डियरिंदे वी.पी. सिंह और तुम्हारी हार्टलेस स्वीटहार्ट डॉ. सिंह,

वह मर गयी । गत ५ फरवरी को उसे मरे पूरा एक मास हो गया और ५ मार्च को दो मास पूरे हो जाएंगे । याद करो पहली जनवरी से पांच जनवरी तक की वे पांच शामें । उसके पेट में दायीं ओर पसली के नीचे दर्द था । यही दर्द बढ़ता गया और ५

कादम्बि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी तक वह असहनीय हो गया । याद करो दस वर्ष की उस बच्ची का दर्द से तड़पना और तुम्हारे सामने जुड़े हाथ, ''डॉक्टर सा'ब, बहुत दर्द हो रहा है । हम सहन नहीं कर पा रहे हैं । डॉक्टर सा'ब, प्लीज एक बार बचा लीजिए ।'' तुम्हारे चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं और दौड़कर तुम अपनी स्वीटहार्ट को बुला लाये । उस हृदयहीना ने बला हॉस्पिटल को टालकर तुम्हारा उद्धार किया । वहीं उसने दर्द से तड़पते हुए दम तोड़ दिया । काश ! उसके स्थान पर तुम्हारी छोटू होती ।

उसका यह दर्द एक जनवरी को हल्का-हल्का शुरू हुआ था । 'क्योर' करने के लिए पूरे चार दिन थे, यानी छियानबे घंटे । हम लोग लेकर तुम्हारे पास आये थे । मैं अनाड़ी यह समझी थी कि कमजोरी में सरदी लग जाने के कारण संभवतः पसली चलने लगी है । कहा भी था, ''डॉक्टर साहब, यहां दर्द बता रही है । देख लीजिए । शायद पसली चल रही है ।'' तुमने कहा कि 'टेस्ट रिपोर्ट्स' आ जाने के बाद ही 'प्रोसीड' करोगे । फिर ५ ता. को क्यों हॉस्पिटल 'रेफर' कर दिया ? रिपोर्ट्स तो तब तक भी नहीं आयी थीं ! तुमने यह केवल इसलिए किया, क्योंकि यदि तुम्हारे घर पर मरती तो आक्षेप तुम पर आता । वास्तव में वह एक जनवरी से ही सीरियस थी, लेकिन तुमने सीरियसली 'टेक-अप' नहीं किया । लापरवाही करते रहे और नोट बटोरते रहे । इंडियन करेंसी तो हम भी लुटाने को तैयार थे ।

एक वी.पी. सिंह ने आरक्षण मसले में न जाने कितने निर्दोष छात्रों की आत्माहुति ली और तुम मेरी बेटी को खा गये । टी.वी. पर देखा होगा— अपनी कुरसी खिसकती जानकर उसके चेहरे पर भी वैसी ही हवाइयां उड़ीं थीं जैसी कि ५ जनवरी की शाम को तुम्हारे चेहरे पर । वह अंत तक अपनी कुरसी से चिपका रहा, किंतु बच न पाया लेकिन तुम्हारी स्वीटहार्ट ने तुम पर आयी बला टालकर तुम्हें बचा लिया और मौत की फीस भी ले ली । फिर कहूंगी— काश ! तुमने २ जनवरी को ही हमारे कहने से उसके पेट पर हाथ रखा होता और जानने की कोशिश की होती कि... । या न समझ पाने की स्थिति में स्वयं की फीस (रुपयों) का मोह छोड़कर हमें कहीं और जाने की राय दी होती ।

माना कि मौत उसकी नियति थी । वह बच्ची हमारे भाग्य में ही नहीं थी किंतु वह मौत 'पेनलेस' भी तो हो सकती थी !

क्या दर्दरहित मौत और जीवन का एक-एक क्षण जीने की सुविधा पर डॉक्टरों और उनके संबंधियों का ही एकाधिकार है ? फिर कहूंगी कि मेरी बेटी की असमय पेनफुल मौत के कारण तुम ही हो ।

मरघट में काव्य गोष्ठी

मुझे वर्षों पहले कलकत्ता की याद आ रही है । मैं वहां एक वृहद कार्यक्रम के सिलसिले में गया था । मुझसे कई नवयुवक लेखक मिलने आये और उन्होंने आग्रह किया कि उनके द्वारा आयोजित गोष्ठी की मैं अध्यक्षता करूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने पूछा, 'गोष्ठी आपने कहां आयोजित की है ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'नीमतल्ला घाट में ।' नीमतल्ला घाट कलकत्ता का प्रसिद्ध शमशान घाट है । मैंने पूछा, 'आप वहां ही काव्य गोष्ठी क्यों कर रहे हैं !' मुझे पता चला कि वे शमशानी पीढ़ी के कवि हैं और किसी एक विशेष व्यक्ति को अध्यक्ष बनाते हैं । मुख्य अतिथि होती है किसी मृतक की लाश ।

मुझे शमशानों और आत्माओं से हमेशा भय लगता है । मैंने कहा, 'भाई आप कहीं और चलिए । मैं वहां नहीं जा सकूंगा ।' उन्होंने बहुत शांत और गंभीर ढंग से आग्रह किया कि हम शमशानी पीढ़ी के कवियों की कविताएं साधारण कवियों की समझ से परे हैं, उन्हें केवल आत्माएं ही समझ सकती हैं । मैं वहां नहीं गया । यह प्रसंग वर्षों बाद इसलिए याद आ रहा है कि कुछ ही समय पहले झांसी में राष्ट्रीय प्रगतिशील साहित्यकार संघ ने पहली बार आधी रात को शमशान घाट पर अनंत यात्रा गोष्ठी का आयोजन किया । २० अप्रैल रामनवमी के मौके पर रात दस बजे से मृतात्माओं को काव्य रस का पान कराने के लिए बड़ागांव गेट के पास के शमशान घाट पर खुले प्रकाश में 'अनंत यात्रा काव्य गोष्ठी' संपन्न हुई । इसके संयोजक श्री हरि नारायण विद्रोही थे ।

अनंत यात्रा काव्य गोष्ठी में भाग लेने के लिए नगर व जिले के सभी कवियों, कवयित्रियों, काव्य प्रेमियों, बुद्धिजीवियों एवं साहित्यानुरागियों को आमंत्रित किया गया । गोष्ठी में मुख्य अतिथि का पद अध्यक्षता और संचालन का भार उन्हीं साहित्यानुरागियों को सौंपा गया जो जीवन यात्रा के स्थान पर 'अनंत यात्रा' में अधिक सुख का अनुभव करते हैं ।

संघ के अध्यक्ष श्री डी. पी. खरे थे । समूचे विश्व में पहली बार अपने प्रकार की यह निराली अनंत यात्रा काव्य गोष्ठी थी । काव्य रस का आनंद लेने तांत्रिक विधि से मृतात्माओं का भी आवाह्न किया गया । इस काव्य गोष्ठी की वीडियो फिल्म भी तैयार की गयी है ।

काव्य गोष्ठी में काव्य पाठ करने वाले कवि किसी भी विधा में काव्य पाठ के लिए स्वतंत्र थे ।

झांसी की गोष्ठी जैसी रही, वह अलग बात है लेकिन मैं संघ के अध्यक्ष के दावे को अस्वीकार करता हूं, क्योंकि कलकत्ते की शमशानी पीढ़ी ने कई वर्षों पहले ही ऐसा आंदोलन किया था और वह बाद में कई वर्षों तक निरंतर चलता रहा ।

—राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपनीय रहस्यों के दस्तावेज

लालपेटी के गोपनीय दस्तावेज और 'सिसरो'

टर्की स्थित ब्रिटिश राजदूत, सर ह्यु नैचबुल-ह्यूजिसन, अपना दिन संतरे के रस से प्रारंभ करते थे। उनका खिदमतगार एलिसा बैजना प्रतिदिन प्रातः लगभग ७.३० बजे अपने मालिक के शयनकक्ष में पहुंचकर उनको ताजे संतरों के रस का एक गिलास पेश करने के लिए उन्हें जगाता था। यह रस पीने के बाद उनमें जैसे नयी स्फूर्ति आ जाती थी और वह दिनभर के लिए स्वयं को तरोताजा महसूस करते थे। सर ह्यु के दिल में अपने इस सेवक के लिए बहुत सम्मान था। कितने मनोयोग और श्रद्धा से वह इनकी सेवा करता है यह सोचकर वह गद्गद् हो जाते थे। एलिसा बैजना था तो एक तुर्क किंतु उसका जन्म १९०४ में यूगोस्लाविया में कहीं हुआ था। अपने मित्रों से वह इस शांत और समर्पित सेवक की प्रशंसा करते हुए उसे एक शरीफ इनसान बताया करते थे।

किंतु बैजना अपने संबंध में सर ह्यु के विचारों से सहमत नहीं था और अपना परिचय एक 'नाटे, गठीले तथा कुरूप' व्यक्ति के रूप में दिया करता था। अपने इस काम से वह संतुष्ट नहीं था और इतने कम वेतन (प्रति माह १०० टर्किश पौंड, या ब्रिटिश मुद्रा में लगभग ४ पौंड) के लिए सदा कुंठित रहता था। वह इन 'चालाक और कांइयां' राजनयिकों से कुछ ऐंठ कर जल्दी ही धनवान बनने की इच्छा अपने मन में पल्लवित करता रहता था।

तनाव और आतंक का माहौल

ये दिन १९४३ में शरद ऋतु के आसपास टर्की की राजधानी, अंकारा, में बहुत तनाव और आतंक के थे। विश्व युद्ध चल रहा था। पूरा यूरोप जल रहा था। ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल किसी न किसी तरह टर्की को भी अपने साथ युद्ध में हिटलर के विरुद्ध घसीटने के लिए आतुर थे। अमरीका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट, सोवियत संघ के सर्वेसर्वा जोसेफ स्तालिन के साथ इसी को लेकर संदेशों का आदान-प्रदान होता रहता था। एक तार से भेजे गये संदेश में स्तालिन ने चर्चिल से इस आशय का एक संदेह व्यक्त किया था कि 'मुझे अब तक यह स्पष्ट नहीं है कि एक ओर सोवियत संघ और ब्रिटेन और दूसरी ओर जरमनी से टर्की ने जो वायदे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रखे हैं उनको वह किस तरह पूरे करेगा ।'

लाल बक्से के गोपनीय दस्तावेज

अंकारा में अय्यार और जासूस भरे पड़े थे, और प्रतिदिन कोई न कोई नयी अफवाह फैलती रहती थी । यह स्थिति बैजना जैसे धाकड़ और धनलोलुप व्यक्ति के लिए कुछ कर गुजरने तथा कमा लेने के लिए बहुत आदर्श थी । यह सोचकर कि यदि सुरक्षा से संबंधित कुछ गुप्त बातें उजागर हो जाएं तो राजदूतावास के एक अदना नौकर पर किसी का संदेह नहीं जाएगा, उसने कहीं से एक 'लाइका' कैमरा हथिया लिया तथा गोपनीय ब्रिटिश दस्तावेजों के फोटो लेने प्रारंभ कर दिये । पहले वह प्रथम सचिव डगलस् बस्क का ड्राइवर था । तब उसने देखा था कि कभी-कभी उसका मालिक गोपनीय फाइलें घर ले आया करता था और फुरसत में अध्ययन करके उन पर अपने विचार लिखा करता था और सर ह्यु को तो उसने देख ही लिया था कि वह अपने 'लाल पेटी' के प्रति कितना उपेक्षित भाव रखते थे । राजनय भाषा में 'लाल पेटी' उसे कहते हैं जिसमें अत्यधिक गोपनीय दस्तावेज रखे जाते हैं । ब्रिटिश राजदूत के घर पर उनका यह बक्स उनके अध्ययन-कक्ष में लावारिस-सा पड़ा रहता था । अपने मालिक की इसी लापरवाही का लाभ उठाने का बैजना ने फैसला किया ।

महामहिम राजदूत जब स्नानगृह में लोकप्रिय धुनें गुनगुनाते हुए जब फव्वारे के नीचे बैठकर अपने शरीर की गरमी शांत कर रहे होते तो इधर उनके अध्ययन-कक्ष का वातावरण गरमाने लगता था । एक दिन बैजना ने पिघले मोम में उस बक्स की चाभी की छाप निकाल ली, और चुपचाप एक नयी ताली बनवाकर ले आया । अगले दो सप्ताह उसने स्नानगृह की संगीत-लहरियों के बीच सारे दस्तावेजों का छायांकन कर डाला । ये सभी अति गोपनीय

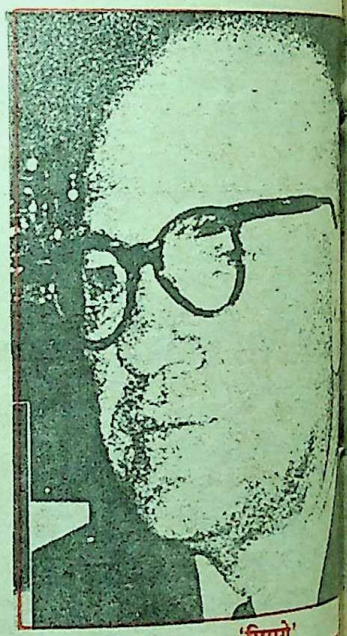

'सिसरो'

मित्र राष्ट्रों के उच्चाधिकारी इस बात से परेशान थे कि उनकी महत्त्वपूर्ण गोपनीय सूचनाएं शत्रुपक्ष तक कैसे पहुंच जाती हैं । उन्हें ज्ञात ही नहीं था यह कार्य ब्रिटिश राजदूत का एक साधारण किंतु विश्वसनीय सेवक करता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(टॉप सीक्रेट) लाल धारीवाले दस्तावेज थे ।

देर रात में वह राजदूत के अध्ययन-कक्ष में घुस जाता, खिड़की की दहलीज पर ज्ञापनों और तारों को लटकाकर अपने लाइक कैमरे से उनकी तसवीरें उतार लेता । अक्तूबर २६ की उसने इतनी गोपनीय सूचनाएं एकत्रित कर लीं कि उनसे वह अमीर बन सकता था । इसके बाद वह जरमन राजदूतावास गया तथा गुप्त पुलिस अताशे लुडविग म्वायजिक से मिलने के लिए समय प्राप्त कर लिया । उसे बैजना ने ५२ दस्तावेज दिखाये जिन पर 'गोपनीय' तथा 'अत्यधिक गोपनीय' लिखा था ।

ये फिल्में देने के लिए बैजना ने २० हजार पौंड मांगे, और भविष्य में प्रत्येक फिल्म रोल के लिए वह १५ हजार पौंड लेगा । म्वायजिक ने बैजना से कहा 'अच्छा, चार दिन बाद आना', और इसके बाद उसने जरमन दूतावास फ्रैंज वॉन पैपन को सूचित करके उनसे आदेश देने को कहा । राजदूत भी एक दम कैसे कह सकते थे, इसलिए उन्होंने अपने विदेश मंत्री जोशिम वॉन रिबेन ट्रॉप से संबंध स्थापित किया ।

सौदा पक्का

रिबेन ट्रॉप तो ऐसी बातें जानने के लिए उत्सुक ही थे, अतएव उन्होंने राजदूत को तार दिया, 'सभी एहतियात बरतते हुए इस सौदे को हाथ में ले लो' और ३० अक्तूबर को ब्रिटिश दस्तावेजों का अध्ययन करते हुए बॉन पैपन को ब्रिटेन के राजसी वायु सेना की टर्की में उपस्थिति का पता लग गया । अभी तक जरमनी अंधेरे में था, और अब उसे यह मालूम हुआ कि सादे कपड़ों में कितने राजसी वायु सैनिक टर्की में उतर चुके हैं ।

इनमें से कोई भी तार या संदेश दो सप्ताह से अधिक पुराना नहीं था । वाह, क्या बात है । मजा आ गया ! वॉन पैपन यह सब जानकर उछल पड़े । जरमन राजदूतावास ने अपने इस एजेंट को कूट नाम 'सिसरो' दिया । सिसरो कौन था ? यह ईसा पूर्व १०६-४३ में एक शक्तिशाली रोमन सुवक्ता तथा राजपुरुष था । इसने गृहयुद्ध में सीजर के विरुद्ध पॉम्पी का समर्थन किया था, और ईसा पूर्व ४४ में सीजर की हत्या के पश्चात इसने ऐंटनी से झगड़ा मोल ले लिया, अतः उसे गिरफ़ार करके फांसी पर चढ़ा दिया गया था ।

इसके बाद अगले कुछ सप्ताहों तक बैजना अपने काम में तन्मयता से लगा रहा और 'लाल बक्स' में रखे प्रत्येक नये दस्तावेज की प्रतियां बनाता रहा । वह फिल्म के रोल को अपनी जेब में सरका देता और कार पार्क में खड़ी गाड़ियों के पीछे अथवा जरमन राजदूतावास के बाग में ही म्वायजिक, या उसके किसी एजेंट को चुपचाप सौंप दिया करता ।

इस प्रकार कुछ ही दिनों में बैजना ने कोई ८० हजार पौंड जमा कर लिए । यह रकम वह अपने शयनकक्ष में फर्श पर लगे तख्तों के नीचे ही छिपाता रहा । उसका यह कमरा सर ह्यु के अध्ययनकक्ष से कुछ ज्यादा दूर नहीं था ।

तेहरान-सम्मेलन

इस बीच तेहरान सम्मेलन हुआ जिसमें रूजवेल्ट, चर्चिल और स्तालिन ने नात्सी जरमनी को कुचलने के अपने मंसूबों में दृढ़ता दिखाते हुए कुछ और निर्णय लिए । इस ऐतिहासिक सम्मेलन के भी निर्णय वॉन पैपन को लग गये जिससे उसकी खुशी का ठिकाना नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा । फिर ६ दिसम्बर की शाम को सिसरो ने काहिरा सम्मेलन का सार-संक्षेप भी जरमन राजदूत को पहुंचा दिया, जिसमें टर्की के राष्ट्रपति इस्मत इनानू ने रूजवेल्ट और चर्चिल से स्पष्ट कर दिया था कि वह टर्की को युद्ध में नहीं झोंकिंगे ।

जब रिबेन ट्रॉप को खबर लगी तो उसने सिसरो की सत्यनिष्ठा और उपयोगिता के बारे में अपने विचार बदल दिये । "यह व्यक्ति और इसकी दी गयी सूचनाएं विश्वास करने लायक उतनी नहीं हैं," उसने अपनी यह राय बतायी । "हमें तो यह अंगरेजों के बिछाये जाल में फांस रहा है ! खैर,हम इसका उपयोग तो करेंगे, किंतु बहुत एहतियात के साथ ।"

बैजना को तो इस बारे में कुछ बताया नहीं जाना था, अतएव वह उसी प्रकार काम करता रहा,और १९४३ का क्रिसमस उसने वॉन पैपन को उन ब्रिटिश सैनिकों, नाविकों और वायु-सैनिकों की ठीक-ठीक संख्या बताकर मनाया जो टर्की में अपनी वरदी उतारकर सादे कपड़ों में पहुंच चुके थे । इसके बाद वॉन पैपन ने लिखा था, "सिसरो की सूचना दो कारणों से उपयोगी है । एक तो उसने हमें यह बताया कि जरमनी हार के बाद उसके साथ किस तरह का राजनीतिक व्यवहार किया जाना है, दूसरे मित्रराष्ट्रों में कहां और किस तरह की मतभिन्नताएं हैं ।"

फिर भी रिबेनट्रॉप ने अपने विचार नहीं बदले, और वह उसे अंगरेजों का 'मोहरा' ही समझता रहा, और जब १९४४ की गरमियों में 'ऑपरेशन ओवरलॉर्ड' शुरू किये जाने की सूचना भी बैजना की फिल्मों से मिल गयी रिबेनट्रॉप ने अपने विचारों को तब भी उसी तरह बनाये रखा ।

सिसरो ने जो कुछ भी सूचना दी थी उसे वॉन पैपन ने, शत्रु के खेमे से मिली एक महत्त्वपूर्ण जानकारी के रूप में आदर दिया था और वह निश्चित भी था कि मित्रराष्ट्र शीघ्र ही यूरोप पर एक जबरदस्त हमला करेंगे । बाद की घटनाओं ने यह पुष्ट भी किया कि सिसरो ठीक था । नारमंडी पर ६ जून, १९४४ को निर्णायक हमला किया गया ।

जरमन राजदूत ने अपने इन विचारों से जब बर्लिन को सूचित किया तो रिबेनट्रॉप से प्राप्त प्रतिक्रिया से वह बहुत आश्चर्यचकित और निराश हुआ । उसका उत्तर था : "संभव तो है किंतु व्यावहारिक नहीं ।"

तथापि, सुरक्षा संबंधी गोपनीय बातों की जानकारी अंकारा से शत्रु के कानों तक पहुंच जाने की खबर ब्रिटिश गुप्तचर सेना को मिल गयी । अतएव विशेष जासूसों का एक दल लंदन से तुरंत अंकारा भेजा गया ताकि अब तक जो कुछ हुआ उसकी जांच करे, और भविष्य में ऐसा न होने पाये इसकी व्यवस्था करे । उन्होंने सर ह्यु के कार्यालय में एक अलार्म उपकरण लगाया, तथा राजदूतावास के समस्त कर्मचारियों से भी पूछताछ करके यह पता लगाने का प्रयास किया कि गोपनीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस्तावेज में लिखी सूचनाएं कैसे प्रकट हो गयीं जिसका लाभ शत्रु को मिल सकता है । हां, एक बात जरूर है, गुप्तचरों ने समस्त पूछताछ बड़े अधिकारियों और कर्मचारियों से की थी, एलिसा बैजना जैसे साधारण और अदना सेवकों को इससे दूर ही रखा । अतएव बैजना सहित अन्य सभी ऐसे कर्मचारी सामान्य तौर पर अपने काम में लगे रहे ।

परदाफाश

सिसरो के रूप में उसकी भूमिका शायद कभी उजागर नहीं हो पाती यदि अमरीकी गुप्तचर प्रमुखों को सिसरो नामक एक जासूस की उपस्थिति के संबंध में उनके कान न भर दिये गये होते । उन्होंने एक चतुर और साधनसंपन्न महिला गुप्तचर को अंकारा भेज दिया । कार्नेलिया नैप नामक यह जासूस ऐसी होशियार निकली कि उसने लुडविग म्वायजिक की प्राइवेट सेक्रेटरी की नौकरी प्राप्त कर ली ।

अपने इस काम के सिलसिले में वह सिसरो के संपर्क में भी आ गयी, और अप्रैल १९४४ तक वह इसका भेद खोलने तथा काहिरा स्थित अपने उच्चाधिकारियों को उसकी पहचान बताने में सफल हो गयी । फिर अचानक एक दिन कार्नेलिया नैप, जिसके प्रति जरमन पुलिस अताशे सशंकित हो गया था, अंकारा से गायब हो गयी । एक बात यह भी थी कि अपने काम के बोझ से थकावट दूर करने के लिए वह नशीली दवाएं भी लेने लगी थीं । बैजना को भी बता दिया गया कि अच्छा होगा यदि वह भी अंकारा से भाग जाए नहीं तो उसकी खैर नहीं होगी । अब वह क्या करता, भागने के अतिरिक्त और कोई रास्ता भी नहीं बचा था, नहीं तो वह स्वयं ही नहीं बच पाता ।

ठग से ठगी

अतएव उसने सर ह्यु नैचबुल-ह्युजिसन को विधिवत नोटिस दे दिया और अपना बोरिया-बिस्तर बांधकर ब्रिटिश राजदूतावास से पलायन कर गया । अब तक वह तीन लाख पौंड कमा चुका था । युद्ध समाप्त होने के बाद फिर वह इस्तम्बूल में दिखायी दिया । उसने सोचा कि अब तो शांति स्थापित हो चुकी है इसलिए क्यों न शानदार तरीके से जीवन प्रारंभ किया जाए । अतएव एक विशाल लक्करी होटल बनाने की योजना उसके मन में थी जिसे उसने मूर्त्तरूप देने का प्रयास किया । लेकिन यह क्या ? अब तक वह ठगता रहा था, और इस तरह उसने जो धन एकत्रित किया था वह ठगी का ही तो था । उसने वे पौंड जब निकालकर बाजार में चलाने के प्रयास किये तो उसे पता चला कि वे सब के सब जाली थे । उसे क्या मालूम था कि जो गोपनीय सूचनाएं उसने बेची थीं वे स्वयं उसे बेच डालेंगी ।

उसने अपना शेष जीवन म्युनिश में एक चौकीदार की हैसियत से व्यतीत किया और १९७० में उसका वहीं देहांत हो गया ।

प्रस्तुति : अनंतराम गौड़

मैं जुगनू हूं, मुझे जुगनू ही रहने दे मेरे मौला
सुना है चांद-तारे सबकी आंखों में खटकते हैं ।
—बृज अभिलाषी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमिका की लाश का राज्याभिषेक

● प्रभाशंकर उपाध्याय 'प्रभा'

सिरफिरे कहिए अथवा सनकी, कोई खास अंतर नहीं । मगर, दुनिया में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं । और तो और, समाज तक सनकी मिल जाएंगे । वैंकुवर द्वीप का 'क्वाकियूतल' समाज धनाढ्यों का नहीं बल्कि कंगालों का सम्मान करता था, गोया जितना बड़ा कंगला, उतनी ही बड़ी प्रतिष्ठा । और उस सम्मान को हासिल करने हेतु बड़े-बड़े धनपतियों ने अपना सर्वस्व स्वाहा कर डाला तथा जो इस कार्य में सफल न हो सके, उनमें से अनेक मारे लाज के मर गये । सहारा के एक इलाके में 'तोरंग' जाति का समाज है । यहां पुरुष परदा करते हैं, महिलाएं खुले मुंह धूमती

हैं । इस समाज ने मरदों के लिए खास किस्म का, नीले रंग का बुरका तजवीज किया है, जिस पर सफेद टोपी लगी होती है ।

लाश का राज्याभिषेक

पुर्तगाल के राजा डोम पेद्रो को सनक सवार हुई तो उसने कब्र खुदवाकर एक शव को निकलवाया । उसे शाही पोशाक पहनायी और बाकायदा राजसिंहासन पर आसीन कर, राज्याभिषेक किया । वह लाश उसकी प्रेमिका 'इनेस द कास्त्रो' की थी, जिसकी पूर्व में हत्या कर दी गयी थी ।

चीन की विशालतम दीवार के लिए विख्यात सम्राट 'चिंग शी वान' एक दूसरी वजह से भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशहूर हुआ था । उसका महल अति विराट और भव्य था । उस महल में पंद्रह हजार कमरे थे । प्रचलित जन विश्वास है कि उसने पंद्रह हजार विवाह भी किये । सभी रानियों को एक-एक कमरा दिया । शीवान की मृत्यु के पश्चात सभी रानियों, दास-दासियों को सम्राट की इच्छानुसार, चीन की विशाल दीवार में दफन कर दिया गया ।

कुत्तों को दावत

एक से एक उम्दा व्यंजन किंतु, यह लजीज भोजन मानवों के लिए नहीं अपितु कुत्तों के लिए था और हर रात ऐसी दावत दी जाती थी, जमींदार फ्रांसिस हेनरी इगर्टन द्वारा । कुत्ते भी यूं ही पूंछ हिलाते हुए नहीं चले आते थे, उस दावत में । बाकायदा पूरी पोशाक पहने, जुराबों-जूतों से लैस होकर आते थे ।

पत्नी हासिल नहीं, तो सास से विवाह

सनक तो सनक है, जाने कब, किस बात पर, सर चढ़ जाए । वैशाली जिला के गांव कुशहर का एक युवक जब अपनी पत्नी को विदा कराने ससुराल पहुंचा, तो वहां पता चला कि उसकी ब्याहता ने किसी दूसरे से ब्याह रचा लिया है । और अब, वह वहां नहीं है । बस, फिर क्या था ? पत्नी पाने की सनक में उसने सास से विवाह करके ही दम लिया ।

पत्नी पाने की लालसा की धुन में आस्ट्रेलिया के आदिवासी-विधुर अपनी दाढ़ी में कीचड़ लगा लेते हैं । फिर, पूरे कबीले का फेरा लगाते हैं । कबीलेवाले फौरन समझ जाते हैं कि बंदा अब, दूसरा ब्याह चाहता है ।

—द्वारा—स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर, जयपुर, बड़ी सादड़ी-३१२४०३

संगीत से मच्छर भगायें

पेरिस से ८० किलोमीटर दूर उत्तर कोमपेन स्थित रेडियो फ्यूज एफ एम स्टेशन गरमी के मौसम में एक विशेष संगीत प्रसारित करता है जिसकी अल्ट्रा साउंड फ्रिक्वेंसी से मनुष्यों को काटने वाले मादा मच्छर घर से भागने पर मजबूर हो जाते हैं । स्टेशन से जारी एक बयान में कहा गया है कि १६ किलो हर्ट्स पर एक अल्ट्रा साउंड फ्रिक्वेंसी द्वारा जारी यह आवाज नर मच्छरों-जैसी होती है, जिससे खून चूसनेवाले मादा मच्छर भाग जाते हैं । इसका मनुष्यों पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता । दैनिक कार्यक्रमों के साथ ये सिगनल दिये जाते हैं जिससे रेडियो के आसपास चार मीटर के अंदर मनुष्यों को काटनेवाली मादा मच्छर नहीं आ पाती। यह तकनीक रेडियो स्टेशन ने कोमपेन यूनिवर्सिटी ऑव टेक्नालॉजी के सहयोग से तैयार की है और कहा है कि इसका उपयोग घर के अंदर-बाहर तथा गाड़ियों में भी हो सकेगा ।

परीक्षा में पिछड़ने का कारण

जरमनी की दो महिला मनोवैज्ञानिकों ने १० वर्ष की १४० स्कूली लड़कियों के परीक्षण के बाद यह मत प्रकट किया कि भय और आशंका के शिकार बच्चे स्कूली इम्तहान में पिछड़ जाते हैं । बीकम स्थित रूर विश्वविद्यालय के डॉ. मेसा और ब्रिकमेन के अनुसार घबराये हुए बच्चे उन बच्चों की अपेक्षा स्कूल में कम लोकप्रिय होते हैं, जो घबराये हुए नहीं होते । ज्यादा घबराये हुए बच्चे कही हुई बात ठीक से समझ भी नहीं पाते ।

—प्रकाश चंद्र गंगराड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जो मुझे अकसर याद आता है

● गंगा प्रसाद विमल

किसी पल
जब भी अकेला हूं

वर्तमान से अचानक
पीछे की ओर
उन वीथियों में दौड़ने लगता हूं
ताजी बर्फ में पांव के निशान बनाते
जहां अदृश्य-सा
अब भी मौजूद हूं

वहां तेज धूप के प्रकाश में
ठंडापन है
पेड़ों पर छोटी-छोटी कोंपलें उग आयी हैं
क्यारियों में लताओं के ऊपर
ठिठकी शीशे कतरनों-सी बर्फ
जल बूंदों में टपकने लगी है

अंजीर के पेड़ पर
जामुनी फूल उभरने लगा है
लिली के पत्तों का आकार बढ़ने लगा है
पीपल के हिलते पत्तों की चमक
रजतवर्णी हो आयी है

दूर पहाड़ियों के शिखर पर
बर्फ का उजाला
बरबस अपनी ओर खींच रहा है
चीड़ के पेड़ों से सरसराती हवा
सीटियां गुजरने लगी हैं

कुछ बच्चे

जिनकी गालों में रक्तिम लालिमा है
बर्फ की सतह हटा
हरियाली दूब को देखने लगे हैं
वहीं जहां मैं पहुंचता हूं

बरस, मास, दिन
सब तिरोहित हो गये हैं

अब मैं बर्फ में
बर्फ नहीं देखता
अपनी पीछे की यात्रा को
साल महिनों में
नहीं देखता
बस चेहरों में वे अपना-अपना
समय व्यक्त करने लगे हैं

मैं एक साथ
बरसों के बरस देखता हूं।

किसी पल जब भी
बहुत-सी चीजों से छूटकर
अचकचाकर खुद को भी
दूसरे आदमी की तरह
देखता हूं
तभी पाता हूं खुद को
न जाने कितनी दूर
दूरियों को मापने में व्यस्त।

क्रमवार याद करना
कितना कठिन है
यह तब भान होता है
जब लौट आता हूं
अतीत की यात्राओं से
वर्तमान में

एक व्यर्थ से

अहसास के साथ
स्वयं के साथ।

—बी-२०१, कर्जन रोड अपार्टमेंट्स नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेशमी खतों में छिपे गोपनीय संदेश

जलियांवाला बाग के जघन्य हत्याकांड के मुख्य अभियुक्त जनरल डायर के साथ सर माइकेल ओ' डायर का नाम भी जुड़ा हुआ है। जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर के रूप में कार्यरत सर माइकेल ओ' डायर ने जनरल डायर को यह तार भेजा था—

'यू आर एक्शन करेक्ट एंड लेफ्टिनेंट गवर्नर एप्रूव्स'

सन १९२५ में सर माइकेल ओ' डायर की एक पुस्तक दो खंडों में प्रकाशित हुई थी —'इंडिया एज आई न्यू इट'। इसे लंदन की कांस्टेबल एंड कंपनी लि. ने छापा था। यहां प्रस्तुत हैं, इसी पुस्तक के मुख्य अंश।

प्रस्तुति : नवीन खन्ना

दिसम्बर १८८५ की सरदियों की एक सुबह क्लार्क मुझे शाहदरा (पश्चिमी पंजाब) ले गया। यहां से हमें महाराजा कश्मीर को छोड़ने लाहौर तक जाना था। महाराजा, कलकत्ता में वायसराय से मिलने जा रहे थे। हम महाराजा-स्पेशल ट्रेन में सवार हो गये तथा ट्रेन के थके-हारे और उनींदे यात्रियों के बीच बैठ गये। मैं अपना अखबार उठाकर पढ़ने लगा। मेरी सीट के साथ बैठा यात्री मेरे कंधों के ऊपर से झांककर खबरों को देख रहा था। मैंने यह सोचा कि उसे अंगरेजी भाषा नहीं आती होगी, इस कारण मैंने महाराजा के आगमन का समाचार उसे अनुवाद करके सुना दिया। उसने मुसकराकर मेरा धन्यवाद किया। मैं फिर से अखबार में डूब गया। महाराजा के बारे में मेरा विचार था कि वे अपने प्राइवेट-कक्ष में अकेले बैठे होंगे।

लाहौर स्टेशन पर जब ट्रेन पहुंची तो मैं स्तब्ध रह गया। मैंने देखा कि लेफ्टिनेंट गवर्नर तथा जनरल उसी आदमी की तरफ बढ़े और तपाक से सलाम करने लगे। मैं बहुत झेंपा कि मैं खुद महाराजा से बिना किसी शिष्टाचार के मिला था। क्लार्क को इस सारे घटनाक्रम में बहुत मजा आ रहा था। महाराजा से मेरी घनिष्ठ दोस्ती की शुरुआत इसी घटना से हुई।

घोड़ी ने ट्रेन को पछाड़ा

जुलाई १८८५ में मैंने कानून तथा हिंदुस्तानी भाषा की परीक्षा उत्तीर्ण की और मेरा तबादला मुलतान में हो गया। व्यंग्य के तौर पर यह कहा जाता है कि मुलतान में मुख्यतः ये चार चीजें देखने को मिलती हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्द-गर्मी-गद्दा वा गोरिस्तान

(धूल, गर्मी, भिखारी और कब्रिस्तान)

मेरे अस्तबल में बलूच जाति की एक घोड़ी सबसे तेज चीज थी । उसके रंग के कारण मैं उसे 'हिरणी' कहकर पुकारता था, लेकिन शाहपुर के लोग उसकी गति के कारण उसे 'बिजली' कहते थे । एक बार हिरणी और मेल-ट्रेन में दौड़ का आयोजन हुआ । मियानी से भेरा तक दस मील का रास्ता तय करना था । हिरणी पर सवार होकर मैंने यह दौड़ जीत ली । हमने उपरोक्त दूरी आधे घंटे से भी कम समय में तय की । मेल ट्रेन हमसे अभी पचास गज पीछे थी ।

मुल्ला ने मुझे गाली दी

सन १९०१ से १९०८ के दौरान मेरी नियुक्ति फ्रंटियर में थी । एक दिन मैं बन्नू से कुछ मील दूर, एक बस्ती में से गुजर रहा था । एक कट्टरपंथी मुल्ला मुझे देखकर अपने साथियों से पश्तो में चिल्लाकर कहने लगा, 'वो देखो बदमाश काफिर जा रहा है ।' मुल्ला ने सोचा होगा कि मुझे पश्तो जुबान नहीं आती होगी । उस वक्त मैं इस प्रकार की बदतमीजी सहन नहीं कर पाया । मैं वापस मुड़कर अपनी बाइसाइकिल से उतरा और मुल्ला से बोला, 'तुम्हें अपने अल्फाज वापस लेने होंगे और माफी के तौर पर अपनी पगड़ी मेरे पैरों पर रखनी होगी ।'

मुल्ला अकड़ा रहा, हालांकि उसका साथी माफी मांगने लगा । उसी समय मेरा पठान पुलिस अरदली, जिसे मैंने पीछे छोड़ दिया था, हांफते हुए वहां पहुंच गया । उसने अपनी तलवार खींच ली । मैंने उसे वार करने से मना कर दिया लेकिन यह हुक्म दिया कि जब तक मुल्ला मेरी बात मान न ले, तलवार उस पर ताने रखो । अब मुल्ला झुक गया । उसने अपनी पगड़ी मेरे पैरों में डाल दी और सर को जमीन पर टिका दिया ।

हैदराबाद (दक्षिण) १९०७-१९०९

प्रधानमंत्री हिंदू था

मेरे कार्यकाल के दौरान हैदराबाद का प्रधानमंत्री सर किशन प्रसाद हिंदू था । वह बहुत सुलझा हुआ इनसान था । मेरे विचार में उसकी एक बीवी मुसलमान थी । हैदराबाद रियासत का पोलिटिकल सैक्रेटरी पारसी था । दो दूसरे मंत्री शिया-मुसलिम थे, जबकि निजाम का परिवार सुन्नी मुसलिम था । वित्त, रेवेन्यु तथा पुलिस विभाग यूरोपीय विशेषज्ञों के अंतर्गत थे ।

निजाम की कारें

सन १९०८-०९ के दौरान मोटर कारें हिंदुस्तान में लोकप्रिय हो चुकी थीं । निजाम के पास लगभग तीस कारों का काफिला था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य ड्राइवर एक अंगरेज था, जो निजाम को खुश करने के लिए कारों को बहुत ज्यादा स्पीड से चलाता था। वह इस बात को नजरअंदाज कर जाता था कि हिंदुस्तानियों को सड़क के बीचोंबीच चलने की आदत है तथा वे सड़क के ऊपर से बहुत सहज से हटते हैं। इसी बीच एक हिंदुस्तानी औरत निजाम की कार के नीचे आकर मर गयी। निजाम को इस बात से बहुत दुःख पहुंचा। उसने औरत के परिवारवालों को मुआवजे के तौर पर एक अच्छी-खासी रकम भिजवा दी।

वहां के मजाक के मुताबिक, इसके बाद निजाम की कार जब भी सड़क पर आती, गरीब लोगों के रिश्तेदार उन्हें सड़क पर ठेल देते।

एक दिन मैंने निजाम के ड्राइवर को साफ तौर पर खबरदार कर दिया, 'तुम निजाम के क्षेत्र में बेशक जितने भी लोगों को कार के नीचे दे दो, लेकिन अगर किसी दिन मेरे क्षेत्र (छावनी-क्षेत्र) में कोई आदमी तुम्हारी कार के नीचे आ गया तो मैं तुम्हें फांसी पर लटका दूंगा।'

इसके बाद निजाम की गाड़ी के तेज रफ्तार से चलने की कोई शिकायत नहीं आयी।

संगीत प्रेमी निजाम

नवम्बर १९०९ के अंत में निजाम मुझे अलविदा कहने आया। तब मुझे अपने घर लौटना था। निजाम के साथ उसका छोटा बच्चा भी था, जिससे उसे बेहद लगाव था। निजाम अपने साथ सितार लेकर भी आया था। उसने खुद सितार बजाकर फारसी की बेहद सुंदर गजलें सुनायीं। दरबार के दूसरे वादक संगीत में उसका साथ दे रहे थे।

निशानेबाजी में प्रवीण एक महाराजा

उन दिनों मध्य भारत में सैर-सपाटे पर निकलना बहुत आरामदेह था। उसकी वजह यह थी कि वहां के राज्य और रजवाड़े आपस में पक्की सड़कों द्वारा जुड़े हुए थे।

मध्य भारत का एक महाराजा, प्रशासक की अपेक्षा साहित्यकार के रूप में अधिक प्रसिद्ध था। उसने अन्य रचनाओं के अतिरिक्त हिंदी में व्यंजन-प्रकाश पर भी पुस्तक लिखी थी। वह इस बात पर गर्व करता था कि वह कुशल चीफ से बढ़कर कुशल शेफ (रसोइया) है।

एक अन्य महाराजा अत्यंत निपुण निशानेबाज था। दरबार की औपचारिकताएं निभाने के पश्चात मैंने उसे अपना कौशल प्रदर्शित करने को कहा। वह हमें महल की छत पर ले गया। उसका एक सेवक हवा में नारियल उछालने लगा। महाराजा छोटे बोर की रायफल से एक के बाद एक नारियलों को फोड़ता चला जाता। इसके बाद आधे दर्जन संतरे हवा में उछाले गये। उनकी भी वही गति हुई, महाराजा ने एक निशाना भी नहीं चूका। यह तो निशाना साधने की शुरुआत थी। अगली बार हवा में रुपये के सिक्के उछाले गये। महाराजा का निशाना हर बार अचूक रहा। अठन्नी के सिक्कों की भी यही गति हुई। स्पष्ट था कि निशानेबाजी में इतना माहिर व्यक्ति कोलिसियम प्रतियोगिता में भी नहीं होगा।

राजा महेंद्र प्रताप

फरवरी १९१५ के दौरान लाहौर के कई अच्छे-खासे अमीर और वफादार परिवारों के पंद्रह विद्यार्थी लापता हो गये। कुछ ही दिनों बाद पेशावर तथा कोहाट से भी कई विद्यार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने घरों से भाग गये । इन लड़कों ने कई तरह से बचते-बचाते अफगानिस्तान में प्रवेश कर लिया और वहां ये मुजाहिदीनों के बहावी गुट से संपर्क स्थापित करने में सफल हो गये । यह गुट 'हिंदुस्तानी जांगजू' के नाम से जाना जाता था तथा पिछले लगभग एक सौ साल से 'नापाक' अंगरेजों को हिंदुस्तान से निकालने के षड्यंत्र में लिप्त था । पंजाब में अंगरेजों के खिलाफ कई छोटे-बड़े विद्रोह इसी गुट के कारण हुए थे । घरों से भागे हुए विद्यार्थी अफगानिस्तान के अमीर के हाथ लग गये । लेकिन बाद में अमीर के भाई सरदार नसरुल्ला के प्रभाव के कारण उन्हें छोड़ दिया गया । वहीं पर वे महेंद्र प्रताप और बरकतुल्ला के संपर्क में आये । ये दोनों क्रांतिकारी सामूहिक रूप से 'भारत की अंतरिम सरकार' के अध्यक्ष बने बैठे थे । इस 'सरकार' को जरमनी की सहायता से काबुल में स्थापित किया गया था, ताकि अग्रिम मोरचे के रूप में इसे प्रयोग करके भारत की अंगरेज हकूमत को परेशान किया जा सके ।

महेंद्र प्रताप यू.पी. का रईस जमींदार था तथा पंजाब के एक वफादार सिख राजघराने से इसके निकट वैवाहिक संबंध भी थे, लेकिन वह हरदयाल के चक्कर में पड़ गया । हरदयाल दूसरों का दिमाग भ्रष्ट करने में माहिर था । उसके माध्यम से वह कैसर से भी मिला । काबुल पहुंचकर महेंद्र प्रताप दावा करता था कि वह कैसर के अलावा पाशा से भी मिल चुका है ।

बाद में इन दोनों 'कुख्यातों' के साथ एक सिख क्रांतिकारी 'डॉ.' मथरा सिंह भी मिल गया, जिसे बाद में हत्या और राजद्रोह के आरोप में फांसी पर चढ़ा दिया गया ।

सावरकर

'सिल्क लैटर' षड्यंत्र

घर से भागनेवाले मुसलमान विद्यार्थियों में से दो छात्र अंगरेज फौज के एक पुराने वफादार फौजी तथा मेरे दोस्त खान के बेटे थे । खान के कहने पर मैंने अफगानिस्तान के अमीर को एक पैगाम इस वायदे के साथ भेजा कि इन दोनों लड़कों के हिंदुस्तान वापस भेजे जाने पर उन्हें माफी दे दी जाएगी । बाद में इन लड़कों ने अपने घरेलू नौकर के हाथ अपने वालिद को एक संदेश भेजा । नौकर के कई दफा काबुल आने-जाने से उस बुजुर्ग फौजी को कुछ शक-सा हुआ । धमकाये जाने पर नौकर ने कबूल कर लिया कि काबुल से वह लड़कों के संदेश के अलावा कुछ और चीज भी लाता रहा है । ये सुप्रसिद्ध 'रेशमी-पत्र' थे, जिनमें होते थे खतरनाक गोपनीय संदेश । इन्हें कोट के अंदरस में रेशम के कपड़े पर साफ-सुथरी फारसी में लिखा जाता था । पत्रों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी.आई.डी. के हवाले कर दिया गया । ये खत मुसलमानों के मशहूर थियोलोजी केंद्र देवबंद के दो मौलवियों ने देवबंद और दिल्ली में लिखे थे । इनमें जिहाद का पैगाम था । अपने मनसूबों को पूरा करने की खातिर ये लोग सन १९१५ में काबुल पहुंचे । रास्ते में ये लोग हिंदुस्तानी अतिवादियों से भी मिलते गये । काबुल पहुंचकर वे तुर्क-जरमन मिशन के लोगों के अतिरिक्त हिंदुस्तान के क्रांतिकारियों महेंद्र प्रताप और बरकतुल्ला से भी मिले ।

उपरोक्त रेशमी-खतों पर ९ जुलाई १९१६ की तारीख लिखी थी । इनमें अन्य बातों के अलावा अंगरेजी हकूमत को भारत से हटाने के लिए सभी मुसलिम ताकतों से एकजुट हो जाने का पैगाम था जिससे 'खुदाई-फौज' बनायी जा सके ।

इससे पहले, क्रांतिकारी महेंद्र प्रताप के दस्तखत का एक पत्र रूसी तुर्किस्तान के गवर्नर जनरल और सोने के पत्रों पर लिखा एक खत रूस के जार को भी लिखा गया था । इन पत्रों में रूस से आग्रह किया गया था कि यह अंगरेजों से अपने गठबंधन तोड़कर अंगरेजी भारत पर हमला बोल दे ।

बर्लिन में स्थित कतिपय राजद्रोहियों की मदद से उर्दू में लिखवाया एक पत्र जरमनी की सरकार के चांसलर के दस्तखत से हिंदुस्तान के सभी राजाओं-रजवाड़ों के नाम भेजा गया था । इस पत्र में राजाओं-रजवाड़ों से आग्रह किया गया था कि वे अपने कंधों से अंगरेजों की गुलामी का जुआ उतार फेंकें ।

प्रथम विश्वयुद्ध से पहले के पंजाब मुसलिम स्वतंत्रता आंदोलन की एक खास बात यह थी कि सिवाय काबुल के अपवाद के, जहां बर्लिन से प्रेरित होकर कुछ हिंदू क्रांतिकारी मुसलमानों का साथ दे रहे थे, ये आंदोलन उसी समय के पंजाब के हिंदू-सिख क्रांतिकारी आंदोलन से पूरी तरह से कटा हुआ था । बाद में जिन सैकड़ों लोगों पर मुकदमे चलाये गये और सजाएं दी गयीं, उनमें से सिवाय इक्का-दुक्का मुसलमानों के, शेष सभी युवक हिंदू अथवा सिख थे । मुसलमानों की क्रांतिकारियों से अलग-थलग होने की बात बंगाल में भी झलकती है जहां आजकल हर जगह आतंकवाद का दौर फैला हुआ है (ईस्वी सन १९१९-१९२५) ।

आजादी का बिगुल

राजद्रोह की घटनाएं सन १९०७ में शुरू हो गयी थीं और सर डेंजिल इब्बेस्टन ने लाजपत राय और अजीत सिंह को पंजाब से बाहर भेज दिया था ।

लाजपत राय और अजीत सिंह के बाहर जाने से राजद्रोह का आंदोलन दब तो गया लेकिन मरा नहीं । रिहा होने के बाद ये लोग कई तरह के राजद्रोही कार्यों में लग गये । भाई परमानंद के माध्यम से लाजपत राय कुख्यात इंडिया-हाऊस के कृष्ण वर्मा से प्रोपेगेंडा-लिट्रेचर और धन मंगवाकर विद्यार्थियों में बांटता था । परमानंद को सन १९१० में पकड़ लिया गया और सन १९१५ में उसे लाहौर के गदर-विद्रोह में शरीक होने के कारण फांसी की सजा सुनायी गयी । बाद में वायसराय ने सजा घटाकर उम्रकैद में बदल दी, लेकिन अब उसे रिहा कर दिया गया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सविनय-अवज्ञा आंदोलन

इसी बीच क्रांतिकारी आंदोलन की स्टेज पर एक खतरनाक चरित्र आ खड़ा हुआ । यह दिल्ली का निवासी तथा सेंट स्टीफेन कॉलेज का विद्यार्थी हरदयाल था । शैक्षिक रूप से वह अत्यंत प्रतिभाशाली था तथा दिल्ली और लाहौर से पढ़ाई पूरी करने के बाद वह सरकारी स्कॉलरशिप पर सेंट जांस ऑक्सफोर्ड चला गया । इसने सन १९०७ में अपनी स्कॉलरशिप को लात मार दी और इसके बाद इसने अपनी पूरी काबिलियत को क्रांतिकारी कामों के लिए समर्पित कर दिया । सन १९०८ में वह वापस लाहौर आया और लाजपत राय के पास आकर ठहरा । लाजपत राय के पास कई और नवयुवक भी ठहरे हुए थे, जिन्हें वह सविनय-अवज्ञा आंदोलन और 'बायकाट' की शिक्षा दे रहा था । इस मामले में लाजपत राय, गांधी से दस साल आगे था ।

हरदयाल सन १९११ के शुरू में अमरीका पहुंचा और बर्कली, केलिफोर्निया में रहने लगा । वहां के प्रवासी भारतीय जो सन १९०७ के दौरान पेंसिफिक कोस्ट के साथ-साथ वेन्कुवर से सान फ्रांसिस्को तक बसे हुए थे, पहले से ही सरकार द्रोही कामों में लगे थे । हरदयाल ने इन सभी हिंदुस्तानियों को हिंदुस्तान में 'अंगरेजी वैम्पायर' को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया । कुख्यात 'गदर अखबार' जो खुलेआम हत्या और विद्रोह के लिए प्रवासी भारतीयों को उकसाता था, हरदयाल ने ही सन १९१३ में शुरू किया था । उसके सहयोगियों में रामचंद्र, पेशावरी और बरकतुल्ला प्रमुख थे । गदर अखबार का अनुवाद हिंदुस्तान की विभिन्न भाषाओं में किया जाता था और इसे अमरीका से चोरी-छिपे हिंदुस्तान में भेज दिया जाता था ।

हिंदू, मुसलिम और सिखों की एकजुटता

हरदयाल विद्रोह की सभी गैर-कानूनी शाखाओं से पूरी तरह से जुड़ा हुआ था —लाहौर, दिल्ली, कलकत्ता में पंजाबी और बंगाली क्रांतिकारियों के माध्यम से; कैनेडा और अमरीका में गदर एजेंसी से; सुदूर पूर्व में बरकतुल्ला से, काबुल में महेंद्र प्रताप और बरकतुल्ला से । उपरोक्त सारी विद्रोही क्रांतिकारी ताकतों से हिंदू, मुसलिम और सिख ये तीनों पूरी तरह से जुड़े हुए थे ।

करेले से बनाया गया इंसुलिन

प्रो. पुष्पा खन्ना के अनुसार—मधुमेह के रोगियों को इंजेक्शनों द्वारा दिये जानेवाला 'इंसुलिन' अब शीघ्र ही बाजार में गोलियों के रूप में, खाये जाने के लिए उपलब्ध होगा । प्रोफेसर खन्ना ने करेले से पहली बार 'इंसुलिन' जैसा पदार्थ प्राप्त किया है । यह 'पॉलिपेप्टाईट' कहलाता है और इसमें 'मेथियोनाइन' समेत सत्रह ऐमिनो एसिड होते हैं । यह रक्त में शर्करा के स्तर को काफी कम कर देता है और इसका प्रभाव देर तक चलनेवाला रहता है ।

—ऋषि मोहन श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

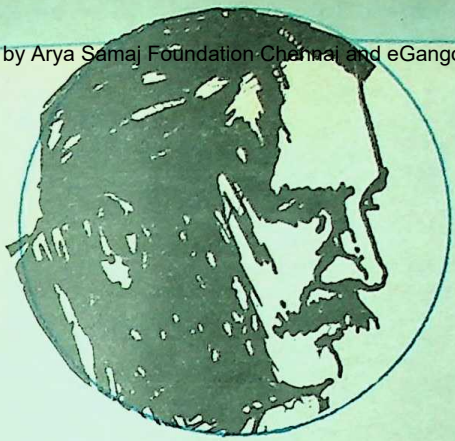

इकबाल ने कहा था—

पाकिस्तान मुसलमानों के लिए भी घातक होगा

'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा'— जैसी नज़्म लिखनेवाले महान शायर सर मोहम्मद इकबाल बाद में मुसलमानों के लिए एक पृथक, स्वतंत्र देश की कल्पना भी करने लगे थे। सर मोहम्मद इकबाल के एक मित्र एडवर्ड थाम्सन ने अपनी एक पुस्तक 'एनलिस इंडिया फॉर फ्रीडम' में पाकिस्तान के संबंध में इकबाल की एक और धारणा का रहस्योद्घाटन किया है। एडवर्ड थाम्सन ने लिखा है—

"इकबाल मेरा दोस्त था। उसने इस विषय में (यानी पाकिस्तान के बारे में) मेरा संशय दूर कर दिया। अपने विशाल देश पर अराजकता के घने बादलों को देखते हुए तथा भूखे-नंगे लोगों के लिए कुछ भी न कर पाने की अक्षमता पर काफी कुछ बोलने के बाद इकबाल ने कहा, 'मेरे विचार में पाकिस्तान का सिद्धांत अंगरेज सरकार के लिए घातक सिद्ध होगा। यह हिंदू जाति के लिए भी घातक होगा और मुसलमानों के लिए भी घातक होगा। लेकिन मेरा यह कर्त्तव्य है कि मैं इसका समर्थन करूं, क्योंकि मैं मुसलिम लीग का अध्यक्ष हूं।" ('हाउस दैट जिन्ना बिल्ट से')

प्रस्तुति : नवीन खन्ना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

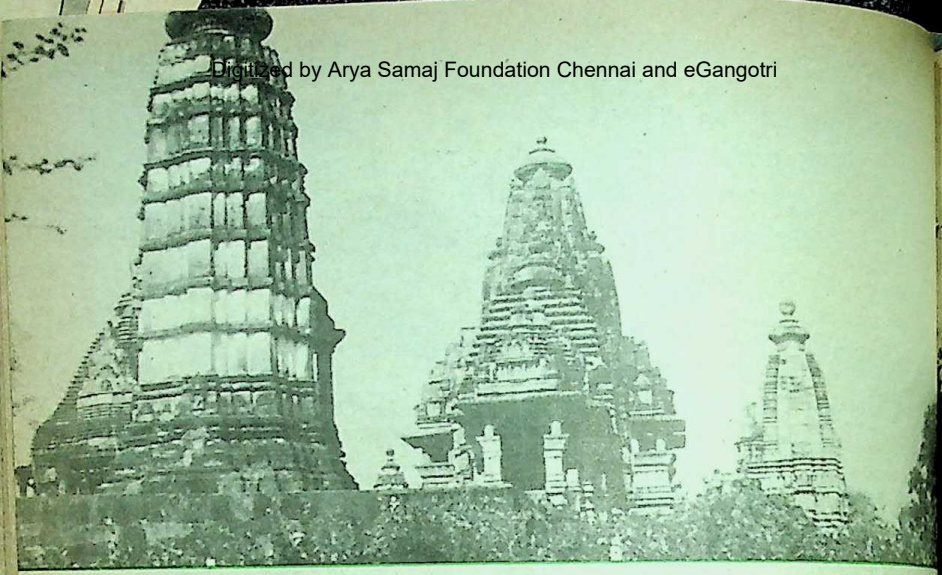

'काम' की नगरी ही नहीं है खजुराहो

● कमलेश भट्ट 'कमल'

खजुराहो का नाम आते ही काम-क्रीड़ारत मिथुन मूर्तियां बरबस ही आंखों के सामने उभर आती हैं । ऐसा हो भी क्यों न ? खजुराहो के नाम पर जितना भी अधुनातन साहित्य उपलब्ध है, उसमें इन मिथुन मूर्तियों को इतनी प्रमुखता से स्थान दिया गया है कि खजुराहो का ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व नितांत गौण होकर रह गया है । और उसका रूप 'काम' की नगरी बनकर रह गया है ।

कदाचित खजुराहो की मिथुन-मूलकता के बहुव्यापी प्रचार-प्रसार का ही प्रभाव है कि वहां सैकड़ों की संख्या में विदेशी पर्यटक घूमते-टहलते और मिथुन-मूर्तियों को देखते हुए दिखायी देते हैं । खजुराहो के पांच-सितारा होटलों में ज्यादातर ऐसे ही पर्यटक ठहरे हुए मिलते हैं, जो भारत जैसे शील संस्कारवाले धर्मभीरू देश में काम-क्रीड़ा के खुले प्रदर्शन की इस अविश्वसनीय ऐतिहासिकता को अपनी आंखों से देखने की ललक में यहां आये हुए होते हैं ।

मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

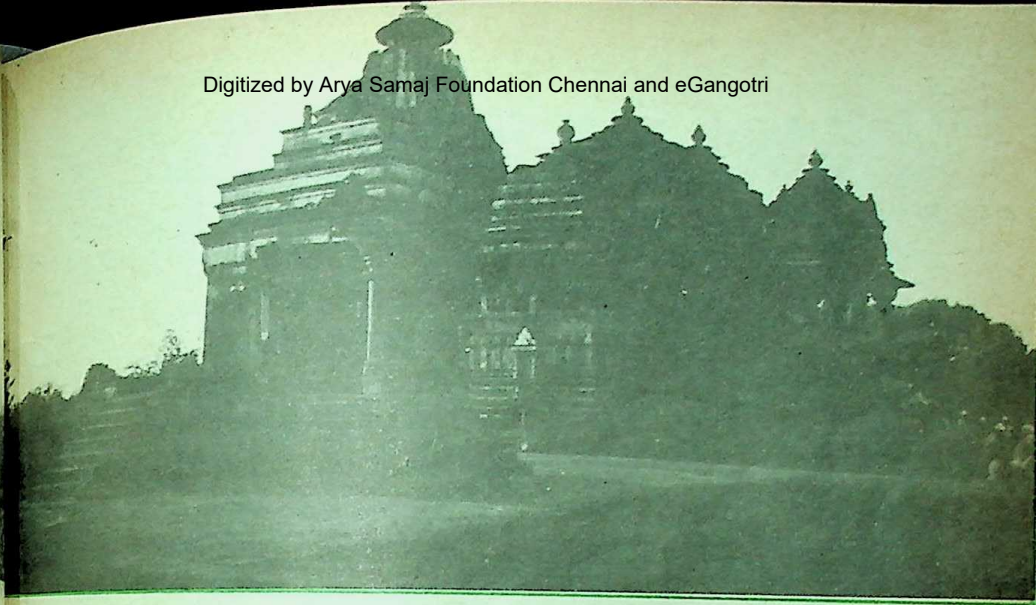

खजुराहो के मंदिरों को देखने आनेवाले दर्शक मंदिरों के गर्भगृह से ज्यादा रुचि बाहर की दीवारों पर अंकित शिल्पों के निरीक्षण-परीक्षण में लेते हैं । इसका कारण खजुराहो की बहुप्रचारित कामुक छवि है ।

खजुराहो वस्तुतः दसवीं व ग्यारहवीं शताब्दी के मध्ययुगीन चंदेल राजपूत राजाओं द्वारा बनवाये गये पिच्चयासी मंदिरों का एक समूह है । इनमें से अब समय की लगभग एक हजार वर्षों की यात्रा के बाद केवल बाइस मंदिर ही बचे हैं, जिनमें से कुछ जर्जर-सी अवस्था में हैं ।

पिछली शती के प्रारंभ में इस मंदिर-समूह को जंगलों के बीच से खोजने और उन्हें प्रकाश में लाने का श्रेय अंगरेज सरकार को जाता है । सर्वप्रथम सन १८१८ में फ्रेंकलिन नाम के एक अंगरेज खोजी ने और फिर सन १८३८ में पी. सी. बर्ट नामक एक अंगरेज इंजीनियर ने खजुराहो को देखने के बाद इन मंदिरों की ऐतिहासिकता की चर्चा की । बाद में सन १८५२ से १८८५ के मध्य यहां का पुरातात्विक व ऐतिहासिक सर्वेक्षण पुरातत्वविद कनिंघम द्वारा किया गया । सन १९०४ में पुरातत्व विभाग ने इस स्थान को अधिगृहीत कर लिया

आज खजुराहो में बाइस मंदिर ही बच रहे हैं, जिन्हें तीन समूहों में विभक्त किया गया है— पश्चिमी समूह के मंदिर, पूर्वी समूह के मंदिर और दक्षिणी समूह के मंदिर । इन मंदिर-समूहों में सबसे प्रमुख पश्चिमी समूह के मंदिर हैं । इस मंदिर समूह में ही चौंसठ योगिनी मंदिर भी शामिल है, जो सबसे प्राचीन मंदिर है । इस समूह के अन्य मंदिरों में लक्ष्मण मंदिर (विष्णु), वराह मंदिर (विष्णु), मतंगेश्वर मंदिर (शिव), विश्वनाथ मंदिर (शिव), चित्र गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर (सूर्य), देवी जगदंबा मंदिर (पार्वती) तथा कंदरिया महादेव मंदिर (महादेव) प्रमुख हैं।

पूर्वी समूह के मंदिरों में चार जैन मंदिर तथा तीन हिंदू मंदिर हैं। हिंदू मंदिरों में ब्रह्मा मंदिर (चतुर्मुखी महादेव), वामन मंदिर (विष्णु), जवारी मंदिर (विष्णु) हैं।

दक्षिणी समूह में मुख्यतः दो मंदिर हैं— दूल्हादेव मंदिर (शिव) व चतुर्भुज मंदिर (शिव)।

खजुराहो जाने पर यह देखकर सहज ही विश्वास नहीं होता कि भारत-जैसे देश में जहां पत्थरों के तमाम टुकड़ों को भी देवता बनाकर जगह-जगह श्रद्धा भाव से पूजा जाता है, वहां खजुराहो के इन मंदिरों में स्थापित देवी-देवताओं की भव्य प्रतिमाओं की पूजा प्रायः नहीं होती है। केवल मतंगेश्वर मंदिर में स्थित शिवलिंग की ही पूजा होती है, शेष मंदिरों में श्रद्धा-भाव से जाने-अनजाने झुके पर्यटकों के मस्तकों तथा उनकी बंद आंखों से की गयी क्षणिक अर्चना-पूजा को ही यदि पूजा की संज्ञा दी जा सके, तो बस यही इतनी पूजा हो पाती है इनमें स्थित देवताओं की।

नियमित पूजा-पाठवाले मतंगेश्वर मंदिर का शिवलिंग निश्चित रूप से एक दुर्लभ शिवलिंग है। ७.२ मीटर व्यास के आधार पर स्थित यह शिवलिंग २.५ मीटर ऊंचा तथा १.१ मीटर व्यासवाला है। इस विशालकाय और भव्य शिवलिंग की पूजा-अर्चना करनेवाले पुजारी की दृष्टि देशी पर्यटकों पर कम, विदेशी पर्यटकों पर अधिक रहती है।

खजुराहो के मंदिरों को देखने आनेवाले दर्शक मंदिरों के गर्भगृह से ज्यादा रुचि बाहर की दीवारों पर अंकित शिल्पों के निरीक्षण-परीक्षण में लेते हैं। इसका कारण खजुराहो की बहुप्रचारित कामुक छवि है, ऐसा नहीं है कि मिथुन-मूर्तियों का चित्रण यहां नहीं है, लेकिन आपको जानकर आश्चर्य होगा कि दीवारों पर अंकित यह चित्रण अन्य शिल्पों की तुलना में पांच से दस प्रतिशत ही है और यह भी प्रायः २० से २५ फुट की ऊंचाई पर हैं ऊंचे यदि आप ज्यादा सतर्क और खोजी नहीं हैं, तो कोई जरूरी नहीं कि ये मिथुन-मूर्ति-शिल्प आपको दिखायी ही दे जाएंगे।

खजुराहो के मिथुन मूर्ति शिल्पों के बारे में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि इनमें से कई-कई इतने अनगढ़ और अनानुपातिक भी हैं। पर्यटक दीवारों पर मिथुन-मूर्तियां इसलिए नहीं तलाशता कि उनसे उसे उत्तेजना प्राप्त

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

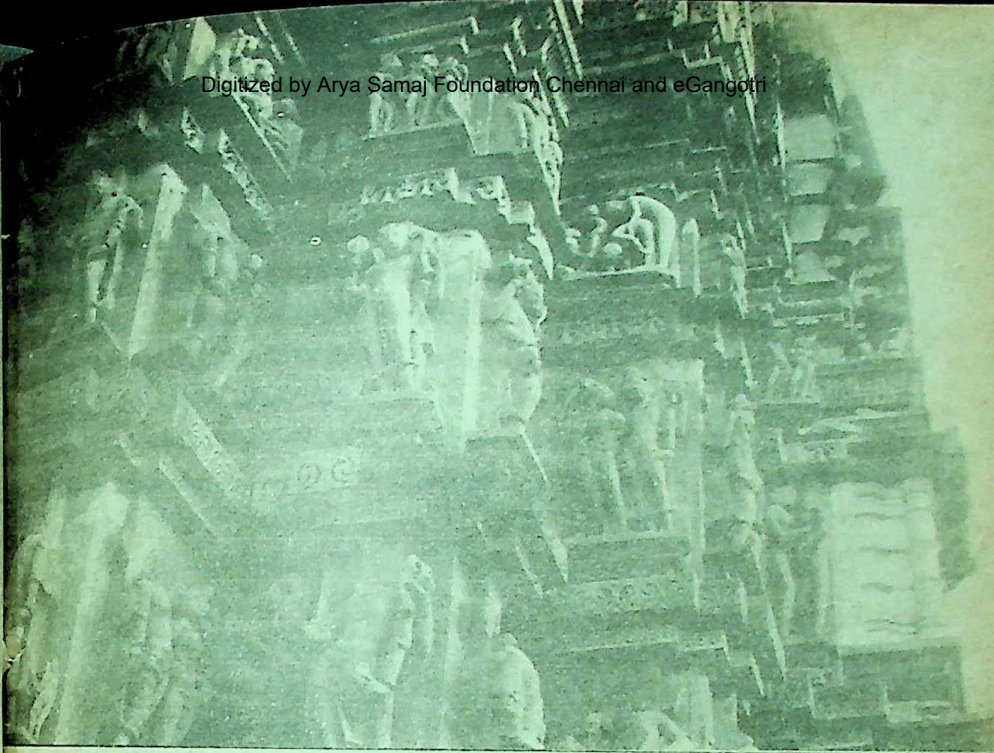

होगी, बल्कि वह खजुराहो के बारे में फैलाये गये दुष्प्रचार की वास्तविकता जानना चाहता है। यकीन मानिए कि लगभग दो फुट चौड़ाई व ढाई-तीन से ५-६ फुट लंबाई वाले बलुए पत्थरों से निर्मित इन मूर्ति-शिल्पों को देखकर उनकी सुनी-सुनायी छवि के बारे में मोह भंग होते देर नहीं लगती है। विदेशी पर्यटक अपने संवेदनशील कैमरों में इन्हीं मूर्ति शिल्पों की छवियां कैद करके अपने देश ले जाते हैं और उसे तरह-तरह से व्याख्यायित परिभाषित करते हैं।

हम भी खजुराहो की कौन-सी नयी छवि उभार पा रहे हैं ? सिर्फ़ यहां की कामुक छवि को ही पर्यटन की दूकान पर बेचकर विदेशी मुद्रा का अर्जनभर कर रहे हैं— हमें इस बात की चिंता नहीं है कि खजुराहो को जानेवाली सड़कों की क्या दुर्दशा है ? रास्तेभर खजुराहो के आकर्षण का बखान करनेवाले साइन बोर्ड शायद ही आपको कहीं दिखायी दें ! और तो और मुख्य मार्गों से मुड़ते हुए भी खजुराहो के लिए संकेत तक नहीं लगे हैं। एक सौ चालीस साल लंबे भारतीय रेलवे के इतिहास में खजुराहो को रेलवे से जोड़ने का प्रयास ही नहीं किया गया। अलबत्ता विदेशी पर्यटकों के लिए हवाई अड्डा जरूर बना हुआ है। कई बार तो ऐसा भी लगता है कि जैसे खजुराहो के लिए देशी पर्यटकों की चिंता ही नहीं की जा रही है, बल्कि खजुराहो का पूरा विकास, पूरा प्रचार-प्रसार सिर्फ विदेशी पर्यटकों को ध्यान में रखकर किया गया है।

— ७/७०, तिलक नगर
कानपुर-२०८००२ (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंगितेन : गणपति

शायद यह तथ्य बहुत कम लोगों को ज्ञात हो कि विश्व की प्राचीनतम अमरज्योति जापान में विद्यमान है । यह जापान के एक प्रसिद्ध बौद्ध-विहार में गत लगभग एक हजार वर्षों से अनवरत दीप्तिमान है ।

जापान की राजधानी से दूर सुरम्य स्थल कोयासन में स्थित भव्य बौद्ध-विहार की धर्म-संसद ने सन १०२३ में राजा और प्रजा की एकात्मकता के प्रतीक-स्वरूप दो दीपों की अमर ज्योति को प्रज्वलित करने का निर्णय लिया । धर्म-संसद के इस निर्णय को सादर शिरोधार्य करते हुए तत्कालीन जापान सम्राट शिराक़ावा ने श्रद्धापूर्वक एक दीप को जलाया । दूसरा दीपक जलाने के लिए एक सदाचारिणी महिला का चयन किया गया । परंतु वह महिला इतनी निर्धन थी कि उसके पास एक दीया खरीदनेभर को भी पैसे नहीं थे । और कोई चारा न देख उस महिला ने अपने सिर के लंबे और सुंदर केशों का सौदा किया । इस प्रकार किंचन और अकिंचन के एकात्म्य के चिरस्थायी चिह्न के रूप में उक्त मठ के दीप-कक्ष में अमर ज्योति जली । इस अमर ज्योति का पुण्य दर्शन करने आनेवाले असंख्य तीर्थयात्री दीप-कक्ष (तोरोदो) में अपने प्रियजनों की स्मृति में दीप जलाते हैं ।

भारतीय आध्यात्मिक गुरु

कोसायन बौद्ध-विहार का निर्माण राजाज्ञा से महान बौद्ध संत और मनीषी कोबो दाइशी द्वारा बौद्ध धर्म-दर्शन के अध्ययन-अध्यापन एवं प्रचार-प्रसार के लिए सन ८०५ में कराया गया । निर्माण कार्य को पूरा करने के लिए तत्कालीन जापान नरेश और आम जनता ने दिल खोलकर धन दिया । इस तीर्थ-दीप रूपी भव्य विहार के गर्भ-गृह में संत दाइशी चिर

आखिर महिला ने अप

कोबो दाइशी : एक महान बौद्ध संत जिन्होंने कश्मीर के विद्वान संत प्रज्ञा से हिंदू एवं बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त की । कोबो दाइशी ने ही जापान में ज्ञान के प्रचार-प्रसार को सर्व जन सुलभ बनाया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाधिस्थ हैं । उनकी समाधि के इर्द-गिर्द हजारों प्रस्तर स्मृति स्तूप (गोरितो) सुशोभित हैं । प्रत्येक स्तूप (तो) पंच (गो) तत्वों (रिन्) के प्रतीक हैं । इसके पांच अंग पांच तत्वों के स्वरूप हैं : घनाकार (पृथ्वी), गोलाकार (आप अथवा जल), सूची स्तंभाकार (तेज अथवा अग्नि), अर्द्धचंद्राकार (वायु) तथा पिंडाकार (आकाश) । स्पष्टतया इन स्तूपों में हिंदू-दर्शन की अमिट छाप है ।

संत प्रज्ञा की चीन यात्रा

हिंदू-दर्शन की सनातनी छाप यहां अकारण नहीं है । वास्तव में मठ-निर्माता संत दाइशी ने एक भारतीय संन्यासी से बौद्ध और हिंदू-धर्म दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया था । कश्मीर निवासी संत प्रज्ञा नौवीं शताब्दी के प्रारंभ में धर्म-प्रचारार्थ चीन गये थे । तब चीन में तांग राजवंश का स्वर्णिम-युग चल रहा था । राजधानी में प्रशासन और वाणिज्य की चहल-पहल के साथ शिक्षा और धर्माध्ययन की भी व्यापक व्यवस्था थी । देश-विदेश के उद्भट विद्वान और धर्माचार्य चांग-ऐन में हर समय मौजूद रहते थे । अपने अगाध ज्ञान और उत्कृष्ट धर्माचरण के कारण संत प्रज्ञा को चांग-ऐन नगर में विशिष्ट स्थान प्राप्त था । उन्होंने अपने निर्देश में अनेक प्राचीन संस्कृत ग्रंथों को चीनी भाषा में अनूदित कराया । उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी ।

कोन्तेन : ब्रह्मा

इन्हीं दिनों जापानी बौद्ध श्रमण कोबो दाइशी संत प्रज्ञा से हिंदू और बौद्ध धर्म का विशद ज्ञान, विशेषकर बौद्ध-मंत्रायण दर्शन का ज्ञान प्राप्त करने समुद्र पार कर चांग-ऐन पहुंचे और सन ८०५ में संत प्रज्ञा से दीक्षा ली । उन्होंने अत्यंत श्रद्धा-विश्वास और लगन से बौद्ध-मंत्रायण दर्शन (शिंगोन) का ज्ञान प्राप्त किया । धर्म-ज्ञान के साथ-साथ संत प्रज्ञा ने जापानी श्रमण को उस समय की नागरी लिपि की भी जानकारी दी । उस वर्णमाला को जापानी परंपरा में 'शित्तन' संज्ञा से जाना जाता है । 'शित्तन' संस्कृत शब्द 'शिद्धम्' का अपभ्रंश रूप ही है ।

सुलभ शिक्षा

भारतीय गुरु से दीक्षा और ज्ञान प्राप्त कर

केश क्यों बेचे ?

● अमरनाथ राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रमण दाइशी स्वदेश लौटे । उन्होंने वहां न केवल धर्म-प्रचार का ही पुनीत कार्य किया, अपितु शिक्षा के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान किया । तब तक जापान में शिक्षा कुलीन परिवारों तक ही सीमित थी । सर्वप्रथम संत दाइशी ने शिक्षा को बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय सर्वसाधारण जन तक पहुंचाया । उन्होंने कला और ज्ञान के संस्थानों के द्वार सबके लिए खोले । इन संस्थानों (शुंगेई-शचिन-इन) में दी जानेवाली शिक्षा को धर्म-निरपेक्ष बनाया गया । श्रवण दाइशी ने अक्षर-ज्ञान को सर्व-सुलभ बनाने के लिए पचास ध्वन्यार्थक वर्णमाला (गोजु-वोन) का विकास किया । यह वर्णमाला संस्कृत वर्णमाला पर आधारित थी । उन्होंने उन पचास वर्णों को एक आसान पद में शामिल किया । इस पद में प्रत्येक वर्ण एक-एक बार शामिल था । यह पद इतना सरल था कि कोई भी व्यक्ति उसे सहज कंठस्थ कर सकता था, जिससे वह वर्णमाला का ज्ञान कभी भूल नहीं सकता था । 'इरोही' नामक यह पद संस्कृत के महापरिनिर्वाण-सूत्र पर आधारित था । 'इरोही' पद ने जापान में शिक्षा-प्रसार में क्रांतिकारी योगदान दिया ।

हिंदू देवी-देवता

धर्म-प्रचार और शिक्षा-प्रसार में लासानी भूमिका के कारण श्रमण दाइशी, जिनका पूर्व नाम कुकई था, पूरे जापान में विख्यात हो गये । आश्चर्य नहीं कि तत्कालीन जापान नरेश ने बौद्ध के ज्ञान-केंद्र के रूप में कोसायन बौद्ध-विहार के निर्माण और संचालन की उन्हें जिम्मेदारी सौंपी थी । इस विहार के निर्माण के बाद उन्हें सन ८२३ में राजधानी स्थित क्यू-गोकोकु-जी मठ के भी नियंत्रण और संचालन का उत्तरदायित्व सौंपा गया । क्यू-गोकोकु-जी का अर्थ 'सुधर्म-रक्षित राष्ट्र मंदिर' है । श्रमण दाइशी ने शीघ्र ही इसे बौद्ध-दर्शन व ज्ञान के एक श्रेष्ठ केंद्र के रूप में विकसित किया । इस मठ के सभागार में मंडलाकार रूप में रखी गयीं इक्कीस मूर्तियां इस बात की साक्ष्य हैं कि नौवीं दशाब्दी में राष्ट्र-कल्याण के लिए जापान में एक भव्य महोत्सव आयोजित किया गया था । इन इक्कीस मूर्तियों में ब्रह्मा, कार्तिकेय, सरस्वती आदि हिंदू देवी-देवताओं की प्रतिमाएं भी शामिल हैं । इस मठ में पुरातनतम ग्योडो मुखौटे भी रखे गये हैं जिनका उपयोग आनुष्ठानिक नृत्यों में किया जाता है । इनमें ब्रह्मा, इंद्र, सूर्य, कुबेर, अग्नि, वसु और ईश्वर आदि के मुखौटे भी शामिल हैं । इन प्रतिमाओं और मुखावरणों से स्पष्ट पता चलता है कि भारत और जापान के सांस्कृतिक संबंध ऐतिहासिक एवं प्राचीन हैं ।

गणेश, ब्रह्मा, इंद्र, लोकपाल, सूर्य, चंद्र, सरस्वती तथा श्रीलक्ष्मी प्रभृति हिंदू देवी-देवताओं की प्रतिमाएं तोदाई-जी बौद्ध-मठ में भी प्रतिस्थापित हैं । इस मठ को ९ अप्रैल ७५२ को हिंदू संन्यासी बोधिसेन द्वारा विधिवत अभिषिक्त किया गया था । भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण बोधिसेन को ऐतिहासिक प्रमाणानुसार प्रथम भारतीय धर्माचार्य के रूप में जापान जाने का श्रेय प्राप्त है । वे जापान सम्राट के निमंत्रण पर सन ७३६ में चीन से जापान गये ।

—८४६, बाबा खड़क सिंह मार्ग
नयी दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी साहित्य महोत्सव

ग्वालियर में आयोजित कहानी-प्रतियोगिता में पुरस्कृत कहानियां

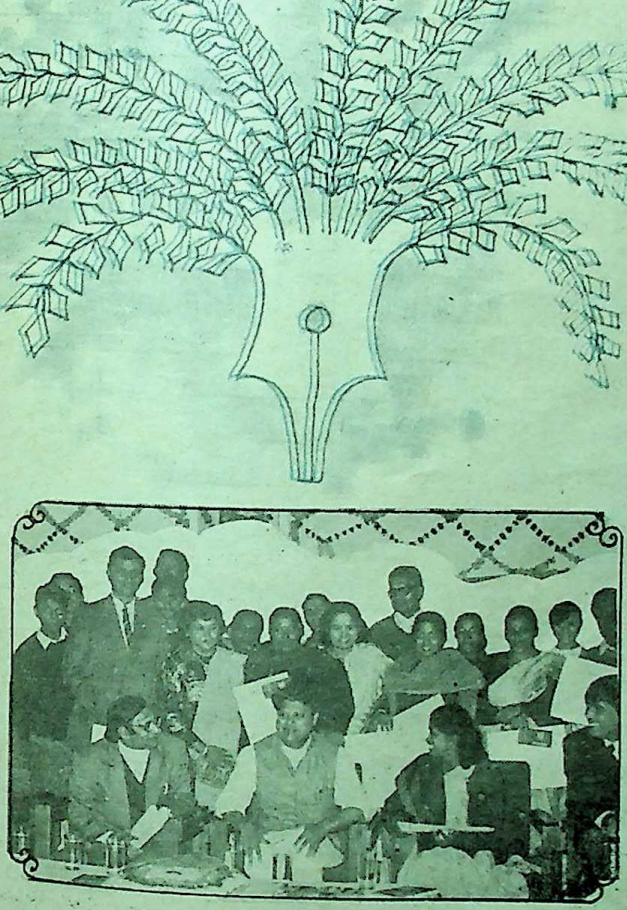

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरीचिका

● कुंदा जोगलेकर

क्षितिज के उस पार डूबता लालबुंद सूरज... अनंत तक समुद्र की लहरें... कहीं कोई ओर-छोर नहीं... दूर पर आकाश और धरती को मिलाती रेखा सूरज की लालिमा में डूब गयी थी । समुद्र के किनारे खड़े होकर इस मनमोहक दृश्य को देखना भी कितना सुखद अनुभव है, मैंने सोचा था...

बहुत सुकून मिलता है, मुझे यहां आकर... लेकिन पास की दूसरी चट्टान पर बैठी सुभी के मन में तूफान था... समुद्र से भी भयंकर चक्रवात... समुद्र की गहराइयों में खोती-सी वह अंजुली में रेत भरकर अंजुली ऊपर उठाती... कुछ देर सोचती तब तक पूरी अंजुली खाली हो जाती...

उसकी देखा-देखी मैं भी अंजुली में रेत भर चट्टानें लांघती उसके पास जाकर बैठ गयी थी... ''कितना जोश होता है ना, लहरों में,... देखा, कितनी जल्दी फिसल गयी बालू तुम्हारे हाथ से... चहककर कहा था मैंने...''

''हां मीनू... ठंडी सांस भरी थी सुभी ने...'' बालू ही क्यों यहां तो सारी जिंदगी फिसल गयी देखते-देखते... कहीं कुछ भी तो नहीं बचा मेरे हाथों में... सब कुछ खाली और वीरान-सा हो गया है...

कहीं अंदर तक कचोट गया था सुभी का वाक्य... ''छोड़ो सुभी... बहुत सोचती हो तुम, आनंद-जैसा बेटा देकर ईश्वर ने सब कुछ तो दे दिया तुम्हें... सच, बहुत खुशी होती है जब लोग तुम्हारी प्रशंसा करते हैं... तुम आदर्श हो, नारी जाति के लिए...

''बस करो मीनू...'' कहते हुए, मेरा हाथ अपने कंधे से हटा दिया था... ''कम से कम तुम ये सब मत कहो... मजबूरियों को त्याग का नाम देकर या प्रशंसाओं के खोखले तने के सहारे जिंदगी को जिया नहीं जाता... सुभी के अंतर्द्वंद्व से वाकिफ थी मैं... समझती भी तो क्या जिंदगी के विध्वंसक मोड़ पर तिल-तिल जलते देखा था, मैंने उसे । उसके बाद संभलते हुए और हिम्मत के साथ जीते हुए भी... आसान नहीं होता... कुंवारी मां होने का कलंक लेकर समाज के बीच जी लेना, समाज के गिद्ध नोचकर खा जाते हैं अकेली औरत को ।

सुभी बचपन की सहेली थी मेरी... स्कूल-कॉलेज की हर प्रतियोगिता में विजयश्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हासिल करनेवाली सुभी अपनी जिंदगी में बुरी तरह हारी थी... भाग्य की विडंबनाओं से छली जाकर चारों ओर से कट-सी गयी थी ।...

अगले माह उसके बेटे आनंद की शादी थी... वह मेरे पास बंबई में खरीदारी करने आयी थी ।

सभी दूर थे, एक जोरदार लहर आयी और दोनों को ठंडी सिहरन से सराबोर करती गुजर गयी... । चौक पर खड़ी हो गयी थी मैं । "चलो सुआ, बहुत देर हो गयी" वह हाथ थाम उठ खड़ी हुई, रास्तेभर चुप्पी-सी बनी रही । रात सुआ ने बताया था, "आनंद की शादी तय होने के बाद दो बार खत भेजा था मैंने तपन को लेकिन कोई जवाब नहीं आया मीनू... मैंने तपन की जिंदगी में कभी कोई शिरकत नहीं की । कभी कुछ नहीं चाहा उससे... अब आनंद की शादी में तो आना चाहिए न उसे... मेरा मन कहता है वह जरूर आएगा..." बौखलाकर उठ गयी थी... ।

"समझ में नहीं आता, किस मिट्टी की बनी हो तुम, जिस कायर ने तुम्हारी जिंदगी को त्रिशंकु बनाकर भटकने के लिए छोड़ दिया...

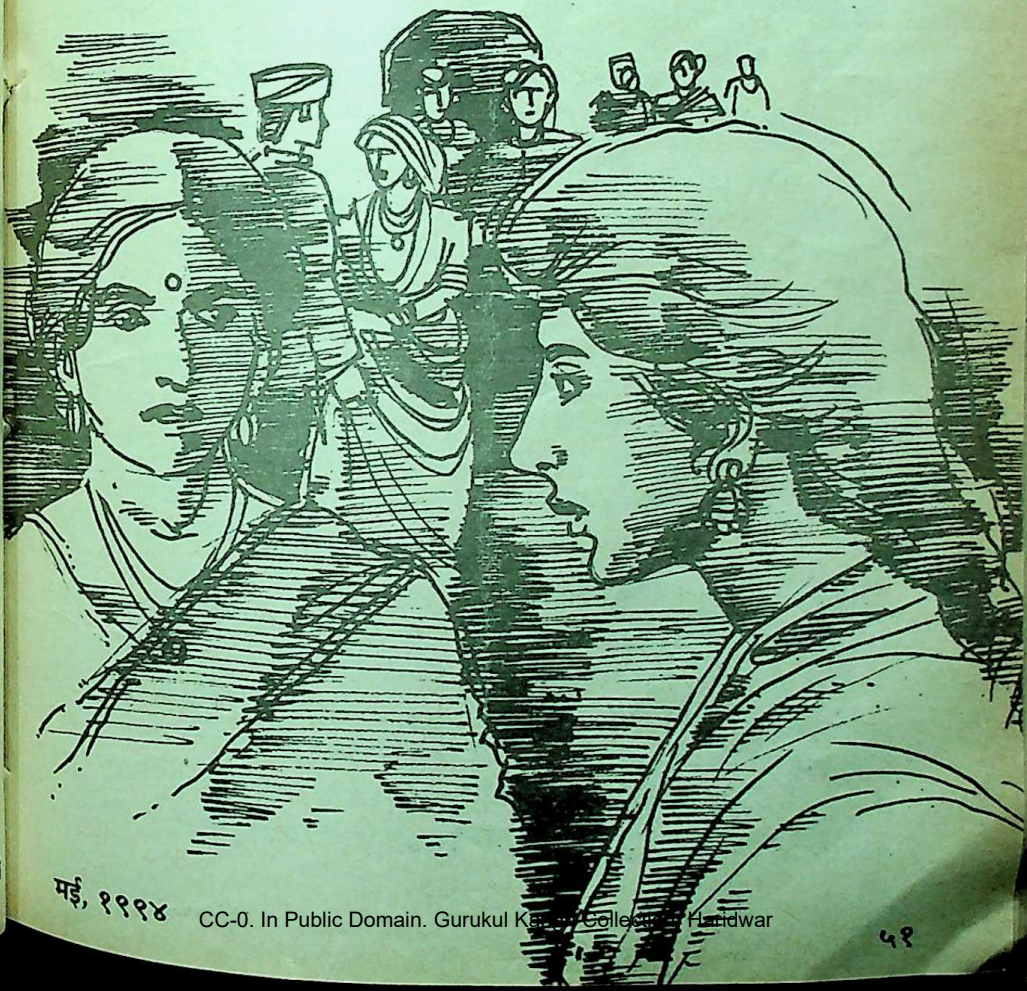

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यार-जैसी पवित्र चीज का अपमान किया... कुंवारी मां का अभिशाप तुम्हारे माथे पर चिपकाकर अपमान और लांछना की देहलीज पर तो ले जाकर पटक दिया... उससे न्याय की उम्मीद करती हो तुम,... तरस आता है, मुझे तुम पर... ''

''अब भी होश में आओ सुभा... इस घुटी हुई सोच की मरीचिका से बाहर निकलो... तपन-जैसे व्यक्ति की तुम्हारी जिंदगी में कोई जगह नहीं है... सच्चाई को समझो... जो अब तक नहीं आया, वो कभी नहीं आएगा... देखो तुम्हारी सच्चाई और ईमानदारी ने अपनी जगह बना ली है समाज के बीच... यही तुम्हारी जीत है...''

एक सांस में बोलते-बोलते मैं हांफ गयी थी... लेकिन सुभा के चेहरे पर शिकन नहीं थी। वह निर्विकार रूप से मेरा चेहरा ताकती रही...

''तुम नहीं जानती मीनू... कभी मेरी तरह सोचकर देखो...बाइस साल में भी तपन के घर कोई बच्चा नहीं हुआ... उसे जरूर लगता होगा आनंद के लिए...

''ओफ्फोह... फिर वही ढाक के तीन पात... मुझे नहीं सोचना तुम्हारी तरह...'' और मैंने करवट ले ली...

दो-तीन दिन रहकर सुभी चली गयी... मैं सुभी के आस-पास ख्यालों में घूमती रही... घर परिवार से भी दूर हो गयी थी फिर भी हिम्मत से जीती रही... बाद में सब कुछ ठीक हो गया था... उसके अतीत की गवाह थी मैं...

कुछ दिन बाद मैं भी चल दी थी, शादी में सम्मिलित होने.... सफर लंबा था... जाने की हड़बड़ी में छूट गयी सुभी की डायरी निकाल ली थी पढ़ने के लिए... बहुत कुछ पल सहेज रखे थे उसने... मैं पढ़ने लगी थी... एक पेज पर लिखा था...

''मेरे जीवन में विश्वास की एक ही चट्टान थी... तुम...लेकिन कितने खोखले थे वे... पल जो इस अहसास को लेकर गुजरे, तुम्हारा विश्वास तो क्या वरन आत्मविश्वास के जिस कगार पर मैं खड़ी हूं उसमें भी इतनी दरारें पड़ गयी हैं... कब ढह जाए पता नहीं।''

अगले पेज पर था... ''मैंने तुम्हें पहचाना है... जिंदगी को... और अपने आप को भी... दावे के साथ कह सकती हूं कि जिंदगी में स्नेह-प्रेम... विश्वास... उनका स्वार्थ के आगे कोई स्थान नहीं होता... हां तुम्हारे जैसे लोग स्वार्थ को कर्त्तव्य का नाम देकर महानता का नकाब ओढ़ लेते हैं... ये तुम्हारी नहीं शायद पुरुष जाति की नियति है कि वह शब्द जाल से छल करता रहा है...''

अंतिम पृष्ठ— ''तुम्हारे स्वार्थ की चुभन से छलनी हुई भावनाओं के दर्द को भोगा है मैंने.... काश... आदर्शवादिता के इस ढोंग से सच्चाई का एक कतरा भी आत्मसात कर सकते तो...

वाक्य अधूरा था... मैंने डायरी बंद कर दी... कितनी कड़वाहट लिए थे सुभी के मोती-जैसे अक्षर भी...

छिः कितना विद्रूप... कितना वीभत्स और घिनौना है पुरुष का ये रूप... प्रकृति ने जैसे वरदान दिया है, उसे छली होने का सामर्थ्य देकर...

मन कसैला-सा हो गया था... गाड़ी धीरे-धीरे गंतव्य तक पहुंच गयी थी... सुभी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिंदगी के विध्वंसक मोड़ पर तिल-तिल जलते हुए देखा था, मैंने उसे ! आसान नहीं होता... कुंवारी मां होने का कलंक लेकर समाज के बीच जी लेना । समाज के गिद्ध नोच-नोचकर खा जाते हैं अकेली औरत को !

छोटा भाई लेने आया था विवाह के लिए नियत धर्मशाला रंगबिरंगी पताकाओं से सजी थी... ऊपर पहुंची तो आनंद बौखलाया हुआ-सा था...

"मैंने कहा ना मम्मी वहां नहीं जाएगी आगे..."

"भगवान के लिए आनंद एक बार जाने दो मुझे... ये सुभी थी... रुआंसी आवाज लिए..."

मैं बात की तह तक पहुंचने की कोशिश में थी कि देखा आनंद पैर पटकता कमरे से बाहर चला गया... सुभी पास आकर रो पड़ी... "तुम आ गयी मीनू... तुम्हीं समझाओ... इन्हें, ये धर्मशाला जिस गली में है ना... उसी मोड़ पर है तपन का घर... कार्ड देने तो जाना चाहिए ना मुझे... वो आये या न आये उसकी मरजी है...

ओह ये बात है... मेरी मुसकराहट में भी कड़ुवाहट घुल आयी थी... "तुम्हें मालूम था ?"— मैंने पूछा था...

"नहीं...", ये सुभा की छोटी बहन ने जवाब दिया था... "पर हमें मालूम था... अच्छा है... वो शरीफजादे भी तो देखें कितनी धूमधाम से होती है आनंद की शादी... बदकिस्मती दीदी की नहीं, उसकी है, जो आनंद-जैसे लायक बेटे का बाप होकर भी बाप कहलाने के काबिल नहीं है... हम जरूर जाएंगे कार्ड देने..."

मैंने कार्ड उठा लिया... आनंद के नाम के साथ तपन का नाम देखकर हक्की-बक्की रह गयी थी... सुभी संभल चुकी थी... "चौको मत मीनू... तपन का नाम डालकर कोई भूल नहीं की मैंने... उसमें हिम्मत नहीं है ना करने की... उसे आना होगा..."

सुभी के चेहरे पर आत्मविश्वास देखकर मेरी तो बांछें खिल गयीं... एक घंटे बाद मैं और सुभी तपन के दरवाजे पर थे...

हैरान रह गया था तपन... "सुभी तुम... नहीं आना चाहिए था तुम्हें... ये घर है मेरा..."

"तो क्या हुआ"... हिम्मत से दाखिल होती सुभी ने कार्ड बढ़ा दिया था तपन की ओर..." घबराओ मत तपन, मैं आज तुमसे कुछ मांगने नहीं आयी... कल तुम्हारे बेटे आनंद की शादी है... निमंत्रण-पत्र देने आयी हूं... यदि जमीर नाम की कोई चीज तुम्हारे पास हो तो बाप होने के नाते उसे आशीर्वाद देने जरूर आना... यकीन रखो बहुत समझदार स्वाभिमानी है मेरा बेटा... तुमसे जायदाद नहीं मांगेगा...

"मैं तो आशीर्वाद भी नहीं मांगूगा... इसी के साथ गरजता हुआ दाखिल हुआ था आनंद... मैं और सुभी दोनों हड़बड़ा गये थे...

"मैंने मना किया था ना ममी... आपको... मैं पूछता हूं... किसी बेजान अस्तित्वहीन पत्थर को कब तक पूजती रहेंगी आप... चलिए, लोग आपका इंतजार कर रहे हैं..." और इसी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ आनंद ने सुभी को बाहर आटोरिक्शा में बिठा दिया ।

तपन हैरत से कभी आनंद, कभी सुभी, कभी मैं... तो कभी पास के दरवाजे से दाखिल पत्नी की तरफ देखता रहा, जैसे यकीन नहीं कर पा रहा हो... मैं भी चुपचाप जाकर सुभी के बगल में बैठ गयी थी...

बहुत धूमधाम से सारे रस्मों-रिवाजों के साथ निबटा था शादी का दिन... सुभी की आंखें पूरे समय दरवाजे पर लगी रहीं... मुझे बहुत अच्छा लगा आनंद की शादी में शामिल होकर...

रात बारात जब गली के मोड़ से गुजरी, तो ध्यान बरबस तपन के घर पर चला गया... वहां एक बड़ा-सा ताला मुंह चिढ़ाता दिखायी दिया... पूछा तो पता चला— रात को ही किसी तीर्थस्थली रवाना हो गये थे, दोनों...

यूं ही खिसियाहट-सी महसूस की थी मैंने... "शाबास तपन, जवाब नहीं तुम्हारा... काश कह सकती मैं कि "इससे बड़ा ताला तो बरसों पहले तुम्हारी आत्मा पर लगा देखा है, मैंने"... वैसे अच्छा भी हुआ... सुभा साथ नहीं थी ।

इस बीच सुभा से बात नहीं हुई... तीसरे दिन जाने की तैयारी कर रही थी कि देखा सुभा बहुत उदास थी । पास जाकर उसका चेहरा अपनी ओर घुमाया तो वहां न जाने कितना गहरा समुद्र उफनने की तैयारी कर रहा था...

"तू भी मेरे साथ चल ना सुभी... कुछ दिन बंबई में ही रहना... अच्छा लगेगा..."

और किसी बच्चे की तरह बिलख पड़ी थी सुभी... "तपन नहीं आया मीनू... तुमने ठीक कहा था... वो कभी नहीं आएगा..."

आज तो मेरा मन भी उसके साथ रोने को हो उठा... आंखें भर आयीं... अपना रुमाल आंखों पर रख लिया और खिड़की के पास जाकर चुपचाप दूर तक देखती रही... गली के मोड़ पर बना मकान और उस पर लटका ताला मेरे जेहन में साकार हो उठे... चाहकर भी मन में उमड़ते शब्द होंठों पर नहीं आ पा रहे थे—

"तुम कितनी ही तीर्थयात्राएं कर लो तपन... पुण्य सहेजने की कितनी ही कोशिशें कर लो... कुछ भी नहीं समेट पाओगे... किसी निष्पाप की निस्वार्थ तपस्या तुम्हारे हर तीर्थ के आड़े आएगी...

— एच-३०, पी-ब्लॉक
थाटीपुर कॉलोनी, थाटीपुर
ग्वालियर-४७४०११

जीने का मजा

जम्मू के मुशायरे में सम्मिलित होने के लिए लाहौर के शायरों की टोली रेल से जा रही थी । 'फिदा' साहब ने पंडित हरिशचंद्र अख्तर से फरमाया, "गजल तो कह ली है, मगर मक्ता नहीं हुआ ।" गजल की जमीन थी—

खुदा होकर, दुआ होकर ।

अख्तर साहब ने सुनते ही कहा, 'लीजिए मक्ता हाजिर है—

मजा जीने का आखिर दिल लगाने पर ही मिलता है
'फिदा' साहब किसी पर देख लेना था फिदा होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय पुरस्कार

करवट

● राजरानी शर्मा

घंटों उदास और निस्पंद बैठकर भी क्या मन की थाह पायी जा सकती है ? क्या पीड़ा के क्षणों को धोया जा सकता है ? माना कि मन गंगा है, अंतःसलिला है, स्रोतस्विनी है, पर है तो गंगा अनवरत अनरुके मन के प्रवाहों में डूबना, उतराना और अपने ही आंसुओं से अपने मन को पखार लेना ऐसा ही लगता है, जैसे गंगा को कोई किसी और अर्घ्य, नैवेद्य से न पूज सके, गंगा की पूजा गंगाजल से ही हो ! मन की पीड़ा पीड़ाओं के अंबार से ही धोयी जा सके और अकसर ऐसा होता है कि मन को धोने से और निखरकर दर्द उभरता है और ज्यादा तलख, ज्यादा पैना, ज्यादा असहनीय हो उठता है ।

"कब तक बैठी रहेगी विभा अब कर ले जो करना है, ट्रेन का टाइम हो रहा है ।" प्रमदा, मेरी सखी ये कहां जान पायी है कि यूं झटके से, जीवन में एक ही निर्णय लिया जो आज भी मन की गहराइयों में यूं सालता है जैसे कल की ही बात हो । अब भी, इस वक्त भी, जो कुछ सोचकर हरिद्वार आयी हूं । कहां ? कब ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों ? नहीं कर पा रही कल की ट्रेन छूटी । रिजर्वेशन गया । आज भी छूट जाएगी पर मन का मोह कब छूटेगा ? जिसे चाहो वही छूट जाता है, जो न चाहो वह कब छूट पाता है ? उलटा है मन जैसे रेशम का कीड़ा आत्मघाती...शून्य में ताकते-ताकते आंखें पथरा गयीं कौन कहता है, कि सामने का आकाश शून्य है...क्या-क्या नहीं बनता-बिगड़ता है इस पर...

अरे आलोक ! उठो भाई देखो न किस तरह से मैं दर्द में कराह रही हूं मां को जगाओ न जरा, अब रहा नहीं जाता और दर्द से जर्द चेहरे को घूंट-घूंट पीते विभा ने मानो झिंझोड़ ही दिया था आलोक को, और मां ! सासू मां ने स्वयं ही सुनकर बहू को वक्त रहते अस्पताल पहुंचा दिया मगर पहली ही नातिन...ऐसा मन कड़वा गया लक्ष्मी का मानो नातिन न हो जहर की पुड़िया हो, मानो गुलाब की डाली में सिर्फ कांटे ही उगे हों । बेरौनक घर, रीती कोख, और आंसू पीता मन लेकर विभा लौटी...मेरी बेटी मेरे कलेजे का टुकड़ा मुझे यों जीवन के इम्तहान में फेल कर जाएगी ! क्या हुआ उन सपनों का । मौसम खराब कैसे हो गया ? तुम तो कहती थीं कि वीतरागी रहो ! सबकी सुनो निर्लिप्त, बेअसर, बेदाग रहो, अब क्यूं खुद तुमको एक-एक ताना कचोटता रहता है । शीशे की मीनारों में एकाएक दरार पड़ी तो दरकती ही गयी । आलोक का आलिंगन अब एक निराली, नयी आशंकाओं से लबरेज रहता, अब की क्या होगा ? गरम हाथ और सर्द मन और चाहे किसी से छिपे रहें पर विभा से कैसे छिप सकते हैं । तार-तार रेशम की तरह मन की परतों को

आज दो दिन की जद्दोजहद के बाद भी वह अस्थियां बहाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही है । उसी को आना पड़ा हरिद्वार, क्योंकि भाइयों में झगड़ा चल रहा था? कौन जाए ? खर्चा और समय दोनों नहीं था उनके पास ।

सहेजते रात-दिन रोशनी के अंधेरे और अंधेरों की रोशनी में जूझते गुजर ही जाते हैं । बेटी की किलकारियां, लगता है मांजी के मन पर चीख-सी लगती हैं । उसी दिन की बात है..."अरे बहू क्यों रोज नित नयी फ्रॉकें पहनाते इसे अरे कहीं देने-लेने के काम आएंगी री।"

और विभा अनकही उदासी अनबहे आंसुओं से ऊभ चूभ हो उठती, कसमसाता मन आलोक की तरफ निगाहें उठाता, शायद वहीं कोई प्यार की छांह मिले, मगर वहां तो मानो नेहा के जन्म से ही बर्फ का कारोबार शुरू हो गया । रेत की मुट्ठियों को रोज नये अंदाज से बांधकर मन के समर्पण को एक बार फिर प्रवंचना के नागपाश ने जकड़ लिया, हवाओं में फैला पराग कब उसकी कोख की संपुट में पल गया, नहीं जान पायी थी विभा ! पर मां का फेरा मन उसके अलसाये तन की आहट मानो [illegible] निगाहों से ले रहा था, "अरे विभा आज तूने दाल नहीं खायी बिलकुल ।" चौंक गयी विभा सोचा था इस बार कुछ नहीं बताएगी, पर सब बेकार...कैदी की सांसों का हिसाब तो जेलर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रख ही रहा था ।...

शाम को आलोक जैसे ही ऑफिस से लौटे तो मां को कुछ धीमे-धीमे बताने लगे फिर एकाएक आकर बोले "जल्दी करो विभु चलो तुम्हें पिक्चर दिखा लायें ।" लगा जेल में अच्छा व्यवहार करने पर मानो पैरोल पर भेजा जा रहा हो ।" खाली मन, तिक्त अनुभूतियां, लगता सब बेमानी है, कैसी कविता, और कैसा ख्वाब, कड़वे घूंट और सब बेस्वाद...रात होते न होते तक विभा के बालों में अंगुलियां फिराते आलोक ने गोटियां फेंक ही दीं, "विभा कल डॉ. से टाइम लिया है । तैयार हो जाना । सोनोग्राफी करा ही लेते हैं, कौन रिस्क लेगा । यार बड़ा क्राइसिस है, कैसे करेंगे ? होशियारी इसी में है कि सोच-समझकर काम करें ।"

और विभा सब समझ गयी । कौन कहता है कि बारिश के पहले पुरवा नहीं चलता या आंधियों के पहले सब शांत नहीं हो जाता । वातावरण निस्पंद, शांत, स्तब्ध ! मां और आलोक दोनों ने अपने कलेजे की धड़कनें थाम लीं । 'रिपोर्ट में फिर लड़की नहीं...नहींऽऽऽफिर और एक अभिशाप...' आंखों ही आंखों में मानो सारे पुराण, दर्द के, घाटे के हिसाब, कुल की परंपरा, पड़ोस में गिरती नाक, जुटता दहेज, घटता मान, सब बेटे को समझा दिया । विभा को लगा कि उसकी कोख में कोई भौंरा बंद हो गया है और वह उसे जबर्दस्ती घनघोर रात में ही निकाल देना चाहती है । बेबस, कल सोयी तो लगा कि एक-एक पंखुरी चिथेड़कर किसी ने खींचकर उस अलि कलिका को कचरेदान में फेंक दिया है । पसीने-पसीने हो गयी, घबरा गयी, कौन कहता है—स्त्री सीता है, अनुसूया है, गार्गी है, मैत्रेयी है, अरुन्धती है, कुंती है, अरे ! स्त्री तो महज एक कोख है कोख ! हूक है, चीख है, और है तो बस अघोषित मौत...

खाने-कपड़े के दामों खरीदी कोख लिए विभा हारे हुए जुआरी-सी मानो गरम दूध पी रही है और मुंह जला लिया है । जला मुंह या जली कोख, छिली हुई रुह और झुसला मन लिए शाम तक सब परागकणों को कचरे में बहाकर आराम कर रही है । भयावह ख्वाब और टूटा मन यही है न उसके पास...सास कह रही है खामख्वाह डेढ़-दो हजार का चूना लग गया, भाग्य तो फूट ही गये हैं हमारे...सात-सात जन्मों के कर्म उदय हो रहे हैं ।" और पगली विभा है कि ख्वाब देखे जा रही है । बहुत-सी गुड़िया हैं बहुत-सी ! और अचानक उनके हाथों में फूलों की डंडियां आ गयीं और ये डंडियां कैसी हैं कांटोंदार । कांटे मानो बोल रहे हों "क्यूं मां तुम भी...अब की बार भी ।"

नानी कह रही थीं कि अगर दो बेटी हों, तो एक नार सात बेटी ही होवे, तो क्या उसे अभी पांच बार और मकरंद को कचरे के ढेर में समाधि दे देनी होगी । नेह की सिल्लियों को कलेजे से लगाते-लगाते एक बार और जब उसे अपने बांझ न होने का दुःख बहुत साला...लगा कि कितनी सुखी हैं, बांझ औरतें, न परागों का व्यापार, न मन का खिलवाड़, न किराये की कोख, न परायों की चाहत कुछ भी तो नहीं ढोना पड़ता उन्हें, काश वो बांझ ही होती । मन करता है कि भगवान उसके सात नहीं चौदह बेटियां पैदा हों, कोई साजिश करे कोई षड्यंत्र चले और कड़वी चाशनी से, आलोक को चौंका दे...कल फिर उसे जाना है सोनोग्राफी ! साइंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न हुई कोई डायन हो गयी, बहरी डायन...इस बार उसने जन्म-जन्म के पुण्य मनाये और भगवान ने सुन ली जिस नर्सिंग होम में गयी । प्रमदा उसकी सखी, बरसों से शादी के बाद से जिसकी खबर न ली उसकी मेज के पास ! विभा को मानो भगवान मिल गये । उसने सब कराहें, आहें बता दीं...प्रमदा क्या मैं अपनी कोख की कलियों को सफेद कोट नहीं पहना सकती, प्रमदा कुछ करो प्रमदा ! और प्रमदा ने एकाएक निर्णय ले लिया ।

रिपोर्ट आयी! झूठी खुशियां, झूठे उत्साह ने विभा के वीतरागी मन को अछूता ही रखा । बेटी को जन्म दिया और नाम रखा चाहत...पर सब कुछ कसैला हो गया, बाहर-भीतर, तन-मन सब बेस्वाद, बौखलाया-सा आलोक फिर एक बार मात खा गया । तीसरी बार नर्सिंग होम बदल दिया गया पर वहां भी प्रमदा ने चाल चली, परागों की किश्त में 'राहत' आ गयी पर मानो जीवन का बांध भरभराकर गिर गया । अनहोनी ही हो गयी, उसने कभी नहीं चाहा था कि वो परित्यक्ता बनकर जिये, कभी नहीं चाहा था कि समर्पण के छलावा बना डाले पर आलोक तो कुछ सुनने-समझने को तैयार नहीं, "नहीं मैं नहीं रख सकता तुम्हारी बेटी को, उसने पापा को बुलाया और दो टूक जवाब दे दिया, ले जाओ इसे साजिश और मेरे खिलाफ ? अरे ये क्या साजिश करेगी...और अनाप-शनाप अवांछित और बेदर्द लहजा...कानों में गिरते हुए पैट्रोलियम ने मन की सारी बस्ती को देखते-देखते फूंक डाला...हारे हुए योद्धा मेरे पापा एक बेटी की चार बेटियां करके दबे पांव घर में घुसे तो मां और भाइयों ने तो कोहराम मचाया । देखते-देखते महीनेभर में ही पापा की अस्थियां गंगा में प्रवाहित करने आना पड़ा । जाते हुए पापा की आंखों में निसहाय बेटी का दर्द तैरता । एक दिन पड़े-पड़े दिल पर हाथ रखकर धीमे-धीमे बोले, "बेटा ! मुझे तुमसे शिकायत नहीं है, शिकायत अपने आप से है, क्यूं तुझे ऐसे परिवार में ढकेला और क्यूं तेरे भाइयों को दुष्ट बनाया, जन्म दिया आस्तीन के सांपों को, पाला, और क्यूं नहीं कुछ दिन जीकर तेरी राह से कुछ कांटे न चुन पाया, क्या करूं बेटा ! उनकी दर्दभरी आंखों का उबाल विभा के मन की किरच-किरच में समा गया ।"

आज दो दिन की जद्दोजहद के बाद भी वह अस्थियां बहाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही है। उसी को आना पड़ा हरिद्वार, क्योंकि भाइयों में झगड़ा चल रहा था, कौन जाए ? खर्चा और समय दोनों नहीं था उनके पास । विभा आयी है और विभा की गुनहगार सखी प्रमदा भी...दो दिन के अंतर्द्वंद्व में कायाकल्प करके फिर से संसार से जूझने जाना चाहती है बेटियों के लिए...मां सिर्फ मां रह जाना चाहती है । अपनी 'औरत' को बहा दिया पिता की अस्थियों के साथ ही उसने मंगलसूत्र और सिंदूर की डिबिया भी बहा दी । प्रवंचनाओं का सच नहीं ! नहीं, नहीं ! कोरी जमीन, नंगी ठंडी और बेधड़क जमीन और एक लंबा मकसद जिंदगी के लिए नाकाफी है क्या ?

झटके से प्रमदा का हाथ पकड़कर उठ खड़ी हुई, तो मानो कोई और ही विभा थी ये...

—म. ल. बा. होस्टल परिसर
झांसी रोड, ग्वालियर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

तृतीय पुरस्कार

नारी उत्पीड़न और बिखरते परिवार

● अनुराग पाठक

ठक-ठक-ठक चिरपरिचित पदध्वनि, यंत्र चलित मशीन की भांति गोमती दरवाजे तक पहुंची, दरवाजा खोलकर पुनः वापस आ गयी, रामदयाल ने छाता और थैला लिए इस प्रकार प्रवेश किया मानो अभी लड़खड़ाकर गिरता हो, लेकिन सम्हलकर कुरसी पर बैठ गया। टेबलफैन अपनी सामान्य गति में घर-घर कर रहा था, रामदयाल ने उसका रुख अपनी तरफ कर लिया, लेकिन गरमी से थोड़ी ही राहत मिली। रामदयाल अब सम्हल-सा गया था थकान भी कम हो गयी, गोमती वापस गेहूं बीनने लग गयी थी, वह रामदयाल के क्रियाकलापों को शून्य आंखों से बीच-बीच में देख लेती। रामदयाल के कार्यों में कोई आकर्षण न था, गोमती इन्हें रोज ही देखती थी, इसलिए वह भी तटस्थ भाव से अपने कार्य में लगी रही।

थोड़ी देर बाद छाते को दीवाल पर टांग दिया, चींटियों की लंबी कतार कील के पास जा रही थी, छाते के अप्रत्याशित आक्रमण से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका अनुशासन भंग हो गया ।

थैला गोमती को सौंप दिया, गोमती की एकाग्रता भंग हुई, उसने थैले में नजर डाली ।

'नीबू नहीं लाये ?' गोमती का धीमा स्वर ।

'हुं ?' रामदयाल फिर कुरसी पर बैठ गया था ।

'होंगे, नीचे !' रामदयाल ने धीरे-से कहा ।

'सोमकांत नहीं आया ?' रामदयाल ने बहुत ही धीरे-से पूछा "तुम्हें पता है न, वह अब नहीं आएगा ।" गोमती ने थैले को किचिन में रखते हुए कहा ।

"बार-बार तुम यही क्यों पूछते हो, जब तुम्हें पता है कि वह नहीं आएगा ।" गोमती के स्वर में आवेग था । ऐसा लगता है किसी दुर्भाग्य की गहरी काली छाया इस परिवार पर छा गयी हो, जिसने पूरे घर को ग्रस लिया, हमेशा ऐसी मुर्दानगी छायी रहती है, मानो जीवन में कोई उत्साह रह ही न गया हो ।

यह छाया सबसे ज्यादा गोमती की शून्य आंखों में दिखायी देती है, रामदयाल के स्थिर कदमों को भी शायद इसी छाया ने डगमगा दिया ।

चालीस वर्ष एक साथ इस युगल ने हंसते और रोते बिताये हैं, पर अब इस छाया ने इनसे हंसने का क्रम छीन लिया है और रोने की जगह उदासी दे दी ।

किचिन में खटर-पटर के बाद गोमती भोजन की थाली लेकर रामदयाल के सामने आ गयी ।

तख्त पर रामदयाल बैठ गया, थाली को गोमती ने उसके सामने रख दिया ।

"नीबू नहीं है ।" थाली पर नजर घुमाने के बाद रामदयाल ने कहा ।

"तुम्हीं जानो, लाये थे ?" गोमती प्रत्युत्तर में बोली ।

रामदयाल खाने को एक अनिवार्य क्रिया समझकर धीरे-धीरे खाने लगा ।

गोमती फिर गेहूं बीनने लगी ।

"गये थे" ? गोमती कनस्तर से गेहूं निकालते हुए बोली ।

"बहू मिली थी ।" धीरे-से रामदयाल बोला ।

"क्या कहा ?"

"क्या कहेगी, जब सोम कुछ नहीं कहता तब वह क्या कहेगी ।" रामदयाल ने पानी पीते हुए कहा ।

"सरकारी क्वार्टर मिलने के बाद किराये के दो कमरे को कौन पूछता है ।" गोमती के स्वर में वही आवेग ।

"जिस घर में पैदा हुए, जिसमें बढ़े, पढ़े उसमें ही अब घुटन होने लगी ।" रामदयाल गोमती के आवेग का आश्रय पाकर उद्दीप्त हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाली में हाथ धोकर वहीं दीवाल से टिक गये ।

"एक हजार की पेंशन पानेवाले बाप के घर काहे रहेंगे, सरकारी राजा हो गये न ।" गोमती ने थाली उठाते हुए कहा ।

"हमें नहीं रखना, बंधे रहें रानीजी के पल्लू से, वही तो सब है उसकी ।" गोमती ने अपनी बुद्धि का परिचय दिया ।

रामदयाल छत की ओर एकटक देखने लगे ।

अब केवल यही एक विषय होता है, जिस पर दोनों के विचार में एक साम्य है । इस परिचर्चा में रामदयाल अधिक गंभीर, जबकि गोमती मां होने के कारण अधिक आवेश में आ जाती है ।

गोमती ने बिने हुए गेहूं को कनस्तर में डाला और रामदयाल के पास आकर बैठ गयी ।

"बैंक गये थे ?" गोमती बहुत धीरे बोली ।

"सोम ने कहा था कि वो देगा ।" रामदयाल बोला, "देना होता, तो अब तक दे न देते" । गोमती बोली, "सीमा तो अभी ट्यूशन पढ़ाने गयी होगी । रामदयाल ने पूछा "दो बच्चे हैं, उन्हें भी ठीक से नहीं रख सकते ।"

"क्या करें, खून जलाकर मेहनत करें और फिर भी वही रोज का रोना ।" रामदयाल ने गहरी निःश्वास छोड़ते हुए कहा ।

"जब घर के ही न पूछें, तो भगवान भी सहायता नहीं करते ।" गोमती ने आग में घी छिड़का, "बीस हजार के लिए रिश्ता टूट जाए तो क्या बड़ी बात जब ऐसे भाई मिले ।" गोमती ने धीरे-से कहा "सोम कह रहा था कि कोशिश करेगा ।" —रामदयाल बोला ।

"क्या कोशिश करेगा, रानीजी के श्रृंगार के सामान से फुरसत मिले तब ।" गोमती ने आवेश में कहा ।

रामदयाल ने ध्यान नहीं दिया, वह फिर छत की ओर देखने लगा, पता नहीं कितने क्षण वह यूं ही देखता रहा—इस बीच गोमती फिर किचिन में खटर-पटर करने लगी, चींटियों की कतारें छाते के प्रहार के बाद फिर अनुशासनबद्ध हो गयीं । पंखा उसी घर-घर की ध्वनि से चल रहा था ।

— ३२, पंचवटी ए. बी. रोड
शब्द प्रताप आश्रम,
ग्वालियर

हाल ही में इंगलैंड की एक कंपनी द्वारा ऐसा मशीनी मानव विकसित किया गया है जो एक साथ अलग-अलग कार्य कर सकता है । यह रोबोट किसी इमारत को गरम रख सकता है और अस्पताल में रोगियों के श्वास और नाड़ी की गति का रेकॉर्ड रख सकता है । यदि इसे किसी पेड़ के घोंसले से बांध दिया जाए तो यह बता सकता है कि कौन-सा पक्षी घोंसले में कितनी बार आया और गया । यह रोबोट इस बात का पता भी लगा सकता है कि जानवरों ने कितना चारा खाया और जमीन में नमी की मात्रा कितनी है ।

—संजय कुमार शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

नीलमणि राय, बोकारो

● **हमारी हथेलियों में रेखाएं क्यों होती हैं ?**

□ क्योंकि मां के गर्भ में भ्रूणावस्था में हमारी मुट्ठियां बंद रहती हैं अतएव हथेलियों में बनी सिकुड़नें स्थायी तौर पर रेखाएं बन जाती हैं ।

शिप्रा चतुर्वेदी, उज्जैन

● **आदम और हौवा के नाभियां थीं ?**

□ नाभि तो यौनिक प्रजनन का चिह्न है जिसका अस्तित्व आदम और हौवा के पृथ्वी पर अवतरण के बाद का माना जाता है । इसके अतिरिक्त पौराणिक मान्यता भी यह है कि स्वर्ग में जाने पर आदम और हौवा को उनके नाभि-विहीन शरीर से पहचाना जा सकता है । किंतु चित्र दीर्घाओं तथा संग्रहालयों में रखे चित्रों में उनकी नाभियां दिखायी गयी हैं ।

आलोक अरुण, दरभंगा

● **सात मोक्षदायिनी पुरियों से संबंधित श्लोक और स्रोत क्या है ?**

□ **अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवन्तिका ।**
पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

(गरुड़ पुराण २/४९/१२)

जैसा कि श्लोक में बताया गया है ये सात पुरियां अयोध्या, मथुरा, मायापुरी (अर्थात हरिद्वार), काशी (वाराणसी), कांची, अवंतिका (उज्जैन) और द्वारका हैं ।

दया शंकर तिवारी, सीवान

● **जगन्नाथपुरी का मंदिर किसने और कब बनवाया था ?**

□ गंग वंश के राजा छोड़गंग देव द्वारा ग्यारहवीं शताब्दी में इस मंदिर का निर्माण हुआ था ।

सुशील कुमार श्रीवास्तव, गोरखपुर; सौरभ भारतीय, रतलाम

● **भूकंप मापक यंत्र का नाम क्या है ? भूकंप की तीव्रता कैसे मापी जाती है ?**

□ भूकंप मापक यंत्र का नाम रिक्टर स्केल है । भूकंप संबंधी अन्य प्रश्नों के उत्तर और सूचना के लिए 'कादम्बिनी' के मार्च ९४ अंक में विस्तृत लेख पढ़ें ।

अरुण गुप्त, मोरैना

● **दिल्ली का लाल किला किसने बनवाया था ?**

□ शाहजहां ने, यह आगरा के किले की प्रतिकृति है ।

रघुवंश राय, समस्तीपुर

● **विश्व में सबसे बड़ी घड़ी कहां लगी है ? आकार की भी बताएं ?**

□ सेंट पिरी, ब्युवई, फ्रांस में लगी खगोलीय घड़ी बहुत विशाल है । इसका निर्माण १८६४ और १८६८ के बीच किया गया था । यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुट ऊंची, २० फुट चौड़ी और ९ फुट गहरी है। किंतु यह एक खगोलीय घड़ी है। सामान्य घड़ियों में एक पीकिंग (चीन) में है। जिसका नाम सू सुंग है तथा जापान में होकैडो स्थित पार्क की पुष्प घड़ी का व्यास ५९ फुट है। इस प्रकार किसी एक घड़ी को विश्व की विशालतम नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक का महत्त्व भिन्न-भिन्न कारणों से है। बंगलूर स्टेशन के निकट होटल प्रशांत पर लगी घड़ी भारत की सबसे बड़ी है। (स्रोत : गिनेस बुक ऑव वर्ल्ड रेकॉर्ड, और लिमका इअर बुक)।

आलोक झा, राजनांद गांव

● इंजनों की शक्ति का आकलन हार्सपावर से किस आधार पर किया जाता है ?

□ हार्स पावर शक्ति की एक इकाई है जिसका मान ५५० फुट पौंड प्रति सेकेंड के बराबर होता है। जेम्स वॉट ने १८वीं सदी में यह अनुमान लगाया था कि एक अच्छा घोड़ा एक मिनट में ३२,४०० फुट पौंड कार्य कर सकता है। बाद में उनके एक सहयोगी वोल्टन ने इस संख्या को ३३ हजार फुट पौंड मान लिया था।

जयप्रकाश मिश्र, शिवहर (बिहार)

● कथकली नृत्य किस राज्य से संबंधित है ?

□ केरल से।

अरुण बोस, दरभंगा

● चार मीनार (हैदराबाद) कितनी पुरानी हैं और इनकी क्या विशेषता है ?

□ चार मीनार का निर्माण सन १५९१ में किया गया था। एक इतिहासकार ने बताया है कि नगर में प्लेग की समाप्ति की स्मृति में इसका निर्माण कराया गया था। इन मीनारों की विशेषता यह है कि प्रत्येक में एक छोटी-सी मसजिद बनी है।

पवनदेव बंसल, झरिया

● विक्टोरिया रेजिया किस पौधे का नाम है ?

□ यह एक ऐसा पौधा है जो कमल की भांति पंक (कीचड़) में पैदा होता है, किंतु कमल परिवार का नहीं होता। इनका आकार बड़े-बड़े थालों-जैसा होता है। इसका मूल स्थान दक्षिण अमरीका के समुद्रतटीय पंक भरे वन हैं। इसे सबसे पहले सन १८३७ में इंगलैंड के सर रॉवर्ट शैमवर्क ने गुयाना में देखा था और उसी ने अपने देश की महारानी के नाम पर इसे विक्टोरिया रेजिया का नाम दिया था। इन वनस्पतिक थालों का आकार ६ से ८ फुट व्यास का होता है। इसे वाटर लिली भी कहते हैं।

विपिन शुक्ल, मुंगेर

● सम्मोहन क्या होता है ?

□ कृत्रिम साधनों द्वारा उत्पन्न की गयी नींद के समान एक अवस्था, जिसमें सम्मोहित पात्र सम्मोहक के संसूचनाओं के अनुकूल काम करने लग जाता है। यह एक स्वाभाविक वैज्ञानिक क्रिया है तथा इसके पीछे कोई रहस्य नहीं होता। अपने रुग्ण बच्चे के सिरहाने बैठी मां थककर सो जाती है और सोते समय वह अपने आसपास के शोर-गुल से तो उदासीन रहती है, किंतु बच्चे की कराह सुनकर वह तुरंत जाग जाती है। कुछ इसी प्रकार की स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मोहित व्यक्ति की होती है। जिस प्रकार मां सोते समय भी बच्चे के प्रति सजग रहती है उसी प्रकार सम्मोहित पात्र भी सम्मोहक के संसूचनों के प्रति सजग रहता है, किंतु सम्मोहक किसी भी व्यक्ति को उसके सहयोग के बिना सम्मोहित नहीं कर सकता।

रविकांत यादव, वाराणसी

● **संसार का विशालतम और लघुतम महाद्वीप कौन से हैं ?**

☐ सबसे बड़ा महाद्वीप एशिया (एक करोड़ उनहत्तर लाख अठासी हजार वर्ग मील) और सबसे छोटा, आस्ट्रेलिया (उनतीस लाख अड़सठ हजार वर्गमील) है।

बुद्धप्रिय वर्मा, बिजनौर

● **संसार का सबसे बड़ा होटल कहां है ?**

☐ हिल्टन होटल, लास वेगास—३१७४ शयन कक्ष (स्रोत हिन्दुस्तान इअर बुक)।

प्यारेलाल गंगवार, कोटा

● **चेहरे पर भौंओं की क्या उपयोगिता है ?**

☐ ये पसीने को आंखों में जाने से रोकती हैं।

प्रह्लाद जसवानी, मंडला

● **रैबीज कौन-सा रोग है ?**

☐ यह रोग कुत्ते को होता है, जिससे वह पागल हो जाता है। यह रोग एक वाइरस से होता है जिसके विषाणु हवा से या किसी जंगली पशु से हवा के जरिये फैलकर कुत्ते के शरीर पर घाव से उसके अंदर प्रविष्ट हो जाते हैं। यह वाइरस बुलेट की तरह का लगभग ७० मिली-माइक्रान व्यास और लगभग २१० मिलीमाइक्रान लंबा होता है।

साजिद अली अंसारी, भदोही

● **अजंता एवं एलोरा की गुफाएं कितनी पुरानी हैं ?**

☐ अजंता की गुफाएं ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी तथा ईसवी सन सातवीं शताब्दी के बीच की हैं, तथा एलोरा का इतिहास मध्य सातवीं से प्रारंभिक दसवीं शताब्दी के बीच का है।

रामशंकर त्रिपाठी, मनकापुर (गोंडा)

● **विघटित सोवियत संघ के किस देश को सुरक्षा परिषद में वीटो का अधिकार है ?**

☐ सुरक्षा परिषद में रूस को स्थायी स्थान मिला है तथा वीटो अधिकार भी उसी को है।

विनय कुमार कर्ण, औरंगाबाद

● **मेंहदी किस पौधे से प्राप्त की जाती है ?**

☐ मेंहदी नाम का एक पौधा ही होता है। उसकी पत्तियां मेंहदी का काम देती हैं। इसका वनस्पति-विज्ञानी नाम 'लासोनिया इनरमिस' है। यह भारत के अतिरिक्त मिस्र और मध्य पूर्व के देशों में पाया जाता है।

नादे अली, गुना

● **रेनडियर कहां पाया जाता है ?**

☐ रेनडियर यूरोपीय और उत्तर अमरीकी टुंड्रा में पाये जाते हैं। नीचे से कंधों तक यह १२५ सेंटीमीटर ऊंचा होता है।

चंद्रप्रकाश दरमोड़ा, चमोली

● **उच्चायोग और राजदूतावास में क्या अंतर होता है ?**

☐ केवल नाम का अंतर है। राष्ट्रमंडलीय देशों के राजनयिक प्रतिनिधि आपसी देशों में अपने प्रतिनिधियों को उच्चायुक्त (हाई कमिश्नर) कहते हैं।

चलते-चलते

● **क्या नक्षत्र वास्तव में हमारा भविष्य बता सकते हैं ?**

☐ भविष्य बताएं या नहीं आसमान में होने से रास्ता तो बताते ही हैं।

—सूत्रधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां पांडवों के हथियार गले थे : लोहार्गल

● रमेश सर्राफ

राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनूं जिला मुख्यालय से सत्तर किलोमीटर दूर आड़ावल पर्वत की सुरम्य घाटियों में उदयपुरवाटी कस्बे से दस किलोमीटर दूर स्थित है प्रसिद्ध तीर्थराज 'लोहार्गल' । लोहार्गल का अर्थ है वह स्थान जहां लोहा गल जाए । इस तीर्थ स्थल का गर्ग संहिता व पद्मपुराण में भी उल्लेख मिलता है ।

इस स्थान के बारे में अनेक कहानियां व किंवदंतियां प्रचलित हैं । महाभारत युद्ध के बाद पांडव अपने स्वजनों की हत्या के पाप से मुक्त होने के लिए श्रीकृष्ण के निर्देश पर देश के सभी तीर्थ स्थलों के दर्शन को चल पड़े । कृष्ण ने पांडवों को बताया था कि जिस स्थान पर तुम्हारे अस्त्र शस्त्र पानी में गल जाएं, वहां तुम लोग स्वजन हत्या के पाप से मुक्त हो जाओगे । देश के समस्त तीर्थों का भ्रमण करने पर भी पांडवों को वांछित फल प्राप्त नहीं हो सका । उसी यात्रा के दौरान वे घूमते-घूमते लोहार्गल आये तथा यहां बने सूर्य कुंड के पवित्र जल में स्नान किया । कुंड में स्नान करते ही पांडवों के हथियार गल गये । इस पर पांडवों के हर्ष और आश्चर्य की सीमा नहीं रही, क्योंकि उन्हें वांछित लक्ष्य प्राप्त हो चुका था । उन्होंने इस स्थान की महिमा को समझा और इसे तीर्थ राज की उपाधि दी ।

एक अन्य गाथा के अनुसार यहां महर्षि परशुराम ने अपने पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए वैष्णव यज्ञ करवाया था । इस यज्ञ में राजा इंद्र सहित कई देवी-देवता और ऋषि वशिष्ठ आये थे । उन्हें यहां का वातावरण भा गया, और वे यहां लंबे समय तक तपस्यारत रहे । हिमाद्रि संकल्प में भी चतुर्थ गुप्त तीर्थों में इस तीर्थ का नाम उल्लेखनीय है ।

गलतातीर्थ से समानता

लोहार्गल बहुत कुछ जयपुर के गलतातीर्थ से समानता रखता है । गलता के सूर्यमंदिर की तरह यहां भी पहाड़ पर सूर्य मंदिर बना हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । गलता की तरह यहां भी पानी गोमुख से आता है । पहले यह स्थान सिर्फ संन्यासियों की तपोस्थली ही था । अब यहां गृहस्थ भी रहने लगे हैं । यहां कुछ वर्ष पूर्व भीम कुंड खुदाई करने पर महाभारत कालीन सिक्के और कलश मिले । यहां महात्मा चेतनदास द्वारा बनवायी गयी विशाल बावड़ी है, जो राजस्थान की विशालतम बावड़ियों में से एक है । पहाड़ की डेढ़ किलोमीटर ऊंची चोटी पर वनखंडी का सुंदर मंदिर बना हुआ है । कुंड के पास ही प्राचीन शिव मंदिर, हनुमान मंदिर और पहाड़ में पांडवों की विशाल गुफा स्थित है । पास ही पहाड़ पर चार सौ सीढ़ियां चढ़ने पर मालकेतु के दर्शन होते हैं ।

यहां प्रति वर्ष भाद्रपद मास की अमावस, सोमवती अमावस, पूर्णिमा, सूर्य एवं चंद्र ग्रहण पर विशाल मेला लगता है, जिसमें यात्री पवित्र कुंड में स्नान करते हैं । गोगानवमी से लोहर्गल के चारों ओर चौबीस कोस की परिधि की परिक्रमा होती है, जिसमें हजारों नर-नारी श्रद्धापूर्वक भाग लेते हैं ।

धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल होने के बावजूद यहां की हालत खराब है । सूर्य कुंड जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है । महिलाओं के कुंड में नहाने के पश्चात कपड़े बदलने की कोई व्यवस्था नहीं है । यहां सफाई व्यवस्था की हालत तो काफी खराब है । मुख्यद्वार पर कहीं फाटक न होने के कारण आवारा पशु मुख्य कुंड तक घूमते रहते हैं, इस कारण चारों और गंदगी व्याप्त रहती है । सड़क की हालत भी अत्यंत खराब है । राज्य का पर्यटन विभाग भी इस स्थल की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा । यदि वन एवं पर्यावरण विभाग भी यहां के विकास में पर्याप्त रुचि दिखायें तो यहां प्रति वर्ष हजारों देशी-विदेशी पर्यटक आ सकते हैं । यहां रहने की व्यवस्था अत्यंत खराब है । यहां आने के लिए कोई नियमित बस सेवा भी नहीं है ।

लोहार्गल एक प्राचीन धार्मिक एवं ऐतिहासिक तीर्थस्थल है, लेकिन शासकीय उपेक्षा के कारण उस संपूर्ण क्षेत्र की स्थिति दयनीय है ।

—रमेश न्यूज सर्विस

पो. धमौरा, (जिला झुंझुनूं, राजस्थान)

कैलीफोर्निया की एक कंपनी ने ऐसे मशीनी मानवों का निर्माण किया है जो गाने गाते हैं, नाचते हैं, चुटकुले सुनाकर लोगों को हंसाते हैं, यही नहीं, घर में आये मेहमानों का स्वागत भी कर लेते हैं । जब ये रोबोट सीरियस हो जाते हैं तो बच्चों को ट्यूशन करा सकते हैं, उनको नयी-नयी भाषा सिखा सकते हैं और अनेक बार तो घर की रखवाली भी कर लेते हैं । इसी प्रकार फ्रांस में एक ऐसा रोबोट बनाया गया है जो स्वतः ही वृक्षों से पके सेब तोड़कर टोकरी में डाल देता है । कंप्यूटर विज्ञान के प्रसिद्ध प्रोफेसर जोजफ बीजबौम ने ऐसे कंप्यूटर अथवा रोबोट के निर्माण पर बल दिया है जो आनेवाले दिनों में इंसानों की तरह सोचेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

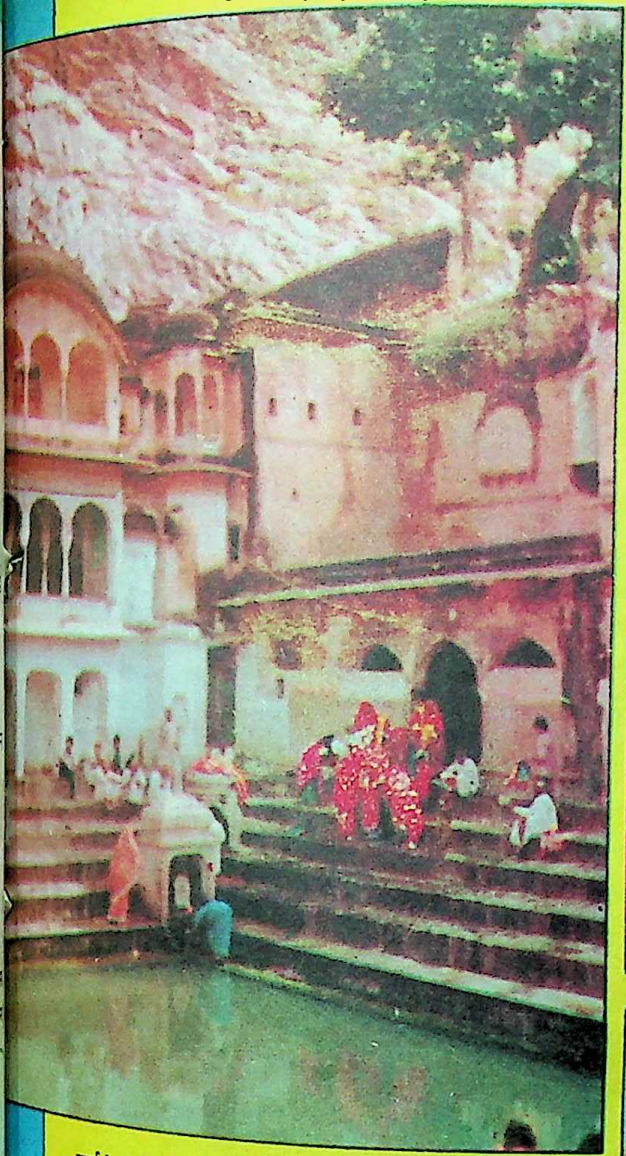

सूर्यकुंड, जिसे महाभारत युद्ध का साक्षी माना जाता है

प्राचीन शिव मंदिर

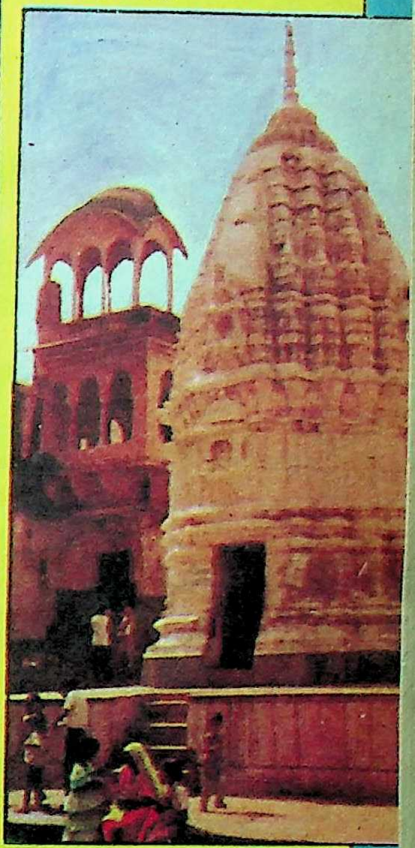

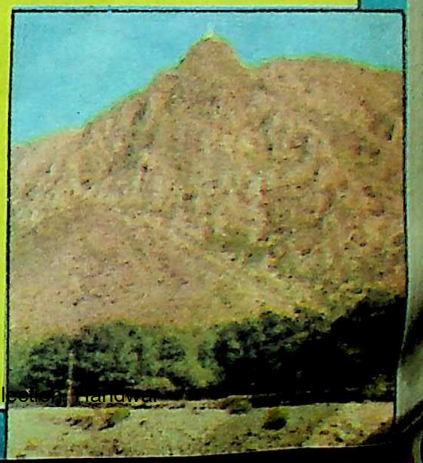

बरखंडी की ऊंची चोटी पर स्थित मंदिर

चित्र : रमेश सर्राफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पंजी जो इन तोतों के लिए पाचक का कार्य करती है

पिट्ठी के टुकड़े निकालने में तल्लीन तोतों का झुंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

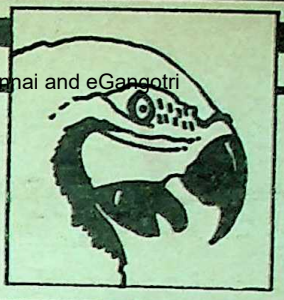

तोतों ने बसा दी एक प्रासाद नगरी

चार्ल्स ए. मुन्न न्यूयार्क, अमरीका के एक वन्य जीव-जंतु संरक्षण संस्थान में प्राणि-वैज्ञानिक हैं और उनके प्रयत्नों से अमेजान के घने जंगलों में पाये जानेवाले तीन प्रकार के— लाल-हरे, गहरे लाल या लोहित और नीले-पीले— मकाव तोतों का न केवल संरक्षण हो पाया है, अपितु जिन स्थानों पर वे पाये जाते हैं, उनमें से एक स्थान का विकास का पर्यावरण पर्यटन स्थल के रूप में किया जा रहा है।

इस समय जब समूचे विश्व में इस बात पर बहस चल रही है कि 'व्यक्ति' की परिभाषा में मनुष्यों— पुरुषों, महिलाओं और बालक-बालिकाओं— के अतिरिक्त डाल्फिन आदि मछलियां, चिंपैंजी आदि पशु और ईगल (उकाब) आदि पक्षी भी आ जाते हैं, तब हमारे लिए इन तोतों को भी 'व्यक्ति' रूप में स्वीकार करते समय उनके रहन-सहन, पालन-पोषण और संरक्षण के संबंध में जानना रुचिकर होगा।

एक बार चार्ल्स ए. मुन्न ने देखा कि दक्षिण-पूर्वीय पेरू की तांबोपाटा नदी के १३० फुट ऊंचे माटी-कगार पर साढ़े तीन सौ के करीब लाल-हरे, गहरे लाल और नीले-पीले तोतों के रंग छिटके हुए हैं और वे उस ऊंचे कगार पर अपने लटकने के लिए जगहें बनाकर उसकी माटी चाट रहे हैं। जब उन्होंने यह देखा, तो उन्होंने जानना चाहा कि वे इस तरह माटी क्यों चाट रहे हैं। उन्होंने उस माटी के कगार से एक सौ फुट की दूरी पर घने पेड़ों के बीच लकड़ी की ऊंची मचान पर एक हजार फुट का एक चौरस घर बनाया, जिसमें भोजन-कक्ष, प्रसाधन-कक्ष और विज्ञान-कार्य-कक्ष थे। उन्होंने अपना यह घर किसी ऊंचे पेड़ पर इसीलिए नहीं बनवाया, क्योंकि अमेजान के घने जंगलों में पेड़ों पर कई प्रकार के कीड़े-मकोड़े और जीव-जंतु चलते-फिरते रहते हैं।

इस घर में रहकर चार्ल्स ए. मुन्न और उनके सहयोगी इन तोतों का अध्ययन करने लगे कि उनका भोजन क्या है ? वे माटी क्यों खाते हैं ? उनकी परिवार-संरचना कैसी है ? मादाएं अंडे कहां देती हैं ? नर और मादाएं मिलकर वे अपने बच्चों का पालन कैसे करते हैं ? आदि-आदि।

उन्होंने देखा, पूरे दिन तोतों के तांते वहां बंधे रहते हैं। कुल मिलाकर उनकी बारह किस्में वहां झुंडों में आती हैं। हरेक झुंड में नर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मादा के जोड़े बने रहते हैं । प्रत्येक किस्म का झुंड आधे मिनट तक माटी चाटकर दूसरी किस्म की झुंड के लिए रास्ता खाली कर देता है । इनमें लाल-हरे तोते सबसे बड़े हैं, उनका वजन लगभग डेढ़ किलो और सिर से पूंछ तक उनका नाप तीन फुट से भी अधिक है । उन तोतों से कुछ छोटे और हलके-गहरे लाल रंग के तोते हैं । उन दोनों के बाद नीले-पीले तोते आते हैं ।

उन्हें लगा, ये तोते नर और मादा का जोड़ा जीवनभर का साथी होता है । हां, उनमें से कुछ एक-दूसरे से तलाक लेकर अलग हो जाते हैं और पुनर्विवाह करते हैं । वे सदा ही झुंडों में दो-दो होकर उस माटी-कगार पर जाते हैं और माटी चाटते हैं । उन जोड़ों के साथ कभी-कभी उनके छोटे-छोटे बच्चे भी साथ होते हैं । वे छोटे-छोटे बच्चे भी खुद माटी काटकर खाते हैं । वे अपने मां-बाप के लाड़-प्यार से इतने बिगड़े हुए होते हैं कि वे उन पर चिल्ला-चिल्लाकर, हल्ला मचाकर खुद माटी चाटने का आसान रास्ता बना लेते हैं । कभी-कभी तो उनके मां-बाप अपने मुंह से उगलकर उनके मुंह में माटी के नन्हें-नन्हें ढेले डाल देते हैं ।

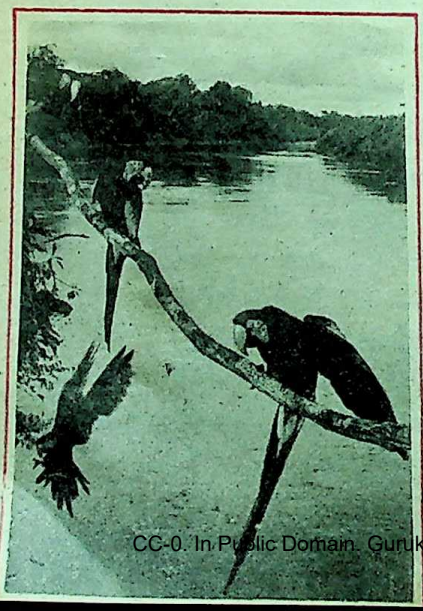

अनुशासन तोतों का

उन लगभग एक हजार तोतों की एक तिहाई ही एक समय पर माटी-चाट सकती हैं । हर आधे मिनट के बाद एक और तिहाई आती है और इस तरह तिहाइयों में फेर-बदल होता रहता है । जिस तिहाई की बारी आती है, वह आसपास के पेड़ों पर से चीख-पुकार करती हुई आती है । तब हवा में लाल, हरी, नीली, पीली चीखें गूंज उठती हैं ।

इतने में एक तोते को ऊपर आसमान में कोई उकाब उनके ऊपर झपटने को तैयार दिखायी दे जाता है तो, वह तत्काल चीख-चीखकर अन्य तोतों को चेतावनी देता है और सब के बचाव के लिए चक्रव्यूह बांधना शुरू कर देता है । बहुत-से तोते भाग खड़े होते हैं और कुछ तोते आसमान में उठकर शिकारी उकाब के ऊपर एक दायरा बना देते हैं । उकाब के ऊपर वे दायरा इसीलिए बनाते हैं कि उकाब नीचे पैठकर तो झपट सकता है, मगर ऊपर उठकर नहीं झपट सकता । फिर वे उस दायरे में रहकर उस उकाब पर इतना चीखते-चिल्लाते हैं कि उकाब जान बचाकर भाग खड़ा होता है ।

यह देखने के लिए कि इन तोतों का भोजन क्या है, चार्ल्स ए. मुन्न और उनके सहयोगियों ने उन घने जंगलों में दो मौसम बिताये । चारों ओर बिखरे हुए पत्तों पर, पेड़ों पर बैठे हुए तोतों के मुंह में क्या-क्या गिर रहा था, उसे देखा-जांचा । गिरी हुई गुठलियों पर उनकी चोंचों के निशान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

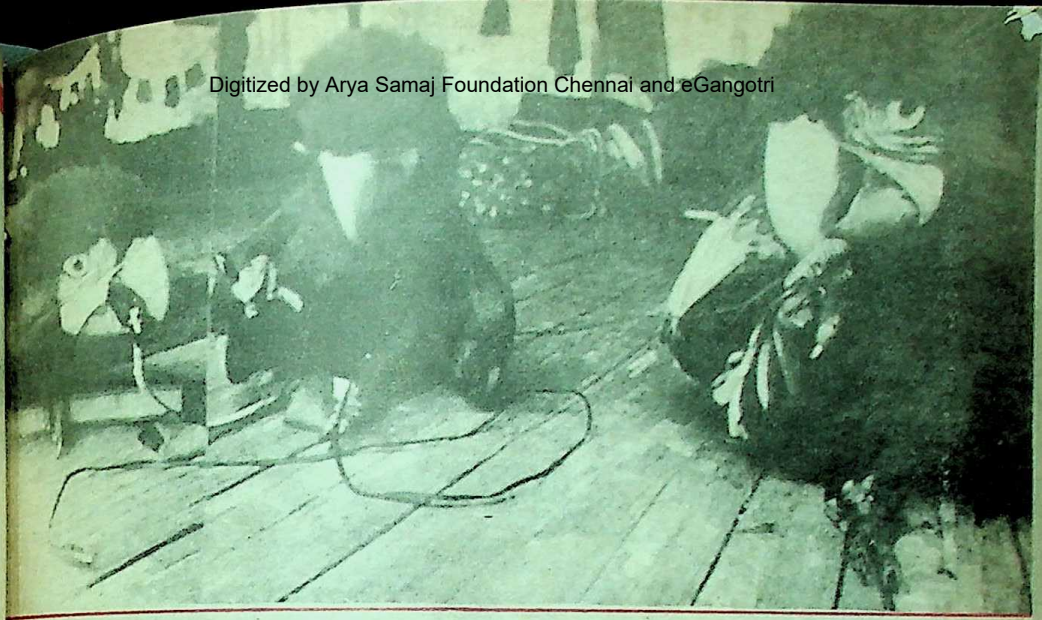

होते थे। पहले ये लोग अपना काम बड़ा ही चुपचाप किया करते थे। फिर ये तोते उन्हें पहचानने लगे और उनके सामने आने लगे। उन्होंने देखा, ये तोते जंगली फलों को अपनी चोंचों और पंजों से पकड़कर उनका गूदा काटकर फेंक देते हैं और उनके बीज फोड़कर खा लेते हैं। कभी-कभी वे फलों का गूदा, फूल और पत्ते भी खा जाते हैं। वैसे, फलों के बीज या उनकी गुठलियां ही उनका प्रिय भोजन है। बीज कितना ही सख्त क्यों न हो, वह उनकी मजबूत चोंच में आकर चटक उठता था। तोते केवल बीज ही क्यों खाते हैं जबकि कुछ बीज तो विषैले भी होते हैं। चार्ल्स ए. मुन्न ने कुछ बीजों को तो खुद खाकर देखा। उन्हें पहले तो वे बीज मीठे लगे, लेकिन जल्द ही उनकी जीभ जलने लगी और सूज गयी। अब उन्हें मालूम हुआ कि ये तोते उन विषैले बीजों को खाने के बाद कगार पर जाकर माटी क्यों चाटते हैं। क्योंकि, माटी में लवण और अन्य खनिज पदार्थ होते हैं, जो इन शाकाहारी तोतों को बीजों के विष को पचाने में सहायक होते हैं।

तोतों के घरों में

ये तोते जमीन से प्रायः सौ-सवा सौ फुट की ऊंचाई पर ही पेड़ों के कोटरों में घोंसले क्यों बनाते हैं। यह जानने के लिए चार्ल्स ए. मुन्न के समक्ष दो प्रश्न उठ खड़े हुए। एक यह कि वे उस ऊंचाई तक कैसे चढ़ें। दूसरे, यह कि अगर उस ऊंचाई तक पहुंच भी गये, तो कहीं तोते उन पर हमला न कर दें। सीधे-सीधे पेड़ पर चढ़ना खतरे से खाली न था क्योंकि, वृक्षों के तने और डाल-डालियों पर कई विषैले कीट-पतंगे सरकते रहते थे। अतः उन्होंने घोंसले के पास वाली मजबूत डाली पर एक रस्से की सहायता से झूला डाला और उस झूले में चढ़कर पेड़ के कोटर तक पहुंचे, जहां घोंसला था। वह डर रहे थे कि कहीं नर और मादा मिलकर उन पर हमला न बोल दें या फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

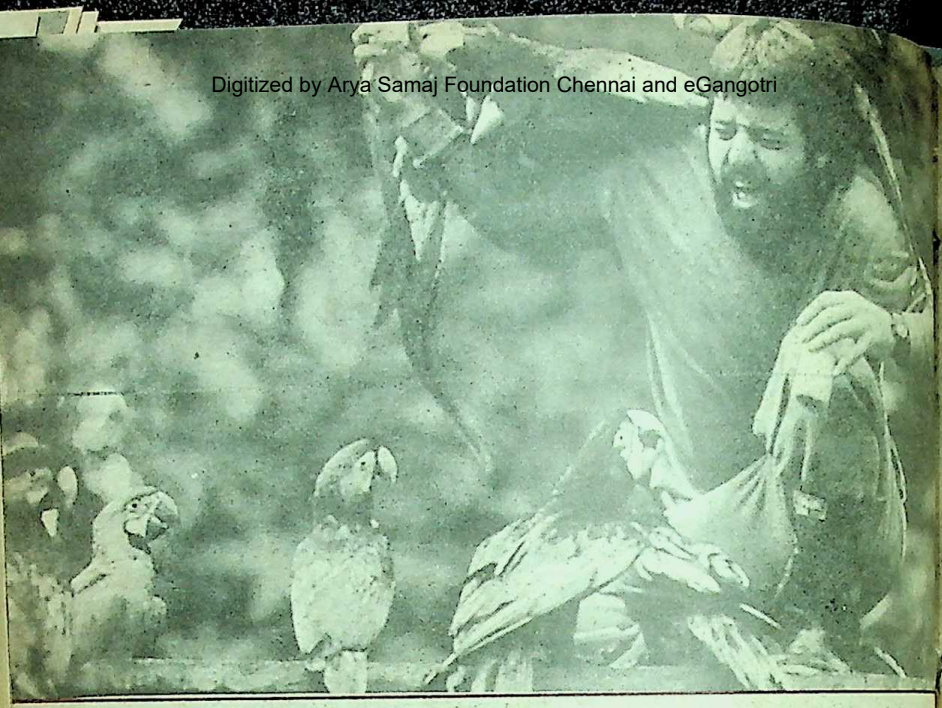

तोते अपनी जानी-पहचानी बुद्धिमता का प्रयोग कर उस झूले का रस्सा ही अपनी तीखी चोंच से न काट दें । पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ । ये तोते उन्हें देखकर पासवाली डाली पर जाकर खूब चीखने लगे । उन्हें चीखता देखकर उनका चूजा भी शोर मचाने लगा । चार्ल्स ए. मुन्न ने अपने कानों में जेब में से एक पेपर-नैपकिन निकालकर ठूंस लिया । खैर, कुछ देर बाद वे तोते शांत हो गये और शीघ्र ही वे आपस में हिल-मिल-से गये ।

आगे चलकर चार्ल्स ए. मुन्न और उनके सहयोगी उस रस्सेदार झूले की सहायता से हजारों बार कुल मिलाकर १४० घोंसलों तक ऊपर पहुंचे और तोतों के रहन-सहन को नजदीकी से देखा-परखा । एक घोंसले में कितने अंडे हैं, अंडों से जब चूजे बाहर निकलते हैं, तो उन चूजों का वजन कितना है और ये चूजे पल-पुसकर कैसे बड़े होते हैं ? उन प्राणि-वैज्ञानिकों की निगाह से कुछ भी छिपा नहीं रहा । उन्होंने पाया कि तोतों के एक सौ जोड़ों में से कोई दस-बीस जोड़े ही किसी एक साल में प्रजनन-क्रिया में प्रयत्नशील रहते हैं और ऐसे प्रयत्नों से केवल आठ-दस चूजे ही मिल पाते हैं । चूंकि ये तोते बहुत कम पैदा हो पाते हैं, इसीलिए अब पेरू से इनका निर्यात करना कानूनी जुर्म हो गया है ।

वैसे, नर और मादा एक-से लगते हैं । परंतु इनमें फर्क तब मालूम पड़ता है जब ये घोंसलों में अपना जीवन-यापन करते हैं । ये प्रायः दिसंबर के महीने में सहवास करते हैं । मादा दो अंडे देती है । वह चार हफ़्तों तक इन अंडों को सेती है । इन दिनों नर पक्षी बाहर जा-जाकर खाना जुटाता है । वह खाना अपने गले की थैली में निगलकर भर आता है और अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मादा के मुंह में उगल देता है । आगे चलकर नर और मादा दोनों मिलकर अपने चूजों के लिए खाना लाता है ।

अगर ये अंडे पाले या बरसात में नष्ट न हुए अथवा लंबी-लंबी चोंचवाले पक्षियों का शिकार न हुए, तो ये जनवरी में फूटकर चूजे बन जाते हैं । जिस दिन एक चूजा निकला, उसके पांचवें दिन दूसरा चूजा निकलेगा । पहले चूजे को बड़ा होने का यह फायदा मिलता है कि खाना पहले-पहल उसे दिया जाता है । उसके सहोदर दूसरे चूजे को खाना बच गया तो मिलता है, अन्यथा नहीं । यही कारण है कि अधिकतर सहोदर मर जाते हैं । नर और मादा मरे हुए सहोदर को घोंसले से बाहर धकेल देते हैं । अब ये तीनों घोंसले में सुख से रहते हैं । इन्हें बाहर के अन्य तोतों से कोई सरोकार नहीं होता । ये आपस में ही लगातार टिटियाते-बतियाते रहते हैं ।

बड़े चूजे के पंख तीन-चार महीनों के अंदर निकलना शुरू होते हैं । फिर तो वह इतना बड़ा दिखता है, जितने बड़े उसके मां-बाप होते हैं । ये मां-बाप उस बड़े चूजे को घोंसले से बाहर निकलकर आत्म-निर्भर बनाने के लिए उसके खाने की मात्रा में कमी कर देते हैं, ताकि वह उनके साथ जाकर अपना खाना खुद जुटाए । कुछ ही दिनों में वह इधर-उधर की डालियों पर गिरता-पड़ता उड़ना सीख जाता है और अपने मां-बाप के साथ एक घंटे में बीस मील की रफ़्तार तय करता है ।

दो या तीन साल की उम्र में ये तोते जवान हो जाते हैं और अपने साथी की तलाश में लग जाते हैं । प्राणि-वैज्ञानिकों को अनुभव हुआ कि तोतों की प्रजनन-दर इसलिए भी कम है कि इनके लिए साफ-सुथरे घरों या घोंसलों की भारी कमी है । पेरू के घने जंगलों में एक वर्ग मील के अंदर रहने लायक एक-दो ही घोंसले होते हैं । फिर उन एक-दो घोंसलों को हथियाने के लिए सभी किस्मों के तोतों में होड़-सी लग जाती है । आजकल वहां घोंसलों की संख्या बढ़ाने के लिए पी.वी.सी. पाइपों को ऊपर से थोड़ा जलाकर, उन्हें लकड़ी का-सा दिखावा देकर उनमें बनावटी घोंसले बनाये जाते हैं और उन्हें पेड़ों पर सौ-डेढ़ सौ फुट की ऊंचाई पर टांगा जाता है । इससे पेरू के जंगलों में तोतों की संख्या बढ़ने लगी है ।

अब वहां पर्यावरण पर्यटन उद्योग के तौर पर उस रमणीय वादी का विकास हो रहा है । वहां अठारह लाख वर्ग एकड़ भूमि के राष्ट्रीय उद्यान का निर्माण हो रहा है, जहां दुनियाभर के पर्यटक आएंगे और इन रंगीन तोतों को तांबोपाटा नदी के कगार की माटी चाटते हुए देखेंगे ।

प्रस्तुति—राज जोतवाणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भोलापन

● नीला पद्मनाभन

मैं आफिस से घर लौट रहा था । गली में कदम रखा ही था कि मेरे पड़ोसी कृष्णास्वामी ने आगे बढ़कर मेरा रास्ता रोक लिया । एक पत्र मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहने लगे, 'वीना के स्कूल से आया है, पढ़ दीजिए प्लीज ।'

मैंने पत्र पढ़ा । वीना सभी विषयों में फेल थी । अब वह जब तक अगले इंतहान में पास नहीं हो जाती, उसे वार्षिक परीक्षा में बैठने नहीं दिया जाएगा । साथ ही उसे स्कूल से भी निकाला जा सकता है । पत्र का सारा मजमून मैंने उन्हें बता दिया । मुझे अच्छी तरह मालूम था कि कृष्णास्वामी पत्र का मजमून जानने के लिए मेरे पास नहीं आये हैं । वह तो अब तक कई अंगरेजी जाननेवालों से यह पत्र पढ़वा चुके होंगे । उसका मुझसे पत्र पढ़वाने का कोई और ही कारण रहा होगा । और मेरी बात सच निकली ।

"यदि आप उसको पढ़ने में मदद कर दें, रोज नहीं, हफ्ते में दो या तीन दिन —जब भी आपके पास वक्त हो, मैं उसे आपके पास भेज दूं । उसे ट्यूशन पढ़वाने की क्षमता मुझ में नहीं है । क्या आप मुझ पर इतना अहसान करेंगे ?"

मुझे उसकी 'मदद' करनी है । यह ट्यूशन नहीं है । इसका मतलब है कि मुझे रुपये-पैसे की उम्मीद नहीं करनी चाहिए क्योंकि, वह दे नहीं सकते । वह उसे मेरे पास भेज देंगे, जब मेरे पास वक्त होगा । इसमें अब मेरे कुछ सोचने-विचारने का समय ही कहां था । मुझे तो उसे पढ़ाना ही पड़ेगा ।

कृष्णास्वामी आखिर करें भी क्या ? चालीस से ऊपर के होंगे । फैशन की मारी एक अदद बीवी है उनकी... ऊपर से चार-चार लड़कियां । वीना, सबसे बड़ी बेटी, स्कूल में पढ़ती है । वहां अंगरेजी माध्यम है, जिससे बिना किसी सहायता के उसे पढ़ने में मुश्किल आ रही होगी ।

पत्र लौटाते हुए मैंने कहा, "ठीक है, उसे मेरे पास भेज देना ।"

अगले दिन जैसे ही मैं आफिस से घर लौटा । एक तीखी आवाज मेरे कानों में पड़ी, 'गुड मार्निंग सर !' मैं मुड़ा और वीना को देखने लगा ।

वह बारह से कुछ कम की थी, लेकिन शरीर भरा-पूरा था । देखकर कोई भी उसे तेरह या चौदह की समझ सकता था । छरहरे बदन की थी । अभी साड़ी पहनने की उम्र नहीं थी, इसलिए नीले रंग के ब्लाउज और घाघरे में थी । भोला-भाला चेहरा. रेशमी बाल । नीली,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

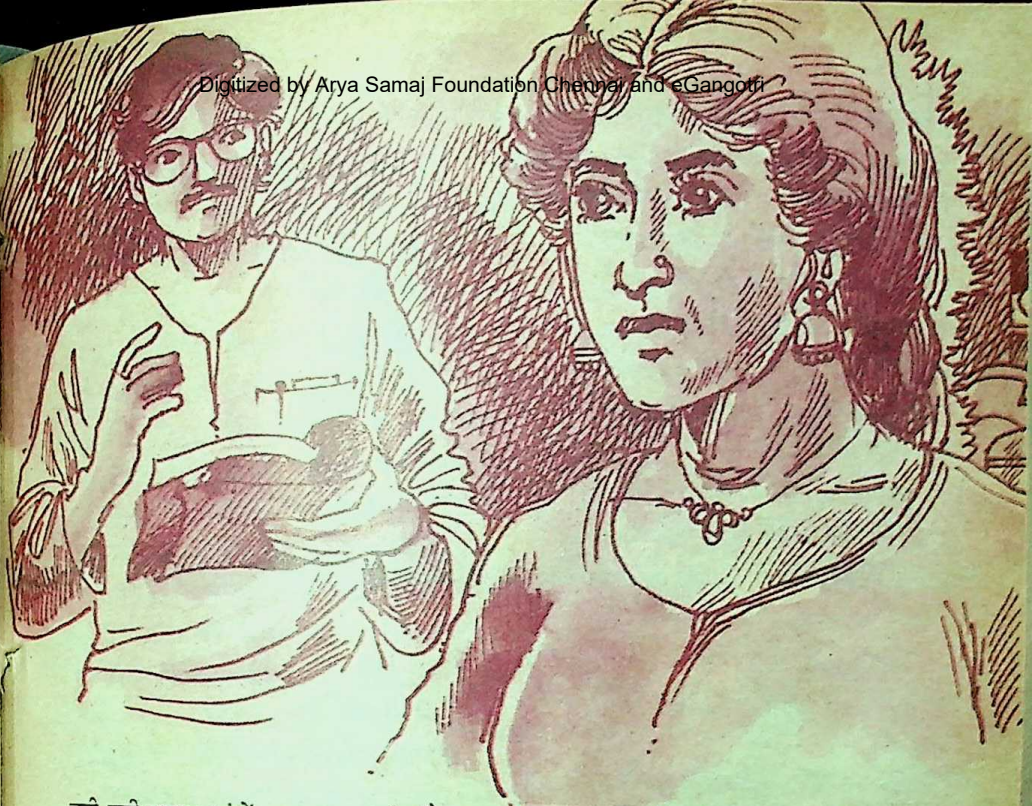

बड़ी-बड़ी मासूम आंखें । गाल गुलाबी और होठ सुर्ख लाल थे । मुझे विश्वास हो गया कि वह एक 'अच्छी' लड़की है ।

"सर, क्या हम पढ़ना शुरू करें ?" वह उत्साहित होते हुए बोली ।

"हां, हां," मैंने उत्तर दिया ।

और इस तरह मैंने उसे पढ़ाना शुरू कर दिया । वह बुद्धू नहीं थी । सातवीं में पढ़ती थी । उसका दिमाग तेज था । जो कुछ उसे पढ़ाया जाता, वह सब जल्दी समझ जाती, परंतु वह कुछ थोड़ा शरारती थी । बेवजह की बातों में उसका ध्यान अकसर चला जाता था ।

शुरू में वह हफ्ते में दो या तीन बार आती थी, लेकिन बहुत जल्द ही, हफ्ते के सातों दिन आने लगी । उसने मेरे कमरे पर आधिपत्य जमा लिया । अब मुझे न तो अखबार पढ़ने का समय मिलता और न ही आराम करने का ।

उसकी चंचल अंगुलियां मेरे कमरे की प्रत्येक वस्तु के साथ छेड़खानी करती रहती थीं । मेरा बुकशेल्फ, ड्राअर, ड्रेसिंग टेबल —सब कुछ उसके शरारती हाथों का निशाना बनते थे । लगता था जैसे उसके माता-पिता अपने घर की चीजों को छेड़खानी से बचाने के लिए उसे मेरे पास ट्यूशन के बहाने भेज दिया करते हों । अब वह मेरे घर को अपने घर-जैसा ही समझने लगी थी ।

वह मेरे कमरे की प्रत्येक वस्तु को अपनी मनमर्जी से छेड़ती रहती थी और मुझे इतना साहस नहीं होता कि मैं उसे डांट सकूं । यदि मैं उसे कुछ कहता तो वह अपना चेहरा गुस्से से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुला लेती और रोने लगती । लड़की का स्वभाव इस तरह का नहीं होना चाहिए । एक या दो बार वह गृहकार्य करके नहीं लायी । मैंने उसे डांटा । तब मुझे उसके गुस्से का अहसास हुआ । इसलिए अब मैं उसे बड़ी शालीनता और तरीके से समझाता । मैं नहीं चाहता था कि वह रोकर मेरे लिए कोई तमाशा खड़ा करे । लोग सोचेंगे शायद, मैं उसके साथ क्रूरता से पेश आता हूं ।

कृष्णास्वामी अकसर मुझसे पूछते रहते, "सर, क्या वह अपनी पढ़ाई ठीक से कर रही है ? वह बहुत शरारती है, यदि वह लापरवाही दिखाए तो आप उसे मारने से मत चूकना ।"

"इसकी कोई जरूरत नहीं है । हमें बच्चों को मारना नहीं चाहिए, इससे कोई फायदा नहीं होता ।"

"मैंने तो उसे आपके सुपुर्द कर दिया है, यह अब आपका दायित्व है कि वह परीक्षा में उत्तीर्ण हो ।" कहकर वह राहतभरी सांस लेते और चले जाते ।

वह लड़की वास्तव में अद्भुत थी —भोली-भाली, छोटे बच्चे की तरह । मुझे उसका साथ भला लगने लगा था, इसलिए मैं उसे जोशो-खरोश से पढ़ाने लगा ।

* * *

एक दिन वीना ने मुझे बताया कि कल उसका हिसाब का परचा है । मैं तल्लीनता से उसे पढ़ा रहा था । एक ही तरह के कई सवाल समझाने के बावजूद वह गलतियां करती जा रही थी । मुझे गुस्सा आ गया कि कितनी बार उसे समझाना पड़ेगा कि दशमलव कहां लगाना है । मुझे लगा कि वह जानबूझकर शरारत कर रही है ।

"बुद्धू कहीं की ! इधर आ," मैं चिल्लाया ।

मेज की दूसरी तरफ से भागकर वह मेरे पास आयी और सटकर खड़ी हो गयी । लगभग मुझे छूते हुए वह झुकी । कापी में झांकते हुए शरारत से बोली, "सर, क्या फिर गलत हो गया ?"

उसका बायां गाल और कान लगभग मेरे चेहरे को छू रहे थे । उसके बाल मेरी गोद में थे । उसके बालों के फूल और चेहरे का पाउडर दोनों मिलकर एक नशीली सुगंध फैला रहे थे । अचानक उसने चेहरा घुमाया और मेरी तरफ देखा । मैं अनुमान नहीं लगा पाया कि उसकी आंखों में भोलापन है या शरारत ।

वह वहीं तक सीमित नहीं रही । मैं अनुमान नहीं लगा पाया कि उस बेवकूफ लड़की के दिमाग में क्या था ? एक झटके से उसने मेरे हाथ से कापी छीनकर मेज पर फेक दी और मेरी गोद में आ बैठी । उसने मेरे हाथों को कसकर पकड़ लिया और मेरी आंखों में आंखें डालते हुए बोली, "सर, क्या आप मुझसे शादी करोगे ? मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं ।"

मैं हक्का-बक्का रह गया । मेरे पसीने छूटने लगे । सिर चकराने लगा । वह सुगंध, वह स्पर्श —भयानक मोहपाश लगे मुझे । क्या मैं संयम का लबादा उतार दूं और केवल एक जानवर बन जाऊं ? मैं समझ नहीं पाया क्या करूं ?

क्या मैं केवल हाड़-मांस का बना हुआ वह प्राणी हूं, जो एक लड़की के कोमल स्पर्श का इंतजार कर रहा था ? मेरा वह आत्म-संयम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह योग्य को शादी और सेक्स के विषय में जानकारी होनी चाहिए, लेकिन इसके साथ ही यह भी बहुत जरूरी है कि कच्ची उम्र के बच्चों को इस ज्ञान से बचाकर रखना चाहिए । बड़ों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए ।

कहां चला गया जिस पर मुझे नाज था ? मैंने अंतर्रात्मा की आवाज सुनी । आत्मविश्वास लौट आया । मैंने उसे गोद से उठाकर खड़ा कर दिया । मैं उठ खड़ा हुआ और बोला, "तुम घर जा सकती हो । आज के दिन के लिए इतनी पढ़ाई काफी है ।" और उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही मैंने कमरे में जाकर दरवाजा अंदर से बंद कर लिया ।

मैं उसकी सिसकियां सुन रहा था । वह घर नहीं गयी । आखिर, कब तक मैं यह सब बर्दाश्त करता ? उसकी सिसकियों ने मुझे पिघला दिया । जो कुछ उसने थोड़ी देर पहले किया था, उसे यदि कोई देख लेता, तो वह निश्चय ही यह समझता कि मैं उसके भोलेपन का फायदा उठा रहा हूं । यदि कोई दूसरा मेरी जगह पर होता तो मैं भी यही सोचता ।

बेचारी ! क्या वह अपने प्रश्न का मतलब समझती है ? आखिर, उसने ऐसा क्यों किया ? क्या स्कूल में खराब लड़कियों की संगति का यह असर है ? कुछ भी हो, मुझे उसकी इस मूर्खता को नजरअंदाज कर देना चाहिए ।

मैं दरवाजा खोलकर बाहर निकला । उसे रोता देखकर मेरा मन पसीज गया । ऐसी दिव्य कोमलता के आगे कोई भी तुच्छ ख्याल कैसे अपना सिर उठा सकता है ? वह शायद, अपने किये पर शर्मिंदा थी और मुझसे आंख नहीं मिलाना चाहती थी । मेज पर अपना सिर छिपाये रो रही थी । मैं उसके पास गया, हौले से उसकी पीठ थपथपायी ।

"वीना, यह सब क्या है ? तुम रो क्यों रही हो ? क्या हुआ है ? क्या तुम अच्छी लड़की नहीं हो ? जाओ, मुंह धोकर आओ । हमें वह पाठ खतम करना है । यदि किसी ने तुम्हें रोते देख लिया, तो गलत अर्थ लगाएगा ।"

मैं अपनी बुजुर्गाना आवाज पर हैरान था ।

उसका रोना जारी रहा । धीरे से उसने सिर उठाया, मेरी तरफ देखा । लगातार रोने से उसकी आंखें लाल हो गयी थीं । चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था ।

वह मुझसे लगभग पंद्रह साल छोटी थी । मुझे इतना कठोर रुख नहीं अपनाना चाहिए था । मुझे उसे तरीके से समझाना चाहिए था और उसे उसकी गलती का अहसास कराना चाहिए था ।

"बस, बहुत हो गया, इधर आओ । शाबाश, तुम एक समझदार लड़की हो," यह कहकर मैंने उसके हाथ पकड़े और उसे वाशबेसिन के पास ले गया । मैंने उसका मुंह धुलाया ।

"वीना, यह सब क्या है ? तुम्हें इस तरह नहीं रोना चाहिए था । यदि तुम्हारी छोटी बहनें तुम्हें रोता देख लें, तो वे तुम पर हंसेंगी । यदि तुम्हारे माता-पिता देख लें, तो वे सोचेंगे कि मैंने तुम्हें बुरी तरह पीटा है ।" मैंने उसका चेहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तौलिए से पोंछा और उसके बाल संवार दिये। वह ऐसी लग रही थी जैसे धरती वर्षा की बौछारों के बाद चमक उठती है। हम अपनी-अपनी जगह पर आकर बैठ गये। किताब खोलकर पढ़ने में मशगूल हो गये।

* * *

अब वह बड़े ध्यान से पढ़ रही थी। कोई गलती भी नहीं कर रही थी। जब विद्यार्थी अच्छी तरह पाठ समझ लें और उन्हें अच्छी तरह याद कर लें तो अध्यापक को अत्यधिक खुशी मिलती है।

मुझे समय का पता ही नहीं चला। साढ़े सात बज चुके थे। मेरा होटल जाने का समय हो गया था। यदि मैं देर से जाऊंगा, तो हो सकता है खाना न मिले। मैंने पढ़ाना बंद कर दिया। मेज पर फैली किताबें समेटकर वीना चलने लगी।

"वीना, तुम्हें परीक्षा में अच्छे नंबरों से पास होकर दिखाना है। क्या तुम ऐसा नहीं सोचती कि यह मेरे और तुम्हारे दोनों के लिए गर्व की बात होगी ?"

वीना ने सिर हिलाया और चल दी। दरवाजे तक गयी और फिर लौट आयी। मेरे सामने आकर खड़ी हो गयी और बोली, "सर, जो कुछ भी मैंने कहा था, उसके लिए मैं माफी चाहती हूं। आप तो एक बड़े इंजीनियर हो, मैं भला आपके योग्य कहां, मुझे यह पता होना चाहिए था।"

वह एक समझदार औरत की तरह बात कर रही थी, लगभग फिल्मी हीरोइन के अंदाज में। मुझे हंसी आ गयी। साथ ही मैं हैरान भी रह गया उसकी अक्ल पर। पर मुझे लालच नहीं करना था। मेरा आत्मसंयम और स्वभाव मुझे इस लालच से रोकने में पूर्णतया समर्थ थे।

"वीना, इधर आओ। मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूं।"

वह हिचकिचाते हुए मेरे करीब आयी। वह बिलकुल बच्ची लग रही थी —एक देवी की तरह। किसने इसका दिमाग खराब कर दिया ? मैंने धीरे से उसका हाथ पकड़कर उसे अपने करीब बैठाया और मुसकराते हुए पूछा, "किसने तुम्हें इस तरह बोलना सिखाया है ? ये बातें तुम्हें किसने सिखायीं ?"

वह मेरी तरफ एकटक देख रही थी। यह उचित नहीं था कि मैं उसे इसी तरह छोड़ देता। उम्र के इस नाजुक मोड़ पर, जब कोई किसी बात को समझने के लिए बहुत नासमझ होता है, किसने इसे शादी और प्यार के बारे में बता दिया ? कौन वह असामाजिक तत्व थे, जो बच्चों की मनोदशा से अनभिज्ञ थे ? यह एक ऐसा मसला था जिस पर सावधानी से सोच-विचार करना था। विवाह योग्य को शादी और सेक्स के विषय में जानकारी होनी चाहिए, लेकिन इसके साथ ही यह भी बहुत जरूरी है कि कच्ची उम्र के बच्चों को इस ज्ञान से बचाकर रखना चाहिए। बड़ों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

"वीना, तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया। मैं तुमसे नाराज नहीं हूं। यदि मैं तुमसे नाराज होता, तो क्या मैं तुम्हें फिर से पढ़ाता ? क्या मैं इतने प्यार से तुमसे बात करता ? शाबाश, मेरी बात का जवाब दो। यदि तुमने सही बात बता दी तो कल आफिस से आते हुए मैं तुम्हारे लिए बिस्कुट लाऊंगा। बताओ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसने तुम्हें इस तरह की बात सिखायी ?''

उसने मेरी ओर देखा और फिर अचानक बोली, ''बड़ा पैकेट या छोटा ?''

''बड़ा ।'' मैंने जवाब दिया । लगा, शरारती दिमाग फिर से काम करने लगा है । बेचारी ! आखिर है तो अभी वह बच्ची ही ।

''सर, आप कुछ नहीं जानते, आप बिलकुल बुद्धू हो । क्या यह जरूरी है कि कोई ये बातें सिखाये ? क्या आप सोचते हो कि मैं अभी बच्ची ही हूं ?''

''नहीं, तुम तो दादी हो, बच्ची थोड़े हो ? तुम्हें अभी शादी के बारे में नहीं सोचना चाहिए । तुम्हें ठीक से पढ़ना चाहिए । जब तुम बड़ी हो जाओगी, तब शादी के बारे में सोचना ।''

''सर, आप क्या जानते हो ? लगता है आप कुछ नहीं जानते । मेरी सभी सहेलियां अपने-अपने पति के बारे में बातें करती हैं । आशा कल ही शेखी बघार रही थी कि उसका होनेवाला पति मैडिकल का छात्र है । आशा के माता-पिता ने आशा को बताया है कि वह डाक्टर बननेवाला है, यदि तुम बेवकूफ बनी रही तो वह किसी ओर से शादी कर लेगा । इसलिए ध्यान से पढ़ो और बी.ए. या एम.ए. कर लो । क्या आप कहना चाहते हैं कि यह सब बकवास है ?''

मुझसे उसकी बात का जवाब देते नहीं बना ।

''जब सभी अपने-अपने भावी पति के बारे में शेखी बघारती हैं कि वह डाक्टर, इंजीनियर और कलैक्टर होगा, तो मुझे ईर्ष्या होती है । मैं उन्हें बता देती हूं कि मैं इंजीनियर से शादी

करूंगी । हां, मैं आपके बारे में सोच रही थी, सर ।''

वह शरमा गयी । उसने चेहरा अपने हाथों से छुपा लिया । मैं हैरान रह गया कि कैसे तुच्छ-सी घटनाएं भी कोमल हृदय पर गहरी छाप छोड़ जाती हैं ।

''बिना मेरी सहमति पाये, कैसे तुम अपनी सहेलियों को कह देती हो कि मैं तुम्हारा पति बनूंगा ?''

''सर, आप मुझे पसंद नहीं करते ? मैं सुंदर नहीं हूं ? है न ?''

''वीना, तुम सुंदर हो । मुझे तुम्हारी खूबसूरती अच्छी लगती है ।''

''फिर क्या आपत्ति है ? हम गरीब हैं । हम अच्छा दान-दहेज नहीं दे सकते । मुझे लगता है यही कारण होगा ।''

''ओह ! कैसी बातें करती है । इस तरह के विचार तुम्हारे दिमाग में आये कैसे ?''

उसका भोला-भाला चेहरा मुझे सताने लगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, नहीं । यह बात नहीं है । तुम अभी से शादी के बारे में क्यों सोचती हो ? जब तुम बड़ी हो जाओ तब सोचना ।"

"जब तक मैं बड़ी होऊंगी, तब तक आप किसी दूसरी से शादी कर लोगे । इसीलिए मैंने आपसे अभी पूछा था ।"

मैं उस बात का उत्तर नहीं दे सका, लेकिन उत्तर तो मुझे देना ही था ।

"जब तुम बड़ी हो जाओगी, तब तक मैं बूढ़ा हो चुका होऊंगा । क्या कोई लड़की बूढ़े से शादी करती है ?"

"यह झूठ है । यह झूठ है । आप मुझे धोखा दे रहे हैं ।" वीना ने घृणा से कहा । शायद, उसने सोचा होगा कि मैं हमेशा जवान बना रहूँगा ।

"मेरे स्कूल में, जैसे ही छुट्टी की घंटी बजती है, आप जितना लंबा एक आदमी कार में आता है और हमारी मैडम राधामोनी को बाहर ले जाता है । वे एक-दूसरे को प्यार करते हैं और शादी करनेवाले हैं । जब वे कार में जाते हैं तो मुसकराते हुए चहक-चहककर ढेर-सी बातें करते हैं । सर, जब आपकी शादी होगी, तब क्या आप कार खरीदोगे ? खरीदोगे न !"

धीरे-धीरे मुझे समझ आया कि कैसे इसके नाजुक दिमाग में इस तरह के विचार आये । परंतु उसके विचार मुझे काल्पनिक नहीं लगे । माता-पिता द्वारा की गयी बातें, लड़कियों द्वारा अपने भावी पति की शेखी मारना, अध्यापिकाओं का व्यवहार —सबने मिलकर, इस छोटी उम्र में, उसके अंदर साथी की इच्छा जगा दी है, जो प्रत्येक व्यक्ति के अंदर दबी रहती है ।

"तो तुमने सब कुछ स्कूल में सीखा ? है न !"

मैं बात की जड़ तक जाना चाहता था । मैंने अभी भी कुरेदना नहीं छोड़ा । मैं अभी मूल बात तक नहीं पहुंचा था, अभी किनारे पर ही था ।

उसने इधर-उधर चोर नजरों से देखा । तब वह मेरे बहुत नजदीक आयी । उसने मेरा सिर अपनी तरफ किया और मेरे कान में फुसफुसायी, "सर, आप किसी को बताना मत । एक बहुत ही भेद की बात है ।"

"नहीं, नहीं, मैं किसी को कुछ नहीं बताऊंगा ।" उसने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया । मैंने उसका हाथ छूकर वादा किया कि मैं किसी को नहीं बताऊंगा । उसने दुबारा इधर-उधर देखा और फिर मेरे कान में फुसफुसायी, "जैसे ही रात के दस बजते हैं, मेरे मम्मी-पापा यह सोचकर कि हम सो चुके हैं, उठ जाते हैं... और... सर, आगे मैं बता नहीं पाऊंगी ।"

अनुवाद : शांता ग्रोवर

पिछले छह सालों में मैसेच्यूसेट्स राज्य के बोस्टन महानगर में दर्जनों कंपनियों ने समर्पित, अनुभवी, निष्ठावान और स्वस्थ व्यक्तियों को रोजगार दिया है और उनके काम से संतुष्ट हैं । इन सभी व्यक्तियों के बारे में एक बात समान है—वे सभी पचपन साल से अधिक आयु के हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवर्ग विद्या

● डॉ. सुधा पांडेय

प्राचीन काल के अनेक अभिनंदनीय चरित्रवाले राजाओं में जानश्रुति पौत्रायण का नाम अपनी उदारता के कारण अति प्रसिद्ध हो गया था । वह प्रभूत मात्रा में दान देते थे और उनके पूरे राज्य में जगह-जगह धर्मशालाएं थीं, जहां सदावर्त चलता रहता था । उनकी प्रबल इच्छा रहती थी, सभी लोग आकर उनका आतिथ्य ग्रहण करें । अनेक ऋषियों-मुनियों की सेवा वह स्वयं ही करते थे । विनयशील निरभिमानी, सदाचारी और धर्मात्मा जानश्रुति का तपोपूत तेज द्युलोक तक फैला था, मानो इस रूप से वह मर्त्य लोक में स्वर्ग का सुख भोग रहे थे और उनके राज्य में सर्वत्र सुख-शांति व्याप्त थी ।

एक दिन राजा ब्रह्म विद्या के चिंतन में लीन एकांत में विचरण कर रहे थे, तभी आकाश में उड़ते हुए हंसों ने राजा के तेज से प्रभावित होकर परस्पर वार्तालाप प्रारंभ कर दिया । राजा विस्मित हो उठे और ध्यानपूर्वक हंसों की बातें सुनने लगे । उन्होंने स्पष्ट सुना, सबसे पीछेवाला हंस आगेवाले हंस को संबोधित करके कह रहा था— 'अरे भल्लाक्ष ! जानश्रुति पौत्रायण का तेज सूर्य ज्योति के समान आकाश में चमक रहा है उससे बचकर जाना, नहीं तो भस्म हो जाओगे ।' पीछे आनेवाले हंस को भल्लाक्ष ने उत्तर दिया, 'तुम इस साधारण राजा के दानी स्वरूप से प्रभावित होकर इस प्रकार कह रहे हो मानो वह गाड़ीवान रैक्व हो, अभी तुमने रैक्व को देखा नहीं है ?' उस हंस को जिज्ञासा हुई और उसने पूछा कि 'भाई मैंने सचमुच उस गाड़ीवान

संवर्ग विद्या प्राण विद्या का नाम है । जिस प्रकार 'क' वर्ग में ख, ग, घ, ङ सिमट जाते हैं उसी तरह 'सं-वर्ग' का अर्थ है वाक, चक्षु, श्रोत्र का प्राण वर्ग में सिमट जाना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रैक्व को नहीं देखा है यह ऋषि कौन है और कैसा है ? क्या वह राजा जानश्रुति से भी बढ़कर दानी और धर्मात्मा है ?' भल्लाक्ष ने बताया कि 'देखने में सरल और सीधा किंतु वह रैक्व अध्यात्म में इतना ऊंचा है कि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी उनके समक्ष सिर झुकाते हैं, सारा त्रैलोक्य मानो उसका है । जिस प्रकार द्यूत क्रीड़ा में कृत के पासे के सामने दूसरों के पासे न्यून हो जाते हैं और दांव लगाकर जुआरी सभी को जीत लेता है इसी प्रकार इस राज्य की प्रजा जो भी सत्कर्म करती है, उसका पुण्य रैक्व को मिल जाता है । रैक्व जिस विद्या को जानता है उसे कोई नहीं जान पाया है ।'

हंसों के इस वार्तालाप से जानश्रुति स्तब्ध रह गये और उन्हें यह भी विश्वास हो गया कि हंस अपने नीर-क्षीर विवेकी स्वभाव के कारण शुद्धमना होकर अपने मंतव्य प्रकट करते हैं । जानश्रुति पौत्रायण का अंतर्मन गाड़ीवान ऋषि रैक्व के बारे में जानने के लिए उत्कंठित हो उठा, क्योंकि अभी तक जानश्रुति की धारणा थी कि पृथ्वी के सभी महात्मा उनके द्वार पर आकर आतिथ्य लाभ कर चुके हैं ।

राजा ने विचार किया कि अवश्य रैक्व के गुण प्रशंसनीय होंगे और उन्होंने यह भी निश्चय किया कि मुझे उनका दर्शन अवश्य करना चाहिए । दूसरे दिन जैसे ही चारणों ने राजा की स्तुति प्रारंभ की, राजा ने उन्हें रोककर कहा कि 'तुम लोग मेरी स्तुति इस प्रकार कर रहे हो जैसे मैं गाड़ीवान ब्रह्म ज्ञानी रैक्व हूं ।' चारणों ने ब्रह्मज्ञानी रैक्व के बारे में अपनी जिज्ञासा प्रकट करते हुए राजा से पूछा कि 'हे महाराज ! यह गाड़ीवान रैक्व कौन है ? जिससे आप-जैसे पुण्यात्मा भी प्रभावित हैं ।' राजा ने हंसों की बात चारणों को बतायी । पौत्रायण का अंतर अभी भी तेजस्वी रैक्व के बारे में पता लगाने के लिए विचलित था । राजा ने पूजा-स्नान आदि से निवृत्त होकर आदेश दिया कि 'महामुनि रैक्व की खोज करो । यदि वह कहीं मिल जाएं, तो उन्हें रथ पर बैठाकर सादर यहां ले आओ ।'

राजा ने चारों दिशाओं में अपने चर दौड़ाये । रैक्व की खोज में वे सभी लोग राजमार्गों उपनगरों, मंदिरों, शिवालयों, घरों और झोंपड़ियों तक में घूमते फिरे, किंतु कहीं किसी से महात्मा रैक्व के बारे में कोई सूचना नहीं मिल सकी । निराश होकर सभी चर और सारथी लौट आये और महाराज जानश्रुति से निवेदन किया— ' महाराज हमने सारे पृथ्वी तल पर भ्रमण करके ढूंढ़ा है कहीं भी गाड़ीवान महात्मा रैक्व के बारे में पता नहीं लगा सके । संभव है हंसों की बात झूठी हो, क्योंकि इतने बड़े प्रतापी महात्मा को पूरे देश में कोई न जानता हो यह आश्चर्य की बात है ।' महाराज जानश्रुति यह सुन के भी विरत नहीं हुए वरन उन्होंने सारथी से कहा कि 'रैक्व-जैसे वीतराग और निरभिमानी महात्मा की तलाश वहां करो जहां एकांत मनस्वी तपस्या करते रहे हैं । संभवतः उनका निवास किसी पर्वत गुफा या एकांत अरण्य में हो । उनकी तलाश वहां करो जहां ब्राह्मणों की तलाश की जाती है ।'

सारथी पुनः रैक्व की खोज में चल पड़ा । राजधानी के मार्ग को छोड़कर जैसे ही वह जंगल के मार्ग की ओर मुड़ा बीच में उसे एक गाड़ी खड़ी हुई दिखायी दी । उस गाड़ी में न तो बैल थे और न ही कोई सामान रखा था । गाड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास पहुंचकर सारथी ने देखा कि गाड़ी के नीचे एक परम तेजस्वी महात्मा बैठे अपना पेट खुजला रहे थे, उनके बाल अस्त-व्यस्त थे और बालों की जटाओं में लता बंधी हुई थी । सारथी ने मन में निश्चय किया कि अवश्य ही यह गाड़ीवान ऋषि रैक्व हैं । उसने विनम्रतापूर्वक उनके पास जाकर पूछा कि 'भगवन् क्या आप ही गाड़ीवान रैक्व हैं ?'

'हां मेरा ही नाम रैक्व है' इतना कहकर वह पहले की भांति अपना पेट खुजाते हुए दूसरी तरफ देखने लगे । रैक्व के तेज से अभिभूत सारथी और अधिक प्रश्न नहीं कर सका । वह राजा को समाचार देने चल पड़ा लौटते हुए सारथी लगातार मन में चिंतन करता रहा कि इस तरह के विचित्र व्यक्ति उसने पहली बार ही देखे जो पूरी बात का उत्तर दिये बिना ही दूसरी ओर देखने लगे थे । वह यदि महात्मा-जैसे थे, तो किसी पागल से भी कम नहीं थे, क्योंकि जिस निरपेक्षभाव से वह गाड़ी के नीचे बैठे थे, वह आश्चर्य उत्पन्न करनेवाली बात थी । सारथी ने राजभवन पहुंचकर जानश्रुति को रैक्व के मिल जाने की सूचना दी । जानश्रुति यह समाचार पाकर अति प्रसन्न हुए और उनके दर्शन प्राप्त करने की विधिवत तैयारी में लग गये ।

हंसों के इस वार्तालाप से जानश्रुति स्तब्ध रह गये और उन्हें यह भी विश्वास हो गया कि हंस अपने नीर-क्षीर विवेकी स्वभाव के कारण शुद्धमना होकर अपने मंतव्य प्रकट करते हैं । जानश्रुति पौत्रायण का अंतर्मन गाड़ीवान ऋषि रैक्व के बारे में जानने के लिए उत्कंठित हो उठा, क्योंकि अभी तक जानश्रुति की धारणा थी कि पृथ्वी के सभी महात्मा उनके द्वार पर आकर आतिथ्य लाभ कर चुके हैं ।

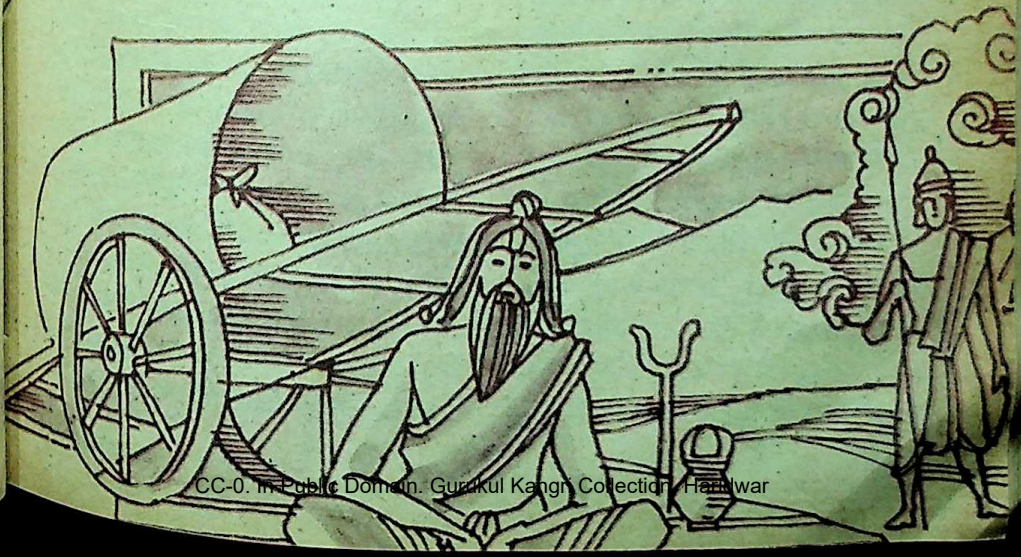

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन शुभ मुहूर्त में राजा जानश्रुति छह सौ गौयें, स्वर्णहार, प्रभूत धनधान्य, घोड़ों से जुते हुए रथ को लेकर रैक्व के समक्ष पहुंचे। उस समय भी महाराज रैक्व सारे शरीर में फैली अपनी खाज को खुजला रहे थे। जानश्रुति पौत्रायण ने उनके समीप जाकर आदरपूर्वक निवेदन किया— 'महाराज मैं जानश्रुति पौत्रायण हूं। ये गौयें, यह स्वर्णहार, यह रथ मैं आपको समर्पित करता हूं। आप इस टूटी-फूटी गाड़ी को खींचते हुए इस प्रकार कष्ट झेल रहे हैं, मुझे अभी तक आपके बारे में ज्ञात नहीं था। मेरे राज्य में कोई भी महात्मा इस प्रकार की कठिनाई का जीवन नहीं बिताता। हे महाराज। मेरी इस भेंट को स्वीकार कीजिए और मुझे उपदेश दीजिए।'

महात्मा रैक्व ने राजा की ओर जलते नेत्रों से देखकर कहा— 'अरे क्षुद्र ! ये गौयें, यह रथ, यह स्वर्णहार तू अपने पास ही रख, मेरे लिए यह टूटी गाड़ी ही पर्याप्त हैं।' राजा जानश्रुति ने विचार किया कि शायद मैं धन कम लाया हूं। इसलिए रैक्व ने मुझे फटकारकर क्षुद्र तक कहा है शायद,यह विचार कर रहे होंगे कि थोड़े से मैं परम-विद्या जानना चाहता हूं। राजा जानश्रुति चुपचाप गाड़ी के नीचे से लौट आये, किंतु उन्हें शांति फिर भी न मिली। उन्हें इसी बात पर आश्चर्य था कि पशु-पक्षी तक जिनके यश की बात जानते हैं ऐसे महाराज को फटकारकर लौटानेवाला कोई व्यक्ति भी इस धरती पर विद्यमान है। लौटकर किसी प्रकार वह रात्रि राजा ने व्यग्रभाव से व्यतीत की, उन्होंने निरंतर चिंतन करते हुए निश्चय किया कि किसी भी तरह रैक्व को प्रसन्न करके सच्चे ज्ञान की प्राप्ति करना ही अब मेरा धर्म है। मुझे उनकी कृपा अवश्य प्राप्त करनी होगी। इस बात का निश्चय करके दूसरे दिन राजा पुनः अपने साथ एक सहस्र गौएं, दूसरा स्वर्णहार एवं अधिक दक्षिणा के साथ अपनी रूपवती पुत्री को भी लेकर महात्मा रैक्व के समक्ष उपस्थित हुए और निवेदन किया कि,'महाराज ये सहस्र गौएं हैं, यह रत्नों की माला है इन्हें आप स्वीकार कीजिए। जिस स्थान पर आप बैठे हैं वह प्रदेश एवं उसके आस-पास के दस-बीस गांव भी आपको अर्पित कर रहा हूं। यह मेरी कन्या है, यह आपकी सेवा करेगी। मैं जिन वस्तुओं को सर्वाधिक प्रिय और बहुमूल्य समझता था, उन्हें लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूं, आप इन्हें स्वीकार कीजिए और मुझे उपदेश दीजिए।' रैक्व ने गुरु गंभीर स्वर में पुनः राजा को ललकारते हुए कहा— 'अरे मूर्ख ! तू इन वस्तुओं से मेरे ज्ञान का मूल्य आंकने चला है। तेरी यह सब उपहार की वस्तुएं उस ज्ञान की एक मात्रा की कीमत नहीं चुका सकेंगी। इन नाशवान वस्तुओं के बदले ब्रह्म का शाश्वत ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है ? तू मूर्ख है इसीलिए मैं तुझे शाप नहीं दे रहा।' महाराज जानश्रुति और अधिक विचलित हो उठे, वे निर्वाक होकर महात्मा रैक्व के चरणों में गिर पड़े और पुनः निवेदन किया— 'भगवन,मैंने किसी पाप की भावना से प्रेरित होकर यह कार्य नहीं किया है मुझे क्षमा कीजिए और मेरी अविद्या दूर कीजिए। मैं भ्रम में था कि मेरे समान दानवान और पुण्यवान और कोई इस पृथ्वी पर नहीं है।' राजा की करुणाभरी वाणी सुनकर महात्मा रैक्व द्रवित हो उठे और उन्होंने राजा से कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तू इन गौओं, स्वर्णहार और रथ को लौटा ले जा।'

उन ऋषि ने कन्या के मुख को ऊंचा उठाकर कहा, 'इस पुत्री की लाज को रखने के लिए मुझे उपदेश देने के लिए बाधित होना पड़ेगा।' रैक्व ने राजा को उपदेश दिया, 'वायु ही वह तत्व है जो सबको अपने में विलीन कर लेता है। अग्नि, सूर्य, चंद्र और जल अपना अवसान पाकर वायु में ही समा जाते हैं, वहीं संवर्ग है। भौतिक दृष्टि के सभी आवरण प्राण में ही विलीन होते हैं यह वायु या प्राण वायु ही आत्मा है... बहिरंतर में सर्वत्र इसी की व्याप्ति है। मनुष्य वही है जो बाहर है, और जो बाहर है वही उसका अंतर है। अपने को अलग करके जब तक अपने माहात्म्य की कल्पना कोई करता रहे, वह अज्ञान में भटकता है।'

जानश्रुति को अपनी वास्तविकता का बोध हुआ और महात्मा रैक्व के समक्ष उन्होंने स्वीकार किया कि 'अब तक जिसे मैं बहुमूल्य सुवर्ण समझता था वह मृत्तिकावत था। मेरे सारे अधिकार भाव मरणधर्मा थे। भगवन आज से मैं आपका शिष्यत्व ग्रहण करता हूं।' महात्मा रैक्व से ब्रह्मज्ञान का सच्चा उपदेश प्राप्त कर जानश्रुति जीवन्मुक्त हो गया। राजा की परमसुंदरी कन्या का विवाह महात्मा रैक्व के साथ संपन्न हुआ। जिस प्रदेश में रैक्व का विवाह राजा की पुत्री के साथ हुआ और जहां राजा को ब्रह्मज्ञान का उपदेश मिला वह प्रदेश चिरकाल तक रैक्वपर्ण के नाम से विख्यात रहा। ब्रह्म विद्या के जिज्ञासु राजा जानश्रुति की यह कड़ी परीक्षा थी और वह इसमें सफल हुए।

(छान्दोग्योपनिषद से)

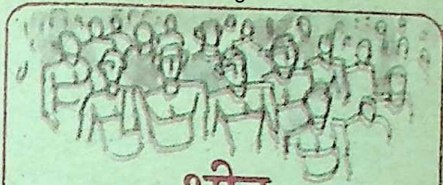

भीड़

सैकड़ों हजारों लाखों की भीड़ में जाने से
कई बार रोका था उसे
डराया था/धमकाया था
फिर समझाया था
मत जाओ भीड़ में
भीड़ यज्ञ है/हविष्य मांगती है
हाथ झटक जिस क्षण भीड़ में घुसा था
उसी क्षण
नाम-धाम संबंधों के दायरे
सिमट गये थे भीड़ में
और मंत्रमुग्ध-सा बंधता चला गया था
डूबता/उतराता
पूरे वेग से भीड़ बना था
धीरे-धीरे सैलाब उतरा था
उतरा था मंत्रमुग्ध दृष्टि का बंधाव
बाकी था हवनकुंड
और समिधा बनी भीड़
कुछ चेहरे/जिनके होठों पर अब भी
एक आध पंक्ति अटकी थी
यादगार इतिहास बना
उसके पृष्ठ अंकित हुए
उसका नाम नहीं था
कितना समझाया था
भीड़ का एक तरफा रास्ता होता है
आदमी भीड़ में जाता तो है
भीड़ से आदमी वापस नहीं आता।

—शशि शर्मा
७५ गौतम अपार्टमेंट
गौतम नगर, नयी दिल्ली-११००४९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं गरीबी में जीता हूं

—जानकी वल्लभ शास्त्री

उत्तर छायावाद के सबल स्तंभ आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री से त्रिलोक कुमार झा की अंतरंग बातचीत के कुछ अंश—

आज का लेखन किस परिधि में हो रहा है और उसका भविष्य क्या है ?

मैंने योजनापूर्वक कुछ भी नहीं लिखा । भविष्य इसका क्या होगा, यह भविष्य ही बताएगा । मैंने साहित्य की परंपराओं से जुड़कर अपने जीवन का अनुभव लिखा है । अनुभूति की सच्चाई पाठकों में ढलकर ही परखी जा सकती है। मैं अपने साहित्य और आज के लेखन के संबंध में इससे अधिक क्या कह सकता हूं ?

आपकी रचनाएं परिस्थितियों के अनुकूलन का प्रतिफल हैं या प्रतिकूलन का ?

मेरे लंबे अनुभवों के बीच कितनी ही परिस्थितियां बदली हैं । मैं परतंत्र भारत में पैदा हुआ । शिक्षा एवं अध्यवसाय की प्राप्ति की । तब से अकसर नयी-नयी स्थितियों ने देश के तापमान को बराबर बदला है । मैं कितनी अनुभूतियों, स्थितियों तथा उनके प्रभावों से गुजरा हूं, इसका साक्ष्य मेरा साहित्य ही दे सकता है । अपनी ओर से कोई भी रचनाकार प्रतिकूलता का वरण नहीं करता । राजनीतिक स्थितियों के दबाव में,अनुकूलता में ही प्रतिकूलता देखी जा सकती है । इसका निर्णय करना आलोचकों का ही काम है । मैं स्पष्ट शब्दों में कह सकता हूं कि मेरे साहित्य में वह सब कुछ है, जो पाठकों को ढोने का श्रम नहीं उठाने देता ।

बहुभाषाविद् होने के नाते आपकी राय हिंदी के प्रति क्या है ? क्या यह परिपक्वता को प्राप्त हो रही है या इसके स्तर का स्खलन हो रहा है ?

मैं अपने प्रत्येक साहित्यिक मित्र को यह सलाह देता हूं कि अपनी भाषा को सजाने-संवारने के लिए दूसरी भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है । ऐसा नहीं होने पर संकीर्णता बढ़ जाती है और लोग अपनी भाषा को सर्वश्रेष्ठ मानकर अपने विकास को रोक देते हैं । हिंदी को ही लें, तो इसके सभी बड़े लेखक अनेक भाषा के दक्ष थे । प्रेमचंद का हिंदी, अंगरेजी, उर्दू पर समान अधिकार था । निराला संस्कृत, अंगरेजी एवं बंगला तीनों भाषाओं में लिखने एवं बोलने की योग्यता रखते थे । दूसरी भाषा के ज्ञान से अपनी सीमा समझ में आती है। संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो सबको एक समान प्यारा लगे । 'सूर्य उगता है तो कमल खिल जाता है और कुमुदिनी मुंद जाती है।' यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति का नियम है । प्रत्येक श्रेष्ठ रचनाकार की तरह मैंने अनेक भाषाओं से बहुत कुछ सीखा है, जिसके लेखन एवं अध्ययन से हिंदी-साहित्य को समृद्ध किया जा सकता है ।

प्राचीन परंपरा का अनुयायी

लोग प्रायः कहा करते हैं कि साहित्यकार के लिए जीवन और साहित्य रचने का एक ही जीवन-दर्शन होना चाहिए । आप इससे कहां तक सहमत हैं ?

मैं इससे पूर्णतः सहमत हूं किंतु व्यवहार में कभी-कभी इस नियम का उल्लंघन भी करना पड़ता है । जैसे, उधार लेने को मैं बुरा मानता हूं । परंतु, किसी संभ्रांत अतिथि के आ जाने पर, अभाव की स्थिति में यदि मुझे उधार लेना पड़े तो मैं लेना पसंद करूंगा क्योंकि, पैसे दूसरे दिन जुटाये जा सकते हैं, परंतु, संभ्रांत अतिथि प्रतिदिन नहीं आते । मेरी सीमा है, मैं आधुनिक युग के व्यक्ति की तुलना में खान-पान, रहन-सहन किसी में नहीं हूं । मैं प्राचीन परंपरा को मानता हूं । उसी के अनुसार निरामिष भोजन और अहिंसक विचारों का पोषक एवं प्रचारक हूं । वे मुझे हास्यास्पद लगते हैं, जो मुर्ग-मुसल्लम एवं बोतल खोलकर बड़े-बड़े महलों में बैठकर गरीबों के बारे में विचार करते हैं । मुझे यह पसंद नहीं और मैं उनसे अलग-थलग हूं । देश के गरीबों एवं दलितों के प्रति बातें करनेवाले ऐसे नकली व्यक्तियों से नफ़रत करता हूं । जो तपस्वी नहीं हैं, वे सत्यवादी नहीं हैं । व्यवहार एवं विचार में भिन्नता रखनेवाले लेखक ही अधिक संख्या में आजकल पाये जाते हैं । वे मेरे प्रिय नहीं हैं ।

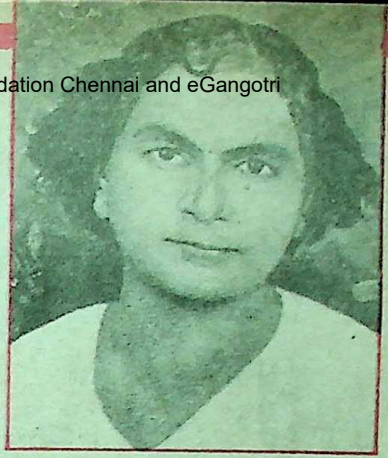

शास्त्रीजी का एक तैल चित्र

लेखन में विराम नहीं

बहुविध लेखन-क्रम में आपके 'राधा' महाकाव्य को आपके लेखन का विराम माना जाता है । इस संदर्भ में आपका क्या कहना है ?

ऐसा कहना उचित नहीं है । 'राधा' महाकाव्य के बाद प्रायः एक दर्जन मेरी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और अभी-अभी 'कालिदास' नामक एक महाकाव्यात्मक उपन्यास प्रकाशित हो रहा है, जो लगभग पांच सौ पृष्ठों का है । सत्य तो यह है कि गद्य एवं पद्य में काफी कुछ लिखने के बाद भी मैं यही अनुभव करता हूं कि मेरी सर्वश्रेष्ठ रचना अभी आने को है । मेरी चर्चित रचनाएं मेरी साहित्य-साधना के पड़ाव की सूचना देती हैं । वह साधना रुकी नहीं है । निरंतर चल रही है । 'चाणक्य' पर अगला उपन्यास लिख रहा हूं । गजलों की एक पुस्तक आ रही है । हां, इधर कविताएं कम लिख रहा हूं । मेरी उर्दू गजलों की पहली पुस्तक 'सुने कौन नगमा' आ रही है । इसका दूसरा खंड 'धूप दुपहर की' भी आ रहा है । मैं बचपन से सात भाषाओं में रचनाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

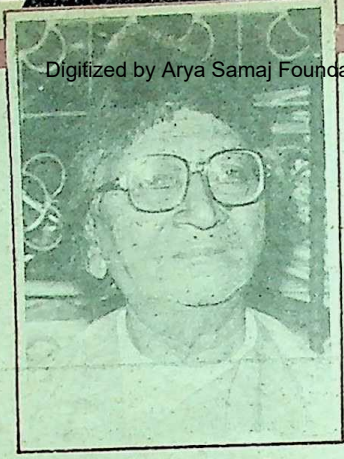

जानकी वल्लभ शास्त्री

लिखता रहा हूं । हिंदी, बंगला, उर्दू और संस्कृत में समान रूप से लिखता आ रहा हूं ।

अनकही कहानी

आपने लिखा है—'जिंदगी की कहानी रही अनकही' । कौन-सी कहानी अनकही रह गयी आपकी ?

मैंने अपनी जिंदगी में कितनी ही उमंगों-तरंगों को देखा है और उन्हीं के साथ समय गुजारा है । मैं बचपन से ही महत्त्वाकांक्षी रहा हूं और मैं क्या चाहता हूं, यही मेरी जिंदगी की अनकही कहानी है । मैंने एक साधारण व्यक्ति का जीवन व्यतीत किया है । मैंने संघर्ष में ही सारी उम्र गुजारी और वर्तमान में भी वही कर रहा हूं । मैं जहां पैदा हुआ, वह विकास से कोसों दूर जंगली इलाका था । मेरे पैदा होते ही मेरी मां की मृत्यु हो गयी । ग्यारह वर्ष की आयु में ही मैंने घर छोड़ दिया । काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में अध्ययन के लिए गया और नामांकन-परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर छात्रवृत्ति पायी और अपना अध्ययन पूर्ण किया । मैं गरीबी में जीता रहा हूं और इसी को बताने के लिए अपनी जीवनी लिखता रहा हूं । उससे मेरे-जैसे संघर्ष एवं गरीबी के बीच जीनेवालों को प्रेरणा मिलेगी और वे आगे बढ़ पाएंगे । यही जीवन के संघर्ष की मेरी कहानी है ।

निराला और पृथ्वीराज कपूर

आपके निकट संपर्क में वैसे तो कई ऐतिहासिक महत्त्व के लोग रहे हैं परंतु, मेरी जिज्ञासा महाकवि निराला और पृथ्वीराज कपूर एवं राजकपूर के साथ बीते दिनों का कोई अछूता प्रसंग जानने की है । बताएंगे ?

सन १९३५ में जब काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा था उसी समय संस्कृत में मेरी एक पुस्तक छपी । उसका नाम 'काकली' था । यह पुस्तक महाकवि निरालाजी को देखने को मिली, तो वे हिंदू विश्वविद्यालय में आ गये और मुझसे मिलने छात्रावास में आये । तब से उन्होंने मेरे साथ गुरु-मित्र का संबंध रखा । मेरी शादी के बाद मेरी पत्नी ने सर्वप्रथम उनके ही चरणों को छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । निरालाजी का स्नेह मुझ पर जीवनभर बना रहा । वे मेरा काफी ध्यान रखते थे । मुझे निरालाजी इसलिए भी पसंद हैं कि वे जीवन को ही अपनी रचना में उतारते थे । वे गरीब थे और गरीबी उनकी बड़ी प्यारी चीज थी । हद फक्कड़पन के कारण भी मैंने उनको पसंद किया और वे मुझे इतने प्रिय लगे कि उनके नाम पर ही अपने आवास का नाम 'निराला निकेतन' रखा ।

पृथ्वीराजजी से सन १९५१ में कलकत्ता में मेरी प्रथम मुलाकात हुई । संयोग यह था कि कलकत्ता के सेंट जैवियर्स कालेज के एक समारोह की अध्यक्षता करने को मुझसे कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री : संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि: जनवरी, १९१६
मूल निवासी एवं जन्म स्थान : मैगरा गांव (जिला गया)
शिक्षा : काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से शास्त्राचार्य, शास्त्री, साहित्याचार्य, वेदांताचार्य सभी में उत्तम परिणाम एवं स्वर्ण पदक प्राप्त
व्यवसाय : १९३६ में रायगढ़, मध्य प्रदेश में राजकवि । मुजफ्फरपुर एवं पटना विश्वविद्यालय में प्राध्यापक ।
संप्रति : अवकाश प्राप्त । स्वतंत्र लेखन एवं अध्ययन ।

प्रमुख कृतियां : कविता : राधा महाकाव्य, मेघगीत, अवंतिका, धूपतरी
कहानी : कानन, अर्पणा, लीला कमल
उपन्यास : एक किरण सौ छाइयां, दो तिनकों का घोंसला, कालिदास, अश्वबुद्धा, चाणक्य
आलोचना : साहित्यदर्शन, चिंताधारा, पुष्प साहित्य
संस्मरण : हंस ब्लाका, कर्मक्षेत्रे मरुक्षेत्रे, एक असाहित्यिक की डायरी, अष्टपदी
संपादन : पंचदर्शी, महाकवि निराला, राका, बेला आदि ।

गया था । उस कालेज के प्राचार्य एक अमरीकन थे । वे मेरे भाषण से काफी प्रभावित हुए और कहा, 'मैं जानता था कि पाश्चात्य भाषा में जितनी फ्रेंच भाषा मीठी है, उतनी ही भारत में बंगला, परंतु आज शास्त्रीजी का भाषण सुनकर लगा कि हिंदी से मीठी भाषा कोई नहीं है ।' इस बात को उस समय के सभी समाचार-पत्रों ने प्रमुखता से प्रकाशित किया ।

इसके दूसरे दिन कलकत्ता में ही पृथ्वीराजजी का न्यू थियेटर द्वारा अभिनंदन और राजकपूर की 'आवारा' फिल्म का प्रीमियर शो था । सेंट जेवियर्स के भाषण से प्रभावित होकर थियेटरवालो ने बड़े आग्रह से मुझे उस समारोह में बुलाया । न्यू थियेटर में प्रवेश करते ही मेरे नाम की घोषणा की गयी और पृथ्वीराजजी के सम्मान-समारोह में मुझसे भाषण देने का आग्रह किया गया । जब पृथ्वीराजजी ने यह सुना कि मैं उनके संबंध में बोलूंगा, तो वे मेरे निकट बैठ गये और मैं उन पर पैंतालीस मिनट तक बोलता रहा । इससे सभी लोग काफी प्रभावित हुए । इस भाषण को भी काफी प्रसिद्धि मिली और पृथ्वीराजजी भी काफी प्रभावित हुए । मेरे गले में माला पहनाकर वे मुझसे लिपट गये और अंत समय तक मेरे साथ रहे । मेरा उनसे एक खास पारिवारिक संबंध बन गया । राजकपूर एवं शशिकपूर से भी मेरा संबंध रहा । पृथ्वीराजजी एवं राजकपूरजी मेरे आवास पर भी आते रहे और मैं भी अकसर बंबई उनसे मिलने जाता रहा । मेरे लिए यह गर्व का विषय है कि कविवर निराला एवं पृथ्वीराजजी से मेरा संबंध अंत तक बना रहा ।

—क्वार्टर नं. डी./२४ पूसा, समस्तीपुर (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रो-रोकर बता रही हैं—"लल्ला ! सकठू महराज ने बताया कि पत्रा कह रहा है कि यह कूकुर बड़ा विषहा है । कुकड़ैल में नहलाने से पुत्तन का जहर उतरकर पानी में बह जाएगा ।"

लखनऊ के आसपास के गांवों में लोगों का यह विश्वास वर्षों से चला आ रहा है कि कुत्ते के काटने पर कुकड़ैल नाले में नहाने से उस का जहर समाप्त हो जाता है । मैं भैया, भउजी और पुत्तन को लेकर कुकड़ैल पहुंचता हूं । नाले

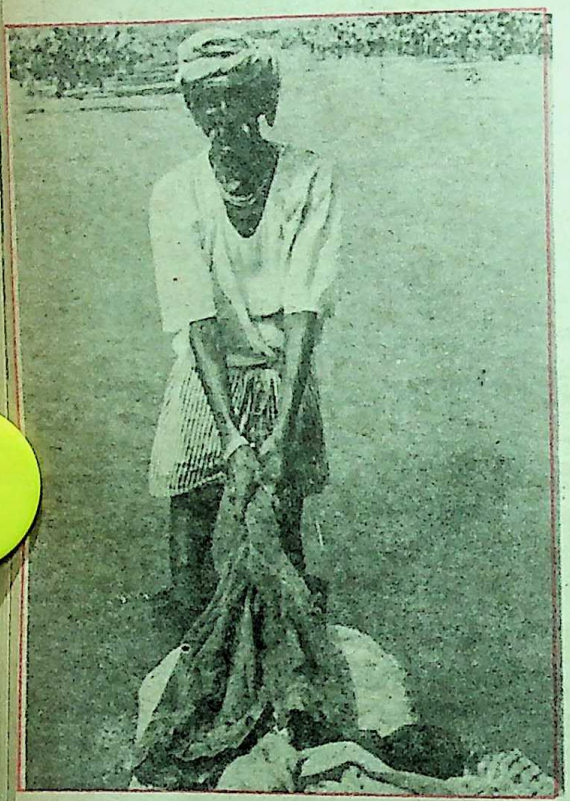

रजक वंश अवतंस

● डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्मा

गांव में बड़े भैया के मंझले लड़के को कुत्ते ने काट लिया था । सकठू पंडित ने पत्रा से विचार कर बताया कि कुत्ते ने अशुभ घड़ी में काटा है, इसलिए लड़के को कुकड़ैल में नहलाकर गांव में कथा सुननी होगी । तब सब मूर्च्छित हो जाएगा । भैया, भउजी और पुत्तन जीप पर बैठकर लखनऊ आ जाते हैं । भउजी

का पानी ऐसा गंदा है जैसे नापदान का गंदला पानी हो । पुत्तन उसी में नाक बंद कर लगातार चार-पांच डुब्बी लगाते हैं । नयी धोती और कुरता पहनकर हम तीनों के लपककर पैर छूते हैं । फिर ये लोग जीप में बैठकर गांव की राह लेते हैं क्योंकि,सायंकाल वहां सकठू महराज की कथा होगी । मैं कुकड़ैल के किनारे की पगडंडी से घर की ओर चलता हूं । थोड़ी ही दूर तो घर है । नाले के गंदे पानी में तमाम सुअर लोट रहे हैं । घूसियों के छोकरों ने भैंसों को पानी में खेदकर नाले में कर दिया है और वे सब कूद खेल रहे हैं । कई धोबी उसी बदबूदार गंदे पानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में—'हइय्या छू, हइय्या छू' की बारीक ध्वनि करते हुए पाटे पर कपड़े फींच रहे हैं। मैं कुछ क्षण ठिठुककर उनको देखने लगता हूं और फिर चल देता हूं।

पैर घर की ओर चल रहे हैं और मन बचपन की ओर लौट रहा है। मन की गति भी विचित्र होती है। पैर कहीं चलते रहते हैं और मन कहीं और घूमता रहता है। मेरा मन गांव के 'धोबी तारा' के किनारे पहुंच जाता है, जहां झींगुर धोबी कपड़े धोया करते थे। गांव में धोबी का, अकेला झींगुर का ही घर था। झींगुर, उनकी पत्नी और एक लड़की नन्हकी, बस ये ही तीन प्राणी थे इस परिवार में।

पहनते थे। गले में काले धागे में बंधी चांदी की एक तबिजिया झूला करती थी। दाहिने हाथ में उन्होंने गोदना गोदाकर एक छोटा-सा दो पत्तियोंवाला गमला बनवा रखा था। उसी के बगल में अपना नाम—'श्री झींगुर रजक' लिखवाया था। वे गांठों तक दुलंग्गी धोती और लंबा कुरता पहनते थे। कुरते में चांदी की फुलरेदार बटने लगाते थे। हमेशा ऐठ के साथ चलते थे। सुरती की लुगदी अधर पर धरे रहते थे और पिच्च-पिच्च जगह-बेजगह थूका करते थे।

झींगुर भिनसारे चिरैया बोलते ही खटिया छोड़ देते थे। गधे पर कपड़ों की लादी लादकर

झींगुर अपने जिस जजमान से नाराज रहते, उसके कपड़े को इतना कसकर उमेठ-उमेठकर, निचोड़ते कि वह कई जगह से मसक जाता। जिससे खुश रहते, उसके कपड़े खूब संभालकर धोते थे।

झींगुर मंझोले कद के एकदम करिया रंग के थे। सर पर रूखे-सूखे, अस्त-व्यस्त बाल कुस—जैसे खड़े फहराते रहते थे। कंजी-कंजी आंखें, काले-काले चेहरे पर चमचमाया करती थीं। बेतरतीब मूछें ओठ पर लटकी रहती थीं। बड़े लहसुन के जवा जैसे दांत बीच-बीच में सांस देकर उगे थे। झींगुर ने आगे के दो दांत सोने से मढ़वा लिए थे। नाक बाजरे की पकौड़ी जैसी चपटी-चपटी थी। ठुड्ढ़ी आम की सूखी गुठली जैसी सिपुली थी। उन की लंबी गरदन पर सर ऐसे लगता था जैसे हुक्के की नली पर गोल-गोल चिलम रखी हो। गाल पिचके और धंसे थे। दोनों कानों में वे सोने की लुरकी

धोबीतारा की ओर चल देते थे। हाथ में एक पतली छुलछुली छड़ी लिए रहते थे। बीच-बीच में गधे के पीछेवाले पैरों पर एक-दो हाथ सड़क देते थे। गधा दुलकी चाल पकड़ लेता था। घाट पर पहुंचकर लादी उतारकर जमीन पर डाल देते थे और गधे के अगले पैरों में संदना बांध देते थे। गधा उछल-उछलकर घास चरा करता था। झींगुर वहीं कुछ दूर पर झाड़े-जंगल जाते, तालाब में आबदस्त लेते और अपने घाट पर आ जाते। नीम की एक दातून तोड़कर दांतों से चबा-चबा कर कूची बनाकर उसे दांतों पर लगातार जल्दी-जल्दी रगड़ते और दातून को बीच से चीरकर जीभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साफ करते । तालाब के पानी से मुंह साफ करते और कई बार ढोढ़ा तक उंगल डालकर खंखार-खंखार कर थूकते । अंगौछा से मुंह पोछते और कुरते की जेब से चुनौटी निकालकर थोड़ी-सी सुरती गदोरी पर रखते और नाखून से चूना खोदकर उसमें मिलाते । फिर अंगूठे से उसे कुछ देर मलते रहते । बाद में अंगुलियों से उसे पट्ट-पट्ट पीटकर चुटकी में दबाकर ओठ पर धर लेते ।

सुरती खाने के बाद झींगुर तुरंत खड़े हो जाते और लकड़ी के पाटे को, पानी में गड़े हुए खूंटे पर रख देते । दो-तीन बार पाटे के पैर छूते और लादी खोलकर कपड़े फींचना शुरू कर देते । कपड़े को आठ-दस बार फींचते और फिर पानी में खलभलाकर धोकर जोर से निचोड़कर बाहर घास पर फेंक देते थे । बड़े चदरा, धोती, कथरी आदि को तो वे एक विचित्र तरीके से निचोड़ते थे । कपड़े का एक छोर पाटे पर रखकर पैर से दाबे रहते और दूसरे छोर को दोनों हाथों से उमेठ-उमेठकर सारा पानी निचौड़ देते थे ।

हम कई लड़के धोबीतारा के पासवाली पगडंडी से ही स्कूल जाते थे । थोड़ी देर रुककर झींगुर की कपड़ा धोने की कला को जरूर देखते थे । श्रम परिहार के लिए झींगुर बीच-बीच में 'हइय्या छू, हइय्या छू' का स्वर अधरों से निकालते रहते थे । कभी-कभी धोबिया गीत भी मंद-मंद स्वर में लय के साथ गाया करते थे । एक गीत तो हम लोगों को सुनते-सुनते याद भी हो गया था, जिसे आज भी हम नहीं भूलते—

थोर-थोर कपरा दिहा गहकिया
धोबिया क नरम करेज
ए हो, धोबिया क नरम करेज
धोबिया लहंगवा करिया रंगाय देइ
आधा रंगाय देई लाल,
ए हो, आधा रंगाय देइ लाल

झींगुर अपने जिस जजमान से नाराज रहते, उस के कपड़े को इतना कसकर उमेठ-उमेठ कर निचोड़ते कि वह कई जगह से मसक जाता । जिससे खुश रहते, उसके कपड़े खूब संभालकर धोते थे ।

जब थोड़ा दिन चढ़ जाता तो झींगुर की पत्नी एक कठैली में दो-तीन पनेथी, आलु, बैंगन या घुइय्यां का चरफरा भरता और आम की खटाई की दो-तीन फकियां लेकर मटकती हुई, घूंघट बार-बार संवारती घर से घाट की ओर चल देती थी । एक छोटी-सी इंडुरी सर पर रखे, उस के ऊपर कठैली रखे, एक हाथ में पानी का भरा लोटा थामे मुसकाती हुई घाट पर पहुंच जाती थी । घाट के किनारे एक बरगद का हाहाभूती पेड़ था । उसी के नीचे वह कठैली और पानी रखकर धुले कपड़ों को धूप में फैलाने में जुट जाती । झींगुर पानी से निकलकर बाहर आते और नाश्ता करने लगते । नाश्ता करके खटाई की फकिया को बड़ी देर तक चूसा करते थे । फिर गटर-गटर लोटे का पूरा पानी पी जाते । सुरती मीज कर ओठ पर रखकर वहीं जमीन पर लेट जाते ।

कपड़े फैलाकर फुरसत पाते ही धोबिन अपने थके हुए बरेठा के पैरों को दाबने लगती और उंगली चिटकाने लगती । कुछ देर झपकी लेने के बाद झींगुर उठते और फिर कपड़े धोने में जुट जाते । बरेठिन कठैली और लोटा लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

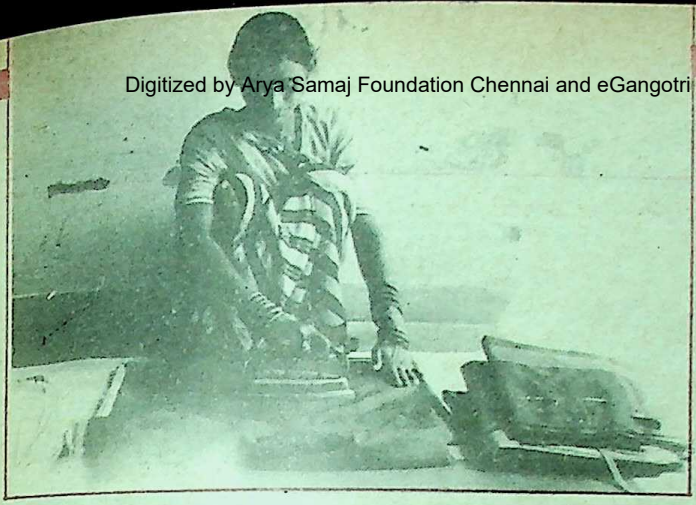

घर की ओर चल देतीं । घर पहुंचकर गृहस्थी के कामधंधे में लग जातीं ।

दोपहर तक झींगुर का काम समाप्त हो जाता और वे कपड़ों को समेटकर गठरी में बांध देते । गधे को पकड़ लाते और गठरी लादकर चल देते । कभी-कभी गधे पर सवारी भी कर लिया करते थे । 'चल मेरे बाजीगर', कहकर वे उसके पैरों पर दो-तीन छड़ियां मार देते थे । गधा सरपट चाल पकड़ लेता था । दरवाजे पर पहुंचने पर गधा चुप खड़ा हो जाता । गठरी उतारकर झींगुर बरोठे में रख देते और बान की खटेहटी खटिया पर लेट जाते । उनकी बेटी नन्हकी, झोथर फैलाये हुए, बार-बार नाक सिड़ड़ती जाती और गधे को पुचकार-पुचकारकर उसके पैरों में रस्सी बांधकर खूंटे से बांध देती । इसी बीच बरेठिन राब का गहरे लाल रंग का सरबत लोटिया में लाकर बरेठा को पकड़ा देतीं और नीचे बैठ जाती । झींगुर अपनी नन्हकी को बुलाते, "नन्हीं, आव सरबत पियो ।" नन्हकी तुरंत बाप के पास पहुंच जाती और झींगुर उस के मुंह में लोटिया अड़ा देते । वे एक हाथ की अंगुलियों से उसके जुआं और लीखों से भरे बालों को सहलाते रहते और वह घुटुर-घुटुर सांस बांधकर सरबत पीती रहती । कभी-कभी बरेठिन टोंक देतीं, "बसि, बसि बिटिया, का सबु पी जै हौ ? बप्पा का पी हैं ?" नन्हकी अपना मुंह लोटिया से हटा लेती और तब बरेठा उसे धीरे-धीरे पीते रहते । एक घूंट सरबत पीते और अपनी बरेठिन को ताकते, फिर एक-दो घूंट पीते और उसकी ओर ताकने लगते । वह बेचारी लजा जाती और हाथ की उंगली से पैर के पंजे को रगड़े लगती । बरेठा थोड़ा-बहुत सरबत लोटिया में जानबूझकर बचा देते थे और लोटिया अपनी बरेठिन को पकड़ा देते थे । वह बेचारी, "यूं काहे बचा दीन्हे ?" कहकर एक गुलाबी मुस्की के साथ बचे हुए सरबत को पी लेती थी ।

झींगुर दोपहर के भोजन में दाल-भात, या कढ़ी-भात लेते थे और चार बजे तक तनियाकर सोते थे । धोबिन सब कपड़ों को छांट-छांटकर लोगों के घर पहुंचाती थी । धुलाई के लिए कपड़े लेने भी वही जाया करती थी । गांव में ठाकुर भैया, मुखिया और पटवारी के अलावा कोई कपड़ों पर इस्त्री न करवाता था ; क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्त्री करायी झींगुर फी कपड़ा दो पैसे लेते थे । तब के दो पैसे आज के एक रुपये के बराबर होते थे । दो पैसों से दो सेर नमक मिलता था । कपड़ों पर इस्त्री करने का काम बरेठिन का ही था । वे इमली का कोयला परचाकर पीतल की इस्त्री में भर देती थीं और कपड़ों पर पानी का पुचाड़ा दे-देकर उन्हें प्रेस करती थीं ।

सायंकाल मुंह अंधेरे झींगुर और धोबिन मिलकर जजमानों के कपड़ों को दूसरे दिन के धोने के लिए तैयार करते थे, उनके दरवाजे दो कूंड़ियां गड़ी थीं । एक में रेहू पानी में फूला करती और दूसरी में भेंड़ी की लेंड़ियां । प्रत्येक कपड़े पर पहले थोड़ा लेंड़ीवाला पानी डालकर फिर उसे रेहू वाली कुंड़ी में डुबाकर बाहर डाल दिया जाता था । जब सभी कपड़ों की यह क्रिया हो जाती, तब ऊपर से झींगुर रेहू उर्रा देते । कपड़े रातभर ओस में पड़े रहते और भिनसारे लादी बनाकर गधे पर लादकर धोबीतारा की ओर झींगुर बिरहा गाते हुए चल देते । कितने प्रसन्न रहते थे वे ; चेहरे पर कभी तनाव नहीं रहता था ।

गांव के सभी लोग झींगुर को दोनों फसलों पर जेवरा के रूप में पांच-पांच पसेरी गल्ला देते थे । इसके अतिरिक्त शादी-ब्याह के अवसर पर उन्हें परजौटी में रुपया, धोती और अन्य चीजें भी मिलती थीं । त्यौहारों पर बड़े-बड़े लोगों के यहां से भोजन मिलता था । बरेठिन सब के यहां से तसील लाती थीं । वसंत के दिन धोबिन नयी-नयी धराउं साड़ी पहनकर एक डेलवा में मिट्टी की एक प्रतिमा बनाकर रख लेतीं । अगल-बगल थोड़े फूल डालकर गांव के सभी संभ्रांत परिवारों में सुहाग देने जाती थीं । वे अपने हाथ से सुहागिनयों की मांग में सिंदूर भरती थीं । उस दिन उन्हें खूब पैसे और अन्न मिलता था । कन्या के विवाह के अवसर पर सर्वप्रथम उसकी मांग में सिंदूर धोबिन ही देती है ।

हमारी लोक संस्कृति में धोबी का विशेष महत्त्व है । अरे हां, एक धोबी के कहने पर ही तो राम ने सीताजी को वाल्मीकि आश्रम में भेज दिया था । छोटी कक्षाओं में आज भी छात्रों को लोकोक्तियां लिखायी जाती हैं, धोबी का कुत्ता घर का न घाट का ; धोबी का छैला आधा उजला आधा मैला । यदि कोई ग्रंथकार चाहे तो धोबी पर एक 'रजक-पुराण' ही तैयार कर सकता है । पर ये सब करने के लिए गांवों की खाक छाननी पड़ेगी । महानगरों के कूलरयुक्त कमरों में बैठकर झींगुर के दीदार नहीं हो सकते ।

अरे ये क्या ; मैं अपने दरवाजे पर आ गया हूं और गांव के धोबीतारा, झींगुर, उनकी धोबिन, नन्हकी और गधे आदि की दृश्यावली सब मस्तिष्क से फुर्र से उड़ जाती हैं ।

—सी १०- के रोड [illegible]
लखनऊ-२२६[illegible]

अवकाश ग्रहण की उम्र में नौकरियां

अमरीका में जहां एक ओर बेरोजगारी बढ़ रही है, दूसरी ओर अमरीकी कंपनियां अधेड़ उम्र के लोगों को अधिक संख्या में नौकरियां दे रही हैं । कारण है—काम के प्रति उनकी निष्ठा, विश्वसनीयता और अपेक्षाकृत कम पारिश्रमिक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी को आने नहीं देते

हिगंबर सिंह, पौड़ी गढ़वाल : सन ९१ में मेरी शादी एक अध्यापिका से हुई । शादी से पहले ही वह अपने मायके में सर्विस करती है । शादी के बाद से ही उसके माता-पिता उसको स्थायी रूप से मेरे साथ या मेरे घर आने में विरोध कर रहे हैं, क्योंकि वह लोग उसका वेतन किसी भी हालत में नहीं खोना चाहते । पत्नी ने कई बार मेरे पास आना चाहा मगर उन्होंने उसे डांट-फटकारकर व संबंध तोड़ने की धमकी देकर चुप करा दिया । वे मुझसे पत्नी के बी. टी. सी. ट्रेनिंग के साठ हजार रुपये मुआवजे में मांगते हैं । तब मैं एक कंपनी में इंजीनियर था । अत्यधिक परेशान होने पर मैंने नौकरी छोड़ दी और घर पर ही व्यवसाय का निर्णय लिया । मैं फिर अपनी पूर्व कंपनी में सर्विस करना चाहता हूं, परंतु कंपनी वाले कहते हैं कि पहले अपनी पारिवारिक समस्या दूर करके मानसिक रूप से तैयार होकर आओ । बताइए मैं क्या करूं ?

पत्नी को शादी के बाद अपनी नौकरी चालू रखनी है या नहीं, यह निर्णय आप दोनों को मिलकर लेना चाहिए । पत्नी की आय पर उसके मायकेवालों की नजर हो सकती है, परंतु वह सब आपकी पत्नी की इच्छा के विरुद्ध उसकी आय का हिस्सा नहीं ले सकते । शिक्षिका बनने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण आपकी पत्नी ने शादी से पूर्व लिया, इसलिए उस पर हुए खर्चे के लिए आप जिम्मेदार नहीं माने जा सकते ।

आप अपनी पत्नी को अपने साथ रहने के लिए कह सकते हैं । आप कानून का भी सहारा ले सकते हैं । आपको दांपत्य संबंधों की पुनर्स्थापना के लिए कार्यवाही करने का अधिकार है । इससे आपकी पत्नी न्यायालय में आकर अपनी इच्छानुसार निर्णय ले सकेगी । जहां तक आपकी नौकरी का संबंध है, आपको यह समझाना ही पड़ेगा कि पारिवारिक परेशानी आपके काम में बाधक नहीं होगी ।

प्लाट का पजेशन

ऊषा गुप्ता, फिरोजाबाद : मैंने मकान के लिए एक प्लाट जयपुर में एक सोसाइटी से खरीदा था लेकिन अभी तक सोसाइटी ने उसका पजेशन मुझे नहीं दिया । उस सोसाइटी ने उस नाम से सोसाइटी खत्म कर दी है तथा उसके पदाधिकारी भी अलग-अलग हो गये हैं । अब हमें क्या करना चाहिए, ताकि प्लाट का कब्जा हमें मिल सके ।

आपके पत्र में यह स्पष्ट नहीं है कि क्या उक्त सोसाइटी के पास कोई जमीन थी भी या नहीं ? अगर जमीन सोसाइटी के पास थी, तो उसका क्या हुआ ? आपको कोई निश्चित, निर्धारित प्लाट देने का समझौता हुआ था या नहीं ?

यदि सोसाइटी के नाम से कुछ प्लाट है ही नहीं, तब तो यह मामला सीधा धोखाधड़ी का है और आप उक्त सोसाइटी के संचालकों को भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत दंडित करवाने के लिए कार्यवाही कर सकती हैं । आप अपनी जमा करायी गयी रकम वापस लेने और इस प्रक्रिया में हुए नुकसान की भरपाई करने की मांग भी दीवानी दावा द्वारा कर सकती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आपको निर्धारित प्लाट देने का वायदा किया गया था तो आप उक्त प्लाट प्राप्त करने के लिए न्यायालय में जा सकती हैं ।

मामला नाम का है

विजय आनंद, दिल्ली : मैंने बोर्ड की परीक्षा-फार्म में अपने पिता का नाम अशोक खोसला लिखा था । लेकिन इंटर व स्नातक के परीक्षा-फार्मों में अशोक कुमार खोसला लिख दिया, अब जबकि मैं सर्विस में हूं, सभी स्थानों पर पिता का नाम अशोक खोसला ही लिखा है, क्या इस वजह से भविष्य में मुझे परेशानी हो सकती है ? यदि ऐसा है तो इसका समाधान क्या है ?

पिता के नाम के बीच कुमार शब्द नहीं लगाने से कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए । अब आप अपनी परीक्षाएं पूरी कर सर्विस कर रहे हैं तथा वहां आपकी शिक्षा तथा नाम व पिता के नाम को स्वीकार किया जा चुका है— इसलिए कोई चिंता का तो कारण नहीं होना चाहिए । यदि किसी कारण से किसी समय इस बात को लेकर प्रश्न उठे तो आपको स्थिति का निवारण करने का अवसर मिलेगा और आप वस्तुस्थिति से अधिकारी वर्ग को अवगत करवा सकेंगे ।

हाउस टैक्स में मनमानी

विनय कुमार, लखनऊ : आवास एवं विकास परिषद द्वारा भवन बनाकर नकद अथवा किस्तों में बेचे जाते हैं और जब उनको नगर महापालिकाओं में स्थानांतरित कर दिया जाता है, तो उन भवनों का टैक्स महापालिका किस प्रकार निर्धारित करती है ? एक ही प्रकार के मकानों को अलग-अलग टैक्स लगा दिया जाए तो क्या करना चाहिए ।

भवन क्रय करनेवाले व्यक्ति को संपत्ति-कर देने का उत्तरदायित्व भी स्वीकार करना चाहिए । भवन बनाकर खरीदार को देने के बाद

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ

—रामप्रकाश गुप्त

साधारणतया खरीदार, संपत्ति-कर देने का उत्तरदायी होता है ।

संपत्ति-कर का आधार संपत्ति का मूल्य होता है । यदि मकान किराये पर दे दिया जाए तो स्थिति बदल सकती है । एक ही प्रकार के तथा एक समय बने मकानों का संपत्ति-कर एक जैसा ही लगाया जाना चाहिए । परंतु मकान के प्रयोग में भिन्नता के कारण या अन्य किसी कारण से संपत्ति कर भी भिन्न हो सकता है ।

यदि महापालिका बगैर किसी आधार या नियम का पालन किये मनमाना टैक्स लगा दे तो मकान-मालिक अपील द्वारा उसे चुनौती दे सकता है ।

मकान दादाजी का है

जी. एस. स्वामी, बीकानेर : मेरे पिताजी तीन भाई हैं । दादाजी मकान में से हिस्सा पिताजी को नहीं देना चाहते हालांकि,मकान के तीसरे हिस्से में हम रह रहे हैं । हमें डर है कि दादाजी वसीयतनामा रजिस्ट्री या किसी कानूनी कार्यवाही करके मकान को अपने शेष दो बेटों में बांट सकते हैं । वैसे हमें मकान खाली कराने के लिए दादाजी ने मुकदमा भी कर रखा है ।

आपका डर सही लगता है । आपके दादाजी आपके पिताजी पर मकान खाली कराने का मुकदमा करके इस दिशा में पहला कदम उठा ही चुके हैं ।

मकान दादाजी का है । वह स्वयं अपने

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा से उस मकान को किसी भी बेटे को दे सकते हैं। और उन्हें ऐसा करने से किसी नियमानुसार रोका नहीं जा सकता। मकान के जिस हिस्से में आप है, उसमें आप अपने दादाजी की अनुमति के आधार पर रह रहे हैं और इससे आप उस हिस्से के मालिक नहीं कहे जा सकते। मकान के जिस हिस्से में आप रह रहे हैं उसे तो वे खाली कराने के लिए मुकदमा लड़ ही रहे हैं।

जमा राशि

अशोक कुमार, खंडवा : ग्यारह वर्ष पूर्व स्कूटर अग्रिम बुकिंग के लिए पांच सौ रुपये जमा कराये थे। तत्पश्चात जमा राशि की वापसी हेतु गत ८ वर्षों से कंपनी को बीसियों पत्र लिखे, लेकिन कोई प्रति उत्तर नहीं। उपभोक्ता संरक्षण आयोग के महानिदेशक प्रतिबंधित व्यापारिक व्यवहार आयोग, नयी दिल्ली को भी कई बार लिखा परंतु कोई भी कार्यवाही नहीं हुई। अब क्या करूं ?

स्कूटर आपको देने के लिए कंपनी ने कोई कार्यवाही की या नहीं, उसका उल्लेख आपके पत्र में नहीं है। स्कूटर देने का पत्र आने से पूर्व यदि आपने अपनी जमा राशि वापस करने तथा स्कूटर की प्रतीक्षा सूची से अपना नाम काटने को लिख दिया था, तब तो आपकी रकम वापस हो जानी चाहिए थी। इसके लिए उपभोक्ता संरक्षण आयोग को पत्र भेजना पर्याप्त नहीं है— आपको अपनी रकम वापसी के लिए नियमानुसार आवेदन देना चाहिए। इस प्रकार का आवेदन विवाद सुलझाने के लिए बताये गये फोरम में दिये जाने चाहिए। रुपया वापस लेने के लिए आप दीवानी न्यायालय में दावा भी कर सकते हैं।

मंदिर पर कब्जा किसी का

क.ख.ग., राजस्थान : मैं समाज व पति के शिकार एक साधू नारी हूं। सन १९८२ में मैंने अपने जीवन-यापन के लिए राजस्थान सरकार की गोचर भूमि पर एक मंदिर बनाया था। सन १९९२ में एक समुदाय ने मेरे मंदिर को हटाकर नया मंदिर खड़ा कर लिया। मंदिर के साथ लगे मकान को वैसा ही रहने दिया, जिसमें मैं अपने लड़के के साथ रह रही हूं। मंदिर में मेरा लड़का ही पूजा-अर्चना करता है लेकिन कुछ लोग हमें यहां से भी निकाल देना चाहते हैं। बताइए, मैं क्या करूं ?

आपने सन १९८२ में सरकारी भूमि पर मंदिर खड़ा कर लिया, यानी वह भूमि सरकार ने आपको नहीं दी थी, बल्कि आपने अपनी मर्जी से सरकारी भूमि पर कब्जा कर लिया। इस मंदिर के स्थान पर फिर एक समुदाय ने नया मंदिर बना दिया, जिसमें पूजा-अर्चना लगातार आपका बेटा ही कर रहा है। इस स्थिति में आपके बेटे को पूजा-अर्चना करने से कोई जबरदस्ती नहीं रोक सकता। कोई भी व्यक्ति जो आपके बेटे के अधिकार को चुनौती देगा, उसे यह प्रमाणित करना होगा कि उसे उक्त मंदिर की पूजा-अर्चना करने का कानूनी अधिकार है। ●

अमरीका के कुछ हिस्सों में जहां जन्म और मृत्युदर के कारणों से श्रमिकों की कमी है नियोक्ताओं को शिक्षित और योग्य व्यक्ति मिल पाना कठिन हो गया है। ऐसे वक्त में जन्म हुआ 'एबल' नाम के संगठन का जो एबिलिटी बेसड ऑन लांग एक्सपीरियंस (लंबे अनुभव पर आधारित योग्यता) का संक्षिप्त रूप है। इस गैर सरकारी न हानि न लाभ के आधार पर चलनेवाले संगठन का उद्देश्य है बड़ी आयु के लोगों के लिए ऐसी नौकरियां ढूंढ़ना जहां उनकी कार्यकुशलता और अनुभव का सही मूल्यांकन और उपयोग हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत देर हो चुकी थी

● धर्मपाल गांधी

यदि लोग समय रहते ही छोटी-छोटी बातों को निपटा लें तो कितना अच्छा हो । इस पर कुछ सोच सकें तो कितना अच्छा हो ।

उसे मालूम न था कि रिश्तों के भी रंग होते हैं । काश, उसे मालूम होता तो शायद, वह ऐसा कभी न करती । उसे क्या मालूम था कि उसकी छोटी-सी भूल जिंदगीभर के लिए पश्चाताप का कारण बन जाएगी । उसे तो यह भी नहीं मालूम था कि बात क्या है ? क्या वह सचमुच उसकी ही भूल थी या फिर कोई और ही कारण था ।

अनिता इकहरे बदन की, मध्यम आय वर्ग के छोटे-से परिवार की मालकिन थी । उसके पति अशोक कालेज में प्राध्यापक थे । सीधे-सादे, सज्जन व्यक्ति थे । दोनों का पारिवारिक जीवन सुखमय था ।

एक दिन अशोक घर आये और आते ही कुछ खोजने लगे । सारे कागज, सारी किताबें छान मारी पर उनका पेपर, जिसे उन्हें आज निश्चित रूप से छपने के लिए भेजना था, उसे न मिलना था और न वह मिला । जाने कब, कहां अनिता ने या सफाई करने वाली ने उसे सफाई करते-करते कहीं रख दिया था । उसे भी याद न था । अब तो उसे खोजते-खोजते दूसरा, नहीं-नहीं, तीसरा दिन हो गया था ।

अशोक के सिर पर तो एक ही भूत सवार था । और जब किसी बात का भूत सवार होता है, तब उन्हें खाना-पीना कुछ भी अच्छा नहीं लगता । आज भी अशोक घर आये तो चाय-पानी पिये बिना कागज की खोज शुरू कर दी । आज तो थोड़ा-सा गुस्सा भी था । शायद, कालेज में ही कोई बात हो गयी थी । अशोक का यह गुस्सा देखकर अनिता भी कुछ न बोली । एक बार चाय के लिए पूछा जरूर । न कोई उत्तर नहीं मिला ।

कुछ बात करने की गरज से, यह सोचकर कि कुछ बोलेंगे तो मन का बोझ हलका हो जाएगा, वह चाय और पकौड़े बना लायी । पर अशोक को न बोलना था और न ही वे बोले ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

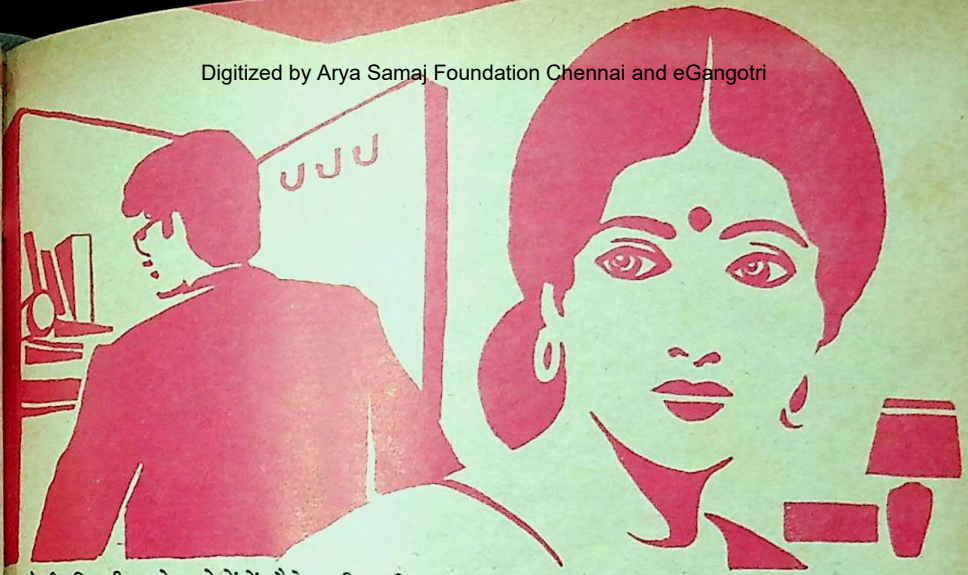

दो-तीन दिन बीत गये । दोनों में जैसे पक्की कुट्टी हो गयी थी ।

आज अनिता ने सोचा, 'चलो, मैं ही पूछ लेती हूं क्या हुआ है ? क्या कोई गलती हो गयी है ?' उसने सोचा, खाना खाने के बाद जब वे सोने जाएंगे तो चाहे कुछ भी हो वह पूछकर ही रहेगी । पति-पत्नी के बीच कई बातें होती हैं पर ऐसा तो कभी भी नहीं हुआ था कि पांच-पांच दिन तक कोई बात ही न हो । इन्हीं बातों में उलझी वह उठी ही थी कि अशोक आ गये । अशोक का मूड कुछ ठीक-ठाक लग रहा था । अशोक ने आते ही कहा 'अरे भाई कोई चाय वाय मिलेगी या नहीं ?' 'अभी लायी', कहकर अनिता अंदर चली गयी । और पांच मिनट बाद लौटी तो क्या देखती है कि उसके पति लेटे हुए हैं । उसने कहा, 'चाय तैयार है सरकार ।' पर कोई उत्तर नहीं मिला । वह चाय रखकर अंदर से बिस्कुट लेने के लिए गयी और आते ही कहा, 'अरे !' आप अभी तक लेटे हुए हैं उठिए ! चाय ठंडी हो जाएगी । इतने पर कोई उत्तर नहीं मिला । उसने ज्यों ही उठाने की गरज से हाथ छुआ तो पाया कि वहां तो पंख पखेरू ही नहीं रहे । अनिता 'न...हीं...' कहते-कहते कब बेहोश हो गयी, उसे नहीं मालूम । यह तो अनिता की बहन थी, जो चीखने की आवाज सुनकर अंदर से दौड़ी आयी थी । उसने ही जीजी को संभाला था ।

काश ! अनिता को मालूम होता कि अगले ही पल क्या होने जा रहा है, तो वह चाय बनाने से पहले ही अपने पति से पूछ लेती कि क्या बात थी ? क्यों वे इतने परेशान थे ? उससे क्या गलती हो गयी थी ? क्यों इतने दिन तक कुट्टी कर रखी थी ? पर, अब क्या हो सकता था ? इस सबके लिए तो अब काफी देर हो चुकी थी । पर हां, अब भी जब कभी उसे याद आती है तो वह यही सोचती है कि उसके लिए तो इन सब बातों के लिए तो बहुत देर हो चुकी थी पर यदि लोग समय रहते ही छोटी-छोटी बातों को निपटा लें, तो कितना अच्छा हो । इस पर कुछ सोच सकें तो कितना अच्छा हो ।

—४७११, शोरा कोठी. पहाड़ गंज,
नयी दिल्ली—११००५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

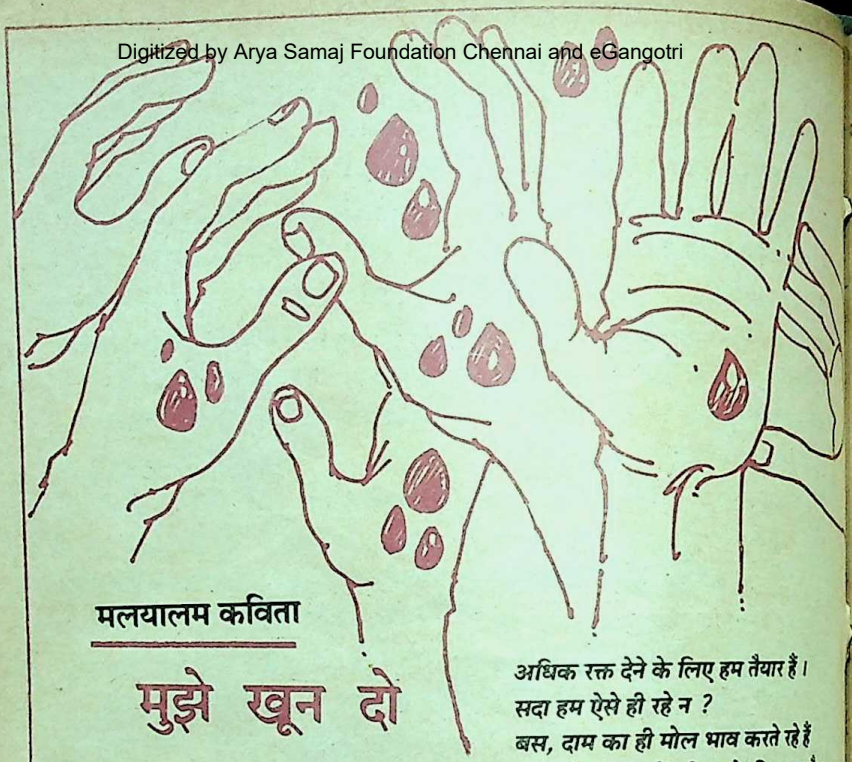

मलयालम कविता

मुझे खून दो

● डॉ. अय्यप्प पणिक्कर

'मुझे खून दो, मैं आजादी दिला दूंगा'
यह किसकी पुकार
सागर के उस पार से आ रही है ?
हमारे पास तो केवल हमारी जरूरतभर का खून है
बदले में हमें आजादी किसलिए ?
अब तो हमें हर बात की आजादी है न ?
देशी शराब बनाओ,
पर्यावरण प्रदूषित करो
कौन पूछता है ?
किसका समर्थन चाहिए ?
हमारे वर्तमान रक्त में
वे सभी तत्त्व विद्यमान हैं
जिनकी हमें आवश्यकता है ।
फिर भी
यदि आजादी दिलाएंगे तो
अधिक रक्त देने के लिए हम तैयार हैं ।
सदा हम ऐसे ही रहे न ?
बस, दाम का ही मोल भाव करते रहे हैं
आज के बाजार में भी इसके लिए छूट है ।
हमने हमेशा बाजार दर का ख्याल रखकर ही
जीवन बिताया है ।
खून तो हम अब भी बहा रहे हैं
स्वकीय नहीं,
परकीय ।
हमें तो दूसरे का खून बहाने की आजादी चाहिए
यदि उसकी आजादी नहीं
तो आजादी किस काम की ?
जो हो
मेरा खून तो
मेरे पास ही रहे !

अनुवाद—के. जी. बालकृष्ण पि

मूल कवि का पता : सरोवरम, गांधी
तिरुवनंतपुरम, पिन-६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. **दो** या अधिक अंकों की कोई संख्या दी गयी हो तो तत्काल उतने ही और उन्हीं अंकों की दूसरी संख्या कैसे बनायें कि दोनों संख्याओं का अंतर ९ से विभाज्य हो ?

२. **तुलसीदास** का कौन-सा ग्रंथ विषय, वर्णन और शैली में 'सूर-सागर' से मिलता-जुलता है ?

३. **क. अमीर** खुसरो की उस कृति का नाम बताइए जिसमें अलाउद्दीन के बेटे खिज्र खां और देवगिरि की राजकुमारी देवल देवी की प्रेमकथा वर्णित है ?

ख. खुसरो को अन्य किस नाम से याद किया जाता है ?

४. **क. भारत** का क्षेत्रफल कितना है ?

ख. देश की थलसीमा तथा तटरेखा कितनी है ?

५. **क इस** समय भारत का खाद्यान्न-उत्पादन कितना है ? अब देश को खाद्यान्न के आयात की आवश्यकता है या नहीं ?

ख. १९९१-९२ में खाद्यान्न के निर्यात से कितनी विदेशी मुद्रा अर्जित हुई ?

६. **क. भारतीय** थलसेना के पास आधुनिक संपर्क-प्रणाली कौन-सी है ?

ख. भारतीय वायुसेना और नौसेना को इस वर्ष कौन-सा अत्याधुनिक हथियार मिलने की आशा है, जिससे वह हमलावर विमान या युद्धपोत का पता लगा सकता है और उनसे दागी जानेवाली मिसाइल को विफल कर सकता है ?

७. **क. इस** समय किस देश में पुरुषों तथा महिलाओं का औसत जीवन विश्व में सर्वाधिक है ?

ख. उस देश में सौ वर्ष की उम्र पार करनेवालों की संख्या कितनी है ?

८. **भारत** में पहली बार कहां एक 'हाइड्रोजन ग्राम' बनाये जाने की योजना है, जिसके द्वारा सौर ऊर्जा से बिजली बनाने में हाइड्रोजन का प्रयोग किया जा सकेगा ?

९. **निम्नलिखित** पुरस्कार किसे मिले हैं ?—

(क) जी. डी. बिड़ला पुर., (ख) ग्रैमी अवार्ड ।

१०. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।

—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फारसी कहानी

पिरामिड में दफन लाश ने बचायी जान

वह जनवरी की एक कड़कड़ाती सुबह थी। मैं दो दिन पहले, काहिरा में पिरामिडों को खोजकर ऑक्सफोर्ड लौटा था, और उस सुबह अपने घनिष्ठ मित्र चार्ल्स से भेंट करने के इरादे से घर से निकला था।

चार्ल्स अलाव के सामने बैठा अखबार पढ़ रहा था। मुझे देखते ही बड़ी गर्मजोशी से मेरी ओर बढ़ा, और देर तक मेरे गाल और मस्तक

कारागार

● अल्लाम अलहिंदी

चूमता रहा। चार्ल्स की सब-कुछ जान लेने की उत्सुकता उसे अधीर किये दे रही थी। वह मुझसे कुरेद-कुरेदकर प्रश्न करता रहा, और मैं संक्षिप्त में उसे सारी रामकथा सुनाता रहा। उसकी हालत उस समय देखने योग्य थी जब मैंने द्वितीय श्रृंखला के फिरऔन का जिक्र छेड़ दिया था।

चार्ल्स तमाम वृत्तांत सुनकर खाली-खाली निगाहों से अलाव से निकल रही लपटों को निहारने लगा तो मुझे अजीब-सा लगा, मैंने मौन तोड़ा, "चार्ल्स ! आखिर क्या कारण है कि तुम फिरऔनी सभ्यता में इतनी अभिरुचि रखने के बावजूद मिस्र नहीं जाते। मैं समझता हूं तुम्हें मिस्र गये हुए बीस-पच्चीस वर्ष हो गये होंगे, इस अवधि में असंख्य खुदाइयां हुईं, प्राचीन मिस्री सभ्यता से संबंधित कितने ही रहस्य प्रकाश में आये हैं।"

चार्ल्स एकटक अलाव की ओर ताकता रहा। मैं सोचने लगा, मैंने कौन-सी ऐसी बात कह दी जिससे चार्ल्स को दुख पहुंचा, शायद उसके मिस्र न जाने का कारण उसके साथ अतीत में घटी कोई बड़ी दुर्घटना हो जिसको जाने-अनजाने में मैंने कुरेद दिया था। सहसा चार्ल्स बोला, "मैं आज तुम्हें वह कहानी सुनाऊंगा जो मैंने पहले किसी को नहीं सुनायी है..." फिर आंखें मूंदकर कुरसी पर पीठ टिकाकर बोलने लगा।

जब मैं जवान था, ऑक्सफोर्ड में पुरातत्व विज्ञान के एक छात्र से मेरा परिचय हुआ। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

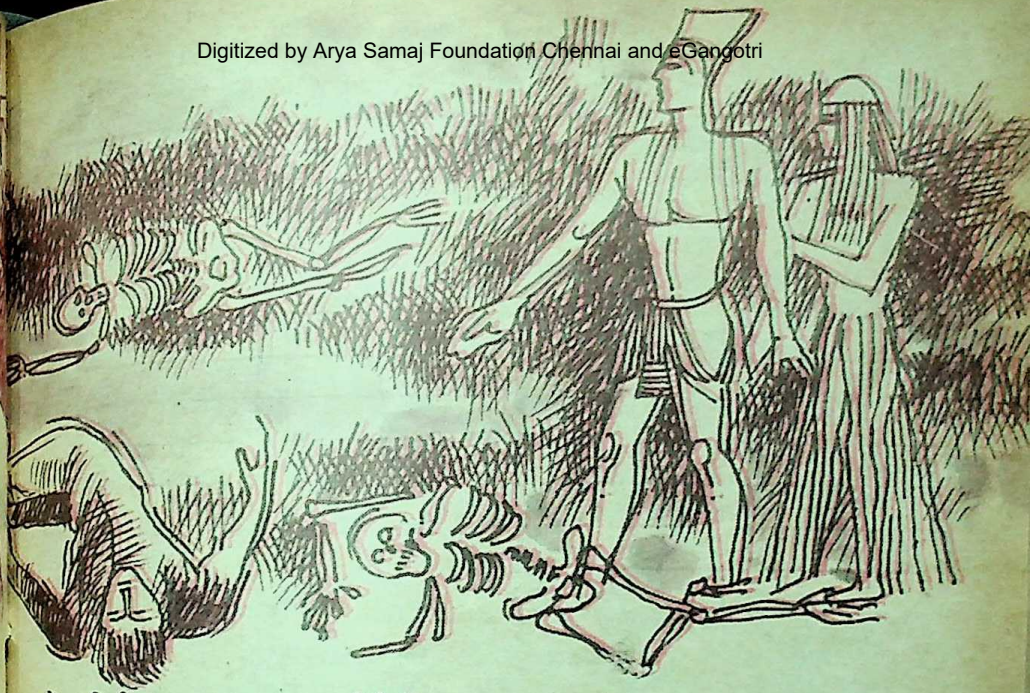

में वह मिस्री सभ्यता का अध्ययन करने के लिए मिस्र चला गया । मैं उसका नाम तुम्हें नहीं बताऊंगा, पर इस कहानी में हम उसको रॉबर्ट जान्स के नाम से याद करेंगे ।

उन्हीं दिनों पुरातत्त्व विज्ञान के एक जरमन विद्वान स्मिथ ने मिस्र के पिरामिडों से संबंधित अपनी कुछ नवीन खोजों से पुरातत्त्ववेत्ताओं को हैरान कर दिया था । स्मिथ की आयु पचास के लगभग थी । जब देखो अपने शिविर या खंडहरों में गवेषणा में लीन रहता— उसकी पत्नी ओल्गा उसकी आयु से बहुत कम, सिर्फ तेइस साल की एक सुंदर रूसी युवती थी, जो निकट ही एक होटल में रहती थी । स्मिथ का ज्यादातर समय भग्नावशेषों के बीच बीतता, उसने वहीं अपना शिविर लगा रखा था । स्मिथ ने रॉबर्ट जान्स को भी अपने गवेषणा-अभियान में शामिल कर लिया । श्रीमती स्मिथ अर्थात ओल्गा, सुंदर होने के साथ-साथ हाजिरजवाब, जिंदादिल, और विद्वान भी थी । जरमन, फ्रेंच और अंगरेजी आसानी से बोलती थी । स्मिथ की धर्मपत्नी बनने से पहले वह यूरोप के बहुत से नाइट क्लबों और नृत्यशालाओं में अपना नृत्य-प्रदर्शन भी कर चुकी थी ।

ओल्गा अपनी रातें होटल में ही बिताती थी । धीरे-धीरे रॉबर्ट जान्स और ओल्गा में प्रगाढ़ मैत्री हो गयी । इस मित्रता में जान्स कभी भी हद से आगे नहीं बढ़ा था । लेकिन काहिरा के कुछ लोगों ने दोनों के विषय में तरह-तरह की अफवाहें फैलायीं ।

उन दिनों स्मिथ फिरऔन सप्तम के मकबरे

मैं तूतमिस हूं । इस समय जबकि मेरा अंत आ पहुंचा है, अपने बाद इस कारागार में आनेवालों के लिए यह पत्र छोड़ रहा हूं...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अध्ययन में व्यस्त था । शायद वह रहस्यमयी फिरऔनी सभ्यता के किसी नये रहस्य पर से परदा उठानेवाला था और आखिर एक दिन जान्स को स्मिथ ने यह खुशखबरी सुना ही डाली कि अगले दिन वह अपनी सारी नवीन खोजों का विवरण उसके और ओल्गा के सामने खोल-खोलकर बयान करेगा ।

दूसरे दिन योजना के अनुसार जान्स और ओल्गा स्मिथ के खेमे में पहुंचे और बाद में तीनों ऊंटों पर सवार होकर बड़े पिरामिड की ओर चल पड़े ।

सफर समाप्त हुआ, और तीनों बड़े पिरामिड के सामने पहुंचकर उसमें दाखिल हो गये । स्मिथ गाइडों की तरह आगे-आगे चलकर उन्हें बताने लगा...

'इस समय हम लोग फिरऔन सप्तम के पिरामिड में हैं । ये सैकड़ों एकड़ में फैले एक-एक पिरामिड वास्तव में उन दमनकारी फिरऔनों के मकबरे हैं । हर पिरामिड अंदर से एक विशाल राजमहल था, जिसमें वह तमाम सुविधाएं उपलब्ध थीं । यह पिरामिड जिसमें हम सब हैं, मेरे अनुसंधान के अनुसार फिरऔन सप्तम का है । यह पिरामिड अन्य पिरामिडों से काफी बड़ा और विस्तृत है ।

स्मिथ पिरामिड के एक-एक कोण की व्याख्या इस अंदाज से कर रहा था, जैसे वह हजारों वर्ष पहले के मिस्र का कोई नागरिक हो ।

सहसा उसने कहा, 'अब हम यह देखें कि इस मंदिर के तहखाने में क्या है ?' और उसने अपनी जेब से मोमबत्तियां निकालकर दोनों को थमा दीं, और बोला, 'मैं अंदर जाकर पहले कुछ सफाई करता हूं, फिर जब इशारा करूंगा तो इसको जलाकर तुम दोनों भी आ जाना । कुछ देर बाद उसने तहखाने से सिर निकालकर दोनों को अंदर बुलाया । तहखाने का भयानक अंधकार देखकर जान्स की सांसें उखड़ने लगीं । पता नहीं ओल्गा की क्या दशा थी । तहखाना भी अंतहीन था । स्मिथ चलते-चलते एक चित्रित दीवार के पास रुक गया और उस पर टेक लगा आंखें मूंद लीं, जैसे सुस्ता रहा हो । जान्स और ओल्गा भी वहीं बैठ गये और स्मिथ के बोलने का इंतजार करने लगे ।

'अब मैं तुम दोनों को एक अजीबोगरीब कहानी सुनाऊंगा... ।' अचानक स्मिथ ठहर-ठहरकर बोला, 'और वह कहानी है निफ्रेतीती और तूतमिस की, पर प्रसिद्ध निफ्रेतीती की नहीं, यह कहानी एक दूसरी निफ्रेतीती की है । वह मेरी ओल्गा की तरह सुंदर थी । लंबे शरीर और काले घने केशों की मालिक होने के साथ काव्य-मर्मज्ञ भी थी ।

निफ्रेतीती अपनी अद्वितीय सुंदरता के कारण सारे मिस्र में प्रसिद्ध थी ।

निफ्रेतीती ने अपने अगणित आशिकों और प्रेमियों को मायूस कर दिया था, और अंत में उसने आमिनहोतिब नामक फिरऔनी सेनाध्यक्ष से शादी कर ली । सारा मिस्र निफ्रेतीती के इस चुनाव पर चकित रह गया क्योंकि आमिनहोतिब एक बूढ़ा और निफ्रेतीती के पिता की आयु का था । मिस्र में तरह-तरह की अफवाहें फैलीं, लेकिन यह असलियत किसी की समझ में न आ सकी... जैसा कि आज मेरे और ओल्गा के बारे में काहिरा में तरह-तरह की अफवाहें फैली हुई हैं । संयोग ऐसा कि निफ्रेतीती और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमिनहोतिब की शादी के चार सप्ताह भी नहीं हुए थे, मिस्र के दक्षिणी हिस्से पर दुश्मन ने आक्रमण कर दिया, और फिरऔन ने आमिनहोतिब को सीमा की ओर भेज दिया। निफ्रेतीती के आशिकों ने अवसर का लाभ उठाना चाहा लेकिन उन्हें सिवाय निराशा के और कुछ हाथ न लगा। निफ्रेतीती का एक चचेरा भाई था तूतमिस। यह फिरऔन का गृहमंत्री और निफ्रेतीती का बचपन का दोस्त था। उसने आमिनहोतिब की अनुपस्थिति से फायदा उठाते हुए निफ्रेतीती से अपने संबंध बढ़ाये। आमिनहोतिब जब युद्ध से सफल होकर वापस लौटा तो मिस्र के गली-कूचों में निफ्रेतीती और तूतमिस की लंबी-लंबी मुलाकातों की बातें सुनीं। लेकिन उसने उन अफवाहों पर कोई खास ध्यान नहीं दिया।'

स्मिथ अचानक रुक गया, सिगरेट सुलगायी, और एक लंबे कश के बाद ढेरों धुआं छोड़कर अपना किस्सा दुबारा शुरू किया।

आमिनहोतिब एक स्वाभिमानी व्यक्ति था। जब निफ्रेतीती और तूतमिस के प्रेम और लंबी मुलाकातों की खबरें दिन-प्रतिदिन जोर पकड़ती गयीं तो उसने यह किस्सा ही पाक कर देने का निश्चय कर लिया। और फिरऔन से आज्ञा लेकर निफ्रेतीती और तूतमिस को इसी तहखाने में निमंत्रित किया, और कहा, 'इस तहखाने में कुछ ऐसी विचित्र वस्तुएं हैं जिन्हें देखकर तुम दोनों आश्चर्यचकित रह जाओगे।' स्मिथ कहानी रोककर बोला, 'क्या तुम लोग यह ख्याल नहीं करते कि उनकी कहानी हमारी कहानी से कितनी ज्यादा मिल रही है। वे भी तीन थे, एक बूढ़ा,

जान्स उस अंधेरे में जाने कब तक भटकता रहा, भटकता रहा... जब उसकी आंख खुली तो उसने खुद को एक नरम बिस्तर पर पाया।

एक युवक और एक युवती, और हम भी... हां तो उन तीनों ने तहखाने के इस दालान को बिलकुल इसी तरह पार किया जैसे इस समय हम तीनों हाथों में जलती मोमबत्ती लिए पार कर रहे हैं।' स्मिथ अजीब डरावनी-सी हंसी हंसा। जान्स के शरीर में चींटियां रेंगने लगीं। जान्स की स्थिति उस समय बिलकुल उस बच्चे की-सी थी, जो डरावनी कहानी सुनकर रजाई में दुबका कांप रहा हो, लेकिन जिज्ञासा से मजबूर होकर कहानी के अंत का भी बेसब्री से इंतजार कर रहा हो।

स्मिथ ने सिगरेट के बादामी फिल्टर को पथरीली दीवार पर मसल दिया। तहखाने के भयानक अंधियारे में मोमबत्ती की रोशनी बड़ी रहस्यमय लग रही थी। उसने एक दीवार की ओर इशारा किया, गौर से देखने पर मालूम हुआ वहां कोई दरवाजा है। अचानक एक भयानक गड़गड़ाहट हुई और जान्स का सीना धौंकनी के समान चलने लगा। लेकिन शीघ्र ही उसने जान लिया कि यह स्मिथ का कारनामा था। वह पथरीला दरवाजा धीरे-धीरे पीछे की ओर खिसक रहा था और उसके पीछे दिखायी पड़ रहे कमरे का अंधियारा जान्स की आत्मा को थर्राये दे रहा था, पर ओलगा तो निर्भीक खड़ी थी। जान्स को अपनी बुजदिली पर शरम आने लगी... तभी पीछे से स्मिथ की आवाज आयी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मेरे प्यारो, निर्भय अंदर दाखिल हो जाओ' और दोनों अंदर घुस पड़े ।

अचानक जान्स को एक भयानक झटका-सा लगा, क्योंकि उस कब्रनुमा कमरे का वह निराला दरवाजा बड़ी खामोशी से बंद हो गया था । अभी जान्स और ओल्गा आश्चर्य में डूबे एक-दूसरे को निहार ही रहे थे कि दीवार में एक छोटी-सी खिड़की प्रकट हुई और उसमें स्मिथ का चेहरा नजर आया । उसका चेहरा, क्रोध से लाल-भभूका हो रहा था । उसने किसी लड़ाकू कुत्ते के समान अपने दांत बाहर निकाले और भौंकना शुरू किया, 'ओ दीवानो ! शायद तुम लोगों ने मुझे एक मूर्ख बूढ़े से ज्यादा कुछ न समझा था । तुम दोनों समझ रहे थे कि मैं तुम्हारे गुप्त संबंधों से अनभिज्ञ हूं, लेकिन अब तुम्हें मालूम हो गया होगा कि स्मिथ मूर्ख नहीं था । तुम दोनों ध्यान से मेरी बात सुनो । मैं तुम्हें निफ्रेतीती और तूतमिस की कहानी का शेष भाग सुनाता हूं ।

जिस समय आमिनहोतिब अपनी पत्नी और तूतमिस को इस दीवार के पास लेकर आया तो उसने बंद दरवाजे को खोला, जैसे कि मैंने खोला था । फिर उसने दोनों को इसी कमरे में दाखिल कर दिया, जैसा कि मैंने किया । तत्पश्चात उसने दरवाजा बंद करके दोनों प्रेमियों को सदा-सदा के लिए कैद कर दिया, और उनको उनके पापों की पूरी सजा दी, और चार हजार वर्ष बाद मैंने भी तुम दोनों के साथ वही पुरानी दास्तान दुहरायी है ।

फिर वह बोला, 'मैं समझता हूं तुम लोग इस कारागार का दरवाजा खोलने की मूर्खता नहीं करोगे, क्योंकि इस प्रयास में कई सदियां गंवाने के बाद भी तुम सफल नहीं हो सकते । अब मैं तुम लोगों को इस कारागार की एक और कहानी सुनाऊं । निफ्रेतीती और तूतमिस की कैद से पहले एक आदमी ने फिरऔन की हत्या करने का प्रयास किया था, जिसको यहां लाकर कैद कर दिया गया, और इस कारागार का वह एकमात्र छिद्र जिससे तुम सांसें ले रहे हो, ऊपर दिखायी पड़ रहा है । उसमें से कारागार में पानी भरा गया और महीन कंकरियों की वर्षा की गयी । अतः कैदी घुट-घुटकर मर गया । शायद वह फिरऔन बहुत ही रसिक था जिसने इतने रोमांचक कारागार का निर्माण कराया । जब आमिनहोतिब ने अपनी दुश्चरित्र पत्नी और उसके प्रेमी को यहां कैद किया तो फिरऔन से निवेदन किया कि उनको जलमग्न न किया जाए बल्कि भूख की सजा दी जाए । अतः ऐसा ही हुआ । वे इस चट्टानी द्वार को कभी न हटा सके, और सिसक-सिसककर मर गये ।

तुम्हारा भी वही अंजाम होगा । यदि तनहाई में तुम दोनों का जी घबराये तो दायीं ओर देखो, तुम्हारे मित्र निफ्रेतीती और तूतमिस के अस्थि पंजर मौजूद हैं, उनसे दिल बहला लिया करना ।'

बूढ़े स्मिथ ने अपनी बात समाप्त करके हंसना शुरू किया, और उस सन्नाटे में उसका वह अंतिम कहकहा ऐसे गूंज रहा था, मानो सैकड़ों देव एक साथ मिलकर कहकहे लगा रहे हों ।

फिर उसका चेहरा खिड़की से लुप्त हो गया और वहां एक पत्थर इस प्रकार से फिट हो गया कि जैसे वहां कभी कुछ था ही नहीं... कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देर बाद स्मिथ की घुटी-घुटी-सी चीख सुनायी दी, फिर चारों ओर सन्नाटा छा गया... स्मिथ ने आत्महत्या कर ली थी !!!

(२)

चार्ल्स खामोश हो गया, और आंखें मूंदकर कुरसी के पृष्ठ पर सिर टिकाकर इस तरह हांफने लगा जैसे मीलों दौड़ने के बाद मंजिल पर पहुंचकर कोई सुसताये । मैंने समझा वह अपनी कहानी समाप्त कर चुका है, और उससे बोला... 'उफ... कितना भयानक हादसा है... लेकिन चार्ल्स ! एक बात मेरी समझ में नहीं आयी... वह यह कि तुमने कहानी की छोटी-छोटी बातें भी इस अंदाज से बयान की हैं जैसे कोई चौथा भी इस कहानी में मौजूद रहा है ।'

चार्ल्स हंसा, और पाइप को होंठों तले दबाकर देर तक दायें-बायें करता रहा, फिर बोलने लगा—

जान्स और ओल्गा इस आकस्मिक विपत्ति से बुरी तरह व्याकुल हुए । उन्हें अपने बंदी होने से अधिक दुःख इस बात का था कि बूढ़े स्मिथ ने मात्र गलतफहमी के कारण ऐसा किया था । ओल्गा की हालत तो कैद होने के बाद से ही बिगड़ने लगी थी । उसने दहाड़ें मारकर पागलों की तरह चिल्लाना शुरू कर दिया था । जान्स भी इस भीषण दुर्घटना से दिल-ही-दिल में रो रहा था ।

थोड़ी देर बाद जान्स अपने स्थान से उठा और ओल्गा के कंधे पर हाथ रखकर बोला— 'ओल्गा ! इसमें संदेह नहीं कि हम लोग एक बड़े संकट में घिर गये हैं, लेकिन अब इस

व्याकुलता से कोई फायदा नहीं । तुम्हारा पति गलतफहमी का शिकार था । अब इन बातों को याद करके हमें कुछ न मिलेगा । अतः उचित यह है कि हम अपने होशोहवास पर काबू रखें । शायद हमारे निकलने का कोई मार्ग निकल आये ।'

ओल्गा उसकी बातें सुनकर इतना प्रभावित हुई कि पल-भर में उसके चेहरे की सारी परेशानी दूर हो गयी । और वह ऐसी दिखने लगी जैसे कारागार में नहीं, पुस्तकालय में बैठी हो । जान्स ने उसे देखा, और सोचने लगा... यह लड़की वास्तव में बड़ी साहसी है, इसका दुःख मेरे दुःख से रत्तीभर कम नहीं, परंतु स्त्री होने के बावजूद इसके चेहरे पर कितनी शांति है । अचानक उसने स्वयं को उसके इश्क में गिरफ़्तार पाया, वह सोचने लगा... 'हाय... यह ख्याल मेरे दिल में पहले क्यों नहीं आया ?'

जान्स ये बातें सोचते-सोचते सो गया । जब आंख खुली तो फिर यही बातें उसके दिमाग में चक्कर काटने लगीं, वह अपने स्थान से उठा, और हौले-हौले ओल्गा के पास पहुंचा । ओल्गा दीवार से टेक लगाये सो रही थी । सच बात तो यह है कि जान्स के लिए वह पहला अवसर था, जब उसने ओल्गा के सर्वांग का गहरी दृष्टि से जायजा लिया था । अचानक ओल्गा ने आंखें खोल दीं, और मुसकराकर बोली, 'मैं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूब सोयी शायद तुम भी सोते रहे हो ?' जान्स उसके बराबर में बैठ गया, और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोला, 'ओलगा ! समय ने हमारे साथ कैसा मजाक किया है... मैंने एक किताब में पढ़ा था, एक यूनानी युवक ने भगवान से प्रार्थना की थी, 'हे भगवान ! तू मुझे जवानी में ही मौत दे दे ताकि मैं बुढ़ापे के कष्ट से मुक्त हो जाऊं— और यह सत्य है कि जो भगवान का प्रिय होता है, भगवान अपने पास उसको जल्दी बुला लेता है, और हम निर्दोष भी जवान हैं, और जवानी में ही भगवान के पास जाएंगे ।'

पता नहीं उस कारागार में उन्हें चंद घंटे बीते थे या चंद दिन, लेकिन अब उन्हें भूख के दर्द ने सताना शुरू कर दिया था । उन पर बेहोशी छाने लगी थी ।

जाने कितने समय बाद जान्स की आंख खुलीं, और उसने खुद को भला-चंगा महसूस किया, जैसे बेहोशी के दौरान कोई अलौकिक हाथ उसके मुंह में बलदायक भोजन डालता रहा हो । वह उठ खड़ा हुआ, और एक नये विश्वास के साथ फिर से कारागार से स्वतंत्र होने का रास्ता तलाश करने लगा । अचानक वह निफ्रेतीती और तूतमिस के पंजर से टकरा गया । वह लड़खड़ाकर गिरा । आखिर वह अपनी सारी शक्ति एकत्रित करके फिर से उठा, और पूरी शक्ति से दीवानों की तरह चिल्लाया, 'हे मेरे प्यारे तूतमिस ! हे मेरी प्यारी निफ्रेतीती हमारी दीनता पर दया करो, और हमें इस कैद से मुक्ति दिलाओ ।' फिर वह ढांचों से लिपट गया, और बोला, 'देखो, देखो, देखो ! इस भग्न हृदय की ओर देखो ! इस निर्दोष की फरियाद सुनो !'

जान्स दोनों हाथ फैलाकर ढांचों के सामने गिड़गिड़ा रहा था, अचानक उसको ऐसा लगा जैसे एक ढांचा अपने दायें हाथ की बीचवाली अंगुली से कोने की ओर इशारा कर रहा हो । जान्स ने चौंककर कोने की तरफ देखा, परंतु कुछ समझ में नहीं आया । उसने कांपते हाथों से जेब से माचिस निकालकर मोमबत्ती जलायी । कारागार में डरावनी रोशनी फैल गयी । जान्स कोने की ओर दौड़ा । चिकने पत्थर पर लाल रंग में प्राचीन मिस्री चित्र लिपि में कुछ लिखा था । जान्स ने उसे पढ़ना शुरू किया । यह ओलगा की देन थी कि उसने प्राचीन मिस्री चित्र लिपि में थोड़ी-सी भिन्नता प्राप्त कर ली थी । बहरहाल, उसने चित्र लिपि को हल करना शुरू किया । लेकिन चार पंक्तियां हल करने के बाद वह रुक गया, अब उसे परेशानी होने लगी थी । उसने ओलगा की ओर देखा, पर वह बेहोश पड़ी थी । आखिर उसने खुद ही दृढ़ निश्चय के साथ एक बार फिर प्रयास किया और कई घंटे के कठिन परिश्रम के बाद उसने उन चित्रों से जो लेख प्राप्त किया, वह यह था—

''मैं तूतमिस हूं, इस समय जबकि मेरा अंत आ पहुंचा है, अपने बाद इस कारागार में आनेवालों के लिए यह पत्र छोड़ रहा हूं, ताकि जो कष्ट मैंने उठाए हैं, मेरे बाद आनेवाला व्यक्ति उससे मुक्ति पा सके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारागार का भेद मुझ पर उस समय खुला जब देर हो चुकी थी, निफ्रेतीती मेरा साथ छोड़ चुकी थी, और मैं उसका शव अपने कंधे पर लिए दीवानों की तरह इसमें चक्कर काट रहा था, तभी मैंने इस रहस्य को पा लिया कि यहां से बाहर किस प्रकार निकला जा सकता है, परंतु अब जबकि निफ्रेतीती ने मेरा साथ छोड़ दिया है, तो मेरी जीवित रहने की इच्छा ने भी दम तोड़ दिया है, अतः मैंने अपनी नसों को काट दिया है, और अपने रक्त से यह संदेश लिख रहा हूं, इस कारागार को उत्तरी-पश्चिमी कोने से १५ हाथ, और दक्षिणी-पश्चिमी कोने से ११ हाथ नापा जाए, इस प्रकार दोनों मापों के बीच की दूरी को समबाहु त्रिभुज की एक रेखा मानकर शेष दो रेखाएं खींचीं जाएं, इस प्रकार त्रिभुज का जो कोना पूरब की ओर पड़े, वही इस द्वार की कुंजी है, उस पर अपने शरीर का सारा बल डाला जाए, द्वार खुल जाएगा...''

जान्स वहां से झटके के साथ उठा, वह नहीं जानता था कि उत्तर-दक्षिण और पूरब-पश्चिम किधर है। उसने एक दिशा को पूरब और उसके सामने की दिशा को पश्चिम मानकर पहला प्रयास किया, द्वार नहीं खुला। दूसरी बार दिशाओं का दूसरा निर्धारण करके फिर कोशिश की, द्वार नहीं खुला। तीसरी बार उसने फिर प्रयास किया, और त्रिभुज के पूर्वीय कोण पर पूरा बल डाला... भयानक गड़गड़ाहट हुई, और द्वार अपने स्थान से खिसकना शुरू हुआ... जान्स खुशी से पागल हुआ जा रहा था। बदकिस्मत तूतमिस क्रा लेख आखिर चार हजार वर्ष बाद जान्स के काम आया था। द्वार पूरी तरह खुल चुका था। ओल्गा अभी तक बेहोश पड़ी थी। जान्स ने वहां एक क्षण भी बरबाद नहीं किया, कहीं यह द्वार फिर न बंद हो जाए, और ऐसा बंद हो कि कभी न खुले। उसने ओल्गा को कंधे पर उठाया, और बिजली की-सी तेजी के साथ बाहर निकल पड़ा, उसके शरीर का बल कई गुणा बढ़ गया था। ओल्गा की लंबी बेहोशी जल्द से जल्द किसी डॉक्टर के पहुंचने का तकाजा कर रही थी।

पिरामिड का भयानक अंधियारा बाहर निकलने का मार्ग छिपाये हुए था।

जान्स उस अंधेरे में जाने कब तक भटकता रहा, भटकता रहा, भटकता रहा,... जब उसकी आंख खुली तो उसने खुद को एक नरम बिस्तर पर पड़ा पाया। उसका उपकारी काहिरा का एक बद्दू था, जिसने बताया, 'जब वह बड़े पिरामिड के पास से गुजर रहा था तो उसको और एक लड़की को एक टीले पर पड़ा पाया था... लेकिन लड़की का शरीर प्राण से मुक्त था...'

चार्ल्स अचानक उठ खड़ा हुआ, और खाली-खाली निगाहों से अलाव की ओर ताकने लगा।

त्रैमासिक 'रोजगारे-नौ' फारसी (लंदन) से

•

— जे ५/६०, आजाद पार्क, वाराणसी

विदेशी प्रजाति की वनस्पति प्रोसोपिस ज्यूलीफ्लोरा ने कच्छ क्षेत्र में आने के साथ वहां की घास भूमि पर अपना कब्जा जमा लिया है। स्थानीय लोग, खासकर चरवाहे इस वृक्ष को गांडा बावल अथवा पागल वृक्ष कहते हैं। उनके अनुसार इस वृक्ष की बगैर छिली हुई फलियां खाने के कारण गाय और भैंसों के जबड़े खिसक गये हैं। यह बीमारी मृत्यु की स्थिति तक पहुंचती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्यतः आदिवासी सरल और सीधे होते हैं, लेकिन उनमें वह बात अब नहीं रही है। अब वे गुस्सैल होते जा रहे हैं। उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक ढांचे को बाहरी व्यक्तियों के हस्तक्षेप ने तहस-नहस कर दिया है।

बस्तर विकास

आधी हकीकत आधा फसाना

● शहजाद अहमद

बस्तर को पहले दुर्गम समझा जाता था; अब नहीं। लेकिन बहुतेरे लोगों को अभी भी नहीं मालूम होगा कि बस्तर के अबूझमाड़ में अनेक गांव ऐसे हैं, जिनका आज तक सर्वे नहीं हुआ है। ... गांव होते हुए भी सरकारी कागजों में नहीं हैं।

बस्तर का क्षेत्रफल ३९,११४ वर्ग किलोमीटर है, जिसमें अबूझमाड़ का चार हजार वर्ग किलोमीटर का हिस्सा है। अबूझमाड़ के निवासी खुद को 'मरा कोई तोर' (पहाड़ी के निवासी) कहते हैं और अपने क्षेत्र को 'मेरा मुम' (पहाड़ों की जगह)। जून से लेकर दिसम्बर तक बाहरी दुनिया से कटा हुआ यह चार हजार वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र आज भी किसी सरकारी खाते में दर्ज नहीं है। न तो राजस्व में और न ही वन में। एक लिहाज से इस क्षेत्र को 'नोमेंस लैंड' कहा जा सकता है।

आदिवासियों को पहले भी प्रकृति से निरंतर संघर्ष करना पड़ता था और वह आज तक जारी है, लेकिन अब उसे दोहरा संघर्ष करना पड़ रहा है। प्रकृति से लड़ने का तो वह आदी था लेकिन आजादी के बाद अचानक उसके क्षेत्रों में विकास के नाम पर आयी सरकारी योजनाओं के माध्यम से पहुंचे कारिंदे तथा दलाल, जिन्होंने न सिर्फ उसकी जमीन और जंगल छीने बल्कि उसकी औरतें तक हथिया लीं।

दांव-पेचों के शिकार आदिवासी

बस्तर के जीवन ने पहली करवट तब ली जब सरकार ने एक कानून के जरिये आदिवासियों के खेतों में खड़े पेड़ों का अधिकार उसके मालिक को दे दिया। कानून क्या बना, लकड़ी के ठेकेदारों की बन आयी और वे बस्तर पर टूट पड़े। बस्तर के आदिवासी, व्यापारी नहीं थे। वे अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

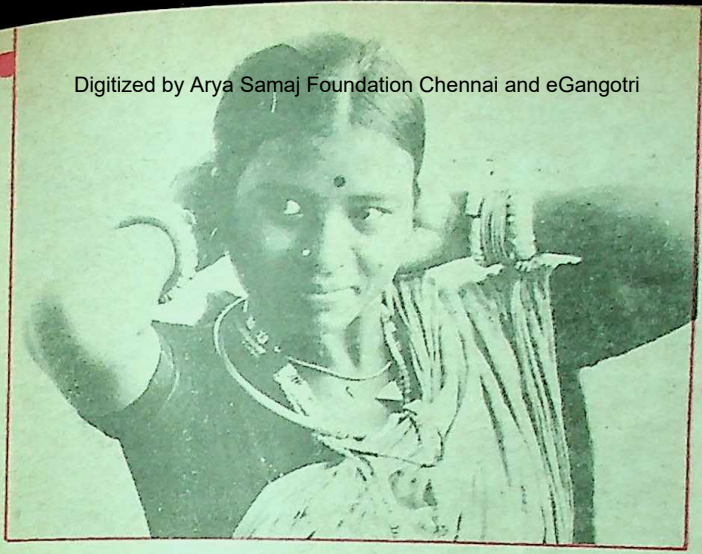

बस्तर की एक युवती

आवश्यकताओं की पूर्ति अपनी चीजों को देकर किया करते थे। बाजार के दाव-पेच से अनजान आदिवासियों का जंगल के ठेकेदारों ने भरपूर लाभ उठाया और उनके खेतों में खड़े इमारती लकड़ी के बड़े-बड़े दरख्तों को कौड़ियों के मोल खरीद लिया। आदिवासी इस पर भी खुश था क्योंकि जिंदगी में पहली बार वह इतने रुपयों को अपने पास देख रहा था।

एक और मुसीबत

बस्तर पर दूसरी मुसीबत दंडकारण्य के रूप में आयी। दंडकारण्य योजना के अंतर्गत घने वनों के क्षेत्रों को साफ कर बाहर के लोगों को बसाने का कार्यक्रम था। इस योजना का सीधा असर आदिवासियों पर पड़ा। जिस जंगल को वे पूजा करते थे, प्यार करते थे, जो उनकी धरोहर था, वह उनसे छिन ही नहीं रहा था बल्कि बेरहमी से कट रहा था, उनके भले के लिए नहीं बल्कि बाहरी लोगों के लाभ के लिए ...।

आदिवासियों के लिए यह चिंता का विषय था, क्योंकि हजारों सालों से जिस जंगल को वह पोसता आया था, जो जंगल उसके जीवन का आधार भी था, अब कट रहा था।

दंडकारण्य योजना ने न सिर्फ बस्तर के जंगलों को नष्ट किया बल्कि उनकी संस्कृति में भी सीधा हस्तक्षेप किया। वहां बसाये बाहरी लोगों की भाषा, संस्कृति, रहन-सहन, सब कुछ अलग था। और, इस तरह बस्तर की छाती में अलगाव का पहला तीर गड़ा।

बेलाडिला योजना

बिचौलियों ने तो बस्तर का रास्ता देख लिया था। आदिवासियों की सिधाई का पूरा-पूरा फायदा वह उठाना चाहता था। एक तरफ शासन आदिवासियों के उत्थान के लिए नयी-नयी योजनाएं लाने में लगी हुई थी और दूसरी तरफ वह बस्तर की प्राकृतिक वन तथा खनिज संपदा का दोहन भी कर रही थी। और इसी सिलसिले के चलते बैलाडिला योजना ने बस्तर में पांव धरे। इस योजना ने बस्तर में तबाही मचा दी। अचानक ही हजारों की तादाद में बाहरी व्यक्तियों के झुंड के झुंड बस्तर में घुस पड़े। इनमें व्यापारियों, सूदखोरों और ठेकेदारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अलावा सरकारी कर्मचारी प्रमुख थे ।

बैलाडिला लोह अयस्क योजना अपने आप में एक वृहद योजना थी । उससे बस्तर का आदिवासी घबरा गया । वह न तो भीड़-भाड़ का आदी था और न अचानक ही जीवन में आनेवाली चकाचौंध के लिए तैयार ही था । फल यह हुआ कि उसके जीवन का संतुलन बिगड़ गया ।

जिस समय बैलाडिला योजना कागजों में साकार रूप ले रही थी, उसी समय बस्तर रियासत के राजा प्रवीण भंजदेव ने इस योजना का विरोध किया था । उनका मानना था कि इस परियोजना को तभी बस्तर में लाया जाए, जब बस्तर का आदिवासी अपने आपको इस योजना के लिए तैयार कर ले । लेकिन सरकार को जल्दी थी । बैलाडिला लौह अयस्क परियोजना का विरोध तो १९६५ में क्षेत्र के सांसद लखमू भवानी ने भी किया था । उन्होंने एक ज्ञापन भी राष्ट्रपति को देने के लिए तैयार किया था लेकिन वह ज्ञापन बस्तर के सरकारी अधिकारियों के दबाव तथा प्रलोभनों की वजह से दिया नहीं गया ।

बैलाडिला योजना के लिए सरकार ने हजारों आदिवासियों की जमीन ले ली । जंगल कट गये । अब उसके कटोरे में केवल सपने थे कल के, लेकिन कल क्या हुआ ... ?

मुआवजा मिट्टी में मिल गया

अमूमन सरकार प्रचारित करती है कि अमुक योजना के अंतर्गत स्थानीय लोगों को काम मिलेगा । बैलाडिला योजना के समय में भी यही सब कहा गया, लेकिन एक आकलन के अनुसार १९९० में केवल २२ आदिवासी ही बैलाडिला खदान में मजदूरों के रूप में कार्यरत थे, जबकि बैलाडिला लौह अयस्क खदान के अंतर्गत १७१७३ हेक्टेयर भूमि अधिगृहित की गयी । कहने को जमीन के मुआवजे के बतौर सरकार ने १०,३८,५९९ रुपये वितरित किये, लेकिन माड़िया आदिवासी कागज के नोटों के चलन से उस वक्त तक अनभिज्ञ थे । दूसरे इतनी अधिक राशि का वे क्या करें ... ? यह

बस्तर की महिलाओं की प्रगति से कुछ पहले की तस्वीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

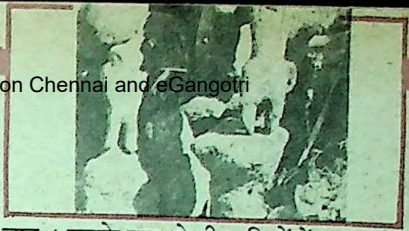

सवाल भी उनके सामने खड़ा था । अभी तक वे अपनी न्यूनतम जरूरतों को जिंस के बदले पूरा करते आये थे । फलतः अधिकांश आदिवासियों ने मुआवजे में मिले रुपयों को मिट्टी की हांडी में रख या कागज में लपेटकर जमीन में दबा दिया और जब जरूरत पड़ने पर जमीन खोदी तो सिर पीट लिया क्योंकि अधिकांश आदिवासियों के रुपयों को दीमकों ने खा लिया था ।

नक्सलवादियों की घुसपैठ

इसी दौरान बस्तर में नक्सलवादियों के कदम भी पड़े और जम भी गये । पुलिस की नजर में नक्सलवादी बस्तर में इसलिए आये हैं कि पड़ोसी प्रांत आंध्रप्रदेश में उन पर पुलिस का दबाव बढ़ गया है । इसी से मिलती-जुलती सोच प्रशासन और राजनेताओं की है लेकिन कोई भी असली कारणों की तरफ अंगुली नहीं उठा रहा है ।

पिछले सालों के दौरान आदिवासियों में बाहरी व्यक्तियों के लिए गुस्सा बढ़ा है खासतौर से दंडामी माड़िया नामक जनजाति तो अधिक खूंख्वार हो चुकी है । सामान्यतः आदिवासी सरल और सीधे होते हैं, लेकिन उनमें वह बात अब नहीं रही है । अब वे गुस्सैल होते जा रहे हैं । उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक ढांचे को बाहरी व्यक्तियों के हस्तक्षेप ने तरह-नहस कर दिया है ।

हत्याओं का रिवाज

१९९० में कराये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार १९७० में पूरे दंडामी माड़िया क्षेत्र में हत्या का एक प्रकरण स्थानीय थाने में दर्ज हुआ था, वह भी बैलाडिला परियोजना बन जाने के बाद । उसके बाद से ही माड़ियों में हत्या का रिवाज चल निकला । १९७५ में ३ हत्याएं हुईं और १९८० में ३४ और इसी प्रकार हर तरह के अपराधों में लगातार वृद्धि हुई जो आज तक जारी है ।

इन हत्याओं के पीछे कोई खास वजह भी नहीं होती है । कोई भी छोटी-सी बात माड़िया आदिवासी को गुस्सा दिला सकती है और वह गुस्से के दबाव में कुछ भी कर सकता है । लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह अपना गुस्सा पायका (बाहरी व्यक्ति) पर नहीं उतारता है, बल्कि अपने ही लोगों पर उतारता है, जबकि वह गुस्सा उस बाहरी व्यक्ति के उसके जीवन में किये गये हस्तक्षेप से उपजा है ।

पिछले साल बैलाडिला परियोजना से कुल २२ किलोमीटर दूर तरनाल गांव में घटी घटना को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है । घटना कुछ इस प्रकार है— एक बाहरी व्यक्ति ने तरनाल ग्राम के एक आदिवासी से अपने ड्राइंगरूम में सजाने के लिए तीर-धनुष खरीद लिया । तभी वहां उसी गांव का हिड़मा आ गया और उसने शहरी व्यक्ति से एक तीर मांगा । तीर देने से उस बाहरी व्यक्ति ने इनकार कर दिया । हिड़मा को गुस्सा आ गया और उसने उसी समय इत्तफाक से वहां से गुजर रही अपनी पत्नी के सिर पर लकड़ी के भारी टुकड़े को दे मारा । वह लहुलुहान हो गयी । बाहरी व्यक्ति पर आये क्रोध को उसने अपनी पत्नी पर उतारा ।

—एच १, शांतिनगर, रायपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पुस्तकालय

क्या आप यकीन करेंगे कि दुनिया में कोई एक ऐसा पुस्तकालय भी होगा, जिसे पुस्तकों से परहेज हो । किसी लेखक की कोई पुस्तक छपे और वह पुस्तकालय में पहुंच जाए यह तो एक सामान्य-सी बात हुई मगर वर्लिंग्टन का 'ब्राटीगन पुस्तकालय' पुस्तकें नहीं बल्कि अनाम और अचर्चित लेखकों की पांडुलिपि ही अपने पुस्तकालय में रखता है। इस अनूठे पुस्तकालय की स्थापना का विचार प्रसिद्ध लेखक रिचर्ड ब्राटीगन के दिमाग की उपज है । यह बात अलग है कि स्वयं रिचर्ड ब्राटीगन अपने जीवन में इस कार्य को अंजाम नहीं दे पाये मगर उनके मित्र लॉकबुड ने उनके सपने को सच कर दिखाया है । आज रिचर्ड ब्राटीगन इस संसार में नहीं हैं मगर उनकी स्मृति में स्थापित 'ब्राटीगन पुस्तकालय' आज सारे संसार के लिए एक आकर्षण का केंद्र बना हुआ है और आज इस पुस्तकालय में ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, स्पेन, स्वीडन, रूस तथा अमरीका के अनेक लेखकों की पांडुलिपियां सुरक्षित रखी हैं । विभिन्न देशों के लेखक बतौर 'रचनात्मक तीर्थ यात्रा' के इस पुस्तकालय में आते हैं और अनेक ऐसे अप्रसिद्ध मगर सिद्ध लेखकों की कृतियों को पढ़ने का सृजनात्मक आनंद लेते हैं, जिसकी पूर्ति विश्व के किसी भी पुस्तकालय में हो सकना अभी मुश्किल ही है ।

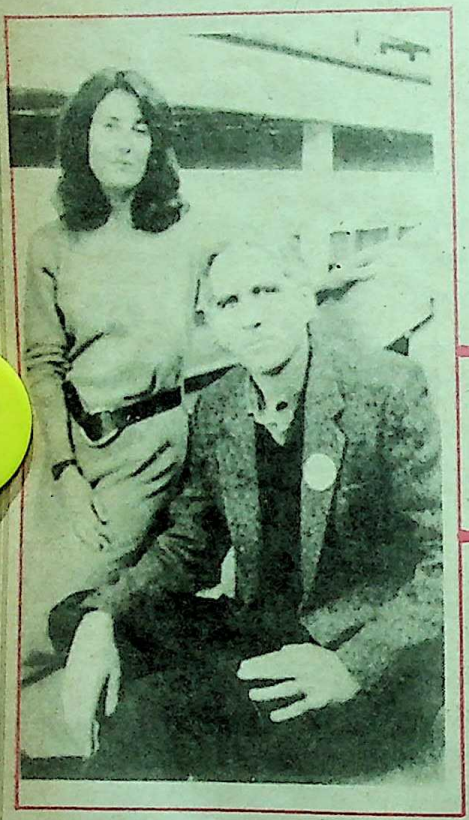

वर्लिंग्टन का 'ब्राटीगन पुस्तकालय' पुस्तकें नहीं बल्कि अनाम और अचर्चित लेखकों की पांडुलिपि ही अपने पुस्तकालय में रखता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे परहेज है पुस्तकों से

कहां से मिली प्रेरणा ?

इस प्रकार के अनोखे पुस्तकालय को बनाने की प्रेरणा रिचर्ड ब्राटीगन को कहां से मिली, इसके पीछे भी एक दिलचस्प घटना छिपी हुई है। हुआ यूं कि १९७१ में रिचर्ड का एक उपन्यास 'दि अर्बोशन : एन हिस्टोरिकल रोमांस' १९६६ साइमन एंड शुस्टर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया, जिसकी मुख्य कथावस्तु एक लाइब्रेरियन और उसकी प्रेमिका की एक वह इंद्रधनुषी दुनिया है जो कि एक ऐसे काल्पनिक पुस्तकालय में अपने प्यार को परवान चढ़ाती है जो अप्रकाशित पुस्तकों के संग्रह का एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथालय है। लिखने को तो रिचर्ड ऐसे पुस्तकालय के बारे में अपने उपन्यास में अनजाने ही लिख गये, जिसका कि कहीं दूर-दूर तक कोई अस्तित्व ही नहीं था मगर उनके अवचेतन में यह विचार एक आकार की शक्ल में आने के लिए कुनमुनाने लगा और उनका अपना यह विचार ही ऐसे अनोखे पुस्तकालय की स्थापना के लिए प्रेरणा बन गया। और उनके इस महत्त्वाकांक्षी कार्य में उनकी मदद की उनके मित्र-टॉड लॉकवुड ने, जो आजकल पूरी तरह से इस पुस्तकालय के लिए ही समर्पित हैं। इस पुस्तकालय की व्यवस्था एवं प्रशासन सभी लॉकवुड की ही देख रेख में, संपन्न की जाती है।

पुस्तकें स्वीकार नहीं

लंबे छरहरे बदन तथा नीली आंखोंवाले ४३ वर्षीय लॉकवुड कहते हैं कि २१ अप्रैल '९० को, जब से कि इस पुस्तकालय ने कार्य करना शुरू किया था, मात्र सात पांडुलिपियां हमारे संस्थान के पास थीं, जो आज बढ़कर तीन सौ से भी ज्यादा हो चुकी हैं। हमारे पुस्तकालय की क्षमता तीन हजार पांडुलिपियों को सहेज कर रखने की है और मैं पूरी तरह आश्वस्त हूं कि जल्दी ही हम इस लक्ष्य को पा लेंगे। पांडुलिपि स्वीकार करने की भी उनकी एक अनूठी शैली है।

इस पुस्तकालय की न कोई सलाहकार समिति है और न ही कोई निर्णायक मंडल। विषय का भी कोई बंधन नहीं। पांडुलिपि चाहे शास्त्रीय विषय पर हो, चाहे लोकसंस्कृति पर और चाहे कामोत्तेजक विषयों पर। सब कुछ स्वीकार्य है इस पुस्तकालय को। अस्वीकार्य है तो केवल पुस्तकें। जी हां छपी हुई पुस्तकों के लिए कोई गुंजाइश नहीं है इस पुस्तकालय में। है न अजीब बात ? विचित्र पुस्तकालय जिसे पुस्तकों से परहेज है। और पांडुलिपियां भी वह चाहिए जो दिल की जबान से लिखी गयीं हों, दिमाग से नहीं। लॉकवुड अपनी पांडुलिपियों के इस अनमोल खजाने को साहित्य नहीं मानते, इसे वह 'लोक-इतिहास' कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनक या संकल्प

समकालीन लेखक एवं पत्रकार लॉकवुड को एक सनकी आदमी मानते हैं और उनका कहना है कि यह सब महज समय और शक्ति की बरबादीभर है और कुछ नहीं । स्ट्रिप डूंसबरी-जैसे उपन्यासकार इसे लॉकवुड की सिर्फ सनक मानते हैं, जिससे कि वह अपने दोस्त की एक भावुक इच्छा को पूरा कर सके । जी हां वही दोस्त—ब्राटीगन, जिन्होंने कि अपने उपन्यास में ऐसे काल्पनिक पुस्तकालय का सपना देखा था और जिसे अंजाम देने की फिक्र में १९८४ में उन्हें आत्महत्या तक करनी पड़ी । उल्लेखनीय है कि ब्राटीगन उन चर्चित लेखकों में एक रहे हैं जिन्होंने की छठे और सातवें दशक में बीटल्स बंधुओं को प्रभावित किया था और गैरी स्नाइडर तथा एलन गिंसबर्ग-जैसे हिप्पीवाद के प्रवर्तकों में अपना नाम दर्ज करा लिया था । हिप्पी लोग वैचारिक स्तर पर ब्राटीगन को अपना मसीहा माना करते थे और इसी चर्चित लेखक ने अनाम लेखकों के लिए पुस्तकालय का सपना देखा था जिसे लॉकवुड पूरा करने में जुटे हुए हैं । पेशे से लॉकवुड सॉफ्टवेयर की एक दुकान तथा 'रेकार्डिंग स्टूडियो' चलाते हैं और पुस्तकालय की यह योजना उनके लिए महज एक आत्मसंतोष का जरिया है और उनके पुस्तकालय में आज १३ वर्ष से लेकर ९२ वर्ष के लेखकों तक की पांडुलिपियां सुरक्षित रखी हैं । आज यह लाइब्रेरी अनेक लेखकों एवं पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है । जिन लेखकों की पांडुलिपियां इस पुस्तकालय में रखी गयी हैं, उनमें कुछ लेखक ऐसे हैं जो कि अपनी पुस्तक के प्रकाशन की संभावनाओं से निराश हो चुके हैं और कुछ लेखक ऐसे भी हैं जिन्होंने की अपनी पुस्तक के प्रकाशन के लिए कभी कोई प्रयास ही नहीं किया । इन पांडुलिपियों में एक पांडुलिपि कनाडा के लेखक लौरा बोरियालिस की भी है जो कि लेखन के समापन का उत्सव अपनी पांडुलिपि को मानते हैं । दिलचस्प बात ये भी है कि इन पांडुलिपियों को अलमारी या शेल्फ में नहीं रखा गया है बल्कि उन्हें कांच के जारों में रखा गया है । ब्राटीगन की ऐसी ही इच्छा थी । ये जार तेरह वर्गों में बांटे गये हैं जिनमें कि प्रेम, युद्ध, शांति, हास्य-व्यंग्य, पारिवारिक साहित्य, आम आदमी की जिंदगी, प्रकृति संसार, आध्यात्म, साहसिक कथाएं तथा सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक कविताएं सुरक्षित रखी गयी हैं । एक बात जरूर खटकनेवाली है और वह ये है कि सारी पांडुलिपियां अंगरेजी की ही हैं । यदि आप लेखक हैं और अंगरेजी भाषा में लिखते हैं और आप प्रकाशन की संभावनाओं से निराश हो चुके हों तो आप भी शौक से अपनी पांडुलिपि इस अनूठे पुस्तकालय को सौंप सकते हैं । लॉकवुड की ओर से दुनिया के सभी देशों के अंगरेजी लेखकों के लिए खुला आमंत्रण है । तय है कि आप इस अनूठे पुस्तकालय का पता भी जानना चाहेंगे । तो लीजिए आप भी पता 'नोट' कर लीजिए—**दि ब्राटीगन लाइब्रेरी, पो. बॉक्स नं.-५२१**
बरलिंग्टन, वरमाउंट, यू. एस. ए.

आप इस पते पर अपनी पांडुलिपि ही नहीं, अनुदान राशि भी भेज सकते हैं जो कि इस अनूठे पुस्तकालय के रखरखाव में काम आ जाएगी ।

प्रस्तुति : सुरेश नीरव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

मां का साया

● मुनि प्रशांतकुमार

पूरे घर में अंधेरे की तरह सन्नाटा छा गया। एक अबोला ने अपने काले डैने पंख पसार दिये। सुदीप वैसे ही बुत की तरह चुप रहता है। उसकी क्रिया-प्रतिक्रिया कभी कुछ नहीं होती। भली-बुरी कोई भी घटना उसकी चेतना को कभी प्रभावित नहीं कर पायी। कोई आश्चर्य नहीं, राहुल लहूलुहान हो जाए और वह बुत की तरह देखता भर रहे और हालत तो यह थी कि राहुल सुदीप चाचा के बिना रहता ही नहीं। खैर, बेपरवाह होना सुदीप चाचा का तो स्वभाव ही है। पर विश्वास को सांप क्यों सूंघ गया, वह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। ऐसे समय में उन्हें क्षत-विक्षत नहीं हो जाना चाहिए ? उनकी आत्मा को हिल नहीं जाना चाहिए ? क्या राहुल अकेली छाया का ही है ? उनका कोई हिस्सा नहीं है राहुल पर ?

छाया को एक धक्का लगा, फिर क्षणांशों में ही अपने को संभाला और राहुल को उठाया। झटपट एक टैक्सी में बैठी और राहुल को अस्पताल में भरती कराया। खून बहुत बह गया था। अब भी बह रहा था। कोई गंभीर चोट आयी थी। बहुत प्रयत्नों के बाद खून बंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था । डॉक्टरों ने कहा, "मैडम, आप धैर्य रखिए, हम सब कुछ संभाल लेंगे । कुछ ही समय में होश आ जाएगा इसे ।"

छाया घबरा गयी थी । उसने इस स्थिति की कभी कल्पना नहीं की थी । घबराहट, चिंता और डर में बदल गयी । अपना एक बहुत बड़ा भविष्य दिख रहा था उसे, जिसके आकार और पेचीदी बनावट की कल्पना करके ही वह कांप गयी थी ।

इमरजेंसी वार्ड में राहुल की किश्ती जीवन-मृत्यु के दो तटों के बीच डगमगा रही थी । उसकी तीन वर्षीय जिंदगी पर प्रश्न-चिह्न अंकित हो गये थे । छाया को लगा, ये प्रश्न-चिह्न राहुल की जिंदगी पर न हुए, उसकी अपनी जिंदगी की धारा पर टंगे हैं । राहुल के होने न होने का प्रश्न उसके जीवन पर कितना असर डाल देता है, कितनी प्रभावित है उसकी जिंदगी अपने बच्चे के अस्तित्व से । वह ठीक न हुआ तो एक बहुत बड़ा सदमा उसे लगेगा, जिसे शायद वह सहन न कर पाये । यही तो एक बिंदु है, जहां आकर स्त्री अपने स्त्रीत्व को सार्थक मानती है । इसे ही वह खो दे तो... ।

छाया सोचने लगी, और वह ठीक भी हुआ तो अपने को मनचाहे ढंग से ढाल सकूंगी ? बच्चे की सार-संभाल करूंगी या अपने कैरियर की ? यह तो संभव नहीं कि कैरियर पर भी ध्यान दें और बच्चे की तरफ भी । कितनी मुश्किलों से तो एक 'लाइन' पकड़ी थी । विश्वास तैयार कहां थे—नौकरी करवाने के लिए । कितना समझाना पड़ा है उन्हें कि नारी का जीवन घर की चारदीवारी में बंधकर रहने के लिए नहीं है । खुले आकाश में पंख फैलाने का उसे भी उतना ही अधिकार है जितना पुरुष को । उस दिन मेरी भावना को वे समझ पाये थे । मैं नारी स्वातंत्र्य को पोषण देनेवाली जयशंकर प्रसाद की 'ध्रुवस्वामिनी' पढ़ रही थी । उस नाट्य-पुस्तिका को मेरे हाथ में देखकर बड़े सहज ढंग से कहा था —'तुम्हारे साहस और धैर्य की मैं सराहना करता हूं । तुम्हारी एफिसिएंसी को मैंने परखा है, अब जल्दी ही तुम्हें दाखिला दिलवा दूंगा ।' उन्होंने अपने मित्र से सिफारिश करवायी और एक सरकारी ऑफिस में मेरी नियुक्ति हो गयी ।

तब कहीं मैंने अपने को आश्वस्त किया और एक आधुनिक तरक्की पसंद नारी के रूप में अपने को पाया । तब से अब तक की उन सारी उपलब्धियों को आज गड्मड्ड कर दूं ? अपने भविष्य को किसी अंधेरी राह में धकेल दूं ? नहीं, यह तो अपने ही हाथों से बनाये मकड़ी-जाल में फंसने की-सी मूर्खता होगी । अब भला बच्चे के लिए अपने कैरियर को कैसे छोड़ दूं ?

राहुल के सिर को हाथों से सहलाकर वह एक तरफ खाट पर बैठ गयी थी ।

छाया को लगा, जैसे समय ठहर गया है, मौसम ठहर गया है, उसकी सांसें ठहर गयी हैं । सब कुछ ठहर-सा गया है और उसकी जिंदगी एक मोड़ पर आकर रुक गयी है । पता नहीं, इस मोड़ के बाद कौन-सा और कितना लंबा रास्ता उसे तय करना होगा ।

उसकी सारी चिंता को डॉक्टर ने धो डाला । "बहनजी, भगवान की आप पर बड़ी कृपा है । कोई आशा नहीं थी पर...भगवान की कृपा से बच्चा बिलकुल...." डॉक्टर के स्वर में प्रसन्नता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और आत्मीयता के भाव व्यक्त हो रहे थे । छाया भी हलकी हो गयी थी ।

जिन दिनों राहुल अस्पताल में मौत के करीब जाकर लौट रहा था, छाया अपने कैरियर को लेकर चिंतित थी । एक गूंज उसे रह-रहकर उद्वेलित कर रही थी । राहुल की सार-संभाल कौन करे, दूर-दूर तक उसे ऐसा कोई दिखा नहीं । विश्वास ने सर्च लाइट की तरह उसके मन के अंधेरे को छांटते हुए कहा—'मेरे चाचा प्रेमप्रसाद बिलकुल उपयुक्त हैं । दिल्ली में उनका अच्छा बंगला है । बड़े उद्योगपति हैं । सब तरह की सुविधाओं से संपन्न हैं । एक दस वर्ष का उनके लड़का है । अपना राहुल बड़े अच्छे ढंग से वहां रह सकेगा ।' छाया को सब कुछ इस तरह लगा, जैसे किसी बीमार को डॉक्टर की सलाह । अस्पताल से आने के बाद भी राहुल पूरी तरह स्वस्थ नहीं हुआ था । छाया का मन अब स्वस्थ था । मन की ग्रंथि, जो कई दिनों से उलझ रही थी, विश्वास ने एकाएक सुलझा दिया था । सोचा, 'अपना प्यारा बेटा अब एक बहुत बड़े उद्योगपति के घर रहेगा । सुखी, समृद्ध और ऐश्वर्य-संपन्न परिवार का वह एक सदस्य बनकर रहेगा । वाह ! हमारा बेटा ! बड़े घराने में बड़ा होगा । हमारे कैरियर पर, हमारी आरजुओं पर कोई बंधन भी न होगा ।' उसने राहत की एक लंबी सांस ली और पस्त हो गयी ।

घर से विदा के वक्त राहुल से कहा गया, 'देखो, ये आंटीजी हैं न, इन्हें मम्मी कहना । ये तुम्हारी नयी मम्मी हैं, नयी मम्मी तुम्हें बहुत प्यार करेंगी । हमारी याद न करना । ओ. के. राहुल । टा...टा...'

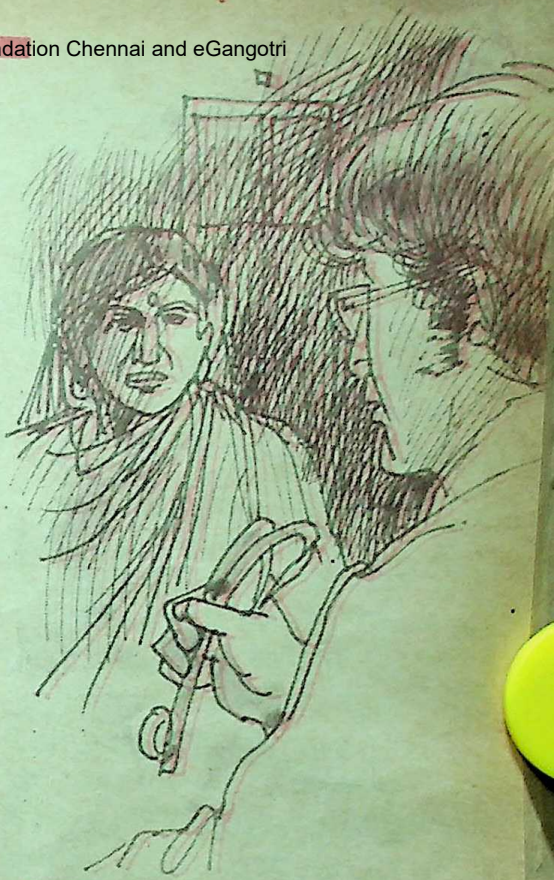

बताओ, तुम्हें मां कहलाने का हक है ? कबूतर और चिड़िया भी अपने बच्चे को पूरा साया देते हैं, सुरक्षा देते हैं, दाना चुगना और उड़ना सिखाते हैं । तुमने अपने बच्चे के लिए इतना भी जरूरी नहीं समझा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाब में राहुल ने हाथ नहीं हिलाया, टा-टा नहीं किया । मां की ओर आंख उठाकर नहीं देखा, वह फफक-फफककर रो पड़ा । नयी मम्मी ने टॉफी देकर उसे शांत करने का प्रयास किया । हाथ पकड़कर उसे कार में बैठाया और हाथ हिलाकर कार को ड्राइव कर दिया । उसकी सुबकियां कार में भी बंद नहीं हुई । जैसे कोई संवेदनशील भावनाओं का सोता फूट गया हो और अविरल बहता ही जा रहा हो । आंसुओं के जरिये टप...टप....टप...

छाया ने फिर से अपने कैरियर पर ध्यान दिया । कुछ ही माह के बाद पदोन्नति हुई । इस बीच में उन्होंने अपना फ्लैट बदल लिया । घर का कार्य निपटाने के लिए एक आया रख ली । वह रोज सुबह आती है, झाड़ू-बुहारी का काम करती है और दिनभर वह कई तरह के कामों में जुटी रहती है । इस सबके बीच वह अपने छोटे बच्चे का भी पूरा ख्याल रखती है । वह कई बार उसे गोद में लेकर प्यार करती है । कभी रोता है तो एक खिलौना उसे दे देती है और फिर बच्चा अपने खेल में मशगूल हो जाता है । छाया ने पूछ लिया, 'मालती तुम इस बच्चे को अपने से चिपकाये कैसे रखती हो, घर ही क्यों नहीं छोड़ आती इसे ?'

"बहनजी, घर में छोड़ आऊं तो इसे संभाले कौन ?"

"और भी तो होंगे घर में ?"

"लेकिन बच्चा मां के पास जितना खुश रहता है, औरों के पास नहीं । फिर संस्कार तो मां के पास से ही आते हैं । कुछ ऐसे संस्कार बच्चे को जरूरी होते हैं जो मां के साये में ही उसे मिलते हैं ।"

"यह तो ठीक है, पर तुम तो काम पर जाती हो ।"

"तो क्या हुआ ? आखिर है तो अपना ही न, बहनजी । अब भला दूसरों के भरोसे कैसे छोड़ दूं । फिर तो संस्कार ही नहीं आएंगे और फिर बच्चे को संस्कारी बनाना तो मां का ही काम है । वैसे अपनी मजबूरी का बच्चे के निर्माण से तो कोई ताल्लुक नहीं, बहनजी । मां का पहला काम तो वही है ।" उसने अपने मातृत्व के अहसास को दृढ़ता से प्रकट किया और फिर बरतन साफ करने लगी ।

छाया को मालती की बात जंची नहीं । भला यह भी कोई बात है कि अपनी छाती से चिपकाये रखने से ही बच्चे को संस्कार आते हैं । फिर तो बच्चा न हुआ, पैरों का बंधन हो गया । औरत का जीवन इसीलिए तो नहीं कि वह बच्चे पैदा करे और फिर सारे समय उससे चिपकी रहे । और भी तो फील्ड हैं उसके । फिर क्यों नहीं वह अपनी शक्तियों का, अपनी क्षमताओं का उपयोग कर जीवन में प्रोग्रेस करें ।

'हुं...यह तो निरी भोली औरत है बेचारी, पढ़ी-लिखी भी तो नहीं' छाया के चेहरे पर अपने निर्णय के प्रति संतुष्टि के भाव उभर आये और मालती के प्रति दया के-से... ।

'अपना राहुल देखो, कितने सुख में है । चैन की नींद सोता है । खाने-पीने से लेकर उसकी हर जरूरत वहां पूरी होती है ।' वहां पर बच्चे को मिल रही सुख-सुविधाओं का ध्यान कर उसने बड़ा गौरव महसूस किया और कुछ खींचकर वह धम से बैठ गयी ।

उस दिन राहुल का जन्मदिन था । विक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी कार्य से कहीं बाहर गये हुए थे । राहुल की नयी मम्मी का फोन आया था, "छायाजी, आज आपके राहुल का जन्मदिन है । दस की गाड़ी से आप आइएगा ।"

'हैलो, आंटीजी, राहुल को मेरी कांग्रेचुलेशन बर्थ-डे कहना ।' छाया ने जवाब दिया ।

"पर आप यहीं आइए ना"—आंटीजी का आग्रह था ।

'ऐसा है, मुझे आज एक विशेष डिनर में हिस्सा लेना है, इज्जत का सवाल है । वरना तो मैं... । अच्छा राहुल कैसा है ? खुश है न ?'

"देखिए जी, खुश रहना तो उसे आपने सिखाया ही नहीं, जबकि अपनी ओर से हमने उसका पूरा इंतजाम कर रखा है । सुबह की बैड टी से रात के दूध पिलाने तक उसकी पूरी हिफाजत रखते हैं । स्कूल भी नौकर के साथ मारुति में ही भेजते हैं फिर भी... । खैर, आज तो अपने जन्मदिन पर वह बहुत ही खुश है । कल से ही आपको याद कर रहा है । आप आएंगी, बहार आएगी । उसके रोम-रोम में फूल खिलेंगे । क्यों,आएंगी न ? आपका कब इंतजार करूं ?" आंटीजी ने फिर पूछा ।

"नहीं, क्षमा कीजिए, आज मैं नहीं आ सकती ।" छाया ने स्पष्ट इनकार किया ।"अच्छा तो मुझे अब कुछ पैंडिंग वर्क निबटाकर फिर डिनर की तैयारी में लगना है । हैलो आंटीजी, बाय-बाय ।" छाया ने लाइन काट दी ।

उसकी मम्मी आज उससे मिलने नहीं आएगी, राहुल को यह पता चला तो उसका मन रो पड़ा । आंखों से टेसुए बह गये ।

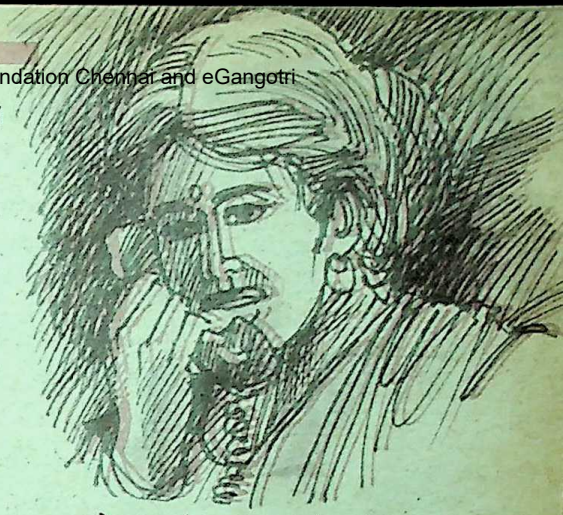

उसके बाद का समय, एक लंबा अंतराल दोनों के बीच पसर गया । मां-बेटे को जिसने कभी मिलने ही न दिया ।

वर्षों बाद छाया ने बेटे को देखा । वह बहुत बदल गया था । छाया ने अपनी साड़ी का आंचल हाथ में लेते हुए कहा, "बेटे, अब घर आ जाओ । तुम्हारे पापा कितने बेचैन हैं, तुम्हारे बिना ।"

"हां, पापा बेचैन हैं, मां तो मजे में हैं"—उसने मजाक उड़ाते हुए कहा ।

"अरे, कोई मां अपने लाड़ले से दूर रहकर मजे में रह सकती है ?"

"मेरी तो मां रहती है ।"

"पगले, ऐसे नहीं सोचा करते मां के लिए"—छाया ने बेटे को छाती से लगाते हुए कहा ।

"फिर क्यों मुझे अपने घर से उखाड़कर दूसरों के आंगन में फेंक दिया ?" राहुल ने तेवर बदलकर कहा ।

"ओफ्फोह, वहां तो तुम्हारी सुविधाओं के लिए ही रखा था तुम्हें ।"

"सुविधाओं के लिए... ?" राहुल फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैश में आकर बोल रहा था ।" तुम्हें पता है, तीन वर्ष के प्राणी के लिए बंगला, नौकर, मारुति कार, ऐश्वर्य की चकाचौंध और सुख-सुविधाएं—ये सब कोई विशेष महत्त्व नहीं रखते । उसे अपनी मां का प्यार , स्नेह और ममत्व चाहिए, जो तुमने कभी नहीं दिया । बताओ, तुम्हें मां कहलाने का हक है ? कबूतर और चिड़िया भी अपने बच्चे को पूरा साया देते हैं, सुरक्षा देते हैं, दाना चुगना और उड़ना सिखाते हैं । तुमने अपने बच्चे के लिए इतना भी जरूरी नहीं समझा ?"

छाया स्तब्ध ! जैसे पत्थर हो गयी हो । कहना चाहकर भी कुछ कह न पायी । एक अपराध बोध को महसूसती हुई अपने ही भीतर सिकुड़ गयी । अपने उमड़ते आंसुओं को आंखों में ही पी गयी । उसकी बंबई फ्लाइट का समय हो गया था । राहुल ने मां को प्रणाम किया । उसने बेटे की पीठ थपथपायी और बंबई जानेवाली एयर बस की ओर चल दी । राहुल भी अपनी कार में रवाना हुआ ।

जहाज की घरघराहट ने छाया के व्यथित मन को और कड़वाहट से भर दिया । सांप का काटा हुआ जैसे लहरें लेता है, छाया की नसों में फैला आत्मग्लानि का जहर रह-रहकर उसे झकझोर रहा था । राहुल का एक-एक वाक्य उसे कचोटने लगा था ।

'तुम्हें मां कहलाने का.... ।'

'कबूतर और चिड़िया भी.... ।'

'तुमने इतना भी जरूरी.... ।'

'जो तुमने कभी...दिया ही...नहीं... ।'

उसे लगा, मालती ठीक ही तो कह रही थी, 'संस्कार तो मां से ही आते हैं । अपनी नौकरी का बच्चे के निर्माण से तो कोई ताल्लुक नहीं... ।'

गलत तो मैं ही ठहरी न ! छाया ने सोचा ।

—अणुव्रत भवन, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नयी दिल्ली ।

अनार के गुण

मीठा अनार तीनों दोषों को शमन करनेवाला, तृप्रकारक, वीर्यवर्द्धक, हलका, मेधा बुद्धि तथा बलदायक, प्यास, जलन, ज्वर, हृदयरोग, मुख की दुर्गंध तथा कमजोरी को दूर करनेवाला है । खटमिट्ठा अनार, अग्निवर्द्धक, रुचिकारी, तनिक पित्तकारक होता है । केवल खट्टा अनार पित्त उत्पन्न करनेवाला और वात कफ का नाश करनेवाला होता है । हृदय को बल देने तथा पेट की कृमियों का नाश करने के लिए अनार बहुत उपयोगी है । अनारों में बेदाना और कंधारी अनार सबसे अच्छा होता है । भोजन के बाद दो चम्मच से लेकर आधा कप अनार का रस सेवन करने से ज्वर, हृदय की दुर्बलता, पेट में कृमि और शरीर की कमजोरी दूर होती है । ग्रीष्मकाल में अनार का शरबत सेवन करने से तरावट और ताजगी बनी रहती है । बच्चों के पेट में कीड़े हों तो उन्हें नियमित रूप से सुबह-शाम २-२ चम्मच अनार का रस पिलाने से कीड़े नष्ट हो जाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्टून कोना

"शो केस में रखे गये पुतले का मुंह इतना कड़ुवा क्यों है ?"

"उसकी पहनी हुई साड़ी ब्लाऊज के साथ मैच नहीं है, इसलिए ।"

• • •

"हमारे मैनेजर साहब रिश्वत लेनेवाले को पसंद नहीं करते !"

"बहुत अच्छा ।"

"उन्हें सिर्फ रिश्वत देनेवाले अच्छे लगते हैं ।"

"हमेशा आपकी ननद के आते ही आपको खुजली शुरू हो जाती है, क्यों ?"

"ताकि वह मेरी साड़ियों को उधार न मांगे ।"

• • •

"डॉक्टर साहब, मैंने बचपन से ही २५, ५० पैसे के काफी सिक्के खाये हैं ।"

"लेकिन उसके लिए इतने दिनों बाद क्यों आये हो ।"

"डॉक्टर, गुल्लक की तरह ही एक साथ पूरी रकम निकालने के लिए सोच रहा था !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

रविंद्र कुमार, प्रतापगढ़

प्रश्न : पेशाब के लिए बार-बार जाना पड़ता है, जांच करवाया, सभी कुछ ठीक है । कभी-कभी जलन व पीलापन भी होता है । बहुत परेशान हूं ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । सोमनाथ रस एक वटी रात शहद से लें ।

मनोज, लोहानीपुर

प्रश्न : उम्र ३२ साल । पेट में गुड़गड़ाहट, पतले दस्त, मल रुक-रुक कर आना, मुंह में छाले होने से परेशान हूं ।

उत्तर : स्वर्ण सूत शेखर पांच ग्राम कीअस्सी मात्रा बना लें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । चित्रकादि वटी एक-एक वटी भोजन के बाद पानी से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

कविता, पिलानी

प्रश्न : तेईस वर्षीया अविवाहिता हूं । हाथ-पांव, मुंह की त्वचा सख्त हो गयी है । सभी प्रकार के इलाज कराये, कोई लाभ नहीं । जोड़ों में दर्द होता है ।

उत्तर : केशोर गुगल दो-दो वटी सुबह-दोपहर-रात गरम पानी से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । नियमित एक वर्ष तक औषधियां सेवन करें ।

ए. के. चौधरी, खंडवा

प्रश्न : नींद बहुत कम आने लगी है । पहले ऐसा नहीं था । जांच करायी है । कोई रोग नहीं । न कोई चिंता-फिक्र ।

उत्तर : ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

प्रकाश, सिंगरोली

प्रश्न : उम्र २४ वर्ष । नाक के अंदरूनी भाग में खुजली होती रहती है । नाक से बराबर पानी गिरता है । अंगरेजी दवा जब तक खाता हूं, तब तक ठीक रहता हूं । स्थायी इलाज बताएं ।

उत्तर : लक्ष्मी विलास एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । चित्रकहरीतकी एक-एक चम्मच रात गरम पानी से लें । नियमित छह माह औषधियां सेवन करें ।

विनीता, गुड़गांव

प्रश्न : मुझे चार साल से बालों में रूसी (डैंड्रफ) थी । एलोपैथी डॉक्टरों की सलाह पर शैंपू आदि का प्रयोग किया । अब काफी बढ़ गया । घाव भी हो गये । कंघी करते ही सारा सिर पपड़ी से भर जाता है । त्वचा में खिंचाव रहता है । पैरों और जांघों में भी लाल चकत्ते हो जाते हैं ।

उत्तर : रसमाणिक्य दस ग्राम, प्रवाल पिष्टी दस ग्राम, इनकी अस्सी मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पियें । नारियल तेल दो सौ ग्राम, कपूर देसी दस ग्राम डालकर सिर पर लगाएं ।

ठाकुरदास, लखनऊ

प्रश्न : उम्र ३४ वर्ष । पैर के अंगूठे बढ़ने के बाद पस के कारण दर्द होने लगता है ।

उत्तर : केशोर गूगल एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक वटी दोपहर-रात पानी से लें ।

सुनील, विदिशा

प्रश्न : कुछ समय पूर्व मुझे पीलिया हुआ था । वह तो ठीक है किंतु आंखें स्थायी तौर पर पीली हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर में पसीना भी बहुत आता है ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, प्रवालपिष्टी दस ग्राम, इनकी साठ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । रोहितकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं । नियमित तीन माह औषध सेवन करें ।

देवराज, सरायतरीन

प्रश्न : उम्र ५० साल । मल त्याग के बाद श्वास फूलती है । चलने पर, स्नान के बाद या भोजन बाद सुगंध व दुर्गंध का अनुभव नहीं होता । धूम्रपान करता हूं । एलोपैथी दवा ली, पर लाभ नहीं ।

उत्तर : धूम्रपान करना बंद कर दें । अर्जुनारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद नियमित प्रयोग करें ।

ममता, अजमेर

प्रश्न : उम्र ३५ वर्ष । ६-७ माह से नाभि के ऊपर पेट बढ़ रहा है । प्रायः दर्द बना रहता है । भोजन के बाद मल त्याग के लिए जाना पड़ता है ।

उत्तर : लवणभास्कर चूर्ण एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । चित्रकादि वटी भोजन के बाद एक-एक वटी पानी से लें ।

प्रद्युमन श्रीवास्तव, नासिक

प्रश्न : उम्र ४० वर्ष । पिछले पांच वर्षों से सारे शरीर में फित्ती निकल जाती है । एलोपैथी दवा से क्षणिक लाभ होता है । स्थायी लाभ के लिए दवा लिखें ।

उत्तर : हरिद्राखंड एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । चंदनासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं । नियमित तीन माह औषध सेवन करें ।

एक परेशान महिला, जबलपुर

प्रश्न : उम्र ३० वर्ष । कुछ कारणों से विवाह कराना नहीं चाहती । सारी स्थिति पत्र में लिख दी है । उचित परामर्श दें । भावी जीवन दुखमय बनाना नहीं चाहती हूं ।

उत्तर : अतीत को भूल जाएं । अपनी भूल अपने तक ही रखें । भावी जीवन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा । दांपत्य जीवन में सुख मिलता है, अकेले में नहीं ।

अर्चना, ग्वालियर

प्रश्न : उम्र १८ वर्ष । पेट में हलका-हलका दर्द कभी भी हो जाता है । उबकाई आती है । मीठी व चटपटी वस्तुएं खाने को मन करता है । डॉक्टर पेट में कीड़े बताते हैं । सरल-सी दवा लिखें ।

उत्तर : कृमिमुदगर रस एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । सूतशेखर रस दस ग्राम, शंख भस्म दस ग्राम, साठ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा दोपहर-रात पानी से लें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

बी ५/७, कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज से लगभग २६ वर्ष पूर्व जमीन से १०,००० फुट ऊंचाई पर उड़ रहे एक विमान चालक की आंखों की रोशनी बम विस्फोट के कारण चली गयी थी, लेकिन अंधे तथा घायल पायलट ने अभूतपूर्व साहस का परिचय देते हुए अपने विमान को सुरक्षित धरती पर उतारकर विश्व को चौंका दिया था ।

जब अंधे पायलट ने विमान उड़ाया

● अशोक सरीन

वह साहसी व्यक्ति था, अमरीका का केन शनीटर । वह 'स्काई-रेडर' नामक बमवर्षक विमान का पायलट था । उन दिनों अमरीका और कोरिया के बीच भयानक युद्ध छिड़ा हुआ था । केन शनीटर कोरियाई क्षेत्र पर सुबह-सुबह बमवर्षा कर प्रफुल्लित हृदय से अपने विमान को विमान-वाहक समुद्री जहाज की ओर ले जा रहा था । उससे थोड़ी दूर उसका साथी हावर्ड थाइर अपने विमान के साथ उड़ रहा था । अचानक शत्रु की तोप से निकला गोला केन शनीटर के विमान से टकरा गया, जिससे शनीटर के विमान के काकपिट के परखचे उड़ गये । बम का टुकड़ा शनीटर के चेहरे को भी लगा था, जिससे उसका चेहरा लहू-लूहान हो गया था । साथ ही उसकी दोनों आंखें भी नष्ट हो गयी थीं ।

केन शनीटर का विमान परकटे पक्षी की तरह कलाबाजियां खाता तेजी से धरती की ओर आ रहा था । वह लगातार चिल्लाये जा रहा था—'भगवान के लिए मेरी मदद करो...मैं अंधा हो चुका हूं ।' शनीटर की आवाज हावर्ड थाइर ने सुन ली थी । कुछ देर के लिए हावर्ड घबरा गया 'हे भगवान शनीटर का अब क्या होगा ?' परतु दूसरे क्षण स्वयं में साहस बटोरकर थाइर अपने विमान के रेडियो ट्रांसमीटर में बोला—'केन साहस से काम लो...मैं थाइर हूं । मेरी आवाज गौर से सुनो...विमान को धीरे-धीरे नीचे लाओ, जल्दी करो...संतुलन न गंवाओ, साहस,केन साहस।' थाइर निरंतर बोलता जा रहा था, परंतु शायद शनीटर तक उसकी आवाज न पहुंच रही थी, इससे थाइर की बौखलाहट बढ़ने लगी थी। थाइर बड़ी तेजी से अपने विमान को शनीटर के विमान के नीचे ले आया । दोनों विमानों के बीच मात्र सौ फुट का अंतर रह गया था । थाइर दूरबीन से शनीटर पर नजर जमाये हुए था । वह उसे सकुशल धरती पर उतारने की मन-ही-मन में योजना बना रहा था, परंतु उसके लिए दोनों के बीच संपर्क होना जरूरी था । वह उसे किसी ऐसे स्थान पर ले जाना चाहता था, जहां से वह पैराशूट द्वारा नीचे उतर सकता ।

'केन, क्या तुम मेरी आवाज सुन रहे हो...मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे साथ हूं । तुम बहुत कुशल पायलट हो । थोड़ा साहस से काम लो, तो तुम विश्व को चौंका सकते हो...नभ इतिहास में आज तुम करिश्मा कर सकते हो ।'

इस बार थाइर की आवाज केन शनीटर ने सुन ली थी । वह उदास स्वर में बोला...'अब मेरा बचना नामुमकिन है...अब मैं स्वयं को बहुत कमजोर अनुभव कर रहा हूं ।'

'नहीं केन कुछ भी असंभव नहीं है । तुम मृत्यु को जिंदगी में बदल सकते हो । कुछ क्षण बाद तुम धरती पर सकुशल उतर जाओगे । मैं जैसा कह रहा हूं वैसा करो ।'

केन शनीटर ने अपना सर ऊपर उठाया । शायद उस पर थाइर की बातों का असर हो रहा था ।

'केन, हम जेरोनेमा पहुंच चुके हैं ।' थाइर उल्लासभरे स्वर में बोला । जेरोनेमा एक अमरीकी हवाई अड्डा था, जहां आपात स्थिति में विमान को दुर्घटना से बचाने की आवश्यकता थी ।

इस समय दोनों विमान धरती से चार हजार फीट ऊंचाई पर उड़ रहे थे । थाइर को अब दूसरी चिंता सता रही थी । केन के विमान में अभी बम मौजूद थे तथा जरा-सी चूक से वे किसी क्षण फट सकते थे, अतः बमों का नष्ट करना बहुत जरूरी था । उसने केन को सतर्क किया—'केन, बम गिरानेवाला यंत्र चालू करो...जल्दी ।' लेकिन केन पर उसकी कोई प्रतिक्रिया न हुई । शायद केन तक थाइर की आवाज न पहुंची थी । 'केन, मेरी आवाज सुनो, विमान में रखे बम जल्दी गिरा दो ।' थाइर के स्वर में घबराहट थी, परंतु इस बार भी केन की ओर से कोई कार्रवाई न हुई ।

'हे भगवान अब क्या होगा ?' थाइर सोचकर चिंतित हो उठा । लेकिन दूसरे ही पल उसने केन के विमान से बमों को गिरते देखा जो समुद्र में गिर रहे थे । 'थैंक गॉड', थाइर ने प्रभु का धन्यवाद किया ।

'शाबास केन' थाइर, केन को धैर्य बंधाता हुआ बोला, 'अब विमान को धीरे-धीरे नीचे लाओ ।' प्रत्युत्तर में थाइर ने जो देखा तो उसके मुख से चीख निकल गयी । केन का सर एक ओर लुढ़का हुआ था तथा विमान बड़ी तेजी से नीचे आ रहा था ।

'केन संभलो, विमान की गति पर नियंत्रण रखो, उसे धीरे-धीरे नीचे लाओ । केन के शरीर में हरकत देख थाइर उत्साहित हो उठा । केन, अब हमें वन फाइव जीरो बार्डर के अनुसार नीचे उतरना है । ७५ फुट अल्टीब्यूड...५० फुट अल्टीब्यूड...२५ फुट, तुम धरती के बिलकुल करीब हो, इंजन बंद करो ।'

थाइर का विमान अभी धरती से तीन सौ फुट ऊंचाई पर था, जब केन का विमान सकुशल धरती पर उतर गया । केन शनीटर को तुरंत डॉक्टरी सहायता दी गयी । उसका इलाज बड़े-बड़े विशेषज्ञों की देखरेख में हुआ । अब केन पूर्णतया स्वस्थ है । उसकी एक आंख में थोड़ी रोशनी भी आ गयी है । केन ने जो कर दिखाया, उससे उसका नाम अमर हो गया ।

—द्वारा—सिटी लाइट प्रिंटर्ज
पालमपुर-१७६०६१
कांगड़ा (हि. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति के मंत्रमुग्ध कर देनेवाले सौंदर्य के बीच यदि पर्यटन के साथ-साथ तीर्थयात्रा भी कर ली जाए, तो सोने में सुहागा वाली बात खुद ही सिद्ध हो जाती है । यकीनन गढ़वाल हिमालय की यात्रा में ऐसे संयोग अकसर होते रहते हैं । मशहूर 'फूलों की घाटी' को ही ले लीजिए...घाटी में प्रवेश से पूर्व घांघरिया पड़ाव से दो रास्ते अलग-अलग दिशाओं को फटते हैं । एक रास्ता फूलों की घाटी को जाता है, तो दूसरा रास्ता हेमकुंड—लोकपाल को । एक रास्ते का रुख पर्यटक पकड़ते हैं, तो दूसरे रास्ते का अनुसरण तीर्थयात्री करते हैं । अधिकांश लोग दोनों की यात्रा कर लेते हैं । स्वाभाविक ही उनकी यह यात्रा अविस्मरणीय हो जाती है ।

झिलमिलाते हिमशिखर

समुद्रतल से ४३२९ मीटर यानी १५,२०० फुट ऊंचाई पर स्थित है, अलौकिक तीर्थ-हेमकुंड । इसका प्राचीन नाम लोकपाल भी है । संयुक्त रूप से इसे हेमुकंड लोकपाल कहते हैं । यहां पर बर्फ से झिलमिलाते हिमशिखरों के बीच डेढ़ किमी. वृत्त की विशाल रमणीक झील विशेष दर्शनीय है । यह स्थल

संत सोहन सिंह, जो टिहरी में संतों की वाणी का उपदेश दे रहे थे । हेमकुंड की सघन खोज में निकल पड़े । वे गुरु गोविंद सिंहजी के प्रति अपार श्रद्धा रखते थे । वे पर्वतों में घूमते हुए बदरीनाथ धाम पहुंच गये और बाधाओं को पार करते हुए वे उस स्थान पर पहुंचे, जहां सात शिखरोंवाला हिमालय खड़ा है और उसके चरणों में विशाल झील फैली हुई है, जिसे लोग हेमकुंड के नाम से पुकारते हैं ।

ऊंचाई पर सिखों का अकेला तीर्थ : हेमकुंड

● प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

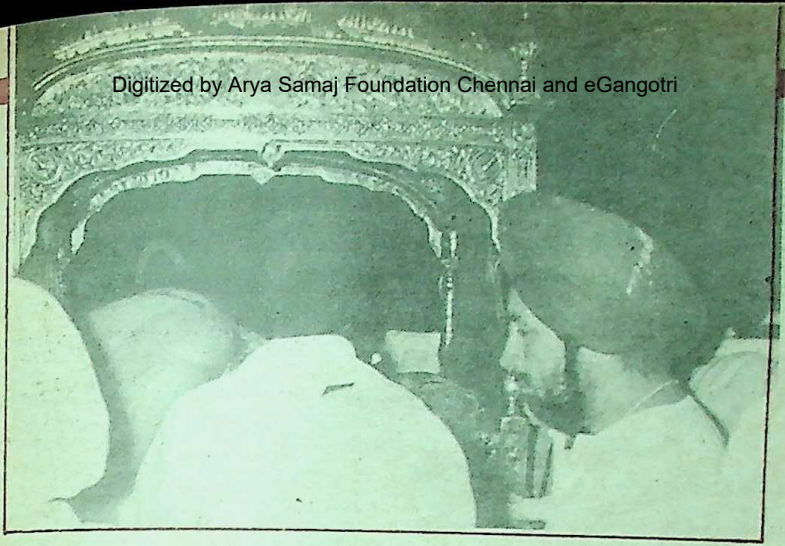

जहां हिंदू धर्मावलंबियों की श्रद्धा का केंद्र है, वहीं सिख संप्रदाय के लोगों का सबसे बड़ा व प्रमुख तीर्थ है । इतनी अधिक ऊंचाई पर सिखों का यह अकेला तीर्थ है । वे इसे अपना कैलाश मानसरोवर मानते हैं । अपने देश से ही नहीं, कनाडा, इंगलैंड और अमरीका आदि देशों में रहनेवाले प्रवासी सिख बड़ी संख्या में प्रतिवर्ष इस तीर्थ की यात्रा पर आते हैं । मध्य जून से यहां की यात्रा शुरू होती है जो निर्बाध रूप से अक्तूबर तक चलती रहती है । झील के किनारे एक ओर लक्ष्मण मंदिर है, तो दूसरी ओर विशाल गुरुद्वारा स्थापित है ।

सिखों के इस श्रद्धा धाम के पीछे मान्यता है, कि उनके दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह ने यहां महाकाल की तपस्या की थी और खालसा पंथ चलाया था । पवित्र सिख ग्रंथ विचित्र नाटक के छठवें अध्याय में स्वयं गुरु गोविंद सिंह ने इस स्थान के बारे में लिखा है—

'हेमकुंड पर्वत है जहां,
सप्तश्रृंग सोहत है वहां ।
तहां हम अधिक तपस्या साधी,
महाकाल कालका अराधी

...यह वर्णन पढ़ते ही सिख लोग अधीर हो गये । सप्तश्रृंग (सात शिखर वाले पर्वत) युक्त स्वर्गिक सरोवरवाले उस अज्ञात हिममंडित क्षेत्र के बारे में उनकी जिज्ञासाएं शांत न हुईं, तो कई साहसी सिख हेमकुंड की खोज में निकल पड़े । तब पर्वतीय क्षेत्रों की यात्रा आज की तरह सुगम नहीं थी । अत्यंत दुर्गम कठिन व जटिल होने के कारण न उन्हें कोई रास्ता ही मिला, न सरोवर का कोई पता । वे निराश हो चले थे ।

इसी बीच १९३० में संत सोहन सिंह जो टिहरी में संतों की वाणी का उपदेश दे रहे थे, हेमकुंड की सघन खोज में निकल पड़े । वे गुरु गोविंद सिंह जी के प्रति अपार श्रद्धा रखते थे । वे काफी समय तक पर्वतों में घूमते कदाचित बदरीनाथ धाम पहुंच गये । वापस लौटते समय पांडुकेसर के आसपास स्थानीय ग्रामीणों से उन्हें एक भव्य हिमानी झील के बारे में अस्पष्ट जानकारी मिली, तो उन्हें सहसा आशा व संभावना की किरण फूटती दिखायी दी । वे बेहद पस्त हो चुके थे । बेहद विकट जानलेवा चढ़ाई, हिमनदों, शिलाओं, बाधाओं को पार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते आखिर वे उस स्थान पर पहुंच गये, जहां सात शिखरोंवाला हिमालय [illegible]गि खड़ा है और उसके चरणों में विशाल झी[illegible]ली हुई है । वे इतने प्रसन्न हुए कि खुशी से उनकी आंखें भीग आयीं । वे वापस लौटे । बाद में उन्होंने अमृतसर पहुंचकर अपने भाई वीर सिंह को पूरा वृत्तांत सुनाया । भाई की प्रेरणा व मदद से सोहन सिंह दुबारा हेमकुंड आये और उन्होंने झील के किनारे एक छोटे से गुरुद्वारे की स्थापना की । यह बात १९३६ की है । चारों ओर इस पवित्र सरोवर की चर्चा होने लगी । १९३६ से ही साहसी श्रद्धालु सिख यात्री हेमकुंड की यात्रा पर आने लगे । फिर शनै : शनै : रास्ते बने । सुविधाएं जुटीं ।

पूजनीय स्थल

इधर यह तीर्थ आदिकाल से स्थानीय पर्वतवासियों का पूज्य स्थल रहा है । मान्यता है कि यहां प्राचीनकाल में लक्ष्मण ने तपस्या की थी । स्थानीय लोगों ने यहां लक्ष्मण का छोटा मंदिर भी निर्मित किया था । अब इस मंदिर का जीर्णोद्धार कर दिया गया है । विशेष अवसरों पर स्थानीय महिलाएं पुरुष प्रतिवर्ष यहां स्नान, पूजन करने आते हैं ।

हेमकुंड झील की निराली ही रंगत है । तीनों ओर से सात हिमशिखरों की पंगत अनूठी ही

है । इन चोटियों पर जब सुबह सूरज की किरणें फूटती हैं, तब लगता है जैसे आग में तपते हुए पिघलते लोहे का मुलम्मा चढ़ाया जा रहा हो । आसमान तो कभी ही पूरे दिन नीला रह पाता हो । दोपहर होते ही बादल उमड़ आते हैं । झील की परिक्रमा ढाई किमी. से कम न होगी । पश्चिमोत्तर की ओर झील के एक कोने में एक पतली जल धारा नीचे ढलान की ओर बहती है । यह लक्ष्मणगंगा है । जो ६ किमी. उतार पर पहुंचने के बाद पुष्पावती नदी में संगम बनाती है । पुष्पावती नदी फूलों की घाटी से होकर आती है ।

इस विशाल झील की विशेषता है कि यह पल-पल अपना रंग-रूप बदलती रहती है...सवेरे झिलमिल किरणों से, आतुर दौड़ रहे मेघों से, जमे बादलों से, हौले से उठते कुहरे व सरसराती बहती हवा से झील का रूप भी बदलता रहता है ।

झील के उत्तरी कोने पर बर्फ का एक बड़ा ग्लेशियर स्थिर होकर पसरा रहता है । वर्षाकाल में यहां शुष्क शिलाओं पर भी झरने फूटते व अगणित पुष्प खिलते दिखायी देते हैं । दिव्य पुष्प ब्रह्मकाल व फेनकमल यहां बहुतायत में खिले रहते हैं । जिससे यहां के परिवेश में रस-रंग-गंध की त्रिवेणी बहती रहती है । झील की परिक्रमा करते समय कहीं से झील सिमटी संकुचित लगती है, तो कहीं से बहुत उदार व विशाल । अधिक ऊंचाई पर नीलम-सी दमकती इस ठंडी झील के परिवर्तनशील सौंदर्य को देख यात्री बरबस ठगा-सा रह जाता है ।

ताजगीभरी हवा के बीच

हेमकुंड धाम के लिए गोविंदघाट नामक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस्ती से २० किमी. की पैदल यात्रा शुरू होती है। गोविंद घाट, बदरीनाथ धाम से २८ किमी. पूर्व है। ऋषिकेश से गोविंदघाट की दूरी २९० किमी. के आसपास है। गोविंदघाट में रहने-खाने की पर्याप्त सुविधाएं हैं। यहां सरकारी गैरसरकारी आवास गृहों के अतिरिक्त विशाल गुरुद्वारा, लंगर व धर्मशालाएं हैं। जहां निःशुल्क खाने व ठहरने की व्यवस्था उपलब्ध है। हेमकुंड का रास्ता ही फूलों की घाटी का रास्ता भी है। इसलिए यहां पर्यटकों का भी खूब आना-जाना लगा रहता है। दोनों स्थलों तक जाने के लिए घोड़े, खच्चरों व डंडी कंडी की व्यवस्था भी यहां उपलब्ध है। सभी लोग काफी सुबह ही यात्रा शुरू कर देते हैं, क्योंकि रास्ता लगातार चढ़ाई का है। सुबह ठंडी हवा में ताजगी बनी रहती है, जो चलने के लिए स्फूर्ति देती रहती है।

गोविंदघाट से २ किमी. ऊपर पुलना गांव आता है। प्रकृति की छत्रछाया में यहां एक अलग ही रोचक सरल जीवन के दर्शन होते हैं। हरे-भरे खेत, फल-फूल लदे पेड़-पौधे, सीधे-सरल ग्रामीण, रास्ते पर कतारबद्ध छोटी-छोटी दूकानें आकर्षित करती हैं। यहां विश्राम कर काफी राहत मिलती है। फिर ७ किमी. बाद कहीं हल्के, कहीं घने जंगलों के बीच से होते भ्यूंडार गांव पहुंचते हैं। सहसा सन्नाटा टूटता है व बच्चों का शोर, पालतू पशुओं के गले में बजती घंटियां, घास या पानी लाती महिलाएं, ऊन का काम करते पुरुष दूकानों पर लगती गपशप के बीच यात्री खुद को प्रफुल्लित महसूस करता है।

भ्यूंडार से ऊपर बढ़ते हैं तो रास्ते में एक

इनके भी बयां जुदा-जुदा

पैदा न हो जमीं से नया आस्मां कोई
दिल कांपता है आप की रफ़ार देखकर
— यगाना चंगेजी

सुना मैंने कहीं उनकी भी सारी रात आंखों में
किसी ने मेरा अफसाना सुनाया कुछ न कुछ होगा
— बहादुरशाह जफर

भरे बाजार में चलने से पहले सोच लो आजर
न कोई हाथ थामेगा न कोई रास्ता देगा
— कफैल आजर

जज्बे की कड़ी धूप हो तो क्या नहीं मुमकिन
यह किसने कहा संग पिगलता ही नहीं है
— अख्तर लखनवी

मुझ को तो होश नहीं तुमको खबर हो शायद
लोग कहते हैं कि तुमने मुझे बरबाद किया
— जोश मलीहाबादी

तेरे दिल में धड़कने लगा हूं दिल की तरह
यह और बात कि अब भी तुझे सुनायी न दूं
— अहमद फराज

जिनपे होता है बहुत दिल को भरोसा ताबिश
वक्त पड़ने पे वही लोग दगा देते हैं
— ताबिश

कोई सवाल जो पूछे तो क्या कहूं उससे
बिछड़नेवाले सबब तो बता जुदाई का
— परवीन शाकर

ऐसा नहीं कि खुश्क मिले हर जगह जमीं
प्यासे जो चल पड़े हैं तो दरिया भी आएगा
— कतील शफाई

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और लक्ष्मण गंगा छिटकती पटकती हुई बहती दिखायी देती है । तो कहीं खड़े पर्वतीय ढलानों पर फिसलते झरने मुग्ध करते दिखायी देते हैं । ५ किमी. बाद वनश्री की सुंदर छटाओं का आनंद लेने के बाद पहुंचते हैं—घांघरिया । एक दिन में यात्री या पर्यटक यहीं तक पहुंच सकता है ।

यहां फूलों की घाटी भी

यहां गढ़वाल मंडल विकास निगम का पर्यटक आवास गृह है । कुछ कदम आगे विशाल गुरुद्वारा व रैनबसेरा है । सरकारी बंगले भी हैं । गुरुद्वारा परिसर में ही हजार लोगों के रहने, खाने की व्यवस्था है । यहां पर्याप्त दूकानें हैं । घने देवदार के वृक्षों से घिरा घांघरिया निहायत शांत व मनोरम स्थल है ।

अगले दिन घांघरिया से कुछ दूर जाकर दो रास्ते फटते हैं । एक सीधा उत्तर दिशा की ओर ऊपर को बढ़ता है । दूसरा आगे घाटी की ओर । यहीं 'फूलों की घाटी' को जाता है । जो मात्र ३ किमी. की दूरी पर है ।

उत्तर को जानेवाला रास्ता हेमकुंड को है, जो निरंतर चढ़ाई का है । यह दूरी ६ किमी. की है, जो बराबर कठिन चढ़ाई के कारण बहुत ज्यादा महसूस होती है ।

चढ़ाई शुरू होते ही एक ग्लेशियर मिलता है । पास में ही हरी-भरी पहाड़ी के बीच से होकर लक्ष्मणगंगा बहती हुई चली जाती है । वृक्षों की सीमा समाप्त होने लगती है । अब शुरू हो जाती है, मखमली घास, छोटी झाड़ियों व असंख्य फूलों की बहार । रंग-बिरंगे पक्षियों की चहक से वातावरण संगीतमय हो उठता है । कभी-कभार हिमालय का दुर्लभ मोर-मुनाल यहां दिखायी दे जाता है । चढ़ाई पर हवा की कुछ कमी से बेहद थकान महसूस होती है व सांस फूलती रहती है । कई बार पुष्पों की मादक गंध से नशा भी लग जाता है । रास्ते में कुछ दूकानें मिलती हैं तो भारी सुख मिलता है । अब धीरे-धीरे पुष्पों व घास का साम्राज्य भी छीजने लगता है । अब ऊंचाई १४,००० फुट हो जाती है । यहां से हिमरेखा शुरू होने को है । हेमकुंड झील एक किमी. शेष रह जाती है । हिमखंडों के कई अवशेष जीवंत पसरे हुए मिलते हैं । दुर्लभ ब्रह्मकमल खूब खिले हुए मिलते हैं ।

यहां से ठीक एक हजार चौसठ सीधी सीढ़ियों को चढ़ना होता है । उफ ! कितनी विकट...कितनी तकलीफदेह !! पहले ही सांस फूले जा रही है, अब तो सांस धौंकनी-सी चलने लगती है । कहीं जरा संतुलन गड़बड़ाया तो दुर्घटना होने में भी देर नहीं । ज्यादा विश्राम भी नुकसानदायक । धीमे-धीमे चढ़ते रहें—वही अच्छा ।

सीढ़ियां जहां पर खत्म हो रही हैं, वही तो है सबका गंतव्य—हेमकुंड लोकपाल । झील के पानी का करिश्मा देखिए । बस एक गोता लगाइए सारी थकान, टूटन एकदम गायब । गुरुद्वारा में पहुंचिए बहुत सत्कारपूर्वक नाश्ता आपकी सेवा में हाजिर । सेवकों का सहज मुसकराहटभरा अभिवादन आपको आह्लादित कर देगा । हेमकुंड में रात्रि-विश्राम वर्जित है । शाम को सभी घांघरिया लौट आते हैं ।

—द्वारा रूपसागर सूरि
उत्तरकाशी-२४९१९३ (गढ़वाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र : प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

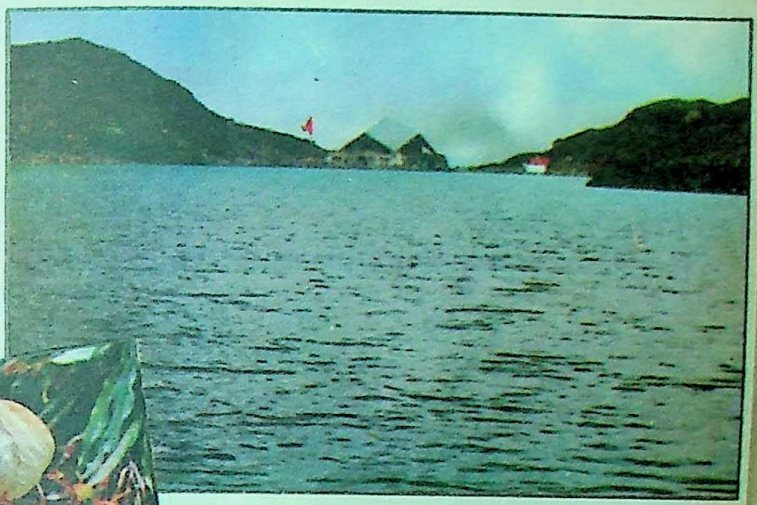

हेमकुंड स्थित विशाल गुरुद्वारा

हेमकुंड के किनारे खिलनेवाला दुर्लभ ब्रह्म कमल

स्नान करते तीर्थयात्री

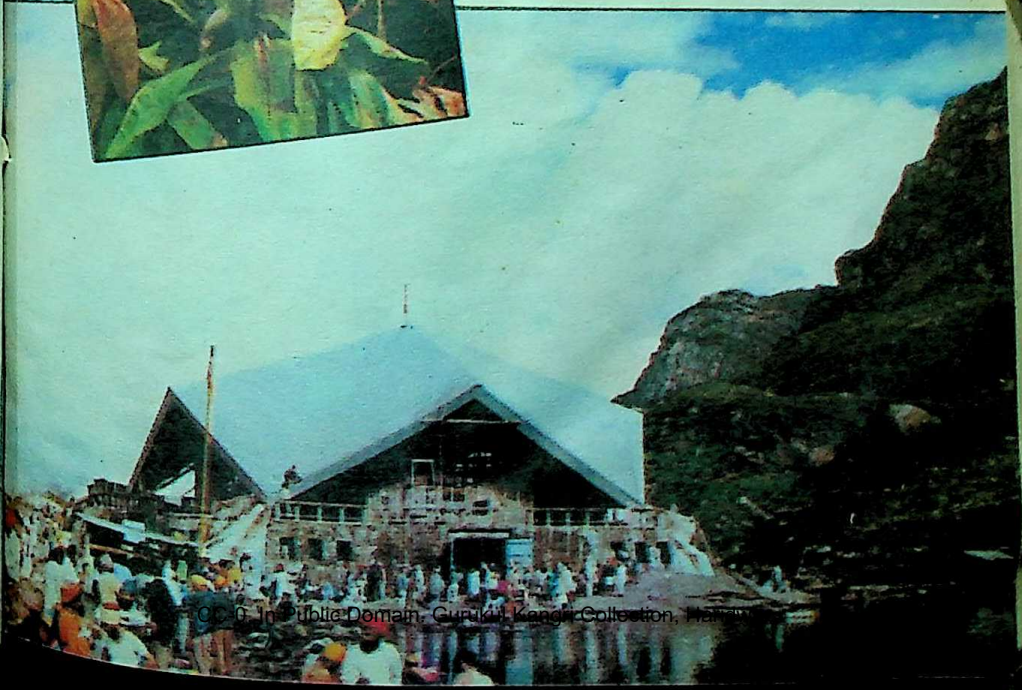

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

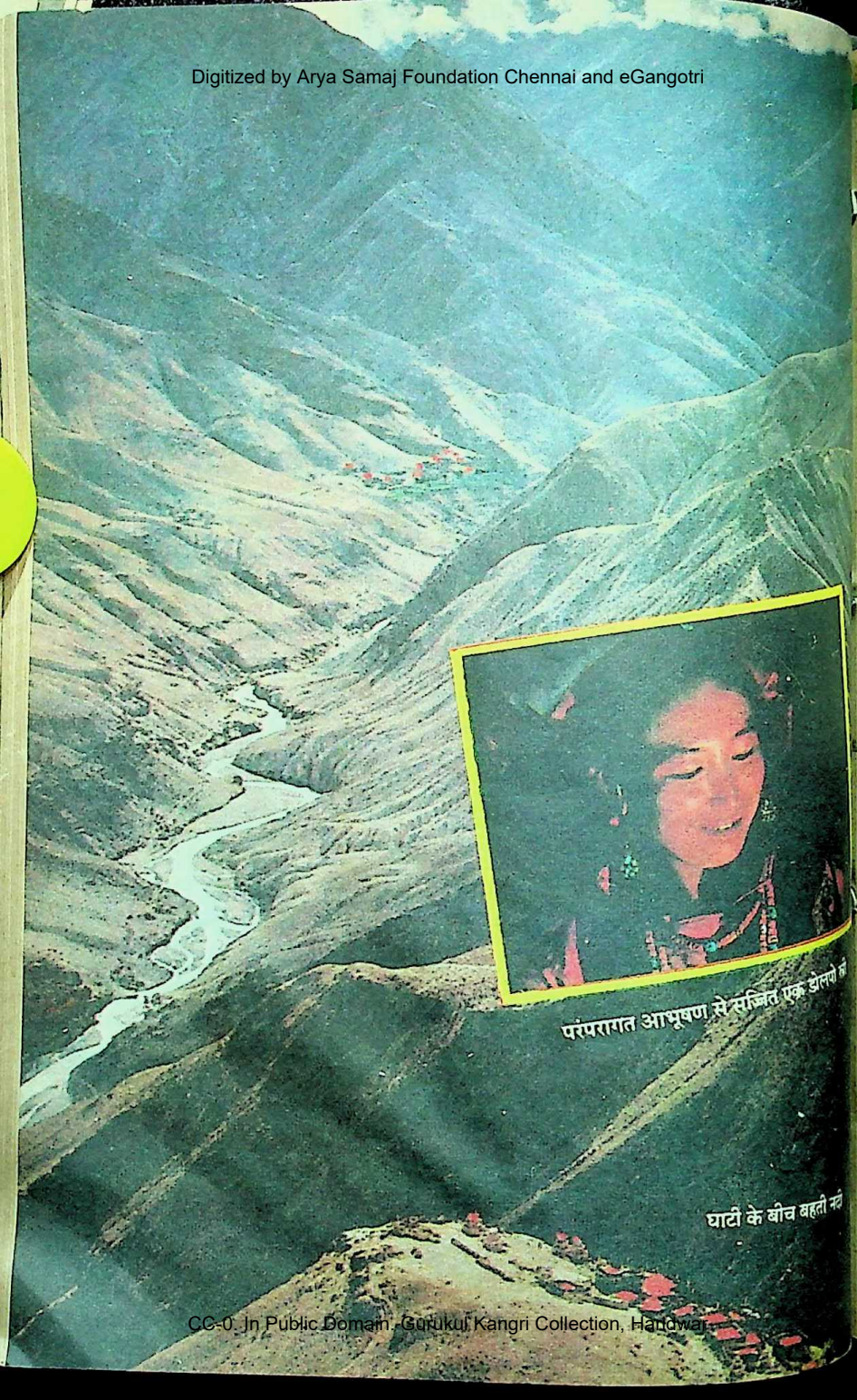

परंपरागत आभूषण से सज्जित एक डोलपो की

घाटी के बीच बहती नदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्फ से ढकी चोटियां, दुर्गम घाटियां, पथरीली पगडंडियां और उन पर मौसम के तमाम थपेड़ों को हंसकर झेलते, चलते हुए चरवाहे, उनकी भेड़-बकरियां । अपने-आप में मगन, संतुष्ट ।

हिमालय की तराइयों में बसे ये खानाबदोश चरवाहे लोग डोलपा भी हो सकते हैं और रौंगपा भी । यद्यपि इनमें से डोलपा बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं और रौंगपा हिंदू धर्म को माननेवाले, लेकिन दोनों में कोई टकराव नहीं है । वरन है एक आत्मीयता, जो जीवन की आवश्यकताओं से जुड़ी है ।

डोलपा उत्तर-पश्चिमी नेपाल के निवासी हैं । वे याक पालते हैं । इसके अतिरिक्त हर गरमी में नमक का व्यापार करने तिब्बत जाते हैं । और इसके बाद वे अनाज के व्यापार के लिए मध्य

चुटकीभर नमक बताता है मौसम का हाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

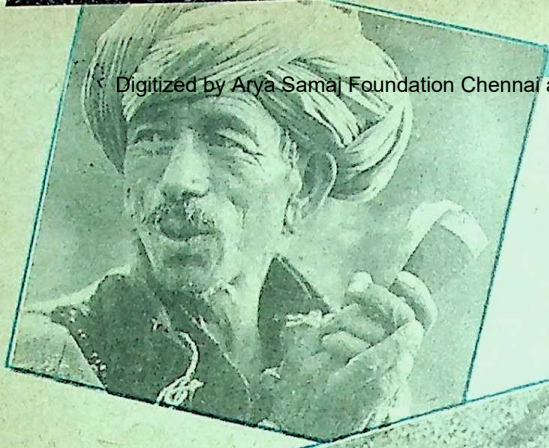

नंदलाल थापा—चूमा गांव का मुखि

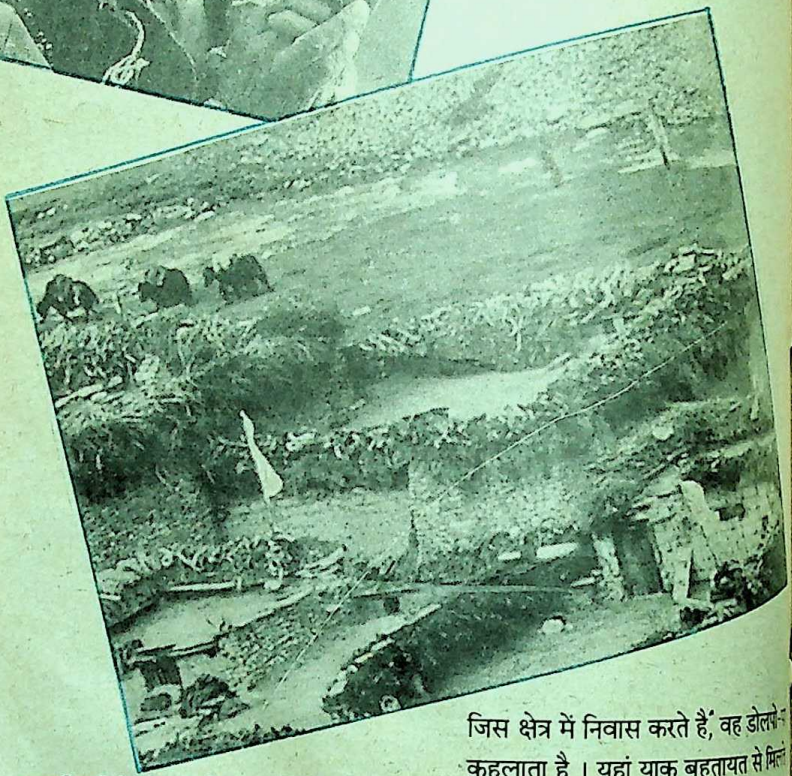

पहाड़ी नदी के किनारे डोलपा लोगों के घर

नेपाल की यात्रा करते हैं । यहीं उनकी भेंट होती है, हिंदू धर्म के अनुयायी रौंगपा लोगों से । डोलपा तिब्बत से लाये नमक का कुछ हिस्सा अपने तथा अपने जानवरों के लिए रख लेते हैं और शेष को अनाज के साथ बदल लेते हैं । पीढ़ियां आती और चली जाती हैं, पर यह सिलसिला अनवरत चलता रहता है । डोलपा जिस क्षेत्र में निवास करते हैं, वह डोलपो कहलाता है । यहां याक बहुतायत से मिलते हैं । डोलपा लोगों के लिए याक का बेहद महत्त्व है ।

याक ही माता-पिता

डोलपा लोगों के मुखिया तिलेन का कहना है कि, "याक हमारे माता-पिता हैं । वे हमें माल-असबाब ही नहीं ढोते, हमारी देखभाल भी करते हैं ।"

याक के बिना डोलपा अपने जीवन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पना भी नहीं कर सकते । उनसे उन्हें दही, मक्खन, कंबलों के लिए ऊन तो मिलता ही है, उनके गोबर को थापकर कंडे बनाते हैं । वृक्षहीन इस प्रदेश में ये कंडे ही उनके भोजन पकाने का साधन बनते हैं ।

कष्टकर यात्रा

डोलपा लोगों की तिब्बत और मध्य नेपाल की यात्रा कष्टकर होते हुए भी जीवंत होती है । दो हजार याकों के साथ सैकड़ों डोलपा नमक लिए अनाज के व्यापार के उद्देश्य से निकलते हैं । पर एक साथ नहीं । पचास-पचास, सौ-सौ के समूह में, ताकि रास्ते में भीड़भाड़ न हो और न कोई चारागाह मिलने पर याकों के चराने में खींचा-तानी । याकों की पीठ पर ऊन की बड़ी-बड़ी बोरियों में नमक लदा होता है । यात्रा का नेतृत्व करनेवाले याक की एक विशेषता होती है—कानों में लाल पट्टियां और पीठ पर लगा प्रार्थना ध्वज । याकों का शोरगुल, बच्चों की किलकारियां, या रोने के स्वरों के बीच व्यापार की संभावना, कीमतों के गिरने-चढ़ने की आशंकाएं लिए हुए डोलपा यह यात्रा शुरू करते हैं ।

डोलपा— जिनके पूर्वज तिब्बत से आकर नेपाल में बस गये । और, रौंगपा, मध्य नेपाल के निवासी । डोलपा एवं रौंगया लोगों के बीच वर्षों से मैत्री है, वे व्यापार में भी साझीदार हैं । डोलपा तिब्बत से नमक लाकर रौंगपा लोगों को बेचते हैं और रौंगपा अपनी जरूरत की चीजें खरीदने भारतीय सीमा पर आते हैं ।

एक रौंगपा नवयुवती

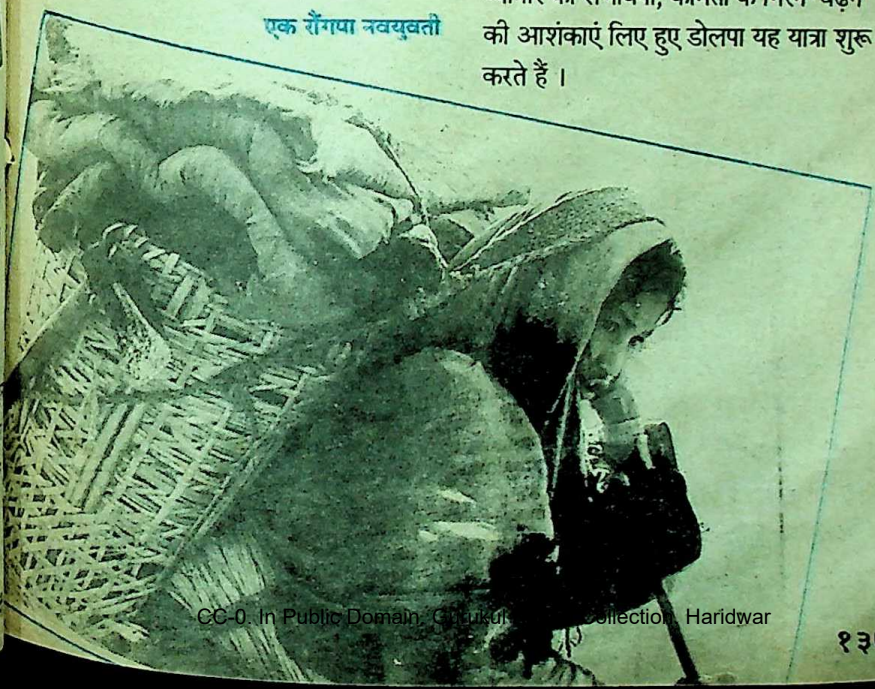

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

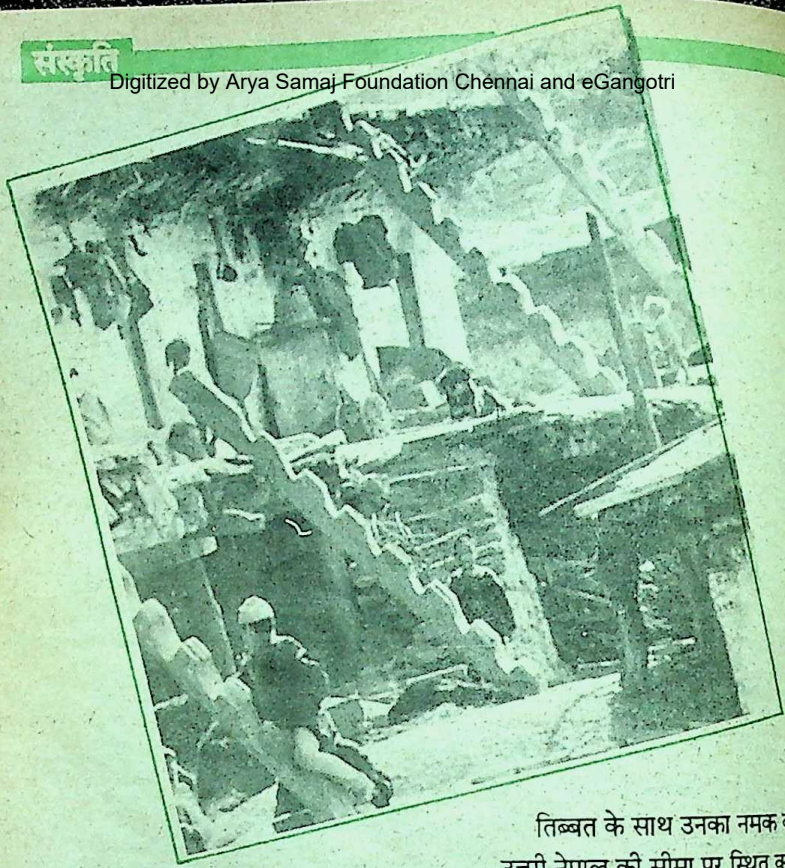

रौंगपा लोगों के दुमंजला घर

उनका जीवन दिन ब दिन कष्टकर होता जा रहा है । तिब्बत पर चीनी आधिपत्य के बाद अब नमक खरीदने के लिए उन्हें तरह-तरह के नियय-कानूनों का पालन करना होता है ।

सख्त कानून-कायदे

डोलपा-प्रमुख तिलेन के अनुसार, चीनी अधिकारियों ने यह सख्त कानून बना दिया है कि अब जुलाई में केवल तीन दिन ही डोलपा तिब्बत में प्रवेश कर सकेंगे । जो व्यापारी विलंब से पहुंचते हैं, उन्हें जुरमाना अदा करना पड़ता है ।

तिब्बत के साथ उनका नमक का व्यापार उत्तरी नेपाल की सीमा पर स्थित क्यातो चोंग नामक एक बाजार में होता है । यहां उनको तिब्बती क्षेत्र के चरवाहों के मुखिया से होती है । तिब्बती दस दिनों की यात्रा कर द्रावे झील के तट से नमक लाते हैं । यही मुखिया चोंग के भाव तय करता है । ड्रोक-पा नामक यह मुखिया ही तय करता है कि कौन किसके साथ व्यापार करेगा । नमक के अलावा तिब्बती चीनी, चाय, भेड़, पनीर, कपड़े, घड़ियां, कैसेट प्लेयर आदि भी लाते हैं । एक कैसेट प्लेयर की कीमत होती है चार भेड़ें,और एक सीको घड़ी लिए दो या तीन भेड़ें देनी पड़ती हैं ।

मध्य नेपाल की ओर

तिब्बत में व्यापार करने के बाद डोलपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों की एक और यात्रा शुरू होती है—मध्य नेपाल की ओर। उनकी यह यात्रा बेहद कष्टकर होती है। कड़ाके की सरदी के बावजूद वे खुले में सोते हैं। जगह-जगह जलते अलाव, और उनके पास एक-दूसरे से सटकर, कंबल, भेड़ों की खाल ओढ़कर सोये स्त्री, पुरुष, बच्चे। फिर सुबह होती है और यात्रा का सिलसिला फिर शुरू हो जाता है। नौ दिनों की यात्रा के बाद ये यात्री बाग-ला दर्रे के पास पहुंचते हैं। इस यात्रा में जिन चार दर्रों को उन्हें पार करना पड़ता है, उनमें यह दर्रा सबसे खतरनाक समझा जाता है। दल का मुखिया तिलेन आकाश की ओर देखता है, पर जलते अलाव में चुटकीभर नमक डालता है। सब चुप खड़े होते हैं। यदि नमक मूल्वा होता है, तो आग में पड़कर तड़कता है। इसका अर्थ है—बर्फ पड़ने में अभी काफी समय है, और यदि नमक तड़कता नहीं तो इसका मतलब है, अंधड़, आनेवाला है। बाग-ला दर्रे के शिखर पर पहुंचकर सभी यात्री भगवान की प्रार्थना करते हैं। हवा में लहराते प्रार्थना ध्वज उन्हें आशीर्वाद देते प्रतीत होते हैं। १६,५६८ फुट की ऊंचाई चढ़ने के बाद ये डोलपा यात्री नीचे की ओर उतरना शुरू करते हैं।

पर्वत के दक्षिणी तराई भाग में हिंदू धर्म को माननेवाले रौंगपा खेती करके अपना

खुले आसमान के नीचे बसी गृहस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनयापन करते हैं । इन लोगों के धार्मिक क्रिया-कलाप जादू-टोने व भूत-प्रेत विद्यावाली कहानियों की याद दिलाते हैं । चूमा नामक गांव के निवासी अपने देवता को बुलाने के लिए लकड़ी के बने एक मंदिर को गोबर से पूजा करते हैं । सफेद लबादे व लंबी दाढ़ीवाले ओझा शिव की प्रतिमा के चारों तरफ जानवरों की तरह उछलते हैं । उसका एक जानवर के सीने में हाथ डालकर खून पीना, सिहरन पैदा करता है ।

रौंगपा लोगों के बीच

आठ दिनों की यात्रा पूरी कर डोलपा लोगों का यह दल, जिसका मुखिया तिलेन है, हुरीकोट पहुंचता है । यहां के अधिकांश निवासी हिंदू हैं और उनकी वेशभूषा नेपाली है । यहां तिलेन का साझीदार बुधीछामी उसका स्वागत करता है । अतिथियों के निवास के लिए उसने अपने लकड़ी के घर के दो कमरे पहले ही साफ करा रखे हैं । घर का बना नशीला पेय पीने के साथ-साथ अब व्यापार की बातें शुरू होती हैं । बुधी को तिलेन बताता है कि इस बार वह केवल बारह भार (लगभग पंद्रह पौंड) नमक ला पाया है । बुधी भी अपना रोना रोता है । पर्याप्त बरसात नहीं हुई, तो फसल भी कम हुई । फिर आधी फसल पड़ोसी की गाएं खा गयीं । पर कुछ न कुछ तो तय करना ही है । भाव तय तो होना है, पर डोलपा इस सौदे से प्रसन्न नहीं हैं । वे तय करते हैं कि हुरीकोट में थोड़ा-सा व्यापार कर के चौदहा बीसे घाटी जाएंगे । उन्हें पता चला है कि वहां नमक की मांग ज्यादा है ।

दूसरे दिन समूचा कारवां इस घाटी की ओर चल पड़ता है ।

चौदह बीसे घाटी अत्यंत मनोरम है, साथ ही उपजाऊ भी । यहां का मुखिया है नंदलाल थापा । उसके गांव का नाम है चूमा । तिलेन का उससे पुराना परिचय है । चूमा में तिलेन को अपने नमक का वाजिब दाम मिल जाता है—हुरीकोट से लगभग दुगुना ।

खरीद-फरोख्त के बाद अधिकांश डोलपा हुरीकोट के पास ही सरदी का मौसम बिताते हैं । लेकिन रौंगपा लोगों के लिए व्यापार का अंत नहीं हुआ है । चूंकि तिब्बत से अब कम मात्रा में नमक प्राप्त होता है, वे भारतीय नमक खरीदने के लिए यात्रा पर निकलते हैं ।

भारतीय नमक के लिए यात्रा

हुरीकोट के रौंगपा लोगों का मुखिया है ६१ वर्षीय नंदलाल थापा । उसके पूर्वज भारत से नेपाल आये थे । नंदलाल थापा के पास याकों की बजाय हैं भेड़ें, जिनके साथ सफर करना और भी कठिन है । हिंसक पशुओं से भेड़ों की रक्षा करना भी एक अहम् जिम्मेदारी होती है। अनेक दिनों की कठिन यात्रा के बाद रौंगपा-यात्रियों का दल भोट चोर नमक एक सीमांत कस्बे में पहुंचता है । यही है उनकी यात्रा का अंतिम लक्ष्य। यहां पर फिर वही खरीद-फरोख्त का सिलसिला शुरू होता है। चीजों की ही अदला-बदली होती है यहां, सिक्के का कोई काम नहीं । अपने व्यापार से संतुष्ट रौंगपा घर वापस लौटने की तैयारी में जुट जाते हैं । लेकिन अगले वर्ष फिर उन्हें यहीं आना है ।

प्रस्तुति : अर्चना सोशल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलगाड़ी से होड़ लेता था 'उड़न घोड़ा'

● राम गुप्ता

कहते हैं, बिल्हौर के अवस्थी-परिवार के पास एक ऐसा काला घोड़ा था, जो रेलगाड़ी से भी तेज गति से दौड़ता था ।

कानपुर देहात का महत्त्वपूर्ण व्यस्त व्यापारिक कस्बा बिल्हौर ऐतिहासिक राष्ट्रीय मार्ग के दोनों ओर बसा है । इस क्षेत्र में दो राष्ट्रभक्त जमींदार हुए हैं । एक अवस्थी-परिवार और दूसरे प्यारे मियां, जिनके पिता का नाम इतर हुसैन था । अवस्थी-परिवार में प्रसिद्ध क्रांतिकारी भुवनेश्वर अवस्थी हुए हैं ।

एक दिन अचानक ही मैं अवस्थी-परिवार की पुश्तैनी हवेली में जा पहुंचा । पुरानी एवं लखौरी ईटों की उस हवेली में मेहराबदार राजस्थानी दरवाजा है, जिसमें से होकर हाथी गुजरते थे । हवेली के दरवाजों एवं दालानों का निर्माण पूर्णतः राजस्थानी शैली में हुआ है । ऐसा लगा, अतीत में इस क्षेत्र का सांस्कृतिक संबंध अवश्य ही राजस्थान से रहा होगा ।

अवस्थी-परिवार की यह हवेली बिल्हौर नगर में है । हवेली की दीवारों पर लगे गोलियों के निशान यह बताते हैं कि यहां अंगरेजों के साथ कितना तीव्र संघर्ष हुआ होगा ।

कहते हैं कि अवस्थी-परिवार ने एक बार औरंगजेब को कर्ज दिया था । एक बार औरंगजेब बंगाल फतेह करने के पश्चात दिल्ली लौट रहा था तो सेना की रसद समाप्त हो गयी थी । इस समय रसद पूर्ति के लिए अवस्थी-परिवार ने कुछ धन दिया था, जिसे औरंगजेब ने दिल्ली पहुंचने पर लौटाना चाहा । पर उसे अवस्थी-परिवार ने लेने से इनकार कर दिया और कहा, 'आप तो हमारे मेहमान थे । हम मेहमान से धन नहीं लेते, धन देते हैं । इसी प्रकार एक और कहानी इस परिवार के संबंध में है । इस परिवार के पास एक काला घोड़ा था, जो दौड़ने में रेल को भी पीछे छोड़ देता था । जब भी उसकी दौड़ रेलगाड़ी से होती थी तो वह बिना थके ही उसे पीछे छोड़ देता था । दौड़ समाप्त होने पर ही वह दाना-पानी लेता था । अपनी तेज गति के कारण उसका नाम ही 'उड़न घोड़ा' पड़ चुका था ।

बिल्हौर में जितने भी खंडहरनुमा भवन एवं हवेलियां हैं, उनका अतीत घटनाओं से भरा हुआ है । बिल्हौर में अनेक शिवालय एवं प्राचीन मंदिर हैं । इनमें जो मूर्तियां हैं, वे पंद्रहवी-सोलहवीं सदी में निर्मित प्रतीत होती हैं । इनका कलात्मक सौंदर्य आज भी प्रभावित करता है । —९२, फजलगंज, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्ध पूर्णिमा (२५ मई) पर विशेष

आखिर बाबा बकराहानाथ कौन हैं ?

● ज्योतीन्द्र मिश्र

भगवान बुद्ध के जीवन में, संभवतः किसी यक्ष को दीक्षा देने का प्रसंग यक्ष वकुल को छोड़कर, अन्यत्र उल्लिखित नहीं है । अन्य प्रतापी, तेजस्वी महापुरुषों की तरह बुद्ध ने भी चरैवेति के दर्शन का अनुसरण किया, अववोधन किया तथा चर-अचर के साथ एकाकार होकर अपने तेजपुंज का श्रीवर्द्धन तो किया ही, जन-जीवन में व्याप्त अविद्या, अज्ञान एवं अशुद्धियों का विनाश करते हुए संपूर्ण सिद्धियों का मार्ग भी प्रशस्त किया ।

आत्मदान की प्रक्रिया है दीक्षा

बुद्ध धर्म और बुद्ध साहित्य में बुद्ध द्वारा दिये गये उपदेश एवं दीक्षा देने के पर्याप्त उल्लेख हैं । दीक्षा, एक तेजपुंज है जिससे साधक के मन में ज्ञान-संचार एवं आत्मदान की प्रक्रिया प्रारंभ होती है । ज्ञान, शक्ति और पुण्य का दान करना ही दीक्षा देना तथा संपूर्ण सिद्धियों का मार्ग प्रशस्त कर लेना ही दीक्षा लेना है ।

दीक्षा के तीन भेद सर्वज्ञात हैं : शाक्ती, शांभवी, और मांत्री । कुंडलिनी जाग्रत कर उसे ब्रह्म-नाड़ी में प्रवेश करा साधक को परम शिव में एकाकार कर देने की प्रक्रिया को शाक्ती दीक्षा कहते हैं । दृष्टि अथवा स्पर्श से साधक को स्वयंवत कर देना शांभवी दीक्षा एवं मंत्रोपदेश द्वारा दिये गये ज्ञान को मांत्री दीक्षा कही गयी है । बुद्धदेव ने प्रायः मांत्री दीक्षा ही दी है ।

यक्ष बुद्धिजीवी थे

आदिकाल में, देव, दनुज, नर वानर, यक्ष किन्नर और नाग, ये सभी जातियां सभ्यता और संस्कृति के चरम उत्कर्ष पर थीं । अज्ञान, अंधविश्वास और कुत्सित प्रचार ने इन्हें हेय बना दिया । केवल देव जाति को वरीयता प्रदान की गयी । यक्ष भी सदाचारी, संत और उत्कृष्ट हुआ करते थे । राम और कृष्ण की तरह सदाचारी यक्ष भी पूजित थे । ज्ञान-विज्ञान की गोपनीयता, अन्वेषणादि इनका आचरण था तथा जिज्ञासु जासूस की भूमिका का भी निर्वहन कर उच्चकोटि के बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे ।

उपनिषद में यक्ष को साक्षात् ब्रह्म का स्वरूप माना गया है । अग्नि, वायु और इंद्र के शक्ति परीक्षण में यक्ष की तेजस्विता का उल्लेख है । यक्ष, यक्षिणियों को प्रसन्न करने हेतु मंत्र-तंत्र साधना का प्रयोग आज भी प्रचलित है । इन्हें अपने को छिपाकर रखने का रहस्य मालूम है किंतु साधक के आवाहन पर, प्रसन्न होकर ऋद्धि-सिद्धियां भी प्रदान करते हैं । यक्षिणी कल्प में २४ यक्षिणियों का उल्लेख है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभवतः 'नारी पूज्यते' के कारण यक्षिणियां अधिक पूजित हैं किंतु धूम्र यक्ष, काल यक्ष, वट यक्ष, विशाल यक्ष और वकुल यक्ष-जैसे पुरुष यक्ष की पूजा आज भी प्रचलित है। देवतुल्य, परम सामर्थ्यवान यक्षों का उल्लेख भी प्राचीन साहित्य में मिलता है।

महाभारत कथा का यक्ष

महाभारत कथा में यक्ष-प्रश्न सर्वज्ञात है। प्यासे पांडव पानी पीने के लिए ज्योंही सरोवर के समीप जाते हैं, वकुल यक्ष उन्हें जल पीने से मना करता है और कहता है कि जो उसके प्रश्न का सही उत्तर देगा वही जल पी सकता है अन्यथा जल ग्रहण करते ही मूर्च्छित हो जाएगा। युधिष्ठिर को छोड़ सभी भाई जल पीते ही मूर्च्छित हो गये थे। यक्ष ने प्रश्न दुहराया—

का वार्ता किमाश्चर्यं, कःपन्था कश्चमोदते
इति मे चतुरो प्रश्नान पूरयित्वा जलं पिव।

युधिष्ठिर-जैसे धर्मप्राण, नीतिज्ञ और मर्मज्ञ विद्वान से सशर्त्त प्रश्न करना यक्ष के ज्ञानी होने का द्योतक है क्योंकि उत्तर देनेवाले से अधिक ज्ञानी होना प्रश्नकर्त्ता के लिए नितांत आवश्यक होता है। जटिल प्रश्न का उत्तर भी जटिल हो सकता है, युधिष्ठिर ने जो उत्तर दिया उससे विदित होता है कि प्रश्नकर्त्ता यक्ष वकुल ही था...

दिवस्याष्टमे भागे शाकं पचति यो गृहे
अऋणीचा प्रवासी च स वारिचर ! मोदते

युधिष्ठिर ने प्रश्नकर्त्ता यक्ष को वारिचर कहा है। वकुल (बगूला) को वारिचर भी कहते हैं। इस प्रकार यक्ष वकुल के अस्तित्व का बोध होता है।

महाकवि कालिदास के यक्ष

गीति काव्य मेघदूत में यक्ष को ही केंद्र बिंदु बनाया गया है। यक्ष को पूर्वमेघ के प्रथम श्लोक में ही 'स्वाधिकाराप्रमतः' विशेषण से महिमामंडित किया गया है। प्राचीन कोशकार

यक्ष भी सदाचारी, संत और उत्कृष्ट हुआ करते थे। राम और कृष्ण की तरह सदाचारी यक्ष भी पूजित थे। ज्ञान-विज्ञान की गोपनीयता, अन्वेषणादि इनका आचरण था तथा जिज्ञासु जासूस की भूमिका का भी निर्वहन कर उच्चकोटि के बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याडि के अनुसार यक्ष जाति में कोष रक्षा करनेवाले यक्ष को गुह्यक कहा है । मेघदूत का यक्ष भी कुबेर का कोषरक्षक था तथा उसे देवतुल्य अधिकार प्राप्त थे । महाकवि कालिदास ने सातवें श्लोक में **गन्तव्याते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्** में अलका नगरी यक्षों की ही नहीं अपितु यक्षेश्वरों की बस्ती बतलायी है । उत्तरमेघ के पंद्रह से अठारह तक के श्लोक में यक्ष को उच्चसत्तावाले अधिकारी तथा वैभवपूर्ण स्वामी के रूप में चित्रण किया है । मेघदूत का ही शापभोगी विरही यक्ष तो कामार्त्त प्रेमी की भूमिका का अनूठा उदाहरण है । यक्षों को शब्द सिद्धांत के आधार पर अंतरिक्ष में ओत-प्रोत शब्दों को स्वाति पट्टिका पर एकत्र करने तथा प्रेषित करने का ज्ञान था जिसके फलस्वरूप संचार व्यवस्था विशेषज्ञ के रूप में इनसे कार्य लिया जाता था ।

लोकमत में यक्ष

लोकमत में यक्ष को देवतुल्य माना गया है । लोक भाषा में यक्ष को जच्छ, जख, जखराज बाबा और यक्ष के वास-स्थान को जखराज थान कहा जाता है तथा हिंदु बहुल जनपदों में आज भी जखराज बाबा की पूजा काफी प्रचलित है । कहीं-कहीं 'बरहम बाबा' भी कहा जाता है ।

बाबा बकराहा नाथ

सातवीं शताब्दी के मध्य में सुविख्यात चीनी यात्री ह्वेन-त्सांग ने (मुंगेर) मोदगल्यगिरि के प्रक्षेत्र में प्रवेश किया तथा हिरण्य पर्वत का अवलोकन, अववोधन किया । इसी हिरण्य पर्वत की महादेवा पहाड़ी पर बुद्ध ने यक्ष-वकुल को दीक्षा दी थी । इतिहासकार कर्नल वाडेल ने स्थल विशेष से अपनी पूर्ण सहमति व्यक्त नहीं की किंतु जनरल कनिंघम ने इसकी जोरदार पुष्टि की है । इस तथ्य का हवाला मुंगेर जिला गजेटियर (श्री पी. सी. राय चौधरी पृष्ठ ४६३) में मिलता है । महादेवा हिल के समीप ही तप्त-जल प्रपात है जो भीम बांध के नाम से सर्वश्रुत है । हिंदुओं की अवधारणा है कि महादेवा पहाड़ी पर भगवान शिव प्रकट हुए थे तथा तप्त जल प्रपात का तातल पानी शक्ति स्वरूपा 'माई' या 'काली' की करुणा का प्रतीक है । यथार्थतः खनिज युक्त गरम जल अल्सर एवं चर्मरोग की अचूक औषधि है । जल की रेडियोधर्मिता के कारण इसका सद्यः लाभ मिलता है । ह्वेन-त्सांग ने उल्लेख किया है कि गरम जल के झरनों का वाष्प इतना घनीभूत था कि सूर्य की रोशनी भी दिखायी नहीं देती थी । इसी हिरण्य-पर्वत के महादेवा हिल पर भगवान बुद्ध ने वर्षावास में यक्ष वकुल को दीक्षा दी तथा दीक्षा के पश्चात यक्ष ने जिस स्थान पर लोक कल्याणार्थ आसन ग्रहण किया उसी स्थल को बाबा बकराहा नाथ के रूप में पूजा जाता है ।

दीक्षा की लोक कथा

भगवान बुद्ध प्रायः वर्षावास किया करते थे । उन्हें प्रकृति के अनुपम औदात्य का यह परिदृश्य आनंददायक प्रतीत हुआ और अपने शिष्यों के साथ इसी महदेवा हिल पर चर-अचर के बीच एकाकार हो गये । एक दिन किसी शिष्य ने बुद्ध का ध्यान उनके शरीर में उग आये फोड़े की ओर आकृष्ट किया किंतु बुद्ध ने उपचार की मनाही की । उसी रात बुद्ध ने अपने आसपास एक तेजस्वी पुरुष को श्वेत स्निग्ध वस्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारण किये सामने उपस्थित पाया । यक्ष वकुल ने अपना परिचय भी दिया और कायिक कष्ट के निवारणार्थ तप्त जल में स्नान-मज्जन करने का सत्परामर्श भी दिया, फिर तिरोहित हो गया । दूसरे दिन बुद्ध ने यक्ष -मिलन की कथा शिष्यों को सुनायी । तीन दिनों तक तातलपानी के सेवन से बुद्ध ततोधिक तरोताजा महसूस करने लगे । वर्षावास के पूरे सौ दिनों के पश्चात जब बुद्ध चलने को हुए तो यक्ष वकुल पुनः उपस्थित हुआ और शिष्टाचार निर्वाह के पश्चात पूछा कि कायिक कष्ट भी तो दुःख का तत्त्व है, आपने इस दुःख से मुक्ति पाने की मनाही क्यों की ? बुद्ध ने उत्तर दिया—

यो भिक्खवे दुक्खं पस्सति, दुक्ख समुदयं पि सौ पस्सति
दुक्ख निरोधं पि पस्सति, दुक्ख निरोधगामि निपटि पदं पि पस्सति

दुःख के तत्त्व को स्वीकार करना दुःखवाद नहीं है किंतु इसे अंतिम तत्त्व मानना ही दुःखवाद है ।

दुःख के तत्त्व को स्वीकार करना दुःखवाद नहीं है किंतु इसे अंतिम तत्त्व मानना ही दुःखवाद है ।

बुद्ध के उत्तर से यक्ष वकुल को अतिसुख मिला । यक्ष ने सूचित किया कि वह पूरे वर्षावास में उपदेश सुनता रहा है अतः दीक्षा दी जाए । बुद्ध ने यक्ष वकुल को लोक-कल्याण के लिए दीक्षा दी, उसी स्थल पर आसन ग्रहण करने को कहा और शुभाशीष देकर यात्रा-पथ पर आगे बढ़ गये । आज भी बाबा बकराहा नाथ की पूजा अर्भ्यना व्यर्थ नहीं जाती । मुंगेर एवं नव सृजित जमुई जिला के जनपद, सुदूर देहात में यक्ष की पूजा की जाती है किंतु जखराज थान में किसी भी प्रकार से बलि नहीं दी जाती । सामान्य तौर पर जखराज थान किसी विशाल वृक्ष के नीचे होता है तथा फसल-रक्षक देवता माना जाता है ।

— राजवंशी नगर
रोड नं.-१ (अंत)
पटना-८०००२३

रोने से उम्र बढ़ती है

आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान में हंसने के साथ रोना भी लाभकारी बताया गया है ।

अमरीका के मनोचिकित्सक, डॉ. विलियम ब्रियान ने अपने अनुसंधानों के बाद निष्कर्ष निकाले हैं कि रोने से व्यक्ति की उम्र बढ़ती है । उनके विचार से अमरीका में दीर्घजीवन जीनेवाली महिलाओं का यही कारण है । ऐसी महिलाएं दुखांत फिल्में और नाटक अधिकतर देखती हैं, जबकि पुरुषों को दुखांत चीजें पसंद नहीं हैं ।

यह भी निष्कर्ष निकले हैं कि रोनेवाले व्यक्तियों को रक्तचाप तथा हृदय रोग कम होते हैं, क्योंकि रोने से आंखों की भी सफाई होती है तथा शरीर की अन्य विषाक्त वस्तुएं भी निकल जाती हैं । जो व्यक्ति कम रोते हैं या बिलकुल ही नहीं रोते, उनकी आंखों में भी विकार उत्पन्न होने का पूरा-पूरा डर रहता है ।

—ऋषि मोहन श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● डॉ. सतीश मलिक

सर घूमता है

नृत्य गोपाल शर्मा नरेन्द्र, मथुरा : २१ साल का एम.एस-सी. गणित का छात्र हूं, साथ ही लेखक, कवि व मासिक पत्रिका में कार्य भी करता हूं। समस्या यह है कि मैं जब एकदम शांतचित्त होता हूं, तब स्वयं महसूस करता हूं और दूसरा व्यक्ति गौर से देखे तो उसे पता चल जाएगा कि मेरा सिर धीरे-धीरे घूमता रहता है, चक्कर आते हैं। ठीक उसी तरह जिस तरह हृदय की धड़कन (स्पंदन) होती है। फर्क इतना है कि धड़कनें एक-एक कर गतिमान रहती हैं, जबकि सर लगातार घूमता-सा रहता है। कभी-कभी सर के अंदरूनी हिस्से (मस्तिष्क) में तनाव का झटका भी ठीक उसी प्रकार लगता है जिस प्रकार अनचाहे जम्हाई आये या शरीर में अंगड़ाई आये। इसके अलावा मस्तिष्क में सुरसुराहट भी चलती है। मुझे डर है कि मेरा सर बेवजह चौबीसों घंटे हिलता न रहे। क्योंकि मैंने ऐसे आदमी देखे हैं, जिनका सिर हर समय हिलता रहता है। मैं किस विशेषज्ञ से संपर्क करूं। कृपया मार्गदर्शन करें।

सर चकराना, घूमना, यूं तो एक आम शिकायत है, जिससे हर कोई वाकिफ है। परंतु यह चकराना, घूमना स्वयं को तो महसूस होता है, दूसरे लोगों को नहीं दिखता, क्योंकि वास्तव में यह अनुभव उसी मनुष्य को होता है। इसका कारण तनाव या कान आदि की बीमारी हो सकती है। यदि आपका सिर वास्तव में हिलता रहता है, जैसा कि आपने लिखा है तो इसका कारण हमारे दिमाग के उन भागों से है जो हमारे उठने-बैठने के तरीकों व संतुलन को बनाये रखते हैं। यदि उनमें रोग हो जाए तो सर अथवा शरीर के अन्य भाग में 'कंपन' या हिलना प्रत्यक्ष रूप में आ सकता है। ऐसे मनुष्य को नशा कभी नहीं करना चाहिए। स्नायु रोग विशेषज्ञ को दिखाना भी आवश्यक है। हो सकता है जांच के पश्चात ही कुछ पता चल पाएगा। घबरायें नहीं। कई बार यह बढ़ता नहीं है। आपकी क्षमताएं कवि, लेखक व विज्ञान के विद्यार्थी के रूप में सामने दिख रही हैं, इसलिए आपमें ऐसा डर निरर्थक है। फिर भी जांच कराकर सही स्थिति जान लें। सुरसुराहट व झटका आदि का कारण भी स्नायु रोग विशेषज्ञ बता पाएंगे। स्नायु रोग विशेषज्ञों की सेवाएं बड़े अस्पतालों व मेडिकल कॉलेज के अस्पतालों में उपलब्ध हैं।

ललाट पर कोई वस्तु है?

म.कु., मद्रास : मैं २१ वर्ष का युवक हूं, चार माह पूर्व वायुसेना में भरती हुआ और अभी मद्रास में प्रशिक्षण ले रहा हूं। १२ वर्ष की आयु से गलत संगत में पड़कर हस्तमैथुन करने लगा। अब बहुत देर बाद इसकी खामियों का पता चला है, लेकिन अभी भी माह में कम-से-कम तीन बार तो हो ही जाता है। इससे मुझे अपने-आप में अजीब-सा लगता है। कुछ पढ़ता हूं तो याद नहीं रहता, दिमाग एकदम खाली है। प्रशिक्षक जो बोलते हैं, उसके अनुसार नहीं कर पाता। बोलते समय अपनी ही आवाज विचित्र लगती है। एकांत ज्यादा पसंद है। मुझे शोर-शराबा पसंद नहीं। यदि कोई बोलता है तो कभी-कभी उसे मैं देख व सुन तो रहा होता हूं, परंतु उसे समझ नहीं पाता, क्योंकि कुछ दूसरी बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही सोचता रहता हूं । पढ़ने में मन नहीं लगता । सिर में भी हलका-हलका दर्द रहता है । मुझे लगता है जैसे कोई चकत्तीनुमा हलकी वस्तु ललाट के बीच में रखी है ।

क्या यह वहम ही है अथवा हस्तमैथुन के कारण सब कुछ हो गया है । शारीरिक रूप से कोई कष्ट नहीं ।

आप एक राष्ट्रीय स्तर पर कठिन प्रतियोगिता द्वारा भरती हुए हैं । इसमें मेडिकल व मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में भी आप उत्तीर्ण हुए हैं । जब तक आपको कुछ भी 'खामियों' का ज्ञान नहीं था, तब तक आप भले-चंगे थे, परीक्षा व प्रतियोगिता आदि सभी दे रहे थे । अब आपको यह शिकायतें हो गयी हैं, जिसके कारण आप हस्तमैथुन की आदत को दोषी ठहरा रहे हैं । यह बात सही है कि आपको अपने ऊपर संयम तो बरतना ही होगा । आपकी सभी मानसिक समस्याएं इसी कारण से हैं, यह सब वैज्ञानिक तथ्य से कहीं दूर है । आप वास्तव में इस समय तनाव व अवसाद से पीड़ित हैं । आपको मनोचिकित्सक के इलाज की आवश्यकता है । आप अपने इर्द-गिर्द के वातावरण का लाभ उठा सामाजिक बनें व लोगों से मिले-जुलें, फिजूल अपने अंदर ग्रंथि न पालें । खेल आदि में भाग लें तो यह आपके लिए अच्छा है । हस्तमैथुन से न तो मस्तिष्क कमजोर होता है न शरीर । हां जब हम अपराध व शरम की भावनाएं जोड़कर इस विचार में पड़ जाते हैं, तब हम रोगों के शिकार हो जाते हैं ।

आपके हित में है कि आप अपने अकादमी के चिकित्सक से मदद लेने के बजाय कहीं व्यक्तिगत ही इलाज कराएं जिससे आपके कैरियर के रेकॉर्ड में इस बात को दूर रखा जा सके ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें । —संपादक

यह स्राव कैसे ?

एक भाई : २१ वर्ष का दुर्बल युवक एक रोग से ग्रस्त हूं । पेशाब के वक्त एवं स्वप्न दोष के कारण वीर्य स्खलन हो जाता है । संयम, शुद्ध आचरण, दवा सभी कर लिया । परंतु बीमारी छूटती नहीं । क्या नसबंदी कराने से छुटकारा मिल जाएगा ? क्या फिर कुछ वर्ष पश्चात पिता बनने हेतु नस खुलवा सकता हूं ।

हमारे पिछले अंकों में आपको अपने शक का समाधान मिल जाएगा । स्वप्न दोष होना एक पुरुष होने की निशानी है । जो यह कहते हैं कि उन्हें स्वप्न दोष नहीं होता, उनके पुरुष होने पर शक होना चाहिए । आपको कदापि भी नसबंदी नहीं करानी चाहिए । यदि आपके मन में इस बारे में कुछ भी शक आदि है तो मनोवैज्ञानिक से मिल उसे दूर करें । कई बार 'सैक्स विशेषज्ञ' जो विज्ञापनों से अंधाधुंध प्रचार करते हैं वह वास्तव में आपके मन में डर पैदा कर, गुमराह करते हैं । फिर इलाज के बहाने पैसे ऐंठते हैं । इनसे दूर रहना चाहिए ।

वैवाहिक जीवन कैसा

क.ख.ग., आगरा : १६ वर्ष की इंटर की छात्रा हूं । जब ८ वर्ष की थी, तब एक ७० वर्षीय पिता समान पुरुष ने बहला-फुसलाकर ४ बार बलात्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया । अब मैं विवाह से बहुत डरती हूं । मैंने पढ़ा है कि यदि प्रथम मिलन में स्राव न हुआ तो विवाहित जीवन नरक बन जाता है । क्या मुझे प्रथम सहवास में रक्तस्राव होगा कि नहीं । क्या मैं पति को शारीरिक सुख दे पाऊंगी । कृपया शीघ्र उत्तर दें, क्योंकि प्रणय बंधन में बंधने जा रही हूं ।

भारत में शादी १८ वर्ष के बाद ही वैधानिक है । इसलिए अपने मां-बाप को आप सही जानकारी दें । आपके साथ बलात्कार हुआ, इसका आपके मस्तिष्क पर जो बुरा असर पड़ा, उससे आप अकेले ही चुपचाप जूझ रही हैं । यह केवल इसी बात की पुष्टि करता है कि वास्तव में आप एक बहादुर लड़की हैं । यह पहले जमाने में ऐसा सोचा जाता था कि रक्तस्राव होना कौमार्य का लक्षण है । अब विज्ञान ने इसे गलत सिद्ध कर दिया है । आप विवाह के लिए शारीरिक रूप से उतनी ही योग्य हैं, जितना और कोई ।

अकेली हूं

रानी, : आयु १७ वर्ष, रंग-रूप साधारण । बचपन में मां का देहांत हो गया । सौतेली मां व उसकी बहन मुझे १२ वर्ष की आयु में चारित्रिक दोष लगाकर पीटा करती थी । पापा उन लोगों के विपक्ष में नहीं बोलते । ११ साल की आयु में एक लड़के से, जो मुझसे दो वर्ष बड़ा था—प्रेम हो गया । प्रेम देखा-देखी तक ही सीमित रहा । कुछ महीनों के लिए बाहर गयी तो उसके दूसरे प्रेम के बारे में पता चला । प्रेम मैंने ऐसे किया था कि उसका चेहरा तक याद नहीं हुआ । क्वार्टर बदलने के पश्चात वहां आना-जाना बंद हो गया । बिछड़े कई वर्ष हो गये, परंतु फिर भी उसे भूल न पायी । उसके बिना अपनी कल्पना नहीं कर पाती । आसपास कोई दोस्त भी नहीं, जिससे दिल की बात कर सकूं । मुख्य रूप से यह समस्याएं हैं—क. अब समस्या है कि पढ़ायी-लिखायी में मन नहीं लगता । चिड़चिड़ापन व गुस्सा रहता है । कोई प्यार नहीं करता । यहां तक कि ख. बाल कई दिन तक नहीं झाड़ती । सफेद दाग व प्रदर जैसा-रोग भी है । मासिक धर्म अनियमित है । ग. लगता है जिसे भी मैं चाहती हूं वह मुझसे दूर चला जाता है । दिनभर कमरे में बंद रहती हूं । आत्महत्या के विचार मन में आते हैं । घ. लगता है वह कभी न कभी अवश्य आएगा । किसी भी डॉक्टर के पास मैं नहीं जा सकती, क्योंकि मुझे डर है वह पापा को ये बातें बता देगा ।

वास्तव में आपको घर में प्रेम न मिलने के कारण ऐसी स्थिति से गुजरना पड़ रहा है । जिसे आप प्रेमी कहती हैं उसका वास्तविक जीवन में कोई महत्त्व नहीं, हां, यह आपका सहारा अवश्य है । क्योंकि यह केवल देखादेखी का उस आयु में आकर्षण मात्र ही था, वह भी एक तरफा । आपको अपने कमरे से बाहर निकलकर सहेलियों की आवश्यकता है, जिनसे आप हंस-बोल सकें तथा दुःख-दर्द भी बांटें । आपकी बाकी समस्याएं भी अवसाद व अकेलेपन से जुड़ी हैं । अवसाद को हटाने की दवा भी हैं, परंतु केवल उनसे काम नहीं चलेगा । आप पिता से अब डरना छोड़ उनको अपने पक्ष में करने की कोशिश करें । आप अपनी मनोस्थिति से बाहर तभी निकल सकती हैं, जब आप घर की चारदीवारी से भी बाहर आयें ।

☐ माचिस की २०० सलाइयों की नोक पर लगे मसाले जितना फासफोरस एक मनुष्य के शरीर में होता है ।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कागज के टुकड़े का चमत्कार

● इंदु शेखर त्रिपाठी

वह पेशेवर मुक्केबाज नहीं था और मुकाबले में दौर पर दौर पर हारता चला जा रहा था। सभी को विश्वास था कि वह पराजित हो जाएगा। लेकिन नहीं, अंतिम क्षणों में विजय ने उसे ही वरण किया। एक रोमांचक प्रसंग

जब से मुक्केबाजी प्रारंभ हुई है और आज तक जितने भी हैवीवेट मुक्केबाज विजेता हुए हैं, उनमें से कुछ को छोड़कर बाकी सभी मुक्केबाज अश्वेत हुए हैं। इस प्रकार अश्वेतों में मुक्केबाजी रग-रग में बस गयी है। प्रारंभिक दौर में मुक्केबाजी नंगे हाथों से हुआ करती थी अर्थात दस्तानों का उपयोग नहीं होता था।

प्रारंभ में अश्वेत मुक्केबाज नहीं थे। गोरे लोग ही बाक्सिंग किया करते थे। यह सिलसिला उस समय समाप्त हुआ, जब ब्रिटेन से एक हब्शी टाय मोलीनिक्स अमरीका के वर्जीनिया क्षेत्र में आया। वह अपने को ब्लैक टाय कहता था। ब्लैक टाय एक धनी जमींदार एलारनान मोलीनिक्स के कपास फार्म में गुलाम की हैसियत से काम करता था और उसके शारीरिक गठन से प्रभावित होकर टाय के स्वामी एलारनान ने उसे अपना अंगरक्षक बना लिया था। बाक्सिंग में विजेता बनने की ब्लैक टाय की घटना बहुत ही रोचक है।

धनी जमींदार एलारनान का अपने पड़ोसी कपास के जमींदार एडवर्ड पीटन से किसी बात पर झगड़ा हो गया। इस झगड़े को हल करने के लिए उन दोनों ने एक नया तरीका अपनाया जो निर्णयों को सुलझाने के अन्य तरीकों से बिलकुल ही भिन्न था। एडवर्ड पीटन ने एलारनान से कहा कि 'इस झगड़े का निर्णय रिंग में मेरे अंगरक्षक एवे तथा तुम्हारे ब्लैक टाय के मध्य मुकाबले से होगा।' एलारनान ने भावावेश में इस चुनौती को स्वीकार कर लिया किंतु बाद में वह स्वयं अपने निर्णय पर पछताया, क्योंकि पीटन का अंगरक्षक केरोलिना एवे एक शक्तिशाली हब्शी था तथा वर्जीनिया क्षेत्र का विजेता था, जबकि उसके अंगरक्षक ने कभी रिंग की सूरत भी नहीं देखी थी। इससे एलारनान भयभीत तथा निराश हो गया, फिर भी उसने हिम्मत करके टाय को नंगे हाथों से मुक्केबाजी के गुर सिखाने के लिए मैसन नामक व्यक्ति को नियुक्त किया। एलारनान के भय का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण यह भी था कि यदि पीटन के अंगरक्षक से ब्लैक टाय हार गया तो कपास उद्योग के क्षेत्र में हंसाई होती और उसकी बनी बनायी प्रतिष्ठा में भी कमी आ जाती ।

ब्लैक टाय लंबा, तगड़ा और साहसी था लेकिन मुक्केबाजी में पूर्णतया अनभिज्ञ था । जिस-जिससे उसने अभ्यासी मुकाबले किये, उसमें उसे हार का मुंह देखना पड़ा । इससे मैसन भी निराश हो गया ।

इसी बीच मुकाबले की तारीख निश्चित हो गयी और यह समाचार पूरे क्षेत्र में फैल गया । निश्चित दिन भारी संख्या में दर्शक रिंग के चारों ओर जमा हो गये ।

केरोलिना एवे तथा ब्लैक टाय के मध्य मुकाबला प्रारंभ हुआ । पहले चारों राउंड में प्रत्येक बार ब्लैक टाय को प्रतिद्वंद्वी एवे की मार से धूल चाटनी पड़ी, लेकिन ब्लैक टाय ने साहस बनाये रखा । जमींदार एलारनान बहुत परेशान नजर आ रहा था । मैसन तथा उसके सहयोगी मुक्केबाज ने प्रत्येक राउंड के बाद अवकाश में हर संभव प्रयत्न किया जिससे टाय कुछ कर सके लेकिन वह भी जान गया कि केवल साहस ही एक कारण है जिसने ब्लैक टाय को अब तक हारने से बचा रखा है ।

मैसन को पता था कि पांचवें एवं अंतिम राउंड में टाय की हार निश्चित है । तब पांचवें राउंड में उसने एक योजना बनायी और जेब से एक कागज का टुकड़ा निकालकर लिखना प्रारंभ किया । इसी बीच एवे ने टाय को एक बार फिर धरती दिखा दी । पांचवें राउंड के अंत में मैसन जमींदार एलारनान को एक कोने में ले गया और कागज को देते हुए कहा, 'इस पर हस्ताक्षर कर दीजिए । यही एकमात्र आपके भाग्य का अंतिम अवसर है ।' एलारनान ने कागज के टुकड़े को पढ़कर मैसन को जवाब दिया, 'मैं यह नहीं कर सकता हूं ।' इस पर मैसन ने टका-सा जवाब दिया, 'तब तो आपको परिणाम भुगतना पड़ेगा ।' फिर एलारनान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षणभर के लिए हिचकिचाया किंतु बाद में उसने हस्ताक्षर कर दिये ।

दो राउंड के बीच का समय समाप्त होनेवाला था । टाइमकीपर दोनों को रिंग में वापस आने के लिए कह रहा था । तभी मैसन ने टाय को कागज दिखाया और पढ़ने पर टाय संदेश को समझ गया । उसके चेहरे के भाव इसे स्पष्ट कर रहे थे । फिर भी मैसन ने विश्वास दिलाते हुए कहा, 'यह सत्य है । अब रिंग में जाओ और उसका मुकाबला करो ।' इसके बाद के क्षण कुछ उत्तेजनात्मक थे । टाय अपने प्रतिद्वंद्वी पर हावी हो गया । इससे पहले कि एवे चमत्कारी परिवर्तन को समझे, टाय के मुक्कों के लगातार प्रहार से वर्जीनिया के विजेता का हुलिया ही बिगड़ गया । एकत्रित जन आश्चर्य में पड़ गये । उन्हें एवे पर क्रोध भी आ रहा था, क्योंकि सभी को आशा थी कि एवे ही मुकाबला जीतेगा ।

संघर्ष खत्म हुआ, लेकिन परिणाम आशा के अनुरूप नहीं निकला । ब्लैक टाय ने एवे के शरीर एवं चेहरे पर वीभत्स रूप से लगातार मुक्कों की झड़ी लगा दी थी । कुछ मिनटों के बाद वर्जीनिया का विजेता रिंग में झूल गया । इस प्रकार मुकाबले का परिणाम आशा के विपरीत निकला और ब्लैक टाय विजेता बन गया ।

इस विपरीत परिणाम का रहस्य क्या था ? इसका एकमात्र कारण कागज के टुकड़े पर लिखे गये शब्द थे जिसने एलारनान मोलीनिक्स की लाज रख ली थी । कागज के टुकड़े पर यह विजयी शब्द लिखे थे—

मैं एतद्द्वारा यह घोषणा करता हूं कि यदि मेरा अंगरक्षक ब्लैक टाय केरोलिना एवे को हरा देता है तो वह गुलामी से स्वतंत्र हो जाएगा ।

हस्ताक्षर
ए. मोलीनिक्स

इस प्रकार एलारनान ने अपना विश्वासपात्र अंगरक्षक खो दिया तथा मुक्केबाजी के क्षेत्र में अश्वेतों का प्रवेश विजेता के रूप में हुआ । स्वतंत्र होने के बाद ब्लैक टाय ने अपने भूतपूर्व स्वामी का नाम मोलीनिक्स अपना लिया और टाय मोलीनिक्स मुक्केबाजी के क्षेत्र में प्रवेश कर गया ।

—स्नातकोत्तर शिक्षक (भूगोल)
केंद्रीय विद्यालय (आर्मी)
बैरकपुर-७४३१०१

खसरे की रोकथाम के लिए विटामिन 'ए'

केपटाउन के चाइल्ड हैल्थ यूनिट में ग्रेगरी हस्से और मेक्सकूमलीन ने अपनी खोजबीन के बाद पता लगाया है कि विटामिन 'ए' की मात्रा द्वारा अत्यंत उग्र खसरे को नियंत्रित किया जा सकता है । उन्होंने खसरे से ग्रस्त १८९ शिशुओं पर प्रयोग किये हैं । इन सभी बच्चों को विटामिन 'ए' की खुराकें दीं गयीं जिससे वे औसतन छह दिनों में ठीक हो गये, जबकि वे बच्चे, जिन्हें विटामिन 'ए' नहीं दिया गया उन्हें स्वस्थ होने में बारह दिन लगे ।

—ऋषि मोहन श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन में हिंदी का सम्मान

● स्वर्गीय माखन लाल चतुर्वेदी

पौने दो सौ वर्षों से अधिक काल तक ब्रिटिश शासन में रहकर भी भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी को न तो इंगलैंड में स्थान मिला न ब्रिटिश उपनिवेशों में । अपने देश में भी वह अभी तक राष्ट्रभाषा स्वीकृत नहीं की जा सकी । हिंदी ही क्यों, अन्य भारतीय भाषाएं भी भारतीय शिक्षण संस्थाओं में सेकेंड लैंगुएज (गौण भाषा) की तरह ही पढ़ाई जाती हैं । जहां ब्रिटेन के माथे पर भारतीय संस्कृति विनाश का यह कलंक अमिट रहेगा, वहीं चीन जापानी शस्त्रों द्वारा की जा रही अपनी मातृभूमि के समस्त ऐश्वर्य एवं कला साधनों को विनाश लीला से लगातार ६-७ वर्षों से लोहा लेते हुए भी यूनान प्रांत के कुमिङ् शहर में स्थापित प्राच्य भाषाओं के कॉलेज में हिंदी को स्थान प्रदान करने का महान यश प्राप्त करने जा रहा है । भारत की चतुरसीमा से परे राष्ट्रभाषा की सगौरव स्थापना की यह व्यवस्था सर्वप्रथम चीन ने ही की । हम चीन के विद्वानों और उत्साही प्रकाशकों के आभारी हैं कि उन्होंने इस युग में भी एक लाख से अधिक चीनी पुस्तकों की भेंट शांति-निकेतन को देकर चीनी संस्कृति के मेल का हाथ बढ़ाया है ।

कुमिङ् के प्राच्यभाषा कॉलेज में हिंदी भाषा भारतीय तरुण श्रीयुत कृष्णकिंकर सिंह हिंदी पढ़ाने जा रहे हैं । हिंदी भाषी तरुणाई श्रीयुत कृष्णकिंकर सिंह के इस सौभाग्य पर ईर्ष्या-मिश्रित गौरव अनुभव करेगी । हम चाहते हैं श्रीयुत कृष्णकिंकर सिंह अपने पद के गौरव के सर्वथा उपयुक्त साबित हों ।

इस दिशा में हिंदी के ग्रंथ प्रणेता तथा प्रकाशकों का भी एक महान कर्त्तव्य है । हिंदी के श्रेष्ठ ग्रंथ चीन की इस विख्यात संस्था को प्रदान कर चीन के ऋण से उन्हें उऋण होना है

उक्त संस्था के ग्रंथागार को भेंट करने के लिए नागरी प्रचारिणी सभा, सरस्वती प्रेम, सस्ता साहित्य मंडल, पुस्तक भंडार, ग्रंथमाला, कार्यालय साहित्य सदन, आदि संस्थाओं तथा श्रीयुत श्यामसुंदर दासजी, कविवर मैथिलीशरणजी गुप्त, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, कवियित्री महादेवी वर्मा, पं. हजारी प्रसाद जी द्विवेदी आदि लब्ध प्रतिष्ठ मनीषियों ने अपने ग्रंथ प्रदान किये हैं । हिंदी संसार द्वारा इस प्रयत्न को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

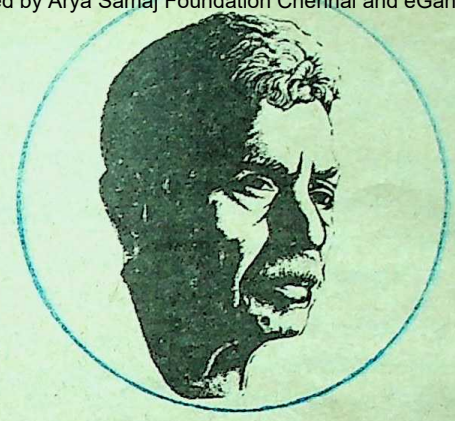

स्वर्गीय माखन लाल चतुर्वेदी ने यह लेख आज से लगभग ४६ वर्ष पूर्व सन १९३८ में लिखा था । इसमें उन्होंने भारत-चीन संबंधों एवं चीन में हिंदी प्रचार की चर्चा की है ।

उचित समादर तथा उदार अनुकरण मिलना आवश्यक है । जो विद्वान या प्रकाशन संस्थाएं अपनी कृतियां भेंट करना चाहें वे ३० जनवरी से पहले उन्हें इस पते पर भेजने की कृपा करें :— प्रो. तान युग शान चीन भवन पो. शांति निकेतन : बंगाल : रेल स्टेशन बोलपुर बंगाल ।

कृष्णकिंकरजी से निवेदन है कि उनका चीन जाना भारतीय राष्ट्र भाषा का एशिया की ओर संस्कृति लेकर जाने का पहला कदम है । चीन के इतिहास में जीवित सामंतों, संतों और शक्तिशालियों से उत्पन्न प्राण वायु से उन्हें भारतीय के नाते प्रेरित और ज्ञान-गर्भित होने का अवसर मिलेगा और वे अपने उस ज्ञान को अपनी प्रतिभा के पंछी के पंखों पर बिठाकर अपनी मातृभूमि की ओर भेज सकेंगे । चीन में उस सांस्कृतिक एकता के तंतु हमारे इस यात्री को एकत्रित करने को मिलेंगे, जिनके एशियायी एकत्रीकरण के बल पर कल का भारत एशिया के अन्य देशों के साथ स्वतंत्रता के वायुमंडल में खुलकर बैठ और ऊंचे उठकर बोल सकेगा । इस भारतीय यात्री की चीन यात्रा उसे यह सीखने का अवसर देगी कि गत ७ वर्षों से अनवरत युद्ध में पड़ा हुआ चीन किस प्रकार अपनी सांस्कृतिक,नैतिक और राष्ट्रीय भावनाओं की ज्ञानमय तैयारियां किये जा रहा है । हिंदी भाषा के इस पंथी को अनुभव करना चाहिए कि भारत की समस्त प्रांतीय भाषाओं की नुक्ताचीनी नहीं किंतु वकालत करते हुए किसी तरह उसे राष्ट्र के स्वरूप को चीन के सामने रखना होगा । इस तरुण ज्ञान-जीवी के कांधों पर यह उत्तरदायित्व है कि वह चीन के चिंतकों, कोविदों और कलाकारों को हेमांचल, नीलगिरी, अरावली, विंध्य, सतपुड़ा, सह्याद्रि और नीलगिरी की उपत्यकाओं और उनसे निर्झरित निम्नगाओं वाले संस्कृति के महान किंतु क्षमता के शिशु भारत की ओर ललचा सके । 'भारतवर्ष में यहां का हर जर्रा देवता है' वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. दी हुई संख्या के अंक उलटकर लिखें, यथा ८१३-३१८=४९५ (९ से विभाज्य), २. कृष्णगीतावली, ३. क. 'आशिक', ख. तूतिए-हिंद, ४. क. ३२ लाख वर्ग-किलोमीटर से अधिक, ख. स्थल-सीमा— १५,२०० कि.मी., तटरेखा— ७,५०० कि.मी., ५-क. १८ करोड़ २८ लाख टन— आयात की आवश्यकता नहीं, ख. ३ अरब ३३ करोड़ ८० लाख डॉलर, ६ क. 'आरेन' प्रणाली (आर्मी रेडियो इंजीनियर्ड नेटवर्क)— २०० कि.मी. तक संपर्क, ख. स्वचालित पी. टी. ए. (पाइलेटलेस टारगेट एयरक्राफ्ट), ७. क. जापान में, ख. ४८०० से अधिक, ८. राजस्थान में जैसलमेर और बाड़मेर के निकट, १५० करोड़ रु. की योजना (५०० मेगावाट बिजली), ९. (क) डॉ. एन. एन. अंतिया (मानवता तथा वंचितों की समर्थित सेवा के लिए), डॉ. मुल्कराज आनंद (भारत की विरासत तथा संस्कृति), पी. के. एस. माधवन (ग्रामीण तथा जनजातीय विकास), (ख) हिव्टनी ह्यूस्टन (पॉप गायिका), पं. विश्वमोहन भट्ट (जयपुर के गिटार वादक), १०. वैतनिक गायक की मूर्ति, ऐन्स्ट बारलाख (1870-1938) जन्म पश्चिम के वेडल नामक स्थान पर, 1910 से जर्मनी के पूर्वी भाग स्थित ग्योस्ट्रयो नगर में निवासा"

साधना चाहे उससे सधी हो या न सधी हो कि हमारे चीनी पथ के राहगीर को चीन में दलों और पार्टियों से परे विशुद्ध चीन के उच्च दर्शनमात्र करने हैं। दलों के रंगीन फीते पहनने का न उसे मोह होना चाहिए न अवकाश।

एक चीनी ने हिंदुस्तान की यात्रा की थी ह्वैनसांग के रूप में। युगों के पन्ने उलट जाने के बाद भी आज हमारे बीच वह अमर हैं। आज के युग में जनरलिस्सिमो और उनकी विश्व विजयिनी धर्मपत्नी हमारे यहां आ चुके हैं, और कितने ही सद्भाव प्रतिनिधि मंडल भी आ और जा रहे हैं। साहित्य का काम इन पंथिकों का पथ कंटकित बनाना नहीं हैं। सूर्य प्रकाश की आरती में काम आनेवाली दीपकदानी की तरह उनके आलौकित पथ में अपने राष्ट्र के आलोक की उपस्थिति देना है।

कला पारखी के नाते यह आवश्यक है कि हमारा पूर्व मुखीन राहगीर चीन की तरुणाई को देखें कि वह किस तरह चीनी साहित्य में प्रतिबिंबित होती है और चीन के साहित्य को निकट से देखें कि आपदाओं और आकांक्षाओं के बीच वह किस तरह अपने समस्त रसों के साथ बनता और उठता चला जा रहा है। वह अपने विद्यालय की ज्ञान गद्दी को हिंदी भाषा का नमन पहुंचावे इसलिए कि श्रद्धा की यह धारा एक दिन चीन और भारत के बीच स्नेह की सुवर्ण रेखा बन सके। यह उचित ही है कि श्री कृष्णकिंकर सिंह हमारे अंतरराष्ट्रीय ज्ञान केंद्र शांति निकेतन से चीन जा रहे हैं।

प्रस्तुति : बृजभूषण चतुर्वेदी

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

त्रासदी

समय का हलाहल

समय के हलाहल को
पीते-पीते
कुछ संबंध
गले से नीचे उतरकर
विस्फोट की हद तक
पहुंच जाते हैं
समझौता भी कितना
और 'मैं'
नीलकंठ भी नहीं ।

● अनिता कुमारी

शिक्षा : एम. एफ. ए. (पेंट्रिट) बी. एच. यू., वाराणसी

आत्मकथ्य : जब कुछ भावनाएं चित्रों से अभिव्यक्त नहीं हो पातीं तो शब्द बनकर कविताओं का रूप ले लेती हैं ।

पता : सा. ६/१८६-२-बी.-१
श्रीनगर कॉलोनी, अकथा, पो. सारनाथ (वाराणसी)
२२१००७

तुमसे पहले
बेल-बूटों की मानिंद
मेरा अस्तित्व
फैलाव पा रहा था ।
तुम आये तो
तुम्हारे सान्निध्य की कशिश ने
मुझे सिमटने पर
मजबूर कर दिया
और—
समय की रफ़्तार के साथ
तुम
विस्तृत होते गये
गलत क्या था
पता नहीं...
अफसोस !
मैंने तो सब कुछ खो दिया ।

● रीता पल्लवी

आत्मकथ्य : जिधर देखती हूं, संबंधों की खींचा-तानी, विसंगतियों की भीड़, स्वार्थपरता और चाटुकारिता में उलझे लोग ही नजर आते हैं, जिसे भोगते हुए सहज रह पाना मुश्किल हो जाता है और यही क्षण मुझे लिखने को विवश करते हैं ।

पता : महेश कुटी, दुर्गा प्र. चौधरी पथ
(काली बाड़ी रोड़), मुजफ्फरपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

बदला

● डॉ. मोतीलाल जोतवाणी

टेलीफोन की घंटी बजने पर मैंने उसका रिसीवर उठाया। उसमें से किसी महिला की आवाज आयी, "तुम मोहित बोल रहे हो ?"

मैं आश्चर्य में पड़ गया। एक लंबी अवधि के पश्चात मेरे लिए मेरी पत्नी को छोड़कर किसी और महिला ने आत्मीयतावश 'तुम' सर्वनाम का प्रयोग किया था। मेरे लिए भी ऐसी आत्मीयता दिखाना आवश्यक हो गया। मैंने उससे पूछा, "तुम कौन हो ?"

उसने उत्तर दिया, "मैं गुल हूं। ... श्रीमती गुल हरीश छाबड़ा।..."

यह सुनकर मेरा मन आश्चर्य की बजाय किसी अज्ञात भय से घिर गया। खुदा खैर करे। मेरे दुश्मन के यहां सभी लोग सकुशल हों। वैसे तो गुल ने कभी कोई टेलीफोन नहीं किया है। लेकिन उसके लहजे से ऐसा नहीं लगता था कि वह कोई अशुभ समाचार देना चाहती हो।... उसका पति हरीश मेरा दोस्त था और मेरा दुश्मन भी। गुल का परिचय पाकर मैंने उसके लिए अनायास ही औपचारिक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग करते हुए कहा, "आप गुल हरीश छाबड़ा हैं ?... अभी पांच ही तो हम दोनों— हरीश और मैं— किसी एक सरकारी बैठक में साथ-साथ थे।... हरीश कह रहा था कि वह उसी दिन शाम को ही किसी और सरकारी सम्मेलन में शरीक होने के लिए ग्वालियर जाएगा।... आप सकुशल तो न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

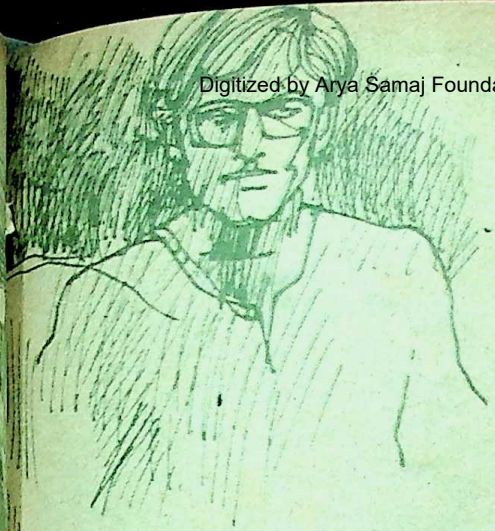

मुझे भीतर-ही-भीतर लगा, वह वाकई उस राजा की रानी थी, जो दुश्मन राजा में न जाने क्या देखकर उसकी सहायता के लिए उसके खेमे में आयी थी । उसने दुश्मन राजा में ऐसा कुछ देखा था, जो अपने राजा से बदला चुकाने के लिए काफी था ।

"जी हां ।... वह अपने कार्यक्रम के अनुसार चला गया । एक दिन के लिए यहां दिल्ली में आया था । एक रात के लिए भी नहीं ।... लेकिन तुम मुझसे यह 'आप-आप' कर क्यों बोल रहे हो ?"

"तुम उसके साथ अहमदाबाद में ही रहती हो न ? फिर यों यहां से..."

"नहीं, मैं यहां दिल्ली में अकेली रहती हूं ।"

"और आपकी बेटियां कहां रहती हैं ?"

"अगर 'आपकी बेटियां' से तुम्हारा मतलब हरीश की और मेरी मिली-जुली बेटियों से है, तो मैं तुम्हें बताऊं कि हरीश उनका पिता अवश्य है, लेकिन मेरी बेटियां मुझे ही अपना पिता-माता समझती रही हैं ।... लेकिन टेलीफोन पर ये सब बातें नहीं हो सकेंगी ।... डायरेक्टरी में से तुम्हारा फोन नंबर देखकर तुम्हें इसलिए फोन किया है कि मैं तुमसे मिलना चाहती हूं ।..."

"अरे, डायरेक्टरी में से क्यों ? हरीश के पास तो मेरा फोन नंबर है !... अभी परसों सुबह को उस बैठक के लिए घर से निकलने से पहले उसने मुझे टेलीफोन किया था कि मैं एजेंडा के उस खास इस्म पर कैसे भी हो, उसका समर्थन करूं ।"...

"तुम्हारा फोन नंबर उसकी पर्सनल डायरी में होगा ।... तुम घर पर ही हो न ? मैं आती हूं ।"

मेरी आंखों के आगे किसी युद्ध-गाथा में से वह दृश्य प्रगट हो उठा, जिसमें दो राजाओं के बीच चल रही लड़ाई के दौरान एक राजा की रानी दूसरे राजा की चाहत में आकर उसके खेमे में पहुंच जाती है और वह दूसरा राजा उस दिन लड़ाई के मैदान में अपने सेनापति को सामने न लाकर, उस रानी को आगे भेजता है । अपनी रानी को अपने दुश्मन के यहां देखकर उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले राजा का हौसला टूट जाता है । वह खुद टूटकर गिरता है और लड़ाई के मैदान में फिर नहीं उठ पाता है ।... मैंने अपने को संभालकर गुल से कहा, "क्यों नहीं, क्यों नहीं ? आओ, चली आओ । मैं तुम्हारे घर से बहुत दूर नहीं रहता हूं । लेकिन..."

उसने बीच में ही बात काटकर कहा, "मैंने तुम्हारा घर देखा है । एक बार संयोग से हरीश और मैं स्कूटर पर तुम्हारे घर के बाहर से गुजर रहे थे कि मैंने तुम्हारे नाम की तख्ती पढ़ी थी और तुम्हारे संबंध में उससे पूछा था ।... लेकिन तुमने मुझे अपने यहां आने के लिए कहते समय उसमें 'लेकिन' क्यों डाला ?"

"मैंने उसमें 'लेकिन' इसलिए डाला, क्योंकि तुम चाहो तो अभी चली आओ, चाहो तो थोड़ी देर के बाद एक बजे के करीब आओ ।... एक बजे तक मेरी श्रीमती अपने काम पर से लौट आती है । उस समय तुम उससे भी मिल सकोगी ।..."

उसने कहा, "नहीं, मुझे तुमसे काम है ।... मैं अभी आती हूं ।"

यह सुनकर मेरी कनपटियां अवश्य ही लाल हो उठी होंगी । मेरी आवाज में भी लाली उतर आयी । मैंने कहा, "गुल फिर तो तुम ऑटोरिक्शा से शीघ्र ही आ जाओ ।"

टेलीफोन की उस संवादधारा में हम एक-साथ चरम सीमा को पहुंचे थे । हम दोनों ने अपना-अपना रिसीवर एक ही समय रख दिया ।

□ □

जब तक गुल आये, तब तक मैंने जल्दी-जल्दी में ड्राइंगरूम, बैडरूम वगैरह को झाड़-पोंछकर सजाया-संवारा और अपनी दाढ़ी मूंडकर स्नान किया । सोचा, हरीश और मेरे बीच की दुश्मनी में एक नया आयाम जुड़ गया था ।

शीघ्र ही उस दूसरे आयाम का विचार आते ही मुझे जासूस-गिरोहों में काम करनेवाली विष-कन्याओं और 'ब्लैकमेल' करनेवाली महिलाओं का ध्यान आया । हो न हो, हरीश की यह एक नयी चाल हो । उसके बाहरी शांत मुखौटे के भीतर उसका असली प्रतिशोधी चेहरा छुपा रहता है और मुझे नीचे गिराने के लिए वह खुद बहुत नीचे गिर सकता है । मैं सतर्क हो गया ।

मैंने सोचा, मैं घर के ड्राइंग-रूम का दरवाजा खुला ही रखूंगा । वह दरवाजा खुला रखने से भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा । मौजूदा शहरी सभ्यता में घर के किसी सदस्य के अतिरिक्त कोई पराया व्यक्ति बाहरी फाटक पर लगी हुई घंटी बजाये बिना घर के ड्राइंग-रूम में नहीं घुस आएगा ।... और उस समय घर के किसी सदस्य के आने की संभावना न थी । और यदि कोई आया भी, तो बाहरी फाटक के खुलने की आवाज आएगी ।...

इतने में बाहरी फाटक के पास ऑटोरिक्शा के आकर रुकने की आवाज आयी और जल्द ही फिर फाटक पर लगी हुई घंटी घर के भीतर बज उठी । बाहर निकलकर मैंने फाटक खोला । मेरे सामने गुल खड़ी थी । वह लो-कट ब्लाऊज और उस ब्लाऊज से मेल खाती हुई रेशमी साड़ी पहने हुए थी । उसका चेहरा और उसके केश ऐसे सजे-संवरे थे मानो वह किसी ब्यूटी-पार्लर से होकर आयी हो । परंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी मैंने देखा, उसकी बनावट-सजावट उसके चेहरे पर बढ़ती हुई उम्र की झुर्रियों को नहीं छुपा सकी थी । वह मुझमें, मेरे चेहरे में न जाने क्या ढूंढ़ रही थी ।

मैंने उसका ध्यान भंग करते हुए कहा, "आओ, स्वागत है !"

ड्राइंगं-रूम के भीतर आकर उसने सोफे पर बैठते हुए कहा, "तुम तो काफी बदल गये हो । मेरी आंखों में तो पच्चीस साल पहले की तुम्हारी मूरत समायी हुई है ।..."

मैंने भी शरारत करते हुए कहा, "चूंकि तुम प्रतिदिन अपने आपको दर्पण में देखती हो, इसलिए तुम्हें अपने आप में आया हुआ परिवर्तन दिखायी नहीं देता ।..."

उसने एक ठंडी सांस भरकर कहा, "जी हां, यह सही है ।"

अब उसकी निगाह चारों ओर अलमारियों में और उनके ऊपर करीने से लगी हुई पुस्तकों पर गयी । सोफे के पास पड़ी एक अलमारी की एक समूची कतार मेरी अपनी लिखी हुई किताबों से सजी हुई थी । उस कतार में सिंधी, हिंदी और अंगरेजी में लिखी हुई लगभग चालीस पुस्तकें थीं, जिनकी रीढ़ों पर उनके नाम और लेखक-रूप में मेरा नाम छपा था । उनकी ओर संकेत कर उसने पूछा, "जिन पुस्तकों की रीढ़ों पर उनके नाम और तुम्हारा नाम नहीं है, वे अवश्य ही सिंधी में होंगी ।"

मैंने उसका आशय समझकर उत्तर दिया, "हां, हम सिंधी-लेखक यहां-वहां से दान लेकर या इन पुस्तकों में भी विज्ञापन देकर एक सौ-सवा सौ पृष्ठों की छोटी-छोटी 'पेपर बैक' पुस्तकें प्रकाशित करते हैं । हमारे सिंधी-साहित्य की रीढ़ कहां है ? सिंधी-पाठक कहां हैं ?"

क्षण-भर के लिए हम दोनों एक अज्ञात उदासी से घिर गये । उसने कहा, "कम उम्र में बहुत पहले, मुझे भी लिखने-पढ़ने का बड़ा चाव था । लेकिन विवाह के बाद हरीश ने उसके लिए मुझे कभी उत्साहित नहीं किया ।..."

मैंने देखा, अब उसकी उदासी समाजगत नहीं, व्यक्तिगत हो गयी थी । मैंने उस उदासी की खोह में उतरना नहीं चाहा । बात को बदलते हुए कहा, "तुमने अभी पच्चीस साल पहले की

मेरी मूरत की बात की ।... हम कब कहां मिले थे ?"

लेकिन अचानक ही मुझे लगा, मैंने घर में आयी मेहमान की औपचारिक आवभगत भुलाकर उसे बातों में उलझा रखा है । मैंने अपनी बात को वहीं छोड़कर उससे दूसरा सवाल पूछा, "क्या पियोगी ? ठंडा या गरम ?"

वह मेरे पहले सवाल के बाद किसी दूसरे लोक में पहुंच गयी थी । लेकिन उसने उस दूसरे लोक में भी मेरा दूसरा सवाल सुना था । उसने उत्तर दिया, "गरम ।"

मैं भीतर जाकर फ्रिज में से ठंडे पानी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोतल, डाइनिंग टेबिल पर से नमकीन बिस्कुटों का डिब्बा और दो खाली गिलास लेकर आया और फिर मैंने किचन में जाकर कॉफी बनाने के लिए गैस स्टोव पर पानी-मिला दूध रख दिया। वापस आकर देखा, इस बीच में उसने बोतल में से दोनों गिलासों में ठंडा पानी उंडेला था और बिस्कुटों के डिब्बे पर से ढक्कन उतारा था।

गिलास में से पानी का घूंट पीकर वह बोली, "मोहित, तुमसे हुई वह मुलाकात मुझसे कभी नहीं भूली है। यहीं दिल्ली में, हमारे घर में एक साहित्यिक गोष्ठी हुई थी। ... तुम इन लोगों से उम्र में छोटे हो। इन सभी महारथियों ने मिलकर तुम पर धावा बोला था। तुम्हारी सिंधी-साहित्य-इतिहास-संबंधी किसी हिंदी-पुस्तक पर हरीश ने, खेमचंद आनंदाणी की शह पर, सिंधी में कोई लेख लिखा था और तुम पर सिंधी-साहित्य-इतिहास के तथ्यों को लेकर कोई झूठा इल्जाम लगाया था।..."

वह अतीत में खो गयी। मैं वर्तमान के हर क्षण में अतीत से अपना संबंध-विच्छेद न कर सका हूं— यहां तक कि वर्तमान को भविष्य का अतीत-रूप ही जानता रहा हूं; मुझे भी सब कुछ याद था।

उसने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा, "उस समय तुमने उन्हें मुंह-तोड़ जवाब दिया था कि तुम्हारी उस हिंदी-पुस्तक में सिंधी-साहित्य-संबंधी जानी-पहचानी जानकारी थी और तुमने अपनी ओर से उस पुस्तक में कोई नया तथ्य ईजाद नहीं किया था। हरीश और खेमचंद एक बेहूदा ढंग से हंसे थे और किसी पुरानी अंगरेजी कहावत का अनुवाद कर बोले थे कि प्रेम और युद्ध में सब कुछ चलता है और तुम्हें नीचा दिखाना उनका एकमात्र उद्देश्य है।..."

मुझे लगा, मेरे घर में स्वयं इतिहास का अवतरण हुआ था और वह इतिहास अपने सगे-संबंधियों को भी क्षमा करने के लिए तैयार न था। उसे बीच में न टोकने के कारण उस इतिहास ने अपने उस अध्याय को समाप्त करते हुए कहा, "उसके पश्चात उस गिरोह के कुछ और सदस्य भी हुए, होते चले गये। उन्होंने साहित्यिक पत्रिकाओं और संस्थाओं पर कब्जा कर लिया और अपनी औसत दरजे की रचनाओं की प्रशस्ति में भी कागज काले किये। उन्होंने अपने-आप को पुरस्कार-सम्मान दिलाये और अपने तत्त्वावधान में प्रकाशित पत्रिका के संपादकीय लेखों में अपने किसी सदस्य के लिए पुरस्कार की अनुशंसा की। लेकिन मैं देख रही हूं, सही किस्म की रचना-धर्मिता का अपना एक अलग स्थान है।..."

मैं गुल की आंखों में निहारता रहा। शीघ्र ही उसने मेरी आंखों पर से अपनी आंखें हटायीं और शून्य में निहारा। वह अब इतिहास से बदलकर आपबीती हो गयी और बोली, "मैं हरीश के यहां सालों से रही हूं। मुझे पता है कि हरीश, खेमचंद और उनके अन्य गिरोहबंद दोस्त तुमसे कितना हसद पालते रहे हैं। जब-जब तुम्हारी कोई नयी किताब प्रकाशित हुई है, तब-तब उनकी नींद हराम हो जाती है और फिर... वे एक-दूसरे को कागजी घोड़े दौड़ाते हैं कि तुम्हारी उस किताब का कोई नोटिस न लिया जाए।..."

मुझे उसकी वह बात कितनी सही लगी, यह जानने के लिए गुल की आंखें शून्य से उतरकर

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमने-सामने आ गयीं । इतने में न जाने क्या याद कर उसने कहा, ''उस गिरोह का एक ऐसा भी शख्स है जो तुमसे दोस्ती का ढोंग कर तुमसे कई स्वार्थ साधता रहा है । तुम्हारी सिफारिश पर उसने पहली बार किसी विदेशी भूमि पर पांव धरा था और आज वह अपना जीवन यों ही विदेशी रंग-ढंग पर चलाने की कोशिश करता है । वह जब कभी हमारे घर में आता है, तो हरीश के साथ सांठ-गांठ कर तुम्हें अंदर ही अंदर से नुकसान पहुंचाने की सोचता रहता है । उसका नाम लेने की जरूरत नहीं है ।... पता नहीं क्यों, मुझे लगता है कि तुम्हें उसके वास्तविक चेहरे की जानकारी है । लेकिन तुम फिर भी उसके दोस्त बने रहते हो । आप दोनों के यहां दोस्ती का एक अलग कमीना रूप देखने को मिलता है ।...''

अचानक ही मुझे लगा, कमरे में जैसे गुल उबलने को थी, किचन में वैसे कॉफी बनाने के लिए गैस-स्टोव पर रखा हुआ पानी-मिला दूध उबलने को होगा । शायद वह उबलकर बिफर न गया हो । मैंने त्वरा से उठते हुए कहा, ''जाऊं, कॉफी बनाकर लाऊं ।''

मैं सही समय पर किचन में पहुंचा । जब स्टोव पर से पतीला उतार रहा था तो मैंने देखा कि गुल भी मेरे पीछे-पीछे वहां तक आयी थी । अचानक ही उसने पूछा, ''परसों उस बैठक में ऐसा क्या हुआ था कि हरीश घर लौटने पर काफी परेशान-सा लगा ?''

मैंने कहा, ''कोई खास बात नहीं हुई थी । वैसे ही हम दोनों के बीच तनाव रहता आया है ।''

वह मुझसे सहमत नहीं हुई । बोली, ''नहीं, कोई खास बात अवश्य ही रही होगी, जिससे वह 'मोहित... मोहित' बुदबुदा रहा था ।... उसने उस सरकारी दफ़्तर में किसी आदमी को फोन किया और उसे कहा कि वह उसके भरे हुए टी. ए./डी. ए. बिल रेकॉर्ड पर न रखे, वह तुरंत वहां जाकर नये बिल फार्म भरेगा ।... और वह सचमुच ही अपना बैग तैयार कर, घर से निकल गया, और बोला कि वह वहीं से ग्वालियर के लिए रेलवे स्टेशन चला जाएगा ।...''

अब मुझे सारी बात याद हो आयी । मैंने उसे देखा, ''जी हां, यह बात हुई थी ।... तुम चलकर बैठो, मैं तुम्हें वहां आकर सारी बात

बताता हूं ।... पर यह बताओ, तुम्हें अपनी कॉफी किस तरह अच्छी लगेगी— तेज या हल्की ?''

''आज मैं अपना बदला चुकाने की जिस तन-मन स्थिति में हूं, उसमें मुझे अपनी कॉफी तेज-तेज अच्छी लगेगी,'' उसने उत्तर दिया ।

मैंने उसके चेहरे में घूरकर देखा । उस पर शरारत नाच रही थी । मैं घबरा गया । घबराहट के कारण कॉफी के एक खाली प्याले को बेतरतीबी से मेरा हाथ लग गया और वह प्याला संगमरमर के स्लैब पर से नीचे फर्श पर गिरकर चूर-चूर हो गया । टूटे हुए प्याले के टुकड़ों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैर से सिंक के नीचे घिसटाकर मैं एक दूसरा प्याला लेने के लिए किचन से बाहर आया, तो मैंने देखा, वह ड्राइंग-रूम की ओर वापस जा रही थी ।

मैं तेज कॉफी के दो प्याले लेकर ड्राइंग-रूम में पहुंचा । वह वहां न थी । इधर-उधर निहारा, वह दिखायी नहीं दी । बेडरूम में झांककर देखा, वह बड़े इत्मीनान से बिस्तर पर लेटी हुई थी और कोई पत्रिका लेकर पढ़ रही थी । मैं अवाक, अचल खड़ा रह गया ।...

मुझे भीतर-ही-भीतर लगा, वह वाकई उस राजा की रानी थी, जो दुश्मन राजा में न जाने क्या देखकर उसकी सहायता के लिए उसके खेमे में आयी थी । उसने दुश्मन राजा में ऐसा कुछ देखा था, जो अपने राजा से बदला चुकाने के लिए काफी था । चूंकि उसका ध्यान मेरे आगमन की ओर लगा था, उसने मेरी उपस्थिति का अनुभव किया और वह पत्रिका बिस्तर पर एक किनारे रख दी । अब वह बिस्तर पर अधलेटी बैठी थी ।

मैंने आगे बढ़कर उसे कॉफी का प्याला दिया । किचन में अपना पूछा हुआ सवाल अब उससे भूल गया था । लेकिन उसका जवाब देना ही मेरे लिए एकमात्र खुला रास्ता था । मैं बैडरूम में थोड़ी दूर पड़ी हुई कुरसी को सरकाकर बिस्तर के नजदीक ले गया । उस पर बैठते हुए और सहज बनने की कोशिश करते हुए मैंने कहा, "गुल, तुम परसोंवाली बैठक की बात कर रही थीं ।... वह बैठक समाप्त होने के बाद हरीश मेरी कार में बैठकर लाजपतनगर तक आया । उसने बताया कि वह देर शामवाली गाड़ी से ग्वालियर जाएगा । उससे पहले उस बैठक के दौरान उसने बड़ी शान से बताया था कि वह बैंगलूर में किसी सरकारी बैठक में सम्मिलित होने के बाद यहां दिल्ली में पहुंचा था । उसका जीवन बड़ा ही व्यस्त हो गया है ।... परसों हम दोनों ने साथ-साथ बैठकर दिल्लीवाली उस बैठक के टी. ए.—डी. ए. बिल भरे थे । कार में मुझे याद आया कि उसने अपने बिल में अहमदाबाद से दिल्ली, और दिल्ली से अहमदाबाद के लिए किराया-भत्ता लेने के लिए अपनी डायरी में से रेलवे किरायों के आंकड़े देखकर भरे थे ।..."

"फिर क्या हुआ ?..." गुल ने उत्सुकता से पूछा ।

मैंने कहा, "भला, हम कार में बैठकर और क्या बतियाते, क्या बातें करते ? मैंने बातों ही बातों में हरीश से कहा, 'यह ठीक नहीं है ।... इस बार तुम अपनी संस्था के प्रतिनिधि के रूप में बैंगलूर और दिल्ली की इन सरकारी बैठकों में शरीक हुए हो और अभी ग्वालियरवाली एक और बैठक में जाओगे । ये सब बैठकें एक के पीछे एक हुई हैं और उनकी तिथियां एक दूसरे के पीछे रही हैं । तुम इन तीनों बैठकों के लिए अहमदाबाद से बैंगलूर और वापस अहमदाबाद, अहमदाबाद से दिल्ली और वापस अहमदाबाद, और अहमदाबाद से ग्वालियर और वापस अहमदाबाद के लिए अलग-अलग रेलवे फर्स्ट क्लास किराये और उनके साथ-साथ भत्ते लिए हैं, या अभी लोगे ।...और फिर तुम सदा सेकंड क्लास में सफर कर फर्स्ट क्लास के किराये लेते हो !'

"तुम्हारा यह वार तो सीधा था, उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीठ-पीछे न था । फिर क्या हुआ ?'' उसकी जिज्ञासा बढ़ गयी थी ।

''फिर क्या होना था ? उसने बहुत-कुछ समझाने की कोशिश की । जैसे-जैसे वह अपने कृत्यों में संगति बिठाने की कोशिश करता था, वैसे-वैसे असंगति में धंसता जाता था ।...''

''मैं भी कहूं, उस दिन वह इतना परेशान क्यों हो गया था !... उसके किरदार में बहुत खामियां हैं ।''

''सार्वजनिक जीवन शीशे का घर होता है और ऐसे घर में रहनेवाले को समझना चाहिए कि जन-साधारण उसे देख-जांच रहा है ।... जनसाधारण ने हरीश के जीवन में यह भी देखा है कि वह जिस सीढ़ी से ऊपर चढ़ता है, वह उस सीढ़ी को चढ़ने के बाद नीचे गिरा देता है ताकि अन्य लोग वहां तक न पहुंचें ।... उसके बाद और ज्यादा ऊपर चढ़ने के लिए वह किसी और ज्यादा बड़ी सीढ़ी की तलाश में रहता है ।...''

''तुम सही कह रहे हो,'' उसने अनायास ही सहमत होते हुए खुद भी बहुत-कुछ कहना चाहा । उसके मन में कोई बात थी, जो उबाल खाकर बाहर निकलना चाहती थी । मैंने उसकी बात बीच में ही काटकर कहा, ''मेरे पास ऐसे कई पत्र हैं, जिनसे उसकी असली मनोवृत्ति का परिचय मिलता है । ... मेरे पास उसका एक ऐसा पत्र भी है, जो उसने अपने एक जाने-पहचाने सरकारी अधिकारी को व्यक्ति-स्तर पर लिखा था कि वह सरकारी पुस्तक-थोक खरीद योजना के तहत उसकी कुछ पुरानी पुस्तकों की प्रतियां स्वीकार करवाये । उसने उसे यह भी लिखा था कि किसे क्या पता चलेगा कि उसकी वे पुस्तकें विचाराधीन अवधि के भीतर प्रकाशित हुई थीं या नहीं ! उसके मित्र अधिकारी ने भी उसका वह पत्र उस योजना के सलाहकार की हैसियत में मेरे सामने व्यक्ति-स्तर पर रखा था । तब मुझे हरीश पर तरस आ गया था । बाहर से शराफत का बढ़िया जामा ओढ़कर घूमनेवाला वह आदमी अंदर से कितना घटिया है !

गुल ने कॉफी की चुस्की लेकर कहा, ''मैं सब जानती हूं । मैंने इस आदमी के साथ अब तक इतने साल जिंदगी काटी है ।...''

उसने क्षणांश के पश्चात फिर कहा, ''मैंने

उसके लिए हरेक कुरबानी दी है, लेकिन उसके यहां मेरी कोई कद्र नहीं है । मैं पीछे सिंध में नवाबशाह के एक बड़े जमींदार की बेटी हूं । मेरे पिताजी कांग्रेसी थे । उस समय के कई कांग्रेसी नेता उन्हें जानते हैं । अजमेर के दीपचंद्र बेलाणी भी उन्हें खूब जानते-पहचानते हैं ।... लेकिन हमारे जमींदारी परिवारों में स्त्री का आदर नहीं होता था । वे घरों में बंधुआ दासियां होती थीं । इसीलिए मैंने अपनी चढ़ती जवानी में यह फैसला किया था कि मैं किसी गरीब घर के लड़के के साथ शादी करूंगी, फिर चाहे वह छोले-भटूरे ही क्यों न बेचता हो ।...''

गुल का मन भरा-भरा था, और वह उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिव्यक्त करना चाहती थी । उधर मुझे हरीश की नितांत व्यक्तिगत जीवन के कोने-कोने से परिचित होने का घर बैठे ही मौका मिल रहा था । मैंने उत्सुकता से पूछा, "जब आप दोनों का विवाह हुआ, तो उस समय हरीश क्या करता था ?"

उसके विचारों का सिलसिला जुड़ा ही रहा । वह बोली, "तब वह राष्ट्रभाषा हिंदी की कक्षाएं पढ़ाता था और मैं एक स्कूल में अध्यापिका थी । हमारी शादी हो जाने के बाद ही उसने इंटर, बी. ए., एम. ए. किया ।

हम दोनों अध्यापन-व्यवसाय में थे । वह आगे पढ़ने के लिए जिस किसी शहर में जाता, मैं अपनी नौकरी छोड़कर उसी शहर में जाती और वहां नौकरी करती । इस तरह उसका साथ देती । नयी जगह पर अध्यापिका हो जाती और घर चलाती ।... फिर एक के बाद एक—चार बेटियां पैदा हुईं, तो उसमें मुझ अकेली का क्या कुसूर था ?"

वह अचानक चुप हो गयी । मैंने देखा, उसका गला रुंध गया था और उसकी आंखों में आंसू भर उठे थे । वह क्षण-भर के लिए शून्य में समा गयी थी । उसमें से उबरकर बोली, "जब हरीश पुणे में पी. एच. डी. कर रहा था, तो उस समय चारों बेटियों को एक के बाद एक— खसरा निकला ।... मैं स्कूल पढ़ाने जाऊं या घर में बेटियों की संभाल करूं ? सब काम करती थी ।...अब अहमदाबाद में वह जिस संस्था का डॉयरेक्टर बना बैठा है, उस संस्था में वहां सभी लोग अपने-अपने घर-परिवार के साथ रहते हैं । एक यह महाशय हैं कि वहां अकेला रहता है ।... यह गनीमत है कि मेरे यहां दिल्ली में बाहर से बेटियां अपने-अपने पति-परिवार के साथ आती हैं और घूम-फिर जाती हैं । मैं भी उनके यहां से हो आती हूं । लेकिन वे सब अहमदाबाद में भी आ सकती हैं और मैं उनके यहां अहमदाबाद में भी जा सकती हूं । हरीश ने एक साथ रहने के लिए मुझ पर कभी कोई जोर नहीं दिया है ।... मैं अपने अध्यापिका-वेतन से ही गुजर-बसर करती हूं, यहां दिल्ली में अकेली-अकेली सड़ती रही हूं ।..."

वह रोने की हद तक पहुंच गयी थी । मैंने देखा, उसकी बात में बाढ़ आ गयी थी । शायद वह बाढ़ मेरे संभाले नहीं संभल पाती । मैंने उसे कहा, "देखो गुल, तुम अपने को यों अकेली-अकेली नहीं समझो । मेरे घर का यह दरवाजा तुम्हारे लिए सदा खुला रहेगा ।... अच्छा, अब तुम यह बताओ, तुम मेरी श्रीमती के आने तक रुकोगी या जाना चाहोगी ?"

आंखों में आंखें गड़ाकर उसने मेरी ओर निहारा । मेरी आंखें क्षणभर के लिए भी न झपकीं, और न ही झुकीं । उसने प्याले में बची कॉफी एक घूंट में पी ली । बिस्तर पर से उठकर साड़ी को ठीक किया और कहा, "अब मैं चलूंगी । कभी कोई और मौका मिला तो तुम्हारी श्रीमती से भी मिलूंगी ।"

और मैं उसे अपने घर के बाहरी फाटक तक छोड़ने गया ।

— बी-१४, दयानंद कॉलोनी
लाजपत नगर, नयी दिल्ली-११००२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला दीर्घा

प्रकृति का मानवीकरण

त्रिवेणी कला दीर्घा में आयोजित चित्र प्रदर्शनी में युवा चित्रकार सुश्री बिंदु पोपली कुछ नये ढंग के चित्र लेकर उपस्थित हुई हैं । उन्होंने प्रकृति के विविध उपादानों का अपने चित्रों में मानवीकरण रूप प्रस्तुत किया है । चित्रों की विषयवस्तु दर्शन से प्रभावित है, रंग-योजना और संयोजन अनूठा है ।

कलाकार बनाम किस्सागो

अमरीकन सेंटर में 'टेल मी ए स्टोरी' शीर्षक से आयोजित एक प्रदर्शनी में चौदह कलाकारों की मिट्टी तथा कांच से निर्मित कला कृतियां रखी गयीं । हरेक कला-कृति कोई-न-कोई लोक कथा, दंत कथा या पुरा कथा कहती थी यानी नये प्रयोगों के तहत कला को फिर से एक बार किस्सागो बनाने का प्रयास किया गया है, जिसे बहुत पहले कलाकार नकार चुके थे ।

किसी भी पहचान से परे

रेखाचित्रों को एक चित्र-कृति की भांति मान्यता दिलाने के प्रयासों में संलग्न चित्रकारों में एस. के. साहनी विशेष रूप से उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं । उनके शब्दों में, 'मैं अपने रेखाचित्रों में कुछ ऐसा बनाने की कोशिश कर रहा हूं, जो मानव या प्रकृति निर्मित किसी भी वस्तु की पहचान से परे हो ।' अभी हाल ही में प्रदर्शित अपने रेखाचित्रों में वह अपने उद्देश्य के बहुत करीब पहुंचने में सफल रहे हैं ।

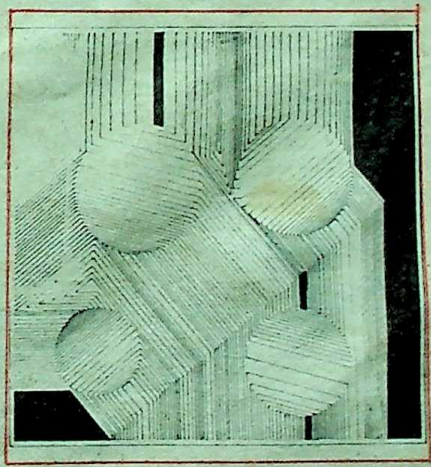

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक बैंक ने अपने अग्रिमों की स्थिति का वर्गीकरण एवं आय का अभिनिर्धारण करने के लिए कुछ नये मानदंड अपनाये हैं। ये नये मानदंड क्या हैं ?

बैंकों का घाटा कैसे देखा जाता है ?

● दिलीप मेहरा

प्रत्येक बैंक ने ३१.३.९३ से अपने अग्रिमों की स्थिति का वर्गीकरण एवं आय का अभिनिर्धारण नये मानदंडों के आधार पर किया है, जिसके फलस्वरूप लगभग सभी बैंकों की लाभदेयता में कमी आयी है और अधिकांश बैंकों ने वर्ष १९९२-९३ में घाटा प्रदर्शित किया है। दि. ३१.३.९४ को समाप्त होनेवाले वर्ष के लिए भी इन्हीं मानदंडों का अनुपालन किया जाएगा। अतः इस वर्ष लगभग सभी बैंकों के घाटे में और अधिक वृद्धि प्रदर्शित होने की संभावना है।

आखिर ये नये मानदंड हैं क्या ? और बैंकों की लाभदेयता पर इनका क्या प्रभाव है ? क्या बैंक इस वर्गीकरण के रहते पुनः लाभ अर्जित कर सकते हैं ?

'स्वास्थ्य कूट' प्रणाली

१९८२ से सभी बैंक अपने-अपने ऋण/अग्रिम खातों का वर्गीकरण 'स्वास्थ्य कूट' (हेल्थ कोड) प्रणाली द्वारा करते रहे हैं। इस प्रणाली के अंतर्गत सभी अग्रिमों को संख्या [illegible] से आठ तक विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता रहा है। ये श्रेणियां इस प्रकार हैं—

१.	कूट संख्या-१	:	संतोषजनक खाते
२.	कूट संख्या-२	:	अनियमित खाते
३.	कूट संख्या-३	:	रुग्ण परिचार्य खाते
४.	कूट संख्या-४	:	रुग्ण अक्षम/निष्क्रिय खाते
५.	कूट संख्या-५	:	वापस मांगे [illegible] ऋण
६.	कूट संख्या-६	:	दावा दायर खाते
७.	कूट संख्या-७	:	डिक्री प्राप्त खाते
८.	कूट संख्या-८	:	अशोध्य [illegible] संदिग्ध खाते

उपरोक्त वर्गीकरण से यह स्पष्ट है कि उक्त प्रणाली का उद्देश्य उन खातों की पहचान करना है जिन पर बैंक को विशेष ध्यान देना है और जिनकी विशेष निगरानी करनी है— साथ ही ऋण संभाग का 'स्वास्थ्य' सुधारने के लिए [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानकारी को एक उपकरण के रूप में प्रयोग करना है।

जहां एक ओर स्वास्थ्य कूट (१) के खाते अच्छे खाते माने जाते हैं जिनमें अग्रिम की सुरक्षा संदिग्ध नहीं है और सभी खाते सभी प्रकार से नियमित हैं; स्वास्थ्य कूट (२) के खातों में यद्यपि खाते की सुरक्षा पर संदेह नहीं है किंतु खाते में अस्थायी स्वरूप की यदा-कदा होनेवाली अनियमितताएं हैं, वहीं दूसरी ओर स्वास्थ्य कूट (३) के अंतर्गत ऐसे खाते रखे जाते हैं जिनमें इकाई के पुनर्वास/परिचर्या के कार्यक्रम हाथ में लिए गये हों। कूट (४) में लगातार अनियमित रहनेवाले, जिनमें खाते की सक्षमता के विषय में अध्ययन न किया गया हो या अध्ययन के पश्चात इकाई को पुनर्वास/परिचर्या के योग्य न पाया गया हो, रखे जाते हैं।

स्वास्थ्य कूट ५ से ८ के अंतर्गत वे खाते रखे जाते हैं, जिनमें बैंक द्वारा वसूली कार्यवाही आरंभ कर दी गयी हो और वे वसूली की प्रक्रिया में विभिन्न स्तर पर लंबित हों।

प्रणाली के अनुसार किसी भी समय में एक खाते को एक ही स्वास्थ्य कूट में वर्गीकृत किया जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक के निर्देशों के अनुसार आवंटित किये गये स्वास्थ्य कूटों का पुष्टिकरण उच्च प्राधिकारी द्वारा किया जाना चाहिए।

वास्तविक वसूली महत्त्वपूर्ण

स्वास्थ्य कूट प्रणाली भारतीय रिजर्व बैंक की संपूर्ण निगरानी प्रणाली की एक उप-प्रणाली रही है जिसमें बैंकों के ऋण संभाग के निष्पादन का मूल्यांकन किया जाता रहा है— साथ ही बैंकों को यह मार्गनिर्देश भी दिये गये थे कि कूट संख्या ५ से ८ में वर्गीकृत खातों पर ब्याज तब तक न नामे डाला जाए जब तक उसकी वास्तविक वसूली नहीं हो जाती। इसका अर्थ यह है कि बैंक इन खातों का ब्याज तभी अपने लाभ-हानि खाते में दिखाएंगे जब उस राशि की वास्तविक वसूली होगी— इसका प्रभाव यह होगा कि जिस बैंक की जितनी अधिक राशि कूट संख्या ५ से ८ में वर्गीकृत खातों में अटकी होगी। उसके वार्षिक लाभ-हानि खाते में उतनी ही कम आय प्रदर्शित होगी।

वर्गीकरण की प्रणाली के दोष

हम ऊपर देख चुके हैं कि अग्रिमों के वर्गीकरण की प्रक्रिया स्वयं सुस्पष्ट नहीं प्रतीत होती। प्रणाली आरंभ होने के पश्चात से ही यह पाया गया कि व्यापक स्तर पर इसका भलीभांति अनुपालन नहीं हो पा रहा है। प्रथम तो स्वास्थ्य कूट का आवंटन उचित रूप में नहीं किया जाता रहा और दूसरे पुनरुज्जीवन कार्यक्रम, चरणबद्ध वसूली और प्रतिभूति को मजबूत बनाकर स्वास्थ्य कूट संख्या ४ और ५ के खातों को नियमित करना, डिक्री निष्पादन, न लगाये गये ब्याज में उचित छूट देकर समझौता करना इत्यादि माध्यमों से कूट संख्या ६ से ८ तक के खातों में वसूली करना इत्यादि कार्यों के लिए उचित एवं निरंतर कार्यवाही में कहीं-कहीं कमी रही। प्रणाली में अपने आप में एक कमी यह रही कि इसमें वर्गीकरण करने के लिए किसी खाते विशेष का पूर्व वसूली रेकॉर्ड से कोई ठोस एवं सीधा संबंध नहीं रहा और वर्गीकरण करनेवाले के विवेक पर बहुत कुछ निर्भर करता रहा। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार द्वारा वित्तीय सुधारों हेतु गठित नरसिंहमन समिति के सम्मुख अन्य विषयों के अलावा खातों के वर्गीकरण, आय अभिनिर्धारण और प्रावधान हेतु कोई सुदृढ़ एवं वास्तविक फार्मूला सुझाने की समस्या भी रखी गयी।

नरसिंहमन समिति

नरसिंहमन समिति ने समस्या के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से गौर करने के पश्चात जो स्कीम रखी उसे भारतीय रिजर्व बैंक ने स्वीकार करते हुए वर्ष १९९३ से तीन चरणों में लागू कर दिया।

उक्त मानदंडों के आधार पर अग्रिमों के वर्गीकरण एवं बैंक की लाभदेयता पर उसके प्रभाव का संक्षिप्त विश्लेषण इस प्रकार है।

नयी स्कीम के अनुसार प्रत्येक बैंक अग्रिमों का वर्गीकरण चार श्रेणियों में करेगा

(१) स्तरीय (स्टेंडर्ड)
(२) निम्न स्तरीय (सब-स्टेंडर्ड)
(३) संदेहास्पद (डाउटफुल)
(४) हानिवाली (लॉस)

यह वर्गीकरण प्रत्येक खाते के वसूली रेकॉर्ड के आधार पर किया जाना है। वर्गीकरण का आधार बहुत सरल है। किंतु उसे समझने से पूर्व हमें दो बातें समझनी आवश्यक हैं—

(१) पूर्वदेय : किसी रकम को पूर्वदेय तब माना जाना चाहिए जब नियत दिनांक से ३० दिनों के बाद भी वह बकाया रहे। अतः ३१ मार्च १९९३ को देय ब्याज ३० अप्रैल १९९३ को पूर्वदेय हो जाएगा।

(२) अनअर्जक आस्ति : वर्ष १९९३ में यदि कोई खाता पिछली चार तिमाही से पूर्व देय रहा है तो वह अनअर्जक आस्ति माना जाएगा।

वर्ष १९९४ के लिए यह अवधि घटाकर तीन तिमाही और वर्ष १९९५ के लिए दो तिमाही रखी गयी है।

मान लें कि ३१.३.९० को किसी खाते में देय ब्याज अदत्त है, यह राशि ३०.४.९० को पूर्वदेय और ३०.४.९१ को अनर्जक आस्ति मानी जाएगी।

खातों का वर्गीकरण

इतना समझ लेने के पश्चात अब हम खातों के वर्गीकरण की प्रक्रिया समझते हैं।

(१) कोई भी खाता जिसमें वसूली नियमित और जो अनर्जक आस्ति नहीं है— स्तरीय खाता माना जाएगा।

(२) खाता अनर्जक आस्ति होते ही निम्नस्तरीय हो जाएगा।

(३) यदि अनर्जक आस्ति २ वर्ष से अधिक बकाया है तो खाता संदेहास्पद हो जाएगा।

(४) यदि बैंक के निरीक्षकों/लेखा-परीक्षकों द्वारा किसी खाते की पहचान हानिवाली आस्तियों के रूप में कर ली गयी हो तो उसे चौथी श्रेणी में रखा जाएगा।

ऋण खातों में यदि किश्तें एक वर्ष से अधिक किंतु दो वर्ष से कम की अवधि से बकाया हैं तो खाता निम्नस्तरीय माना जाएगा। बकाया किश्तों के दो वर्ष पार करते ही वह खाता संदेहास्पद हो जाएगा।

नकद साख (केश क्रेडिट) खाते में यदि तुलन पत्र की दिनांक अर्थात ३१ मार्च से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माह पूर्व से कोई परिचालन नहीं है या इस अवधि के दौरान खाते में नामे डाले गये ब्याज को पूरा करने के लिए इस अवधि के दौरान खाते में जमा की गयी रकम अपर्याप्त है तो खाता अनियमित अर्थात 'आउट ऑफ ऑर्डर' माना जाएगा । यथा-प्रसंग यदि यह स्थिति चार/तीन/या दो तिमाही तक रहती है तो खाते को निम्न स्तरीय माना जाएगा । दो वर्ष पूरे होते ही खाते को संदेहास्पद माना जाएगा ।

नयी स्कीम के अनुसार खाते के निम्न स्तरीय होते ही उस पर आगे ब्याज नहीं लगाया जा सकता— अर्थात केवल स्तरीय खातों से बननेवाला ब्याज ही बैंक अपने लाभ-हानि खाते में दिखा सकते हैं । अनर्जक आस्तियों का ब्याज वास्तविक वसूली के पश्चात ही लाभ-हानि खाते में दिखाया जा सकता है । इसके अलावा वर्ष के अंत में बकाया विभिन्न श्रेणियों के खाते में बकाया राशि में से निर्धारित बकाया राशि का प्रावधान करना होगा ।

(१) स्तरीय आस्तियां	—	कोई प्रावधान नहीं
(२) निम्नस्तरीय ,,	—	१० प्रतिशत
(३) संदेहास्पद ,,	(क)	१ वर्ष तक— २० प्रतिशत
	(ख)	१ से तीन वर्ष— ३० प्रतिशत
	(ग)	तीन वर्ष से अधिक— ५० प्रतिशत
(४) हानिवाली ,,	—	१०० प्रतिशत

प्रत्येक बैंक के कुल प्रावधानों को निम्नानुसार चरणों में बांटने का निर्णय लिया गया था—

३१ मार्च १९९३ को विवेकपूर्ण मार्गदर्शी सिद्धांतों के अंतर्गत ३१.३.९३ को यथा अपेक्षित कुल प्रावधान के संबंध में ३० प्रतिशत से कम का प्रावधान नहीं किया जाना चाहिए । ३१ मार्च १९९४ को वर्ष १९९४ को अपेक्षित प्रावधानों के अलावा पिछले वर्ष के दौरान न किये गये शेष के लिए भी प्रावधान किया जाएगा ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बैंकों को इस वर्गीकरण से जहां एक ओर स्तरीय अग्रिमों के अतिरिक्त अन्य ऋणों से आय प्राप्त नहीं हो सकेगी, वहीं संदेहास्पद एवं हानिवाली आस्तियों में बकाया राशि का प्रावधान भी करना होगा । इसका प्रभाव बैंकों की वास्तविक आय में कमी तथा लाभ में से प्रावधान की राशि से लाभदेयता में ह्रास के रूप में होगा ।

आय में सुधार और प्रावधानों की राशि जमा करने के लिए अनर्जक राशियों की मात्रा में कमी करना आवश्यक है । अनर्जक आस्ति संविभाग विशेषतः निम्नस्तरीय श्रेणी को समीक्षा करके वर्गीकरण में सुधार हेतु क्षेत्रों का पता लगाकर अनियमितताओं को दूर करना होगा जिनसे निम्नस्तरीय खातों को स्तरीय बनाकर पुनः अर्जक बनाया जा सके । इन प्रयासों से लाभप्रदता में सुधार होगा और प्रावधान की राशि में कमी आएगी जिससे बैंक अपनी लाभप्रदता में वृद्धि कर सकेंगे ।

—सी-३७ डी.डी.ए. कांपलेक्स
डिफेंस कॉलोनी, नयी दिल्ली-२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सांस्कृतिक समाचार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा साहित्य एवं समाज

लुधियाना : हिंदी साहित्य परिषद की ओर से 'कथा साहित्य एवं समाज' विषय पर एक विचारोत्तेजक परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी के प्रख्यात साहित्यकारों ने भाग लिया । इनमें प्रमुख थे सर्वश्री राजेन्द्र अवस्थी, कमलेश्वर, डॉ. गंगा प्रसाद विमल, डॉ. बाल शौरि रेड्डी एवं डॉ. सहगल । परिषद की अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत किया । परिषद के सचिव डॉ. रामचंद्र ने संयोजक का दायित्व निभाया ।

इस अवसर पर आयोजित एक कवि गोष्ठी में सर्वश्री राजेन्द्र अवस्थी, डॉ. गंगा प्रसाद विमल, सत्य नारायण (पटना), बुद्धिनाथ मिश्र (कलकत्ता), राधेश्याम बंधु, उपेन्द्र रैना, डॉ. रामचंद्र, डॉ. गरेवाल, डॉ. सतीश कांत एवं मधुरिमा सिंह (गोरखपुर) ने भाग लिया ।

गुरु जितेन्द्र महाराज सम्मानि

उज्जैन । भोपाल की सांस्कृतिक संस्था 'मधुकर' द्वारा महाकालेश्वर उत्सव में बनारस घराने के प्रख्यात कत्थक गुरु जितेन्द्र महाराज को श्रेष्ठ कला आचार्य अलंकरण से सम्मानित किया गया । गुरु-शिष्य परंपरा का अनुसरण करते हुए गुरु जितेन्द्र महाराज ने अनेक युवा प्रतिभाओं की कला को संवारा है ।

महाकालेश्वर मंदिर में आयोजित इस दो दिवसीय उत्सव में गुरु जितेन्द्र महाराज की दो शिष्याओं नलिनी-कमलिनी और दीपांजलि ने नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किये ।

इस उत्सव में विक्रम विश्वविद्यालय के संस्कृति विभाग के अध्यक्ष कालिदास अकादमी के निदेशक डॉ. श्रीनिवास रथ को 'महाकवि सम्मान' प्रदान किया गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

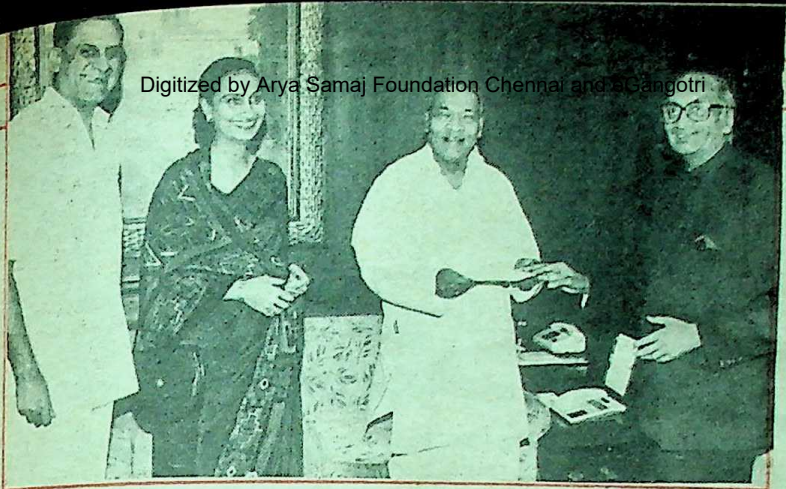

हिन्दुस्तान टाइम्स लि. के अध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार बिरला ने महाराष्ट्र के भूकंप पीड़ितों के पुनर्वास में सहायता के लिए ७५ लाख रु. की राशि का चैक प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव को उनके कार्यालय में जाकर दिया । इस अवसर पर संस्थान की कार्यकारी व संपादकीय निदेशक श्रीमती शोभना भरतिया व कंपनी के कार्यकारी अध्यक्ष श्री नरेश मोहन भी उपस्थित थे । यह धनराशि हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह ने अपने भूकंप सहायता कोष के अंतर्गत एकत्र की थी ।

'हिंदी पत्रकारिता के कीर्तिमान' प्रधानमंत्री द्वारा लोकार्पण

प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव ने अपने निवास स्थान पर सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी की नवीनतम कृति 'हिंदी पत्रकारिता के कीर्तिमान' का लोकार्पण किया । इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री राव ने अपने भाषण में हिंदी पत्रकारिता के इतिहास से संबंधित सारी सामग्री को एक साथ प्रस्तुत करने की आवश्यकता प्रतिपादित की ।

अट्टहास पुरस्कार

लखनऊ : देश की अग्रणी साहित्यिक संस्था 'माध्यम' ने सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री लाल शुक्ल तथा लोकप्रिय हास्य व्यंग्य कवि सुरेश नीरव को इस वर्ष के 'अट्टहास' पुरस्कार से सम्मानित किया । यह पुरस्कार समारोह लखनऊ के गन्ना सहकारी प्रतिष्ठान के प्रेक्षागृह में क्रमशः मोतीलाल वोरा राज्यपाल उ. प्र. तथा मुख्यमंत्री मुलायम सिंह द्वारा प्रदान किये गये । इसी क्रम में एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री गोविंद व्यास, के. पी. सक्सेना, शैल चतुर्वेदी, अल्हड़ बीकानेरी, प्रेम किशोर 'पटाखा', सूर्यकुमार पांडेय, सुश्री अंजू निगम, विनय सरगम तथा संस्था के सचिव अनूप श्रीवास्तव के अतिरिक्त अनेक कवियों ने काव्यपाठ किया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

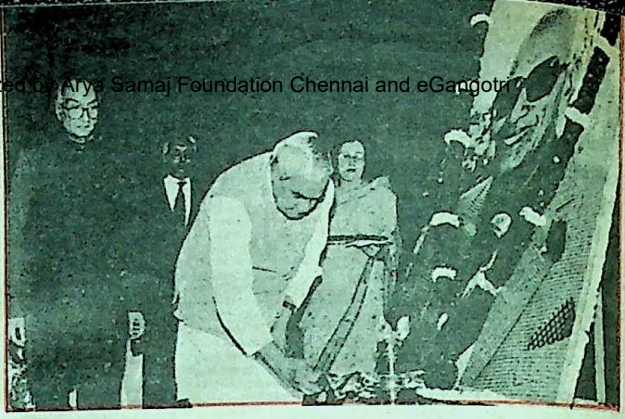

सुविख्यात उद्योगपति एवं कर्मयोगी श्री घनश्यामनदासजी बिड़ला की जन्मशती पर एक सादगीपूर्ण किंतु भव्य समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, पूर्व केंद्रीय मंत्री तथा राज्यपाल श्री सी. सुब्रमण्यम, सुप्रसिद्ध राजनेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उपेन्द्र बख्शी ने स्व. श्री घनश्यामदासजी बिड़ला के 'विराट व्यक्तित्व' एवं 'कालजयी कृतित्व' को भावभीनी श्रद्धांजलि दी । प्रारंभ में सांसद श्री कृष्ण कुमार बिड़ला ने अतिथियों का स्वागत किया । अंत में श्रीमती सरला बिड़ला ने धन्यवाद ज्ञापन किया । समारोह के संचालक थे श्री आदित्य विक्रम बिड़ला ।

समारोह के आरंभ में हिंदुस्तान टाइम्स लि. की कार्यकारी एवं संपादकीय निदेशक श्रीमती शोभना भरतिया एवं सुश्री मंजूश्री ने पुष्पहारों से विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया।

नयी दिल्ली । 'हिंदी के लोग पहले वाक्य पूरा लिखना जरूरी समझें'—ये विचार सुप्रसिद्ध कवि त्रिलोचन ने नयी दिल्ली में आयोजित बसंत संगोष्ठी में व्यक्त किये । भारतीय विद्या भवन और हिंदी अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पर्यावरणोन्मुखी साहित्यिक मंच 'बरगद' की यह ५५वीं काव्य-गोष्ठी थी ।

एकल काव्यपाठ के अंतर्गत इस गोष्ठी में डॉ. प्रमोद सिन्हा ने काव्य पाठ किया ।

इस बसंत संगोष्ठी के दूसरे भाग में डॉ. शेरजंग गर्ग, सुश्री इन्दु जैन, श्री लक्ष्मीशंकर बाजपेयी, सोमदत्त शर्मा, रामप्रकाश राही, सुरेन्द्र पंत और कुमारी नूपुर शर्मा ने अपनी कविताएं पढ़ीं ।

—योगेश्वर शर्मा

भिलाई । 'कादम्बिनी क्लब' एवं वैदेशिक भाषा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में जबलपुर के उदीयमान कवि डॉ. विकास राय के सम्मान में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निवर्तमान पुलिस अधीक्षक विजय वाते ने कवि के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उनके संग्रह के लिए बधाई दी । अध्यक्ष डॉ. विमल कुमार पाठक, विशेष अतिथि श्री रवि श्रीवास्तव एवं श्री परमानंद श्रीवास्तव ने भी अपने विचार व्यक्त किये । 'कादम्बिनी' क्लब के संयोजक श्री डी. पी. देशमुख ने सबका अभिनंदन करते हुए क्लब की ओर से श्री विकास राय को संग्रह के लिए बधाई और शुभकामनाएं दीं । गोष्ठी में सर्वश्री नरेन्द्र राठौर, डी. एन. शर्मा, राजकुमार सोनी, प्रशांत कानस्कर, अतुल पानसे, के. के.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेना, घनश्याम देवांगन, बसंत शर्मा, पी. एल. नरगिस, श्रीमती प्रभा सरस, श्रीमती पानसे, के. बी. रेखा आदि रचनाकारों ने अपने विचार व्यक्त किये ।

साहित्यिक गोष्ठी

सीतामढ़ी । स्थानीय बुद्धिजीवियों, रचनाकारों तथा गणमान्य व्यक्तियों की एक बैठक विवाइ-पंचमी के अवसर पर 'कादम्बिनी-क्लब' के तत्वावधान में हुई । बैठक की अध्यक्षता क्लब की संयोजिका आशा 'प्रभात' ने की ।

बैठक में उपस्थित रचनाकारों ने विवाइ-पंचमी को मिथिलांचल की सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक बताते हुए इसके पौराणिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व की विस्तार से चर्चा की ।

बैठक में सर्वश्री जगदीश प्रसाद, विजय सुन्दरका, रामचंद्र विद्रोही, दीपक कुमार तिवारी, अजय विद्रोही, अवध बिहारी शरण 'हितेन्द्र', विपुल कुमार 'बादल', मुर्तजा अंसारी तथा सुश्री वंदना आदि उपस्थित थे ।

वसंत पंचमी पर काव्य गोष्ठी

साईंखेड़ा (नरसिंहपुर) : वसंत पंचमी के अवसर पर 'कादम्बिनी क्लब' की साहित्य गोष्ठी शा. उ. मा. वि. में संपन्न हुई । इस अवसर पर सर्वश्री नरहरि दत्त वसेड़िया, रेवाशंकर कटारे, शेख जफर, रामेश्वर दयाल, वसेड़िया, वेणीशंकर 'ब्रज', मेहरवानसिंह पटेल, डॉ. गनेश सोनी, संजय गुप्ता, एम. पी. झारिया, ए. के. तिवारी, शिवकुमार शर्मा, रामसिंह पटेल, कीर्तिवर्धन भदोरिया ने काव्य पाठ किया ।

'कादम्बिनी-क्लब' के सदस्यों की रचनाएं

मैं कौन हूं

एक सतत अजस्र धारा
प्रवाहित होती है
मेरे अंतर्मन में
सत्य का पैनापन
मुझे चीर डालता है
और मेरी स्वप्निल आंखें
खुली की खुली रह जाती हैं
पत्थर की प्रतिमा
बन जाता है मेरा शरीर
घड़ी की टिक-टिक की तरह
सिर्फ धड़कता है
मेरा नन्हा-सा दिल
कुंए की अतल गहराई में
हवा जाती है आती है
और नाक के आस-पास
उसके आने और जाने की
मैं सरसराहट सुनता हूं
पथरीली आंखों से
मुझे कुछ नहीं दिखायी देता
अजीब सन्नाटा है
लगता है जैसे
मैं नहीं हूं
कैसा करिश्मा है
मैं नहीं हूं फिर भी मैं हूं
पर इतना पता नहीं
मैं कौन हूं— मैं कौन हूं

— गोपाल भारती

अनुपम लोक बैंक स्ट्रीट, अनूपगढ़-३३५७०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब भारत सरकार ने कोयले की दलाली की थी

''वे मुसलमान, जो देश के प्रति गद्दारी करते पाये जाएं, अथवा गैर-वफादार हों, उन्हें सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए । इनके अतिरिक्त, वे मुसलमान, जिनका भूतकाल में आचरण संदेहास्पद रहा हो, उन पर कड़ी निगरानी रखी जाए, तथा इन लोगों को ऐसे पदों पर कदापि नियुक्त न किया जाए जिससे ये लोग देश को नुकसान पहुंचा सकें...''

उपरोक्त वक्तव्य भारत की एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक पार्टी सोशलिस्ट पार्टी के १४, १५ व १६ अक्तूबर १९४७ को दिल्ली में हुए राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव का अंश है । प्रस्ताव में आगे यह भी कहा गया था,

''वे मुसलमान, जो देश के प्रति पूर्ण रूप से वफादार रहे हैं, तथा जिन्होंने दो राष्ट्रों के शरारतपूर्ण सिद्धांत का विरोध किया था, उनके साथ अन्य संप्रदायों के लोग कोई भेदभाव न बरतें ।''

भारत की सोशलिस्ट पार्टी द्वारा १९४७ में पारित उपरोक्त प्रस्तावों को स्व. श्री जयप्रकाश नारायण ने प्रस्तुत किया था ।

कोयले की समस्या

यह बिलकुल सच है कि पाकिस्तान बनने के पश्चात भारत सरकार ने कोयले की आपूर्ति हेतु पाकिस्तान की सहायतार्थ पाकिस्तान का एजेंट बनना स्वीकार कर लिया था । विभाजन के दौरान भारत की कोयला खानों के मालिक पाकिस्तान को कोयला भेजने में अनिच्छुक थे । दूसरी ओर पाकिस्तान द्वारा कोयले की खरीद-फरोख्त के लिए कोई प्रणाली उस समय तक तय नहीं की गयी थी । ऐसी स्थिति में भारत सरकार ने कोयले की आपूर्ति के लिए पाकिस्तान का दलाल बनना स्वीकार कर लिया ।

यदि भारत सरकार ऐसा नहीं करती तो पश्चिमी पाकिस्तान को कोयले की पूर्ति पूर्णतः ठप्प हो जाती जिससे वहां का रेल यातायात पूर्णतः अवरुद्ध हो जाता । सन १९४७-४८ के दौरान पांच महीनों में, जब भारत सरकार ने सहृदयतापूर्वक पाकिस्तान को कोयला आपूर्ति के कार्य में उसका एजेंट बनना स्वीकारा था, केवल उत्तर-पश्चिमी रेलवे को (वर्तमान पाकिस्तान में) २,८०,००० टन कोयला भेजा गया था ।

पाकिस्तानी शोधार्थियों को भारतीय सहायता

अगस्त १९४७ में विदेशों में स्थित भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूतावासों द्वारा भारत सरकार को सूचित किया गया कि अमरीका, इंगलैंड तथा आस्ट्रेलिया में अध्ययनरत पाकिस्तान की नागरिकता स्वीकार करनेवाले शोधार्थियों को पाकिस्तान से वृत्ति नहीं मिल रही ।

भारत सरकार ने महसूस किया कि पाकिस्तान सरकार का शिक्षा विभाग छात्रों को समय पर धन भेजने में कठिनाई का अनुभव कर रहा है । इस कारण भारत सरकार ने अपने दूतावासों को निर्देश दिया कि पाकिस्तानी नागरिकता स्वीकार करनेवाले शोधार्थियों को भी १५ अक्तूबर, १९४७ तक की वृत्ति दे दी जाए ।

पाकिस्तान की नयी राजधानी बनाने में भारत का योगदान

"भारत सरकार ने अपने सभी विभागों को निर्देश दिया कि पाकिस्तान सरकार के कराची स्थित नये मुख्यालय के लिए किसी भी सहायता के निवेदन पर तुरंत कार्रवाई की जाए । इस विषय में निर्माण सामग्री, जैसे सीमेंट, स्टील तथा अन्य फिटिंग्स को वहां जल्द से जल्द भेजने का प्रावधान था । ...कराची तथा ढाका में टेलीफोन-व्यवस्था प्रारंभ की गयी... इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा कराची में लेखा-कार्यालय खोला गया, जिससे वहां पहुंचनेवाले पाकिस्तानी सरकारी अधिकारियों के वेतन तथा अन्य भत्तों का भुगतान शीघ्रता से किया जा सके । पाकिस्तान की संविधान परिषद् के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की नियुक्ति तथा संविधान परिषद् के प्रयुक्तार्थ मुद्रित स्टेशनरी मुहैया करवाने का कार्य भी भारत ने किया ।

—प्रस्तुति : न.ख.

हंसिकाएं

विवाह किया न मेहंदी रचायी
न ही जमी हथेली पर सरसों
लहरें कल-कल करती रहीं
तुम कहते रहे 'परसों-परसों'

प्रदूषण

पर्यावरण में प्रदूषण पर टिप्पणी देते हुए
वे लगे कहने...
हमें तो पश्चिमी सभ्यता से गिला है
पश्चिमी संगीत...पश्चिमी चलन यों बढ़ गया है
कि सुबह-सुबह सूरजमुखी का फूल भी
पश्चिम की ओर मुंह किये खिला है ।

पाई

पिता से ऋण लेकर बेटे ने कहा,
"मैं आपकी पाई-पाई चुका दूंगा"
पिता ने चाहा यही कहना
'रुपये लिए हैं...रुपये ही चुका देना'

निष्कर्ष

यशोधरा का सोना, बुद्ध का गमन
सीता को सोने के हिरण का आकर्षण
दमयंती का सोना...
सोने का विश्लेषण किया
महिलाओं ने प्रायः सोने के लोभ में
सोना गंवा दिया

संतुलन

प्रश्न—बिटिया कुंआरी...तो काहे की सोच ?
उत्तर—फूल-सी देह...मनभर का बोझ !

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष समस्या और समाधान

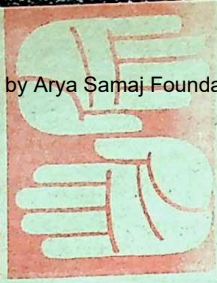

● अजय भाम्बी

हरीश चंद्र, सबाथू (सोलन)

प्रश्न : ४ वर्ष से प्रेम संबंध, पति-पत्नी की तरह हैं। प्रेम विवाह कब तक संभव है ?

उत्तर : इस वर्ष विवाह होने की पूर्ण संभावना है।

जी. एल. शर्मा, चंडीगढ़

प्रश्न : घर-संपत्ति का झगड़ा कब हल होगा ?

उत्तर : अगले वर्ष।

किरण स्वर्णकार, नयी बंबई

प्रश्न : क्या इस जीवन में दृढ़ निश्चय एवं आध्यात्मिक विकास करके अपने आराध्य गुरु के सशरीर दर्शन कर पाऊंगी ?

उत्तर : संभावना तो है।

देवकी, अहमदाबाद

प्रश्न : शारीरिक कष्ट कब तक ? रत्न का सुझाव दें ?

उत्तर : पन्ना धारण करें, शीघ्र ही लाभ होगा।

प्रेमशंकर शर्मा, फिरोजाबाद

प्रश्न : राजनीतिक भविष्य कैसा है। रत्न सुझाएं ?

उत्तर : राजनीतिक भविष्य अच्छा है लेकिन वास्तविक उपलब्धियां १९९७ के बाद होंगी। माणिक धारण करें।

राकेश कुमार पांडे, नैनीताल

प्रश्न : नौकरी में परिवर्तन कब तक ?

उत्तर : प्रयास करें, जल्दी ही सफलता प्राप्त होगी।

अल्का अग्रवाल, बेगूसराय

प्रश्न : विवाह का तेरहवां साल चल रहा है, संतान योग है या नहीं ? कब तक ?

उत्तर : सूर्य को चालीस दिन जल चढ़ायें, संतान लाभ होगा।

सरल जैन, जयपुर

प्रश्न : क्या विदेश जाने का योग है और कब तक ?

उत्तर : है, थोड़ा इंतजार करें।

नीरज, टुटेजा, दिल्ली

प्रश्न : ३ वर्ष के बाद श्रवण शक्ति बंद, अब पीठ भी खराब, कब तक ठीक होगा ?

उत्तर : योग्य चिकित्सक का परामर्श लें, लाभ मिलने की संभावना है।

डॉ. तनुजा सिन्हा, पटना

प्रश्न : सफल चिकित्सक कब तक बनूंगी ?

उत्तर : शेष वर्ष अच्छा व्यतीत होगा।

भोलानाथ त्रिपाठी, इलाहाबाद

प्रश्न : पद परिवर्तन संभव है ? हां, तो कब तक ?

उत्तर : अक्तूबर से पूर्व पद परिवर्तन हो जाएगा।

कल्पना बापना, उदयपुर

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : १४ माह के भीतर विवाह संपन्न हो जाएगा।

लोकेंद्र शर्मा, जयपुर

प्रश्न : न्यायालय में विवाद चल रहा है, सर्विस (दूरदर्शन) लगेगी या नहीं ?

उत्तर : आपको सफलता मिलेगी।

वीरेंद्र शुक्ला, गोंडा

प्रश्न : डीजल पंप का लाइसेंस कब तक ? उपाय बतायें ?

उत्तर : अभी संभावना कम है।

संध्या श्रीवास्तव, जबलपुर

प्रश्न : पुत्र जन्म होगा या नहीं और कब ?

उत्तर : अगले वर्ष निसंदेह पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी। आप भी प्रार्थना करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमेश कुमार भटनागर, दिल्ली

प्रश्न : मेरा स्वयं का मकान कब तक ?

उत्तर : मकान का योग चल रहा है लेकिन फलीभूत होने में समय लग जाएगा ।

सरिता अग्रवाल, मुरादाबाद

प्रश्न : पदोन्नति कब तक होगी ?

उत्तर : अगस्त के बाद और अप्रैल '९५ से पहले ।

मुकेश माहेश्वरी, धार

प्रश्न : मेरा सी. ए. कब तक पूर्ण होगा या नहीं ?

उत्तर : अवरोध के साथ पूर्ण हो जाएगा ।

शिशिर कुमार चतुर्वेदी, लखनऊ

प्रश्न : ५ नौकरी बदल ली, स्थायित्व कब आएगा ?

उत्तर : व्यापार करें, करोड़पति होने का योग है और शुभ समय सितंबर से शनैः-शनैः प्रारंभ होगा ।

भूपेंद्र नाथ मिश्र, बक्सर

प्रश्न : इंजीनियरिंग में दाखिला कब तक ?

उत्तर : इस वर्ष सफलता मिलने की पूर्ण संभावना है ।

भगवंत उपाध्याय, इंदौर

प्रश्न : कर्ज से मुक्ति एवं भाग्योदय कब ?

उत्तर : धनागमन अब अच्छा होने लगेगा और बहुत-सारे कर्ज से मुक्ति अगले वर्ष मिलेगी ।

विवेक शर्मा, नयी दिल्ली

प्रश्न : जिससे प्रेम है, क्या उससे विवाह का योग है ?

उत्तर : श्रीमान आपकी कुंडली गलत है ।

सविता वर्मा, बरेली

प्रश्न : नौकरी में प्रमोशन कब होगा ?

उत्तर : अक्तूबर के बाद ।

— 'नक्षत्र निकेत' ९४४/३, नाईवाला, फेज रोड, करोलबाग नयी दिल्ली-११०००५

प्रविष्टि—१४७

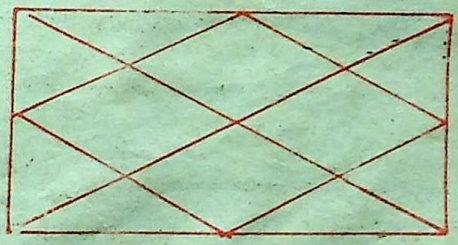

नाम.....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख).....**महीना**.....**सन**.....

जन्म-स्थान.....**जन्म-समय**.....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण.....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १४७) 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग,

नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० मई, १९९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाड़ियों का फिल्मों में योगदान

● भारत भूषण श्रीवास्तव

भारत-पाकिस्तान विभाजन के पूर्व पृथ्वीराज कपूर लाहौर विश्वविद्यालय की हाकी टीम के कप्तान थे । पृथ्वीराज कपूर सेंटर फारवर्ड के बेहतरीन खिलाड़ियों में थे ।

पिछले साल जो अच्छी हिंदी फिल्में प्रदर्शित हुईं उनमें से एक थी 'अश्विनी' । इस फिल्म की प्रमुख विशेषता स्वयं नायिका का धाविका होना था, शायद इसीलिए खेलों पर बनी बहुत कम हिंदी फिल्मों में से यह दर्शकों के गले सहज रूप से उतरी । बेशक अश्विनी एक स्वाभाविक फिल्म थी जिसमें नायिका और धाविका अश्विनी ने अपने अभिनय से जान डाल दी । अन्यथा इस फिल्म का हश्र भी आम खेल प्रधान हिंदी फिल्मों-जैसा होना था जिनमें निर्माता निर्देशक बजाय खेल और खिलाड़ी के फूहड़ता भरकर खेल और फिल्म दोनों का सत्यानाश कर देते हैं ।

यों खेलों पर हिंदी में कई फिल्में बनी हैं, लेकिन अच्छी फिल्में अपवाद रही हैं । इसकी मुख्य वजह खेल की प्रकृति को न समझ पाना और खिलाड़ी जीवन के उतार-चढ़ाव, संघर्ष और अंतर्द्वंद्व को कैमरे में कैद न कर पाना है ।

खिलाड़ी अभिनेता

फिल्म और खेल दोनों एक-दूसरे के बेहद करीब रहे हैं । हिंदी फिल्मों के सफलतम नायक और सबसे बड़े निर्देशक स्व. पृथ्वीराज कपूर से फिल्म और खेल के संबंधों की शुरूआत की जा सकती है, हालांकि ढाई सौ से अधिक फिल्मों में अभिनय कर चुके चरित्र अभिनेता खलनायक जानकीदास की उपलब्धियां पृथ्वीराज कपूर से कहीं ज्यादा और सहज हैं लेकिन पृथ्वीराज कपूर की चौथी पीढ़ी की करिश्मा कपूर अब फिल्मों में अपने पांव जमा चुकी है और कपूर खानदान की फिल्मी उपलब्धियों की गिनती सरलता से नहीं की जा सकती । हकीकतन दर्शकों और खेल प्रेमियों के बीच की दूरी को पाटने में मुगले आजम के जिल्लेलाही पृथ्वीराज कपूर का योगदान किसी और फिल्मकार से कहीं ज्यादा है ।

भारत-पाकिस्तान विभाजन के पूर्व पृथ्वीराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

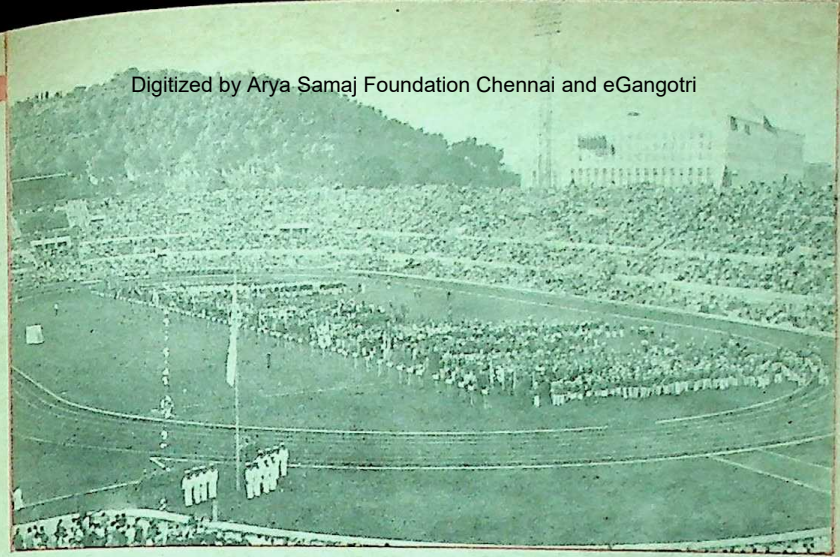

कपूर लाहौर विश्वविद्यालय की हॉकी टीम के कप्तान थे । पृथ्वीराज कपूर सेंटर फारवर्ड के बेहतरीन खिलाड़ियों में से एक थे । पुराने और बुजुर्ग दर्शक इस बात के साक्षी हैं कि पृथ्वीराज कपूर ने हॉकी से ज्यादा शौहरत बटोरी थी बनिस्बत फिल्मों के । विभाजन के बाद पृथ्वीराज कपूर बंबई में जम गये और फिल्म लाइन पकड़ ली । हॉकी की तरह ही उन्होंने फिल्मों में भी लगन और मेहनत से काम किया । इसे पृथ्वीराज कपूर के व्यक्तित्व की खूबी ही कहा जाएगा कि कपूर खानदान का हरेक सदस्य अभी तक फिल्मों में टिका है । भले ही करिश्मा कपूर ने कपूर परिवार के उसूलों को तोड़ा हो, लेकिन उसे फिल्में हथियाने के लिए इधर-उधर मुंह नहीं मारना पड़ा । प्रसंगवश यह लिखना जरूरी है कि बंबई में जमने में पृथ्वीराज कपूर को कोई आर्थिक परेशानी हॉकी की वजह से नहीं आयी थी ।

खलनायकी और खेल के रेकॉर्ड

पुराने फिल्मकारों में जानकीदास ने फिल्म और खेल दोनों में बराबरी से सफलतापूर्वक पैसा और नाम कमाया । यों फिल्मकार के रूप में जानकीदास को देखा जाए तो उन्होंने नब्बे फीसदी फिल्मों में खलनायक के रूप में दी है । भले ही उनमें से आधी सह खलनायक की हों या बुरे आदमी की, जिसके सर पर टोपी और हाथ में छाता रहता है । फिल्मों में जानकीदास की विशेषता रही है कि उन्होंने हर छोटे-बड़े निर्माता निर्देशक और कलाकार के साथ काम किया है । हालांकि अधिकांश फिल्मों में वे अतिथि कलाकार के रूप में दिखायी दिये ।

इन्हीं जानकीदास की खेल उपलब्धियां किसी विश्व स्तर के खिलाड़ी से कम नहीं रहीं । यह तथ्य आम दर्शक की सोच से परे है कि दुबले-पतले जानकीदास के नाम आज भी एक विश्व कीर्तिमान दर्ज है । सन १९३८ में जानकीदास ने आस्ट्रेलिया में ५०० मीटर की दौड़ को ५०.१ सेकंड में तय किया था । इससे पहले जानकीदास की खेल उपलब्धियां इस प्रकार रही हैं । साइकिलिंग ५० मील की दौड़ १ घंटा ४८ मिनट ५ सेकंड में पूरी करके सनसनी फैला दी थी । पंजाब में १९३६ में जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने इस हैरतअंगेज कारनामे को अंजाम दिया तो तत्कालीन ब्रिटिश हुकूमत ने १९३६ में ही बर्लिन ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधि नियुक्त कर भेजा । लेकिन कुछ कारणों से जिन्हें अधिकृत रूप से अभी तक प्रकाशित नहीं किया गया,जानकीदास बर्लिन ओलंपिक में भागीदारी नहीं कर सके । इसे जानकीदास का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा, लेकिन उनकी कामयाबियों का सिलसिला थमा नहीं । सन १९४० में 'ईस्टर्न गेम्स' के लिए जानकीदास को टोकियो भेजा गया, जहां उन्होंने १०० से ५०० मीटर दौड़ के तमाम कीर्तिमान तोड़कर धूम मचा दी थी ।

फिल्मों की तरह जानकीदास की खेल उपलब्धियों की सूची काफी लंबी है जिनमें से उल्लेखनीय सन १९४९ के ओलंपिक में पहले एशियाई के रूप में पुरस्कार बांटना और निर्णायक बनने का श्रेय है ।

फिल्म के लिए खेल जीवन छोड़ा

पुराने खिलाड़ियों में दीनदयाल का नाम उल्लेखनीय है जिसका हॉकी कैरियर फिल्मों के कारण बरबाद हो गया । दीनदयाल हॉकी का मशहूर खिलाड़ी रहा उसने ओलंपिक समेत कई महत्त्वपूर्ण स्पर्धाओं में भारत का नेतृत्व किया लेकिन जब दीनदयाल का खेल शवाब पर था और हॉकी प्रेमियों की जुबान पर दीनदयाल का नाम जीत के पर्याय के रूप में चढ़ा, तब दीनदयाल चकाचौंधी फिल्मी दुनिया के मायाजाल में फंसकर हॉकी और फिल्म दोनों से विदा हो गये । अपने जमाने की मशहूर गायिका और अभिनेत्री सुरैया के साथ उन्होंने निर्माता लेखराज भाखड़ी की फिल्म 'रेशमा' से अनुबंध किया । दीनदयाल के हॉकी हिट के मुकाबले रेशमा सुपर 'फ्लाप' रहीं और अवसाद से भरे दीनदयाल का नाम हॉकी और फिल्म दोनों से लुप्त हो गया ।

पहलवान और फिल्मी दंगल

जानकीदास की तरह खेल और फिल्मों में सफल नाम दारासिंह का है । एक पहलवान के रूप में दारासिंह ने देश के लिए कई कुश्तियां जीती हैं । मूलतः विदेशों में दारासिंह को पहलवान के रूप में पहचाना जाता है, फिल्मकार के रूप में नहीं । अपने समय के नामी गिरामी अंतरराष्ट्रीय पहलवानों को दारासिंह ने धूल चटायी है । फिल्मों में दारासिंह की छवि देहाती दर्शकों के लिए हनुमान के रूप में ठीक वैसी ही रही है जैसी खलनायक जीवन की नारद मुनि के रूप में है । दूरदर्शन धारावाहिक रामायण (रामानंद सागर कृत) ने तो दारासिंह को पूरे देश में हनुमान के रूप में, अरुण गोविल और दीपिका की तरह पूज्यनीय बना डाला । हालांकि दारासिंह ने सौ से ज्यादा व्यावसायिक फिल्मों में भी अभिनय किया है और पहलवानी की तरह अभिनय के क्षेत्र में भी दर्शकों से अपनी क्षमता का लोहा मनवा लिया है ।

खेल में चमके : फिल्मों में डूबे

फिल्मों में आये कई पहलवानों के नाम उल्लेखनीय हैं, लेकिन वे दारासिंह जितने सफल नहीं रहे । दारासिंह का भाई रंधावा 'रुस्तमे हिंद' का खिताब रखता है, अधिकांश फिल्मों में वह दारासिंह के साथ नजर आया लेकिन दर्शकों ने उसे विशेष तवज्जो नहीं दी । इसी तरह 'महाभारत केसरी' और 'महाबली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसी उपाधियों से विभूषित एशियाई स्वर्ण पदक विजेता सतपाल पहलवान ने भी फिल्मों में भाग्य आजमाया, लेकिन उसके हाथ भी असफलता ही लगी । सतपाल ने कुश्ती पर बनी हरियाणवी फिल्म 'प्रेमी रामफल' में अभिनय किया था लेकिन दर्शकों के गले उसके न कुश्ती के दृश्य उतरे न अभिनय । लिहाजा हॉकी सितारे दीनदयाल की तरह सतपाल भी गये वक्त के अंधेरे में डूब गये ।

सतपाल की तुलना में एशियाई चैंपियन मास्टर चंदगीराम दो फिल्मों 'वीर घटोत्कच' और 'वीर अभिमन्यु' के जरिये चमके, लेकिन उनकी तीसरी फिल्म 'टारजन ३०३' बुरी तरह असफल रही । नतीजतन चंदगीराम को फिल्मी दुनिया से नाता तोड़ लेना पड़ा ।

अपवाद दारासिंह को छोड़कर पहलवानों का फिल्मों में असफल होने का कारण उनके डीलडौल के कारण विशेष धार्मिक भूमिकाओं का ही मिलना है । अन्य भूमिकाओं, खासतौर से रोमांटिक में वे कहीं से खरे नहीं उतरते । इसके अलावा संवेदनशील भूमिकाओं में भी पहलवान मात खा जाते हैं । फिल्मकार मात्र नाम की वजह से उन्हें फिल्मों में खींच लाते हैं । वापसी अकेले और असफल होती है ।

जिमनास्टिक से भी कई खिलाड़ी फिल्मों में आये लेकिन वे न तो फिल्मों में चले और न ही खेलों में स्तरीय थे ।

स्वर्ण पदक विजेता खलनायक

धर्मेंद्र अभिनीत हिट फिल्म 'हुकूमत' का खलनायक परवीन कुमार फिल्मी दुनिया में अपना सिक्का जमा चुका है । परवीन कुमार की विशेषता उसका भारी डील-डौल और

खलनायकी के तमाम लटके-झटकों को बारीकी से जानना है । परवीन कुमार अब तक लगभग पच्चीस फिल्मों में अभिनय कर चुका है और लगभग इतनी ही उसके पास हैं भी । इसी परवीन कुमार ने सन १९६६ के एशियाड (बैंकॉक) में भारत को स्वर्ण पदक दिलाया था । एक खलनायक के रूप में उसका भविष्य उज्ज्वल दिखता है ।

खेल और फिल्मों पर लिखा जाए तो क्रिकेट हर जगह मौजूद है । क्रिकेट जितना लोकप्रिय खेल है उतने ही लोकप्रिय उसके खिलाड़ी हैं । क्रिकेटे और फिल्मों का चोली-दामन का-सा साथ है । कई खिलाड़ी फिल्मों में आये, कुछ सफल हुए कुछ असफल । कुछ क्रिकेट खिलाड़ी शिखर की अभिनेत्रियों से रोमांस और विवाह के कारण सुर्खियों में रहे ।

अगर फिल्म नगरी मायाजाल और चकाचौंधी है तो क्रिकेट की दुनिया की भी सीमाएं नहीं । इन दोनों दुनियाओं में विकट की समानता है जिस तरह एकाध फिल्म के सुपर हिट हो जाने पर सलमान और आमिर खानों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शक पलकों पे बिठा लेते हैं, तो दूसरी तरफ मैदान में धुंआधार बल्लेबाजी करके सैकड़ा बना रहे सचिन तेंदुलकर और विनोद कांबली को भी दर्शक हाथोंहाथ लेते हैं । हालांकि ये हालिया वाकये हैं कि पीछे मुड़े तो रोमांस, विवाह और अभिनय तीनों व्यापक रूप में मिलते हैं ।

रेकॉर्ड फिल्मों और क्रिकेट दोनों में

विश्व का महानतम बल्लेबाज सुनील गावस्कर सफल अभिनेता रहा है । उसकी मराठी फिल्म 'सावली प्रेमाची' ने बॉक्स आफिस के तमाम रेकॉर्ड तोड़कर रख दिये थे । ठीक वैसे ही जैसे खुद सुनील गावस्कर को रेकॉर्ड तोड़ने की आदत रही है । ऐसा महज इसलिए नहीं था कि दर्शक क्रिकेट खिलाड़ी सुनील गावस्कर को देखने थियेटर में पहुंचे हों, बल्कि समीक्षकों का मानना है कि वाकई इस फिल्म में सुनील ने जबरदस्त प्रभावशाली अभिनय किया था । इसके बाद गावस्कर ने एक और मराठी फिल्म 'झकोल' में काम किया । यह फिल्म भी कामयाब रही । सुनील गावस्कर मूल रूप से मराठी हैं लेकिन हिंदी फिल्म निर्माताओं ने हर तरह से उस पर डोरे डाले कि किसी तरह इस महानतम बल्लेबाज को फांसकर दर्शकों और पैसों का जमाव किया जा सके परंतु सुनील गावस्कर जितना मंजा हुआ खिलाड़ी और अभिनेता है उतना ही मंजा हुआ व्यक्तित्व भी निकला । संभवतः हिंदी फिल्मों में सलीम दुर्रानी और संदीप पाटिल की दुर्दशा उसे हिंदी फिल्मों में आने से रोक रही थी ।

फिल्मी पिच पर क्लीन बोल्ड

क्रिकेट जगत के दो धुंआधार बल्लेबाज सलीम दुर्रानी और संदीप पाटिल एक-एक असफल फिल्म देकर गुमनामियों के अंधेरे में खो गये । इन दोनों के पास फिल्मों के लायक चेहरे-मोहरे तो थे लेकिन लचर कहानी और अपरिपक्व संवाद अदायगी इन्हें ले डूबी ।

संदीप पाटिल की 'कभी अजनबी थे' में दो नायिकाएं थीं पूनम ढिल्लो और देवश्री राय । यह फिल्म पूरी तरह फ्लाप रही । इसी तरह वर्षों पहले सलीम दुर्रानी की फिल्म 'चरित्र' भी 'सुपर फ्लाप' रही थी । सलीम दुर्रानी तो वी.आर. इशारा-जैसे नामी निर्देशक ने अनुबंधित किया था लेकिन फिल्म 'पिट' जाने के बाद सारा गुबार दुर्रानी की भरभरायी आवाज पर उतार दिया गया ।

बहरहाल मात्र दो उदाहरणों ने सिद्ध कर दिया कि पिच पर रन बटोर रहे बल्लेबाज परदे पर इतने सफल नहीं हो सकते कि सिनेमा हॉल में दर्शक बटोर सकें । पाकिस्तानी खिलाड़ी मोहसिन खान ने तो इस धारणा तथ्य को और भी पुख्ता कर दिया । करोड़ों के बजटवाली धर्मेंद्र और विनोद खन्ना की वापसी के तुरंत बाद प्रदर्शित भव्य फिल्म 'बंटवारा' में मोहसिन खान रिरियाता नजर आया । पत्नी रीना राय के प्रभाव से मोहसिन खान को दो-चार फिल्में और मिलीं लेकिन उनमें उसकी भूमिका पुलिस इंस्पेक्टर या नायिका के भाई-जैसी गोल रही ।

मशहूर पाकिस्तानी खिलाड़ी इमरान खान पर भी हिंदी फिल्म निर्माताओं ने काफी डोरे डाले लेकिन वह भी सुनील गावस्कर की तरह किसी झांसे में नहीं आया अस्तु हरफनमौला कपिलदेव एक फिल्म क्रिकेटर में काम कर रहा है ।

—नंदवाना, विदिशा (म.प्र.)-४६४००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शून्य बोध

● राधाकृष्ण प्रसाद

पिछले साल जब मैं बदली पर इस शहर में आया, तब बाबू प्रभुदयाल के मकान में ही शरण मिली। दो कमरों का छोटा-सा मकान है। छह सौ रुपये किराये में देना पड़ता है। अपनी मां और एक छोटी बहन के साथ गुजर-बसर कर रहा हूं।

बाबू प्रभुदयाल एक बुजुर्ग आदमी हैं। पैंसठ से ऊपर की उम्र है। पत्नी बीमार रहती है। दो लड़कियों का विवाह किया। तीन बेटों को पढ़ाया-लिखाया। एक बेटा तो नौकरी में लग गया। उसका ब्याह भी कर दिया। वह नौकरी पाकर मध्यप्रदेश चला गया। बाकी दोनों बेटे अभी बेकार हैं। एक एम.ए. पास कर समय काटने के लिए लॉ पढ़ रहा है। दूसरा फर्स्ट क्लास साइंस ग्रेजुअट है। कई जगह इंटरव्यू देकर भी नहीं चुना गया। अब वह किसी चमत्कार की प्रतीक्षा में है।

बाबू प्रभुदयाल गांधीवाद से प्रभावित होकर उसके आदर्शों से चिपके रहे। सन '४२ के आंदोलन में भूमिगत होकर काम करते रहे। पकड़े जाने पर तीन साल की सजा हुई थी। जेल से जब छूटे तब देश आजाद हो चुका था। वे मैट्रिक पास थे—इंटर के प्रथम वर्ष में थे कि सन '४२ में 'अंगरेजो भारत छोड़ो' का नारा लगाने लगे। छूटने पर कोई अच्छी नौकरी तो मिल नहीं पायी, खादी-बोर्ड में लिपिक हो गये।

बाबू प्रभुदयाल खुले दिल के आदमी हैं। एक हिस्से में स्वयं रहते हैं, दूसरे हिस्से को किराये पर लगा दिया है। वे मुझसे कहते हैं—'गुप्ताजी, मैंने जीवन में एक ही बुद्धिमानी का काम किया है। चार कमरों का एक मकान रिटायर होते ही बनवा लिया। न बनवाया होता, तो सड़क पर होता।'

मैं केंद्रीय सरकार की नौकरी में हूं। पांच बजे के बाद छुट्टी हो जाती है, और मैं सीधा अपने डेरे लौट आता हूं। मेरे पास एक पुरानी साइकिल है। एक अपर डिविजन क्लर्क के पास कहने, सुनने लायक ये ही दो-चार चीजें होती हैं। पेट्रोल का दाम इतना बढ़ गया है कि किस्तों में मिलने की सुविधा पाकर भी स्कूटर नहीं खरीद पाता।

बाबू प्रभुदयाल मेरी प्रतीक्षा करते रहते हैं। वे अपने बरामदे में पड़ी पुरानी कुरसी पर बैठे मिलते हैं। मुझे देखकर पूछते हैं—"कहिए गुप्ताजी, बाजार से सब्जी ले आये ? परवल क्या भाव है ?"

"आठ रुपये किलो।" मैं उनकी उत्सुकता शांत करता हूं।

"और टमाटर ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

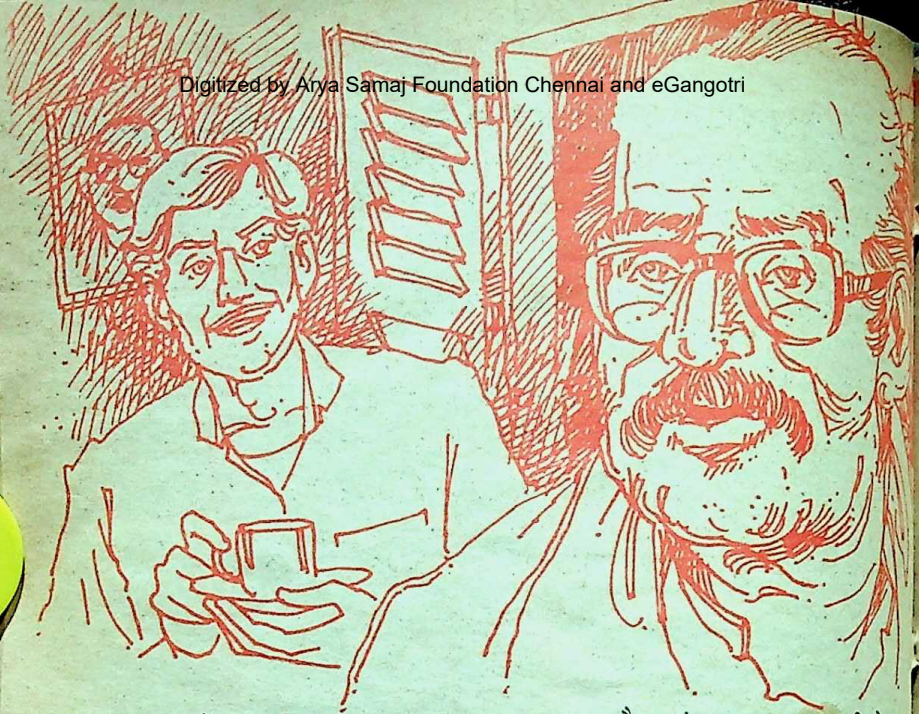

"सोलह रुपये किलो !"

बाबू प्रभुदयाल की रनिंग कमेंटरी शुरू हो जाती है—"कैसा समय आ गया है, गुप्ताजी। कभी मैं टमाटर दो आने किलो लाया करता था !"

मैं झोला संभालता अंदर चला जाता हूं। मां मेरे हाथ से थैला ले लेती है। पूछती है—"केवल आलू-प्याज ही ले आये... कोई हरी सब्जी... ?"

"हरी सब्जी खरीदने के लिए पैसा कहां है मां ! महीने का आखिरी सप्ताह चल रहा है। इसी महीने तो बेबी की इम्तहान फीस भरी है। बी.एड. की फीस।"

मां कुछ नहीं बोलती। चुपचाप स्टोव पर पानी की केटली चढ़ा देती है।

मुंह-हाथ धोकर, चाय का प्याला लेकर मैं प्रभुदयालजी के पास बिना बांह की कुरसी पर आ बैठता हूं। दूसरा प्याला उनकी ओर बढ़ा देता हूं। यह रोज का नियम है।

बाबू प्रभुदयाल प्रश्न करते हैं—"गुप्ताजी, आपकी कितनी उमर होगी ?"

"तीस पार कर गया हूं। नौकरी करते अठ साल हो गये।" "अब आपको शादी कर लेनी चाहिए। आज फिर वजरंगी बाबू आये थे—सिफारिश करवाने। बेचारे स्कूल मास्टर हैं। भगवान ने पांच बेटियां दी हैं। उन्हें देखकर लगता है, कोई गूंगे आदमी हैं ! तीन लड़की के लिए आये थे। पचीस पार कर चुकी है। टाइप राइटिंग भी जानती है।"

मैं प्रसंग को टालने के लिए कहता—"पहले बहन का ब्याह तो कर दूं। बी.ए. पास कर तीन साल से बैठी है। बी.एड. का इम्तहान अगले महीने देगी।"

बाबू प्रभुदयाल फिर अपनी पुरानी मुद्रा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं केंद्रीय सरकार की नौकरी में हूं । पांच बजे के बाद छुट्टी हो जाती है, और मैं सीधा अपने डेरे पर लौट आता हूं । मेरे पास एक पुरानी साइकिल है । एक अपर डिविजन क्लर्क के पास कहने, सुनने लायक ये ही दो-चार चीजें होती हैं । पेट्रोल का दाम इतना बढ़ गया है कि किस्तों में मिलने की सुविधा पाकर भी स्कूटर नहीं खरीद पाता ।

रनिंग कमेंटरी करने लगते हैं— "गुप्ताजी, पिछले चालीस वर्षों में जिस तरह रुपये का मूल्य दस गुना घट गया है, आदमी का मूल्य सौ प्रतिशत घटा है ! पहले लोग दिल खोलकर हंसते थे, ठहाका लगाते थे । अब लगता है, जैसे सबको सांप सूंघ गया है । अब हर कोई चौकन्ना है, आशंकित रहता है कि पता नहीं कौन बिना कारण ही, अपनी शौक के चलते पीछे से छुरा ही भोंक दे या चोर बाजार में खरीदे हुए कट्टे से निशाना लगा दे !"

बाबू प्रभुदयाल उसांस खींचकर कहते हैं— "इस देश को अब भगवान ही बचाये ! विभिन्न पार्टियों के नेतागण तो कुरसी की लड़ाई में युद्धरत हैं ।"

बहुत ही आक्रोश पाल रखा है प्रभुदयालजी ने । निम्न मध्य वर्ग के जीवन की हताशा-जैसे मुखर हो उठी है—"बाजार से किरासन तेल गायब है । कोयले का भाव आसमान छू रहा है । दो नंबर का धंधा इतना बढ़ गया है कि पहले नंबर का धंधा करनेवाला आज ढूंढ़े नहीं मिलता !"

मैं बात बदलने के लिए पूछता—"राजेश का इंटरव्यू कैसा रहा ?"

प्रभुदयाल का स्वर बेलौस है— "इंटरव्यू तो आजकल बतानाभर रह गया है । इंटरव्यू के पहले ही तिकड़म और पैरवीवाले लड़के चुन लिए जाते हैं ।"

एकाएक बाबू प्रभुदयाल उठ खड़े होते हैं—"चलते हैं हनुमान-मंदिर ! आज मंगलवार है ।"

मुझे मंदिर जाने की इच्छा नहीं है । कहता हूं—"आप मेरा प्रणाम भी महावीरजी तक पहुंचा दीजिएगा ।"

० ०

बाबू प्रभुदयाल की जीवन-कथा जानकर उनके प्रति श्रद्धा हो गयी है । आदमी में छल-कपट नहीं है । गांधीजी के आदर्शों पर चलने की चेष्टा की थी । सन '४२ में जब जेल गये, तो उनके साथ उनका मित्र और सहपाठी रामस्वरूप भी साथ था । ग्रामीण परिवेश में पलने पर भी रामस्वरूप चतुर निकल गया । उसने समय के साथ गांधीवाद को भी भुनाया । चुनाव लड़कर वह एम.एल.ए. बना, फिर हवा के रुख के साथ दल बदलता रहा । अब तो वह दूसरी बार कैबिनेट स्तर का मंत्री है ।

बाबू प्रभुदयाल प्रायः आजादी की लड़ाई में भाग लेनेवाले अपने निकट के साथियों की कहानियां सुनाते । रामस्वरूप की भी चर्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते ।

मैंने एक दिन उनसे कहा—"आप क्यों नहीं अपने बेकार बेटों के लिए उनसे कुछ कहते हैं ?"

प्रभुदयाल बोले—"मैं पैरवी-सिफारिश में विश्वास नहीं करता । इसे अनैतिक समझता हूं ।"

मैंने प्रतिवाद किया—"योग्यता होते हुए भी उससे कम योग्यतावाले लड़के घूस और पैरवी के बल पर चुन लिए जाते हैं । उनके ही विभाग में तो यह धांधली हो रही है ! आप एक पुराने गांधीवादी होने के नाते इस ओर तो मंत्रीजी का ध्यान आकर्षित कर ही सकते हैं ।"

बाबू प्रभुदयाल संभवतः मेरे तर्क के कायल होते लगे । कम से कम रामस्वरूप के विभाग में व्याप्त धांधली की ओर तो उसका ध्यान खींचा ही जा सकता है । आखिर वह उनका पुराना साथी रहा है ।

इसके बाद मैं उस बातचीत को भूल-सा गया ।

० ०

छुट्टी का दिन था । दोपहर में भोजन कर एक जासूसी उपन्यास में समय की हत्या कर रहा था । कुछ ही देर बाद 'बोर' होकर किताब फेक दीं । मुझे इन दिनों हर चीज से बोरियत होने लगी है—अपनी नौकरी से, एकरस जीवन से, लोगों के बनावटी चेहरों से ! खिड़की से झांककर देखा—बाबू प्रभुदयाल गुमसुम अपनी पुरानी कुरसी पर बैठे हुए हैं । शून्य में जाने क्या देख रहे हैं ! सोचा—गपशप में ही समय काटूं !

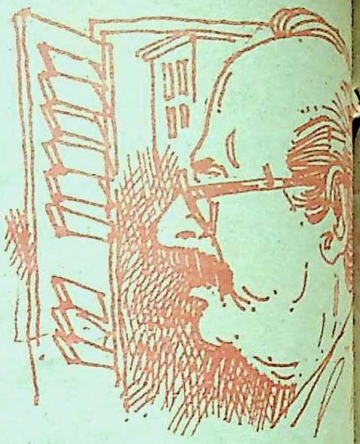

बाहर आकर पूछा—"क्यों, तबीयत ठीक है न ?"

उन्होंने सूनी दृष्टि से मुझे देखा—मानो मेरे प्रश्न को वे नहीं समझ रहे हैं । फिर बोले—"आइए, बैठिए । आज मैं रामस्वरूप के बंगले पर गया था ।"

मुझे आगे का हाल जानने की उत्सुकता हुई । प्रभुदयाल बोले—"जब से वह मंत्री हुआ, मैं उससे नहीं मिला था । सच पूछो तो पिछले दस-बारह वर्षों से मेरी उसकी मुलाकात नहीं हुई थी । सोचा—कैबिनेट स्तर का मंत्री है । देश में बढ़ती बेरोजगारी और नवयुवकों में बढ़ते असंतोष की चर्चा उससे करूंगा ।

पहले तो उसके बंगले के संतरी ने ही भगा देना चाहा । फिर उसका पी.ए. मुझे टरकाने लगा । बोला—"मंत्रीजी का बहुत ही व्यस्त कार्यक्रम है । वे आज नहीं मिल सकेंगे । वे बाहर जानेवाले हैं । एक जगह उन्हें उद्घाटन करने जाना है ।"

मैंने अपने नाम की चिट बढ़ाते हुए कहा—"आप उन्हें सिर्फ दे दीजिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहिए—प्रभुदयाल आया है, उसका सहपाठी और जेल-जीवन का साथी ।''

सफारी सूट में लैस पी.ए. मुझ पर एक उपेक्षा की दृष्टि फेककर चिट लेकर भीतर चला गया । घंटेभर बाद निकला और मुझसे बोला—''मंत्रीजी पूछते हैं, क्या काम है ?''

मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर खड़ा रह गया । लगा—जैसे किसी ने कसकर मेरे चेहरे पर चांटा मार दिया हो !

पी.ए. ने रुखाई से कहा—''मंत्रीजी का आदेश है, जो कुछ कहना चाहते हैं, लिखकर दें ।''

मैं वहां एक क्षण नहीं रुका । अपनी नादानी को कोसता हुआ बाहर निकल आया । गेट पार ही कर रहा था कि एक बड़ी नयी चमचमाती कार रामस्वरूप को लेकर सड़क पर दौड़ आयी, राष्ट्रीय झंडा उसकी कार में फहरा रहा था ।

मुझे उड़ती नजर से पहचानकर भी वह अपरिचित रहने का नाटक कर गया !

बाबू प्रभुदयाल इस घटना को सुनाकर फिर जैसे शून्य में खो गये ! मैं भी स्तब्ध रह गया । सोचता रहा—रामस्वरूप जिस विभाग का मंत्री है, उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार की खबरें प्रायः अखबारों में छपती रही हैं । कहनेवाले (अधिकांश विपक्ष दल के हैं) कहते हैं कि मंत्री महोदय ने अपार संपत्ति अर्जित की है । लड़के-दामाद लाखों में खेलते हैं ।

मैं प्रभुदयाल से क्या कहता ? एक अवसन्न भाव मेरे मन पर उतर आया और शून्य बोध की हताशा मुझ पर भी हावी हो गयी ।

—भूतपूर्व निदेशक, आकाशवाणी शारदा कुटीर,
१७, श्रीकृष्ण नगर, पटना—८००००१

चारों तरफ सिंह और बकरी

सारा का सारा देश
बकरी की तरह मिमिया रहा है,
अपने चारों तरफ सिंह ही सिंह
पा रहा है,
राजस्थान का सिंह टर्राता है,
उत्तर प्रदेश का सिंह आंखें दिखाता है,
म. प्र. का एक सिंह गुर्राता है,
तो दूसरा, महाभारत के अर्जुन-सा सबका छाता है,
एक सिंह मंडल का राग अलापते खड़ा है,
तो दूसरे के पास बजट का खाली घड़ा है,
बकरे की अम्मा कब तक खैर मनाएगी ?
अगर बच भी गयी,
तो इस पशु-मेले में लुट जाएगी,
भला !
आप-जैसे पशुओं से कैसे बच पाएगी,
पशु-वृत्तियों के कारण
मैथिलीशरण गुप्त की कविता बदल जाएगी,
गुप्तजी ने लिखा था कि,
'अबला—जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आंखों में पानी'
पूर्णिमा 'पूनम' की कविता पशु मेले में इस तरह आएगी
'बकरी-जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी,
सिंहों की सरकार और तुम दाना-पानी'

● डॉ. पूर्णिमा पूनम,
२१०, मढ़ाताल, जबलपुर (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

''यार, अमित ने मुझसे कहा है कि मैं उससे शादी करके उसका जीवन सुखी करूं'', सीमा ने अपनी सहेली आशा से कहा ।

''तो फिर तुमने क्या फैसला किया है ?'' आशा ने पूछा, ''अमित से शादी करने का या उसे सुखी बनाने का ?''

●

संजय ने शादी के एक-दो दिन बाद अपनी पत्नी से कहा था, ''प्रिय, मैं तुमसे कुछ छिपाना नहीं चाहता । मैं पहले भी एक लड़की से प्रेम कर चुका हूं, यह मैं तुमसे साफ-साफ बताये दे रहा हूं ।''

''मैं भी साफ-साफ कह रही हूं'', पत्नी ने कहा, ''तुम प्रेम के मामले में बिलकुल अनाड़ी हो और अभी तुम्हें बहुत कुछ सीखना है ।''

●

शाम को राजेशजी थके-हारे घर पहुंचे । सोचा— घर जाकर आराम करूंगा, लेकिन घर में तो उनके दोनों बच्चों ने ऊधम मचा रखी थी । उन्होंने उन्हें डांट-डपटकर सुला दिया । दूसरे दिन जब वह उठे तो सिरहाने एक पुर्जा पड़ा था । लिखा था, 'अपनी संतानों से सद्व्यवहार करें, ताकि वे भी आपसे अच्छी तरह पेश आयें । लिखनेवाला भगवान !'

पत्नी हमेशा दो काम करती है— १- पति के सुख में हिस्सा बांटती है ! २- पति के दुःख में वृद्धि करती है !

●

पति-पत्नी ने अदालत में तलाक की अरजी पेश की ! तलाक का मुख्य कारण था कि उनकी पसन्द बिलकुल विपरीत है जैसे पति को सुंदर युवती पसन्द है और पत्नी को सुंदर युवक पसंद है !

●

पिता पुत्र को मिट्टी में कुछ खोजते देख बोले, ''बेटे यह क्या कर रहे हो ?''

पुत्र, ''जी, आपका नाम खोज रहा हूं ।''

पिता, ''क्यों ?''

पुत्र, ''आपने ही तो कहा था कि तुमने मेरा नाम मिट्टी में मिला दिया !''

●

रामू (बहन से), ''तुम आधी रात को माचिस जलाकर क्या देख रही हो ?''

बहन, ''मैं देख रही थी कि तुमने लालटेन बुझायी है या नहीं ?''

●

'१०८ सांपों के बीच ७२ घंटे'

—एक समाचार

''१०८ सांपों के बीच ७२ घंटे रहकर क्या तीर मार दिया ! वह एक दिन मेरी पत्नी के साथ रहकर देखे तो !''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंग

मांग

पतझर ने
झर झर भर दी
वासंती मांग

जुगाली

बूढ़ी जुगाली
रह-रह समेटे
यादें-मुरादें

उपाधि

सरकार को
अपनी नाक मिली
उन्हें उपाधि

—सत्यपाल चुघ

रेखा

लड़के के पूछने पर,
लड़की ने अपना नाम
'रेखा' बताया . . .
प्रश्न फिर उछाला—
'सरल या वक्र ?'
'सहेलियों के लिए सरल—
आपके लिए वक्र'
उत्तर पाया !

लड्डू

मां ने डांटा—
'पप्पू !
आलमारी में दो लड्डू रखे थे—
एक कहां गया ?'
पप्पूजी बोले—'मां ! दूसरा अंधेरे में
दिखायी नहीं दिया ।'

—रमेश तिवारी 'विराम'

सफलता का मंत्र

थोड़ी कविता भी करते,
ज्यादा षड्यंत्र,
साहित्य में सफलता का,
सर्वश्रेष्ठ मंत्र

संगठन

जहां पर पद प्राप्ति हेतु
होते हों झगड़े, हमेशा अनबन,
संग संग रहकर, ठन जाने के अवसर,
बार बार मिलते हों
उसे कहते संगठन ।

—हरि जोशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां कुछ पठनीय उपन्यास

एक संग्रह : दो उपन्यास

राजेन्द्र अवस्थी के कथा-साहित्य के केंद्र में आम आदमी की व्यथा रही है। 'लमसेना', 'महुआ आम के जंगल' जैसी कहानियां हों या 'सीपियां' जैसा उपन्यास, आम आदमी उनके लेखन की जीवन-शक्ति है। जिस प्रकार भारतीय जीवन को समझने के लिए आम भारतीय के जीवन से साक्षात्कार करना आवश्यक है, उसी प्रकार राजेन्द्र अवस्थी के कथा-साहित्य की केंद्रीय शक्ति से परिचित होने के लिए उसमें वर्णित उस आम आदमी से साक्षात्कार आवश्यक होगा, जो अनेक रूपों में चित्रित हुआ है।

प्रस्तुत संग्रह में राजेन्द्र अवस्थी के दो उपन्यास संग्रहीत हैं— 'शहर की सड़कें' और 'बहता हुआ पानी'। पहले उपन्यास में भव्य और विशालंकाय होटलों को भव्यता का चित्र प्रदान करनेवाले वे कर्मचारी वस्तु-वृत्त के केंद्र में हैं, जो स्वयं झोपड़पट्टियों और सड़कों पर रहने को अभिशप्त हैं। यह उनकी नियति है या इन होटलों के स्वामियों का षड्यंत्र, उपन्यास इस प्रश्न को सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत करता है। दूसरे धरातल पर उपन्यास भारतीय समाज के दो वर्गों— निम्न वर्ग और अभिजात्य वर्ग के द्वंद्व को प्रस्तुत करता है। राजनीतिक सिद्धांतों से अलग रहकर भी इन वर्गों के द्वंद्व को समझा जा सकता है। 'शहर की सड़कें' उपन्यास इसका सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है। उपन्यास के पात्र जीवन, भगवान, नवाब आदि जीवन की जिन गलियों और सड़कों से होकर गुजरते हैं, वे पाठक की जानी-पहचानी गलियां हैं, किंतु साथ ही वे नये आयाम भी खोलती हैं।

संग्रह का दूसरा उपन्यास 'बहता हुआ पानी' महानगर की उस जिंदगी का चित्रण है, जो पहली दृष्टि में आम आदमी की जिंदगी से हटकर लगता है। इस उपन्यास के कथानक के मूल में लब्ध-प्रतिष्ठ कलाकार जतीन का चरित्र है, जिसे सीधे-सीधे आम आदमी की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। किंतु, क्या आज के विसंस्कृतिकरण के युग में और विशेष रूप से विकासशील दुनिया का कलाकार हाशिये पर नहीं पटक दिया गया है ? उसी हाशिये पर हमारे विकासशील समाजों का आम आदमी भी अवस्थित है। इसलिए एक धरातल पर दोनों एक ही विस्थापन और अपनी पहचान की तलाश की भूमिकाओं में दिखायी देते हैं। इन भूमिकाओं में निहित जटिलता को समझना जरूरी है। जतीन की यात्रा इसी जटिलता से होकर चलती है... 'जिंदगी अजीब है ! कोई नहीं जानता आदमी का मन कहां, कब बह जाए ! नदी का बहाव जाना जाता है। हवा एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

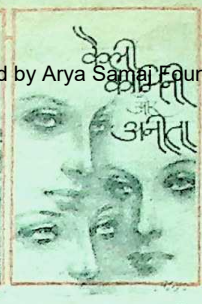

बहाव बनाकर चलती है । आंधी और तूफान आते हैं, उनकी भी एक दिशा होती है । भूकंपों के बारे में जाना जा सकता है, लेकिन आदमी... उसके बारे में कुछ भी जानना सहज नहीं है ।' 'सहज-भाव' से कुछ घटित होता है, तो कलाकार का विस्थापन ।

संग्रह के दोनों उपन्यास पठनीय और संग्रहणीय हैं ।

शहर की सड़कें

लेखक : राजेन्द्र अवस्थी, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६, मूल्य : १०० रुपये ।

तीन उपन्यास : एक संग्रह

'कैली, कामिनी और अनीता' अमृता प्रीतम की नयी उपन्यास-त्रयी है, वस्तुतः कैली , कामिनी और अनीता अलग-अलग उपन्यासों की नायिकाएं हैं । कैली 'रंग का पत्ता' उपन्यास की, कामिनी 'दिल्ली की गलियां' उपन्यास की तथा अनीता 'एक थी अनीता' उपन्यास की नायिका हैं ।

अमृता प्रीतम के ये तीनों उपन्यास वस्तुवृत्तों के अलग-अलग धरातल प्रस्तुत करते हैं और साथ ही अलग-अलग जीवन-वृत्तों को भी । वस्तुवृत्तों की भांति इनके प्रमुख पात्रों—जीवन के विभिन्न पक्षों और परिस्थितियों को उजागर करनेवाली नारियां— में भी भिन्नता है । किंतु, अमृता प्रीतम का लेखन जीवन को नारी की दृष्टि से देखने का हिमायती है । पुरुष-समाज उनके लेखन में न तो विशिष्ट है और न ही श्रेष्ठ । किंतु, प्रेम एक ऐसी अनुभूति है, जो अमृता प्रीतम के तमाम नारी और पुरुष पात्रों को ऊंचा उठाता है । उनके अपने शब्दों में 'मुहब्बत से बड़ा जादू इस दुनिया में नहीं है ।'

मुहब्बत के इसी धरातल पर जन्म लेती हैं ये नायिकाएं और इसी धरातल से पाती हैं अपनी पहचान । कैली, मित्तरो, कामिनी, अनीता आदि सभी उस प्रेम-यात्रा के अलग-अलग रास्तों के पड़ाव हैं, जिनका लक्ष्य एक है— वह चेतना, जो खुदा तक ले जाती है ।

इस उपन्यास-त्रयी से एक प्रश्न अवश्य उभरता है । क्या यह उचित है कि पूर्व-प्रकाशित रचनाओं के शीर्षक बदलकर उन्हें नये रूप में प्रकाशित किया जाए ? यह प्रश्न पहले भी उठा है और 'कैली, कामिनी और अनीता' के बहाने आज फिर हमारे

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सामने है । लेखक और प्रकाशक दोनों को इस प्रश्न पर नये सिरे से विचार करना होगा ।

कैली, कामिनी और अनीता

लेखक : अमृता प्रीतम, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६, मूल्य : १२५ रुपये ।

प्रेरणा-प्रसंग एक उद्योगपति के

'महान भारतीय उद्योगपति जे.आर.डी. टाटा के जीवन, उनकी सफलताओं, उपलब्धियों और जीवन-दृष्टि पर आधिकारिक जीवनी है, विद्वान लेखक आर.एम. लाल ने पुस्तक को चार खंडों में विभाजित किया है । पहले खंड में उनके जन्म से लेकर १९३८ तक का वर्णन है । यह वह समय था जब वे टाटा एंड सन्ज के अध्यक्ष बने। दूसरे खंड में विमान-चालक टाटा को केंद्र में रखा गया है । वस्तुतः टाटा को भारतीय विमान-सेवा के संस्थापक के रूप में सदा स्मरण किया जाएगा । तीसरा खंड उनके कार्यकारी जीवन की गतिविधियां प्रस्तुत करता है । इस खंड में 'उद्योग के महारथी' में जे.आर.डी. टाटा दूरगामी-दृष्टि-संपन्न उद्योगपति और व्यवस्थापक के साथ-साथ समाजसेवी के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं । श्री लाल ने इस खंड में लिखा है कि 'युद्ध चलता जा रहा था और जे.आर.डी. युद्ध के बाद की शांति की कल्पना कर रहे थे ।... उनका विचार था कि बड़े-बड़े उद्योगपतियों को मिलाकर भविष्य की योजना बनानी चाहिए । उन्होंने जी.डी. बिड़ला, सर श्रीराम, कस्तूर भाई, लाल भाई और सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास से कहा कि वे उनके और टाटा के तीन और सहयोगियों के साथ बातचीत करें । सरकारी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करनेवाले ये पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारत के लिए एक आर्थिक योजना तैयार की ।'

चौथे खंड में जे.आर.डी. के अवकाश-प्राप्त और समाज-सेवी रूप को चित्रित किया गया है । यह खंड जीवन के अंतिम वर्षों तक उनकी सक्रियता की कहानी है ।

पुस्तक के संबंध में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि स्वयं जे.आर.डी. टाटा अपने जीवनकाल में इसके प्रकाशन से सहमत नहीं थे । उन्होंने इसकी संपूर्ण पांडुलिपि के प्रकाशन की अनुमति मार्च, १९९१ में टाटा-समूह की अंतिम कम्पनी टाटा संज की अध्यक्षता से मुक्ति के पश्चात ही दी । इस विलंब का सबसे बड़ा कारण यह था कि जे.आर.डी. अपने संपर्क में आये व्यक्तियों को चोट नहीं पहुंचाना चाहते थे ।

पुस्तक मूल रूप से अंगरेजी में लिखी गयी है, जिसका हिंदी रूपांतरण धर्मपाल पांडेय ने रोचक और प्रवाहपूर्ण शैली में किया है ।

महान उद्योगपति जे.आर.डी. टाटा

लेखक : आर.एम. लाल, अनुवादक : धर्मपाल पांडेय, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६, मूल्य : १०० रुपये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक व्यंग्य संग्रह

'दिल आया दिल्ली पे' हास्य-व्यंग्य से परिपूर्ण २८ निबंधों का संग्रह है। रेखा व्यास का नाम व्यंग्य के क्षेत्र में नया नहीं है। परंतु इस संग्रह में उन्होंने एक नयी भूमिका अवश्य निभायी है। वह है व्यंग्य के माध्यम से सांस्कृतिक विषयों को उठाने की। 'मजे मेलों के', 'रामायण पाठ का मजमा', 'बलिहारी इन रस्मों की' जैसे व्यंग्य संस्कृति के बदलते रंगों और उन पर आधुनिकता के मुलम्मे की कहानी कहते हैं। शीर्षक-निबंध 'दिल आया दिल्ली पे' देश की राजधानी के चरित्र को खोलता है। यह चरित्र स्वयं में व्यंग्य है। 'किरायेदारी की कला' में इस व्यंग्य-चरित्र का प्रसार मिलेगा। निबंधों में जीवन के अनेक पक्षों का चित्रण किया गया है। निबंध पठनीय हैं।

दिल आया दिल्ली पे

लेखिका : रेखा व्यास, प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, महरौली, नयी दिल्ली-११००३०, मूल्य : ४५ रुपये।

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

हिंदू धर्म क्या है : महात्मा गांधी, मूल्य : सत्ताइस रुपये

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह : बहादुर राम टम्टा, मूल्य : पैंतीस रुपये

भारत की राष्ट्रीय संस्कृति : एस. आबिद हुसैन, मूल्य : चौंतीस रुपये

आत्म प्रकाश : सुनील गंगोपाध्याय, मूल्य चौंतीस रुपये

बाल गंधर्व : मोहन नदकर्णी, मूल्य : बीस रुपये

फकीर मोहन सेनापति : आत्मचरित, मूल्य : सैंतीस रुपये

हजारी प्रसाद द्विवेदी : संकलित निबंध : संपादक-नामवर सिंह, मूल्य : सत्ताईस रुपये

भारत का आर्थिक संकट और समाधान : विमल जालान, चालीस रुपये

दमा एक अनबूझ पहेली : एम. पी. एस. मेनका, मूल्य : १८ रुपये

वाद्य यंत्र : बी. चैतन्य देव, मूल्य : तीस रुपये

आधुनिक तमिल कहानियां : संकलन : अशोक मिडान, मूल्य : इकतीस रुपये

कथा-साहित्य

चांद का सितारा : संकलन : ओदोलेन स्मेकल, प्रकाशक : स्टार पब्लिकेशंस, ४/५, आसफ अली रोड़, नयी दिल्ली, मूल्य : सौ रुपये

कलकत्ता : १९९३ : संपादक : विष्णुकांत शास्त्री, प्रकाशक : प्रतिध्वनि, ३१, सर हरिराय गोयनका स्ट्रीट, मूल्य : सत्तर रुपये।

काव्य-संकलन

हमारा हरित नीम (दो भाग) : कवि : ओदोलेन स्मेकल, प्रकाशक—हिंदी बुक सेंटर, ४/५, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली, मूल्य : प्रत्येक भाग अस्सी रुपये

कवियों की प्रेमिका : कवि यरोस्लाव साइफर्त, प्रकाशक—स्टार पब्लिकेशंस, आसफ अली रोड़, नयी दिल्ली, मूल्य : पचहत्तर रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : पारिवारिक सहयोग से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । राशि में केतु का आगमन नवीन संपर्क तथा प्रभाव में वृद्धि करेगा । संपत्ति संबंधी समस्या का निराकरण होगा । मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यों पर धन व्यय होगा । मासांत में स्वास्थ्य पीड़ा होगी ।

वृष : उच्चाधिकारियों के सहयोग से भाग्यवृद्धि होगी । न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा । मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यों हेतु प्रवास होगा । शत्रु पक्ष का पराभव होगा । राजनीतिक दिशा में उल्लेखनीय उपलब्धि होगी । आर्थिक संसाधनों, व्यावसायिक गतिशीलता में वृद्धि होगी ।

मिथुन : नवीन दायित्वों से उत्साहवृद्धि होगी । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से शत्रु पक्ष का दमन होगा । संपत्ति कार्यों में स्वजन का सहयोग मिलेगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों से प्रतिष्ठा एवं यश वृद्धि होगी । प्रवास की अधिकता होगी । नवीन संपर्कों से लाभ मिलेगा ।

कर्क : मास में जोखिम के कार्यों में सूझबूझ बरतें । राजकीय कार्यों में उच्चाधिकारियों का वांछित सहयोग मिलेगा । प्रियजन को पीड़ा होगी । स्वजनों के सहयोग से मांगलिक कार्य की पूर्ति होगी ।

सिंह : मास में धनागम के अतिरिक्त संसाधन का उदय होगा । स्वजनों के सहयोग से नवीन कार्यों और न्यायालयीन कार्यों में सफलता मिलेगी । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर प्रतिष्ठा को प्रभावित करेगा । प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी । उदर अथवा रक्त विकार से पीड़ा होगी ।

कन्या : साहसिक प्रयासों से उत्कृष्ट सफलता मिलेगी । संपत्ति संबंधी विवादों का समुचित समाधान होगा । आजीविका संबंधी वांछित परिवर्तनों से उत्साह वृद्धि होगी । मांगलिक कार्य हेतु प्रवास होगा । स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा से कार्यावरोध होगा । रक्त संबंधियों से पीड़ा होगी ।

तुला : नवीन संपर्कों से प्रभाव वृद्धि होगी । आकस्मिक धन लाभ से लंबित समस्या का समाधान होगा । शत्रु पक्ष की सक्रियता रहेगी । उच्चाधिकारियों की समीपता लाभदायक होगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ मई से वृष में, मंगल १५ से मेष में, बुध ६ से वृष में, २३ से मिथुन में, गुरु तुला में, शुक्र १५ से मिथुन में, शनि कुंभ में, राहु केतु २० मई को क्रमशः तुला एवं मेष में, हर्षल मकर में, नेपच्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में परिभ्रमण करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व और त्योहार

१ मई— मई दिवस, ३ शीतलाष्टमी, ६ वरुथनी एकादशी, ७ शनि प्रदोष, १० मई स्नानादान, श्राद्धादि की दर्श अमावस्या, १३ अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती, १४ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, १६ आद्य गुरु शंकराचार्य जयंती, १७ गंगा सप्तमी, १९ श्री दुर्गाष्टमी, श्री बगलामुखी जयंती, २१ मोहनी एकादशी, २३ सोम प्रदोष, २५ वैशाखी पूर्णिमा/खंडग्रास चंद्रग्रहण भारत में अदृश्य, २८ संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत ।

धन-व्यय होगा । जोखिमपूर्ण कार्यों से लाभ मिलेगा ।

वृश्चिक : नवीन उत्तरदायित्व तथा कार्यों की अधिकता होगी । आर्थिक स्थिति में सुधार होगा । पारिवारिक वातावरण खिन्नतापूर्ण होगा । शत्रु पक्ष से अपकीर्ति का भय होगा । कार्याधिक्य से अस्वस्थता की आशंका । व्यर्थ जोखिम वहन न करें ।

धनु : मास में प्रतिकूल परिस्थितियों पर नियंत्रण होगा । आत्मविश्वास तथा साहस में वृद्धि होगी । आजीविका संबंधी प्रयासों की पूर्ति होगी । प्रवास की अधिकता से अस्थिरता होगी । न्यायालयीन अथवा संपत्ति संबंधी कार्यों में उल्लेखनीय उपलब्धि होगी ।

मकर : मास संघर्षपूर्ण होगा । शत्रु-पक्ष से पीड़ा होगी । संपत्ति कार्यों में विलंब हितकर होगा । उत्तरार्ध में उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित कार्य की पूर्ति होगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा ।

कुंभ : अकारण विरोधाभास तथा शत्रु पक्ष से पीड़ा होगी । नवीन दायित्वों से कार्यों की अधिकता होगी । संपत्ति अथवा न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा । परोपकारी कार्यों में सावधानी रखें । प्रवास में सतर्कता रखें ।

मीन : मास में उत्साहवर्धक परिवर्तन होगा । आत्मविश्वास तथा साहसिक प्रयासों से दुष्कर कार्यों में सफलता मिलेगी एवं रचनात्मक कार्यों में यश वृद्धि होगी । धार्मिक यात्रा तथा आध्यात्मिक सत्संग का अवसर मिलेगा । संपत्ति कार्य की पूर्ति से प्रसन्नता होगी ।

— ज्योतिषधाम पत्रिका,
१२/४ ओल्ड सुभाष नगर, गोविंदपुरा, भोपाल,

ज्योतिष का पहला कैसेट

लुक इंडिया की निर्मात्री श्रीमती अंजली वर्मा ने ज्योतिष के क्षेत्र में पहला वीडियो कैसेट बनाया है, जिसका लोकार्पण उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा ने किया । ''पंडित पदमेश राशिफल १९९४'' कैसेट के मुख्य नायक शिखर ज्योतिष पुरुष श्री के. ए. दुबे पदमेश, निर्देशन अरुण वर्मा ने किया । पटकथा के. ए. दुबे पदमेश की है । विषय वस्तु [illegible] है, लेकिन टेकनिकल पक्ष निर्बल है, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या पूर्ति—१७६

सुधियां

प्रथम पुरस्कार

हम निसर्ग की सर्वश्रेष्ठ हैं, शक्तिमयी ललनाएं ।
प्रतिभा, प्रज्ञा, सुंदरता की, गढ़ी हुई रचनाएं ।।
मांग नहीं हम रहीं, हमें दो अवसर एक समान ।
हम तो लेंगे छीन, हमारे हिस्से की मुसकान ।।
अंगुली मुंह में दबा के देखें, आनेवाली सदियां ।
हमें नहीं परवाह हमारी लेवे कोई सुधियां ।।

—निरंजन

आवास सं 'च' झौआ कोठी, भागलपुर-८१२००१

द्वितीय पुरस्कार

आंखें खोज रहीं भूली-बिसरी गतिविधियां
मन उदास कर देती हैं पीड़ा की निधियां
बिना तुम्हारे एकाकीपन खलता रहता—
घायल कर जातीं, मन-प्राण तुम्हारी सुधियां

—डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

बावन मार्ग, हरदोई-२४१००१ (उ.प्र.)

तृतीय पुरस्कार

याद तुम्हारी जब भी आती
हलचल-सी जैसे मच जाती
शाम सुहानी—नदी-किनारा
लिये हाथ में हाथ तुम्हारा
बीतीं जाने कितनी घड़ियां
बनी धरोहर वे सब सुधियां

—कु. मिति गुप्ता

द्वारा श्रीमती मंजरी गुप्ता ओ. टी. ६/२ रिविल लाइंस, मंडला म.प्र.

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से ... कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी-बड़ी सभी बीमारियों से निबटने के लिए 'स्वयं चिकित्सक पुस्तकें'

● होमियोपैथी द्वारा स्वयं चिकित्सा

यह पुस्तक असंख्य मरीजों का इलाज करने वाले सफल चिकित्सक श्री राजीव शर्मा, जिनके लेख अनगिनत पत्रिकाओं एवं अखबारों में छपते हैं, के विशाल अनुभव का निचोड़ है। इसमें 75 से अधिक रोगों के लक्षण, परहेज व दवा संबंधी संपूर्ण जानकारी चित्रों सहित दी गई है। इसके अतिरिक्त सेक्स एवं नशे से संबंधित भ्रांतियों एवं रोगों को दूर करने की विधियां भी इस पुस्तक में दी गई हैं।

पृ. 256/- • मूल्य: 32/- • डाकखर्च : 6/-

● योग और भोजन द्वारा रोगों का इलाज

सुप्रसिद्ध योगाचार्य श्री सतपाल ग्रोवर के 40 वर्षों के अनुभव के आधार पर लिखित अनमोल पुस्तक। इसमें रोग-निवारण हेतु योगासन, ध्यान एवं शुद्धि क्रियाओं, जैसे-जल नेति, सूत्र नेति आदि का सचित्र वर्णन व प्राकृतिक उपचार, जिनसे सभी रोगों का इलाज किया जा सकता है, दिए गए हैं।

पृ. 160 • मूल्य: 28/- • डाकखर्च: 6/-

● दिल का दौरा: बचाव आपके हाथ में

एक हृदय रोगी द्वारा लिखी गई अत्यंत ही प्रामाणिक एवं प्रैक्टिकल पुस्तक। दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे इस रोग के प्रति सचेत कराते हुए आपके इन प्रश्नों का सहज ही उत्तर देने में सक्षम – दिल का दौरा पड़ने की बीमारी किन कारणों से होती है; इस बीमारी से कैसे बचा जा सकता है; दौरा पड़ने के बाद क्या सावधानियां आवश्यक हैं ताकि दूसरा दौरा न पड़े; खान-पान व रहन-सहन की खराब आदतें कैसे सुधारें? नवीनतम शोध निष्कर्षों की जानकारी।

पृ. 144 • मूल्य: 24/- • डाकखर्च: 6/-

● फल-सब्जी एवं मसालों द्वारा चिकित्सा

घर-घर में उपलब्ध दैनिक प्रयोग के फल-सब्जी एवं मसालों द्वारा विभिन्न रोगों के निवारण के सफल उपाय के साथ-साथ दूध, घी, आदि पदार्थों के लाभकारी प्रयोगों की अचूक विधियां भी इसमें हैं।

पृ. 120 • मूल्य: 20/- • डाकखर्च: 5/-

अपने निकट के रेलवे तथा बस-अड्डों पर स्थित बुक-स्टालों से खरीदें। न मिलने पर वी. पी. पी. द्वारा मंगाने हेतु इस पते पर लिखें:

पुस्तक महल 10-बी, पंचकुईयां रोड, नई दिल्ली-110002 फोन: 3268292-93, 3279900

शाखाएं:. ■ 22/2 मिशन रोड, बंगलोर-27 फोन: 2234025. ■ 23-25, जाओबा वाडी, ठाकुरद्वार,

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

१. **वीरप्रस**— क.जिस भूमि पर वीर पैदा हों, ख. वीर उत्पन्न करनेवाली स्त्री, ग. वीर महिला, घ. जो वीर पैदा हुआ हो ।

२. **संसूचित**— क.सूची में शामिल, ख. आगाह किया हुआ, ग. भलीभांति सूचित कराया हुआ, घ. प्रसिद्ध ।

३. **संस्कारिता**— क.धार्मिकता, ख. सभ्यता, ग. व्यावहारिकता, घ. अच्छे संस्कार से युक्त होने का भाव ।

४. **अंगीकृत**— क.स्वीकार किया हुआ, ख. अनुकूल बनाया हुआ, ग. समेटा हुआ, घ. एक हो जाना ।

५. **सौमनस्य**— क.समानता, ख. पारस्परिक सद्भाव, ग. प्रसन्नता, घ. एकता ।

६. **निर्व्याधि**— क.बाधा-रहित, ख. नीरोग, ग. निश्चिंत, घ. दृढ़ ।

७. **प्राज्ञी**— क.महिला, ख. सुगृहिणी, ग. विदुषी, घ. प्रसिद्ध स्त्री ।

८. **संसृति**— क.संसार, ख. जन्म-मरण की परंपरा, ग. निर्माण, घ. संस्कृति ।

९. **वैद्युत**— क.तत्काल, ख. क्षणिक, ग. बिजली-संबंधी, घ. फुर्तीला ।

१०. **परिभूत**— क.भयभीत, ख. तिरस्कृत, ग. निराश, घ. थका हुआ ।

११. **परिपोष**— क.पूर्ण समर्थन, ख. भली प्रकार से निर्वाह, ग. सम्यक पोषण, घ. पीछे चलना ।

१२. **दशाब्द**— क.दस साल का समय, ख. दसवां साल, ग. दस वर्ष का अंतर, घ. दसवां समारोह ।

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

उत्तर

१. ख. वीर उत्पन्न करने वाली स्त्री । भारतीय इतिहास में अनेक **वीरप्रसू** महिलाएं हुई हैं । (वीर+प्रसू)

२. ग. भलीभांति सूचित कराया हुआ । विवाह की न्यूनतम अवस्था कानून द्वारा **संसूचित** है । (व्युत्.—सम्, सूच्)

३. घ. अच्छे संस्कार से युक्त होने का भाव, शिष्ट व्यवहार । अच्छे परिवार में **संस्कारिता** की जड़ें गहरी जमी होती हैं । (व्युत्.-सम्, कृ)

४. क. स्वीकार किया हुआ, अंगीकार किया हुआ । गुणों के **अंगीकृत** किये जाने पर ही व्यक्तित्व में निखार आता है । (व्युत्.-अंग, कृ)

५. ख. पारस्परिक सद्भाव, ग. प्रसन्नता, आनंद, संतुष्टि । व्यक्ति और व्यक्ति के बीच **सौमनस्य** स्थापित होने पर ही सभ्य समाज की नींव रखी जा सकती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(व्युत्.-सुमनस्)

६. ख. नीरोग, व्याधि रहित । मनुष्य को **निर्व्याधि** रहने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए । (निर्+व्याधि)

७. ग. विदुषी । परिवार में **प्राज्ञी** का होना सौभाग्य की बात है ।

८. क. संसार, लौकिक जीवन । ख. जन्म-मरण की परंपरा, संसार-चक्र । **संसृति** के नियम अटूट हैं । (व्युत्,-सम् सृ)

९. ग. बिजली-संबंधी । आज भांति-भांति के **वैद्युत** उपकरण हैं । (व्युत्.-वि, द्युत)

१०. ख. तिरस्कृत, अनादृत । समाज का कोई भी अंग किसी दूसरे अंग से **परिभूत** नहीं होना चाहिए । (व्युत्.-परि, भू)

११. ग. सम्यक पोषण (पुष्टि) । निर्धन वर्ग के **परिपोष** का दायित्व संपूर्ण समाज या शासन पर है । (व्युत्.-परि, पुष्)

१२. क. दस साल का समय (अंग.-डिकेड) । एक **दशाब्द** में ही परिस्थितियां बहुत कुछ बदल जाती हैं । (दश+अब्द)

पारिभाषिक शब्द

Curator = **संग्रहालय-अध्यक्ष**
Controller = **नियंत्रक**
Organiser = **आयोजक**
Convener = **संयोजक**
Inspect = **निरीक्षण करना**
Examine = **परीक्षण करना**
Confer = **प्रदान करना**
Reject = **अस्वीकार करना**
Remit = **प्रेषित करना**

ज्ञान-गंगा

विधुरास्ते त्रपापेतः पराश्रये च ये स्थिताः ।

(द्विसंधानमहाकाव्य ९८/९०)

वे पुरुष भीरु और निर्लज्ज हैं,जो दूसरे के सहारे जीवन-यापन करते हैं ।

सच्चेन कित्तिं पप्पोति, ददं मित्तानि गन्थति ।

(सूक्ति त्रिवेणी)

सत्य से कीर्ति प्राप्त होती है, और सहयोग (दान) से मित्र अपनाये जाते हैं ।

अर्थस्य मूलमुत्तथानमनर्थस्य विपर्ययः ।

(कौटलीय अर्थशास्त्र १/१९/४०)

अर्थ का मूल कारण उद्योग-परायणता है और अनर्थ का मूल कारण इसके विपरीत बिना काम के बैठे रहना है ।

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाऽकृतीनाम् ।

(अभिज्ञानशाकुन्तल १/१८)

सुंदर आकृतियों के लिए कौन वस्तु अलंकार नहीं बन जाती है ?

नाऽकृत्वा सुखमेधते ।

(महाभारत, शांति पर्व २९०/१२)

बिना कर्तव्य किये मनुष्य सुख नहीं प्राप्त करता ।

ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् ।

(नैषधचरित २/४८)

साधुजन फल से अपनी उपयोगिता बतलाते हैं । कंठ से नहीं ।

(प्रस्तुति : महर्षिकुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था के आयाम

संवेदनशील प्रशासक

वर्ष १९७४-७५ की बात है । ओ. टी. एस. (अब उत्तर प्रदेश प्रशासनिक अकादमी) नैनीताल के तत्कालीन वयोवृद्ध प्रधानाचार्य श्री जगत मोहन नाथ रैना के आमंत्रण पर तत्कालीन मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्री हेमवती नंदन बहुगुणा आई. ए. एस./पी. सी. एस. प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करने पधारे । संध्या का समय था । श्री रैना साहब बहुगुणाजी के साथ कई कारों के आने से भ्रमित थे कि बहुगुणाजी कौन-सी कार से आये हैं । वे अगवानी के लिए प्रत्येक कार के पास जाकर देख रहे थे । बहुगुणाजी पहले ही कार से उतरकर बरामदे में खड़े थे । उन्होंने जब देखा कि रैना साहब उनको ही खोज रहे हैं, तब जोर से आवाज देकर बोले, ''रैना सहब, मैं यहां हूं ।''

तत्पश्चात हाल में जाकर उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया । प्रशासकीय महत्त्व की बहुत-सी अच्छी बातें बताते हुए उन्होंने कहा था, ''क्या कभी तुम अपने किसी अधीनस्थ कर्मचारी का मुरझाया चेहरा देखकर पूछते हो कि भाई क्यों चिंतित हो ? क्या परेशानी है ? इत्यादि । यदि नहीं तो आप एक अच्छे प्रशासक नहीं बन सकते । अपने अधीनस्थ के प्रति संवेदनशील बनिये । वह आपका हाथ-पांव है । यदि सहानुभूतिपूर्वक उसकी कठिनाई जानना चाहेंगे तो निःसंदेह वह आपकी आत्मीयता से प्रभावित होकर दुगने उत्साह से कार्य करेगा जिससे प्रशासन तथा आपकी क्षमता बढ़ेगी । अधिकारी और अधीनस्थ के मध्य सद्भाव का वातावरण बना रहेगा ।''

● हरि दत्त पंत 'हरिदास'

संगीत गोलियो की बौछारों के बीच

गोलियों की बौछार हो रही थी और वह था कि समुद्र में कमर तक पानी में डूबा अपना बैग पाइप बजाता सैनिकों की टुकड़ी का नेतृत्व करता आगे बढ़ा जा रहा था ।

पचास वर्ष पूर्व की बात है । दिन था द्वितीय युद्ध को निर्णायक मोड़ देनेवाला 'डी डे' । इस दिन मित्र राष्ट्रों की फौजों ने, जिनमें मुख्यतः ब्रिटिश और अमरीकी फौजी थे, फ्रांस में नारमंडी के तट पर साहसिक हमला किया था । उन्होंने असंभव को संभव कर दिखाया था । सैकड़ों कमांडो पैराशूट के जरिए शत्रु की सीमा के पार उतरे थे, धरती से आती गोलियों की बौछारों के बीच । इसी तरह समुद्री जहाजों से भी उतर-उतरकर सैनिक आक्रमण के लिए आगे बढ़े थे । तट पर स्थित जरमन आसानी से उन्हें गोलियों का निशाना बना रहे थे, फिर भी मित्र राष्ट्रों के सैनिक आगे बढ़े जा रहे थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

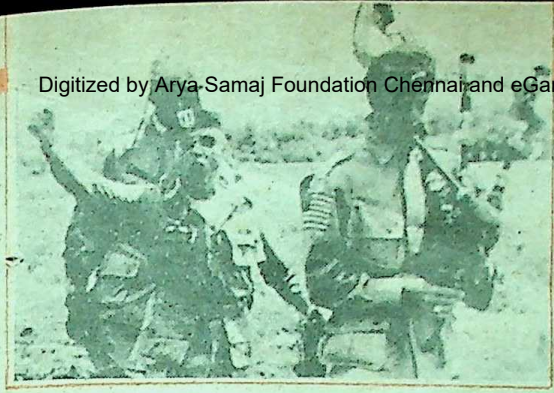

ब्रिटिश फौजों के साथ बैग पाइप बजानेवाले चला करते थे । पर इस खतरनाक युद्ध में उनके बैग पाइप बजाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, कारण वे आसानी से मारे जा सकते थे । लेकिन ब्रिटिश टुकड़ी के ब्रिगेडियर लॉर्ड लोवट ने इस प्रतिबंध को मानने से इनकार कर दिया । वे स्काटिश थे और उन्होंने अपने बैग पाइपर ब्रिल मिलिन को कमांडो टुकड़ी के आगे-आगे बैग पाइप बजाते चलने की अनुमति दे दी ।

और इस तरह शुरू हुई मिलिन की वह यात्रा, जिसमें किसी भी क्षण उसकी जान जा सकती थी । जहाज से पानी में उतर कर मिलिन ने ज्यों ही अपना बैग पाइप संभाला, गोलियों की बौछारों ने उसका स्वागत किया । उसके साथ चलनेवाला कमांडो आहत होकर पानी में गिर पड़ा लेकिन मिलिन भयभीत न होकर अपने बैग पाइप पर 'हाई लैंड लेडी' शीर्षक धुन बजानी शुरू की । मौत से जूझते मित्र राष्ट्रों के सैनिकों में जोश भर गया । उन्होंने टोपियां उछालकर अपनी खुशी जतायी ।

मिलिन के पास हथियार के नाम पर एक कमांडो चाकू और परंपरागत शैली में बना स्काटिश छुरा था । आहतों और मृतक सैनिकों के बीच गुजरते हुए मिलिन तट तक पहुंचा । उसके पीछे-पीछे कमांडो थे ।

रेतीले तट पर पहुंचने के बाद लार्ड लोवट ने उसे 'द रोड टू द आइसलस' बजाने का निर्देश दिया ।

मिलिन ने पूछा, "महोदय, क्या मैं भी तट पर चलूं ?"

"क्यों नहीं, यह तो और अच्छा होगा ।" लॉर्ड लोवट ने उत्तर दिया ।

और जब कमांडो पुनः संगठित होकर आगे बढ़े तो मिलिन बैग पाईप बजाता हुआ आगे चल रहा था ।

उसे एक बात पर आश्चर्य हो रहा था कि कोई उसे निशाना क्यों नहीं बना रहा है ।

उस दिन मित्र राष्ट्रों की फौजों का तात्कालिक लक्षण ओरने पुल पर अधिकार करना था । ब्रिगेडियर लॉर्ड लोवट ने मिलिन को जोर से बैग पाइप बजाने का आदेश दिया ताकि शत्रु सैनिक समझ लें कि मित्र राष्ट्रों की फौज निकट ही है ।

बाद में जब दो बंदी जरमन सैनिकों से पूछा गया कि उन्होंने बैग पाइप पर गोली क्यों नहीं चलायी तो एक ने उत्तर दियां, 'डमकाफ'

मिलिन के शब्दों में, 'मेरा खयाल है कि वे कहना चाहते थे कि मैं एक पागल व्यक्ति हूं । मुझे तो वे कभी भी मार सकते थे ।

वि.भू.शु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

मई अंक में प्रकाशित लेख 'काम की नगरी ही नहीं है खजुराहो' में लेखक ने शिकायत के लहजे में कहा है कि 'खजुराहो के मंदिरों को देखने आनेवाले दर्शक मंदिरों के गर्भगृह से ज्यादा रुचि बाहर की दीवारों पर अंकित शिल्पों के निरीक्षण-परीक्षण में लेते हैं ।'

खजुराहो के दर्शन मैंने दो वर्ष पूर्व किये थे । और मैं इस संबंध में कहना चाहता हूं कि 'काम मनुष्य जीवन की मुख्य वृत्ति है, एवं मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण और बाजीकरण के रूप में जो पांच वाण पौराणिक कल्पना में प्रसिद्ध हैं, मनुष्य की चेष्टाओं से प्रकट होते हैं । संभवतः मारण का प्रतीक वृश्चिक में, मोहन का प्रतीक वानर में, उच्चाटन का प्रतीक शुक्ल में, वशीकरण का प्रतीक मातंग में और बाजीकरण का प्रतीक अश्व में माना गया है और इन प्राणी संकेतों की पुनरावृत्ति खजुराहो में कई बार इसी आधार पर हुई है । इन वाणों से जो उन्मथित न हो सके और मंदिर के प्रत्येक कोने में अंकित कीर्ति मुख शार्दूलों की भांति सुंदरयों के रूप मद को कुचलता हुआ ऊपर जाए वही सच्चा साधक है ।

खजुराहो के अधिकांश मंदिरों में क्रीड़ा अंकित है, जिससे ज्ञात होता है कि उस काल में इस भावना को अंकित करने में राज्य की ओर से कोई प्रतिबंध नहीं था ।

पुरुष के लिए खजुराहो की स्त्रियां उसके विषय की पिपासा मात्र है । कलाकार ने स्त्री को पुरुष की अपेक्षा अधिक कामुक और विषय तुषित दर्शाया है । वह प्रेम-प्रसंग के व्यापार में अग्रसर और पुरुष से भी अधिक आनंद लेती हुई प्रतीत होती है । वह अपनी प्रत्येक मुद्रा में पुरुष को रिझाने में षड्यंत्र-सा ही करती नजर आती है । फिर भी उस युग के पुरुषों में यज्ञ की भावना थी । और यही उसके प्रत्येक कार्य के प्रति शक्ति थी ।

— शराफत अली खान
वनविद्, कार्यालय वन रेंज अधिकारी, सिविल लाइंस, बदायूं

पुरस्कृत कहानियां

'कादम्बिनी' का नियमित पाठक हूं । मई अंक में प्रकाशित पुरस्कृत कहानियां 'मरीचिका', 'करवट' तथा 'नारी उत्पीड़न और बिखरते परिवार' पढ़ीं । पुरस्कृत कहानियां यथार्थ हैं ही । मेरा विचार है कि 'मरीचिका' या 'करवट' बदल सकती है तथा 'नारी उत्पीड़न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बिखरते परिवार' में भी बदलाव लाया जा सकता है; बशर्ते कि नारी अपने अस्तित्व और महत्त्व को समझे तथा एकता के मजबूत बंधन में बंधकर नारी, नारी का साथ देने को तैयार हो जाए।

— अमरेंद्र कुमार,
पो. बाढ़ (पटना)

आखिर कब तक ?

मायावती कोई आदर्शवादी राजनीतिज्ञ नहीं हैं। वैसे आज आदर्शवादियों को ढूंढ़ पाना बहुत मुश्किल है। सभी किसी न किसी महान नाम का सहारा लेकर अपना स्वार्थ पूरा कर रहे हैं। मायावती और अन्य राजनीतिज्ञों में जरा-सा अंतर है। दूसरे लोग गांधी का गुणगान करके जनता को बरगलाते हैं और मायावती गांधी को गरियाकर। यह ऊपरी हकीकत है। परंतु अंदर सब-कुछ एक ही तरह का है।

न उन्हें गांधी के आदर्शों से कुल लेना-देना है और न मायावती को अंबेडकर से। मायावती किसी नयी राजनीतिक परंपरा को प्रारंभ करनेवाली नहीं है। वह उसी राजनीतिक परंपरा की देन है जिसमें वक्त के साथ-साथ बदलना राजनीतिक चातुर्य माना जाता है।

मायावती का प्रसंग मुक्तिबोध की एक चर्चित कविता की पंक्तियां याद दिला रहा है—

बरगद को किंतु सब
पता था इतिहास
कोलतारी सड़क पर खड़े हुए सर्वोच्च
गांधी के पुतले पर
बैठे हुए आंखों के दो चक्र
यानी की घुग्घू एक—
तिलक के पुतले पर
बैठे घुग्घू से
बातचीत करते हुए
कहता ही जाता है
"... मसान में...
मैंने भी सिद्धि की।
देखो मूठ मार दी
मनुष्यों पर इस तरह... ।"

— सुधीर सुमन,
— आरा।

'आखिर कब तक' स्तंभ पर हमें काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं। कुछ पाठकों के नाम :

सुशील कुमार मिश्र, कौला डिहरी (भोजपुर), ललित शर्मा, भोपाल; डॉ. भवदेव झा पटना; गंगा सिंह रावत, हल्द्वानी, डॉ. अनूप कु. गक्खड़, जालंधर; नलिनी रंजन, हाजीपुर

काल चिंतन

एक लंबी कालावधि व्यतीत हो चुकी है 'काल चिंतन' पर चिंतन करते-करते, जबसे साहित्य पढ़ने की समझ आयी तब से इस पर चिंतन करता आ रहा हूं। हमेशा आपका चिंतन क्षितिज की तरह अनछुआ रह जाता है। शायद इसका कारण यह है, जहां हमारे चिंतन का अंतिम छोर है, वहां आपके चिंतन का आदि बिंदु है। यह कहना दुष्कर है, कभी हमारे चिंतन की पृथ्वी आपके चिंतन के आकाश को स्पर्श कर पाएगी भी या नहीं।

— महेश चंद्र पुनेठा,
ग्राम लम्पाटा, जिला-पिथौरागढ़।

'कालचिंतन' स्तंभ पर हमें अनेक पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं। कुछ पाठकों के नाम :

चंद्रप्रकाश कुनियाल, श्रीनगर (गढ़वाल); मनोजकुमार मनु, कोलागांव (जिला भागलपुर),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनीषकुमार, मोतिहारी, अनंत साहू, पिपरिया, श्रीकांत दीक्षित, तेजगढ़ (जिला दमोह—म. प्र.)

यथा नाम तथा गुण

'कादम्बिनी' के मुख पृष्ठ पर लिखा रहता है, 'भारतीज भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका' शुरू से ही मुझे यह पंक्ति यथा नाम तथा गुण की तरह लगती रही है ।

दक्षिण भारत में रहनेवाले हिंदीभाषियों को दक्षिण भारतीयों की यह शिकायत लाजमी लगती है कि कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगू ने तो अनेक हिंदी विद्वान दिये, लगभग सभी प्रमुख हिंदी पुस्तकों के अनुवाद कर लिये पर हिंदी में कितना हुआ ? समय की मांग है कि दक्षिण भारतीय भाषाओं की रचनाएं यदि हिंदी में अनुदित होकर प्रकाशित हों तो हिंदी भाषियों को मालूम होगा कि इन भाषाओं की रचनाएं शिल्प, कथ्य और संवेदना के स्तर पर कितनी गहराई तक जाकर समाज के मर्म को स्पर्श कर रही हैं ।

मई ९४ के अंक में प्रकाशित अनूदित तमिल कहानी 'वह भोलापन' सचमुच में संपूर्ण भारतीय घर-परिवार का एक आइना है, उसका साधारणीकरण है ।

— एस. के. पांडे,
उडुपी

गौहर जान गायब

'कादम्बिनी' का 'सबरंग विशेषांक' बाबत अप्रैल '९४ अपनी पठनीय सामग्री के साथ प्राप्त हुआ । समस्त गद्य-पद्य की रचनाएं रुचिकर एवं मनोरंजक हैं किंतु आध्यात्मिक प्रसंग के अंतर्गत 'गौहर जान हाजिर गौहर जान गायब' पढ़कर आश्चर्य हुआ । लेखक ने जिस घटना को आध्यात्मिकता से जोड़ा है, उसकी विश्वसनीयता एवं प्रमाणीकरण संदिग्ध है और इससे कई प्रश्न उत्पन्न होते हैं जिनका समाधान संभव नहीं । आशिक टोंकी, सौलत साहब के उस्ताद थे और यह बात किसी प्रकार मान्य नहीं कि गुरु अपने शिष्य के पैर दबाएगा ।

आशिक टोंकी (जन्म १८६९, मृत्यु १९४०) और अरब साहब उर्फ कल्लू मियां या सौलत साहब (जन्म १८९५, मृत्यु १९६८) की आयु में भी बहुत अंतर है । आशिक उनसे २६ साल बड़े थे फिर यह कैसे मुमकिन है कि वह पैर दबाते ।

सौलत साहब को संभव है कि कुछ अलौकिक शक्तियां प्राप्त हों किंतु गौहरजान के हवाले से इस घटना के उल्लेख में नितांत अतिश्योक्ति एवं श्रद्धा परिलक्षित होती है ।

— मुख्तार टोंकी,
टोंक (राजस्थान)

चुटकीभर नमक

'गोपनीय रहस्यों के दस्तावेज' शीर्षक युक्त मई ९४ की 'कादम्बिनी' प्रत्येक माह की तरह नये आयाम-श्रृंखला की अद्वितीय कड़ी लगी । अन्य रचनाओं के साथ अर्चना सोशिल्य का गवेषणात्मक लेख 'चुटकीभर नमक बताता है मौसम का हाल' अपने आप में अनेक विशिष्टताओं को एक ही साथ प्रदर्शित करता है । मन बरबस बापू के 'नमक सत्याग्रह' एवं प्राचीन बार्टर सिस्टम की याद ताजा कर देता है जहां डोलपा लोगों को भी चीनी अधिकारियों के सख्त कानून का सामना करना पड़ता है जैसा बापू को ब्रिटिश अधिकारियों से सहना पड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। नेपाल-चीन, तिब्बत और भारत, चार देशों के साथ-साथ मौसम की अंतहीन भयावह दुरुहता चुटकीभर नमक के लिए क्या नहीं स्मरण कराने को बाध्य कर देता है।

— श्यामा श्रीवास्तव,
पटना।

मई अंक की प्रशंसा में हमें इन पाठकों के भी पत्र प्राप्त हुए हैं :

जयप्रकाश मिश्र, शिवहर, सीतामढ़ी; चंदनकुमार चिंटू बिहिया (भोजपुर), डॉ. शकुनचंद गुप्त आर्य, लालगंज, प्रजापति चरणदास, देवेन्द्र नगर (पन्ना, म. प्र.)।

खिलाड़ी और फिल्में

मई अंक में प्रकाशित लेख 'खिलाड़ियों का फिल्मों में योगदान' पढ़ा। क्रिकेट के ही खिलाड़ी व कपिलदेव के साथी रहे मध्यम तेज गति के गेंदबाज करसन घावरी ने भी गुजराती फिल्मों में अभिनय किया था लेकिन वे उतने सफल नहीं रहे। हां, घावरी किसी फिल्म अभिनेता की तरह ही सुंदर थे। सैयद किरमानी ने भी फिल्मों में अभिनय किया लेकिन गुमनाम ही रहे। मंसूर अली खां पटौदी की पत्नी भले ही फिल्म अभिनेत्री रही हो लेकिन पटौदी ने फिल्मों में अभिनय नहीं किया, बहरहाल मॉडलिंग की दुनिया में वे छाये रहे। वैसे यह बात सत्य है कि खिलाड़ियों ने फिल्मों में कम ही योगदान दिया है और जिन्होंने भी प्रयास किये उसमें से गिने-चुने ही आंशिक रूप से सफल रहे।

— शैलेंद्र भार्गव,
पुनासा (खंडवा)

तपस्वी-सत्यवादी

मई अंक में आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री से श्री त्रिलोककुमार झा की बातचीत से ऐसा लगा, सादगी और निश्छलता का दस्तावेज निगाहों के सामने से गुजर गया। उनका यह कहना कि 'जो तपस्वी नहीं है, वे सत्यवादी नहीं है', एक ऐसा दर्शन है जीवन का जो नकलीपन और दोहरे मापदंडों के सारे लबादे उतार फेंकता है और जीवन की उन सहस्र धाराओं की मूल धारणा को व्याख्यायित करता है, जिनकी परिणति एक सत्य के महासागर में होती है।

— नीति अग्निहोत्री,
खंडवा।

'मासिक के बजाय 'पाक्षिक'

बहुत दिनों से 'प्रतिक्रियाएं' के अंतर्गत प्रकाशनार्थ कुछ लिखने को मन कर रहा था, सो आज एक साथ कुछ बिंदुओं पर उद्गार व्याप्त कर रहा हूं—

'काल चिंतन' में कादम्बिनी संपादक की लेखनी एक दार्शनिक कवि की लेखनी लगती है। 'समय के हस्ताक्षर' में वे एक दूसरे ही रूप में दीखते हैं और 'आखिर कब तक' का लेखक सशक्त व्यंग्यकार लगता है। विश्वास नहीं होता कि इन स्तंभों का लेखक एक ही व्यक्ति होगा।

निःसंदेह कादम्बिनी भावनाशील, प्रबुद्ध एवं सुरुचिवाले पाठकों की सर्वप्रिय पत्रिका है। किंतु 'मासिक' होने से इसकी महीनेभर आतुरता से प्रतीक्षा करनी पड़ती है जैसे कोई प्रेयसी प्रियतम के आने की बाट जोह रही हो। अतएव हमारा— मेरे ऐसे कई साहित्य-प्रेमियों का— सुझाव (आग्रह) है कि इसे 'मासिक' के बजाय 'पाक्षिक' कर दिया जाए। आशा है इसका उत्तर कादम्बिनी में ही देने की कृपा करेंगे।

— हरिदत्त पंत 'हरिदास'
मेला रुद्र, (नैनीताल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
कादम्बिनी
विश्वलोक की तरह पठनीय एवं संग्रहणीय

वर्ष ३४, अंक ९, जुलाई, १९९८

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

अनंतराम गौड़
अंगरेजी बोलने पर जेल होगी..... २४
संगमलाल मालवीय
अमरीका में बेरहम पतियों के
पाशविक हथकंडे..... २८
सुधा पांडे
प्राण महिमा..... ३५
युवाचार्य महाप्रज्ञ
पुनर्जन्म की चेतना..... ४०

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य—४, ज्ञान-गंगा—५, आस्था के आयाम—६, प्रतिक्रियाएं—८, काल-चिंतन—१४, आखिर कब तक—१९, गोष्ठी—६०, विधि-विधान—८१, बुद्धि-विलास—१०१, इनके भी बयां जुदा-जुदा—११९, वैद्य की सलाह—१३०, व्यंग्य-तरंग—१५८, प्रवेश—१६६, ज्योतिष : समस्या और समाधान—१६८, तनाव से मुक्ति—१७०, नयी कृतियां—१७८, यह महीना और आपका भविष्य—१९२, सांस्कृतिक समाचार—१९४, क्लब समाचार—१९६, समस्यापूर्ति—१९८।

आवरण : प्रमोद भानुशाली

विजय अग्रवाल
बुरा क्या है..... [illegible]
डॉ. श्रीराम परिहार
गौरैया की गरदन पर..... [illegible]
शिव बचन चौबे
जहां हनुमान चारों खाने चित्त है..... [illegible]
के. के. देवराज
खबरदार गरीब रेल में सफर न करे..... [illegible]
नवीन पंत
सूरज निकला आधी रात..... [illegible]
डॉ. शोभा निगम
जीवंत हैं बारह धर्म दुनियाभर में..... [illegible]
कमल रंजन 'हिमशैल'
छिपा हुआ गंध प्राणियों के
प्रणय में..... [illegible]
डॉ. महेन्द्र वर्मा
बेतवा तीरे बहे सौहार्द्र समीरे..... [illegible]
कविराज कमलेश्वर प्रसाद बेजवाल
हृदय रोग और गुलाब..... [illegible]
डॉ. एम. एल. खरे
पौराणिक युग में मौखिक आदेश
वाली कंप्यूटर प्रणाली..... [illegible]
चंद्रप्रकाश शर्मा
देव मूर्तियों का अद्भुत लोक..... [illegible]
वल्लतोल
श्रीमद्भागवत की रचना ने..... [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

धनंजय सिंह
एक की भूल दूसरे का सौभाग्य १५१

कहानियां एवं व्यंग्य

के. शांत मणि
साहचर्य ७६
केवल सूद
बिल्लियां ९४
प्रेम प्रकाश
अर्जुन छेड़गडीरना १०७
सुदर्शन वशिष्ठ
पहाड़ देखता है १२५
दिग्विजय सिंह
रामविलास मंत्री का तोता १४०
दीपा शर्मा
उन्नीसवां साल १६०
डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'
मुसकराहटों की महक १७२

कविताएं

डॉ. चन्द्रप्रकाश वर्मा/वीरेन्द्र मिश्र
स्मृति गीत/असमंजस ३३
रामस्वरूप सिंदूर/मनोहर वंद्योपाध्याय
रेणु क्षन/मेरी आवाज ३९
हीरालाल बाछोतिया/अंशु मालवीय
बादल आषाढ़ के/मातृभाषा १००
उद्भ्रांत
प्रीक्षा/मौन हैं ११३
दिनेश शुक्ल/डॉ. नरेश
जंगल के कानून/गजल १५७

सार संक्षेप

भानु प्रताप सिंह
सगूफों का शहर १८१

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल,
मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल,
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज,
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार,
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी,
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त।

संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।

फोन : ३३१८२०१/२८६,
टेलेक्स : ३१-६६३२७,
फैक्स : ०११-३३२११८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम आये और छोड़ गये एक रिक्तता । न आते तो बेहतर होता । अजनबी दरवाजों में जहां अकेली सांसें दिन और रात अपनी ही गिनती गिनतीं हैं, वहां कोई और आकर मोर्चा सम्हाल ले तो युद्ध की स्थितियां बन जाती हैं । युद्ध यूं ही नहीं होते, उनके परिदृष्ट महत्वाकांक्षी व्यक्तियों के अभिसार केंद्र होते हैं !

बहरहाल, आये तो !

—सभ्यता ने सिखाया है कि आगंतुक देवता है ।

—देवता उसी के द्वार पहुंचते हैं जो उसके योग्य है ।

—सामान्य दृष्टांत : दीप कौन नहीं जलाता, लक्ष्मी वहीं ठहरती है जो उसके परिवेश, सभ्यता और मान्यता के द्वार पर सही दस्तक देता है ।

—सरस्वती की स्थिति भी यही है—वह वहीं ठहरती है, जहां खुले हुए मस्तिष्क वातायन की तरह उड़ान भर सकें और उसे व्यंजनों-अभिव्यंजनों से अभिभूत करने की अपेक्षा उसके मस्तिष्क का अभिषेक करें, जिसमें न सौंदर्य है, न दृष्टव्य; है कुछ तो यावावी विकीर्ण प्रस्तारित वे लहर-लहर हवाएं जो आधुनिक भी हैं, पहले भी थीं और पुरोगामी हैं

—मकान वही होता है; आलीशान कोठी, फूस की झोपड़ी, वातानुकूलित कमरे, दहकते अंगारों से जिंदगी पर प्रश्न चिह्न लगाते नंगी दीवारों के घेरे, खुला आकाश, आकाश के नीचे का वितान या/और प्रस्तार की कठोर चट्टानें जहां युग्म मुद्रा में अंकित हैं इतिहास के चित्र जो इतिहास होकर भी वर्तमान की धूप-छांव में उसी तरह पनपते और पलते हैं ।

—जिंदगी जंगल का पहाड़ा नहीं है ।

—जिंदगी न तो बहता हुआ दुर्गंधभरा परनाला है और न गंगा का असीम आशीर्वाद है ।

—जिंदगी न हिमालय है और न कैक्टस विहीन (तक) रेगिस्तान ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

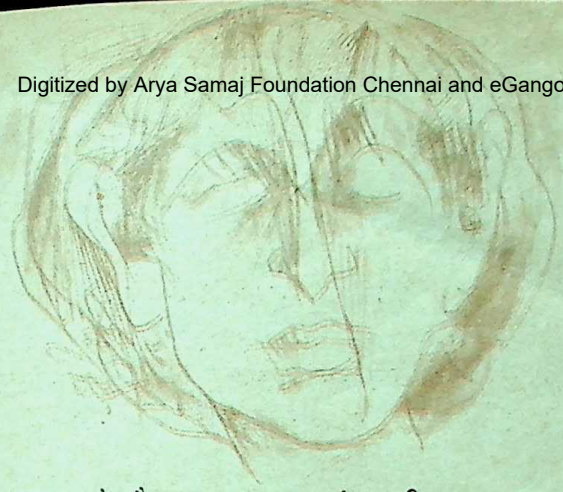

—जिंदगी न दरिया है और न ठहरा हुआ सड़ांध पानी ।

—जिंदगी न मोहजाल है, न मायाजाल, न उपन्यासों के कथा-प्रसंगों में आये प्रेम प्रसंग, न दिन का सूरज है और न रात्रि का शीतल चंद्रमा अथवा अक्षय ध्रुव, न मद्धिम रक्तवर्णी मंगल, न श्वेत शुक्र, न ध्रुवतारों का समूह, और/या न जिंदगी पैरों से कुचलनेवाली दूब है, न बरगद का पेड़ है, न कमल-ताल है, और ... ।

—पूछ सकते हैं आप : आखिर जिंदगी क्या है ?,

—दार्शनिक बनकर उत्तर दे सकता हूं—मसीहा बनकर गुरुवाणी, हिंदुओं का बनकर रामायण, क्रिस्टी बनकर बाइबिल अथवा मुसलमान बनकर कुरान के प्रसंग । इन सबमें तारतम्य खोजने के लिए बुद्धि कैद है । वे खुले हैं पंडितों, पादरी और मुल्लाओं के आत्म केंद्रित घेरों में ।

—मेरी श्रद्धा उन सबके साथ है जो उर्वरा मस्तिष्क को बेचकर आयामों की अपनी परिभाषाएं संग्रहित करते हैं । इसलिए कि बुद्धि चेतना का अमिट द्वार है और जो भी बुद्धि को अपनी तरह से सोचने का यत्न करेगा वह गर्तगामी है ।

—बुद्धि अखंड महामंडित संवेदना नहीं, बल्कि तार्किकता के परिवेश से ऊपर स्थितियों, घेरों, मान्यताओं और कुठाराघातों से जूझती, लड़ती, भिड़ती और फिर सहज होती प्रक्रिया है ।

—अर्थ हुआ यह सदियों का वरदान है, यह सदियों का अभिशाप है ।

—कैसे बने ये फिरके : जाति के, धर्म के, सिद्धांतों के अथवा एक व्यक्ति के एक स्वर के ।

—समन्वय से जो बनता है; प्रश्नवाचक नहीं होता ।

—सिद्धांतों से जो बनता है उसकी कोई अस्मिता नहीं है, क्योंकि सिद्धांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

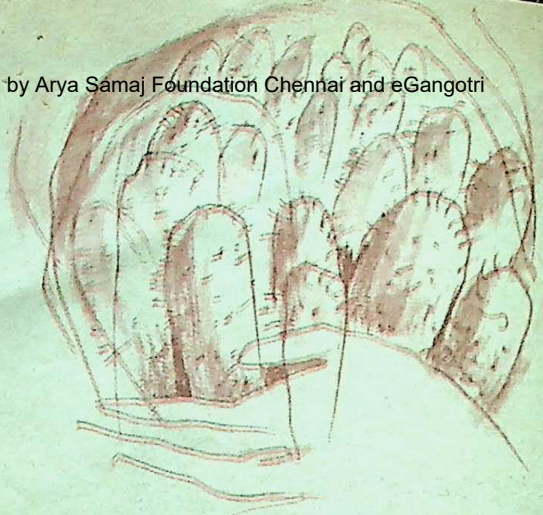

रेगिस्तान में खींची गयी रेखा नहीं है ।

—समय से प्रबल कालजयी न कोई हुआ है और न होगा । समयातीत वही होता है, जिसका समय से समझौता होता है । समझौता करना जो नहीं जानता अपने विनाश और मृत्यु का इतिहास अनजाने लिख रहा है ।

—इतिहास व्यतीत है, किंतु उसने समय के साथ अठखेलियां खेली हैं । अठखेलियां जो खेलता है उसे सहज नीं समझना चाहिए । सहज होता तो राजनीति के वे अमर विजेता आज भी काल खंडित नहीं होते जिन्होंने राजसत्ता का समूचा समीकरण ही बदल दिया है ।

—बहुत कुछ है कहने को, बहुत कुछ है सुनने को, बहुत कुछ है सीखने और समझने को, लेकिन तार्किकता का तकाजा है—सब कुछ है नहीं है सबके लिए, सब कुछ है कुछ के लिए और सब कुछ है किसके लिए नहीं ।

—आखिर यह भेद क्यों ?

—आदमी एक है तो मानदंड और तुला एक ही तो होना चाहिए । नहीं होती ।

—नहीं होती, यहीं आकर विश्व का सर्वस्व ज्ञान कोष सीमित हो जाता है ।

—युद्ध और संस्कृति समन्वति हैं : एक पल मैत्री को हो सकता है, दूसरा पल युद्ध का ।

—युद्ध और मैत्री के नीचे बहुत बारीक रेखा है । समझना है इसे तो देखिए :

अनंत नागफनी से गुजरकर
होकर लहूलुहान
उतरा स्वच्छ, शीतल मैदान में
नहीं इसका दुःख है मुझे,
दुःख, बस एक बात का है मुझे—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

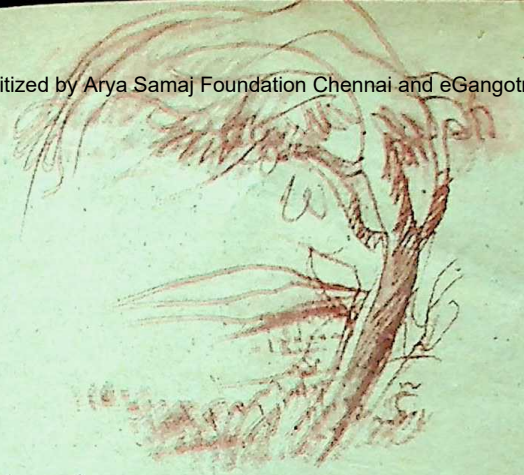

जिसे दी मैंने शीतल छांव
अंगारों-सी तप्त दोपहरी में—
वही.... ।
नहीं....,
मेरी दी शीतल छांव
मुझे ही धोखा दे गयी ।

—तुम आये हो मेरे द्वार, देहरी, घर और आंगन में—
—तुम्हें बुलाया नहीं था मैंने, तुम आये ।
—हर मेहमान देवदूत होता है, प्रसाद लेकर आता है, क्योंकि यह देवघर है ।

और भी आये
मेरे बागीचे के
अवरोध की आवाज से लेकर
शायद बागीचा ही
नहीं पसंद आया ।
—दहशत में थे वे पास पास के
—उनकी देखनेवाली आंखों के
—बेतरतीब सा अजीब भुतहा था मकान
—भयातुर थे वे स्वयं
—'प्रवेश निषिद्ध' हमेशा नहीं होता । क्या कहें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

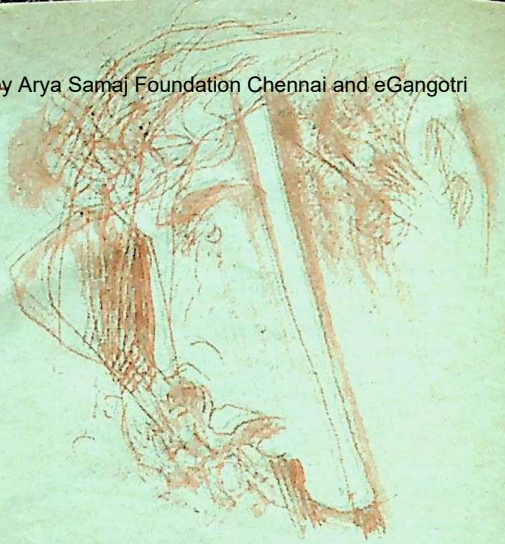

उन्हें जो अर्थ नहीं समझते—निषिद्ध, अनिषिद्ध का ।

—अनिषिद्ध कुछ भी नहीं है ।
—गलती नहीं की मैंने—
किसको क्या दिया
गलती नहीं है कि मेरे पैरों को कैकट्स
छील गये, गलती है कि मैंने उसे छाया दी !
—निषिद्ध होता है भय
—निषिद्ध होता है मन का अधकचरापन
—देकर भी नहीं दे सकने की क्षमता से भारी निषेध कहां है ?
—तुम भयभीत रहे इसी से ।
—आशंका
—अविश्वास
ईर्षा और कुंठा में
गीली लकड़ी से सुलगते—
—क्या इसका दोषी भी मैं हूं !

राजेन्द्र आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

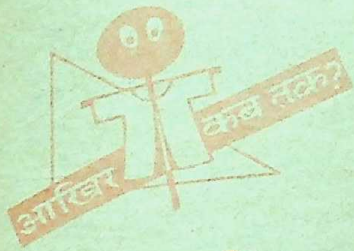

प्यार का रिश्ता सबसे मजबूत होता है

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच कभी राजनीतिक दोस्ती नहीं हुई । लगता है कभी होगी भी नहीं । क्योंकि पाकिस्तान की सत्ता के गलियारे में शुरू से एक ही आवाज गूंजी है— भारत को चिल्ला-चिल्लाकर गाली देना । गाली देना उनका धर्म हो गया है । लगता है जो गाली नहीं देगा वह पाकिस्तान के शासन की बागडोर नहीं संभाल सकता ।

पाकिस्तान की जनता का हाल इससे एकदम उल्टा है । मैं एक बार पाकिस्तान गया था तो वहां की जनता ने जो प्यार-मोहब्बत दी उससे लगता ही नहीं कि वहां के शासक जो कहते हैं उन्हें वहां की जनता ने चुना है । पाकिस्तान और हिंदुस्तान की उर्दू शायरी में भी अदब का रिश्ता है । हाल ही पाकिस्तान के प्रसिद्ध शायर कतील सिफाई भारत आये थे । उन्होंने कहा था कि जब तलक दोनों मुलकों के अवीबों की आंखें खुली रहेंगी । दुनिया को यह पैगाम मिलेगा कि दोनों मुल्कों के बीच नफरत नहीं प्यार है । कतील साहब दिल्ली के फिक्की सभागार में खूब जमे । वे भर नहीं जमे बल्कि उनके साथ और भी शायरों ने एक समां ही बांध दिया । शायरा रोशनी ने फरमाया—

शम्मे उम्मीद की जलाओ, बहुत हसीन है रात,
खुशी के नगमे सुनाओ बहुत हसीन है रात ।

एक और शायर ने बेहद लाजवाब गजल पेश की—

जिंदगी तुझपे ऐहसान किये जाते हैं,
आरजू मौत की है, फिर भी जिए जाते हैं ।

• • •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम तुम्हें दिल से प्यार करते हैं,
ये गुनाह बार-बार करते हैं ।

गुलजार साहब ने तो रात की तड़पती हुई दिल्ली की परतें-परतें खोल दीं—

दिल है तो धड़कने का बहाना कोई ढूंढ़े
सीने में जलन आंखों में तूफान-सा क्यों है
इस शहर में हर शख्स परेशान-सा क्यों है ।

यह परेशानी केवल दिल्ली की नहीं लाहौर, रावलपिंडी और इस्लामाबाद की भी है जहां राजनीतिक बातें होंगी वहां दिल टूटेंगे और जहां साहित्य की सरवायेदारी होगी वहां दिल मिलेंगे और रातें प्यार के नशे में बेहोश होंगी ।

बूंद-बूंद पानी को तरसते लोग

आंध्रप्रदेश अपेक्षाकृत गरीब राज्यों में आता है । हिंदुस्तान की गरीबी को देखते हुए यह आश्चर्य की बात नहीं है । आश्चर्य की बात तो यह है कि हैदराबाद शहर में हैंड पंप नहीं हैं और न गहरे साफ कुएं । नलों में पानी नहीं आता । बिजली भी आंख-मिचौनी खेलती रहती है । मुझे देखकर दर्द हुआ कि उस्मानिया विश्वविद्यालय के अतिथि गृह से पानी लेनेवाले गरीब और फटेहाल लोगों की भीड़ सुबह से शाम तक रहती है । सुना है कि विश्वविद्यालय में बहुत बड़ा कमरा है । नलों से पानी नीचे आता है और कमरे के भीतर से लोग पानी लेकर आते हैं । पानी का पात्र इतना बड़ा होता है कि उसमें दस-बारह लोटे से ज्यादा पानी ही नहीं समाता । मैं उन गरीबों की दुर्दशा देखता रहा और सोचता रहा कि इतना पानी तो पीने के लिए भी काफी नहीं है फिर ये लोग कैसे नहाते-धोते होंगे ! कैसे कपड़े साफ करते होंगे और कैसे शौच जाते होंगे ?

मुझसे यह सब देखा नहीं गया लेकिन उसी विवशता भरे स्वर में राज्य के सूचना मंत्री से, जो मेरे साथ थे, मैंने पूछा, "भाई श्रीनिवास जी, आजाद हुए हमें इतने साल हो गये । आपकी सरकार कब तक अपने ही राज्य के लोगों को एक-एक बूंद पानी के लिए तरसाएगी ?"

सूचना मंत्री श्रीनिवास युवा और मिलनसार व्यक्ति हैं । उन्होंने बताया कि कृष्णासागर बांध से यहां पानी लाने की व्यवस्था की जा रही है ।

मैंने कहा, "मंत्रीजी, कृष्णासागर से हैदराबाद की दूरी ४७ वर्षों में भी पूरी नहीं हो पायी तो अभी कितना और समय लगेगा ?"

प्रश्न गंभीर भी था और युवा मंत्री के लिए विचारणीय भी । ऐसे समय ठहाका ही शेष रह जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरे रामा हरे कृष्णा हरे-हरे

महाप्रभु प्रभुपाद स्वामी ने वर्षों पहले इस्कान की स्थापना की थी । इस्कान का अर्थ है 'अंतरराष्ट्रीय श्रीकृष्ण भावनामृत संघ' संभवतः इसे 'इंटरनेशनल सोसायटी फॉर कृष्णा कांसियसनेस' के नाम से भी जाना जाता है । इसका मुख्य कार्यालय तो वृंदावन में है लेकिन देश के अनेक प्रमुख शहरों में इसकी शाखाएं हैं । विदेशों में भी भारतीय संस्कृति को यह संस्था जीवित रखे हैं । मैंने स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम के भरे बाजार में इस्कान के विदेशी सदस्यों को 'हरे रामा हरे कृष्णा' का उच्चारण करते हुए नाचते देखा ।

मुझे समझ में नहीं आता कि हैदराबाद की हवा में क्या गड़बड़ी है कि वहां की शाखा के सदस्यों में न तो विचारशीलता है और न सद्भावना न शिष्टता ! उन्होंने २९ मई की शाम देशभर से आये लेखकों को भोजन के लिए आमंत्रित किया था । वे जानते थे कि सारे लेखक बुद्धिजीवी हैं और उनसे कहा भी गया था कि आधा घंटे हम अपनी बात कहेंगे । उसके बाद आप सब भोजन प्राप्त कीजिएगा । स्पष्ट है कि यह रात्रि भोजन का निमंत्रण था लेकिन दो घंटे से अधिक समय तक जानबूझकर वहां प्रवचन का घोटा पिलाया गया । यहां तक बताया गया कि प्रभु के कपाट कब खुलते हैं और कब बंद होते हैं, कब आरती होती है और कब भजन-पूजन । भाई, आखिर यह किसे बताया जा रहा है ? वहां उपस्थित सभी लेखक इस संस्था से और उनके कार्यों से परिचित थे ।

मुझसे बहुत देर तक रहा नहीं गया । मैंने उठकर इसका प्रतिरोध किया और 'कथा वाचक' स्वामीजी से कहा कि आपने साठ-सत्तर बुद्धिजीवियों को बुलाया है, इसका भी ध्यान रखिए । हमारे पास समय नहीं है । वे बोले, 'मैं तो घूमता हुआ यहां आ गया हूं । मैं बाहर का हूं ।' मुझे खेद है इसलिए भी कि इस्कान के प्रति मेरी सद्भावनाएं हैं, हैदराबाद के अधिष्ठाता स्वामी श्यामसुंदरदास ने अत्यंत अशोभनीय व्यवहार किया । धर्म के नाम पर ऐसे व्यवहार को मैं शोभनीय नहीं समझता इसलिए मुझे यह बात इस्कान के प्रबुद्ध और समर्पित संचालकों के सामने लानी पड़ रही है ।

टेलीविजन पर अपराधी को फांसी चढ़ते देखें

दुनिया बहुत आगे बढ़ रही है । वाशिंगटन का एक समाचार है कि अमरीकी निवासी अपने घर में बैठे रंगीन टेलीविजन पर अपराधियों को दी जानेवाली मौत की सजा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरा दृश्य सीधे प्रसारण के रूप में देख सकेंगे । जिन अपराधियों को मृत्यु दंड दिया गया है, उन्हें निर्धारित दिन फांसी दी जाएगी जो सीधे टेलीविजन पर देखी जा सकती है।

अमरीका में चार तरीकों से फांसी दी जाती है—(१) सीथल इंजेक्शन देकर (२) बिजली की कुरसी पर (३) गैस चेंबर में अथवा (४) भारतीय तरीके से गले में रस्सी बांधकर ।

आखिर अमरीका की सरकार ने टेलीविजन को माध्यम क्यों चुना । इसका कारण शायद यही हो सकता है कि वहां जिस तरह अपराध बढ़ते जा रहे हैं, उनके प्रति दूसरे लोगों में भय पैदा करना ।

कांसीराम बहुजन का अर्थ समझो

कांसीराम का राजनीतिक दल बहुजन समाज है । हमारे दिमाग में शायद यह बात कभी आयी ही नहीं कि कांसीराम को सीख की जरूरत है और वह दी जानी चाहिए । बिना नाम लिए मैं एक अत्यंत प्रतिष्ठित और अनुभवी राजनीतिज्ञ की बात दोहराना चाहूंगा जो उन्होंने मुझसे निजी प्रसंग में की । उन्होंने कहा कि कांसीराम का दल बहुजन समाज है यानी बहुमत दल है । कांसीराम को बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए और बहुमत दल को अल्पमतों का विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

कांसीराम प्रजातांत्रिक ढंग से चुनाव जीतकर आये हैं । मैं उन्हें समझाना चाहता हूं कि उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि सबसे अधिक अल्पसंख्यक हैं—ब्राह्मण । बहुमत पार्टी को इस सत्य को समझना चाहिए और उसे अल्पमत दल में आने वाले ब्राह्मणों को सुविधाएं देनी चाहिए जिसकी कांसीराम स्वयं अपने लिए मांग कर रहे हैं । हमारा उपदेश मान लेंगे तो कांसीराम निश्चय ही सुखी रहेंगे ।

राष्ट्रपति और हिंदी

दो-चार अंक पहले हमने राष्ट्रपतिजी के अंगरेजी अभिभाषण पर टिप्पणी प्रकाशित की थी ।

प्रसंग था हमारे राष्ट्रपति द्वारा चेक राष्ट्रपति हावेल के सम्मान में दिया गया रात्रि भोज (बैंकट) ।

कुछ दिन पहले ही जब मैं सम्माननीय राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा से मिला तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने अखबार में छपे समाचार की पुष्टि की और बताया कि उन्हें सोफिया (बलोरिया) में रात्रि भोज दिया गया था और वहां उन्होंने अपना पूरा अभिभाषण हिंदी में पढ़ा। राष्ट्रपतिजी अत्यंत विद्वान व्यक्ति हैं। हम आशा करते हैं कि वे इस परंपरा को बनाये रखेंगे।

लालू की बौखलाहट

बिहार के चुनाव परिणाम से स्पष्ट है कि किशोरी सिन्हा की हार के बाद लालू पूरी तरह बौखला उठे हैं। बिहार में एक नयी पार्टी उभरकर आयी है — क्षेत्रीय बिहार पीपुल्स पार्टी। उसकी उम्मीदवार लवली सिंह ने लालू को भी पछाड़ा और कांग्रेस को भी जीतने नहीं दिया। नयी-नयी पैदा हुई क्षेत्रीय पार्टी ने जब अपनी जीत का एहसास ३० मई को कराया तो दलसिंह सराय महाविद्यालय में नकल करते हुए ८ छात्रों को वहां के कुलपति ने सीधे गोली से उड़वा दिया। मजेदार बात यह है कि कभी लालू ने कहा था कि नकल करना छात्रों का अधिकार है और अब नियुक्त किये हुए 'भक्त' उपकुलपति ने लालू के नारों को दरकिनार कर छात्रों को मरवा दिया। निश्चय ही यह लालू यादव के हुक्म के विरुद्ध नहीं हो सकता।

दुनिया में इस तरह बेरहम होने की यह पहली घटना है। नकल करनेवाले छात्रों की कापियां तो छीनी जा सकती हैं लेकिन गोली चलाना भयंकर दंडनीय अपराध है। अब हालत यह है कि लवली अपने पति आनंद मोहन के साथ जगह-जगह इसका प्रचार कर रही हैं। बिहार में छात्र-छात्राओं और युवकों ने सत्ता अपने हाथ में ले ली है। बिहार बंद से लेकर जुलूस-नारे और फायरिंग पूरे बिहार की ताजा हालत है। पता चला है कि लालू ने सी.आर.पी.एफ. की मदद से लड़कियों को भी नहीं बख्शा।

अब सवाल है कि लालू का शासन बिहार में कब तक चलेगा ? एक बार लालू ने कहा था, 'हम ब्राह्मणवाद की चिता जलाएंगे।' देखें बिहार में किसकी चिता जलती है। इस घटना से सवर्णों को बहुत आत्म-बल मिला है। आखिर लालू यादव भैंस की पीठ से सीधे ऊपर उठकर उड़नखटोले पर बैठे हैं।

यह भी एक संयोग है कि धीरेंद्र ब्रह्मचारी का भी निजी उड़नखटोला आखिर हवा में बिखर गया। लालू भाई समय की शिलाओं में और हाथ की हथेलियों में जो एक बार कैद होता है, बाहर उठकर नहीं आता है।

— राजेन्द्र अवस्थी

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्मिता का सवाल है भाषा

अंगरेजी बोलने पर जेल होगी

● अनंत राम गौड़

फ्रेंच भाषा में अब फ्रेंच से इतर शब्दों का उपयोग कानूनी तौर पर एक अपराध बना दिया गया है। दो दिन की बहस के बाद फ्रांसीसी संसद ने एक विधेयक पारित करके फ्रेंच भाषा में अंगरेजी के उन शब्दों के उपयोग पर पाबंदी लगा दी है, जिनका इस्तेमाल अब तक धड़ल्ले से किया जाता था। इस कानून के उल्लंघन का अर्थ होगा छह माह तक का कारावास और ५०,००० फ्रैंक तक जुर्माना। उक्त कानून पारित करने के साथ ही अंगरेजी शब्दों के पर्यायवाची फ्रेंच शब्दों की भी एक सूची प्रकाशित की गयी है और यह निर्देश दिया गया है कि यही फ्रेंच शब्द इस्तेमाल किये जाएं।

संसारभर में अंगरेजी भाषा और अंगरेजियत का प्रचार तेजी से बढ़ रहा है। यूरोपीय समुदाय बनने के बाद फ्रांस में फ्रेंच के साथ ही कुछ अंगरेजी शब्द भी उपयोग में लाये जाने लगे थे। इनका अधिकतर उपयोग बाजारों में होता था। संभवतः विदेशी पर्यटकों की सुविधा के लिए यह किया गया होगा। फ्रांसीसी लोग अपनी भाषा के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं। उन्हें अपनी भाषा के साथ यह साधारण-सी छेड़छाड़ भी बर्दाश्त नहीं हुई।

इसी संदर्भ में हम जरा अपने देश में देखें, तो स्थिति बड़ी शर्मनाक दिखायी देगी। बाजार में नामपट्ट अंगरेजी में ही देखे जाते हैं। हिंदी की पुस्तकें भी इस दुकान पर उपलब्ध हैं, इस आशय की सूचना भी अंगरेजी में ही दी जाती है। विवाह तथा अन्य ऐसे ही उत्सव के पारिवारिक निमंत्रण-पत्र भी, गांवों तक में, अंगरेजी में छपने लगे हैं, जो अत्यधिक शर्म की बात है। आपसी बातचीत में तो लोग प्रायः अंगरेजी बोलते हुए गौरवान्वित अनुभव करते ही हैं। टेलीफोन पर हम पहले अंगरेजी में ही पूछेंगे कि जिस नंबर पर हमने फोन लगाया है, यह वही नंबर है, और यदि हां तो अमुक व्यक्ति उपलब्ध हैं या नहीं।

स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी के सम्पादन में 'प्रताप' के मुखपृष्ठ पर यह आदर्श पद छपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता था—

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं, नरपशु निरा और मृतक समान है ।

विद्यार्थीजी ने अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था कि राजनीतिक पराधीनता पराधीन देश की भाषा पर अत्यंत विषम प्रहार करती है । विजयी लोगों की विजय गति विजितों के जीवन के प्रत्येक भाग पर अपनी श्रेष्ठता की छाप लगाने का सतत प्रयत्न करती है । भाषा जीती तो सब कुछ जीत लिया । विजितों का अस्तित्व मिट चलता है । विजितों के मुंह से निकली हुई विजयीजन की भाषा उनकी दासता की सबसे बड़ी चिह्न है । परायी भाषा हमारे चरित्र की दृढ़ता का अपहरण कर लेती है, मौलिकता का विनाश कर देती है और नकल करने का स्वभाव बनाकर हमारे उत्कृष्ट गुणों और हमारी प्रतिमा को नष्ट कर देती है ।

गणेशशंकरजी के उक्त शब्द आज भी हमें सतर्क और सचेत करते दृष्टिगोचर होते हैं । हमारी भाषाएं हमारी धार्मिक आस्थाओं से जुड़ी नहीं होतीं । पाकिस्तान सरकार ने जब उर्दू को राजभाषा बनाने का प्रयास किया था, तब मुस्लिम पूर्व पाकिस्तान, आज का बांग्लादेश,

गणेशशंकर विद्यार्थी

अपनी बांग्ला भाषा की अस्मिता की रक्षा के लिए उग्र हो पड़ा और अंततः विजयी रहा । अनेक यूरोपीय देशों के इतिहास भाषा-संग्राम की घटनाओं से भरे पड़े हैं । प्राचीन रोम साम्राज्यों से लेकर अब तक के रूस, जर्मन, इतालवी, आस्ट्रियायी, फ्रेंच और ब्रिटिश साम्राज्यों ने सबसे पहले अपने आधीन देशों के भाषा पर अपनी विजय पताका फहरायी, जिसके चिह्न हम आज भी पांडिचेरी, जहां फ्रांसीसी आधिपत्य था, और गोआ (पुर्तगाली) में देख सकते हैं । भाषा समरस्थली के एक-एक इंच स्थान के लिए भीषण रण हुए हैं, क्योंकि देश की भौगोलिक सीमा की अपेक्षा मातृभाषा की सीमा की रक्षा अधिक आवश्यक है । क्योंकि, यदि हमारी भाषा बची रही तो देश का अस्तित्व और उसकी आत्मा बची रहेगी ।

हमारा पड़ोसी देश नेपाल, छोटा और

यदि फ्रांस और जापान की तरह हमने भी अपनी मातृभाषा की रक्षा के लिए प्रभावी प्रयास नहीं किये तो जो राजनीतिक पराधीनता हमारा अहित नहीं कर सकी, वह भाषायी पराधीनता जरूर कर देगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

अविकसित है । किंतु वहां जन-जन का नारा है—

हमरो राजा हमरो देश, प्राण पियारो भइंदा छे ।

हमरो भाषा हमारे वेष, प्राण पियारो भईदा छे ।।

अर्थात्, हमारा राजा और हमारा देश हमें प्राणों से भी अधिक प्यारा है, हमारी भाषा और हमारा वेष हमें प्राणों से भी अधिक प्यारा है । किंतु, हम भारत में जिस अधम स्थिति में पहुंच चुके हैं कि उससे वापस आना भी हमें कठिन लग रहा है । 'हम इतने बदल गये हैं कि पुराने जमाने का पूर्वज हमें शायद ही पहचान सकेगा । हमारी शिक्षा-दीक्षा से लेकर विचार-वितर्क की भाषा भी विदेशी हो गयी है । हमारे चुने हुए मनीषी अंगरेजी भाषा में शिक्षा पाये हुए हैं, उसी में बोलते रहे हैं, और उसी में लिखते रहे हैं । आज भारतीय-विद्याओं की जैसी विवेचना और विचार अंगरेजी भाषा में है, उसकी आधी चर्चा का भी दावा कोई भारतीय भाषा नहीं कर सकती । यह हमारी सबसे बड़ी पराजय है । ...अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में हम अपनी ही विद्या को अपनी ही बोली में न कह सकने के उपहासस्पद अपराधी हैं ।' (—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी)

अनुकरणीय उदाहरण

अपनी भाषा, अपनी मातृभाषा की रक्षा के लिए विश्व में अनेक संघर्ष हो चुके हैं । इन संघर्षों का उद्देश्य अपनी अस्मिता की रक्षा, अपनी संस्कृति की रक्षा करना ही रहा है । अपनी भाषा की अस्मिता के लिए आयरलैंड का संग्राम एक ऐसा उदाहरण है, जिसमें इसके उद्देश्य की पवित्रता झलकती है । आयरलैंड की पराधीनता ने उनकी गालिक भाषा को सर्वथा नष्ट कर दिया था । यह दुर्दशा यहां तक हुई थी कि कुछ गिनतीभर लोगों को ही इसका ज्ञान रह गया था । आयरलैंड के समस्त लोग समझते थे कि अंगरेजी ही उनकी मातृभाषा है, और जिन्हें गालिक आती भी थी, वे भी उसे बोलते हुए लजाते थे । आत्मविस्मृति के इस युग के पश्चात जब आयरलैंड की आत्मा जागी, तब उसने अनुभव किया कि उसने अपनी स्वाधीनता तो खो ही दी, उसके साथ अधिक बहुमूल्य वस्तु अपनी भाषा भी खो दी है ।

अपनी भाषा के पुनरुत्थान के लिए आयरलैंड के लोगों ने जो संघर्ष किया, वह अन्य देशों और जातियों के लिए अनुकरणीय है, जिनकी भाषाएं दबायी गयी हैं । इसी दौर में डि वेलरा ने अपनी युवावस्था में एक बूढ़े मोची से गालिक भाषा पढ़ी क्योंकि, उनका मत था कि यदि उनके सामने देश की स्वतंत्रता और मातृभाषा के पुनरुत्थान के दो विकल्प रखे जाएं तो वे मातृभाषा को चुनेंगे क्योंकि, इनके बल पर देश की स्वाधीनता प्राप्त करना आसान होगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी पराधीनताकाल में भाषा के संबंध में पीड़ित किये जाने के कारण हम आज भी स्वयं को पराजित स्थिति में ही देख रहे हैं । अंगरेजी भाषा का जाल अब अधिक शक्ति के साथ विश्वभर में फैल चुका है । उसके लिए सोद्देश्य प्रयास किये जा रहे हैं । इंग्लिश स्पीकिंग यूनियन तथा ब्रिटिश पुस्तकालयों के माध्यम से यह कार्य प्रच्छन्न रूप से बराबर चल रहा है । उनके इन प्रयासों का असर हम देखने भी लगे हैं कि आज अल्पशिक्षित व्यक्ति भी अंगरेजी भाषा और अंगरेजी व्यवहार को महिमा मंडित करता है और हमारी अपनी परंपराओं की खिल्ली उड़ाता है ।

समृद्ध और प्रभावशाली देश दबाये हुए देशों को विकसित होते नहीं देखना चाहते । वे अनेक प्रकार से प्रयास करके उनकी प्रगति रोकने का प्रयत्न करते हैं । भूतपूर्व साम्राज्यवादियों की भाषा अंगरेजी विश्व की सर्वाधिक शक्तिशाली भाषा है, जिसने अन्य देशों की भांति हमारे देश के अधिकांश सोचने-समझनेवालों को इतना अभिभूत कर रखा है कि उन्हें अपने देश और अपनी भाषा में कमजोरियां अधिक दिखायी देती हैं । जब कभी अपनी भाषा में देश के कामकाज या पढ़ाई-लिखाई की चर्चा होती है, तो सबसे बड़े विरोधी वे लोग ही होते हैं, जिनकी शिक्षा का माध्यम अंगरेजी रहा है । हम आज इस सीमा तक गिर चुके हैं कि अपने पुत्र के लिए वधू तलाश करते समय उस कन्या को प्राथमिकता देते हैं, जिनकी शिक्षा का माध्यम अंगरेजी रहा है । अर्थात इसके लिए दोषी हमारी सरकार अधिक है क्योंकि, उसने परंपरा से ही बच्चों के लिए स्वच्छ, सुंदर और आकर्षक शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध नहीं करायी ।

अब तक हमारा बहुत ही पतन हो चुका है, और यदि फ्रांस और जापान की तरह हमने भी अपनी मातृभाषा की रक्षा के लिए प्रभावी प्रयास नहीं किये, तो जो राजनीतिक पराधीनता हमारा अहित नहीं कर सकी, वह भाषायी पराधीनता जरूर कर देगी । महामहिम राष्ट्रपति ने सोफिया (बल्गारिया) में जब हिंदी में अपना भाषण दिया, तो हमारा मस्तक ऊंचा उठ गया, प्रत्येक भारतीय ने यह महसूस किया कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी हमारी भाषा की गूंज पहुंच रही है ।

हिंदी को समादृत करने के लिए इस आशय की वकालत तो नहीं की जा सकती कि उसे अन्य भाषाओं से बिलकुल दूर रखा जाए, उसके शब्द भंडार को और समृद्ध करने के लिए हिंदीत्तर भाषाओं को अस्पृश्य माना जाए । ऐसा कैसे कहा जा सकता है जबकि हमारी संस्कृत भाषा में ही होरा, ट्रेक्काण, अपोल्किम, कौर्प्य, जूक, हेल आदि दर्जनों ग्रीक शब्द पाये जाते हैं । सुलतान शब्द का 'सुरत्राण' रूप संस्कृत के काव्य ग्रंथों कें अतिरिक्त मुसलमान बादशाहों के सिक्कों पर भी मिलता है । 'तारीख' शब्द का ऐसा व्यवहार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बताया है, मानो वह पाणिनि का ही शब्द है : 'तारिखे च जित्रये त्रयोदशे ।' इसलिए प्रचलित विदेशी शब्दों को हम त्याग नहीं सकते, किंतु विदेशी भाषा को अवश्य त्याग सकते हैं क्योंकि, यह हमारी अस्मिता की रक्षा का प्रश्न है ।

—सी. २ बी./११२ सी. जनकपुरी
नयी दिल्ली-११००५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका में बेरहम पति

पत्नी उत्पीड़न :

विश्व के मानव अधिकारों की सर्वाधिक वकालत अमरीका में होती है । लेकिन वहां हर साल ६० लाख से अधिक पत्नियां अपने पतियों द्वारा प्रताड़ित की जाती हैं । उत्पीड़न की कई किस्में हैं, जिनमें पत्नियों को तड़पाकर मारना, हंटर से पशुवत पीटना, बिजली के शॉक देना आदि शामिल हैं ।

अमरीकी पत्नियों के उत्पीड़न की घटनाएं वहां की पुलिस के लिए एक स्थायी सिरदर्द बन चुकी है । अमरीकी पुलिस का पचहत्तर प्रतिशत समय ऐसे अपराधों की जांच-पड़ताल करने में ही नष्ट हो जाता है, पर परिणाम कुछ नहीं निकलता । गृह कलह की फैलती बीमारी से अमरीकी प्रशासन खासा परेशान है । आखिर सरकार इस पर रोक लगाये तो कैसे ?

अमरीका में हर साल दो से चार हजार पत्नियां अपने पतियों द्वारा सताकर, जलाकर या विद्युत शॉक आदि देकर मौत के घाट उतार दी जाती हैं । पत्नी-हंताओं में उच्च पदों से लेकर आम तबके तक के लोग शामिल हैं ।

लगभग एक दशक पूर्व एफ. बी. आई. की रिपोर्ट को लेकर अमरीकी प्रेस में काफी हंगामा मचा था । इस रिपोर्ट के अनुसार ४० प्रतिशत अमरीकी पत्नियां अपने पतियों द्वारा दी जाने वाली शारीरिक यातनाएं बर्दाश्त न कर पाने की स्थिति में असमय ही दम तोड़ देती हैं, जबकि १० प्रतिशत पतियों को उनकी पत्नियां आत्मरक्षा के दौरान मार देती हैं ।

विशेष शरण गृह

पतियों द्वारा प्रताड़ित महिलाओं के लिए अमरीकी सरकार द्वारा विशेष किस्म के शरण गृह बनाये गये हैं, जहां उत्पीड़ित पत्नियों की सुरक्षा की जाती है । सन १९६४ में इस तरह का प्रथम शरण गृह एक निजी घर में स्थापित किया गया । लेकिन आज अमरीका में तकरीबन ८०० पत्नी शरण गृह स्थापित किये जा चुके हैं । पत्नी-उत्पीड़न और यातनाओं

अत्याचारों की बढ़ती रफ़्तार का आलम यह कि इन शरण गृहों में प्रवेश पाने के लिए बाकायदा प्रतीक्षा सूची में नाम दर्ज कराना पड़ता । जगह होने पर ही प्रवेश कराया जाता है । एक महिला विशेषज्ञ का कहना ये शरण गृह इतने बड़े देश के लिए अपर्याप्त हैं । ईसाई औरतों की देख-रेख में दो सौ से अधिक 'शेल्टर होम' संचालित किये जा रहे जिनका नाम ८०० शरण गृहों की फेहरिस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

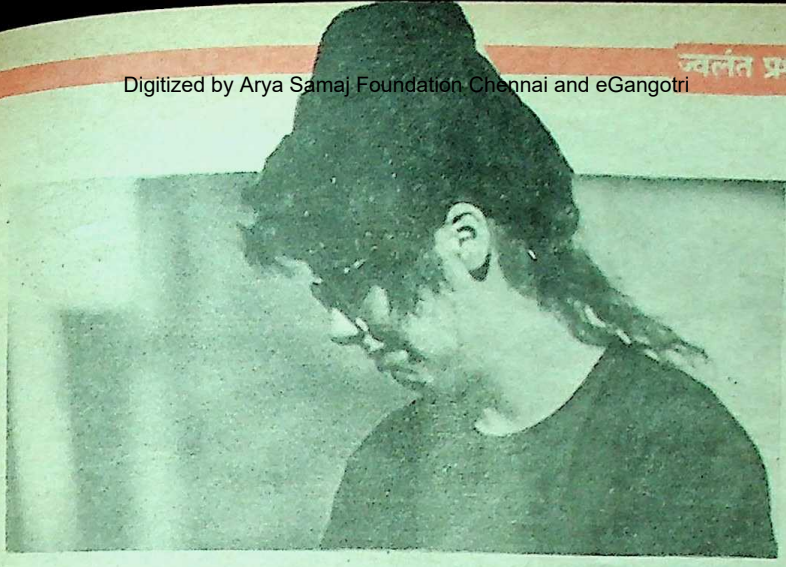

अमरीका में हर साल दो से चार हजार पत्नियां अपने पतियों द्वारा सताकर, जलाकर या विद्युत शॉक आदि देकर मौत के घाट उतार दी जाती हैं । पत्नी हंताओं में उच्च पदों से लेकर आम तबके तक के लोग शामिल हैं ।

के पाशविक हथकंडे

• संगमलाल मालवीय

अलग रखा जा सकता है । ये शरण गृह अत्यंत व्यवस्थित हैं । इन विशेष शरण गृहों के अलावा त्वरित सलाह मशविरा देने का काम कई ईसाई संगठनों द्वारा किया जा रहा है, जिनमें वाई. डब्ल्यू. सी. ए. की 'हाट लाइन' सर्विस की भूमिका गौरतलब कही जा सकती है ।

दांपत्य जीवन : क्रूरता और बलात्कार

उत्पीड़ित पत्नियां क्या कहती हैं अपने पतियों के बारे में ? एक अमरीकी महिला (उम्र ३७ वर्ष) के अनुसार—

'वह (पति) परचून का सामान लेकर घर आया नहीं कि तुरंत दरवाजा खोलना पड़ता है । जरा-सी देर होते ही पति उबल पड़ता है । उसकी नाराजगी की कई वजह हो सकती है । मसलन कपड़े की धुलाई, शाम के भोजन का तैयार न होना अथवा खाना बहुत जल्दी बनाया जाना । ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वजह-बेवजह बहाना बनाकर वह रोज प्रताड़ित करता है । ऐसे भी मौके आये हैं, जब मैं बमुश्किल अपनी जान बचा पायी ।'

अटलांटा निवासिनी श्रीमती रीटा का बयान कम विचित्र नहीं । यह महिला अपने पति विलियम की अर्द्धविक्षिप्त हरकतों से परेशान है । रीटा के मानसिक एवं शारीरिक उत्पीड़न की दास्तान यों है :

'उस दिन घर में सालगिरह की एक दावत के दौरान मेरे पति ने मुझे बेइज्जत ही नहीं किया, बल्कि मुझे सबके सामने कसकर थप्पड़ मारा । उसने दीवार पर टंगी बंदूक उठाकर मुझे पार्टी छोड़कर अंदर चलने के लिए धमकाया । मैंने चीखकर पूछा कि आखिर वह मुझसे चाहता क्या है ? यह सुनते ही वह आग बबूला हो उठा । उसने मेरे कपड़े फाड़ डाले और भद्दी-भद्दी गालियां देने लगा ।

'मैंने विलियम (पति) को समझाया कि आमंत्रित अतिथियों का तो ख्याल करो, वे क्या सोच रहे होंगे । इस पर उसने मेहमानों तक का अपमान किया और अंततः सालगिरह की पार्टी बीच में ही खत्म हो गयी । मेहमानों के जाने के बाद वह मुझे बेडरूम में ले गया और हमबिस्तर होने के लिए कहा । मैंने साफ मना कर दिया । इस पर उसने बंदूक के कूंदे से मारा । उसके पास बड़ा-सा चाकू भी था ।'

यह एक तरह का हिंसक बलात्कार है । रीटा ने पुलिस को बताया कि उसकी नाक तक जख्मी हो गयी और कई दिनों तक खून से तर रही । अमरीकी समाज में नारी अधिकार की वकालत बड़े जोर-शोर से भले ही की जाती हो, लेकिन रीटा-जैसी लाखों पत्नियों की आवाज अकसर पुरुष प्रधान समाज द्वारा दबा दी जाती है ।

गर्भवती पत्नी की हत्या

एक बार पति के अत्याचार का पता तब चला जब उसने अपनी पैंतीस वर्षीया पत्नी को गोली से भून डाला । पत्नी मां बननेवाली थी । अमरीकी नागरिक हैरी हालेन ने अपराध स्वीकारते हुए कहा कि उसने ही अपनी चारों पत्नियों की हत्या की है । पत्नियां बदलना उसका 'निजी-मामला' था । वह शायद चौथी पत्नी की हत्या के बाद पुनः शादी करता, लेकिन पकड़ लिया गया ।

एक अमरीकी महिला के अनुसार :

'शादी होते ही मैं किसी युद्धबंदी की तरह कैद कर दी गयी । मैं अकेले घर के बाहर नहीं जा सकती थी । पति के आतंक और भय ने मेरे हंसने का अधिकार भी छीन लिया । रोने-चीखने पर ऐसा सलूक किया जाता कि मैं रोना-बिलखना ही भूल गयी ।'

अमरीकी पुलिस : मात्र सलाहकार

पत्नी-उत्पीड़न जैसे अपराधों के बारे में अमरीकी पुलिस का रवैया संतोषजनक नहीं है । ऐसे मामलों को लेकर थाना-कचहरी की नौबत प्रायः नहीं आती है । पति-पत्नी के बीच सुलह करा दी जाती है या तलाक मिल जाता है । शिकायत दर्ज होने पर पुलिस सिर्फ सलाहकार की भूमिका निभाती है । अकसर वह पति के पक्ष में ही वकालत शुरू कर देती है । अकसर प्रताड़ित पत्नियां घुट-घुटकर जी लेने की अभ्यस्त हो जाती हैं । जान तो सिर्फ विधवा होने पर ही बचती है । अमरीका में [illegible] प्रतिशत पत्नियां गृह कलह से तंग आकर आत्महत्या कर लेती हैं । खुद एक अमरीकी पुलिस अफसर के अनुसार, पत्नी हिंसा के मामले में पुलिस का रवैया अफसोसजनक [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वह गृह हिंसा को गंभीर घटनाओं पर त्वरित निर्णय न लेकर बचती रहती है ।'

इसी तरह चिकित्सकों समाज सुधारकों, मनोविज्ञान विशेषज्ञों की दृष्टि भी ऐसे मामलों में संकुचित नजर आती है । थेल की इंस्टीट्यूट फॉर सोशल एंड पालिसी स्टडीज के ईवान स्टार्क और उनकी पत्नी डॉक्टर एन. फिल्टक्राफ्ट गृह हिंसा विशेषज्ञ हैं । उनका कहना है कि चिकित्सकों का रवैया प्रताड़ित मलिहाओं के प्रति अकसर पूर्वाग्रही ही होता है । वे शारीरिक रूप से उत्पीड़ित महिलाओं के बारे में गलत रिपोर्ट देते हैं । वे छोटे-मोटे यातना चिह्नों और अंदरुनी चोटों का मेडिकल रिपोर्ट में उल्लेख तक नहीं करते ।

पत्नी को सताकर मारनेवालों में शराबी और गैर शराबी दोनों किस्म के लोग होते हैं । कुछ पति तो परपीड़क किस्म के हैं, जो हर क्षण पत्नियों के लिए जान का खतरा या सतत दुःख का कारण बने रहते हैं ।

न्यू आर्लियंस म्यूनिसिपल कोर्ट के प्रोबेशन निर्देशक का कहना है कि हर सप्ताह पीड़ित पत्नियों की यातना भरी दास्तान सुनने को मिलती है । ऐसे भी तमाम मामले देखने में आये हैं, जिसमें पतियों द्वारा पत्नियों को क्रूरतापूर्वक दांत से काटा गया था ।

शनिवार की रात

पत्नी-उत्पीड़न और गृह हिंसा के मामले अमरीका में दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं । नारी उत्पीड़न की इस महामारी को अमरीकी समाज का कलंक कहें तो अनुचित न होगा । आश्चर्य तो यह है कि दुनिया में कथित मानव अधिकारों के हनन के विरोध में वकालत करनेवाले

अमरीकी प्रशासक खुद अपने देश के घर-आंगन में झांककर आखिर क्यों नहीं देखते ? एक जमाना था, जब अमरीका में पत्नी उत्पीड़न या गृह हिंसा को अपराध ही नहीं माना जाता था । लेकिन आज पत्नियों को कानूनी संरक्षण मिलने के बाद भी उनकी स्थिति शोचनीय बनकर रह गयी है । अकसर पुष्ट गवाहियों के अभाव में ८५ प्रतिशत उत्पीड़न के मामलों में पुलिस कुछ नहीं कर पाती जबकि वहां स्थिति अत्यंत भयावह हो चुकी है । शराबी पतियों की पाशविक मार और उत्पीड़न से बचने के लिए अकसर पत्नियां डरी-सहमी हुई कमरे में अंदर से ताला बंद करके रात काट लेती हैं । या 'शनिवार की रात' (हर सप्ताह) शराबियों (पतियों) से जान बचाने के लिए अपने घर से अन्यत्र शरण लेती हैं । यह रोग आम आदमी से लेकर उच्च तबके के शराबी पतियों में फैला हुआ है, जब वे शराब में धुत्त होकर हिंसक हो उठते हैं तब घर में जंगल राज छा जाता है ।

प्रेम भी, अत्याचार भी

एक अमरीकी मनोचिकित्सक के शब्दों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति की क्रूरता का बयान अत्यंत पीड़क स्थिति को दर्शाता है :

वह व्यक्ति अकसर अपनी पत्नी को पीटते-पीटते बुरी तरह थक जाया करता था । यह उत्पीड़न का कृत्य खत्म होने पर वह पत्नी से माफी मांगता, प्रेमालाप करता या फिर उसे उत्पीड़न न करने की कसमें खाता । पति का कहना है कि वह अपनी पत्नी को बेइंतहा प्यार करता है । पति प्रेम की पाशविक किस्म क्या हो सकती, यह मनोचिकित्सक ही बतला सकते हैं ।

उत्पीड़न : घरेलू मामला नहीं

परपीड़क (सैडिस्ट) या पत्नी-पीड़कों के विरुद्ध मिशिगन स्टेट में सन १९७८ में एक कानून बना था, जिसके अंतर्गत पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करनेवाले पति को गिरफ़्तार किया जा सकता है । यहां तक कि जांच पूरी होने तक उसे पुलिस हिरासत में रखा जा सकता है। मिशिगन का यह कानून अन्य राज्यों के लिए प्रेरणा बना और अब अमरीका में ऐसे मामले पर तत्काल अदालती सहायता दी जाती है।

लॉस एंजिल्स के सिटी अटार्नी गृह हिंसा के मामलों के विशेषज्ञ है । उनके अनुसार पत्नी हिंसा किसी परिवार का घरेलू मामला नहीं। एक एक संगीन अपराध है और इसका हर स्तर पर सख्ती से मुकाबला किया जाना चाहिए। अमरीकी समाज नारी उत्पीड़न को कलंक मानता है । अमरीकी प्रेस, समाजसेवी संस्थाएं, अदालतें और पुलिस सभी सजग हैं, तो फिर वहां नारी के मानवीय अधिकारों के हनन की घटनाएं निरंतर बढ़ क्यों रही हैं ? निसंदेह यह एक चिंतनीय पक्ष है ।

— १४७ केशव भादुड़ी रोड, लखनऊ-२२६०१

अगला अंक

स्वाधीनता विशेषांक : सफलता के सूत्र

एक बेहद उपयोगी संग्रहणीय पृष्ठ-पृष्ठ पर प्रेरक सामग्री सफलतम व्यक्तियों के प्रसंग

अन्य विशिष्ठ आकर्षण :

- न हिंदू है कोई : न है मुसलिम कोई यहां
- ग्रीक कृष्ण भक्त थे
- पुनर्जन्म होता है
- ओ राष्ट्रवादियों, कायरों से कोई आशा न करो
- उड़ती चिनगारी : मै ज्वाला हूं
- इश्क का मारा बुल्लेशाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

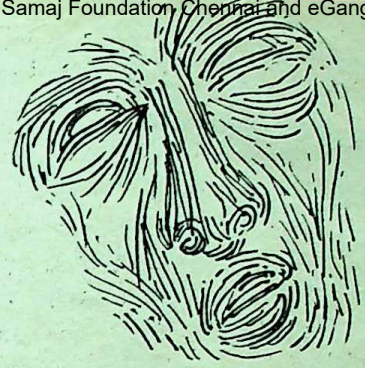

स्मृति गीत

एक नदी-सी निकली मुझमें
यह बंदिश मेघराग वाली

दुखती रग में भटक रही है
प्यासी अक्षरवर्णी बदली
संध्याओं में चमक रही है
अब भी वह सिंदूरी बिजली
दमक रही है जिसके माथे
कोई बिंदी सुहागवाली

धार-धार होती वर्षा में
एक झड़ी इसकी काफी है
गीत के बहाने ही इसको
मिली हुई मुझसे माफी है

पंक्ति-पंक्ति में गुंथी हुई है
याद किसी फूलबाग वाली

शब्दों वाली प्रदर्शनी से
लाया मैं एक शब्द चुनकर
उसको हर शाम प्रार्थना-सा
दुहराता अपनी ही धुन पर

घिरता है सामने अंधेरा
आंखों में है चिराग वाली

—वीरेन्द्र मिश्र
डी/११६ सरोजिनी नगर नयी दिल्ली-११००२३

असमंजस

मैं कितने असमंजस में हूं
हां या ना के बीच पड़ा हूं
दोराहे के बीच खड़ा हूं
निर्णय लूं अधिकार न मेरा—
क्या जाने किसके वश में हूं ?

मेरे जीवन पथ का लेखा,
कुछ भी नहीं यहां अनदेखा,
मुझे परखनेवालो, बोलो—
यश में हूं या अपयश में हूं ।

अभिलाषाएं एक न बाकी,
चलता रहा पंथ एकाकी,
तरस न खाओ मेरे ऊपर—
क्या जानो, कितने रस में हूं

बीत गया जो कुछ होना था
पाना कम ज्यादा खोना था
परिचय पूछ रहे हो मेरा—
तीक्ष्ण तीर हूं, तरकश में हूं ।

—डॉ. चन्द्रप्रकाश वर्मा
प्राची, ई-२/२३३, अरेरा कॉलोनी भोपाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्तरेखा, ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र का अनूठा साहित्य सरल हिन्दी भाषा टीका सहित :

- हस्तरेखा का गहन अध्ययन
  अमरीकी विद्वान बेनहम का प्रमाणिक ग्रंथ (दो भाग) 80
- हस्तरेखाएं बोलती हैं : (कीरो) (CHEIRO)
- अंकों में छिपा भविष्य : (-''-) 40
- भाग्य त्रिवेणी : (-''-) 40
- नास्त्रेदाम की भविष्यवाणियां_ 40
- अंक विद्या रहस्य_(सेफेरियल) 40
- आपकी राशि भविष्य की झांकी_ 40
- हस्त संजीवन, प्राचीन पुस्तक 40
- मंत्र शक्ति_ 25 रु. महामृत्युंजन साधना एवं सिद्धि 40
- तंत्र शक्ति_ 25 रु. दत्तात्रेय तंत्र भा.टी._ 80
- यंत्र शक्ति (दो भाग)_ 50 रु. रुद्रयामल तंत्र_ 100

लाल किताब-साइक्लोस्टाइल (उर्दू की प्राचीन, अब हिन्दी में) 60

ज्योतिष सर्वस्व : डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र
ज्योतिष शिक्षा के लिए क्रमबद्ध सम्पूर्ण ग्रंथ, पृष्ठ 500 150

वृद्ध यवन जातकम् : आचार्य मीनराज कृत हिन्दी टीकाकार : डा. सुरेशचन्द्र 1800 वर्ष पूर्व लिखा गया फलित ज्योतिष का 4500 संस्कृत श्लोकों का महान संदर्भ ग्रंथ, सर्वप्रथम हिन्दी व्याख्या सहित
पृष्ठ 1000 से अधिक दो भागों में सम्पूर्ण ग्रंथ मूल्य 400

जातक तत्वम् : पं. महादेव पाठक विरचितम्
फलित ज्योतिष का सौ वर्षों से अधिक प्राचीन ग्रंथ 100

जैमिनिसूत्रम् सम्पूर्ण : महर्षि जैमिनिकृत
अनेक फलित पद्धतियां_ अन्यत्र दुलर्भ 100

रत्न प्रदीप : डॉ. गौरीशंकर कपूर,
नवरत्नों एवं उपरत्नों का विस्तृत विवेचन— 80

- डाक व्यय अलग लगेगा, बृहद् सूची पत्र मंगायें।
- वी.पी. से मंगाने के लिये पत्र लिखें।

रंजन पब्लिकेशन्स फोन : 3278835
16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं को श्रेष्ठ घोषित करने के दावे सदा से संघर्ष को जन्म देते आये हैं । और यह संघर्ष अंततः शक्ति विहीन ही करता है । प्रस्तुत उपनिषद-कथा यह तथ्य भी रेखांकित करती है !

प्राण महिमा

● डा. सुधा पांडे

जून में प्रकाशित पूर्व कथा में कबंधी की जिज्ञासा का शमन सृष्टि के रचयिता की सम्यक व्याख्या से युक्त था, उसके सारे संदेह लुप्त हो गये थे । वह प्रसन्नचित्त अन्य ऋषियों के पास पहुंचा और पिप्पलाद से ज्ञात रहस्य को सभी को बताया और अब इस कथा में भार्गव वैदर्भी का प्रश्न और उसकी शंकाओं का समाधान ।

प्रातःकाल का सुहावना क्षण था । महात्मा पिप्पलाद अपनी कुटिया में आत्मचिंतन में लीन थे, तभी भृगुगोत्रीय वैदर्भी उनके समीप जाकर प्रणतभाव से खड़ा हो गया । महात्मा पिप्पलाद ने उसे बुलाया और बैठने का निर्देश देते हुए कहा, "वत्स ! तुम्हारी मानसिक विपत्तियों का शमन हो गया अथवा नहीं ? तुम्हें अब क्या जानना शेष है ? तुम्हारे मन में जो संशय हो उसे तुम मुझसे पूछ सकते हो ।"

वैदर्भी क्षणभर शांत रहकर विनम्र स्वर में बोला, "भगवन आपके संसर्ग में आकर कोई अभागा ही होगा, जो मानसिक विपत्तियों से ग्रस्त बना रहे, किंतु अभी भी मेरा मन तर्क-वितर्क और कुतर्कों से पूरी तरह उबर नहीं पाया है । मैं इसीलिए आपके चरणों में निवेदन करते हुए यह पूछना चाहता हूं कि कबंधी की जिज्ञासा शांत करते हुए आपने बताया था कि सृष्टि का रचयिता कौन है ? मैं तभी से अशांत हूं, मैं यह जानना चाहता हूं कि कितने देव इस उत्पन्न हुई सृष्टि को नमन करते हैं, कौन से देव इस सृष्टि को प्रकाशित करते हैं, इसका ज्ञान कराते हैं एवं कौन से देव उन सभी में मुख्य और श्रेष्ठ हैं ? हे भगवन कृपा करके मुझे यह बतलाइए ।"

पिप्पलाद वैदर्भी की बात सुनकर थोड़ा मुसकराये और फिर बोले, "वत्स ! आकाश, वायु, तेज (अग्नि), जल, पृथ्वी, वाक् (वाणी), चक्षु, कान ये सभी देवता हैं । इंद्रियों के द्वारा ये सब मिलकर देवों की शक्ति को प्रकाशित करते हैं और प्राणी के शरीर को धारण करते हैं ।"

"इनमें श्रेष्ठ कौन है इस विषय में मैं तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कथा सुनाता हूं । एक समय की बात है सभी इंद्रियों में आपस में संघर्ष हुआ, सभी अपने को श्रेष्ठतम सिद्ध करना चाहती थीं । उन सभी में वरिष्ठतम प्राण ने समझाने का प्रयास किया कि 'तुम लोग क्यों आपस में प्रतिस्पर्धा कर रहे हो ?' किंतु इंद्रियां शांत होने को तैयार न थीं, सभी अपने को श्रेष्ठ और दूसरे को हीन बताने लगीं । प्राण बड़ी चिंता में पड़ गया कि जड़ जगत के पांचों महाभूत और चेतन जगत की पांचों इंद्रियां परस्पर संघर्ष में पड़ गयी हैं । प्राण ने उन्हें पुनः समझाया कि 'मूर्खतापूर्ण अभिमान में मत पड़ो तुम, मैं ही अपने को पांच प्राणों में बांटकर जड़-चेतन सृष्टि रूपी इस छप्पर को थामकर इसका धारण किये हुए हूं ।'

प्राण के इन वचनों को सुनकर इंद्रियां और पांचों महाभूत बौखला गये और यह बात मानने में अश्रद्धा प्रकट की, उन्होंने बिलकुल इनकार कर दिया । प्राण ने उनसे कहा कि 'यही सही है, तुम स्वयं अपनी श्रेष्ठता बताओ ।' नेत्रों को अपनी देखने की शक्ति पर बड़ा गर्व था, उन्होंने दूसरों से कहा कि 'तुम सब हम पर निर्भर होकर ही अपना कार्य करती हो यदि हम एक क्षण को विराम ले लें, तो तुम सब निरर्थक हो जाओगी ।'

वाणी से यह अपमान सहन न हुआ तत्काल उसने व्यंग्यबाण छोड़ा और गर्जना करते पांचों महाभूतों को चुप रहने के लिए डांटा और कहा, 'मेरे बगैर क्षणभर भी काम नहीं चल सकता । मैं अन्य इंद्रियों के अभाव में भी शरीर धारण किये रहती हूं ।' तभी कानों से न रहा गया,

---

पिप्पलाद वैदर्भी की बात सुनकर थोड़ा मुसकराये और फिर बोले, "वत्स ! आकाश, वायु, तेज (अग्नि), जल, पृथ्वी, वाक् (वाणी), चक्षु, कान ये सभी देवता हैं । इंद्रियों के द्वारा ये सब मिलकर देवों की शक्ति को प्रकाशित करते हैं और प्राणी के शरीर को धारण करते हैं ।"

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने वाणी को रोकते हुए कहा कि 'तुम क्रोध में जोर से चिल्लाकर यदि कुछ कहो भी, तो जब तक हमारा अस्तित्व न होगा तुम्हारी सारी चेष्टा विफल हो जाएगी । हमारे बिना तुम सभी का अस्तित्व व्यर्थ ही है ।' मन अभी एक कोने में खड़ा मौन भाव से सबकी बातें सुनता हुआ संकल्प-विकल्पों में रमण कर रहा था और इंद्रियों की मूर्खतापूर्ण बातों का उपहास भी कर रहा था, किंतु बात सीमा से बाहर चली जाने पर उसके लिए अब मौन रहना संभव न था । अपने स्वभावानुसार वह उनसे गंभीर स्वर में बोला, "हे इंद्रियों मैं तुम्हारा वाहन हूं । तुमसे

जैसा चाहूं वैसा कार्य करवा सकता हूं । मेरे नियंत्रण से बाहर जाने पर तुम्हारी सारी महत्ता और गर्व चूर-चूर हो सकता है ।"

नेत्रों और कानों को तो मन की बात कुछ समझ में आयी और वे चुप भी हो गये किंतु वाणी आसानी से शांत होनेवाली नहीं थी । उसने मन को भी ललकारा और कहा, "मन ! तुम्हारी क्या सत्ता है ? तुम तो हम सब पर आश्रित हो । यदि हम सब तुम्हारा सहयोग करना बंद कर दें तो तुम किस प्रकार अपना कार्य कर सकोगे ?" अब मन चंचल हो उठा था । अविवेकी मन ने भी मान लिया और वाणी की धाक उस पर जम गयी । फिर क्या था वाणी ने पुनः दूसरी इंद्रियों को दिखाना शुरू कर दिया, और फिर नेत्र, कान आदि शक्तिशाली इंद्रियां वाणी के विरोध में तर्क प्रस्तुत करने लगीं और झगड़ा फिर उग्रतर हो गया, विवश होकर वे महान शक्तिशाली प्राण के दरबार में पहुंचीं । प्राण उनकी मूर्खता पर मुसकरा रहे थे और आश्चर्य भी कर रहे थे कि मैंने इन्हें पहले भी बताया था कि इस सृष्टि का धारणकर्ता मैं हूं ? फिर भी ये लगातार कह रहे हैं, कि 'हम श्रेष्ठ हैं ।'

बात यहीं समाप्त नहीं हुई । प्रजापति के पास तक पहुंची । प्रजापति ने सभी को शांत करते हुए बताया कि 'हे इंद्रियवृंद ! तुम सबमें जिसके न रहने से शरीर व्यर्थ हो जाए, वही सबमें बड़ा है ।' फिर क्या था वाणी सबसे अपनी श्रेष्ठता की धाक जमाने के लिए सभी से विद्रोह करके वर्ष के लिए चली गयी और जाते-जाते कहती गयी —'मेरे न रहने पर इन सबकी जो दुर्दशा होगी उसका परिणाम स्वतः सामने आ जाएगा ।' उसे भ्रम था, कि वाणी से रहित होने पर लोग न बोल पाएंगे और न कुछ कार्य कर सकेंगे ।

एक वर्ष व्यतीत करके जब वाणी लौटी तो उसने विचार किया सारी इंद्रियां उसके अभाव में परेशान हो उठी होंगी और उसके पहुंचते ही प्रसन्नता से भर जाएंगी, पर यहां उलटा हुआ, सभी इंद्रियों ने उस पर व्यंग्य किया और कहा, "अरे ! तुम एक वर्ष तो क्या दस वर्ष भी न लौटतीं, तो इस शरीर का कोई अनिष्ट नहीं कर सकता था ।" वाणी का गर्व समाप्त हो गया, वह लज्जित हो गयी । उसकी मुखरता फीकी मुसकान में विलीन होकर रह गयी । कानों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्षुओं की भी यही गति हुई । मन ने भी विद्रोह के वर्ष की अवधि में भटकते हुए स्वयं को सताने-जैसी बात का अनुभव किया ।

प्राण के लिए भी अब तक इंद्रियों का अति भौतिकवाद असह्य हो चला था, अब उसने जड़ चेतन से उत्क्रमण प्रारंभ कर दिया । प्राण का विद्रोह करना भर था कि पांचों इंद्रियां अपनी जड़ से हिल गयीं, वे उसके साथ ही शक्तिविहीन हो गयीं और निकलने लगीं, जब प्राण फिर से स्थिर हुआ, वे पुनः स्थिर हो गयीं । यह सब ठीक उसी प्रकार था जैसे मधुमक्खियों में रानी मक्खी के उड़ जाने पर अन्य सारी मक्खियां भी उड़ जाती हैं और उसके बैठ जाने पर फिर बैठ जाती हैं । प्राण के विचलित होते ही दूसरी इंद्रियों का अस्थिर होना स्वाभाविक था, अब उनका भ्रम टूट गया और उन्हें विश्वास हो गया कि हम सभी का अस्तित्व प्राण पर ही निर्भर है । सभी ने प्राण से याचना की और जड़ जगत के पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा चेतन जगत की इंद्रियों ने मिलकर प्रीतिपूर्वक प्राण की स्तुति की ।

महर्षि पिप्पलाद मुग्ध होकर वैदर्भी को यह सारा विवरण देते जा रहे थे, काल की गति मानो थम गयी थी । प्राण की महिमा स्पष्ट करते हुए पिप्पलाद ने कहा, "संपूर्ण जातिगत भेद-विभेद और आयोजनों का मूल आधार जीवन ही है जैसे रथ के पहिये की नाभि में अरे लगे होते हैं । यह प्राण ही पहिये की नाभि है । यज्ञ-यज्ञादि संपूर्ण कर्मकांड भौतिक शक्ति, आत्मिक शक्ति ये सब भी प्राण में अवस्थित हैं । यही प्राण देवताओं की अग्नि है, पितरों की स्वधा है, ऋषियों में चरित है अर्थवांगिरस का सत्य है । यही प्राण तेजस्वी इंद्र है । रक्षा कर्म के कारण वही रुद्र है, अंतरिक्ष में प्रवाहित वायु और ज्योति-पुंजों में श्रेष्ठतम सूर्य भी यही प्राण है । वही पर्जन्य बन-बनकर जल वर्षा करता है, अन्न बन जाता है और जीवन को धारण करता है । प्राण के वश में सब-कुछ है । इंद्रियां भी प्राण की इस महिमा से अभिभूत थीं और उन्होंने प्राण से निवेदन किया, "हे प्राण अब तुम उत्क्रमण मत करो, जो तुम्हारा रूप हमारे मन में फैल गया है, उसे हमारे लिए कल्याणकारी करो । हम में भरपूर प्राण शक्ति का संचार हो, हे प्राण हमारी इस प्रकार रक्षा करो जैसे माता पुत्रों की रक्षा करती है एवं आप ही हमारे लिए श्री और प्रज्ञा का विधान करें ताकि हम भौतिक ऐश्वर्य और आध्यात्मिक सौंदर्य से सुशोभित हो सकें ।"

पिप्पलाद के इन वचनों को सुनकर वैदर्भी का अंतर्मन प्राण विद्या के शुभ प्रकाश से आलोकित हो उठा । उसने गुरुचरणों में प्रणाम किया और निवेदन किया, "हे प्रभु ! मुझे सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों विषयों के संदर्भ में कोई संदेह नहीं रह गया है मैं कृतकृत्य हुआ हूं ।"

महात्मा पिप्पलाद विश्व के स्वामी प्राण महिमा की मुख्य धारा में लीन अभी भी ध्यानावस्था में थे । विस्मय विमुग्ध वैदर्भी उनकी चरण रज लेकर अपनी कुटिया में लौट गया एवं अपने साथियों को उसने ऋषि मुख से ज्ञात प्राण महिमा का रहस्य बताया । उसके अन्य साथी भी प्राण विद्या के रहस्य को जानकर उसमें पारंगत हो गये । (प्रश्नोपनिषद से)

— प्राचार्या एम.के.पी. महाविद्यालय देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी आवाज

लगता है
मेरी आवाज में
अब ताकत नहीं है
मेरे शब्द
कमीज में बार-बार टांके हुए
बटन से लगते हैं

मैं
जिस चिंतन की गहराई पर
इठलाता हूं
या गद-गद हो जाता हूं
जिस भाव के उठने पर
वे अब सबको
महज
कबाड़ी की वस्तुएं लगती हैं

अब
किसी आवाज की
जरूरत भी नहीं है
जरूरत है
तो सिर्फ धमाके की

— मनोहर वंद्योपाध्याय

२०३, सेक्टर ३७
फरीदाबाद-१२१००३

रेणु-क्षण

रेणु-क्षण, वेणु-वादन जिये
श्वास में गंध-मादन *लिये*

मैं चला था, कि जिस विंदु से
कोहरिल-वृत्त में खो गया
प्राण, दिक्काल को लांघकर
मुक्त जीवन-मरण हो गया

आत्म-क्षण लोक-रंजन जिये
अस्मिता का विसर्जन *लिये*

लक्ष्य-भोगी चरण के लिए
यात्रा-सुख अभी शेष है
अंत से लौट, अथ को चलूं
आत्मगत का समादेश है
बिंब-क्षण, मूर्त्तदर्शन जिये
[illegible]का एक दर्पण *लिये*

मैं क्षितिज-शून्य-गति में ढला
स्वत्व के उत्स को जा रहा
लोचनों में भरे तीर्थ-जल
लय-प्रलय की कथा गा रहा
शब्द-क्षण, नाद-ब्रह्मन् जिये
गीत का भाव-चिंतन *लिये*

—रामस्वरूप सिंदूर

सरस्वती सदन
एल-८०, इंदिरा नगर,
कानपुर-२०८०२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्जन्म की चेतना

● युवाचार्य महाप्रज्ञ

कर्म के द्वारा हम अतीत के जन्म को समझ सकते हैं और भावी जन्म को भी जान सकते हैं । भावी जन्म का निर्धारण भी कर्म से होता है और अतीत के जन्म की पहचान भी कर्म से होती है । व्यक्ति के वर्तमान जन्म को देखकर जाना जा सकता है कि उसका पूर्व जन्म किस प्रकार का रहा है !

यह जीवन आदि भी नहीं है और अंतिम भी नहीं है । इससे पहले भी जीवन था और भविष्य में भी जीवन होगा । प्रत्येक प्राणी इस जीवन की शृंखला में, जन्म-मरण के चक्र में, चल रहा है, इसीलिए पुनर्जन्म होता रहता है । पूर्व का जन्म, वर्तमान का जन्म और पुनर्जन्म— यह क्रम बराबर चलता रहता है ।

जन्म की व्याख्या : महत्त्वपूर्ण सूत्र

पुनर्जन्म को समझने के लिए कर्म-चेतना को समझना आवश्यक है । जन्म की व्याख्या का महत्त्वपूर्ण सूत्र है— कर्म । कर्म के द्वारा हम अतीत के जन्म को समझ सकते हैं और भावी जन्म को भी जान सकते हैं । भावी जन्म का निर्धारण भी कर्म से होता है और अतीत के जन्म की पहचान भी कर्म से होती है । व्यक्ति के वर्तमान जन्म को देखकर जाना जा सकता है कि उसका पूर्व जन्म किस प्रकार का रहा है, पूर्व जन्म में किस प्रकार का आचरण और व्यवहार रहा है । एक पशु को देखकर यह जाना जा सकता है कि उसने पूर्व जन्म में कर्म कैसे किये हैं । जो व्यक्ति बहुत कपट करता है, माया-मृषा करता है, कूट तोल-माप करता है, दूसरों को ठगता रहता है, वह पशु-योनि में उत्पन्न होता है । जैसे वर्तमान जीवन की व्याख्या पूर्व आचरण और बद्ध जीवन के आधार पर की जा सकती है वैसे ही वर्तमान आचरण के आधार पर यह निर्धारण किया जा सकता है कि अमुक व्यक्ति कहां, किस योनि में उत्पन्न होगा ? इसका अगला जन्म कैसा होगा ? इसका आचरण ऐसा हो तो परिणाम कैसा होगा ?

गति, जाति और स्थिति

वर्तमान जीवन के आचरण भावी जीवन के निर्धारक बनते हैं । आचरण के साथ कर्म जुड़ा हुआ है । जिस प्रकार का आचरण होगा, उस प्रकार का बंध होगा । आयुष्य का जो बंध है, उसके साथ अनेक प्रकृतियों का बंध होता है । इस संदर्भ में हम कम-से-कम तीन तत्वों पर विचार करें... गति, जाति और स्थिति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुष्य बंध के साथ गति का निर्धारण होता है । चार गतियां मानी गयी हैं... नरक, तिर्यच, मनुष्य और देव । व्यक्ति इनमें से किस गति में जाएगा, इसका निर्धारण आयुष्य के साथ हो जाता है ।

दूसरा तत्व है जाति । वह किस जाति में पैदा होगा ? जाति का मतलब ओसवाल, अग्रवाल, ब्राह्मण से नहीं है । उसका तात्पर्य प्राकृतिक, वास्तविक जातियों से है । जीवों की पांच जातियां हैं— एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय और पंचेंद्रिय । सारे संसारी जीव पांच प्रकार के होते हैं । जीव मरने के बाद एकेंद्रिय बनेगा, द्वींद्रिय या त्रींद्रिय बनेगा, चतुरिंद्रिय पंचेंद्रिय बनेगा, यह जाति का निर्धारण आयुष्य के साथ हो जाता है ।

तीसरा तत्व है— स्थिति । वह व्यक्ति कितने समय तक जीएगा ? जीवनकाल की अवधि कितनी होगी ? इसका निर्धारण भी आयुष्य के साथ होता है ।

गति, जाति और स्थिति— ये तीनों बातें एक साथ निश्चित होती हैं ।

यह कर्म-चेतना पुनर्जन्म की व्याख्या का महत्त्वपूर्ण सूत्र है । हम यह न मानें— जीवन में जो कुछ घटित होता है, सब कर्म से ही होता है किंतु वह भी एक प्रमुख कारक है । परिवर्तन के अनेक हेतु हैं, उनमें एक है कर्म । देश, काल, परिस्थिति, वातावरण— ये सारे परिवर्तन के निमित्त बनते हैं । प्रत्येक घटना के साथ कर्म का सीधा संबंध नहीं जुड़ता । भूकंप आया । हजारों लोग मर गये । लाखों लोग घर-बार विहीन हो गये । बहुत भयानक विपदा में फंस गये । इसमें केवल कर्म ही कारण नहीं है । परिस्थिति, क्षेत्र और काल विशेष भी विशेष कारण हैं ।

जीवन की व्याख्या के अनेक घटक हैं किंतु उनमें सबसे शक्तिशाली और महत्त्वपूर्ण सूत्र है कर्म, चेतना, कर्म का विज्ञान । उसके द्वारा जीवन की व्याख्या की जा सकती है और यह जानने का मौका मिलता है कि हम कौन थे ? हम कैसे थे ? हम क्या थे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतीत की स्मृति

उत्तराध्ययन सूत्र का एक प्रसंग है। चक्रवर्ती की राजसभा में प्रदर्शन था मधुकरी गीत नाट्य-विधि का। बहुत विचित्र होता है, यह नाटक। रायपसेणीय सूत्र में नाटक की अनेक विधियों का वर्णन है, उनमें प्रमुख नाट्य विधि है मधुकरी गीत। इस नाट्य में फूल-मालाएं बिछा दी जाती हैं। नट कभी किसी फूलमाला का स्पर्श करता है और कभी किसी अन्य फूलमाला का। एक फूल का स्पर्श करता है और भंवरे की तरह उड़ जाता है। पुनः आता है, दूसरे फूल का स्पर्श करता है और फिर उड़ जाता है। एक ओर गायन चलता है, वाद्य-यंत्रों से विभिन्न प्रकार की नाट्य ध्वनियां निकलती हैं, दूसरी ओर व्यक्ति फूलों के स्पर्श का करतब दिखाता चला जाता है।

मधुकरी गीत-नाट्य प्रारंभ हुआ। चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त मधुकरी गीत में डूबता चला गया। वह बहुत गहरे में उतर गया। उसके मन में विकल्प उठा— 'मैंने ऐसा नाटक कहीं देखा है।' चक्रवर्ती इस प्रश्न की गहराई में डूबने लगा। वह चेतन मन की सीमा से अवचेतन मन की सीमा में चला गया। चेतन मन का दरवाजा बंद हो गया। जब चेतन मन का दरवाजा बंद होता है, अवचेतन मन का दरवाजा खुल जाता है। जब व्यक्ति अवचेतन मन के स्तर पर पहुंचता है, जाति स्मृति की भूमिका बन जाती है।

'मैंने कहां देखा है ?'

इस प्रश्न की गहराई में जाते-जाते चेतना का द्वार खुल गया, वह प्रकाश से भर उठा। अतीत का एक-एक पृष्ठ स्मृति पटल पर उतरने लगा, उसे याद आया, मैंने ऐसा नाटक सौधर्म देवलोक में पद्मगुल्म नामक विमान में देखा है।

जाति-स्मृति पूर्व-जन्म की स्मृति हो गयी। राजा को बहुत आह्लाद मिला— ओह ! कितना सुंदर था सौधर्म कल्प देवलोक और कितना सुंदर था पद्मगुल्म विमान। किंतु इस पुलकन के साथ-साथ एक वेदना भी उभर आयी। उसने सोचा— 'अरे ! मेरा भाई कहां गया ?' एक नया प्रश्न खड़ा हो गया। 'मेरा भाई कहां है ? मैं अकेला हो गया। अपने भाई से बिछुड़ गया।' मन में एक अकुलाहट और वेदना का भाव प्रबल हो गया। चक्रवर्ती ने भाई से मिलने की एक युक्ति खोजी और राजसभा में घोषणा कर दी— "जो इस श्लोक को पूरा करेगा, उसे आधा राज्य दे दूंगा—

'आस्व दासौ मृगौ हंसौ, मातंगावमरौ तथा।'

यह घोषणा चारों ओर फैल गयी। पूरे साम्राज्य में यह आधा श्लोक जन-जन के मुंह पर उच्चरित होने लगा।

एक दिन चरवाहा अपनी गायों और भैंसों को चरा रहा था। वह एक कुएं की मेंड़ पर खड़ा था और बार-बार वही श्लोक दोहरा रहा था। ऐसा योग मिला— उसके पास ही पेड़ की छांव में एक मुनि ध्यान में लीन थे। उन्होंने यह श्लोक सुना। मुनिवर पहले ही जाति-स्मृति ज्ञान को उपलब्ध हो चुके थे। श्लोक सुनते ही मुनि ने उसको पूरा करते हुए श्लोक का उत्तरार्द्ध सुना डाला। चरवाहे ने यह श्लोकपूर्ति सुनी। उसने सोचा— 'यदि श्लोक-पूर्ति सही होगी तो मुझे आधा राज्य मिल जाएगा।' वह चक्रवर्ती की राजसभा में पहुंचा।

चक्रवर्ती को नमस्कार कर निवेदन किया— "महाराज ! श्लोक पूरा हो गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरवाहे ने मुनि के द्वारा रचा गया पद्य बोल दिया—

आस्व दासौ मृगौ हंसौ, मातंगावमरौ तथा ।
एसा नै षष्ठिका जाति, अन्योन्याभ्यां वियुक्तयो : ।।

चक्रवर्ती ने पूछा— "किसने बनाया है यह श्लोक ?"

चरवाहे ने कहा— "राजन् ! कुएं के पास एक मुनि खड़े हैं । उन्होंने यह श्लोक बनाया था और उसको ही मैंने यहां सुनाया है ?"

दो भाइयों का मिलन

चक्रवर्ती चरवाहे को साथ ले मुनि के समीप पहुंचा । चक्रवर्ती ने देखा-मुनि ध्यानमुद्रा में लीन हैं । उन्हें देखते ही चक्रवर्ती के भीतर स्नेह जाग गया । यह प्रतीति हो गयी— 'यही है मेरा भाई । मैंने भाई को पा लिया ।'

चक्रवर्ती मुनि को संबोधित करते हुए बोला— "भइया ! मैं आ गया हूं ।" मुनिवर ने ध्यान पूरा किया । उसने भी पूर्व-जन्म की स्मृति से चक्रवर्ती का पहचान लिया । बिछुड़े हुए दो भाई मिल गये । दोनों देखने लगे अपने अतीत के सारे चित्र को ।

चक्रवर्ती बोला— "भाई ! आज हमारे सामने पांच भव प्रत्यक्ष हैं, इन जन्मों में हम सदा एक-दूसरे के साथ रहे हैं । यह छठा भव है, जिसमें हम दोनों बिछुड़ गये । भाई चित्र ! तूने स्नेह पाला नहीं और मुझसे अलग हो गया । अनेक जन्मों का यह साथ छूट गया ।"

अलग कौन हुआ ?

मुनि चित्र ने कहा— "राजन तुम सोचो । अलग मैं हुआ या तुम हुए ? तुम वर्तमान जीवन की व्याख्या का सूत्र देखो । तुमने निदान किया था, भोग का संकल्प किया था इसलिए तुम चक्रवर्ती बन गये । मैंने कोई निदान नहीं किया, भोग का संकल्प नहीं किया इसलिए मैं मुनि बन गया । तुम्हारे वर्तमान जीवन का हेतु है, वह निदान । तुमने उस निदान से जो कर्म का बंध किया, वह वर्तमान जीवन का हेतु बन रहा है ।"

जब चेतन मन का दरवाजा बंद होता है, अवचेतन मन का दरवाजा खुल जाता है । जब व्यक्ति अवचेतन मन के स्तर पर पहुंचता है, जाति स्मृति की भूमिका बन जाती है ।

चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त बहुत ऋजु भाव से बोला— "मुनिप्रवर ! आप ठीक कह रहे हैं । मेरा ऐसा निदान किया हुआ है कि मैं भोग को छोड़ नहीं पा रहा हूं । जैसे हाथी दल-दल में फंस जाता है, वैसे ही मैं भोग में फंसा हुआ हूं । भोग में आसक्त बना मैं त्याग के मार्ग पर बढ़ने में असमर्थ हूं । आपका और हमारा मार्ग अब एक नहीं हो सकता ।"

वर्तमान जीवन का संकेत-सूत्र

वर्तमान जीवन की स्थिति का एक संकेत-सूत्र है इस घटना में । अध्यात्म की व्याख्या का सूत्र है— कर्म । जब तक व्यक्ति कर्म के रहस्यों को नहीं जानता, आध्यात्मिक नहीं हो सकता । कर्म के बिना अध्यात्म का कोई अर्थ ही नहीं है । प्रत्येक व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत आत्मा एक है, किंतु नाना अवस्थाएं घटित हो रही है । व्यक्ति कभी किसी अवस्था में जाता है और कभी किसी अवस्था में । कभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूलभूत प्रश्न है— एक प्राणी आदमी क्यों बना ? एक प्राणी पशु क्यों बना ? ऊंट क्यों बना ? भैंसा क्यों बना ? बैल क्यों बना ? कीड़ा-मकोड़ा क्यों बना ? एक प्राणी पौधा क्यों बना ? इसकी व्याख्या कर्म के बिना नहीं की जा सकती ।

किसी प्रकार का जन्म लेता है और कभी किसी प्रकार का । यह सारा भेद कर्मकृत है । कर्म का संबंध है आचरण से । आचरण भेद, कर्म भेद और उससे होता है जन्म का भेद ।

मूलभूत प्रश्न है— एक प्राणी आदमी क्यों बना ? एक प्राणी पशु क्यों बना ? ऊंट क्यों बना ? भैंसा क्यों बना ? बैल क्यों बना ? कीड़ा-मकोड़ा क्यों बना ? एक प्राणी पेड़-पौधा क्यों बना ? इसकी व्याख्या कर्म के बिना नहीं की जा सकती ।

आज का वैज्ञानिक कहता है— इस प्रकार का जीन था इसलिए प्राणी ऐसा बन गया । इस तथ्य को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं है कि जिस प्रकार का जीन होता है, उस प्रकार का पदार्थ बन जाता है । प्रश्न यह है— एक प्राणी को ऊंट का जीन क्यों मिला ? एक प्राणी को कुत्ता बनने का जीन क्यों मिला ? एक प्राणी को मनुष्य बनने का जीन क्यों मिला ? इस प्रश्न का उत्तर शायद विज्ञान के पास नहीं है । दर्शन या कर्मवाद ने इस प्रश्न पर बहुत विचार किया और उसका हेतु बतलाया कर्म । यदि हम कर्म को न मानें तो पुनर्जन्म की व्याख्या करना हमारे लिए संभव नहीं है । कर्म को समझना । आत्मा को समझने का एक गुर है, चाबी है । इससे हम आत्मा की विभिन्न परिवर्तनशील अवस्थाओं को जान सकते हैं ।

वर्तमान जीवन का नियामक

कर्म के आधार पर कहा जा सकता है— हमारा वर्तमान जीवन अतीत का प्रतिफलन है और हमारा भावी जीवन वर्तमान का परिणाम है । इस आधार पर ही आचार-शास्त्र का निर्माण होता है । हमारी जितनी आचार-चेतना है, उसका निर्धारण भी इन दोनों जन्मों के बीच होता है । अतीत का जन्म और भावी जन्म ये दोनों वर्तमान जीवन के नियामक बनते हैं और उसका निर्धारण करते हैं ।

बुद्ध, कृष्ण और महावीर

बुद्ध, श्रीकृष्ण और महावीर ने भी कर्म विपाकों का अच्छा विश्लेषण किया था । बुद्ध ने कहा— इस जन्म के इकानवे जन्म पहले मैंने किसी को सताया था, किसी पर बाण चलाया था इसलिए आज मेरे पैर में कांटा चुभ गया । कहां का संबंध कहां जोड़ा गया ।

जीवन की व्याख्या के संदर्भ में अध्यात्म विद्या का यह विचित्र प्रश्न है— 'कब किसने क्या किया और कब कौन किसका फल भुगत रहा है ।'

श्रीकृष्ण ने कहा— "अर्जुन ! मेरे और तुम्हारे बहुत जन्म पहले हो चुके हैं ।"

महावीर ने गौतम से कहा— "गौतम ! तुम्हारे प्रति मेरा जो आत्मीय अनुराग है, वह कोई आकस्मिक घटना नहीं है । तू चिरकाल से मेरा साथी रहा है । मेरे साथ तुमने जीवन जीया है इसलिए इतना अनुराग है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुबंध की परंपरा

एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के प्रति अनुराग और द्वेष लंबे समय तक चलता है । आचार्य भिक्षु ने लिखा— 'मित्र सूं मित्रपणों चालियो शत्रु सूं शत्रुपणों चालै— मित्र के साथ मैत्री संबंध लंबे समय तक, कई जन्मों तक चलता जाता है । शत्रु से शत्रुता का संबंध भी चिरकाल तक चलता जाता है ।

एक व्यक्ति ने मंत्रविद् के सामने अपनी समस्या रखी— मुझे कोई प्रेत सता रहा है । मंत्रविद् ने कुछ उपचार किये । प्रेत उपस्थित हो गया । मंत्रविद् ने पूछा— तुम इसे क्यों सता रहे हो ?

प्रेत बोला— 'मुझे इससे बदला लेना है ।'

'किस बात का बदला लेना है ?'

'मैंने पूर्वजन्म में इसे अपना हार रखने के लिए दिया था । मैंने कहा था— 'तुम इस हार को अपने पास रखो । मैं यात्रा से वापस आकर ले लूंगा । इसने हार रख लिया । मैं यात्रा से लौटा, इससे अपना हार वापस मांगा । इसका मन लालच से भर गया । इसने यह कहते हुए हार नहीं दिया— 'कौन-सा हार ? कब दिया था मुझे ? क्या झूठा आरोप लगा रहे हो ?' यह हार को डकार गया । मेरा मन प्रतिशोध से भर उठा । आज मुझे उस हार का बदला लेने का अवसर मिला है । मैं इसे सताऊंगा ।'

ऐसा क्यों होता है ?

कितनी जटिल है जीवन की समस्या ? अध्यात्म के बिना, कर्म चेतना को समझे बिना, जीवन की ऐसी अनेक समस्याओं की व्याख्या नहीं की जा सकती । एक व्यक्ति को अमुक प्रकार का भयंकर रोग हो गया । प्रश्न होता है— यह क्यों हुआ ? एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को अकारण ही क्यों सताता है ? एक व्यक्ति दूसरे के लिए हानिकारक क्यों बनता है ? एक व्यक्ति दूसरे के लिए लाभदायक क्यों बनता है ? व्यक्ति पहुंचाना चाहता है हानि और हो जाता है लाभ, ऐसा क्यों होता है ? ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जिनकी पृष्ठभूमि में अनेक रहस्य छिपे हैं । इसीलिए अध्यात्म विद्या को रहस्य विद्या कहा गया— यह गुह्य विद्या है, गोपनीय विद्या है । इसे हर किसी को नहीं बताना चाहिए । जीवन के जो अनगिनत रहस्य हैं, पुनर्जन्म की जो रहस्यमय कहानी है, उसे अध्यात्म से पहचाना और पकड़ा जा सकता है ।

ध्यान क्यों ?

ध्यान का प्रयोग केवल मन की शांति के लिए ही नहीं है । वह इसलिए है कि हम आत्मा को, आत्मा में होनेवाले पर्यायों, परिवर्तनों और नाना अवस्थाओं को जान सकें, साक्षात अनुभव कर सकें । जो ध्यान की गहराई में जाएगा, निर्विकार स्थिति में पहुंच जाएगा, उसे साक्षात्कार होना शुरू हो जाएगा, पूर्वाभास होने लग जाएगा ।

साधक की समस्या

प्रश्न है— इस स्थिति का निर्माण कैसे हो ? इसका सूत्र है— प्रेक्षा, केवल देखना । हम अंगुली को प्रतिदिन देखते हैं, दिन में अनेक बार देखते हैं, किंतु यह प्रेक्षा नहीं है । यदि हम अपनी अंगुली को बीस मिनट तक खुली आंख से देखें, अनिमेष प्रेक्षा करें, तो यह आश्चर्य उभरेगा— ऐसी अंगुली तो हमने देखी ही नहीं । इतनी विचित्र है यह अंगुली । जो व्यक्ति त्राटक प्रयोग करते हैं, उन्हें इतने विचित्र रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और रंग दिखायी देते हैं, जिनकी सामान्य व्यक्ति कल्पना भी नहीं कर सकता ।

पाली (राजस्थान) का प्रसिद्ध शहर है । वहां एक साधक ने बारह वर्ष तक ध्यान और जप की साधना की । उसकी पूर्णता पर वह देखता है— एक हाथ का एक सुंदर पुतला-जैसा पुरुष उसके सामने खड़ा है । उसने कहा— 'तुम कुछ मांगो । तुम्हारी साधना सफल हुई है । मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूं । तुम मांगो ।' वह साधक कुछ भी नहीं मांग सका । दूसरी बार पुनः साधना की । फिर वैसा ही अति-सुंदर छोटा-सा व्यक्ति प्रस्तुत हुआ । उसने कहा— 'मांगो ।' वह साधक दूसरी बार भी नहीं मांग सका । वह पुतला अदृश्य हो गया । साधक ने सोचा— 'क्या करूं ?' उसने अपनी समस्या गुरु को बतायी, गुरु ने कहा— 'तुमने मांगा क्यों नहीं ?' साधक ने कहा— 'मैं कैसे मांगता ? मैं उसके रूप में ही इतना मुग्ध हो गया कि मांगने का भाव ही नहीं रहा । एक शब्द भी मुख से नहीं निकाल पा रहा था । वह अद्भुत रूप, चित्तहारी दृश्य आज भी मुझे भाव विह्वल कर देता है ।'

अध्यात्म की रश्मि फूटे

ध्यान की सिद्धि में इस प्रकार की अनेक स्थितियां आती हैं । मांगने की बात एक भौतिक बात हो सकती है किंतु ध्यान की उस क्षमता को अवश्य पहचानें, जिससे हम सत्य को जान सकते हैं, जीवन और जीवन के रहस्य को परत-दर-परत खोल सकते हैं । वर्तमान, अतीत और भावी जीवन को समझने के लिए हमें कर्म के गंभीर अध्ययन एवं साक्षात्कार की स्थिति का निर्माण करना चाहिए । जितना यह होगा, उतना ही विराग बढ़ेगा । इंद्रियों का इतना आकर्षण है कि सामान्यतः विराग आता ही नहीं है । राग उत्तरोत्तर बढ़ता चला जाता है । राग से विराग की ओर प्रस्थान तब होता है, जब एक ऐसा अतींद्रिय अनुभव हो जाए, ऐसी अध्यात्म चेतना की रश्मि फूट जाए, विराग का आलोक जीवन को प्रकाशित कर दे । मृगापुत्र महल के झरोखे से देख रहा था । राज्यपथ से गुजरते हुए मुनि पर दृष्टि पड़ी । उसके मन में विकल्प उठा— 'ऐसा रूप मैंने कहीं देखा है ?' वह इस प्रश्न की गहराई में डूब गया, डूबता चला गया । उसका ध्यान इतना गहरा हुआ कि पूर्वजन्म का साक्षात्कार हो गया । वह एक क्षण में विरक्त बन गया । वैराग्य कैसे पैदा हुआ ? जो आकर्षण, इंद्रियों के प्रति था, वह उससे हट गया, आत्मा के प्रति सघन हो गया ।

चेतना के दो रूप

यही कारण है— अध्यात्म विद्या में पुनर्जन्म और कर्म, आत्मा के विभिन्न परिवर्तनों और रूपों पर बहुत विचार किया जाता है । इन सारी अवस्थाओं की गहराई देख सकें, साक्षात कर सकें तो सचमुच चेतना का ऊर्ध्वारोहण होता है । चेतना के ऊर्ध्वारोहण में पुनर्जन्म, कर्म तथा कर्म से संबंध रखनेवाले आचरण— इन तीनों का स्थान बहुत व्यापक है । हमें इन तीनों घटक तत्वों का ज्ञान होना चाहिए । ध्यान की निष्पत्ति ज्ञान के साथ चलेगी । ज्ञान और ध्यान— एक ही चेतना के दो रूप हैं । हम दोनों का योग करें । यह योग हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचा देगा ।

(प्रस्तुति : मुनि धनंजय कुमार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

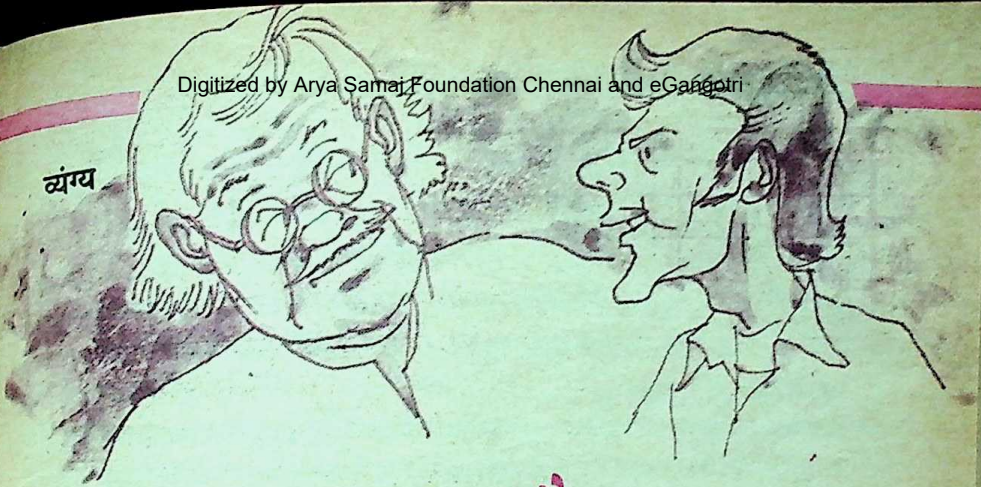

बुरा क्या है ?

● विजय अग्रवाल

ऐसी क्या मुसीबत हो गयी, यदि ले ही लिया तो। फिर कुछ लिया ही है, दिया तो है नहीं कि हम चिल्लायें कि यह तो 'ब्रेन ड्रेन'—जैसा हो गया। हर हिंदुस्तानी लेना-ही-लेना जानता है। यह उसका जन्मसिद्ध स्वभाव है। फिर इसमें इतनी हाय-तौबा कैसी ? 'देना' हमारा राष्ट्रीय चरित्र नहीं है। इसलिए 'लेना' राष्ट्रीय चरित्र के अनुकूल किया गया आचरण है। लेकिन लोग हैं कि न तो स्वयं लेते हैं और न ही यह चाहते हैं कि 'दूसरा कोई ले।'

सच पूछिए तो जनाब, मुझे तो इसमें ईर्ष्या की तीक्ष्ण गंध आती है। दुःख इस बात का तो है ही नहीं कि 'उसने क्यों लिया।' बल्कि दुःख इस बात का है कि 'हाय, हमारा क्यों नहीं लिया।' फिर यदि हमें इस काबिल नहीं समझा गया, तो दूसरा कोई माई का लाल कैसे इसके काबिल हो सकता है। इसलिए बेहतर है कि हल्ला मचाओ कि 'क्यों लिया गया।' सीधी-सी बात है—'हम नहीं, तो कोई नहीं।'

एक दिन सुबह-सुबह 'मिल्क बूथ' से दूध का डिब्बा लेकर आते हुए धवल केश वाले दादाजी मिल गये। उन्हें देखकर ही लगता है कि वह अपने समय में काफी रसिक रहे होंगे, जो बात सोलहों आने सही थी। इस सत्य में महल्लेवालों में किसी को रत्तीभर भी संदेह नहीं था, क्योंकि उनके साहबजादे ने 'जींस' के सिद्धांत का शुद्धतः पालन करते हुए अपनी अठखेलियों से महल्ले की लड़कियों के माताओं-पिताओं के नाक में दम कर रखा था। खैर। उस समय यह चर्चा बड़े जोरों से गरम-गरम थी। हमने छेड़ ही दिया। हमारा छेड़ना था कि वे ऐसे छिड़े कि छिड़ते ही चले गये।

"देखो बिट्टू, यह कुंठा बोल रही है कुंठा। हम तो इसे गलत नहीं मानते।"

मैंने उन्हें लाइन पर लाने की कोशिश करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी बातों में मुझे बहुत अधिक वजन लगा । बातें ठीक लगीं । लेकिन चूंकि घर आनेवाला था, इसलिए मैंने उनसे थोड़ी दूरी 'मेंटेन' करना जरूरी समझा । इसलिए मैं तेजी के साथ भिक्खू दादा के आगे निकलकर उनके आगे-आगे चलने लगा । उन्होंने एक-दो बार धीरे-से मुझे पुकारा भी । लेकिन मैंने उन्हें न सुनना ही अपने हित में समझा ।

हुए कहा—"लेकिन भिक्खू दादा, वो कहां बुरा मान रहे हैं, विदेशों में गालों पर चूमना आम बात ही नहीं, आवश्यक है । इसमें बुरा क्या है । बुरा तो जात-बिरादरी, और महल्लेवाले मान रहे हैं । वे नहीं जानते कहां, क्या सच है, क्या नहीं ।"

शायद उनको ऐसा लगा कि वे कहीं कुछ 'आउट ऑव ट्रेक' हो गये थे । उन्होंने अपने सुराहीनुमा गले से 'हूं' की गंभीर ध्वनि उत्पन्न की । उड़ते हुए सफेद फाहों से भरे सिर को हलके-से हिलाया, और क्षणभर सोचने के बाद उवाचे,—"हां, यह जरूर है कि हमारे जमाने में यह सब कुछ लुका-छिपी में ही चलता था । लेकिन अब तो जमाना 'लिबरलाइजेशन' का है, 'उदारीकरण' का है, 'ग्लासनोस्त' का है । तो भई समझदारी तो इसी में है कि जमाने के साथ चलो । हम तो चल रहे हैं । अब आप ही देखो । हमें अपने शहजादे की सारी करतूतें मालूम हैं । हमने उन्हें केवल 'जुम्मा चुम्मा दे दे' गाते ही नहीं सुना है, बल्कि इसका प्रेक्टिकल करते भी देखा है । लेकिन हमें न तो बुरा लगा, और न ही हमें अखरा । इसलिए हमने कोई आपत्ति भी नहीं की ।"

भिक्खू दादा की यह बात सोलहो आने सही थी । बदनाम की सीमा तक नाम होने के बावजूद न तो इनके शहजादे के चेहरे पर शिकन आयी, और न ही भिक्खू दादा के कान पर जूं रेंगी । सब-कुछ यथावत चलता रहा, और चल रहा है ।

मैंने भिक्खू दादा से अपनी बात का अच्छी तरह खुलासा करने की चिरौरी-विनती की । क्योंकि मुझे यह बात थोड़ी रसभरी-जैसी लग रही थी । क्वार्टर तक पहुंचने में अभी काफी वक्त लगना था । फिर भिक्खू दादा की चाल भी धीमी थी । सोचा कि इत्मीनान से बात हो जाएगी । वैसे तो भिक्खू दादा से कभी भी इत्मीनान से बात की जा सकती है, क्योंकि वे तो खाली ही रहते हैं । लेकिन मुसीबत यह है कि उनसे बात करने का मतलब है बिगड़ने की तैयारी करना । खैर— ! मैंने अनुभव किया कि भिक्खू दादा का चेहरा धीरे-धीरे दार्शनिक मुद्रा अख्तियार कर रहा है । उनकी आंखों में अतीत के लाल डोरे उतरने लगे हैं, और आवाज में एक गंभीरता किंतु ठनक आ गयी है । उन्होंने मेरे प्रश्न का उत्तर देने के बजाय मुझसे ही प्रश्न पूछ लिया—"बेटे, तुमने हीर-रांझा फिल्म देखी है ।"

मैंने तपाका—"केवल एक बार नहीं दादा, कई-कई बार देखी है । पुरानी राजकुमार वाली भी देखी है, और अनिल कपूर—श्रीदेवी वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी देखी है ।''

इतना सुनना था कि भिक्खू दादा चलते-चलते जोश में उचक से गये । और बोले—''तब तो खुलासा हो ही गया । तुम हीर के चाचा कैदो को याद करो । वह लंगड़ा है । थोड़ा-थोड़ा बदसूरत भी है । दुष्ट भी है । वह नहीं चाहता कि हीर रांझा को प्यार करे । तुमने सोचा भी कि कैदो क्यों ऐसा करता है ?''

मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ स्वाभाविक रूप से उत्तर दिया—''दादा, इसमें सोचने की क्या बात है ? हर लड़की का दादा, पिता, ताऊ, चाचा और मामा, यहां तक कि जाने-अनजाने, अड़ोसी-पड़ोसी सभी ऐसे मामलों में अपनी टांगें उलझाते रहते हैं । चूंकि कैदो हीर का चाचा था, इसलिए स्वाभाविक था कि वह ऐसा करे ।''

भिक्खू दादा की आंखें बता रही थीं कि उनको मेरा उत्तर कुछ जमा नहीं । वे थोड़े नाराज से होते हुए बोले—''तो फिर समस्या ही कहां है बेटे ? एतराज किसे है ? एतराज है तो अड़ोस-पड़ोस के लोगों को । मान-न-मान, मैं तेरा मेहमान । फिर तो यह ठीक ही है । गड़बड़ी कहीं है ही नहीं ।''

बात तो भिक्खू दादा की ठीक ही थी । मैं अचकचा गया, और लगा, मानो भूलभुलैयां में खो गया होऊं । लेकिन इससे मेरा मन शांत नहीं हुआ था । इसलिए मैंने कहा—''नहीं, दादा । यह उत्तर ठीक नहीं लगता । आप ही अपने अनुभव के आधार पर बताइए कि सही उत्तर क्या होगा ।''

मेरी यह बात सुनकर भिक्खू दादा को अच्छा लगा । उन्होंने मुझे समझाते हुए अंदाज में बताया—''बेटा, कैदो इसलिए हीर के प्यार से नहीं चिढ़ता, क्योंकि वह उसका चाचा था । बल्कि वह इसलिए चिढ़ता है, क्योंकि उसके जीवन में कोई हीर-जैसी नहीं थी । यदि उसे भी कोई हीर-जैसी मिल जाती, तब तुम देखते कि उसका व्यवहार कितना बदल जाता ।

'देखो बेटे, बाबा तुलसी ने रामचरितमानस में मनोविज्ञान की कितनी बड़ी बात कही है । उन्होंने लिखा है— 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन जैसी ।' यानि कि यदि हमारे दिमाग में गंदगी भरी हुई है, तो हमें अच्छाई कैसे दिखायी दे सकती है । चुंबन स्नेह का प्रतीक है । जैसे भाई-बहन, मां-बेटा, पिता-बेटी, दादा-पोती और दादी-पोता जितने भी रिश्ते हैं, उनमें इसकी मनाही कहां है ?''

मैंने देखा कि भिकखू दादा के गले की नस उभर आयी थी । उनकी सांस भी थोड़ी-थोड़ी फूलने-सी लगी थी । लग रहा था कि वे बहुत अधिक थक गये हैं । ऐसा भी लगा कि वे बहुत उदास और निराश भी हो गये हैं । उनकी बातों में मुझे बहुत अधिक वजन लगा । बातें ठीक लगीं । लेकिन चूंकि घर आनेवाला था, इसलिए मैंने उनसे थोड़ी दूरी 'मेंटेन' करना जरूरी समझा । इसलिए मैं तेजी के साथ भिक्खू दादा के आगे निकलकर उनके आगे-आगे चलने लगा । उन्होंने एक-दो बार धीरे-से मुझे पुकारा भी । लेकिन मैंने उन्हें न सुनना ही अपने हित में समझा ।

काश ! कि मैं उनके साथ चलने की हिम्मत कर पाता ।

—टाइप-५/२४-ए, राष्ट्रपति एस्टेट,
नयी दिल्ली-११०००४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरैया की गरदन पर टाई की गांठ

● डॉ. श्रीराम परिहार

एक जमाना था, लोग टाई बांधकर निकलने में पढ़े-लिखे होने का भान कराते थे। महाविद्यालयों में बुद्धिमानी और दफ़रों में रुतबे का बिंब उभारती थी— टाई। टाई की लटकन व्यक्ति को खास बना देती थी। सैकड़ों में अलग दिखता था वह आदमी। चुस्ती और दुरुस्ती, व्यक्तित्व और कृतित्व में एक साथ अचानक पैदा हो जाती थी। व्यक्ति अपनों से अलग और दूसरों के नजदीक लगने लगता था। अपनी जमीन की दरिद्रता पर तरस नहीं आता था। खीझ भी नहीं होती थी। और तो और चीख भी नहीं होती थी। हेयता होती थी। एक ऐसा तिरस्कार कि वह देश और कुछ लोग दुनिया के ग्लोब पर ही क्यों हैं।

आदमी का कंठ ही बचा

अब वे दिन नहीं रहे। जब वे नहीं रहे तो ये दिन भी नहीं रहेंगे। अब तो नदी में बाढ़ आने की खबर गरम है। हमने टूटी पतवार लेकर जीर्ण नाव छोड़ रखी है। फिर भी डूबना तय नहीं है। डूबना या तो नदी तय करेगी या फिर नाव में बैठा व्यक्ति तय करेगा। किनारों पर खड़े लोगों की क्या बिसात कि वे जुझारू बाहोंवाले व्यक्ति की नाव का डूबना तय करें। समय को भांप कर लोगों ने इधर टाई को स्वतंत्रता पूर्व के अंदाज में बांधना बंद कर दिया है। टाई पहनी जाए, सो तो ठीक है। पर बांधीजाए। यह गड़बड़ है। भई, बांधने के लिए जमाने में बहुत-सी चीजें हैं। एक गला ही बचा है, उसे टाई से बांधा जाए। आदमी का कंठ ही बचा है, सो उसे कपड़े से कसा जाए।

एतराज टाई पहनने से कतई नहीं है। पर यह तो जान लें कि टाई पहनकर बुद्धिवाद का पत्थर गाड़ना चाहते हैं। बुद्धिजीवी की श्रेणी बनाना चाहते हैं या मनुष्य की यात्रा की बढ़त में उसके सोच और लिबास दोनों स्तर पर तब्दीली चाहते हैं।

उत्तर आधुनिकता ने दीवार पर रेंगती चींटी और छिपकली में फर्क करने का अवकाश खतम कर दिया है। टाई की गांठ कंठ पर लगी है। कंठ के ऊपर बुद्धि है। नीचे हृदय है। ऊपर तर्क है। नीचे विश्वास। ऊपर पहाड़ है। नीचे बहता जल-स्रोत। ऊपर आंख है। नीचे दृष्टि। ऊपर रानी है, राजधानी है। नीचे प्रजा के समूह की अकेली किंतु संपूर्ण इकाई। दोनों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलन मार्ग कंठ से होकर जाता है । वाणी दोनों को जोड़ती है । भाषा दूरी मिटाती है ।दोनों की अभिव्यक्ति के माध्यम से निकासी कंठ से है । उस निकासी पर पहरा लगा दिया जाए । कंठ पर बंधन डाल दिया जाए । अभिव्यक्ति पर गांठ लगा दी जाए । ऊपर का ऊपर । नीचे का नीचे । दोनों अलग ।दोनों को विभाजित कर दिया जाए । आंख और दृष्टि का असंतुलन बनेगा । असंतुलन अस्थिरता पैदा करता है ।

टाई का कसाव

पहरा तीन स्थितियों में लगाया जाता है । चोर पर । कीमती वस्तुओं पर । आतंक और सत्ता की अनचाही भाषा बोलने वाले के द्वारा सही आदमी पर । वाणी मनुष्य को पहचान के स्तर पर खोलती है । उसका यह खुलना समाज में दूर-दूर तक असर करता है । आग जलती है । लौ ऊपर उठती है । दिखती है । न भी दिखे तब भी वह अपनी आंच से बराबर अपनी उपस्थिति जताती है । हवा चलती है । कोई जाने न जाने , महसूस तो होता है कि हवा है । वाणी हवा और आग का स्वभाव अंशतः अपने में घोले हुए है । यह बात वह जाति जानती थी । उस जाति ने भारत के कंठ पर टाई का कसाव शुरू किया । बोलने पर पहरे लगा दिये । उस जाति के कंठ का कपड़ा इस देश के कुछ खास लोगों की गरदन पर शान से लटकने लगा । वह जाति बेधड़क हो गयी । टाई की लटकन पहरेदार बन छाती पर मूंग दलती रही । दो सौ साल कंठ कसता रहा । आजादी फूटे संदूक में टूटे बजरबट्टू की मानिंद पड़ी रही ।

यह निगोड़ी पहरेदारी आदमी को कहीं का नहीं रहने देगी । अफरीका में एक जगह ऐसी है, जहां व्यक्ति को मात्र सात किलोमीटर की परिधि में घूमने की इजाजत है । उसके बाहर उसे पासपोर्ट की जरूरत होगी । बिना पासपोर्ट वाले को गोली मार दी जाएगी । अब बताइए ! आदमी, आदमी न हुआ,पासपोर्ट हो गया । आदमी से ज्यादा जरूरी पासपोर्ट हो गया । यथार्थ के भी अतिवादी रूप की विकृति का यह परिणाम है । एक तरफ औद्योगिक क्रांति के कारण पूरा विश्व एक गांव होता जा रहा है । मानव एकता एवं विश्वास एकता की भूमिका तैयार की जा रही है । दूसरी तरफ सोमालिया, इथोपिया और तो और दक्षिण अमरीका तक के कुछ भागों के मनुष्य जीवन और श्वांस के रिश्तों से वंचित किये जा रहे हैं । "बुद्धि ही सही है । और बुद्धि दुनिया में कुछ देशों, कुछ विचारधाराओं और कुछ लोगों के पास ही है ।" यह बात सूखी नदी की रेत में झीरी खोलकर पानी निकालने-जैसी है । उस झीरी से कुछ लोगों की प्यास तो बुझ जाएगी, लेकिन अधिसंख्यक लोगों की प्यास बुझाने का दावा थोथा साबित होगा ।

हठधर्मिता कहीं बारीक तौर पर संकीर्णता

महा अंतरिक्ष में घूमती हमारी सुंदर-सी धरती पर मनुष्य ने कितनी-कितनी आड़ी-तिरछी रेखाएं खींच रखी हैं । ये रेखाएं जहां भी मिलती हैं, आदमी अपने दिल-दिमाग के साथ वहां खड़ा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को 'टच' करती है । इसीलिए जॉ पाल सार्त्र बुद्धिवाद के भीतर झांकते हुए उससे आगे अस्तित्ववाद की बात करता है । यह अस्तित्व मानव मात्र की जरूरत है । यह जरूरत व्यक्ति के विकास और सभ्यता के सारे सोपानों से बड़ी चीज है । अंदमान-निकोबार में प्राकृतिक अवस्था में रहनेवाली मानव जाति के समुदाय में जब बत्तीसवां सदस्य लड़की के रूप में जन्म लेता है तो पूरा द्वीप समुद्र की उत्ताल तरंगों पर झूम-झूम जाता है । मस्ती में गाता है । (दिस. १९९३ तक इस जाति के लोगों की संख्या इक्तीस थी) कुछ नया सोचना होगा । अपनी जड़ों को ध्यान में रखते हुए । पहरा चाहे अभिव्यक्ति पर हो, या जीवन की हिलती-बढ़ती चमकती कोंपलों पर । स्वतंत्रता और विकास के मूल्य तो प्रभावित होते ही हैं । और मूल्यों को बचे रहना ही मनुष्य के जीवित बोध की अर्चना का आचमन है ।

कल तक कहा जाता था, "इंगलैंड इज द क्लास रूम ऑव द वर्ल्ड ।" सूरज डूबता नहीं था उसके राज में । वे दिन नहीं रहे । कुंए की जगत पर से पनिहारिन चली गयी । यों कहें कि पेड़ की ओट में से उस पनिहारिन को खोटी नीयत से देखने वाला मार भगा दिया गया । उस दृष्टि में खोट यह थी कि चालाकी और हुशियारी ने पनिहारिन सहित अन्य सभी गांव के लोगों को भेड़-बकरी समझ लिया था ।

आज इंगलैंड मात्र एक देश है । और जापान एक छोटा-सा देश होते हुए भी व दुनिया के लोगों के घर-घर में वस्तुओं के रूप में उपस्थित है । एक चीज होती है जो अपनी सुघड़ता से सबको आकर्षित करती है । दूसरी होती है जो अपनी धार और आवाज के बल पर लोगों को अपनी शरण में आने को मजबूर करती है । बड़ा फर्क है दोनों में । मनु ने इड़ा के साथ सारस्वत प्रदेश में यही किया । परिणाम विध्वंस के रूप में मिला । "बुद्धि और यथार्थ की राह पर हम जग जीत लेंगे । पर यह जीत तो अकेले किसी व्यक्ति की, या उसके दल की होगी । सवाल तो 'सर्वे भवंतु सुखिनः' का है, क्योंकि अब हम बात विश्व गांव की कर रहे हैं ।"

अब अमरीका की बारी

अब कहा जा रहा है, "न्यूयार्क इज द क्लास रूम ऑव दी वर्ल्ड ।" सत्ता और पूंजी दोनों जुड़वां बहनें हैं । जो कभी इंगलैंड ने किया अब वह प्रकारांतर से अमरीका कर रहा है । नीम भारत की झोपड़ी के आंगन में लगेगा । हैंडपंप की आंतें उसे भारत के पानी से सींचेंगी ।झुर्रीदार हाथ और चश्मा चढ़ी आंखें उसके गोड़ में मिट्टी चढ़ाएंगी । जब उस पर चिड़ियों का बसेरा होगा । उसमें फूल आने की बिरिया होगी । निबोली पकने की बेला होगी । उसकी पत्तियां, कल-पुरजों पर लदकर मशीनों की गड़गड़ाहट के बीच में से विदा की आंख-तलैया किनारे बिरहा गाएंगी । कौन सुन पाएगा--उस विरहा को ? निर्यात हुए नीम के नीचे धड़कता, मटकी में सौंधे दूध सरीखा उस झोंपड़ी का मन जरूर सुन सकेगा । बैल रामू के । खेत रामू का । हाड़-तोड़ मेहनत रामू और रमिया की । बच्चों की आंखें रामू के खून की । उन आंखों में पलते सपने रामू के बच्चों के । लहलहाती फसलें रामू की । बीज अमरीका का । फसल की कमाई अमरीका की । टाई का कसाव बढ़ रहा है । वार्ताओं, शिखर सम्मेलनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बुद्धि सोचती है । हृदय छटपटाता है । आंखें पनीली हैं । हाथ न भीख की मुद्रा में हैं, न दान की । और कंठ पर कसाव बढ़ रहा है । जो सोचो, वह बोलो मत । जो महसूस करो, वह करो मत । कक्षा लगी है । जो कुछ, जैसा कुछ कहा जा रहा है—बस ! वैसा ही होम वर्क करो । कुछ भिन्न करोगे तो फेल कर दिये जाओगे । आकाश पर लकीर खींच रखी है । बस उसी में शब्द लिखना है । नयी लकीरें नहीं बनाना है । स्वतंत्रता किस तरह की ? स्वतंत्रता किसकी ? विकास की लंबाई मस्तिष्क और हृदय जितनी ? या किसी देश के पूर्वी छोर से चलकर पृथ्वी के ग्लोब का चक्कर लगाते हुए पश्चिमी छोर तक पहुंचने तक की ? टाई का कसाव ढीला करो भाई ।

कितनी बर्फ पिघली

महाअंतरिक्ष में घूमती हमारी सुंदर-सी धरती पर मनुष्य ने कितनी-कितनी आड़ी-तिरछी रेखाएं खींच रखी हैं । ये रेखाएं जहां भी मिलती हैं, आदमी अपने दिल-दिमाग के साथ वहां खड़ा है । चाहे कैलेंडर की बदलती हुई तारीख हो, या ग्रीनविच की घड़ी की सुई का घुमाव । कुछ है जो व्यक्ति के मन-मस्तिष्क को धागे में पिरोकर भागता रहता है । कितने कैलेंडर परचून की दूकान की पुड़िया बने । थैली में रखी आशा बने । और नहाने की सिल्ली के पास उगी सब्जी का खाद हो गये । कितनी तारीखें, तवारीख बन गयीं । हिमालय की न जाने कितनी बर्फ पिघलकर समुद्र बन गयी । कितने कुत्ते एस्किमों की गाड़ी खींचते-खींचते बर्फ हो गये । टेलीफोन की घंटियों और 'टेपरेकॉर्डरों' से गूंजती अनगिनत आवाजें आकाश हो गयीं । पर व्यक्ति के हाथों कच्ची मिट्टी की दीवारों पर लगाये गये हल्दी के छापे अभी भी मौजूद हैं ।

तुलसी चौरे पर जलते दीपक को आस्था भर देख लेने से हम जमाने से पीछे रह जाएंगे या दुनिया से निकाल दिये जाएंगे । और टाई बांधकर उड़नखटोले में बैठकर उड़ने से संसार के प्रथम नागरिक हो जाएंगे । ऐसी बात नहीं है । आस्थाओं पर खड़ी प्रगति ही आकाश के विराट में रेखा बनाती है । आस्थाएं वे जो मनुष्य को उसके हक और उसूल के साथ खड़ा होने की ताकत हैं । शब्द अपने पीछे एक मजबूत सांस्कृतिक परंपरा लिये होता है । वस्तुएं मात्र चीजें नहीं होती हैं । अपने निर्माण से आज तक लंबी इबारत छोड़ती आयी हैं । आदमी सिर्फ हाड़-मास नहीं होता है । उसमें वह कुछ चेतन है जो घड़ी के कांटों के रुकने के बाद भी समय के साथ चलता रहता है । और कभी-कभी समय के पार चला जाता है । दुनिया जेब में से निकालकर दिया जानेवाला 'विजिटिंग कार्ड' नहीं होती । बल्कि वह लेखक की कलम है, जिसमें नित्य नूतनता की शब्द-पंक्तियां निकलती रहती हैं । कलम खीसे में हृदय के ऊपर खुसी हुई है । टाई और हृदय के बीच लेखनी है । कंठ पर टाई का कसाव बढ़ता है अभिव्यक्ति के खतरे सामने होते हैं । तब कलम हृदय और बुद्धि को दायें-बायें कंधों पर बिछाकर जयघोष करती है । दूर कहीं भोर के द्वारे गौरैया चहक उठती है । सूरज की पहली किरन दूब की नोंक पर ठहरी ओस बिंदु से हालचाल पूछने लगती है ।

— १६, सरस्वतीनगर, (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

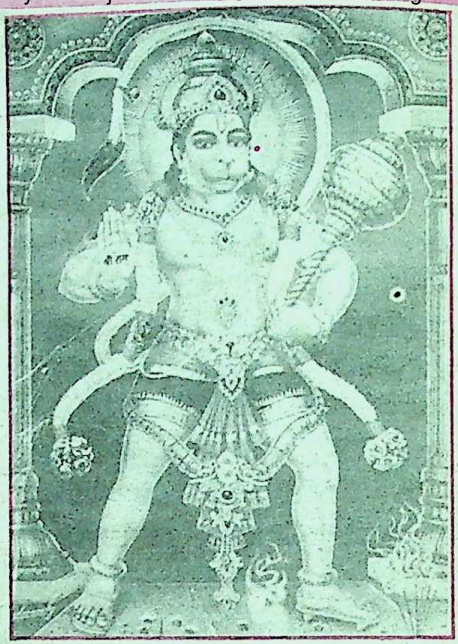

जहां हनुमान चारों खाने चित्त हैं !

● शिव बचन चौबे

स्वभाव संस्कार से बनता है और किसी व्यक्ति अथवा समाज के संस्कार-निर्माण में उसकी माटी की भूमिका अहम होती है। उसके पूर्व पुरुषों द्वारा निर्धारित आचार-संहिता की प्रधानता होती है। इलाहाबाद इसका अपवाद नहीं हो सकता। तो, प्रयाग के स्वभाव को भी हमें इसकी माटी में, इसके पूर्व-पुरुषों की आचार संहिता और रीति-नीति में खोजना होगा। किसी स्थान-विशेष के संस्कार बनने अथवा बिगड़ने में सदियां गुजर जाती हैं। अगर हम कहें कि प्रयाग का स्वभाव-वृत्त सौ सैकड़ों वर्ष पहले निर्मित हुआ था और आज भी वह उसकी माटी में अक्षुण्ण है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह अवश्य है कि इसका विवेचन कुछ कटु हो सकता है।

जिस तरह भारतीय मनीषी विद्वान होते हुए भी स्वभाव से क्रोधी होते थे, उसी तरह प्रयाग की प्रकृति ... पावन होते हुए कुछ कम विरोधी नहीं है। अगर ऐसी बात नहीं है, तो पूरे विश्व में चोपड़ की तरह खड़े हनुमान, इलाहाबाद में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों खाने चित्त क्यों पड़े हैं ? मेरी मति से, पौराणिक काल से प्रयाग में हनुमान की यह चित्त पड़ी अनोखी मुद्रा, प्रयाग के स्वभाव का ही विशिष्ट संकेत है । जब हनुमान-जैसा अप्रतिम योद्धा इस शहर में चारों खाने चित्त हो सकता है, तो दूसरों की क्या बिसात ? सच्चाई यह है कि यहां—

कोऊ न रहा बिनु दांत निपोरे

धर्म ग्रंथों में हनुमान की इस मुद्रा की कहीं कोई चर्चा नहीं मिलती । विचित्र बात है । हनुमान के साथ इतनी बड़ी दुर्घटना घट गयी और इसका प्रयाग में कहीं कोई जिक्र तक नहीं । लगता है यहां के ज्ञानियों को काठ मार गया है । भक्तों के भगवान पर इतनी बडी भीर पड़ी और वे सदियों से मौन बने रह गये ?

नहीं ऐसी बात नहीं है । इलाहाबाद का मिजाज ही ऐसा है । यहां कोई किसी के लिए आंसू नहीं बहाता । संकट आते ही, संगी-साथी कन्नी काट लेते हैं । हो सकता है, हनुमान पर कभी कोई ऐसा संकट न आया हो और वे केवल प्रयाग के विचित्र स्वभाव का शाश्वत संकेत दर्शाने के लिए चारों खाने चित्त पड़े हों । हम हनुमान की इस प्रतीक-मुद्रा को ठीक से पकड़ें, संकेत का सही अवलोकन करें, तो पाएंगे कि वास्तव में यही इस शहर की नियति है । यही इसका स्थायी स्वभाव है । यहां बड़े-बड़े योद्धा चित्त हो जाते हैं और तेजस्वियों का तेज लुप्त हो जाता है । अगर यह सच नहीं होता, तो क्या हमें संगम पर सरस्वती के दर्शन नहीं होते ? केवल गंगा और यमुनाभर दिखायी पड़तीं ? तेजस्विनी सरस्वती को आजीवन लुप्त होने के लिए विवश होना पड़ता ? हनुमान की ही तरह, एक तेज पुंज नारी की भी यह स्थिति क्या चित्त हो जाने की स्थिति नहीं है ?

ऐसे बहुत सारे पौराणिक आख्यान हैं, जिनसे इस शहर की मानसिकता और इसके विचित्र स्वभाव का संकेत मिलता है । समुद्र-मंथन के पश्चात असुरों का हक छीनने के लिए जब देवता अमृत-कुंभ लेकर भाग रहे थे, कहा जाता है, उस भरे घड़े से अमृत की कुछ बूंदें छलककर यहां गिर पड़ी थीं । संगम पर लगनेवाला कुंभ-मेला इसी अमृत-प्राप्ति का प्रयास है । सोचें, कितना बड़ा छलावा है । मनुस्मृति में जैसे सरस्वती का संगम की बालुका-राशि में लुप्त होना कहा गया है, कुछ उसी तरह वह चोरी का दो-चार बूंद अमृत भी यहीं कहीं लुप्त हो गया होगा । फिर भी लोग हैं, जो प्रयाग में सदियों से उसे खोजते रहे हैं । अप्राप्य को खोजते रहना ही

प्रयाग जिसकी प्रकृति पावन होते हुए भी कुछ कम विलोमी नहीं है । जब हनुमान-जैसा अप्रतिम योद्धा इस शहर में चारों खाने चित्त हो सकता है, तो दूसरों की क्या बिसात ! प्रयाग की सांस्कृतिक-साहित्यिक परंपराओं पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है । यहां प्रस्तुत है—प्रयाग की एक दूसरी तसवीर—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयाग के स्वभाव की विडंबना है ।

सभ्यताएं मर जाती हैं, धर्म रूढ़ियों में बदल जाते हैं, लेकिन माता की ममता और माटी के संस्कार शायद ही कभी बदलते सुने गये हों । यही प्रयाग था, संगम के पूर्व स्थित प्रतिष्ठानुसार (झूंसी), जहां पौराणिक काल में कभी राजा पुरुरवा राज्य किया करता था । स्वर्ग से धरती पर उतरने को विवश की गयी शापित उर्वशी कुछ समय तक उसकी पत्नी बनी थी । जिस तरह अपना स्वार्थ साधने के लिए उर्वशी प्रयाग में उतरी थी, उसी तरह स्वार्थ सधते ही यहां से कूच भी कर गयी और रह गये हाथ मलते पुरुरवा । वास्तविकता यह है कि प्रयाग में स्वार्थ-साधकों की कमी कभी नहीं रही ।

और प्रयाग के पश्चिम स्थित श्रृंगवेरपुर ! यहीं रहते थे श्रृंगी ऋषि, जो राजा दशरथ के दामाद थे । शायद उनसे राम की बड़ी बहन शांता ब्याही गयी थी । उन्होंने ही वशिष्ठ के आग्रह पर राजा दशरथ के यहां पुत्र-यज्ञ संपन्न कराया था । उस प्रयागवासी ऋषि का स्वभाव भी यहां की माटी से भिन्न नहीं था । कहा जाता है, सीता-निर्वासन में धोबीवाला प्रसंग तो मात्र एक बहाना था । सच्चाई यह थी कि इसी श्रृंगी और शांता ने सीता के विरुद्ध उनके साथ रावण के संबंधों को लेकर राम के कान भरे थे । इतना ही नहीं, अगर आस्था और विश्वास पक्ष को थोड़ी देर के लिए व्यावहारिक धरातल पर लाकर सोचें, तो इसी जनपद के राजा निषादराज (केवट) ने वनवासी राम को अपनी औकात बता दी थी—

मांगी नाव, न केवट आना

ज्ञानी किसी की नहीं सुनते । ज्ञानवान प्रयाग भी किसी की नहीं सुनता । इस माटी का [illegible] अलग चिंतन है । विचार-धारा है । यह [illegible] तो हवा का रुख देखकर चलता है और न [illegible] बदलते हुए परिवेश में अपने को बदलता है [illegible] ऐसी बात भी नहीं कि यह आंखें मूंदकर और [illegible] कान बंद कर चुपचाप बैठा रहता है । यह सब-कुछ करता है, लेकिन करता है केवल अपने मन की ।

भरद्वाज इसी शहर के मुनि थे, लेकिन उन्होंने त्रेता की तत्कालीन हलचलों से तटस्थ रहने का ही मार्ग अपनाये रखा । वशिष्ठ, विश्वामित्र और वाल्मीकि इत्यादि ऋषियों की तरह वे किसी राजनीतिक पचड़े में नहीं फंसे । वन जाते हुए राम के पूछने पर उन्होंने चित्रकूट का रास्ता भर बता दिया था—'राम, आप [illegible] और यमुना के संगम से पश्चिम होकर यमुना के किनारे-किनारे कुछ दूर चले जाइए . . . वन उसी वन से होकर चित्रकूट जाने का रास्ता है' इस तरह उन्होंने शिष्टता-निर्वाह तो कर दिया, किंतु अयोध्या के गृह-कलह में अथवा राम-रावण के झगड़े में कभी कोई खास रुचि नहीं ली । यह प्रयागवासी महामुनि की अपनी सोच थी । यह शहर दूसरों के बताये मार्ग पर कभी चला ही नहीं । भला या बुरा, अपना रास्ता स्वयं चुनता है ।

४५० ई. पू. भगवान बुद्ध भी यहां आये थे । आश्चर्य यह है कि वे भी इसका स्वभाव नहीं बदल सके । इस शहर में उनकी पहचान तक नहीं बन पायी । ३१९ ई. पू. कभी यह मगध नरेश चंद्र गुप्त के राज्य का भी एक [illegible] था । २७३ ई. पू. सम्राट अशोक के भी [illegible] रहा । सन ६०६ से सन ६४८ तक हर्ष वर्धन [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी इसे आजमाकर देखा । लेकिन कहीं कोई अंतर नहीं आया । बहुत सारी बातें हैं, जो कही नहीं जा सकतीं । राजे-रजवाड़े, साधु-संत आते रहे, जाते रहे लेकिन प्रयाग की माटी की खाल इतनी मोटी है कि कभी कहीं कोई विशेष अंतर नहीं आया । सालों बाद सन १०९० ई. में प्रयाग को कन्नौज के राजा चन्द्रदेव गहरवार ने जीतकर अपने राज्य में मिला लिया था । इन्हीं गहरवार राजपूतों की उनतालिसवीं पीढ़ी में इतिहास-कुख्यात राजा जयचंद पैदा हुआ था । कहते हैं, पूत के पैर पालने में ही दीख जाते हैं । उस समय करीब-करीब समस्त भारत वर्ष छोटे-छोटे राजपूत राजाओं के अधीन बंटा हुआ था । उनमें दिल्ली और कन्नौज सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य थे । तब यह अपना प्रयाग भी कन्नौज का ही एक अंग था । किसी ने उस वक्त यह कल्पना भी न की होगी कि प्रयाग का वह तत्कालीन शासक जयचंद इस देश का नक्शा ही बदलकर रख देगा । आज इतिहास में जिस जयचंद को भारत के पहले देशद्रोही राजपूत राजा के रूप में याद किया जाता है, वह भी प्रयाग की माटी से जुड़ा हुआ था । जयचंद ने ही सर्वप्रथम शहाबुद्दीन गौरी को इस देश में आमंत्रित करके इसका बेड़ा गर्क कर दिया । विडंबना यह कि स्वयं जयचंद सन ११९४ में उसी शहाबुद्दीन गौरी के हाथों मारा गया ।

जयचंद ने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए जिस तरह पूरे देश को दांव पर लगा दिया, वैसी मिसाल इस देश में अन्यथा कहीं नहीं मिलती । प्रयाग की पवित्र माटी की विचित्रताओं की मिसाल भी शायद ही कहीं अन्यत्र मिलती हो ।

जब मुसलमान शासकों के हाथ से इस देश की बागडोर अंगरेजों की तरफ खिसकने लगी और ईस्ट इंडिया कंपनी का शिकंजा धीरे-धीरे इलाहाबाद पर भी कसने लगा, तब भी यहां की हवा ने देश की तत्कालीन हवा के रुख से मेल नहीं खाया । मांडा के गहरवार राजा इसराज सिंह अंगरेजों की ओर से रींवा के बघेलों से लड़े थे, जिसके लिए लार्ड वेलेस्ली ने उन्हें इनाम स्वरूप इकतीस गांव माफी में सरकार से दिलाये थे । इसका अर्थ यह नहीं है कि यहां के लोग देशद्रोही हैं, बल्कि कुछ ज्यादा ही स्वार्थी और आत्मकेंद्रित हैं । वे न आंखें मूंदकर मित्र का साथ दे सकते हैं, न ही शत्रु का । वे भरसक अपना साथ देते हैं और इस प्रक्रिया में कभी-कभी उलटी घटना घट जाती है । इस भूखंड की स्वाभाविक विचित्रता से अनजान अंगरेजों से भी एक ऐतिहासिक भूल हुई थी । सन १८५७ के सिपाही-विद्रोह और उसके साथ अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर की भागीदारी के चलते अंगरेजों ने हिंदुओं और कुछ खास मुसलमानों को चुन-चुनकर प्रताड़ित करना शुरू कर दिया । लेकिन बाद में उन्होंने चाल बदल दी और देश के अल्पसंख्यक वर्ग

धर्म ग्रंथों में हनुमान की इस मुद्रा की कहीं कोई चर्चा नहीं मिलती । विचित्र बात है । हनुमान के साथ इतनी बड़ी दुर्घटना घट गयी और इसका प्रयाग में कहीं कोई जिक्र तक नहीं । लगता है यहां के ज्ञानियों को काठ मार गया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पटाने का प्रयास करने लगे । इसी सिलसिले में एन. डब्ल्यू. एफ. पी. के तत्कालीन ले. गवर्नर सर विलियमम्योर ने सर सैयद अहमद को खुश करने के लिए उन्हें अपना सलाहकार बना दिया । वे उन्हें बार-बार इलाहाबाद बुलाने लगे । चूंकि सर सैयद अत्यंत प्रभावशाली मुसलमान थे, अतः अंगरेज जानबूझकर उन्हें तरजीह दे रहे थे । अंत में अंगरेजों ने बीस एकड़ के एक बड़े भूखंड पर विशाल इमारत बनाकर सन १८७१ में उन्हें स्थायी रूप से यहां रहने के लिए दे दी । सर सैयद ने अपने बेटे के नाम पर इस कोठी का नाम 'महमूद मंजिल' रखा । वास्तव में यह मुसलमानों को खुश करने और अंगरेजी सत्ता को देश में सुदृढ़ करने की एक सुनियोजित योजना थी । लेकिन यहीं उनसे भूल हो गयी । वे इलाहाबाद के मिजाज से वाकिफ नहीं थे । उन्हें मालूम ही नहीं था कि यह शहर किसी का नहीं होता । संकट में हाथ झाड़ लेता है ।

जस्टिस महमूद ने सन १८९२ में यह कोठी राय बहादुर परमानंद पाठक के हाथ बेच दी और अब वह 'पाठक निवास' कहलाने लगी । सन १८९८ में उस 'पाठक निवास' को भी पं. मोतीलाल नेहरू ने बीस हजार में खरीद लिया और तत्पश्चात वही कोठी 'आनंद भवन' बनी थी । भाग्य की विडंबना कहें, अंगरेजों का दुर्भाग्य कहें अथवा इसे इलाहाबाद का मिजाज कहें कि जो कोठी कभी भारत में ब्रिटिश सत्ता को सुदृढ़ करने की नीयत से बनायी गयी थी, वही अंगरेजी हुकूमत को उखाड़ फेंकने के लिए देश के क्रांतिकारी नेताओं का जुझारू अड्डा बन गयी और कालांतर में 'स्वराज-भवन' की गौरवमयी पदवी पायी । कितना पड़ा आश्चर्य कि उसी कोठी में पैदा हुआ एक बालक स्वतंत्र भारत का प्रथम प्रधानमंत्री बना । इलाहाबाद के 'महमूद मंजिल' से प्रारंभ होकर 'पाठक निवास' और 'आनंद भवन' तक की यात्रा करते-करते अंगरेज अपनी ही बनायी हुई कोठी में कितनी बुरी तरह चारों खाने चित्त हो गये, क्या उन्होंने कभी स्वप्न में भी इसकी कल्पना की थी ? इलाहाबाद में हनुमान के चित्त होने की सांकेतिक मुद्रा, पाटलिपुत्र के बारे में भगवान बुद्ध की भविष्यवाणी की तरह, परिलक्षित होती है । पाटलिपुत्र के विषय में बुद्ध ने कभी कहा था—'इस शहर को सदा आग और पानी से खतरा बना रहेगा ।'

ठीक उसी तरह प्रयाग में हनुमान की चित्त मुद्रा में पड़ी मूर्ति भी प्रयाग के लिए एक भविष्यवाणी है—'इस शहर को सदा कृतघ्नता और स्वार्थ-लोलुपता का खतरा बना रहेगा ।'

बुद्धिमान और विवेकशील पुरुष में अंतर होता है । इतिहास साक्षी है, इलाहाबाद में बुद्धिमानों और चतुर सुजानों की कमी कभी नहीं रही । आज भी नहीं है और भविष्य में भी नहीं रहेगी । इस शहर ने इस देश के लिए एक ही परिवार की तीन पीढ़ियों से तीन प्रधानमंत्री दिये, चौथा प्रधानमंत्री भी राजनीतिक रूप से यहां की माटी से लगातार जुड़ा रहा, लेकिन पांचवें तक आते-आते इस शहर का बेड़ा गर्क हो गया । सो, तो होना ही था । आखिर, इस माटी में गहराई तक दबा-पड़ा जयचंद का संस्कार कहां जाएगा ? नेहरू अपवाद हो सकते हैं, लेकिन यह भी एक सच्चाई है कि इस शहर का कोई भी संसद सदस्य दुबारा इस धरती पर जीत का मुंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं देख सका । सब चित्त हो गये । चाहे पं. मदन मोहन मालवीय-जैसा मनीषी हो अथवा पुरुषोत्तम दास टंडन-जैसा राजर्षि वह सारे देश में सम्मानित भले हो जाए, इस शहर ने अपने उन महान सपूतों को कभी भी सर-आंखों पर नहीं बिठाया । निराला भले सारे हिंदी-जगत में सम्मान पाते हों, इस शहर ने तो उन्हें भूखों मरने के लिए विवश कर दिया, पागल करार कर दिया और अंत में इस युग के उस महानतम कवि ने तड़प-तड़पकर यहीं जान दे दी । बहुत सारी बातें हैं, बहुत सारे पौराणिक और ऐतिहासिक साक्ष्य हैं, जिन्हें साफ-साफ कहने में इलाहाबाद की कलई परत-दर-परत खुलने लगती है । किंतु कौन कहे ? अपनी माटी और अपने लोग किसे अच्छे नहीं लगते ? लेकिन अपने घर की भली या बुरी बातें अपनोंसे नहीं कही जाएं, तो किससे कही जाएं ? आपस में बोल-बतियाकर, अपना दुःख-सुख न बांट लिया जाए, तो लंबी अंधेरी रात कटे कैसे ? अरे, हनुमान को कौन चित्त कर सकता है ? किसने अपनी मां का दूध पिया है, जो उनकी पीठ में धूल लगा सके ? लेकिन, नहीं । वे तो इस माटी के स्वभाव को मुंह चिढ़ा रहे हैं । दुःखी मन ही सही, हमें हमारी औकात बता रहे हैं—

राम के हुए नहीं, होगे हमारे कब ?
स्वारथ के मीत सभी, स्वारथ के मारे सब ।

—२ सर पी. सी. बनर्जी रोड,
एलन गंज, इलाहाबाद-२११००२

जातीय लज्जा

"...हम इतने बदल गये हैं, सारी दुनिया ही इतनी बदल गयी है कि पुराने जमाने का कोई पूर्वज हमें शायद ही पहचान सकेगा । हमारी शिक्षा-दीक्षा से लेकर विचार-वितर्क की भाषा भी विदेशी हो गयी है । हमारे चुने हुए मनीषी अंगरेजी भाषा में शिक्षा पाये हुए हैं, उसी में बोलते रहे हैं, उसी में लिखते रहे हैं । अंगरेजी भाषा ने संस्कृत का सर्वाधिकार छीन लिया है । आज भारतीय विद्याओं की जैसी विवेचना और विचार अंगरेजी भाषा में हैं उसकी आधी चर्चा का भी दावा कोई भारतीय भाषा नहीं कर सकती । यह हमारी सबसे बड़ी पराजय है । राजनीतिक सत्ता के छिन जाने से हम उतने नतमस्तक नहीं हैं जितने कि अपने विचार की, तर्क की, दर्शन की, अध्यात्म की और सर्वस्व की भाषा छिन जाने से । अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में हम अपनी ही विद्या को अपनी बोली में न कह सकने के उपहासद अपराधी हैं । यह लज्जा हमारी जातीय लज्जा है । देश का स्वाभिमानी हृदय इस असहाय अवस्था को अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकता ।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

बचनेश त्रिपाठी, पटना

● **खटमल किस वर्ग का सदस्य है, और रक्त चूसने की उसकी विधि क्या है ?**

☐ खटमल हेमिप्टोरा वर्ग का सदस्य है तथा प्राणियों के रक्त का सेवन करने के अतिरिक्त परजीवी वनस्पतियों का रस भी पीता है । खटमल के थूथन का ऊपरी हिस्सा खांचों के समान परतदार होता है । इस खांचे में सुइयों का गुच्छा होता है । इसकी नोकदार सलिकाएं शरीर में एक मार्गी दो नलियों के द्वारा प्रवेश करती हैं । एक नली खून को गले तक पहुंचाती है और दूसरी के द्वारा भेदने का काम करनेवाली सुई में लार पहुंचायी जाती है । इसकी लार में एक विशेष प्रकार का रसायन होता है, जो रक्त को जमने नहीं देता, जिससे इसकी सलिकाओं का मार्ग बंद नहीं होने पाता । एक वयस्क खटमल सप्ताह में केवल एक बार अपना आहार ग्रहण करता है । गरमी में यह अवधि और अधिक हो जाती है । खटमल का ज़ीवन एक वर्ष होता है । खटमल के काटने से कोई संवाहक रोग नहीं होता ।

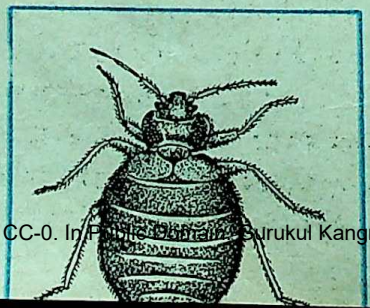

नलिन सरकार, भागलपुर

● **अधिमास की व्यवस्था हिंदू पंचांग में ही है अन्य देशों में भी ?**

☐ बेबीलोन के प्राचीन कैलेंडरों में भी अधिमास की प्रथा देखी जा सकती है । प्र कैलेंडर में भी प्रत्येक ३० दिन के १२ महीने होते थे और ५ दिन अलग से रखे जाते थे यही स्थिति मिस्र में भी थी । यूनान में अधि मास की प्रथा थी । वहां हर दूसरे वर्ष एक महीना जोड़ा जाता था । रोमन कैलेंडरों में यही गड़बड़ी देखी गयी, और वहां फरवरी के बाद एक माह जोड़ा जाता था ।

मयंक लाल गोस्वामी, वाराणसी

● **भारतीय संविधान में जम्मू-कश्मीर के अ क्या अन्य राज्यों में भी विशेष उपबंध है ?**

☐ भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३७० के अंतर्गत जम्मू-कश्मीर को विशेष दरजा प्रा इसी प्रकार अनुच्छेद ३७१ के अंतर्गत कुछ अन्य राज्यों को भी विशेष उपबंध प्राप्त हैं उपबंध जातिगत और क्षेत्रीय विशिष्टता रा लोकसभा एवं विधानसभाओं की सदस्य सं के निर्धारण से संबंधित हैं । ये राज्य हैं नगालैंड, असम, मणिपुर, आंध्र प्रदेश, सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश और गोआ ।

प्रदीप कुमार जैन, पाली

● **टेनिस खिलाड़ी मोनिका सैलेस किस देश नागरिक हैं ?**

☐ यूगोस्लाव मोनिका सैलेस अब संयुक्त अमरीका की नागरिक हैं ।

रजिया कुरेशी, बाराबंकी

● **जहांआरा का मकबरा कहां है ?**

☐ जहांआरा को निजामुद्दीन औलिया (दिल्ली) के कब्रिस्तान परिसर में दफना दि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया था ।

उमा कात्यायनी, लखनऊ

● नौ निधियां कौन-सी हैं ?

□ महापद्माश्च पद्माश्च शंखो मकरकच्छपी ।
मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधियोनव ।।
(अमरकोष)

अर्थात पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व ये नौ नाम नवनिधि के हैं ।

आदित्य यादव, औरंगाबाद (उ. प्र.)

● नालंदा विश्वविद्यालय कहां था ? किस काल में था ?

□ पटना से दक्षिण में ९० किलोमीटर की दूरी पर प्राचीनकाल की शिक्षा के गढ़ नालंद विश्वविद्यालय के अवशेष अब भी देखे जा सकते हैं । यह विश्वविद्यालय छठी शताब्दी ई. पू. से बारहवीं शताब्दी ई. पू. तक अस्तित्व में था । मोहम्मद गोरी के एक सेनापति बख्तियार खिजली ने इसे बाद में नष्ट किया था ।

सरोज कुमार दीक्षित, लखनऊ

● बड़े इमामबाड़े (लखनऊ) का डिज़ाइन किसने बनाया था ? कब बना ?

□ यह इमामबाड़ा सन १७८३-८७ में बना था । इसका डिजाइन अपने समय के महान वास्तुकार किफायतउल्ला ने बनाया था । यह किसी इमारत की नकल नहीं है । (स्रोत : 'वैनिशिंग कल्चर ऑव लखनऊ', अमीर हसन)

अनुराधा सिंह, ऊगू (उन्नाव)

● श्रीलंका की भाषा, धर्म और जनसंख्या क्या है ?

□ श्रीलंका की आधिकारिक भाषा सिंहली है तथा उत्तरी और पूर्वी प्रांतों में तमिल बोली जाती है । इसकी लगभग ६९ प्रतिशत जनसंख्या बौद्ध है तथा इसकी आबादी कोई पौने दो करोड़ है । (स्रोत : स्टेट्समैन इअर बुक)

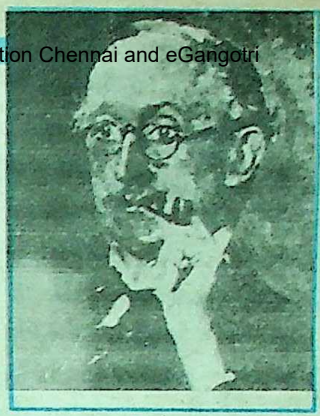

गोविंद नारायण बक्शी, लखनऊ

● हिंदी का प्रथम संपादक कौन था ?

□ श्री युगल किशोर शुक्ल हिंदी के प्रथम संपादक थे, जिन्होंने ३० मई, १८२६ को प्रारंभ हुए हिंदी के प्रथम समाचारपत्र 'उदंत मार्तण्ड' का संपादन किया । उनका जन्म सन १७८८ को कानपुर में हुआ था और सन १८५३ में कलकत्ता में उनका निधन हुआ । (स्रोत : 'हिंदी पत्रकारिता के कीर्तिमान,' ले. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी) ।

जय प्रकाश, सीतामढ़ी

● शतरंज का इतिहास कितना पुराना है ?

□ शतरंज के जो मोहरे प्राप्त हुए हैं उनकी उम्र दूसरी शताब्दी जितनी आंकी गयी है, किंतु पांचवीं शताब्दी के हिंदू इस खेल से पूर्णतया परिचित थे । यूरोप में यह खेल बारहवीं शताब्दी में, फारस और अरब होता हुआ, भारत से ही पहुंचा था । (स्रोत : मैक्मिलंस एनसाइक्लपीडिया) ।

निर्मला सेठी, इंदौर

● भारत में कितने रेल क्षेत्र में ट्रेनें विद्युत-चालित हैं ?

□ भारत में कुल ११,२८८ किलोमीटर मार्ग का विद्युतीकरण हो चुका है । यह कुल रेल पथ का मात्र १८.१ प्रतिशत है । (स्रोत भारत सरकार का आर्थिक सर्वेक्षण सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९९३-९४) ।

संजय बुटालिया, भोपाल

● **भारतीय संविधान क्या पूर्णतया ब्रिटिश मॉडल पर आधारित है ?**

□ संसदीय और विधानमंडल की प्रक्रिया ब्रिटेन पर आधारित है । नागरिकों के मौलिक अधिकार, उच्चतम न्यायालय का गठन और उसकी शक्तियां, उप-राष्ट्रपति का पद अमरीका के संविधान से अपनाये गये हैं । संघात्मक शासन व्यवस्था को कैनडा से ले लिया गया । आयरलैंड के शासन में नीति-निर्देशक तत्व हैं, अतः इस प्रावधान को वहां के संविधान से स्वीकार किया गया । आपातकालीन उपबंध जरमनी के संविधान की देन है । मौलिक कर्त्तव्य भूतपूर्व सोवियत संघ के संविधान से अपनाये गये । समवर्ती सूची आस्ट्रेलिया के संविधान पर आधारित है ।

रामेश्वर सिंह, झुमरी तिलैया

● **गंधर्व विवाह क्या होता है ?**

□ कृपया 'कादम्बिनी' के अप्रैल अंक में लेख पढ़ें ।

व्योम आदित्य शर्मा, नेपानगर (म. प्र.)

● **पाणिनि कोई व्यक्ति थे या संस्था ? किस काल में थे ?**

□ संस्कृत भाषा व्याकरण संबंधी ग्रंथ के पाणिनि निर्माता थे । इनका निवास स्थान तक्षशिला के पास शलातुर ग्राम था । इनके स्थितिकाल के विषय में विद्वानों का मतैक्य नहीं है । इनका समय दसवीं शती और चौथी शती ई. पू. के बीच बताया जाता है । (स्रोत : हिंदू धर्म कोश, राजबली पांडेय) ।

कनुप्रिया शर्मा, इंदौर

● **संस्कृत साहित्य में यक्ष का उल्लेख आता है । कौन थे वह ?**

□ यक्ष का उल्लेख ऋग्वेद में हुआ है । इसका अर्थ है 'जादू की शक्ति' । यक्षों को राक्षसों के निकट माना जाता है, किंतु वे मनुष्यों के विरोधी नहीं होते । यक्ष तथा राक्षस दोनों ही 'पुण्यजन' (अथर्ववेद में कुबेर की प्रजा का नाम) कहलाते हैं । माना गया है कि प्रारंभ में दो प्रकार के राक्षस होते थे : एक जो रक्षा करते, वे यक्ष कहलाये तथा, दूसरे, यज्ञों में बाधा उपस्थित करनेवाले राक्षस कहलाये । यक्षों के राजा कुबेर उत्तर के दिक्पाल तथा स्वर्ग के कोषाध्यक्ष कहलाते हैं । (स्रोत : राजबली पांडेय कृत 'हिंदू धर्म कोश') ।

सोमा आनंद, रतलाम

● **मच्छर कष्ट निवारणार्थ उपयुक्त टिकियों में क्या रसायन होते हैं ?**

□ मच्छर भगानेवाली टिकिया में अलेथ्रिन का मिश्रण होता है जो टिकिया के गरम होने पर वाष्प में परिवर्तित हो जाता है । इसी प्रकार मच्छररोधी अगरबत्तियों में पाइरेथ्रिस का प्रयोग किया जाता है । टिकिया की वाष्प और अगरबत्ती का धुआं मच्छरों को रुचिकर नहीं लगता जिससे वे भाग जाते हैं । इनके अतिरिक्त कुछ अन्य पदार्थ भी हैं जिनकी गंध से भी मच्छर भाग जाते हैं । ये पदार्थ मनुष्यों के लिए हानिकारक हैं, ऐसा कोई प्रमाण अभी नहीं मिला है ।

नलिनी रंजन, हाजीपुर (बिहार)

● **भारतीय राष्ट्रपति ने निषेधाधिकार (वीटो) का प्रयोग कब-कब किया ?**

□ राष्ट्रपति को निषेधाधिकार प्राप्त नहीं है ।

चलते-चलते

● **शादी को अक्सर बरबादी क्यों कहते हैं ?**

□ क्योंकि यह आबादी बढ़ाती है ।—सुधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खबरदार— रेल में कोई गरीब सफर न करे

● के.के. देवराज

भारतीय रेल, समाज के धनाढ्य वर्ग के साथ-साथ गरीब एवं साधनहीन लोगों में मुख्य वाहिनी के रूप में प्रयोग की जाती रही है। लेकिन गुजरे दस वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के नाम पर, देश की उस जनता के साथ छल किया गया है जो आवागमन के समय रेलों को ही परिवहन के मुख्य साधन के रूप में इस्तेमाल करती रही है।

भारतीय रेल व्यवस्था की शुरुआत १८५३ में बहुत ही छोटे पैमाने पर हुई थी। देश की पहली रेल लाइन बंबई से ठाणे तक केवल ३४ कि.मी. लंबी थी। और अब देश भर में रेल लाइनों की कुल लंबाई ६२ हजार कि.मी. से अधिक है। इसमें एक हजार किलोमीटर से अधिक पर बिजली की ट्रेनें चलायी जाती हैं। वर्ष १९९१-९२ में रेलों ने ४ अरब ७ करोड़ ३० लाख यात्रियों और ३६ करोड़ २४ लाख टन सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाया।

पृथक रेल बजट की शुरुआत

प्रथम विश्व युद्ध के बाद १९२० में रेल विशेषज्ञ विलियम आक वर्थ की अध्यक्षता में रेल सुधार के लिए एक समिति बनी। इस समिति की लगभग सभी महत्त्वपूर्ण सिफारिशें मान ली गयीं। तदनुसार १९२२ में रेलवे का पुनर्गठन किया गया और १९२३ से रेलों के राष्ट्रीयकरण की नीति क्रियान्वित की जाने लगी। इस समिति की सिफारिश पर ही १९२५-२६ से रेल बजट केंद्रीय बजट से पृथक प्रस्तुत किया जाने लगा। 'रेलवे ह्रास कोष' भी स्थापित किया गया और रेलवे को सामान्य राजस्व से अलग कर दिया गया। इन सभी प्रयत्नों के फलस्वरूप रेलवे ने १९२६ से १९३० के बीच अभूतपूर्व प्रगति की और लाभ भी तेजी से बढ़ा। रेलें जो कि अर्थव्यवस्था पर बोझ बन रही थीं, अब वरदान सिद्ध होने लगी थीं। भारतीय रेल को बड़ा झटका तब लगा, जब भारत विभाजन के फलस्वरूप ६,५३९ मील लंबा रेल मार्ग पाकिस्तान में चला गया। किंतु आज भारतीय रेल विश्व में अमरीका, रूस तथा कनाडा के बाद चौथे स्थान पर तथा एशिया में पहले स्थान पर है।

माल तथा यात्री भाड़े में पुनर्गठन के लिए गठित नंनजुदप्पा समिति ने अपनी रिपोर्ट रेल मंत्रालय को सौंपते हुए कहा— 'जब तक रेलवे की वित्तीय स्थिति ठीक नहीं हो जाती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलवे प्रति यात्री एक रुपये तथा एक टन माल भाड़े पर दो रुपये लेवी लगाये । वैसे भी रेलवे के किराये दुनियाभर में सबसे कम हैं ।'

तदनुसार रेल मंत्री जाफर शरीफ ने वर्ष १९९४-९५ का रेल बजट तैयार करते वक्त नंनजुदप्पा समिति की सिफारिशों को आधार बनाया ।

किराया अधिक—सुविधाएं कम

जहां तक किराये में बढ़ोत्तरी का प्रश्न था तो यहां नंनजुदप्पा समिति की यह दलील लाभप्रद तो पूरा किया किंतु बेबस जनता के हित में उसकी वांछनीय सुविधाओं पर कभी ध्यान नहीं दिया । यह भी स्वाभाविक है कि जब यात्री किराये की मार असहनीय हो जाएगी, तब कहां से लोग धन के अभाव में बेटिकट यात्राओं को मजबूर होंगे ?

बेकार जमीन का उपयोग

२७ अगस्त १९९३ को संसदीय सलाहकार समिति की एक बैठक में सर्वसम्मति से पारित एक प्रस्ताव के तहत भारत सरकार ने किराये के

भारतीय रेल का एशिया में प्रथम स्थान है । यह भी कहा जाता है कि भारत में रेल के किराये अन्य देशों की तुलना में काफी कम हैं । अतः रेल किराये में वृद्धि वांछित ही नहीं अनिवार्य भी है। लेकिन तसवीर का एक पहलू और है !

बहस का मुद्दा नहीं थी कि भारतीय रेलवे के किराये दुनिया भर में सबसे कम हैं । यहां हमें भारतीय रेल भाड़ों की तुलना विकसित एवं धनी पश्चिमी देशों से नहीं करनी चाहिए । वैसे भी पिछले दस वर्षों में माल ढुलाई का भाड़ा लगभग २५० प्रतिशत और यात्री किराया २८० प्रतिशत बढ़ा है जो लगभ २०० प्रतिशत वृद्धि का सूचकांक है ।

पिछले वर्ष ५८४ करोड़ रुपये के अतिरिक्त राजस्व प्राप्ति हेतु २० प्रतिशत एक्सप्रेस और पैसेंजर गाड़ियों और माल भाड़ों में दस प्रतिशत की भारी वृद्धि की गयी । और इस बार के नये बजट, वर्ष १९९४-९५ में भी इसी अनुपात में वृद्धि की गयी है । रेल मंत्रालय ने अपना घाटा बेकार पड़ी ५८ हजार २०० हैक्टेयर भूमि को उपयोग में लाकर धनोत्पत्ति का एक नया कोडल आधार खोज निकाला, जिससे १२००० करोड़ रुपये प्रति वर्ष अतिरिक्त आय का अनुमान है। इस योजना के तहत नगरों एवं महानगरों में खाली पड़ी भूमि पर भवन अथवा व्यापारिक केंद्र बनाकर किराये पर देने की योजना प्रस्तुत है । स्वयं को निरंतर घाटे की ओर अग्रसर बताने वाले किराये विभाग ने घाटा पूरा करने के अपने विभिन्न चिर-परिचित हथकंडों के तहत माल भाड़े एवं यात्री किराये में वृद्धि से लेकर यात्री सुविधाओं में कमी तक के नुस्खों को अपनाने के बाद अब आय का यह एक नया स्रोत खोज निकाला है । उस पर भी तुर्रा यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय रेलों पर यात्रियों की बढ़ती हुई संख्या की सूची

वर्ष	उपनगरीय यात्री	लंबी दूरी के यात्री	कुल संख्या लाख में
१९६०-६१	११,७७०	६५,८९५	७७,६६५
१९७३-७४	१७,१६४	७९,१३०	९६,२९४
१९८४-८५	४४,२६५	१८२,३१८	२२६,५८२
१९९०-९१	५९,५७८	२३६,०६६	२९५,६४४

कि यह सब यात्रियों के हित में उन्हें अनावश्यक भाड़ा-वृद्धि की मार से बचाने के लिए किया जा रहा है ।

विकल्पों की खोज

देश का अधिकांश यात्री वर्ग कठिनाई से भी इस सहनशक्ति की सीमांत स्थिति से गुजर चुका है । बहुत से कम दूरी के यात्री किराये की अनियमितताओं और भाड़े की अधिक वसूली के कारण परिवहन के इस साधन को छोड़ चुके हैं तो दूसरे बहुत से यात्री लंबी दूरी के लिए अन्य कोई वाजिब विकल्प न मिलने के कारण इसे अपनाते रहने को बाध्य हैं । यह तथ्य विचारणीय ही है कि आज देश में द्वितीय श्रेणी का रेल भाड़ा भी बसों से अधिक है तो किराये के प्रथम श्रेणी (वातानुकूलित) के किराये हवाई जहाज के किरायों के लगभग समान ही हैं ।

घटता योजना आकार

उल्लेखनीय है कि योजना आयोग ने वर्ष १९९४-९५ के लिए रेलवे का योजना आकार ६१०० करोड़ रुपये तय किया है जो गत वर्ष १९९३-९४ के लिए रखे गये योजनाआकार से एक सौ करोड़ रुपये कम है । वर्ष १९९३-९४ के लिए किराये का योजना आकार ६५०० करोड़ रुपये रखा गया था लेकिन रेलवे ने अपनी खराब वित्तीय स्थिति की वजह से ३०० करोड़ रुपये घटाकर ६२०० करोड़ रुपये कर दिया था ।

रेलवे द्वारा वर्ष १९९४-९५ के बजट में लगातार चौथे वर्ष भी अब १००० से १५०० करोड़ रुपये किराये भाड़े बढ़ाने की स्वीकारोक्ति दी है । लेकिन संतोष का विषय यह रहा कि वर्ष १९९४-९५ की किराया वृद्धि वर्ष १९९३-९४ की किराया वृद्धि से कुछ प्रतिशत कम रही ।

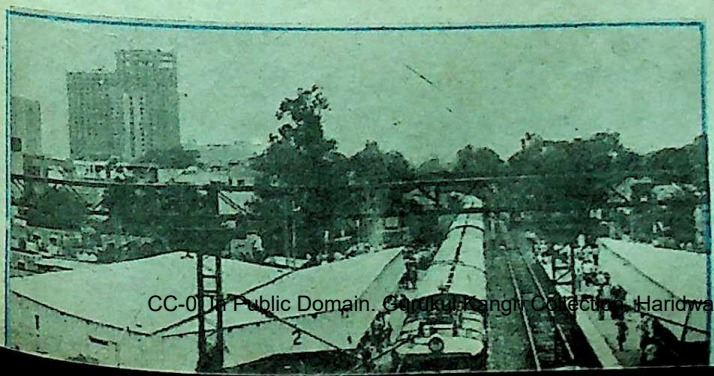

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष १९९०-९१ और १९९१-९२ (मार्च तक) उत्तर रेलवे में बुक किये गये सामानों की चोरी के आंकड़े—

वर्ष		घटनाओं की संख्या रिपोर्ट हुई/पकड़ी गयी	पकड़े गये लोग बाहरी लोग/आर.पी.एफ. तथा रेलवे कर्मचारी
१९९०-९१	—	१०४७६८१२-१३८८२१६	४१३-[illegible]
१९९१-९२	—	१०७८०८२७-१४१६००५	४४२-[illegible]

घाटे की भरपाई के प्रयत्न

इसके अतिरिक्त भारतीय रेल मंत्रालय ने भविष्य में होने वाले संभावित घाटे की भरपाई हेतु यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया (यू.टी.आई.) जैसे वित्तीय संस्थानों से आपातकालीन स्थिति में इस बार ३५० करोड़ रुपये ब्याज पर लेने की पूर्व योजना बनायी है, क्योंकि वित्त मंत्रालय ने भी रेलवे से स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि रेलवे को अपने आंतरिक संसाधन स्वयं ही जुटाने होंगे ।

रेल मंत्रालय यात्री किराया बढ़ाते समय पिछले घाटे को ध्यान में रखता है लेकिन इस घाटे की वजह रेलयात्री तो नहीं, इसका आधार तो कुछ और ही है और इसकी मार सहनी पड़ती है निरीह यात्री को ।

गैरजरूरी व्यय : कटौती जरूरी

रेलवे के आय स्रोतों में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य तो यही है कि उसे गैर-जरूरी व्ययों में कटौती करनी चाहिए अथवा उन्हें पूर्णतया बंद करना चाहिए ।

रेलवे के उच्चाधिकारियों द्वारा की जाने वाली जरूरी अथवा गैर-जरूरी हवाई यात्राओं पर प्रति वर्ष खर्च होने वाला करोड़ों रुपया, रेल को अपनी संपूर्ण आय का तीन फीसदी जुर्माने के रूप में प्रति वर्ष दे देना पड़ता है जिसमें चोरी गये सामान का मुआवजा व अन्य दूसरी अनियमितताओं के कारण बहुत-सा धन [illegible] जाता है । विलंब से पहुंचने के कारण रेलगाड़ियों को अधिक ऊर्जा खपानी पड़ती तथा रेल मंत्रालय का जितना पैसा सरकार के 'जी हजूरी' एवं महत्त्वपूर्ण लोगों की सेवा-सुश्रुषा पर खर्च होता है उतना तो सामान्य कर्मचारी वर्ग पर भी नहीं होता । इसके अलावा महत्त्वपूर्ण लोगों के लिए रेलगाड़ियों में अतिरिक्त कोच लगाना, उच्च श्रेणी में यात्रा [illegible] सैकड़ों की तादाद में मुफ्त पास जारी करना आदि भी गैर-जरूरी व्यय के कारण हैं ।

यात्रियों के साथ चोरी, मारपीट, [illegible] फैली दमघोटू गंदगी, घटिया एवं महंगा खान-पान वितरण, खड़े-खड़े यात्रा करना इत्यादि के अतिरिक्त रेलों का देरी से पहुंचना आज रेल प्रशासन के मुख्य लक्षण बन गये हैं । परिणामस्वरूप रेल यात्राओं के प्रति [illegible] में असुरक्षा की भावना पनप रही है ।

— द्वारा श्री बिक्रम सिंह (अध्यापक)
श्यामसिंह बिल्डिंग के [illegible]
मोदीनगर (जिला-गाजि[illegible])

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतीत होते भाप के इंजिन और डिब्बे

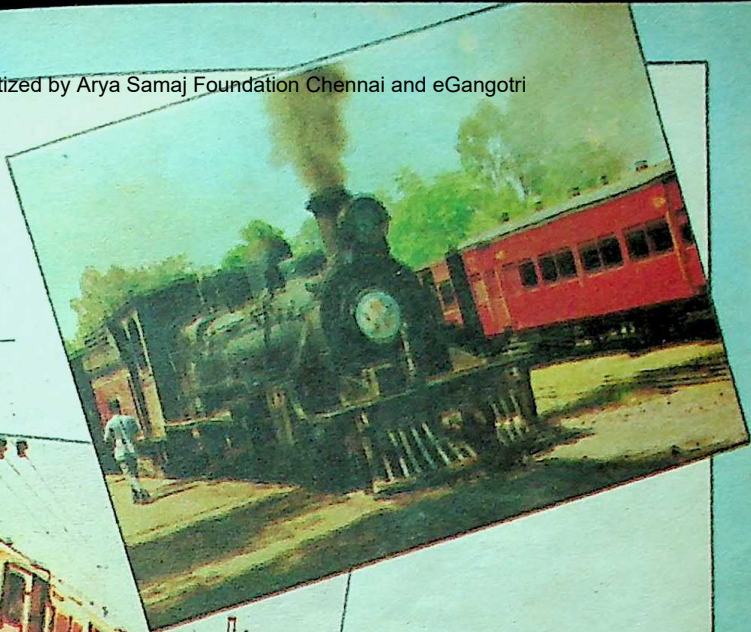

अब इनका जमाना है— बिजली के इंजिन

बंबई के बोरीबंदर स्टेशन की इमारत

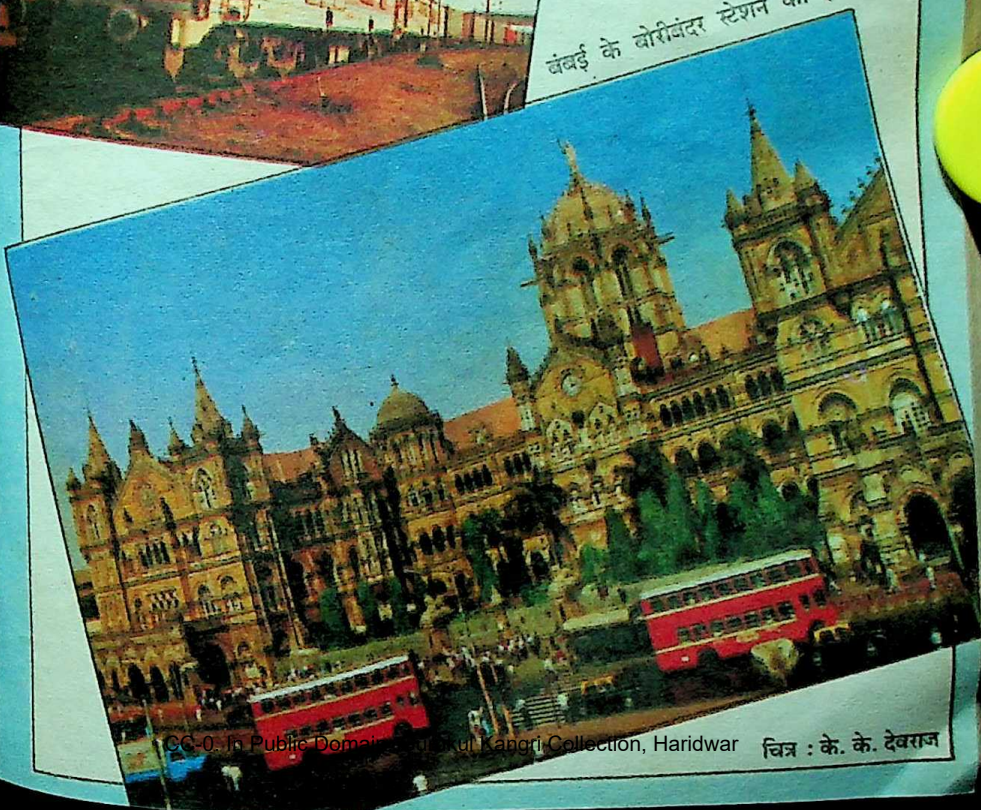

चित्र : के. के. देवराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

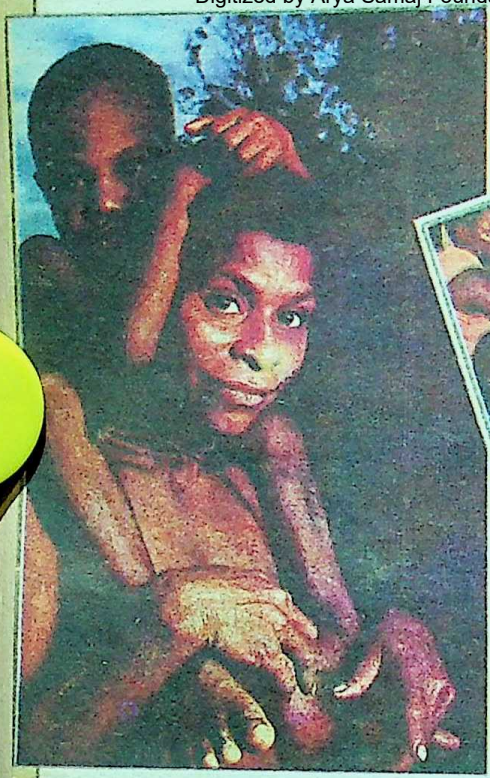

उज्ज्वल भविष्य की ओर

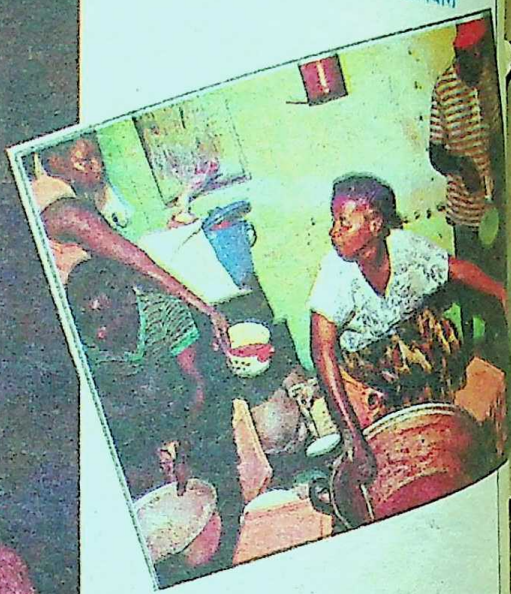

सामूहिक भोज की तैयारी

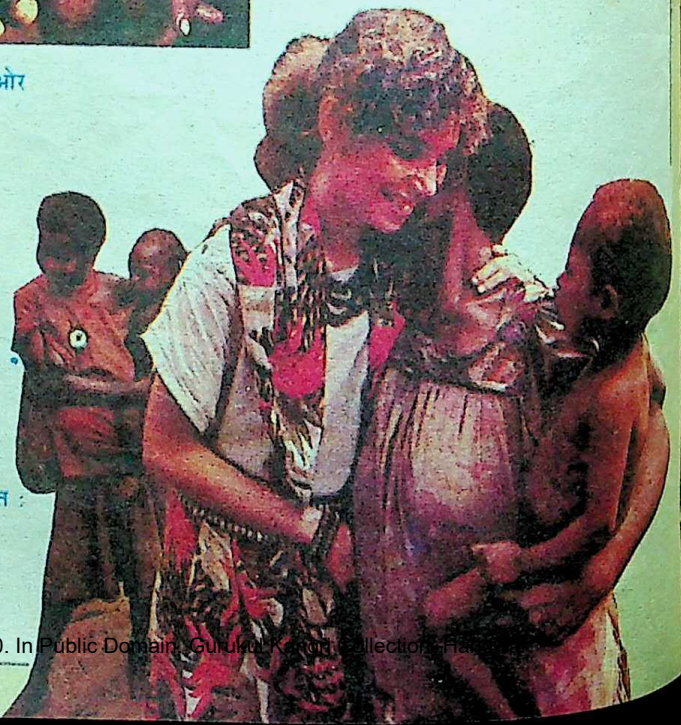

एक नये युग का सूत्रपात : श्वेत-अश्वेत के मध्य सौहार्द्र-संबंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं जानता हूं कि मेरे सारे तर्क व्यर्थ जाएंगे और मुझे सजा मिलेगी । मगर मैं इतना जरूर कहूंगा कि अदालत मुझे जो चाहे सजा दे ले, चाहे जब तक जेल में बंद कर ले, पर मेरी आत्मा बंधक नहीं हो सकती । जेल से छूटने के बाद भी मैं वही करूंगा, जो मेरी आत्मा कहेगी । मेरी आत्मा की आवाज है कि अपने देश की जनता को अन्याय, अत्याचार और शोषण के शिकंजे से मुक्ति दिलाऊं । मेरा संघर्ष जारी रहेगा ।'

—नेलसन मंडेला

सूरज निकला आधी रात

● नवीन पंत

'मैंने स्वयं अपनी जिंदगी को खो दिया है'—यह बात नेल्सन रोलिहलालला मंडेला ने छठवें दशक के उत्तरार्द्ध में अपनी पत्नी विनी मंडेला को लिखी थी । उन दिनों वह केपटाउन से कुछ दूर अतलांतक महासागर में स्थित ठंडे वीरान रॉबिन द्वीप की जेल में कैदी का जीवन बिता रहे थे । तत्कालीन दक्षिण अफरीका की रंगभेदी सरकार के कानूनों के अनुसार उन्हें तोड़-फोड़ के अभियोग में सश्रम आजन्म कारावास का दंड दिया गया था । उनका अपराध केवल इतना था कि वह दक्षिण अफरीका की बहुसंख्यक पददलित अश्वेत जनता के लिए समान अधिकारों, मानव अधिकारों की मांग कर रहे थे ।

मंडेला : खतरनाक कैदी !

दक्षिण अफरीका की सरकार उन्हें खतरनाक कैदी समझती थी । अतः उन्हें कड़ी सुरक्षा-व्यवस्था में रॉबिन द्वीप में रखा गया था । जेल में उन्हें काम दिया गया था—पत्थर की खानों से पत्थर निकालकर तोड़ना । उन्होंने हर रोज बिला नागा लगभग अठारह वर्षों तक पत्थर तोड़ने का काम किया । इस दौरान उनकी युवा पत्नी विनी को कभी-कभी उनसे भेंट करने की अनुमति थी पर वे आपस में बातें नहीं कर सकते थे, एक-दूसरे का स्पर्श नहीं कर सकते थे । कभी-कभी नेल्सन मंडेला को सर्वत्र अंधकार नजर आता था । लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी । उन्होंने अपने जेल में बचे समय का उपयोग पठन-पाठन, अध्ययन और चिंतन में किया ।

नेल्सन मंडेला नैतिकता, शाश्वत मानव-मूल्यों और लोकतंत्र के लिए लड़ रहे थे । अतः उनकी इस लड़ाई को विश्व की समस्त प्रबुद्ध जनता का समर्थन प्राप्त था । उन पर गीत रचे जा रहे थे, लेख लिखे जा रहे थे । सारा संसार उनकी नजरबंदी से और उनके साथ किये जा रहे व्यवहार से चिंतित था । दक्षिण अफरीका की सरकार पर उनकी रिहाई के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

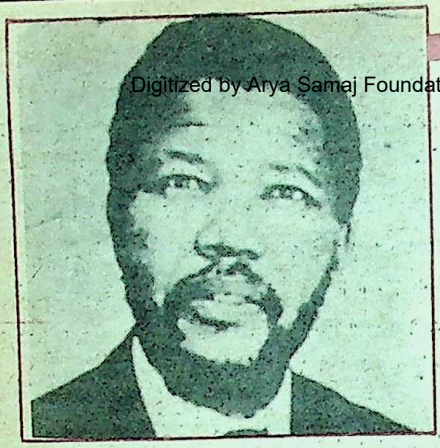

मंडेला

दबाव पड़ रहा था । इस दबाव के चलते दक्षिण अफरीका की सरकार उन्हें निरंतर एक जेल से दूसरी जेल में बदलती रही । अंततः उसे ११ फरवरी १९९० को मंडेला को रिहा करना पड़ा । रिहाई के बाद मंडेला और राष्ट्रपति एफ. डब्ल्यु. डी. क्लार्क के बीच, तीन वर्ष की बातचीत के बाद, देश के नये संविधान और राष्ट्रीय एकता की सरकार के बारे में सहमति हो सकी ।

गांधीजी कुली बेरिस्टर थे !

दक्षिण अफरीका के तट पर सन १४८८ को एक पुर्तगाली नाविक उतरा था । सन १६१५ में वहां कुछ अंगरेज पहुंचे, किंतु विकास की कोई संभावना न देख स्वदेश लौट गये । सन १६४७ में वहां कुछ डच पहुंचे और इसी के साथ दक्षिण अफरीका को उपनिवेश के रूप में विकसित करने के प्रयत्न शुरू हुए । अठारहवीं शताब्दी के अंत तक वहां काफी डच, फ्रांसीसी और जरमन पहुंच गये थे । इन लोगों ने अपने को 'अफरीकनेर' और अपनी भाषा को 'अफरीकांस' कहना शुरू कर दिया । बाद में सन १८९८ तक समूचे दक्षिण अफरीका पर ब्रिटेन का अधिकार हो गया । इस बीच की एक दिलचस्प घटना है । सन १८९३ में जब गांधीजी एक मुकदमे के सिलसिले में यहां नेटाल पहुंचे तो यूरोपीय उन्हें, 'कुली बैरिस्टर' कहते थे । एक बार डरबन से प्रिटोरिया जाते हुए गांधीजी को मारित्जबर्ग रेल स्टेशन पर रेलगाड़ी से इसलिए उतार दिया गया क्योंकि, एक यूरोपीय यात्री उनके साथ फर्स्ट क्लास के डिब्बे में यात्रा करने को तैयार न था । अब उस स्टेशन के बाहर गांधीजी की प्रतिमा लगा दी गयी है ।

श्वेत और अश्वेतों के बीच भेदभाव का इतिहास सर्वविदित है । अश्वेत श्वेत लोगों के लिए अछूत थे । वे उन्हें निर्ममतापूर्वक पीटते थे ।

दक्षिण अफरीका भौतिक और प्राकृतिक साधनों की दृष्टि से एक संपन्न देश है । वह विश्व में सोने, हीरे, प्लेटिनम और यूरेनियम का प्रमुख उत्पादक है । विश्व का लगभग आधा (४७ प्रतिशत) स्वर्ण उत्पादन दक्षिण अफरीका में होता है । इसके अलावा सारे खनिज पदार्थों की यहां खानें हैं । दक्षिण अफरीका की प्रति व्यक्ति आय २७७१ डॉलर है, जो एशिया व अफरीका के अनेक देशों की प्रति व्यक्ति आय की तुलना में आठ से नौ गुना है । लेकिन अश्वेतों की आय से श्वेतों की आय ११-१२ गुना अधिक है । देश के ५ प्रतिशत श्वेतों के पास ८८ प्रतिशत संपत्ति है ।

जोहानिसबर्ग में गगनचुंबी इमारतें हैं । शानो-शौकत में यह नगर किसी भी यूरोपीय नगर का मुकाबला कर सकता है । लेकिन सभी गगनचुंबी इमारतों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों, बैंकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वित्तीय संस्थाओं के मालिक श्वेत हैं ।

आधी रात का सूरज

रॉबिन द्वीप में नजरबंद कैदी नेल्सन मंडेला ने इसी वर्ष १० मई को प्रिटोरिया की यूनियन बिल्डिंग में, जिसमें कुछ समय पहले तक अश्वेतों के प्रवेश पर भी प्रतिबंध था, वहां पर १५० देशों के राष्ट्राध्यक्षों, शासनाध्यक्षों या उनके प्रतिनिधियों की उपस्थिति में राष्ट्रीय एकता सरकार के अध्यक्ष पद की शपथ ली । इसके साथ ही दक्षिण अफरीका में ३४२ वर्ष पुराने अल्पसंख्यक श्वेत शासन का अंत हो गया । यह बीसवीं शताब्दी की युगांतरकारी घटना है और इसे 'आधी रात का सूरज' कहा जा सकता है ।

मंडेला ने राष्ट्रपति बनने से पूर्व और बाद में अद्भुत सूझ-बूझ और राजनीतिक परिपक्वता का परिचय दिया है । उन्होंने अपने भाषण में कहा है, 'हम सभी को अपने देश के सामने उपस्थित समस्याओं से निपटने के लिए कमर कस लेनी चाहिए । हमें दक्षिण अफरीका को आगे बढ़ाना है ।' उनके भाषण में क्रोध, कटुता और प्रतिशोध के भाव नहीं हैं । उन्होंने गांधीजी की विरासत और शिक्षा को स्वीकार किया है और सभी से मेल-मिलाप का युग शुरू करने की अपील की है ।

मंडेला ने मंत्रिमंडल में श्वेत डेरेक केज को वित्त मंत्री और ट्रेवर मैनुअल को व्यापार और उद्योग मंत्री नियुक्त किया है । भारतीय मूल के चार लोगों को अपने मंत्रिपरिषद में स्थान दिया है । इस तरह नेलसन मंडेला ने कटुतापूर्ण वातावरण को एकदम समाप्त करने की कोशिश की है ।

नेलसन मंडेला और विनी विवाह के अवसर पर

नेलसन मंडेला के सामने अनंत आर्थिक चुनौतियां हैं । उसी के साथ राजनीतिक प्रभाव और संपन्न देशों की दादागिरी से बचना भी उनके लिए बड़ा प्रश्न है । डी. क्लार्क की नेशनल पार्टी को २० प्रतिशत और मैंगोसूथू बुथेलेजी की इनकाथा फ्रीड़म पार्टी को १०.५ प्रतिशत वोट मिले हैं । नेशनल पार्टी को केप प्रांत में इनकाथा फ्रीडम पार्टी को क्वाजूलू नेटाल प्रांत से पूर्ण बहुमत मिला है । नेशनल पार्टी 'अफरीकनेर' गोरों के लिए पृथक राज्य 'बोक्स्टाट' की मांग कर रही है और इनकाथा फ्रीडम पार्टी जूलू क्षेत्रों के लिए पूर्ण स्वायत्तता की मांग कर रही है ।

इस समय केवल मंडेला देश को एकता के सूत्र में बांधे रख सकते हैं । लेकिन वह ७५ वर्ष के हैं । उनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है । अफरीकी नेशनल कांग्रेस के अंदर उनकी पूर्व पत्नी विनी मंडेला सहित कुछ तत्व क्रांतिकारी परिवर्तन चाहते हैं । वह श्वेत लोगों को उनके मकानों, फार्मों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों से बेदखल करना चाहते हैं । मंडेला का संपूर्ण जीवन अत्यंत रोमांचक और दर्दभरा रहा है । इतनी यातनाएं शायद ही किसी ने सही हों । प्रस्तुत हैं उनके जीवन के कुछ रोमांचक अंश ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह शुभकामना हर स्वतंत्रताप्रिय व्यक्ति की

हर नव-स्वतंत्र देश को प्रारंभ में भीषण कठिनाइयों के दौर से गुजरना पड़ता है। स्वाधीनता को अपनी समस्त समस्याओं का रामबाण इलाज समझनेवाली जनता अपने नेताओं और सरकार से चमत्कार की आशा करती है। ऐसे चमत्कार होते नहीं हैं, और जनता का मोह-भंग देश और शासकों के सामने नयी-नयी समस्याएं और संकट पैदा कर देता है। हर नव-स्वाधीन देश को इस दौर से गुजरना पड़ता है और दक्षिण अफरीका इसका अपवाद बन सकेगा, संभव नहीं लगता। दक्षिण अफरीका के राष्ट्रपति और जननेता नेलसन मंडेला के सामने कोई कम विकट समस्याएं मौजूद नहीं हैं। एक ओर नितांत गरीबी में गुजर-बसर कर रही जनता के सुंदर, सुखद, सुविधाओं से भरे जीवन के स्वप्न हैं,तो दूसरी ओर हैं राजनीतिक, सामाजिक जीवन में व्याप्त भीषण अंतर्विरोध,जो मंडेला-सरकार के गठन में भी प्रतिबिंबित हैं।

मंडेला-सरकार में देश के सभी प्रदेशों, वर्गों और कबीलों को प्रतिनिधित्व दिया गया है। इनमें श्वेत भी हैं। ४०० सदस्योंवाली संसद में ए. एन. सी. को दो तिहाई बहुमत नहीं मिल पाया है, फलतः श्वेतों की प्रतिनिधि नेशनल पार्टी और जुलू समुदाय समर्थित इंकाथा फ्रीडम पार्टी ए. एन. सी. पर बराबर दबाव बनाये रख सकती हैं। चुनाव के पूर्व इंकाथा पार्टी ने चुनाव-बहिष्कार की घोषणा कर गृह-युद्ध की स्थिति पैदा कर दी थी,पर मंडेला-क्लार्क की राजनीतिक सूझबूझ के कारण यह खतरा टल गया। लेकिन कब रक्तपात शुरू हो जाए, कहा नहीं जा सकता। उधर श्वेतों का एक भूमिगत संगठन भी श्वेतों के लिए पृथक राज्य की मांग कर रहा है। कुल मिलाकर दक्षिण अफरीका पर विलगाववादी तत्वों का दबाव हमेशा बना रहेगा। यों, आर्थिक दिवालियेपन की कगार पर खड़े, पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष और कबीलाई संघर्ष के शिकार दक्षिण अफरीका के पुनर्निर्माण के लिए राष्ट्रपति नेलसन मंडेला ने महत्त्वाकांक्षी योजनाएं बनायी हैं। सवाल यह है कि वे उन्हें पूरा करने में कहां तक सफल होते हैं और श्वेत समुदाय के उग्रवादी तत्व और कबीले के मंडेला-विरोधी सरदार उन्हें असफल करने के लिए किस सीमा तक जा सकते हैं।

लेकिन न्यूनाधिक रूप से ऐसी स्थितियों से हर नव स्वाधीन देश के नेताओं को निपटना पड़ता है। नेलसन मंडेला ने अपने देश को श्वेतों की दासता से मुक्त कराया है। वे उसे आर्थिक रूप से भी स्वतंत्र और शक्तिशाली बनाने में ये सफल हों, यह शुभकामना हर स्वतंत्रता-प्रिय व्यक्ति की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन : वकील बनने का स्वप्न

नेलसन मंडेला का जन्म दक्षिण अफरीका के ट्रांस्की प्रदेश में १८ जुलाई, १९१८ को एक राजसी परिवार में हुआ । उनके पिता हेनरी मंडेला थेम्बू कबीले के मुखिया के प्रमुख सभासद थे ।

बचपन में मंडेला ने बुजुर्गों से देश के बारे में कई किस्से सुने थे । अपने उन दिनों को अपने राजनीतिक जीवन का आधार बताते हुए मंडेला इस तरह याद करते हैं—

'तब हमारे लोग शांतिपूर्वक रहते थे । राजाओं का शासन प्रजातांत्रिक था । लोग आजादी से इधर-उधर बेरोक-टोक आते-जाते थे । देश हमारा था । जमीन, जंगल, नदियां, सब कुछ हमारे थे । . . . हमारी अपनी सरकार थी ।'

अश्वेत : अपमानजनक कानून

सन १९३६ में, ट्रांसवाल, नाटक, ओरेंज फ्री स्टेट की तरह केप क्षेत्र में भी पास-कानून लागू होने जा रहा था, जिसके अंतर्गत अश्वेत लोग पास लेकर ही घर से बाहर निकल सकते थे । यह कानून अश्वेत लोगों के लिए न केवल अपमानजनक था, बल्कि उनकी रोजमर्रा की जिंदगी में भी बाधा बनने रहा था ।

पूरे देश में छात्रों ने आंदोलन किये । नेलसन मंडेला की राष्ट्रीय भावना और भी प्रबल हो उठी । इन्हीं दिनों वे एक सहपाठी ओलीवर तांबो के संपर्क में आये, जो उन्हीं के क्षेत्र के थे । तभी उन्हें बहिष्कार-आंदोलन करने के कारण कालेज से निलंबित कर दिया गया ।

वाल्टर सिसलू अफरीकी नेशनल कांग्रेस के सदस्य थे । उन्होंने मंडेला को भी इसका सदस्य बना दिया । इन लोगों ने अन्याय के विरुद्ध अहिंसात्मक आंदोलन किये, जिनके फलस्वरूप उन पर अत्याचार हुए ।

तब मंडेला कम्युनिस्ट-विरोधी थे, क्योंकि अपने धार्मिक संस्कारों के कारण वे जानते थे कि कम्युनिस्ट ईसा-विरोधी हैं । इसीलिए उन्होंने तथा उनके सहयोगियों ने कम्युनिस्टों को कोई सहयोग नहीं दिया । लेकिन जब सन १९५० में मई दिवस के अवसर पर, सरकार की अन्यायपूर्ण नीतियों के विरुद्ध खान-मजदूरों ने कम्युनिस्टों की सहायता से हड़ताल की और हड़ताल काफी हद तक सफल भी रही, तब मंडेला तथा उनके साथी कम्युनिस्टों की संगठन-क्षमता से बेहद प्रभावित हुए और उनसे सहयोग के लिए भी तैयार हो गये ।

अहिंसा में आस्था

सन १९५० के अंत में मंडेला-अफरीकी नेशनल कांग्रेस की यूथ लीग के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने । उन्होंने तथा वाल्टर सिसलू ने सिविल नाफरमानी के आंदोलन की योजना बनायी । उन्होंने अहिंसक और शांतिपूर्ण आंदोलन की नीति ही अपनायी ।

छठे दशक में मंडेला की गतिविधियों पर प्रतिबंधों का घेरा लगातार कसता गया । उन दिनों के बारे में उन्होंने लिखा है—**'कानून के नाम पर मैंने स्वयं को प्रतिबंधित और अपने साथियों से अलग-थलग अकेला पाया—उन साथियों से, जो मेरी तरह सोचते और विश्वास रखते थे । मैं जहां जाता, गुप्तचर मेरे पीछे लगे रहते । मुझे लगता, जैसे मैं कोई अपराधी होऊं । . . . कानून ने मुझे अपराधी बना दिया था, इसलिए नहीं कि मैंने ऐसा कुछ किया, बल्कि**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए कि मैं कुछ सिद्धांतों, कुछ आदर्शों, कुछ विचारों के लिए सत्ता से जूझ रहा था ।'

श्वेतों के प्रभुत्व के खिलाफ ही संघर्ष

देशद्रोह का मामला अंततः इस मुद्दे पर आ गया कि अफरीकी राष्ट्रीय कांग्रेस की नीति हिंसाजनक है, किंतु सरकार इस आरोप को सिद्ध नहीं कर सकी । मंडेला ने ४४१ पृष्ठ का बयान दिया । इसके बाद जिरह हुई ।

जज ने पूछा, 'क्या आप लोगों की स्वतंत्रता यूरोपीय लोगों के लिए खतरा नहीं है ?'

मंडेला ने उत्तर दिया, 'हम श्वेत लोगों के विरोधी नहीं हैं । हमारी लड़ाई श्वेत लोगों के प्रभुत्व के खिलाफ है . . . लेकिन हमने यह सावधानी बरती है कि हिंसा हमारी तरफ से न हो ।' उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वे और उनके साथी कम्युनिस्ट नहीं हैं ।

२९ मार्च, १९६१ को फैसला सुनाया जानेवाला था । अदालत खचाखच भरी थी । वातावरण तनावपूर्ण था । वरिष्ठ जज रम्फ ने मंडेला तथा उनके साथियों से कहा—'आप लोग निर्दोष हैं । अदालत आपको सारे आरोपों से बरी करती है । आप जा सकते हैं ।'

जेल से छूटने के बाद मंडेला ने गुप्त रूप से पार्टी का काम सक्रियता से संभाला । भूमिगत रहकर वे सारे आंदोलन का संचालन कर रहे थे । उस समय के बारे में उनका कहना है—*'कोई आदमी स्वेच्छा से ऐसा नहीं करना चाहेगा, लेकिन एक ऐसा समय आता है, जब आदमी को सहज-सामान्य जीवन जीने के अधिकार से वंचित कर दिया जाता है ।'*

२९ मई, १९६१ को मंडेला के आह्वान पर तीन दिन की हड़ताल हुई । पहले दिन हड़ताल काफी सफल रही । सरकार के दमन और अत्याचार को देखते हुए हड़ताल वापस ले ली गयी । इस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए मंडेला ने कहा, *'यदि सरकार दमन और अत्याचार के बल पर हमारे अहिंसक संघर्ष को कुचलने पर उतारू है, तो हमें भी अपनी अहिंसक नीति पर पुनर्विचार करना होगा ।'*

अचानक ५ अगस्त, १९६२ को मंडेला को गिरफ़्तार कर लिया गया ।

मंडेला पर मुकदमा शुरू हुआ । उन्होंने अपनी पैरवी स्वयं की । मजिस्ट्रेट के सामने बयान देते हुए उन्होंने कहा, *'यह मुकदमा अफरीकी लोगों की आकांक्षाओं को कुचलने के लिए किया गया है । जनता की आकांक्षाओं का दमन करनेवाली सरकार से न्याय की आशा नहीं की जा सकती । ऐसी सरकार के कानूनों का पालन करने के लिए मैं नैतिक या कानूनी रूप से बाध्य नहीं हूं ।'*

मंडेला पर दो आरोप लगाये गये—

१. अफरीकी मजदूरों को हड़ताल के लिए उकसाना, तथा २. वैध यात्रा-पत्रों के बिना देश से बाहर जाना ।

मंडेला ने अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा— *'इस देश का संविधान, इस सरकार का अब तक का इतिहास गवाह है कि इस अल्पमत सरकार के कानून अनैतिक, अनुचित और असह्य हैं । हमारी आत्मा कहती है कि इन कानूनों का विरोध किया जाए और इन्हें उलट दिया जाए ।*

'यह सरकार हमें संरक्षण देने के बजाय हमें जंगली, खतरनाक, क्रांतिकारी के रूप में पेश करती है और यह जताती है कि इन लोगों से एक भद्र नागरिक का व्यवहार नहीं किया जा सकता । और इसीलिए हमारा दमन करने के लिए वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानूनी या गैरकानूनी— हर तरह के हथकंडे इस्तेमाल करती है । हमसे असभ्य और पाशविक व्यवहार किया जाता है । हमारी न्यायोचित मांगों का जवाब हिंसा से दिया जाता है ।

'मैं जानता हूं कि मेरे सारे तर्क बेकार जाएंगे और मुझे सजा मिलेगी । मगर मैं इतना जरूर कहूंगा कि अदालत मुझे जो चाहे सजा दे ले, चाहे जब तक जेल में बंद कर ले, पर मेरी आत्मा बंधक नहीं हो सकती । जेल से छूटने के बाद भी मैं वही करूंगा, जो मेरी आत्मा कहेगी । मेरी आत्मा की आवाज है कि अपने देश की जनता को अन्याय, अत्याचार और शोषण के शिकंजे से मुक्ति दिलाऊं । मेरा संघर्ष जारी रहेगा ।'

७ नवम्बर, १९६२ को मंडेला को पांच वर्ष की बामशक्कत कैद की सजा सुनायी गयी । सजा सुनकर मंडेला ने मुसकराते हुए कहा, *'मुझे पूरा यकीन है कि भावी पीढ़ी घोषित करेगी कि मैं निर्दोष था और अपराधी वे लोग, जो इस समय सरकार चला रहे हैं ।'*

कैदी-जीवन की शुरूआत

प्रेटोरिया की सेंट्रल जेल में मंडेला ने एक कैदी का जीवन शुरू कर दिया । मंडेला तथा उसके साथियों पर तोड़-फोड़ की कार्यवाहियों में शामिल होने का आरोप लगाते हुए फिर मुकदमा चलाया गया । ३ दिसम्बर को अदालत की कार्यवाही शुरू हुई । सबसे पहले मंडेला से पूछा गया, 'आप अपना अपराध स्वीकार करते हैं या नहीं ?'

'मेरी बजाय सरकार को कटघरे में खड़ा होना चाहिए । मैंने कोई अपराध नहीं किया ।' मंडेला ने उत्तर दिया ।

इसके बाद सभी मुलजिमों ने यही उत्तर दिया । पांच महीने मुकदमे की कार्यवाही निराधार चलती रही । इसके बाद बाकायदा आरोप-पत्र प्रस्तुत किये गये । सभी मुलजिमों की तरफ से मंडेला ने बचाव-पक्ष का बयान तैयार किया । २० अप्रैल को यह बयान अदालत में सुनाया गया । बयान इस तरह था— *'जहां तक हिंसा और तोड़-फोड़ के आरोपों का संबंध है, मैं कहूंगा कि इनमें से कुछ बातें सही हैं और कुछ गलत । मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि मैंने तोड़-फोड़ की योजना बनायी । मैंने यह योजना इसलिए नहीं बनायी कि मेरा हिंसा में विश्वास था, बल्कि इसलिए बनायी कि श्वेत लोगों के दमन और शोषण ने इस देश की अश्वेत जनता को इस बात के लिए मजबूर किया । . . . अफरीकी नेशनल कांग्रेस ने हमेशा ही हिंसा से बचकर शांतिपूर्ण तरीके अपनाने की कोशिश की । सन १९६१ में हम विचार-विमर्श करके इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि सरकार की दमनकारी नीतियों के रहते, अहिंसक आंदोलन में आस्था रखना निरर्थक है और कभी-न-कभी हमें हिंसक तरीकों पर आने के लिए मजबूर होना पड़ेगा । . . . हिंसा के चार तरीकों में से हमने केवल तोड़-फोड़वाले तरीके को ही चुना । हमारा अनुभव बताता था कि हमारे विद्रोह से सरकार को और अधिक जन-संहार का मौका मिलेगा, लेकिन हमने सोचा कि जब अकारण ही इतना जन-संहार हो रहा है, तब थोड़ा और सही । संघर्ष को जब जारी ही रहना है, तब क्यों न हम भी इसमें खुलकर हिस्सा लें ।'*

अपने भाषण का समापन मंडेला ने इन शब्दों में किया— *'अपने जीवनभर मैंने स्वयं को अफरीकी लोगों के संघर्ष के प्रति समर्पित किया है । मैंने श्वेत लोगों के प्रभुत्व से भी संघर्ष किया और अश्वेत लोगों के प्रभुत्व से भी । मैंने एक ऐसे प्रजातांत्रिक और मुक्त समाज के आदर्श का सपना देखा है, जिसमें सब लोग स्नेह से रहें और उनके पास प्रगति के समान अवसर हों । इस आदर्श के लिए मैं अपना जीवन भी न्यौछावर कर सकता हूं ।'* ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्नड़ कहानी

साहचर्य

● के. शांतामणि

सवेरे के आठ बजे । धूप चढ़ने पर भी विशालाक्षी का मन उठने का नहीं हो रहा था । खिड़की से आती हुई सूर्य की किरणों ने विशालाक्षी को जगाया न होता तो न जाने वह कितनी देर तक और सोती रहती । रात के मीठे सपने उसकी ढलती उमर में भी उसे लजाये दे रहे थे । लज्जा की इस भावना से वह और भी लज्जित हुई कि इस उमर में यह कैसी लज्जा ? जबकि उसके अपने जीवन में तो ऐसी घटनाएं घटी ही नहीं, जिन पर वह लजा सके । आज वही लज्जा मौका पाकर उभर आयी तो उसका क्या कसूर ? लजाने का यह अनुभव इतना मधुर था कि उसके गालों पर लालिमा छा गयी ।

विशालाक्षी ने उठकर आदमकद आइने में अपने आपको देखा तो उसके गाल और अधिक लाल हो उठे । सपनों में मिले रात के सुख ने उसके मुख पर बिंबित होकर मुख को एक अनोखी आभा प्रदान कर दी थी । कितने सुंदर सपने थे । यदि यह सपना ही इतना मधुर है तो सचाई में वह कितना... छिः... छिः ! अब यह बात क्यों ? जो इतने दिन तक नहीं हुई आज क्यों सता रही है ? वह भी इस उमर में ! वह सोचती रही ।

उसका चेहरा जो अभी तक आइने में खिला दिखायी दे रहा था, हठात मद्दम पड़कर आभाहीन हो गया । बीती हुई कड़वी घटनाएं स्मरण आने लगीं । दीवार का आसरा लेकर वह ऐसे ही निढाल होकर बैठ गयी । ... कैसा धोखा दिया उन लोगों ने ! मेरी मासूम जिंदगी को मिट्टी में मिला दिया । वह भी बिना किसी कारण के । मेरा कसूर भी क्या था ? मैंने एक कुलीन वंश में पैदा होकर आत्म-सम्मान से जीना चाहा था । टाइपिस्ट रीटा की तरह इठलाते हुए अन्य पुरुषों के साथ गपशप न करना ही मेरा अपराध था । शादी होने के एक बरस के अंदर ही मैं एक गंवार, पुराने खयालात की औरत आदि उपाधियां लेकर मायके लौटा दी गयी थी । मुझे फिर ससुराल भेजने के लिए पिताजी ने कितनी कोशिशें कीं, ससुर के पांव पड़कर विनती तक की, लेकिन सब बेकार । मैं पिताजी के पास, आंसू बहाते हुए खड़े रहने के अलावा कुछ नहीं कर सकी ।

चाचाजी की मदद न मिली होती तो क्या आज मैं एक प्राध्यापिका बन सकती थी ? उस दिन चाचाजी आगे बढ़कर मुझे कालेज में दाखिला न करते तो, आज रोटी के टुकड़े के लिए मुझे दर-दर भटकना पड़ता या किसी के घर में नौकरानी बनने को विवश होना पड़ता । चाचाजी की ही कृपा से आज मैं एक प्रतिष्ठित प्राध्यापिका हूं । समाज में मेरा एक स्थान है, पैसा है, इज्जत है, मकान है, सभी कुछ है, पर उसके साथ-साथ अकेलापन भी है । तेइस बरस का अकेलापन ! जो मुझे खाने को आता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

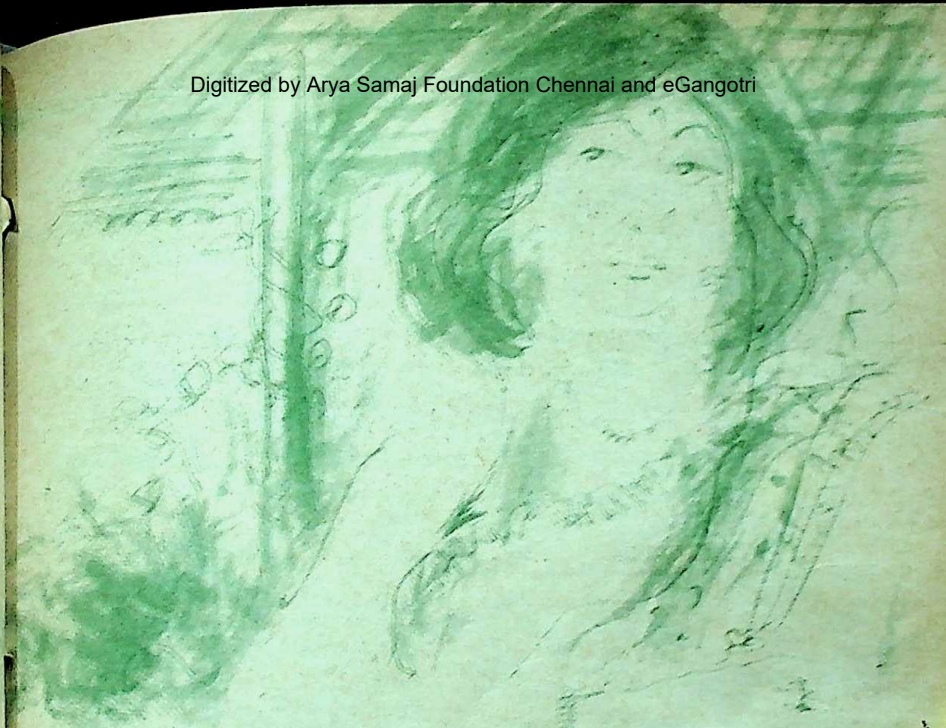

है। दिनभर कालेज, क्लास विद्यार्थियों, सहेलियों के बीच बिताने पर शाम वापस आने पर घर का ताला देखते ही हठात अकेलापन मुझे जकड़ लेता। मन करता कि कहीं भाग जाऊं। लेकिन जाऊं तो जाऊं कहां ? कौन है मेरा ? हाय ! किसको चाहिए ऐसा अनाथ-जीवन ! फिर भी मुझे जीना है, मरने की हिम्मत नहीं, मरने पर भी क्या मेरी आत्मा को शांति मिल सकेगी, मेरे माथे पर ही लांछन लगाएगा यह समाज। इसी समाज के कारण तो पिताजी को कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं। मन करता है कि आग लगा दूं इस समाज को।

"आंटी... आंटी।"

मालिनी की आवाज थी। सुनते ही विशालाक्षी हड़बड़ाकर उठी और दरवाजा खोला। मालिनी सर्वालंकृत हुए खड़ी थी। विशालाक्षी को देखते ही उसने पूछा, "क्यों आंटी, तबीयत ठीक नहीं है ?"

"ठीक तो हूं।" विशालाक्षी ने संभलते हुए कहा।

"पर दूधवाले नें कितनी बार पुकारा, आप उठी ही नहीं। लीजिए, वह हमारे घर देकर चला गया," मालिनी ने दूध का बरतन आगे बढ़ाया।

विशालाक्षी दूध लेती हुई मालिनी को एकटक देखती रह गयी। वह पड़ौसी की बेटी थी। हाल ही में विवाहित होकर पहली बार मायके आयी है पति के साथ। बालों में सारे फूल गूंथे, आभूषणों से सजी-धजी मालिनी का मुख खिल उठा था। मालिनी की मां पिछले पंद्रह दिनों से बेटी और दामाद के स्वागत के लिए तैयारियां कर रही थी और खुशी के कारण उसके पैर जमीन पर नहीं टिक रहे थे।

काश, मेरी भी एक गृहस्थी होती, अपनी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका मन प्रतिकार का फन उठाकर फुफकारने लगा, हंसने दो ! यह लोग यह समाज ! क्या दिया है इस समाज ने मुझे ! जब मेरी जिंदगी तबाह हो रही थी, तब समाज कहां था ?

एक बेटी होती, दामाद आता, मिठाइयां बनतीं, पटाखे छूटते । पर हाय ! अपने भाग्य में तो सिर्फ अकेलापन लिखा है । न कोई उत्साह, न उमंग, न दुख, न सुख, सिर्फ शून्य... शून्य... शून्य... ।

"आंटी, आपको क्या हो गया है ?" मालिनी ने फिर पूछा ।

"कुछ नहीं मालिनी, कल रात देर से सोयी थी न ? इसीलिए सिर में कुछ दर्द है, बस... अच्छा, तुम कब आयी ?" विशालाक्षी ने बात का रुख ही बदल दिया ।

"कल रात ही आयी हूं आंटी, दीवाली है न ? वे भी आये हैं !" यह कहते हुए उसके गाल लाल हो गये और वह भाग गयी ।

कुछ देर में विशालाक्षी वास्तविक जगत में लौट आयी । कालेज के लिए देर हो रही थी । जल्दी-जल्दी हाथ-मुंह धोए । आज कालेज से जल्दी वापस आकर आश्रम जाना है, जहां वे आते हैं । उनकी याद आते ही फिर से रात के सपने आंखों के सामने मंडराने लगे । जब से उनसे परिचय हुआ है, तब से अपने जीवन में एक तरह का उत्साह उभर आया है । जैसा उनका भव्य व्यक्तित्व वैसा ही उनका चाल-चलन । गंभीर वाणी भी कितनी मधुर ! उनको देखते ही मन की जड़ता गायब हो जाती है । उनकी बातों को मैं मंत्र-मुग्ध होकर सुनती रह जाती हूं । उस दिन उन्होंने क्या कहा था, 'जिस दिन आपसे मुलाकात नहीं होती, मुझे चैन नहीं मिलता ।' और एक दिन उन्होंने कहा था, 'जब तक आप साथ रहती हैं, तब तक मन उत्साह, उमंग से भरा रहता है । आपके जाते ही एक तरह का खालीपन, अकेलापन, सूनापन भर जाता है मन में ।'

'हां... मैं भी इसी तरह का अनुभव करती हूं ।' मैं भी यही बात कहना चाहती थी, पर कह नहीं सकी । बात होंठों तक आकर रह गयी ।

उस दिन मैं अपने जन्म-दिन के कारण रेशमी साड़ी पहनकर आश्रम गयी थी । उन्होंने मुझे निर्निमेष देखते हुए कहा था, 'इस सफेद साड़ी में तो आप साक्षात लक्ष्मी लगती हैं ।'

"मैं तो शरमा गयी, पर मन ही मन अच्छा भी लगा । ... हां, मैंने भी तो उस दिन अपने को बड़ी लगन से सजाया था... पर क्यों ? किसके लिए !

विशालाक्षी अपने अंतरमन को टटोलकर देखने लगी... क्या यह सच है । ... सच ?... अपनी उमर तो सैंतालीस की हो रही है । इस उमर में यह ख्याल !

आज जल्दी आने के लिए उन्होंने कहा है, पर क्यों ? मुझे यह भी नहीं मालूम कि वे कौन हैं ? कहां के रहनेवाले हैं, कुछ भी नहीं जानती । वह रोज आश्रम आते हैं । जिस दिन भी नहीं आते तो अपना मन छटपटाने लगता है । क्षण भर के लिए वह सिहर उठी । क्या कहेंगे लोग ! नहीं... नहीं... यह सब मेरे मन में ही होता है । उन्होंने मुझे कभी कहा होगा... फिर भी मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना ही होगा । वह मेरा इंतजार करेंगे । मुझे भी एक तरह की शांति मिलती है । उस शांति से मैं वंचित नहीं रहूंगी ।

★ ★ ★ ★

शाम हुई । विशालाक्षी जल्दी-जल्दी घर आयी । न जाने क्यों उसका मन बहुत प्रसन्न था । रेडियो ऑन किया तो किसी पुरानी फिल्म का एक प्रेम-गीत बज रहा था । जल्दी से कॉफी बनाकर पी । हाथ-मुंह धोकर शृंगार करने लगी । बढ़िया-सी रेशमी साड़ी पहनी, साड़ी के मैच का ब्लाउज । बालों में चमेली की एक माला गूंथ ली । हाथ में सोने के दो-दो कंगन, आंखों में काजल, ओठों पर हलकी-सी लिपस्टिक भी लगा ली । अपने को बार-बार आइने में देखा । छह बजते ही एक रिक्शा पकड़कर आश्रम की राह ली ।

आश्रम पहुंची तो, वह अभी तक नहीं आये थे। निराशा होने लगी । अपने आप को कोसने लगी कि बंदर की तरह अपना मन न जाने कहां-कहां भटकने लगा है । वह रूआंसी हो आ गयी थी, कि तभी वह आ गये ।

आते ही वह कहने लगे, "सॉरी, मुझे देर हो गयी । रास्ते में एक पुराना मित्र मिल गया था... आप कब आयीं ?"

"अभी... अभी आयी,"विशालाक्षी धीरे-से बोली ।

वह साथ ही खड़े थे । कुछ देर तक दोनों मौन रहे । निस्तब्धता भंग करते हुए उन्होंने कहा, "आइए, कुछ देर यहां बैठें ।" वह एक पत्थर के बेंच पर बैठ गये । विशालाक्षी भी बैठ गयी ।

फिर मौन वातावरण । विशालाक्षी का दिल

धड़कने लगा । मौन को भंग करते हुए वह बोले, "आज तक आपने यह नहीं पूछा कि मैं कौन हूं ? क्या करता हूं । कहां से आता हूं ? क्यों आता हूं !... पर आज मैं स्वयं इन सब बातों को बताना चाहता हूं । मैं एक इंजीनियर हूं । दो बरस में मैं रिटायर होनेवाला हूं । मेरे दो बेटे हैं । दोनों अमरीका में हैं । विवाहित हैं । मेरी पत्नी बहुत पहले ही चल बसी । बच्चों के खातिर मैंने दुबारा शादी नहीं की । आठ बरस से मैं अकेलापन सह रहा हूं, यह आश्रम ही एक मेरा दोस्त है और आपका साहचर्य मुझे शांति देता है । मेरे पास सब कुछ है मगर मेरा 'अपना' कोई नहीं है । मैं जानता हूं कि आप अकेली हैं, कालेज की प्राध्यापिका हैं । आप चाहें तो... आप चाहें तो... हम दोनों एक-दूसरे का सहारा बन सकते हैं । अपने शेष जीवन को एक अर्थ दे सकते हैं ।"

विशालाक्षी को जिसका अनुमान था, वह सच निकला । कई भावनाओं का एक साथ अनुभव करने लगी वह । हाथ-पांव कांपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे । आंखों से आंसू उमड़ने लगे कि न जाने उन्होंने मेरे बारे में क्या सोचा है ! शायद, वे नहीं जानते कि मैं एक शादी-शुदा औरत हूं, प्राध्यापिका हूं । क्या यह सब जानने पर भी वे मेरा साहचर्य चाहेंगे ? हे भगवान ! यह कैसी परीक्षा है ! क्या कहेगा समाज ? क्या उत्तर दूं..., । एक क्षण फिर से मौन छा गया ।

वे बोले, "देखिए ! इसमें कोई मजबूरी नहीं है । मैं जानता हूं जीवन में आपने कुछ नहीं पाया । केवल दुख ही आपके हिस्से में आया है । विशालाक्षी, आप नहीं जानती कि मैं कौन हूं । पर मैं जानता हूं कि आप कौन हैं । आपका भाई जयराम मेरा प्रिय मित्र है, एक-दो बार मैं आपके घर भी आया था । पर आप उस समय घर पर नहीं थीं ।आपके विवाह के समय मैं बंबई में था । इसीलिए आ नहीं सका । उसके बाद आपके जीवन में जो घटनाएं घटीं, पत्र के द्वारा जयराम मुझे सूचित करता रहा ।

विशालाक्षी के मन का बोझ एकाएक उतर गया । आश्रम में आने-जाने वालों की भीड़ बढ़ने लगी । प्रवचन भी शुरू हो गया था । दोनों उठ खड़े हुए ।

"अच्छा अब मैं चलता हूं । आप सोच-समझकर उत्तर दीजिए । कल इसी समय, इसी स्थान पर आपका इंतजार करूंगा," कहते हुए वह चले गये ।

★ ★ ★ ★

रातभर वह सोचती रही । उसे लगा कि अपनी जोड़ी को देखकर लोग अंगुली उठाकर, ठहाका मारते हुए हंसने लगे हैं । रात की सरदी में भी वह पसीने से तर हो गयी । पर उसी क्षण उसका मन प्रतिकार का फन उठाकर फुफुकारने लगा, 'हंसने दो । यह लोग, यह समाज । क्या दिया है इस समाज ने मुझे ! क्या मदद की है ? क्या तसल्ली दी है ? जब मेरी जिंदगी तबाह हो रही थी, तब समाज कहां था ? उसका उसका क्या अधिकार है मुझ पर । आज तक मैं घुट-घुटकर जी रही हूं । मैं न घर की रही, न घाट की । रोते-रोते आंखों का पानी सूख गया है । आज समाज के आगे मैं सिर न झुकाऊंगी । मैं कोई पाप करने नहीं जा रही हूं मैं भी जीना चाहती हूं । मुझे भी जीने का हक है, अपनी जिंदगी जीने का । सोचते-सोचते न जाने कब सो गयी विशालाक्षी ।

★ ★ ★ ★

दूसरे दिन विशालाक्षी आश्रम जाने की तैयारी करने लगी । मन चिंता से मुक्त था । उसने अपने विवाहवाली साड़ी पहनी । अपने सारे गहने पहने । बालों में चमेली की माला गूंथी । पूरी तरह सज-धजकर— उसे ऐसा लगा कि अब वह पचीस बरस की हो गयी है । भगवान को भेंट चढ़ाने के लिये उसने फल-फूल लिए और आश्रम जा पहुंची ।

वह इंतजार कर रहे थे । विशालाक्षी को देखते ही उनका मुख खिल उठा । वह भी सज-धजकर आये थे । विशालाक्षी सीधे जाकर उसके सामने खड़ी हो गयी । लज्जा और कृतज्ञता के मारे वह कुछ बोल नहीं पायी ।

"चलिए, पहले गुरुजी का आशीर्वाद लें । भगवान को फल-फूल चढ़ाएं ।" विशालाक्षी ने धीरे से नजर उठाकर उनको देखा, उसे उनकी आंखों में एक नया संसार दिखायी दिया ।

— १००९, कल्याण-

इ. एंड एफ. ब्लॉक, उदयरवि. रोड
कुबेमपुनगर, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोखाधड़ी जमीन के साथ

मनोज कुमार, पूर्णिया : मेरे पिताजी सरकारी नौकर हैं । बारह साल पहले पिताजी ने शहर में एक जमीन खरीदी थी, जिसकी रजिस्ट्री माताजी व मेरे नाम हुई थी । यह रजिस्ट्री मेरे पास है । क्योंकि हम दूसरे शहर में रहते थे इसलिए जमीन की देखभाल पिताजी ने अपने एक दोस्त को सौंप रखी थी । कुछ महीने पहले पता चला कि पिताजी के उस दोस्त ने वह जमीन चार आदमियों को बेच दी । इन लोगों ने वहां बना पुराना घर तोड़कर नया घर बनवा लिया है । अब हम क्या करें ?

जमीन के स्वामी आप और आपकी माताजी हैं । उसे कोई अन्य व्यक्ति नहीं बेच सकता । जमीन की बिक्री वैध नहीं मानी जा सकती । इसलिए जमीन पर किसी अन्य व्यक्ति को मकान बनाने का अधिकार भी कानून नहीं मानता ।

आप अपनी जमीन वापस लेने के लिए कार्यवाही कर सकते हैं । इसके साथ-साथ आपका पुराना मकान तोड़ने से हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति के लिए भी कार्यवाही कर सकते हैं । दावा करने के बाद वस्तुस्थिति सामने आ जाएगी । वर्तमान कब्जेदार अपना अधिकार प्रमाणित करने के लिए वह सब प्रमाण प्रस्तुत करने को बाध्य होंगे, जिसके आधार पर वह अपने को उस जमीन का स्वामी मानते हैं ।

आप अपने पिता के मित्र, जिनको जमीन की रखवाली का दायित्व दिया गया था, के विरुद्ध भी कार्यवाही कर सकते हैं । भारतीय दंड संहिता की धारा ४०६, ४२० व अन्य धाराओं के अंतर्गत उन पर धोखाधड़ी करके आपको तथा आपकी संपत्ति को हानि पहुंचाने के आधार पर अभियोग चलाया जा सकता है ।

अमानत में ख्यानत

हरिश्चंद्र शर्मा, खैर : मैंने चार हजार रुपये के चार इंदिरा विकास-पत्र खरीदे थे, जिन्हें मैं अपनी भतीजी के पास बतौर अमानत रख आया था । जब मैं उन्हें लेने गया तो वह अमानत में ख्यानत कर गयी, बोली कि 'मुझे तो कोई विकास-पत्र नहीं दिये गये ।' मैंने पुलिस में रिपोर्ट की लेकिन पुलिस ने उसे बुलाकर छोड़ दिया, कोई कार्यवाही नहीं की । क्या मैं सिविल सूट नालिश करके भतीजी से रुपये वसूल कर सकता हूं ?

इंदिरा विकास-पत्र पर किसी का नाम नहीं होता, इसलिए उसे कोई भी व्यक्ति भुना सकता है । दूसरे, अब यदि किसी भी तरह यह प्रमाणित कर सकें कि आपने विकास-पत्र अपनी भतीजी के पास अमानत के रूप में रखे थे और वह अब उन्हें नहीं लौटा रही, तब आप निश्चय ही क्षतिपूर्ति का दावा अपनी भतीजी पर कर सकते हैं और न्यायालय आपकी रकम ब्याज सहित दिला सकता है । लेकिन इसे प्रमाणित करना संभव नहीं है, इसीलिए थाने में लिखायी आपकी रिपोर्ट पर कोई कार्यवाही नहीं हो सकी क्योंकि, आप थाने में नियमानुसार दावा प्रमाणित नहीं कर सके ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ

—रामप्रकाश गुप्त

इल्जाम चोरी का

राजीव वर्मा, विलासपुर : कुछ लोगों ने झूठे ही मुझे और मेरे दो दोस्तों को एक बैटरी चोरी के इल्जाम में फंसा दिया है । दो साल हो गये मुकदमे की पेशियां भुगतते हुए । पता नहीं मुकदमा कब और किस स्थिति में खतम होगा । इसके कारण मैं कोई नौकरी भी नहीं कर पा रहा । बताइए मैं क्या करूं ?

चोरी का इल्जाम झूठा है या सच्चा, इसका निर्णय तो न्यायालय द्वारा ही होगा । हां, मुकदमे का जल्दी निर्णय करवाने के लिए आप न्यायालय में आवेदन दे सकते हैं । आपके आवेदन पर न्यायालय ही आवश्यक निर्देश दे सकता है, मुकदमे के चलते हुए काम-धंधा करने या नौकरी करने पर कोई रोक नहीं है । आप काम-धंधा या नौकरी कर सकते हैं ।

सरकारी अधिकारी

राकेश कुमार, नयी दिल्ली : सरकार के खिलाफ दावा डालते समय कोई भी व्यक्ति सरकारी अधिकारी के खिलाफ आरोप लगाने से नहीं चूकता । क्योंकि वह सरकारी अधिकारी उस मुकदमे में पार्टी नहीं होता, इसलिए किसी भी आरोप का जवाब नहीं दे सकता । क्या कानून उस अधिकारी के, जिसके खिलाफ व्यक्तिगत आरोप लगाये गये हों, अपना पक्ष प्रस्तुत करने की इजाजत देता है ।

यदि किसी सरकारी अधिकारी के विरुद्ध व्यक्तिगत आरोप लगाये गये हों, तो उक्त अधिकारी को अपना पक्ष न्यायालय में प्रस्तुत करने का अधिकार है । उसके इस अधिकार को यह कहकर अस्वीकार नहीं किया जा सकता, उक्त वाद सरकार के विरुद्ध है । कुछ समय पूर्व दिल्ली उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ (माननीय न्यायमूर्ति श्री डी.पी. वधवा व माननीय न्यायमूर्ति श्री वीजेंद्र जैन) ने समादेश याचिका संख्या ४०३१ सन १९९२ का निर्णय करते हुए, ऐसे अधिकारी के, जिसके विरुद्ध व्यक्तिगत आरोप लगाये गये थे, आरोप की जानकारी मिलने पर शपथ-पत्र प्रस्तुत करने के अधिकार को स्वीकार किया था ।

तलाक चाहिए

विपिन कुमार, पटना : मैं ३५ वर्षीय पुरुष हूं । मेरी शादी हुए करीब पांच वर्ष हो गये । शादी के बाद मेरी पत्नी लगभग एक महीने मेरे साथ रही, उसके बाद अपने सारे कपड़े व जेवर लेकर मायके चली गयी । कुछ दिन बाद जब मैं ससुराल गया, तो मुझसे ठीक ढंग से व्यवहार नहीं किया गया । पांच-छह बार मैं ससुराल गया और हर बार वहां मेरी बेइज्जती की गयी । एक बार वह मेरे पूरे परिवार को दहेज विरोधी अधिनियम के तहत जेल भी भिजवा चुकी है । अब मैं उससे तलाक लेना चाहता हूं । इसके लिए क्या करूं ?

लगभग पांच वर्ष से आपकी पत्नी आपके साथ नहीं रह रही । आपके पत्र से स्पष्ट है कि आप उसे लाकर अपने पास रखने का प्रयास कई बार कर चुके हैं परंतु असफल रहे । आप हिंदु विवाह अधिनियम के अंतर्गत तलाक यानी संबंध-विच्छेद करने हेतु याचिका प्रस्तुत कर सकते हैं । इसमें सभी तथ्यों का उल्लेख कर दें । आपके साथ कब से नहीं रह रहीं, कब-कब आपने उसको अपने पास लाने का प्रयास किया आदि । आप दहेज विरोधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यवाही के समय आप पर लगे आरोपों से भी अपनी याचिका बनाते समय लाभ उठा सकते हैं।

मंदिर का पुनर्निर्माण

राजेंद्र शर्मा, लुधियाना : मेरे नानाजी ने आज से पचास वर्ष पूर्व एक मंदिर का निर्माण करवाया था। नानाजी ने अपने बाद मेरे पिताजी को मंदिर का 'मोहतमम' नियुक्त किया। पिताजी के देहांत के बाद अब मैं मोहतमम हूं। मंदिर से आय लगभग शून्य है। पिताजी ने अपनी जमीन का कुछ हिस्सा मंदिर के नाम कर दिया था। इसी प्रकार कुछ और जमीन भी किसी ने मंदिर को दान कर दी थी। अब मंदिर की मरम्मत के लिए धन की आवश्यकता है। क्योंकि, मंदिर गांव में है अतः दान से धन इकट्ठा होने की संभावना भी नहीं है।

क्या मैं उस जमीन को बेच सकता हूं, या जिन्होंने दान दी है, उन्हें वापस कर सकता हूं ? यदि मैं जमीन नहीं बेच सकता तो क्या मैं मंदिर के नाम धर्मार्थ ट्रस्ट बनाकर उस जमीन को ट्रस्ट को दे सकता हूं, ताकि ट्रस्ट उस जमीन को बेचकर उससे मिलनेवाली राशि से मंदिर पुनर्निर्माण करा सके ?

आपके नानाजी ने मंदिर बनवाकर उसका ट्रस्टी आपके पिताजी को बना दिया। आपके पिताजी ने कुछ जमीन मंदिर को दे दी और उसके बाद किसी अन्य व्यक्ति ने मंदिर को जमीन दान में दी। इसका आशय तो यही है कि वह सारी संपत्ति मंदिर की है और आप उसके ट्रस्टी हैं।

ट्रस्ट का कोई लिखित विधान नहीं है। ऐसी स्थिति में आप स्वयं एकमात्र ट्रस्टी के रूप में ट्रस्ट को नियमित स्वरूप प्रदान कर सकते हैं।

ट्रस्ट में एक बार दी गयी जमीन को दानदाता को वापस नहीं किया जाता।

किसी भी प्रकार की परेशानी से बचने का एक रास्ता हो सकता है कि यदि आप समझते हैं कि मंदिर के रख-रखाव के लिए जमीन का बेचा जाना आवश्यक है, तो आप जिला न्यायालय में आवेदन देकर स्थिति स्पष्ट करते हुए ट्रस्ट का कार्य संचालन हेतु आवश्यक निर्देश देने की प्रार्थना कर सकते हैं। इसमें आप जमीन बेचने की आवश्यकता और कारणों का उल्लेख भी कर सकते हैं। न्यायालय के आदेश के बाद जमीन बेचने का कार्य संचालन करने पर आप अपने विरुद्ध किसी भी प्रकार के आरोप से बच सकते हैं।

पिताजी की दुकान

रमेश भारती, चौबट्टाखाल : बचपन में ही मेरे पिताजी चल बसे थे। उनकी मृत्यु के पश्चात माताजी ने वह दुकान मेरे मामाजी को सौंप दी। दुकान में जो भी सामान था, वह भी उन्हीं के सुपुर्द किया गया। मैंने अपनी पढ़ाई दूसरे मामाजी के पास पूरी की। २४ वर्ष की उम्र में मैं जब घर आया तो मामाजी ने मुझे दुकान तो दे दी, लेकिन खाली दुकान। संपत्ति का मुझे कोई हिस्सा नहीं दिया। पिताजी की मृत्यु के समय कोई लिखित इकरारनामा नहीं हुआ था। कृपया, मुझे बताएं कि क्या मुझे मामाजी से हिस्सा मिल सकता है ? और अगर मिल सकता है तो किस प्रकार ?

दुकान आपके मामाजी को किन शर्तों के आधार पर दी गयी थी, इसकी जानकारी आपके पत्र से नहीं मिलती। साधारणतयः आपके मामाजी को दुकान का पूरा हिसाब रखना चाहिए था तथा स्वयं वह मेहनताना या निर्धारित हिस्सा, जो उन्हें दिया जाना था, ले सकते थे। अब आपके पास केवल एक विकल्प है कि आप अपने मामा पर हिसाब देने का दावा करें तथा आग्रह करें कि दुकान का हिसाब आपको समझाया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवंत हैं बारह धर्म दुनियाभर में

● डॉ. शोभा निगम

पृथ्वी पर धर्म का प्रारंभ कब हुआ, यह कहना बहुत कठिन है। इसी तरह यह कहना भी बहुत कठिन है कि अब तक कितने धर्म हो चुके हैं, क्योंकि अनेक प्राचीन देशों जैसे मिस्र, बेबीलोन, असीरिया, यूनान, रोम आदि के प्राचीन धर्म आज पूर्णतः समाप्त हो चुके हैं।

आज विश्व में कुल बारह धर्म जीवंत हैं। ये सभी एशिया में ही उद्भूत हुए हैं। इनके नाम हैं— हिंदू, यहूदी, शिंतो, जरथुस्त्री (पारसी), ताओ, जैन, बौद्ध, कानफ्यूशी, ईसाई, इसलाम, सिक्ख, बहाई। इनमें से हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख भारत में उपजे धर्म हैं। पारसी धर्म आज केवल भारत में ही जीवित है। भारत में प्रायः सभी धर्मों के अनुयायी निवास करते हैं।

प्रस्तुत है इन सभी धर्मों की उत्पत्ति, मुख्य विचार, प्रमुख ग्रंथ तथा महापुरुषों का संक्षिप्त विवरण—

हिंदू धर्म

हिंदू धर्म विश्व में प्राचीनतम् धर्मों में से एक है। हिंदू इसे सनातन काल से पृथ्वी पर स्थित बतलाते हैं, इसलिए इसे सनातन धर्म भी कहते हैं और इसके मूल धार्मिक-ग्रंथ वेदों के होने के कारण इसे वैदिक धर्म भी कहते हैं। 'हिंदू' शब्द विदेशियों द्वारा दिया गया शब्द है। मध्य-पूर्व एशिया के निवासियों ने हमारे पूर्वजों को सिंधु नदी के इस पार रहने के कारण हिंदू (सिंधु का अपभ्रंश रूप) कहना प्रारंभ किया था, और सिंधु का उच्चारण हिंदू करने के कारण हिंदू कहा तो सनातन धर्म का नाम हिंदू धर्म पड़ गया। प्राचीनकाल में यह धर्म भारत के अतिरिक्त इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा, कंबोडिया आदि सुदूर पूर्व देशों में भी फैला हुआ था। आज हालांकि, सर्वाधिक हिंदू भारत में ही रहते हैं, किंतु विश्वभर में एकमात्र घोषित हिंदू-राष्ट्र नेपाल है।

हिंदू धर्म किसी एक व्यक्ति द्वारा प्रतिपादित धर्म नहीं है, न ही कोई इसका एकमात्र एक पवित्र ग्रंथ है। इसका मत एवं सिद्धांत विभिन्न धार्मिक ग्रंथों जैसे, वेद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, पुराण, स्मृति आदि में बिखरे हुए हैं। चारों वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद) में से ऋग्वेद संसार का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ है। वेदों को अपौरुषेय माना जाता है। हिंदू धर्म को रामायण और महाभारत ने अत्यंत प्रभावित किया है। महाभारत में ही मनुष्य को परमश्रेय का मार्ग दिखानेवाली जगत-प्रसिद्ध रचना भगवद्गीता है, जिसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों तो दुनिया में समय-समय पर अनेक धर्म पैदा हुए हैं और वे मर भी गये हैं लेकिन आज बारह धर्म ऐसे हैं जो जीवित हैं

उपदेश भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत के युद्ध-क्षेत्र में अर्जुन को दिया था ।

हिंदू-धर्म में मनुष्य के सामाजिक जीवन को व्यवस्थित करने हेतु भी बराबर चिंतन होता रहा है यह चिंतन ही अनेक स्मृतियों में लिपिबद्ध हुआ है । स्मृतियों की संख्या ५६ बतायी जाती है जिनमें मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति आदि सर्व प्रमुख हैं । दार्शनिक तत्व-चिंतन उपनिषदों में लिपिबद्ध हुआ है । कथाओं के माध्यम से जनसाधारण को शिक्षित करने के लिए समय-समय पर पुराणों की रचना भी होती रही है ।

हिंदू धर्म की एक विशेषता यह है कि इसमें एक ओर जहां निराकार, निर्गुण सत्ता को परमतत्त्व माना गया है, वहीं दूसरी ओर उसके सगुण, साकार रूप को भी सत्य माना गया है । इसीलिए हिंदू जहां निराकार को आत्मज्ञान के माध्यम से जानने का प्रयत्न करते हैं, वहीं उसकी मूर्ति बनाकर भक्ति मार्ग द्वारा उसे पाने का प्रयास करते हैं । हिंदू धर्म में भक्तों की एक लंबी श्रृंखला है । उन्होंने अपनी भक्ति परक रचनाओं से भारतीय साहित्य को भी समृद्ध किया है । हिंदू उस प्रत्येक चीज को देवत्व का दरजा देकर पूजता है, जो उसे तथा संपूर्ण मानवजाति को समुन्नत करती हो । इसीलिए हिंदुओं के देवताओं की संख्या ३६ करोड़ तक है । वैसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश और दुर्गा ये पंचदेव प्रमुख हैं ।

हिंदू धर्म में धर्म के जो दस लक्षण बताये गये हैं, उनका उद्देश्य मनुष्य को नैतिक दृष्टि से ऊंचा उठाना है । ये दस लक्षण हैं—

धृतिः क्षमा, दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।

— मनुस्मृति

अर्थात,धैर्य, क्षमा, मन को वश में रखना, चोरी न करना, पवित्रता, इंद्रिय-संयम, ब्रह्मज्ञान, ज्ञान, सत्य, क्रोध का त्याग ।

यहूदी धर्म

संसार के प्राचीन धर्मों में यहूदी धर्म भी अत्यंत प्राचीन है । बाइबिल का पहला भाग, जिसे 'ओल्ड टेस्टामेंट' कहा जाता है, इसका प्रमुख धार्मिक ग्रंथ है । इसमें यहूदी धर्म की मुख्य शिक्षाएं तो हैं ही, साथ ही इसमें यहूदियों का इतिहास भी है, जिसका प्रामाणिक विवरण करीब १४०० ईसा-पूर्व से प्रारंभ होता है ।

'ओल्ड टेस्टामेंट' के अनुसार ईश्वर ने छह दिन में एक-एक करके सृष्टि की रचना की फिर आदम का विशेष रूप से सृजन किया । उसने आदम को सृष्टि की प्रत्येक चीज पर अधिकार दिया । आदम ने शैतान के बहकावे में आकर ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए निषिद्ध फल को खा लिया । जिसके दंडस्वरूप उसे स्वर्गीय बाग से हव्वा के साथ निष्कासित कर दिया । आदम और हव्वा को पृथ्वी पर श्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हुए जीवन बिताना पड़ा। पृथ्वी पर आदम और हव्वा की अनेक संतानें हुईं और मानव जाति का विकास हुआ। किंतु सभी लगातार पाप कर्म करती गयीं। तब ईश्वर ने कुपित होकर संपूर्ण मानवजाति को जल-प्रलय के द्वारा नष्ट करने का विचार किया। पर आदम का एक वंशज नूह धार्मिक था, अतः ईश्वर ने पूर्व चेतावनी व उपाय बताकर उसे और उसके परिवार, सभी जीव-जंतुओं को बचा लिया। आज के यहूदी इसी नूह की संतानें हैं।

नूह के ही वंशजों में एक था अब्राहम। वह ईश्वर-भक्त था। इसी से यहूदी धर्म की नींव पड़ी। अब्राहम के ही वंश में एक महात्मा मूसा हुए। इन्होंने मिस्र देश में चार सौ वर्ष से गुलामी का जीवन बितानेवाली यहूदी जाति को गुलामी से छुटकारा दिलाकर ईश्वर द्वारा प्रतिज्ञात देश इजराइल पहुंचाया। ओल्ड टेस्टामेंट के अनुसार यहूदी जाति को सही राह दिखाने के लिए ईश्वर ने समय-समय पर अनेक योग्य राजा और नबी भेजे। इनमें राजा दाउद का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्हीं के वंश में आगे चलकर सारी मानव जाति को त्राण देनेवाले मसीहा के आगमन की भविष्यवाणी पुराने नियम में की। यहूदी आज भी उस मसीहा के आगमन की राह देख रहे हैं।

'ओल्ड टेस्टामेंट' के अतिरिक्त 'तालमुद' नामक ग्रंथ भी यहूदियों का पवित्र ग्रंथ है। इसमें यहूदियों के सम्मुख उपस्थित होनेवाली समस्याओं तथा उनका समाधान दिया हुआ है।

यूं तो यहूदी धर्म-ग्रंथों में यहूदियों को अनेक आदेश दिये गये हैं, किंतु मूसा को 'सिनाय पर्वत' पर ईश्वर द्वारा प्रदत्त दस आदेश (टेन कमांडेंट) विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। यहूदी मंदिरों में ये दस आदेश लिखित रूप में ईश्वर के प्रतीक के रूप में रखे रहते हैं। ये दस आदेश हैं—

१. मैं तुम्हारा ईश्वर 'जहोबा' हूं। मैंने ही तुझे दासता के घर मिस्र से निकाला है।
२. तू मेरे सिवा किसी को ईश्वर नहीं मानना। न तो तू मेरी कोई मूर्ति बनाना, न उसकी पूजा करना।
३. तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ (झूठी शपथ आदि के लिए) न लेना।
४. तू छह दिन काम करना, पर सातवें दिन (शनिवार) विश्राम करना।
५. तू अपने माता-पिता का सम्मान करना।
६. तू हत्या न करना।
७. तू चोरी न करना।
८. तू किसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।
९. तू व्यभिचार न करना।
१०. तू किसी की संपत्ति का लोभ न करना।

शिंतो धर्म

शिंतो धर्म जापान का एक अत्यंत प्राचीन धर्म है। हालांकि,आज जापान में इसकी तुलना में बौद्ध तथा कांफ्यूश धर्म के अनुयायी कहीं अधिक हैं, किंतु फिर भी शिंतो जापान का राष्ट्रीय धर्म है। शिंतो शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, 'शेन' (देवता) और 'ताओ' (मार्ग)। यानी यह धर्म देवताओं का मार्ग है। इस धर्म में आठ लाख देवता हैं। शिंतो धर्म के देवता हमारे वैदिक देवताओं के समान प्रकृति के देवता हैं, जैसे— सूर्य, चंद्र, अग्नि, वायु, धरती, वृक्ष, पहाड़, नदी आदि। सूर्य सबसे बड़े देवता हैं, पर वे इसे देवता नहीं देवी मानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक धर्मों से अलग हिंदू धर्म किसी एक व्यक्ति द्वारा प्रतिपादित धर्म नहीं है, न ही कोई इसका एकमात्र एक पवित्र ग्रंथ है ।

हैं । इसे न केवल प्रकाश देनेवाली वरन स्वास्थ्य देनेवाली देवी तथा शत्रुओं से संरक्षण भी प्रदान करनेवाली देवी है । जापान का प्रथम राजा इसी के अंश से उत्पन्न हुआ था । चंद्रमा इसका भाई है । जापान का फुजी पर्वत भी महान देवता है, जो जापान का रक्षक है । जापान में विभिन्न देवताओं के अनेक मंदिर हैं, किंतु उनमें देव-प्रतिमा नहीं है । देवताओं को अत्यंत महत्त्व देने के कारण जापान देवताओं का देश कहलाता है । देव-भक्ति के अतिरिक्त राज-भक्ति और देश-भक्ति भी इस धर्म के प्रधान अंग है, जिसका जापानियों पर बहुत गहरा प्रभाव है ।

शिंतो धर्म के महत्त्वपूर्ण पवित्र ग्रंथ दो हैं— 'कोजिकी' और 'निहोंगी' । इनमें पौराणिक कथाएं हैं । वैसे तो ईसा-पूर्व ६६० में इस धर्म की नींव पड़ चुकी थी, किंतु इन ग्रंथों का संग्रह लिखित रूप में आठवीं सदी में हो पाया ।

शिंतो धर्म में देव-पूजा हालांकि, महत्त्वपूर्ण है किंतु यहां चेतावनी भी दी हुई है कि देवता उन्हीं की पूजा ग्रहण करते हैं जो निष्कपट एवं सद्गुणी होते हैं । यहां स्वर्ग और नरक को मनुष्य के मन में स्थित बताया गया है ।

जरथुस्त्री धर्म

जरथुस्त्र नामक महात्मा के द्वारा पारस (फारस, ईरान) में सातवीं शताब्दी ईसा-पूर्व में यह धर्म चलाया गया था । इसे जरथुस्त्री अथवा पारसी धर्म कहते हैं । वैसे, इसे पारसी धर्म कहना गलत है क्योंकि, इसके पूर्व तथा इसके पश्चात भी फारस में अनेक धर्म हुए हैं । जरथुस्त्र के पूर्व पारस में भारतीय वैदिक धर्म से मिलता-जुलता धर्म था, जिसमें वेदों के देवता सूर्य, अग्नि, चंद्र, वरुण आदि के समान अनेक प्रकृति शक्तियों के देवता थे । कहा जाता है कि ईसा के सदियों पूर्व पश्चिम एशिया से कुछ आर्य फारस होते हुए भारत आये थे । इनमें से कुछ फारस में ही बस गये थे । मूलतः एक होने के कारण इनकी धार्मिक भावनाएं भी एक ही थीं । इसीलिए ऋग्वेद में भारतीय आर्यों ने जिन देवी-देवताओं की स्तुति की है, वे पारसियों के धार्मिक ग्रंथ 'अवेस्ता' में भी हैं । किंतु जरथुस्त्र ने देवताओं के इस प्राचीन अनेकेश्वरवाद के स्थान पर एकेश्वरवाद की प्रतिष्ठा की । उसका यही एक ईश्वर 'अहुरमज्द (बुद्धिमान स्वामी) है । अहुरमज्द सारी सृष्टि का कर्ता, सर्वज्ञ एवं सर्वदर्शी है, लेकिन वह अद्वैत व सर्वशक्तिमान नहीं है । उसके समान शक्तिशाली एक और शक्ति है— आंग्रेमैंयु । वस्तुतः यह शैतानी शक्ति है, जो संसार में पाप और बुराई का कारण है ।

जरथुस्त्र धर्म में अग्नि को ईश्वर का प्रतीक माना गया है, जो इनके मंदिरों में निरंतर जलती रहती है । इस धर्म में मनुष्य और ईश्वर के बीच स्पेंतामन्यु (पवित्र आत्मा) को एक कड़ी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में माना गया है । यह ईश्वर की सहयोगी है । इसके अतिरिक्त ईश्वर के छह प्रमुख देवदूत भी हैं— उत्तम मन, पुण्यकर्म, दैवी राज्य, शक्ति, पूर्णता, अमरता ।

'जैंदवेस्ता' इस धर्म का प्रमुख ग्रंथ है, जिसे जरथुस्त्र ने लिखवाया था । जरथुस्त्र को अपने जीवन में अनेक अत्याचारों का सामना करना पड़ा था । ईसा के समान उनकी ७७ वर्ष की उम्र में मौत भी विरोधियों के जुल्मों से हुई । सातवीं शताब्दी में फारस पर इसलाम धर्म के छा जाने से पारसियों को भारत में शरण लेनी पड़ी, तब से वे यहां हैं ।

ताओ धर्म

ताओ धर्म चीनी महात्मा लाओत्से ने छठवीं शताब्दी ई. पू. में प्रवर्तित किया । हालांकि, इसके तुरंत बाद चीन में कांफ्यूश धर्म फैला तथा बाद की सदियों में बौद्ध और इसलाम धर्मों ने चीनी धरती पर जड़ जमा ली । किंतु चीन में आज भी ताओ धर्म जीवित है ।

इस धर्म में उपनिषदों के ब्रह्म के समान मूल निराकार तत्त्व की मान्यता है । निराकार तत्व स्वयंभू, अनादि, अनंत, सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ है । लेकिन यह ताओ केवल अनुभूति द्वारा ही गम्य है और अनुभूति भी ऐसी,जिसकी अभिव्यक्ति संभव नहीं है । यह अनुभूति भी केवल उन्हें ही प्राप्त हो सकती है, जो अहिंसावादी, आडंबरहीन, वैरागी, सत्यप्रिय, शांत एवं बच्चों के समान निष्कपट हों । स्वयं लाओत्से ऐसे ही थे । वस्तुतः लाओत्से शब्द का अर्थ ही है— वृद्ध बालक । इनकी उम्र १६० वर्ष बतायी जाती है । चीनी राजनीति के दांव-पेच से क्षुब्ध होकर इन्होंने अपने अंतिमकाल में अपने देश का त्याग कर दिया था । किंतु जाते समय एक द्वारपाल के अनुरोध पर उन्होंने मानवजाति के कल्याण के लिए अपने विचारों को लिपिबद्ध करके दिया था । कुल आधे घंटे में लिखी गयी इस पुस्तक का नाम है 'ताओ देर जिंग' (ताओ और उसके गुण) यह चीन की गीता है ।

जैन धर्म

जैन धर्म एक ऐसा धर्म है, जो भारत में उत्पन्न हुआ और केवल यहीं फला-फूला । छठवीं शताब्दी ईसा-पूर्व में मगध के एक राजकुमार वर्धमान (महावीर स्वामी) ने मानव मात्र को दुखों से मुक्ति दिलाने हेतु ज्ञान की खोज में बड़ी तपस्या करते हुए अंततः 'जिन' (जितेंद्रिय) की पदवी प्राप्त की । इसी से उनके अनुयायी जैन कहलाये । किंतु महावीर इस धर्म के प्रवर्तक नहीं थे । वे तो इसके चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर (पार लगानेवाले) थे ।इन तीर्थंकरों में महावीर ही सर्वाधिक प्रभावशाली तीर्थंकर हुए हैं । महावीर के पूर्व यह धर्म 'निग्रंथ धर्म' कहलाता था ।

जैन धर्म के अनुसार शरीर बंधन है और इस बंधन का कारण पूर्वजन्म के कर्मफल है, जो हम क्रोध, लोभ, मान, माया आदि कषाओं के कारण बनाते हैं । इस तरह व्यक्ति के कर्म ही उसके बंधन का कारण बनते हैं । इनसे व्यक्ति 'त्रिरत्न', यानी— १. सम्यक दर्शन अर्थात धर्म उपदेष्टाओं के प्रति सच्ची श्रद्धा, २. सम्यक ज्ञान अर्थात जीव एवं अन्य द्रव्यों का सत्य ज्ञान, ३. सम्यक चरित्र अर्थात सही आचरण । सम्यक चरित्र के पालन के लिए 'पंच महाव्रतों' का पालन आवश्यक है— ये पांच महाव्रत हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह । जैन धर्म का साहित्य बड़ा विशाल है । इनमें 'आचारांग', जो मुख्यतः महावीर स्वामी के उपदेशों का संकलन है, जैन आचार की आधारशिला है ।

बौद्ध धर्म

जैन धर्म के समकालीन ही गौतम बुद्ध के द्वारा बौद्ध धर्म की स्थापना की गयी ।

'बुद्ध' का अर्थ होता है, वह जिसने 'बोधि' की अर्थात सम्यक ज्ञान की प्राप्ति कर ली हो । गौतम ऐसे ही बुद्ध थे । किंतु अपने इस ज्ञान को उन्होंने अपने तक ही सीमित नहीं रखा था, वरन इसके प्रसार के लिए धर्म-चक्र-प्रवर्तन किया था ।

कपिलवस्तु के शाक्यवंशीय राजकुमार सिद्धार्थ ने जीवन के चिरंतन दुख, रोग, बुढ़ापा और मृत्यु से मानव को छुटकारा दिलाने के लिए गृहत्याग किया । वर्षों की गहन साधना के बाद निर्वाण (मोक्ष) दिलानेवाले चार आर्य सत्यों की प्राप्ति की । यह चार आर्य सत्य हैं— १. सब-कुछ दुखमय है, २. दुख का कारण है, ३. दुख का नाश संभव है, ४. दुख-नाश का मार्ग है । बुद्ध ने दुख का कारण तृष्णा को बताया और तृष्णा का मूल कारण अविद्या । इससे छुटकारा पाने के लिए बुद्ध ने अष्टांग पथ में ऐसे आठ सम्यक विचार एवं कर्म बताये, जो मोक्ष की प्राप्ति कराते हैं । बुद्ध के उपदेश बाद में उनके शिष्यों ने 'विनय पिटक', 'सुत्त पिटक' एवं 'अभिधम्मपिटक' में संग्रहित किये ।

बुद्ध ईश्वर के अस्तित्व के प्रश्न पर मौन रहे । इसलिए बुद्ध धर्म को निरिश्वरवादी माना जाता है, किंतु बाद में बौद्ध धर्म में बुद्ध ईश्वर के समान ही पूज्य हो गये । वैदिक हिंसा एवं कर्मकांड के विरोध में मानवमात्र के दुख से सरोकार रखनेवाला यह धर्म सारे भारत में तो फैला ही साथ में विदेशों में भी पहुंचा । आज चीन, कोरिया, जापान, श्रीलंका, तिब्बत, नेपाल आदि देशों में इस धर्म के करोड़ों अनुयायी हैं । हां, भारत में हिंदू धर्म ने बुद्ध को दसवां अवतार मान कर बौद्ध धर्म को अपने में मिला लिया ।

कांफ्यूश धर्म

जैन, बुद्ध धर्म के समान चीन में कांफ्यूश धर्म प्रचलन में आया । इसके प्रवर्तक थे महात्मा कंफ्यूशस । प्रारंभ में वह राजकीय सेवा में थे । वस्तुतः उनका लक्ष्य आदर्श राज्य की स्थापना करना था । किंतु तत्कालीन शासकों की मनमानी के कारण वे इसमें नहीं सफल हुए । तब उन्होंने अपना लक्ष्य लोगों को शिक्षित करना निर्धारित किया, लेकिन वह अपने लक्ष्य को मूर्त्त रूप में नहीं देख पाये । उन्हें अपने शिष्यों व अनुयायियों का भरपूर सम्मान एवं प्यार मिला ।

कांफ्यूश धर्म में ईश्वर को एक माना गया है, जो सबका पिता है किंतु इस संसार में मनुष्य जो कुछ भी पाता है, वह उसके अपने कर्मों का फल होता है, अतः मानव को स्वयं अपना विकास करना चाहिए । मध्य मार्ग श्रेष्ठ है । परलोक के बजाय हमें इसी लोक में सुख-शांति की खोज करनी चाहिए, जो बुद्धि के अनुसरण से मिलती है । चीन में यह धर्म विद्वानों का धर्म माना जाता है । कांफ्यूशस द्वारा रचित लघु ग्रंथ 'त-हिओ' इस धर्म का प्रमुख ग्रंथ है ।

ईसाई धर्म

यहूदी धर्म ग्रंथ 'ओल्ड टेस्टामेंट' में जैसा कि उल्लेख है कि मानव जाति के त्राण के लिए ईश्वर राजा दाउद के वंश में एक मसीहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेजेगा— यहूदी आज भी उस मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे हैं । किंतु बाइबिल के नये नियम में ईसा को ही वह प्रतिज्ञात मसीहा कहा गया है । ईसा के जीवनकाल में कुछ यहूदियों ने इस बात में विश्वास करते हुए उनका अनुगमन भी किया था, किंतु यहूदी धार्मिक कर्मकांड की ईसा द्वारा की जानेवाली निर्भीक आलोचना से यहूदी पुरोहित घबरा गये । ईसा के पीछे चलनेवाली भारी भीड़ से भी उन्हें ईर्ष्या हुई । अतः उन्होंने प्रतिज्ञात मसीहा के रूप में ईसा का स्वागत करने के बजाय उसे सूली पर टंगवा दिया । कालांतर में ईसा के शिष्यों ने असीम कष्ट उठाते हुए प्राणपण से अपने गुरु के विचारों का प्रचार किया और इस तरह धीरे-धीरे ईसाई धर्म एक नये धर्म के रूप में उभरा और फिर देखते-ही-देखते सारी दुनिया में छा गया ।

ईसा ने आजीवन भाईचारे और प्रेम का उपदेश दिया । उनका कहना था कि ईश्वर जो कि हमारा परमपिता है, हमसे प्रेम करता है, अतः हमें भी सबसे प्रेम करना चाहिए । ईश्वर हमें क्षमा करता है, अतः हमें भी दूसरों के अपराधों को क्षमा करना चाहिए । हमें जिस चीज की कमी हो, उसी से मांगना चाहिए । सच्चे मन से की गयी प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती । जीवन का उद्देश्य ईश्वरीय राज्य में अपने को प्रवेश करने योग्य बनाना होना चाहिए ।

ईसा ने स्वयं कुछ नहीं लिखा । बाद में उनके शिष्यों ने उनके उपदेशों और उनकी जीवनी को शब्दबद्ध किया था । 'नया नियम' की प्रथम चार पुस्तिकाएं (सुसमाचार जो उनके ही चार शिष्यों द्वारा लिखे गये हैं) में यही है । अन्य २६ पुस्तिकाओं में ईसा के शिष्यों के बलिदान की, जो उन्होंने ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु दिया था, की कहानी है । इसमें ईसा के उपदेश भी हैं । अंत में उल्लेख है कि ईसा इस धरती पर पुनः अचानक आएंगे और तब जीवितों और मृतकों के भाग्य का फैसला होगा । पुण्यकर्मी स्वर्ग और पापकर्मी हमेशा के लिए नरक में भेजे जाएंगे ।

ईसाई धर्म की मान्यता है कि आदम के प्रथम पाप-वर्जित फल खाने का बदला ईसा ने अपना निर्दोष रक्त देकर चुका दिया है । अतः जो भी ईसा को स्वीकार करेगा, वह प्रथम पाप से मुक्त हो जाएगा । ईसा ईश्वर के पुत्र हैं । ईश्वर की सहयोगी एक 'पवित्र आत्मा' भी है । इस तरह ईसाई धर्म त्रितत्ववादी है ।

इसलाम

अन्य प्राचीन धर्मों की तुलना में इसलाम एक नवीन धर्म है । ईसा के छह सौ साल बाद यह धर्म अरब देश में उत्पन्न हुआ । कहते हैं कि उन दिनों यहां यहूदी जाति के मूल पिता अब्राहम की दूसरी पत्नी से उत्पन्न वंशज रहते थे । उन दिनों ये लोग शराब, जुआ तथा अनेक अधार्मिक कृत्यों में लीन रहते थे । धर्म के नाम पर इनके पास तरह-तरह की सैकड़ों मूर्तियां थीं जिनसे इन्हें कोई नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा नहीं मिलती थी । ऐसे लोगों की सारी सृष्टि के एक ही सृष्टा, एक ही ईश्वर, एक ही शासक से परिचित कराने के लिए तथा उन्हें इस ईश्वर की ओर उन्मुख करने के लिए मक्का में मोहम्मद पैगम्बर ने जन्म लिया ।

ईश्वर के इस विशेष दूत (रसूल) को ध्यानावस्था में समय-समय पर ईश्वरीय प्रेरणा से जो विशेष ज्ञान मिलता था, उसी का संकलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलाम धर्म के पवित्र ग्रंथ 'कुरआन शरीफ' में है। इसके अतिरिक्त 'हदीस' भी इस धर्म का पवित्र ग्रंथ है जिसमें पैगम्बर के उपदेशों का संकलन है।

'इसलाम' शब्द का अर्थ है, 'समर्पण' अथवा 'शांति का मार्ग'। यह धर्म एक ही ईश्वर, जिसे अरबी में 'अल्लाह' और फारसी में 'खुदा' कहा गया, के प्रति पूर्णतः समर्पण एवं उसकी आज्ञा पालन की शिक्षा देता है। खुदा की आज्ञा, जो कुरआन शरीफ में लिखी हैं, को माननेवाला ही सच्चा मुसलमान है, अन्यथा वह काफिर है। यहां आज्ञा है कि प्रत्येक अनुयायी प्रतिदिन की नमाज पढ़े, रमजान में रोजा रखे, हज हेतु जाए तथा गरीबों को दान दे। उल्लेखनीय है कि अपने जन्म के सौ वर्ष के भीतर ही यह धर्म जिहाद यानी तलवार के बल पर विश्व-भर में भी फैल गया।

सिख धर्म

यह भारत में जन्मा अपेक्षाकृत एक नया धर्म है। 'सिख' शब्द शिष्य का अपभ्रंश है। यानां यह शिष्यों का धर्म है। किंतु इसके गुरु कौन हैं ? सिख धर्म में दस गुरुओं की परंपरा मिलती है, जिनके आदि-गुरु हैं, नानक देव, जिन्होंने हिंदू धर्म के कर्मकांड, जातिवाद, मूर्तिपूजा आदि के खिलाफ इस धर्म की स्थापना की थी। उन्होंने ईश्वर को निर्गुण, निराकार माना, जिसकी प्राप्ति नामजप, सदाचार एवं गुरु कृपा से होती है। सभी मनुष्य ईश्वर के बंदे हैं, जिनके हृदय में ईश्वर रहता है। इस धर्म की सरलता के कारण तत्कालीन अनेक हिंदू इसे ग्रहण कर सिख बन गये।

इस धर्म के गुरुओं ने मुगलों के खिलाफ सिखों को संगठित कर युद्ध भी किये थे। अंतिम दो गुरु तेगबहादुर तथा गुरु गोविंदसिंह को शहीद भी होना पड़ा। 'गुरुग्रंथ साहिब' इस धर्म का पवित्र ग्रंथ है, जिसमें गुरुओं की वाणी संकलित है।

बहाई धर्म

सन १८१७ में ईरान के शाह के मंत्री के घर में जन्मे बहाउल्लाह, ने राजनीति की अपेक्षा अपने जीवन का लक्ष्य उन्होंने अपने गुरु सैयद अली मोहम्मद के विचारों के आधार पर एक नये धर्म का प्रचार करना बनाया। यही आगे चलकर बहाई (प्रकाशित) धर्म के नाम से विख्यात हुआ। विश्व-शांति इस धर्म का मुख्य आदर्श है, जिसके लिए इनका नारा है— 'एक ईश्वर, एक मनुष्य जाति, एक धर्म।' किंतु महात्मा बहाउल्लाह और उनके पुत्र अब्दुलबहा को इस धर्म की स्थापना में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा था। खासकर उनका विरोध मुल्ला मौलवियों ने किया था। आज यह एक प्रतिष्ठित धर्म है। भारत में भी इसके लाखों अनुयायी हैं। बहाउल्लाह द्वारा फारसी में लिखित 'निगूढ़ वचन', 'सात उपत्काएं', 'निश्चय की पुस्तक' इस धर्म के पवित्र ग्रंथ हैं।

उपरोक्त विवरण में धर्मों का क्रम कालक्रम के अनुसार है वैसे इनके विश्वभर में फैले अनुयायियों की संख्या के आधार पर इन धर्मों का क्रम इस प्रकार है— १. ईसाई, २. इसलाम, ३. हिंदू, ४. बौद्ध, ५. ताओ, ६. सिख, ७. यहूदी, ८. कांफ़्यूशी, ९. बहाई, १०. जैन, ११. शिंतो, १२. जरथुस्त्री।

— विभागाध्यक्ष—दर्शनशास्त्र
शास. छत्तीसगढ़ महाविद्यालय
रायपुर (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिपा हुआ गंध है प्राणियों के प्रणय में

● कमल रंजन 'हिमशैल'

गंध से मनुष्य ही नहीं, छोटे-छोटे जीव तक प्रभावित होते हैं । सच तो यह है कि मनुष्य की अपेक्षा अनेक जीव-जंतु, जैसे चींटी, मधुमक्खी, कुत्ता आदि इससे अधिक प्रभावित होते हैं । कुत्ते तो गंध से ही चोर तथा हत्यारे को पकड़वाने में सहायता करते हैं । मादा पतंगा अपनी गंध से नर पतंगों को आकर्षित करती है ।

जरमन वैज्ञानिक हेनरी फ्रेब्रे की प्रयोगशाला में एक मादा पतंगा प्रयोग के लिए रखी गयी थी । फ्रेब्रे का बेटा संध्या समय दौड़ता हुआ आया और बोला, 'पापा, कमरे के बाहर पतंगों की बाढ़-सी आ गयी है ।' हेनरी फेब्रे ने देखा और सोचने लगे कि ये पतंगे प्रयोगशाला में जाने के लिए इतने आतुर क्यों हैं ? बाद में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि गंध ही इसका कारण है, जो मादा पतंगे के शरीर से निकलती है ।

कई प्रयोगों के पश्चात यह पता चला कि नर पतंगों में पंख की भांति एंटेना होते हैं, जिनके द्वारा उन्हें गंध का अनुभव होता है एवं वे मादा पतंगों की तलाश में चल पड़ते हैं । जिन नर पतंगों के एंटेना काट दिये गये वे मादा पतंगों तक नहीं पहुंच सके ।

फ्रेब्रे ने प्रयोगशाला में सल्फर डाईआक्साइड तथा अन्य तीव्र गंधवाले पदार्थ रखे, ताकि मादा पतंगे की हलकी गंध दब जाए, इसके बावजूद नर पतंगे शीशे के बरतन में रखी हुई मादा के पास पहुंचकर फड़फड़ाने लगे । इससे यह निष्कर्ष निकला कि मादा पतंगे की गंध-तरंगें दूर-दूर तक पहुंच जाती हैं ।

स्विस वैज्ञानिक आगस्ट फारेल के अनुसार मादा पतंगे की गंध मीलों दूर के नर पतंगों को आकर्षित कर लेती है । एक प्रयोग में देखा गया कि एक नर पतंगा छह मिनट में एक मील उड़कर मादा के पास पहुंच गया ।

अनेक जीवों में गंध कामोद्दीपक होती है । मादा अपनी गंध से नर को मोहित करती है, तो नर पतंगा भी अपने शरीर से कामोत्तेजक गंध का स्राव करता है । अनेक तितलियों एवं पतंगों के शरीर में गंध-ग्रंथियां होती हैं, जो मादा के निकट आने पर स्वयं बाहर निकल आती हैं । मनुष्य को इन गंधों की पहचान नहीं होती क्योंकि, हमारे सूंघने की शक्ति इतनी तीव्र नहीं है कि उन गंधों को पकड़ सकें ।

प्रकाश द्वारा प्रणय-संदेश

मानव-जाति में प्रणय-संदेश का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदान-प्रदान हाव-भाव, भ्रू-भंगिमा एवं कटाक्ष आदि द्वारा होता है । प्रकृति ने कुछ कीटों में अपने भावों को व्यक्त करने के लिए प्रकाश दे रखा है । प्रकाश द्वारा ही वे अपना प्रणय-संदेश भेजते हैं ।

जुगनू अपना प्रणय-साथी खोजने के लिए गंध और प्रकाश दोनों की सहायता लेता है । एक मादा जुगनू को कार्डबोर्ड के डिब्बे में बंद कर दिया गया ताकि प्रकाश बाहर न दिखायी दे । दूसरे प्रयोग में मादा जुगनू को मारकर जमीन पर डाल दिया गया, ताकि उससे प्रकाश न फैल सके । दोनों प्रयोगों में यह देखा गया कि नर जुगनू डिब्बे एवं मृत मादा के चारों ओर एकत्र हो गये । एक मादा जुगनू को कांच के टेस्ट ट्यूब में रखकर प्रयोग किया गया, जिससे प्रकाश तो हो परंतु गंध न फैले । इस प्रयोग में भी नर जुगनू मादा के पास पहुंच गये । इससे यह सिद्ध हो गया कि जुगनू के लिए गंध तथा प्रकाश दोनों का महत्त्व है ।

जुगनू की कुछ ऐसी किस्में भी हैं, जिनकी मादा बिना पंखवाली होती है । उनकी प्रकाश ग्रंथि नीचे की ओर पेट में होती है । रात में नर जुगनू उड़ते हैं तब पंखहीन मादा उलटकर कुछ-कुछ हरा प्रकाश करके नर जुगनुओं को आमंत्रित करती है ।

समुद्रतल में पाये जानेवाले एक-कोशीय जीव स्क्विड मछली आदि से कई रंगीन प्रकाश निकलते हैं । गहरे समुद्र में पाये जानेवाले समुद्री केकड़े से भी प्रकाश निकलता है । यह केकड़ा भी अपने साथी की उसी प्रकार खोज करता है जिस प्रकार जुगनू ।

संगीत-नृत्य का प्रयोग

प्रणय में जहां गंध तथा प्रकाश का महत्त्व

है, वहां संगीत और नृत्य का भी विशेष स्थान है । मादा को रिझाने के लिए नर उसके सम्मुख नृत्य करता है । झींगुर झंकार से एवं टिड्डी स्वर से अपना प्रणय निवेदन करते हैं । झींगुर के कान उसके अगले पैरों में होते हैं तथा टिड्डी के कान उसके उदर में ।

एक प्रयोग में यह देखा गया कि यदि नर के संगीत को माइक्रोफोन द्वारा किसी ऐसे कमरे में, जिसमें केवल मादाएं हों, बजाया जाए तो वे यंत्र के चारों ओर इकट्ठी हो जाती हैं ।

झींगुर के स्वर को टेपरिकार्डर पर बजाने पर मादा अपने स्थान से निकल आती है । ऐसे परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि झींगुर अपनी ध्वनि से लगभग ३० मीटर दूर तक की मादाओं को आकर्षित कर लेता है ।

टिड्डे अपने पंख को झनझनाकर स्वर करते हैं । कुछ टिड्डे एक पंख से दूसरे को रगड़कर स्वर पैदा करते हैं और कुछ अपने जबड़े एक-दूसरे पर घिसकर ।

—निकट ए.एस.पी. ऑफिस,
काजीचक, बाढ़, पटना-८०३२१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

बिल्लियां

● केवल सूद

पत्नियां पति नाम की चीज को छोड़कर बाकी अनेक प्रकार की छोटी-छोटी चीजों से डरती हैं। मसलन, वे कॉकरोच से डरती हैं। छिपकली को देखकर तो वे चीख भी मार पड़ती हैं और उस समय वे यह भी भूल जाती हैं कि वे कुछ बातों में उसकी सहोदरा ही है। कम से कम जहां तक ऐंठने-बिगड़ने का संबंध है, दोनों में बहुत सारी समानताएं देखी जा सकती हैं।

पर मेरी पत्नी सबसे अधिक बिल्लियों से डरती है —खासकर लड़ती हुई बिल्लियों से। नहीं, यह कहना अधिक सही होगा कि लड़ती हुई बिल्लियों की आवाजों से। पत्नी का उन आवाजों से डरना मुझे ठीक ही लगता है। वास्तव में, लड़ती हुई बिल्लियों की आवाजें बड़ी अजीब-सी होती हैं। वे आवाजें एक अजीब प्रकार की नहूसत अपने दामन में समेटे रहती हैं। मुझे लगता है इन आवाजों को निकालने के लिए बिल्लियों के गले में कुछ विचित्र प्रकार की 'वोकल कार्डज' होती हैं, जिन्हें वे एक ऐसे ही खास समय पर प्रयोग में लाती हैं। कोई बिल्ली जब किसी सुनसान रात को रोती है, तब भी वह उन विचित्र प्रकार की वोकल कार्डज में से ही किसी एक वोकल कार्ड को प्रयोग में लाती है।

दो लड़ती हुई बिल्लियों के दृश्य को अगर आपने कभी गौर से देखा हो तो आपको यह मानने में दिक्कत नहीं होगी कि वे आपस में खास तरह की दूरी को कायम रखते हुए आमने-सामने बैठ अपने-अपने शरीर में अजीब-सी ऐंठन लाते हुए थोड़े-थोड़े अंतर के बाद बारी-बारी एक-दूसरे से भिन्न एक विशेष प्रकार की आवाजें निकालती रहती हैं। वे आवाजें पशुता तथा मनुष्यता का एक अ तरह का सम्मिश्रण प्रतीत होती हैं। एक-दू पर अपनी-अपनी इन विचित्र आवाजों का जवाबी हमला एक लंबे समय तक जारी की क्षमता बिल्लियों में ही होती है।

इन आवाजों की नहूसत, उनकी पार सुननेवाले को अजीब तरह से परेशान क है। एक अजीब तरह की खीझ मन में भ है। इन आवाजों को सुनकर जहां बिल्लि गुस्सा आता है, वहां अपने आप से भी घृ होने लगती है। मुझे लगता है, इन आव पीछे वासना का बड़ा हाथ होता है, क्योंकि लड़नेवाले योद्धाओं में से एक नर होता है एक मादा। यह लड़ाई पाषाणकालीन वासनामय प्रेम का ही एक रूप होती है अंत वासना की तृप्ति में होता है, ऐसा मा मानना है।

बिल्लियों के लड़ने की आवाजें मैंने बार सुनी हैं, पर उस रात मैंने जितनी घृ और खीझ महसूस की, उतनी पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी नहीं की । अकसर ऐसा हुआ है कि बिल्लियों के लड़ने की आवाज साथवाले पार्क से आयी है और मैंने पत्नी के आदेश पर उठकर उन्हें भगा दिया है । या यह हुआ है कि बिल्लियों के लड़ने की आवाज इतनी देर से आयी है कि मैं पत्नी की बुड़बुड़ाहट को सुनते रहने के अतिरिक्त और कुछ भी कर सकने में असमर्थ-सा या असहाय महसूस करता रहा हूं ।

सरदियों की वह रात आधी बीत चुकी थी । हम पति-पत्नी थके-हारे सो रहे थे । सहसा मुझे अपनी नींद में एक दरार-सी पड़ती महसूस हुई ।मेरी पत्नी फुसफुसा रही थी, "देखो, बिल्लियां लड़ रही हैं ।"

मैंने भी यही महसूस किया और कहा, "हां, लड़ तो रही हैं ।"

बिल्लियों के लड़ने की आवाजें मैंने बीसियों बार सुनी हैं, पर उस रात मैंने जितनी परेशानी और खीझ महसूस की, उतनी पहले शायद कभी नहीं की...

"लड़ रही हैं तो उठिए, उन्हें भगाइए..."

"पर वे पार्क में तो नहीं हैं, कहां से भगाऊं... ।"

"जहां वे हैं, वहां से..."

"अब कुछ पता भी चले कि वे कहां हैं... ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उठेंगे देखेंगे तभी तो पता तो चलेगा कि वे कहां हैं... ?"

इस बीच बिल्लियों के लड़ने की आवाजें निरंतर आती रहीं —मैं पूरी तरह से जागकर यह समझने की कोशिश करने लगा कि दुश्मन कहां हो सकता है । तभी एक खीझभरी कर्कश आवाज गूंज उठी, "अब पड़े-पड़े सोच क्या रहे हैं... उठिए और उन्हें भगाइए... ।"

पत्नी की यह आवाज सुनकर मैं पत्नी की तरफ देखने के लिए विवश हो गया । बाहर से आ रही आवाजों तथा इस आवाज में मुझे बहुत कम अंतर लगा ।

"उठता हूं बाबा ! पहले जरा समझ तो लूं कि वे हैं कहां... ?"

"आपको बात हमेशा देर से समझ में आती हैं... सुन नहीं रहे, आवाजें बिलकुल घर के सामने से आ रही हैं... ।"

हां, मेरी पत्नी सही कह रही थी । वह कभी गलत नहीं कहती । पर मैं उसकी इस बात से सहमत नहीं हूं कि मुझे बात देर से समझ में आती है । वह तो मैं पत्नी के बिना मतलब ताबड़तोड़ हमलों की वजह से थोड़ा नर्वस हो जाता हूं ।

अब तक बिल्लियों तथा पत्नी की आवाजें सुनते-सुनते मैं पूरी तरह खीझ से भर चुका था । रजाई को एक ओर फेंक मैं एकदम बिस्तर से निकल आया । मैंने दरवाजा खोला और जिस अवस्था में था, उसी में बाहर आ गया ।

बड़े गेट में से बाहर झांककर देखा तो बिल्लियां कहीं नजर नहीं आयीं । हां, ब्लॉक के बड़े गेट के पास एक कोने में आग तापता हुआ, निःसंग भाव से बैठा हुआ चौकीदार जरूर दिखायी दिया । पलभर बाद बिल्लियों की आवाजें भी सुनायी दीं । मैंने उधर देखा जिधर से आवाजें आयी थीं । इस बार मैंने बिल्लियों को ढूंढ़ ही निकाला । वे सामने खड़ी कारों के पीछेवाले फुटपाथ पर अपना-अपना मोर्चा संभाले बैठी थीं ।

मैंने पहले बिल्लियों की ओर देखा और फिर चौकीदार की ओर । बिल्लियों की और चौकीदार की धृष्टता देख मैं खीझ तथा गुस्से और भी भर उठा । मैंने चौकीदार को एक ओर से डांट लगाते हुए कहा, "चौकीदार, क्या तुम इन बिल्लियों को हटा नहीं सकते ?"

चौकीदार ने अजीब नजरों से मुझे देखा । बिल्लियों को नहीं । शायद, उसे मैं ही दोषी लग रहा था । बिल्लियां तो उसका मनोरंजन कर रही थीं । शरीर को उष्णता प्रदान करने के लिए उसके पास आग थी और सुनसान रात में जब सब लोग सो रहे थे, बिल्लियां उसके लिए जाग रही थीं और उसका मनोरंजन कर रही थीं ।

वह अपनी जगह से नहीं हिला । वहीं बैठे-बैठे मुझे घूरते हुए उसने कहा, "वे लड़ रही हैं ।"

बड़ा अजीब जवाब था । उसके कहने का भाव शायद यह था कि बिल्लियां लड़ रही हैं और लड़ती हुई बिल्लियों को हटाना नहीं चाहिए और दूसरे यह कि उन्हें लड़ाने में उसका कोई हाथ नहीं ।

मैं स्पष्ट देख रहा था कि मेरे आने तथा बोलने का न बिल्लियों पर कुछ असर हुआ और न ही चौकीदार पर ।

मैंने अपनी अवज्ञा तथा खीझ को दबाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

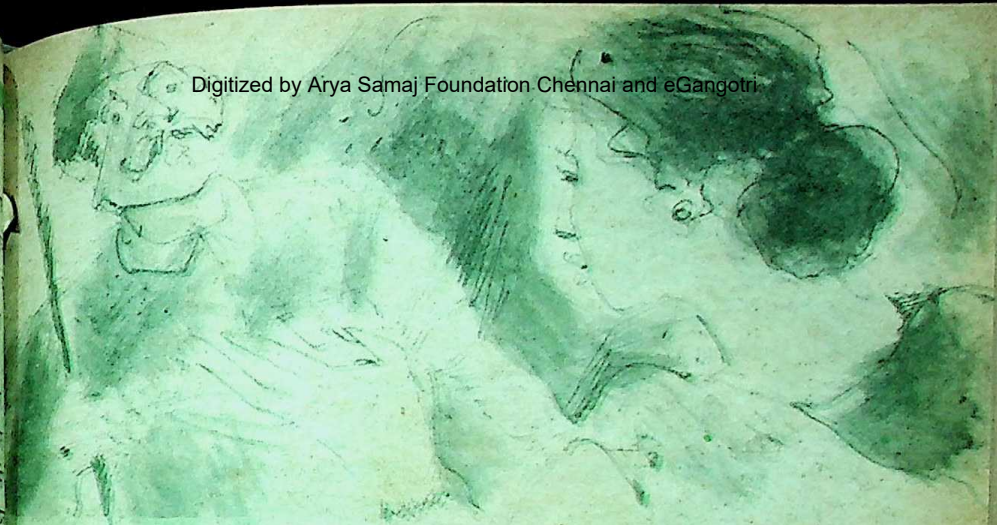

फेंक देने के लिए थोड़ी और कड़ी आवाज में चौकीदार से कहा, "तुम्हारे हाथ में लाठी है, यह लाठी दिखाकर क्या तुम उन्हें भगा नहीं सकते ?"

मेरी इस बात की प्रतिक्रिया उस पर इतनी भर हुई कि उसने अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही लाठी को एक-दो बार हलके-से जमीन पर मारा। इस छोटी-सी हरकत का भला ढीठ बिल्लियों पर क्या असर होना था। वे बदस्तूर लड़ती रहीं या प्रेमालाप करती रहीं और वैसे ही आवाजें निकालती रहीं।

चौकीदार तथा उनकी धृष्टता को देख मैं और भी जल-भुन गया। उधर अंदर से पत्नी अलग चीख रही थी, "आप बाहर खड़े-खड़े क्या कर रहे हैं... । बिल्लियों को भगाते क्यों नहीं ?"

आगे-पीछे के इस आक्रमण से मैं हतप्रभ-सा हो रहा था। फिर सहसा मेरे खून ने जोश मारा। मैंने गेट खोलकर बाहर निकल इस दिल्ली महाभारत में खुद को झोंक देने की सोची।

गेट में ताला पडा था। मैंने अंदर आ अपने पढ़नेवाले कमरे की मेज पर से चाबी ढूंढ़ी, आंगन में किसी लाठी या डंडे के लिए इधर-उधर देखा। कहीं, कुछ नहीं था। हां, एक कोने में पाइप का एक छोटा-सा टुकड़ा पड़ा जरूर मिल गया। मैंने वही उठा लिया और इस हथियार से लैस हो, अपनी खीझ तथा झेंप को जिरह-बख्तर बना ताला खोल बाहर निकल आया।

चौकीदार की ओर देखा। वह अपने आसन पर बब्रुवाहन-सा बना अभी तक चिपका हुआ था। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। होगा भी तो मुझे कम रोशनी में दिखायी नहीं दिया। उस पर से नजरें हटा मैंने बिल्लियों की ओर रुख किया। वे निरंतर भौंडी आवाजें निकाले जा रही थीं और रात की वीरानी को और तीखा किये जा रही थीं। मैंने आगे बढ़ उन्हें ललकारा, उन्हें दिखाते हुए अपना हथियार घुमाया और देखा कि मेरी वीरता का उन पर कुछ असर हुआ। उनमें से एक सामनेवाली सीढ़ियों की ओर बढ़ी और दूसरी साथवाले फ्लैट की दीवार के पास खिसक गयी।

मेरी इस छोटी-सी सफलता का असर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौकीदार पर भी हुआ । वह अपना आसन छोड़ उठ खड़ा हुआ ।

अब मुझे यह डर महसूस हुआ कि अगर वे दोनों बिल्लियां सीढ़ियों में घुस गयीं तो उन्हें वहां से खदेड़ना कठिन हो जाएगा ।

सुन रखा था, बिल्ली शेर की मौसी है । यानी शेर, चीता, बाघ आदि जानवर बिल्ली परिवार के ही वंशज हैं । अपनी जान पर आ पड़े तो बिल्ली उन जैसा ही उग्र रूप धारण कर सकती हैं । यह भी सुन रखा था कि एक आदमी ने एक बिल्ली से तंग आकर उसे एक कमरे में बंद कर लिया । वह उस बिल्ली के रोज घर में कुछ न कुछ उत्पात करते रहने से इतना तंग आ चुका था कि वह उसे मार ही डालना चाहता था । पर बिल्ली उसकी पकड़ में नहीं आ रही थी । आज काबू में आयी देख वह आदमी बहुत खुश हुआ । उसे खतम कर देने के लिए उसने लाठी घुमायी तो वह कूदकर कमरे में रखी अलमारी पर चढ़ गयी और वहां से कूदकर जान बचाने के लिए रोशनदान में जा बैठी । आदमी के प्रहार अब भी जारी थे । बिल्ली ने जब देखा कि वह बुरी तरह घिर गयी है, तो उसकी पाशविकता जाग उठी, वह शेर बन गयी । मौका देखकर उसने आदमी की गरदन पर छलांग लगा दी और अपने तीखे पंजों से उस आदमी का चेहरा लहू-लुहान कर दिया । जब तक वह आदमी इस अचानक हमले से संभलता, वह भिड़ा हुआ दरवाजा पंजों से खोल बाहर भाग गयी ।

अब इन बिल्लियों के सीढ़ियों में घुस जाने से बिलकुल वैसी ही नहीं, तो एक भयावनी स्थिति तो पैदा हो ही सकती थी । मैं उनका पीछा करता, सीढ़ियां चढ़ता तो उन सीढ़ियों से जितने फ़्लैट थे, उन सबके दरवाजे तरह-तरह की आवाजें करते हुए खुल सकते थे तथा तरह-तरह की शक्लें बुड़बुड़ाते हुए बाहर आ सकती थीं । पर कुछ लोग बेहिस होते हैं । उन पर इस तरह की मनहूस आवाजों का या स्थितियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता । मैं इन्हें दूर से उठकर बिल्लियों को भगाने आया था और जिनके सोनेवाले कमरों के बिलकुल अन्दर बैठी ये बिल्लियां कुहराम मचाती रहीं, पर उन पर इसका कोई असर नहीं हुआ । छोटी-छोटी बातों से सब आदमियों की नींदें हराम नहीं होतीं । इसलिए हो सकता है कि उन फ़्लैटों में से कोई भी आदमी बाहर न आये ।

कोनेवाले फ़्लैट की बाहरी दीवार के पास वह बिल्ली बैठी थी, वह शायद मादा थी । इसलिए जब मैंने दुबारा अपना हथियार घुमाते हुए उसे दुत्कारा तो वह उस फ़्लैट की दीवार के साथ-साथ भागते हुए उसके पीछेवाले पार्क की ओर निकल गयी । अब भला वह बिल्ली सीढ़ियों में क्यों घुसती । वह भी मादा बिल्ली के पीछे-पीछे पार्क की ओर भाग गयी ।

अदृश्य रूप से बिल्लियों को भगाने में चौकीदार का भी हाथ था, क्योंकि अगर वह अपने आसन पर से न उठता और लाठी लिए वहीं बैठा रहता तो बिल्लियां डर के मारे उधर भागकर पीछेवाले पार्क में न जातीं ।

अब बिल्लियां भाग गयी थीं । अब मेरी खीझ तथा गुस्सा कुछ कम हो गया था । मैंने अपने घर की ओर लौटते हुए चौकीदार से कहा, "भले आदमी, तुम भी यह कर सकते थे... लाठी तुम्हारे हाथ में थी, उन्हें डांटते और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धमकाते तो वे ऐसे ही भाग जातीं ।''

पर मेरी बात का चौकीदार पर पहले की तरह अब भी कोई असर नहीं हुआ था । वह भावहीन नजरों से मुझे घूरे जा रहा था । मैंने उससे और अधिक माथा फोड़ना उचित न समझा और गेट को ताला लगा अंदर आ गया ।

पत्नी को संक्षेप में सारी घटना की रिपोर्ट दी और उसे निश्चिंत हो सो जाने के लिए कहा । पल, दो पल बाद वे सचमुच में ही सो गयीं ! पर मैं न सो सका । चौकीदार का व्यवहार मेरी समझ में नहीं आ रहा था । बिल्लियों के बारे में सुनी हुई तरह-तरह की बातें भी मुझे परेशान कर रही थीं ।

बिल्ली चोर जानवर है । कुत्ता रौनक चाहता है तो बिल्ली वीराना । वह चाहती है कि घर के सब लोग अंधे हो जाएं, तो वह सारा दूध पी जाए —मलाई समेत । बिल्ली, विशेष रूप से काली बिल्ली रास्ता काट जाए तो लोग या तो वापस घर को लौट जाते हैं या खड़े इस बात का इंतजार करते रहते हैं कि पहले कोई और उस रास्ते से गुजरे तो वे आगे बढ़ें । नहीं तो काम बनते-बनते बिगड़ जाएगा ।

एक तरफ इस तरह की बातें सुनने को मिलती हैं, तो दूसरी ओर इस तरह की कि किसी के हाथ से बिल्ली की हत्या हो जाए, तो उसे सोने की बिल्ली बनाकर दान करनी पड़ती है । जो ऐसा नहीं करता, उसे प्रेत योनि मिलती है । इस तरह से तो लगता है कि बिल्ली-हत्या नर-हत्या से भी बड़ा पाप है ।

मेरी समझ में कुछ नहीं आता । एक तरफ बिल्ली चोर, मनहूस जानवर है और दूसरी ओर

इतनी पवित्र... यह कैसा विरोधाभास है ।

कमरे में अंधेरा था पर मेरी आंखें खुली थीं । अंधेरे में घूरते-घूरते मैं थक गया, तो मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं । बिल्लियों के चीखने की आवाजें, भोंडी-भोंडी आवाजें अब भी कहीं से आ रही थीं । पर अब वे मेरी पहुंच से बाहर थीं । मैं उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता था । मुझे लगा कि मेरे घर को सब ओर से काली-पीली बिल्लियों ने घेर रखा है । वे चीख रही हैं, चिल्ला रही हैं, गंदी-गंदी आवाजें निकाल रही हैं । हमारी रातों की नींदें उन्होंने हराम कर रखी हैं लेकिन हम इस डर के कारण उन्हें कुछ नहीं कह सकते, उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते कि वे घिर गयीं तो हमारा मुंह नोंच डालेंगी और अगर उनमें से एक भी मर गयी तो हमें सोने की बनवाकर दान करनी पड़ेगी... और चौकीदार बैठा तमाशा देखता रहेगा ।

—बी-१/६०-ए, जनकपुरी,
नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बादल आषाढ़ के

वन प्रांतर
सतपुड़ा घाटियों पर छाये
बादल आषाढ़ के
गया ग्रीष्म
अभी-अभी
जिसकी श्री शोभा उजाड़ के

घाटी की खुरदरी पीठ पर रोमावलियां
फैलीं कांटेदार झाड़ियां
और उधर वे
फूले-फूले अमलताश पहने
पर्वत श्रेणियां
खड़ी गोंडबालाओं-जैसी
जूड़ा बांधे
मुंह फेरके

बीच-बीच फैलीं
सूखी पंखुरियां पलाश की
जैसे धरे उतार उसी ने
मलिन वसन
खड़ी खिन्न मन को बिगाड़ के

घाटी पंजों से सटे खेत
पांवों पड़ी बिंवाई-जैसे
हुए नृत्य आतुर पांव वे
अभी-अभी
बूंदों के स्वर में
खनक उठेगी
पैंड़ी पहनी,

अभी बरसने तो दो
धोएगी वह : बोएगी वह
वसन सभी
फिर-फिर निचोड़ के

— हीरालाल बाछो
के४० एक
नयी दिल्ली ११

मातृभाषा

ताल में
पैर डालकर बैठता हूं
तलुओं से छू जाती है
कोई चपल
छोटी-सी मछली

इस सिहरन को
इस सुख को
अगर
शब्दों में व्यक्त कर सकूं
तो समझो
मैं अपनी मातृभाषा बोल रहा हूं

—अंशु माल
ए-१११, मेहरौली
इलाहाबाद-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि विलास

१. क. **वैज्ञानिकों** के अनुसार पृथ्वी पर जीवन कब से, कहां और किस रूप में शुरू हुआ था ?

ख. मानव-जीवन का प्रारंभ कब हुआ ?

२. **मीराबाई** आमतौर पर कृष्ण की भक्ति के लिए प्रसिद्ध हैं। राम की प्रशंसा और भक्ति में उनका कोई गीत बताइए।

३. क. **यूनेस्को** द्वारा हाल में भारत की पुरातात्विक महत्त्व की किन दो इमारतों को संरक्षित इमारतों का दरजा दिया गया है ?

ख. भारत में विश्व विरासत के अंतर्गत संरक्षित इमारतों की कुल संख्या अब कितनी हो गयी है ?

४. क. **भारत** का वह उद्योग कौन-सा है जो देश के सकल घरेलू उत्पादन में सबसे अधिक योगदान करता है ?

ख. उसके द्वारा निर्यात-आय कितने प्रतिशत होती है ?

५. **किस** भारतीय नृत्यकार ने लगातार सर्वाधिक समय तक नृत्य करने का विश्व-रेकॉर्ड कायम किया ?

६. **यूरोपीय** आर्थिक समुदाय ने भारत के निजी क्षेत्र के किस औद्योगिक संस्थान के साथ पहली बार भागीदारी की है ?

७. क. **अमरीका** के किस एकमात्र राष्ट्रपति ने अपने पद से इस्तीफा दिया था ? किस कारण ?

ख. अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में उनकी सबसे बड़ी सफलता क्या मानी जाती है ?

८. **निम्नलिखित** पुरस्कार किसे मिले हैं ?—

क. घनश्यामदास बिड़ला वैज्ञानिक शोध पुर. (१९९३)

ख. द्वितीय शंकर पुर. (१९९३)

९. क. **टेस्ट** मैच में किस बल्लेबाज ने लगातार सर्वाधिक रन बनाने का विश्व-रेकॉर्ड कायम किया है ?

ख. एक-दिवसीय मैच में किन बल्लेबाजों ने साझेदारी में सर्वाधिक रन बनाने का विश्व- रेकॉर्ड कायम किया है ?

ग. हाल में २०वीं महिला राष्ट्रीय शतरंज चैंपियनशिप का खिताब किसने जीता है ? वह इस समय और किसमें चैंपियन हैं ?

१०. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेतवा तीरे— बहे सौहार्द्र समीरे

● डॉ. महेंद्र वर्मा

प्राचीन भारतीय इतिहास में महाभारत काल से लेकर चंदेलों के शासनकाल तक चेदि राज्य, मज्झि देश, अवंति प्रदेश, आटविक प्रदेश, मध्य देश, जैजाकभुक्ति या जुझौति प्रदेश तथा दशार्ण प्रदेश (दस नदियोंवाला देश) कहे जानेवाले मध्ययुगीन बुंदेलखंड के वृहत् क्षेत्र में बहनेवाली नदी वेत्रवती (जो जनभाषा में बेतवा के नाम से प्रसिद्ध है) बुंदेलखंडवासियों के लिए गंगा की भांति ही पतितपावनी, कलुषहारिणी एवं मोक्षदायिनी समझी जाती है। इसीलिए महाकवि कालिदास के 'मेघदूत' (पूर्व खंड) तथा हर्षवर्धन कालीन बाण की 'कादम्बरी' से लेकर विभिन्न पुराणों में उसकी महत्ता यत्र-तत्र देखने को मिलती है। उदाहरणस्वरूप 'पद्मपुराण' (षष्टमुत्तर खंड) में एक स्थल पर कहा गया है—

या द्वितीया स्मृता गंगा कलौ देवि विशेषतः ।
ये नराः सुखेमिच्छति धनमिच्छंति ये नराः ।
स्वर्णमिच्छंति ये लोकास्ते वै स्नात्वा पुनः पुनः ।
इह लोके सुखं भुक्त्वा यांति विष्णौः परं पदम ।

प्राकृतिक सुरम्यता की गोद में पलनेवाली, बड़े-बड़े शिला-खंडों के गर्व को चूर करनेवाली, भांति-भांति के विहंगों के कलरव के सुमधुर स्वरों पर चंचल लहरों की थापों की संगति पर साथ देनेवाली, सौंदर्य-साधना, पौरुषी-प्रवाह और किसी भ्रम या व्यतिक्रम के बिना निरंतर अबाध गति से बहनेवाली, एवं केवल एक ही मंत्र 'चरैवेति-चरैवेति' की प्रेरणा देनेवाली बेतवा हिंदू, जैन, बौद्ध एवं इसलाम धर्म के अद्भुत समन्वय को दिग्दर्शन कराने में सौहार्द्र व स्नेह की ऐतिहासिक परंपरा की निर्वाहकत्री के रूप में अपना सानी नहीं रखती।

इस बेतवा की यात्रा का पहला चरण बहुप्रचलित मान्यतानुसार भोपाल का ताल माना जाता है। पर बेतवा की पद्यात्रा करनेवाले स्वतंत्रता संग्राम सैनानी एवं वयोवृद्ध लेखक व कवि श्री हरगोविंद गुप्त के अनुसार बेतवा का उद्गम स्थल भोपाल से २२ किलोमीटर दूर 'मंडी द्वीप' नामक छोटे स्टेशन से दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर विंध्याचल पर्वत की गिरि-श्रृंखला 'सेवानियाँ' में 'झिरी-बहेड़ा' नामक स्थान का प्राकृतिक एक छोटा-सा जल कुंड है, जहां से वह पतली-सी धार के रूप में निकली है।

इसी उद्गम स्थल से वह बोदा खोह, नादौर, पुरैनियां, सरखिया, खाम-खेड़ा नामक ग्रामों को स्पर्श करती हुई ग्यारहवीं शताब्दी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

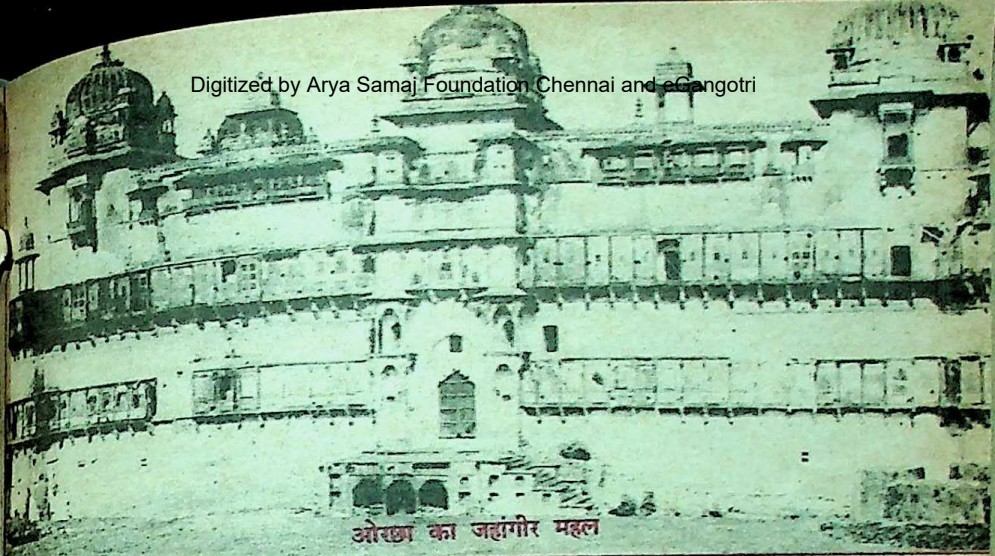

ओरछा का जहांगीर महल

बेतवा की यात्रा का पहला चरण बहुप्रचलित मान्यतानुसार भोपाल का ताल माना जाता है पर बेतवा की पदयात्रा करने वाले स्वतंत्रता संग्राम सैनानी एवं वयोवृद्ध लेखक व कवि श्री हरगोविंद गुप्त के अनुसार बेतवा का उद्गम स्थल भोपाल से २२ किलोमीटर दूर मंडी दीप नामक छोटे स्टेशन से दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर छोटा-सा जल-कुंड है, जहां से यह पतली धार के रूप में दिखायी देती है ।

पूर्वार्द्ध कालीन भोजपुर नामक प्राचीनकला एवं इतिहास-प्रसिद्ध स्थान पर आकर 'कालिया स्रोत' नामक प्रवाह से आकर गले मिलती है । यह वही स्थान है, जहां पर स्थापत्य एवं निर्माण कला विशेषज्ञ मालवा के परमारवंशीय सुप्रसिद्ध महाराजा भोज (१०१८-६० ई.) ने सुदृढ़ शैल-श्रृंगों के सहारे बेतवा व कालिया स्रोत की जलधाराओं को एक कर सागर जैसे विशाल बांध का निर्माण कराया था ।

पर वहां की एक जनश्रुति के अनुसार चौदहवीं शताब्दी के होशंगाबाद (म. प्र.) के संस्थापक होशंगाबाद ने अपने पुत्र के इस बांध में डूबकर मर जाने पर क्रोधावेश में आकर मीलों क्षेत्रफल में फैले हुए इस विशाल सागर को पटवाकर उस स्थान पर अनेक गांवों को 'पाल-परगना' के रूप में बसा दिया, जो अभी भी उस नाम से चल रहा है ।

धार्मिक सहिष्णुता

बांध बना, और नष्ट हुआ, पर भोजपुर में इसी बांध के किनारे बने व उत्तर भारत के सोमनाथ कहे जानेवाले विशाल व कलात्मक शिव मंदिर तथा उसी के पीछे कुछ जैन मंदिरों एवं बौद्ध-स्तूप के अवशेष और वहीं पर बनी एक गुफा में देवी की प्रतिमा, ये समस्त साक्ष्य अवश्य ही महाराजा भोज के शैव मत के प्रति रखनेवाली अटूट आस्था व श्रद्धा के साथ-साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी धार्मिक सहिष्णुता को आज भी प्रदर्शित करते हैं ।

मीलों लंबी यात्रा करती हुई तथा मार्ग में पड़नेवाले अनेक छोटे-बड़े गांवों को अपने स्नेह से सिंचित करती हुई बेतवा प्राचीन भारत के अति प्रसिद्ध व्यापारिक केंद्र एवं इतिहास के पृष्ठों में अंकित शुंगकालीन शासक पुष्यमित्र शुंग के समय में पाटलिपुत्र के बाद द्वितीय राजधानी के रूप में रहनेवाली विदिशा नामक स्थान पर पहुंचती है, जो ई. पू. दूसरी शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी तक विभिन्न राज्य वंशों के काल में हिंदू तथा बौद्ध धर्म के एक अनूठे समन्वित केंद्र के रूप में सौभाग्यशालिनी रही है ।

यहां समीपस्थ उदयगिरि की गुफाएं एवं उसमें उत्कीर्ण हिंदू देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के साथ-साथ सुप्रसिद्ध विशालकाय वाराह की कलापूर्ण प्रतिमा गुप्त वंशीय सम्राटों की कलाप्रियता की जहां द्योतक हैं, वहीं विश्व-प्रसिद्ध सांची के स्तूप बौद्ध धर्म अनुयायियों के लिए श्रद्धा के केंद्र बने हुए हैं । दोनों ही स्थल की कला चाहे वह हिंदू धर्म से प्रभावित रही हो, चाहे बौद्ध धर्म से प्रभावित रही हो, भारतीय कला के इतिहास के लिए स्वर्णिम अध्याय माने जाते हैं । उस पर भी यूनानी यात्री हेलियोडोरस द्वारा निर्मित जो विष्णु-ध्वज स्तंभ यहां देखने को मिलता है, उससे तो एक विदेशी के हृदय में वैष्णव धर्म के प्रति उत्पन्न आस्था के उत्कृष्ट भाव स्पष्टतः दिखायी देते हैं ।

चैत्यों या स्तूपों, विहारों या कलापूर्ण व विशाल स्तंभों की संरचना के नाम पर प्रचलित बौद्ध-कला के क्षेत्र में सांची की निज वैशिष्ट्यता है । और यहां मौर्यवंशीय महान सम्राट अशोक के समय से लेकर नवीं शती तक यहां निर्माण के विविध कार्य चलते रहे, जैसा कि यहां के तीनों स्तूपों से प्राप्त सैकड़ों अभिलेखों से पता चलता है ।

प्रधान स्तूप, जो १२० फुट के व्यास तथा १५४ फुट ऊंचाई में है, का प्रारंभिक निर्माण सम्राट अशोक द्वारा हुआ । तत्पश्चात् ई. पू. द्वितीय शती के उत्तरार्द्ध में सात वाहनों के आधिपत्य में इस विशाल स्तूप के चारों ओर वेदिकाओं तथा कलापूर्ण तोरण-द्वारों का निर्माण-कार्य संपन्न हुआ ।

बौद्ध स्तूप

प्रथम स्तूप से कुछ दूरी पर दूसरे व तीसरे स्तूप हैं । दूसरा स्तूप कतिपय बौद्ध-आचार्यों एवं धर्म-प्रचारकों के अस्थि-अवशेषों पर तथा तीसरा स्तूप बुद्ध के दो प्रमुख शिष्यों सारिपुत्त तथा महामोग्गलायन के अस्थि-अवशेषों पर निर्मित हुए हैं । इन स्तूपों पर महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित विभिन्न घटनाओं, महाकपिजातक, छदंत जातक, श्याम जातक आदि अनेक जातकों से संबंधित कथाओं, बौद्ध धर्म से संबंधित अनेक प्रतीकों के साथ-साथ हिंदू धर्म की गज-लक्ष्मी का अंकन कुशलतापूर्वक जो हुआ है, उससे भी धार्मिक उदारता का दिग्दर्शन होता है ।

विदिशा के पश्चात बेतवा अपनी मंजिल पर बढ़ती है । पुनः मीलों चलकर वह देवगढ़ नामक कलात्मक व ऐतिहासिक स्थल पर पहुंचती है । उत्कृष्ट कला के दर्शन के साथ-साथ वर्त्तुलाकार बेतवा के प्राकृतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य की अनुपम छटा का आत्मिक सुख व असीम् आनंदानुभूति देवगढ़ में प्राप्त होती है। तीन-चार सौ फुट ऊंचे पहाड़ की तलहटी में स्थित मैदानी भाग में हिंदू तथा जैन मंदिरों व चैत्यालय एवं उन मंदिरों पर उत्कीर्ण असंख्य देव-प्रतिमाएं और गर्भ-गृहों में प्रतिष्ठापित १५-२० फुट ऊंची विशालकाय जिन तीर्थकरों की प्रतिमाएं भारतीय कला के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठों के रूप में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाये हुए हैं।

जहां एक ओर उत्तर गुप्तकालीन सुप्रसिद्ध दशावतार मंदिर तथा उसकी बाह्य भित्तियों पर निर्मित गजेंद्र मोक्ष, शेषशायी विष्णु एवं नर-नारायण की सुरम्य तथा प्रतिमा-विज्ञान से परिपूर्ण निर्देशों पर आधारित कलात्मक व भावपूर्ण प्रतिमाएं हृदय को बरबस ही आकर्षित करने में सक्षम हैं, वहीं पर वर्तमान ३९ जैन मंदिरों, विशेषतः सहस्त्रकूट चैत्यालय, मंदिर संख्या ११ एवं १५ तथा प्राप्त १९ मान स्तंभों की वास्तुकला व तक्षण कला भी वैशिष्टतापूर्ण व अप्रतिम है। इन पर उत्कीर्ण तीर्थकरों की प्रतिमाओं के साथ-साथ शासन देव-शासन देवियों, आचार्यों, नवगृहों आदि की असंख्य प्रतिमाएं तथा कलापूर्ण विविध आलेखन प्रदर्शित हैं। इन प्रतिमाओं में केश-सज्जा में जितनी विविधता देखने को मिलती है, उतनी शायद अन्यत्र कहीं देखने को मिले।

देवगढ़ में प्राप्त संवत् ६०९ से लेकर संवत १८७६ तक के लगभग ५०० शिलालेखों से देवगढ़ के उत्थान-पतन के साथ-साथ निर्माणकर्त्ताओं के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। यथा-संवत् ९१९ के शिलालेख के

चतुर्भुज मंदिर (ओरछा)

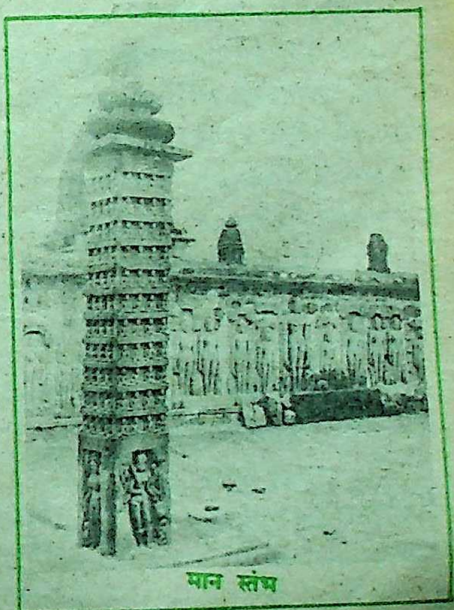

मान स्तंभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार पर इसको 'लुअच्छगिरि' तथा चंदेल शासक कीर्ति वर्मन (१०६०-११०० ई.) के समय के संवत ११५४ के देवगढ़ के शिलालेख के आधार पर इसे 'कीर्तिगढ़' एवं पी. सी. मुकर्जी की मान्यतानुसार नवीं शताब्दी के बंगाल के पालवंशीय राजा-देवपाल के नाम पर 'देवगढ़' और प्रतिहार नरेश मिहिर भोज (८३६-८५ ई.) द्वारा तत्कालीन इस क्षेत्र के गौड़ नरेश देवपाल के पराजित किये जाने पर उसकी कीर्ति को अक्षुण्य बनाये रखने की दृष्टि से इस क्षेत्र का नाम 'देवगढ़' पड़ा।

अब बेतवा पुनः आगे बढ़ती है और बुंदेला शासकों की राजधानी ओरछा के घनघोर जंगल के क्षेत्र में पहुंचती है, जो कभी तुंग महर्षि के नाम पर तुंगारण्य के नाम से प्रसिद्ध था। इस स्थान के नैसर्गिक सौंदर्य एवं बेतवा के शांत वातावरण से प्रभावित होकर ही गढ़कुंडार (म. प्र.) के बुंदेला शासक महाराजा रुद्रप्रताप ने सन १५३१ ई. में इस क्षेत्र को राजधानी के रूप में स्थापित किया,जिसे बाद में सजाया-संवारा महाराजा भारतीचंद (१५३१-१५५४ ई.), महाराजा मधुकर शाह (१५५४-१५९२ ई.) एवं महाराजा वीर सिंह देव प्रथम (१६०६-२७ ई.) और इन सबकी कलाप्रियता की दुहाई देनेवाले ओरछा का दुर्ग और उसमें स्थित विशाल राजमहल, रामराजा मंदिर, चतुर्भुजजी का मंदिर, जहांगीर महल एवं फूलबाग में स्थित अनेक भवन आज भी विद्यमान हैं।

उत्कृष्ट मुगल शैली

ओरछा की स्थापत्य कला में हिंदू एवं तत्कालीन मुगल बादशाह अकबर (१५५६-१६०५ ई.) द्वारा अपनायी गयी मुगल शैली दोनों ही की उत्कृष्टता देखने को मिलती है। यथा—जहां सुप्रसिद्ध रामराजा मंदिर एवं तिमंजिला राजमहल विशुद्ध हिंदू शैली के ज्वलंत उदाहरण हैं, वहीं पर चतुर्भुज जी के मंदिर के बाह्य भाग में दिखायी देनेवाले उत्तंग शिखरों में हिंदू तथा गुंबद एवं अंतभाग में स्थित महामंडप की ऊपरी छतों में मुगल शैली की स्पष्ट छाप है। इसी प्रकार फूल बाग में स्थित पत्थर का नक्काशीदार कटोरा तथा उसके सामने बना भवन आगरा में निर्मित जोधाबाई महल व वहां के पत्थर के कटोरे की प्रतिकृति ही मालूम पड़ती है।

और उस पर भी दुर्ग में २०० फुट वर्ग में सन १६२६ ई. में बना 'जहांगीर महल', जो महाराजा वीरसिंह देव प्रथम द्वारा अपने मित्र मुगल बादशाह जहांगीर (१६०५-२७ ई.) के सम्मान में उसके निवासार्थ तैयार हुआ था, विशुद्ध रूप में मुगल शैली की एक सर्वश्रेष्ठ स्मृति कही जाएगी। कलापूर्ण जालियों व गवाक्षों तथा विशाल आठ गुंबदों से युक्त ओरछा का यह सर्वोत्तम भवन एवं फूल बाग का भवन बरबस ही आगरा की उपस्थिति का सहज ही में एहसास करा देते हैं।

बेतवा आगे बढ़ती है और हिरण्यकश्यप व उसके पुत्र प्रहलाद की राजधानी एरच तथा वाकाटवंशीय वाघाट की सीमाओं को स्पर्श करती हुई अंत में हमीरपुर पहुंचकर तरनि-तनूजा यमुना के श्यामल जल में जाकर स्वयं को आत्मसात् करके अपनी यात्रा को समाप्त कर देती है।

—९७, गंधीगर, झांसी
२८४००२ (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

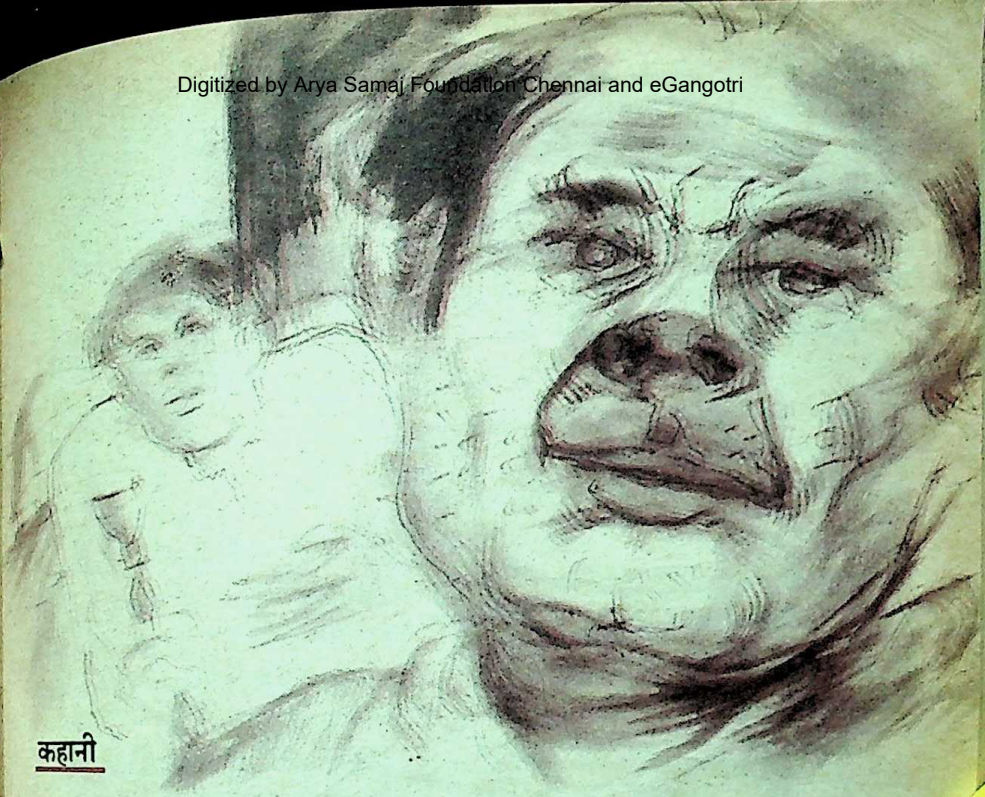

कहानी

'कुछ अनकिहा वी'

अर्जुन छेड़ गडीरना

● प्रेम प्रकाश

प्यारी कैथरीन,

मुझे यहां गांव पहुंचे हुए, सोलह दिन हो गये हैं। चाचाजी की हालत वैसी ही है। पता नहीं मुझे यहां कितने दिन और रुकना पड़े। चाचाजी को उस हालत में छोड़कर मैं नहीं आ सकता।

सुबह के नौ बजे हैं। गरमी की शिद्दत कम होने लगी है, त्यौहारों का महीना आ रहा है। अगर तुम मेरे साथ आ जाती, तो परेशानी की कोई बात ही नहीं थी। तुम भी पंजाब के दशहरा तथा दीवाली की रौनक एक बार देख लेतीं, और गांव भी घूम लेतीं। दरअसल इंगलैंड में बस रहे भारतीयों से मिलकर तथा उनके साथ रहकर भी उनकी सोच का ठीक से अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। मेरे साथ रहकर भी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाचाजी दवाई लेकर सो गये हैं । तभी मुझे यह सब लिखने का मौका मिला है । नहीं तो वे बातें करते रहते हैं, सवाल पूछते हैं, हुक्म चलाते हैं और नसीहतें देते हैं । हमारे बुजुर्ग मरते समय बहुत नसीहतें देते हैं । जैसे सारी उम्र का निचोड़ बताने को उतावले हों । जिसके बिना आनेवाली नस्ल का जीना मुश्किल हो सकता है ।

आम भारतीय की तरह ये भी मौत से बहुत डरते हैं । आत्मा के अमर होने तथा शरीर के नाशवान होने के गीता ज्ञान या और किसी धर्म उपदेश का सहारा ढूंढ़ रहे हैं । ...पलंग पर लेटे हुए उनकी नंगी पीठ मेरी ओर है । रीढ़ की हड्डी के साथ जुड़ी और सारी हड्डियां दिखायी दे रही हैं । सांस के कसकर आने-जाने का पता लगता है । चाची दूसरे कमरे में बैठी पाठ कर रही हैं । बहन गोमती भी आयी हुई हैं । हम तीनों उनकी सेवा में जुटे रहते हैं ।

चाचाजी कभी-कभी अपने आप को समझाने के लिए मिर्जा गालिब का यह शेर पढ़ते हैं...'गम-ए-हस्ती का असद किससे हो जुज़ मरग ईलाज...' (मौत से छूटकर जिंदगी के दुख का कोई ईलाज नहीं) । ...मगर समझाने मुझे लगते हैं कि मौत ही आखिरी इलाज है । जिंदगी की इस शमा ने सुबह होने तक जलना है । वैसे ये मौत को सवेरा कहते हैं । मगर यह भी मौत के डर से मुक्त होने की कोशिश उनकी लगती है ।

आज सुबह जागे तो अपनी टांगों का लटकता मांस पकड़-पकड़कर मुझे दिखाते हुए कहने लगे, 'इस तरह मांस हड्डियों को छोड़ देता है ।... भूरू की गरदन का मांस भी इसी तरह लटकने लगा है ।'

भूरू इनके कुत्ते का नाम है । ऐसे ही अधमरा-सा कुत्ता है । ग्यारह-बारह साल का बूढ़ा है । गरमी लगती है तो नीम के नीचे जा

भूरू इनके कुत्ते का नाम है । ऐसे ही अधमरा-सा कुत्ता है । ग्यारह-बारह साल का बूढ़ा है । गरमी लगती है तो नीम के नीचे जा लेटता है । मक्खियां काटती हैं, तो भूसेवाली कोठरी में जा बैठता है...वह भी बीमार है । उसने भी चाचाजी की तरह खाना-पीना छोड़ा हुआ है । चाचाजी को वहम है कि उन दोनों ने साथ-साथ मरना है । इसीलिए वे थोड़ी-थोड़ी देर बाद भूरू की खबर लेते रहते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

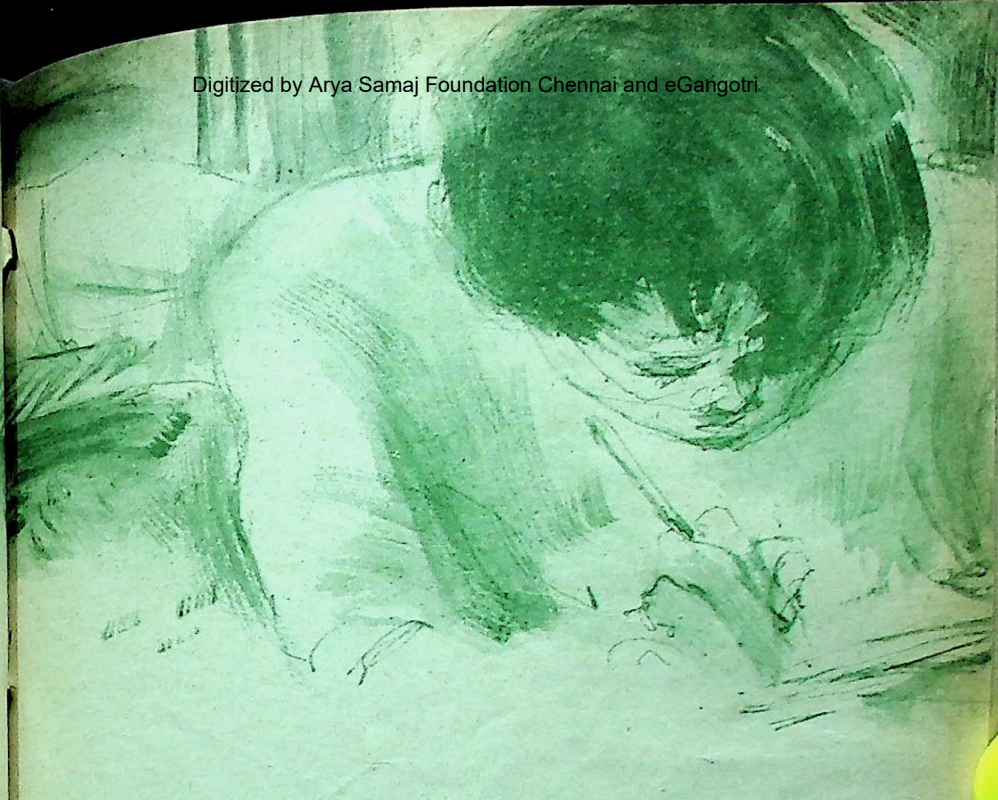

लेटता है । मक्खियां काटती हैं, तो भूसेवाली कोठरी में जा बैठता है...वह भी बीमार है । उसने भी चाचाजी की तरह खाना-पीना छोड़ा हुआ है । ...चाचाजी को वहम है कि उन दोनों ने साथ-साथ मरना है । इसीलिए वे थोड़ी-थोड़ी देर बाद भूरू की खबर लेते रहते हैं ।

एक दिन मुझे कहने लगे, 'भतीजे, बस यही होती है, अनंत निद्रा...फिर पता नहीं क्या होना है । कौन-सा जन्म लेना है । ...पता नहीं कोई और जन्म होता भी है या नहीं ! मुझे तो ये सब बातें झूठी-सी लगती हैं ।'

मैं अब अपने विश्वास के विपरीत महज उनको दिलासा देने के लिए कैसे कह दूं कि हां चाचाजी, दूसरा जन्म होता है । मनुष्य का चोला ही मिलता है । ...कई बार मन होता भी है कि झूठी बातें ही करता रहूं, जिससे उनको सुख मिले । वैसे कई वर्षों तक मेरे यह रिटायर्ड स्कूल मास्टर चाचाजी भी मानते रहे हैं कि कोई दूसरा जन्म नहीं होता । अच्छे-बुरे कर्मों का फल हम यहीं भोग लेते हैं । ...मगर आजकल ये उलझन में हैं । कल शाम को कहने लगे, 'मैंने न तो बुरे कर्मों का फल भोगा है न ही अच्छे कर्मों का । ...इस जन्म में जो भी बुरे कर्म किये हैं उनकी भी सजा तक नहीं मिली । कोई सोच सकता है कि इस स्कूल मास्टर ने भी बहुत नीच कर्म किये हैं ?'

'आपने भी बुरे कर्म किये हैं ?' मैंने बड़ी हैरानी से पूछा था ।

'हां, मैंने भी किये हैं । हमारे पूर्वजों ने भी किये हैं । ...ये जो हम, और तीनों वर्गों को अपने से नीचा समझते हैं, यह किसी नीच कर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कम है क्या ?... तू बच गया है भतीजे इस पाप से ।' कहकर वह पश्चाताप करते रहते । फिर जल्दी से कहते मेरा हुक्का भर दे, बस दो कश लेने हैं । मन बेचैन हो रहा है । ...देख भतीजे, जवाब न देना, डॉक्टर की बात न करना । ...अगर मरना ही है तो, चाहे फेफड़े काम करना बंद कर दें, चाहे दिल । क्या फर्क पड़ता है ।'

डॉक्टर ने सख्त मनाही की हुई है । मगर चाचाजी की मिन्नत-खुशामद मुझसे झेली न गयी । मैंने थोड़ा-सा तंबाकू डालकर चिलम भर दी थी । हुक्का उनके आगे लाकर रख दिया था । ...तुम विश्वास नहीं करोगी कैथरीन जो व्यक्ति गोली खाने के लिए या दूध का घूंट पीने के लिए मेरे सहारे से उठता था, वह पलंग की बाजू का सहारा लेकर एक ही झटके से उठकर बैठ गया और इस तरह से कश लेने लगा जैसे दूध छुड़वाने जा रहे बच्चे के हाथ में अचानक मां का स्तन आ जाए । ...मगर तभी उनको इतनी जोर की खांसी छिड़ी कि बेहाल होकर वह औंधे मुंह पलंग पर लेट गये । तभी चाची और बहन गोमती आ गयीं । वह दुखित नजरों से मुझे चाचा को संभालते हुए देखती रहीं । मैं शरमिंदा-सा चाचाजी के मुंह में दवाई डालने की कोशिश करता रहा ।

जरा संभले तो उनका पहला सवाल था, 'भूरू कहां है ?'

'नीम तले लेटा है । ...उसको भी हुक्का भर दें ?' चाची ने खीझकर पूछा ।

पत्नी की बात सुनकर वह मुसकराते हुए हंसे और अपनी पतली-सी धोती के पल्लू से अपना नंगेज ढकते हुए करवट लेकर लेट गये ।

...और मैं अपने आपको नार्मल करने की कोशिश करता शिवालय की ओर चला गया था ।

चाचाजी जाग पड़े थे । उन्होंने जोर से करवट ली है । बुझी-बुझी नजरों से मुझे देखते रहे । पूछने लगे, 'क्या लिख रहा है ।'

'चिट्ठी लिख रहा हूं आपकी मेम बहू को । कुछ लिखवाना है ?'

'बच्चों को प्यार और दुआएं लिख दे । ...तेरी चाची क्या कर रही हैं ? ...उसके पास पांच रुपये हैं, मल्लिका के । दो तू ले जाना । एक-एक दोनों बच्चों को दे देना । ...कैथरीन के लिए आरसी ले जाना, दादी वाली...एक गुलाबजली है, तेरे पिता के हिस्से की मेरे पास ...हिस्सा कैसा... निशानी है अपने खानदान की ।...मुकुट तेरी दादी ने गोमती को दे दिया था । ...काहे की निशानी...खानदान बनते हैं टूट जाते हैं । ...कोई कहीं चला जाता है, कोई कहीं । बिखर जाते हैं सब । दुनिया का मेला बिछुड़ जाता है ।' बोलते-बोलते रोने लगे हैं । मैंने इन्हें रोते हुए आज पहली बार देखा है । वह तो गोमती को विदा करते समय भी नहीं रोये थे ।

आंसू पोंछते हुए कहते हैं, 'अपनी चाची से कह भूरू को थोड़ा-सा दूध और पानी दे दे । शायद कुछ खा ही ले ।'

बहन गोमती आकर बताती है कि भूरू के शरीर से तो गंध आ रही है । चाचाजी का चेहरा एकदम उदास हो गया है । मेरा खयाल है उनको महसूस होने लगा होगा कि उनके शरीर से भी गंध आने लगी होगी । ...मेरे लिए लिखना मुश्किल होता जा रहा है ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

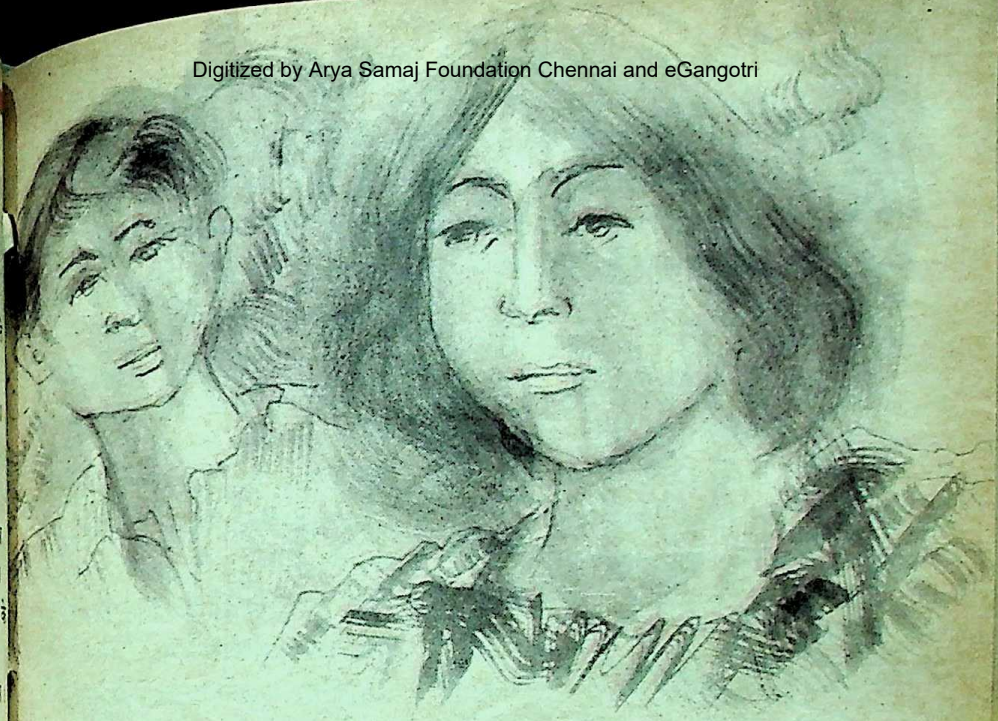

'मेरा मुंह सूजने तो नहीं लगा ?' वह पूछते हैं।

'नहीं, मुझे तो पहले से बेहतर लगता है ।'

'अच्छा ।...' वे हैरानी से लंबा सांस खींचकर कहते हैं । जरा सुर में बोलते हैं, 'अर्जुन छेड़ गडीरना... भली करेंगे राम... ।' और अपने चेहरे की सूजन को हाथ से छूकर महसूस करने की कोशिश करते हैं ।

'अर्जुन छेड़ गडीरना' यह बोल हमारे इलाके के एक भूले-बिसरे कवि की लिखी, 'महाभारत' जिसमें भगवान कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं कि तू अपने रथ युद्ध-भूमि की ओर ले चल, राम भली करेंगे । ...मगर इसके साथ चाचाजी का इशारा दूसरे लोक में जाने की ओर होता है ।

'नींद कैसी आयी ?' मैं चाचाजी से पूछता हूं।

वे फारसी का एक शेर पढ़ते हैं । जिसका अर्थ है— जब मैं जागता हूं तो मुझे सोचें तंग करती हैं । जब सोता हूं तो सपने परेशान करते हैं । एक ही सपना बार-बार आता है । आंख लगती है तो एक कुआं दिखायी देता है । अंधा कुआं । मैं मेढ़ पर बैठा हूं, ईंटें थामकर । कोई शक्ति मुझे अंदर धकेल रही है । मैं मेढ़ से चिपट जाता हूं । वह शक्ति मुझे ईंटों समेत अंदर धकेल देती है । ...झटके से मेरी आंख खुल जाती है । जागने पर मेरी उखड़ी हुई सांसें काबू में नहीं आतीं ।

'आप गोमती और चाचाजी की चिंता न करें ।' मैं बात का रुख बदलने का प्रयत्न करता हूं ।

'अच्छा ।' कहकर उन्होंने मक्खियों से बचने के लिए अपना जर्जर शरीर चादर में छिपा लिया । ...गोमती दूध लेकर आयी है । पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीना नहीं चाहते । ...चाची पाठ करते हुए एक नजर उन्हें देखकर लौट गयी है ।

'भतीजे...मेरी वसीयत लिख दे ।' वह मेरी ओर करवट लेकर कहते हैं । आंखें बंद करके बोलते हैं ।

'लिख मेरे मरने के बाद मेरी हर चीज की वारिस ठकुराइन होगी । ...इसके बाद गोमती । ...मेरे मरने के बाद किसी भी ब्राह्मण को कोई दान-पुण्य न किया जाए । मेरी अस्थियां गंगा में नहीं सतलुज में प्रवाहित की जाएं । जहां भगतसिंह की प्रवाहित की गयी थीं । ...जो दो बीघे जमीन है वह बेचकर अपनी चाची को दे देना । ...एक मेरी एफ.डी. है । अच्छी-खासी रकम है । वह मैं तुझे दे रहा हूं । ...उसके सूद से गांव के बच्चों को किताबें ले दिया करना । ...रिजल्ट आने पर हर साल अपने गांव आना । ...इस घर के एक हिस्से में लायब्रेरी बना देना । ...उसका नाम अपने दादा के नाम से रखना । मगर साथ में 'पंडित' शब्द नहीं लगाना ...हकीम लंबू राम लिखना । ...हर साल अपने देश, अपने गांव मानूपुर जरूर आना । ...भूलना नहीं इस धरती को, इस मिट्टी को ...ओ ओ ओ ...

बोलते-बोलते चाचाजी रो पड़े हैं । वह भूल गये हैं कि वे वसीयत लिखवा रहे थे । दरअसल वे वसीयत लिखवा ही नहीं रहे थे । वे तो अपने अंदर पैदा हुआ गुबार निकाल रहे थे । कैथरीन तुझे याद है, एक रात शराब के नशे में मैं अकेला पड़ा बोलता जा रहा था— 'सेह सलौदी सखरपुर...गोह, गोसला, मानपुर ।' तुम इसे पंजाबी का लोकगीत समझती रही । तब तुम कितनी हैरान हुई थी जब मैंने बताया कि यह लोकगीत नहीं है । ये मेरे गांव के आसपास के छह गांवों के नाम हैं जो इसी तरह से एक साथ लिए जाते हैं । तुम्हें लोकगीत होने का भ्रम इसलिए हो गया था कि मैं लय में बोल रहा था । मेरे इन गांवों के नाम मेरे अंतर्मन से मोह का सुर बनकर निकल रहे थे । लोकगीत ऐसे ही बनते हैं । यही हमारे पिछड़े देशों की पूंजी है । प्यारी कैथी ...मेरी और चाचा की यह बातें बहुत भावुक-सी हैं पागलों-सी । समझदार तथा पढ़े-लिखे लोगों को मूरखोंवाली भी लग सकती हैं । ...मगर इस धरती पर, इस घर में अगर मुझे मरना पड़े तो मेरा मन भी कम-से-कम इस समय— कर रहा है कि मैं भी ऐसी ही बातें करूं ।

तुम भी अपनी धरती पर शायद ऐसा ही कुछ सोचती होगी ।

कितना सुख और स्वाद है इस सोच में । ...कितना दुख भी मिला हुआ है ।

मैं नहीं चाहता कि मल्लिका के चांदी के रुपये लाकर मैं अपने बच्चों को यह सुख और दुख दूं और फिर वह अपने बच्चों को दें । इस विषय में तुम्हारा क्या खयाल है ।

तुम्हारा
गुरुदेव

अनु.— मनजीत कौर भाटिया

सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी फिल्म अभिनेता पितरी मिसी में जहां अभिनय संबंधी अनेक विशेषताएं थी, वहीं उसमें कई अभूतपूर्व चमत्कारिक विशेषताएं भी थीं । वह अपनी इच्छानुसार शरीर के किसी भी हिस्से का कोई भी बाल हिला सकता था, बाल की नोक को खड़ा कर सकता था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

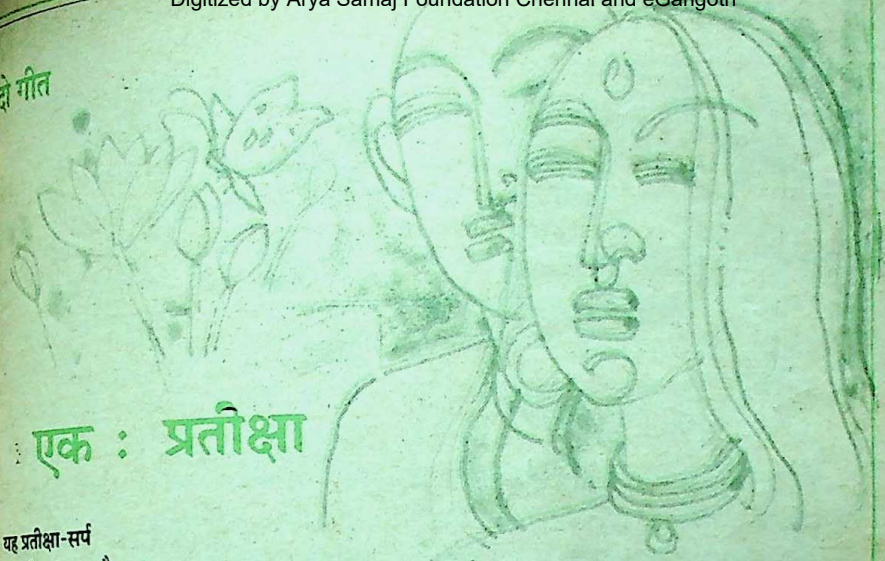

एक : प्रतीक्षा

यह प्रतीक्षा-सर्प
मुझको कस रहा है
मोरपंखी !
अब घटा दो फासिले

वक्त की कोमल शिराएं
छटपटाकर
अब चिटखने लग गयीं
छंदभीगी भावनाएं
पत्थरों पर
सिर पटकने लग गयीं

यह समीक्षा-सर्प
मुझको डंस रहा है
मोरपंखी !
अब मिटा दो फासिले

दो : मौन हैं

गूंजता है
सांझ का परिवेश
फिर भी मौन हैं
हम-तुम

कान देकर सुनो
सन्नाटा यहां पर गुनगुनाता है
एक गूंगा छंद
दिल के बीच बैठा कुनमुनाता है
गूंजती है
प्रणय-गाथा शेष
फिर भी मौन हैं हम-तुम
चकित होकर पूछता हूं आज
बोलो कौन हैं हम-तुम

—उद्भ्रांत
सहायक केंद्र निदेशक
दूरदर्शन केंद्र
वर्ली, बंबई-४०००२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय रोग और गुलाब

● कविराज कमलेश्वर प्रसाद बेंजवाल

रक्त के आधार एवं रक्त का समस्त शरीर में परिचालन करनेवाले यंत्र विशेष को हृदय कहते हैं, यह अनैच्छिक पेशियों का बना हुआ होता है और वक्ष प्राचीर के अंदर दोनों फुप्फुसों के मध्य में अवस्थित रहता है । युवा पुरुष का हृदय लगभग ५½ इंच लंबा ३½ इंच चौड़ा और २½ इंच मोटा होता है । इसका भार ९ से १० औंस (लगभग पांच छटांक) होता है । स्त्रियों में इसका आकार तथा भार अपेक्षाकृत कम होता है । हृदय की आकृति बंद की हुई मुट्ठी के समान होती है । इसका अधिकांश भाग वक्ष के वाम भाग में अवस्थित है । इसके दोनों ओर वाम और दक्षिण फुप्फुस रहते हैं । वाम पार्श्व के फुप्फुस में इसके अधिक सान्निध्य के कारण एक गर्त बना रहता है, इसे हार्दिक खाता कहते हैं ।

हृदय के उपरोक्त सब अंगों की प्राकृतिक क्रिया होते रहने पर मनुष्य स्वस्थ रहता है । इनमें से किसी के भी विकृत होने पर हृदय का कार्य विकृत हो जाता है । इसलिए हृदय का रोग हो जाता है ।

आयुर्वेद शास्त्रों में लगातार अधिक गुरु पदार्थों का सेवन करना, भारी भोजन अर्थात में पचनेवाले पदार्थों का सेवन करना, कषाय अथवा कड़वे पदार्थों का अधिक सेवन करना अधिक परिश्रम, शरीर के भाग में चोट लगना अजीर्ण, अधिक चिंता करना तथा मल-मूत्र भूख-प्यास, जंभाई इत्यादि वेगों को रोकना इत्यादि कारणों से पांच प्रकार के हृदय रोग उत्पन्न होते हैं ।

हिस्टीरिया, सिर पर चोट लगना, मस्तिष्क रोग, कामला, रसौली, वेदना, थकावट, कुष्ठ हृदय के विकार, टायफाइड, गठिया, डिप्थीरिया, इंफ्लुएंजा, मधुमेह, उपवास, अन्न भोजन, भय, मनोविकार, बहु-नाड़ी प्रदाह, संक्रामक रोग, पांडुरोग, थायरायड ग्लैंड, तंबाकू, मदिरा, चाय, कॉफी का अधिक सेवन करना, रूमेटिक फीवर, वृक्क रोग, दिन-रात रहना, मोटापा रोग, आतशक व अन्य कई प्रकार के संक्रामक रोगों के कारण हृदय रोग उत्पन्न हो जाते हैं । वातिक, पैतिक, श्लैष्मिक सन्निपातिक तथा कृमिज भेद से पांच प्रकार

हृदय और गुलाब का परस्पर घनिष्ठ संबंध है । गुलाब दिल और दिमाग को अपने सुंदर रंग और गंध एवं कोमल पंखुड़ियों से आकर्षित करता है । औषध के रूप में भी इसकी पंखुड़ियों का प्रयोग पूर्व समय से होता आ रहा है । औषध के रूप में सेवती गुलाब अधिक प्रयोग में लाया जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय रोग बतलाये हैं। जैसे अत्यधिक उष्ण पदार्थों के सेवन से पैत्तिक हृदरोग होता है। गुरु तथा भारी भोजन करने से कफज रोग होता है। शेष अन्य कारणों से वातिक हृद रोग बढ़ता है। कृमिवर्धक अन्न सेवन से कृमिज हृद्रोग होता है। अधिक चिंता करनेवाले एवं संपन्न व्यक्तियों में चिंतनजन्य हृदरोग बहुत पाया जाता है। आजकल बुद्धिजीवी वर्ग इस रोग से अधिक पीड़ित हैं। अधिकांश राजनीतिक नेता हृदरोग से पीड़ित हैं। उच्च रक्तचाप व मधुमेह भी मुख्य कारण हैं।

हृदय रोग के सामान्य लक्षण :

उपरोक्त लिखे कारणों से प्रभावित दोष (वात, पित्त, कफ) इसको दूषित करके इसी को हृदय रोग कहते हैं।

पैवण्य : इसमें पांडुता, श्यामता, कपोलारुण्य तीनों का समावेश है। पांडुता रक्ताल्पता का द्योतक है। जो हृत्कपाटों की विकृति से होता है। हेमोग्लोबिन (शोष्णवर्तुलि) की कमी से श्यावता आती है। इसकी प्रतीति ओष्ठ, नख, नासाग्र किंचित काले पड़ने लगते हैं। इसका कारण सिरागत रक्तावरोध हैं। कपोलारुण्य का कारण द्विपत्रक संकोच है।

मूर्छा : हृदय जन्य श्वास का विशेष लक्षण है।

ज्वर : आमवात जन्य या औपसर्गिक हृदंतःकला शोथ का प्रधान लक्षण है। कास, हिक्का तथा श्वास अवरोधजन्य लक्षण में होता है। द्विपत्रक संकोच में रक्त का वमन भी होता है। हृदयवाहिनी की घनास्रता (कौरोनरी थ्रोम्बोसिस) में —वमन, अरुचि, तथा श्वासकृच्छता के लक्षण मिलते हैं।

हृदय में वात की अधिकता होने पर —हृदय में खिचावट, सुई जैसे चुभने की पीड़ा या ऐसा प्रतीत होना मानो कोई हृदय को चीर रहा हो या डंडे से मथ रहा हो। वातिक हृदय रोग में पीड़ा अधिक होती है। साथ ही कंपन भी होती है।

पैत्ति हृदय रोग : गरमी लगना, प्यास, जलन, चोष, घबराहट, मूर्छा, पसीना आना व मुख सूखना इत्यादि लक्षण होते हैं।

कफज हृदय रोग में : भारीपन, मुख से लालस्राव, अरुचि, हृदय में जकड़ाहट व अग्निमांद्य व मुख का स्वाद मधुर रहता है।

त्रिदोषज हृदय रोग में : उपरोक्त तीनों दोषों के लक्षण त्रिदोषज हृदय लक्षण रहते हैं।

कृमिज हृदय रोग में : शरीर में खुजली, तीव्र पीड़ा, वमन की प्रतीति, बार-बार थूकने की प्रवृत्ति, शूल, मिचली, आंखों के सामने अंधेरा, अरुचि, आंखों में मलिनता तथा शोथ आदि लक्षण प्रकट होते हैं। शरीर में बिना परिश्रम के थकावट होना, अवसाद, भ्रम व शोथ होना उपद्रव लक्षण हैं। आजकल हृदय के रोग निम्न नामों से अधिक जाने जाते हैं। ब्रैडीकार्डिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेकीकार्डिया, हाइपट्रोफी आफ हार्ट, डाइलेटेशन आफ हार्ट, मायोकार्डाइटिस, पैरिकार्डाइटिस, एंडोकार्डाइटिस, अंजाइना, पैक्टोरिस इत्यादि ।

चिकित्सा :

१. हृदय रोग का बोध होते ही अपने निजी चिकित्सक से तत्काल ही संपर्क करना चाहिए अथवा नगर के प्रतिष्ठित हृदय रोग विशेषज्ञ को बुलाना चाहिए । यदि आवश्यक हो तो शीघ्र हृदय रोग गहन कक्ष में रोगी को ले जाना चाहिए ।

२. हृदय रोग से ग्रसित रोगी का कक्ष साफ-सुथरा, शीतल, सुगंधित, पुष्पों से शोभायमान युक्त होना चाहिए ।

३. रोगी के शरीर पर ढीले साफ-सुथरे वस्त्र होने चाहिए ।

४. रोगी की देखरेख हेतु अत्यंत स्नेही व्यक्ति, शांत स्वभाव, मृदु वाणी बोलनेवाला व्यक्ति व रोगी के प्रति अनुराग रखता हो ।

५. रोगी का चिकित्सक बुद्धिजीवी शास्त्रों का ज्ञाता अनुभवी रोगी के प्रति सहानुभूति रखता हो, निडर, स्वाभिमानी, विपत्ति की स्थिति में भी धैर्य धारण करनेवाला व रोगियों का कल्याण चाहनेवाला हो ।

६. रोगी धनाढ्य हो, आज्ञाकारी हो, अपने चिकित्सक के प्रति श्रद्धा भक्ति रखता हो । रोगी अपने चिकित्सक से अत्यंत गुप्त बात भी कर सके ऐसा प्यार युक्त वातावरण हो ।

७. रोगी के सगे-संबंधी रोगी के सामने ऐसी कोई बात न करें जो रोगी के प्रति लाभदायक न हो । रोगी को गुस्सा दिलाना, चिंता करना, आर्थिक व पारिवारिक कष्टों का वातावरण रखना या जो वातावरण रोगी के अनुकूल न हो ऐसी समस्या उत्पन्न नहीं करना चाहिए ।

८. रोगी को शीघ्र सुपाच्य भोजन देना चाहिए ।

९. चाय, कॉफी, मदिरा, अत्यधिक मिर्च, मसाले, क्रोध, अधिक नमक, गरिष्ठ भोजन जैसे तला हुआ पनीर, पूरी, पकौड़े, परौंठे, छोले, कुलचे व बड़े होटलों में पका हुआ भोजन या शादी-विवाह में मिलनेवाला भोजन से दूर रहना चाहिए।

१०. अधिक सुख की चाह करना अथवा अधिक सुख मिलने पर दिल की बीमारियां अधिक होती हैं ।

शास्त्रोक्त चिकित्सा :

चिकित्सा करने से पूर्व निम्न बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए । हृदय के रोगी को कब्ज न होने पाये, मूत्र प्रवृत्ति सामान्य रहे । पेट में गैस न बने व भय, चिंता से मुक्त रहे । उच्च रक्तचाप व मधुमेह का विशेष ध्यान दे ।

उपचार :

वातिक हृदय रोग में शूल की अधिकता होती है । अतः रोगी को दशमूल क्वाथ व अर्जुन छाल चूर्ण व शालपर्णि सिद्ध दूध पथ्य में देना चाहिए । घिया, टिंडा, तोरी, परवल, मूंग की दाल, चपाती, दलिया व खिचड़ी ही देनी चाहिए । फलों का रस विशेषकर अनार का जूस लाभदायक है । आंवले का मुरब्बा, पेठा, कच्चा नारियल, कच्चा पनीर, मुनक्का, मिसरी, छोटी इलायची व पान लाभदायक है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१.	योगेंद्ररस	१२५ मि.ग्रा.	प्रातः
	अकीक	१२५ मि.ग्रा.	
	प्रवालपिष्टी	१२५ मि.ग्रा.	
	देवचूर्ण	१ ग्रा.	दूध से
	चंदनपिष्टि	२५० ग्रा.	
	मुक्तापिष्टि	१२५ ग्रा.	सायं
२.	दशमूलारिष्ट	३ चम्मच	समान जल मिलाकर
	अर्जुनारिष्ट	३ चम्मच	भोजन के बाद
३.	नागार्जुनाभ्ररस	१ मि.ग्रा.	
	स्वर्णमाक्षिक	१२५ ग्रा.	
	पुष्करमूल	१ ग्रा.	
	कणामूल	१ ग्रा.	१ मात्रा रात्रि सोते समय
४.	आरोग्यवर्धिनी	१ गो.	
	कुटकी	१ ग्रा.	
	श्वेतपर्पटी	२५० ग्रा.	भोजन से पूर्व
१.	याकूति	१२५ ग्रा.	
	प्रभाकरवटी	१ गो.	
	मुक्ताशुक्ति	२५० ग्रा.	
	पंचक्षीरित्वकचूर्ण	१ ग्रा.	
	धात्रीलौह	५०० ग्रा.	
२.	खमीरा मरवारीद वृहत वा तचिंतामणि	½ चम्मच १२५ ग्रा.	प्रातः-सायं
३.	स्वर्णमाक्षिक	२०० ग्रा.	
	सर्पगंधा	३०० ग्रा.	१ मात्रा रात्रि

हृदय रोग और सेवती गुलाब द्वारा चिकित्सा :

हृदय और गुलाब का परस्पर घनिष्ठ संबंध

है । गुलाब दिल और दिमाग को अपने सुंदर रंग, गंध एवं कोमल पंखुड़ियों से आकर्षित करता है । गुलाब को बालों में लगानेवाले अथवा अपने हृदय प्रदेश में टांकनेवाले हमेशा शांत स्वभाव, शीतल प्रकृति एवं वर्ण (मुख की सुंदरता) को उत्तम बनाने में लाभकारी हैं । इसलिए यह सर्वप्रिय व आदरणीय हैं, कहते हैं प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में गुलाब का नाम नहीं पाया जाता, इसलिए यह विदेशी फूल है, पर हिंदी भाषा के प्राचीन कई कवियों ने निज ग्रंथों में इसका नाम लिखा है । प्रेम प्रसंगों को जोड़ने में गुलाब का स्थान सर्वश्रेष्ठ है । इस समय इस देश में अनेक प्रकार के गुलाब हो गये हैं, अरब और तुर्किस्तान का गुलाब अच्छा समझा जाता है । इसके फूल गुलाबी, पीले, लाल व सफेद होते हैं । इससे मनोहर सुगंध निकलती है । इसका स्वाद फीका किंचित कसैला और हलका मीठा होता है । सहारनपुर व कलकत्ता का गुलाब अच्छा होता है । गुलाब का फूल सुप्रसिद्ध है इसके पत्ते अंडाकार अनीरदार होते हैं । शाखाओं पर कांटे होते हैं । गुलाब फूल से गुलकंद, गुलाब के इत्र, गुलाब जल आदि अनेक उपयोगी वस्तु तैयार किये जाते हैं । औषध के रूप में भी इसकी पंखुड़ियों का प्रयोग पूर्व समय से होताआ रहा है । सेवती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाब एक प्राचीन और प्रसिद्ध फूल हैं । यह वन-उपवन और वाटिकाओं में लगायी जाती हैं । इसके पत्ते और फूलों के दल गुलाब से मिलते-जुलते हैं । गुलाब के समान इसकी डालियों पर कांटे होते हैं । फूल प्रायः सफेद रंग का होता है । इसमें गुलाब के समान गंध आती है । छोटे-बड़े, सफेद, पीले तथा नारंगी रंग भेदों से कई प्रकार के होते हैं । सेवती, गुलाब की असली पहचान उसकी मनोहर सुगंध है यह ४०-५० मीटर के वृत्त में अपनी गंध से प्राणियों को आकर्षित करती हैं । मधुमक्खी को यह फूल बहुत प्रिय हैं । श्रेष्ठ सेवती गुलाब मैदानी भागों में नहीं होता । उसकी अन्य जातियां पायी जाती हैं । यह समुद्रतट से २००० फीट ऊंचाई से ८००० फीट ऊंचाई तक पाया जाता है । हिमालय पर्वत के उन भागों में जो पहाड़ों की गहरी घाटियां हैं । जहां पर शीतल युक्त वातावरण रहता है । मार्च व अप्रैल माह में इसके फूलों को इकट्ठा किया जाता है । लगभग ८० किलो फूलों से २५० ग्रा. चाककेशरा सत्व तैयार किया जाता है । इसकी भीनी-भीनी खुशबू हृदय को अति प्रियकर लगती है । इसलिए इसका नाम गंधाढया भी है । जो महिलाएं सर्वगुण संपन्न हों और वह स्वस्थ अवस्था में भी चारुकेशर सत्व १ ग्रा. प्रातः दोपहर सायं नियमित लेते रहें तो ५०-६० वर्ष की अवस्था में भी तरुणी (जवान) देखी जाती हैं । चारुकेशर सत्व खानेवाली महिला अपने अंग, प्रत्यंग, स्वभाव व चाल से हजारों स्त्रियों में अलग पहचानी जाती है । इसलिए राजवैद्य पूर्वकालों में बाला, तरुणी, महारानियां, देवदासियों, नृत्यांगना, विषकन्याओं पर इस प्रकार के प्रयोग करते थे ।

गुण :

इसके प्रयोग करने से शरीर शीतल, हृदय के लिए हितकर (किसी भी प्रकार के हृदय रोग पर लाभदायक) मल को बांधकर लानेवाला, शुक्रजन्य (वीर्यवर्धक) लघु (शीघ्र पचनेवाला) वात, पित्त, कफ तीनों दोषों को दूर करनेवाला, रक्तविकार में अत्यंत लाभदायक, शरीर के वर्ण को उत्तम करनेवाला कटु तथा तिक्त रस युक्त पाचक होती है । ट्रेकिकार्डिया की स्थिति में सेवती गुलाब पुष्प स्वरस ४० मि.ग्रा. पीने से रोगी को लाभ मिलता है । यह पाचक है । घबराहट तत्काल कम होती है । मल-मूत्र विसर्जन ठीक प्रकार से होता है । गैस नहीं बनती । पेशाब खुलकर आता है । हृदय रोगी को रक्त, वमन, कास लगना, मुख सूखना, मूर्छा आना, चक्कर, आंखों के सामने अंधेरा आना, तीव्र घबराहट, माथे पर पसीना आना और ओष्ठ, नख व नासा का अग्रभाग किंचित काला पड़ना, ऐसी स्थिति में मुक्तापिष्टि (बसरे का मोती) १२ मि.ग्रा., चारुकेशर सत्व १ ग्रा. +चंदनपिष्टि २५० मि.ग्रा., तुलसी सत्व, १२५ मि.ग्रा. व पंचक्षीरीत्वक चूर्ण १ ग्रा. देना चाहिए । तत्काल लाभ मिलता है । यह २४ वर्षों के चिकित्सा अनुभव से प्राप्त किया ।

यदि हृदय रोग में शूल की तीव्रता हो तो पुष्करमूल १ ग्रा., याकूति १२ ग्रा., श्रृंग ३०० ग्रा. अर्जुन चूर्ण, १ ग्रा. अकीकपिष्टि १२५ ग्रा., सेवती गुलाब स्वरस ४० ग्रा. देना चाहिए । ३-३ घंटे पर सुरसा स्वरस की २-२ चम्मच अवश्य देना चाहिए । अंजाइना पैक्टोरिस में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति लाभदायक है । यदि रोगी २० वर्ष से ४० वर्ष के बीच के हों हृदय रोग के साथ क्षय रोग से भी हों और नाड़ी गति १२०-१३० तक हो तो सेवती गुलाब स्वरस २० मि.ग्रा. +वासा स्वरस २० मि.ग्रा. + तुम्बुरु (तेजबल) त्वकस्वरस १ चम्मच, मदियन्तिका स्वरस १ चम्मच +शहद ४ चम्मच घोलकर दिन में २ बार प्रातः ८-९ व सायं ४ से ६ बजे के बीच में पिलाना चाहिए । इससे क्षय व हृदय विकार के कारण मुख व नासिका से आनेवाला रक्त बंद हो जाता है ।

गर्भवती स्त्रियों के लिए चारुकेशर सत्व, श्वेत चंदन पिष्टि + अमृतासत्व + वंशलोचन + छोटी इलायची चूर्ण को गुलाबजल में ७ दिन तक घोटकर ४-४ रत्ती की गोली बनाकर लेने से उत्क्लेश, (वमन की प्रतीति या वमन) होने में लाभ मिलता है और जन्म लेनेवाला बच्चा गोरा व अति सुंदर होता है । कामला (जौंडिस) रोग होने पर जब नख, नेत्र, मूत्र पीतवर्ण युक्त, त्वचा में कण्डु (खुजली), चक्कर आना, भूख न लगना, वमन की प्रवृत्ति व पेट फूलना, मूत्र कम होना तथा रक्त की दुर्बलता में लाभदायक है ।

चारुकेशर सत्व अथवा सेवती गुलाब स्वरस को दूध में मिलाकर पीने से मुख की झाई, मुहांसे व मुख की रुक्षता में लाभ करता है ।

शीतलचीनी + आमलकी + अमृतासत्व + वंगभस्म व चारुकेखरा सत्व का योग शीघ्रपतन में लाभदायक है । इससे मूत्र की जलन, मूत्र बूंद-बूंदकर होना, स्वप्नदोष में लाभ करता है ।

—श्री मूलचंद खैरातीराम अस्पताल,
लाजपतनगर, नयी दिल्ली-११००२४

इनके भी बयां जुदा-जुदा

रुके तो चांद, चले तो हवाओं जैसा था
वह शख्स धूप में देखूं तो छांव जैसा था
—परवीन शाकर

मुझको भी शौक था नये चेहरों की दीद का
रास्ता बदल के चलने की आदत उसे भी थी
—मोहसन नकवी

नगमें से जब फूल खिलेंगे चुननेवाले चुन लेंगे
सुननेवाले सुन लेंगे तू अपनी धुन में गाता जा
—हसरत मुआनी

दुनिया ने बेशुमार अदम को दिये हैं रंज
ए दोस्त ! तू भी चीज कोई यादगार दे
—अब्दुल मजीद अदम

कब मुझको एतराफे मुहब्बत न था फराज़
कब मैंने यह कहा था सजाएं न दो मुझे
—अहमद फराज़

चाहा था जिसको हमने बड़ी चाहतों के बाद
वह भी बदल गया है बदलती रुतों के बाद
—रशीद तबस्सुम

हम इससे बढ़के और करें क्या तेरा खयाल
नफरत भी तेरी हमने मुहब्बत शुमार की
—हसनीन बुखारी

बिजली कभी गिरी कभी सैयाद आ गया
हमने तो चार दिन भी न देखे बहार के
—कमर जलालवी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या पौराणिक युग में मौखिक आदेश माननेवाली कंप्यूटर प्रणाली थी ?

● डॉ. एम.एल. खरे

कंप्यूटर आधुनिक युग की विलक्षण देन है । जो लोग इसका उपयोग करते हैं, वे जानते हैं कि इससे काम लेने के लिए एक विशेष विधि से इसे आदेश (कमांड) दिये जाते हैं । आदेश देने का काम आजकल एक कुंजीपटल (की-बोर्ड) द्वारा किया जाता है । टाइप राइटर की भांति कुंजियां दबाकर आदेश अंकित किया जाता है, जो दृश्य-पटल (मॉनीटर) पर दिखायी देता है । यदि आदेश त्रुटिपूर्ण हो तो कंप्यूटर उसे स्वीकार नहीं करता ।

आदेश देने का एक निर्धारित एवं सुनिश्चित विधि-विधान होता है । इसमें अर्धविराम, पूर्णविराम तथा सेमीकोलन-जैसे संकेतों का भी बड़ा महत्त्व है । जो जहां चाहिए वह यदि छूट जाए या एक की जगह दूसरा चिह्न लगा दिया जाए तो आदेश त्रुटिपूर्ण हो जाता है और मॉनीटर पर 'सिंटेक्स इरर' लिखकर आ जाता है । अर्थात कंप्यूटर यह बता देता है कि आदेश ठीक प्रकार से नहीं दिया गया । इससे आदेश देनेवाला उसमें सुधार कर लेता है । तात्पर्य यह है कि कंप्यूटर को आदेश देने के लिए एक निर्धारित लीक पर चलना होता है, उसमें जरा-सा भी परिवर्तन या विचलन स्वीकार्य नहीं होता ।

मंत्रों द्वारा मौखिक आदेश :

भविष्य में ऐसे कंप्यूटर होने की कल्पना की जा सकती है, जिन्हें आदेश कुंजीपटल द्वारा देने के बजाय मौखिक रूप से दिये जा सकें । मौखिक आदेश किसी माइक्रोफोन द्वारा पहले विद्युत स्पंदों में परिवर्तित होंगे जो कंप्यूटर को उसकी भाषा में आदेश देंगे । इसके लिए कुछ निश्चित शब्दों अथवा शब्द समूहों को एक निर्दिष्ट विधि से उच्चारित करना होगा अन्यथा आदेश नहीं माना जाएगा । किसी शब्द की जगह उसके पर्याय से काम नहीं चलेगा । कंप्यूटर को दिये जानेवाले मौखिक आदेश बहुत कुछ फौज को दिये जानेवाले आदेशों-जैसे होंगे, जिनमें न केवल शब्द बल्कि उनके बोलने का लहजा और ध्वनि-आघात भी महत्त्वपूर्ण होता है । आदेश के शब्द-समूहों को निर्धारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक कथाओं में इस बात का कई स्थानों पर उल्लेख है कि अमुक देवता ने प्रसन्न होकर अमुक साधक या तपस्वी को ब्रह्मास्त्र या कोई अन्य दिव्यास्त्र दे दिया । यह आयुध कंप्यूटर नियंत्रित आधुनिक नाभिकीय प्रक्षेपास्त्रों-जैसे महाशक्तिशाली, महाविनाशी और अचूक होते होंगे । अंतर केवल इतना होगा कि बटन दबाने के बजाय दैवी कंप्यूटर मौखिक आदेशों से संचालित होते होंगे ।

क्रम और ढंग से बोलना होगा । यदि 'खुल जा सिमसिम' कहना है तो 'सिमसिम खुल जा' या 'खुल जाओ सिमसिम' कहने से गुफा का दरवाजा नहीं खुलेगा । आदेश को विशेष क्रम और ढंग से उच्चारित करना बहुत कुछ मंत्रोच्चार-जैसा रहेगा ।

हमारे यहां विभिन्न देवी-देवताओं के लिए अनेक प्रकार के मंत्र हैं । प्रत्येक देवता के लिए न केवल मंत्र पृथक है, वरन् उसका विधान भी विशिष्ट है । तो क्या देवताओं से संपर्क स्थापित करने के लिए पौराणिक काल में मौखिक आदेश माननेवाली कंप्यूटर प्रणाली थी ? कंप्यूटर की कार्यविधि और मंत्रों का शब्द-विन्यास देखकर तो लगता है कि शायद ऐसा ही था । कदाचित उस युग में किसी केंद्रीय स्थान पर सुपर कंप्यूटर होगा जिसके टर्मिनल विभिन्न साधकों के पास होते होंगे । प्रत्येक देवता के लिए कुछ संकेत शब्द (कोड वर्ड्स) निर्धारित रहे होंगे जो सूत्रों और मंत्रों के रूप में आज भी विद्यमान हैं ।

संकेत शब्द और बीजाक्षर :

कंप्यूटर का उपयोग करनेवाले लोग आजकल ऐसे अनेक शब्दों (जैसे रेम, रोम, बिट, बाइट, बूट आदि) का इस्तेमाल करते हैं, जिनका अंगरेजी या किसी अन्य भाषा में या तो कोई अर्थ नहीं होता या फिर कंप्यूटर में उनका उपयोग उनके प्रचलित अर्थ में नहीं होता । वे वास्तव में कुछ शब्द समूहों का लघु रूप हैं जिनका पूरा अर्थ कंप्यूटरवाले ही जानते हैं । इनकी तुलना में मंत्रों में प्रयुक्त होनेवाले बीजाक्षरों यथा ह्रीं, क्लीं, श्रीं, प्रां, ऐं आदि से की जा सकती है । बीजाक्षरों का उपयोग मुख्यतः मंत्र के प्रारंभ में होता है, जो यह दर्शाता है कि इन्हें संकेत शब्दों की भांति लिया जाता रहा होगा । प्रत्येक देवता के लिए इनका निश्चित विधान है । उदाहरण के लिए किसी को तीन बार श्री तो किसी को पांच बार या १००८ श्री लगाने की परंपरा है । प्रत्येक वैदिक मंत्र 'ॐ' से शुरू होता है जो यह दर्शाता है कि मंत्र बोला जानेवाला है । इसी प्रकार कभी-कभी मंत्र की समाप्ति पर कुछ विशेष शब्द (जैसे कि 'फट्') लगाया जाता है । यह कुछ वैसा ही है जैसे वायरलेस में कथन की समाप्ति पर 'ओवर' कहना ।

मंत्र का सिद्ध होना :

देवताओं से संपर्क साधने के लिए केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्र जान लेना पर्याप्त नहीं होता, मंत्र को सिद्ध भी होना चाहिए । सिद्ध करने का अर्थ उसका सही और शुद्ध पाठ करने से रहा होगा । मंत्र के शुद्ध पाठ में तीन बातें निहित हैं । एक तो उच्चारण का अक्षरशः और शब्दशः सही होना, दूसरे उसकी निर्धारित लयात्मकता का निर्वाह और तीसरे ध्वनि-आघात का यथास्थान निश्चित विन्यास के अनुरूप होना । तीनों को साधते हुए मंत्रपाठ कठिन क्रिया रही होगी । जब मंत्र पाठ द्वारा देव से संपर्क स्थापित हो, तो मंत्र सिद्ध कहा जाता होगा । सिद्धि प्राप्त करने के लिए मंत्र का बारंबार सही उच्चारण (जप) करके अभ्यास किया जाता होगा, जो किसी सिद्ध गुरु द्वारा सिखाया जाता होगा । गुरु के बिना मंत्र सिद्ध नहीं हो सकता ।

दैवी कंप्यूटर कैसे कार्य करते होंगे ?

ध्वनि तरंगें अधिक दूर तक नहीं जा पातीं । आधुनिक संचार प्रणाली में ध्वनि तरंगों (श्रव्य आवृत्तियों) को विद्युत चुंबकीय (रेडियो आवृत्तियों अथवा सूक्ष्म) तरंगों पर चढ़ाकर (इस क्रिया को मॉडुलेशन कहते हैं) प्रेषित किया जाता है । मौखिक आदेश माननेवाले कंप्यूटरों में भी इसी पद्धति को अपनाना होगा । कंप्यूटर टर्मिनल पर ध्वनि तरंगें माइक्रोफोन द्वारा विद्युत कंपनों में परिवर्तित होंगी । फिर वे उच्च आवृत्ति की रेडियो तरंगों को रूपांकित (मॉडुलेट) करके उन पर सवार हो जाएंगी और तब उच्च शक्ति के ट्रांसमीटर द्वारा प्रेषित की जा सकेंगी । इन्हें सुदूर स्थित मुख्य कंप्यूटर (मेनफ्रेम) ग्रहण करेगा । शायद इसी प्रकार की कुछ व्यवस्था दैवी कंप्यूटरों की रही होगी ।

मंत्रों द्वारा दैवी आयुधों तक पहुंच :

पौराणिक कथाओं में इस बात का कई स्थानों पर उल्लेख है कि अमुक देवता ने प्रसन्न होकर अमुक साधक या तपस्वी को ब्रह्मास्त्र, पाशुपतास्त्र-जैसा कोई दिव्यास्त्र दे दिया । यह आयुध कंप्यूटर नियंत्रित आधुनिक नाभिकीय प्रक्षेपणास्त्रों-जैसे महाशक्तिशाली, महाविनाशी और अचूक होते होंगे । अंतर केवल यह रहा होगा कि बटन दबाने के बजाय दैवी कंप्यूटर मौखिक आदेशों (मंत्रों) से संचालित होते होंगे । इनकी अपार क्षमता को देखते हुए यह आवश्यक था कि इन्हें चलाने का मंत्र अति गोपनीय रखा जाए ताकि इनका दुरुपयोग न हो । साधक को अस्त्र विशेष देने का अर्थ उसे वास्तव में अस्त्र प्रदान करने से नहीं बल्कि उसे संचालित करनेवाले मंत्र देने से रहा होगा । पौराणिक कथाओं में युद्धस्थल पर ऐसे अस्त्रों को ले जाने का शायद कहीं कोई उल्लेख नहीं है, किंतु उन्हें छोड़ने की बात कई स्थानों पर आती है । इससे लगता है कि यह अस्त्र किसी केंद्रीय स्थान या स्थानों पर रखे होंगे और कंप्यूटर प्रणाली द्वारा दूरसंचार विधि से मंत्रों की सहायता से संचालित होते होंगे । मंत्र केवल ऐसे ही साधकों को दिया जाता होगा जिन पर यह भरोसा हो कि वे अति आवश्यक होने पर ही इनका इस्तेमाल करेंगे, इनका दुरुपयोग नहीं करेंगे ।

मस्तिष्क तरंगों का उपयोग :

विकास की अगली कड़ी में मस्तिष्क तरंगों का उपयोग भी संभव है । मस्तिष्क तरंगों की प्रकृति भी विद्युत-चुंबकीय होती है, किंतु वे इतनी प्रबल नहीं होती कि दूर तक जा सकें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

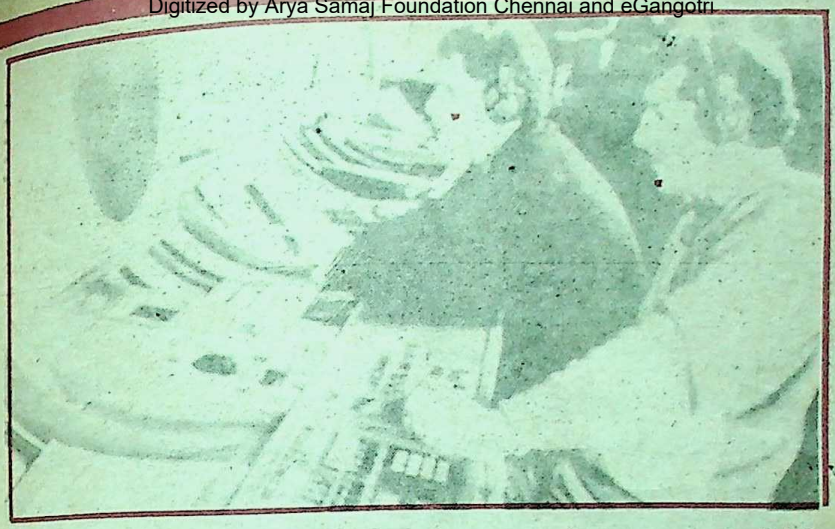

परंतु विशेष विधि से उनकी तीव्रता बढ़ायी जाने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता । अधिक तीव्रतावाली और अधिक आवृत्तिवाली तरंगें दूरगामी होती हैं (टेलीपैथी ऐसी ही तरंगों के माध्यम से होती होगी) । यदि यह मान लें कि मन को एकाग्र करके ध्यान, योग जैसी कुछ विशिष्ट क्रियाओं द्वारा मस्तिष्क तरंगों की तीव्रता बढ़ सकती है तो इनका उपयोग हो सकना संभव है । यदि इन तरंगों को वाहक तरंगें (कैरियर वेंव्ज) मानें तो मंत्रोच्चार द्वारा उत्पन्न श्रव्य संकेत (आडियो सिग्नल) इन्हें रूपांकित (मॉडुलेट) करने में समर्थ होना चाहिए । चूंकि मॉडुलेशन मस्तिष्क में ही होना है इसलिए न तो माइक्रोफोन की आवश्यकता है और न ही ट्रांसमीटर टर्मिनल की । साधक का मन-मस्तिष्क ही दोनों के कार्य कर सकेगा । इसके लिए मन और शरीर को विशेष रूप से प्रशिक्षित करके तैयार करने की आवश्यकता होगी । शायद यम, नियम, संयम और तप द्वारा यह संभव हो । इस स्थिति में कोई बाह्य उपकरण (माइक्रोफोन) न होने से मंत्र को जोर से उच्चारित करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए । उसका ध्वनि-रहित (केवल होंठ हिलाकर) उच्चारण पर्याप्त होना चाहिए । हो सकता है संचार की यह पद्धति पौराणिक युग में रही हो । मंत्रोच्चार को सही और प्रामाणिक बनाने के लिए जहां 'जप' की आवश्यकता है, वहीं उसे संप्रेषणीय बनाने के लिए शरीर को साधने (तप) की आवश्यकता रही होगी । इसीलिए हमारी साधना पद्धतियों में जप, तप का महत्त्व है ।

अभ्यास के लिए जप-तप करने पर प्रत्येक बार संपर्क जुड़ने से बड़ी असुविधा होनी चाहिए इसलिए संपर्क साधनें से पहले कुछ विशेष क्रियाएं (पूजा, कर्मकांड या अनुष्ठान) करने का विधान रहा होगा । जप, तप और अनुष्ठान आदि का एक पूरा तकनीक (तंत्र) विकसित किया गया होगा ।

यंत्रों की भूमिका :

मंत्र, तंत्र के साथ यंत्र भी जुड़े हुए हैं । तांत्रिक भाषा में यंत्र वे रेखाचित्र या ज्यामितीय आकृतियां हैं, जिनका उपयोग किसी विशेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धि के लिए किया जाता हैं । इनमें शब्दों का इतना महत्त्व नहीं होता जितना प्रतीक चिह्नों, अंकों और बीजाक्षरों का । इन यंत्रों की तुलना आधुनिक 'कंप्यूटर ग्राफिक्स' से की जा सकती है । मॉनीटर पर अंकित करके इन्हें उसी प्रकार प्रेषित किया जा सकता है जिस प्रकार अन्य दृश्य संकेत (वीडियो सिग्नल) जब यंत्र कंप्यूटर स्मृति (मेमोरी) में संचित नमूने से पूर्णतः मेल खा जाता होगा तब अभीष्ट कार्य संपादित होता होगा । विकास की अगली कड़ी में जब बाह्य उपकरण अनावश्यक हो गये होंगे तब इन यंत्र आकृतियों पर दृष्टि मात्र केंद्रित (त्राटक) करके इन्हें मस्तिष्क तरंगों पर आरूढ़ कराया जाता होगा ।

साधना की चरम स्थिति :

मात्र होंठ हिलाकर (ध्वनि रहित) मंत्रोच्चार से आगे की सीढ़ी है वह जिसमें होंठ हिलाने की भी जरूरत न पड़े । मंत्र को मन ही मन स्मरण करने (दोहराने) से ही मस्तिष्क में मॉडुलेशन की क्रिया संपन्न हो सके । इस प्रकार की सिद्धि विरलों को ही बड़ी कठिन तपस्या के उपरांत मिलती होगी । इससे भी आगे की स्थिति में केवल विचार मात्र से (विचार तरंगों द्वारा) संप्रेषण को प्रभावी बनाने की बात रही होगी । यह और भी कठिन होगा क्योंकि इसमें विचारों पर नियंत्रण रखना होगा । यदि इससे भी एक कदम आगे बढ़ें तो मन में उठनेवाले भावों द्वारा संप्रेषण की बात आती है । इसके लिए प्रबल भावातिरेक की आवश्यकता होगी परंतु न तो मंत्र की जरूरत रहेगी और न किसी भाषा की । यह साधना की चरमस्थिति होगी । इस विधि द्वारा देवताओं से संपर्क साधने का प्रावधान शायद नहीं था । इसे तो परमात्मा ने स्वयं उच्च संपर्क साधने के लिए सुरक्षित रख छोड़ा होगा ।

—एम.आई.जी. १३५ ब्लॉक नं. ५
सरस्वती नगर, जवाहर चौक
भोपाल-४६२००३

अब मनुष्यों पर

इंजेक्शन लगाकर दिमाग के कैंसर का इलाज करनेवाली 'लैबोरेटरी तकनीक' का इस्तेमाल शीघ्र ही मनुष्य के लिए किया जाएगा । यह इंजेक्शन एक 'जीन' के साथ लगाया जाता है, जो इसे 'एंटी हरपिस ड्रग' के खिलाफ संवेदनशील बनाता है । वाशिंगटन की राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्था में खरगोशों पर प्रयोग की गयी यह तकनीक सफल रही है । अब एन. आई. एच. डॉक्टरों का एक दल इस तकनीक को मनुष्य पर इस्तेमाल करने जा रहा है । इस खोज की रिपोर्ट के हवाले से डॉ. कल्वर का कहना है कि पेट के कैंसर के साथ-साथ इस तकनीक से दूसरे भी कई किस्म के कैंसरों का इलाज किया जा सकता है । डॉ. कल्वर ने बताया कि हरपिस वायरस के एक 'जीन' को सीधे तौर पर 'कैंसर-सेल' में बदला जाता है । यह जीन 'एंटी वायरल ड्रग' के प्रति संवेदनशील होता है, तत्पश्चात 'हरपिस वायरस जीन को ट्यूमर सेल में भेजा जाता है, इससे ट्यूमर, हरपिस वायरस के गुणों में परिवर्तित हो जाता है । उसके बाद हम ट्यूमर को खत्म कर डालते हैं । कल्वर का कहना है कि जीन आत्मघाती बम का काम करता है । ट्यूमर सेल को अपनी संरचना में शामिल कर लेता है, ट्यूमर सेल की ही मृत्यु हो जाती है ।

सुबोध सहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़ देखता है

● सुदर्शन वशिष्ठ

जब शहर की सड़कों पर मेंहदी रचे पांव फूलों की तरह उगते हैं, तब-तब वह पागल हो उठता है। नये नकोर टैची उठाये नथुनों से मादक गंध सूंघता, अठखेलियां करते नवेले जोड़ों के पीछे जब चलता, तो यह अहसास नहीं रहता कि पीठ पर मन भर बोझा उठाये हुए है।

पीठ के बोझे का भुलावा सुख देता है। उसके लिए सुख एक हकीकत नहीं है। भुलावे का सुख भोगा है उसने। इस अनुभूति में सपने-सा आभास होते हुए भी कुछ क्षणों के लिए सब झंझटों से मुक्त होने की शक्ति है।

नये-नवेले जोड़े, सदा हंसते हुए, बरास के ताजा खिले हुए फूलों से। जिनके लिए जिंदगानी खुशबू भरी हवा है। इस छोटी-सी जगह में, भरे बाजार में एक-दूसरे का हाथ पकड़े, गले में बांहें डाले बेशर्मी की हदों को छूते इन सैलानियों को देख यह भुलावा होता है कि दुनिया बहुत सुखी है, रजी हुई, बहुत पैसेवाली। दुख तकलीफ से दूर। ...क्या इनके सिर भी ब्याह का कर्ज चढ़ा होगा... ! ब्याह के बाद ये लोग यहां हनीमून मनाने आते हैं और हम...हम जैसे कर्ज उतारने के लिए आते हैं, कुलीगिरी करने। ब्याह के एकदम बाद यदि कहीं जाना हुआ तो बस बाबाजी के थान या कुलजा के मंदिर जातर करने जहां सुखी जीवन की मन्नत मांगी जाती है। ...क्या मन्नत मांगने से भी सुखी जीवन मिलता होगा ! हजार जातर करने के बाद भी लोग वैसे के वैसे ही दिखे मुरदा चेहरे लिए। हमारे लिए शादी-ब्याह हमेशा एक बोझे की तरह लिया जाता है जिसे बस उठाना है। बेशक ये बोझा अपना होने से नरमी का अहसास भी करवाता है। भारी तो उतना ही होगा, कभी न कभी थकाकर तोड़ देनेवाला।

उसके बुजुर्ग कहारगी करते थे। उसे लगता, अब भी वह वही परंपरा निभा रहा है। सिर्फ जगह बदली हैं। उसी के अनुसार कहारगी का ढंग भी। अब भी वह डोली उठाता है। इन नवेले जोड़ों का भार उठाने में आनंद तो आता ही है। बापू कहा करते थे, जब डोली उठायी हो, तो कुछ न कुछ सोचते रहो। अपने सोच में मग्न होने पर भार का ध्यान नहीं रहता। ...और अगर सोचना ही है तो कुछ सपने-सा सोचो।

पीठ पर सामान लादे सपने लेने की आदत हो गयी है संते को। इन सपनों में वह बोझे का भार भूल जाता है।

'ब्याह करना है तो कीमत चुकानी ही पड़ेगी। तू क्या समझता है राह चलते कोई तुझे छोकरी दे देगा। ये तो बड़ी जिम्मेवारी का काम है मित्तरा। बात तो तेरी कहीं चला दूंगा। निभाना तो तुझे ही है। बाद में आंखें मैली होती हैं।' चाचा ने कहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई जगह बात भी चलायी । लड़कीवाले तो अच्छा घर-बार, जमीन-जायदाद देखते हैं । छोकरी के पेट का इंतजाम तो होना ही चाहिए, बाकी बातें बाद में । उसका क्या है ! बचपन से दहलीज के बाहर हुआ । कभी कोई ठिकाना न मिला । पीठ के भरोसे ही जीता रहा, जहां भी गया । बस यही एक बड़प्पन था कि बाहर रहता है बड़े शहर में ।

धार के मेले में चाचा ने दूर से एक लड़की दिखायी तो वह पागल हो उठा था । एक मोटी ठिगनी औरत के साथ पतली-सी काया । दूर से शहतूत की सोटी-सी लग रही थी । उसे देख मेले के कई चक्कर लगा डाले । चारों ओर घूमता रहा । कभी वह मेले में खो जाती, तो सभी लड़कियां उसे वैसी ही लगतीं । पता नहीं चाचा का इशारा उतावली में ठीक से समझ भी पाया था या नहीं । मेला ढलते-ढलते वह पतली काया की पहचान पूरी तरह खो गया और हर लड़की वही लगने लगी ।

मेला बिखरने पर जब धूप लाल होकर चोटियों पर जा बैठी, अपने हमजोलियों संग वह गा उठा था :

'मीट ता सराब रिहा मेरा
कि खाली कप तेरा बिमलो ।
कि खाली कप तेरा बिमलो... ।'

मेले से लौटते लोगों के बीच गाने के अश्लील भाव की परवाह किये बगैर वह ऊंचे स्वर में गा रहा था, नशीला और सुरीला गीत :

'लेहफ ता गलाफ रिहा मेरा
कि सौगी सौणा तेरा बिमलो ।
कि सौगी सौणा तेरा बिमलो... ।'

मेले के उस दिन के बाद वह मीट शराब छोड़ लेहफ गिलाफ की जुगाड़ में जुट गया । पूरे पहाड़ को पीठ पर उठा लिया । न जाने कितने सैलानी उसने पहाड़ पर पहुंचाये । सीजन में फेरे पर फेरे लगाये । रात-रात भर बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन में घूमता रहा ।

सैलानी कहते : 'हमें पहाड़ बहुत पसंद है । हम हर साल पहाड़ जरूर आते हैं । पहाड़ को हमें बहुत प्यार है ।' पहाड़ तो पसंद होंगे ही, प्यार भी होगा । गोद में बिठाकर ठंडक जो देते हैं । जब नीचे गजब की गरमी पड़ेगी । जीवन नरक हो जाएगा तब पहाड़ याद आएंगे । ये पता नहीं— नीचे की गरमी से घबराकर पहाड़ की ओर भागते हैं । गांठ में रुपया है । वह बैठने नहीं देता । यदि गरमी न पड़े तो ये पहाड़ की ओर देखें भी नहीं । तब पहाड़ इन्हें बेमतलब की चीज लगें । चाहें तो खुदवाकर समुद्र में फेंकने की बात करें । या कभी एक सयाल काटें यहां तब पता चले पहाड़ की ... कैसे जानू जोड़ देती है । अब तो कहते हैं : 'पहाड़ हमें जरूर देखना है । बच्चों को दिखाना है । ये पेड़ कितने अच्छे हैं । ये झाड़ियां... ये पत्ते...ये फूल ।'

लोग पहाड़ देखने आते हैं । संते को पहाड़ देखना है । कभी पीछा नहीं छोड़ता । हमेशा देखता रहता है । पलक झपकाये बिना । पहाड़ कभी पलक नहीं झपकता । कभी सोता नहीं ।

हां, वह पहाड़ ऐसा नहीं है जिस पर शहर बसा है । वह दूसरी तरह का है । केवल पहाड़ । बिलकुल सामने खड़ा हुआ खाली पहाड़ ।

घर के सामने का वह पहाड़ हर समय उसकी आंखों के सामने रहता है । इतना बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार के मेले में चाचा ने दूर से एक लड़की दिखायी । तो वह पागल हो उठा । एक मोटी ठिगनी औरत के साथ पतली-सी काया । दूर से शहतूत की सोटी-सी लग रही थी । उसे देख मेले के कई चक्कर लगा डाले । चारों ओर घूमता रहा । कभी वह मेले में खो जाती, तो सभी लड़कियां उसे वैसी ही लगतीं ।

विशालकाय । ऊंची दीवार-सा । जिसके परे संसार ही नहीं है । संसार बस इसी की गोद से आरंभ होता है । इसके परे दुनिया है ही नहीं । मां ने बताया था— 'पहाड़ देखता है । उजाले में भी, अंधेरे में भी ।'

तब से खतरा बना रहता है सदा कि उसके घर कामकाज को पहाड़ देखता है । छिपकर कमरे के भीतर, दीवार की ओट में, दरवाजे के पीछे जहां भी कुछ करेगा, पहाड़ देख लेगा । जब भी चोरी-छिपे कुछ करने लगता, लगता पहाड़ देख रहा है ।

आंगन के सामने ही तो है पहाड़ । गौर से देखने पर उसके हर हिस्से में नाक, कान, होंठ और आंखें दिखतीं ।

बरसात में मल-मल कर नहाता है पहाड़ । ऊन-सी सफेद बरफ ओढ़ता है सरदियों में । गरमियों में ठंडा मीठा पानी देता है ।

घर के सामने के उस पहाड़ से दूर यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

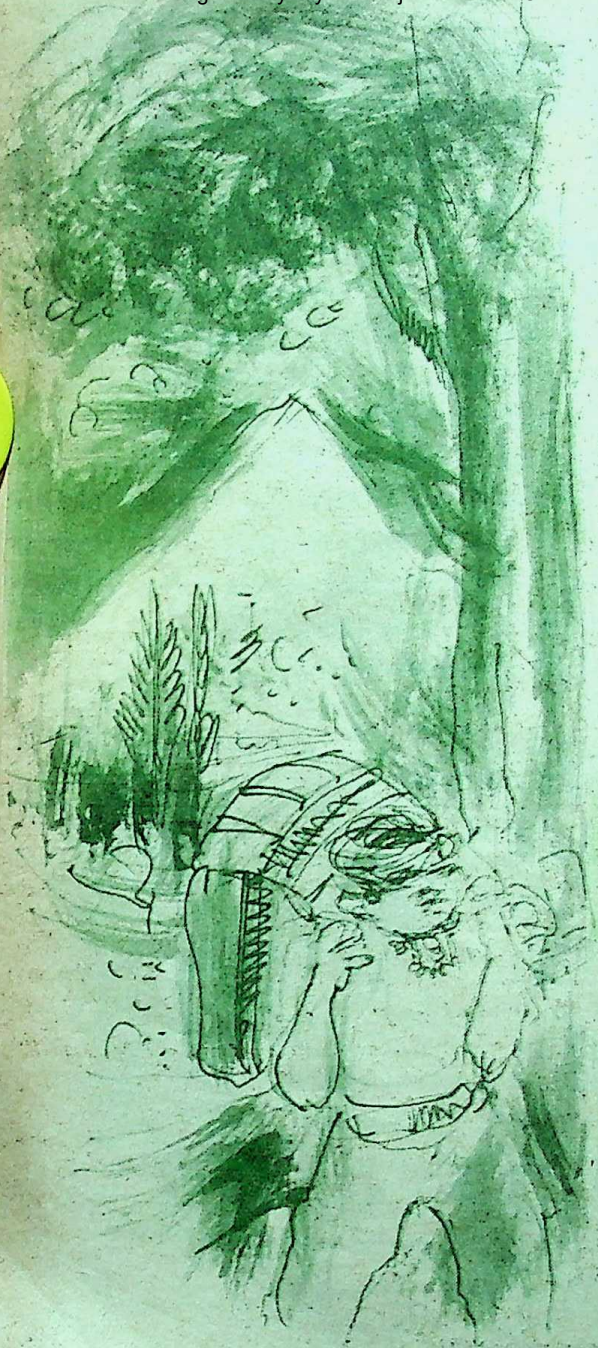

कमाने आया है । तब भी लगता है, क
उठाये पंजों के सहारे खड़ा हो उसे देख
यहां के पहाड़ की बात और है । है तो
पहाड़ । उसके लिए अजनबी है । यह
नहीं सकता । इसके ऊपर तो शहर उग
है, जंगली झाड़ियों की तरह ।

अभी-कभी वह एक मोटे सैलानी के
बच्चे को बोझे की तरह उठाकर छोड़ अ
बच्चे की मां से खुद ही नहीं चला जा रहा
बच्चे को क्या उठाती ! सारा परिवार ही
हवा भरवाकर आया था । उस आदमी
चेहरा ऐसा था जैसे गोल-मटोल कद्दू पर
बच्चे ने छोटे-छोटे नाक-मुंह बना दिये हो
इनका सामान तो दूसरे कुली ने उठा लि
इसलिए वह सड़क के किनारे उकड़ूं बैठ
पी रहा था कि मोटे सैलानी ने इशारे से
था ।

'हमारे बाबा को ले चलेंगे ।' जब
पूछा तो पहले हिचकिचाया था संता ।

'जो पैसा मुनासिब हो ले लेना भैय
के झिड़कने पर सैलानी ने कहा...अरे
पैसे भी छोड़ दूंगा...कहने को हुआ संता
सोचा पैसेवाले हैं । जितना मिलता है,
बच्चा संते की मूंछों को देख रहा था ।

जितने अनमने ढंग से संते ने बच्चा
उतने ही अनमने मन में बच्चा उसके
बैठा ।

अपने भाई, रिश्तेदारों के बच्चे
ने । मेलों में, ब्याह-शादियों में बच्चों
पर उठा दूर-दूर ऊंची पहाड़ियों पर ले
कभी किसी बच्चे का बोझा मालूम नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे का भी बोझा होता है कभी ! सैलानी का छोटू बच्चा कुछ दूर उठाने पर ही भारी बोझा लगने लगा । हिलता-डुलता अधिक था । कभी घुड़सवारी की तरह बूट उसकी पसलियों में मारता । बार-बार हिलता । बच्चा चाहे गोल-मटोल, सुंदर-सलोना और सुगंध भरा था । वह बोझा ही मालूम पड़ा उसे । कभी पैदल चलने की जिद्द में उसकी मूंछें नोचने लगता । कभी चाकलेट के लिए लपकता, कभी जूस के लिए । मन होता पटककर नीचे गिरा दे ।

अजब बात है । बोझा उठाया हो तो कभी लगता है कुछ नहीं है पीठ पर । न उठाया हो तब भी कभी लगता है पीठ पर मनों भार है । पीठ दोहरी हुई जा रही है । जाने-अनजाने कभी लगता है पीठ से एक बोझा बंधा है घोड़े की तरह जो कभी दवाब डालता है, कभी गायब हो जाता है । न होने पर भी होने का अहसास और होने पर भी न होने का अहसास कभी-कभी उसे सोचने पर मजबूर करता है । इस सोच में कभी अपने लंबे कद और मोटी बुद्धि पर खुद ही हंसता है संता ।

पहाड़ उसे देखता रहा निरंतर ।

घार के मेले के बाद कहीं और ब्याह किया उसने किसी तरह । सुनहरी बालोंवाली भूरी को ब्याह कर लाया यहां । वह यहां आयी । रही भी । चली भी गयी...यह भी देखा होगा पहाड़ ने ! उसके बाद खींचतान में आधी उमर पार हुई । बच्चे भी हुए कुछ कच्चे, कुछ पक्के । जिया कोई नहीं ।...यह भी देखा होगा पहाड़ ने ! भूरी उसे छोड़ गयी, वह भटकता रहा अकेला । आज उमर कई बरस खा गयी...यह भी देखा होगा ।

सैलानियों की रंगीनियां...सारी बेशरमियां भी देखता होगा पहाड़ !

जो पहाड़ को देखने आते हैं, उन्हें भी देखता होगा पहाड़ !

सैलानी के बच्चे का बोझा छोड़ने के बाद वह माल रोड पर आ गया । बच्चे के हाथों नोंचे बालों की जगह अभी भी सिर दुख रहा था ।

माल रोड पर भीड़ थी । भीड़ की रेल-पेल में किसी की परवाह किये बगैर रस्सी गले में डाले दोनों हाथों से मजबूती से पकड़ वह गाता हुआ चलने लगा :

'जिंदड़ी लो दो दिनां दा मेला
कि सौगी सौगी रहणा बिमलो ।
कि सौगी सौगी...'

(जिंदगी दो दिनों का मेला है ! बिमलो ! सदा साथ रहना ।)

भीड़ में मदमस्त गुनगुनाते देख एक सपाट चेहरेवाला सैलानी पत्रकार की-सी मुद्रा में बोल उठा...

'कितने मस्त होते हैं ये पहाड़िये !'

—सचिव, हिमाचल कला संस्कृति
और भाषा अकादमी,
शिमला-१७१००१

मोहम्मद जहीरुद्दीन अजफरी ने लिखा है कि शहंशाह मोहम्मद शाह की मलिका ताजमहल इतने कठोर परदे में रहने की पाबंद थीं कि दूध पीती उम्र तक के लड़के को अपनी गोद में नहीं लेती थीं, और चार वर्ष की अवस्था का भी कोई लड़का उनके सामने आ जाता तो वह घूंघट निकाल लेती थीं ।

(वाकयाते अजफरी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी अनुपमा शाह —भुवनेश्वर

प्रश्न : उम्र २१ वर्ष । सभी प्रकार से स्वस्थ हूं । किंतु मासिक धर्म तीन माह में एक बार होता है और ५-६ दिन तक रहता है । सफेद स्राव होता रहता है ।

उत्तर : दशमूलारिष्ट दो चम्मच, अशोकारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें । चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी रात गरम पानी से लें ।

एक बहन, बड़ौदा

प्रश्न : पच्चीस वर्षीय अविवाहिता । गुप्तांगों में खारिश, मूत्र मार्ग पर एक छोटा दाना है । जिसमें से द्रव निकलता है । पेट में हलका दर्द, पैरों, कमर में दर्द । मासिक ठीक होता है । मानसिक रूप से काफी परेशान हूं ।

उत्तर : त्रिफला गुग्गल एक वटी, केशोर गुग्गल एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच समभाग पानी मिलाकर भोजन बाद पीयें ।

सरिता चौहान, मेरठ

प्रश्न : उन्नीस वर्षीय अविवाहिता हूं । १६ वर्ष की अवस्था से बायें स्तन में एक गिल्टी है । अब बढ़ रही है । होम्योपैथी व एलोपैथी उपचार किये कोई लाभ नहीं । कभी-कभी हलका दर्द होता है । वैसे स्वास्थ्य सामान्य है ।

उत्तर : भली प्रकार जांच कराकर निदान करें । कांचनार गुग्गल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से, केशोर गुग्गल दो-दो वटी दोपहर-रात पानी से लें ।

संज्ञिता सिंह —देवरिया

प्रश्न : उम्र १७ वर्ष । सिर में व पेट में [illegible] रहता है, उल्टी आने को मन करता रहता है [illegible] कफ आता है । दो साल से परेशान हूं ।

उत्तर : गोदंती भस्म तीस ग्राम, देसी [illegible] ग्राम साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम [illegible] मात्रा पानी से लें । अविपत्तिकर चूर्ण [illegible] चम्मच दोपहर-रात पानी से लें ।

आर.जे. मोरवाल —दीनदयाल नगर

प्रश्न : पत्नी की उम्र ३६ वर्ष । पत्नी को गुर्दे [illegible] पथरी है । पहले भी एक बार ऑपरेशन करा चुका हूं ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी १५ ग्राम, गोक्षुर [illegible] तीस ग्राम, गोक्षुरादि चूर्ण साठ ग्राम [illegible] बनायें, एक-एक मात्रा सुबह-शाम [illegible] श्वेतपर्पटी साठ ग्राम, लशुनादि वटी [illegible] साठ मात्रा बनायें, एक-एक मात्रा भोजन [illegible] पानी से लें ।

किरण अग्रवाल —बोकारो

प्रश्न : उम्र २४ वर्ष । दो संतान, छोटी बच्ची [illegible] वर्ष । बच्ची को दूध पिलाती थी । दो माह [illegible] अचानक बाहर जाना पड़ा बच्ची साथ नहीं [illegible] स्तनों में अब दूध नहीं आता, तथा स्तन [illegible] बराबर हो गये हैं । सभी प्रकार के इलाज [illegible] लाभ नहीं ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मुक्ताशुक्तिभस्म पंद्रह ग्राम, साठ मात्रा [illegible] सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से [illegible] अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद [illegible] तीन माह औषधि लें ।

बाबा शेषनारायण साधु —अयोध्यापुरी

प्रश्न उम्र ६५ वर्ष । खूनी बवासीर २० [illegible] १६ वर्ष से वायु विकार, ८ वर्ष से कब्ज [illegible] छाले, भूख नहीं लगती, भोजन नहीं पचता [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : अर्शाधनी वटी एक वटी, आरोग्यवर्धनी वटी एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । अभयारिष्ट दो-दो बड़े चम्मच समभाग जल मिलाकर पीयें ।

राजकुमार —ग्वालियर

प्रश्न : उम्र तीस साल । पेशाब में जलन रहती है । गर्मियों में पेशाब कम आता है । सभी प्रकार की जांच हो गयी । कोई रोग नहीं है । साधारण दवा लिखें ।

उत्तर : गोक्षुरादिगुग्गल एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । चंदनासव दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

विनोद वर्मा —जगन्नाथपुर

प्रश्न : उम्र ५० साल । पांच वर्ष पूर्व मलद्वार पर अति खुजली हुई, चिकित्सक ने बताया फीशर है । दवा का आंशिक लाभ मिला । किंतु तब से कब्ज-गैस बनना, सिर में भारीपन, बेचैनी, घबराहट, हाथ कंपन, मन उदास, बहुत धीरे लिख पाता हूं ।

उत्तर : नवकार्षिक गुग्गल एक वटी, त्रिफला गुग्गल एक वटी, सुबह-शाम पानी से लें । आरोग्यवर्धनी वटी दो-दो वटी दोपहर-रात पानी से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें । छह माह नियमित आहार-विहार के परहेज के साथ औषधि सेवन करें ।

राजनंद जी —भुसावल

प्रश्न : उम्र २६ वर्ष । तीन माह का बेटा । हाथ-पैर में दर्द रहता है, किसी-किसी समय बुखार भी मालूम पड़ता है । दुर्बलता अधिक है । बेटा दूध पीता है ।

उत्तर : प्रतापलकेश्वर दस ग्राम, गोदंती भस्म पंद्रह ग्राम साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । दशमूलारिष्ट दो-दो चम्मच समभाग पानी मिलाकर भोजन बाद पीयें । आनंद भैरवरस एक वटी रात में दूध से लें ।

एस. मोहम्मद —शिलांग

प्रश्न : उम्र ५० साल । कमजोरी-नसों में दर्द । जांच-पड़ताल पर कोई बीमारी नहीं । अच्छी दवा कम समय खानी हो लिखें ।

उत्तर : रसराजरस एक-एक वटी, चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी सुबह-रात दूध से नियमित तीन माह लें ।

ए. श्रीनिवासन —बंगलौर

प्रश्न : उम्र ४० साल । कब्ज रहता है, गुदा मार्ग पर चुभन मालूम पड़ती है । सरल दवा सुझायें ।

उत्तर : अभयारिष्ट दो-दो बड़े चम्मच खाने के बाद दोनों समय लें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा,
बी-/५/७, कृष्णनगर,
दिल्ली-११००५१

गर्भपात रोकने के उपाय

गर्भवती होने के बाद भी अनेक महिलाओं को बार-बार प्राकृतिक रूप से गर्भपात हो जाया करता है । ऐसे गर्भपात को रोकने के लिए लंदन स्थित सेंट मेरी अस्पताल में पिछले तीन वर्षों से चल रहे अनुसंधान में ऐसी महिलाओं को श्वेत रक्त कणिकाओं का इंजेक्शन लगाया गया । इससे उनका गर्भ ठहर गया । यह प्रयोग १०५ महिलाओं पर किया गया जिन्हें पहले तीन बार प्राकृतिक रूप से गर्भपात हो चुका था । इनमें से ३५ महिलाएं गर्भवती बनी रहीं ।

सुबोध सहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव मूर्तियों का अद्भुत लोक :

● चंद्र प्रकाश शर्मा

आज जयपुर की मूर्तिकला में पर्याप्त गति तथा नवीनता दिखायी देती है। कलाकारों ने परंपरा के साथ-साथ आधुनिक कला के तत्वों को भी उसी उत्साह से अपनाया है । समसामयिक भारतीय मूर्तिकला में राजस्थान के युवा शिल्पकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान है ।

अनूठे नगर नियोजन और स्थापत्य के कारण गुलाबी नगर जयपुर दुनिया के सुंदरतम नगरों में गिना जाता है । नगर की इसी पहचान में चार चांद लगाते हैं यहां के कलात्मक हस्तशिल्प ।

जयपुर शहर के परकोटे के भीतर स्थित विशाल मूर्ति मोहल्ला है जहां छैनी-हथौड़े के लयबद्ध संगीत से प्रतिदिन सैकड़ों पाषाण शिलाएं, देव-मूर्तियों में परिणित की जाती हैं। करीब चार वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले इस मूर्ति मोहल्ले को दुनिया के विशालतम प्रतिमा संग्रहालय की संज्ञा दी जा सकती है । किसी हद तक यह सही भी है कि इतने बड़े पैमाने पर देवमूर्तियों का निर्माण दुनिया के किसी कोने में नहीं होता । एक-एक मूर्ति भंडार में सैकड़ों की संख्या में देव-मूर्तियां बिक्री के लिए तैयार रहती हैं और छोटे-बड़े ऐसे करीब २५० भंडार हैं किसी विशाल मूर्ति भंडार में जाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा सोया हुआ अध्यात्म एकाएक जाग उठता है। कला और भक्ति का यह अद्भुत संपुंजन अपने सौम्य, शांत और निर्मल वातावरण से हर

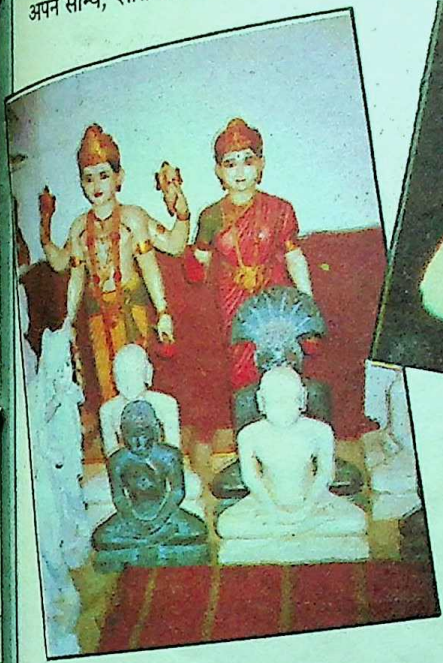

देश के प्रायः हर शहर और कस्बे के मंदिर में यहां की मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में जयपुर की मूर्तियां सर्वाधिक पसंद की जाती है। दक्षिण भारत में ग्रेनाइट से निर्मित शैली विशेष की मूर्तियों का

किसी प्रेक्षक को अभिभूत कर देता है। शिव, गणेश, राम-कृष्ण, दुर्गा के नाना रूपों से लेकर सभी जैन तीर्थंकरों, महात्मा बुद्ध और ईसा मसीह के विविध रूपाकार भी हर समय आसानी से उपलब्ध रहते हैं। भक्ति और अध्यात्म की संवेदनाओं को साकार रूप देनेवाले करीब आठ हजार शिल्पी इस उद्योग में जुटे हैं। एक अनुमान के मुताबिक यहां करीब एक करोड़ रुपये मूल्य की मूर्तियों का सालाना कारोबार होता है।

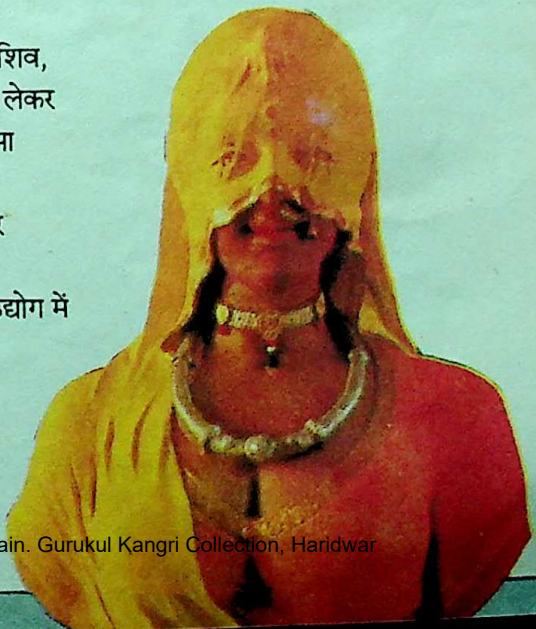

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

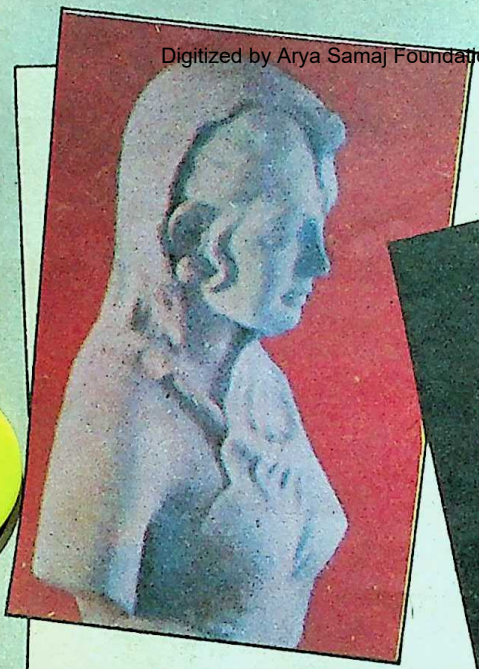

सन्ती पारदशिया : कलीन

प्रचलन होने के कारण वहां इनकी मांग अपेक्षाकृत कम है । भारतीय मूल के लोग या प्रवासी भारतीय दुनिया के जिस कोने में रहते हैं,

वहां जयपुर की देव-मूर्तियां अवश्य मिलेंगी। इन देशों में अमरीका, ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस, वेस्ट इंडीज और थाइलैंड प्रमुख हैं । जापान, थाइलैंड, सिंगापुर और हांगकांग में बौद्ध धर्मावलंबियों की संख्या अधिक होने के कारण इन देशों से महात्मा बुद्ध की मूर्तियों की अकसर मांग रहती है ।

नेताओं की प्रतिमाएं

परंपरागत मूर्तिकारों में से ही कुछ मूर्तिकार राष्ट्रीय नेताओं, साधु-संतों और व्यक्ति विशेष की प्रतिमाएं गढ़ने में भी पारंगत है । इन कलाकारों में लल्लूनारायण शर्मा, आनंदीलाल वर्मा, राजेन्द्र मिश्रा तथा अर्जुन प्रजापति प्रमुख हैं । आगरा के विक्टोरिया पार्क में स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित मोतीलाल नेहरू की १३ फुट ऊंची प्रतिमा लल्लूनारायण की श्रेष्ठतम उपलब्धि है तो आनंदीलाल वर्मा ने १९८५ में कांग्रेस शताब्दी समारोह के अवसर पर १०१ स्वतंत्रता सेनानियों की मूर्तियां दो माह की अल्पावधि में गढ़कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है ।

कैसे बनती हैं प्रतिमाएं

इस तरह की मूर्तियां बनाने के लिए पहले उसका मिट्टी का मॉडल तैयार किया जाता है । ग्राहक को इस मॉडल का अनुमोदन कराकर प्लास्टर ऑफ पैरिस में ढलाई कर उसका खोखला रूप तैयार किया जाता है । फिर मूर्ति के अलग-अलग हिस्से की नाप लेकर उसे पत्थर में उकेरा जाता है ।

वैभवशाली इतिहास

जयपुर के आसपास का क्षेत्र ढूंढाड़ प्रदेश के नाम से जाना जाता है । जयपुर को कछवाहा नरेश सवाई जयसिंह ने १७२९ ई. में बसाया किंतु कछवाहा राजपूतों का आगमन इस प्रदेश में ग्यारहवीं सदी में ही हो गया था । कछवाहों के आगमन से पूर्व भी यहां मूर्तिकला का वैभवशाली इतिहास रहा है । जयपुर के समीप आभानेरी में गुप्तकाल की मूर्तियों के भव्य नमूने मिले हैं जो आज भी जयपुर के हवामहल स्थित राजकीय संग्रहालय में देखे जा सकते हैं । कछवाहा नरेशों ने मूर्तिकला को जो प्रश्रय दिया उसका जीवंत उदाहरण इस संग्रहालय में रखी भगवान कृष्ण की वेणुधारी सुंदर प्रतिमा है ।

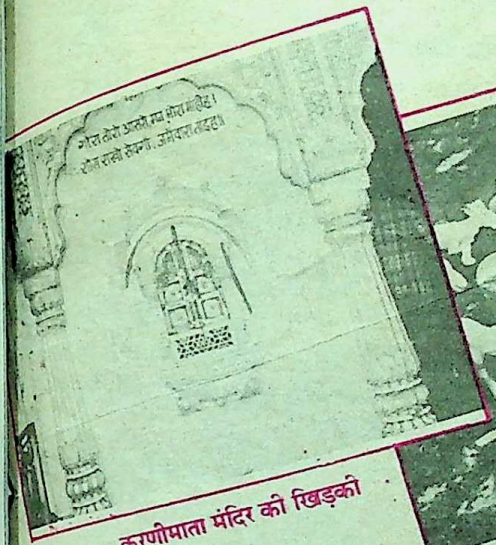

करणीमाता मंदिर की खिड़की

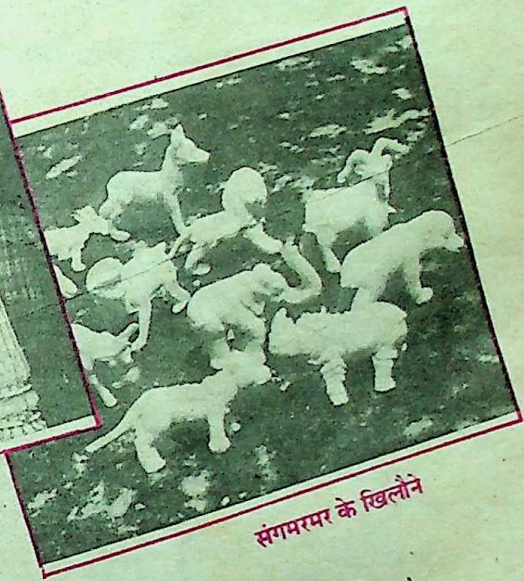

संगमरमर के खिलौने

सवाई जयसिंह केवल स्थापत्य और खगोल शास्त्र में ही गहरी दिलचस्पी नहीं रखते थे उन्होंने अनेक साहित्यकारों, कवियों और कलाकारों को अपने तत्कालीन राज्य आमेर में बसाया । इसी कड़ी में जयपुर के आस-पास के अनेक गांवों से मूर्तिकारों के परिवार के परिवार बुलाकर यहां बसाये गये । इन गांवों में किशोरी, गोला का बास, घंसली, रायला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छीतोली आदि प्रमुख हैं। कुछ गांवों में मूर्तिकार पीढ़ियों से चली आ रही शिल्प परंपरा को आज भी जीवित रखे हुए हैं। जयपुर की स्थापना होने पर इन मूर्तिकारों को आमेर से लाकर शहर के परकोटे के भीतर ही मूर्ति मोहल्ले में बसा दिया गया। वर्तमान में मूर्ति मोहल्ला, खजानेवालों के रास्ते, भिंडों के रास्ते, खेजड़ों के रास्ते, कल्याणजी के रास्ते तक फैला पसरा है। स्थानाभाव के कारण बहुत-से मूर्तिकार परकोटे से दूर गोपालपुरा बाईपास पर जा बसे हैं।

शिल्पकारों का आदिगौड़ संप्रदाय

मूर्ति बनाने का काम आदि गौड़ ब्राह्मण संप्रदाय के शिल्पकार करते हैं। प्राचीन समय से ब्राह्मणों का कार्य पूजा-अर्चना, कर्मकांड और पठन-पाठन रहा है किंतु ब्राह्मणों का यह विलक्षण समुदाय आदिकाल से मंदिर और मूर्ति निर्माण के कार्य से जुड़ा रहा है। स्वभाव से स्वाभिमानी होने के कारण इन लोगों को दान-दक्षिणा से सदैव परहेज रहा है। वस्तुतः इन शिल्पियों को सवाई जयसिंह द्वारा आमेर के मंदिर बनवाने के लिए ही आमंत्रित किया गया था। आमेर और जयपुर की अनेक भव्य इमारतों के निर्माण में आदि गौड़ ब्राह्मणों का योगदान रहा है। गया के कुछ बौद्ध मंदिरों [illegible] विष्णु पद मंदिर के निर्माण के लिए बहुत-से [illegible] आदि गौड़ ब्राह्मण जयपुर से बुलाये गये [illegible] बाद में स्थायी रूप से गया में बस गये।

आदि गौड़ ब्राह्मणों का उद्भव सदियों पहले बंगाल में हुआ। रोजी-रोटी की तलाश में [illegible] लोग जहां-जहां मंदिर निर्माण की सामग्री सहज-सुलभ थी वहीं जाकर बस गये। जयपुर की स्थापना से पूर्व यह लोग जयपुर के निकटवर्ती गांव रायला में आकर बसे थे जहां संगमरमर की खान थी।

आदि गौड़ शिल्पकारों के साथ-साथ प्रजापति कलाकारों की भी पिछली कई पीढ़ियां मूर्ति निर्माण के कार्य में जुटी हैं, किंतु इन कलाकारों ने मूर्तिकला के गुर आदि गौड़ ब्राह्मणों से ही सीखे। पचास वर्ष पूर्व संगमरमर प्रजापति ने पंडित जानकी लाल आदि गौड़ से विधिवत इस कला की दीक्षा ली और आज प्रजापतियों के पचास कलाकार शिल्प साधनारत हैं।

विशालतम मूर्ति

महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले में स्थित [illegible] बाहुबली नामक स्थान पर प्रतिष्ठित भगवान बाहुबली की मूर्ति जयपुर के शिल्पकारों द्वारा बनायी गयी अब तक की सबसे बड़ी मूर्ति है। ९ फुट ऊंची इस प्रतिमा को १९५७ ई. में [illegible] सहयोगी मूर्तिकारों की मदद से रामचंद्र [illegible] प्रधान शिल्पी की देखरेख में बनाया गया।

विशाल प्रस्तर शिला को जयपुर लाने के जटिल उपक्रम से बचने के लिए शिल्पियों [illegible] इसे खान पर ही तैयार किया। इतना विशाल शिला खंड आसानी से उपलब्ध न होने [illegible]

संगमरमर पर कलाकृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकराना की संपूर्ण खदानों का सर्वेक्षण किया गया। इसके उपरांत भी शिला के न मिलने पर जैन मुनि आचार्य शांति सागर ने स्वप्न में हुए दृष्टांत के आधार पर मकराना के समीप स्थित खुहारी खान में वांछित शिला तलाशने के निर्देश दिये, आखिरकार शिला इस खान से मिल ही गयी। उस समय इन खानों से इतनी बड़ी शिलाएं निकालने की कोई उन्नत तकनीक विकसित न होने के कारण बंबई से तकनीकी विशेषज्ञ तथा हाइड्रोलिक जैक्स मंगाये गये।

डेढ़ वर्ष अनवरत श्रम के बाद मूर्ति बनकर तैयार तो हो गयी लेकिन उसे उसकी स्थापना की

वह पत्थर में प्राण फूंकता है

मूर्ति मोहल्ले की एक तंग गली के भीतर एक ऐसा कलाकार है जिसने न केवल यहां की परंपरागत कला को नये आयाम दिये हैं बल्कि भारतीय और यूरोप की मूर्तिकला के सौंदर्य मूलक तत्वों का एक सुघड़ और अभिनव सामंजस्य स्थापित किया है। पैंतीस वर्षीय इस कला प्रतिभा का नाम है अर्जुन प्रजापति। राजस्थान ललित कला अकादमी से तीन बार पुरस्कृत अर्जुन जयपुर की परंपरागत मूर्ति कला को जीवित रखने के लिए भी उतने तत्पर हैं जितने कि उसमें नव प्रयोगों के पक्षधर।

काफ्का ने एक बार एक औरत के बारे में कहा था, 'अगर मैं उसके चेहरे में कुछ देख पाता हूं तो वह कुछ ब्यौरे हैं जिन्हें मैं आसानी से गिन सकता हूं।' दरअसल अर्जुन का शगल भी इनसानी चेहरों के ब्यौरे गिनना है। राह चलते किसी भिखारी या गंवई भोलापन लिए ग्रामीण को अपने स्टूडियो में बिठाकर उसका पोर्ट्रेट बनाने से भी वह नहीं चूकते।

प्रेम, घृणा, संत्रास, करुणा, निराशा, अहंकार, चिंता, वात्सल्य, क्रोध इन सभी मनोभावों को उन्होंने अपने शिल्प में बखूबी दर्शाया है। हमारे मन को शायद ही कोई स्थिति हो जो अर्जुन के छैनी-हथौड़े से बच निकली हो, यही नहीं उन्होंने भय-क्रोध, विषाद और चिंता-जैसी मनःस्थितियों को भी एक साथ उभारने की चेष्टा की है।

अर्जुन ने किसी कला विद्यालय से कला की विधिवत शिक्षा ग्रहण नहीं की। पांचवी जमात में पढ़ते-पढ़ते ही मूर्ति कला के व्याहमोह ने स्कूल के बस्ते को सदा-सदा के लिए ताक में रखवा दिया। लंबे समय तक घर पर अकेले अभ्यास करने के बाद बीस वर्ष की आयु में सुप्रसिद्ध मूर्तिकार महेंद्र दास को अपना गुरु बना लिया। यह वही महेंद्र दास है जिन्होंने जयपुर के स्टेच्यू सर्किल पर स्थापित सवाई जयसिंह की विशाल मूर्ति बनायी है। राजस्थान के सुप्रसिद्ध चित्रकार द्वारका प्रसाद से मानव शरीर के अंगों का परिशुद्ध अंकन और चित्रकला का आधारभूत ज्ञान प्राप्त किया। इसी तरह मूर्तिकार आनंदीलाल वर्मा से क्ले मॉडलिंग में दक्षता हासिल की। अर्जुन अपने मूर्ति शिल्प भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह तथा वर्तमान राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा को भी भेंट कर चुके हैं।

—चं. प्र. श.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

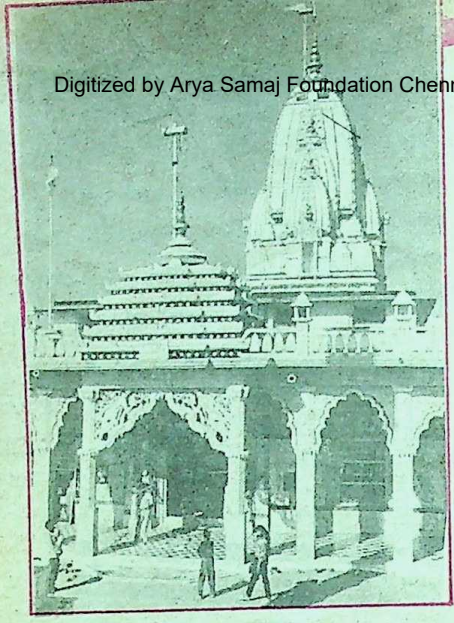

तिजोरा के मंदिर में संगमरमर का काम

जगह तक पहुंचाना उतना ही दुष्कर था । मूर्ति के नाप के बराबर का कोई ट्रक या ट्रेलर उपलब्ध न होने के कारण रेल मार्ग द्वारा उसे कुम्बोज तक पहुंचाया गया । खुम्हारी की खदान से स्थानीय रेलवे स्टेशन तक (बोरावड़) सड़क न होने के कारण रेत के धोरों और खेतों से होकर मूर्ति को लोहे के रस्सों से संचालित हैंड ट्रॉली द्वारा रेलवे स्टेशन तक पहुंचाया गया । खदान से रेलवे स्टेशन तक मात्र ६ कि. मी. की दूरी तय करने में १५ दिन का समय लगा ।

जयपुर के शिल्पियों द्वारा बनायी गयी अन्य विशाल मूर्तियों में बंबई के नेशनल पार्क में लगी त्रिमूर्ति (आदिनाथ, बाहुबली और महावीर स्वामी) तथा जैन तीर्थ महावीर जी (राजस्थान) में स्थापित जैन तीर्थंकर आदिनाथ की मूर्ति है । इन दोनों मूर्तियों की ऊंचाई २७ फुट है ।

निर्माण प्रक्रिया

जयपुर के मूर्ति मोहल्ले में प्रायः पाषाण मूर्तियां ही गढ़ी जाती हैं । यूं धातु की मूर्ति बनती हैं किंतु इनकी संख्या बहुत कम है या काष्ठ की मूर्तियां बनाने की अपेक्षा पाषाण मूर्तियां गढ़ना अत्यंत श्रम साध्य और कठिन काम है । एक मूर्ति बनाने में लगभग एक का समय लग जाता है क्योंकि प्रक्रिया काफी लंबी होती है ।

सर्वप्रथम जिस आकार की मूर्ति बनाना है उसके हिसाब से पत्थर का चयन कर आधार तैयार किया जाता है ताकि काम के समय मूर्ति की स्थिरता बनी रहे फिर पत्थर पर कोयले से आकृति का रेखांकन कर मूर्ति का बाह्य रूप (आउट लाइन) उकेरा जाता है । इसके बाद शनैः-शनैः सिर से लेकर पैरों तक के अंग को क्रमानुसार स्थूल रूप में उकेरा जाता है ।कलाकार के शिल्प कौशल की असली पहचान तब होती है जब वह मूर्ति की मुखाकृति तैयार करता है । सशक्त भावाभिव्यक्ति के लिए उसे बनावट को लेकर काफी सजग रहना पड़ता है । वक्ष, हाथ-पांव, केश, आभूषण व परिधान आदि की निर्मिति में इतना समय नहीं लगता फिर भी एक श्रेष्ठ कलाकृति के निर्माण के लिए मूर्ति के इन हिस्सों को बनाने में भी कलाकार का कौशल की कोई सीमा नहीं है और इसी पर मूर्ति का मूल्य निर्धारित किया जाता है । एक कुशल मूर्ति जो ५ हजार में बिकती है, उसी आकार की मूर्ति एक कुशल शिल्पी गढ़कर पच्चीस हजार रुपये भी वसूल कर सकता है ।

रूप के अंकन के बाद मूर्ति की खुरदुरी सतह को चिकना बनाने के लिए कृत्रिम रूप से तैयार किये गये, मोटे दानेवाले एक पत्थर से यहां के मूर्तिकार 'टोली' कहते हैं, घिसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है। सतह को और चिकना बनाने के लिए नाख की थापी से भी घिसायी की जाती है।

मूर्ति को यथोचित चमक देने व कांतियुक्त बनाने के लिए एक विशेष प्रकार की पकी हुई मिट्टी को पानी में मिलाकर कपड़े से घिसा जाता है। इस मिट्टी को रांग पाउडर कहा जाता है। पहले इस विशेष मिट्टी को तैयार कर घिसायी का काम औरतें किया करती थीं, पिछले कुछ वर्षों से आसपास के ग्रामीण यह काम कर रहे हैं।

पत्थर की उपलब्धता

मूर्ति मोहल्ले की गलियों और छोटी-छोटी उपगलियों में कहीं भी निकल जाइए सर्वत्र धवल अनगढ़ पाषाण शिलाएं बिखरी दिखायी देंगी किंतु यह पत्थर जयपुर में कहीं नहीं बिकता। हरेक शिल्पी को पत्थर स्वयं खानों से लाना होता है। अधिकांश मूर्तियां मकराना के सफेद पत्थर की बनायी जाती हैं। मकराना के संगमरमर का भाव आजकल ३ से ५ हजार रुपये वर्ग फुट तक है। भैंसलाना के काले तथा जैसलमेर के पीले पत्थर की मूर्तियां बनायी जाती हैं किंतु इनकी संख्या बहुत कम है।

परंपरा का आधुनिक स्वरूप

१८६६ ई. में सवाई रामसिंह द्वितीय द्वारा जयपुर में राजस्थान स्कूल ऑव आर्ट्स की स्थापना के बाद जयपुर की मूर्तिकला में एक नया मोड़ आया। इस कला संस्थान में मूर्तिकला के प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक पक्षों के बारे में सविस्तार जानकारी दिये जाने का उपक्रम शुरू हुआ। कुछ मूर्तिकारों ने इस कला संस्थान में न केवल दाखिला लिया बल्कि बाद में विधिवत मूर्तिकला के अध्यापन का भी बीड़ा उठाया।

इस शताब्दी के आरंभ में अनेक कलाकारों ने देव-मूर्तियों से भिन्न विषय रचकर यहां की कला को नये आयाम दिये। इन कलाकारों में लच्छीराम, मालीराम, मोहनलाल तथा गुलाबचंद्र प्रमुख हैं। गुलाबचंद्र ने १९२४ ई. में अंगरेज सरकार द्वारा केम्बले (इंगलैंड) में आयोजित मूर्तिकला प्रदर्शनी में न केवल भागीदारी की, बल्कि उनके मूर्ति शिल्प ढोला मारु को पुरस्कृत भी किया गया।

पिछले दो दशकों से जयपुर की मूर्तिकला में पर्याप्त गति तथा नवीनता देखने को मिलती है। आज के कलाकारों ने परंपरा के साथ-साथ आधुनिक कला तत्वों को भी उसी उत्साह से अपनाया है।

— २० परिवारिका मार्ग,
अर्जुनपुरी, इमली का फाटक,
जयपुर

झरना

आश्चर्यजनक झरना : स्कॉटलैंड का लाराकान झरना जो कि १००२ फुट ऊंचा है, फिर भी इसे बहुत कम लोग देख पाते हैं, यह झरना एक बार में केवल ३२ मिनट ही गिरता है और यह भी केवल लगातार वर्षा होने के बाद। संसार का एक ही आश्चर्यजनक झरना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

राम विलास मंत्री का तोता

● दिग्विजय सिंह

"हे सखि ! हर साल की तरह उस साल भी निर्वाचन की ऋतु आयी हुई थी । नवंबर का श्याम-सलोना सम-शीतोष्ण महीना था । अमवा की डाली पर काली कोयलिया कुहू-कुहू की गुहार लगाकर बैरी विरोधियों का जियरा जला रही थी । पुराने जमाने में कोयलें मार्च-अप्रैल के महीनों में आम की डालों पर बौर आने के समय सामान्यतः गीत गाया करती थीं । लेकिन अब जमाना बदल चुका था । हर साल कहीं न कहीं कोई न कोई इलेक्शन दिन-रात की तरह हुआ करते थे । इलेक्शन के बाद आम की डालियां बौरों से फुला उठती थीं ।

श्रोता मैना ने नींदभरी जंभाई लेते हुए खीझभरे शब्दों में कहा —"ये मुआ इलेक्शन ! तू भी क्या ये रोज-रोज का किस्सा ले बैठी ।अरे कोई मजेदार बात सुना । ऐसी बात जिसे सुनकर दिल बहले । नींद भाग जाए । आंखों में मीठे-मीठे सपने तैरने लगें ।"

"वही तो सुनाने जा रही थी । कथा प्रारंभ करने से पहले मैंने दुपाये कथाकारों की तरह थोड़ी भूमिका बांधनी शुरू कर दी थी... मगर खैर... हां तो चुनाव की ऋतु आ चुकी थी । ऐसे में वो क्या है कि सात बंगलिया महल्ले में रहनेवाले रामविलास मंत्री का तोता खो गया ।

"कौन... ? वही... ?" श्रोता मैना ने जिज्ञासा प्रकट की —"जिसका नाम मनसुख लाल है ?"

"हां-हां... वही... बिलकुल वही... ।"

"वह तो बहुत ही प्यारा सुग्गा था । तुझे दोनों दीदे फाड़कर कैसी प्यार... चाहतभरी निगाहों से देखा करता था ।"

"हां तो मैं कह रही थी ? लो याद आ गया... । वो क्या है कि मनसुख लाल तोता एक दिन खो गया । वह रामविलास मंत्री की सच्ची समाजवादी पार्टी की तरफ से विरोधी पार्टी यानी सच्ची से भी ज्यादा सच्ची समाजवादी पार्टी के दफ्तर में सुराग़रशी करने गया हुआ था । अब तू तो जानती ही है कि इलेक्शन के दिनों में विरोधी पार्टियों की सुराग़रशी करना तथा विरोधी खेमे में अपने आदमियों की घुसपैठ करा देना कितना महत्त्वपूर्ण काम होता है । बताते हैं कि मनसुखवा यही सब करने गया था । मगर सांझ तक अपना काम करके वापस नहीं लौटा । रामविलास मंत्री ने पूरी रात पूरी शाम हाथों में खुला पिंजरा लिए "मनसुखवा बेटा... आ... जल्दी से वापस आ जा" की टेर लगाते हुए बिता दी । मगर वह मुंहझौंसा नहीं लौटा... तो नहीं ही लौटा ।

"मंत्रीजी अपनी मंत्राणी के साथ रातभर बिना अन्न-जल ग्रहण किये छत पर पिंजरा थामे रोते रहे । बात छत से नीचे उतरकर कमरों में, कमरों से बरामदों में, बरामदों से महल्ले में, महल्ले से पूरे निर्वाचन क्षेत्र में जाड़ों के कोहरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

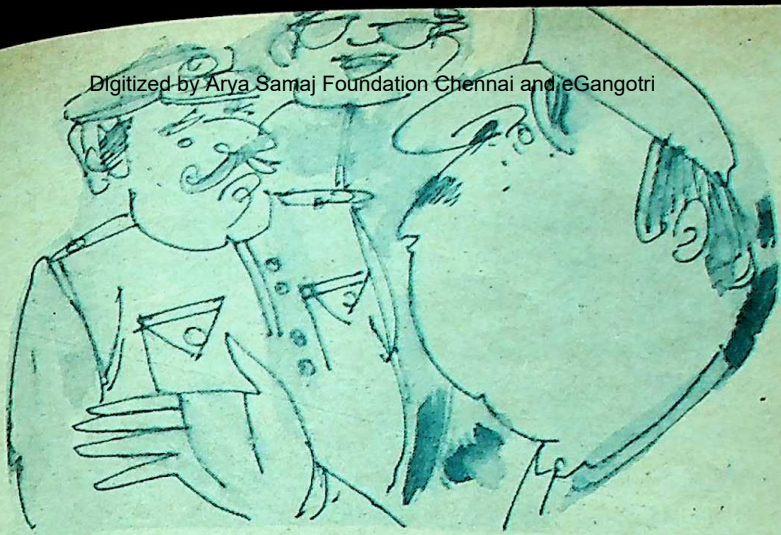

शाम को उसे मंत्रीजी, उनके पी.ए. तथा थानेदार घमंडी सिंह ने इंडियन व्हिस्की की जगह दस चम्मच रूसी वोदगा पिला दी । आखिर को था तो तोता ही । जैसी काया वैसा ही रत्तीभर का जिगरा । पट्ठा बात की बात में वोदगा पीकर टुन्न हो गया ।

की तरह फैल गयी ।

कथावाचक मैना ने अपनी बात आगे बढ़ायी —"हे सखि... इधर का हाल तुमने सुन ही लिया है । अब उधर यानी कि थाने का हाल सुनो..."

"हलके के थानेदार घमंडी सिंह ने ज्योंही तोते यानी मनसुख लाल के खो जाने का समाचार सुना, उनके हाथों से एक नहीं एक साथ दो-दो तोते उड़ गये । इस खबर को सुनने के बाद घमंडी सिंह ने सर्वप्रथम अपने पेट को तर पदार्थों से ठूंस-ठूंसकर गले तक भरा । इतने बड़े इलाके में तोता ढूंढ़ने पर न जाने कितना वक्त लग जाए । इलेक्शन का जमाना है । इलाके में खाना नसीब हो... या न नसीब हो । रोटी-बोटी... तथा अंगूर की सुपुत्री को लेकर लोग-बाग, बात को अफसाना तथा घास को दाना बना देते हैं । फिर गुमशुदा की तलाश करते समय-पीने का होश किसे रहता है ।

भोजन पानी से निबट लेने के बाद घमंडी सिंह मंत्रीजी के बंगले पर पहुंचे । ऐसे अवसरों पर रोनेवाले के साथ बुक्का फाड़कर रोने लगना प्रशासकीय शिष्टाचार के अंतर्गत आता है अतः वह भी अपनी 'पी कैप' उतारकर अटेंशन की मुद्रा में ऐड़ी से ऐड़ी मिलाये, पेट भीतर तथा सीना बाहर निकालकर रोने लगे ।

उन्हें रोता देखकर मंत्री रामविलास और भी ज्यादा जोर से रोने लगे । बोले —"अरे घमंडी तू क्यों रो रहा है । हमने थाना पुलिस इसलिए थोड़े ही रखी है कि वह लाजवंती... सुलक्षणी कन्याओं की तरह बात-बात पर रोने लगे । पुलिस तभी छीजती है जब लोग-बाग उसे देखकर रोने लगें । सो अपने आंसू पोंछ डाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मन लगाकर अपने मनसुख को खोज । जनता को बता कि मनसुख के खोने से हम कितने दुखी हैं । जनता में हमारे लिए इस हादसे को लेकर सहानुभूति की लहर जगा । हाय वह नहीं मिला तो यूं समझ हम बरबाद हो जाएंगे और अगर हम बरबाद हो गये तो तू भी यूं समझ ले कि थाने से निकालकर पुलिस लाइन के गटर में फेंक दिया जाएगा । हाय... हाय... अपना मनसुखवा कितना समझदार था... कितना वफादार था... समाजवाद से लेकर पूंजीवाद तक... सभी भाषाएं जानता था ।

थानेदार घमंडी सिंह ने यह वचन सुनकर अपने आंसू पोंछ डाले । आंखों में थानेदारोंवाला कहर... जुनून पैदा किया । मंत्रीजी के तोते को वे तोता या मनसुख तो कह नहीं सकते थे । ऐसे धृष्ट संबोधन को सुनकर मंत्री को न जाने कैसा लगता ? उन्होंने स्वर को वेदनामय बनाते हुए तफ्तीश आरंभ की । पूछा —"हुजूर... आपके चश्मेनूर, अपने मनसुखभाई का रंग कैसा था... और उनका हुलिया... पहचान का कोई खास निशान... ।"

मंत्रीजी हिचकियां लेते हुए झल्लाये..., "अरे घमंडी... ये तू क्या अनाप-शनाप बक रहा है ? तेरी अकल घास खाने तो नहीं चली गयी है ? तोते भी कहीं गोरे... काले... सांवरे... गेहुंए हुआ करते हैं । तोतों का रंग तो हरा हुआ करता है । अपने मनसुख का रंग भी हरा था । हाय क्या बात थी उसमें ? बात की बात में अच्छों-अच्छों की तबियत हरी कर दिया करता था । चोंच लाल और आंखें तोताचश्म थीं । क्यूंकि वह हमारा तोता था इसलिए खूब खाया-पिया... खूब तंदरुस्त और हाजिरजवाब जंतु था । आदमियों की बोली... यानी हिंदी-अंगरेजी दोनों बोलता था... और [illegible] बोलता था... उससे ज्यादा हर बात को [illegible] था । गली-सड़क में उड़ते समय, यानी कि [illegible] लोगों की तरह ड्यूटी बजाते समय शराब [illegible] सख्त परहेज करता था लेकिन रात को [illegible] सोते समय तीन-चार टेबिल-स्पून व्हिस्की [illegible] लगा लिया करता है । एक बार मुझे समझ [illegible] था कि अगर जिले के कलैक्टर से सांठ-गांठ [illegible] करके चुनाव के दिनों में विरोधी उम्मीदवारों [illegible] चूहा, लोमड़ी, उल्लू, भालू, बंदर, चमगादड़-जैसे चुनाव चिह्न दिलवा दिये [illegible] करें तो विरोधियों को परास्त करनेवाला [illegible] बड़ी सहूलियत के साथ हो जाया करेगा । [illegible] बेचारा विरोधी खेमे के थोक एवं फुटकर [illegible] विक्रेताओं को हमारे पास आसानी के साथ [illegible] बरगला कर ले आया करता था ।"

रामविलास मंत्री के बंगले से वापस [illegible] आकर, थानेदार घमंडी सिंह ने जाप्ते की कार्यवाही प्रारंभ कर दी । रपट में गुमशुदगी [illegible] जगह अगवा शब्द का प्रयोग करते हुए लिखा गया कि यह काम चंद निहायत चालाक जरायमपेशा लोगों ने एक संप्रदाय विशेष [illegible] तोतों के बीच हिंसा भड़काने के उद्देश्य से [illegible] सोची-साजिश के तहत योजना बनाकर [illegible] है । तोते की तलाश हेतु पुलिस ने पूरे इलाके [illegible] अपना जाल बिछा दिया है । तोते का हुलिया [illegible] बयान करते हुए उसके पूर्ण आकार के चित्र [illegible] साथ जगह-जगह पोस्टर चिपका दिये गये [illegible] जो भी सज्जन उस तोते को सही-सलामत [illegible] लिखे पते पर पहुंचा देंगे उन्हें इनाम में [illegible] चुनाव आने पर बिलकुल मुफ्त पार्टी का [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया जाएगा ।

पुलिस तफ्तीश के पहले शिकार हुए शहर के सर्राफ लाला कुंदन लालजी गुप्ता । उन्होंने थाने पहुंचते ही विपदाग्रस्त नारी की तरह दहाड़ मारकर जोर-जोर से रोना आरंभ कर दिया लेकिन घमंडी सिंह का बायें हाथ की हथेली पर नाच रहा रूल देखते ही वह सहमकर चुप हो गये ।

घमंडी सिंह ने उनसे प्यार से चुमकारते हुए पूछा —"तुमने तोता पाल रखा है ?"

"हां... हुजूर... तोता नहीं... तोती पाल रखी है ।"

"क्यों ? जरायम के लिए ।"

लाला सुबह-सुबह जाड़े में ठंडे पानी से नहाये आदमी की तरह थर-थर कांपने लगे ।

"देखो लाला... अगर देखा जाए हम दोनों एक हैं । दोनों अमन पसंद हैं तथा जरायम से नफरत करते हैं । मगर तुम्हारी तोती अराजक है, मुजरिम है, गलत सोहबत में मुब्तिला रहनेवाली औरत है । इसकी शहर के सभी अपराधियों से दांत काटी दोस्ती है । मगर वो क्या है हम सब कुछ जानते हुए भी सिर्फ तुम्हारी वजह से मामले को टालते रहे । क्या हम जानते नहीं कि गश्त पर निकले हमारे बीट कांस्टेबल पीने-पिलाने के चक्कर में जब भी जरा इधर-उधर होते थे तभी वो तुम्हारी तोती चोर-डाकुओं को बुलवा उनके माल का सौदा तुम्हारे साथ करवा दिया करती है ।"

इतना सुनने के बाद कुंदनलाल सर्राफ के मुंह से झाग निकलने लगा । आंखें बरसाती फूट की तरह फटकर फैल गयीं । उन्होंने दहाड़ मार एक बार फिर रोने की कोशिश की मगर

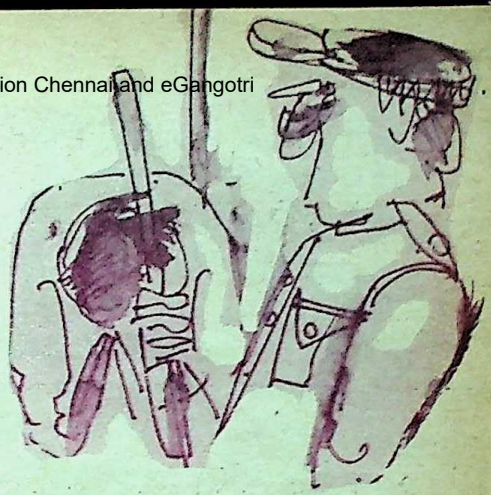

घमंडी सिंह का रूल देख फिर सहमकर चुप हो गये ।

"देखो लाला," घमंडी सिंह ने अपनी तफ्तीश आगे बढ़ायी —"हमें अपने खास तरीके से पता लगा है कि तुम्हारी सुग्गी ने हमारे मंत्रीजी के तोते का अपहरण करवाया है । यह साफ-साफ राष्ट्र द्रोह का मामला है । और अगर तुम गले-गले गंगा के बीच खड़े होकर कसम खाओ कि तुम्हारी सुग्गी ने तुम्हारी मरजी... यानी कि तुम्हारी साजिश के बगैर सिर्फ अपनी इच्छा से भाई मनसुख लाल को अगवा किया है तो इसे कम से कम मैं तो सच नहीं मानूंगा ।"

इतना सुनने के बाद कुंदनलाल सर्राफ के लिए अपने आपको रोक पाना मुश्किल काम हो गया । अतः वह बुक्का फाड़कर रोने लगे । घमंडी सिंह ने उनकी पीठ पर चार रूल जमा दिये जिसे पुलिसवालों की भाषा में 'माइल्ड केनिंग' कहते हैं । इस प्रकार की केनिंग की प्रमुख विशेषता यह है कि पिटनेवाला कहता है कि उसके बदन पर गंभीर चोटें आयीं जबकि डॉक्टर या कानून अर्थात अदालत को यह चोटें दिखलायी नहीं देतीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अवसर पर तफसिया यानी कि सुलह करवाने के लिए हेड मुहर्रिर हिकमतलाल आये। उन्होंने घमंडी सिंह को तरेरते हुए कहा —"अरे हुजूर बस... बस... । यह आप क्या कर रहे हैं ? जिस पर आप डंडे बरसा रहे हैं वह तो, दूध तथा काले धन की पली-पलायी पराग मक्खन-जैसी चिकनी कोमल काया है। आप तोता ही न चाहते हैं ? वह आपको मिल जाएगा आज नहीं तो कल-परसों तक जरूर मिल जाएगा। यह मेरा जिम्मा रहा। अब भगवान के लिए इन नरम हड्डियों की तोड़ा-तोड़ी छोड़िए।"

"इसके बाद सेठ कुंदनलाल सर्राफ जमीन से उठाकर हत्थेदार कुरसी पर बैठा दिये गये। थोड़ी देर तक बेगम अख्तर की प्रसिद्ध ठुमरी की तर्ज में घमंडी सिंह और कुंदनलाल मदभरी नजरों से एक-दूसरे की देखा-देखी करते रहे। इसके बाद हिकमतलाल ने उन्हें घमंडी सिंह की ड्योढ़ी पर पहुंचा दिया। साथ गयी लेडी कांस्टेबल ने उन्हें मेम साहब अर्थात थानेदारिन के हाथ, पांव, गले, कलाईयों, अंगुलियों इत्यादि के माप उपलब्ध कराये। भीतर से महीन... पतली आवाज में हिदायतें आती रहीं... "लाला जरा ठोस चीजें बनवाना। आजकल सुनार लिफाफी माल तैयार करने लगे हैं। उन मिर्जापुरी कंगनों की बात मैं आज भी नहीं भूली हूं। ससुरों का तीन दिनों में एक-एक टांका अलग हो गया था।"

कुंदनलाल सर्राफ इस आश्वासन को देने के बाद रिहा कर दिये गये कि वे मनसुख भाई को ढूंढ़ने में अपनी जान की बाजी लगा देंगे तथा मुखबिरी कराकर थाने में रोज बजाप्ता ऐसे दस नंबरियों की इत्तला भेजते रहेंगे जो चंद देशद्रोही ताकतों के साथ साजिश कर तोतों को अगवा करवाने तथा शांति और सुरक्षा को खतरा पहुंचाने-जैसी मुजरिमाना हरकतों में मसरूफ रहते हैं।

इसके बाद बहेलियों की बारी आयी। अब ये लोग कुंदनलाल सर्राफ या इनके भाई बिरादर तो थे नहीं जो इतनी आसानी से छूट जाते।"

इतना कहने के बाद कथावाचक मैना सुस्तायी। उड़कर पास की छत पर धूप में सुख रहे सरसों के दाने-जैसे बाजरे के चार दाने अपनी चोंच में डाले। तत्पश्चात —पुनः कथा का छोर पकड़ते हुए अपनी बात प्रारंभ की —"अब बहना यूं जानो कि यह बहेलियों की कमाई का सीजन था। सभी पार्टीवालों को इनकी दरकार थी। सभी चाहते थे कि बहेलिये सड़क-सड़क गली-गली घूमकर पक्षी फांसें तथा उन्हें 'बियरर चैक' पर निकाली गयी रकम की तरह थमा दें। मगर प्रभु की मरजी। रोजे बख्शवाने के चक्कर में नमाज इनके गले मढ़ दी गयी थी। कुछ बहेलिये थाने में पिट चुके थे और जो अब तक नहीं पिटे थे, वो पीटे जाने के डर से अधमरे हो रहे थे। मगर जो पिटे वो सब बड़े सख्त जान जीव थे। पिटते-पिटते वे आदमी से कछुआ बन गये मगर नामुरादों ने गुमशुदा तोते का पता बताकर नहीं दिया।

आजिज आकर थानेदार घमंडी सिंह ने हिम्मत से काम लिया। दो बहेलिये... जो पिछली तीन पुश्तों से पुलिस की मुखबिरी करते थे, साधे गये।

दोनों ने गीता तथा भगवान श्रीराम को हाजिर-नाजिर जानकर अदालत में बयान दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि "मनसुख भाई को अगवा किये जाने का काम दुलारे, घसीटे, रज्जाक, सुलतान, सभी महल्ला कादियान बल्दियत नामालूम तथा इनके दोस्तों ने किया है । इनके दोस्तों का नाम, बाप का नाम व पता हम नहीं जानते लेकिन दिखाये जाने पर हम इनकी शिनाख्त कर लेंगे ।"

अदालत में सभी मुलजिमों को घमंडी सिंह ने बसिलसिला तफ्तीश दस दिनों की रिमांड पर अपनी हिरासत में ले लिया ।

इतना कहने के उपरांत पटाक्षेप करते हुए कथावाचक मैना ने कहा —"इसके बाद बस इतना ही कहना है कि जैसी भगवानजी ने मंत्री रामविलास के साथ करी वैसी सबके साथ करे ।"

श्रोता मैना ने झल्लाकर अपना पंख नोचते हुए पूछा —"मतलब ?"

"अरी बावरी... मतलब यह कि मंत्री रामविलास भारी बहुमत से इलेक्शन जीत गये, विरोधियों की जमानतें जब्त हो गयीं और इस तरह पूरा किस्सा कोता खतम हुआ । चारों तरफ अमन-चैन छा गया ।"

श्रोता मैना कथा का ऐसा अप्रत्याशित अंत सुनकर बिलबिला उठी —"अरी नासपीटी... हरजाई... तूने इसी बकवास के लिए मेरा इतना वक्त खोटा किया । अरे कम से कम यह तो बता कि मनसुख तोते का क्या हुआ ? पुलिस द्वारा पकड़े गये गरीब बहेलियों पर कैसी बीती ?"

"होना क्या था ।" कथावाचक मैना ने उत्तर दिया —"देख बहना मैं तुझे एक राज की बात बतलाती हूं । इस बात को किसी से

कहना-सुनना नहीं । वरना गजब हो जाएगा । मैं मुफ्त में मारी जाऊंगी । बाकी मनसुखवा साला एक नंबर का पाजी तोता निकला । शाम को उसे मंत्रीजी, उनके पी.ए. तथा थानेदार घमंडी सिंह ने इंडियन व्हिस्की की जगह दस चम्मच रूसी वोदगा पिला दी । आखिर को था तो तोता ही । जैसी काया वैसा ही रत्तीभर का जिगरा । पट्ठा बात की बात में वोदगा पीकर टुन्न हो गया । निकला था सुरागरशी पर लेकिन मंत्रीजी के बंगले के बाहर आते ही मुंडेर पर हिलना-डुलना भूलकर सो गया । उधर घमंडी सिंह पहले से ही ताक लगाये बैठे थे । वे उसे पिंजरे में बंद करके अपने घर ले गये । इलेक्शन के बाद छह-सात जगह दबिश देकर तथा चालीस-पचास राउंड गोलियां चलाकर पुलिसिया तामझाम के साथ उसकी बरामदगी दिखला दी गयी तथा उसे मंत्रीजी की सुपुर्दगी में दे दिया गया ।"

"अरी सुमुरनी ।" श्रोता मैना ने पूछा —"अभी तो तू कह रही थी कि मामला कोर्ट-कचहरी तक पहुंच गया था ।"

"तो तो मैं अब भी कह रही हूं । कोर्ट में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनसुख ने हलफ उठाकर बयान दिया कि एक तोती जो शकल-सूरत से खूबसूरत मगर फाहशा दिखलायी देती थी, मुझे धोखे से पानी की जगह कोई नशीला पदार्थ पिलाकर वीराने में एक बरगद के पेड़ के नीचे ले गयी । वहां कुछ लोग पहले से ही मौजूद थे । वे मुझे एक पिंजरे में कैद करके किसी नामालूम जगह पर ले गये । पूरे दस दिन मैंने जालिम दरिंदों की कैद में बिताये । खाना-दाना मुझे नहीं के बराबर दिया जाता था । मैं सूखे के रोगी की तरह सूखता चला गया । एक दिन मेरा चौकीदार भूलवश पिंजरे का दरवाजा बंद किये बगैर शराब पीने बैठ गया । बस मैं ताबड़तोड़ सर पर पांव रखकर भागा । उसके पहले कि पीछा कर रहे दुश्मन मुझे दबोच पाते... मुझे रास्ते में जुर्म को हमेशा-हमेशा के लिए खतम कर देने की कसम खाये हुए कर्त्तव्यनिष्ठ थानेदार घमंडी सिंह मिल गये । मैं उचककर उनकी जीप के बोनट पर बैठ गया । बेचारों ने मुझे शुद्ध सात्विक भोजन कराकर मेरे मालिक के पास पहुंचा दिया ।''

''और वे बहेलिये जो पुलिस रिमांड में थे ? उनका क्या हुआ ?''

वे सब संदेह का लाभ देकर बरी कर दिये गये ।

उपसंहार

''हे सखि... इसे सहानुभूति लहर द्वारा इलेक्शन जीतना कहते हैं । तोता खोने से मंत्रीजी दुखी थे । मंत्रीजी के दुख से जनता दुखी थी । अब दुखी-दुखी को वोट न देता तो किसे देता ।''

—द्वारा : श्री राम गोपाल
शांति सदन,
मोतीनगर,
लखनऊ ।

त्वचा को गोंद से चिपकाया जा सकेगा

अभी तक त्वचा के कट-फट जाने या छिल जाने के लिए टांकों या प्लास्टिक सर्जरी आदि का उपयोग करना पड़ता था, किंतु अब ब्रिटेन के ब्रैड फोर्ड विश्वविद्यालय में बनाया गया एक विशेष प्रकार का गोंद जिसे 'सुपर ग्लू' के नाम से जाना जाता है, को त्वचा पर लगाने से टांका लगाने की आवश्यकता नहीं होगी । यह त्वचा उसी प्रकार चिपकायी जा सकेगी, जिस प्रकार कागज चिपकाये जाते हैं । इससे मरीज को कष्ट नहीं होगा ।

'सुपर ग्लू' को विकसित करने का श्रेय ब्रैड फोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर 'टैरी वैकर' और डॉ. रावटर्स को है ।

इस गोंद के उपयोग से जख्म बहुत जल्दी सूख जाता है, इसे जख्म पर सही मात्रा में लगाने के लिए एप्लीकेटर भी बनाया गया है । यह गोंद कुछ ही क्षणों में त्वचा को चिपका देता है, इससे त्वचा में इंफेक्शन, दाग आदि रहने की कम संभावना रहती है ।

—डॉ. देवेन्द्र भूषण तिवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमद्भागवत की रचना ने व्यासजी को संतापमुक्त किया

महाकवि वल्लतोल

महाभारत की रचना करने के बाद व्यासजी को मनस्तुष्टि का एक ऐसा आवेग आया कि अपनी रचना पर वे खुद ही अत्यंत मुग्ध हो गये। भोजपत्र पर लिखे महाभारत के प्रत्येक श्लोक को वे उलट-पुलटकर देखते और आत्मगर्व का ऐसा अनुभव करते, मानो जो-कुछ उनके मानस ने व्यक्त किया, उसकी क्षमता अपोरुषैय है। अनायास ही उनकी मानस-दृष्टि ब्रह्मा की रचना पर जाती और जिस जीव-चराचर की सृष्टि प्रजापति के शिल्प-कौशल से हुई है, उसकी तुलना में वे अपने महाकाव्य की रस-सृष्टि को रखते और अप्रयास उनकी वाणी से फूट पड़ता, 'बूढ़ा ब्रह्मा चौकड़ी भूल गया है—कितना अपूर्ण और

श्रीमद्भागवत हिंदी ही नहीं, भारत के समस्त भाषा-साहित्य-सर्जन का प्रेरक-पोषक रस-स्रोत है। 'जो कहीं नहीं है वह भी महाभारत में है'—ऐसा अद्भुत ग्रंथ महाभारत रचने के बाद भी व्यासजी के अवचेतन को तुष्टि-तृप्ति नहीं मिली थी। अहंकार के घोड़े पर सवार वे दिग-दिगंत भटकते रहे। अंततः विष्णुलोक पहुंचे जहां अहंकार के दमनार्थ विष्णु ने उन्हें लीलागान करने का आदेश दिया। तदनुसार व्यासजी ने कृष्ण की लीलाओं में मुखरित श्रीमद्भागवत की रचना की। वे पूर्णकाम हुए, उनकी अतृप्तियों को वांछित तुष्टि मिली।

व्यासजी की ही कविर्मनीषी-परंपरा में केरल में महाकवि वल्लतोल हुए हैं, जिन्होंने मलयालम में व्यासजी के इस रोग-निवारण की साधना को काव्यबद्ध किया है। प्रस्तुत पंक्तियां इसी काव्य-कथा का संक्षिप्त किंतु अविकल भाषांतर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस-पंगु है उसका जगत् । हर बीच किसी-न-किसी अभिशाप से दग्ध, किसी-न-किसी पंगुता से दुर्बल ! सही है कि मनुष्य या जीव-सृष्टि के साथ समस्या की सीमाएं रहनी चाहिए—कोई-न-कोई अपूर्णता कोई-न-कोई दुर्जेय शिखर रहना चाहिए, जिसके आरोहण से भीतर का संकल्प और बाहर का श्रम प्रकट हो, विभूतियां अपने आकार ग्रहण करें... किंतु ब्रह्मा की सृष्टि में तो जहां देखो, वहां अभिशाप के सिवाय और कुछ है ही नहीं, मेरी कवि-सृष्टि महाभारत में ऐसा कुछ नहीं है । मैंने जीव-चराचर के साथ न्याय किया है, अपने हृदय की रस-रागात्मकता मैंने इस भूमंडल के प्राणियों को अकृपण भाव से प्रदान की है । मैं ब्रह्मा की भांति वीतराग नहीं बना हूं—सृष्टि से विराग कलाकार की दुर्बलता है—मैंने अपनी परिपूर्ण आत्मीयता अपने जगत को दी है । अपने धर्म का मैंने पूरा पालन किया है ।'

इसी विचारधारा में व्यासजी की दृष्टि विष्णुलोक तक पहुंची । देखा, क्षीरसागर के उस विलास-विरल हिमकक्ष में समस्त चिंताओं से मुक्त महाविष्णु शयन कर रहे हैं । दिक् और काल हाथ बांधे खड़े हैं ; धरती, आकाश, अग्नि, वायु, वरुण, पांचों तत्व योगियों की भांति ध्यानस्थ प्रभु के नेत्र खुलने की प्रतीक्षा में न जाने कितने युग-युगांतर से खड़े हैं—एक ओर कोने में चंद्र-सूर्य और अगणित तारा-मंडल अपलक विष्णु-मुख को निहार रहे हैं—दूसरे कोने में, अपनी समस्त स्वर्गश्री में उद्भासित इंद्र तैंतीस कोटि देवताओं के साथ खड़े हैं । तीसरे कोने में समस्त ऋषि-मुनियों के समुदाय वेदगान एवं तत्व-चिंतन में लीन

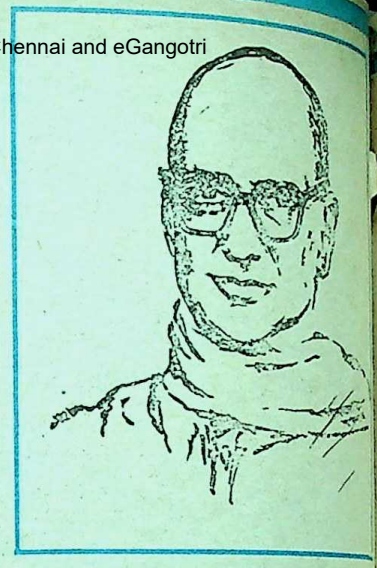

उपस्थित हैं । ये तीन कोने देख लेने के बाद व्यासजी की उत्सुकता चौथे कोने को देखने के लिए भी जागी । किंतु वहां उन्होंने जो कुछ देखा, उससे आश्चर्य-स्तब्ध रह गये । उन्होंने देखा, चौथे कोने में स्वयं व्यासजी खड़े हैं। प्रार्थना में उनके दोनों हाथ आबद्ध हैं । नेत्र बंद हैं और भाल पर आनंद की सहस्र-सहस्र ज्योतियां प्रतिभासित हो रही हैं । सारी देह ज्योतिर्मय है । उनके रोम-रोम से आनंद की उर्मियां प्रकाशित होकर वायु-तरंगों द्वारा समस्त लोक-लोकांतर में फैल रही हैं । अपने-आपको महाविष्णु के जागरण की प्रतीक्षा में इस प्रकार लीन देखकर व्यासजी बड़े विस्मय-विह्वल हुए । स्वप्न है या सत्य ? छल है या प्रत्यक्ष ? परोक्ष है या साक्षात् ? आदि द्विधात्मक प्रश्न उनके इर्द-गिर्द वनेले हिंस्र पशुओं की भांति मंडराने लगे । जब समस्या का स्पष्टीकरण न हो पाया, तो वे बड़े उद्विग्न होकर अपने-आप ही बोले 'संसार की ही नहीं, आत्मा के धर्म-अधर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक की कोई समस्या ऐसी नहीं है, जो मेरे मस्तिष्क से सुलझी नहीं हो—बीच से लेकर ब्रह्म तक के सारे अगणित रहस्य मेरी प्रज्ञा पर रंगीन चित्रों की भांति स्पष्ट हुए हैं । स्वयं काल मेरी काव्य-शक्ति के सम्मुख पराजित हुआ है । ब्रह्मा की भाग्यलिपि देवानुग्रह से मिटी है, शिव के शाप तक लोक-कल्याण की गंगा में घुल गये हैं, किंतु व्यास के वचन कभी अपने अर्थ में चूके नहीं हैं—मैंने जो लिखा, वह अविनाशी है, अक्षर है ; मगर आज मेरे सामने यह जो मेरा ही रूप खड़ा है, इसके रहस्य को मेरी बुद्धि क्यों नहीं भेद पा रही है—क्या दिक्, काल और जीवन का विजेता कविर्मनीषी व्यास अपना अपराजेय पौरुष खो चुका है ।

विष्णु के दरबार में खड़े उस 'व्यास' को व्यासजी इस प्रकार कई कल्प तक देखते रहे । विष्णुकक्ष के उस कोने में खड़े व्यास अपने स्थान एवं मुद्रा में ही अविचल नहीं थे, अपनी ज्योतिर्मयता में भी वे अखंड-अविभाज्य थे । सहसा एक दिन विष्णु के नयन खुले । तीनों भुवन देव, गंधर्व एवं किन्नरों के स्तव-गान से गूंज उठे । अंतरिक्ष का प्रत्येक पवन-कण मानो वेद की एक प्रतिध्वनित ऋचा थी । विष्णु ने अपने प्रफुल्ल-कमल-जैसे नेत्रों से चारों दिशाओं में देखा । व्यासजी को खड़ा देखकर वे किंचित् मुसकराये, मानो अंधकार के पट पर लक्ष-लक्ष ज्योत्स्नाएं एक साथ उदित हो गयी हों और गंध-मदिर कुमुदनियां अपने कृष्ण स्वभाव को भूलकर सर्वस्व दान-प्रदान में प्रवृत्त हो गयी हों । फिर वे व्यासजी से बोले, 'महर्षे ! आप यहां ? क्यों ? कृपया बतलाइए, अपने आगमन का कारण ! अपनी मानस-सृष्टि में ब्रह्मा को भी पराजित करनेवाले, महाकाल के सीमाहीन शासन में भी सर्जन को अमरत्व देनेवाले ! विध्वंस क्षणिक है, अनित्य है और निर्माण शाश्वत है, नित्य है—इस सूत्र को काल के भाल पर अनश्वर अक्षरों में लिखनेवाले महाकर्मा कहिए, आपने किस उद्देश्य में यहां पधारकर मेरे जागरण की प्रतीक्षा की है ?'

कोने में योगस्थ खड़े व्यास ने सामगान-स्तुति के बाद सविनय कहा 'प्रभो, मेरे विषय में आपने जो-कुछ कहा, वह तो मेरे ही अहंकार की भाषा, जिसे आपकी सर्वज्ञता ने मुझ दुरात्मा के ही सम्मुख उड़ेल दिया है । काव्य में मैंने मानवता की व्याख्या गायी है । मानवता स्वयं अमर-अच्युत है । अतः मेरे काव्य का अमरत्व तो मनुष्य की भीतरी ज्योतिर्मयता का अमरत्व है । उसके गुणगान से मुझे भी अमरता का स्पर्श मिल गया, यह तो मेरा भाग्य ही है । किंतु मैं इस सबसे संतुष्ट नहीं हूं—अपने को देख मुझे कई बार ग्लानि ही होती है, प्रसन्नता नहीं । प्रायः अनुभव करता हूं कि इतना सब होने पर भी कुछ नहीं कर पाया हूं । कवि-कर्म की सिद्धि का अनुभव मेरे मानस पर कभी नहीं उतरा । वाल्मीकि को जो आह्लाद रामायण की रचना के बाद मिला, उसका सहस्रांश भी अष्टादश पुराण, 'ब्रह्मसूत्र' और 'महाभारत' लिखने पर मुझे नहीं मिला है । कौन-सा दुर्भाग्य मेरी सिद्धि को इस प्रकार मुझ तक पहुंचाने में बाधक हो रहा है—प्रभो ?'

विष्णु के शतदल की पंखुड़ियों-जैसे होंठों पर द्वितीया के चंद्र-सी मुसकान उदित हो गयी । क्षणभर लोचनों की मोहक किरणों से व्यास को विह्वल करने के बाद अमृतवाणी में वे बोले,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आपके संताप से मुझे आश्चर्य हो रहा है, मुनिवर ! मर्त्यलोक और देवलोक की कौन-सी श्री-संपदा आपसे दूर है । आप तो भारत-राष्ट्र के निर्माता, भावी मानवता के भाग्यविधाता और ज्ञान-विज्ञान के मृत्युंजयी प्रवाह के अमित-अजस्र स्रोत हैं । आपने महाभारत रचकर देवी सरस्वती को ही चिरसुहाग नहीं दिया, भारत-युद्ध रचाकर दंभाडंबर और मिथ्या-विकृतियों को भी भारतभूमि से भस्मीभूत कर दिया है । आप तो सुर-नर-मुनि, सबके वंद्य हैं ।'

व्यास ने वैकुंठाधीश की यह मर्मभरी वाणी सुनी, तो उनके नत नयनों से अश्रुधार बह चली । मुख रक्ताभ हो गया और देह रोमांचित हो उठी । भावावेग कम होने पर प्रत्युत्तर देने की चेष्टा में कहने लगे, 'प्रभु-मुख से यह प्रखर वाणी ही, वास्तव में, मेरा परिमार्जन करेगी । यह अनल-प्रज्वलित वायावली ही मेरे स्वर्ण को शुद्ध करेगी । किंतु प्रभो, कब तक सुनूंगा इसे ? मेरे अंतराल का दाह क्या इससे किसी प्रकार कम है ? मेरे श्वासोच्छ्वास के अग्निदंश क्या कम दाहक हैं—जिस पावक में मेरा मानस विदग्ध है, क्या उससे वह समस्त कुंठा-कदर्य क्षारशेष नहीं हो सकता—प्रभो, अब तो डोर खींच लीजिए—यह पक्षी काफी भटक चुका है—मेरे पश्चाताप का वजन उतारिए, मुझे अब उबारिए ।'

विष्णु के बिंबाधरों की स्मिति सहसा लुप्त हो गयी । वे अपने आसन से उठे और उन्होंने आनत-अश्रुतरल व्यास को अपने बाहुओं में भर लिया—प्रेमांबुधि स्वयं सूखी सरिता में मानो परिव्याप्त हो गये हों ! गद्गद स्वर में विष्णु ने कहा, 'ज्ञान साक्षात्कार अवश्य है, किंतु तादात्म्य नहीं ! कर्म तीर्थयात्रा अवश्य है, किंतु तीर्थफल नहीं ! महर्षे, साक्षात्कार और तादात्म्य की दूरी ही आपका संताप है ; तीर्थयात्रा और तीर्थफल का यह द्वैत ही आपकी अतृप्ति का चीत्कार है । इसे मिटाइए । प्रेम इसे मिटाएगा । ज्ञानी, ज्ञेय और ज्ञान के त्रिकोण में तीनों भुजाएं मिलती अवश्य हैं, किंतु परस्पर की दूरी से वे मुक्त नहीं हो पाती हैं । प्रेम में यह नहीं होता । प्रेमी, प्रेमाराध्य और प्रेम तीनों एक ही बिंदु में अपने उत्कर्ष की चरम सिद्धि प्राप्त करते हैं ।

...और, व्यासदेव अपने ज्ञान और चिंतन की गठरी वहीं प्रभु-चरणों में उतारकर विष्णु-भवन से बाहर निकल पड़े । वे प्रेम की खोज में देश-देशांतर का पर्यटन करते हुए अंत में ब्रजभूमि में आये, जहां साक्षात् प्रेमरूपा गोपियां लूलाधाम के संयोग-वियोग में अपनी समस्त कुत्सा कल्मश को जलाकर आराध्य के प्रेमांबुधि की पावन पुण्य-तरंगें बन गयी थीं—प्रेम के प्रत्यक्ष प्रणिधान ने जहां स्वयं प्रणव की सगुण-निर्गुण गंगा-यमुना को तीर्थराज की चरितार्थता प्रदान की थी !

व्यासजी लीला की इस पूर्णिमा-भूमा में ऐसे वाणी-मुखर हुए कि उनके श्रीमद्भागवत् को सुनने के लिए देवता तो क्या, स्वयं लीलाधाम पुरुषोत्तम भी छद्मवेश धारण करके आते थे और श्रीमद्भागवत् के सर्जन के रूप में प्रवाहित बूंद-बूंद की वह रस-सृष्टि व्यासजी की प्रेम-साधना का ऐसा मधुकुंड बन गयी कि जो भी उसके किनारे गया, स्वयं लीलानंद का रस-स्रोत हो गया ।

— भाषांतर : रतनलाल जोशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक की भूल दूसरे का सौभाग्य

गलती करना मनुष्य का स्वभाव है, लेकिन कभी-कभी एक गलत निर्णय इतिहास की धारा ही बदल डालता है... हिंदी सिनेमा का इतिहास कुछ और ही होता यदि देवानंद ने पुलिस की वरदी के ऊपर रंगीन स्कार्फ पहनने की जिद न की होती, या राजकुमार को सरसों के तेल (बिजनौर के तेल) से गहरी अरुचि न रही होती, या दिलीप कुमार आत्म-सम्मोहन (आत्म कथन के सम्मोहन) से ग्रस्त न रहे होते अथवा इन लोगों के द्वारा सिपाही का रोल करने से मना कर देने से वह एक ऐसे लमछड़ अभिनेता को न मिल जाता, जिसकी एक दर्जन फिल्में फ्लॉप हो चुकी थीं ।

भूमिकाएं किसी ने छोड़ीं किसी को मिलीं

यश चोपड़ा ने अपने सहायक नरेश मल्होत्रा से 'डर' का निर्देशन स्वयं अपने हाथों में ले लिया, तो फिल्म के कलाकारों में नाटकीय परिवर्तन कर दिया । ऋषि कपूर ने यश चोपड़ा को पूरी तरह आश्वस्त किया था कि वह (यश चोपड़ा) ही इस फिल्म के साथ न्याय कर पाएंगे । प्रतिनायक की भूमिका पहले ऋषि कपूर को ही निभानी थी, जिसे बाद में शाहरुख खान ने निभाकर अमर कर दिया । यश चोपड़ा को ऋषि कपूर की अभिनय क्षमता में कोई संदेह न था, किंतु उन्हें इस रोल के लिए अपेक्षाकृत कम आयु के कलाकार का होना अधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ । और इस क्रम में उनकी पहली पसंद थे संजय दत्त, लेकिन संजय दत्त ने इसमें रुचि नहीं ली और यश को उत्तर दिया, "मैं दोबारा खलनायक की भूमिका नहीं करना चाहता ।"

उनकी दूसरी पसंद थे अजय देवगन, पर वह असमंजस में था कि यह भूमिका स्वीकार करे या नहीं ? लेकिन तारीखें खाली न होने के कारण उसे अस्वीकार किये बिना छुटकारा मिल गया । आमिर खान उस समय यश चोपड़ा के लिए 'परंपरा' में काम कर रहा था, उसे पता चला तो वह उछल पड़ा और उसने यश से अपने लिए इस रोचक भूमिका की मांग की । यश भी बहुत प्रसन्न हो गये ।

आमिर ऐसा अभिनेता था जो किसी भी भूमिका को अच्छी तरह निभा सकता था, और उसका प्रतिनायक की भूमिका में आना दर्शकों में फिल्म के प्रति उत्सुकता को बहुत बढ़ाता भी, लेकिन 'डर' के आरंभ होने के कुछ ही दिनों पहले आमिर ने अपना इरादा बदल दिया । उसने फिल्म के क्लाइमैक्स में परिवर्तन कराना चाहा । उसने यश चोपड़ा से कहा, "मैं क्लाइमैक्स में सनी से चुपचाप मार नहीं खाऊंगा, मैं मुकाबला करूंगा ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गलती करना मनुष्य का स्वभाव है, लेकिन कभी-कभी एक गलत निर्णय इतिहास की धारा ही बदल डालता है... हिंदी सिनेमा का इतिहास कुछ और ही होता यदि देवानंद ने पुलिस की वरदी के ऊपर रंगीन स्कार्फ पहनने की जिद न की होती, या राजकुमार को सरसों के तेल (बिजनौर के तेल) से गहरी अरुचि न रही होती, या दिलीप कुमार आत्म-सम्मोहन (आत्म कथन के सम्मोहन) से ग्रस्त न रहे होते

निर्देशक यश और पटकथा लेखिका हनी ईरानी दोनों ने ही आमिर की बात स्वीकार नहीं की। आमिर ने फिल्म छोड़ दी।

चमकता भाग्य का सितारा

यह एक भयानक भूल थी। उत्साही अभिनेता शाहरुख खान के मन में भूमिका के प्रति कोई आशंका या पूर्वाग्रह-जैसी बात नहीं थी। उसने सहर्ष यह भूमिका स्वीकार कर ली। बाजीगर-जैसी अति सफल फिल्म के बाद 'डर' की सफलता ने शाहरुख खान की लोकप्रियता को आसमान पर पहुंचा दिया।

आमिर ने ऐसी भयंकर भूल पहली बार नहीं की थी। कुछ वर्षों पहले कैमरामैन से निर्देशक बने लारेंस डिसूजा ने 'साजन' में आमिर को सलमान खान के साथ समानांतर भूमिका के लिए लेना चाहा तो उसने कहा कि 'मैं अभी आपका काम देखना चाहता हूं।' इस पर डिसूजा ने सीधे संजय दत्त से बात की। संजय ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। फिल्म खूब सफल हुई और संजय दत्त का डूबता सितारा आकाश में चमक उठा।

हरमेश मल्होत्रा ने 'नगीना' के लिए जयाप्रदा से प्रस्ताव किया। जयाप्रदा ने रुचि नहीं ली। हरमेश ने जयाप्रदा की प्रतिद्वंद्विनी अभिनेत्री श्रीदेवी से संपर्क साधा। श्रीदेवी ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और 'नगीना' में उसके नृत्य ने उसे स्टार अभिनेत्री बना दिया।

पटकथा की यात्रा

सलीम-जावेद ने 'जंजीर' की पटकथा लि

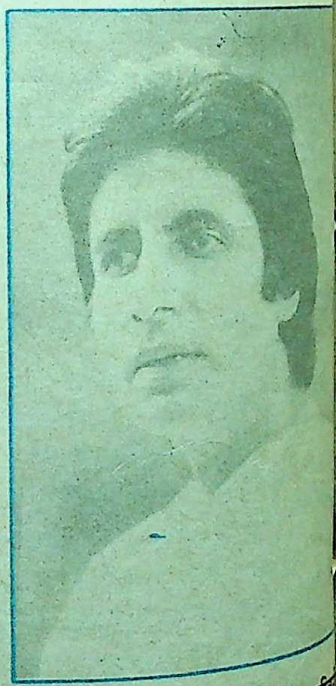

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस इंस्पेक्टर की मुख्य भूमिका के लिए धर्मेंद्र से संपर्क किया। एक वर्ष तक पटकथा अपने पास रखकर धर्मेंद्र ने कंधे उचका दिये कि 'भला पुलिस इंस्पेक्टर भी हीरो हो सकता है।' धर्मेंद्र ने हंसी उड़ाते हुए कहा —"कहानी में कुछ दम नहीं है।" पटकथा जितेंद्र, दिलीप कुमार, देवानंद के हाथों में होती हुई वापस लौट आयी। लेकिन किसी ने उसे पसंद नहीं किया। जितेंद्र को पुलिस इंस्पेक्टर की भूमिका में उछल-कूद जनता को पसंद न आने का डर था। दिलीप कुमार के लिए पुलिसवाले की भूमिका में स्वगत-कथन के लिए गुंजाइश नहीं लगी। देवानंद को पटकथा इसलिए पसंद नहीं आयी कि पुलिसवाला रंगीन स्कार्फ नहीं पहन सकता।

अंत में पटकथा प्रकाश मेहरा के हाथों में पहुंची। उन्हें वह भा गयी। उन्हें पुलिस इंस्पेक्टर की भूमिका के लिए जानी राजकुमार पसंद आये जो वास्तविक जीवन में भी पुलिस इंस्पेक्टर रह चुके थे। जानी को भी भूमिका में जान नजर आयी। जानी ने कहा, "हीरो तो मैं ही हूं, लेकिन निर्देशक तुम नहीं रहोगे। क्योंकि जानी, आपके बालों में से बिजनौर के तेल की बू आ रही है।"

नये अध्याय का प्रारंभ

प्रकाश मेहरा खीझकर वापस सलीम-जावेद के पास आ गये। सलीम-जावेद ने सुझाव दिया कि नामी कलाकारों के पीछे भागने की बजाय नये कलाकार को लिया जाए। वह नखरे नहीं करेगा। उन्होंने संघर्षशील लंबूतड़े कलाकार का नाम सुझाया जिसे उन्होंने 'बौम्बे टू गोआ' में देखा और पसंद किया था। तीनों मिलकर इस लंबूतड़े नये कलाकार अमिताभ बच्चन के पास पहुंचे और अनुबंधित कर लिया। तब किसी ने भी नहीं सोचा था कि उनके इस निर्णय से हिंदी सिनेमा में एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है।

फिल्म 'शोले' में गब्बर सिंह की भूमिका के लिए रमेश सिप्पी की पहली पसंद थे डैनी। लेकिन डैनी ने 'धर्मात्मा' में व्यस्त होने के कारण प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। रमेश सिप्पी की तत्कालीन पत्नी गीता ने अमजद खान का नाम सुझाया, जिसे वह रंगमंच के अच्छे कलाकार के रूप में जानती थी। और इस प्रकार अमजद ने अपने जीवन की सर्वश्रेष्ठ भूमिका 'शोले' में निभायी। विडंबना देखिए कि कुछ दिनों की शूटिंग के बाद सलीम-जावेद ने अमजद को इस भूमिका से हटाने का प्रस्ताव कर दिया। उनके अनुसार अमजद की आवाज में भूमिका के अनुरूप दम नहीं था। सौभाग्य से रमेश सिप्पी ने उनकी बात नहीं मानी और अमजद इस ऐतिहासिक भूमिका में बने रहे।

शिखर से अपदस्थ

'जंजीर' ने अमिताभ बच्चन की पहचान बनायी थी तो 'दीवार' ने उसे स्टार बना दिया। अमिताभ ने अंततः तत्कालीन स्टार अभिनेता राजेश खन्ना को सर्वोच्चता के शिखर से अपदस्थ करके स्वयं वह स्थान प्राप्त कर लिया। वस्तुतः इसकी पृष्ठभूमि राजेश खन्ना ने स्वयं ही अपने एक नासमझीभरे कदम से तैयार कर दी थी। यश चोपड़ा, जिन्होंने 'इत्तफाक' और 'दाग' राजेश खन्ना को साथ लेकर बनायी थीं, 'दीवार' के लिए भी एक बड़ी रकम राजेश खन्ना को अनुबंध राशि के अग्रिम के रूप में दे चुके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे ।

राजेश खन्ना ने फिल्म 'भोला-भाला' के लेखक सलीम-जावेद से झगड़ा कर लिया । उन्होंने 'भोला-भाला' फिल्म से अपना नाम तो हटा ही लिया, यश चोपड़ा के सामने भी 'दीवार' से राजेश खन्ना को निकालने की शर्त रख दी । यश चोपड़ा ने राजेश खन्ना को दी गयी रकम की परवाह न करके उसे हटा दिया और अमिताभ बच्चन को अनुबंधित कर लिया ।

अहं के चलते 'दीवार' फिल्म छोड़नेवाला दूसरा अभिनेता नवीन निश्चल था । उसकी आपत्ति थी कि 'परवाना' में वह नायक था और अमिताभ बच्चन खलनायक । तो अब वह अमिताभ के साथ सहनायक नहीं रह सकता था । नवीन निश्चल का स्थान शशि कपूर ने, जिसने अपने अभिनय के लिए अवार्ड तो प्राप्त किया ही, अमिताभ बच्चन के साथ अन्य अनेक भूमिकाएं भी 'दीवार' में अपनी यादगार भूमिका के आधार पर प्राप्त कीं ।

मोहभंग

'संगम' में राजकपूर-वैजयंती माला की जोड़ी की शानदार सफलता के कारण 'सपनों का सौदागर' में भी वैजयंती माला का राजकपूर के साथ होना निश्चित ही था, लेकिन भाग्य को कुछ और ही स्वीकार था । 'संगम' के समय राज-वैजयंती की अंतरंगता चरम पर थी, लेकिन अब उनका एक-दूसरे से मोहभंग हो चुका था । प्रतिक्रियास्वरूप वैजयंती माला ने राजकपूर के चिकित्सक डॉ. बाली से शादी कर ली थी ।

इसके फलस्वरूप राजकपूर ने वैजयंती

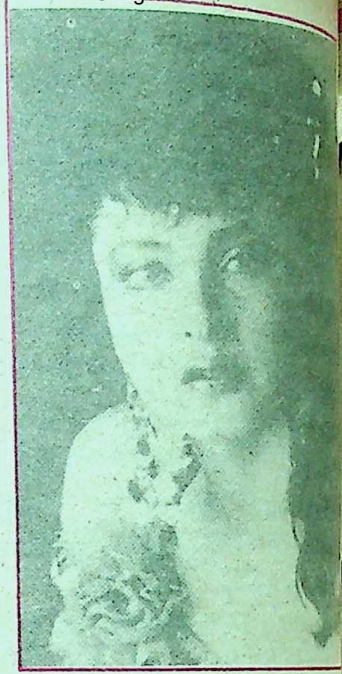

माला-जैसी दिखनेवाली नायिका की खोज शुरू कर दी । काफी खोजबीन के बाद प्रोड्यूसर अनंतस्वामी ने दिल्ली में हिंदीभाषिणी तमिल मृगनयनी सुंदरी को खोज निकाला, और स्वप्न सुंदरी का अवतरण हो गया ।

नंबर एक अभिनेत्री

और तब जाहिदा एक भयंकर भूल कर बैठी । उसने एफ.सी. मेहरा की फिल्म 'पत्थर पत्थर' में राखी से कम पारिश्रमिक लेना अस्वीकार कर दिया । और वह भूमिका उसके बदले स्वप्न सुंदरी हेमा मालिनी को मिल गयी । हेमा, जिसकी अभिनय के क्षेत्र में अभी कोई पहचान नहीं थी, ने ईर्ष्यालु प्रेमिका की वह भूमिका श्रेष्ठतापूर्वक निभायी । उसके बाद आयी 'जॉनी मेरा नाम' । तत्कालीन शिखर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनेत्री शर्मिला टैगोर ने उसमें अभिनय के लिए भूमिका को बेहूदा कहकर अस्वीकार कर दिया। हेमा ने उसे स्वीकार कर लिया। 'जॉनी मेरा नाम' ने गोल्डन जुबली मनायी और हेमा सुपर स्टार बन गयी।

इसके बाद एक और घटना हुई। रमेश सिप्पी अपनी फिल्म 'सीता और गीता' में डबल रोल के लिए मुमताज को लेना चाहते थे। मुमताज ने उसके लिए बहुत अधिक पारिश्रमिक मांग लिया। निराश हो सिप्पी ने हेमा मालिनी से संपर्क किया और हेमा ने उसे स्वीकार कर लिया। 'सीता और गीता' ने भी गोल्डन जुबली मनायी और इस प्रकार हेमा ने अभिनेत्रियों में 'नंबर एक' का स्थान प्राप्त कर लिया।

भूल वरदान बन गयी

जाहिदा के एक और इनकार ने नयी अभिनेत्री जीनत अमान को बड़ा सुअवसर प्रदान कर दिया। देव आनंद ने 'प्रेम पुजारी' में जाहिदा से काम कराया था। वह अपनी फिल्म 'हरे राम हरे कृष्ण' में नशेबाज औरत के रूप में जाहिदा को लेना चाहते थे, लेकिन उसने इनकार कर दिया, क्योंकि वह देव आनंद की बहन की भूमिका करने को तैयार नहीं थी। देव आनंद ने एक समय की मॉडल जीनत अमान को 'दम मारो दम' वाली भूमिका के लिए ले लिया। शेष इतिहास तो सब जानते हैं। हेमा की तरह ही जीनत भी प्रथम श्रेणी की अभिनेत्री बन गयी।

इसी प्रकार एक और अवसर पर मुमताज की भूल रीना रॉय के लिए वरदान बन गयी। यदि मुमताज ने राजकुमार कोहली की फिल्म 'नागिन' की भूमिका न ठुकरायी होती, तो रीना रॉय को 'नागिन' के कारण जो ख्याति मिली वह शायद न मिलती। 'नागिन' की सफलता ने रीना रॉय को कोहली के साथ स्थायित्व तो प्रदान किया ही, फिर उसे कभी पीछे मुड़कर भी नहीं देखना पड़ा। 'नागिन' की इस भूमिका को मुमताज से पहले नीतू सिंह और रेखा भी ठुकरा चुकी थीं।

यदि 'विधाता' के निर्माण के समय संजय दत्त का व्यवहार ठीक रहता, तो सुभाष घई एक छोटे कलाकार जयकिशन उर्फ जैकी श्रॉफ को अनुबंधित न करते। उसके बाद जैकी श्रॉफ का जो स्थान आज है उसे सब जानते हैं।

शिखर अभिनेत्री

'बूंद जो बन गयी मोती' के लिए जितेंद्र की नायिका के लिए राजश्री वी. शांताराम की पहली पसंद थी। राजश्री के लिए यह घर की बात थी। वह लगभग हर दिन देर से सैट पर आती। एक दिन कोई दो घंटे के इंतजार के बाद वी. शांताराम ने उसके स्थान पर मुमताज को ले लिया जो इसी फिल्म में एक छोटी भूमिका कर रही थी। 'बूंद जो बन गयी मोती' की सफलता ने मुमताज को द्वितीय और तृतीय श्रेणी की भूमिकाओं से प्रथम श्रेणी की भूमिकाओंवाली अभिनेत्री बना दिया और शीघ्र ही वह शिखर अभिनेत्री बन गयी।

असाधारण प्रतिष्ठा

स्वर्गीय गुरुदत्त अपनी फिल्म 'प्यासा' में दिलीप कुमार को लेना चाहते थे। पहले स्वीकृति देने के बाद दिलीप कुमार उसके बारे में पुनर्विचार करने लगे। वह मुहूर्त के लिए नहीं आये। लंबी प्रतीक्षा के बाद क्रोध में आकर गुरुदत्त ने स्वयं मेकअप किया और कैमरे के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने खड़े हो गये । 'प्यासा' ने गुरुदत्त को निर्देशक ही नहीं श्रेष्ठ अभिनेता के रूप में भी असाधारण प्रतिष्ठा दिलायी ।

भूमिका जो इतिहास बनीं

'एक दूजे के लिए' में वासु की भूमिका के लिए जितेंद्र को लिया जा रहा था । जितेंद्र ने के. बालचंदर का प्रस्ताव यह कहकर स्वीकार नहीं किया कि फिल्म दुखांत थी । कमल हासन को हमेशा नये ढंग की भूमिकाओं की तलाश रहती है, अतः उसे ले लिया गया । इसी फिल्म में, रति अग्निहोत्री की जगह पहले स्वरूप संपत को लिया जाना था, लेकिन उसे भूमिका रुची नहीं। इसी प्रकार श्याम बेनेगल ने अपनी पहली फिल्म 'अंकुर' बनाने का निश्चय किया, तो वह मुख्य भूमिका में वहीदा रहमान को लेना चाहते थे । वहीदा ने प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। उसके बाद अंजू महेंद्रू से बात हुई । उसने भी इनकार कर दिया । अंततः श्याम बेनेगल ने नया चेहरा ही लेने का निश्चय किया, और इस प्रकार तब अज्ञातनाम शबाना आजमी को लिया गया । बाद का इतिहास तो सब जानते ही है ।

प्रस्तुति : धनंजय सिंह

अद्भुत चट्टानें

स्पेन में मेड्रिड के निकट एक जगह है जहां कोई ५०० एकड़ भूमि में चट्टानें ही चट्टानें फैली हुई हैं । इस चट्टानी इलाके का सबसे बड़ा आकर्षण और आश्चर्य का केंद्र है—यहां स्थित एक विशाल निहाईनुमा शैलखंड । इस शैलखंड का ऊपरी हिस्सा अत्यंत चौड़ा है और निचला हिस्सा धीरे-धीरे पतला होकर एकदम नुकीला दिखायी देता है । इसे देखकर अचंभा होता है कि इतनी ऊंची और विशाल चट्टान अपने नुकीले हिस्से की सहायता से किस प्रकार खड़ी है । वैज्ञानिकों के लिए भी यह अबूझ पहेली है कि अपनी नोक पर टनों भारी वजन लिए हुए यह शैलखंड किस तरह सैकड़ों सालों से प्राकृतिक आपदाओं को सहता हुआ संतुलित ढंग से खड़ा है ।

अर्जेंटीना के उत्तरी भाग में 'वैली ऑव मून' नामक एक घाटी है । इस घाटी में एक-दूसरे पर खड़ी बड़ी-बड़ी चट्टानों से अनेक ऊंचे व विशाल स्तंभ बन गये हैं, जिन्हें देखकर लगता है मानो किसी कुशल इंजीनियर ने इनका निर्माण किया हो । वास्तविकता यह है कि इन स्तंभों में व्यवस्थित चट्टानें इतनी विशाल हैं कि इनको एक-दूसरे पर रखकर इतने ऊंचे स्तंभ बनाना असंभव-सा लगता है । इनका निर्माण कब व कैसे हुआ, यह आज तक रहस्य बना हुआ है।

बुल्गारिया के बंदरगाह वारना से कोई १२ मील एक रेतीले क्षेत्र में करीब ३०० पत्थर के वर्तुलाकार स्तंभ खड़े दिखायी देते हैं। मिट्टीयुक्त इस भूमि में ये पत्थर के स्तंभ कैसे निकल आये ? भूवैज्ञानिकों और पुरातत्व विशेषज्ञों के लिए यह रहस्य ही है।

—संजय कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंगल के कानून

नारे, कर्फ्यू, हादसे, आंसू, सिसकी सोग
मिले अभागे दौर में, मन से घटिया लोग

खाली पेटों से कहे, घुटने सटी कमीज
समय भूलने लग गया, अपनी हाथ तमीज

भूखे पेटों था किया, अंगारों ने द्रोह
मिले वजीफे राख को, खत्म हुआ विद्रोह

ये लगाम, ये चाबुकें, ये घोड़ों के भाग
जलती पीठों पर रखे, इतिहासों की आग

दुर्जन नफरत बो गयी, यहां घृणा के बीज
हवा पहनकर घूमती, लोहे के तावीज

मीलों लंबे हो गये, रीछों के नाखून
अब शहरों में आ गये, जंगल के कानून

चिनगी, चिनगी दिन हुए, रातें हुई बबूल
करम हमारे लिख गया, मौसम आंधी धूल

अपने आंगन आंधियां, उनके आंगन फूल
कौन लिखे ये चांदनी, कौन लिखे ये धूल

टूटी, फूटी सीपियां, पानी लहू-लुहान
सिर्फ नदी के घर मिला, इतना ही सामान

इक चुटकीभर रोशनी, इक चुटकीभर शाम
बरसों से सपने यही, देखे एक अवाम

—दिनेश शुक्ल

रामेश्वर रोड, खंडवा (म. प्र.)-४५०००१

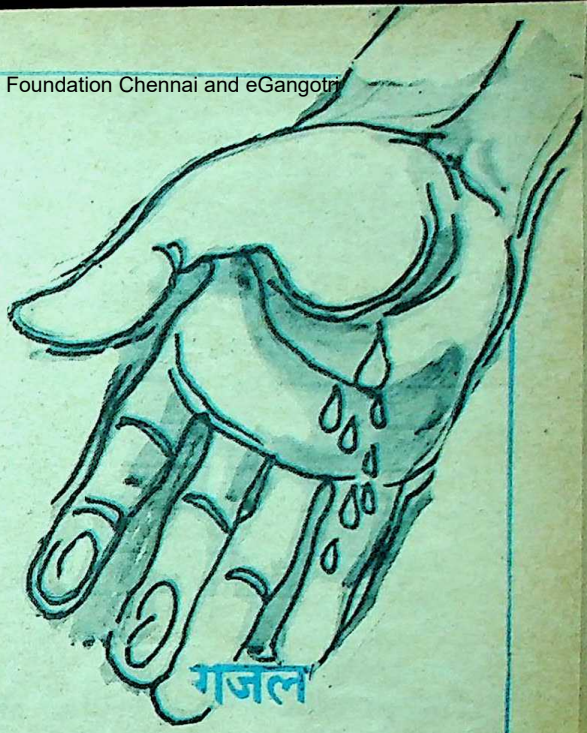

गजल

बड़ा कठिन है मिले कोई एकदम सच्चा,
जहां में कितना जियादा है कोई कम सच्चा ।

कुछ ऐसा बदला है मानव-चरित्र इस युग में,
कोई खुशी रही सच्ची न कोई गम सच्चा ।

तुम्हारे हाथ की रेखाएं झूठ बकती हैं,
तुम्हारे हाथ का तेशा है एकदम सच्चा ।

तुम्हारे न्याय को शत-शत प्रमाण ऐ मुंसिफ,
कि मिथ्यावादी लगे है तुम्हें परम सच्चा ।

'नरेश' होंठों की मुसकान सच्ची हो कि न हो,
तुम्हारी आंख का आंसू है एकदम सच्चा ।

—डॉ. नरेश

आचार्य एवं अध्यक्ष,
भा. वी. सिं. आधुनिक साहित्य पीठ,
पंजाब विश्वविद्यालय,
चंडीगढ़-१६००१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

जुगल बाबू ने अपनी याददाश्त बढ़ाने के लिए 'अच्छी याददाश्त कैसे' पुस्तक खरीदी । जब वे उसे पुस्तकों की अपनी अलमारी में रखने गये तो पाया कि यही पुस्तक वे पिछले मास भी खरीद लाये थे !

क्रिकेट के दीवाने पति से दुःखी पत्नी ने बिफरकर कहा, ''यदि मैं मर जाऊं तो क्रिकेट के चक्कर में तुम मुझे कंधा देने भी नहीं आओगे ।''

''लेकिन, तुमने यह कैसे समझ लिया कि मैचवाले दिन ही मैं तुम्हारी शव-यात्रा निकालूंगा ?'' उत्तर मिला ।

अपने शहर के भिखारी को एक हिल स्टेशन पर भीख मांगते देखकर अनिल बाबू ने पूछा, ''यहां भी धंधा करने चले आये ?''

''जी, मैं पर्यटन पर निकला हूं आजकल !'' भिखारी ने उत्तर दिया ।

पत्नी से बहस में जीत जाने के बाद अक्लमंद पति चुपचाप उससे माफी मांग लेते हैं ।

दादाजी थे कि अपनी जवानी के घुड़सवारी के किस्से सुनाये जा रहे थे । बोर होकर नन्हीं पोती ने दादी मां के कान में धीरे-से कहा, ''दादाजी, पर जरा तो लगाम लगाओ !''

— सुभाष बुड़ावनवाला

जल्दी ही शादी करनेवाली लड़की ने अपनी डॉक्टर मां से पूछा, ''फिजूल खर्च करनेवाले पति का किस तरह इलाज किया जा सकता है ?''

मां ने अपने अमल में लाया अचूक नुस्खा बताया, ''फिजूल खर्च करनेवाले पति के कपड़ों में जेब नहीं लगवानी चाहिए ।''

अपने गप्पी मित्र से एक सज्जन ने पूछा, ''आप गप्प मारते समय किन-किन बातों का ध्यान रखते हैं ?''

गप्पी मित्र का जवाब था, ''अगर कुछ ध्यान ही रखा होता, तो आज गप्पी कैसे बन पाता ?''

— सुधीर कुमार

अशोकजी की कुछ ही दिन पहले शादी हुई थी । एक दिन वे अपनी पत्नी को ले कर सब्जी खरीदने बाजार पहुंचे । जब अशोकजी सब्जी ले चुके, तो सब्जीवाली ने पूछा, ''बाबूजी, बहूजी ग्रेजुएट तो होंगी ही ?''

''हां है तो, मगर तुमने कैसे जाना ?''

''बहूजी थैले में नीचे टमाटर और ऊपर आलू जो रख रही थी ।'' मालिक ने बताया ।

दांत उखड़वाने के बाद रोगी ने डॉक्टर से पूछा, ''आपकी फीस कितनी हुई ?''

''मात्र पचास रुपये ।''

''किंतु मेरे पास तो सौ का नोट है...''

''कोई बात नहीं, आप कुरसी पर बैठिए, मैं आपका एक दांत और उखाड़ देता हूं ।'' डॉक्टर ने उत्तर दिया ।

— नरेंद्र सिंह

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंग

हाइकू

१

एक समाचार
आज नहीं हुआ
कहीं कोई बलात्कार

२

एक संपादकीय
आज कोई घटना
नहीं है उल्लेखनीय

३

एक विज्ञापन
मत छुओ, मत करो
मेरा उद्घाटन ।

४

एक निमंत्रण
पत्नी से बिना लड़े
जीने का प्रण ।

—महेश चंद्र त्रिपाठी

क्षणिका

हमारी डाक व्यवस्था के
हाल तो निराले हैं
यहां के डाकखानेवाले
डाक खाने वाले हैं

—विजय कुमार बजाज

भाग्य

अपना अपना भाग्य, कुछ
भोर वेला प्रभु से लौ लगाते हैं ।
दूसरे आंख खुलते ही
कुत्ते को टहलाने ले जाते हैं

—ओमप्रकाश बजाज

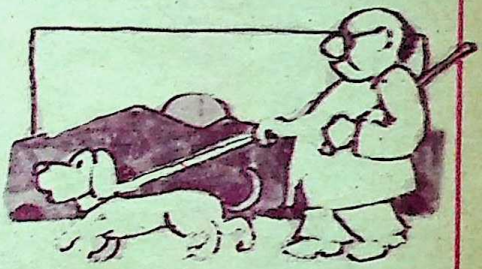

प्रेम-विवाह

प्रेम/एक मीठी
सुखभरी नींद
और
विवाह !
अलार्म घड़ी ।

शिष्टता सप्ताह

जो वर्षभर
रहते हैं
अशिष्ट,
वे ही मानते हैं
सप्ताह
व्यवहार शिष्ट

अनुभव

जीवन का/एक पृष्ठ
पढ़ गया हूं मैं,
अपने ही घर में—
'पेंईंग गेस्ट'
बन गया हूं मैं

—दिनेश 'दर्पण'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

उन्नीसवां साल

● दीपा शर्मा

''प्रोफेसर साहब''...पीछे से किसी ने आवाज दी । मुड़कर देखा तो तेईस-चौबीस साल की एक सुंदर युवती हाथ के संकेत से किसी को बुला रही थी । सड़क पार करने के लिए मैं खड़ा था । सड़क पर ट्रैफिक इतना ज्यादा हो रहा था कि भीड़ भरा माहौल हो गया था । आज ट्रैफिक पुलिस भी अपने स्थान पर नहीं दिख रहा था, वैसे भी जब वह रहता है, तब भी अपनी ड्यूटी गंभीरता से कहां करता है । कितनी ही बार मैंने उसे टोका भी था । हर बार वह आंखें तरेरकर मुझे घूरने लगता, फिर मैंने भी कहना छोड़ दिया । सोचा, 'सिविक सेंस' क्या मेरे पास ही है ? सभी राहगीर तो अपनी मरजी के हिसाब से रास्ता पार करते हैं । मैं भी उनकी भेड़चाल में खो गया था ।

हां, मैं कह रहा था कि उस युवती की आवाज पर मेरी गरदन मुड़ गयी थी और इधर-उधर घूमने लगी थी, यह जानने के लिए कि 'डिपार्टमेंटल स्टोर' की सीढ़ियों पर खड़ी वह किसे पुकार रही थी ।

''सर' मैं आपको ही बुला रही हूं'' वह सीढ़ियों से उतर मेरी ओर बढ़ती चली आयी थी ।

मेरे बाजू के दोनों ओर खड़े सड़क पार करनेवाले मुझे घूरने लगे थे । वह कभी मुझे और कभी उस युवती को देख रहे थे । युवती तो देखने की चीज थी । सुंदर करीने से कटे कंधे तक झूलते बाल, तीखे नैन-नक्श और हलका-सा मेकअप, शरीर पर प्लेन गुलाबी रंग की जार्जेट की साड़ी जो उसकी सुंदरता को चार चांद लगा रही थी । किंतु मैं तो आम इनसानों की तरह चालीस साल का एक पुरुष था कोई फैशन नहीं, सीधा-साधा पहनावा । शायद इसी कारण उन लोगों को आश्चर्य हो रहा था और सबसे बड़ा कारण तो यह भी था कि सुंदर युवती एक पुरुष को राह चलते पुकारे । लोगों

''आइए सर'' वह मुझे कार पार्किंग तक ले गयी थी जहां उसकी सफेद मारुति खड़ी थी । उसने कार का अगला दरवाजा खोला मैं सीट पर बैठ गया, तब वह भी ड्राइविंग सीट पर जा बैठी । कार उसने स्टार्ट कर सड़क पर छोड़ दी थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जिज्ञासा भड़क उठती हैं, शंकाओं के मेघ घुमड़ने लगते हैं, उम्र और संबंधों का लेखा-जोखा होने लगता हैं, होंठ बुदबुदाने, फुसफुसाने लगते हैं ।

हम दोनों एक-दूसरे के नजदीक आ गये थे । करीब आने पर मेरी याददाश्त ने मुझे झटका दिया, मेरी नजरों द्वारा उसे पहचानने में एक सैकेंड की भी भूल किये बिना, होंठ बोल पड़े—"अरे, नेहा तुम...तुम यहां कैसे ??"

"जी सर... लेकिन सर आप तो बिलकुल भी नहीं बदले, तभी तो मैं एक नजर में ही आपको पहचानकर पुकार उठी थी ।"

"कैसी हो, कहां थीं ?" 'और तुम...तुम भी तो नहीं बदलीं, कौन कहेगा कि तुम्हारी उम्र तेईस-चौबीस की होगी, आज भी तुम उन्नीस साल की ही लगती हो...' और भी इतनी सारी बातें मेरे मन में उठ खड़ी हुई थीं, मगर बोल होंठों से फूट नहीं रहे थे । शायद वे मर्यादा की सीमा बांधना नहीं चाहते थे ।

"सर मैं...सब बताऊंगी किंतु आज आपको मेरे घर अवश्य चलना होगा वरना आप तो देख ही रहे हैं, घूरनेवालों की निगाहें हमें... ।"

"हां-हां क्यों नहीं...लेकिन मुझे बाजार से जरा खरीददारी करनी थी," उसकी बात का अर्थ समझ मैं बीच में ही बोल पड़ा था ।

"ठीक है सर आप शॉपिंग कर लीजिए फिर चलते हैं," नेहा बोली ।

कुछ सोचकर मैं बोला, "अच्छा चलो कोई खास शॉपिंग नहीं करनी है कल कर लूंगा ।"

"आइए सर" वह मुझे कार पार्किंग तक ले गयी थी जहां उसकी सफेद मारुति खड़ी थी । उसने कार का अगला दरवाजा खोला मैं सीट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बैठ गया, तब वह भी ड्राइविंग सीट पर जा बैठी । कार उसने स्टार्ट कर सड़क पर छोड़ दी थी ।

"बड़ी अच्छी ड्राइविंग करती हो" मुझे बातों का सिलसिला इसी तरह शुरू करना उचित लगा । प्रत्युत्तर में वह मुझे देख मुसकरा दी थी । उसकी मुसकराहट ने मेरे सारे शरीर के रोमछिद्रों को खोल दिया था । फिर बोली, "वैसे सर अभी भी परफेक्ट ड्राइविंग नहीं कर पाती हूं फिर भी जितना चलाऊंगी, उतना ही हाथ सेट होता जाएगा ।"

मैं उसके इस 'परफेक्ट' शब्द पर मुसकराये बिना रह नहीं पाया था । मुझे अतीत के पन्ने उड़ते दिख रहे थे ।

आज से करीब पांच साल पहले की बात है, उन दिनों मैं नया-नया 'केमिस्ट्री डिपार्टमेंट' में लेक्चरर बनकर आया था । क्लास में कुल चालीस स्टूडेंट्स थे । नेहा भी उनमें से एक थी । बड़ी चंचल, बातूनी और भोली-भाली युवती, उस समय इसकी उम्र उन्नीस होगी । हो सकता है बीस भी हो, किंतु मेरा अनुमान उन्नीस का ही था । बी. एस. सी. के थ्योरी और प्रैक्टीकल दोनों क्लासेस मैं ही लेता था । मेरे और भी सहयोगी लेक्चरर थे, लेकिन जैसा कि होता है, जो नया लेक्चरर आता है उसे सीनियर लेक्चरर कार्य भार ज्यादा ही सौंप देते हैं । प्रैक्टीकल में नेहा मेरे निकट कुछ ज्यादा ही रहने की कोशिश करती और वैसे भी खाली पीरिएड में अक्सर मेरे चैंबर में आ जाती, कुछ-न-कुछ पूछने का बहाना लेकर । शुरू-शुरू में तो मैंने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया । नेहा के आग्रह पर मैं उसे ट्यूशन पढ़ाने उसके घर जाने लगा । उसका घर कॉलेज के नजदीक ही था और मेरा तो उधर से गुजरना होता ही था ।

नेहा के माता-पिता से भी परिचय हो गया था । वे लोग धनाढ्य वर्ग में गिने जाते थे । नेहा उनकी तीन संतानों में एकमात्र पुत्री थी । उसके दो भाई थे, दोनों बड़े थे ।

नेहा के अंदर चंचलता, चपलता और भोलापन परिवारवालों के अत्यधिक स्नेह और लाड़-प्यार का नतीजा था ।

मैं उसे दोष देना भी नहीं चाहता । धीरे-धीरे मैं उसके भोलेपन और उसकी सुंदरता से उसकी ओर आकर्षित होता चला गया था और वह भी । उसका मेरी ओर आकर्षित होने का कोई खास कारण यदि था तो यही कि मैं कुशाग्र बुद्धि था और स्वभाव में गंभीरता लिये हुए था ।

एक दिन तो नेहा ने लोकलाज की हर सीमा तोड़ मेरे सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रख दिया । कुछ पल के लिए मैं संज्ञाशून्य-सा होकर रह गया, किंतु अगले ही पल मुझे अपना कर्त्तव्य एवं समाज की मान्यताएं याद हो आयीं । मैं विवश था । मैं नेहा को अपने परिवार में, समाज में, वह स्थान नहीं दे सकता था जिसकी वह हकदार है ।

मैं पढ़ा-लिखा हूं, तो क्या हुआ । मेरे मां-बाप...वे तो रूढ़िवादी विचारों से जकड़े हुए हैं । हमारे बीच उम्र का जो फासला है उसे समाज क्या इतनी आसानी से पचा पाएगा ? नहीं, नेहा में तो बचपना है, उसने मेरे प्रति अपने आकर्षण को प्यार का रूप मान लिया है, परंतु मैं.. । तो अबोध नहीं । मेरा दायित्व है उसे समझाना । मैं उसका गुरु हूं, उसे समय पर सही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग यदि मैं नहीं दिखा पाया, तो कौन दिखाएगा ।

मुझे इतना आभास हो चला था कि डिपार्टमेंट में हम दोनों के संबंधों को लेकर कानाफूसी प्रारंभ हो गयी है । मुझे हर विद्यार्थी की आंखें अपनी ओर उठी दिखतीं । नेहा के अचानक बीमार पड़ जाने पर भी संकोचवश मैं उसके घर जा नहीं पाया था । आत्मग्लानि के कारण उससे बातें भी मैं कम करता । परीक्षा के दिन करीब आते जा रहे थे, थ्योरी और प्रैक्टीकल में अपरोक्ष रूप से मैंने नेहा की खूब मदद की । वह प्रथम श्रेणी से पास हो गयी थी । छुट्टियां होने के कारण मुझे भतीजी की शादी में गांव जाना पड़ा था और वहीं मेरे विवाह की बात भी चल पड़ी । एक महीने के अंदर ही मेरा विवाह भी हो गया । मेरी पत्नी पढ़ी-लिखी बी. ए. पास थी, मगर उसमें और नेहा में जमीन-आसमान का अंतर था । मेरी पत्नी स्वभाव से शांत, दबी-ढकी प्रकृतिवाली आधुनिकता की दौड़ में सबसे पीछे रहनेवाली और कहां नेहा हर चीज में सर्वप्रथम रहनेवाली ।

मैंने नेहा के बारे में पता करवाया था । पता चला उसकी शादी आर्मी के एक कैप्टन से हो गयी है । बस उसके बाद आज नेहा से मुलाकात हुई । मैंने तिरछी निगाहों से उसे देखा, कितनी बेफिक्री और तन्मयता से गाड़ी चला रही थी । मुझसे बिछुड़ने का कोई भी दुःख उसकी बातचीत या चेहरे से नहीं झलक रहा था और झलके भी क्यों आखिर उन्नीस साल की उस सुंदर युवती को भला पुरुषों की कमी थी । उसके विवाह के प्रस्ताव को मेरा-जैसा कोई मूर्ख ही ठुकरा सकता है वरना उसका साथ पाकर तो कोई भी अपने आपको धन्य मानेगा ।

मैं रास्तेभर यही सोचता रहा, 'काश उसके प्रथम प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता तो मेरा जीवन शायद और सुखमय हो जाता,' किंतु अब क्या सोचना जब चिड़िया चुग गयीं खेत । मन ने कहा 'बीती ताहि बिसार दे...' हां अब तो मैं भी शादीशुदा हूं और नेहा भी । वह अब उन्नीसवां साल पार कर चुकी है, उसका उस उम्र में प्यार करना महज आकर्षण ही रहा, जो उम्र और समय के साथ अपना रूप बदलकर दूसरा रूप धारण कर लेता है । उसका उन्नीसवां साल मेरी जिंदगी का एक बीता कल बन चुका हैं । नेहा गाड़ी सड़कों पर दौड़ाती लिये जा रही थी ।

—द्वारा/डॉ. शोभा शर्मा
एम. के. पी. (पी. जी.) कॉलेज
देहरादून-२४८००१

कीड़ों के रस से दमा का इलाज

ऐसा किसी ने सोचा भी नहीं था कि कॉकरोच, मक्खियों, मच्छरों और दूसरे कई कीड़ों का रस दमा एवं एलर्जी रोग के लिए रामबाण सिद्ध हो सकता है । दिल्ली के बल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट में ऐसे करीब दस कीड़ों पर अनुसंधान चल रहा है जो एलर्जी उत्पन्न कर दमा रोग का कारण बनते हैं ।

—रेखा कौस्तुभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा के विरुद्ध

जब
अंधकार ने मेरे ठिठुरते
जिस्म को
ओढ़ायी थी काली चादर
और मैं
घूमता रहा खाली जेबों में
हाथ दिये
सामर्थ्यहीन ।

उस दिन भी छिड़ी थी
एक जंग
हालात के विरुद्ध आत्मा की ।

पर आज
जब आत्मा के विरुद्ध हालात
ने छेड़ी है जंग तो
मेरी मुट्ठी में जादू बन
आ गयी है जीने की
सामर्थ्य ।

—हिमकर श्याम

शिक्षा : बी. कॉम. (आनर्स)
आत्मकथ्य : जब अनुभूति की कठोर धरती पर कोमल कल्पनाएं बिखरती हैं तब उससे होनेवाले दर्द ही मेरी कविताओं के सृजन के क्षण हैं।
पता : ५, टैगोर हिल रोड, मोराबादी, रांची

सिसकती रेखाएं

सिसकते हुए कुछ संदर्भ
सलीब पे टंगी
एक लाश की भांति
बेजान
किंतु
आंसुओं की बूंदों की
गिनती/गरमाहट/अपनत्व का
अनुभव लिये
संबंधों के संधि पग पर
सदा ही कालपत्र के हस्ताक्षर
बन जाते हैं/रह जाती है

मीलों फैले हाशिये में कैद
उनकी मृत्यु का मात्र एहसास
उसका सिसकता हुआ मौन
कमजोर वासना से भरी
मौन व अश्लील संबंधों की नींव
जब लड़खड़ा जाती है
तब
सिसकते हुए संदर्भों का पन्ना
खूनी आंसुओं से रंग जाता है
रह जाती हैं सिर्फ
अदृश्य रेखाएं/कराहती हुई-सी

—आर. गोपाल कैथवास 'अशांत'

शिक्षा : एम. ए. (इतिहास) **आत्मकथ्य :** ये कविता नहीं, दर्द हैं मेरे हृदय के जिन्हें पल-पल मैंने भोगा है । तड़पा हूं उसकी याद में, जिसे शायद पा भी सकूं या... ? **पता :** स्वामी विवेकानंद मार्ग, का. नं. १३/१२ पो.—धनपुरी, जिला—शहडोल, (म. प्र.)-४८४-११४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कब तक भागूं

टूटे आईने में
शक्ल देखता हूं
चेहरा जोड़कर ।।

पुरानी किताबों में
मुरझाये फूल
और पुरानी यादें ।।

स्मृतियों पर
उग आयी है
समय की घास ।।

वो आंसू
गये कहां
जो कभी बहे नहीं ।।

उम्र धुल गयी
जिंदगी के दामन से
यादें धोते-धोते ।।

रात्रि वर्षा में
भीग गये
न जाने कितने सपने ।।

कुछ बरसा है
बादल
या आंखें ?

आकाश एक आईना
तन्हा चांद
मेरा अक्स ।।

तुम नहीं
तन्हाई सही
बस साथ चाहिए ।।

पूनम की रात
आकाश में
चांद या तुम ।।

कब तक भागूं
स्मृतियों से बचकर
क्या कर दूं समर्पण ।।

—अतुल पांडेय

शिक्षा : विधि प्रथम वर्ष **पता :** श्री गांधी आश्रम, सिविल लाइंस, मुरादाबाद-२४४००१

आत्मकथ्य : 'दिल का बोझ', कागज पर उतर आता है कविता बनकर ।

प्यार

'मैं तुम्हें प्यार करता हूं'
यह उक्ति हम/तुम
कितनी ही बार दोहराते हैं
फिर भी प्यार की गहराई को
कहां समझ पाते हैं
दरअसल
हम प्यार नहीं करते
बल्कि
चाहते हैं कि
कोई हमसे प्यार करे
अपने अंदर के कई दरवाजे
बंद रखकर
हम चाहते हैं
कि कोई हम पर एतबार करे
यह प्रेम नहीं
सिर्फ स्वार्थ है
इससे कहीं बहुत गहरा,
बहुत विस्तृत
प्रेम का अर्थ है
इसलिए
अगली बार
'मैं तुम्हें प्यार करता हूं'
यह कहने से पहले
करें खूब चिंतन, मनन
और मंथन
फिर शायद यह कभी नहीं कह पाओगे
बल्कि
बार-बार यही दुहराओगे
कि ''मैं खुद से प्यार करता हूं''
''मैं खुद से प्यार करता हूं ।''

—पल्लवी मिश्रा

शिक्षा : एम. एस. सी. (भौतिकी)
संप्रति-व्याख्याता
पता : १०१, शांतिवन ।।, कंकड़ बाग, पटना (बिहार) ।

आत्मकथ्य : सामाजिक विसंगतियां एवं जीवन की सूक्ष्म अनुभूतियां जब हृदय को अंतर्तम तक झकझोर देती हैं तो मन की भावनाएं स्वतः ही कविता के रूप में प्रस्फुटित हो जाती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदन

नंदन

नंदन

बच्चे पढ़ें
किशोर पढ़ें
माता-पिता और दादा-दादी भी
चार पीढ़ियां पढ़ती हैं नंदन को साथ-साथ

बच्चों को
कान्वेन्ट में पढ़ाइए या सरकारी स्कूल में
उन्नति और विकास के लिए
नंदन का हर अंक उन्हें अवश्य दें

नंदन जब भी घर में आया
तरह-तरह की खुशियां लाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटा : "पासवाले सिनेमा हॉल में परिवार के साथ देखनेवाली फिल्म आयी है !"
पिता : "क्या इसीलिए गांव से हमें तार देकर बुलाया था !"

• • •

"पिताजी, आपका नाम गिनीज में आने के लिए हमारे अध्यापक ने सिफारिश की है ।"
"पर किसलिए ?"
"जो सात साल से आपने मुझे गणित सिखाया, उसमें से एक भी ठीक नहीं निकला !"

"मम्मी-मम्मी मेले में मेरे साथ रखवाली के लिए जिस बुजुर्ग को भेजा था ना, वह पता नहीं कहां खो गये !"

• • •

पहली स्त्री : "इतनी जल्दी पंजाबी क्यों सीख रही हो ?"
दूसरी स्त्री : "हमारे पासवाले मकान में एक पंजाबी परिवार आया है वह पति-पत्नी रोज लड़ते हैं ! उनकी लड़ाई सुनकर मजा लेने के लिए !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

● अजय भाम्बी

सरिता सिंहा, हैदराबाद

प्रश्न : छह साल शादी को हो गये । वैवाहिक जीवन नहीं है । सुख किस रास्ते से होगा ?

उत्तर : इस विवाह के स्थायित्व में संदेह है ।

रचिता बंसल, नयी दिल्ली

प्रश्न : क्या इस वर्ष एम. बी. ए. में चयन होगा ?

उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों के उपरांत ही सफलता प्राप्त हो सकती है । पुखराज धारण करें ।

मनीष मेहता, बांसवाड़ा (राज.)

प्रश्न : क्या अध्यापक के अलावा मेरे भाग्य में कोई दूसरी नौकरी है ?

उत्तर : प्रशासनिक सेवा के लिए प्रयास करें, सफलता मिलेगी ।

हेमंत कुमार पांडेय, पिथौरागढ़

प्रश्न : सफल लेखक बनूंगा या नहीं ?

उत्तर : निसंदेह बनेंगे, प्रयत्नों में कमी न आने दें ।

डॉ. जयप्रकाश बिहारी, छपरा

प्रश्न : मेरी बदली अभी होगी कि नहीं ?

उत्तर : अक्तूबर से पहले बदली होने की संभावना नहीं है ।

पल्लवी गोयल, मेरठ

प्रश्न : मां गर्भवती है । भाई होगा या बहन ?

उत्तर : आपसे छोटा भाई अवश्य होगा ।

शेर सिंह, इटारसी

प्रश्न : विदेश (दुबई या लंदन) में स्थापित कब तक होगा ?

उत्तर : अगले वर्ष संभावना है ।

सुरेश चंद्र, गोरखपुर

प्रश्न : अपना मकान कब तक ?

उत्तर : जब राहू में शनि का अंतर

सुनील दत्ता, दिल्ली

प्रश्न : क्या कृषि अधिकारी बनूंगा

उत्तर : बन जाएंगे ।

पूनम, मोतीहारी (पूर्वी चंपारन)

प्रश्न : क्या इस साल एम. बी. बी. एस. चयन होगा ? यदि नहीं तो कब ?

उत्तर : आसानी से नहीं होगा । अतः प्रयासों में कमी न आने दें ।

रचना शर्मा, श्रीगंगानगर

प्रश्न : संतान कब और क्या होगी ?

उत्तर : प्रथम संतान पुत्र १९९५ के १९९६ के प्रारंभ में होगा ।

बनवारी लाल दाधीच, सीकर (राज.)

प्रश्न : पदोन्नति कब तक ?

उत्तर : अक्तूबर के बाद ।

मुदिता शर्मा, सीहोर

प्रश्न : दृष्टि दोष से मुक्ति कब ? नेत्र ज्योति तक ठीक होगी ? सुझाव दें ?

उत्तर : योग्य नेत्र चिकित्सक को दिखाने लाभ की संभावना है ।

रवि कुमार ठाकुर, गौर (रौतहट) नेपाल

प्रश्न : मुझे अभियंता (इंजीनियर) बनने चांस कब तक ?

उत्तर : अगले वर्ष ।

नरेंद्र, पंचकूला (हरियाणा)

प्रश्न : क्या कभी जगत प्रसिद्धि मिलेगी ?

उत्तर : आपकी कुंडली में धनवान होने योग है । जगत प्रसिद्धि का नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्तिका, गया

प्रश्न : विवाह कब ?

उत्तर : अगले वर्ष ।

सतेंद्र मित्तल, देहरादून

प्रश्न : ऋण-मुक्ति एवं व्यापार शिखर पर कब तक ?

उत्तर : १९९६ से पूर्व ऋण-मुक्ति की संभावना नहीं है ।

मंजली, लखनऊ

प्रश्न : दूसरी संतान कब और क्या होगी ?

उत्तर : पुत्र होगा ।

संजय कुमार सिंह, नयी दिल्ली

प्रश्न : राजपत्रित पद वर्ष १९९४ के किस माह में ? रत्न सुझाएं ?

उत्तर : अगस्त-सितंबर में । माणिक धारण करें ।

विशाल भट्ट, जयपुर

प्रश्न : क्या पुलिस प्रशासनिक सेवा में इस वर्ष जाने का योग है ?

उत्तर : प्रयास करें ।

आनंद पाठक, आमला

प्रश्न : क्या मैं भविष्य में चार्टर्ड एकाउंटेंट बन पाऊंगा ?

उत्तर : बराबर बन जाएंगे ।

अजय वर्मा, बरेली

प्रश्न : क्या गायक कलाकार बन सकता हूं ? कृपया उपाय बतायें ?

उत्तर : पन्ना और हीरा धारण करें तभी बन सकते हैं ।

कमला, पौड़ी (गढ़वाल)

प्रश्न : शादी कब होगी और वर कैसा मिलेगा ?

उत्तर : शादी का योग चल रहा है ।

—'नक्षत्र निकेत'
९४४/३, नाईवाला,
फेज रोड, करोलबाग,
नयी दिल्ली-११०००५

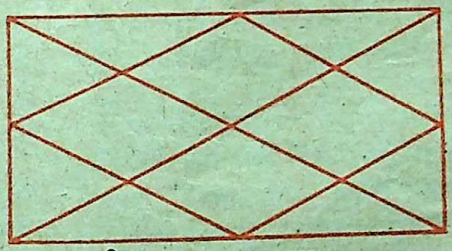

प्रविष्टि— १४९

नाम.....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना ..... सन .....

जन्म-स्थान..... जन्म-समय .....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण.....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १४९)
'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० जुलाई, १९९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

पसीना-पसीना हो जाती हूं

क.ख.ग., कोरबा (म.प्र.) : आयु ३८ वर्ष है। ४,०००/- रु. मासिक पर यू.डी. सी. हूं। बचपन बहुत खराब बीता। मेरे व मां के बीच केवल १७ वर्ष का अंतर है। मां-बाप दोनों अलग-अलग स्थान पर कार्यरत थे। मैं मां के साथ थी। वह गुस्सैल थी। मेरी ओर ध्यान कम देती थी, या ऐसा मुझे लगता है। माता-पिता का प्रायः भयंकर झगड़ा होता इससे मन में हमेशा दहशत बनी रहती। केवल ८ वर्ष की आयु में ५वीं कक्षा में उत्तीर्ण करा दी गयी। ध्यान न दिये जाने पर कुसंगति में रही। कभी किसी रिश्तेदार के यहां पढ़ती, कभी किसी और के। बचपन से विपरीत सैक्स की ओर आकर्षित हुई। विद्रोही हुई तथा यह लगता कि मुझे कोई भी पसंद नहीं करता। २१ वर्ष की आयु में एक आदर्शवादी पति मिला जो इनसान की कमजोरी को अपराध की ही संज्ञा देते हैं। मुझे दुःख है कि जिंदगी में कुछ न कर सकी और न अब कर पा रही हूं। समस्या है कि मस्तिष्क कुछ न कुछ सोचता रहता है। किसी के कुछ भी पूछने से घबरा जाती हूं। अपने को सिद्ध करना चाहती हूं। सर भारी हो जाता है। आत्मविश्वास की कमी से सुस्ती अधिक है। किसी के सामने गा नहीं सकती। पसीना-पसीना हो जाती हूं। प्रतियोगिता बेटे की हो तो मैं घबरा जाती हूं। मेहमानों को देखकर क्या करूं क्या न करूं ? कार्यालय में गलती हो जाने पर आत्मग्लानि होती है। कोई मेरे बारे में चर्चा तो नहीं कर रहा, इस संदेह के कारण बातें सुनती रहती हूं। ईर्ष्या भी मुझमें है। हर काम में जल्दी करती हूं। निराशा शीघ्र मन को आ घेरती है। क्या मैं किसी रोग से पीड़ित हूं या सिर्फ वहम मात्र है ?

आपको रोग है 'एनजाइटी स्टेट'। इसकी उत्पत्ति बचपन के अनुभवों से हुई। जहां मां-बाप अलग रहते थे। फिर उनके झगड़े से दहशत रहती थी। आप कुशाग्र बुद्धि की हैं परंतु अपने ऊपर हमेशा बहुत अच्छा काम कर दिखाने की तमन्ना के बोझ से लदी हैं। साथ ही हर काम में निपुणता चाहती हैं। आदर्शों को नीचे भी नहीं लाती हैं। आपकी मनोस्थिति ऐसी है जैसे एक घोड़े को हर समय चाबुक मारते रहें वह अधिक तेज नहीं दौड़ता, वरन थक भी जल्दी जाता है। आप भी हर समय आदर्शों को कुछ करने की इच्छा का चाबुक इस्तेमाल करती हैं। दिमाग भी 'एनजाइटी' की स्थिति में अधिक सोचता है और वह सोच जिसका कोई लक्ष्य नहीं होता। ऐसी मनोस्थिति में आपके दुचर्चा का विषय बनने की चिंता और लग रही है। योगाभ्यास की कुछ ऐसी विधियां अवश्य हैं, जिनसे आप आराम पा सकती हैं। वास्तव में आपको अपने मानस को बदलना होगा। हर कार्य कैसे सहजता से किया जाए। उस पर विचार करना होगा। एक साथ तथा जल्दबाजी में कुछ भी उपलब्ध नहीं होगा। आपको मनोवैज्ञानिक सहायता यदि आसपास उपलब्ध हो, तो इससे आप इस मनोस्थिति से उभर सकते हैं।

यह कमजोरी ?

पं.कु., कंकड़बाग (पटना) : १८ वर्ष का बी.एस-सी. का छात्र हूं। रात को १ से ४ बजे के बीच स्वप्नदोष होता है जो मेरे शरीर के लिए बहुत हानिकारक है। माह में ८-१० बार होता है तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने के एकदम बाद मैं नींद से उठकर सभी कपड़े धोता हूं तथा स्नान करता हूं । चाहे गरमी हो या सर्दी । मुझे लगता है शादी के बाद मुझे वीर्य की कमी हो जाएगी । लोगों को मैं अपने कमजोर होने के प्रश्न का जवाब भी नहीं दे पाता ।

आप कृपया हमें ऐसे पुरुष के बारे में बताने का कष्ट करें जिसे कभी स्वप्नदोष अथवा हस्तमैथुन द्वारा वीर्यपात न हुआ हो । सारे विश्वभर में ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा जिसको किशोरावस्था में ऐसा न हुआ हो । हां बड़े होकर लोग अपना वह समय या तो भूल जाते हैं या फिर झूठमूठ आत्मसंयम की डींगें मारते हैं । जैसे स्त्री को मासिक धर्म आने से पता चलता है कि लड़की 'सयानी' हो गयी है, ऐसे ही पुरुष को स्वप्नदोष द्वारा पता चलता है कि वह 'मर्द' बन गया है । अपने ऊपर हीन भावना न आने दें, क्योंकि जैसा कि अब आप जान ही गये हैं कि यह एक समान्य बात है । धीरे-धीरे स्वयं ही बंद हो जाएगा । नींद में उठकर न तो नहायें, न कपड़े धोयें । पौष्टिक आहार, व्यायाम व अपना मेलजोल कायम रखें । खुलकर बातचीत करें । सैक्स के बारे में चिंता करने से और समस्या बढ़ती है । इसका अर्थ यह नहीं कि आत्मसंयम न बरतें या फिर अधिक सैक्स की ओर झुकें । सैक्स में इच्छा व इस प्रकार की क्रिया प्राकृतिक अवस्था है ।

कुछ नहीं कर पाऊंगा

नं.रा. सबौर (बिहार) : मैं कृषि महाविद्यालय में अंतिम वर्ष का छात्र हूं । जैसे-जैसे बड़ा हो रहा हूं वैसे-वैसे आत्मविश्वास में कमी आ रही है याददाश्त बहुत कमजोर हो गयी है । मैं हवाई किले बनाने में माहिर हूं । कार्य क्षेत्र नहीं बढ़ा और न ही कोई तनाव आया है । कभी-कभी लगता है कि मैं अब कुछ नहीं कर सकूंगा ! इस कारण मरने का कई बार प्रयत्न किया, परंतु अंतिम समय में मरने से पीछे हट जाता हूं । कृपया कोई उपाय बतायें ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें । —संपादक

यह तो बहुत अच्छी बात है कि आप आत्महत्या का कार्य पूर्ण नहीं करते । वास्तव में आप स्वस्थ हो सकते हैं, इसलिए इस प्रकार के विचार न लाएं, कोई प्रत्यक्ष रूप में कारण न होने के बावजूद भी आप तनाव में हो सकते हैं । हवाई किले बनाने का अर्थ है कल्पना में रहना । वही व्यक्ति अधिक कल्पना व हवाई किले बनाता है जो वास्तविकता से दूर हो । आत्मविश्वास की कमी व आत्महत्या के विचार एक अवसाद की मनोस्थिति की ओर इशारा करते हैं । तनाव व अवसाद में याददाश्त की कमी भी महसूस होती है । हो सकता है कि जैसे-जैसे आप बड़े हो रहे हैं, वैसे-वैसे आपके ऊपर जिम्मेदारी बढ़ रही है । आपका मन 'कार्य' में जुटने के बजाए क़ामचोरी की ओर बढ़ रहा है । इसलिए अपने मन का विश्लेषण करें । साथ ही अपने जीवन की बागडोर संभालकर जीवन को सार्थक बनायें । ●

उधार लेने का अर्थ है अपनी स्वतंत्रता बेचना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

'लम्हों ने खता की, सदियों ने सजा पायी' —रह-रहकर, जब-तब, ये पंक्तियां माधुरी के अंतर्मन में हलचल-सी मचा देती हैं। अंग-अंग में, उथल-पुथल-सी कर देती हैं। वैसे, उसने अपने जीवन में, खुद, कैसे-कैसे साहसिक निर्णय लिए, कभी-कभी तो वह स्वयं ही विस्मित और चकित हो जाती।

आई.एफ.एस., मतलब, विदेश-सेवा में चुनी जाने पर भी, वह उसमें शामिल नहीं हुई। अमरीका के जाने-माने विश्वविद्यालय द्वारा, शोध-कार्य के लिए, सारी सुविधाएं उपलब्ध होने पर भी, वह वहां नहीं गयी।

जान-पहचानवाले, सगे-संबंधी, सभी हैरान। आखिर, माधुरी को हो क्या गया है। ऐसे सुनहरे मौके किसको नसीब होते हैं? लोगबाग तो बाहर जाने के लिए हरदम, तरसते रहते हैं, पागल-से बने फिरते हैं। आकाश-पाताल एक कर देते हैं और फिर भी बेचारे जा नहीं पाते। मन मारकर रह जाते हैं। और यह लड़की! न-जाने इसका सिर क्यों फिर गया?

मगर माधुरी तो माधुरी है। तीन लोक से न्यारी। विज्ञान की विलक्षण छात्रा होने पर भी, नृत्य-नाटक, साहित्य-संगीत, सभी में विलक्षण। अपने स्कूली जीवन से ही, उसने

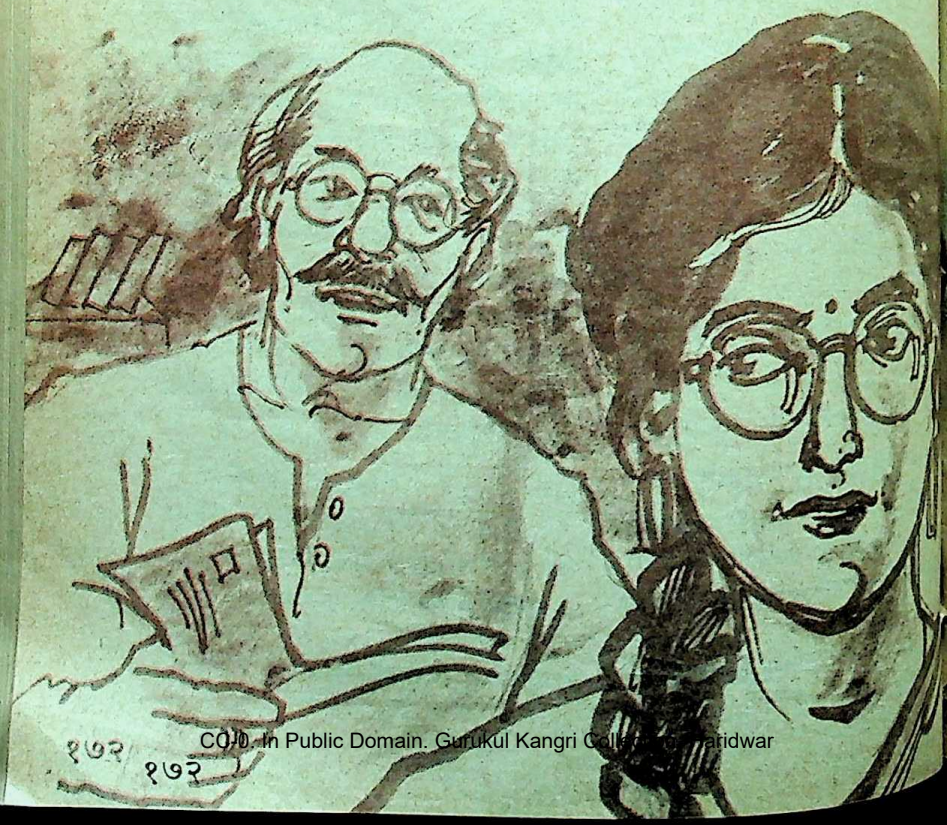

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र में अपने झंडे गाड़ दिये थे । कितने-कितने नाटकों में, कैसा-कैसा कमाल कर दिखाया । कितनी-कितनी भूमिकाओं में, कितने-कितने रूपों में अपना हुनर दिखाया । कितनी-कितनी प्रतियोगिताओं में बाजियां मारीं । कितने-कितने 'बैस्ट डिबेटर्स कप' जीते । कितने-कितने 'बैस्ट एक्टरर्स कप' लिए —कहीं कोई

में खो जाती । कभी घर पर भीड़-भाड़ होती तो, चुपके से, किताब लेकर गुसलखाने में घुस जाती और घंटों पढ़ती रहती ।

कुछ सयानी हुई तो चाहनेवालों की कतार-की-कतार । रिश्तों का तांता-सा लग गया । एक-से-एक रिश्ते आये, लेकिन, माधुरी कोई-न-कोई बहाना बनाकर टाल देती ।

मुसकराहटों की महक

● डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

हिसाब-किताब नहीं । पूरा का पूरा घर कपों और ट्राफियों से खचाखच भरा-भरा रहता । पूरे शहर में उसकी तूती बोलती । आये दिन, अखबार उसकी तारीफों के पुल बांधते । देश की जानी-मानी पत्र-पत्रिकाओं में उसकी कविताएं और कहानियां छपतीं । उसकी बहुमुखी प्रतिभा के सभी कायल । यों समझिए, हरफनमौला ।

वैसे, मां-बाप की इकलौती बेटी । बड़े लाड़-प्यार में पली । कभी किसी चीज की कमी नहीं रही । बचपन से ही, कभी नृत्य की भाव-भंगिमाओं में खोयी रहती । कभी संगीत की स्वर-लहरियों में डूबी रहती । रंगारंग कार्यक्रमों में व्यस्त, तो कभी लिखने में मस्त । उसके मधुर व्यक्तित्व और सुंदर कृतित्व की, जब-तब, जहां-तहां, चर्चा चलती ही रहती, मगर वह तो हमेशा ही अपनी ही धुन में मगन । हां, कभी थोड़ी-सी फुरसत मिलती तो किताबों

मां-बाप परेशान । नाते-रिश्तेवाले भी आंख-भौं सिकोड़ते । आखिर यह लड़की चाहती क्या है ? ये लोग अपने को समझते क्या हैं ? कोई भी तो लड़का इन्हें पसंद नहीं आता । कई बांकुरे तो जान खो बैठते, मगर माधुरी तो किसी को घास ही नहीं डालती । सभी दंग । वह तो हरदम अपनी ही उधेड़बुन में उलझी-उलझी-सी रहती ।

उस दिन, पापा कुछ तरंग में थे, इसलिए माधुरी को, एक प्रकार से, छेड़ ही बैठे —"देखो बेटे, अब तुम खूब सयानी हो गयी हो । अपने पैरों पर खड़ी हो । अपना भला-बुरा खुद सोच सकती हो । वैसे भी, अब तक, अपने जीवन के बारे में, सारे निर्णय तुमने खुद ही लिए हैं । इसलिए मैं चाहता हूं कि अपना जीवन-साथी चुनने में तुम स्वयं पहल करो । दरअसल, जिंदगी की गाड़ी यों ही अकेली नहीं खींची जाती है । कोई-न-कोई साथी तो चाहिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही, और वह भी सही साथी, सही वक्त पर हो, क्योंकि ठीक वक्त पर उठाये गये कदम हमेशा सही दिशा में ही जाते हैं । ...और तुम कहो तो मैं ही कहीं बात चलाऊं । वैसे, भी लड़केवालों ने तो नाक में दम कर रखा है । किस-किसको क्या-क्या जवाब दूं मैं । आये दिन कोई-न-कोई रिश्ता लेकर टपक पड़ता है । दिल्ली से आये तुम्हें अभी दिन ही कितने हुए, लेकिन इसी बीच कितने सारे लोग आ गये हैं, तुम्हें भी पता है । बेटे, अगर शादी करनी ही है तो फिर देर किस बात की । देरी होने से उलझनें बढ़ जाती हैं ।''

''पापा, इस मामले में आपके सामने मैं क्या कहूं । वैसे, हमारे यहां मुश्किल से दो फीसदी शादियां कामयाब मानी जाएंगी । बाकी तो जबरदस्ती की खींचातानी ही समझिए । जिंदगीभर कुढ़-कुढ़कर, जल-जलकर, मर-मरकर, रो-धोकर, समझौते पर समझौते करते रहो । जिसका कोई मतलब ही नहीं । कोई मकसद ही नहीं । बेचारी स्वाति को ही देखो । कितने अच्छे खाते-पीते घर की लड़की । कैसा माहौल । कैसी अच्छी-खासी ऊंची शिक्षा । मां-बाप के कैसे-कैसे अरमान थे, और शादी की ऐसे से, जिसका न घर न द्वार । न कोई ठौर न ठिकाना । न आगे न पीछे । न अच्छी शिक्षा, न अच्छा माहौल । मतलब, कुछ भी नहीं । न जाने स्वाति ने क्या देखा, जो झट-से रीझ गयी और फट से शादी भी कर डाली । न किसी से पूछा । न आगे की सोची । न घरवालों या जान-पहचानवालों की राय ली और अब बेचारी घुट-घुटकर मर रही है । मुद्दत के बाद, उस दिन जब मैं उससे मिली तो कुछ ही देर के बाद वह बिलकुल खुल-सी गयी । आंसुओं की अविरल धार और शरीर पर मार के निशान देखकर मैं तो हक्की-बक्की-सी रह गयी । आदमी ऐसा राक्षस भी होता है, मैंने कभी सपने में भी सोचा था । बेचारी ने, इतना सब कुछ होने भी, अपने घरवालों को कुछ भी नहीं बताया दरअसल, आदमी में हीनता की भावना है ढेर-सारे व्यसन हैं । और-तो-और दुष्ट है और फिर नशे में अनाप-शनाप बकता है । बेचारी का जीना दूभर हो गया है । न की, न घाट की, जैसी हालत हो गयी है । आत्म-सम्मान और सहन-शक्ति इतनी कि किसी से भी कोई शिकायत नहीं की । स्त्री होने के नाते मेरे सामने उस दिन न जाने अचानक इतनी कैसे खुल गयी । वही बात —'लम्हों ने खता की, सदियों ने सजा पायी बच्चे होंगे तो उनकी क्या दशा होगी । भविष्य क्या होगा ? अरे पापा, दूर क्यों, मौसी की मीरा को ही देखो । पहले क्या ठाठ-बाट थे और अब बेचारी के कैसे फटेहाल । इसलिए पापा, मैंने फिलहाल इस बारे में सोचना ही बंद कर दिया है ।''

''लेकिन कब तक ?''

''बस, जब तक मुझे सही आदमी नहीं मिलता ।''

''सही और गलत की पहचान भी तो बड़ी टेढ़ी खीर है । एकदम किसी के बारे में सही जानकारी नहीं हो पाती । परखने पर ही पता चल पाता है कि कौन कैसा है । अरे, तुम मुझे ही देखो । तुमसे तो अब कोई बात छिपी हुई नहीं है । जब तुम बहुत छोटी थी, मैंने तुम्हें कभी ऐसा अहसास होने नहीं दिया कि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पापा, आप-जैसे आदमी इस दुनिया में हैं ही कितने ? वैसे, भले ही आपने मुझे कभी अहसास न होने दिया, लेकिन मुझे तो बचपन से ही महसूस हो गया था कि मां तो बस, उड़ती चिड़िया है। उनके पैरों पर तो पंख लगे हैं। आज यहां, कल वहां। एक जगह तो वह टिक ही नहीं सकती। आप दफ़्तर से थके-मांदे घर आते और मां नदारद। बेचारा रामू और माली हीरालाल ही सारी देखभाल करते। मुझे खाना खिलाना, कपड़े पहनाना, स्कूल छोड़ना। स्कूल से घर ले जाना। घर की सफाई, झाड़-पोंछ। रामू सब कुछ इतने सलीके और समझदारी से करता कि मां के न होने पर भी सब सुव्यवस्थित, सुसंचालित लगता। और हीरालाल लॉन को और बगीचे को चमाचम रखता। घर को फूलों से सजाने में तो उसका कोई सानी नहीं, लेकिन फिर भी मां के बिना सब सूना-सूना-सा लगता। बार-बार क्या लाखों बार मैंने भी मां से कहा आजकल तो मियां-बीवी दोनों सुबह से शाम तक कोल्हू के बैल की तरह पिसते रहते हैं, तब जाकर लोगों का इस महंगाई के जमाने में मुश्किल से गुजारा हो पाता है और तुम हो कि आज लेडीज क्लब में जाना, कल मैके जाना, परसों मामा के यहां जाना। आखिर कब तक ऐसा गोरखधंधा चलता रहेगा। अगर आप पापा की तरफ थोड़ा भी ध्यान देती तो पापा न जाने कहां होते। क्या होते ! वह भीतर-ही-भीतर, एक प्रकार से, ज्वालामुखी की लपटों में सुलगते रहते हैं और आप हैं कि कुछ समझती ही नहीं। वैसे भी, खाली घूमने-फिरने से क्या होता है। उल्टे वक्त ही बरबाद होता है। रुपये भी खर्च होते हैं।

और फिर हम दोनों साथ ही रहने लगे, लेकिन पति-पत्नी की तरह बिलकुल नहीं और इस प्रकार चार महीने साथ-साथ रहने के बाद अब हम छुट्टी लेकर आपके पास पहुंच रहे हैं।

कुछ नहीं तो आस-पास के घरेलू कर्मचारियों के बच्चों को ही एक-आध घंटे पढ़ाओ... लेकिन वह तो ऐसी फुंकारती-जैसे मैंने कोई बहुत ही कड़वी बात कह दी हो। और आपने न जाने यह सब कैसे निभाया। कैसे सहा। मुझे मां का भी दुलार दिया। यहां तक कि जब साल में एक-आध बार रामू छुट्टी पर घर चला जाता तो आप और हीरालाल चुपके-चुपके सब कुछ खुद तैयार करते या बाजार से मंगवा देते और टेबिल पर रख देते और कहते —बेटे, लो खाने में कुछ नया-नया-सा कर दिया है और मैं अगर रसोई में जाती तो बड़े प्यार से कहते —तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं। हीरालाल सब कर लेता है। तुम अपनी पढ़ाई करो। तुम्हारे इतने सारे शौक हैं। तुम्हें फुरसत ही कहां रहती है। थकी-मांदी घर आती हो तो आराम तो करना ही चाहिए। रामू आने ही वाला है... इसीलिए पापा इस ओर मैं सोच-समझकर ही कदम उठाऊंगी। हमारे यहां हर परिवार में अक्सर ऐसे जान-लेवा तनाव होते हैं। कहीं आदमी बेढंगा तो कहीं औरत बेकार। दोनों जब तक एक-दूसरे के पूरक नहीं बनते, सही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मायने में, तब तक जिंदगी खुशहाल हो ही नहीं सकती ।''

''तुम्हारी बात बिलकुल सही है बेटे, परंतु अकेले-अकेले भी तो जिंदगी पहाड़-सी लगती है । वैसे, जीवन में मनचाहा मनमीत मिलना भी, एक प्रकार से, मृगतृष्णा है । इसी भटकन में पूरी की पूरी जिंदगी गुजर जाती है और मन के अरमान मन में ही रह जाते हैं । इसलिए जीवन-साथी तो बहुत ही जरूरी है । हां, थोड़ा-बहुत समझौता तो हर एक को करना ही पड़ता है । एकदम हम जो या जैसा चाहते हैं, वैसा ही मिलना मुश्किल तो है ही । फिर भी तलाश तो, करनी ही चाहिए ।''

इन दिनों कितने-कितने रिश्ते आये, कोई हिसाब-किताब ही नहीं, और माधुरी की छुट्टियां भी ऐसे ही उड़ गयीं और फिर एक दिन वह फुर्र से उड़ गयी । मंत्रालय में, जहां वह काम करती थी, एकदम बुलावा आया कि तुरंत आ जाओ । दिल्ली पहुंचते ही माधुरी ने कुछ दिनों के बाद पत्र लिखा कि पापा मैं एक नया प्रयोग कर रही हूं । सफल रही तो आपको विस्तार से लिखूंगी ।

वैसे बीच-बीच में हर हफ्ते, माधुरी अपनी खबर भेजती रहती, लेकिन चार महीनों के बाद उसने एक ऐसा लंबा खत लिखा कि पापा, बस पढ़ते ही रह गये । जिसकी मोटी-मोटी बातें उसी के शब्दों में—

'पापा, मैंने आपको लिखा था न कि मैं एकदम एक नया प्रयोग कर रही हूं । सुनकर आपको बेहद हैरानी तो होगी ही —क्योंकि पढ़कर आपको अजीब-सा लगेगा । कुछ महीने पहले हमारे मंत्रालय में एक डिप्टी सेक्रेटरी आया । नाम मनोज है । कई बैठकों में हमारी खूब जमकर जोरदार गरमागरम बहसें हुईं । यहां तक कि एक-दो बार तो एक प्रकार से तू-तू मैं-मैं भी हुई, लेकिन फिर कॉफी के कपों के साथ अपना-अपना गुबार निकालते रहे । सचिवालय में दूसरे कर्मचारियों को लगा कि हम दो अफसरों की यहां साथ-साथ दाल नहीं गल सकती, क्योंकि जब-तब एक-दूसरे से भिड़ते ही रहते हैं, लेकिन कुछ दिनों के बाद उन्हें भी हैरानी हुई जब हम दोनों सचिवालय में साथ-साथ आते और बाहर भी साथ-साथ जाते ।

'लंच-ब्रेक' में भी साथ-साथ खाना खाते । और पापा, एक दिन मनोज ने कहा कि यहां सभी हमारे बारे में गुप-चुप, कुछ-न-कुछ खुसर-फुसर करने लगे हैं । इसका भी इलाज किया जाए । और फिर हम दोनों साथ ही रहने लगे, लेकिन पति-पत्नी की तरह बिलकुल नहीं और इस प्रकार चार महीने साथ-साथ रहने के बाद अब हम छुट्टी लेकर आपके पास पहुंच रहे हैं ।

मेरा प्रयोग सचमुच ही सफल रहा । आपका आशीर्वाद लेकर हम फिर दोनों बिलकुल सीधे-सादे ढंग से सदा-सदा के लिए एक-दूसरे के हो जाएंगे ।

पापा पत्र पढ़कर गदगद-से हो गये । आखिर माधुरी माधुरी ही निकली । हर मामले में तीन लोक से न्यारी । उस लंबे पत्र को उन्होंने न जाने कितनी-कितनी बार पढ़ा ? और उनके चेहरे पर कितनी मुसकराहटें महकने लगीं !

—शैल शिखर, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

मधुमास से पतझर तक : कवि डॉ. मिश्र के यह गीत अपनी पत्नी को समर्पित हैं । जिस प्रकार गीत संग्रह का नाम— 'मधुमास से पतझर' है, उसी नाम को सार्थक करती हुई इस संग्रह की रचनाएं हैं ।

जैसे—

यह जीवन है सुंदर सपना, सपना भी क्या होता अपना ।
सीमित जग के सीमित क्षण में, अखिल विश्व है आलिंगन में ।

इसी प्रकार—

स्नेह-स्वप्नों से सजग हो आज तेरी याद आयी
जगमगाती दीप माला तारिकाओं ने बुझायी

गीतकार स्वयं इस बात को स्वीकार रहे हैं कि 'आवेगों के प्रबल-प्रवाह ने इन गीतोर्मियों को सजाने-संवारने का अवसर नहीं दिया है । मेरे हृदयांचल से बह निकली यह गीत-गंगा, भाव विभूतियों की गहराई को ही पाथेय बनाकर बह चली है ।'

मधुमास से पतझर तक
कवि : डॉ. बनवारी लाल मिश्र
प्रकाशक : डॉ. मिश्र एंड संस 'आरोग्य निकेतन' चौथा मंडी, मथुरा—२८१००१ । मूल्य : तीस रुपये

'अ' बने अफसर :
यह व्यंग्य कृति लेखक के आस-पास हो रही घटनाओं का जीवंत दर्शन है । लगता है लेखक ने उन सारे कटु अनुभवों को झेला है जो उपन्यास में वर्णित हैं । एक ग्रामीण परिवेश से आये अखिल भारतीय प्रतियोगिता परीक्षा में उत्तीर्ण पात्र को प्रशिक्षण के दौरान जिन शहरी और तथाकथित सभ्य परिवारों से आये पात्रों के साथ कटाक्ष के बाण झेलने पड़ते हैं, वह प्रसंग उपन्यास में मार्मिक बन पड़े हैं ।

उपन्यास पठनीय है और यह भी शिक्षा देता है कि आज 'ब्यूरोक्रेसी' पर 'थोथी' मान्यता हावी है । भारतीय परिवेश का पूर्ण अभाव झलकता है । इसी विषय को लेखक ने अपने उपन्यास में अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है ।

'अ' बने अफसर
लेखक : महेन्द्र वशिष्ठ,
प्रकाशक : आत्माराम एंड संस कश्मीरीगेट, दिल्ली-११०००६ । मूल्य : साठ रुपये

इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों में मनोविज्ञान :
इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों में लेखिका ने बड़े सूक्ष्म रूप से अध्ययन और विश्लेषण कर मनोविज्ञान को समझने की कोशिश की है । इलाचंद्र जोशी का परहित स्वस्थ चिंतन अन्य साहित्यकारों से सदैव भिन्न रहा है । सूक्ष्म अध्ययन के अभाव में आलोचकों ने जोशीजी पर फ्रायडवादी होने का आरोप लगाया । इन आरोपों को डॉ. यासमीन ने चुनौती पूर्वक शब्दों में खंडित किया है । उन्होंने मनोविज्ञान को लेखन का आधार स्तंभ कैसे बनाया, इन सारे प्रश्नों का जवाब यासमीन ने बहुत ही स्पष्ट रूप में दिया । इस पुस्तक में मानसिक पक्ष के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोशीजी के साहित्यिक पक्ष को भी लेखिका ने संवारकर प्रस्तुत किया है ।

इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों में मनोविज्ञान
लेखिका : डॉ. यासमीन सुलताना नकवी
प्रकाशक : किताब महल, २२-ए, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद ।
मूल्य : एक सौ पचहत्तर रुपये ।

— भ. प्र.

महामंत्र णमोकार वैज्ञानिक विश्लेषण : जैन साधकों के लिए णमोक्कर मंत्र का अतिशय महत्त्व है । यह महामंत्र मंगलमय और अनादि सिद्ध माना जाता है । प्रस्तुत कृति में नौ अध्याय हैं जिनमें से सात अध्यायों में इसी महामंत्र की विस्तृत व्याख्या की गयी है । यह कृति न केवल जैन धर्मावलंबियों वरन मंत्र-विज्ञान में रुचि रखनेवाले अन्य धर्मावलंबी लोगों के लिए भी उपयोगी है ।

महामंत्र णमोकार— वैज्ञानिक अन्वेषण
लेखक डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन, प्रकाशक केलादेवी सुमतिप्रसाद ट्रस्ट, बी ५/२६३, यमुना विहार, दिल्ली-५३, मूल्य— सौ रुपये

वह दिन कब आएगा : सविता चड्ढा का दूसरा काव्य संग्रह है जिसमें कवयित्री महिलाओं की स्थिति पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए लेखिका यह आशा करती है कि 'वह दिन कब आएगा' जब उनकी स्थिति में कुछ सुधार होगा । इन कविताओं के माध्यम से, सामाजिक कुरीतियों का विरोध भी बड़े सुंदर ढंग से किया है । जीवन-संघर्ष के ऐसे अनेक बिंदुओं से हमें परिचित करवाया है, जिनसे आज की नारी गुजर रही है । उनका कहना है कि मर्यादा, इज्जत, कर्त्तव्य, धैर्य, सहनशीलता केवल औरतों के लिए ही क्यों ? माना कि ये सब मानवीय गुण हैं और स्वस्थ समाज के लिए इनका अनुपात में होना बहुत ही आवश्यक है ।

इस काव्य संग्रह में कविताओं के साथ गजलें, मुक्त, छंदोबद्ध भी हैं और छंद मुक्त भी । ये कविताएं सरल, सहज-ब्यानी, मिठास, आक्रोश, वेदना, यादें व अनेक प्रश्नों को अपने में समेटे हुए हैं । कुछ कविताएं तो गहरी छाप हृदय पर अंकित कर जाती हैं जैसे 'गरीब का नाश्ता' और 'भली औरत', दोनों ही कविताओं में औरत का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया गया है ।

—जनक सचदेव

वह दिन कब आएगा !
लेखिका : सविता चड्ढा, प्रकाशक : तक्षशिला प्रकाशन, मूल्य : पचहत्तर रुपये ।

रूप का दर्पण, पुष्पांजलि : काव्य-संग्रह के कवि हैं डॉ. विनोद मणि दिवाकर । इन दोनों काव्य-संग्रहों की अधिकांश कविताएं प्रकृति, रूप, सौंदर्य, प्रणय, स्मृति आदि से संबंधित है । प्रायः सभी कविताएं एवं गीत छंदबद्ध हैं । छंद की शुद्धता को बनाये रखकर भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रदान करना अब दुर्लभ होता जा रहा है । इस दृष्टि से कवि का प्रयास सराहनीय है । कविताओं का विषय तो शाश्वत है किंतु अभिव्यक्ति के स्तर पर छायावाद के समय की छाप से कविता मुक्त नहीं हो पायी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप का दर्पण, पुष्पांजलि,
कवि : डॉ. विनोद मणि दिवाकर, प्रकाशक : बिहार ग्रंथ कुटीर, अशोक राजपथ, पटना-४, मूल्य : क्रमशः पचास और चालीस रुपये ।

लक्ष्मण रेखा : हिंदी के समर्थ कथाकार डॉ. भगवती शरण मिश्र का यह उपन्यास समसामयिक जीवन में बहु-चर्चित समस्या 'पर्यावरण' को लेकर है । इसमें उन्होंने पर्यावरण के साथ-साथ भीतरी पर्यावरण को भी रूपायित किया है । गीतिका पर्यावरण-शास्त्री विश्वंभर से प्रेम करती है । विश्वंभर भी गीतिका को हृदय से चाहता है । परंतु उसे गीतिका के पिता विश्वास मुखर्जी का जंगलों का ठेकेदार होना पसंद नहीं था । वे ठेकेदार हों, इसमें कोई आपत्ति नहीं । परंतु वे जंगलों के नाश का काम न करें । अंत में विश्वास मुखर्जी मान जाते हैं कि वे गीतिका और विश्वंभर की खुशी के लिए वनों की ठेकेदारी करना छोड़ देंगे ।

लक्ष्मण रेखा
लेखक : डॉ. भगवती शरण मिश्र, प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, मूल्य : साठ रुपये ।

अपनी-अपनी मरीचिका : इधर अहिंदी-मातृभाषी हिंदी लेखकों में जो नाम उभरकर आये हैं, उनमें भगवान अटलानी का भी एक नाम है । हम जानते हैं कि देश-विभाजन के समय पंजाब और बंगाल के भूभाग दो देशों भारत और पाकिस्तान में बांटे गये । परंतु सिंध का समूचा प्रांत पाकिस्तान का हिस्सा बन गया । सिंधी हिंदी लोग विस्थापित होकर भारत के सभी प्रांतों में आकर बस गये । अपने को फिर से बसाने के लिए उन्हें किन संघर्षों में से गुजरना पड़ा, यह उपन्यास सिंधी लोगों के उस संघर्षमय जीवन का दिग्दर्शन कराता है । इसके पात्र जीते-जागते लोगों की तरह हैं, और इसमें वर्णित स्थितियां भी स्वाभाविक बन पड़ी हैं ।

अपनी-अपनी मरीचिका
लेखक : भगवान अटलानी, प्रकाशक : ज्ञान-गंगा, दिल्ली; मूल्य : सौ रुपये ।

हमला : नव लेखन-पुरस्कार से सम्मानित युवा लेखक जयनंदन की दो कहानियों 'हमला' और 'ठेंगा' पर आधारित दो मंचनीय नाटक इस पुस्तक में दिये गये हैं । 'हमला' नाटक के नायक कैप्टन जगतारसिंह थलसेना से अवकाश प्राप्त हैं । वे देखते हैं कि उन पर प्रतिदिन ही मूल्यहीनता, भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता के हमले होते रहे हैं । लेकिन वे कभी आस्थाहीन नहीं हुए । जब उनका अपना एक दोस्त उन्हें देशद्रोही साबित करने पर उतारू हो जाता है, तो वे उस हमले को बर्दाश्त नहीं कर पाते ।

'ठेंगा' नाटक में अंधे पुजारी और विधवा जुलाहिन की प्रेम-कहानी वर्णित हुई है । वे दो अलग धर्मों के होकर सांप्रदायिक शक्तियों को ठेंगा दिखाते हैं । इन नाटकों के सफल निर्देशक, अवतारसिंह का मानना सही है कि जिन स्थितियों, अभिप्रायों और मूल्यों को आज के संदर्भ में मंचित करने की जरूरत है, वे इनमें विद्यमान हैं ।

हमला
लेखक : जयनंदन, प्रकाशक : दिशा प्रकाशन, दिल्ली; मूल्य : चालीस रुपये ।

मेरी चुनिंदा कहानियां : इसमें चर्चित कहानीकार विकेश निझावन की इक्कीस कहानियां संग्रहीत हैं । उनमें हमारे जीवन के आसपास की स्थितियां उजागर हुई हैं । कहीं भी किसी वाद विशेष का आग्रह नहीं है । आम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी और आम औरत के सुख-दुःख का निरूपण करना विकेश निझावन की कहानी-कला की एक मुख्य विशेषता है ।

मेरी चुनिंदा कहानियां—
लेखक : विकेश निझावन, प्रकाशक : पारूल प्रकाशन, दिल्ली; मूल्य : साठ रुपये ।

जो गलत है : डॉ. दिनेश पाठक की चुनी हुई कहानियों के प्रथम खंड 'धुंध भरा आकाश' के बाद उनकी चुनी हुई कहानियों का यह दूसरा खंड है । वे आठवें दशक की पीढ़ी के चर्चित कहानीकारों में से एक हैं और उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा ईमानदार लोगों के साहस और निष्ठा को उकेरा है । यह ठीक है कि ऐसे लोगों को अपने जीवन में कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । परंतु उन्होंने इन कठिनाइयों से कन्नी काटकर किसी आसान राह की चाहना नहीं की है । जैसा कि कहानी-संग्रह के नाम से ही स्पष्ट है, दिनेश पाठक की कहानियां जो गलत है, उसका भरसक विरोध करती हैं ।

जो गलत है—
लेखक : डॉ. दिनेश पाठक, प्रकाशक : [illegible] प्रकाशन, दिल्ली; मूल्य : साठ रुपये ।

—डॉ. मोतीलाल जोतवा[illegible]

नन्हीं कविताएं : बारह वर्षीया कवयित्री नूपुर [illegible] की कविताओं का संकलन है । नूपुर ने आठ [illegible] की अवस्था से कविताएं लिखना शुरू किया [illegible] ये कविताएं प्रकाशित भी हुईं और रेडियो-टी[illegible] प्रसारित भी । निस्संदेह नूपुर एक प्रतिभाशाली बालिका है । उसकी ये कविताएं सरल-सहज [illegible] प्रवाहमयी हैं । उसके बालमन ने प्रकृति और [illegible] आसपास जो भी देखा, उसी से प्रेरणा पाकर [illegible] कविताएं लिखीं ।

नन्हीं कविताएं—
कवयित्री : नूपुर शर्मा, प्रकाशक : आर्य बुक डिपो, ३० नाईवाला, करोल बाग, नयी दिल्ली; मूल्य : पंद्रह रुपये ।

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. १ से ३ अरब वर्ष पूर्व, छिछले तटीय पानी में, एक-कोषीय जीव के रूप में (जीव तथा वनस्पति में कोई अंतर नहीं), ख. लगभग १० लाख वर्ष पूर्व, २. 'मेरो मन राम हि राम रटै रे', 'राम नाम रस पीजै' आदि, ३. क. कुतुब मीनार तथा हुमायूं का मकबरा, ख. १६, ४. क. कपड़ा उद्योग—२० प्रतिशत योगदान, ख. २६ प्रतिशत, ५. स्व. गोपीकृष्ण ने, ९ घंटे २९ मिनट तक, ६. एम. टी. आई. ग्रेनाइट संयंत्र के साथ (बेंगलूर से ७० कि.मी. दूर टुमकर में), ७. क. निक्सन ने (वाटरगेट कांड के कारण), ख. चीन के साथ संबंध कायम करना तथा वियतनाम के साथ युद्ध-विराम समझौता, ८. क. डॉ. रघुनाथ अनन्त माशेलकर (पॉलीमर विज्ञान और अभियांत्रिकी में विशिष्ट योगदान), ख. प्रो. रघुवंश ('भारतीय संस्कृति का रचनात्मक आयाम' के लिए), ९ वेस्ट इंडीज के ब्रायन लारा ने ३७५ रन बनाये (सेंट जोंस [illegible] में इंगलैंड के खिलाफ खेलते हुए, विगत [illegible] अप्रैल को), ख. पाकिस्तान के आमिर [illegible] और इंजमाम-उल-हक ने २६३ रन बनाये (शारजाह में न्यूजीलैंड के खिलाफ खेलते [illegible] विगत २० अप्रैल को), ग. भाग्यश्री टिपनीस [illegible] (५वीं बार) । एशियाई महिला शतरंज चैंपियन भी, १०. लेसर किरणों का [illegible] हीरे पर कोई असर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

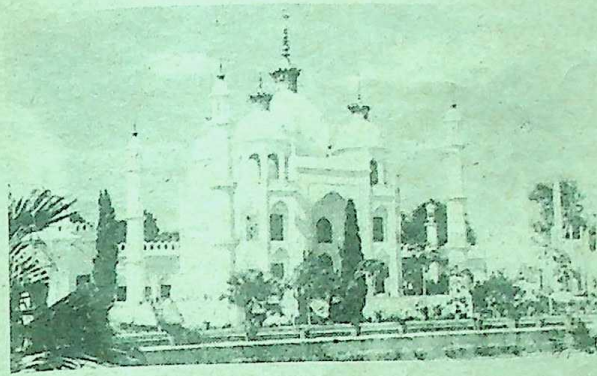

लखनऊ दर्शन : डाक टिकट दर्पण

शगूफों का शहर

● भानु प्रताप सिंह

लखनऊ मात्र शहर का नहीं, एक संस्कृति, एक परंपरा और जीवनशैली का भी नाम है । लखनऊ पर केवल लखनऊवालों को ही नहीं, समूचे देश को गर्व है । लखनऊ की ऐतिहासिक इमारतों, इतिहास में अमर व्यक्तित्वों और जन-जीवन की विशिष्ट शैली को डाक टिकटों के माध्यम से निरूपित किया गया है । यहां प्रस्तुत हैं, ऐसे ही अनेक डाक टिकट ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे विचार से निराकार को साकार कर देना सिर्फ इनसान के ही बस की बात हो सकती है— जिसने विचार को शब्द दिये हैं, कल्पनाओं को कला में बांधा है, परमेश्वर को प्रकृति से जोड़ा है और इतिहास को इमारतों में ढूंढा है । आंख खुलने से लेकर अब तक मैंने लखनऊ को 'शगूफों का शहर' जाना है । इस नगर के प्राचीन खंडहर और सुंदर ऐतिहासिक भवन सारे संसार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते रहे हैं, तो भला फिलेटली की आंखों से ये कैसे ओझल हो सकते हैं । गोमती नदी के दोनों तटों पर दूर-दूर तक बिखरे हुए लखनऊ के पुरानों खंडहरों में और शाही इमारतों के निराले वास्तु-विन्यास में आपसी मेल-मिलाप की जबरदस्त छाप है और उसी दौर की प्यारी खुश्बू अब अवध की मिट्टी की महक बन गयी है । इन भग्नावशेषों और शेष इमारतों को फिलेटली ने छूने की कोशिश की है, जो इस प्रकार है —

बड़ा इमामबाड़ा

लखनऊ की नवाबी में नवाब आसफुद्दौला की शोहरत और सदाकत के जो डंके बजे थे, उसका सबसे बड़ा गवाह आसफुद्दौला का इमामबाड़ा है । सन १७८४ के अकाल के बावजूद आसफुद्दौला ने इस किले-जैसी इमारत को बनवाया था, जो छह बरस में तैयार हुई थी । इस तिलस्मी इमारत के साथ-साथ न कि कितनी कहानियां जुड़ी पड़ी हैं । बड़ा इमामबाड़ा इंडोसिरेसिनिक वास्तुकला की लाजवाब मिसाल है और नवाबी की सबसे शानदार इमारत है । १४ नवंबर, ७१ को उत्तर प्रदेश डाक टिकट प्रदर्शनी (यूफिलेक्स— ७१) में इसे विशेष विरूपण में दर्शाया गया ।

रूमी दरवाजा

रूमी दरवाजा लखनऊ का हस्ताक्षर भवन है । वह अपनी सुरूचिपूर्ण बनावट के लिए हिंदुस्तानभर में ही नहीं, सारे विश्व में प्रसिद्ध है इसमें संदेह नहीं कि लखनऊ की नाजुक मिट्टी में ढला हुआ यह सुविख्यात भवन अपने प्रभावशाली स्थापत्य और मजबूती के कारण बड़ी-बड़ी पथरों से निर्मित ऐतिहासिक इमारतों से टक्कर लेता है । नवाब आसफुद्दौला ने इसका निर्माण सन १७८४ में शुरू किया था । यह १७८६ में बनकर तैयार हुआ । इसे लखनऊ महोत्सव, १९७७ में दिनांक ९ फरवरी, ७७ से १२.२.७७ तक विशेष विरूपण में दर्शाया गया ।

कैसरबाग बारादरी

कैसरबाग बारादरी आज शहर लखनऊ का सांस्कृतिक प्रेक्षागृह है और इस तरह नगर की तहजीबी गतिविधियों का प्रधान केंद्र बना हुआ

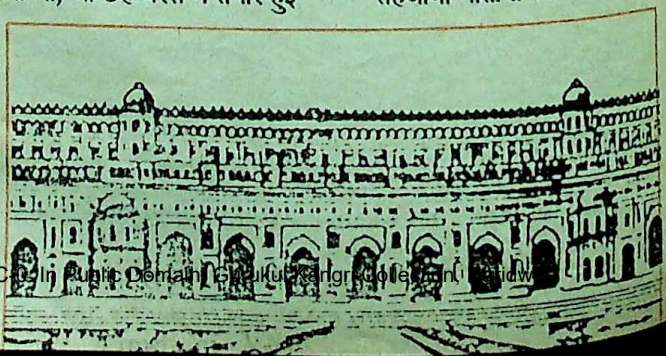

इमामबाड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

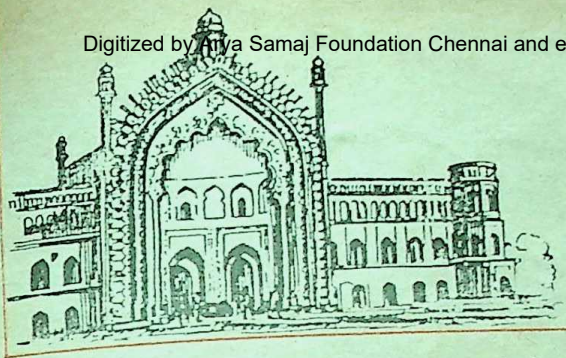

रूमी दरवाजा

है। सन १९७१ के पश्चात उत्तर प्रदेश डाक टिकट की सभी प्रदर्शनियों का स्थल पर यही रहा है।

यह बारादरी मध्ययुग के अंतिम चरण की इंडोसिरेसेनिक भवन निर्माण कला का सर्वोत्तम उदाहरण है। सत्यजीत रे की फिल्म 'शतरंज के खिलाड़ी' में इसी भवन के कलात्मक पक्ष को प्रधान आधार बनाया गया था। सन १८५० में जाने आलम ने गुलाबी पत्थर की इस इमारत को अपने निजी इस्तेमाल के लिए बनवाया था। इसे यूफिलेक्स— ७५ में ७ नवम्बर,७५ को विशेष विरूपण में दिखलाया गया।

इमामबाड़ा हुसैनाबाद

लखनऊ शहर का नाम जहां कहीं भी लिया जाता है, वहां इस शहर की तहजीब और इमामबाड़ों की चर्चा जरूर होती है। यहां के तमाम इमामबाड़ों में आज भी जो सबसे अधिक सजा-संवरा इमामबाड़ा है, वह हुसैनाबाद का ही इमामबाड़ा है। इसे अवध के तीसरे बादशाह मुहम्मद अलीशाह ने बनवाया था। इसे लखनऊ महोत्सव— १९७८ में दिनांक १३ मार्च, ७८ को जारी विशेष आवरण में दिखलाया गया।

शाहनजफ

लखनऊ के सिकंदर बाग के नजदीक कदम रसूल के बगल में गोमती के किनारे नजफ अशरफ का बेनजीर नजारा है। अवध के प्रथम बादशाह गाजीउद्दीन हैदर ने इस मसनुई तीर्थ को बनवाया था। लखनऊ के सारे नवाब इमामिया मजहब से संबंधित थे। शिया मुसलमान पैगंबर साहब के दामाद हजरत अली के मजार शरीफ के दर्शन के लिए नजफ और इमाम साहब के रोजे जियारत के लिए करबला जाते हैं। नजफ का कब्रिस्तान इसलिए मशहूर है कि वहां की मिट्टी नसीब होना हर शिया का पहला और आखिरी अरमान होता है। इसे शियों का काशी कहना अनुचित न होगा। इसे लखनऊ महोत्सव— १९७८ में १९ से १८ मार्च, ७८ तक विशेष विरूपण में दिखलाया गया।

छतर मंजिल

जुलाई, १८१४ की ग्यारहवीं रात को जब नवाब सहादत अली खां रेजीडेंट की मिलीभगत के नतीजे से अपने साले के हाथों जहर पीकर

शाहजनफ

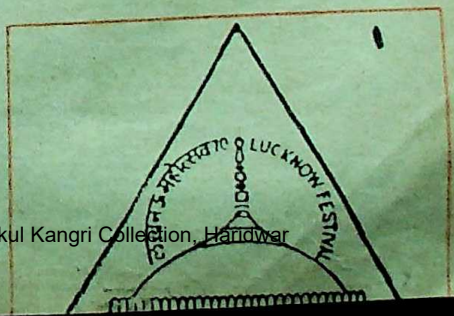

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

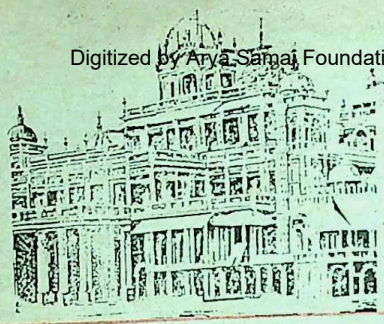

रौशन दौला कचहरी

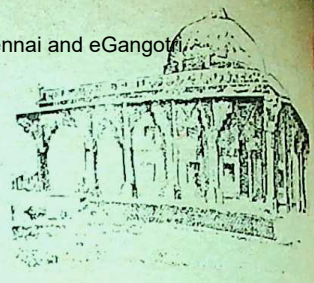

नादान महल का फाटक

आखिरी नींद सोये, तब रफतउद्दौला गाजिउद्दीन हैदर बने। जब उनके सिर पर छत्र लग गया तो फिर एक ऐसे महल की कल्पना की जाने लगी, जिस पर सुनहरा छत्र झिलमिलाता हो और इस तरह गोमती के दाहिने किनारे पर फरहत बख्श के पास नवाब सहादत अली खां के अधूरे ख्वाब छतर मंजिल को पूरा किया। इसे नवाब सहादत अली खां ने अपनी मां छतर कुंवर की याद में बनवाना चाहा था। यह इंडोइटालियन स्थापत्य का एक ऊंचा महल है। इसे लखनऊ महोत्सव— ७८ में दिनांक २१ मार्च, ७८ को जारी विरूपण में दिखलाया गया।

दिलकुशा बाग

गोमती की कछार से कुछ ऊंचे-ऊंचे हरे मैदानों पर लखनऊ का दिलकुशा बाग आज भी दिल बहलाने का एक मनोरम स्थान है। ऊंची-ऊंची गाथिक शैली की कोठियों के खंडहरों के साये में पड़े हुए नये घास के मैदान और फूलबूटों की क्यारियां सैलानियों को मानो निमंत्रण देती हैं। इस बाग को नवाब सआदत अली खां ने लगवाया था। इस मनोरम बाग को लखनऊ महोत्सव— १९७९ में दिनांक 1 फरवरी, ७९ के विशेष आवरण के माध्यम से दिखलाया गया है।

रौशनुद्दौला कचहरी

कैसरबाग की शाही इमारतों के पश्चिम में एक बेहतरीन आलीशान इमारत है जो लखनऊ में इंडोफ्रेंच स्थापत्य का अकेला नमूना है। इस महल का असली एवं पुराना नाम कैसरपसंद था, जिसे १५० वर्ष पहले सल्तनत अवध के वजीरे आलम रौशनुद्दौला ने अपने लिए बनवाया था। रौशनुद्दौला के बाद उसके वारिस इस पर कभी कब्जा नहीं पा सके। वाजिद अली शाह के बाद अंगरेजों के वक्त में इसमें कलक्टरी कचहरी स्थापित हुई। 'छप्पन छुरी' नाम की अपने ज़माने की मशहूर तवायफ के

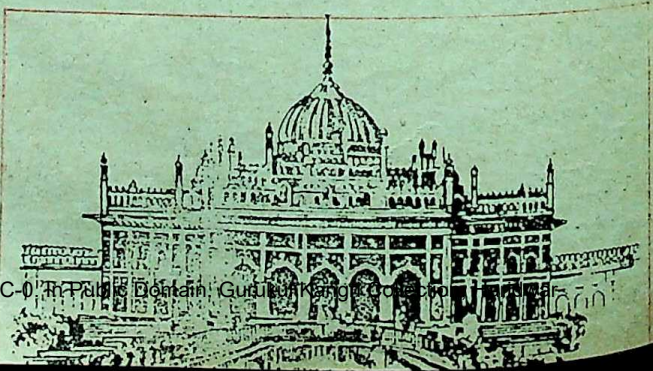

इमामबाड़ा, हुसैनाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कादम्बि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

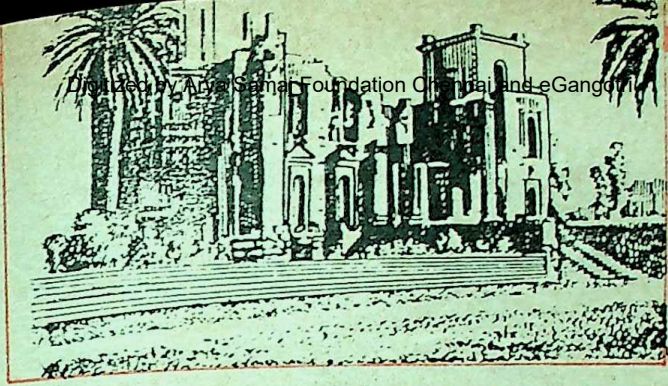

दिलकुशा बाग

मुकदमें की पैरवी यहीं हुई थी । सौ-सौ के नोटों से बने लहंगे को पहनकर मुजरा करनेवाली इस नर्तकी की दिलेरी का क्या कहना, जो छप्पन घाव अपने नाजुक शरीर पर झेलकर भी जिंदा थी । इसे भी लखनऊ महोत्सव— १९७८ में दिनांक ४ फरवरी, ७९ को विशेष आवरण द्वारा दर्शाया गया ।

नादान महल मकबरा

ज्योतिषियों ने अकबर को बताया था कि उम्र की एक खास मुद्दत से एक खास वक्त के लिए अगर उसने अपना राजपाट किसी को न दिया, तो वह उसी दौर में मौत का शिकार हो जाएगा । अकबर ने इस घड़ी को बादशाहदत को अता फरमाने के लिए अपने दरबार के एक मामूली मुलाजिम अब्दुर्रहीम को चुना था । मशहूर है कि इस दो घड़ी की बादशाहत में अब्दुर्रहीम ने सोने की कील जड़ा चमड़े का सिक्का चला दिया । दो घड़ी की अवधि निकल जाने पर अकबर की दूसरी ताजपोशी का बाकायदा इंतजाम हुआ और इस सिलसिले में एक छोटा-मोटा जश्न भी हुआ । एक खास दरबारी ने ताज शेख अब्दुर्रहीम के सिर से उतारा और अकबर के सिर पर रखने चला, इसी बीच ताज में छिपे बैठे काले करैत सांप के बच्चे ने दरबारी की उंगली में काट लिया । ताज मुगलेआजम के सिर पर पहुंच गया, मगर वह दरबारी कुछ दम में वहीं तड़प कर मर गया । यही अकबर का काल था । इस खेल-खेल की बादशाहत ने शेख अब्दुर्रहीम की किस्मत के पन्ने पलट दिये । अकबर ने इस एहसान के बदले शेख साहब को अवध का सूबेदार बनाकर लखनऊ भेज दिया । लखनऊ में वह 'सक्का बच्चा' (जान बचानेवाला) के नाम से मशहूर हो गये और बाद में निदान शाह कहे जाने लगे । शेख ने अपने ही जीवनकाल में अपना कमबरा बनवा लिया था । टिकैतगंज और याहियागंज के बीच में बने इस मकबरे को निदान महल (दिव्य शांति का घर) कहा जाता है । इसे लखनऊ महोत्सव— १९७८ में दिनांक ६ फरवरी, ७८ को विशेष आवरण में चित्रित किया गया ।

हुसैनाबाद की घड़ी मीनार

हुसैनाबाद लखनऊ का प्रसिद्ध अठपहलू

चौलक्खा दरवाजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

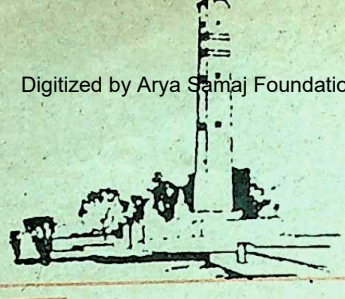

शहीद स्मारक

बिंदादीन महाराज

भरतखंडे संगीत महाविद्यालय

तालाब उसके पूरे ऐतिहासिक क्षेत्र के आकर्षण में चार चांद लगाता है । इस तालाब के पूर्वी भाग में एक खूबसूरत बाग और ऊंचे-ऊंचे ताड़ कुंजों से घिरा एक शानदार घंटाघर है, जिसे हुसैनाबाद क्लॉक टावर कहा जाता है । यह लखनऊ की लाजवाब इमारतों में से एक है, जिसका स्थापत्य नाजुक भी है और दिलकश भी । लगभग बरतानवी स्टाइल में निर्मित यह घड़ी मीनार अवध में ब्रिटिश हुकूमत के प्रारंभिक दौर में बनवायी गयी थी । लगभग एक शताब्दी पुराने इस आलीशन घंटाघर के सभी कलपुर्जे तथा व्हील गनमैटल से बने हुए हैं । इसे उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ को अपने सूबे की सबसे ऊंची मीनार और सारे भारत का सबसे बड़ा घंटाघर होने का गौरव भी प्राप्त है । इसे लखनऊ महोत्सव— १९८१ में दिनांक १८ फरवरी, ८१ को विशेष आवरण में दिखलाया गया ।

तबला-सारंगी

चौलक्ख दरवाजा

कैसरबाग लखनऊ के पूर्व में एक वेस्टर्न स्टाइल की दुमंजिली कोठी कुछ न कुछ आज भी बाकी है जिसे यहां वाले 'चौलक्खी कोठी' कहते हैं । इस कोठी को तो लोग अब पूरी तरह से भुला चुके हैं लेकिन कोठी के इर्द-गिर्द का पूरा इलाका 'चौलक्खी' के नाम से अभी भी मशहूर है । पूरे अस्सी लाख के लागत वाले कैसरबाग के दोनों फाटक इसी प्रकार 'चौलक्खी दरवाजे' के नाम से जाने जाते थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

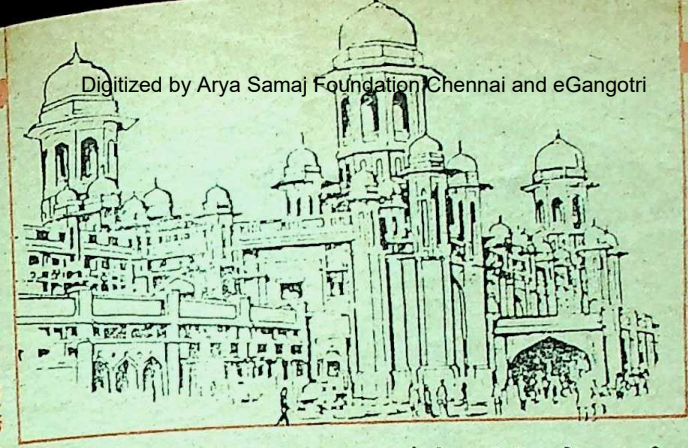

चारबाग स्टेशन

इस दरवाजे को लखनऊ महोत्सव १९८१ में दिनांक १९.२.८१ को विशेष आवरण में दिखलाया गया है ।

चारबाग स्टेशन

लखनऊ आने वालों के लिए चारबाग जंक्शन का भव्य भवन बड़ा आकर्षण रखता है। लखनऊ जंक्शन की यह शानदार इमारत देखनेवालों के मन पर अमिट प्रभाव छोड़ती है। २१ मार्च सन १९१४ को बिशप साहब ने इस रेलवे स्टेशन की नींव डाली थी । प्रसिद्ध वास्तुकार जैकब साहब ने इस खूबसूरत भवन का नक्शा तैयार किया था । चारबाग स्टेशन के निर्माण में उस समय सत्तर लाख रुपये की लागत आयी थी । राजपूत शैली में सुदृढ़ वास्तु विन्यास तथा बेहतरीन संयोजन से बने हुए इस भवन में भवन निर्माण कला के दो विशेष कौशल और भी हैं । एक तो यह कि विहंगम दृश्य में इस इमारत के छोटे-बड़े छतरीदार गुंबद मिलकर शतरंज की बिछी हुई बाजी का नमूना पेश करते हैं । दूरे चाहे जितने शोर और आवाज के साथ कोई ट्रेन प्लेटफार्म पर क्यों न आये स्टेशन के भवन के बाहर उसकी कोई आवाज नहीं आती । संयोग की बात यह है कि पहली शर्त में लखनऊ के शौको शगूल की बात है तो दूसरी सिफ़ में लखनवी तहजीब का पास है । चारबाग स्टेशन जैसा विशाल और मनोरम स्टेशन भवन सारे भारत में आज भी नहीं है और इसे विश्व के सुंदरतम स्टेशनों में गिना जाता है । इसे लखनऊ महोत्सव १९७७ में दिनांक १७.२.७७ से २०.२.७७ तक किये विशेष विवरण में चित्रित किया गया है ।

रेजीडेंसी

लखनऊ रेजीडेंसी की प्रसिद्ध इमारत नवाब आसफुद्दौला के शासनकाल में अवध दरबार की तरफ से बनवायी गयी थी । नवाब ने अपने अंगरेज मेहमानों को ठंडे मुल्क का निवासी जानकर उन्हें दरिया गोमती के किनारे एक ऊंचे टीले पर बसाया था । सन १८०० में नवाब सआदत अली खां के शासनकाल में लखनऊ की रेजीडेंसी पूरी तरह बनकर तैयार हुई । रेजीडेंसी ब्रिटिश पदाधिकारी इस भवन में रहा करते थे और तब ही इसे रेजीडेंसी कहा गया ।

नवाबों की नौका

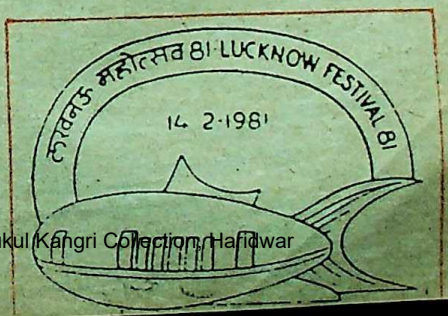

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

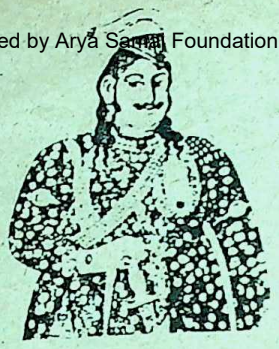

नवाब वाजिद अली शाह

बेगम हजरत महल

इसे यूफिलेक्स-७८ में दिनांक ४.३.७८ को विशेष विरूपण के माध्यम से दिखलाया गया है ।

मुमताज महल

यह नव मुसलिम बेगम उरई लाल के खानदान की लड़की थी । शरफुद्दौला नवाब जो पहले कभी जगन्नाथ थे, इनके रिश्तेदार होते थे । चूंकि मुमताज महल नसीरुद्दीन हैदर की मां का नाम था इसलिए इन्हें मुमताज महल्शानी (दूसरी) कहा जाता था । बेगम के हाथों पर गुदने के निशान साफ-साफ थे जो चूड़ियां टूटने के बाद ही लोगों को नजर आये । मुमताज महल की ड्योढ़ी गंज में थी । अब वहां सिर्फ एक मसजिद और फाटक रह गया है । वह इलाका आज भी मुमताज महल कहा जाता है । बेवा हो जाने के बाद से सफेद लक-झक कपड़े पहनती थी और इमामबाड़ा शाहनजफ के पीछे गोमती के किनारे एक मकान में रहती थी । मुमताज महल सन १८९६ में परलोक सिधारी और बादशाह के बगल में शाहनजफ में सुला दी गयी । इन्हें यूफिलेक्स-७८ में दिनांक ४.३.७८ को विशेष आवरण में चित्रित किया गया है ।

काकोरी स्तंभ

लखनऊ शहर के पश्चिम में नौ मील दूर हरदोई रोड पर काकोरी नामक कस्बा है । यह स्थान अपने आम के बागों और क्रांतिकारी कांड के लिए प्रसिध्खहै । बीसवीं सदी के पूवार्द्ध में स्वतंत्रता आंदोलन के सिलसिले में घटित हुई काकोरी कांड की घटना ने काकोरी का नाम संसार में अमर कर दिया है और अब काकोरी का शहीद स्मारक देश का गौरव बन चुका है । इसे यूफिलेक्स-७८ में दिनांक ४.३.७८ को विशेष विरूपण के माध्यम से दिखलाया गया है ।

कैसरबाग सर्कस

कैसरबाग चौराहे पर बने विशाल स्तंभ के ऊपर अशोक की लाट वहां से आने-जाने वालों का ध्यान बरबस ही अपनी ओर खींच लेता है । इसे लखनऊ महोत्सव १९७९ में दिनांक ८.२.७९ को जारी विशेष विरूपण के माध्यम से दर्शाया गया है ।

इक्का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

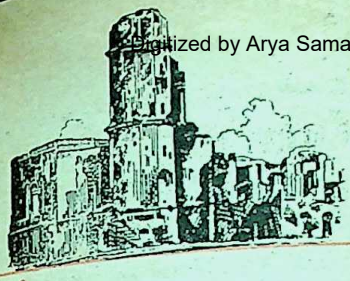

रेजीडेंसी

मछली

मुर्गों की लड़ाई

चिकन कार्य

शहीद स्मारक

गोमती के किनारे छतर मंजिल के पास शहीदों की स्मृति में बना यह शहीद स्मारक यह याद दिलाया है कि 'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले वतन पै मरने वालों का बाकी यही निशां होगा' । इस शहीद स्मारक को लखनऊ महोत्सव १९७८ में दिनांक १६/३.७८ को जारी विशेष आवरण में चित्रित किया गया है ।

नवाब वाजिद अली शाह

लखनऊ के नवाबों में वाजिद अली शाह ऐशो आराम के प्रतीक हैं । वाजिद अली शाह बड़े साहित्य प्रेमी थे । तवारीखे अवध के अनुसार उन्होंने ४० ग्रंथ छोटे-बड़े लिखे हैं । उनकी लिखे ६ दीवान अभी भी मिलते हैं । इन्हें लखनऊ महोत्सव १९८१ में दिनांक १४.2.८१ को जारी विशेष विरुपण में चित्रित किया गया है ।

बेगम हजरत महल

बेगम हजरत महल नवाब वाजिद अली शाह की सबसे दिलेर बेगम थीं । इन्हें नवाब की उपाधि मिली थी । बेगम हजरत महल को लखनऊ महोत्सव १९७७ में दिनांक ५.२.७७ को जारी विशेष आवरण में चित्रित किया गया है ।

बिंदादीन महाराज

पद्विभूषण पंडित बिंदादीन महाराज लखनऊ के कत्थक घराने के गुरु थे । इनका घराना भैरों रोड पर अब भी स्थित है । इनकी शिष्य नृत्यांगनाओं ने भारत ही नहीं, विश्व में नृत्य के क्षेत्र में लखनऊ का नाम रोशन किया है । इन्हें लखनऊ महोत्सव १९८१ में दिनांक १६.२.८१ को जारी विशेष आवरण पर चित्रित किया गया है ।

मोमबत्ती स्टैंड

लखनऊ के नवाबी महलों में प्रकाश के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

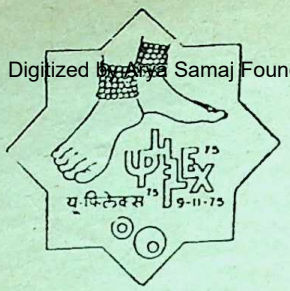

कथक

लिए एक विशेष अदाकारी से बने स्टैंड का प्रयोग होता था । इसे इसे यूफिलेक्स-५ में दिनांक १८.११.७५ को विशेष विरूपण में चित्रित किया गया है ।

इक्का

लखनवी तहजीब का प्रतीक इक्का अवध के नवाबों से लेकर आम जनता का वाहन था । इसे लखनऊ महोत्सव १९७८ में दिनांक १३.३.७८ से १५.३.७८ के बीच विशेष विरूपण में दिखलाया गया है ।

मछली

मछली अवध की ऐश्वर्यता का प्रतीक है । मछली के एक जोड़े को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार राज्य चिह्न बना है । इसे लखनऊ महोत्सव १९८१ में दिनांक १९.३.८१ से २०.२.८१ को हुए विशेष विरूपण में दर्शाया गया है ।

पतंग

लखनऊ का कनकौवा पूरे भारत में प्रसिद्ध है । पतंगबाजी का शौक अवध के मशहूर शौकों का सरताज है । यहां अब भी गोमती के किनारे प्रतिवर्ष पतंगबाजी की स्पर्धाएं होती हैं । इसे लखनऊ महोत्सव १९७७ में दिनांक १३.२.७७ से १६.२.७७ तक जारी विशेष विरूपण में दिखलाया गया है ।

मुर्गों की लड़ाई

लखनवी तहजीब में मुर्गों की लड़ाई का अपना विशेष स्थान है । नवाबों के ऐश्वर्य के समय में इनकी बड़ी-बड़ी प्रतियोगिताएं होती थीं । आज भी इसकी स्पर्धाएं आयोजित की जाती हैं । इसे लखनऊ महोत्सव १९७८ में दिनांक १९.३.७८ से २०.३.७८ को हुए विशेष विरूपण में चित्रित किया गया है ।

तीतर बटेर की लड़ाई

मुरगों की लड़ाई की ही तरह से तीतर बटेर की लड़ाई का भी शौक यहां सदियों से है । इसे लखनऊ महोत्सव १९७९ में दिनांक ८.२.७९ से १०.२.७९ तक जारी विशेष विरूपण में दिखलाया गया है ।

चिकन कार्य

चिकन की कढ़ाई लखनऊ की विशेषता एवं उसके ठाठ-बाट का पूरे भारत में प्रतीक बन गया है । इसे लखनऊ महोत्सव १९७९ में दिनांक ४.२.७९ एवं ५.२.७९ तक हुए विशेष विरूपण में दिखलाया गया है ।

यह रहा लखनऊ दर्शन हमारे फिलेटली के दर्पण में । लखनऊ अपनी विशेषता के लिए मशहूर रहा है पर यह शहर बाहर की दुनिया में एक विशेष क्षेत्र का प्रतिनिधि भी माना जाता है । वह है अवध । लखनऊ और अवध के पास हमारे इतिहास, संस्कृति और सभ्यता की अमूल्य धरोहरें हैं जो आज भी सामान्य जनजीवन में जीवंत हैं तथा अणेक इतिहास के अज्ञात प्रसंगों को खोलने के लिए समय की प्रतीक्षा में हैं ।

● प्रस्तुति : कु. नलिनी मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला दीर्घा

प्रकृति वंदना

कोमला वरदन की एक अनूठी प्रस्तुति

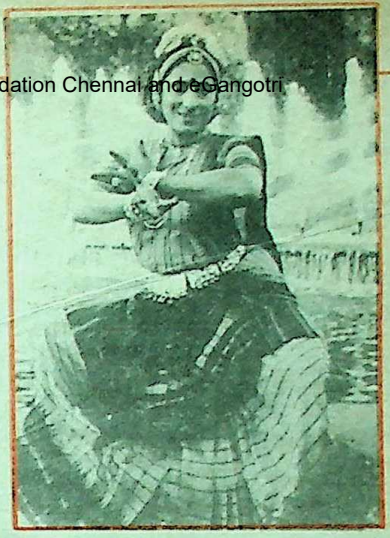

बहुमुखी प्रतिभा की धनी कोमला वरदन भरतनाट्यम की प्रख्यात नृत्यांगना और कड़ईकूड़म नृत्य संस्था की निर्देशिका हैं। दिल्ली पर्यटन विभाग के सहयोग से कोमला वरदन ने एक अनूठा कार्यक्रम प्रस्तुत किया—'प्रकृतिम् वंदे' यानी प्रकृति की वंदना।

प्रकृति को समर्पित इस कार्यक्रम का प्रारंभ उन्होंने सूर्यदेव की वंदना से किया जो ऊर्जा का अनंत भंडार और समस्त सृष्टि का प्राणदाता है। उन्होंने अपनी इस नृत्य-संरचना में श्रावण मास, वर्षा ऋतु, पुष्प, ग्रामीण दृश्य आदि को गुंफित कर प्रकृति और मानव के अंतर-संबंध को निरूपित करने का एक सार्थक प्रयोग किया।

इस नृत्य-संरचना की एक प्रमुख विशेषता यह भी रही कि उन्होंने इस संरचना में विभिन्न भारतीय भाषाओं के कवियों की काव्य-रचनाओं का उपयोग किया, जैसे, विरह-वर्णन में तुलसीदास के रामचरितमानस की पंक्तियों का, श्रावण मास के वैभव वर्णन में मराठी के कवि बालकवि का, वर्षा ऋतु के लिए तमिल के महाकवि सुब्रमन्य भारती का, पुष्पों के लिए तेलुगु कवि देवपल्ली कृष्णा शास्त्री का, ग्रामीण दृश्य के लिए मलयालम के कवि संगामजुझा आदि का।

इस प्रभावशाली नृत्य-संरचना में कोमला वरदन ने स्वयं की खींची रंगीन स्लाइडों का भी उपयोग किया। वस्तुतः यह कार्यक्रम उनके कवि, कथाकार, चित्रकार और एक कुशल फोटोग्राफर आदि की प्रतिभाओं का समवेत प्रदर्शन था, जिसने राजधानी के भव्य फिक्की सभागार में खचाखच भरे कला-प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने किया और अध्यक्ष थे दिल्ली राज्य के पर्यटन मंत्री श्री रातावाल। संस्था के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र अवस्थी ने पुष्पहार से उनका स्वागत किया।

—डॉ. जगदीश चंद्रिकेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यह महीना और आपका भविष्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : मास उपलब्धिपूर्ण होगा । नवीन संपर्कों से कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी । पारिवारिक व्ययों की अधिकता रहेगी । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से तनाव उत्पन्न होंगे । संपत्ति कार्यों में अनपेक्षित सफलता मिलेगी ।

वृषभ : मास में इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी । उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी । कामकाज की अधिकता से अस्वस्थता रहेगी । उच्च वर्ग के समर्थन से शत्रु-पक्ष का शमन होगा । संपत्ति के विवादों में विलंब हितकर होगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों से यश वृद्धि होगी । आकस्मिक प्रवास में सावधानी रखें ।

मिथुन : मास में सावधानी एवं संयम रखें । उच्चाधिकारी वर्ग से व्यर्थ संभाषण टालें । शत्रु-पक्ष गुप्त षड्यंत्र करेगा । परिश्रम तथा पुरुषार्थ से प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय मिलेगी । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । मासांत में निकटजन के सहयोग से धन लाभ होगा । आमोद-प्रमोद पर व्यय होगा ।

कर्क : मास में प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद पुरुषार्थ से प्रभाव वृद्धि होगी । पारिवारिक वातावरण खिन्नतापूर्ण रहेगा । रक्त अथवा उदर विकारों का सामना करना होगा । रचनात्मक कार्यों में विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा । मासांत में जोखिमपूर्ण कार्य से आकस्मिक धन लाभ होगा ।

सिंह : प्रतिकूल वातावरण में साहसिक प्रयत्नों से सफलता मिलेगी । व्ययों की अधिकता होगी । रक्त संबंधियों से संतुलित व्यवहार रखें । उच्चाधिकारियों के सहयोग से व्यक्तित्व का विकास होगा । शत्रु-पक्ष से सुलह होगी । मित्रों के सहयोग से आर्थिक समस्या का समाधान होगा । परोपकारी कार्यों से यश-वृद्धि होगी । प्रियजन के समागम से प्रसन्नता होगी । प्रवास उपलब्धिपूर्ण होगा ।

कन्या : मास में कार्यों की अधिकता होगी । नवीन उत्तरदायित्व से प्रसन्नता होगी । रचनात्मक एवं सामाजिक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा । आत्मविश्वास में वृद्धि होगी । शत्रुओं के षड्यंत्र विफल होंगे । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता रहेगी । स्वजनों के सहयोग से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी ।

तुला : मास में उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी । राजकीय क्षेत्र में संबंधों का विस्तार होगा । नवीन मित्र से विशिष्ट लाभ की संभावना होगी । शत्रु-पक्ष का पराभव होगा । रचनात्मक कार्यों से उल्लेखनीय

ग्रह स्थिति : सूर्य १६ से कर्क में, मंगल वृषभ में, बुध मिथुन में, ३१ को कर्क में, गुरु तुला में, शुक्र ५ से सिंह में, शनि कुंभ में, राहु तुला में, केतु मेष में, हर्षल मकर में, नैप्चयून धनु में प्लेटो वृश्चिक में, भ्रमण करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व और त्यौहार

१ शीतलाष्टमी व्रत, ४ योगनी एकादशी, ६ प्रदोष, ८ स्नानदान की दर्श अमावस्या, १० रथ-यात्रा, १२ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, १४ कुमार षष्ठी, १७ कंदर्प नवमी मंडली नवमी, १९ हरिशयनी एकादशी, २० प्रदोष, २२ स्नानदानादि की आषाढ़ी पूर्णिमा गुरुपूर्णिमा, २४ अशन्यशयन व्रत, २५ श्रावण सोमवार व्रत, २६ संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी भौम व्रत, २७ नाग पंचमी, ३० कालाष्टमी ।

उपलब्धि होगी । मासांत में आत्म विश्वास तथा साहसिक प्रयासों से विशिष्ट लाभ मिलेगा ।

वृश्चिक : मास उत्साहपूर्ण रहेगा । नवीन योजनाओं में प्रगति एवं नवीन दायित्व से प्रसन्नता होगी । शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे । उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से लंबित कार्य की पूर्ति होगी । संपत्ति संबंधी विवाद का समुचित समाधान होगा । आध्यात्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी ।

धनु : आर्थिक कार्यों में उल्लेखनीत सफलता मिलेगी । पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों में वृद्धि होगी । कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । उच्चाधिकारी वर्ग पर शत्रु-पक्ष के प्रभाव में वृद्धि होगी । न्यायालयीन समस्या का समाधान होने से उत्साह में वृद्धि होगी ।

मकर : नवीन योजना से भाग्योदय होगा । आत्मविश्वास तथा पराक्रम से राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी । संपत्ति संबंधी कार्यों में व्यर्थ अवरोध उत्पन्न होंगे । आजीविका की दिशा में वांछित परिणाम मिलेंगे । पद परिवर्तन अथवा स्थानांतरण का योग होगा । पारिवारिक वातावरण चिंतनीय होगा । प्रवास विशिष्ट उपलब्धिपूर्ण होगा । रचनात्मक एवं सामाजिक कार्यों में अवरोध उपस्थित होंगे । आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति होगी ।

कुंभ : नवीन दायित्वों में वृद्धि होगी । मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यों में व्यय की अधिकता होगी । प्रियजन के सहयोग से शत्रु अथवा संपत्ति समस्या का समाधान होगा । अज्ञात भय व मानसिक चिंताओं में वृद्धि होगी । जीवन साथी अथवा परिवार के सहयोग से आर्थिक संसाधन में वृद्धि होगी । जोखिमपूर्ण कार्य टालना हितकर होगा । संपत्ति कार्यों में धीमी प्रगति होगी ।

मीन : आजीविका की दिशा में किये गये प्रयास पूर्ण होंगे । नवीन संपर्कों से राजनीतिक दिशा में उल्लेखनीय उपलब्धि होगी । उच्चाधिकारियों की अनुकूलता से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । प्रियजन की अस्वस्थता से व्ययाधिक्य होगा । प्रवास में पीड़ा होगी । नवीन दायित्व अथवा पद प्राप्ति का योग उपस्थित होगा । परोपकारी कार्यों से यश वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष के गुप्त षड्यंत्रों से सावधानी रखें ।

—ज्योतिष धाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर, भोपाल
मध्य प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद में 'कादम्बिनी' क्लब

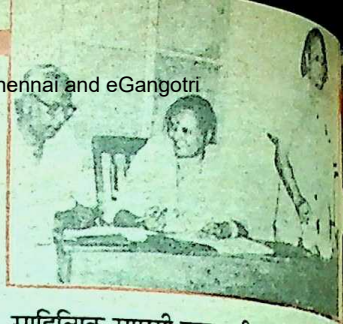

दक्षिण के साहित्यकार उत्तर के साहित्य से जुड़ेंगे

हैदराबाद । 'संगठित होने से ही मनुष्य क्रियात्मक कार्यों से जुड़ता है । इकट्ठा होने से जहां आनंद की प्राप्ति है, वहीं शारीरिक एवं मानसिक शक्ति का विकास भी होता है । श्री सत्यनारायण भगवान की कथा का यही उद्देश्य है, लोकमान्य तिलक ने श्री गणेश उत्सव के माध्यम से संगठित होने की आधारशिला रखी थी और आज भी साहित्यकारों को पुनः इकट्ठा होने की आवश्यकता है ।'

'कादम्बिनी' के संपादक एवं आथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के महामंत्री श्री राजेन्द्र अवस्थी ने हिंदी प्रचार सभा नामपल्ली में 'कादम्बिनी' क्लब का उद्घाटन करते हुए उक्त उद्गार प्रकट किये । उन्होंने कहा कि आज हिंदी की पत्रिकाएं बंद हो रही हैं, ऐसे में हिंदी जगत में 'कादम्बिनी' सक्रियता और निरंतरता से बंधी है ।

'कादम्बिनी' क्लब के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए श्री राजेन्द्र अवस्थी ने कहा कि क्लब एक साहित्यिक और सांस्कृतिक मंच होगा । क्लब की गतिविधियों की खबरें और सदस्यों की रचनाएं 'कादम्बिनी' में प्रकाशित होती हैं । क्लब की विदेश तथा देशभर में ३५० शाखाएं हैं, क्लब के सदस्यों को परिचय-पत्र एवं साहित्यिक सामग्री प्रदान की जाती है । इससे नये लिखनेवालों को प्रोत्साहन मिलेगा । 'कादम्बिनी' क्लब हैदराबाद शाखा की संयोजिका डॉ. अहिल्या मिश्रा को बनाया गया।

इस अवसर पर श्री नेहपाल सिंह वर्मा ने कहा कि इस क्लब के माध्यम से हैदराबाद के साहित्यकार विंध्याचल पर्वत को पार कर उत्तर के साहित्य-जगत से जुड़ेंगे ।

हिंदी प्रचार सभा एवं 'गीत चांदनी' की ओर से अतिथि कवियों में श्री राजेन्द्र अवस्थी, प्रो. अनुज कुमार धान, डॉ. सरोजनी प्रीतम एवं डॉ. सुधा पांडेय को पुष्पमालाएं भेंट की गयीं।

'गीत चांदनी' की ओर से आयोजित कवि गोष्ठी में श्री डी. एस. सिंह ठाकुर की अध्यक्षता में देशभर से आये और स्थानीय कवियों के अतिरिक्त डॉ. सरोजनी प्रीतम, डॉ. मंजू ज्योत्सना, कृष्णा चटर्जी,गुप्ता, रुक्माजी राव, नरेन्द्र राय, डॉ. अहिल्या मिश्रा, साकिब बनारसी, पुष्पा वर्मा, मामचंद कौशिक, दत्त भारती, रूपचंद दुग्गल, डॉ. वेंकटेश ठाकुर, गिरधारी लाल पराशर, दुलीचंद शशि, नेहपाल सिंह वर्मा और डी. एस. सिंह ठाकुर ने काव्य-पाठ किया ।

हैनीमैन के जन्म-दिवस पर गोष्ठी

पुरोला । 'कादम्बिनी' क्लब के तत्वावधान में होम्योपैथी के जनक डॉ. एस. हैनीमैन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म-दिवस पर गोष्ठी आयोजित की गयी । गोष्ठी में वक्ताओं ने होम्योपैथी को सस्ती, हानिकारक एवं कारगर चिकित्सा पद्धति बताकर इसके प्रचार-प्रसार पर बल दिया । वक्ताओं ने डॉ. हैनीमैन के कार्यों एवं आविष्कार को अद्वितीय बताया ।

गोष्ठी की अध्यक्षता एस.एस.बी. के सब-एरिया आर्गनाइजर श्री ओ. पी. शर्मा ने की ।

इस अवसर पर क्लब के सदस्य हरिशरण गोयल, ओम प्रकाश उनियाल, डॉ. गंगा प्रसाद गैरोला, डॉ. जे. के. पैन्यूली, डॉ. राधे श्याम बिजल्वाण, डॉ. मदन लाल जोशी, बी. डी. माहिल, पृथ्वी राज कपूर, रोशन लाल बिजल्वाण तथा बचन सिंह चौहाण उपस्थित थे । संचालन क्लब के संयोजक गणेश दत्त पैन्यूली ने किया ।

भारतीय साहित्य में एकात्मकता का स्वर

हैदराबाद । आथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया की ओर से हैदराबाद में एक अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन आंध्र के राज्यपाल श्री कृष्णकांत ने किया । गोष्ठी का विषय था— 'भारतीय भाषाओं के साहित्य में एकात्मता ।' संगोष्ठी की अध्यक्षता आंध्र के मुख्यमंत्री श्री विजय भास्कर रेड्डी ने की । इस अवसर पर आंध्र के सूचना मंत्री श्री डी. श्रीनिवास के अतिरिक्त राज्य मंत्रिमंडल के अनेक सदस्य उपस्थित थे ।

संगोष्ठी में समूचे देश से आये लेखकों और विद्वानों ने आलेख पढ़े और यह प्रतिपादित किया कि भारतीय साहित्य का मूल स्वर एकात्मकता का ही है ।

चित्र में राज्यपाल श्री कृष्णकांत संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए । प्रथम चित्र में बायें से डॉ. अनुजकुमार धान, राज्य के सूचना मंत्री श्री डी. श्रीनिवास, राज्यपाल श्री कृष्णकांत, श्री पद्मनाभन एवं श्री राजेंद्र अवस्थी, इसी अवसर का एक और चित्र ।

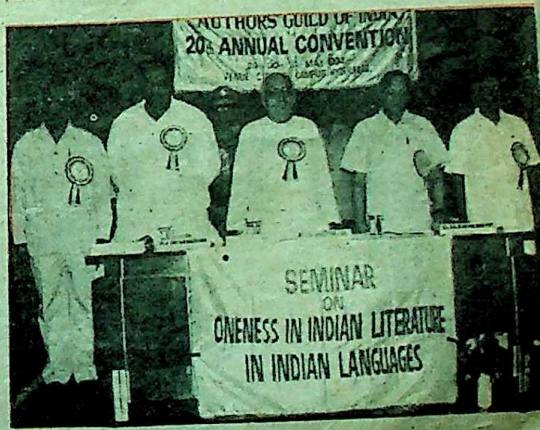

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लघु कथा गोष्ठी

सहारनपुर । सामाजिक विसंगतियों और कानून व्यवस्था पर करारी चोट व आक्रोश व्यक्त करती हुई लघुकथा गोष्ठी का आयोजन 'कादम्बिनी' क्लब के तत्वावधान में स्थानीय टैक्स सलाहकार कार्यालय चंद्र नगर में हुआ ।

लघुकथा गोष्ठी में नगर के प्रमुख लेखकों रमेश चंद्र छबीला, कृष्ण शंकर भटनागर, अनिता कथूरिया, रविन्द्र जैन, रमेश सूर्यवंशी, कुमुद शर्मा आदि ने समाज के हर पहलू पर प्रभावशाली हृदयस्पर्शी लघुकथाएं पढ़ीं । इन लघुकथाओं पर वी. पी. सिंघल, सुरेश कथूरिया, प्रीति कथूरिया, विजेश जोशी, चड्डा, ममता, सिंघल आदि ने अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं तथा आज की लघुकथा समाज के कितने निकट है विषय पर अपने विचार प्रकट किये ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वी. पी. सिंघल ने की तथा संचालन रमेश चंद्र छबीला ने किया ।

काव्य-पाठ

सोनीपत । 'कादम्बिनी' क्लब की एक गोष्ठी डॉ. सत्यपाल कपूर के निवास स्थान पर संपन्न हुई जिसमें संस्कृत अध्यापक श्री शालिगराम ने अपनी कविता संग्रह की ६ कविताएं पढ़कर सुनायीं । गोष्ठी में डॉ. गणपत ठाकुर, डॉ. सत्यपाल कपूर, श्रीमती शान्ता जैन, स्वर्ण कुमार एडवोकेट, चौ. फूल चंद आदि ने सामाजिक प्रश्नों पर विचार व्यक्त किये । अध्यक्षता प्रो. धर्मपाल ने की ।

कहानी पाठ का आयोजन

श्रीनगर (गढ़वाल) । कादम्बिनी क्लब की एक बैठक में डॉ. सुरेंद्र जोशी की कहानियों पर चर्चा हुई और उनके द्वारा कहानी पाठ हुआ।

कुछ नये सदस्यों ने सदस्यता ग्रहण की। इनमें डॉ. विभा गौड़, शशि बाला के नाम उल्लेखनीय हैं ।

गोष्ठी की कार्रवाई देर शाम तक चली। सदस्यों ने शीघ्र ही पर्वतीय ग्राम्यांचल में कहानी-पाठ का अपने तरह का अनूठा आयोजन करने का प्रस्ताव पारित किया। जिसमें दो वरिष्ठ कहानीकारों को भी बाहर से आमंत्रित किया जाएगा । कार्यक्रम की व्यवस्था आदि का कार्यभार संयोजक डॉ. हरिमोहन ने क्लब के सक्रिय सदस्य अरविंद दरमोड़ा को सौंपा । श्री दरमोड़ा अपने स्रोतों से अर्थ-व्यवस्था करेंगे ।

युवा शक्ति का लोकार्पण

सीतामढ़ी । स्थानीय साहित्यिक संस्था 'कादम्बिनी' क्लब की मासिक बैठक सह-गोष्ठी श्री विजय सुंदरका की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में 'क्लब' की संयोजिका आशा 'प्रभात' ने डॉ. हरिकृष्ण प्रसाद गुप्त 'अग्रहरि' द्वारा लिखित ३५वीं पुस्तक 'युवा शक्ति' का लोकार्पण किया । उपस्थित रचनाकारों में सर्वश्री राम चंद्र विद्रोही, पंकज कुमार, अजय विद्रोही, वसंत आर्य, जयप्रकाश मिश्र, अवध बिहारी, शरण 'हितेंद्र', रामस्वार्थ राय 'दार्शनिक' आदि ने 'युवा शक्ति' पर अपने विचार प्रकट किये।

'क्लब' की संयोजिका आशा प्रभात ने डॉ. अग्रहरि के लेखकीय कार्य की प्रशंसा की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

स्वाधीनता विशेषांक : सफलता के सूत्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मासिक प्रकाशन अगस्त ९४

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

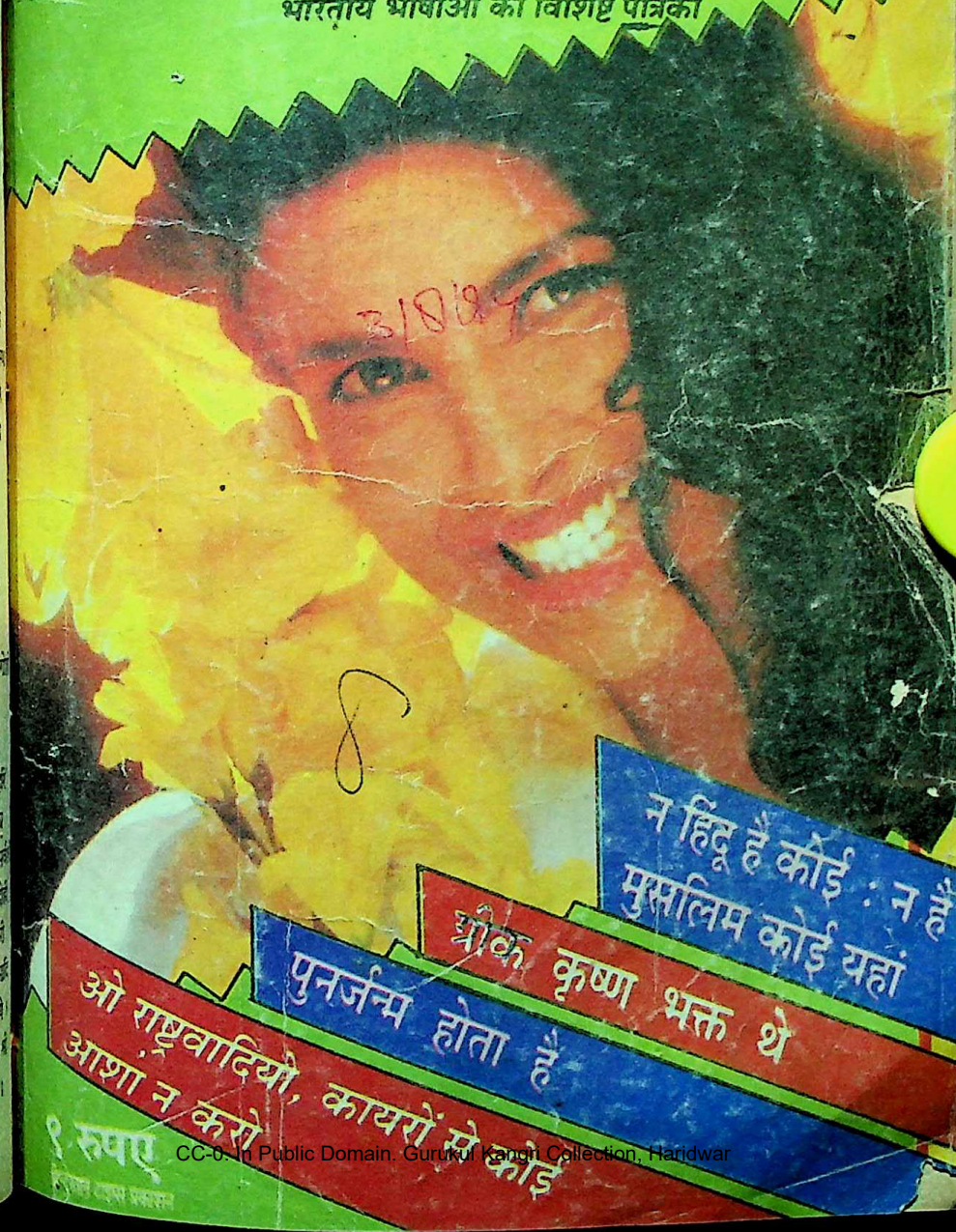

९ रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्तरेखा, ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र का अनूठा साहित्य, सरल हिन्दी भाषा टीका सहित :

- हस्तरेखा का गहन अध्ययन — 80 रु.
  अमरीकी विद्वान **बेनहम** का प्रमाणिक ग्रंथ (दो भाग)
- हस्तरेखाएं बोलती हैं : (कीरो) (CHEIRO) — 40 रु.
- अंकों में छिपा भविष्य : (-''-) — 40 रु.
- भाग्य त्रिवेणी : (-''-) — 40 रु.
- नास्त्रेदाम की भविष्यवाणियां_ — 40 रु.
- अंक विद्या रहस्य_(सेफेरियल) — 40 रु.
- आपकी राशि भविष्य की झांकी_ — 40 रु.
- हस्त संजीवन, प्राचीन पुस्तक — 40 रु.
- मंत्र शक्ति_ 25 रु. महामृत्युंजन साधना एवं सिद्धि — 40 रु.
- तंत्र शक्ति_ 25 रु. दत्तात्रेय तंत्र भा.टी._ — 80 रु.
- यंत्र शक्ति (दो भाग)_ 50 रु. रुद्रयामल तंत्र_ — 100 रु.

लाल किताब-साइक्लोस्टाइल (उर्दू की प्राचीन, अब हिन्दी में) — 600 रु.

ज्योतिष सर्वस्व : डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र
ज्योतिष शिक्षा के लिए क्रमबद्ध सम्पूर्ण ग्रंथ, पृष्ठ 500 — 150 रु.

वृद्ध यवन जातकम् : आचार्य मीनराज कृत हिन्दी टीकाकार : डा. सुरेशचन्द्र 1800 वर्ष पूर्व लिखा गया फलित ज्योतिष का 4500 संस्कृत श्लोकों का महान संदर्भ ग्रंथ, सर्वप्रथम हिन्दी व्याख्या सहित
पृष्ठ 1000 से अधिक दो भागों में सम्पूर्ण ग्रंथ मूल्य — 400 रु.

जातक तत्वम् : पं. महादेव पाठक विरचितम्
फलित ज्योतिष का सौ वर्षों से अधिक प्राचीन ग्रंथ — 100 रु.

जैमिनिसूत्रम् सम्पूर्ण : महर्षि जैमिनिकृत
अनेक फलित पद्धतियां_ अन्यत्र दुलर्भ — 100 रु.

रत्न प्रदीप : डॉ. गौरीशंकर कपूर,
नवरत्नों एवं उपरत्नों का विस्तृत विवेचन— — 80 रु.

- डाक व्यय अलग लगेगा, बृहद् सूची पत्र मंगायें।
- वी.पी. से मंगाने के लिये पत्र लिखें।

रंजन पब्लिकेशन्स फोन : 3278835
16 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व प्रसिद्ध शृंखला

शृंखला में प्रकाशित पुस्तकों का मूल उद्देश्य ज्ञान एवं चिन्तन के धरातल पर एक पाठक को अन्तरराष्ट्रीय जगत से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करना है।

इस शृंखला की सभी पुस्तकें क्रमशः मानव संबंधी सभी महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे समाज, रहस्य, रोमांच, दर्शन, धर्म, खेल, संस्कृति, सभ्यता आदि पर विहंगम दृष्टिपात करते हुए सारगर्भित विषय-सामग्री प्रस्तुत करती हैं।

शृंखला की अन्य पुस्तकें

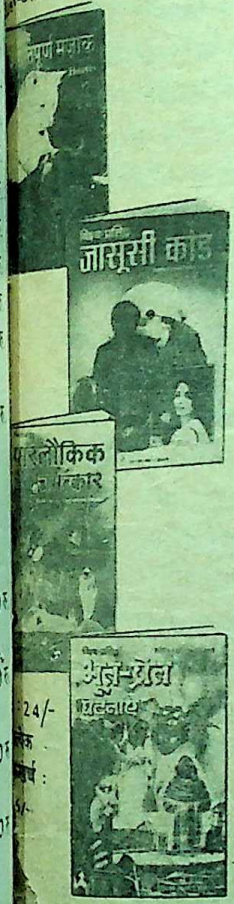

विश्व प्रसिद्ध.....

* प्रेरक-प्रसंग
* क्रूर हत्यारे
* ड्रग-माफ़िया
* खोज-यात्राएं
* रोमांस-कथाएं
* अनमोल खजाने
* विनाश लीलाएं
* रिकार्ड्स I, II
* 101 व्यक्तित्व I, II, III
* साहसिक कथाएं
* बैंक डकैतियां व जालसाजियां
* धर्म, मत एवं संप्रदाय
* हस्तियों के प्रेम-प्रसंग
* तख्तापलट की घटनाएं
* भ्रष्ट राजनीतिज्ञ
* अलौकिक रहस्य
* गुप्तचर-संस्थाएं
* राजनैतिक हत्याएं
* आतंकवादी संगठन
* चिकित्सा-पद्धतियां
* सनकी तानाशाह
* रोमांचक कारनामे
* खेल और खिलाड़ी
* मांसाहारी व विचित्र पेड़-पौधे
* भयानक रोगों पर विजय
* आध्यात्मिक गुरु एवं शैतान
* विलासी सुंदरियां
* अनसुलझे रहस्य
* दुर्घटनाएं
* जनसंहार
* वैज्ञानिक
* जनक्रांतियां
* युद्ध
* जासूस
* मुकदमे
* खोजें
* सभ्यताएं
* भविष्यवाणियां और उनके भविष्यवेत्ता
* कुख्यात महिलाएं
* अनूठे रहस्य
* मिलिट्री ऑपरेशन
* मिथक एवं पुराण-कथाएं
* धातुओं की कहानियां
* विवाह प्रथाएं एवं परंपराएं

Also available in English

...चार पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ

...पाठ्य-सामग्री • प्रत्येक पुस्तक ...चित्रों से सुसज्जित • सरस ...फोटो टाइपसैट • बढ़िया ...ऑफसैट छपाई • बहुरंगी ...बाजिब दाम।

अपने निकट के या रेलवे तथा बस-अड्डों पर स्थित बुक-स्टॉलों से प्राप्त करें। न मिलने पर वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता:

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

शाखाएं: 10 बी, भगतजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002
• 22/2, मिल्लन रोड, बंगलौर-560027 फोन: 234025
• अशोक राजपथ, पटना-800001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

१. अकूत— क. अद्भुत, ख. जिसका अंदाजा न हो सके, ग. दूर स्थित, घ. वर्णन से परे ।

२. अतिशय— क. बहुत सजा हुआ, ख. बहुत शर्मिला, ग. अत्यधिक, घ. सीमा से परे ।

३. उनींदा— क. बेसुध, ख. जिसे नींद न आती हो, ग. झुका हुआ, घ. नींद से भरा हुआ ।

४. संवरण— क. रोकना, ख. छिपाना, ग. अच्छी तरह वरण, घ. चुनना ।

५. संवेदना— क. कष्ट, ख. साथ-साथ तकलीफ सहना, ग. सहानुभूति, घ. भावुकता ।

६. आसक्ति— क. प्रेम, ख. मन का लगाव, ग. अनुराग, घ. खिंचाव ।

७. दुर्व्यसन— क. बुरा बर्ताव, ख. बुरा काम, ग. बुरी लत, घ. निंदित आचरण ।

८. आशुकोपी— क. जिस बात पर क्रोध आये, ख. चिड़चिड़ा, ग. बुरे स्वभाव वाला, घ. जो गंभीर न हो ।

९. कुलवंत— क. कुलीन, ख. जिसके परिवार में बहुत सदस्य हों, ग. समूहगत, घ. जोड़े से हो ।

१०. चिंतवन— क. चिंता, ख. परवाह, ग. सोचना-विचारना, घ. विचार ।

११. आश्लिष्ट— क. अलग, ख. जुड़ा हुआ, ग. सूचित, घ. लिखित ।

१२. आसन्न— क. पास आया हुआ, ख. ढका हुआ, ग. बैठने की चटाई आदि, घ. हठयोग की मुद्रा ।

१३. संवाद— क. सूचना, ख. संदेश, ग. वार्तालाप, घ. अच्छी खबर ।

उत्तर

१. ख. जिसका अंदाजा न हो सके । उसके पास **अकूत** धन-दौलत है । (अ+कूत)

२. ग. अत्यधिक, बहुत ज्यादा । उसे अतिशय कठोर दंड दिया गया है । (व्युत्.—अति, शी)

३. घ. नींद से भरा हुआ, ऊंघता हुआ । रात्रि जागने से वह **उनींदा** हो रहा है ।

४. क. रोकना । ख. छिपाना, ढकना । यह रहस्य प्रकट करने का वह लोभ **संवरण** नहीं कर सका । (व्युत्.— सम्, वृ)

५. ग. सहानुभूति । दुखी व्यक्ति के प्रति **संवेदना** प्रकट करना स्वाभाविक है । (व्युत्.— सम्, विद्)

६. ख. मन का लगाव । ग. अनुराग । विषयों के प्रति **आसक्ति** विनाशकारक है । (व्युत्.— आ, सञ्ज्)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. ग. बुरी लत, खराब आदत । कुसंग से मनुष्य **दुर्व्यसन** का शिकार हो जाता है । (व्युत्.— दुर्, वि, अस्)

८. ख. चिड़चिड़ा, जो जरा-सी बात पर चिढ़ जाए । **आशुकोपी** होना एक दुर्गुण है । (आशु+कोपी)

९. क. कुलीन, अच्छे कुल का । **कुलवंत** मनुष्य सबका विश्वासपात्र होता है ।

१०. ग. सोचना-विचारना, मनन । भारतीय दर्शन गहन **चिंतवन** पर आधारित है । (व्युत्.— चिंत्)

११. ख. जुड़ा हुआ, संबद्ध । सत्साहित्य किसी आदर्श से **आश्लिष्ट** होता है । (व्युत्.— आ, श्लिष्)

१२. क. पास आया हुआ । उनका आगमन **आसन्न** है । **आसन्नकाल** =जिसकी मृत्यु निकट हो । (व्युत्.— आ, सद्)

१३. ख. संदेश, खबर । क्या **संवाद** है ? (संवाददाता =रिपोर्टर) ।

ग. वार्तालाप । उसके साथ सुमधुर **संवाद** रहा । (व्युत्.— सम्, वद्)

पारिभाषिक शब्द

Portfolio	संविभाग
Opposition	विरोध/विरोधी दल
Ordinance	अध्यादेश
Alternate	एकांतर
Alternative	विकल्प/वैकल्पिक
Alteration	परिवर्तन/हेर-फेर
Vice versa	विपरीततः
Corresponding	तदनुरूप
Supplement	पूरक

ज्ञान-गंगा

तिष्ठन्ति विगतोद्वेगं सन्तः प्रकृतकर्मसु ।

(योगवाशिष्ठ, उत्पत्ति प्रकरण ८१/१८)

—सज्जन पुरुष बिना घबराहट के अपने चालू कामों में लगे रहते हैं ।

नहि संचयवान् कश्चिद् दृश्यते निरुपद्रवः ।

(महाभारत, वनपर्व २/४८)

—कोई भी धनसंग्रही मनुष्य उपद्रवों से रहित नहीं दीखता ।

उत्तमाधममध्यानां श्रोतव्यं बचनं बुधैः ।
तत्र चात्महितं ग्राह्यं ॥

(तन्त्रोपाख्यानम् पृष्ठ ३३)

—उत्तम, मध्यम और अधम इन तीनों प्रकार के लोगों की बात बुद्धिमान् व्यक्ति को सुन लेनी चाहिए और उनमें जो लाभकारी हो उन्हें ग्रहण कर लेना चाहिए ।

प्रकृतिखलाः किल बिप्रतीक बोधाः ।

(आनन्दवृन्दावनचम्पू १५/२०३)

—जो लोग स्वभाव से ही दुष्ट होते हैं उनका ज्ञान भी विरुद्ध ही होता है ।

आच्छादने दोषवृद्धिः ख्यापने तु लयोभवेत् । **(गणेशपुराण ३३/४)**

—दोष छिपाने पर बढ़ जाता है और विशप्त कर देने पर समाप्त हो जाता है ।

कुर्वते वन्दनं यस्तु न कुर्यात् प्रतिवन्दनम् ।
नाभिवाद्यः स विज्ञेयो यथा शूद्रस्तथैव सः ॥

(स्कन्दपुराण २२/२२)

—वंदन करने पर भी जो व्यक्ति प्रतिवंदन न करे वह अभिवादन-योग्य नहीं है, वह शूद्रवत् है ।

—महर्षि कुमार पाण्डेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और

हिंदी 'राजभाषा' है या राष्ट्र भाषा इस भ्रम पर से परदा मैंने उठाया है, और सिर्फ मैंने, अतः जो कुछ मैं कहने जा रही हूं वह सच है और सच के सिवाय कुछ नहीं है ।

मूल संविधान अंगरेजी में है,इसके भाग १७ में आफिशियल लैंग्वेज शब्द है जिसका भाषांतर राजभाषा खंड विधि विभाग विधि न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय भारत सरकार भगवानदास मार्ग नयी दिल्ली ने 'राजभाषा' किया है । इसी विभाग की विधि शब्दावली में ४४ स्थान पर 'आफिशियल' शब्द का उपयोग हुआ है, जिनमें २८ स्थानों पर 'आफिशियल' का अनुवाद 'शासकीय' है, १२ स्थानों पर पदीय है तथा मात्र ३ स्थानों पर जहां भाषा अभिप्रेत है 'राज' शब्द अनुदित है । इसी विधि शब्दावली के हिंदी से अंगरेजी अनुवाद में पृष्ठ ३५४ पर 'राज' का अंगरेजी अनुवाद मेशन अर्थात राजमिस्त्री जो जुड़ाई का काम करता है दिया गया है । जिस हिंदी भाषा को हम 'राष्ट्र भाषा' का गौरव दिलाना चाह रहे थे, उसे कानूनविदों ने राजमजदूरों की भाषा बनाकर अपमानित किया है । १९८६ में जब एक विधि परियोजना पर मैं कार्य कर रही थी, तब मेरी पकड़ में यह 'भ्रम' आया । मैंने अनेक लेख लिखे, कुछ छपे , कुछ नहीं छपे । तब मैंने त्रिवेणी परिषद जबलपुर को याची बनाकर जनहित विवाद के अंतर्गत म.प्र. उच्च न्यायालय के समक्ष याचिका प्रस्तुत की । इसका नं. है एम.पी. ३६४५/९३, विधायी विभाग को विरोधी पक्षकार बनाकर मैंने हिंदी के 'राज' को चुनौती दी । माननीय मुख्य न्यायमूर्ति म.प्र. उच्च न्यायालय ने इस भ्रम को स्वीकार किया कि आफिशियल शब्द का अनुवाद 'राज' प्रामाणिक नहीं है, किंतु न्यायालय भाषा विद् के क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं कर सकती ।

इस लंबी दास्तान के पीछे मेरा उद्देश्य है कि 'कादम्बिनी' जो अंतरराष्ट्रीय स्तर की पत्रिका है इस भ्रम से जन-जन को अवगत कराये और हिंदी को राष्ट्र भाषा का गौरव दिलवाने हेतु व्यापक जागरूकता प्रदान करे । आज इस बिंदु पर पर्याप्त प्रसार-प्रचार आवश्यक है ।

—सुधारानी श्रीवास्तव,
२०८/२, गढ़ा फाटक,
जबलपुर (म. प्र.)

प्रोत्साहन पत्र

देखे बिना न रह सकी

'कादम्बिनी' जैसी पत्रिका को बनाये रखने के लिए धन्यवाद और मुबारक । नयी पाठिका नहीं हूं । बहुत पहले पढ़ा करती थी । कई वर्षों के बाद अब भी 'कादम्बिनी' को देख आकृष्ट हुए बिना न रह सकी । पिछले तीन माह से फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ रही हूं ।

आपने अपने जून के अंक में हिंदी भाषा के मुद्दे को उठाया है । हिंदी अधिकारी होने के नाते इस मुद्दे से गहरा संबंध है । कई बैठकों में गयी हूं । जहां प्रण किये जाते हैं अंगरेजी को हटाएंगे । समझ नहीं आता 'अंगरेजी को हटाएंगे' के स्थान पर हम यह क्यों नहीं कहते 'हिंदी को लाएंगे' । अंगरेजी को हटाने के लिए किये जाने वाले शोर को सुनकर ऐसा लगता है जैसे कोई व्यक्ति खेत को चरती गाय को देख 'गाय आ गयी, खेत चर गयी' की पुकार लगा रहा हो । लेकिन उसे भगाने के लिए कोई यत्न न कर रहा हो । जब तक गाय को डंडा नहीं दिखाएंगे । या खेत के चारों ओर कांटेदार बाड़ नहीं लगाएंगे, तब तक खेत की रक्षा कैसे होगी ? अतः हमें मात्र शोर मचाने की आदत को छोड़ कर्म करना होगा । अंगरेजी की स्तरीय पत्रिकाओं के मुकाबले उतने ही अथवा बेहतर स्तर की पत्रिकाएं लाओ तो देखो कैसे नहीं चलती पत्रिका । परंतु दुख तो यह है कि शायद हम उद्यम ही नहीं करना चाहते । गंभीर विचारों, स्तरीय विश्लेषण तथा सामग्री से युक्त हिंदी पत्रिका, कोई कारण ही नहीं कि न चले । इसके लिए जरूरत है हम हिंदीभाषी जुटकर काम करें । स्वतंत्रता मिलकर संघर्ष करने से ही मिली थी । वह कोई केवल एक व्यक्ति के परिश्रम का परिणाम न थी । परंतु अफसोस कि हिंदीभाषी लोगों में ऐसा कोई प्रयत्न नजर नहीं आता ।

अभी हाल ही में चंडीगढ़ की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लिया । कार्यवाही की औपचारिकताएं पूरी हुईं कि सब चल दिये । किसी हिंदी अधिकारी अथवा अनुवादक के बीच कोई बातचीत नहीं, विचारों के आदान-प्रदान की कोई कोशिश नहीं कि कौन किस तरह से राजभाषा को लागू कर रहा है अथवा क्या कठिनाइयां आ रही हैं । इस काम में जब ये हिंदी के कर्णधार आपस में बातचीत ही नहीं करना चाहते तो कोई एक तो लकड़ियों के गट्ठे को अपने पद रूपी छोटी-सी कुल्हाड़ी से नहीं तोड़ सकता ।

खैर 'कादम्बिनी' बहुत अच्छी लगी ।

—नीरू वेला,
१२०८, ३६-बी, चंडीगढ़

संवेदनहीनता

'कादम्बिनी' की अनन्य उपासिका हूं । यदि यह पत्रिका किसी कारणवश देर से प्राप्त होती है तो यों प्रतीत होता है, मानो बिछुड़ी सखी से युगों बाद मिली होऊं । 'काल चिंतन' हेतु आपको साधुवाद ! यह स्तंभ निश्चय ही थके, क्लांत मानस में नयी चेतना का संचार करता है और अनजाने में कितने ही अनुत्तरित प्रश्नों का उत्तर थमा जाता है ।

—रचना 'यामिनी',
फरीदाबाद

'कादम्बिनी' के सभी अंकों का कालचिंतन दिगभ्रमित समाज को नवीन दिशा बोध प्रदान करने का कालातीत प्रयास स्तुत्य होता है । मई, अंक के 'काल चिंतन' ने संवेदनाओं को झंकृत करके कुछ चिंतन करने को विवश किया ।

कृष्णा कुमारी,
कोटा

'काल चिंतन' पर हमें इन पाठकों की भी प्रशंसात्मक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं : आनंद भट्ट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूभाल खोड़ा (अल्मोड़ा), संजय ओनकत, दाउद नगर (बिहार), मधु सूधन 'आत्मीय', मुंगेर, रामशंकर त्रिपाठी मनकापुर (गोंडा), अरविंद पारीक, ग्रा.पो. बालेर (सवाईमाधोपुर), शिवसागर शाह, ग्राम चैतपुर (सीधी-म.प्र.), रमेशचंद्र शर्मा, नयी दिल्ली, राजकुमार तिवारी, पो. आतपुर (२४ परगना— प. बंगाल)

'जून' के अंक में 'आखिर कब तक' स्तंभ के अंतर्गत आपकी टिप्पणी 'बलात्कारी को ईनाम' विचारोत्तेजक लगी। जनता अपनी सुरक्षा हेतु पुलिस पर निर्भर रहती है पर यदि पुलिस ही अपराधों में लिप्त हो जाएगी तो जनता किसके संरक्षण में रहेगी।

—ललित शर्मा,
भोपाल

दूसरे दरजे का जीवन

भारतीय संस्कृति में नारी की महत्ता क्या मात्र भ्रम है ? औरत आज भी दूसरे दरजे का जीवन जीने को अभिशप्त है। हमारे लिए वही औरत आदर्श है, जो पुरुष के हर उचित-अनुचित आदेश का पालन करे। पुरुष उस पर हमेशा अपनी इच्छाएं थोपता है। वह यह मान चुका है कि औरत के साथ जबर्दस्ती करना उसका जन्मसिद्ध अधिकार है।

बलात्कार के विरोध में राजनीतिक आंदोलन जरूर होते हैं, पर स्वतः स्फूर्त जनाक्रोश देखने को कभी नहीं मिलता। क्यों ? इसलिए कि ऐसा माना जा चुका है कि यह औरत की नियति है। औरत की इच्छा के विरुद्ध किया गया हर सहवास बलात्कार होता है। क्या हमारे यहां पुरुष औरत की इच्छाओं को महत्व देते हैं ? यह पुलिस कौन है ? ये नेता कौन हैं ? क्या ये आकाश से टपके हैं ? जिस समाज की औसत मानसिकता औरत को भोग की वस्तु मानती हो, उसमें औरतों पर अत्याचार होना स्वाभाविक है।

वस्तुतः तमाम उच्चतर आदर्शों के बावजूद हकीकत में भारतीय जनता में मध्यम युगीन संकीर्णता और बर्बरता के कीटाणु अभी भी विद्यमान हैं।

—सुधीर सुमन,
आरा (बिहार)

'आखिर कब तक' स्तंभ पर हमें अनेक पाठकों के पत्र मिले हैं। कुछ पाठकों के नाम— प्रशांत कुमार, सुपौल (बिहार), अजय कुमार, मेरठ, प्रदीप गौतम सुमन, रीवा, स्वदेश सेठी, चंडीगढ़, श्याम तिवारी, कानपुर, प्रमिला शर्मा, इलाहाबाद,

हिंदी राष्ट्र का प्रतीक है

जून के अंक में प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव का उक्त शीर्षक से भाषण पढ़ा।

कितना दोहरा चरित्र जीते हैं हमारे राजनेता ? एक तरफ हिंदी को राष्ट्र का प्रतीक मानते हैं, दूसरी ओर स्वयं विदेशी राजनेताओं व राजनयिकों से अंग्रेजी में वार्तालाप करते हैं। हिंदी की दुर्दशा के संदर्भ में श्रद्धेया दुर्गा भाभी का कथन कितना सटीक है— *"राजनेता बड़ा धाय होता है, वह कहता कुछ है और करता कुछ है।"* दरअसल हिंदी को राष्ट्र का प्रतीक नहीं, सत्ता हथियाने का माध्यम बना दिया है, इन राजनेताओं ने।

—किरण वर्मा, बसना (रायपुर), म.प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून अंक—हिंदी अंक

'कादम्बिनी' का जून अंक मेरे लिए तो 'हिंदी अंक' है। प्रबल आग्रह के अनुमोदन के लिए अंतःकरण से धन्यवाद स्वीकारें। आपने एक कुशल अनुभवी संपादक और विचारक के नाते हिंदी को विभिन्न रूपों में पाठकों को पढ़ने, समझने के लिए प्रस्तुत किया। यथा 'आखिर हिंदी किस देश की भाषा है'—भारत हमें हिंदी भाषा पर मान है—लंदन। इसके साथ है दक्षिण हिंदी सभा के अमृतोत्सव के प्रधानमंत्रीजी का उद्घाटन-भाषण 'हिंदी राष्ट्र की प्रतीक है।'

चीनी भाषा के बाद हिंदी दुनिया की दूसरी भाषा है। यह राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की वाणी रही है। आज वह देश की एकता, अखंडता की सूत्र है। संस्कृत की मानस-पुत्री के नाते भारतीय संस्कृति और अस्मिता की भाषा है। आज भाषाओं का दारोमदार कंप्यूटर एवं दर्जनों आधुनिक यंत्रों पर है। यह भ्रम फैलाया जा रहा है कि हिंदी धीरे-धीरे राजभाषा बन रही है। वास्तविकता तो यह है कि हिंदी का न तो राष्ट्रभाषा, न राजभाषा और न संपर्क भाषा, किसी रूप में उसका स्थिरीकरण नहीं हुआ है।

—जगदम्बी प्रसाद यादव

पूर्व सांसद, १९, पाकेट-डी, मयूर विहार-२, दिल्ली

कामाख्या महोत्सव

जून अंक में प्रकाशित 'कामाख्या का महोत्सव—विपत्तियां दूर करता है लाल वस्त्र' आलेख में लेखिका का यह कथन कि अंबवासी पर्व मुख्यतया सात आषाढ़ और दस आषाढ़ के बीच होता है, जो निराधार है। ज्योतिष और तंत्रशास्त्र के अनुसार मृगशिरा नक्षत्र के तृतीय चरण बीत जाने पर चतुर्थ चरण में दंड. पल को देखते हुए एवं आद्रा नक्षत्र के प्रथम पाद में दंड. पल से समलंकृत-पृथ्वी धारिणी जगत पालनी माता कामाख्या रजस्वला होती हैं। इस वर्ष यह घड़ी ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी तदनुसार २२ जून, ९४ से प्रारंभ हुई।

लेखिका ने दर्शाया है कि वशिष्ठ मुनि ने देवी को गुप्त रहने का अभिशाप दिया। ब्रह्मापुत्र वशिष्ठ माता के अनन्य भक्त एवं एक अद्वितीय शक्ति साधक थे। उन्होंने माता को अभिशाप नहीं दिया। वे माता के दर्शन के लिए जा रहे थे तो मार्ग को नरकासुर ने अवरुद्ध कर दिया था। नाना प्रकार की बाधाएं दीं। उन्हें घमंड था कि मैं माता का सबसे बड़ा भक्त हूं। इस पर क्षुब्ध होकर वशिष्ठ महाराज ने माता से गुप्त रहने की प्रार्थना की और माता नरकासुर के संहार तक लुप्त रहीं।

—बटेश महाराज

पुनाईचक, पटना-२३

एक बार एक किताब पढ़ते हुए गांधीजी को उसमें 'ब्रिटिश बाइबल' लिखा मिला। उन्होंने पूछा, "ब्रिटिश बाइबल ! यह क्या चीज होगी ?"
सरदार पटेल ने कहा— "पौंड, शिलिंग, पेंस।"

— आलोक प्रभाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

कादम्बिनी

वर्ष ३४, अंक १०, अगस्त, १९९

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षे

निबंध एवं लेख

कुलदीप तलवार
पाकिस्तान में अत्याचार.....२२

राजेन्द्र अवस्थी
शिक्षा जगत का रेशमी कीड़ा २९

डॉ. सुधा पांडे
अमृत आस्वादन ३६

सुधीर शाह
ओ राष्ट्रवादियों कायरों से ४०

एडाल्फ हिटलर
गठजोड़ से सरकार नहीं चल सकती..... ४४

शंकरदयाल सिंह
एक यात्रा की अंतर्यात्रा..... ५१

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य—४, ज्ञान-गंगा—५, प्रतिक्रियाएं—६, काल-चिंतन—१२, आखिर कब तक—१७, गोष्ठी—८५, तनाव से मुक्ति—११०, बुद्धि विलास—११९, आस्था के आयाम—१६४, हंसिकाएं—१७०, इनके भी बयां—१७७, प्रवेश—१८२, नयी कृतियां—१८५, सांस्कृतिक समाचार—१८८, ज्योतिष : समस्या-समाधान—१९०, व्यंग्य-तरंग—१९२, यह महीना और भविष्य—१९४, समस्या-पूर्ति—१९८।

शैलेन्द्र सिंह
लेखिका जो पुरुष नामों से लिखती रही.....

नरविजयसिंह यादव
हवाई जहाज बनाने में पीछे नहीं भारत.....

विशेष संवाददाता
न हिंदू है कोई न है मुसलिम कोई यहां !

प्रियदर्शी नारायण
उड़ री चिनगारी : मैं ज्वाला हूं !.....

आलोक प्रभाकर
गड़े मुरदे उखाड़कर वह चित्रकार बना.....

डॉ. कामता कमलेश
फिजी न जाइयो कोय !.....

सत्येन्द्र श्रीवास्तव
ब्रिटेन के भारतीय लोगों की .....

नवीन पंत
सदियों से दोहराती रही पीढ़ियां.....

शोभा वराडपांडे
ग्रीक कृष्ण भक्त थे .....

अभिराज/डॉ. राजेन्द्र मिश्र
आस्था और श्रद्धा का शक्तिपीठ : .....

मंजु ज्योत्सना
निष्ठा की प्रतिमूर्ति.....

सुभद्रा मालवी
धीरे से आ जा री अंखियन .....

सरिता नाथ
सदियों पुरानी कुप्रथा का अंत.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कविताएं

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
रात और कवि..... ३५
दिविक रमेश
हाथ पकड़ो..... ३५

व्यंग्य एवं कहानियां

सुधा
सकलांग..... ५७
रिफअत शाहीन
बहुत दयालु है..... ७२
गोबिंद झा
पत्ते का मनुष्य..... १०२
बी. आर. पदम
इश्क का मारा सैय्यद बुल्लेशाह..... १०६
अवतार कृष्ण राजदान
आतंकबीज..... १२४
अलका पाठक
गार्ड रक्षित दफ़्तर..... १४१
डॉ. दयानंदन
मोहक गुलाब की मनोरम सृष्टि..... १५२

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल,
मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल,
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज,
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह,
प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार,
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी,
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त।

संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि.,
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१।

फोन : ३३१८२०१/२८६
टेलेक्स : ३१-६६३२७,
फैक्स : ०११-३३२११८९

चंदे की दरें

मूल्य : ९५ रुपये; द्विवार्षिक : १९५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, भूटान और नेपाल; विमान से ३४० रुपये, समुद्री जहाज़ से १४० रुपये। अन्य सभी देशों के लिए : विमान से ५१० रुपये; समुद्री जहाज से १९० रुपये।

शुल्क भेजने का पता :
प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि.,
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

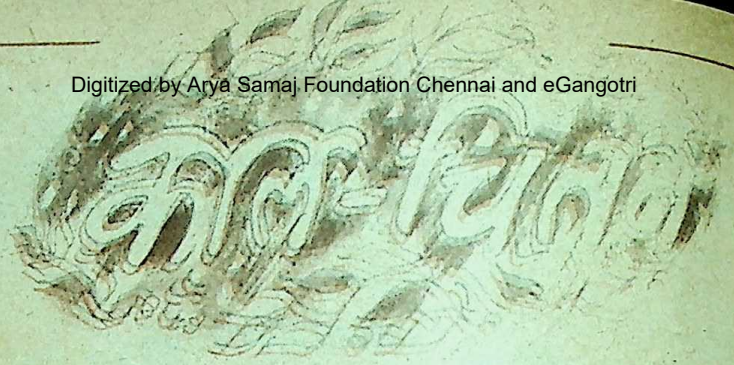

दीवारें किसलिए होती हैं ?—एक प्रश्न ।

□

—तब एक दूसरा प्रश्न उठेगा, दीवारें किसके लिए होती हैं ?

—दीवारें किसलिए होती हैं, दीवारें किसके लिए होती हैं : समान रूप से इन्हें सहभागी और प्रतिहारी बनकर सोचना होगा ।

—हां, यदि मैं कह दूं, दीवारें होती ही नहीं तो ?

—सहज प्रश्न होगा ये घर, ये राज प्रासाद, महल, किले, पूजाघर, रोधक-अवरोधक, क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं, ये सब क्या हैं ?

—कह सकता हूं मैं महज कल्पना के कलाद्वार हैं । इन्हें तोड़ने और मिटाने में कितना समय लगता है । भेद और प्रवेश एक दुस्साहसिक प्रक्रिया है । उसके सामने समय, शक्ति और प्रतिहारी कुछ भी नहीं ठहर सकते । तो आप मान लेंगे, मैं कह दूं दीवारें नहीं होतीं । जिन्हें दीवार समझा जाता है, वे मनुष्यता के भीतर विकसित सेमल के फूल हैं, जो चटककर भीतर बिखर गये हैं ।

—जब तक वे फूल थे मोहक थे, फल बने तो आकांक्षाओं को जन्म मिला, लेकिन चटाक करते हुए फल टूटे तो बिखर गया—कोई यहां, कोई वहां !

—हमारी समग्र, समतल, एकात्म संस्कृति भी तो सेमल का ही फूल है ।

—हमारे जीवन का उदय, विकास और अस्त सेमल का फूल नहीं है ?

□

—अपनी बात मैं और गहराई से करूंगा :

- मेरी आंखों के सामने खुला वातायन है, जलधि का अबाध विस्तार है और हमारी चेतना का धर्म केंद्र धरती है ।
- वातायन में अनंत ग्रह, उपग्रह, तारे और हाथ पसारे नील-वितान है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

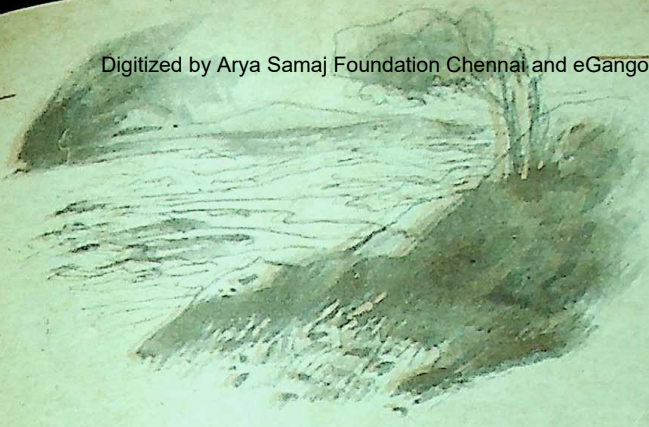

जितना अंधेरा होगा, वातायन उतना सौंदर्यमय होगा । उसमें हीरे-मोती और नगीनों की लड़ियां होंगी । विस्तार चादर-सा । चादर जो शुभ कलपों का वंदनवार है तो वही चादर हमारे संकल्पों की समाप्ति है ।

- महासागर मेरे लिए हमेशा आकर्षण के केंद्र रहे हैं । आंखें कितना भी दंभ भरें उसकी अनंत सत्ता को नहीं देख सकतीं । सागर और महासागर में सम्मोहक शक्ति है । निरंतर अथाह जल को देखिए तो वह आमंत्रण देता है । सम्हाल न पायें तो छलांग भर सकते हैं, उसके प्रेमिल सम्मोहन को अस्वीकारना असंभव है ?
- महासागर मात्र जलागार नहीं है । महासागरों के भीतर एक वैभवमय स्वप्निल संसार है : उसमें पर्वत हैं, नदियां हैं, खाई हैं, गड्ढे हैं, कोरल हैं, पेड़-पौधे हैं, पशु-पक्षी हैं, विशालकाय जानवर हैं, उनके घर और घरौंदे हैं । वहां सुबह है, शाम है और रात्रि का अंधकार भी है ।
- महासागरों के भीतर अपने तरह की महिमा मंडित गरिमा है जो महानगर, नगर और ग्रामों से कम नहीं है ।
- महासागर के भीतर जलती हुई अग्नि और ज्वालामुखी हैं तो शीतल झरने हैं, प्रलय की शक्ति है तो वह रत्न-गर्भा भी है : तेल है, लोहा है, हीरे, मोती हैं, क्या कुछ नहीं जो हमारी दुनिया को सहज नहीं दिख सकता ।

—चेतना का धर्मकेतु धरती यानी 'वसुंधरा' है ।

—जागृत जीवन संभवतः मात्र धरती पर भी है; जागृत इसलिए कि व्यक्त और अव्यक्त दोनों धरती पर ही हैं । अव्यक्त उत्तरगामी और दक्षिणगामी है ।

—धरती की एक भाषा है, धरती की एक परिभाषा है । धरती पर उपजा मनुष्य 'धरती-पुत्र' से समादृत होता है ।

—धरती के विविध परिधान हैं । उनमें आवृत्त स्पंदनशील सुकुमार नारी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

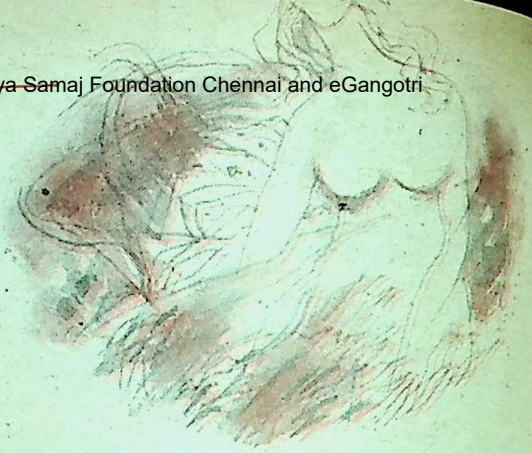

वह छुई-अनछुई देह है जो छुई-मुई है, जो जीवनरेखा है, जिसके बिना सौंदर्य चेतना के सभी द्वार कंस के कारागार लगते हैं ।

—धरती की प्रकृति समस्त मनुष्य जाति का इतिहास है ।

- सभ्यताओं के नूतन-पुरातन इतिहास और नाश-विनाश के भीषण संहार के ग्रंथागार मात्र धरती की समृद्धि हैं ।
- वह धरती ही तो है जहां तितलियां वनों में नहीं मनुष्य के जंगलों में भी हैं।
- वह धरती ही तो है जहां व्याघ्र मात्र वनों में नहीं चरते ।
- वह धरती ही तो है जहां नश्वरता और अमरता के बोल सदियों की संपत्ति बनते हैं ।
- विश्व का ज्ञानकोष धरती है
- विश्व का सौंदर्यलोक धरती है
- विश्व का इतिहास धरती है
- विश्व का जमांक धरती है
- विश्व का नाश और विनाश धरती है
- विश्व की चेतना का भागीरथ धरती है

—धरती, यानी अमृतघट : धरती से बहती नदियां निर्मल और स्वादिष्ट जल का भंडार हैं । महासागर में पहुंचते ही उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। वे स्वाद तक बदल देती हैं ।

—धरती में रहकर कोई जलविहीन नहीं हो सकता और न जलराशि से मृत्यु पा सकता ।

—धरती की जलराशि अमृत है, धरती के पर्वत 'माननी कन्या' के अव्यक्त वक्तव्य हैं और धरती के झरने सघन बालों के निर्भय चुनौती देते धुआंधार हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

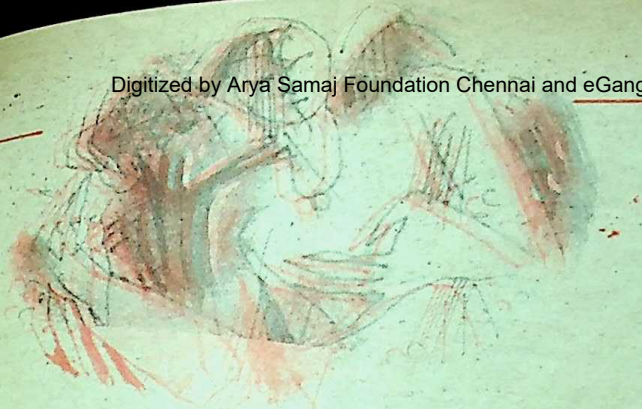

—संपूर्णता में देखें तो कह सकते हैं : समस्त ब्रह्मांड की धुरी, मात्र धरती है ।

□

—धरतीपुत्र ने महासागर का मंथन किया है ।

—धरतीपुत्र ने अंतरिक्ष के वातायन को भेदा है और अब वहां बस्तियां बना रहा है, जहां एक नयी धरती की नींव रखी जाएगी ।

□

—लीजिए, आप कहेंगे कहां भटक गये हम ? पूछा था दीवारें किसलिए होती हैं । दीवारें किसके लिए होती हैं ?

—नहीं, हम भटके नहीं हैं । जो कहते हैं, 'दीवारों के भी कान होते हैं,' वास्तव में वे भ्रमित और शापित हैं, आत्म सत्याभाष से परे हैं, क्योंकि कान उनके होते हैं, दीवारें तो अवरोधक हैं ।

□

—धरती का वितान अंतरिक्ष है, वातायन है ।

—धरती का कुबेर धरती का पद-प्रच्छालन करता हुआ विस्तारित महासागर है ।

□

—सत्य तो यह है कि न महासागर सीमाहीन है और न अंतरिक्ष ही । हमारी सहभागी होती हुई जो हमारे साथ भागती चले वह सीमाहीन कैसे हो सकती है ? वह हमारी अंकिनी है, हमारी प्रतिच्छाया है ।

—तो दीवार है कहां ?

—स्वीकारिए कि अंतरिक्ष की दीवार धरती है ।

—महासागर की दीवार धरती है ।

—धरती की कोई दीवार नहीं है । कोई दीवार है भी तो वह है : मर्यादा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

□

—इससे और गहरे तथ्य में डूबिए तो पता चलेगा, हम सबके भीतर एक सत्य है और वही सत्य एक दीवार है ।

—सत्य से निर्मित यही दीवार हमारी शक्ति है, हमारी साधना है और हमारा सृजनशील व्यक्ति है ।

—यही दीवार हमारा संकल्प बनती है । संकल्प टूटता है तो विनाश को जन्म मिलता है ।

—मनुष्य धर्म सत्य का चरमोत्कर्ष है ।

—आनंद की इस असीम सीमा में पहुंचने के बाद दीवारें रहती भी हैं और दीवारें रह भी नहीं सकतीं । वे अर्थहीन हैं ।

—एक मिथ्याभ्रम में सर्जन के सघन मेघों ने हमें बाधित कर दिया है, लेकिन...

—लेकिन जो भी हो, मनुष्य धर्म ने ही प्रश्न किये हैं और उसी ने उत्तर दिये हैं। स्वयं प्रश्न करना और स्वयं उत्तर देने की प्रक्रिया अंततः देवत्व का मार्ग है।

—देवता भी तो मनुष्य ही है न ! मनुष्य के ऊपर कौन, कब, कहां देव बना है ।

—इसलिए दीवारें उनके लिए हैं जिन्हें बौद्धिक सभागारों की जरूरत नहीं है या फिर उनके लिए हैं जो जीवनभर एक झूठ में जीने के आदी हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत धुली है बदली है बंबई

बंबई का जर्रा-जर्रा मेरा पहचाना हुआ है । आखिर कभी पांच साल मैंने वहां बिताये हैं और टाइम्स ऑव इंडिया में संपादकीय से लेकर रणजीत स्टूडियो में फिल्म बनाने की लंबी कहानी है । बंबई से जब मैं दिल्ली आया था तो अकसर अपने दोस्तों से कहा करता था कि दिल्ली एक बड़ा देहात है—कहां बंबई की भाग-दौड़ और कहां दिल्ली की ठहरी हुई जिंदगी । लेकिन धीरे-धीरे दिल्ली के साथ में रच-बस गया । फिर बंबई बेकार लगने लगा ।

हाल ही तीन-चार वर्षों के बाद मुझे फिर बंबई जाने का मौका मिला । बंबई हवाई अड्डे पर उतरते ही घनघोर वर्षा के बीच बंबई की वे सारी सड़कें और गलियां मैंने देखीं जो मेरे रग-रग में बस गयी थीं । इस बार बंबई मुझे ज्यादा साफ-सुथरा शहर लगा । सारी इमारतें चाहे वर्षा से या और किसी कारण से साफ और धुली हुई थीं । शहर की सड़कें अब सीमेंट की बन गयी हैं । इसलिए सड़कों पर गंदगी कम थी, यद्यपि झोपड़-पट्टियों की संख्या पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गयी है । शहर में बस की हड़ताल चल रही थी और वैसे भी वहां के कार चालक दिल्ली से ज्यादा 'सभ्य' हैं । इसलिए बहुत भीड़-भाड़ देखने को नहीं मिली । हां, इनके बावजूद बंबई बहुत बदल गया है । सारी सड़कों के नाम बदल गये हैं, चौराहों के नाम बदल गये हैं, कुछ स्टेशनों के नाम बदल गये हैं और कुछ इमारतों के नाम भी बदल गये हैं । इसलिए मेरे उपन्यास 'बीमार शहर' और 'सीपियां' की कहानी बंबई के पाठकों के लिए नयी अवश्य लगेगी ।

न मिला गणपत, न शोभना

बरसते पानी में मैंने बंबई की वे जगहें देखने की कोशिश की, जहां मैंने शामें भी बितायी हैं और रातें भी गुजारी हैं । मसलन जुहू का बूची टेरेस और मैरीन ड्राइव का सेटू विल्सटन । न मुझे गणपत मिला और न शोभना मिली । दादर का शिवाजी पार्क भी बेहद बदल गया है इसलिए वहां के पात्र भी नहीं मिले, जिनके साथ मैं खंडाला और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोनावाला जाता था । फिर भी उषा किरण पैलेस की सोलहवीं मंजिल से वरली फेस के किनारे पर दहाड़ते और नरम होते समंदर को मैंने लगातार घंटों खूब देखा । समंदर मेरी कमजोरी रहा है इसलिए इस बार भी बंबई पहुंचते ही मेरे मुंह से निकला 'सलाम बांबे', यद्यपि इस बंबई में अब न मेरे दोस्त राजेंद्र सिंह बेदी हैं, न मोहन राकेश, न इस्मत चुगताई, न शैलेंद्र और ऐसे ही बहुत से लेखक और फिल्मी अदाकार । अब भी बंबई और दिल्ली बाबुओं का शहर है ।

सारंग में सौ वर्ष के मोरारजी

मोरारजी देसाई से मैं इस बार फिर बंबई में मिला । अब वे पुराने मैरीन ड्राइव स्थित अपने घर में नहीं रहते बल्कि 'मंत्रिपरिषद' कार्यालय के आगे सारंग नाम की इमारत के छठे मंजिले में ६ नंबर के घर में रहते हैं । मोरारजी भाई से दिल्ली में मेरा बहुत गहरा और आत्मीय संबंध रहा है । इसलिए जब भी बंबई जाता हूं, उनसे अवश्य मिलता हूं । पहले तो उनके सचिव श्री चंद्रकांत तावड़े ने टेलीफोन पर टालमटोल करने की कोशिश की लेकिन जब मैंने जोर देकर कहा कि आप मोरारजी भाई से पूछ लीजिए और फिर मुझे अभी उत्तर दीजिए । मुझे तत्काल बुला लिया गया । मोरारजी भाई एक विशेष तरह की फैलावदार कुरसी पर लेटे हुए थे । १०० वर्ष की आयु के पास पहुंचनेवाले मोरारजी भाई बेबस लेटे हुए थे । श्रवण शक्ति भी क्षीण थी लेकिन मानसिक रूप से वे पूरी तरह चेतन थे ।

उन्होंने कई बातें पूछीं । मैंने भी कुछ बातें उनसे कीं लेकिन मुझे लगा कि मोरारजी भाई को इससे थकान ही होगी । मैंने औपचारिक भेंट के रूप में ही उनका कम से कम समय लिया । मेरे साथ कर्मचारी चयन आयोग के अध्यक्ष श्री वाजपे भी गये थे । उन्हें जरूर मिलकर आश्चर्यजनक प्रसन्नता हुई । चलते समय मैंने मोरारजी भाई के चरण स्पर्श किये । वह मेरा उस पूरी शताब्दी के लिए नमन था जिसमें गांधीजी और मोरारजी देसाई ने कहा था कि 'हम १०० वर्ष जिएंगे ।' गांधीजी की तो मर्मांतक हत्या हो गयी, मोरारजी भाई को यद्यपि इस बेबसी में देखकर मुझे बहुत अच्छा नहीं लगा लेकिन वे कई वर्षों तक जीवित रहें, यह मैं चाहता हूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर जर्जर है : बाकी सभी वही

मोरारजी भाई के सचिव श्री तावड़े ने बताया कि वे ४ बजे से ५ बजे तक प्रतिदिन अपने ड्राइंग रूम में जाते हैं और हर आदमी से मिलते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि मोरारजी भाई छड़ी पकड़कर नहीं चलते। वे कहते हैं, "मुझे जितना अपने आप पर भरोसा है, छड़ी पर नहीं।" जो भी मोरारजी भाई से पहले प्रधानमंत्री से लेकर अन्य पदों तक मिल चुके हैं, उन्हें उनके इस आत्मविश्वास पर अवश्य संतोष मिलेगा। उनका भोजन पूर्ववत् है यानी सूखे मेवे और दूध। मैं इस प्रसंग को एक शेर से समाप्त करूंगा—

मत पूछ कि क्या हाल है मेरा तेरे पीछे, तू देख कि क्या रंग है तेरा मेरे आगे।

नृत्य-संगीत प्रेमी घोड़ा

पृथ्वीराज रासो की रचना सन १४०० के आसपास हुई थी। किसी जैन आचार्य ने पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी को लेकर एक मजेदार खोज की। यहां मैं एक विशेष प्रसंग का उल्लेख करना चाहूंगा, पृथ्वीराज के घोड़े का नाम था नटारम्भा अश्व। घोड़े को संगीत से प्रेम था और वह बहुत सलीके के साथ नाचता था। कहा जा सकता है कि वह एक अच्छा नर्तक था। मोहम्मद गौरी को पृथ्वीराज चौहान से लोहा लेना बहुत कठिन पड़ रहा था। चौहान के एक विश्वस्त साथी को यह बात मालूम थी। उसी ने आखिर उसे धोखा भी दिया। युद्ध के दौरान जिस दिन यह घटना हुई, युद्ध की एक संगीत ध्वनि बज रही थी। अचानक चौहान के एक साथी ने ध्वनि एकदम बदल दी और दूसरी ध्वनि शुरू करवा दी 'लो चलो' बस फिर क्या था, नटारम्भा अश्व ने वहीं युद्ध के मैदान में नृत्य करना शुरू कर दिया। पृथ्वीराज बेबस हो गया, उसे पकड़ लिया गया और योगनिपुर (दिल्ली) ले जाया गया। पिथौरा ने हिम्मत तब भी नहीं हारी लेकिन उसी के विश्वस्त साथी के इशारों पर गौरी ने पिथौरा को एक गड्ढे में फिकवा दिया। गड्ढे में बहुत बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं। पिथौरा यानी पृथ्वीराज का इस तरह अंत हो गया। हमेशा अपने अंतरंग के दगाबाज हो जाने से ही ऐसा होता है। जिस पृथ्वीराज को अपने नर्तक घोड़े पर नाज था, उसी की वजह से उसे अपनी जिंदगी से हाथ धोना पड़ा।

बंदर ने चश्मा छीना

बंदरों का कमाल सबने देखा है। कोई भी तीर्थ स्थान बंदरों से नहीं बचा है। मुझे एक मजेदार घटना पढ़ने को मिली। घटना है हरिदास स्वामी की समाधि वृंदावन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधि-वन की । एक वहां श्रद्धालु आ रहा था तो बंदर ने एकाएक आकर चुपचाप उसका चश्मा उतार लिया और वहीं नीचे बैठकर स्वयं चश्मा लगाकर देखता रहा। तमाशबीन इकट्ठे हो गये । किसी ने कहा, 'इसे खाने के लिए चने दो तभी ये चश्मा वापस करेगा ।' हुआ भी यही, जब उस यात्री ने चने लाकर दिये, बंदर ने चुपचाप चश्मा नीचे रख दिया और चला गया । वैसे मैंने कालिदास के 'मेघदूत' की रचना भूमि रामटेक में बंदरों को देखा है जो हर यात्री के थैले को खोलकर उसकी तलाशी लेते हैं। उसमें खाने को भी कुछ मिलता है, उसे निकालकर थैली छोड़ देते हैं । लेकिन चश्मा और बंदर की कहानी मुझे पहली बार पढ़ने को मिली ।

महिलाएं : जेल या कोड़े

महिलाएं बराबरी की मांग हमारे देश में बराबर करती रही हैं । अमरीका-जैसे विकसित देश में तो महिलाओं की हालत और भी खराब है । अमरीकी जेलों में ज्यादतियां और यौन शोषण तो आम बात है । कुछ समय पहले इक्कीस वर्ष की रीतू ने अदालत के सामने वहां के जेलर के कारनामे का जो बखान किया वह तो लिखने योग्य नहीं है, इतना ही उद्धृत करना काफी है कि हार्वर्ड ला स्कूल के प्रोफेसर एलेन डेर्शोविट्ज ने वाशिंगटन टाइम्स में लिखा है कि यदि अमरीकी महिलाओं को बतौर सिंगापुर के चार कोड़े लगवाने और अमरीकी जेल में रहने के बीच चुनाव करने का अवसर दिया जाए तो वे सिंगापुरी कोड़े खाना पसंद करेंगी ।

कन्याओं की बलि जन्म होते ही

सभ्य समाज के नारे के बीच नारी आज भी शोषण की शिकार है । तमिलनाडु के उसिलयाम् पट्टी और उसके आसपास के गांवों में नवजात कन्या की हत्या करने के लिए उसे मुरगे का गरम शोरबा या जहरीले पौधे का रस पिलाया जाता है । जब इससे भी वह नहीं मरती तो उसे भूख से मार डालते हैं ।

बताया गया है कि भारतीय कल्याण परिषद की सारी कोशिशें यहां नाकाम हो गयीं और इस छोटे-से इलाके में १९९३-९४ के बीच ४१० नवजात कन्याओं की हत्या की गयी । कई बार तो मां भी अपनी बेटी की हत्या कर देती है और यह सिलसिला बहुत ही शिक्षित परिवारों तक में चल रहा है । कहा जाता है कि इसका कारण दहेज है ।

कितनी चीनी आये विदेश से रे

हमारे देश में दूसरी तरह के काम होते हैं । यहां मैं बात करना चाहूंगा चीनी घोटाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की । लोकलेखा समिति के वर्तमान अध्यक्ष विपक्षीय दल के सांसद श्री भगवान शंकर रावत हैं । इसके पहले अटल बिहारी वाजपेयी और श्री नरसिंहरावजी भी अध्यक्ष रह चुके हैं । वास्तव में लोकलेखा समिति 'मिनी पार्लियामेंट' है । इस वर्ष पहले से ही उम्मीद थी कि चीनी का उत्पादन कम होगा । भारत चीनी का सबसे बड़ा उपभोक्ता है और विश्वभर के बाजार की मिलें भारत में चीनी भेजने के लिए कोशिश में लगी रहती हैं । हमारे खाद्य मंत्रालय ने तब भी चीनी का आयात नहीं किया । हुआ यह कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में चीनी की कीमत बढ़ गयी और तब हमारे देश में जोर की सरसराहट हुई ।

उस समय अगवाई की वर्तमान अध्यक्ष भगवान शंकर रावत ने । उन्होंने २७ जून को खाद्य सचिव श्री सेन को बुलाया । सेन को बुलाया तो भय से कांप उठे जफर सैफुल्ला कि अगर सेन कोई बयान देते हैं तो इस मुद्दे में वे भी फंसेंगे तब जफर साहब ने एक कांग्रेसी सांसद को फुसलाया और उन्हें बरगलाया कि चीनी के मसले को समिति के सामने न उठाया जाए । खाद्य सचिव बाहर ही बैठे रहे और चीनी का मसला नहीं उठाया गया । लेकिन सांसद भगवान शंकर रावत ने मामला यहीं नहीं छोड़ा और आखिर रातों रात चीनी आयात की गयी और उसके भाव भी थोड़े से नीचे गिरे । इस घटना से साफ है कि यहां का आई. ए. एस. अफसर जो चाहे सो कर सकता है सांसद एक ही कहीं निकल पाता है जो निर्भय होकर किसी मुद्दे के पीछे लगे ।

येल्तसिन का जूता

हाल ही हमारे प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव रूस गये थे । उस समय राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन ने हमारे प्रधानमंत्री को रात्रि भोज का सरकारी आमंत्रण दिया । उस समय येल्तसिन ने अपना सबसे लोकप्रिय गीत बजवाया—'मेरा जूता है जापानी ।' येल्तसिन ने खड़े होकर तालियां भी बजायीं और इस गीत को दोबारा भी बजवाया । मैं नहीं जानता कि हमारे प्रधानमंत्री ने भी इसका कुछ अर्थ समझा भी है या नहीं । येल्तसिन ने भी जानबूझकर साफ-साफ भारत को जवाब दिया है कि थोड़े दिन बाद हमारे पैर तो जापान में होंगे । मेरा ख्याल है नरसिंह राव को भी बेलाग खड़े होकर उत्तर देना था—"फिर भी दिल है हिंदुस्तानी ।" अब भविष्य बताएगा कि जर्जर और टूटे हुए रूस का जूता जापान तक पहुंचता है या मस्कवा नदी में डूबता है ।

—राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान में मुहाजिरों पर

पाकिस्तान के निर्माण में जिनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही, जिन्होंने अपनी जन्मभूमि को छोड़कर एक नया देश बनाने और उसमें अपनी महत्त्वाकांक्षाओं के अनुसार जीवन बिताने का सपना देखा, वे ही आज पाकिस्तान में पंजाब और सिंध में नफरत की निगाह से देखे जाते हैं। यही नहीं, उनकी देशभक्ति पर भी संदेह किया जाता है। ये 'मुहाजिर' कहलाते हैं। वे उर्दूभाषी हैं और उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और भारत के दूसरे प्रदेशों से पाकिस्तान गये हैं। एक ओर वे सिंधी और पंजाबियों की नफरत के पात्र बने हुए हैं तो दूसरी ओर पाकिस्तान की प्रादेशिक और केंद्रीय सरकार भी उन पर कम जुल्म नहीं ढा रही है। यहां मुहाजिरों की मुसीबतों का लेखा-जोखा प्रस्तुत है।

पाकिस्तान में आज अंदर ही अंदर एक ऐसा लावा पक रहा है, जो किसी भी समय ज्वालामुखी बनकर फूट सकता है।

शासक पार्टी और विपक्ष में जबरदस्त टकराव चल रहा है। इस तरह की समस्याएं सिर उठा रही हैं। इनमें क्षेत्रीय झगड़े, शिया-सुन्नी फसाद, अल्पसंख्यकों और महिलाओं पर अत्याचार तथा मुहाजिर, गैर-मुहाजिर झगड़े इत्यादि प्रमुख हैं। यह विदित ही है कि पाकिस्तान की स्थापना धर्म के आधार पर की गयी थी और इस विचार के आधार पर कहा गया था कि हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग कौमें हैं, लेकिन पिछले ४७ वर्षों ने यह सिद्ध कर दिया है कि ये नजरिया, अवास्तविक था, क्योंकि धर्म को जोड़ने के लिए नहीं, तोड़ने के लिए प्रयोग किया गया।

सन १९४७ में देश के विभाजन के समय भारत से पाकिस्तान जानेवाले मुसलमान आज तक पाकिस्तानी नहीं बन सके और उनकी अपनी कोई पहचान नहीं बन पायी। बल्कि आज भी उन्हें 'मुहाजिर' कहा जाता है। ये लोग उर्दू भाषी हैं। पाकिस्तान की सत्ता के गलियारों से लेकर अफसरशाही तक हर जगह पंजाबी, सिंधी बोली जाती है और इन प्रांतों में वढेरों और बड़े-बड़े जमींदारों का ही राज है। ये लोग नहीं चाहते कि मुहाजिर लोग पाकिस्तान में कारोबार, सरकारी नौकरियों आदि में अपना दबदबा कायम करें। जब पाकिस्तान बना तो शुरू-शुरू में मुहाजिरों ने अपनी मेहनत और काबलियत से वहां के कारोबार और नौकरियों पर कब्जा कर लिया था। यही कारण है कि इन मुहाजिरों पर एक सोची-समझी योजना के तहत लगातार ज्यादतियां और अत्याचार किये जा रहे हैं।

इसकी शुरुआत जुल्फिकार अली भुट्टो के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

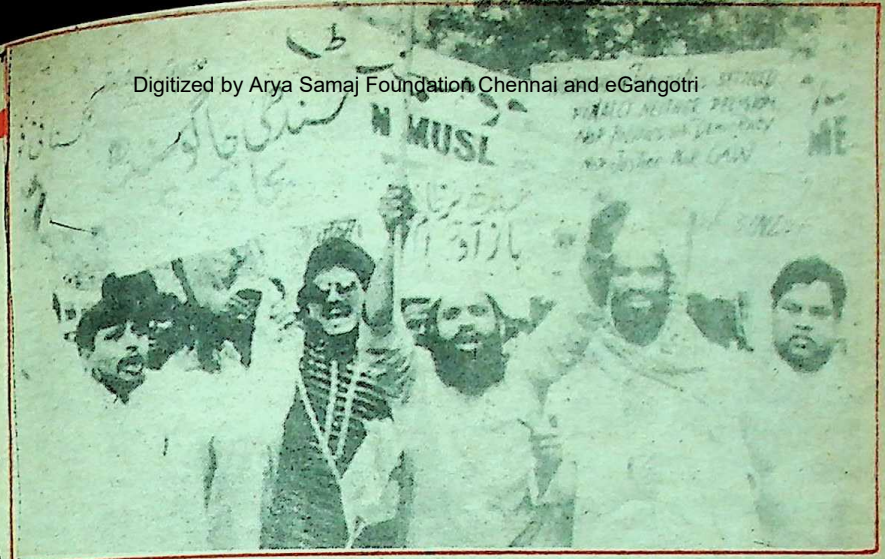

मुहाजिरों पर हो रहे अत्याचारों के विरोध में फतह-ए-मिल्लत के सदस्य नयी दिल्ली में प्रदर्शन करते हुए

जमाने से हुई । जब उन्होंने मुहाजिरों को नुकसान पहुंचाने के लिए नौकरियों में देहाती और शहरी कोटे का शोशा छोड़ा, लेकिन उनकी नफरत की आग ठंडी नहीं हुई क्योंकि मुहाजिर तो देहात में भी आबाद थे । इसलिए उन्होंने तमाम रहनेवालों के विरुद्ध नफरत का बीज

अनगिनत लोगों को अपनी कीमती जानों से हाथ धोना पड़ा । सच तो यह है कि पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने नफरतों के सतूनों पर अपनी सत्ता की इमारत खड़ी की और फिर मुहाजिरों को भारत की खुफिया एजेंसी 'रा' का एजेंट कहा जाने लगा । उल्लेखनीय है कि जहां भी

अत्याचार की दर्दनाक दास्तां

बोया और देहात में रहनेवाले पंजाबियों, पठानों, बिलोचों और मुहाजिरों पर सख्ती शुरू कर दी ताकि देहाती कोटे से सिंधियों के अलावा कोई दूसरा फायदा ना उठा सके । इससे पहले सिंधी और गैर-सिंधी मिलजुलकर रहते थे । वे आपस में शादियां कर रहे थे । सिंधी उर्दू बोलने में अपमान महसूस नहीं करते थे । मुहाजिर सिंधी सीख रहे थे और उनके बच्चे अच्छी तरह सिंधी बोलते थे । फिर भाषा के नाम पर मुहाजिरों और सिंधियों को लड़ाया गया और

● कुलदीप तलवार

पी.पी.पी. जुल्म ढाती है, वहां उसे 'रा' के एजेंट ही नजर आते हैं । इसका नतीजा ये निकला है कि कराची, हैदराबाद और सिंध के दूसरे शहरों में अकसर फसाद होते रहते हैं । फौज और पुलिस के हाथों मुहाजिरों पर अत्याचार हो रहा है । मुहाजिरों पर अत्याचारों में उस समय और तेजी आयी जब बेनजीर भुट्टो पहली बार सत्ता में आयीं । कमरान जिया-उल-हक चूंकि खुद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

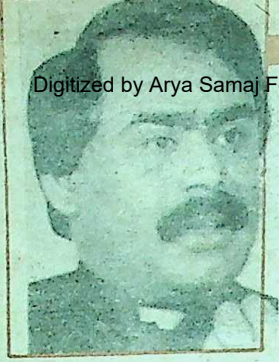

मुहाजिरों के मुखिया अलताफ हुसैन

मुहाजिर थे,इसलिए उनके दौर में मुहाजिरों को यद्यपि खास रियायतें नहीं मिलीं, लेकिन उन पर अत्याचार का सिलसिला काफी हद तक बंद रहा । फिर इन अत्याचारों का सिलसिला नवाज शरीफ की सरकार में शुरू हुआ । नवाज शरीफ के जमाने में ही चोरी, डाके और कत्ल की घटनाओं को रोकने के नाम पर मई १९९२ में पाक सरकार ने सिंध में फौज लगा दी । इसे 'क्लीन-अप ऑपरेशन' का नाम दिया गया, साथ ही मुहाजिरों पर शस्त्र रखने पर भी रोक लगा दी गयी जबकि दूसरे शहरियों पर ऐसी कोई रोक नहीं लगायी गयी । सिंध राष्ट्रवादी और मुहाजिर कौमी मूवमेंट के सदस्य बराबर मांग कर रहे हैं कि इस फौज को सिंध से वापस बैरकों में बुलवा लिया जाए । उनका कहना है कि ये फौज डाकुओं को पकड़ने के लिए नहीं बल्कि उन पर जुल्म ढाने के लिए सरकार ने लगायी है । दूसरी तरफ पाकिस्तान की सरकार फौज को वापस नहीं बुलवा रही और हर ६ महीने के बाद फौज के कार्यकाल को बढ़ा दिया जाता है । अक्तूबर, १९९३ के चुनाव में पी.पी.पी. ने वायदा किया था कि सत्ता में आने के बाद ये फौजी कार्यवाही बंद कर देगी, लेकिन उसने अपना वायदा पूरा नहीं किया । पिछले दिनों कराची में एम.क्यू.एम. के कार्यकर्ताओं पर फौज ने कहर ढाया है । अब ५००० मुहाजिर जेल में बंद हैं और अभी भी गिरफ़्तारियां जारी हैं ।

पुरुषों के सामने नंगा कर अत्याचार

सिंध में मुहाजिरों की शहरी आबादी ऐसे किनारे पर पहुंच गयी है, जहां से उनकी वापसी असंभव बनती जा रही है । दरअसल पी.पी.पी. के वोट केवल देहात में हैं और सिंध के शहरी वोट एम.क्यू.एम. की झोली में हैं । मुहाजिर लोग ज्यादातर कराची, हैदराबाद और सक्खर शहर में आबाद हैं । पी.पी.पी. सिंध के हवाले से राजनीति करती है और वह भूल जाती है कि कराची न होगी तो सिंध नहीं रहेगा । और जब सिंध नहीं रहेगा तो पाकिस्तान नहीं रहेगा । ऐसे हालात में एम.क्यू.एम. को नजरंदाज नहीं किया जा सकता । क्या विडंबना है कि जब एम.क्यू.एम., पी.पी.पी. का साथ दे रही थी तो मुसलिम लीगवाले इसे गद्दार कहते थे । अब एम.क्यू.एम. दूसरे कैंप में हैं तो इसको पी.पी.पी. गद्दार कह रही है । सिंध में खून बह रहा है, अत्याचार की ऐसी-ऐसी घटनाएं हो रही हैं, जिनको पढ़कर या सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं । पिछले दिनों कराची में हल्दिया टाउन में फसाद के बाद मुहाजरीन की गिरफ़्तारी का नया सिलसिला शुरू हुआ । फौज और पुलिस ने सैकड़ों गिरफ़्तारियां कीं । मुहाजिरों की जमायत से ही संबंध रखनेवाले के मकान में, शस्त्रों की तलाश में, दाखिल होकर, फौज ने एक युवा मुहाजिर लड़की नहीद बट्ट के गुप्तांग पर राईफल के बट से चोटें मारीं जिसके सबब ये लड़की मर गयी । मरने से पहले पुरुषों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कश्मीर के लोगों के लिए पाकिस्तान झूठे आंसू बहा रहा है, क्योंकि वह स्वयं सिंध में अपने लोगों के मानव अधिकारों का जोरदार उल्लंघन कर रहा है"

सामने नंगा करके उसकी परेड करायी गयी और उसका जांघिया अफसरों ने एक-दूसरे पर उछालकर 'जश्ने फतेह' मनाया । अफसरों और सिपाहियों ने पाकिस्तान की इस बेटी से शर्मनाक और हैवानियत का सलूक किया जिससे पाक सरकार की साख मिट्टी में मिल गयी जिसकी मुखिया स्वयं ही एक महिला है । जब इस जुल्म के खिलाफ मुहाजिरों ने जुलूस निकाला और विरोध किया, तब उन पर गोलियां चलायी गयीं । उसके बाद फौज ने फिर छापे डाले और हथियारों की तलाशी के बहाने घरों में दाखिल होकर लोगों को लूटा ।

आवाज खोलने पर जेल

एम.क्यू.एम. के जलावतन मुखिया अल्ताफ हुसैन ने लंदन से 'सोग दिवस' मनाने का आदेश दिया । इस पर तमाम सिंध में मुहाजिरों ने हड़ताल की । कराची में उन पर फायरिंग की गयी । इस पर अल्ताफ हुसैन ने पाकिस्तान के फौजी जनरलों के नाम एक खुला खत लिखा, जिसमें अपील की कि वह मुहाजिरों को इस जुल्म से बचाएं । अगर ऐसा न किया गया तो पाकिस्तान की सलामती एक बार फिर खतरे में पड़ जाएगी । उन्होंने इस आरोप का भी खंडन किया कि मुहाजिर पाकिस्तान में 'जिन्हापुर' बनाना चाहते हैं । इस खत में लिखा है, 'हम किस मुंह से कश्मीरी मुसलमानों पर हिंदुस्तानी फौज के अत्याचारों की दास्तानें बयान कर रहे हैं, जबकि हमारे अपने अफसर और पुलिस के सिपाही अपनी ही कौम की बेटी को नंगा कर रहे हैं । पाकिस्तान के १९७१ में पहले ही दो टुकड़े हो चुके हैं । खुदा के वास्ते बाकी पाकिस्तान को बचा लीजिए । हमारे दिलों के जख्म इतने गहरे हो चुके हैं कि बयानों से भरे नहीं जा सकते, इसके लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है ।' ऐसे ही ५ मई को एक जबरदस्त खूनी नाटक नुसरत कॉलोनी नं. ५, पुराना सक्खर, सिंध में हुआ । यहां पाकिस्तानी फौज ने मासूम और निहत्थे ५ मुहाजिर युवकों का, जिनकी अवस्था १९ और २३ के बीच थी, अपहरण कर लिया । उनके हाथ-पांव बांध दिये गये और बाद में उनको सैकड़ों लोगों के सामने गोली मार दी गयी । पाकिस्तान मानव अधिकार आयोग ने सच्चाई जानने के लिए ९ मई को सक्खर का दौरा किया । उन्होंने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि पाकिस्तानी फौज ने इन पांच मुहाजिर युवकों को गोलियों से उड़ा दिया था । उनके जिस्म के ऊपर के हिस्सों को जानबूझकर गोलियों का निशाना बनाया गया और जुल्म की इंतहा ये है कि इन मासूम व बेगुनाह युवकों को सरकार ने डाकू करार दिया और कहा कि ये पुलिस मुठभेड़ में मारे गये । ऐसे ही पाकिस्तानी सीनेट की महिला सदस्य और मुहाजिर कौमी मूवमेंट की सदस्या नसरीन जलील ने अप्रैल में, लंदन में वहां की पार्लियामेंट के सदस्यों को पाकिस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मुहाजिरों पर किये जानेवाले अत्याचारों की दास्तान सुनायी और कहा कि बोजनिया और कश्मीर के लोगों के लिए पाकिस्तान झूठे आंसू बहा रहा है, क्योंकि वह स्वयं सिंध में अपने लोगों के मानव अधिकारों का जोरदार उल्लंघन कर रहा है, बस इसी बात पर जब मिस नसरीन जलील पाकिस्तान वापस लौटीं तो उसे गिरफ़ार कर लिया गया और जेल में डाल दिया गया। अभी तक उनकी रिहाई नहीं हुई है।

अपने ही देश में बेगाने

क्या विडंबना है कि जब भारतीय मुसलमानों ने अपना घर-बार, जायदाद, माल व दौलत, बुजुर्गों की कब्रें गर्ज सब कुछ कुरबान कर दिया और पाकिस्तान बनवाने में एक महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा किया और ये ही नारा लगाते रहे—'बंट के रहेगा हिंदुस्तान, ले के रहेंगे पाकिस्तान' आज उनकी हालत पाकिस्तान में किस कदर खराब है कि उनको तीसरे दरजे का शहरी माना जाता है। ढाई लाख बेकस और मजबूर मुहाजिर मुसलमानों को बंगलादेश से पाकिस्तान लाने की उनकी मांग भी नहीं मानी गयी। इन्हीं ढाई लाख मुहाजिर मुसलमानों ने १९७१ में पाकिस्तान को बचाने के लिए अपना सबकुछ लुटा दिया था, मगर वह इस कुरबानी के बदले पिछले २३ साल से बंगलादेश में रेडक्रास के कैंपों में गरीबी और भूख की जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं। उन्होंने आज भी अपने कैंपों में पाकिस्तानी झंडा लहराया हुआ है। मगर उन्हें पाकिस्तान नहीं लाया जा रहा, क्योंकि पाकिस्तान का कोई भी प्रांत उनको अपने यहां रखने के लिए तैयार नहीं। बंगलादेश भी उनको अपना शहरी नहीं मानता।

दूसरी तरफ पहले से बसे मुहाजिरों को और दूसरे प्रांतों में उनका हक नहीं दिया जा रहा। मुहाजिर कौमी आंदोलन ने जो [illegible] बेनजीर को पेश की है, उसमें बताया गया [illegible] सिंध की आबादी में ५० प्रतिशत मुहाजिर [illegible] वे सरकार को करों के रूप में मिलनेवाले [illegible] करोड़ की आमदनी में से ७५ प्रतिशत [illegible] करते हैं। परंतु सरकारी नौकरियों में उन्हें [illegible] ७ प्रतिशत हिस्सा मिलता है। उन पर [illegible] आतंक बढ़ता जा रहा है। पिछले एक [illegible] लातादाद मुहाजिरों को कत्ल किया गया है। सालों में ईधी वैलफेयर ट्रस्ट ने ४०० [illegible] मुहाजिरों के शव दफनाने का प्रबंध किया [illegible] गोलियों का निशाना बनाकर उनके शव [illegible] पर फेंक दिये गये थे। हजारों मुहाजिरों पर [illegible] केस दायर कर दिये गये हैं। उनके मकान [illegible] लूटा जाता है और बाद में जलाया जाता है। कुछ हकीकतें अच्छी हों या बुरी जब टकराव [illegible] तो तुरंत उनके नतीजे निकलते हैं और [illegible] असर काफी दिनों तक रहता है। अगर मुहाजिरों के साथ पाकिस्तान सरकार का [illegible] ना बदला और आगे टकराव बढ़ा तो [illegible] सिंध का बंटवारा भी हो सकता है। सिंध [illegible] 'आधा तुम्हारा, आधा हमारा' का नारा [illegible] लगाया जा रहा है। कराची और हैदराबाद [illegible] मिलाकर एक नया जिला भी बनाया जा [illegible] है। १९७१ के हालात फिर वापस आ [illegible] हैं।

सच तो ये है कि मुहाजिर पाकिस्तान में बहुत परेशान हैं। कहा जा रहा है कि वे [illegible] दिल ही दिल में अफसोस करते हैं कि [illegible] पाकिस्तान जाकर गलती की और वह [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप लोग भारत के हालात से घबराकर पाकिस्तान जा रहे हैं तो जाएं, मैं आपको मना नहीं करता लेकिन जिन हालात से घबराकर आप पाकिस्तान जाना चाहते हैं वे हालात वहां भी पेश आ सकते हैं। और कोई जरूरी नहीं कि पहले से वहां मौजूद लोग आपको कबूल कर लें।"

नसीब को रोते हैं। पाकिस्तान से मुहाजिर अपने रिश्तेदारों को मिलने के लिए भारत आते-जाते रहते हैं। उनका भी कहना है कि अब पाकिस्तान में उनका भविष्य अंधकारमय है। उन्होंने पाकिस्तान जाकर जिंदगी की सबसे बड़ी गलती की जहां उनकी हालत बद से बदतर होती जा रही है। विभाजन के समय जब मुसलमानों की एक अच्छी-खासी तादाद भारत छोड़कर पाकिस्तान जाने लगी, तब वे लोग मौलाना आजाद को मिलने गये। उस भीड़ को संबोधित करते हुए मौलाना ने कहा था कि आप लोग भारत के हालात से घबराकर पाकिस्तान जा रहे हैं तो जाएं, मैं आपको मना नहीं करता लेकिन जिन हालात से घबराकर आप पाकिस्तान जाना चाहते हैं वे हालात वहां भी पेश आ सकते हैं। और कोई जरूरी नहीं कि पहले से वहां मौजूद लोग आपको कबूल कर लें। आज मौलाना की ये बात सौ प्रतिशत ठीक साबित हुई है। एक पाकिस्तानी मुहाजिर शायर के अनुसार :

धुएं भरे हैं दिलों में, दिमाग जलते हैं
चमन के जिस्म पे गुल बनके दाग जलते हैं
कोई सबब कोई इसका इलाज भी होगा
कि हम बहार बसाते हैं बाग जलते हैं
कहां गये हमें यहां ला के छोड़नेवाले
बुझी-बुझी सी हैं राहें, चिराग जलते हैं

भारत पर आरोप लगानेवाले पाकिस्तानी शासक भूल जाते हैं कि भारत में मुसलमान, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, सुप्रीम कोर्ट का चीफ जस्टिस, केंद्रीय मंत्री, गवर्नर, मुख्यमंत्री, एयर चीफ मार्शल, आई.ए.एस. और आई.पी.एस. जैसे बड़े पदों पर पदासीन हुए हैं और आज भी हैं। क्या पाकिस्तान के पास आज भी कोई ऐसी मिसाल है कि वहां कोई हिंदू या ईसाई ऐसे ऊंचे पद तक पहुंचा हो ? सवाल यह उठता है कि क्या अपने आपको इसलामी देश कहनेवाला पाकिस्तान मुहाजिर और सिंधियों पर जुल्म करके, हिंदुओं और ईसाईयों का हक मारकर इसलाम की पैरवी कर रहा है ? भारत और पाकिस्तान के बीच खून के रिश्ते हैं। जब भी पाकिस्तान में मुहाजिरों पर जुल्म होता है, तब उस जुल्म के विरुद्ध भारत में भी कुछ मुसलिम संस्थाएं ऐसी हैं जो पाकिस्तान हाई कमीशन के दफ़र के आगे विरोध करती हैं अपना ज्ञापन देती हैं। मुहाजिर कौमी मूवमेंट एक राजनीतिक पार्टी है, जिसके २७ सदस्य अब भी सिंध असेंबली में हैं। मुहाजिर कौमी मूवमेंट की १९८६ में एक जज्बाती और जोशीले नौजवान अल्ताफ हुसैन ने बुनियाद डाली। इससे पहले मुहाजिरों को कहा जाता था कि उनका आखिरी ठिकाना समुद्र है। अल्ताफ हुसैन की कोशिशों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मुहाजिरों का यह आंदोलन दिन-प्रतिदिन जोर पकड़ता गया । १९८७ में इस पार्टी ने म्यूनिसिपल चुनाव लड़ा । १९८८-१९९० में राष्ट्रीय असेंबली और सिंध की असेंबली के चुनाव में हिस्सा लिया । और इन क्षेत्रों में जमायते इसलामी को जबरदस्त हार का सामना करना पड़ा । १९८८ व १९९० के सिंध असेंबली के चुनाव में भी मुहाजिर कौमी मूवमेंट पार्टी तीसरे नंबर पर आयी । १९९० के चुनाव के बाद एम.क्यू.एम. नवाज शरीफ सरकार और सिंध में सादिक अली सरकार में शामिल हुई । पिछले साल चुनाव में फौज का मुहाजिरों पर दबाव बना रहा । उनको चुनाव प्रचार इत्यादि नहीं करने दिया गया, जिससे एम.क्यू.एम. ने राष्ट्रीय असेंबली के चुनाव का बहिष्कार किया, लेकिन सिंध की प्रांतीय असेंबली के चुनाव में, एम.क्यू.एम. ने काफी अच्छी तादाद में वोटें हासिल कीं और साबित कर दिया कि मुहाजिरों के दिलों पर फौज पहरे नहीं लगा सकती ।

ऐसा नजर आता है कि पाकिस्तान की सरकार मुहाजिर कौमी मूवमेंट से, जो कि एक स्थापित राजनीतिक पार्टी है, उससे सुलह नहीं करना चाहती, बल्कि उसकी कमर तोड़ना चाहती है । शायद पाकिस्तानी सरकार की कोई राजनीतिक मजबूरी है । चंद दिन पहले मुहाजिर कौमी मूवमेंट के जलावतन मुखिया अल्ताफ हुसैन को सेना के एक मेजर के कत्ल के केस में पाकिस्तान की एक अदालत ने २७ साल की सजा सुनायी है । १९७१ में जुल्फिकार अली भुट्टो ने बंगाली मुसलमानों का नरसंहार कराकर इस क्षेत्र के लोगों को बगावत करने के लिए मजबूर किया था । अब फिर बेनजीर की सरकार सिंध में अराजकता की आग लगा रही है । मुहाजिरों का सफाया करने में उसे सफलता नहीं मिलेगी, सरकार का ही खात्मा हो जाएगा ।

लंदन में मुहाजिर कौमी मूवमेंट के सदस्यों ने मांग की है कि मुहाजिरों पर जो अत्याचार हो रहे हैं, उनकी सही जानकारी लेने के लिए एक स्वतंत्र आयोग नियुक्त किया जाए और वह अपनी रिपोर्ट दुनिया के सामने रखे । इस दौरान मुहाजिर कौमी मूवमेंट ने अपनी मांगों का चार्टर सरकार के अलावा पाकिस्तान और विदेश की मानव अधिकार संस्थाओं तथा संयुक्त राष्ट्र को भी भेजा है । पार्टी ने मांग की है कि मुहाजिरों से अमानवीय और जालिमाना बरताव खत्म किया जाए । संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुसार मुहाजिरों को मानव अधिकार दिये जाएं । मुहाजिरों के खिलाफ पुलिस और सेना का अभियान खत्म करके सेना को नागरिक इलाकों से तुरंत हटा लिया जाए । मुहाजिरों को विधानसभा, संसद और सीनेट में उनकी आबादी के आधार पर प्रतिनिधित्व दिया जाए । बंगलादेश से बिहारियों को तुरंत पाकिस्तान में आने की इजाजत दी जाए । तमाम पाबंदियां हटाकर पार्टी को राजनीतिक गतिविधियों में आजादी से हिस्सा लेने की इजाजत दी जाए । लेकिन अगर इस समस्या का समाधान पाक सरकार ने न निकाला तो मुहाजिर कौमी मूवमेंट की गतिविधियां और आगे बढ़ेंगी और ज्यादा खून-खराबा होगा और हो सकता है कि पाकिस्तान का एक बार फिर विभाजन हो जाए ।

एक शायर के अनुसार :

जब कोई नहीं सुनता बात दर्दमंदों की
बात और बढ़ती है मुख्तसर नहीं होती

—ए-३९, अशोक नगर गाजियाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

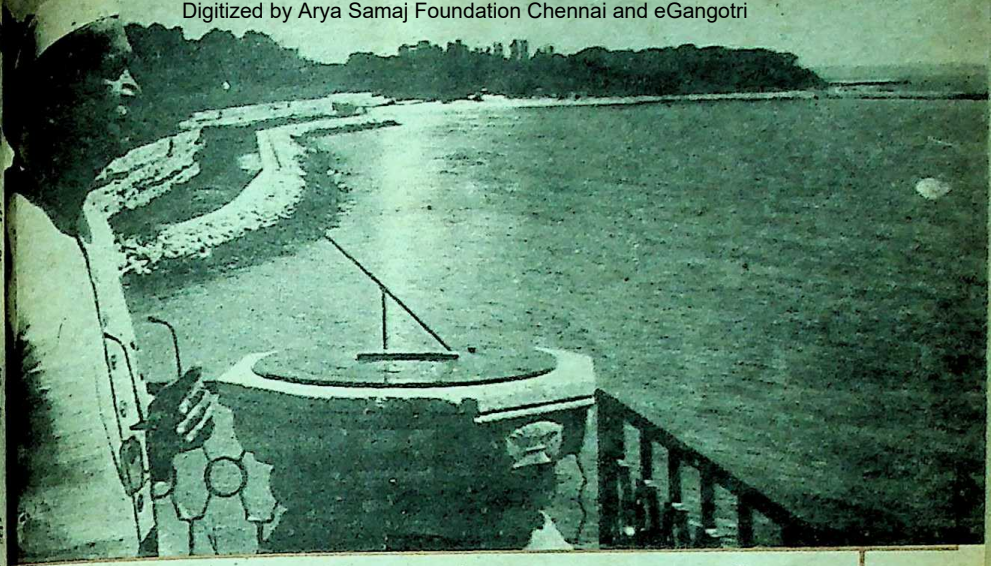

जन्म दिन : १९ अगस्त, १९१८ : विशेष

शिक्षा जगत का रेशमी कीड़ा, राजनीति में

कल्पना कीजिए एक व्यक्ति की जिसका भव्य व्यक्तित्व हो, मृदुभाषी और अत्यंत सहज तथा चुंबकीय आकर्षण की उसमें अद्भुत क्षमता हो। चमकता हुआ गौरवर्णी चेहरा जो सौंदर्य और शालीनता के कारण स्वयं अपने आप में एक केंद्र बन जाए।

सुमुख होना एक बात है, फिर उससे मस्तिष्क बल जुड़ जाए तो व्यक्ति के संस्कार ही बदल जाते हैं। आगरा और लखनऊ के विश्वविद्यालयों में जिसने शिक्षा पायी हो और आगे चलकर भोपाल में सत्ता के केंद्र सूत्र बने, उस व्यक्ति को सरलीकृत संस्कारों में परखा जाए तो पता चलेगा कि उसमें लखनऊ की नजाकत और भोपाल की नफासत न हो, संभव नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं जिस व्यक्ति की बात कर रहा हूं, वे हैं मात्र शंकर दयाल शर्मा; यानी देश और विदेशों (कैंब्रिज, हार्वर्ड आदि) में उच्चतम शिक्षा पाकर निरंतर पहली पंक्ति में खड़े रहे और स्वर्णपदक पाते रहे । आगे चलकर सागर विश्वविद्यालय में प्रो. वाइस चांसलर बने, फिर अनेक विश्वविद्यालयों से चांसलर के रूप में जुड़े रहे ।

राजनीति में

शिक्षा जगत का यह रेशमी कीड़ा अचानक राजनीति में उतरा । पहले सन १९५ से ५६ तक पूर्व भोपाल रियासत के मुख्यमंत्री के रूप में, फिर पं. रविशंकर शुक्ल के मंत्रिमंडल में अत्यधिक जिम्मेदार मंत्री के रूप में ।

मंत्रिमंडल छोड़ा तो अध्यक्ष बने, पहले भोपाल कांग्रेस कमेटी के, फिर मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी और अंततः इंडियन नेशनल कांग्रेस के महासचिव । बीस वर्षों तक कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य रहे । फिर इंदिरा गांधी के शासनकाल में (१९७२ से ७४ तक) इंडियन नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे और आगे जाकर केंद्रीय मंत्रिमंडल में संचार मंत्री के रूप में शामिल हुए । फिर आंध्र प्रदेश, पंजाब और महाराष्ट्र के राज्यपाल ।

सामान्य व्यक्ति से प्रथम नागरिक

आखिर क्या बात होती है कि भोपाल के एक उपेक्षित सादे से मोहल्ले में ११ अगस्त, १९१८ को जन्म लेकर एक सामान्य व्यक्ति आज देश का प्रथम नागरिक है । उनके पिता वैद्य थे और आयुर्वेदिक पद्धति से रोगियों का उपचार करते थे । उनकी पत्नी अब भी घर आये रोगियों को दवा देती हैं ।

सच बात तो यह है कि अपनी चेतना और बुद्धि कौशल से डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने जवाहरलालजी को जीत लिया था । जवाहरलालजी अद्भुत पारखी थे । वे स्वयं बुद्धिमान और विद्वान थे । अतः उन्होंने हमेशा विद्वानों का आदर किया और प्रधानमंत्री बनते ही उन सबका उपयोग किया । डॉ. शंकर दयाल शर्मा उनकी दृष्टि से नहीं बच सके और परम स्नेही और स्वामिभक्त की तरह जवाहरलालजी से सीखते रहे । इसका उदाहरण मैं आराम से दे सकता हूं । राज्य पुनर्गठन आयोग के बाद जब सारे राज्यों की सीमाएं बदलीं तो मध्य प्रदेश और बरार नाम से विख्यात राज्य को सबसे अधिक हानि देखनी पड़ी । उसकी राजधानी नागपुर थी और बरार नाम हटना था । वह हिस्सा महाराष्ट्र में चला गया ।

तब प्रश्न उठा कि मध्य प्रदेश की राजधानी क्या हो ? जहां तक मुझे स्मरण है, खासी रस्साकस्सी हुई—जबलपुर को आदर्श स्थान माना गया क्योंकि तत्कालीन राजनीति के चाणक्य पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र यही चाहते थे । पं. रविशंकर शुक्ल का रायपुर में था, वे रायपुर चाहते थे, प्रकाशचंद्र सेठी इंदौर चाहते थे । मध्यप्रदेश का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

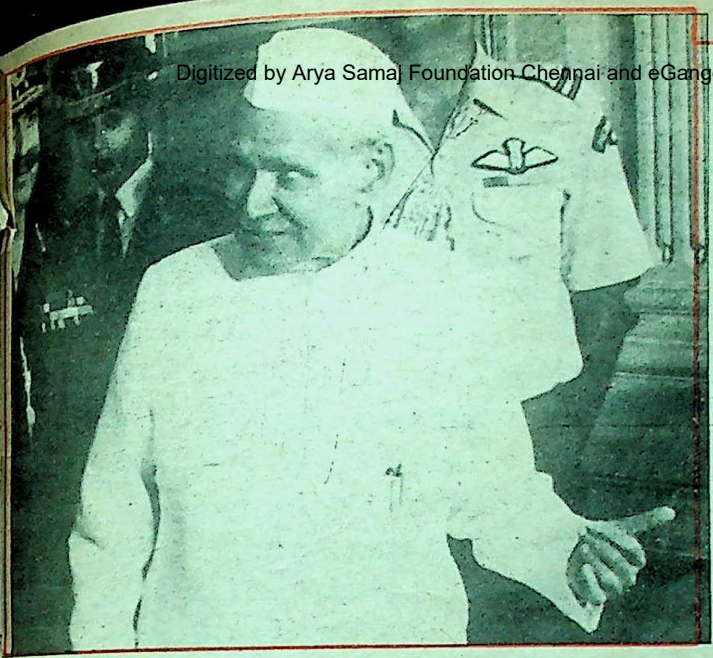

डॉ. शंकरदयाल शर्मा कुशल राजनेता तो हैं ही, वे एक सिद्धहस्त लेखक भी हैं और उनके लेखन की अपनी विशिष्टता है । छोटे-बड़े सभी लेखकों को उन्होंने समान भाव से पूरा स्नेह और आदर भाव दिया है । जो व्यक्ति आदर देता है, वही आदर पाता है ।

राज्य क्या बना, नागपुर के सचिवालय से लेकर राजधानी की सभी इमारतों पर पानी फिर गया और इस पूरी खींचतान में डॉ. शंकर दयाल शर्मा को विजय मिली ।

जवाहरलालजी ने भोपाल को राजधानी घोषित कर दिया । भोपाल राजधानी के योग्य नहीं था, लेकिन डॉ. शंकर दयाल शर्मा तो योग्य थे । जबलपुर निवासी आज भी लंबी साँस लेकर अपने शहर को संस्कारधानी कहकर संतोष कर लेते हैं ।

भोपाल राजधानी तो बन गया, पूरा शहर लगभग नये सिरे से बना—विधानसभा से लेकर सभी राजकीय ठाठबाट । डॉ. शर्मा की यह छोटी विजय नहीं थी, अक्षय पुरुष पंडित शंकर शुक्ल और चाणक्य द्वारिका प्रसाद मिश्र को भी बेबस होना पड़ा । जिसके ऊपर सर्वोच्च सत्ता का हाथ होता है उसके सामने बरगद के पेड़ भी बौने हो जाते हैं ।

कुशल वक्ता

डॉ. शर्मा अत्यंत कुशल वक्ता हैं । कांग्रेस कमेटियों के अधिवेशन में मैंने उनके ओजस्वी और सधे हुए भाषण तथा सुविचारित व्यवस्था भी देखी है । यही गुण तो पत्थर को पारस बना देते हैं । जवाहरलालजी ने अंतिम समय तक (यानी मई १९६४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर क्या बात होती है कि भोपाल के एक उपेक्षित साढ़े मोहल्ले में १९ अगस्त, १९१८ को जन्म लेकर एक सामान्य आज देश का प्रथम नागरिक है ।

शर्माजी पर अटूट विश्वास रखा ।

आत्मीयताभरा व्यवहार

इसके बाद इंदिराजी के भी कृपापात्र रहे । जिन दिनों डॉ. शर्मा केंद्रीय संचार मंत्री मैं परामर्शदात्री समिति का सदस्य था । डॉ. शर्मा से तब भी मेरा परिचय नया नहीं था उनके साथ किसी न किसी रूप में जुड़ जाने से आत्मीयता और गहरी हो गयी । बहुत कुछ था, मैं लगातार कई बारं शर्माजी से मिलता रहता था । उनसे बात करने का आनन्द मजा है । मुझे भारतीय राजनीति में निकटता से देखने-परखने का, विद्वान राजनेताओं में से दो व्यक्ति का ही संपर्क मिला है—एक थे डॉ. द्वारिका प्रसाद मिश्र, दूसरे डॉ. शंकरदयाल शर्मा । यूं तो पं. रविशंकरजी से भी बहुत मिलता था, ब्रिजलाल बियानी (वित्त मंत्री) के साथ तो एक संस्था में काम भी किया है और राममनोहर लोहिया के साथ कई शामें गुजारी हैं, परंतु आत्मीयता के अभीष्ट केंद्र उपर्युक्त दो व्यक्ति ही रहे हैं ।

संभवतः इसीलिए दिल्ली में ही द्वारिका प्रसाद मिश्र अभिनंदन ग्रंथ निकालते समय डॉ. शर्मा के साथ मुझे निकटता से काम करने में हमेशा प्रसन्नता हुई है ।

विद्वान लेखक भी

डॉ. शर्मा कुशल राजनेता तो हैं ही, वे लेखक हैं और उनके लेखन की अपनी विशिष्टता है । जहां तक मेरा ज्ञान है उनकी २५ से अधिक कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं ।

डॉ. शर्मा के साहित्यिक अगाध प्रेम की झलक दिल्ली के बुद्धिजीवियों को उनके उपराष्ट्रपति निवास में होने वाले साहित्यिक समारोहों से हमेशा मिलती रही है । वे तीन सितम्बर १९८७ को उपराष्ट्रपति बने और पांच वर्षों तक ६ मौलाना आजाद रोड को साहित्य की रसमय धारा से जागृत करते रहे । पुस्तकों का लोकार्पण, कवि-सम्मेलन, चर्चाएं, वार्ताएं, वैद्यों की सभाएं, वृक्षारोपण और जाने ऐसी कितनी सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियां जिनमें सब काम छोड़कर डॉ. शर्मा ने पूरे समय भाग नहीं लिया । छोटे-बड़े लेखकों से वे समानभाव से मिलते रहे और अपना पूरा स्नेह और आदरभाव उन्हें दिया । जो व्यक्ति आदर देता है, वही आदर पाता है । संस्कार जितने जितने गहरे होंगे, उसकी चारित्रिक और व्यावहारिक नींव भी उतनी ही मजबूत होगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी के प्रति अटूट प्रेम

हिंदी के प्रति डॉ. शर्मा का अटूट प्रेम है । उनके एक भाषण का अंशः

'पत्रकारिता एवं लेखन का कुछ मुझे भी अनुभव है । मैं तो मानता रहा हूं कि यह शक्ति है तो सेवा भी है, स्वाभिमान है तो समर्पण भी है । इन दोनों के समन्वय से बना रास्ता ही सही रास्ता हो सकता है, जिस पर चलकर राष्ट्रीय पुनर्निमाण की मंजिल तक पहुंचा जा सकता है ।'

और फिर :

'मातृभाषा हमारा पहला प्रेम है किंतु अपनी भाषा के बिना कोई देश आगे नहीं बढ़ सकता । हिंदी विरोध की नहीं जोड़नेवाली भाषा है । उसमें सभी भाषाओं का साहित्य समाहित है ।'

डॉ. शंकरदयाल शर्मा पर तो पूरा एक ग्रंथ होना चाहिए । प्रथम नागरिक और राष्ट्रपति होते हुए भी उनकी साहित्यिक गतिविधियां निरंतर चल रही हैं । हाल ही बुलगारिया और रोमानिया में हिंदी में भाषण देकर उन्होंने नया काम नहीं किया है बल्कि वैसा कर उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि हमारे देश का गौरव हमारी भाषा के साथ जुड़ा है ।

शौकीन मिजाज : आकर्षक व्यक्तित्व

मैं जानता हूं, डॉ. साहब शौकीन मिजाज के व्यक्ति रहे हैं । पहले तो उनका सुंदर चेहरा ही उन्हें बाध्य करता रहा है । आकर्षण से कौन बचा है ? लेकिन उनके आकर्षण के वास्तविक केंद्र थे—तैराकी, नौकायन और दौड़ । अब महामहिम जी से इनकी अपेक्षा तो नहीं करनी चाहिए, परंतु राष्ट्रपति उद्यान में आज भी प्रतिदिन कम से कम पांच मील वे चलते हैं । उनके शौक अब झाड़-पेड़ों और फूलों में सिमट गये हैं । जवाहरलालजी को पशु-पक्षियों से प्रेम था, डॉक्टर शंकरदयाल शर्मा में भी वह प्रेम है और संभवतः किसी नयी चिड़िया की सीटी सुनकर वे रुक जाते हैं, उमर होती और पहरेदारों से आजाद तो शायद वे भी जवाहरलालजी की तरह चिड़ियों से बातें करते । उनकी पत्नी विमलाजी उतनी ही कुशल और सहज महिला हैं, डॉक्टर साहब के जीवन में उनका योगदान कम नहीं हैं । डॉ. शंकरदयाल शर्मा आज से यानी —१९ अगस्त १९९४ से :

देखें शत शरदों की शोभा
जिएं सुखी सौ वर्ष—
हम सबकी सद्कामनाएं

— राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्यवाद हिंदुस्तान !

● एमांझोल शामकेनोव

विगत पचास वर्षों से
अथक रूप से मैं
गौरवान्वित कर रहा हूं
यात्रा को अपने जीवन की
धन्यवाद हिंदुस्तान
तुमने चीन्हा,
सम्मानित किया मेरे
विनम्र कृतित्व को

तुम्हारे सौंदर्य और
विविध रंगी छवियों
से मोहित हो
तीन बार आया हूं
तुम्हारे पास
और महसूसा है
सगे हो तुम मेरे
हर बार विजित किया है तुमने
मेरी अनुभूतियों को,विचारों को
पूर्वजों ने कहा था तुम्हें
'मध्याह्न का देश'
तो ठीक ही तो कहा था
आधारहीन नहीं था यह ।

मुझ पर पड़ी तुम्हारी छाप को
हर बार मैंने
ढाला है कविता में
हो सकता है कि तुम हो
सचमुच में एक गाथा
मेरे हिंदुस्तान !

प्राचीन स्मारकों को तुम्हारे
देखा है मैंने श्रद्धा से
चकित हूं
कैसे संजोये हुए हैं ये
अपना मूलतः सौंदर्य ?
सराहा है मैंने बार-बार
कृषक जो शांतिप्रिय हैं तुम्हारे
कृष्ण वर्ण चेहरे उनके
हम दोनों के कितने मिलते हैं एक-दूसरे से

कोई नहीं है तीसरा हम दोनों के बीच अब
हम तय कर सकते अपना
भाग्य स्वयं ही

इच्छाएं और उनकी संपूर्ति के प्रयास
समसामयिक एक जैसे हों
तभी होती है दोस्ती
दोस्ती भी अविभाज्य ।

घूमा हूं मैं देश-विदेश
अनेक बार
पर मिलना तुमसे
रहा है मेरे लिए अविस्मरणीय
धन्यवाद हिंदुस्तान !
मैं कैसे तुम्हारे पुरस्कार का
औचित्य करूं प्रदर्शित ?

अब से यह विचार
सदा साथ रहेगा मेरे
कंधे पर रखे गुरुतर
दायित्व जैसे
मृत्यु पर्यंत
मैं करता रहूंगा महिमामंडित
मैत्री को अपने दोनों
देशों के जनों की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात और कवि

रात कहे जाती है कवि से अपने घर जाते-जाते
क्यों तुम ठिठुरे-ठिठुरे मनसूबों से हो मन बहलाते
क्यों दिन तुम्हें न अच्छा लगता, क्यों मैं तुमको भाती हूं
यद्यपि सपनों की छलना में तुम्हें सदा तरसाती हूं
दिन है पूर्ण— अधूरी हूं मैं खामोशी की लाचारी
क्यों तुम मुझमें जागा करते ले मन में तृष्णा भारी
रात कहे जाती है कवि से मैं हूं ख़ाली-की-खाली
सहमे-सहमे पंख समेटे जाती मैं काली-काली !

कवि बोला— हर सुबह जहां से तुम आगे बढ़ जाती हो
अपने को हर शाम उसी घेरे में पाती हो
तुम प्रत्यावर्तन में डूबीं— राह बनाता मैं गति की
मैं तो जीवन भर जागूंगा— चाह नहीं मुझको मति की
मुझको नया भरोसा देता है हर दुःख आनेवाला
मुझको नया दिलासा देता हर सपना जानेवाला
जिसमें प्यास नहीं है वह मृगतृष्णा का सुख क्या जाने
जिसमें गीत नहीं वह स्वर की असफलता क्या पहचाने !

—रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

पचपेढ़ी, दक्षिणी सिविल लाइंस, जबलपुर (म. प्र.)

हाथ पकड़ो

जैसे हाथ पकड़ा
पत्थर युग के आदमी का
कृषि युग के आदमी ने
मेरा हाथ पकड़ो

जैसे हाथ पकड़ा
कृषि युग के आदमी का
धातु युग के आदमी ने
मेरा हाथ पकड़ो

जैसे हाथ पकड़ा
हर आनेवाले आदमी ने
पिछले आदमी का
मेरा हाथ पकड़ो

जब-जब पकड़ा है हाथ
आदमी का
आदमी ने
समय आगे बढ़ा है
युग ने जन्म लिया है
मेरा हाथ पकड़ो

— दिविक रमेश

बी-२९५, सेक्टर-२०, नोएडा-२०१३०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत आस्वादन

● डॉ. सुधा पांडे

(जुलाई अंक में प्रकाशित पूर्व कथा में कबंधी और विदर्भी की जिज्ञासा की शांति, सृष्टि रचना और सृष्टि के धारणकर्ता के महत्त्व को जानने के बाद, हो गयी थी। उनके दूसरे साथी भी इन प्रारंभिक तथ्यों से अवगत हो चुके थे, किंतु अभी भी वे अतृप्त थे, इस कथा में आश्वलायन की कथा और संदेह महर्षि पिप्पलाद से पूछे उसके प्रश्नों का शमन)

कबंधी और विदर्भी की शंकाओं का शमन हो जाने के बाद महात्मा पिप्पलाद निश्चिंत हो चुके थे कि इन ऋषिकुमारों की सभी जिज्ञासाएं शांत हो गयी होंगी। वे अगले दिन प्रातःकालीन स्नान, ध्यान, अर्चना, वंदन से मुक्त ही हुए थे कि उनके समीप महर्षि अश्वल का पुत्र कौशल्य उपस्थित हुआ और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। महर्षि पिप्पलाद ने कौशल्य को संबोधित करते हुए कहा— "वत्स ! तुम इतने दिनों से ब्रह्मचर्य के नियमों का कठोरतापूर्वक पालन कर रहे हो। तपस्या के मार्ग की सारी कठिनाइयों को भी तुम शांत रहकर सहते रहे हो, मेरा अनुमान है कि तुम्हारी समस्त मानसिक व्याधियां दूर हो गयी होंगी, फिर भी यहां से विदा लेने के पूर्व मैं यह जानना चाहता हूं कि संसार के बारे में अब भी तुम्हारे मन में क्या कोई संदेह बाकी हैं, तुम मुझसे उस विषय में पूछ सकते हो।"

आश्वलायन यद्यपि जप-तप आदि कठोर साधना करते हुए सांसारिक विषयों से विरत हो चुके थे, किंतु उनका मन अभी भी पूर्ण शांत न था। उनके मन में अभी भी अनेक प्रश्न उमड़-घुमड़ रहे थे। महर्षि के द्वारा प्रेरित किये जाने पर अत्यंत संकोच से उन्होंने निवेदन किया— "हे गुरुदेव ! आपकी छाया में रहकर ही हम इस योग्य बन सके हैं कि ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो अब संसार में कुछ भी जानना शेष न रहा हो। आपके समीप आने के पूर्व मैंने केवल कर्मकांडों का अभ्यास किया था, शास्त्र कंठस्थ किये थे तर्क-वितर्क से प्रतिवादी को शांत करना जाना था, किंतु ब्रह्मविद्या का वास्तविक सुख और मानसिक शांति नहीं प्राप्त कर पाया था। आपके सामीप्य का सुख पाकर ये बाहरी आवरण समाप्त हो चले हैं, किंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी उदान का विवरण शेष था, आश्वलायन निरंतर रहस्यमय विवरण को एकाग्रभाव से सुन रहा था और आश्चर्यचकित था कि साधना की लंबी अवस्था पूरी करने के बाद भी उसके लिए कुछ जानना बाकी था ।

अभी भी मेरे मन में कुछ शंकाएं हैं, उनके बारे में मैं आपसे प्रबोध प्राप्त करके ही शांत हो सकूंगा ।''

महर्षि पिप्पलाद ने सहृदयतापूर्वक विचार किया कि अब एक-आध प्रश्न ही रह गया होगा और ये सभी ऋषिकुमार वापस लौट जाएंगे । अतः उन्होंने आश्वलायन से कहा, ''वत्स पूछो कि तुम्हें अब क्या जानना शेष रह गया है ?'' आश्वलायन ने संकोच करते हुए महर्षि से पूछा— ''आपने विदर्भी को उपदेश देते समय जिस प्राण की महत्ता बतलायी है, मैं उसी के बारे में अब यह जानना चाहता हूं कि हे भगवन ! यह प्राण कहां, किससे उत्पन्न होता है ? यह इस शरीर में कैसे आता है ? शरीर में आने के बाद यह अपने आपको बांटकर इस देह में कैसे रहता है ? रहने के बाद किस प्रकार यह देह छोड़ता, किस प्रकार बाह्य जगत के साथ संबंध स्थापित करता है और किस प्रकार आ[illegible] आत्मिक जगत से संबंध स्थापित कर पाता है ?''

महर्षि पिप्पलाद प्रबुद्ध जिज्ञासु के इन प्रश्नों से आश्चर्यचकित थे कि प्रश्नों की झड़ी लगानेवाला यह शिष्य निश्चय ही प्रगाढ़ चिंतन में लगा हुआ शिष्य है । वह मुसकराकर बोले— ''वत्स ! तुम बहुत ज्यादा प्रश्न पूछ रहे हो ? और वे गूढ़ प्रश्न कि इनका उत्तर भी आसानी से न दिया जा सके । तथापि तुम ब्रह्मवादी हो, ब्रह्म में आस्था रखते हो, इसलिए मैं तुम्हें उत्तर देता हूं । ब्रह्म विचार में निरत रहनेवाले ब्रह्मचारी के लिए मेरे पास कुछ अदेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है ।''

आश्वलायन ने प्रश्न किया था— 'यह प्राण कहां से उत्पन्न होता है ?' पिप्पलाद ने आश्वलायन को बताया— ''इस सर्वशक्ति प्राण की उत्पत्ति आत्मा से होती है जैसे पुरुष के साथ उसकी छाया लगी रहती है वैसे आत्मा के साथ प्राण की छाया सदा लगी रहती है, आत्मा को छोड़कर उस प्राण की कोई गति नहीं है । मन द्वारा किये कार्यों के कारण प्राण आत्मा के साथ लगा-लगा इस शरीर में प्रवेश करता है ।'' इसके साथ ही पिप्पलाद ने आश्वलायन से कहा कि 'मैं तुम्हें अब यह भी स्पष्ट करता हूं कि प्राण

अपने को विभक्त करके इस देह में कैसे प्रवेश करता है । प्राण ही सारे शरीर का स्वामी है । मनोवृत्तियों से शरीर में प्राण आता है उसी के साथ गमन भी करता है, शरीर में स्थित इंद्रियों की जो स्थिति अलग-अलग प्रतीत होती है वह सब इसी के अंतर्भूत है, जिस प्रकार कोई राजा अपने अधीन रहनेवाले छोटे-छोटे राजाओं को अपने-अपने स्थान पर अधिकार जमाकर अलग-अलग कार्य करने के लिए नियुक्त करता है, उसी प्रकार यह प्राण अन्य प्राणों को पृथक-पृथक कार्यों में नियुक्त कर देता है ।'

आश्वलायन की जिज्ञासा और बढ़ती जा रही थी, उसने पुनः ऋषि से प्राणों के विभाग के बारे में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की । पिप्पलाद सच्चे अर्थ में महात्मा थे, अतः बिना झुंझलाये उन्होंने आश्वलायन से आगे बताना शुरू किया कि 'यह प्राण अपने अंगभूत अपान, व्यान, समान आदि के बीच कार्यों का विभाजन कर देता है स्वयं यह मुख और नासिका द्वारा विचरण करता हुआ नेत्रों और कानों में रहता है । यह आत्मा हृदय में रहता है, हृदय की १०१ नाड़ियां हैं उनमें से एक-एक में से सौ-सौ शाखाएं फूटती हैं, उन सहस्र शाखाओं में एक-एक शाखा से बहत्तर-बहत्तर शाखाएं फूटती हैं इनमें व्याप्त वायु विचरता है ।'

अभी उदान का विवरण शेष था, आश्वलायन निरंतर रहस्यमय विवरण को एकाग्रभाव से सुन रहा था और आश्चर्यचकित था कि साधना की लंबी अवस्था पूरी करने के बाद भी उसके लिए बहुत कुछ जानना बाकी था ।

पिप्पलाद ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा— ''हृदय से एक नाड़ी ऊपर को जाती है, यही उदान है । यह उदान पुण्यकर्म से आत्मा को पुण्यलोक ले जाता है । पाप कर्म करने से पाप लोक को ले जाता है, दोनों प्रकार के कर्म करनेवाले को मनुष्य लोक में ले जाता है ।''

आश्वलायन यह भी जानना चाहता था कि शरीरस्थ प्राण बाह्य जगत में किस प्रकार अपना रूप धारण करता है । पिप्पलाद क्षणभर मौन रहे फिर मुसकराकर कहने लगे, ''वत्स तुम्हारी जिज्ञासाओं से मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है— अवधान पूर्वक सुनो ! सूर्य बाह्य प्राण के रूप में नेत्रों को ज्योति प्रदान करता है भूमि में जो देवता की शक्ति है वह धरती और आकाश के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच की वायु-समान यह पूरे ब्रह्मांड का प्राण है। तेज उदान है। उदान का कार्य प्राणी को ऊर्ध्वगामी बनाना है। जीवनभर ऊपर उड़ने की भावना बनी रहती है, उसी का नाम उदान है। मृत्यु के समय यही उदान मनुष्य अपने जीवन में जो कुछ बना होता है उसे संस्कारों के रूप में लेकर बाहर चला जाता है। उदान प्राण की एक क्रिया है। प्राण उदान से युक्त आत्मा देह के संकल्प के अनुरूप लोक को ले जाता है और मानस वृत्तियों के अनुसार ही इसका पुनर्जन्म होता है। वत्स ! जो विद्वान इस प्राण रहस्य को भली प्रकार जान लेता है, उसकी संतानों की परंपरा बनी रहती है। वह अमर हो जाता है और इस अध्यात्म विज्ञान को ग्रहण कर, जीवन व्यतीत करते हुए, अमृत का आस्वादन करता है।"

आश्वालायन धन्य हो गया था। उसका मुखमंडल ब्रह्मचर्य के अपूर्व तेज से दीप्त हो उठा था। भावातिरेक में वह गुरु के चरणों में गिर पड़ा। महात्मा पिप्पलाद ने उसे हृदय से लगाकर आशीर्वचन दिया— "हे वत्स ! अब संसार में तुम्हारे लिए कुछ भी अज्ञात नहीं रह गया है।" गुरु कृपा से अभिभूत आश्वलायन कृतज्ञ भाव से गुरु चरणों में प्रणाम कर अपने कुटीर की ओर चल दिया। वहीं उसके अन्य साथी आतुरता से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। आश्वलायन ने गुरु पिप्पलाद से प्राप्त प्राण विद्या के बारे में अपने साथियों को अवगत कराया, वे सब भी इस अमृत विद्या के बारे में ज्ञान प्राप्त कर मानो धन्य हो गये। **(प्रश्नोपनिषद् से)**

— प्राचार्या,
एम. के. पी. (पी. जी.) कॉलेज, देहरादून

शारीरिक कब्ज बनाम आध्यात्मिक कब्ज

उन दिनों बनारसीदास चतुर्वेदी साबरमती आश्रम में रहते थे। उन्हें प्रायः कब्ज की शिकायत रहती थी। अतः वे रोज सुबह महात्माजी की प्रार्थनासभा में शामिल न होकर टहलने के लिए चले जाते थे। जब कोई उनसे पूछता कि चतुर्वेदीजी ! आप प्रार्थनासभा में नहीं दिखायी देते ? तो वे जवाब में प्रश्नकर्ता से सवाल पूछ बैठते कि कब्ज के लिए टहलना अधिक फायदेमंद है या प्रार्थना ?

चतुर्वेदीजी का प्रश्न पेटेंट जैसा हो गया था। एक दिन देवदास गांधी की उपस्थिति में जब चतुर्वेदीजी से यही प्रश्न पूछा गया और उन्होंने भी अपना वही पेटेंट प्रश्न दोहरा दिया, तब देवदास गांधी ने फौरन जवाब दिया— "यह बात तो कब्ज पर निर्भर करती है। शारीरिक कब्ज के लिए टहलना और आध्यात्मिक कब्ज के लिए प्रार्थना।"

उस दिन से चतुर्वेदीजी ने उक्त प्रश्न करना छोड़ दिया।

— आलोक प्रभाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ओ राष्ट्रवादियो ! कायरों से कोई आशा न करो...'

● डॉ. सुधीर शाह

ब्रिटिश शासन के प्रति हिंदी पत्रों की नीति सन १८७० के बाद बहुत तेजी से बदली । भारत की आर्थिक स्थिति उस समय शोचनीय थी । अकाल तथा आर्थिक संकटों के बादलों ने तथा उस पर दरबार परंपरा ने भारत की अर्थव्यवस्था पर भयंकर प्रभाव डालना प्रारंभ किया । तत्कालीन हिंदी पत्रों ने इस आर्थिक शोषण के विरुद्ध सशक्त अभियान चलाया और बार-बार लिखा कि दरबार की पृष्ठभूमि में केवल, साम्राज्यवाद का दिखावा करने की प्रवृत्ति मात्र है ।

सन १८५८ के बाद ब्रिटिश प्रशासन द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था पर कई कड़े प्रहार होने लगे । नये आर्थिक कदमों के नाम पर अंतःहीन शोषणों का रास्ता खोजा जाने लगा । जैसे कि— आयकर, नमककर, विक्रयकर और लाइसेंसकर आदि-आदि । भारतीय पत्रों ने ब्रिटिश सत्ता की इस शोषणकारी नीति के विरोध में खुलकर लिखा और इन करों के विरोध में जो आम सभाएं या प्रस्ताव के बारे में जो उन्हें सूचना प्राप्त होती थी, उसके बारे में विस्तार से वे अपने पत्र-पत्रिकाओं में चर्चा करते थे । 'मुल्की सुधा' (१९ अप्रैल १८८६) ने अपने पत्र में इस आर्थिक शोषण के संदर्भ में एक चित्र प्रकाशित किया था— जिसमें एक भेड़ जिसका नाम भारत है उसे पशु-पक्षी खा रहे हैं ।

ये पशु-पक्षी हैं— आयकर तथा बर्मा युद्ध में हुआ व्यय । जब भारतीय जनता पर लाइसेंसकर लगा तो 'कविवचन सुधा' (जुलाई १८७७) ने उसे आयकर के 'दादा' की संज्ञा दी । इसी प्रकार 'हिंदोस्थान' (३ फरवरी १८८८) ने नमक पर कर लगाने को एक 'घोर अन्यायपूर्ण' नीति लिखा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओ राष्ट्रवादियो ! कायरों से कोई आशा न करो । (उदारवादी) हाथियों का शिकार करते गीदड़ कभी भी शेरों का साथ नहीं दे सकते, यद्यपि वे शेरों की अपेक्षा शिकार मरने पर मांस अधिक खा सकते हैं । ओ वीरो, अपने पैरों पर खड़े हो और अपने कर्त्तव्य का पालन करो..."

— 'कर्मयोगी,' ६ अक्तूबर १९०९ से

खिलाफत—आर्थिक शोषण की

तत्कालीन जागरूक राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं ने ब्रिटिश प्रशासन के खर्चीले कारगुजारी की भी कटु आलोचना की । 'अल्मोड़ा अखबार' (३० अक्तूबर १८८२) ने लिखा कि—

"अंगरेंजी अफसर भारत में बहुत भारी वेतन लेते हैं । यहां तक कि योरोपीय अफसर अपने देश में कठिनता से प्रतिवर्ष ५ या ६ हजार रुपये ही कमा पाते हैं और वे भारत में ३ या ४ हजार रुपये प्रतिमाह लेते हैं । ऐसे बेमेल वातावरण में भारतीयों की आर्थिक स्थिति सुखारने का प्रश्न ही खड़ा नहीं होता ।"

इस आर्थिक शोषण को, पैने तेवर के साथ समग्रतः उभारने का श्रेय हिंदी पत्रकारिता को है । पत्रकारिता की इस परंपरा ने ही स्वदेशी आंदोलन को जन्म दिया । 'भारत-सुदशा प्रवर्त्तक' (मार्च १८९६) ने लिखा कि **'यदि वे भारत की आर्थिक स्थिति सुधारना चाहते हैं तो उन्हें विदेशी चीजों का प्रयोग नहीं करना चाहिए ।'**

सन १८५८ के बाद भारतीय असंतोष का मुख्य कारण अंगरेजों की जाति एवं रंग-भेद की नीति भी थी । हिंदी पत्रों ने अंगरेजों की इस नीति के खिलाफ विद्रोह कर दिया । अंगरेजों का मंदिर या मसजिद में जूते पहनकर घुस जाना, पुजारी या मौलवी द्वारा अंगरेजों को जूता खोलकर प्रवेश करने को कहने पर उन्हें सरेआम पीटा जाना, कोई भी भारतीय अंगरेजों को सलाम न करे तो पीटा जाना साथ ही, भारतीयों को 'कुत्ता', 'काला', 'नीग्रो' या 'हब्शी' कहा जाना आदि-आदि रोजमर्रे की घटनाओं ने पूरे भारतीय समाज को त्रस्त कर डाला था ।

भारतीय पत्रों ने अंगरेजों की इस पक्षपातपूर्ण नीति का खुलकर विरोध किया । रंग-भेद नीति एवं जातीय पक्षपातपूर्ण निर्देशों की खिलाफत करते हुए उन्होंने जनचेतना को मुखर किया । सरकारी सेवा के लिए भी हिंदी पत्रकारिता ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी । हालांकि, लार्ड लिटन ने भारतीय पत्रकारिता के इस राष्ट्रव्यापी प्रतिरोध को देखते हुए एक भारतीय और छह यूरोपीय की पेशकश रखी । लेकिन इस ऊंट के मुंह में जीरा रखनेवाली कहावत को चरितार्थ करते हुए 'हितकारी पत्रिका' (२० जुलाई १९०८ लाहौर) में लाला हरदयाल ने एक ज्वलंत व उग्र विचारों से समन्वित एक अग्रलेख लिखा जिसकी अंतिम पंक्तियां इस तरह थीं— **भारतीय नौजवान का मस्तिष्क सोने की तरह चमकता हुआ है । यदि उसका उपयोग सरकारी सेवा में किया जाए तो देश को अत्यधिक लाभ पहुंचेगा ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौंसिल में प्रतिनिधित्व की मांग

आर्थिक शोषण, रंग-भेद नीति एवं राजकीय सेवाओं में उचित प्रतिनिधित्व देने के साथ-साथ, हिंदी पत्रकारिता ने लेजिस्लेटिव कौंसिल में भारतीय प्रतिनिधित्व की उचित मांग करते हुए संपूर्ण देश में नव जागरण का सूत्रपात किया। वस्तुतः सन १८५८ के बाद देश के संवैधानिक ढांचे में भारतीयों का प्रतिनिधित्व नहीं के बराबर था। भारतीय पत्रों ने 'प्रतिनिधित्व' की मांग का प्रबल समर्थन करते हुए राष्ट्रीय संचेतना के प्रति आंदोलन छेड़ दिया। इस आंदोलन के फलस्वरूप, 'इंडियन एक्ट सन १८९२' का जन्म हुआ। जिसमें कौंसिल में भारतीयों की संख्या १० कर दी गयी। और उन्हें बजट में बोलने का अधिकार भी दिया गया।

इसी अनुक्रम में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं ने उत्तर प्रदेश और पंजाब में प्रांतीय लेजिस्लेटिव कौंसिल की स्थापना की मांग भी की। 'आर्यमित्र' (२४ जनवरी १८७९) ने लिखा कि— **यदि बंबई, कलकत्ता और मद्रास सरीखी लेजिस्लेटिव कौंसिल इन प्रांतों में स्थापित की जाए तो लेफ्टीनेंट गवर्नर को प्रशासन कुशलतापूर्वक चलाने में सहयोग मिलेगा।**

इस वैचारिक आंदोलन में भारतीय पत्रकारिता ने विजय प्राप्त की और सरकार ने उनकी मांगें मान लीं।

हिंदी पत्रकारिता की मांग का क्षेत्र यहीं सीमित नहीं रहा बल्कि, उसने ब्रिटिश संसद में भारतीय प्रतिनिधित्व की मांग भी की और उसके लिए निरंतर संघर्ष भी किया, ताकि, ब्रिटिश संसद और इंगलैंड की जनता को यह मालूम हो सके कि पराधीन भारत देश किन समस्याओं से जूझ रहा है। डिजरायली ने इस आंदोलन के विरुद्ध आश्वासन दिया। लेकिन बाद में वह मुकर गये। 'हिंदोस्थान' (२० जून १८८४) ने भारतीयों को आंदोलित करते हुए लिखा कि **अंगरेज जो लंदन में बैठे भारत में राज कर रहे हैं, भारत की आर्थिक दशा की दुर्दशा को नहीं समझ सकते। अतः आप स्वयं आंदोलन करो और ब्रिटिश संसद में प्रवेश लो।**

यह उस हिंदी पत्रकारिता के निरंतर संघर्ष का ही परिणाम था कि सन १८८६ में दादा भाई नैरोजी को ब्रिटिश संसद में भारतीय प्रतिनिधित्व के रूप में सर्वप्रथम स्थान दिया गया।

इंडियन नेशनल कांग्रेस

सन १८५७ के प्रथम स्वातंत्र्य युद्ध के राजनीतिक विचारधारा को एक सुदृढ़ रूप देने की पृष्ठभूमि में, भारतीय पत्रों ने राष्ट्रीय स्तर पर एक राजनीतिक संगठन बनाने की बात बार-बार कही जिसके फलस्वरूप, सन १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ। कालांतर में कांग्रेस, ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ भारतीय पत्रों के साथ-साथ एकमुख हो चली। तब शुरू हुआ भारतीय राजनीतिक इतिहास यात्रा के साथ, भारतीय क्रांतिकारी पत्रकारिता का इतिहास। यह दोनों ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध स्वाधीनता प्राप्त करने तक एक-दूसरे के सदैव पूरक बने रहे। यहां पर यह भी उल्लेखनीय है अपने सैद्धांतिक मतभेदों के कारण कांग्रेस उदारवादी और उग्रवादी दो विचारधाराओं में बाद में जब बंटी तो, भारतीय पत्रकारिता का सोच भी इन दोनों पहलुओं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकर राष्ट्रीय संचेतना को मुखर स्वर देता रहा ।

विशेषकर तत्कालीन उग्रवादी भारतीय पत्रों का यदि समग्रतः अध्ययन किया जाए तो उस समय के राजनीतिक चिंतन का एक अछूता इतिहास सामने आता है । आग उगलनेवाले प्रखर और मुखर पत्रकारिता का यह रूप राष्ट्रीय आंदोलन का सशक्त प्रेरणावाहक बना । 'हिंदी प्रदीप' (२४ जुलाई १९००) ने जागरण की हुंकार भरते हुए लिखा कि **ओ स्वतंत्रता ! तुम भारत को छोड़कर क्यों भाग गयी ? और अकेला छोड़ दिया ? भगवान की बेटी, विश्व की प्रेमिका और गुणों का पुंज, तुम कहां चली गयी ? भारतवासी इसहानि पर बुरी तरह सुबक रहे हैं ।'**

अन्य हिंदी पत्र जैसे 'अभ्युदय', 'हिंदोस्थान', 'कायस्थ समाचार', 'इंडियननेशन', 'वसुंधरा', 'कर्मयोगी', 'भारतमित्र' और 'इंडियननेशन' आदि ने उदारवादियों की भीख मांगने की नीतियों का खुलकर विरोध करते हुए एक मुहिम-सी छेड़ दी ।

'हिंदुस्तान' (१४ फरवरी १९०८, लाहौर) ने अरविंद घोष के विचारों को लिखते हुए कहा कि **स्वराज एक राष्ट्र के लिए उसी प्रकार है जिस प्रकार शरीर के लिए आत्मा । जो मनुष्य को जीवित रखने के लिए इससे पृथक नहीं की जा सकती ।** 'झंग सीयाल' (९ मई १९०८) ने ओजपूर्ण शैली में लिखा कि— **नौजवान, तुम देश के लिए शक्ति और जोश रखते हो । तुम छोटे दलों में बंटकर ग्रामों में फैल जाओ और जनता-जनार्दन के विचारों को समय के अनुकूल परिवर्तित करो ।**

ब्रिटिश नीतियों के विरुद्ध घोर संघर्ष

उग्रवादियों के शीर्षस्थ पत्र 'कर्मयोगी' (६ अक्तूबर १९०९) ने उदारपंथियों पर व्यंग्योक्ति करते हुए क्रांतिकारी चेतना का सिंहनाद करते हुए इन शब्दों के साथ भविष्यवाणी करते हुए लिखा कि— **"ओ राष्ट्रवादियो ! कायरों से कोई आशा न करो । (उदारवादी) साथियों का शिकार करते गीदड़ कभी भी शेरों का साथ नहीं दे सकते, यद्यपि वे शेरों की अपेक्षा शिकार मरने पर मांस अधिक खा सकते हैं । ओ वीरो ! अपने पैरों पर खड़े हो और अपने कर्त्तव्य का पालन करो ।"**

इस प्रकार तत्कालीन पत्रकारिता के उपरोक्त राष्ट्रवादी पत्रों ने राष्ट्रीय जन-जागरण का सिंहनाद करते हुए जनमानस को उद्वेलित किया । परंतु पत्रकारिता की इस भूमिका में ब्रिटिश राजशाही का प्रकोप, पत्र एवं उसके संपादकों पर कहर बनकर टूटा ।

लार्ड मेटकॉफ तथा बैंटिक ने १८५७ से पूर्व जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भारतीय पत्रकारिता को दी थी— वह पत्रकारिता के नित्य बदलते राष्ट्रीय भावना की संचेतना को देखकर छीन ली गयी ।

सन १८७८ में जब 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' के कड़े कानून भारतीय पत्रकारिता का गला घोटने लगे तो 'हिंदी प्रदीप' (१ अप्रैल १८७८) की संवेदना इस प्रकार मुखर हो उठी— **वर्नाक्यूलर प्रेस के संपादकों को सरकार अशिक्षित बताती है । चूंकि, वे किसी यूनिवर्सिटी के ग्रेजुयेट नहीं हैं । वे कोट-पतलून नहीं पहनते और वे अपनी परंपरा से लगाव रखते हैं ।... यदि शिक्षा का अर्थ सच्चाई, शक्ति और योग्यता से है तो वर्नाक्यूलर प्रेस के संपादक किसी से कम नहीं ।**

पत्रकारिता और पूंजी का गहन विनियोग होने के कारण, अंगरेज सरकार प्रारंभ में उन्हीं पत्रों को आर्थिक सहायता देती थी जो उनकी नीतियों का समर्थन करते थे— या ब्रिटिश सरकार की चाटुकारिता किया करते थे ।

— परमेश्वरी भवन खजांची मुहल्ला, अल्मोड़ा (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गठजोड़ों से सरकार नहीं चल सकती

● एडोल्फ हिटलर

हिटलर की आत्मकथा 'माइन काम्फ' में ऐसे अनेक संदर्भ मिलते हैं, जिनसे राजनीति के स्वरूप, राजनीतिज्ञों के आचरण, संसद की भूमिका, नौकरशाही, मानवीय मूल्यों और राष्ट्रीय भावना की महानता आदि का बोध होता है ।

प्रस्तुत अध्याय 'शूरवीर क्या अकेला, क्या दुकेला' डॉ. एन.एल. मदान द्वारा अनूदित हिटलर की आत्मकथा 'मेरा संघर्ष' से लिया गया है । (इस कृति के प्रकाशक हैं : जगत राम एंड संस, मेन बाजार, गांधी नगर, दिल्ली)

सामान्यतया सहकारी संघ का अभिप्राय ऐसी संस्थाओं का संगठन होता है, जो एक समान और निश्चित विचारधारा के आधार पर कार्य-विशेष को सुगम बनाने के उद्देश्य से परस्पर सहयोग करती हैं । एक सामान्य नागरिक संस्थाओं के द्वारा परस्पर सहकारी संघ बनाने की बात सुनकर इसलिए अत्यंत प्रसन्न होता है, क्योंकि उसे विश्वास होने लगता है कि अंततः एक साझे मंच की खोज कर ली गयी है और अब समान विचारों के लोग सभी आपसी मतभेदों को भुलाकर संगठित रूप में एक साथ खड़े हो सकेंगे । इसके साथ नागरिक का यह भी विश्वास बन जाता है कि एक संगठित मंच के अस्तित्व में आ जाने से अलग-अलग कमजोर पड़ रही छोटी-छोटी संस्थाएं अब इस संगठन से शक्तिशाली बन जाएंगी, परंतु मेरा अनुभव बताता है कि नागरिकों का ऐसा विश्वास अधिकतर गलत ही सिद्ध होता है ।

सभी संस्थाएं यही घोषणा करती हैं कि उनका उद्देश्य समान है और अपने आप में यह बड़ा ही सुखद लगता है कि एक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अनेक संस्थाओं के स्थान पर उनका एक संघ अस्तित्व में आ गया है । प्रारंभ में यह भी दावा किया जाता है कि समस्या-विशेष के समाधान के लिए विभिन्न आंदोलनों का संचालन अब एक संस्था करेगी ।

इस तरह से एक संगठन या संस्थान की स्थापना हो जाती है, जिसका कर्त्तव्य -कर्म वर्तमान में बुराइयों को दूर करना तथा भविष्य में व्यवस्था को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

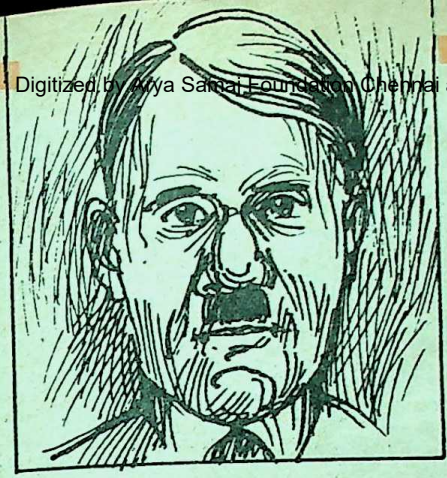

सकारात्मक रूप से बेहतर बनाना घोषित किया जाता है ।

ऐसा संगठन जब एक बार अस्तित्व में आ जाता है तो यह कुछ प्रमुख क्षेत्रों पर अपना एकाधिकार कर लेता है । सामान्यतया आदर्श परिस्थिति यह होती है कि समान उद्देश्य के लिए संघर्ष करने को इच्छुक संस्थाएं अपने आप को उस संगठन के साथ जोड़कर उसकी शक्ति को बढ़ाएं ताकि निश्चित उद्देश्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सके । श्रेष्ठ बुद्धिवाले लोगों से विशेष रूप से यह अपेक्षा होती है कि साझे संघर्ष की समुचित सफलता के लिए अत्यंत जरूरी परिस्थितियों को सुनिश्चित करना है । यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्व है कि एक ध्येय को प्राप्त करने के लिए एक ही आंदोलन की स्थापना उचित है ।

कष्टदायक स्थिति

सिद्धांत के रूप में उपयुक्त प्रतीत होने वाला यह सत्य निम्नोक्त दो स्थितियों से व्यवहार में उपयोगी नहीं बन पाता । प्रथम स्थिति दुःखद है तो दूसरी स्थिति दयनीय है, क्योंकि इसका मूल मानव स्वभाव ही है । तथ्यों की गहराई तक पहुंचने पर मुझे लगता है कि यूं तो हमारी इच्छाशक्ति का उद्देश्य मानव की क्षमता का सर्वोत्तम ढंग से विकास करके समस्या का सही और शीघ्र समाधान ढूंढ़ना है, जिसकी प्राप्ति के लिए हमारी इच्छाशक्ति को सुदृढ़ आधार अपनाने की प्रेरणा और प्रोत्साहन देनेवाले कुछ तत्व विद्यमान हैं ।

दुःखद, परंतु यथार्थ स्थिति यह है कि यह सब कुछ होने पर किसी एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक ही संस्था का संगठन नहीं हो पाता । यह अत्यंत कष्टदायक स्थिति है, परंतु इससे तो इसे नकारा नहीं जा सकता । ऐसा प्रायः क्यों होता है, इसका कारण निम्नलिखित है ।

सामान्यतया संसार में भव्य तरीके से किये जाने वाले सभी कार्य लाखों नागरिकों के दिलों में काफी लंबे अरसे से पनप रही और आंदोलित कर रही किसी उत्कट इच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के अभिव्यक्त रूप होते हैं । हां, यह हो सकता है कि शताब्दियों से किसी एक समस्या का समाधान ढूंढ़ने के प्रयास में लगे और सुदीर्घकाल से असहनीय परिस्थितियों में जीवन बसर करने को विवश मानव समाज को अपनी साझी इच्छा की पूर्ति की कोई संभावना दृष्टिगोचर न होती हो । ऐसी दुःखद स्थिति से स्वयं को मुक्त करने में असमर्थ राष्ट्रों को निस्तेज एवं अशक्त अवश्य माना जाता है, परंतु फिर भी इन देशों में लोगों की इस अथाह शक्ति तथा चिर प्रौढ़ता को अभिव्यक्ति देने के लिए किसी-न-किसी दिन सौभाग्यवश एक ऐसे महापुरुष का जन्म होता है जो अपने लोगों को इस दयनीय स्थिति से उबारने, विवशता की इस कड़वाहट को मिटाने और राष्ट्रीय अस्मिता से मुक्ति दिलाने के रूप में लाखों लोगों द्वारा सुदीर्घकाल से संजोये सपनों को साकार करने में समर्थ होता है ।

महत्त्वपूर्ण सामयिक समस्याओं की मुख्य विशेषता यह होती है कि उन समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने के लिए हजारों का आह्वान किया जा सकता है और बहुत-से लोग चुनौती को स्वीकार करना पसंद भी करते हैं । वस्तुतः प्रकृति भी अधिक लोगों को अवसर देना चाहती है, क्योंकि प्रतियोगिता की स्थिति उपस्थित करके ही प्रकृति समाज को शक्तिशाली तथा समर्थ व्यक्तियों का चुनाव करने का और फिर केवल उन्हें समस्या के समाधान की जिम्मेदारी सौंपने का अवसर जुटाती है ।

यह भी हो सकता है कि बहुत-से लोग सदियों से प्रचलित व्यवस्था से निराश होकर उसे सुधारना चाहते हों । यह भी हो सकता है कि अपनी आत्मा की आवाज को सुनकर दर्जनों लोग अपनी सूझबूझ एवं जानकारी के आधार पर धर्म से संबंधित समस्याओं का उपयुक्त हल परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में निकालने का पक्ष लेकर उसी के अनुरूप अपने आप को नयी विचारधारा के प्रतिनिधि तथा मसीहा के रूप में पेश करते हों या कम-से-कम वे उस समय प्रचलित विश्वासों का विरोध करने में अपने को समर्थ घोषित करते हों ।

दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य

यहां भी प्रकृति का शाश्वत नियम चलता है, अर्थात शक्तिशाली को ही इस महान उद्देश्य को पूरा करने का अवसर सुलभ होता है, किंतु लोग इस तथ्य— योग्यतम को अवसर सुलभ होने— की जानकारी धीरे-धीरे ही पाते हैं । वे अब तो केवल यही जानते हैं कि सामयिक समस्याओं का हल ढूंढ़ने के प्रयास का सभी को समान अधिकार है । लोगों की साधारण बुद्धि यह नहीं समझ पाती कि उनमें से योग्यतम कौन है और प्रकृति ने किसे सर्वाधिक प्रतिभा प्रदान की है, जिसे कि दूसरे लोग समर्थन दे सकें ।

इस प्रकार शताब्दियों तक एक ही उद्देश्य के लिए भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्भाग्यपूर्ण बात यह होती है कि बहुत-से लोग एक ध्येय तक पहुंचने के लिए अलग-अलग तरीकों से संघर्ष करते हैं और प्रत्येक संघर्षकारी को यह भ्रम होता है कि केवल उसका रास्ता ही ठीक है । वस्तुतः दूसरों के विचारों को आदर देना सभी संघर्षकर्ताओं का महान कर्त्तव्य है ।

ढंग से संघर्ष चलाते हैं । एक तो इन सबका उद्देश्य समान होता है और दूसरे, लोग भी उन्हें एक-सा ही समझते हैं ।

सामान्य लोगों की आकांक्षाएं न केवल अस्पष्ट होती हैं, अपितु उनके विचार भी इस प्रकार उलझे हुए होते हैं कि उन्हें वास्तव में ही आदर्शों और यहां तक कि अपनी इच्छाओं की न तो जानकारी होती है और न ही उन्हें उन आदर्शों एवं इच्छाओं को पूरा करने का रंग-ढंग मालूम होता है ।

दुर्भाग्यपूर्ण बात यह होती है कि बहुत-से लोग एक ध्येय तक पहुंचने के लिए अलग-अलग तरीकों से संघर्ष करते हैं और प्रत्येक संघर्षकारी को यह भ्रम होता है कि केवल उसका रास्ता ही ठीक है । वस्तुतः दूसरों के विचारों को आदर देना सभी संघर्षकर्ताओं का महान कर्त्तव्य है ।

विभिन्न दलों तथा धार्मिक संप्रदायों द्वारा समय की पुकार पर संचालित आंदोलन एक-दूसरे से पूरी तरह विलग होकर एक ही उद्देश्य की प्राप्ति का प्रयास करते हैं । यह अलगाव बड़ा ही दुर्भाग्यपूर्ण लगता है, कम-से-कम पहली नजर में तो ऐसा ही लगता है । इसके विपरीत जनसाधारण की समझ से बाहर होने पर भी अभीष्ट यही है कि अलग-अलग तरीकों से अलग-अलग दिशाओं में प्रयास करनेवाले लोग संगठित होकर एक ध्येय को प्राप्त करने में प्रवृत्त हों, किंतु दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं होता, क्योंकि प्रकृति अपने अटल नियम के आधार पर इन विभिन्न समूहों के लिए संघर्ष करने का पृथक-पृथक अवसर जुटाकर विजय पाने में समर्थ योग्यतम का चयन करती है और फिर वही (योग्यतम प्रमाणित हुआ व्यक्ति) आंदोलन को अंतिम ध्येय तक ले जाता है ।

सभी महत्त्वाकांक्षी व्यक्तियों को पूरा अवसर जुटाये बिना सर्वोत्तम का निर्णय कैसे हो सकता है ? अपने को श्रेष्ठ तथा ज्ञानी मानने के भ्रम के कुहासे से ढके और भटके, व्यावहारिक सत्य की अपेक्षा सिद्धांतों से चिपकने वाले पोंगापंथी लोगों पर यदि निर्णय छोड़ दिया जाए तो निश्चित है कि अर्थ का अनर्थ हो जाएगा । वस्तुतः प्राप्त सफलता ही तो किसी कार्य के औचित्य का सही और अंतिम मापदंड होती है ।

इस तरह से स्पष्ट है कि एक लक्ष्य पर पहुंचने के लिए संघर्षकारियों के विभिन्न

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समूह अलग-अलग रास्ते अपनाते हैं और उन्हें जैसे ही पता चलता है कि उनके अतिरिक्त कुछ और लोग भी इसी तरह के प्रयास कर रहे हैं तो उन्हें ध्यान से सोचना पड़ता है कि क्या उन्होंने श्रेष्ठतम मार्ग अपनाया है ? क्या कोई दूसरा सरल मार्ग नहीं खोजा जा सकता है ? क्या ध्येय को शीघ्रता से पाने के लिए अपने प्रयासों को किस प्रकार तेज किया जा सकता है ?

इस तरह प्रतिस्पर्धा की स्थिति उत्पन्न होने पर ही व्यक्ति गहन चिंतन की ओर प्रवृत्त होता है । वस्तुतः मानव जाति ने हमेशा भूतकाल की गलतियों से सीखकर ही सभ्यता के क्षेत्र में विकास किया है । कभी-कभी ऐसा होता है कि व्यक्ति दुःखद तथा कष्टप्रद प्रतीत होनेवाली स्थितियों से अपने को अलग कर देता है, जबकि प्रारंभ में कष्टप्रद लगने वाली इन स्थितियों से ही अंतिम परिणाम पाने की आशा की जा सकती है । स्पष्ट है कि व्यक्ति के कष्टप्रद स्थितियों से हटने का अर्थ अनजाने ही संगठन का सही रास्ते से भटकाव होता है ।

वस्तुतः प्रकृति ने भले ही शताब्दियों का समय लिया हो, परंतु वास्तव में ही श्रेष्ठ एवं उत्कृष्टतम को श्रेष्ठ घोषित किया । यह सब हमेशा ही ऐसा होता रहेगा । यदि एक ही उद्देश्य को प्राप्त करने में बहुत-से लोग जुटते हैं तो इसमें किसी प्रकार के खेद का अनुभव अनुचित है, क्योंकि इसी माध्यम से तो अत्यंत शक्तिशाली और तीव्रतम की पहचान होगी और फिर विजय का मार्ग प्रशस्त होगा ।

अब इस तथ्य का दूसरा पक्ष यह है कि राष्ट्रों के जीवन में समान आदर्शोंवाले अनेक दल एक ही उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बाहरी तौर पर विभिन्न तरीके अपनाते हैं । विभिन्नता प्राकृतिक न होकर एक प्रकार से दयनीय स्थिति है । वस्तुतः इसका कारण दूसरों से सफलता के श्रेय को छीनने की मानवीय ईर्ष्या और द्वेष-जैसे दुर्गुण हैं । दुर्भाग्य से ये मानवीय बुराइयां ही अक्सर प्रबल होकर विभिन्न संघों की स्थापना करती हैं ।

महापुरुष की भूमिका

जब कोई महापुरुष अपने लोगों के कष्ट को गहराई से समझने के बाद उसके उचित उपचार की और लागू करने की सही विधि की खोज कर लेता है तो साधारणतया लोग उसे विशिष्ट व्यक्ति मानकर उसके अनुयायी बन जाते हैं । सामान्यतया बाहर से उदासीन दिखनेवाले ये महापुरुष वास्तव में भीतर से चोंच में ग्रास रखने वाले साथी पर कड़ी नजर रखनेवाले और साथी की पकड़ कमजोर पड़ते ही झपटकर उससे ग्रास छीन लेनेवाले कौओं के समान हैं । इन्हें तो सदैव माल खाने से प्रयोजन रहता है । ये तब तक एक संघ में रहते हैं जब तक इन्हें लगता है कि यदि नये रास्तों की तलाश शुरू कर दी तो मूर्खों की भीड़ कान खड़े कर लेगी और सड़क के किनारे खड़े होकर उन्हें घूरना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामचलाऊ और कमजोर दलों का गठबंधन शक्तिशाली नहीं बन सकता, बल्कि उलटे ऐसा अवसर और बहुत बार होता है कि कमजोर दल के साथ जुड़ने पर एक शक्तिशाली संघ क्षीण होने लगता है । कमजोरों के गठबंधन से शक्ति के जन्म लेने की सोचना मूर्खता है ।

शुरू कर देगी, परंतु जिस क्षण ही उन्हें लूट के माल का स्थान मालूम हो जाता है और उसे प्राप्त करने के ढंग की जानकारी हो जाती है, उसी क्षण वे शीघ्र मंजिल तक पहुंचानेवाले नये रास्तों की तलाश शुरू कर देते हैं ।

इस तरह के अवसरवादी लोग किसी नये संघ की स्थापना और उसके कार्यक्रम को निश्चित कर लेने के रूप में सामने आ जाते हैं और फिर दावा करते हैं कि वे भी उसी उद्देश्य के लिए संघर्ष कर रहे हैं । इसका अर्थ यह कदापि नहीं होता है कि वे इस संगठन की मुख्यधारा में ईमानदारी से शामिल होने के इच्छुक हैं और इसकी आवश्यकता तथा महत्ता स्वीकार करते हैं । हां, इसका अर्थ यह हो सकता है कि वे इसके कार्यक्रम को चुराकर एक नये दल की स्थापना करना चाहते हैं । वस्तुतः ऐसा करने में वे किसी प्रकार की लज्जा अनुभव नहीं करते । वे तो जनसाधारण को यह विश्वास दिलाने का प्रयास करते हैं कि इस प्रकार के दल की स्थापना के बारे में वे काफी समय से सोच ही रहे थे और कई बार जनता से अपमानित होने के बदले उल्टे वे अपने उद्देश्यों में सफल हो जाते हैं । दूसरे के झंडे के चिह्नों की नकल करना और एक अलग से समूह बनाकर संपूर्ण अनुकृति को मौलिक कल्पना का नाम देना एक निर्लज्ज धृष्टता है । इस प्रकार धृष्टता करनेवाले वही लोग थे जो आयोजित सभाओं को भंग किया करते थे । अनुभव से देखा गया है कि ये लोग संगठन तथा एकता की बजाय विभाजन में अधिक विश्वास रखते हैं । हां, विरोधी को शक्तिशाली पाते ही वे एकता और संगठन की चर्चा अवश्य करने लग जाते हैं । इस प्रकार के व्यवहार के कारण ही देशभक्ति कलंकित होती है ।

कमजोर दलों का संगठन शक्तिशाली नहीं

वस्तुतः नये-नये दलों और नित्य नये सहकारी संघों की स्थापना की प्रवृत्ति को हमें उस समय की समस्या ही समझना चाहिए, किंतु इस प्रचलन पर विचार करते समय हमें निम्नलिखित मौलिक तथ्यों को नहीं भूलना चाहिए ।

कामचलाऊ और कमजोर दलों का गठबंधन शक्तिशाली नहीं बन सकता, बल्कि उलटे ऐसा अवसर और बहुत बार होता है कि कमजोर दल के साथ जुड़ने पर एक शक्तिशाली संघ क्षीण होने लगता है । कमजोरों के गठबंधन से शक्ति के जन्म लेने की सोचना मूर्खता है और अनुभव से सिद्ध हुआ है कि प्रायः बहुसंख्यक लोग मूर्ख एवं

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण ही होते हैं। इस तरह के गठबंधन से अंत में नेतृत्व मूर्ख एवं कमजोर लोगों के हाथ में आ जाता है और समर्थ एवं श्रेष्ठ व्यक्ति पीछे पड़ जाते हैं। परिणाम स्पष्ट है— अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति पीछे जा पड़ती है। वस्तुतः इस प्रकार के गठजोड़ प्राकृतिक विकास की प्रक्रिया के भी विपरीत सिद्ध होते हैं, क्योंकि जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संघर्ष शुरू किया जाता है, यह संघर्ष उसकी प्राप्ति को सुगम बनाने की बजाय उसके रास्ते में रुकावटें डालता है।

किसी आंदोलन का दूसरे दलों के साथ गठजोड़ किन्हीं विशेष समस्याओं के संदर्भ में व्यावहारिकता की दृष्टि से उपयुक्त हो सकता है। उदाहरणार्थ, दोनों एक ही मंच से जनता को संबोधित कर सकते हैं, किंतु ऐसा केवल थोड़े तथा सीमित समय के लिए ही हो सकता है। अपने ध्येय की प्राप्ति के अवसर को न खोने के इच्छुक दल को किसी अन्य गठजोड़ को स्थायी रूप नहीं देना चाहिए, क्योंकि किसी संगठन का अन्य दलों के साथ घुलमिल जाने का अर्थ उसका अपने अस्तित्व को सदा के लिए समाप्त करना ही होगा। कारण स्पष्ट है कि इसकी संघर्ष करने की शक्ति क्रमशः क्षीण हो जाएगी और विकास की प्रक्रिया शिथिल पड़ जाएगी। परिणाम यह होगा कि न तो यह अपने विरोधियों पर काबू पा सकेगा और न ही अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल हो सकेगा।

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि विश्व में गठबंधनों से कभी कोई बड़ी उपलब्धि नहीं हुई है, बल्कि उपलब्धियां तो केवल व्यक्ति विशेष की योग्यता से ही संभव हुई हैं। गठजोड़ों से प्राप्त की गयी सफलताओं में विघटन के कीटाणु तो शुरू से ही घुसे होते हैं, जिससे उन्हें न केवल भविष्य के लिए सुरक्षित करना कठिन होता है, अपितु यहां तक कि कठिनता से अर्जित सफलता को वर्तमान में बचा पाना भी संभव नहीं होता। विश्व में जितने भी महान् परिवर्तन हुए हैं, जितनी महान क्रांतियां आयी हैं, वे गठबंधनों के कारण नहीं, अपितु विशिष्ट व्यक्तियों की सामर्थ्य के कारण हुई हैं। गठजोड़ों की टूटन तो उनके अंदर ही छिपी रहती है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जनराज्य की स्थापना देशभक्त होने का दम भरनेवाले दलों के साथ गठजोड़ तथा समझौते से नहीं, बल्कि दूसरों को अपने साथ लेकर चलनेवाले और निरंतर संघर्ष करने की लौह इच्छा रखनेवाले संगठन द्वारा ही की जा सकती है। •

"जिसने आपको क्रुद्ध कर दिया समझिए उसने आपको पराजित कर दिया।"

—प्रसिद्ध आइरिश-आस्ट्रेलियन नर्स एलिजबेथ केनी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

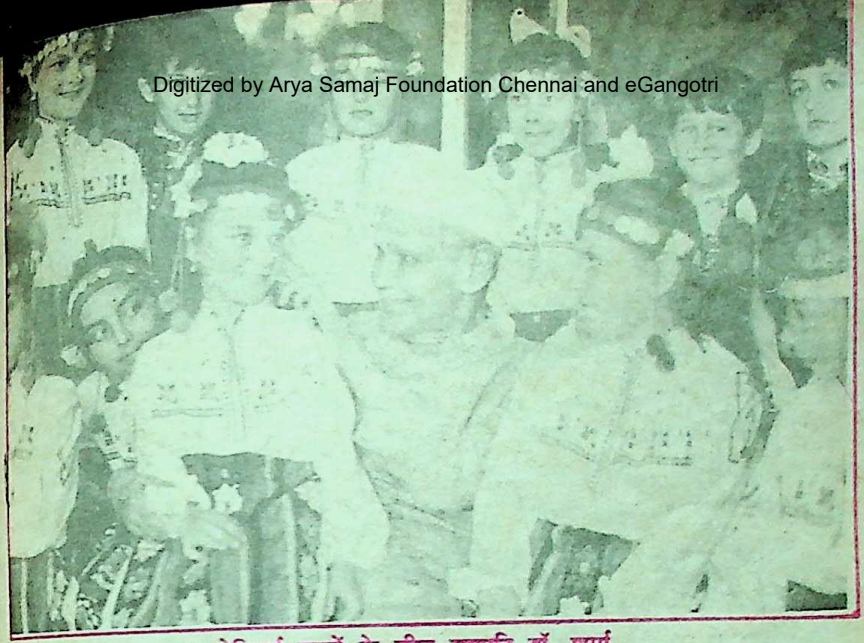

बलगेरियाई बच्चों के बीच राष्ट्रपति डॉ. शर्मा

संदर्भ राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा

एक यात्रा की अंतर्यात्रा

• शंकर दयाल सिंह

२६ मई, १९९४, बुद्ध पूर्णिमा की रात के दूसरे दिन विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र भारत के राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने बलगारिया और रोमानिया की यात्रा प्रारंभ की। सात बजे प्रातः जिस समय राष्ट्रपतिजी ने विदाई की औपचारिकताओं के बाद एयर इंडिया के विशेष विमान 'नर्मदा' पर पांव रखा, उस समय भी पूर्णिमा का चांद आसमान के किसी छोर से उन्हें निहार रहा था।

जहाज जब भारत की सीमा पार कर पाकिस्तान के ऊपर से उड़ान भर रहा था, तब मेरे मन में कई बातें आयीं। पहली बात यह कि पिछले वर्ष १३ से २६ जुलाई तक जब राष्ट्रपतिजी ने छह-सात देशों की यात्रा की थी, तब उनके साथ एक मंत्री और तीन संसद सदस्य थे। दूसरी बात यह कि राष्ट्रपतिजी की यात्रा खानापूर्ति या रस्म अदायगी न होकर राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक सब आयामों को छूती है। तीसरी बात यह कि प्रतिनिधिमंडल में शामिल हर छोटे-बड़े सदस्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का वह व्यक्तिगत आत्मविश्वास बढ़ाते हैं।

इस बार राष्ट्रपतिजी के साथ दोनों देशों की यात्रा पर बहुत बड़ा काफिला है। चार केंद्रीय मंत्री और नौ सांसद, बीस-पच्चीस बड़े अधिकारी, इतने ही मीडिया के प्रतिनिधि और देश के तीन बड़े उद्योगपति। इस प्रकार कुल मिलाकर ८०-८२ लोगों का काफिला जिनमें से हर किसी की अपनी उपयोगिता है।

बदलता हुआ बल्गारिया

आज की दुनिया राजनीति से भी बढ़कर आर्थिक या व्यापारिक हो गयी है, अतः भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के रहते हुए भी सर्वश्री बसंत कुमार बिड़ला, गोविंद हरि सिंघानिया और डा. बंशीधर का प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया जाना इस बात का प्रतीक है कि भारत सरकार अपनी उदारीकरण तथा निजीकरण की नीति को अधिक से अधिक प्रश्रय दे रही है। बल्गारिया की वर्तमान स्थिति भी कुछ ऐसी ही हो गयी है। उद्योग तथा कृषि पर निर्भर यह देश सोवियत संघ का अनुयायी रहा, लेकिन पिछले दिनों यूरोप के अन्य साम्यवादी देशों के समान इसकी भी व्यवस्था चरमरा गयी तथा साम्यवाद के केंचुल को इसने उतार फेंका। चार दशकों के बाद १९९० में यहां पहला स्वतंत्र चुनाव हुआ तथा नयी व्यवस्था कायम हुई।

हवा में भी विश्वास

ईरान और तुर्की के ऊपर से जब हमारा जहाज उड़ रहा था, तब राष्ट्रपतिजी अपने कक्ष से निकलकर हम सब से मिलने आये हैं। आधे-पौने घंटे तक मनोविनोद की अनेक बातें होती रहीं। हर किसी के पास खड़े होकर वे उनका हाल-चाल लेते रहें। यह पारिवारिकता उनके व्यक्तित्व का अंग है।

इधर प्रतिदिन चार से आठ किलोमीटर टहलकर डा. शंकर दयाल शर्माजी ने अपना वजन काफी कम किया है। उनकी फुर्ती इन दिनों देखने योग्य है।

भारतीय सलवार और साड़ियां

साढ़े छह घंट की सीधी उड़ान तय कर सोफिया हवाई अड्डे पर हमारा जहाज उतरा तो राष्ट्र की गरिमा को समेटे, भूरे रंग की शेरवानी तथा सफेद चूड़ीदार पायजामा और गांधी टोपी पहने डा. शंकर दयाल शर्मा ने लाल कालीन पर अपने पांव रखे तो सोफिया की ताजी हवा ने उनकी अगवानी की। अनेक भारतीय परिवार भी इस अवसर पर हवाई अड्डे पर स्वागतार्थ खड़े थे। साड़ियां, सलवार-कुरतों तथा शेरवानी-चूड़ीदार पायजामा सोफिया हवाई अड्डे को भारतीय परिवेश दे रहे थे।

राष्ट्रपति का हिंदी में भाषण

राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्माजी ने इस धरती पर अपना पहला भाषण हिंदी में देते हुए जब कहा, "महामहिम राष्ट्रपति जैलेव, मादाम जेलेवा महामहिमगण तथा विशिष्ट अतिथिगण, आपके हार्दिक आतिथ्य-सत्कार तथा मेरे देश के प्रति व्यक्त की गयी आपकी भावनाओं से हम अभिभूत हैं। हम एशिया से आये हैं, जिसके बाल्कन क्षेत्र से दो हजार वर्ष पुराने संपर्कों की विरासत रही है। हमें इस बात का एहसास है कि हम ऐसी धरती पर पहुंचे हैं, जहां स्लोवोमो सभ्यता जन्मी थी।"

यह बल्गारिया की राजधानी सोफिया में वहां के राष्ट्रपति जेलेव द्वारा दिये गये रात्रि भोज के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्माजी ने इस धरती पर अपना पहला भाषण हिंदी में देते हुए जब कहा, ''महामहिम राष्ट्रपति जैलेब, मादाम जेलेवा महामहिमगण तथा विशिष्ट अतिथिगण, आपके हार्दिक आतिथ्य-सत्कार तथा मेरे देश के प्रति व्यक्त की गयी आपकी भावनाओं से हम अभिभूत हैं । हम एशिया से आये हैं, जिसके बाल्कन क्षेत्र से दो हजार वर्ष पुराने संपर्कों की विरासत रही है । हमें इस बात का एहसास है कि हम ऐसी धरती पर पहुंचे हैं, जहां स्लोवोमो सभ्यता जन्मी थी ।''

अवसर पर हिंदी में दिये गये उनके भाषण का अंश है । बलगारिया में हर जगह, हर अवसर पर वे अपनी ही भाषा का प्रयोग करते रहे । बलगारिया के राष्ट्रपति ने अपना भाषण अपनी भाषा में दिया । ऐसे परिवेश में जब अपने महामहिम राष्ट्रपति ने बलगारिया के राष्ट्रपति के लिए महामहिम शब्द से भाषण शुरू किया तो मुझे वातावरण में अपनत्व और मधुरता घुली मिली लगी । प्रतिनिधिमंडल के हर सदस्य को इस बात से संतोष हुआ कि अपनी राष्ट्रभाषा को उचित सम्मान दे कर राष्ट्रपति ने राष्ट्र की गरिमा बढ़ा दी, वरना अनेक देशों की यह धारणा रही है कि एक विदेशी भाषा (अंगरेजी) के चंगुल से हम अपने को मुक्त नहीं कर सकते । जबकि राष्ट्रभाषा और भारतीय संस्कृति को आगे रखे बिना हम विदेशों में अपना सिर ऊंचा नहीं रख सकते । राष्ट्रपति डा. शर्मा अपने पद के कारण ही नहीं, अपने व्यक्तित्व की शालीनता, विद्वता और भारतीयता के कारण भी इन देशों में सदा याद किये जाएंगे । २७ मई, १९९४ को राष्ट्रपति डा. शर्मा ने बलगारिया की राष्ट्रीय असेंबली को भी हिंदी में संबोधित किया तथा संसद के अध्यक्ष को पं. जवाहरलाल नेहरू की एक कांस्य प्रतिमा भेंट की । हिंदी, अंगरेजी, संस्कृत की पुस्तकों का सेट भी दिया ।

राष्ट्रपति सहित भारतीय शिष्टमंडल को 'वोयाना' में ठहराया गया । शहर की सीमा से बाहर पश्चिमी छोर पर पूरा परिसर हरियाली से पटा है, बगल में दोया पहाड़ी श्रृंखला । फूल, पेड़, लता-गुल्म तथा प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही मनुष्य की कारीगरी, सब यहां एक स्थल पर देखने को मिल रहे हैं । पूरा परिसर पूर्णतया सुरक्षित तथा प्राकृतिक सुषमा से सुसज्जित है । राजकीय भवन, राष्ट्रपति निवास, कांफ्रेंस हाल, अतिथि-गृह, अलग-अलग बंगले, वीथियां, सेतु, लॉन, वास्तुकला तथा चित्रकला चप्पे-चप्पे को सुरभित बनाए हुये है ।

किसी जमाने में बलगारिया सोवियत संघ का प्रवेश द्वार था । आज भी वह प्रभाव परिलक्षित है । आज भी यहां रूसी भाषा जाननेवालों की कमी नहीं है । जिस 'वोयाना' में हमें ठहराया गया वह कभी साम्यवादी देशों का केंद्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारस्थल थी ।

यूरोप के अनेक देशों में साम्यवाद के विरुद्ध जनजागरण तथा सोवियत संघ का विघटन कुछ ऐसी बातें रही, जिसने बलगारिया को भी झटका दिया तथा यहां भी बदलाव आया ।

राष्ट्रपतिजी ने जब महामहिम शब्द से अपने भाषण की शुरुआत हिंदी में की तो मेरी बगल में बैठी बलगारिया की एक सांसद धीरे से टूटी-फूटी अंगरेजी में बुदबुदाई—आपके, महामहिम राष्ट्रपति ने हिंदुस्तानी भाषा में बोलकर बहुत अच्छा किया हमारे लिए तो अंगरेजी भी अपरिचित है । हम बलगारियन से समझेंगे ।

विदेशियों के बीच ऋग्वेद

मेरे कानों में रह-रहकर राष्ट्रपति डा. शर्मा का एक-एक वाक्य मूर्तिवान हो रहा था, "मैं यहां ऋग्वेद की संस्कृत में कुछ पंक्तियां उद्धृत करना चाहूंगा, जो मानव जाति का प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य है । ये पंक्तियां प्रतिनिधि संस्थानों के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक हैं तथा हमारी साझी विरासत हैं ।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम ।
समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः
सह चित्तम एषाम् ।
समानं मंत्रम अभि मंत्रये ब.
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानम् अस्तु वो मनो यथा वः ससहासति ।।

(एक साथ बैठो, एक साथ वार्ता करो, एक जैसा सोचो । तुम्हारे उद्देश्य समान हों, समिति समान हों, चिंतन समान हों) मैं आपको शुभकामनाएं देता हूं । इस सम्मानीय असेम्बली को संबोधित करने का जो सम्मान आपने मुझे दिया, उसके लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं ।

भारतीयता से ओत-प्रोत और हृदय से निकले हिंदी तथा संस्कृत के इन शब्दों को यदि कोई अंगरेजी में प्रकट करना चाहता तो वह संभव नहीं था ।

विद्वानों के बीच राष्ट्रपति

सोफिया-बलगारिया की राजधानी । तारीख २८ मई' ९४ । समय दिन के १० बजे । शहर के कोलाहल से दूर प्रकृति की गोद में बसा 'बोयाना' । मंच पर भारत के राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा बैठे हैं । हॉल खचाखच भरा है, उन लोगों से जिन्हें सम्मानपूर्वक राष्ट्रपति ने मिलने और बातें करने हेतु बुलाया है । ये है बलगारिया के विद्वान, कलाविद, अध्येता, शोधकर्ता, लेखक, पत्रकार, इतिहासविद तथा प्राच्य साहित्य और भारत के प्रति श्रद्धा और आस्था रखनेवाले लोग । ये भारत से जुड़ना चाहते हैं और किसी न किसी रूप से जुड़े हुए हैं । भारतीय संस्कृति, भाषा, साहित्य, इतिहास तथा भारत के लोग इनके प्रिय विषय हैं ।

इनमें तीन ऐसे भी हैं जो भारत में राजदूत रह चुके हैं और अपने परिचय क्रम में पं. नेहरू, इंदिरा गांधी तथा राजीव गांधी की चर्चा करते हैं । इनमें कई ऐसे हैं, जिन्होंने संस्कृत, हिंदी तथा उर्दू की अनेक पुस्तकों का बलोरियन भाषा में अनुवाद किया है । कई प्रोफेसर हैं, जो सोफिया विश्वविद्यालय में भारतीय इतिहास और साहित्य पढ़ा रहे हैं । कई ऐसे हैं, जो भारत में रह कर हिंदी सीखकर आये हैं । इन बुद्धिजीवियों के कारण बलगारिया में भारत के प्रति एक उत्सुकता जगी है ।

बलगारियावासी भी हिंदी में बोले

यहां की नयी पीढ़ी हिंदी पढ़ना चाहती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भारत से जुड़ना चाहती है । राष्ट्रपति से परिचय-क्रम में सभी उपस्थित लोग स्वयं अपना परिचय दे रहे हैं । इन लोगों में १८ व्यक्ति ऐसे निकले, जिन्होंने अपना परिचय हिंदी में दिया ।

जैसे गलीन सोकोलोवा नामक लड़की ने हिंदी में कहा, "माननीय राष्ट्रपति महोदय, मैं यहां सोफिया यूनिवर्सिटी में पढ़ती हूं । मेरा नाम गलीन सोकोलोवा है । मैं भारत से प्यार करती हूं । मैं खूब हिंदी पढ़ना चाहती हूं । मैंने हिंदी विषय लिया है ।"

भारतीय राजदूत का अंगरेजी प्रेम

जो भारत से जुड़ना चाहते थे, राष्ट्रपतिजी उन्हें जोड़ना चाहते थे, लेकिन इन प्रसंगों का सबसे दुखद परिच्छेद यह था कि बैठक का संचालन कर रहे भारतीय राजदूत **श्री बेनी प्रसाद अग्रवाल, जो इलाहाबाद के रहनेवाले हैं, उनके मुंह से एक शब्द भी हिंदी का नहीं निकला । न तो 'नमस्कार' और न 'धन्यवाद । मानो हिंदी में बोलना, बातें करना तौहीन या राजनीतिक मर्यादा के खिलाफ हो, जो बल्गारियावासी उनसे टूटी-फूटी हिंदी में बातें कर रहे थे, उनसे भी वे अंगरेजी में ही बातें कर रहे थे । यह मानसिकता हमें कहां ले जाएगी ? राजदूत महोदय को शर्म भी नहीं आयी कि उनके देश के राष्ट्रपति हिंदी में बोल रहे हैं ।**

राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्माजी के साथ उनकी पत्नी श्रीमती विमला शर्मा तथा नातिन कुमारी अवंतिका माकन और पौत्री पूजा शर्मा थीं । परिवार के सदस्य की भांति उनके निजी सचिव श्री जे. एन. कश्यप छाया के समान राष्ट्रपतिजी के साथ रहते हैं ।

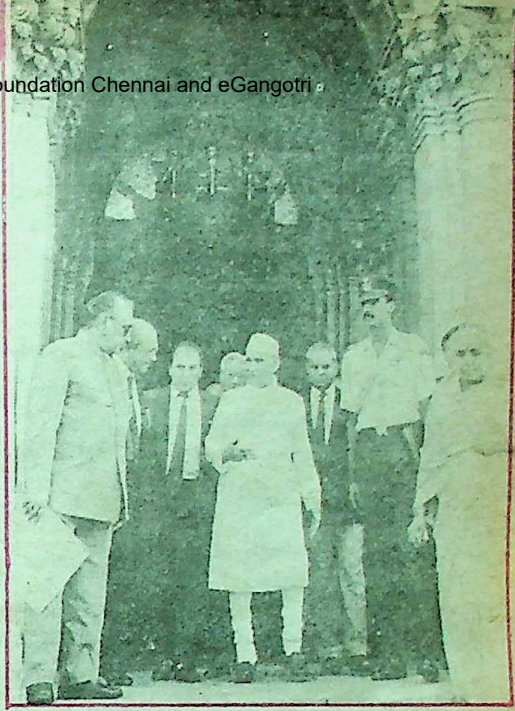

सोफिया स्थित एलेक्जेंडर नेवस्की स्मारक चर्च में राष्ट्रपति डॉ. शर्मा । एकदम दायें श्रीमती विमला शर्मा

लोक नृत्यों में समानता

राष्ट्रपतिजी के सम्मान में रात्रि भोज का आयोजन वारना के गवर्नर ने किया था । बल्गारिया के कलाकारों ने यहां दो घंटे तक लोकनृत्य तथा लोकगीतों में हमें डुबोये रखा । विचित्र समानता है इनके लोकनृत्य तथा लोकगीत और भारत के लोकनृत्य और लोकगीतों में । नृत्य में जब-तब भांगड़े की टनकार तथा गरवा की झंकार दिखायी देती थी, वहीं कई लोकगीतों में पूर्वी भारत के ग्रामीण परिवेश में गाये जानेवाले झूमर, सोहर, चैता, होली तथा छठगीतों की मधुर ध्वनि गूंजती थी । वहां के लोकजीवन में और इन कार्यक्रमों में जिप्सियों का बहुत बड़ा योगदान है । कहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि ये जिप्सी मूलरूप से भारतीय हैं ।

सच में वारना का सौंदर्य ही ऐसा है जो अकवि को कवि तथा अनाड़ी को भी चित्रकार-छविकार बना दे । लेकिन सब होते हुए भी जहां हम ठहराये गये हैं, वह एक कैदखाना ही है, जहां से बाहर निकलना कठिन और बाहर निकल गये तो अंदर आना मुश्किल । भाषा एक अलग समस्या है—न ये अंगरेजी जानते हैं न हिंदी और न हम बलोरियन अतः दुभाषिये के बिना एक कदम चलना मुश्किल ।

गोल्डर्न रिसार्ट पहुंचने पर बलगारियन बच्चों ने परंपरागत ढंग से गाना गाकर तथा फूल देकर उनका स्वागत किया । राष्ट्रपति अपने पूरे दल के साथ लगभग एक घंटा होटल आस्टेरिया में बैठे, जहां उनके स्वागत में केक काटा गया तथा वारना के गवर्नर और उनकी पत्नी ने अगवानी की । चारों ओर सुरक्षा की व्यवस्था के बावजूद पर्यटकों की भीड़ भारत के राष्ट्रपति की एक झलक लेने को उतावली के साथ आगे-पीछे होने लगी । कहीं किसी ने अपनी दूरबीन हमारी ओर तान दी, तो कहीं कैमरे में राष्ट्रपतिजी को कैद करने की होड़ लग गयी । ऐसे क्षणों में डा. शंकर दयाल शर्मा अनौपचारिक हो जाते हैं । उन्होंने बलगारियन बच्चों को तथा होटल के बेयरों को भरपूर 'गिफ्ट' दिये जो भारत के खादी के कागजों में पैक तथा तिरंगे रिबन में बंद कर आये थे ।

बुखारेस्ट में मध्याह्न का सूर्य

बलगारिया की यात्रा समाप्त कर हम ३० मई '९४ को जब रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट के हवाई अड्डे पर उतरे तो मध्याह्न सूर्य ने हमारी अगवानी की । हवाई अड्डे से राष्ट्रपतिजी अपने काफिले के साथ राष्ट्रपति-निवास काटोसेनी पैलेस पहुंचे जहां रोमानिया के राष्ट्रपति श्री इबान इल्यूसू और उनकी पत्नी ने डा. शंकर दयाल शर्मा और श्रीमती विमला शर्मा का स्वागत किया ।

डाक्टरेट की मानद उपाधि

इस बीच डा. शंकर दयाल शर्माजी ने रोमानिया की संसद को संबोधित किया । रोमानिया के भारत प्रेमियों और विद्वानों से मुलाकात, बात की और बुखारेस्ट विश्वविद्यालय ने उन्हें मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की जहां राष्ट्रपतिजी का विद्वतापूर्ण भाषण हुआ।

चशेस्कू बर्बरता का शिकार रोमानिया

क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से रोमानिया बलगारिया से बड़ा देश है । आबादी लगभग ढाई करोड़ है, जबकि बलगारिया की आबादी एक करोड़ से भी कम । रोमानिया पिछले दिनों चशेस्कू के बर्बरतापूर्ण कारनामों के कारण समाचारों की सुर्खिया में रहा ।

राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा का गांधीवादी व्यक्तित्व तथा उनकी भारतीय पोशाक वहां की उत्सुकता और चर्चा का विषय रही । प्राच्य विद्वानों से यहां भी उन्होंने लंबी बातचीत की और उन्हें भगवान बुद्ध की मूर्ति के साथ ही पुस्तकों का सैट भी भेंट में दिया । मानना पड़ेगा कि भारतीय संस्कृति तथा इतिहास हर किसी को अपनी ओर आकृष्ट करता है और राष्ट्रपतिजी ने अपने भाषणों में हर जगह इस तथ्य का उद्घाटन किया ।

१५, गुरुद्वारा रकाब गंज रोड
नयी दिल्ली-११० ००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

सकलांग

● सुधा

वे हमारे गांव के पढ़े-लिखे लोगों में एक थे। इनका असली नाम मुझे अब तक नहीं मालूम। लोग उन्हें लंगड़ा मास्टर कहते थे। गांव में जिसका जो रिश्ता था, वह उसी में लंगड़ू लगा देता था। पुकारने की कितनी बड़ी सुविधा थी— लंगड़ू भाई, लंगड़ू चाचा।

आजादी की लड़ाई में भी वे अपनी बैसाखी लिये-दिये ही कूद पड़े थे। उन्हें मार भी लगी थी लेकिन जेल नहीं गये थे। उन्हें छोड़ दिया गया था। 'बेकार छोड़ दिया। जेल जाते तो स्वतंत्रता सेनानी कहाते', उनके हितैषी तरस खाते तो वे मुसकराकर रह जाते थे।

'अरे, जेल में भी उन लोगों को मेहनत करनेवाला चाहिए था। ऐसे अपाहिज को ले जाकर कोई क्या करता ? अंगरेज कोई ऐसे ही राज चलाता था।' यदुनाथ सिंह उनको मास्टर नहीं 'मस्टरवा' कहते थे।

नागेसर राय की यदुनाथ सिंह से पटती नहीं थी सो मास्टर साहब का पक्ष लेकर बोले, 'इन्हीं लूले-लंगड़ों ने आखिर खदेड़ दिया कि नहीं अंगरेजों को ? अब कराते रहें मशक्कत।'

'इह ! अंगरेज तो अपने मन से चले गये।' यदुनाथ सिंह भी पढ़े-लिखे हैं। इतिहास बखान सकते हैं। उस समय देश की क्या हालत थी इस पर खूब बोल सकते हैं। वे किसी भी विषय पर बोलते हैं— भगवान पर भी। कभी किसी से बहस में हारने लगते हैं तो तुरंत बात को परमब्रह्म की ओर मोड़ देते हैं। वे लोगों पर अपनी बात का वजन तौलते हैं और तब तक कहते रहते हैं जब तक श्रोता उठने को विकल न हो जाएं।

'पत्ते-पत्ते में भगवान बसता है। कोई काम बिना उनकी इच्छा के नहीं होता।'

'लेकिन भइये। आदमी भगवान के भरोसे बैठा नहीं रहता। कर्त्तव्य तो करना ही पड़ता है।' मास्टर साहब अपना जीवन सिद्धांत बोल गये।

यदुनाथ सिंह तड़प उठे, 'कैसा कर्त्तव्य ? जैसा मनुष्य ? सब तृणवत है। यह संसार भी संपूर्ण सृष्टि में एक कण के समान है।' चुप्पी साधे श्रोताओं के बीच एक यदुनाथ सिंह विजयी वक्ता सिद्ध होते हैं। मास्टर साहब

बहनें ! बिना पढ़ी-लिखी। पिता से विरासत में मिले ईर्ष्या-द्वेष से बोझिल। मां की तरह गला फाड़-फाड़कर बोलनेवाली लड़कियां जब भात खा-खाकर बात की बात में लंबी-तगड़ी होकर सामने खड़ी हो गयीं, तब मूरख मां भी बेटी के हाथ पीले करने के लिए पति को कुरेदने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा देर नहीं बैठ पाते, क्योंक उनके छोटे बेटे का इम्तहान है । वह सबक पूरा कर उनकी राह देख रहा होगा ।

'दूरजी, लड़के को अपने जैसा बनाएगा क्या ? पढ़कुआ मास्टर । अरे बनने दीजिए जमाने की तरह । उ क्या कहता है ? हिप्पी ।'

मास्टर साहब मुसकराते हैं । बैसाखी उठाते हैं और घर की ओर चले जाते हैं—

खट-खटाक ।

मास्टर साहब का बड़ा बेटा इतना तेज निकलेगा किसी को अनुमान न था । वह तो आई.पी.एस. में चुना गया ।

'बड़ा घुन्ना है साला । किसी को गमने नहीं दिया और तरे-तरे खानदान को तार दिया ।' यदुनाथ सिंह खिसिया गये । 'भगवान है लेकिन उसको भी जगह-कुजगह नहीं बुझाता है । हमें आई.ए.एस. तो नहीं न हो सका ।'

यदुनाथ सिंह का बड़ा बेटा मैट्रिक फर्स्ट डिवीजन से पास हुआ था तो काली स्थान में पाठा पड़ा था । लेकिन वह इंटर में फेल कर गया । दरअसल इंटर वाले सेंटर में भारी खचड़ा सेंटर-सुपरिंटेंडेंट आ गया था । गार्जियन तो क्या किसी चिड़िया को भी भीतर नहीं जाने दिया । और यह क्या कोई 'मास्टर-उस्टर' का बेटा था कि अपने से लिख लेता । गड़बड़ा गया । यदुनाथ सिंह की स्त्री एक दूसरा खंसी टेब कर रखे हुई थी लेकिन पास ही न हुआ । खैर बकरी का बेटा तो बचा ।

खुद यदुनाथ सिंह पढ़कर पास हुए थे.

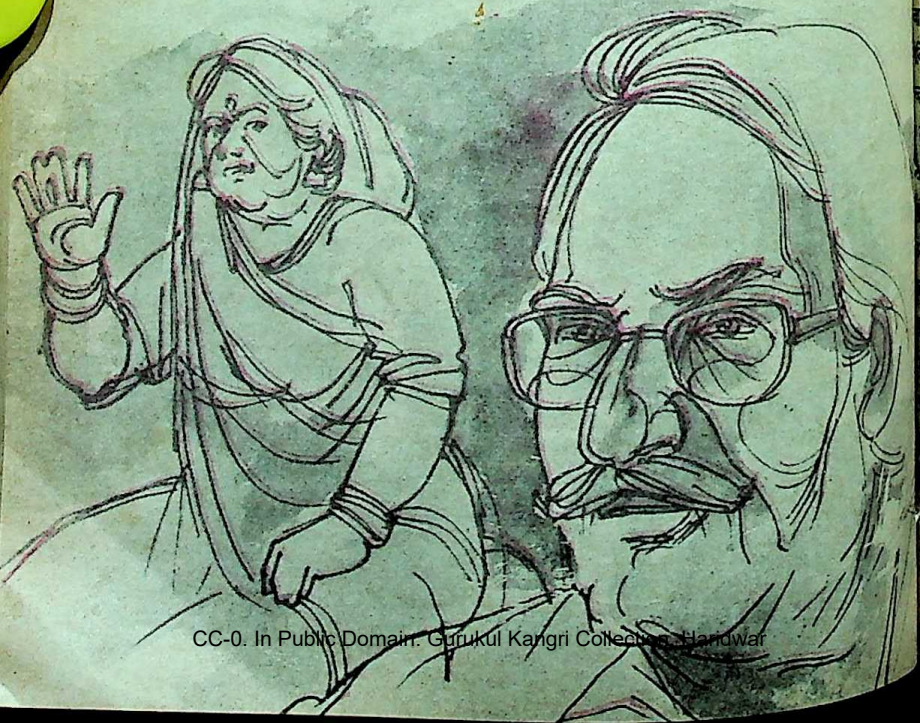

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञाता है । के
।'
ट्रिक फर्स्ट
ली स्थान में
में फेल कर
में भारी
था ।
को भी भीतर
कोई
अपने से लिख
सिंह की स्त्री
ई थी लेकिन
बेटा तो
स हुए थे,

अपने कड़ियल पिता को देखकर उनको
ने लगता था । नहीं पढ़ते तो पिटते ।
पढ़कर सभी इम्तहान पास हो गये ।
उन्हें बड़ा अफसर बनाना चाहते थे ।
भगवान की इच्छा नहीं थी ।' यदुनाथ
कहते हैं ।

यह कि एक बुआ का अकूत धन
सिंह को बिना मांगे मिल गया । 'इस
के सामने आई.ए.एस. और आई.पी.एस.
रगा । भगवान का दिया सब कुछ है ।
लोग नौकरी-चाकरी से धन ही तो
हैं ।'

के पिता उनके बाल-बच्चों को भी
खा देखना चाहते थे । लेकिन यह चाह
ही वे दिवंगत हो गये । उनके बड़े बेटे ने
की रास थाम ली तो यदुनाथ सिंह का
चौड़ा हो गया आखिर इसीलिए तो लोग
हते हैं ।

किन दूसरे बेटे को जब भाई ने भगवान
पर छोड़ सारी दौलत अपने नाम
ली तो गृहयुद्ध छिड़ गया । बड़े बेटे का
अलग था— अपनी स्त्री, अपने बच्चे ।
की लोग दूसरे खेमे में थे— मां-बाप,
र बहनें ।

नें ! बिना पढ़ी-लिखी । पिता से
में मिले ईर्ष्या-द्वेष से बोझिल । मां की
ला फाड़-फाड़कर बोलनेवाली लड़कियां
ल खा-खाकर बात की बात में
गड़ी होकर सामने खड़ी हो गयीं, तब
भी बेटी के हाथ पीले करने के लिए
कुलेने लगी ।

भगवान की इच्छा से होगा । और
लड़कियां चली जाएंगी तो घर कैसे चलेगा ?
बुआ की दो मन की लाश उठाकर रोज
साफ-सफाई कराना तुमसे होगा ?'

'तो इसके लिए लड़कियों को कुमारी
रखेंगे ? जो उनका धन भोगेगा सो करे ।'

'तो कहकर देखो न अपनी बहू को । करेगी
इनका गू-मूत ?' यह कहने की हिम्मत श्रीमती
यदुनाथ में नहीं है यह वह जानते थे । इसलिए
विवश ताकती स्त्री के मुंह पर फिर अपना प्रिय
वाक्य उछालकर चले गये, 'सब भगवान की
इच्छा है ।'

लेकिन शायद भगवान की इच्छा यदुनाथ
सिंह की लड़कियों के लिए बहुत मंद थी ।
तभी तो उनकी एक बेटी घर के पुश्तैनी नौकर के
साथ भाग गयी ।

गांव में बात छिपाये नहीं छिपती । प्रचारने
के लिए कुछ करना नहीं पड़ता । सबके मुंह पर
यही बात । लोग पता नहीं कब तक इस बात
को लेकर दूर-छी करते रहते कि दूसरी बात
चर्चित हो उठी । लंगड़ू मास्टर के छोटे बेटे के
एम.बी.बी.एस. पास होने की खबर की पीठ पर
उनकी इकलौती बेटी के भारतीय प्रशासनिक
सेवा में चुने जाने का संवाद गांव को रोशन कर
गया । वाह । लोग मास्टर को 'लंगड़ू' कहने में
लड़खड़ाने लगे ।

यदुनाथ सिंह ने भी सुना । लंबी सांस लेकर
बोले— 'बेचारी ! अब सारी जिंदगी मंत्रियों
की जी-हुजूरी करते बिताएगी ।'

—एस/१३०२, उदयगिरि
बुद्धमार्ग, पटना-८००००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदसूरती भी बन गयी वरदान

कभी-कभी ऐसा होता है कि जिन चीजों को हम दुर्भाग्यपूर्ण मानते हैं । बाद के जीवन में वही चीजें हमारा सौभाग्य बन जाती हैं । मेरी ऐन इवांस के साथ यही हुआ । उसका कुरूप चेहरा ही उसके लिए वरदान साबित हुआ । वह इतनी बदसूरत थी कि उसके पिता अकसर इस बात से डरते थे कि संभवतः वह अपने जीवन में किसी भी पुरुष को आकर्षित नहीं कर

पाएगी । इसलिए वे हमेशा यही सोचते थे कि बेटी अपने जीवन में इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त करे कि उसे कोई कठिनाई न हो ।

एक उक्ति है कि सुंदरता हमेशा देखनेवालों की निगाहों में होती है । अमरीकी उपन्यासकार हेनरी जेम्स ने उसकी बदसूरती में पल रहे सौंदर्य को पहचाना । जेम्स ने जब उसके पिता को पत्र लिखा तो उन्होंने मेरी का जिक्र करते हुए लिखा कि उसकी कुरूपता में एक सौंदर्य शोभायमान है । उसके भद्देपन में रूप और लावण्य का स्वाद है उन्होंने लिखा, *'निसंदेह उसका ललाट निम्न है, उसकी नाक बेडौल और लटक... उसकी आंखें प्राणविहीन और भूरी हैं । ... का आकार बहुत बड़ा है, असमान ... से भरा हुआ ।*

'मगर, इन सारी कुरूपताओं के ... ऐसा सौंदर्य निवास करता है जो पल-पल ... देखनेवाले को उत्तेजित करता है । कुछ ... में मन और मस्तिष्क को न सिर्फ ... आकर्षित करता है, बल्कि अपना ...

लेखिका ज... पुरुष नाम ... लिखती र...

● शैलेन्द्र सिंह

हर देखनेवाले का अंत ठीक वही होता ... हुआ ।—अर्थात उसके प्रेम में फंस ...

मेरी ऐन इवांस अर्थात 'जॉर्ज इलि... वह इसी नाम से कविताएं एवं साहित्य... रचनाएं लिखती थी । सहनशीलता ... शिक्षा दोनों के प्रति उसने अपने ... समर्पित किया था । परंतु, इन दोनों के ... वह एक और गिरफ़ में जबरदस्त ढंग ... वह बंधन था एक विवाहित पुरुष का ... अर्थात मेरी ऐन इवांस जिस विवाहित ... प्रेम करती थी उसका नाम था, जॉर्ज ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी दुर्भाग्य भी सौभाग्य बन जाता है । उसका कुरूप बेडौल चेहरा उसके लिए किसी दुर्भाग्य से कम नहीं था—पर इसी चेहरे के कारण जन्मी हीनता ने उसे एक अमर साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठा भी दिलवायी ।

लिवेज व्यक्तिगत तौर पर इलियट को या 'डोडो' कहकर पुकारते थे । कि 'मिडिलमार्च' की नायिका का व्यक्तित्व भी ठीक वैसा ही था, स्वयं इलियट का ।

अपने ही उपन्यास की नायिका 'मिडिलमार्च' इलियट की तमाम सफलतम में से एक है । किसी जमाने में यह सर्वाधिक बिकनेवाली पुस्तकों में से एक । और इस वर्ष पुनः यह सर्वाधिक वाली पुस्तक बन गयी है । जब से इसे बी. ने प्रसारित किया है, इस पुस्तक की संख्या अद्भुत ढंग से बढ़ गयी है । है कि 'मिडिलमार्च' को बी. बी. सी. ने वर्ष के प्रारंभ में प्रसारित करना शुरू किया

उपन्यास को वर्ष १८७१-७२ में 'मागा' ने धारावाहिक प्रकाशित किया था । होने के बाद यह किताब उस समय आवाज बन गयी । पाठकों के एक लंबे वर्ग पढ़ा और उस पर बहस किया । ने खुले हृदय से पुस्तक का स्वागत और अनुवादको ने तो देखते ही देखते के अनुवाद के लिए प्रस्तावों का ढेर दिया । फिर क्या था, बहुत कम समय में पुस्तक ने लेखिका के लिए नौ सौ पौंड्स आज (३२०,००० पौंड या ४८०,००० डॉलर) की रकम उपलब्ध करा दी ।

पाठकों को लगा कि पुस्तक की रचनाकार और उपन्यास की नायिका डोरोथिया ने मध्यवर्गीय परिवार के मूल्यों को साथ-साथ भोगा है । इस कृति ने महिलाओं को विशेष प्रभावित किया । लेकिन, इसके साथ ही इलियट और उपन्यास की नायिका डोरोथिया के व्यक्तिगत जीवन में एक बुनियादी फर्क भी लोगों ने महसूस किया । जहां डोरोथिया की जिंदगी शांतिपूर्ण ढंग से चित्रित हो सकी, वहीं इलियट की निजी जिंदगी एक चीख-पुकार बनकर रह गयी । कारण था इलियट द्वारा तत्कालीन प्रादेशिक जीवन की अवहेलना, पैसे के लिए हाय-तौबा, तरह-तरह की अफवाहों का शिकार उसका अपना जीवन ।

मेरी ऐन इवांस का जन्म १८१९ में मिडलैंड्स में एक 'भू-दलाल' की बेटी के रूप में हुआ था । आगे चलकर वह अपने आपको 'मेरीऐन' कहलवाना अधिक पसंद करती थी । मेरीऐन की प्रारंभिक शिक्षा नॉनइटन में हुई जहां से बाद में पिता के साथ वह कॉवेंटरी नामक स्थान में चली गयी । बाद में यही 'कॉवेंटरी' 'मिडिलमार्च' में उस कल्पित स्थान के रूप में चित्रित हुआ जो सुविधाओं की मुख्यधारा से कटा हुआ स्थान था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी ऐन इवांस से जॉर्ज इलियट

मेरी ऐन इवांस द्वारा एक पुरुष संज्ञक उपनाम रखने का भी एक कारण है। जिन दिनों उन्होंने आजीविका के लिए लेखन को भी साधन बनाना चाहा तो उसने एक पुरुष नाम को चुना की। पुरुष नाम की इसलिए कि उन दिनों लेखिकाओं की अपेक्षा लेखकों की पुस्तकें अधिक बिकती थीं। उनकी आय भी लेखिकाओं से ज्यादा थी। स्वयं मेरी ऐन इवांस ने संज्ञक उपनाम रखने का यह कारण बताया था। उसके शब्दों में, 'जॉर्ज नाम इसलिए कि वह प्रेम को सम्मान देना चाहती थी। (उसके विवाह प्रेमी के नाम का पहला शब्द जॉर्ज था।) इलियट इसलिए कि वह जॉर्ज शब्द के साथ अधिक उपयुक्त लगता था।

रॉबर्ट इवांस का चरित्र ही उपन्यास में 'कालेबगार्थ' के रूप में दर्शाया गया है जो अपनी पुत्री को औसत दरजे की लड़कियों से अधिक शिक्षित बनाना चाहता है क्योंकि, वह सोचता है कि उसकी बेटी के चेहरे की उठी हुई ठुड्डी, लटकती हुई गांठदार नाक, उसकी शादी के लिए आनेवाले अवसरों में बाधा बनेगी। फिर, उसका जीवन उसके स्वयं के संसाधनों पर निर्भर होकर रह जाएगा।

इसलिए, वह फ्रेंच, इतालवी, ग्रीक और लैटिन-जैसी कठिन भाषाओं का अध्ययन करती है। विस्तृत अध्ययन, पुस्तकों और चित्रों के कारण उसके विचारों को नया आयाम, नयी दृष्टि मिलती है। एक दिन ऐसा भी आता है जब वह अपने धर्म की भी अवहेलना शुरू कर देती है। इस तरह का विप्लवकारी कदम उसके तनाव का पहला कारण बनता है। न सिर्फ वह बल्कि इस कदम से उसका परिवार भी अपने-आपको कष्टकर स्थिति में पाता है।

इलियट को जरमन भाषा का अच्छा ज्ञान था। फ्रेडरिक स्ट्रॉस की पुस्तक 'द लाईफ ऑफ जेसस' का उसने बहुत ही सुंदर अनुवाद किया। बाद में इस पुस्तक का अंग्रेजी में जॉन चैपमैन द्वारा किया गया।

पिता का देहांत

पुस्तक प्रकाशन के तीन वर्ष बाद के पिता का देहांत हो गया। उसके तमाम घरेलू दायित्वों से मुक्त हो गयी सामने अब एक स्वच्छंद जीवन था, अपने ढंग से जीना चाहती थी। के बाद वह समुद्री तट पर बसे चैप हाऊस के लिए रवाना हो गयी। उ बोर्डिंग हाऊस लंदन के साहित्यिक धुरी हुआ करता था।

यहां आने के बाद इलियट ने रहकर अपनी जीविका कमाना शुरू मसलन, जीविका के लिए उसने प्रभावशाली और चर्चित पत्र 'वेस्टमि रिव्यू' का संपादन शुरू किया। इ वह कई प्रकाशनों के लिए बतौर फ करती रही।

'विकृत बुद्धिवादी'

जिंदगी ने इलियट को कई दुष्ट प्रेम-संबंधों के भंवर में फंसाया। इ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...में एक उस व्यक्ति का प्रेम भी था ...को 'विकृत बुद्धिजीवी' कहा करता ...तर में मेरी ऐन (इलियट) का प्रेम ...के साथ शुरू हुआ। लिवेज एक अच्छा ...क और पत्रकार था। दुर्भाग्यवश ...शादी एक ऐसी महिला से हुई थी जिसे ...प्रेम नहीं कर सका लेकिन उन दिनों ...कानून इतना सख्त था कि वह उस ...से तलाक भी नहीं ले सकता था। ...टोरियन नियम और मूल्यों की परवाह न ...वह लिवेज के साथ सन १८५३ से ...की मृत्यु तक यानी सन १८७८ तक ...इलियट के जीवन के ये वर्ष सबसे सुनहरे ...वित हुए। हर कदम पर लिवेज द्वारा ...न पाकर इलियट ने एक के बाद एक, ...पुस्तकों का सृजन कर डाला। 'द मिल ...फ्लॉस', 'आदम बीड', 'सिलास मार्नर' ...डिल मार्च' उस दौर में लिखे गये ...क चर्चित उपन्यास हैं।

...कुंआरी महिला होते हुए भी इलियट ने ...विवाहित पुरुष के साथ रहकर अपने जीवन ...भाग गुजारा। उसे अपने समकालीन ...के साथ-साथ अपने परिवार की भी ...सहनी पड़ी। यही वजह है कि उसने संतान के लिए कभी कोई खेद नहीं देखा क्योंकि उसे पता था कि उसके बच्चे को 'वर्णसंकर' कहकर लांछित किया जाएगा।

जब इलियट साठ वर्ष की थी, लिवेज ने सदा के लिए अपनी आंखें मूंद लीं। लिवेज के बाद इलियट ने जॉन फ्रॉस से विवाह किया। इस विवाह के बाद इलियट के परिवारवालों का प्रेम अचानक उसके प्रति उमड़ आया।

पुनर्विवाह और अंत

जॉन फ्रॉस, उम्र में इलियट से बीस वर्ष छोटा था। विवाह के बाद दोनों वेनिस में हनीमून मना रहे थे। अचानक फ्रॉस के दिमाग में खयाल आया कि उसने इलियट से शादी करके बहुत बड़ी भूल की है। इस अहसास ने उसे इतना उत्तेजित कर दिया कि वह एक लंबे नहर में कूदकर आत्महत्या करने के प्रयास से भी बाज नहीं आया।

बहरहाल, हनीमून से लौटकर जब इलियट और फ्रॉस इंगलैंड आये तो उसके ठीक सात महीने बाद ही इलियट की मृत्यु हो गयी।

—१४६, स्टाफ क्वार्टर्स
साऊथ एवेन्यू,
नयी दिल्ली-११०००१

गंजापन रोकने के लिए हारमोन

आस्ट्रिया के वैज्ञानिकों ने एक ऐसे हारमोन का पता लगाया है जिससे सिर में गंजेपन को रोकने के लिए दवाएं बनायी जाएंगी। इस नये हारमोन का नाम प्रोलेम्टिन है जिसका निर्माण शरीर की अंतःस्रावी ग्रंथि-पिट्यूटरी ग्रंथि में होता है। उल्लेखनीय है कि पुरुषों में लैंगिक हारमोन एस्ट्रोजन की अधिकता गंजेपन का एक प्रमुख कारण है।

—संजय कुमार शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई जहाज बनाने में भी पीछे नहीं है भारत

● नरविजय सिंह यादव

विमान बनाने का मामला हो या उन्हें उड़ाने का, दुनिया की निगाहें भारत पर लगी हैं। पिछले कुछ वर्षों में हमने इतनी तेजी से प्रगति की है कि सब भौंचक्के हैं।

'मुक्त आकाश नीति' के चलते न सिर्फ देश में कई प्राइवेट एयरलाइंस अस्तित्व में आयी हैं, वरन विदेशी एयरलाइनें भी दक्षिण एशिया के इस भूभाग में अपनी उड़ानें बढ़ा रही हैं। यही हाल वि[illegible] निर्माण के क्षेत्र का है। सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्र की कई कंपनियों ने वायुयान और हेलीकॉप्टर बनाने का काम शुरू किया है।

एच. ए. एल. का योगदान

गत ५० वर्षों से हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एच. ए. एल.) विमानों के निर्माण में लगा है। इसने अब तक तीन हजार से अधिक हवाईजहाज तथा हेलीकॉप्टर बनाये हैं। इनमें एक हजार तो स्वयं की तकनीक से विकसित किये गये। शेष का निर्माण विदेशी कंपनियों के लाइसेंस पर किया गया।

एच. ए. एल. विश्व के गिने-चुने प्रतिष्ठानों में से एक और एशिया की एकमात्र कं[illegible] कंपनी है, जो डिजायन से लेकर नि[illegible] सक्रिय है। इसके अध्यक्ष आर. एल. [illegible] अनुसार—

एच. ए. एल. का उन्नत हलका हे[illegible] (ए. एल. एच.) भी निर्यात की अ[illegible] संभावनाएं समेटे है। इसके दो परी[illegible] तैयार हैं। निर्माण से पहले ही भारत[illegible] ने ऐसे तीन सौ हेलीकॉप्टर खरीदने का [illegible] रखा है। देश के अन्य क्षेत्रों में भी दो [illegible] हेलीकॉप्टर खप जाने की आशा है।

देशभर में फैली दर्जनभर निर्माण इ[illegible] के जरिए एच. ए. एल. ने अब तक [illegible] टी-२', पुष्पक, कृषक, बसंत, मारुत, [illegible] अजीत, एच. पी. टी.-३२, एच. टी. [illegible] विमान तथा ए. एल. एच. हेलीकॉप्ट[illegible] प्रयासों से विकसित किये। अनेक वि[illegible] कंपनियों के लाइसेंस पर इसने नैट, [illegible] मिग-२१, मिग-२७, जगुआर-जैसे [illegible] विमानों तथा चीता व चेतक हेलीकॉप्ट[illegible] एवरो, डॉर्नियर यातायात विमानों का [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...वर्षों में दक्षिण एशियाई क्षेत्र में ...ऊपर छोटे विमानों की जरूरत होगी । इसी ...कर एच. ए. एल. ने पचास सीटों के विमान ...के लिए 'फॉकर' सहित तीन विदेशी ...से बात चलायी है । इनमें किसी एक को ...बनाया जाएगा । इसी तरह सवा-सौ सीटों ...यात्री विमानों का निर्माण करने के लिए ...चीन, दक्षिण कोरिया और सिंगापुर के ...समझौता किया है ।''

...की माइक्रोलाइट विमान के लिए प्रति घंटा ...टर ईंधन की जरूरत होती है । यह ...विमान पुलिस और सीमा सुरक्षा बल के ...उपयोगी होगा ही, प्रशिक्षण, निरीक्षण, ...फोटो, पर्यटन एवं खेलों के लिए भी अच्छा

...देशी तकनीक से विकसित किये जा रहे ...लड़ाकू विमान (लाइट कॉम्बेट ...क्राफ्ट) की परियोजना में भी एच. ए. एल. ...भूमिका निभा रहा है ।

...कंपनियों के प्रयास :

...में निजी क्षेत्र की प्रथम विमान कंपनी ...एयरोस्पेस एंड एविएशन लिमिटेड ...) ने होसुर (कर्नाटक) में विमान निर्माण ...कर दिया है ।

...ल' मुख्यतः दो किस्म के विमान बनाएगा—सात सीटों और डबल इंजन वाले पी. ६८ सी. टी. सी. तथा पी. ६८ ऑब्जर्वर और ग्यारह सीटोंवाले विएटर के दो मॉडल ।

'ताल' वर्षभर में२४ विमान तैयार करने की स्थिति में है । इस परियोजना में इटली की पार्टेनेविया कंपनी का सहयोग लिया जा रहा है ।

पी. ६८ सी. मॉडल की कीमत १.६ करोड़ रुपये होगी तथा विएटर साढ़े चार करोड़ रुपये का होगा । विमानों की बिक्री शीघ्र शुरू की जाएगी ।

'ताल' ने बेंगलूर की नेशनल एयरोस्पेस लेबोरेट्रीज (एन. ए. एल.) के सहयोग से फाइबर ग्लास के ढांचेवाला एक टू-सीटर हंसा विमान भी तैयार किया है । यह फ्लाइंग क्लबों के लिए उपयुक्त रहेगा । इसकी कीमत लगभग २५ लाख रुपये है ।

उधर, एन. ए. एल. ने एक रूसी कंपनी (म्याशिचेव डिजायन ब्यूरो) के सहयोग से १४ सीटों के 'सारस-डुएट' विमान का निर्माण शुरू किया है । इसका परीक्षण मॉडल अगले वर्ष नवम्बर तक तैयार हो जाएगा ।

हैदराबाद की पिनाकी टेक्नोलॉजीज ने दो सीटों का एक हलका विमान तैयार किया है, जो पानी पर भी उतर सकता है । पिनाकी अब चार सीटों के हेलीकॉप्टर बनाने की इच्छुक है और किसी उपयुक्त विदेशी भागीदार की तलाश में

हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड अर्थात 'एच. ए. एल.' ने विमानों के निर्माण में आश्चर्यजनक प्रगति की है । अब कुछ निजी कंपनियां भी विमान-निर्माण के लिए आगे आ रही हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

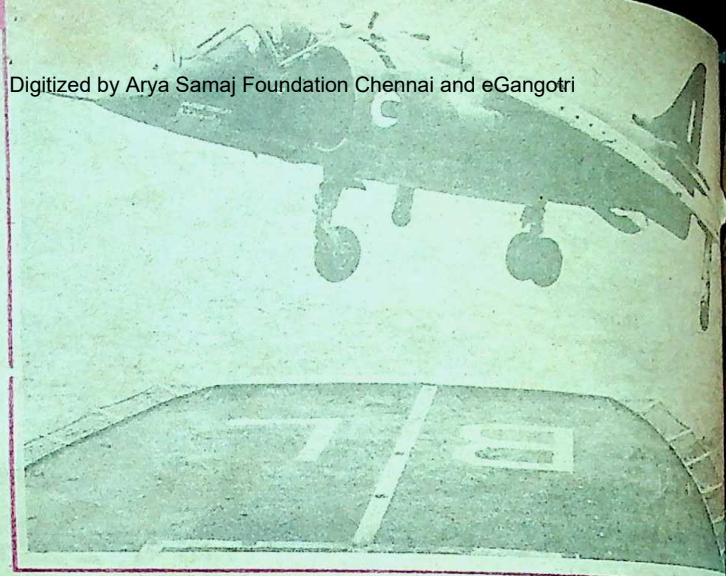

है । पिनाकी हर साल ३६ विमान तैयार करने की स्थिति में है । कंपनी के महाप्रबंधक सी. व्हिटनवरी के अनुसार—

मद्रास में नारस एविएशन प्राइवेट लिमिटेड ने ब्रैंटली श्रेणी के हल्के हेलीकॉप्टर बनाने शुरू किये हैं । दो और पांच सीटोंवाले ये हेलीकॉप्टर विदेशों को निर्यात किये जाएंगे । पिस्टन इंजन के कारण नारस के हेलीकॉप्टर सस्ते और संचालन में सरल हैं । पांच सीटोंवाले हेलीकॉप्टर की कीमत एक करोड़ पांच लाख रुपये होगी तथा दो सीटोंवाले हेलीकॉप्टर का मूल्य करीब ३० लाख रुपये होगा । ये हलके-फुलके कामों के लिए उसी तरह उपयोगी साबित होंगे, जैसे सड़क पर कारें ।

एन. ए. एल. ने हंसा के अतिरिक्त लाइट कनार्ड रिसर्च एयरक्राफ्ट नाम से एक अन्य छोटा विमान भी बनाया है । यह अनुसंधान कार्यों के लिए उपयुक्त रहेगा ।

इसी क्रम में अगला नाम है बंबई की इकोमैक्स एग्रो सिस्टम्स लिमिटेड का, जि[illegible] अत्याधुनिक तकनीक की बेहद हल्की [illegible] मशीन तैयार की है । पैराशूट—जैसी दिखनेवाली इकोमैक्स पॉवरशूट कैटेग[illegible] निर्माण एक ब्रिटिश फर्म के सहयोग से [illegible] गया है ।

इसमें आस्ट्रिया निर्मित 'रोटैक्स' [illegible] इंजन लगा है । यह लघु विमान अधिक[illegible] आठ हजार फीट ऊंचाई तक और ५९ किलोमीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से उड़ [illegible] है ।

इसका मूल्य ३.७ लाख रुपये है [illegible] से अनुमति मिलते ही इसका उत्पादन [illegible] दिया जाएगा ।

मैसूर की राजहंस कंपनी ने इंजन [illegible] ग्लाइडर बनाये हैं, जिनकी कीमत स[illegible] लाख रुपये है ।

—ओ-८७, [illegible]
नोएडा-[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

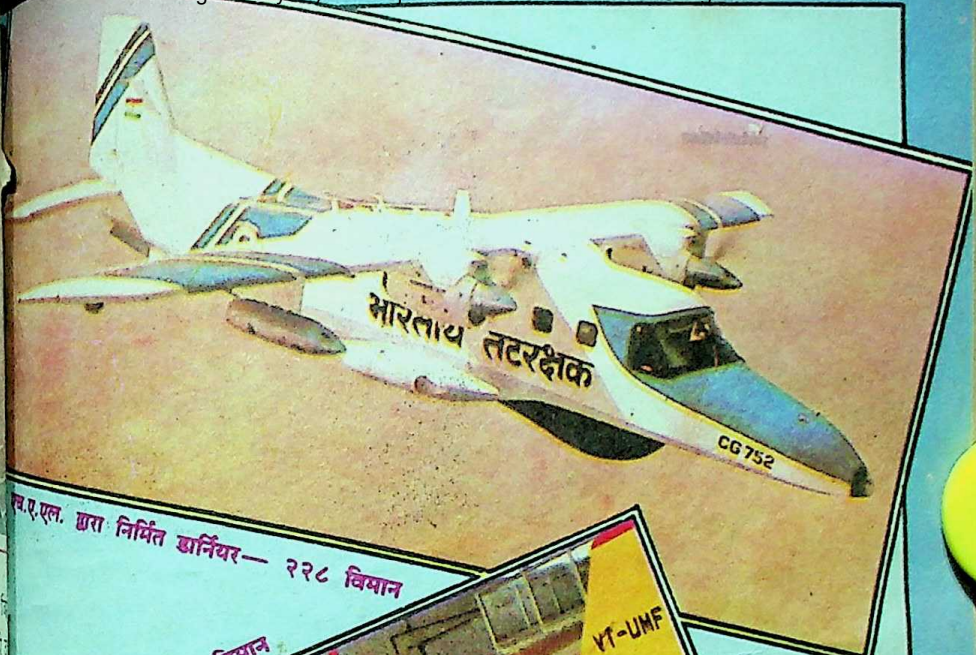

एच.ए.एल. द्वारा निर्मित डार्नियर— २२८ विमान

विमानी माइक्रोलाइट विमान

मिग-२१ की मरम्मत में व्यस्त एच.ए.एल. के कर्मचारी

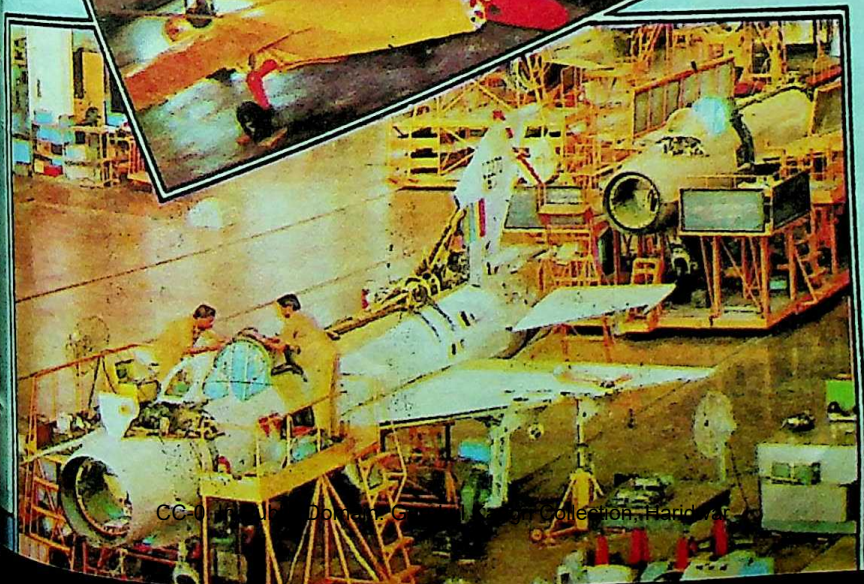

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न हिंदू है कोई : न है मुसलिम कोई यहां !

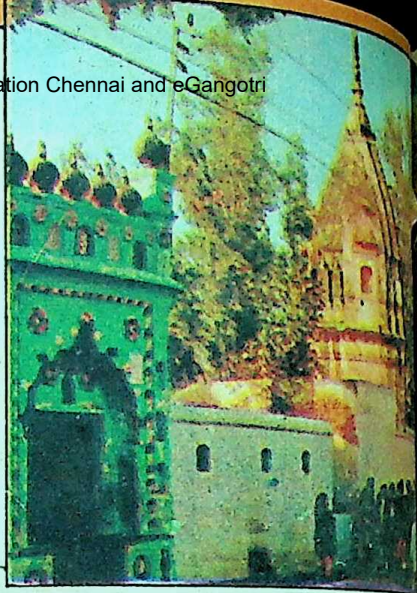

(हमारे विशेष संवाददाता द्वारा)

दिन छोटे हो रहे थे । सर्दी बढ़ रही थी । काली कोलतार की सड़क पर सभी किस्म के वाहन—बैलगाड़ियां, ट्रैक्टर, ट्रक, टैंकर, बसें और कारें—भागते जा रहे थे । कभी-कभी कतार में चल रही गन्ने से ठसाठस लदी बैलगाड़ियां कार के ड्राइवर को गाड़ी की रफ़्तार कम करने को मजबूर कर देती थीं । इस गाजियाबाद जिले के 'साठे' क्षेत्र में थे ।

महानगर दिल्ली से यह स्थान अधिक दूर नहीं है । यहां दो ढाई घंटे में कार से आसानी से पहुंचा जा सकता है । यहां न महानगर का प्रदूषण है और न कोलाहल, न मारामारी है न भागाभागी ।

गाजियाबाद का साठे क्षेत्र अपने ताजे मीठे दूध, गन्ने की अच्छी फसल, उपजाऊ जमीन और सांप्रदायिक सौहार्द के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में १९४७ के देश विभाजन के अशांत दिनों में भी कोई साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ।

मेहर अली : 'कैसे भूल जाएं खून का रिश्ता !'

'राजनीतिक नेता तो कुरसी के लिए लड़ते हैं । हम अपने रिश्ते क्यों खराब करें ।' हवलदार सुरेन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज जब देश के कुछ भागों में धर्म के नाम पर अनावश्यक तनाव और हिंसा का वातावरण है, राजधानी दिल्ली के पड़ोस में गाजियाबाद जिले के साठे क्षेत्र में हिंदू-मुसलमान मिलकर भाई-भाई की अंतरंगता का आधार है अपने समान पूर्वजों और उनकी बहुमूल्य विरासत पर गर्व का भाव । हमारे विशेष संवाददाता ने पिछले दिनों इस क्षेत्र का दौरा किया । प्रस्तुत है उनका आंखों देखा हाल ।

अब इस क्षेत्र के बाहर के कुछ हिंदू कलौदा पहुंचे तो वहां के मुखिया किशन सिंह ने उनसे लौट जाने को कहा । उसने कहा, "मैं नहीं चाहता कि यहां के मुसलमान पाकिस्तान जाएं । ये हमारे भाई हैं ।"

किशन सिंह का लड़का शूरवीर सिंह अब अपने पिता की विरासत की रक्षा यत्न से कर रहा है ।

कोई तनाव नहीं

पिछले वर्ष जब देश के बड़े भू-भाग में सांप्रदायिक तनाव, हिंसा और बम विस्फोटों की घटनाएं हो रही थीं 'साठे' क्षेत्र में आम दिनों की तरह काम हो रहा था । इस समूचे क्षेत्र में सांप्रदायिक हिंसा की बात तो जाने दीजिए कहीं कोई तनाव भी नहीं हुआ ।

यहां के लोगों के लिए यह बात बेमानी है कि इस क्षेत्र का कोई व्यक्ति हिंदू है या मुसलमान । इसके पीछे एक आश्चर्यजनक अनुपम कथा है । कहा जाता है कि लगभग सात सौ वर्ष पहले राजपूतों का एक दल चित्तौड़ से आकर यहां बसा । ये लोग खम्बन राणा के नेतृत्व में देहरा गांव में रुके । बाद में उन्होंने समीपवर्ती अन्य गांवों को आबाद किया ।

गांव के बुजुर्ग और मुखिया ९० वर्षीय फैज मुकद्दम का कहना है, *"यह इलाका मुसलमानों के प्रभुत्व में था । अतः लोगों पर मुसलमान होने के लिए दबाव पड़ा । हमारे कुछ भाई मुसलमान हो गये । अन्य हिंदू ही रहे । फिर भी, हम एक ही परिवार के हैं । हमारे पूर्वज एक हैं । साठे क्षेत्र में बसे खम्बन राणा के इन वंशजों की संख्या छह लाख है ।"*

अधवादिया और रंगड़

इन गांवों के निवासियों को अधवादिया और रंगड़ भी कहा जाता है । अधवादिया का अर्थ

मालती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

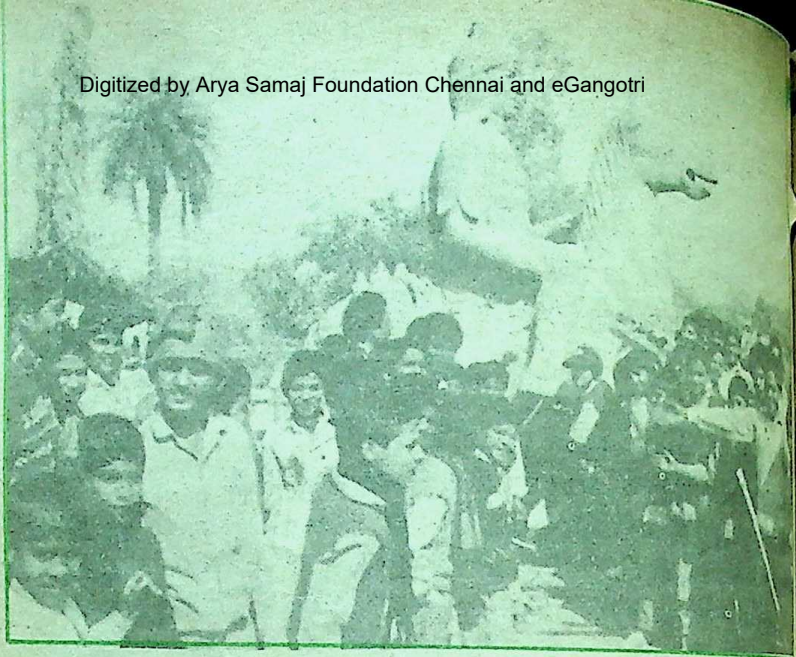

होता है आधा बंटा हुआ । क्या इस क्षेत्र के लोगों ने अपने विभाजन को सदैव याद रखने के लिए अपना नाम अधवादिया रखा है ? रंगड़ उनका समूह नाम है । रंगड़ हिंदू मुसलमान कोई भी हो सकता है ।

विचित्र बात यह है कि यहां के मुसलमान हिंदुओं की तरह अपना गोत्र वैशम्पायन बताते हैं । वह इन ६० गांवों के वैम्पायन गोत्र में शादी-विवाह नहीं करते । जब मैंने एक मुसलमान से इस बारे में पूछा तो उसने उत्तर दिया *''एक गोत्र में शादी कैसे हो सकती है ? वह तो भाई बहिन की शादी होगी ।'' अधवादिया मुसलमानों में परिवार के अंदर शादी नहीं होती ।*

विरासत पर गर्व

इस इलाके के मुसलमानों के नामों के साथ त्यागी, राणा, गहलौत जैसे उपनाम आम इस्तेमाल होते हैं । उनको अपने पूर्वजों और अपनी साझी विरासत पर गर्व है । धर्म परिवर्तन के बावजूद वह अपने हिंदू बिरादरों से बड़ी निकटता अनुभव करते हैं । यहां के हिंदू-मुसलमान मिल कर खेती, व्यवसाय और व्यापार करते हैं । मिलकर होली, दिवाली और ईद मनाते हैं । खुशी-गमी में एक दूसरे के सुख-दुख में शरीक होते हैं ।

राम-रहीम एक

मैंने एक गांव वाले से इस बारे में बातचीत की । वह पढ़ा लिखा न था । उसका कहना था *''राम और रहीम एक ही सर्वशक्तिमान ईश्वर के दो रूप हैं । अब आप ईश्वर को किसी नाम से मानें या पुकारें क्या फर्क पड़ता है ? फर्क तब पड़ता है जब आप ईश्वर को नहीं मानते । जब आप अन्याय, अनीति और हिंसा की राह पकड़ते हैं । धर्म लोगों को जोड़ता है । अधर्म लोगों को बांटता है ।''*

मुसलिमों ने बनवाया मंदिर

साठे क्षेत्र का एक गांव बांजहेड़ा है । यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुसंख्या में मुसलमान रहते हैं । केवल पांच परिवार हिंदुओं के हैं—पंडित और बनिये । बाजहेड़ा में कोई मंदिर नहीं था । यह बात वहां के मुसलमानों को खलती थी । कुछ समय पहले उन्होंने गांव में मंदिर निर्माण के लिए १० हजार रुपये एकत्र किये । फिर सवाल पैदा हुआ कि मंदिर कहां बनाया जाए ? गांव के पंडित मंदिर अपने घरों के समीप बनाना चाहते थे । बनिये अपने घरों के समीप । गांव की पंचायत (सभी परिवारों के प्रमुखों) ने आम सहमति से मंदिर निर्माण के लिए स्थान का चुनाव किया । अब मंदिर निर्माण का कार्य चल रहा है ।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मंदिर निर्माण की पहल मुसलमानों ने की । उसके लिए अधिकांश धन उन्होंने जुटाया और मंदिर निर्माण के लिए स्थान का चुनाव उन्होंने किया । और यह सब उन्होंने इसलिए किया, ताकि गांव के हिंदू अपने धर्म पर आचरण करें । उसकी मर्यादा का पालन करें । कैसे उदार और उदात्त विचार हैं ?

परंपराएं एक—प्रथाएं एक

यहां के हिंदू-मुसलमानों का पहनावा, रहन-सहन और सामाजिक व्यवहार लगभग एक-सा है । गांव के अधिकांश मुसलमान धोती और साफा पहनते हैं । जन्म, शादी-ब्याह और अन्य मंगलमय अवसरों पर एक से गीत गाते हैं । मुसलमान भी 'टिक्का' (तिलक), थाली (वर को सिक्कों भरी थाली प्रदान करना) और भात (मामा की ओर से भानजी की शादी पर परिवार के सभी सदस्यों को नये कपड़ों, गहनों आदि का उपहार) की प्रथाओं को मानते हैं ।

मुसलमानों की शादी पर भी आनंद उल्लास के साथ मधुर स्वर में गाया जाता है ।

भैया रघुवीर भात सवारे लइयो । हिंदू लड़की की शादी पर मुसलमान स्त्रियां प्रेम से गाते हैं,

"अल्लाह, अल्लाह करके तो यह दिन आया,
दुलहन ने नया श्रृंगार रचाया ।"

हिंदू स्त्रियां बड़े प्रेम से इस गाने में भाग लगाती हैं ।

हिंदू या मुसलमान किसी के घर में बच्चा होने पर ढोलक मजीरे के साथ औरतें मधुर स्वर में गाती हैं । **"तेरे आंगन में खेले नंद लाला ।"**

साथी गांव के गीत समान हैं, उनकी कुछ धार्मिक-सामाजिक क्रियाएं समान हैं । देहरा गांव में मंदिर-मसजिद एक दूसरे के अगल-बगल हैं । कलौंदा गांव मुसलमान बस्तियों से घिरा है । मुसलमान बच्चे मंदिर के आंगन में अपने हिंदू मित्रों के साथ खेलते घूमते रहते हैं । मंदिर में पूजा चलती रहती है । मंदिर के समीप ही होली जलायीजाती है । मुसलमान खुशी से होली में शरीक होते हैं । ईद पर गांव के हिंदू अपने मुसलमान भाइयों के गले मिलते हैं । उन्हें ईद की मुबारकबाद देते हैं ।

साठे क्षेत्र ने सर्वधर्म सम भाव का भव्य उदाहरण पेश किया है । वे एक दूसरे को भाई-भाई समझते हैं । एक दूसरे के धर्म का सम्मान करते हैं । अगर देश के सभी हिंदू-मुसलमान इस तरह के विचारों का अनुसरण करें, सांप्रदायिकता प्राकृतिक मौत मर जाएगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत दयालु है ....

● रिफअत शाहीन

मुझे भी ये बात औरों के साथ कुछ अजीब लगी और साथ ही दिलचस्प, लोग उन्हें 'नागफनी' कहते थे, क्योंकि उनका छोटा-सा बंगला नागफनी से घिरा था। इन्हीं लोगों से मालूम हुआ, 'वह बहुत मगरूर खुद पसंद, खुश्क फितरत की है।' उनके बारे में मेरे दिल में सब कुछ जान लेने के लिए बहुत बेचैनी थी। इस तजस्सुस को हवा तो और भी मिलती, जब रात-रात भर कभी उनके कमरे की बत्ती जला करती, और कभी दिन भर दरवाजा न खुलता। पेपर बाहर ही पड़े का पड़ा रह जाता और दूध की बोतल में ही दूध जम जाता, धूप में रखा, रखा।

अकसर ही वह अपने बंगले के चारों तरफ लगी नागफनी की सिंचाई किया करती। लोग इस बात पर मुसकरा देते, मगर मैं इसमें किसी का साथ न दे पाती। ऐसे में मुझे लगता इसके पीछे भी कोई वजह जरूर होगी। कभी जब ये खार उनके दामन को थाम लेते तो वह मुसकरा-सी पड़ती .... और अपने लान में खड़ी मेरा आंचल सरसर लहराता ही रह जाता मगर कोई फूल बढ़कर इसे न थामता। इस बार मैं मुसकराती— 'गुलों से बेहतर तो ये खार हैं जो दामन बढ़कर थाम लेते हैं।' गेट के दोनों तरफ कदे आदम नागफनी, पोर्टीको के सामने खिड़कियों के नीचे बनी पत्थर की क्यारियों में, लान में, चारों तरफ फेंसिंग के साथ-साथ, गरज नागफनी ही नागफनी। क्या अजीब है ये नागफनी .... बस शाखें ही शाखें हरी-हरी गहरी हरी और कांटे ही कांटे। अपने आप में ये कितनी पूरी है.... 'बजाते खुद जो पेड़ शाख, पौधा पत्ता, फूल और कांटा है।'

अकसर ही मैंने पत्थरों, रेगिस्तानों, बेआब-व-गयाह मुकामो पर, सफर में, कितनी ही बार ऐसी-ऐसी नागफनी देखी हैं। चांदनी रातों में ट्रेन की खिड़की से देखने में इन्हें बड़ा मजा आता है। इनसे अजीब-सी हुलिया बनती-सी लगती है...। कभी लगता है कोई जानवर है, कभी आदमी जैसी शक्ल, कभी मकान और कभी जैसे कोई परी उड़ने की तैयारी में हो, अकसर हल्की-सी रोशनी में लगता.... कोई भयानक देव छुपा बैठा है। बचपन में ट्रेन की खिड़की से इन्हें देख-देखकर मैं सिहर उठती थी। उन दिनों मैं डरती भी बहुत थी। बिट्टू के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

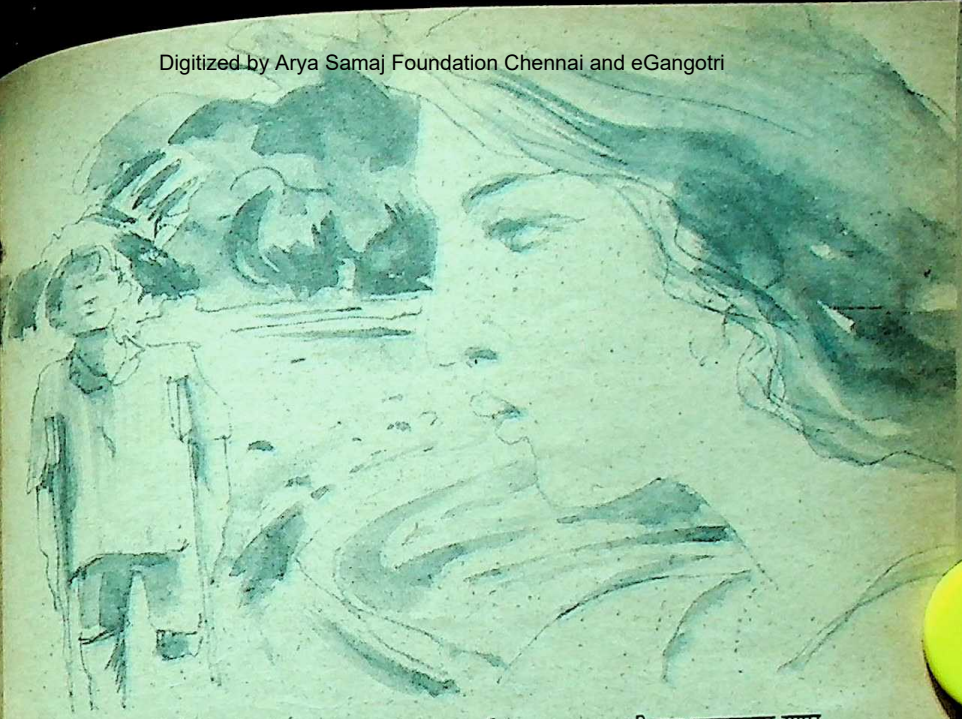

पापा ने जब से ये कहानी हम दोनों को सुनायी थी कि, 'कांटेदार पेड़ों के आसपास चुड़ैल भूत रहते हैं..... ।'

यूं वह नागफनी देखते-देखते दो साल गुजर गये और वह आधी नजर आनेवाली खिड़की भी इन्हीं से ढक गयी । अब सिवाय उन महीन-महीन रोशनी की लकीरों के जो इनमें से छनछनकर बाहर आतीं, कुछ भी नजर न आता । इन दो लंबे सालों में फूल कितनी ही बार लगाये गये और उखाड़े गये, बहारें आयीं और गयीं, मौसम बदलते रहे और मौसमी फूलों के रंग भी इन्हीं के साथ बदलते रहे, मगर ये नागफनी न बदली, न ही इसके लिए मौसम । इसने कभी कोई देखरेख और जमीन के सीने को तोड़कर नाज से निकलनेवाले नाजुक पौधों की तरह अपने नखरे न उठवायें... बस बढ़ती ही रही, बढ़ती ही रही ।

मौसम-ए-गरमा की वह खुशगवार शाम थी, बच्चे को पार्क में छोड़कर सब्जी का बड़ा-सा थैला उठाये मैं घर की तरफ तेज-तेज कदमों से बढ़ी जा रही थी कि मेरे तेजी से बढ़ते पैरों को ब्रेक लग गया । ये ट्रैफिक पुलिस मैन का सिग्नल नहीं था न ही किसी हादसे का रिएक्शन... बल्कि ये एक अनहोनी-सी बात थी, जिसने मुझे हैरतजदह कर दिया था... कॉलोनी से कुछ दूर उस हस्पताल में जहां गरीबों की दवा मुफ़ होती है, वह दाखिल हो रही थी । पीछे उनके दो आदमी काफी फलों से भरी दो टोकरियां लिये-लिये चल रहे थे ।

नागफनी... जिसके गिर्द कांटे ही कांटे... मेरी आंखों के सामने उनके बंगले की नागफनी की बगिया घूम गयी ।

'क्या मैं आ सकती हूं ?' मैंने बचते-बचाते नागफनी की जालियों से अपनी हद के अंदर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके लान में झांकते हुए झिझकते-झिझकते पूछा....

'...अभी नहीं, मेहरबानी करके मुझे कुछ जरूरी काम हैं ।'

'हुंअ... नागफनी ।' मैंने अपनी खिसियाहट इस हुंह से मुंह बिचकाकर निकालने की कोशिश की, 'ये बड़बड़ाते हुए बिलकुल कांटे ही जैसी ।'

'बीजी जी बीबी जी...'

मैं चौंक गयी... मेरी चेहरे की झुंझलाहट पढ़कर मेरा नौकर कुछ कहते-कहते रुक गया... 'क्या... ?'

'मैंने लान में पड़ी हुई कुरसी पर बैठते चाय का प्याला उसके हाथ से लेते हुए बेजारी से पूछा '...ये बीबीजी हैं न...नागफनी बीजी...ये रोज शाम को अनाथालय में जाती हैं और तुम जानो बीजी जी इतनी ढेर सारी खाने-पीने की अच्छी-अच्छी चीजें वहां अनाथ बच्चों को बांटती हैं' और...

'और क्या ?'

मैंने गौर से उसकी तरफ देखते हुए पूछा ।

'ये बिलकुल सच है बीबीजी.... मैंने अपनी आंखों से देखा है ये बच्चों को खूब प्यार किया करती हैं वहां ।'

'तुझे कैसे मालूम हुआ ये सब.....?'

वह पहले तो झिझका फिर मेरे पास और

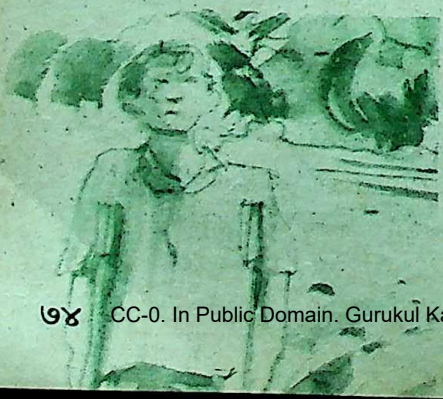

खिसकते हुए कुछ शरमाते कुछ राजदारी के अंदाज से बोला 'कल मैं वहां गया था...'

'तू क्या करने गया था ?'

'मैं... मैं... गया था...'

वह फिर घास उखाड़ने लगा सर नीचे करके ।

'अरे क्यों गया था... ?'

मैं झुझला गयी थी बुरी तरह ।

'... वह जो मेरी घरवाली है न... डॉक्टर बोला है अब उसको बच्चा न होगा इसीलिए गया था न बीबीजी... एक बच्चा तो होना जरूरी ही है घर आंगन में खेलने के लिए, अपना न सही पराया ही...' ।

उसकी आंखें भर आयीं थीं ।

'अच्छा... फिर क्या हुआ ?' मैंने शौक से आगे सुनना चाहा ।

'फिर क्या होना था बीबीजी... स्वामीजी बोले गुरुवार को आओ लड़की ले जाओ... और वहीं उन्होंने ही बताया मुझे ये बीबीजी बड़ी दयालु हैं...'

'अच्छा...' मैंने उसकी बातें सुनीं । मगर मेरे मुंह का मजा अब भी बिगड़ा था, उनकी कुछ देर पहले ही बेरुखी से ।...

'अभी नहीं मेहरबानी करके... मुझे कुछ जरूरी काम है ।'

'बहुत काम है... अहं... जैसे कितने बच्चे पालने हैं, घर चलाना है, शौहर की नाजबरदारी उठानी है... आगे नाथ न पीछे डोर... और मिजाज का ये हाल तभी तो लोग ठीक ही कहते हैं... नागफनी ।

'सुन... ओ लड़के... ।'

झटपट मैंने इनकी आवाज पर कान लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्सर ही वह अपने बंगले के चारों तरफ लगी नागफनी की सिंचाई किया करती । लोग इस बात पर मुसकरा देते, मगर मैं इसमें किसी का साथ न दे पाती । ऐसे में मुझे लगता इसके पीछे भी कोई वजह जरूर होगी । कभी जब ये रवार उनके दामन को थाम लेते, तो वह मुसकरा-सी पड़ती ।

दिये... जो इस खड़ी दोपहर में दूर जा रहे एक लंगड़े मांगनेवाले लड़के को गेट पर निकलकर बुला रही थीं... सफेद साड़ी, काला बार्डर... गंदमी रंगत बालों की सफेद लाईन, जिसे सामने से देखकर लग ही न रहा था, पीछे काले बाल भी होंगे । लंगड़ा लड़का बैसाखियां टेकता वापस आ चुका था । 'भला इस लड़के से इन्हें क्या काम ?' इनके बारे में सबकुछ जान लेने के लिए बस ऐसी ही कुछ न कुछ बातें होतीं, जो मेरे इश्तयाक को और भी हवा दे जातीं थी । मेरी एक आंख खिड़की की दराज में से बाहर का जायजा लेती रही । लंगड़े लड़के को अंदर ले जा रही थीं वह । गेट बंद हो चुका था । उसके बाद क्या हुआ, उसे, उन्होंने क्यों बुलाया, मुझे कुछ सुराग वहां से न मिल सका । कंबख्त नागफनी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की से पनप रही थी और जरा-सा दिखनेवाला उनके बंगले का मंजर भी उसी में छुपता जा रहा था । मैं देर तक आंखें टिकाये खड़ी रही खिड़की पर, मगर न वह लड़का फिर बाहर आया, न ही उनका गेट खुला । मुझे भी नींद आने लगी थी इसलिए दिल में खलिश लिए मैं बिस्तर पर पड़ गयी ।

शाम को करीब साढ़े पांच बजे रोज की तरह जब दफ़्तर से वापिस आ रहे अपने शौहर का खैरमकदम करने मैं पहले से ही पोरटिको में निकली तो लड़के को गेट से कुछ दूरी पर बैसाखियों का सहारा लिये जाते पाया । बस, यही मौका है शौहर को तौलिया साबुन थमा मैं चाय बनाने के बहाने फौरन किचन में जा घुसी और वहां से पिछला दरवाजा खोल लड़के को धीरे से बुलाया ।...

मेरे सवाल को सुनकर उसने अपना सिर उनके बंगले की तरफ उठाते हुए बड़ी मुहब्बत से कहा... 'क़ौन... वह नागफनी बीबीजी... अरे वह तो बड़ी दयालु हैं । मुझे बहुत पैसा देती हैं सच बीबीजी... उनसी तो इस कॉलोनी में कोई बीबीजी नहीं । ...आज मुझे अपने साथ बहुत अच्छा खाना खूब खिलाया; बोली...'

'इतनी धूप में...'

अहाहा... उसने कंधे समेट आंखें ऐसी बंद कीं, जैसे अब भी वह महसूस कर रहा हो जो कहने जा रहा है...

'बोली यहीं सो जाओ... पूरा कमरा ठंडी-ठंडी हवा से भरा था । मैं उनकी कुरसियों के नीचे बिछी मोटी दरी पर आराम से सोया... अरे बीबीजी उठने को मेरा जी ही न चाहे । मुझे तो... इनको देखकर अपनी मां याद आती हैं... मर गयी नहीं तो बहुत प्यार करती थी...'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंगड़ा बच्चा जा चुका था, चाय बनाते हुए मैं सोच रही थी... नागफनी... जो रेगिस्तान की रेतीली जमीन पर भी हरयाली के नाम पर फैली कहीं न कहीं मिल ही जाती है... नागफनी... जो पहाड़ पत्थर, बंजर जमीन... हर जगह हरी-भरी रहती है... जहां कोई हसीन फूल खिल नहीं सकता/ जहां किसी सब्जे का तस्ववर नहीं किया जा सकता किस तरह हरयाली की आबरू रख लेती हैं... मगर कितनी बेलौस कितनी बेलाग है, इसकी हरयाली, बदले में ये एक कतरे पानी की भी तलबगार नहीं... ।

उस दिन नागफनी मुझे उस छोटे से बंगले में बड़ी अच्छी लगी । चपटे-चपटे मोटे-मोटे तने या पत्ते... एक तिरछी, एक सीधी, कोई लंबी, कोई छोटी... बड़ी आरटेस्टिक है, ये नागफनी... इससे पहले रात को मेरा बच्चा जब बहुत जिद्द करता तो बेडरूम की खिड़की से उस नागफनी को दिखाकर कहती थी... 'वह देखो बिल्ला आ रहा है, बस अब जल्दी से सो जाओ वरना....'

मगर अब मुझे लगा, मेरा परसेपशन इसके लिए गलत था, मुझे यूं कहना चाहिए...

'देखो... सो जाओ क्रिसमस फादर वह हैं... जब तक सोओगे नहीं, वह आएंगे नहीं और जब तक आएंगे नहीं टॉफी कौन रखेगा तुम्हारे सिरहाने...

.....

'नहीं... चंदा करने की जरूरत नहीं...'

उस दिन कई लोगों के बीच वह आ खड़ी हुई...

'इसकी जरूरत नहीं सब काम हो जाएगा'

कॉलोनी के उस गुजरे हुए बूढ़े चौकीदार के जो तन्हा और कुछ अजीब ही इनसान था, दमे की बीमारी और अफीम का नशा जिसकी आदत बन चुकी थी और जिस नशे की ही हालत में आदत के मुताबिक वह दीवार की टेक लगाये बैठे ही बैठे हमेशा के लिए सो गया था... जिसके लिए जीने पर कोई अपना था न मरने पर रोनेवाला... उसके आखरी रसूमात के लिए चंदा जमा करने के वह बहुत खिलाफ थीं ।

लोग हैरान थे, जरूरत के लिए जो कुछ भी चाहिए था, वह दूसरे चौकीदार को देकर अपने नागफनी की बगिया में जा खड़ी हुई थीं... उस वक्त मैंने उनकी आंखों में नमी का एहसास किया था, जो उस बुढ्ढे के हड्डियों से भरे चेहरे पर से फिसलती हुई ऊपर दूर कहीं टिक गयी थीं ।

.....

'क्यों मैं अंदर आ सकती हूं ?'

एक साल के बाद ठीक उसी तरह मैं नागफनी की बहुत घनी जालियों से झांककर अपनी हद के अंदर से ही पूछा ।

'देखिए ऐसा है, मेरा बच्चा...

मैंने अपनी बात पूरी करने से पहले उनकी अखबार की सुर्खियों पर टिकी आंखों की आड़ में झांकने की कोशिश की ।

'... मेरा बच्चा गिर पड़ा है, इसके सर में गहरी चोट आयी है । वह बेहोश है । मेरे पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दफ्तर जा चुके हैं और...' और मैं फिक्र परेशानी... ममता के मिलेजुले असर से रुआंसी हो गयी। मेरी आवाज की लरजिश से लगा वह चौंक उठी। मेरे और उनके बीच नागफनी की रुकावट यकायक खतम हो गयी।

उन्होंने ही डॉक्टर को बुलवाया फिर पूरे वक्त मेरे बच्चे का सिर गोद में रखे बैठी रहीं। शाम को मेरे शौहर के आने के बाद से लोगों की भीड़-भाड़ बढ़ने लगी, तो वह उठीं

'अब मैं चलूं... कुछ काम है'

'अरे दीदी...' मैंने कोल्ड ड्रिंक्स सबसे पहले उन्हीं के सामने करते हुए एहसानमंदी से कहा, 'सारा दिन तो मेरे साथ परेशान होती रहीं आप, अब जरा रुक जाइए...

'नहीं, इसकी जरूरत नहीं...'

'लेकिन...

मैंने जाती हुई उनको देखा और एक नजर दूसरे मौजूद लोगों पर डाली... जिनके हाथों में मैंगोजूस से भरे गिलास पहुंच चुके थे। ये आये तो थे मेरे बच्चे की मिजाजपुर्सी करने मगर अपने कहकहों, खुसरगप्पीयों से उसकी नींद भी लूट चुके थे, जिसे बड़े जतन से वह ला सकी थीं उस दिन।

मौसमें बहार लाने के लिए पौधों को पानी देना पड़ता है, बड़ी देखभाल करनी पड़ती है और बड़े नखरे उठाने पड़ते हैं उनके... मगर ये नागफनी...

जाती हुई उनको और सामने उनके नागफनी की बाड़ से ढके छोटे-से बंगले को मैंने देखा और नागफनी की अजमत के आगे मेरा सर झुक गया... कितनी बेलाग कितनी बेजर है ये नागफनी... रेगिस्तान के सीने पर हरयाली की आबरू बनकर फैली ये नागफनी जिसे बदले में एक बूंद पानी की भी तलब नहीं फिर भी जो चट्टान पत्थर, जमीन सबको... सब्जे के नाम पर अपने वजूद से आबाद कर देती है।

गेट खुलकर बंद हो चुका था... अंदर से छन छनकर नागफनी की कांटेदार जालियों में से रोशनी आ रही थी... मिजाजपुर्सी को आये अड़ोसी-पड़ोसी जा चुके थे, खाली गिलास और प्लेटें बेतरतीबी से मेज पर इधर-उधर बिखरे थे और मेरा बच्चा शोर और खटपट से जाकर बिस्तर पर मचल रहा था, दर्द और बेचैनी से। उसके सर को अपनी गोद में रख चुपचाप मैं सोचती हूं... काश वह होती इस वक्त मेरे पास... और ये लोग न आये होते...।

-दूरदर्शन केंद्र, झालना डूंगरी, जयपुर (राज.)

अनोखा फूल

स्विट्जरलैंड का 'सोल्डानेवा' फूल संसार में अनोखा फूल है यदि इस फूल के बीज को बर्फ में गाड़ दिया जाए तो अंकुर बर्फ को छेद कर बाहर निकल आते हैं।

□ मंजु आर. अग्रवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ री चिनगारी : मैं ज्वाला हूं

● प्रियदर्शन नारायण

छायावादोत्तर हिंदी गीति काव्य के उन्नयन एवं विकास में जिन कवियों की भूमिका अहम रही, निश्चय ही स्व. गोपाल सिंह नेपाली का नाम उनमें पांक्तेय रहा। बच्चन, नरेंद्र शर्मा, बलवीर सिंह रंग तथा तत्पश्चात रामवतार त्यागी, नीरज एवं वीरेंद्र मिश्र आदि ने हिंदी गीति काव्य को लोकप्रिय बनाया, इसमें संदेह नहीं, किंतु नेपालीजी ने उसे लोकप्रियता के चरम शिखरों पर आसीन किया । और, हिंदी के गीत आम जनता के गीत बन गूंजने लगे । गीतों से उन्हें कितना प्यार था, यह उनके ही शब्दों में देखा जा सकता है ।:—

यह गीतों का है देश,
यहां चरवाहा विरहा गाता है ।
सुख हो दुःख हो सौंदर्य यहां,
गीतों में गाया जाता है ।

जयदेव एवं विद्यापति की परंपरा में जन्मे नेपाली हिंदी के जातीय कवि रहे । यौवन के उफान और जवानी के ज्वार से छलक उठनेवाले उनके गीत रस के गागर हैं । उत्साह, उमंग और शक्ति के अक्षय स्रोत उनके गीत वस्तुतः नवसृजन की अप्रतिम शब्द-साधना हैं । अवसाद-विषाद, निराशा, अनास्था, कुंठा, संत्रास आदि की छाया इनमें कहीं नहीं। अल्हड़ ग्राम-सौंदर्य, यौवन की मस्ती, प्रणय और वेदना में सने उनके गीत प्रकृति के नानाविध रंगों-ध्वनियों के संस्पर्श से आज भी संमूर्त हो उठते हैं । प्रेम, रोमांस, सौंदर्य, रहस्य और राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत नेपाली दरअसल रससिद्ध कवि हैं । उनमें लोक संगीत की राग-रागिनियां बोलती हैं । उनकी रसभीनी दो-चार पंक्तियां देखें—

बरसी तो रह गई बरसती,
प्रहरों तक बावरी बदरिया ।
रुनझुन -रुनझुन चली बजाती,
बूंदों की झांझरी बदरिया ।

११ अगस्त, १९११ को बेतिया में जन्मे नेपाली की शिक्षा-दीक्षा तो यद्यपि प्रवेशिका तक ही सीमित रही, किंतु अपने सैनिक पिता के साथ देश-देशांतर का भ्रमण उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपालीजी जीवन की समग्रता के कवि हैं, उन्होंने भारती के भंडार की श्रीवृद्धि तो की ही उसे सौरभयुक्त भी किया ।

पर्याग्रपत किया और शैशव से यौवन-तक का अधिकांश समय प्रकृति की मनोरम घाटियों में ही व्यतीत हुआ । फलस्वरूप प्राकृतिक सुषमाओं ने उनके मन प्राणों को सहज सम्मोहित किया जिसकी स्पष्ट छाप उनकी कविताओं पर आ उभरी और आजीवन अक्षुण्ण रही । ***'पीपल के पत्ते गोल-गोल, कुछ कहते रहते डोल-डोल', 'यह लघु सरिता का बहता जल, कितना शीतल कितना निर्मल', 'देहरादून' के मधुर बेर, जंगल में मिलते बेर-बेर'***—जैसी उनकी आरंभिक रचनाएं प्राकृतिक सौंदर्य से ओत-प्रोत रहीं । शनैः-शनैः उनका कवि किशोर हुआ और उनके प्रकृति चित्रण में और भी अधिक माधुर्य आ समाया :—

बिजली के वाण चले चहुं दिशि,
दल के दल बादल बिखर गये ।
पल भर में कलश हुए खाली,
जल वाले बादल निखर गये ।
घन अरुण गये, घन श्याम गये,
घन हरित गये, घन पीत गये ।

तभी तो उनकी सूक्ष्मग्राही कवित्व शक्ति पर रीझकर आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने लिखा था कि 'नेपाली की आंखें कैमरे की आंखें हैं, वे जहां जो कुछ देखती हैं, उन्हें चित्रवत् अपनी कविताओं में उतार लेती हैं ।'

पावस के इस रस-भीने मौसम में उनकी अत्यंत प्रसिद्ध कविता 'इस रिमझिम में चांद हंसा है' की कुछ पंक्तियां उद्धृत किये बिना मन नहीं मानता । आकाश में काली-कजरारी घटाएं छायी हैं । ठंडी हवाएं चल रही हैं । रिमझिम वर्षा की फुहारें कवि के भावुक मन-प्राणों को सुदूर घाटियों में जाने कहां ले जाती हैं और वह गा उठता है—

निद्रा भंग, दामिनी चौंकी, झलक उठे अभिराम सरोवर,

घर के, वन के अगल-बगल से छलक पड़े जलस्रोत मचलकर ।

हेर रहे छवि श्यामल घन ये पावस के दिन सुधा पिलाकर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ रहा है जड़ को चेतन जग जीवन में घुला मिलाकर

अजब शोख यह बूंदा-बांदी, पत्तों में घनश्याम बसा है,

झांकें इन बूंदों से तारे, इस रिमझिम में चांद हंसा है ।

इसी प्रकार नेपालीजी की प्रेमपरक कविताओं में रूप, श्रृंगार, मिलन, विरह, प्यार और दरस-परस की आकुलता का अत्यंत मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है । पता नहीं उनके हृदय में वह कैसी प्यास थी जो आजन्म कभी बुझ न पायी—

मैं प्यासा भृंग जनम भर का,
फिर मेरी प्यास बुझाए क्या
दुनिया का प्यार रसम भर का ।

नेपालीजी ने मांसल -सौंदर्य, प्रेम और वेदना से सने श्रृंगारिक गीतों में भी भारतीय संस्कृति की पहचान बनाये रखी, उनमें फूहड़पन, अश्लीलता या सस्ती लोकप्रियता का समावेश कभी न हो पाया । **'खिड़कियों से न कोई निहारा करे, मन दुबारा -तिबारा पुकारा करे'** श्रृंगारिक गीतों में भी अश्लीलता की बू-बास न आने पायी । यों फिल्म संसार में चले जाने पर उनके 'कवि' को कतिपय आलोचकों ने अवमूल्यित कर देखना आरंभ किया था । कभी मासिक 'चित्रपट' के मुखपृष्ठ पर उनकी एक कविता छपी थी

'छायी काली रतिया अंधेरी हो पिया'

— जिससे क्षुब्ध हो आचार्य शिवपूजन सहाय ने मासिक 'हिमालय' में अपनी टिप्पणी दी थी कि 'जिसकी सुनहरी कविता का स्वर याद है, उसकी रूपहली कविता कभी रुच नहीं सकती ।' किंतु सत्य तो यह है कि फिल्म संसार में रहने के बावजूद उनका कवि सदैव संवेदनशील रहा, अक्षुण्ण रहा । कभी कोई वाद, धारा या वातावरण उनके कवि-धर्म को आक्रांत न कर पाया । उनके गीतों में अल्हड़ता, मस्ती और सौंदर्य के ऊपर भी रहस्य का एक झीना-सा परदा सदैव लहराता रहा और यही कारण है कि उनके गीतों का मूल्य चिर शाश्वत है ।

उनके श्रृंगारिक गीतों की कुछेक पंक्तियां आज भी यदा-कदा याद आ जाती हैं—

चांद सूरज दिये, दो घड़ी के लिए,
रोज आते रहे और जाते रहे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो तुम्हारे नयन दो हमारे नयन,
चार दीपक सदा जगमगाते रहे ।

और इसकी अंतिम पंक्तियां इस प्रकार हैं—

इस तुम्हारे हमारे विरह ने पिया,
मजहबों के चलन को जनम दे दिया ।

प्रेमपरक उनके आरंभिक गीतों में प्रणय एवं विरह की अनुभूतियों के ऊपर भी रहस्यात्मकता का एक झीना-झीना आवरण छाया रहा । जैसे—

तन का दिया प्राण की बाती,
दीपक जलता रहा रातभर ।

होती रही रातभर चुपके,
आंख मिचौनी शशि-बादल में ।
लुकते-छिपते रहे सितारे,
अंबर के उड़ते आंचल में ।
बनती मिटती रही लहरियां,
जीवन की यमुना के जल में ।
मेरे मधुर मिलन का छण भी,
पल-पल टलता रहा रातभर ।
तन का दिया प्राण की बाती,
दीपक जलता रहा रातभर ।

वस्तुतः लौकिक प्रणयानुभूतियों और रूप-सौंदर्य को चिरस्थायी स्वरूप प्रदान करने के दो ही मार्ग हैं—प्रकृति एवं रहस्य का आलंबन, और नेपालीजी आजीवन इन्हीं मार्गों के अविराम पथिक रहे । अपने रसीले-रसभीने गीतों से कवि सम्मेलनों में वे एक समा बांध दिया करते थे । उनके सहज प्रेम-परिणय के गीत लौकिक भूमि पर जन्म लेते हैं और अलौकिकता की झांकी दिखा, एक टीस छोड़ फुर्र से उड़ जाते हैं । नारी हृदय की मनोव्यथा का जैसा मार्मिक चित्रण नेपालीजी के गीतों में नजर आता है, वह स्वयं में अप्रतिम है । वर्षों पहले, 'धर्मयुग' में छपी उनकी रचना आज भी लाखों काव्य-प्रेमियों को स्मरण होगी—

बाबुल तुम बगिया के तरुवर, हम तरुवर की चिड़ियां रे ।

जन्म हुआ तो जले पिता मां, यौवन खिला ननद-भाभी ।

ब्याह रचे तो जले मुहल्ला, पुत्र हुए तो बंध्या भी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जले हृदय के भीतर नारी, उस पर बाहर दुनिया सारी ।

जल जाने पर भी मरघट में, जल-जल उठीं लकड़ियां रे ।

बाबुल तुम बगिया के तरुवर, हम तरुवर की चिड़ियां रे ।

प्रकृति और प्रेम के भावविभोर गायक होने के साथ-साथ नेपालीजी आजन्म राष्ट्रीय चेतना के सशक्त प्रहरी भी रहे । जब स्वदेश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा आहें भर रहा था, तब उनकी कविताएं युवा वर्ग को अदम्य प्रेरणा दे रही थीं—

तू उड़ री चिनगारी बनकर, जाग-जाग मैं ज्वाल बनूं ।

तू बन जा हहराती गंगा, मैं झेलम बेहाल बनूं ।
तू भगिनी बन क्रांति कराली, मैं भाई विकराल बनूं ।

आज वसंती चोला तेरा, मैं भी सज लूं, लाल बनूं ।

यहां न कोई राधा-रानी, वृंदावन वंशीवाला ।
तू आंगन की ज्योति बहन री, मैं घर का पहरे वाला ।

जब कभी भारत की अस्मिता पर आंच आयी, तो उनकी लेखनी ललकार उठी—

भारत के जवानो, भारत के जवानो,
भारत से तुम्हें प्यार तो बंदूक उठा लो,
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो ।

कलम के साथ-साथ स्वाभिमान के भी अत्यंत धनी रहे वे—

मेरा धन है स्वाधीन कलम ।
लिखता हूं अपनी मरजी से
बचता हूं कैंची दरजी से
आदत न रही कुछ लिखने की
निंदा वंदन खुदगर्जी से
कोई छेड़े तो तन जाती
बन जाती है संगीन कलम
मेरा धन है स्वाधीन कलम ।

तुझ-सा लहरों में बह लेता
तो मैं भी सत्ता गह लेता
ईमान बेचता चलता तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं भी महलों में रह लेता
हर दिल पर झुकती चली मगर
आंसूवाली नमकीन कलम
मेरा धन है स्वाधीन कलम ।

नभ में उड़ना पसंद था उन्हें, पर पांव सदा धरती पर रहे—

औरों की कलम चिलम जैसी
फैलाए धुआं धरम जैसी
पर मेरे पास कलम ऐसी
उड़ने को उड़ जाए नभ में
पर छोड़े नहीं जमीन कलम
मेरा धन है स्वाधीन कलम ।

कविताओं में उनका व्यंग्य बड़ा चुटीला और पैना हुआ करता था । याद है, तब दिनकरजी की 'उर्वशी' नयी-नयी छपी थी । श्रृंगार का अद्‌भुत काव्य । उसके तुरंत बाद नेपालीजी की एक बड़ी तेज कविता 'ज्योत्सना' (पटना) के मुखपृष्ठ पर आयी--'उर्वशी की फटकार ।' उर्वशी कहती है—

सुना कि धरती के क्षणभंगुर
मुझ पर कलम चलाते हैं ।
ऐसी बातें सुनकर मुझको हंसी छूटती रहती है,
सारी रात हंसी के मारे कमर टूटती रहती है ।

फिल्म संसार में रहकर उन्होंने फिल्मी गीतों को भी एक नवीन स्वर, उन्नत स्तर दिया और प्रचलित उर्दू शब्दावलियों के स्थान पर विशुद्ध हिंदी के शब्दों को प्रतिष्ठित किया, जिसका अनुसरण बाद में भरत व्यास, सरस्वती कुमार दीपक एवं शैलेंद्र आदि ने भी किया । फिल्म 'तुलसीदास' में उनका एक प्रणय- गीत अत्यंत लोकप्रिय हुआ था जिसमें शुद्ध हिंदी की छटा देखी जा सकती है—

रहूं कैसे मैं तुमको निहारे बिना
कि मेरा मन ही न माने तुम्हारे बिना ।

इसी फिल्म के एक गीत में उन्होंने महाकवि तुलसीदास की प्रशस्ति में लिखा था—

सच मानो तुलसी ना होता तो हिंदी कहीं पड़ी होती
उसके माथे पे रामायण की बिंदी नहीं जड़ी होती ।

फिल्म 'नई राहें' का उनका भक्ति गीत *'दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अंखियां प्यासी रे'* आज भी जब कभी रेडियो पर आता है, मन-प्राणों को आलोड़ित कर जाता है ।

राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति असीम अनुराग था उनके मन में, असीम श्रद्धा थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी गणतंत्र दिवस के अवसर पर 'धर्मयुग' के सेंट्रल पेज पर उनकी एक कविता आयी थी, काफी सज-धज कर--

'हिंदी है भारत की बोली तो अपने आप पनपने दो ।'

उसकी कुछेक पंक्तियां हैं—

श्रृंगार न होगा भाषण से, सत्कार न होगा शासन से ।

यह सरस्वती है जनता की, पूजो उतरो सिंहासन से ।

नेपालीजी वस्तुतः प्रकृति, प्रेम एवं राष्ट्रीय चेतना के अनन्य कवि रहे । वे जीवन की समग्रता के कवि हैं, नवनिर्माण के, नवसृजन के कवि हैं । उनके वीर रस के गीतों में चारणों जैसी-उत्तेजना की लहर समायी है । महाकवि नेपाली ने भारती के भंडार की श्रीवृद्धि तो की ही, उसे सौरभयुक्त भी किया । हिंदी कविता को लोकलालित्य प्रदान करना उन जैसे-कुछ विरले स्वरसाधकों का ही कार्य रहा ।

जीवन के अंतिम दिनों में उनकी रचनाएं एक अव्यक्त दर्शन से मुखरित हो चली थीं । उन्होंने लिखा— *'तुम चांद मुझे दे दो पूनम का, सारा नील गगन ले जाओ ।'* ग्यारह अगस्त को नेपालीजी का ८३वां जन्मदिवस है । इस अवसर पर हिंदी संसार की ओर से, समस्त काव्य प्रेमियों की ओर से और साथ ही अपनी ओर से उन्हें अपरिमित श्रद्धा के शत-शत सुमन ।

बी/९२, मौर्यलोक, पटना—८०० ००१

अर्जुन : सदाबहार वृक्ष

सुगंधित व सुंदर फूलोंवाला एक वृक्ष है 'अर्जुन' ! आयुर्वेद में इस वृक्ष का उपयोग बहुत है :-

१.इसके फूलों को उबालकर पीने से पेट संबंधी रोग दूर हो जाते हैं, २. इसकी छाल व जड़ से हृदय रोग की औषधि बनायी जाती है, ३. इसके फलों का चूर्ण औषधि के रूप में प्रयोग होता है, ४. जड़ों को उबालकर इस पानी से घाव धोने पर वे शीघ्र भर जाते हैं, ५. छाल से निकाला गोंद भी अनेक औषधियों में डाला जाता है, ६. हड्डी टूटने पर इसका बनाया हुआ चूर्ण खाने से टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है ।

आदिवासी लोग इसके फूलों की माला विवाह, पुत्र-जन्म तथा शुभ अवसरों पर पहनते हैं । आयुर्वेद और साहित्य में इस वृक्ष की बहुत चर्चा की गयी है ।

□ मंजु आर. अग्रवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

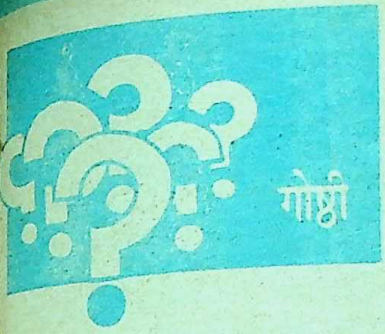

मितिन बनर्जी, इलाहाबाद; अख्तर अहमद, गया; रवि जैन, मेरठ

● 'कादम्बिनी' के मुखपृष्ठ पर सदा स्त्रियों के ही चित्र क्यों होते हैं ?

□ स्त्री ही संसार का श्रेष्ठ रत्न है, यह आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है । उन्होंने यह भी बताया है कि वराहमिहिर का यह निश्चित मत था कि "ब्रह्मा ने स्त्री के अतिरिक्त ऐसा कोई बहुमूल्य रत्न संसार में नहीं बनाया है जो श्रुत, दृष्ट, सृष्ट और स्मृत होते ही आह्लाद उत्पन्न कर सके । स्त्री के कारण ही घर में अर्थ है, धर्म है, पुत्र-सुख है । इसलिए उन लोगों को स्त्री का सदैव सम्मान करना चाहिए, जो सुरुचिपूर्ण रुझान और प्रवृत्ति के हैं, तथा जिनके लिए मान ही धन है ।" शक्ति संगम तंत्र के तारखंड में शंकरजी ने कहा है कि नारी ही त्रैलोक्य की माता है और वही शक्ति की देह है :

नारी त्रैलोक्यजननी नारी त्रैलोक्यरूपिणी ।
नारी त्रिभुवनधारा नारी देहस्वरूपिणी ॥

(१३-४४)

शंकरजी का ही कथन है कि नारी के समान न सुख है, न गति है, न भाग्य है, न राज्य है, न तीर्थ है, न योग है, न जप है, न मंत्र है, और न धन है । वही इस संसार की पूजनीय देवता है, क्योंकि वह पार्वती का रूप है । नारी शक्ति है ।

मोहन लाल शर्मा, हिसार

● इंसुलिन और हारमोन का क्या संबंध है ?

□ हारमोन रासायनिक द्रव्य हैं जो अंतःस्रावी (इंडोक्राइन) ग्रंथियों से उत्पन्न होते हैं और रक्त के साथ मिलकर शरीर के विभिन्न अंगों में प्रविष्ट होते हैं । इंसुलिन भी एक हारमोन है जो अग्न्याशय (पैंक्रियस) से उत्पन्न होता है । यह ऊतकों को रक्त से शर्करा की आवश्यक मात्रा प्राप्त करने में मदद करता है ।

कीर्ति महाजन, नीमच

● भारतीय संविधान में कितनी अनुसूचियां हैं, आठवीं अनुसूची में संशोधन क्यों किया गया ?

□ भारतीय संविधान में ३९५ अनुच्छेद और दस अनुसूचियां हैं । इन अनुसूचियों में संविधान से संबंधित विभिन्न प्रावधान रखे गये हैं । आठवीं अनुसूची में संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त १५ भाषाएं वर्णित हैं । तीन अन्य भाषाओं, यथा मणिपुरी, नेपाली और कोंकणी को भी मान्यता देकर इस अनुसूची में शामिल करने के लिए संविधान में संशोधन किया गया था । असमिया, बांगला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू पहले से ही हैं ।

दीवान चंद चौहान, शिमला

● कहते हैं कि केंचुआ किसानों की सहायता करता है । किस तरह ?

□ जमीन की उत्पादकता बढ़ाकर केंचुआ किसानों की मदद करता है । ये मृत कार्बनिक पदार्थों को उर्वरा मिट्टी में बदल देते हैं । केंचुए

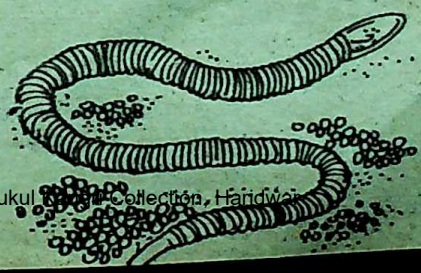

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमि को लगातार पोला करते रहते हैं, और इससे नीचे की मिट्टी ऊपर आ जाती है तथा इस पर पुनः मिट्टी की दूसरी परत चढ़ा देते हैं । इस प्रकार की पोली मिट्टी में हवा प्रवेश कर जाती है, जिससे उसका पानी सूख जाता है । केंचुए के मल का रासायनिक विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ है कि उसमें दुगुना मैग्निशियम, पांच गुना नाइट्रोजन, सात गुना फासफोरस तथा ग्यारह गुना पोटेशियम पाया जाता है । यह मिट्टी की उर्वरता को कई गुना बढ़ा देता है ।

मनीष कुमार सिंह, सिवान

● **नौसेना की स्थापना सर्वप्रथम किस देश में हुई थी ?**

☐ नौसेना का निर्माण सर्वप्रथम ग्रीक नगर राज्यों द्वारा किया गया था । इनका उद्देश्य भूमध्यसागर में अपने व्यापार मार्गों की रक्षा करना था, यद्यपि बाद में इसका उपयोग युद्ध के लिए किया जाने लगा था । ईसा पूर्व सन ६६४ में कोरियंथ और कारसिरा (या कार्फू) के बीच हुए प्रथम सागर युद्ध का उल्लेख मिलता है । स्थायी रूप से प्रथम नौसैनिक प्रशासन की स्थापना प्राचीन रोम (ई.पू. ३११) में की गयी थी । (स्रोत : मैक्मिलन एनसाइक्लपीडिया) ।

सरिता शाह, बुरहानपुर (म. प्र.)

● **लुटयेन्स कौन था, उसकी प्रसिद्धि किसलिए ?**

☐ सर एडविन लैंडसियर लुटयेंस सन (१८६९-१९४४) एक ब्रिटिश वास्तुकार था । उसने यूरोप के अनेक देशों, विशेषतया फ्रांस में अनेक प्रसद्धि इमारतों के डिजाइन बनाये थे, किंतु भारत में उसकी प्रसिद्धि का कारण नयी दिल्ली और राष्ट्रपति भवन (जो उस समय वायसराय का निवास था) के बनाये उसके डिजाइन थे ।

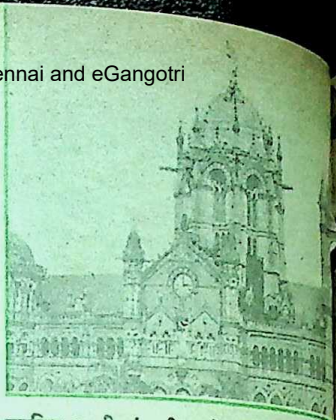

साजिद अली अंसारी, भदोही

● **बंबई वी.टी. रेलवे स्टेशन का इतिहास क्या है ?**

☐ भारत की प्रथम रेल १६ अप्रैल, १८५३ बंबई में बोरीबंदर से अपराह्न ३.३० बजे ३४ किलोमीटर की दूरी पर स्थित ठाणे तक चलाई गयी थी । बोरीबंदर में उस समय स्टेशन के नाम पर लकड़ी का एक ढांचा था । उसी स्थान पर बाद में महारानी विक्टोरिया के नाम पर संसार के भव्यतम रेलवे स्टेशनों में से एक विक्टोरिया टर्मिनस (वी.टी.) का निर्माण दस वर्ष की अवधि (१८७८-१८८८) में १६,३५,५६२ रुपयों की लागत पर किया गया । यह गोथथिक स्थापत्य कला का एक सुंदर नमूना है ।

इकबाल कृष्ण तिक्कू, नयी दिल्ली

● **दिल्ली कितनी बार बनी-बिगड़ी ?**

☐ दिल्ली बिगड़ी तो नहीं, किंतु राजधानी के रूप में स्थानांतरित जरूर होती रही । इसका इतिहास भारत जितना ही प्राचीन है । पौराणिक काल में दिल्ली (इंद्रप्रस्थ, योगिनीपुरा या खांडवप्रस्थ के रूप में) वर्तमान फीरोजशाह कोटला तथा हुमायूं मकबरे के बीच यमुना के तट पर बसी थी । वैसे दिल्ली का इतिहास तोमर राजपूत राजा अनंगपाल से प्रारंभ होता है जब सन १०५० में किला राय पिथौरा के नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रथम नगर बसाया गया था; दूसरी दिल्ली का निर्माण सीरी में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा सन १३०३ में हुआ; तीसरी को गयासुद्दीन तुगलक ने सन १३२१ में तुगलकाबाद के नाम से बसाया; चौथी दिल्ली सन १३३४ में जहांपनाह के नाम से मोहम्मद-बिन-तुगलक ने बनायी। पांचवीं दिल्ली का निर्माण सन १३५४ में फीरोजशाह तुगलक ने कराया और इसको फीरोजाबाद का नाम दिया; छठी दिल्ली के संस्थापक सैयद वंश (सन १४१४-५०) के शासक थे जिनकी राजधानी मुबारकाबाद के नाम से वहां बसायी गयी जहां आज कोटला मुबारकपुर है; सातवीं दिल्ली मुगल बादशाह हुमायूं और अफगान शासक शेरशाह सूरी ने सन १५३० और सन १५४० के बीच क्रमशः दीनपनाह और शेरगढ़ के नाम से बसायी थी; आठवीं दिल्ली का नाम शाहजहांनाबाद हुआ, जिसका संस्थापक मुगल बादशाह शाहजहां (शासन काल सन १६२८-५८) था; और नवीं दिल्ली का निर्माण अंगरेजों ने रायसीना पहाड़ी पर कराया जिसने फैलते हुए सभी राजाओं की दिल्ली को समेट लिया है। (स्रोत : 'दिल्ली', दीपक वोहरा)।

मंशाराम जोतवाणी, इंदौर

● **क्या यूरोप के कुछ शहर नहरों के किनारे बसे हैं ?**

☐ ऐम्सटर्डम और वेनिस ऐसे दो शहर हैं। नेदरलैंड्स की राजधानी एम्सटर्डम उत्तर सागर से जोड़ी गयी नहरों (१८७६) के एक जाल पर बसा है। इन नहरों का उपयोग परिवहन के लिए किया जाता है तथा नगर में ४०० से अधिक पुल हैं। वेनिस में भी लगभग ऐसी ही व्यवस्था है, किंतु यह नगर, जो उत्तर-पूर्व इटली में स्थित है, एक समुद्रताल (लेगून) में स्थित १०० से अधिक द्वीपों पर बसाया गया है। एक विशाल नहर से छोटी-छोटी नहरें निकालकर पूरे नगर को उनसे जोड़ा गया है। यह नगर लगभग १५०० वर्ष पुराना है।

नारायण जोशी, श्रीगंगानगर

● **किस हिंदी लेखक का छद्मनाम शिवशंभु शर्मा था ?**

☐ बालमुकुंद गुप्त का।

जयप्रकाश मिश्र, शिवहर (बिहार)

● **भारतीय नृत्यों में प्राचीनतम कौन-सा है ?**

☐ भरतनाट्यम, जो कि इतिहास के दुर्बोध युग में उद्भूत ४००० वर्ष ई. पू. पुराना बताया जाता है। (स्रोत : मनोरमा इअर बुक सन १९९३)।

कर्मवीर सिंह, टिहरी-गढ़वाल

● **पेले का पूरा नाम और जन्म स्थान कहां है ?**

☐ विश्व प्रसिद्ध फुटबाल खिलाड़ी पेले का पूरा नाम एडसन ऐंरेटेस दो नसीमेतो है। इनका जन्म सन १९४० में ब्राजील में हुआ था। अपने खिलाड़ी जीवन में १३०० से अधिक गोल करनेवाले पेले को प्यार से उनके देशवासी 'श्याम मोती' कहते हैं।

रामेश्वर वर्णवाल, झुमरी तिलैया

● **न्यागरा फाल्स कहां है ?**

☐ न्यागरा नामक कैनेडेयिन नदी से उद्भूत दो झरने हैं जो कैनेडा और अमरीका की सीमा पर विशाल रूप धारण करते हैं। न्यागरा फाल्स के जल से बिजली भी बनायी जाती है।

चलते-चलते

प्रश्न : लड़की यदि फिसल जाए तो क्या उसे उठाना चाहिए ?

अवश्य ! इतनी मजबूती से बांधिए कि फिर वह कहीं और न फिसले। — **सूत्रधार**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आपको इटली के सिस्टाइन गिरजाघर में जाने का मौका मिले तो आप गिरजाघर के भीतरी छत पर बनी कलाकृतियों को देखकर अवश्य दांतों तले अंगुली दबा लेंगे। दुनिया की पूरी सृष्टि-कथा को वहां पर चित्रों के माध्यम से साकार करने का जीवंत प्रयास किया गया है। छत पर कुल तीन सौ तैतालिस तसवीरों का अंकन किया गया है, जिनमें अधिकांश दस फुट से अठारह फुट तक की हैं। आदम का चित्र तो लाजवाब है।

इन कलाकृतियों का सृजक महान चित्रकार एवं मूर्तिकार माइकेल एंजलो था। उसका जन्म फ्लोरेंस के एक गरीब घर में हुआ था। वह मां के पास रहना पसंद नहीं करता था। सारे दिन

गड़े मुरदे उखाड़कर

गरीब घर में जन्मा वह बालक प्रतिभासंपन्न तो था ही, धुन का पक्का और परिश्रमी भी था। रुग्णावस्था में खाट पर लेटकर भी उसने जो भित्ति चित्र बनाये वे आज समूची मानव जाति की सांस्कृतिक धरोहर हैं।

इधर-उधर घूमना-फिरना और चीजों को देखते रहना बस यहां उसका एकमात्र शगल था। नौ साल की उम्र में ही एंजलो कई तरह की लकीरें खींचने लगा था। कहीं से कोयला ढूंढ़कर लाया और दीवार पर तसवीर उकेर दी, यही उसका रोज का काम था। उसने अपनी मां का रसोईघर कुत्ते, घोड़े, चिड़िया, मोर आदि की तसवीरों से भर दिया। मां उसकी इस हरकत पर नाराज होकर उसे धमकाती, लेकिन एंजलो तसवीरें बनाने से बाज न आता। कई बार मां ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह चित्रकार बना

● आलोक प्रभाकर

परेशान होकर उसे पीटा भी, लेकिन एंजलो ने तसवीरें बनाना नहीं छोड़ा । वह इधर-उधर से खोजकर कोयला या खड़िया ले आता था और मां की नजर बचाकर तसवीरें बनाता रहता था ।

एंजलो स्कूल में पढ़ने के लिए गया तो वह वहां भी गाय, बकरी, तोते की तसवीरें बनाता रहता । एक चित्रकार ने एंजलो के पिता को सलाह दी कि अपने लड़के को चित्रकारी सिखाओ । पिता को यह सलाह पसंद आयी और एंजलो को एक चित्रकार के यहां भेजा गया । एंजलो ने १४ साल का होते-होते कई चित्र रच डाले । मुश्किल से मुश्किल तसवीर को भी वह पांच-दस मिनट में बना डालता था । छोटी उमर में वह मूर्ति छेदने की छेनी भी चलाने लगा था ।

खंडित प्रतिमा का प्रभाव

एक दिन एंजलो एक बड़े कला-भवन में गया. वहां सैकड़ों सुंदर संगमरमर की मूर्तियां रखी थीं । एंजलो एक-एक मूर्ति को गौर से देख रहा था । एक मूर्ति पर उसकी नजर टिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी । वह वनदेवी की मूर्ति थी । इस मूर्ति का सिर टूट गया था, सिर्फ धड़ ही बाकी बचा था, मूर्ति एंजलो को बहुत पसंद आयी और उसने इस टूटी मूर्ति को अपनी स्मृति में संजोकर रख लिया ।

थोड़े ही दिन बाद एंजलो ने अपने घर पर वनदेवी की एक मूर्ति तैयार कर डाली ।

एंजलो को अपनी बनायी इस मूर्ति से संतोष न था । इस मूर्ति में उसे एक भारी कमी जान पड़ती थी । एक दिन एक कुशल शिल्पी इस मूर्ति को देखकर एंजलो की कारीगरी और हस्त-चातुर्य का बखान कर रहा था कि एंजलो अकस्मात कह उठा, "गलती पकड़ी गयी", उसने छेनी-हथौड़ा उठाया और अपनी बनायी वनदेवी की मूर्ति के अगले दो दांत छेनी से तराश डाले और बोला, "अब कोई कमी नहीं रही, सब ठीक हो गया । चेहरे और दांतों में साठ साल का अंतर था । अब यह कमी नहीं रही । दोनों अस्सी साल के हो गये ।"

माइकेल एंजलो के बारे में कहा जाता है कि वह मानवीय स्नायुओं के सही अंकन के लिए श्मशान में गड़े हुए मुरदे भी उखाड़ लाता था और उसकी चीर-फाड़ करके शरीर रचना की गहरी पड़ताल करता था । शव की चीर-फाड़ करते हुए उसे कई बार उल्टी होती । एक बार तो आंत तक उलट गयी,तो भी वह अपनी धुन में लगा रहा ।

सहृदय कवि भी

माइकेल एंजलो सिर्फ मूर्तिकार और चित्रकार ही नहीं था । वह एक सहृदय कवि भी था । मध्यकालीन यूरोप में विद्या, कला और विज्ञान में जो पुनर्जागरण हुआ, उसने कला के क्षेत्र में एंजलो ने युगांतरकारी कार्य किया ।

रोम, लंदन, पेरिस और फ्लोरेंस की कलादीर्घाओं और संग्रहालयों में आज तक एंजलो के बनाये हुए कई सुंदर चित्र और मूर्तियां रखी हुई हैं । रोम के विख्यात सेंट पीटर गिरजाघर की कारीगरी पर दुनिया की निगाहें टिकी हैं । इसकी बनावट और चित्रकारी पर एंजलो ने अपनी कला की सारी समझ को उंडेल दिया है । इस गिरजे के अंदर एंजलो की बनायी शुभ्र संगमरमर की मेडोना (मरियम) की मूर्ति बेमिसाल है । इसमें मरियम घुटने टेककर ईसा-मसीह के शव को संभाले हुए है ।

दुष्कर कार्य भी पूर्ण

सिस्टाइन के गिरजाघर में भित्ति-चित्र बनाने का काम लगभग मुश्किल ही लगता था । इसके चित्रांकन में एंजलो को छह साल लगे और इसी को बनाते-बनाते वह रोगी, पीला और शक्तिहीन हो गया था । एंजलो को एक लकड़ी की खाट पर लिटाकर छत के पास बीच में लटका दिया जाता था और वह दिनभर छत पर चित्रकारी किया करता था । इस तरह काम करते-करते वह बीमार हो गया और पांच साल बाद ९० साल की उम्र में सन १५६४ ई. में उसकी मृत्यु हो गयी ।

माइकेल एंजलो को खूब यश मिला । धन-वैभव भी खूब मिला, पर कला की साधना की धुन में वह कभी चैन से नहीं सोया और न कभी उसने अच्छा खाना खाया ।

फ्लोरेंस की उफित्सी कलादीर्घा में एंजलो की स्मृति में उसकी एक कांस्य प्रतिमा लगायी गयी और फ्लोरेंस में ही सांताक्रोचे गिरजाघर में उसकी समाधि है ।

—मु. पो. बाबा
टिहरी गढ़वाल, २४१

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

डर लगता है

घनश्याम, भीलवाड़ा (राज.) : एक वर्ष पूर्व गहरी रुचि से शतरंज खेलता था । एक दिन मैंने रात में तीन-चार बाजी गहरी शतरंज की खेली । सुबह सिर भारी था । जनवरी का महीना था, बहुत ही ठंडे पानी से नहा लिया । तत्पश्चात सिर और भारी हो गया । तब सरदी-जुकाम के लिए पांच-छह दिन दवा करनी पड़ी । सिर तो ठीक हो गया, परंतु उस दिन के बाद शतरंज खेलना छोड़ दिया । अब जब भी रात को नींद से जगता हूं, तब शतरंज की याद आती है, परंतु अब शतरंज नहीं खेलना चाहता । क्योंकि यह डर रहता है कि इससे मस्तिष्क पर बुरा असर हो सकता है । डॉक्टर साहब मुझे क्या करना चाहिए ?

वास्तव में आपकी समस्या रात की नींद खोकर शतरंज खेलने की आदत से आरंभ हुई । सिर भारी नींद के खोने से हुआ । चाहे आप पढ़ रहे हों या शतरंज खेल रहे हों । शतरंज एक मनोरंजन का साधन है, इसके खेलने से दिमाग पर कोई खराब असर नहीं पड़ता । सर के भारीपन को हटाने के लिए सरदी में ठंडे पानी से नहाने से भी उलटा असर स्वाभाविक था । इस प्रकार आपके मन में बुरी यादगार के तौर पर शतरंज का खेल जम गया है । इसे 'कंडीशंड रिसपोंस' भी कहा जाता है । आशा है आप समझ गये होंगे कि आपके डर का स्रोत कहां और है । इस पर आप आसानी से काबू पा सकते हैं ।

यह संशय क्यों ?

आ. कुमार, जमशेदपुर : २१ वर्ष का प्रतिष्ठित कंपनी में कार्यरत अभियंता हूं । कुंवारा हूं । छात्रावास में रहता हूं । समस्या संशय की है । स्वयं पर विश्वास नहीं । ताला बंद करके कमरे से बाहर आने पर लगता है कि खुला रह गया है । उसे बार-बार खींचकर देखता हूं । कई बार वापस लौटकर देखता हूं । इस प्रकार कुछ भी करता हूं तो तनाव हो जाता है । कसरत वगैरह करता हूं तो लगता है इससे स्वास्थ्य खराब हो जाएगा । दूध पीता हूं तो लगता है इससे पेट खराब हो जाएगा । कोई कुछ बोल देता है तो बार-बार उसके बारे में सोचता रहता हूं । अपनी पिछली जिंदगी के बारे में सोचता हूं तो कुछ कार्यों के प्रति पश्चाताप महसूस करता हूं । इन सबके कारण बहुत तनाव होता है । ऐसा कभी-कभी होता है तथा १०-१२ दिन तक रहता है । ऐसे समय में कमजोरी व कुछ भी करने को मन नहीं करता । कृपया सलाह दें ।

आपको अवसाद नामक रोग है । इस रोग में कई बार संशय भी हो जाता है । जैसा आपने लिखा है । इस रोग के ऊपर बहुत अनुसंधान हुए हैं । आधुनिक ज्ञान के अनुसार यह मस्तिष्क में कुछ रसायनों के असंतुलन के कारण ही होता है । आजकल इस रोग का इलाज दवा व मनोचिकित्सा द्वारा संभव है । इसके लिए मनोचिकित्सक से संपर्क करें ।

पत्नी तलाक चाहती है

र. नेगी, किन्नौर : २८ वर्ष का युवक हूं । १५ वर्ष की प्रेमिका से विवाह किया है । लिंग का आकार उत्तेजित अवस्था में दस इंच हो जाता है इससे सहवास के समय पत्नी को रक्तस्राव होता है तथा बेहोश हो जाती है । इस कारण वह तलाक लेना चाहती है । डॉक्टर साहब क्या सावधानी रखूं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या किसी अस्पताल में इसके उपचार हेतु कोई सुविधा है ।

आप दोनों में आयु का भी बहुत अंतर है, शारीरिक अंगों का भी अनुपात में अंतर है । ऐसे में आपकी पत्नी आपका रोल अदा करे तो बेहतर है, यानी पुरुष नीचे व स्त्री ऊपर, तथा वही अपनी गति पर नियंत्रण रखकर अपने को पीड़ा से बचा सकती हैं । बगल की अवस्था भी अपनायी जा सकती है ।

टी. बी. रोग ठीक हो सकता है ?

दीपक तेहबारा : क्या टी. बी. रोग पूर्णतयः ठीक हो जाता है । यदि दवाई का कोर्स पूरा किया जाए तो क्या यह फिर हो जाता है । यदि १०० ग्राम खून निकल जाए तो क्या इसे गंभीर समझना चाहिए और क्या यह ठीक नहीं हो सकता ? डॉक्टर साहब क्या इसमें छाती में दर्द भी होता है ।

टी. बी. का आजकल इलाज संभव है । कोर्स पूरा कर फिर डॉक्टरी जांच, एक्सरे आदि से तसल्ली के पश्चात ही दवा छोड़नी चाहिए । खुराक का खयाल रखें व खुली हवा में रहें, प्रदूषण से बचना चाहिए । इन सब बातों का खयाल रखें । यह भी देख लें कि और घर के लोग जो साथ रहते हैं, उनको भी टी.बी. न हो गयी हो । जांच कराएं । खून निकलने का अर्थ गंभीर समस्या ही है, परंतु रोग का इलाज आजकल संभव है ।

अधिक चिंता

श. चिश्ती, शहडोल म. प्र. : मेरे एक ३८ वर्ष के घनिष्ठ मित्र हैं । शादी-शुदा व्यापारी हैं । स्वप्न बहुत आते हैं । मुश्किल से नागा होता है । स्वप्न डरावने, मृत्यु तथा परीक्षा से संबंधित होते हैं । नींद खुलने पर काफी भयभीत व परेशान हो जाते हैं । कृपया सुझाव दें ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

कुछ लोगों को स्वप्न अधिक आते हैं । कुछ को कम । स्वप्नों से केवल इतना ही कहा जा सकता है कि आपके मित्र को चिंता के कारण स्वप्न अधिक आते हैं । वह किसी वजह से तनावपूर्ण मनोस्थिति में रहते हैं । जिससे स्वप्न अधिक व परेशानी के डरावने हो गये हैं । जब तक मित्र के बारे में सभी व्यक्तिगत जानकारी उसके ही मुख से हमें नहीं मिलतीं, तब तक उपचार की सहायता संभव नहीं ।

पत्नी के प्रति संदेह

अ., वाराणसी : ७ वर्ष पूर्व शादी हुई । मेरी उम्र मेरी पत्नी से शादी के समय कम बतायी गयी, हालांकि मैंने स्वयं ही उसे सही आयु बतायी । हम दोनों में ८ वर्ष का अंतर है । हमारे परिवार के बीच लेन-देन को लेकर मन-मुटाव तो हुआ, पर हमारी जिंदगी ठीक कटने लगी । एक दिन बातों-बातों में एक-दूसरे के जीवन में आये प्रेम-प्रसंगों की चर्चा चली तो उसने बताया कि ताई की लड़की का देवर जो बहुत सुंदर था— उस पर मोहित था । पत्र-व्यवहार भी हुआ । परंतु उनकी एक टांग के एक्सीडेंट के पश्चात थोड़ा लंगड़ापन आ गया था । बेरोजगार होने के कारण मां ने बात आगे बढ़ने दी । एक शादी में हम सब, पत्नी भी ताई के घर गये । मेरी पत्नी ने पूछकर ही उससे बातचीत की । वह रिश्ते में देवर लगता है । मुझे भी इजाजत देती रही । परंतु शादी के दौरान वह दोनों आपस में साथ-साथ इतने रहे कि बाद में सभी के सामने भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमानित महसूस करता रहा । वह उससे अपनी नजदीकी दिखाता रहा । अब उनका मन मेरी ओर से ऊब चुका है । मैं सोचता हूं कि अपनी पत्नी का विवाह उसी लड़के से स्वयं करा दूं । मेरे लिए तो उसकी याद का सहारा सारी उम्र के लिए काफी है, क्योंकि अब वह किसी न किसी बहाने मायके जाती रहती है तथा मेरी मनोस्थिति को नहीं समझती । मैं अवसाद का शिकार होता जा रहा हूं । साथ ही सिगरेट, शराब का सहारा लेता हूं ।

आप बहुत 'अच्छा' होने के नाते अपनी पत्नी का उस रिश्तेदार के साथ बढ़ावा सहते रहे तथा अब आप उसकी शादी कराकर स्वयं केवल अपनी पत्नी की याद में जीना चाहते हैं । हर व्यक्ति में स्वाधिकार की भावना होती है । आप में भी वह भावना पूरी तरह भरी हुई है । पत्नी का किसी पराये पुरुष से घुल-मिलकर बातें करना, आपको ऐसा लगता है कि वह उस व्यक्ति पर लट्टू है, पर व्यवहार में ऐसा कम ही होता है । आपकी यह हीनभावना है जो आपको स्वयं प्रताड़ित कर रही है । साथ ही पत्नी को विवश कर रही है—मानसिक यंत्रणा झेलने के लिए । यदि आपके उस लड़के के साथ शादी के प्रस्ताव के कारण पत्नी रोने लगी तो आपको इसमें कहीं सच्चाई को आंकना चाहिए । कहीं आप पत्नी की व्यवहार-कुशलता को गलत अर्थों की ओर तो नहीं ले जा रहे हैं । आप अपने पति-पत्नी के रिश्तों को सौहार्दपूर्ण रख सकते हैं । कटुता न आने दें । यदि पत्नी ने अपने भूतपूर्व रिश्तों को आपसे साफ-साफ बताया है तो वह उसके मन की कोमलता है ।

उसने अपनी सारी भावनाओं को आपके समक्ष रखा । आप अपने व्यवहार को सही दृष्टि से आंकें ।

बदबू से भर गया है एवरेस्ट क्षेत्र

एवरेस्ट शिखर आरोहण से एक पर्यावरणीय समस्या उत्पन्न हो गयी है । विगत ५० वर्षों से प्रति वर्ष लगभग ५० आरोही इस १७,५०० फुट ऊंची चोटी पर चढ़ने का प्रयास करते हैं, तथा उनके साथ भारवाहकों तथा अन्य ऐसे ही सहयोगियों का भी एक दस्ता रहता है जो बेस कैंप तक तो जाता ही है ।

इतनी ऊंचाई पर ऑक्सीजन की कमी और ४० अंश सेल्सियस तक नीचे गिरनेवाले तापमान के कारण इन आरोहियों का मल नष्ट नहीं हो पाता जिसके कारण यह क्षेत्र अब बदबू से भर गया है । अतएव ब्रिटिश माउंट एवरेस्ट मेडिकल एक्सिडिशन के सदस्य अब तीन संभावनाओं पर विचार कर रहे हैं : इसे जलाने की व्यवस्था, बर्फ में जमाकर सुखाने की कोई व्यवस्था हो, और सौर-ऊर्जा चालित कंपोस्टर ले जाया जाए ।

प्रथम एवरेस्ट विजेता आरोही दल के नेता, लार्ड हंट, ने बताया कि वह क्षेत्र बदबू से भर गया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मैं १९८७ में अपनी विश्व-यात्रा के अंतिम चरण में फिजी पहुंचा तो एक गांव के स्वागत-समारोह में इस दोहे ने मेरे मन-मस्तिष्क को झकझोर दिया—

जो मैं ऐसा जानती फिजी आये दुःख होय ।
नगर ढिंढोरा पीटती फिजी न जाइयो कोय ।।

फिजी के प्रवासी भारतीयों की आप-बीती प्रायः उसी प्रकार है जैसा कि मारीशस, सूरीनाम, गुयाना और त्रिनीडाड के लोगों की है । उन्नीसवीं शताब्दी के द्वितीय चरण में अरकाटी दलालों ने भारत के भोले-भाले अशिक्षित एवं हृष्ट-पुष्ट श्रम-वीरों को बहला-फुसलाकर इन देशों में भेजा था । रातों-रात धनी बनने की इच्छा और अपनी गरीबी से मुक्ति पाने के लिए पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार के लोग रोटी के कारण बहेलिए रूपी गौरांग प्रभुओं के जाल में फंस गये । भारतीय धर्मप्राण जनता से कहा गया कि 'मारीच देश' में सोना बहुत है, वहां चलो, सोना निकालो और उसे भारत लाओ। मारीच देश में सोना होने की खबर से भारतीय अपढ़ श्रमिक वर्तमान मारीशस देश में सन १८३४ में पहली बार आये, पर वहां उन्हें सोने की जगह मिला अतिशय शारीरिक कष्ट एवं अमानवीय व्यवहार ।

गीतों में अभिव्यक्त वेदना

ईख के खेतों में रात-दिन काम करते-करते जब ये श्रमिक थक जाते तो अपने जीवन की व्यथा-कथा अपनी अंधेरी और संकरी कोठरी में गीतों के माध्यम से व्यक्त करते। फिजी का यह लोक-गीत इसका प्रमाण है—

सब दुख खान सी. एस. आर. की कोठरिया
छह फुट चौड़ी आठ फुट लंबी

प्रवासी भारतीयों की वेदना

फिजी न जाइयो कोय !

● डॉ. कामता कमलेश

फिजी के प्रवासी भारतीयों की आप-बीती प्रायः उसी प्रकार है जैसी कि मारीशस, सूरीनाम, गुयाना और त्रिनीडाड के लोगों की है । उन्नीसवीं शताब्दी के द्वितीय चरण में अरकाटी दलालों ने भारत के भोले-भाले अशिक्षित एवं हृष्ट-पुष्ट श्रम वीरों को बहला-फुसलाकर इन देशों में भेजा था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

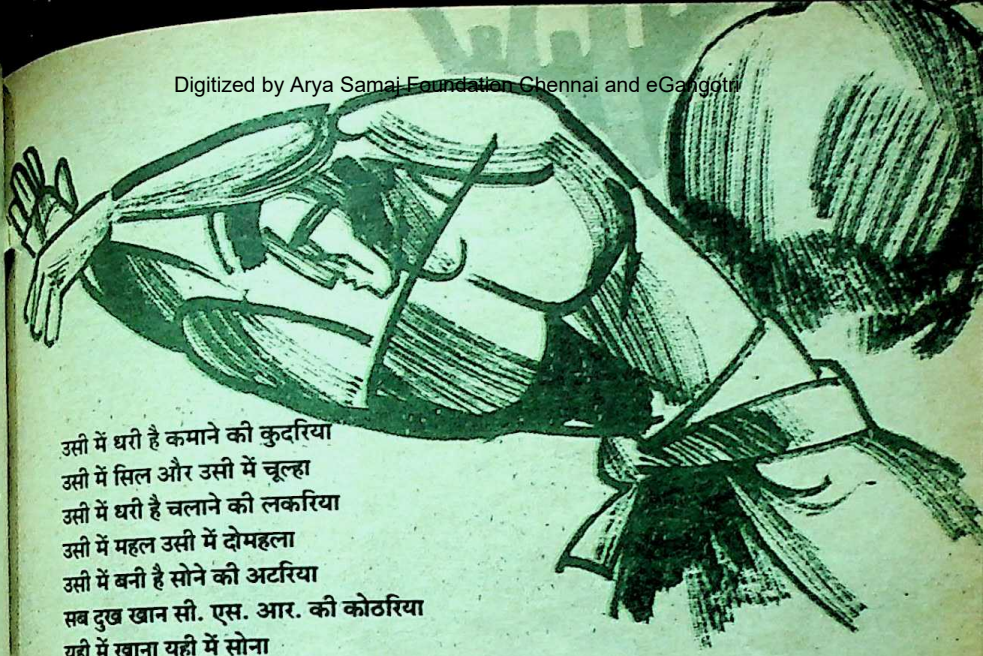

उसी में धरी है कमाने की कुदरिया
उसी में सिल और उसी में चूल्हा
उसी में धरी है चलाने की लकरिया
उसी में महल उसी में दोमहला
उसी में बनी है सोने की अटरिया
सब दुख खान सी. एस. आर. की कोठरिया
यही में खाना यही में सोना
यही में बहत पनरिया
'तास' कड़ा सरदरवा देवे, सर पर हनत कुदरिया
मूड़ फटत है देह दुखत है टूटी जात कमरिया

सी. एस. आर. अर्थात कोलोनियल शुगर रिफाइनिंग कंपनी उस कंपनी का नाम है जिसके अंतर्गत भारतीय श्रमिक काम करते थे। कंपनी मालिक इन मजदूरों को छह फुट चौड़ी और आठ फुट लंबी अंधेरी कोठरी में रखते थे। मैंने अपने फिजी प्रवास में ऐसी कुछ ऐतिहासिक कोठरियों को 'कुली लाईनों' में देखा था।

सन १८७३ में दक्षिणी अमरीका में स्थित सूरीनाम देश में भारतीय श्रमिक पांच साल के 'कंट्रैक्ट' पर लाये गये थे। इसे 'कंट्राक' भी कहते हैं और भारतीय श्रमिकों को 'कंट्राकी' कहा जाता था। मैंने अपने दो साल के सूरीनाम-प्रवास में सुना था कि वहां के प्रवासी भारतीय भी कोड़े की मार और नारकीय जीवन जीने के लिए बाध्य थे। प्रस्तुत लोकगीत में यही दर्शाया गया है—

अब से खबरदार रहो भाई
तेरी बिगड़ी बात बन जाई (टेक)
कलकत्ते में भरती करके भेज दिये जब भाई
लाय उतारे सुरिनाम में डीपू में भात खवाई
तीन महीने जलयान सफर में लाख झपेड़े खाई
'श्रीराम नगर' की चर्चा करके सुरिनाम दिये पहुंचाई
होत सवेरा नाम बुलाकर 'बकरा' ने बात सुनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांच साल 'कंत्राक' काट लो फिर भारत देव पहुंचाई
'टांगा', कटलिस, हाथ में लेकर जंगल कांटो जाई
चिउंटा-चिउंटी काटन लागे हाय-हाय चिल्लाई
जंगल काटे, 'कोको' काटे 'बाना' दिए लगाई
ईख काट, पकाय के हमने 'सुकुरू' दिए बनाई

यह लोकगीत सूरीनाम के प्रवासी भारतीयों की पूरी कहानी कह देता है। इस गीत से यह सिद्ध होता है कि नाम साम्य को लेकर गौरांग प्रभुओं ने मारीच देश की भांति इसे भी धर्म का सहारा लेकर 'श्रीराम देस' बताया था। श्रीराम देश पहुंचने की उद्दाम लालसा ने भोले भारतीय श्रमिकों को यहां लाकर जंगलों के बीच में लाकर डाल दिया। सूरीनाम में पहाड़ नहीं हैं जबकि मारीशस और फिजी में पहाड़ हैं। जंगलों को काटकर गन्ना बोना और चीनी बनाना, जिसे सूरीनाम के प्रवासी भारतीय 'सुकुरू' कहते हैं।

मारीशस में

मारीशस में जब प्रवासी भारतीयों को कष्ट एवं संघर्ष का जीवन जीकर गन्ने की खेती के लिए पहाड़ी भूमि को समतल करना पड़ता था, तब उस समय की यातना को याद कर यह लोकगीत सर्वत्र सभी की जिह्वा पर रहता था—

धोखवा मां परि के हम तजि देहलों देसवा
सहइ कै परतअ बड़ि पीर
सोनवा खातिर अइलों ऐहि रे गिरिच देस
गलि गइल सोनवा सरीर

क्रूर और अत्याचारी अरकाटियों के द्वारा सब्ज-बाग दिखाकर लाये गये लाखों भोले भारतीय श्रमिकों का जीवन नर्क के गहन गर्त में बीता, पर आज दूसरी, तीसरी पीढ़ी की उनकी संतानें अपनी संस्कृति की रक्षा करते हुए एक गौरवशाली एवं स्वाभिमानी जीवन जी रहे हैं। सूरीनाम के प्रवासी भारतीय आज यह लोकगीत खूब गाते हैं—

आओ भारत के गुन गाई
जहां से आइल बाप महतारी

सूरीनाम में जब भारतीयों के आगमन का महोत्सव 'लालारुख' सभागार में प्रति वर्ष मनाया जाता है, तब अपने पूर्वजों की विवशता को याद करते हुए यह लोकगीत प्रायः गाया जाता है—

छोड़ अइली हिंदुस्तानवा बबुवा पेटवा के लिए
छोड़ली मइया, बप्पा, बंधु, सारा परिवारवा
कि छुटल मिलन कर आश

पड़ली भरम में छूटल पटना के शहरवा
छूट गइले प्यारी गंगा मइया के अंचरवा
नांही मानली एकौ बाबा भइया के कहनवा
बबुवा पेटवा के लिए

'लालारुख' उस प्रथम जहाज का नाम है जिसमें सवार होकर सबसे पहले भारतीय श्रमिकों का जत्था यहां पहुंचा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

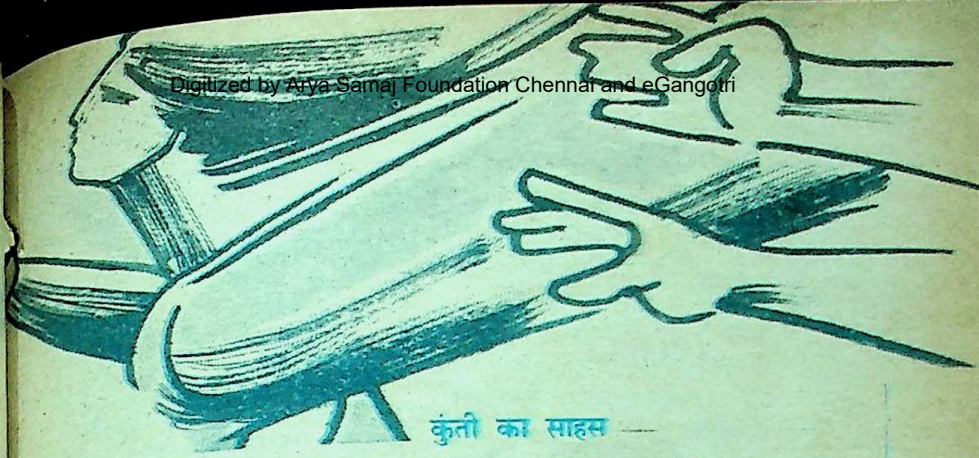

कुंती का साहस —

भारत से जानेवाले श्रमिकों में स्त्री-पुरुष एवं बच्चे सभी थे। जहां पुरुषों ने असह्य यातना भोगी है, वहां नारी जाति ने भी अपनी अस्मिता, प्रतिष्ठा और सतीत्व की रक्षा के लिए प्राणों तक की बाजी लगा दी थी। फिजी में 'कुंती' नाम की एक महिला थी। उसे और उसके पति को अरकाटियों ने ग्राम लखुआपुर, जिला गोरखपुर, उत्तर प्रदेश से बहकाकर फिजी पहुंचाया था। उस समय कुंती की अवस्था केवल बीस वर्ष की थी। कुंती ने बड़े साहस, चतुराई और कठिनाई के साथ चार वर्ष तक अपने सतीत्व की रक्षा की थी पर सरदार और कोलंबर (ओवरसियर) सदैव उसके सतीत्व को नष्ट करने के लिए प्रयास में रहते। एक दिन एक कोलंबर ने कुंती को साबू केरे नामक खेत में सब स्त्रियों और पुरुषों से अलग घास काटने का काम दिया तथा उसके पति को एक मील दूरी पर काम दिया गया ताकि वहां उसे कोई गवाह न मिले। इसी खेत में उसके साथ पाश्विक बलात्कार करने सरदार और कोलंबर पहुंचे। जैसे ही सरदार ने कुंती का हाथ पकड़ा वैसे ही वह हाथ छुड़ाकर भागी और पास ही की एक नदी में कूद पड़ी। संयोग से पास ही जयदेव नामक एक प्रवासी मजदूर की नौका जा रही थी। जयदेव ने कुंती को अपनी नाव में बैठा कर नदी पार कराया और उसे डूबने से बचा लिया। कुछ समय बाद कुंती ने अपनी यह करुण कहानी किसी से लिखवाकर कलकत्ते से प्रकाशित 'भारत मित्र' अखबार में भेज दिया और उसकी यह व्यथा उसमें छप गयी। तब भारत में उसके प्रति सहानुभूति की लहर फैल गयी और अंततः कुंती के साहस की प्रशंसा भी हुई। इसको वहां के एक लोकगीत में अब तक बड़े गर्व से गाया और सुना जाता है —

सतियों का धर्म डिगाने को जब
अन्याईयों ने कमर कसी
जल अगम में कुंती कूद पड़ी
पार बही मझधार नहीं
अत्याचार की चक्की में पिसकर धर्म नहीं छोड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदूपन अपना खो बैठे
भारत के वीर गंवार नहीं ।

इसी प्रकार झिनकी नाम की एक प्रवासी महिला सिंगाटोका में रहती थी । उसके साथ भी अनेक अत्याचार किये गये, जिसे वह इस लोकगीत के माध्यम से एकांत में गाती फिरती थी—

विपत झिनकी की सुने को दईया
साहिबा है बड़ा फिटईया
है अपना सरदार चुगलखोर
बैरन है राम दईया
मर जा भरतीवारो
मेरी सूनी करदी सेजरिया
सैंया तेरे कारने जल बल हो गई राख
पत से मैं बेपत भई पंचन में गई साख

'फिजी में गम खाना'

फिजी की राजधानी सूवा है तथा अन्य प्रमुख नगर है— बा, लौटोका आदि । प्रवासी भारतीय इस छोटे-से टापू के बारे में अपने लोगों को सचेत करते हुए कहते हैं—

भाई, फिजी में गम खाना
'बा' बन गया कोर्ट
'लौटोका' बन गया थाना
संभल के चलो आजकल
'सूवा' है जेहलखाना

फिजी में ऐसे अनेक लोकगीत गाये जाते हैं जिनमें प्रवासी भारतीयों के जीवन की वेदनाओं का दृश्य मिलता है । सूरीनाम में वर्तमान पीढ़ी जब अपने पूर्वजों के कष्टों को सुनाती है तो यह गीत गाकर उनसे प्रेरणा और साहस प्राप्त करती है—

वही दिनवा जब याद आवेलाअंखियां में भरेला पानी रे
हिंदुस्तान से भागकर अइली वही है अपनी कहानी रे
भाई छूटा, बाप छूटा और छूटी महतारी रे
अरकटिया खूब भरमवलीस कहे पैसा कमैबू भर-भर थाली रे
वही चकड़ा मा पड़ गइली, बचवा याद आय गइल नानी रे

मारीशस के प्रवासी भारतीय अपने एक बिरहा में आर्थिक विपन्नता और विवशता का चित्रण इस प्रकार करते थे—

गोलवा के हथवा मां चानी के चबुकवा हो
आपन बांधल बाटे जोड़
'मुनवा' के संगवा महलिया 'लंबाकवा' हो
आपन बा ओपड़िया नसीब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारीशस में 'अंगाजे रहल भइया' लोकगीत बहुत ही प्रसिद्ध है । इसमें पांच रुपये मासिक वेतन, खाने के लिए मोटा चावल, खेसारी की दाल, बिछाने के लिए चटाई, ओढ़ने को बोरा (टाट), सप्ताह में छह दिन कड़ी मेहनत और सातवें दिन अवकाश के समय बिना वेतन के मेम साहब की सेवा करनी पड़ती थी—

अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल भइया
एक महिनवा में पांच गो रुपइया हो, अंगाजे रहल भइया
खाइके मोटका चाउर रहल खुबे लाल, कोको के तेल अउर खेसारी के दाल
ओढ़े का गौनी अउर सुते के चटइया, अंगाजे रहल भइया
भर सेमेनवा सहेबवा क गुलाम दीमास के दिनवां मदमवां ला गुलाम
पूजा पाठ छोड़ के तु कोरबे देदे भइया, अंगाजे रहल भइया

फिजी में प्रवासी बिदेसिया लोकगीत के तर्ज पर अपनी व्यथा यों कहते हैं—

फिरंगिया के राजुआ मां छूटा मोरा देसुआ हो
गोरी सरकार चली चाल रे बिदेसिया
भोली हमें देख आरकाटी भरमाया हो
कलकत्ता पार जाओ पांच साल रे बिदेसिया
डीपुआ मां लाए पकरायो कागदुआ हो
अंगूठुआ लगाए दीना हार हे बिदेसिया
पाल के जहाजुआ मां रोय-धोय बैठी हो
कैसे होई काला पानी पार रे बिदेसिया

प्रवासी बहुल इन राष्ट्रों में आज भी कृषि ही प्रमुख व्यवसाय है । गन्ने की खेती और धान की खेती में वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग होने लगा है । लोकगीतों में गाये गये उनके कारुणिक जीवन का अंत हो चुका है । सूरीनाम के एक गीत में स्वाभिमान की स्पष्ट झांकी देखने को सहज ही मिल जाती है—

कलकत्ते से पुरखे आये डीपू मां नाम लिखवाय के
सूरीनाम मां डेरा डाला, जात-पांत लुकवाय के
इस धरती की शान बढ़ाऊंगा सारी शक्ति लगाय के
मैं तो हमेशा यहीं रहूंगा सरनामी जनता कहाय के

आज आवश्यकता इस बात की है कि इन राष्ट्रों के लोकगीतों के संकलन एवं प्रकाशन की, जिससे भारतीय लोक-संस्कृति युग-युगों तक जीवित रहकर आगामी पीढ़ी को प्रेरणा देती रहे ।

— अध्यक्ष एवं शोध निर्देशक, हिंदी विभाग,
जे. एस. हिंदू कॉलेज
अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न पात्रता का

शैलेंद्र सिंह, इलाहाबाद : मेरी उम्र २२ वर्ष है और मैं पोस्ट ग्रेजुएशन का छात्र हूं। बचपन में मेरे दाहिने आंख में मोतियाबिंद हो गया था और धीरे-धीरे करके आंख की रोशनी जाती रही। अब उससे बिलकुल नहीं दिखता, पर मेरी बायीं आंख पूर्णतः सही है। क्या मैं संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भारतीय प्रशासनिक परीक्षा में बैठ सकता हूं? चयन में कोई परेशानी तो नहीं होगी?

एक आंख के खराब होने के आधार पर संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में बैठने पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता। जिन क्षेत्रों में कार्य की आवश्यकता के आधार पर दोनों आंखों का ठीक होना आवश्यक हो, ऐसे क्षेत्रों को छोड़कर आपको नौकरी मिलने में एक आंख का खराब होने के आधार पर बाधा नहीं पड़नी चाहिए। चयन के लिए निर्धारित योग्यताएं और आवश्यकताएं तो आपको पूरी करनी ही होंगी। यदि एक आंख खराब होने के आधार पर आपको परीक्षा में बैठने से रोका जा रहा है, तो आपको यह तथ्य भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय के सामने रखना चाहिए।

कुछ उपाय बताएं

मधुसूदन कुमार श्रीवास्तव, छपरा : मेरी एक बहन है, जिसकी उम्र ३८ वर्ष है तथा उसके चार बच्चे हैं। उसके पति डॉक्टर हैं तथा उनका अपना निजी क्लीनिक है। मारपीट करना उसकी आदत है। पहले वह मारपीट आस-पड़ोस तथा घर के लोगों से करते थे। लेकिन कुछ समय से वह अपनी पत्नी और बच्चे से भी मारपीट करने लगे हैं। शराब भी पीते हैं। जान से मारने तक की धमकी देते हैं। हम नहीं चाहते हैं कि पति-पत्नी में भी तलाक हो। कृपया ऐसा उपाय बताएं कि सब ठीक हो जाए और सब मिल-जुलकर रहें।

अब तो केवल एक ही उपाय है कि आपकी बहन बच्चों के साथ अलग रहने लगे और अपने पति से अपना तथा बच्चों का जीवन यापन व्यय मांगे। शायद, इस कार्यवाही से उनमें सुधार आ सके। जीवन यापन की रकम देने के भय से शायद मारपीट बंद कर दें। जहां समझाना काम नहीं आता, वहां यदि भय बनाया जा सके, तो कभी-कभी लाभप्रद होता है। यह सब इसलिए भी आवश्यक है कि मारने की धमकी देनेवाला व्यक्ति कहीं कुछ कर ही न बैठे, इसलिए समय रहते उपचार करना चाहिए।

कैसे मिले जमीन

नरेंद्र प्रसाद, बोकारो : मैं पटना में जमीन पाने के लिए एक कोपरेटिव का सदस्य बना, जिसने २२ हजार रुपये लेकर मुझे एक हजार वर्ग फीट जमीन दे दी, जिसकी कलकत्ता में रजिस्ट्री की गयी थी। करीब छह साल बाद वह जमीन यह कहकर कि जमीन में झमेला है, हमसे रजिस्ट्री के द्वारा वापस ले ली। अब हम जमीन मांगते हैं, तब टालमटोल कर रहा है। कभी कहता है कि ३० हजार रुपये ले लीजिए। कभी कहता है कि मैं आपको जमीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूर दूंगा । क्या मैं फिक्स डिपोजिट के हिसाब से अपना पैसा मांग सकता हूं या जमीन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ?

ज़मीन आपको पटना में दी गयी और उसका पंजीकरण करवाया गया कलकत्ता में । ऐसा क्यों किया गया ? साधारणतयः जमीन का पंजीकरण उसी क्षेत्र में करवाया जाता है, जिस क्षेत्र में जमीन होती है ।

आपको जमीन पंजीकृत प्रलेख के आधार पर दी गयी । इसके तुरंत बाद आपके द्वारा दी गयी रकम के बदले आपको जमीन दिये जाने की कार्यवाही पूरी हो गयी । अर्थात आपको अपनी रकम की भरपाई हो गयी । जब दोबारा रजिस्ट्री करवाकर जमीन वापस ली गयी, तब आपसे क्या दस्तावेज लिखवाये गये । इस दस्तावेज के आधार पर आपका अधिकार क्या है, इस पर विचार किया जा सकता है ।

न्यायालय जाने की स्थिति में आपको यह प्रमाणित करना होगा कि जमीन वापसी के दस्तावेज लिखवाते समय आपको उसकी कीमत या आपका रुपया वापस नहीं किया गया । यदि आपने पंजीकार के समक्ष रुपया वापसी स्वीकार की है, तो आपको परेशानी हो सकती है । आपके दस्तावेज देखकर ही आपके अधिकार का निर्णय किया जा सकता है ।

अपील का अधिकार

भगवान दास, हरदा : छोटी अदालत से केस हारने के बाद और बड़ी अदालत में अपील करने तथा उससे भी हारने के बाद, भारत में फिर कहीं भी अपील करने का अधिकार शेष नहीं रहता । क्या यह सही है ? यदि हां, तो यह तो न्याय नहीं हुआ । जब मानव को न्याय की गुहार करने का अधिकार है तो क्रमशः निम्न कोर्ट से सर्वोच्च अदालत (सुप्रीम कोर्ट) तक में हारता रहे या जीतता रहे । अपील करने का अधिकार हर नागरिक के मानवीय अधिकार के रक्षण पोषण हेतु होना चाहिए । कृपया, सही तथ्य से अवगत कराएं ।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ

— रामप्रकाश गुप्त

किसी भी वाद की स्थिति में मुकदमा करने तथा मुकदमे के निर्णय से संतुष्ट न होने पर अपील करने का अधिकार किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है, इसके लिए कानून बने हुए हैं । कानून के द्वारा मुकदमा करनेवाले व्यक्ति को मुकदमा करने तथा न्यायालय को उसकी सुनवायी का अधिकार दिया गया है । अपील करने के प्रावधान भी कानून में हैं । किसी भी मुकदमे के किसी स्थान तक जाने के बाद निर्णय को अंतिम मानना ही होगा और वह क्या हो, इसका विवरण अलग-अलग किस्म के मुकदमों के लिए अलग-अलग है । आवश्यकतानुसार उसमें संशोधन करने का अधिकार संसद तथा विधान मंडलों में निहित है । भारत के संविधान ने देश के उच्च न्यायालयों को धारा २२६ व २२७ के अंतर्गत विशेष अधिकार दिये हैं । अपील की व्यवस्था नहीं होने की स्थिति में उच्च न्यायालय के समक्ष संविधान की धारा २२६ या २२७ के अंतर्गत समादेश याचिका प्रस्तुत की जा सकती है । सर्वोच्च न्यायालय में समादेश याचिका प्रस्तुत करने का प्रावधान भी भारतीय संविधान के अंतर्गत किया गया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैथिली कहानी

पत्ते का मनुष्य

● गोबिंद झा

क्या कहा आपने ? पत्ते का मनुष्य ! हां पत्ते का मनुष्य ! जिसे पंडित लोग 'पर्णनर' कहते हैं । कोई भी व्यक्ति यदि बारह वर्ष तक लापता रहता है तो एक लाठी में पीपल के पत्तों को लपेटकर एक पुतली बनायी जाती है । और उसका दाह संस्कार किया जाता है, उस व्यक्ति के नाम पर । यद्यपि हो सकता है किसी महाजन के डर से वह व्यक्ति अपने गांव नहीं लौट रहा हो, कहीं अच्छी तरह जीवन-यापन कर रहा हो । पर उसकी खोज-पूछ कर उसे लौटा लाने की चिंता इस रूढ़िवादी अथवा यों कहिए बूढ़े समाज को कहां है ! उसे तो बस इतनी-सी चिंता है कि जल्दी से बारह वर्ष पूरे हों और श्राद्ध में कचरमकूट मचे ।

कथा का प्रसंग है—बतहू के लापता होने की बारह वर्ष की अवधि पूरी हो रही है । जिस आशा के बांध ने लालगंजवाली के सिंदूर को आंसू के अजस्र प्रवाह में धुलने नहीं दिया, जीवन के मोह को खतम नहीं होने दिया उस आशा का बांध आज टूट जाएगा । निष्ठुर समाज उसकी मांग के सिंदूर को मिटा देगा । दोनों हाथों की चूड़ियों को तोड़ देगा और उ[illegible] घर-द्वार को बेच उत्साहपूर्वक श्राद्ध करने को बाध्य कर देगा ।

दालान पर सभा बैठी है । टूटी कमानीवाले चश्मे की डोरी को कान में लपेटते हुए पत्रा देखकर पंडितजी ने कहा—हां, माघ शुक्ला पंचमी वृहस्पतिवार को इनके 'पर्णनर' का दाहसंस्कार और उसके तीसरे दिन श्राद्ध । [illegible] पर नाक जोड़ से सुड़कते हुए 'भोला बाबू' बोले—सुन रहे हैं आप सब ! अब सोचिए, उस बिचारी विधवा का कैसे उद्धार होगा । [illegible] बतहू को कैसे सद्गति मिलेगी ।

सभी क्षणभर एक-दूसरे का मुंह ताकते रहे कि गांव के महाजन 'फूदन ठाकुर' ने मुंह खोला—"अरे, किसी का श्राद्ध कभी पड़ा रह[illegible] है जो इनका पड़ा रहेगा महाजन के असली दलाल 'संतोषी मिसर' बोल उठे—"बस-[illegible] हम लोग इतना ही सुनना चाहते थे । अब [illegible] सब किसी तरह की चिंता न करें । 'फूदन [illegible] सब कुछ संभाल लेंगे ।" अपनी मनोकामना सफल होते देख गांव के लोगों को चेतावनी [illegible] हुए—फूदन ठाकुर ने कहा—अजी बाबू [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

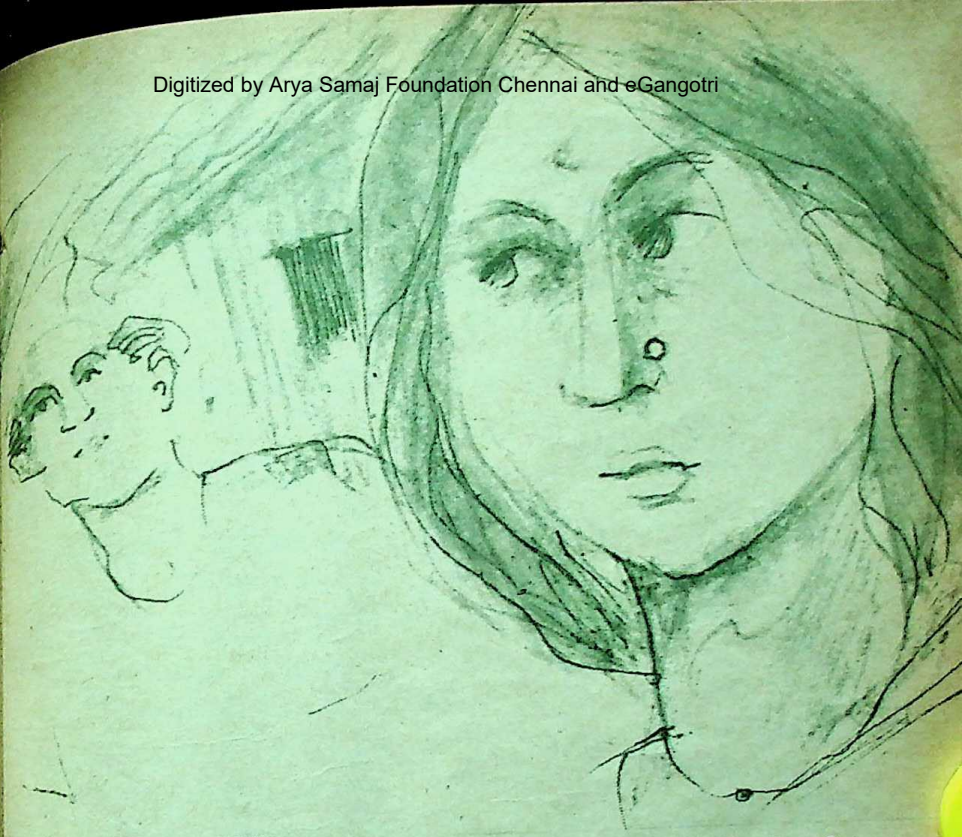

माफ कीजिएगा । यह गांव है भारी लीचड़ । यहां भला करके भी गाली सुनने को मिलती है । देखिएगा कहीं ऐसा नहीं हो ।

"आप जो करेंगे उसमें किसकी मजाल है ? कुछ बोले ? जिसमें ताकत है वह विधवा के उद्धार के लिए आगे आये न !" दलाल 'संतोषी मिसर' की इस उद्घोषणा के साथ ही सभा विसर्जित हुई ।

'संतोषी मिसर' यह समाचार लेकर तुरंत ही 'लालगंजवाली' के पास पहुंचे । बीच आंगन में पेट के बल लेट वह सिसक-सिसककर रो रही थी ।

"काकी इस तरह रोने-धोने से काका क्या लौट आएंगे । रोइए नहीं । विवेक से सोचिए कि कैसे काका की सद्गति होगी ।" मिसरजी ने साहस कर समझाते हुए कहा ।

लालगंजवाली सहसा उठकर बैठ गयी और चीखते हुए बोली—"क्यों मेरी खोज-पूछ करने आये हो । मैंने एक-एक कर सबको पहचान लिया । यह समाज या ये सारे सगे-संबंधी कोई मेरे काम नहीं आये हैं । मैं हाथ जोड़ती हूं । मेरे पास कोई भी मत आइए । हमें उद्धार नहीं चाहिए, हमें पतिता ही होने दीजिए । नहीं करना है उनका उद्धार ।"

"राम-राम ! काकी ऐसा मत बोलिए । हम सबके रहते आप क्यों पतिता होएंगी । आप कुछ भी चिंता मत कीजिए । हम सारा इंतजाम कर लिए हैं ।" इस तरह संतोषी मिसर बहुत देर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरोहित क्रियाकर्म करवा रहे हैं—हाथ में डंडा लीजिए—उसमें पीपल के पत्ते को डोरी से लपेटकर 'पर्णनर' बनाइए। महाजन उत्तर दे रहे हैं—क्या कहा ? पत्ते का मनुष्य ? पत्ते का मनुष्य कहीं हुआ है ? होता होगा तो किसी और युग में होता होगा। अब तो मनुष्य हाड़-मांस का होता है। उसके आंख और पंख दोनों होते हैं। वो देखिए विधवा को, कैसे नये पंखों के बल पर उड़ी जा रही है—उड़ी जा रही है मुक्त आकाश में....

तक उन्हें फुसलाते रहे। लेकिन जब लालगंजवाली को भान हो गया कि इस श्राद्ध के लिए मात्र तीन कट्ठाभर बची बसगीत जमीन भी उससे लिखवाना चाहते हैं तो वह फिर तमक उठी—वाह ! आप लोग इसी तरह से ठग-ठगकर खेत का क्या कहना है मांग का सिंदूर तक हर लिए। तब भी आप सबों को संतोष नहीं है ? वे दिन अब बीत गये ! जब तक मैं जिंदा हूं यह बित्ताभर आंगन हर्गिज नहीं बेच सकता है, हर्गिज नहीं।

महाजन 'फूदन ठाकुर' का असली दलाल संतोषी मिसर आसानी से हार माननेवाले में से नहीं। उसे मालूम है कि पिंजरे का तोता जाएगा कहां ? इसी तरह बहलाकर तो वे विधवा की दो बीघा से ऊपर सोने के टुकड़े-सी जमीन को महाजन के नाम करवा चुके हैं।

श्राद्ध का दिन नजदीक आ गया। महाजन के दलान में फिर सभा बैठी। भोला बाबू ने टिप्पणी की 'आगे नाथ न पीछे पगहा' फिर विधवा अपनी बची संपत्ति किसके लिए रखेगी। पति के श्राद्ध में सब लगा दें ताकि उसकी सद्गति हो जाए।

पंडित ने कहा—"बेचारी के पास क्या है ? मात्र दो-चार कट्ठा में खड़ा यह घर-द्वार।"

महाजन ने ताव दिखलाया—"ओ आप लोग बेकार ही यह सब सोच रहे हैं। एक कट्ठा हो या दो कट्ठा, जब मैं तोड़ा (पैसा) लेकर खड़ा हूं तब तो श्राद्ध अच्छी तरह हो होगा।"

भोला बाबू उदारता से फेहरिस्त लिख रहे हैं। पंडितजी षटरस भोजन की कल्पना में मुंह में आये पानी को रोकने की कोशिश में लगे हैं। महाजन अपनी कल्पना में मानस-पटल पर देख रहा है विधवा के दरवाजे के आगे बिजली से सुसज्जित आधुनिक बंगला। संतोषी मिसर मन ही मन हिसाब लगा रहे हैं—फेहरिस्त में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजार तक पहुंच गयी है । पांच प्रतिशत यानी सैकड़ा पांच भी मिलेगा तो एक सौ रुपये में संदेह नहीं । एक पहर रात तक विचार-विमर्श होता रहा । निर्णय हुआ कि सुबह-सुबह इंद्राशरपुर जाकर विधवा से रजिस्ट्री करा लिया जाए ।

सुबह हुई पर वहां तो सारा रंग ही बदला हुआ था । सुबह ही संतोषी मिश्र माथा पीटते महाजन के पास दौड़े—"बाप रे बाप अनर्थ हो गया ।"

"अरे क्या हुआ" आश्चर्य से महाजन ने पूछा ।

"क्या कहें रात में ही काकी भाग गयी ।"

गांवभर में हलचल मच गयी । महाजन के दरवाजे पर लोगों का मेला लग गया । क्यों भागी, कैसे भागी, किसके संग भागी इत्यादि प्रश्नों पर तर्क-वितर्क के गुलछर्रे छूटने लगे । महाजन ऊपर से तो चेहरे को विषाद-पूर्ण बनाये रहे पर भीतर ही भीतर खुश होते रहे "अच्छा हुआ, सिर पर पड़ी एक बला टली ।"

परंतु पंडितजी ने तो रंग ही बदल दिया । "विधवा ने तो जो किया सो किया पर 'बतहू' का श्राद्ध तो नहीं टलना चाहिए ।" पंडितजी ने प्रश्न खड़ा किया ।

महाजन का माथा ठनका—"यह आपने क्या कहा पंडितजी ? जब श्राद्ध करनेवाली ही भाग गयी तब श्राद्ध कौन करेगा ?" पंडितजी ने साहस बटोरकर उत्तर दिया—"शास्त्र के अनुसार श्राद्ध आपको करना पड़ेगा ।"

"क्या हमें ही उतरी पहनना पड़ेगा ।"

गांव के सारे बुजुर्ग एक साथ बोल उठे—"हां अब तो संबंध के हिसाब से श्राद्ध आपको ही करना पड़ेगा ।"

महाजन ने सोचा—यह जानता तो छोटी ही फेहरिस्त बनाता । अब तो अपने खोदे हुए गड्ढे में खुद ही गिर गया । फिर भी संतोष किया कि विधवा का घर तो हाथ लगा । लेकिन उनकी यह खुशी क्षणभर भी नहीं टिक सकी । बड़े-बड़े बाल एवं छींट की लुंगीवाला एक छोकरा समाचार लाया—खादी की साड़ी पहने एक काली लड़की कुछ दिनों से इस टोले में घर-घर घूम रही थी, वही लालगंजवाली को बहकाकर ले गयी है ।

गांव के एक वृद्ध ने टोका—छोकड़ा हो या छोकड़ी विधवा को बहकाकर जो भी 'केबाला' करवाएगा वह पछताएगा ।

महाजन को लगा—संपूर्ण शरीर का रक्त एवं पानी एक ही साथ सूख गया हो । वह ठक् से वहीं बैठ अर्द्ध-मूर्छित-सा हो गया । अचेत अवस्था में सपना-सा देखने लगा—वह उतरी पहनकर खड़ा है । पुरोहित क्रियाकर्म करवा रहे हैं—हाथ में डंडा लीजिए—उसमें पीपल के पत्ते को डोरी से लपेटकर 'पर्णनर' बनाइए । महाजन उत्तर दे रहे हैं—क्या कहा ? पत्ते का मनुष्य ? पत्ते का मनुष्य कहीं हुआ है ? होता होगा तो किसी और युग में होता होगा । अब तो मनुष्य हाड़-मांस का होता है । उसके आंख और पंख दोनों होते हैं । वो देखिए विधवा को, कैसे नये पंखों के बल पर उड़ी जा रही है—उड़ी जा रही है मुक्त आकाश में....

मूल लेखक का पता
—६-पूर्व पटेल नगर, पटना (बिहार)

अनुवाद—श्रीमती प्रतिमा पांडेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इश्क का मारा सैय्यद बुल्लेशाह

● बी. आर. पद्म

भक्ति और इबादत यह अद्धय तत्व हैं। इसी प्रकार इश्क और प्यार भी अद्धय तत्व हैं। ब्रह्म, अर्थात चराचर जगत जो हमें दिखायी देता है, वह ब्रह्म है। जो हमें दिखायी नहीं देता, जिसे हम खोजते हैं वह परब्रह्म और हुस्न, सौंदर्य अद्धय हैं। परब्रह्म अर्थात हुस्न को जिसने देखा उसे आशिक या परमभक्त कहा गया है। तालिब और मतलूब याने उपासक और उपास्य की भी दो श्रेणियां हैं। पहली श्रेणी है इश्क मिजाजी, जिसका भाव सांसारिक व क्षणिक उपलब्धि है। दूसरी है इश्क हकीकी ; जिसकी उपलब्धि हिज्र या विद्रोह में ही सुख देती है। भक्ति और इश्क में कोई अंतर नहीं है। इश्क अर्थात प्यार इस दिल में स्थापित किया गया है। जब यह जागृत होता है तो इसकी दो प्रक्रियाएं होती हैं। सांसारिक रूप से आसक्ति द्वारा उस परमानंद को पाना या फिर अलौकिक प्रणय में खो जाना। जब इस दिल में इश्क रूपी खुदा आदमी से दूर होता है तब वहां पंचविकार उभरते हैं जो शास्त्रों के अनुसार मानवता के लिए भयंकर हैं किंतु अकेला इश्क ही इन पांचों को मार गिराता है। यही यौगिक-शमन क्रिया है। इस इश्क को हृदय में स्थापित करने के लिए यौगिक क्रियाएं निभानी पड़ती हैं जैसे कि अष्टांग योग व हठयोग तथा पंचाग्नि में प्रवेश करना आदि। इसी प्रकार सूफियों का चिल्ला काटना भी यौगिक प्रक्रिया है। यह सब कर्म ईश्वर को बलात् हृदय में पाने के लिए हैं। परंतु जो किसी की निगाह से घायल होकर उसी के चिंतन में खो जाता है। वो आशिक भी परम भक्ति की श्रृंखला में आता है।

सूफी-संत और प्रेम

यदि हम संस्कृत वाङ्मय, उर्दू व फारसी अदब के पुरातन व मध्यकालीन जनकवियों व सूफी संत कवियों के व्यक्तित्व की परख करें तो उनके विगत जीवन में कहीं न कहीं इश्क की छेड़छाड़ जरूर हुई है। जो तो इश्क में मसरूफ रहकर सफल हुआ उसको आशिक का दरजा मिला जो इश्क में नाकामयाब रहा वह सूफी कवि या संत कवि बनकर अपने दिलबर, अपने उपासक के लिए वंदना करने लगा। इश्क का यह सिलसिला एक ही सतह पर है किंतु इस तरह का सुख और आनंद अवर्णनीय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह इश्क धारा तो युग-युग से प्रवाहित है, सतत अविरल है। प्रणय रूपी सांप जिसे छू जाता है वो मौत से भी नहीं डरता। प्रणय सभी विषों को काटता है। किंतु इस पुरातन प्रणय को जो कि सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुआ था किसी ने नहीं पहचाना, सब वासना के चक्कर में अपने-आप को धोखे में रखते आये हैं।

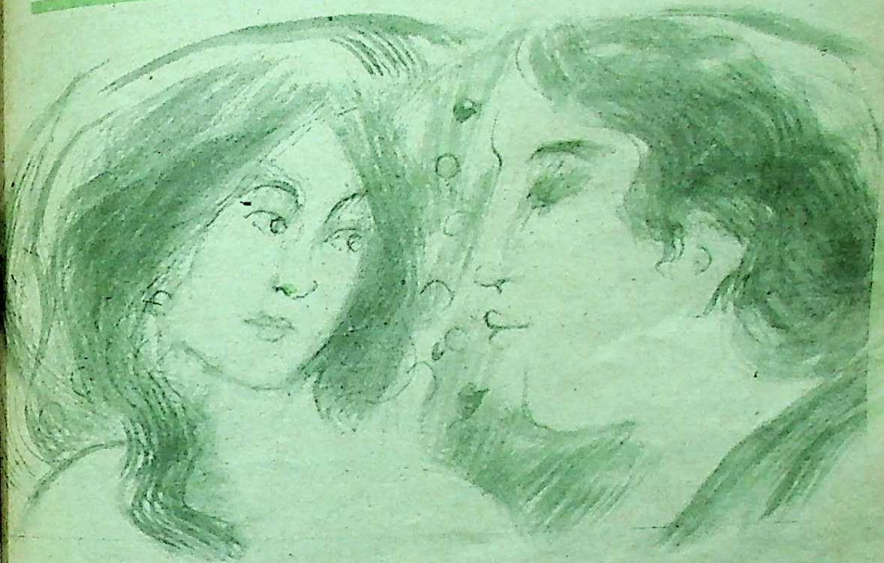

फारसी के फिरदौसी हों या संस्कृत भाषा के कवि म्यूर दिल मुहम्मद हों। अवधी के तुलसीदास और ब्रजभाषा के सूरदास सभी अपने अतीत में इश्क के बाण खाकर ही अच्छे कवि और भक्त हुए हैं।

यह कथा कई जगह वर्णित है कि सूरदास एक वेश्या के रसिक थे। तुलसीदासजी तो अपनी पत्नी पर ही मुग्ध थे। इसीलिए उनकी कविता में नारी पीड़ा को काफी स्थान मिला है। केशव कवि तो बुढ़ापे में भी जवानी को अनुभव करते थे।

सूफियों के वली सैय्यद बुल्लेशाह भी इश्क की मार से बचे नहीं। हुस्न और इश्क की इस जंग में बुल्लेशाह को जो दर्द मिला उसने उन्हें वो सूफी तत्व प्रदान किया जिसने उन्हें बहुत बड़ा संत बना दिया। जब-जब इस दिल में किसी की याद लिए विरह की टीस उठी तब-तब यह संसार अपना लगा है। क्योंकि संसार का प्रत्येक प्राणी आशिक को माशूक-सा लगता है। जब भी कभी भक्ति के आलम में वस्ल की वो बीती हुई घड़ियां याद आयीं तब वे रो उठे और उस प्रेमी को ईश्वर का रूप मानकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तड़पते भी रहे और काफी भी गुनगुनाते रहे होंगे—

देखे नीं ! की कर गया माही
लैंदा ही दिल ही गया राही ।

इन दो पंक्तियों को पढ़ने से यह अनुभव होता है कि मानो बुल्लेशाह की फकीरी और पीरी का मर्कज इसी में छुपा है, अर्थात इन दो पंक्तियों में उनकी पहली मुहब्बत की कोई टीस छुपी हुई है जो कि रह-रह कर उनको पीड़ा के पास ले जाती है । वास्तव में तालिब मतलूब का नाम दुनिया के सामने नहीं ले सकता ।

प्रेम : सांसारिक बंधनों से मुक्त

वो अदम्य निर्वचनीय, अवर्णनीय सौंदर्य का शाह उसका प्रियतम इतना बेदर्द निकला कि उसका दिल मोहकर कभी नजर ही नहीं आया । इसी निगाही के आलम में हिज्र की कहानी रूहानी होती जाती है । वो उस साजन के खयालों में इतना मसरूफ, तल्लीन है कि मां-बाप, भाई-बहन सब उसको झिड़की देते हैं । पूछते हैं कि तुझे क्या हुआ है । पर वो कैसे कहे । उसका जानी ही इस बात को जानता है जिसने इश्क रूपी फंदा उसके गले में डाल दिया है ।

इश्क विश्व रूपी रणक्षेत्र में घमासान है जोकि मनुष्य को एक तरफ खींच लेता है जिसमें भौतिकता, संबंध, धर्म, कुल और जीवन तक तुच्छ हो जाते हैं, इस इश्क के पास कांटे और पीड़ाएं ही हैं, लेकिन आशिक इश्क में निमग्न होकर मंसूर बन जाता है तथा मुहब्बत के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देता है । बुल्लेशाह भी अपने बारे में यही सोचते हैं कि उस दिलबर के वसल के लिए सांसारिक बंधन त्यागना ही परम श्रेष्ठ है ।

प्रेम : सृष्टि के आदि से उत्पन्न

यह इश्क धारा तो युग-युग से प्रवाहित है सतत् अविरल है । प्रणय रूपी सांप जिसे छू जाता है वो मौत से भी नहीं डरता । प्रणय रूपी विषों को काटता है । किंतु इस पुरातन प्रणय को जोकि सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुआ था किसी ने नहीं पहचाना, सब वासना के चक्कर में अपने-आप को धोखे में रखते आये हैं । प्रणय गौण रूप से हिंदू-शास्त्रों, नबियों की पुरानी बाइबल, क्राइस्ट की नयी बाइबल, (सेंट जोजफ द्वारा प्रणीत) कुरान, गर्ग संहिता ब्रह्मपुराण आदि में सृष्टि संरचना का हेतु उस ईश्वर का एक से दो रूपों में बंटकर अर्द्ध नारीश्वर हो जाना अथवा भगवान व भगवती बनकर महारास करना सृष्टि उत्पन्न करता है । ईश्वर तथा देवी का आह्लाद ही इश्क बनकर संसार में व्याप्त हो गया । यही खुदा है, यही धर्मसूत्र है जिसकी निगाह में शरीयत अर्थात मर्यादाएं तुच्छ हैं ।

यूनान के पुरातन साहित्य और धर्म के अंतर्गत भी इश्क व सौंदर्य को विश्व की दैवी शक्ति मान गया है । भारतीय प्रज्ञा व यूनानी प्रज्ञा बहुत पुरानी है, दोनों में अलौकिक विधाओं की विधि सुरक्षित है । जिसने इस इश्क को समझा वो कुल कायनात और आसमान के कुशाद सीने में धड़कते दिल की पीड़ा को समझा और सभी को प्यार की नजर से देखा, जो दिल इस रहस्य से वंचित है और स्त्री-पुरुष के आकर्षण को भोग का साधन मानते हैं वह जिन्न और दानव ही हैं । वास्तव में इश्क व हुस्न के रूप में कुदरत व कादिर ही स्त्री-पुरुष हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी नासमझी को देखते हुए साईं बुल्लेशाह ने कहा था—

इक मुसल्ला भन्न सुट लोटा ।
न फड़ तसबी कासा लोटा ।।
आलिम कहिंदा दे दे होंका ।
तरक हल्लालों खा मुरदार ।।
इश्क दी नवींओं नवीं बहार ।।

इश्क अर्थात प्यार ही वास्तविक जीवन है यह पाखंडबाजी, वाद-विवाद सब व्यर्थ की बातें हैं ।

मसजिद व ठाकुरद्वारे में सिवाय ताअस्सुब के कुछ नहीं है, वो इश्क रूपी खुदा तो दिल में रहता है । इस दिल को उसकी ओर लगाना ही सच्ची वंदना, पूजा है ।

खुदा और राम एक है, कहने को तो हम कह देते हैं लेकिन लोक का आचरण कुछ अद्भुत है कहता कुछ है, निभाता कुछ है । बात को पूरी करने का काम इश्क ही सिखाता है । बुल्लेशाह इस दुरूहता के बारे में यह स्पष्टीकरण इस काफी में कहते हैं—

मक्के गेयां गल्त मुकदी नाहीं
जिचर दिलों न आप मुकाइए ।

मक्का-यात्रा, गंगा-स्नान, गयाजी में पिंड-दान आदि क्रियाएं सब व्यर्थ हैं, जब तक हम मानवीय पीड़ा को निज की पीड़ा नहीं मानते, उस परमात्मा रूपी प्यार को परस्पर अनुभव नहीं करते ।

एफ—८७,
सैक्टर-१४, चंडीगढ़-१४

तनाव से घबराइए नहीं

क्या तनाव भी खुशी दे सकता है ? बेशक ! अगर आपको तनाव झेलने की आदत पड़ जाए तो । यह बात वैज्ञानिक रूप से साबित हो चुकी है । लंदन के एक वैज्ञानिक मेल्कम कैरूथर्स ने पिछले २० वर्षों के दौरान सैकड़ों महिलाओं और पुरुषों के हारमोंस की जांच की । इनमें कुछ बहुत ऊंचे तनाववाले पदों पर थे, जबकि कुछ आम आदमी थे । मेल्कम ने पाया कि तनाव के समय शरीर में इपीनेफ्रान नामक हारमोन बनता है, पर जब धीरे-धीरे तनाव झेलने की आदत पड़ जाती है, तब नारइपीनेफ्राइन नामक हारमोन बनने लगता है । यह हारमोन व्यक्ति को खुशियों से भर देता है । तो जनाब, तनाव से घबरायें नहीं । तनाव झेलने की आदत डालिए ।

—रेखा कौस्तुभ

एक प्रसिद्ध लेखक को एक ऐसी पुस्तक की एक प्रति भेंट की गयी जिसमें उसके ही संबंध में कई किस्से दिये गये थे । इस भेंट को स्वीकार करते हुए उसने धन्यवाद ज्ञापन का पत्र लिखा : "अपने से संबंधित किस्सों का मैंने भरपूर आनंद लिया, विशेषतया वे किस्से जिनकी जानकारी मुझे भी नहीं थी ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

बलविन्द्र कौर, इज्जतनगर

प्रश्न : उम्र २९ साल । सात वर्षों से वक्षस्थल के बीचोंबीच बिलकुल नीचे दर्द होता है । पीछे कमर की ओर जाता है । उसी समय उल्टी शुरू हो जाती है । पहले छह महीने में होता था । अब एक महीने में हो जाता है । सभी प्रकार के इलाज किये हैं, खास फायदा नहीं ।

उत्तर :अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । आंवला चूर्ण आधा-आधा चम्मच भोजन बाद पानी से लें । आहार-विहार का परहेज कर तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।

कु. के. डी., सेन्दुआर

प्रश्न : उम्र १६ साल । मोटी हूं, मासिक धर्म के दौरान पेट में काफी जोर से दर्द होता है । रंग काला होता है । समय १५ से १८ दिन बाद है । सिर में भी बहुत दर्द होता है ।

उत्तर :चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । दशमूलारिष्ट एक चम्मच, अशोकारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद समभाग पानी मिलाकर नियमित तीन माह सेवन करें ।

आर. एस. नाल, इंदरवा (नेपाल)

प्रश्न : पिताजी की उम्र ६३ साल है । उनके दायें पैर में ऊपर से लेकर नीचे तक बहुत दर्द रहता है । अनेक इलाज कराये लाभ नहीं है । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : समीरपन्नग रस दस ग्राम, साठ वटी बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । रास्नागूगल दो-दो वटी दोपहर-रात गरम पानी से लें । दही, चावल, शीतल पेय सेवन कर तीन माह औषधि सेवन करें ।

डॉ. रविन्द्र, पटना

प्रश्न : उम्र दस वर्ष । मस्तिष्क का लकवा । चलने, बोलने में असमर्थ । काफी अंगरेजी दवा कीं । अच्छी दवा बताएं ।

उत्तर : रसराज रस तीन ग्राम, अश्वगंधादिचूर्ण साठ-ग्राम इनकी साठ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से लें अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच, द्राक्षारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पिएं ।

राकेश तिवारी, बिलासपुर

प्रश्न : मेरा एक अंडकोष बड़ा है । कृपया आयुर्वेद की दवा लिखें ।

उत्तर : वृद्धिवाधिका वटी एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें ।

रामचन्द्र पांडेय, उज्जैन

प्रश्न : मेरे पुत्र की उम्र २२ वर्ष है । मई ९० में उसे बुखार आया । उसी स्थिति में उसे दौरे पड़ने लगे । अस्पताल में रहा— सिरदर्द शुरू हुआ; आंखों से रोशनी बरदाश्त नहीं होती थी । एक हाथ-एक पैर में लकवे-जैसी स्थिति पैदा हो गयी । एलोपैथी चिकित्सा करायी, अनेक डॉक्टरों को दिखाया पर उसकी आंखों की रोशनी चली गयी । कोई भी डॉक्टर संतोषप्रद जवाब नहीं दे पा रहा है । उसे दिखायी नहीं देता है । एक-डेढ़ महीने में दौरा पड़ जाता है । कृपया उचित इलाज लिखें ।

उत्तर : महात्रिफलाधृत आधा-आधा चम्मच सुबह दूध से लें । रसराज रस पांच ग्राम, सप्तामृत लौह चालीस ग्राम, इनकी अस्सी मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा दिन में दो बार मधु से दें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारस्वतारिष्ट एक चम्मच, अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच, बलारिष्ट एक चम्मच समभाग पानी मिलाकर भोजन बाद पिलायें । वात्तकुलान्तक रस दो ग्राम, वच चूर्ण बीस ग्राम, इनकी चालीस मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा रात में दूध से दें । दही, चावल, शीतलपेय, खटाई, मिर्च-मसालों का परहेज कर चिकित्सा करें ।

श्रीमती कमलेश, जबलपुर

प्रश्न : उम्र चालीस वर्ष । एक साल से रीढ़ की हड्डी में बहुत दर्द है । एलोपैथी दवा ली लाभ नहीं, बैठने व सामने की तरफ झुकने में तकलीफ बहुत होती है ।

उत्तर : रास्नागूगल एक वटी, चंद्रप्रभा वटी एक वटी, सुबह-शाम गरम पानी से लें । समीर पन्नग रस दस ग्राम की साठ मात्राएं बनाएं । एक-एक मात्रा दोपहर-रात शहद से लें ।

एक पाठिका...

प्रश्न : युवा पाठिका हूं । हस्तमैथुन की गलत आदत पड़ गयी । दुर्बलता अधिक आ गयी है । पेशाब बार-बार आता है । शीघ्र विवाह होने वाला है । क्या स्थिति बनेगी, सोचकर बहुत परेशान हूं ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक-एक सुबह-शाम पानी से लें । च्यवन प्राश अवलेह एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

कसर आलम, कमारी

प्रश्न : उम्र ३६ वर्ष । पूरे शरीर में जलन । पेट व हाथ-पैर में अधिक । सिर हमेशा भारी रहता है । कब्ज, कमजोरी और आलस्य भी है ।

उत्तर : अविपत्तिकर चूर्ण एक चम्मच, त्रिफला चूर्ण एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । लशुनादि वटी एक एक वटी भोजन के बाद पानी से लें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

बी ५/७, कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१

कैंसर की रोकथाम समुद्री जीवों से

अब भारत के वैज्ञानिकों को कैंसर, एड्स की रोकथाम के लिए समुद्र के चार जीवों में वायरल रोधी गतिविधियां देखने को मिली हैं । यह कार्य केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान लखनऊ के द्वारा किया जा रहा है ।

—डॉ. देवेन्द्र भूषण तिवारी

कैंसर प्रतिरोधक हल्दी

हल्दी अपने कई गुणों के लिए भारत में विख्यात है । प्रमुख भारतीय मसाला होने के अलावा यह सौंदर्य प्रसाधनों और आयुर्वेदिक दवाओं के निर्माण में भी प्रयोग की जाती है । हल्दी का एक और गुण प्रकाश में आया है, वह है इसकी कैंसर प्रतिरोधक क्षमता । हैदराबाद के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑव न्यूट्रीशन (एन. आई. एन.) ने अनुसंधान के बाद हल्दी को कैंसर का शक्तिशाली प्रतिरोधक बताया है । चूहों और अन्य जानवरों पर इसका प्रयोग करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया है । इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि सरसों के पत्ते का सेवन भी कैंसर की घटनाओं को रोकने में सहायक सिद्ध हो सकता है ।

—रेखा कौशल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी पीढ़ी के कम ही लोग ऐसे हैं, जो अपने माता-पिता के देश से अपने को सर्वथा कटे हुए पाते हैं । ऐसे नये लोग यहां के मूल लोगों की तरह भले ही अपने को अब यूरोपीय मानने लगे हों,

ब्रिटेन के भारतीय लोगों की मनःस्थिति के कुछ पहलू

● सत्येन्द्र श्रीवास्तव

साउथ हॉल की एक सब्जी-मांस की दूकान पर सामान खरीदते हुए एक एशियाई परिवार के सभी लोग एक बूढ़े सज्जन माता-पिता, तीन बेटियां और एक बेटा टेप रेकॉर्डर पर 'चोली के पीछे' वाले गीत पर कमर हिलाकर शनिवार को खरीदारी कर रहे थे । ऐसे दृश्य यहां सहज देखे जा सकते हैं । हिंदी फिल्मों के अश्लील माने जानेवाले गानों का चलन, 'चोली के पीछे क्या है' वाले गीत से जब से शुरू हुआ है, तब से ऐसे गीतों की संख्या बढ़ने लगी है जैसे 'सेक्सी ओ सेक्सी' या 'सरकाय लो खटिया जाड़ा लगे' इत्यादि । ऐसे गीतों की बढ़ती संख्या के साथ ही भारत में सोचने-विचारनेवाले लोगों से लेकर साहित्यकारों और कलाकारों की चिंता भी बढ़ने लगी है कि शब्दों के ऐसे व्यावसायिक इस्तेमाल की सीमा, भविष्य में क्या होगी और कहां खतम होगा इस सेक्सी संस्कृति का सफर ? भारतीय संदर्भ में ऐसे प्रश्नों और चिंताओं का उठना स्वाभाविक है । किंतु पश्चिमी जगत में 'सैक्स' शब्द का वैसा आतंक नहीं देखने को मिलता, अतः जैसी चिंता भारत में प्रकट की जा रही है वैसी यहां के भारतीय वंशजों के द्वारा नहीं। जिन क्षेत्रों में एशियाई लोग बसे हैं वहां जाहिर है कि फिल्मी गीतों की ध्वनि गूंजेगी ही और ऐसे गीत एक साथ परिवार के बूढ़े-बूढ़ियों से लेकर नौजवानों तक पहुंचेंगे, परंतु उसके खिलाफ कोई बहुत तीव्र प्रतिक्रिया हो—ऐसी चीज देखने को यहां नहीं मिलती । तीव्र प्रतिक्रिया तो भारत में भी जनसाधारण में नहीं देखने को मिलती पर यहां उसका सर्वथा अभाव दिखता है । यह दिलचस्प बात है, यों भी है कि कहा जाने लगा है कि पश्चिम में बसे रूढ़िवादी भारतीयों की, विशेषकर सामाजिक दृष्टि, बीस वर्ष पहलेवाले भारत की है, और यही नहीं बल्कि उनकी रूढ़िगत दृष्टियों का आयाम और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

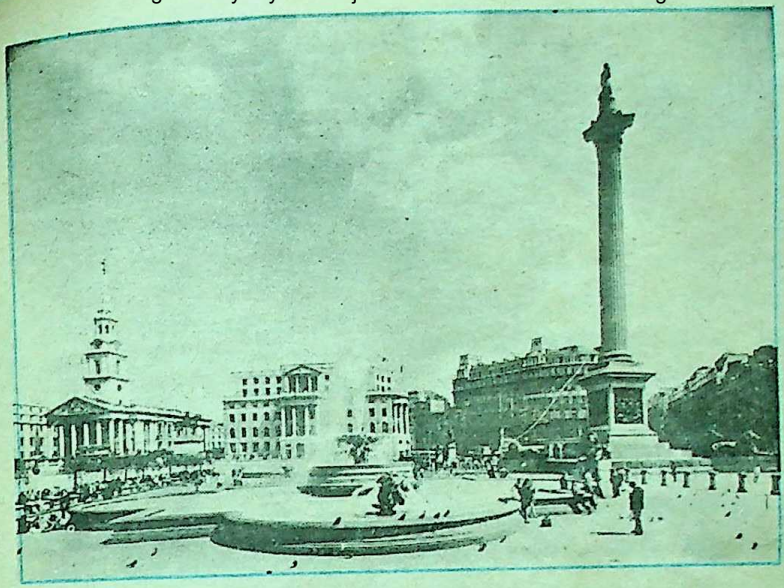

लंदन में भारतीय

अधिक संकरा-सा हो गया है ।

काले-गोरे में नस्लवादी भेदभाव

अभी हाल ही में 'चैनेल फोर' की आर्थिक सहायता से इंगलैंड के एशियाइयों ने एक फिल्म 'माजी ऑन द बीच' बनायी—जो कुछ लोगों को पसंद भी आयी, किंतु परंपरावादी एशियाई इस फिल्म की लेखिका से बेहद नाराज थे, क्योंकि इस फिल्म में एक काले अफरीकी नवयुवक का प्यार एक भारतीय लड़की से दिखाया गया है, जिसके कुछ दृश्य 'सेक्सी' कहे जा सकते हैं । भारतीय लोग काले अफरीकियों से भारतीय लड़कियों के मेलजोल के पक्ष में प्रायः बिलकुल नहीं हैं । यहां तक कि वे एशियाई परिवार जो अफरीका से निकाले जाने पर यहां आकर बस गये हैं और जिनका यूगांडा, केनिया— जैसे अफरीकी देशों से कई वंशों का संबंध रहा है, उनका भी ऐसा ही रुख है ।

इस संदर्भ में मुझे ट्रिनिडाड की एक घटना याद आ रही है । विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान जब मैं वहां गया था तब वहां कुछ लोगों ने एक पार्टी का आयोजन किया था । चूंकि उन्हीं दिनों एक फिल्म 'मिसिसिपी मसाला' रिलीज हुई थी—अतः उस पर बातचीत स्वाभाविक रूप से उठ गयी थी । उस फिल्म की कथा भी एक अमरीकी काले नवजवान (नीग्रो) और एक भारतीय लड़की के प्रेम को लेकर रचित थी । ट्रिनिडाड के कुछ भारतवंशी उस फिल्म पर बहुत नाराज थे, और मुझे यह भी बताया गया कि कुछ भारतीय वंशजों ने तो एक सिनेमाघर को जिसमें वह फिल्म दिखायी जा रही थी, जलाने तक की धमकी दी थी ।

इस बात को सुनकर आश्चर्य तो हुआ ही था किंतु उस समय मुझे दक्षिणी अफरीका के एक काले परिचित बंधु की उन्नीस सौ इकसठ में कही बात याद आयी थी । उसने कहा था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हम दक्षिणी अफरीका के काले लोगों को इस बात से बेहद नाखुशी होती है कि भारतीय वंशज वहां अपनी लड़कियों को किसी काले व्यक्ति के साथ नहीं जाने देना चाहते, जबकि कितने ही भारतीय पुरुष हर वर्ष हमारी काली लड़कियों के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करते हैं और प्रायः जारज संतानों की संख्या बढ़ाते हैं। जब यह बात हो रही थी तो दक्षिणी अफरीका के एक गोरे परिचित ने उस समय तपाक से यह भी कह दिया था कि मैं ऐसे भारतीय परिवारों को जानता हूं, जहां लड़कियों के पति अफरीकियों— जैसे ही काले हैं, किंतु वे परिवार कभी भी अपनी लड़कियों को 'नीग्रो' लड़कों के साथ नहीं जाने देते। यह रेसिज्म नहीं है तो क्या है ? मैंने वातावरण को हलका बनाने के लिए उस समय यही कहा था कि इस संबंध में हम भारतीय लोग अनेक सीमाओं में अपने को बांधे हुए हैं। सीमा रेखा केवल काले या कम काले लोगों के बीच में ही सीमित नहीं है बल्कि ऊंची जाति और नीची जाति या दो भिन्न धर्मवालों के बीच की भी है। और यहां माना जा सकता है कि कुछ मायनों में हमारे पूर्वाग्रह भी गोरे लोगों से कम नहीं हैं—लेकिन हमारे कारण केवल 'नस्ली' नहीं हैं।

बदल गयी हैं स्थितियां

वह साठवां दशक आज से बहुत भिन्न था। उन दिनों किसी काले व्यक्ति के साथ गोरी लड़की के होने को लोग आसानी से स्वीकार नहीं करते थे, बल्कि कहीं-कहीं ऐसे जोड़े पर प्रहार भी किया जाता था और नस्लवादी झुकाव को उकसाया जाता था। अब तैंतीस वर्षों बाद स्थिति कुछ बदल गयी है। गोरे और कालों के बीच कहीं अधिक शादियां होती हैं और इस देश के गोरे लोगों की नयी पीढ़ी की दृष्टि आमतौर से नस्लवादी नहीं है। किसी गोरी लड़की को अगर कोई लड़का पसंद है तो उसके लिए अब बहुत बड़ी समस्या नहीं होती कि वह लड़का काला है, एशियन है या कोई और। किंतु द्वितीय महायुद्ध के तुरंत बाद तो वहां ऐसे भी लोग थे जो अपनी लड़कियों को जरमन और इटैलियन पुरुषों के साथ जाने देने के पक्ष में भी नहीं थे—किंतु अमीर घरों के भारतीय

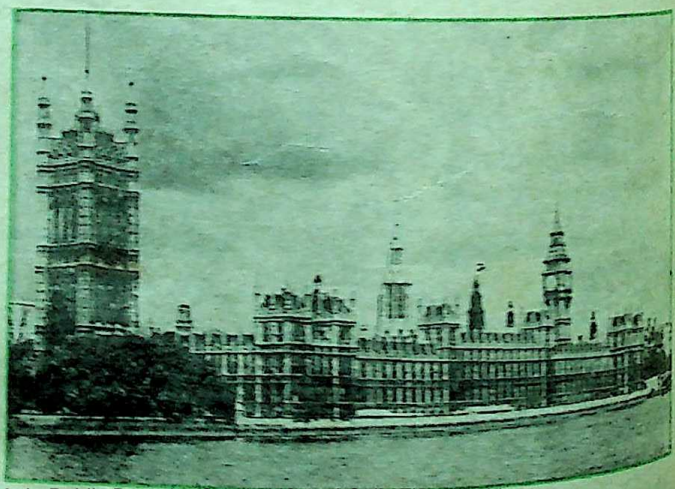

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी पीढ़ी बदल रही है, किंतु एशियाई पारिवारिक संगठन के माहौल में उसका रुख बदलते पश्चिमी समाज के प्रति कैसा रहेगा, यह बड़ा प्रश्नचिह्न है ? क्या यहां के एशियाई लोग भी बहुत तेजी से बदलते भारत के शहरी लोगों की तरह बदल जाएंगे—यह कहना भी कठिन लगता है । अभी तो वे 'मिनी भारत' या 'मिनी पाकिस्तान' के माहौल में अपनी स्थिति को बनाये रखने के संघर्ष को ही अहम मानते हैं ।

अच्छे भारतीय क्रिकेट खिलाड़ियों के साथ अपनी लड़कियों को देखकर कहीं-कहीं खुश होते थे । अब ऐसे लोगों की दृष्टि भी बदली है, क्योंकि उन्होंने बदले माहौल को स्वीकार कर लिया है और स्वतंत्र दृष्टिवाली नयी पीढ़ी के विचारों के आगे अपनी परवशता-सी मान ली है । क्योंकि किसी तरह की पाबंदी उन पर लगाना अब कुछ अर्थों में माता-पिता के कानूनी वश का भी नहीं रहा । अब ब्रिटेन एक बहुजातीय समाज हो गया है । अल्पसंख्यकों, विशेषकर भारतीय अल्पसंख्यकों के प्रति यहां के मूल लोगों का रुख काफी बदला है । पहले मिली-जुली शादियों के संबंध में जो सबसे बड़ी आपत्ति उठायी जाती थी वह थी संतान की बात को लेकर । किंतु बड़ी तेजी से बदलते सामाजिक मूल्यों के बीच अब वह बड़ी समस्या—जैसी नहीं है, क्योंकि इस देश में मिले-जुले नस्लों के बच्चों की संख्या भी उसी मात्रा में बढ़ी है, जितनी कि 'सिंगल-पैरेंट फैमिली' की ।

भारतीयों में परिवर्तन कम है

इस माहौल में भारतीय परिवारों की मनःस्थिति बहुत कम बदली है । दिल्ली-बंबई-जैसे महानगरों से जो लोग कभी-कभी यहां कुछ समय के लिए आते हैं वे प्रायः यह कहते हुए पाये जाते हैं कि इंगलैंड के भारतीयों की दृष्टि भारत के बड़े-बड़े नगरों में रहनेवालों से प्रायः बीस वर्षों पीछे की रह गयी है । प्रायः ऐसा सुनने में भी आता है कि अगर कोई भारतीय लड़का किसी गोरी लड़की को अपने घर मेहमान बनाकर लाता है तो लड़के के माता-पिता को अब भी बहुत आपत्ति होती है । उनकी सबसे बड़ी दलील यह होती है कि 'क्या तुम्हें यहां या भारत या पाकिस्तान में लड़कियां नहीं मिल रही हैं जो इसके साथ संबंध बनाये हो ?' जब मैं भारत में होता हूं और ये बातें दिल्ली या बंबई के पढ़े-लिखे लोगों को बताता हूं, तो कुछ लोग आश्चर्य से पूछ बैठते हैं कि, 'क्या इंगलैंड में यह सब अभी भी होता है ?'

यह तो भारतीय और गोरे लोगों के संबंध की बात हुई । यहां भी अभी पूर्वाग्रह बना हुआ है, पर यह भी हो रहा है कि गोरे और एशियाइयों के बीच अब शादियां अधिक संख्या में हो रही हैं । बल्कि यह भी हो रहा है कि जो हिंदू या मुसलमान अपनी लड़कियों को एशियाई होते हुए भी एक-दूसरे को संबंध सूत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

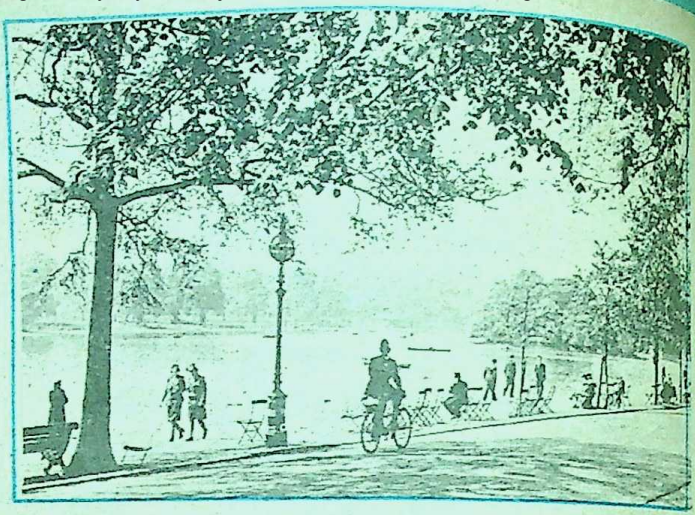

में नहीं बंधने देना चाहते हैं धार्मिक कारणों से वे भी गोरे लोगों के साथ संबंध सूत्र बांधने को कुछ अधिक आसानी से तैयार हो जाते हैं। जहां तक गोरे पुरुषों का प्रश्न है वहां भी ऐसे लोगों की संख्या बढ़ रही है जो अपनी लड़कियों से अधिक एशियाई को पसंद करते हैं। यह इसलिए भी हो रहा है कि यहां तलाक बढ़ते जा रहे हैं—लगभग हर समाज में। किंतु एशियाई लोगों में अभी भी तलाकों की औसतन संख्या कम है। कुछ अंगरेज पुरुषों को लगता है कि एशियाई स्त्रियों में स्थिरता और पारिवारिक चेतना अधिक होती है, अतः तलाक लेना ही उनके लिए पारिवारिक कलह से बाहर निकलने का एकमात्र निकास नहीं होता।

स्कूल-कॉलेजों की एशियाई लड़कियों की मनःस्थिति में भी कुछ परिवर्तन दिख रहा है। यद्यपि ब्रिटेन में एशियाई लड़कियों पर अब भी पारिवारिक अंकुश पर्याप्त रूप में बना हुआ है तो भी कहीं-कहीं ढील नजर आ रही है। बीस साल पहले कम भारतीय लड़कियां अंगरेज पुरुषों के साथ दिखती थीं, किंतु अब बहुत संख्या में यह दृश्य देखा जा सकता है। यह 'साथ' कहीं-कहीं मित्रता के साथ से आगे बढ़कर बहुधा पति-पत्नी वाला हो जाता है। एशियाई लड़कियां कुछ काले नवजवानों के साथ भी यदा-कदा दिख जाती हैं। पर एशियाई पुरुष काली अफरीकी लड़कियों के साथ औसतन कम दिखते हैं। पर पहले-जैसी बिलकुल 'नहीं' वाली स्थिति नहीं है। इन संबंधों पर प्रतिबंध माता-पिता द्वारा ही लगाया जाता है। औरत के लिए तो हमारे बनारस की कहावत ही कि 'स्त्री रूप पर कम जाती है—वह पुरुष का अंतर्मन देखती है' इस संदर्भ में ज्यादा सटीक बैठती है।

भारतीयों का प्रभाव

ब्रिटेन के माहौल को भारतीयों ने बहुत हद तक में बदला है। यहां के लोगों की खाने की रुचि से लेकर एशियाई परिवारों के गठन-संगठन और संबंधों की गंभीरता का गहरा असर भी पड़ा है। शायद यह भी एक कारण है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशियाई लोग, अपनी परंपरा के प्रति चाहे वह हिंदुओं की हो, या मुसलमानों, सिखों या जैनियों की हो, में अभी भी पूरी तरह से आस्थावान हैं। नयी पीढ़ी के कम ही लोग ऐसे हैं जो अपने माता-पिता के देश से अपने को सर्वथा कटे हुए पाते हैं। ऐसे नये लोग यहां के मूल लोगों की नयी पीढ़ी की तरह भले ही अपने को अब योरोपीय मानने लगे हों, किंतु वे प्रायः नहीं भूलते कि जिस देश से उनके माता-पिता यहां आकर बसे हैं, उसका बहुत कुछ उनमें अब भी विद्यमान है।

नारियां हर समाज में अपनी संस्कृति की सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी ही नहीं होतीं, बल्कि उसकी रक्षा और विकास की पोषक और प्रतीक होती हैं। यहां एशियाई महिलाओं में नयी जागृति के चिह्न हर जगह स्पष्ट हैं—किंतु वे अपनी पैतृक संस्कृति को एक झटके से नहीं नकार देतीं। जहां एक तरफ कितनी ही ऐसी 'महिला सोसाइटियां' काम कर रही हैं जो एशियाई पुरुषों की क्रूरता से सतायी हुई औरतों की रक्षा में संलग्न हैं, वहीं दूसरी ओर विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों से निकली नवयुवतियां भी माता-पिता द्वारा अपने होनेवाले पति को चुने जाने की प्रथा को प्रेम विवाहों से अधिक महत्त्व देती हैं। जो सहज रूप से 'जो भारतीय या पाकिस्तानी है को स्वीकार आंख मूंदकर करती हैं' वे भी दहेज-जैसी कुप्रथा को खुलकर इस वातावरण में भी नहीं अस्वीकारतीं। दहेज की प्रथा यहां भी कम नहीं हो रही है। और यह हैरत की बात थी कि जब कुछ वर्ष पहले यहां के गृह मंत्री से लोगों ने इस कुप्रथा के खिलाफ भारत—जैसा कानून यहां भी बनाने की अपील की थी—तो महिलाओं की किसी संस्था ने आगे बढ़कर इस मांग को और बुलंद नहीं किया था।

मिली-जुली मनःस्थितिवाला समाज

ब्रिटेन का एशियाई समाज एक मिली-जुली मनःस्थितिवाला समाज है। वे यहां की राजनीतिक, आर्थिक एवं अन्य बहुत सारी व्यवस्थाओं को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं किंतु उनका सामाजिक दृष्टिकोण प्रायः एशियाई परंपराओं में ढला होता है, और चूंकि एशियाइयों का पारिवारिक संगठन अभी भी बहुत मजबूत है अतः अपने समाज से कटकर अलग देखना उनके लिए आसान चीज नहीं होती।

अतः इस मिली-जुली मनःस्थिति का स्वस्थ पक्ष भी है, और कम स्वस्थ भी। जैसे पश्चिमी समाज की शिक्षा,लोक-कल्याण, और स्वास्थ्य संबंधी सभी चीजों का लाभ उठाकर आज के एशियाई समाज ने-विशेषकर भारतीय लोगों की नयी पीढ़ी ने काफी उपलब्धि की है। स्कूल की परीक्षाओं-जैसे क्षेत्रों में भारतीय नस्ल के बच्चे आज अंगरेज बच्चों के मुकाबले में बराबरी की स्थिति में पहुंच गये हैं। पाकिस्तानी और बंगलादेशी बच्चे यद्यपि पीछे हैं पर शिक्षा के क्षेत्र में उन बच्चों के पिछड़ जाने का कारण पढ़ाई के क्षेत्र में उनके माता-पिता द्वारा की गयी अवहेलना ही है। मसलन वे स्कूलों से अपने बच्चों को छुड़वाकर उन्हें चार-चार-छह-छह महीनों के लिए पाकिस्तान या बंगलादेश भेज देते हैं। जिससे उनके पढ़ने का क्रम टूट जाता है। भारतीय लोगों में ऐसा अभी तक कम होता है क्योंकि यहां शिक्षा को बहुत महत्त्व दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है, यही कारण है कि भारतीय नस्ल के लोग बड़ी संख्या में 'प्रोफेशनल और मैनेजेरियल' वर्ग में प्रवेश कर चुके हैं और व्यवसाय और अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर रहे हैं। अतः आज के योरोप के बढ़ते नस्लवादी माहौल में भी उनकी उपलब्धियां कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं।

किंतु इस मिली-जुली एशियाई मनःस्थिति का जो पक्ष स्वस्थ नहीं दिखता, वह है उनका अपने एशियाई दायरों में ही चिपके रहना। अच्छे-अच्छे घरों में भी सप्ताहंतों पर लोगों को मित्रों और परिवार के साथ हिंदी फिल्म देखना और भारतीय खाना खाकर तथा भारत और पाकिस्तान की राजनीति पर बातें करके अपना समय गुजारना ही अधिक भाता है। अंगरेजों को यह आश्चर्य होता है कि इतनी बड़ी संख्या में यहां बसे हुए एशियाई समाज के लोग पश्चिमी संगीत सम्मेलनों-अंगरेजी नाटकों, या मेलों-उत्सवों में कम ही दिखते हैं। यह बहुत-से मूल लोगों को अखरता भी है।

नयी पीढ़ी बदल रही है, किंतु एशियाई पारिवारिक संगठन के माहौल में उसका रुख बदलते पश्चिमी समाज के प्रति कैसा रहेगा? यह बड़ा प्रश्नचिह्न है? क्या यहां के एशियाई लोग भी बहुत तेजी से बदलते भारत के अन्य लोगों की तरह ही बदल जाएंगे, यह कहना भी कठिन लगता है। अभी तो वे 'मिनी भारत' या 'मिनी पाकिस्तान' के माहौल में अपनी स्थिति को बनाये रखने के संघर्ष को ही अहम मानते हैं।

UNIVERSITY OF CAMBRIDGE
Faculty of Oriental Studies
Sidgwick Avenue, Cambridge
CB 3 9 D

डायनासोरों से भी पहले जो मौजूद था

धरती पर इस जीवाश्म का अस्तित्व लगभग ३५ करोड़ वर्षों से है। कोई १७ करोड़ वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर डायनासोरों का आगमन देखा और लगभग १० करोड़ वर्ष पूर्व उनको विलुप्त होते भी देख लिया। हिमालय-जैसी अनेक पर्वत श्रृंखलाओं को इसने उभरते देखा। धरती पर सबसे बाद में मनुष्य जाति आयी भी। इसका भी इसने स्वागत किया। इस जीव का नाम कॉकरोच या तिलचट्टा है।

रेगिस्तान—जैसे खुश्क और हमारी रसोइयों—जैसे सील भरे स्थानों में बहुत सुविधापूर्वक रह लेता है। जनसंख्या वृद्धि में तो इसका मुकाबला कोई कर ही नहीं सकता। अपने जन्म के २४ घंटे बाद ही आप परिवार बनाने के योग्य हो जाते हैं। मादा कॉकरोच ३०० दिनों में १८० बच्चे तक दे डालती है। इसका जीवन एक वर्ष से अधिक नहीं होता। इसकी दुर्गंध के कारण कोई भी कीटभक्षी जीव इसे नहीं खाता।

कॉकरोचों पर कीटनाशक दवाएं प्रारंभ में ही असर करती हैं। फिर धीरे-धीरे वे उनको भी सह लेते हैं। बाद में कंपनियां और भी घातक दवाएं बनाती हैं जिनका भी वही हाल हो जाता है जो इनसे पहले का हुआ था।

प्रस्तुति : अ. रा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि विलास

१. क. सौर-मंडल का सबसे बड़ा ग्रह कौन-सा है ? पृथ्वी से और सूर्य से उसकी कितनी दूरी है ?

ख. वह अपनी धुरी पर कितने समय में एक चक्कर लगाता है ?

ग. उसके अध्ययन के लिए कब, किस देश ने, कौन-सा अंतरिक्ष-यान भेजा है ?

२. विलुप्त विशालकाय जीव डायनासोर का जीवाश्म हाल में कहां मिला है ?

३. क. दुनिया की समुद्र के नीचे बनी सबसे बड़ी सुरंग कौन-सी है ?

ख. वह थल के किन भागों को जोड़ती है ?

४. हिमालय के किस भाग में गरम पानी के फुआरे तथा गरम जल-कुंड है ?

५. हिंदी के किस महान ग्रंथ में 'रा' और 'म' के दो अक्षरों की तुलना जीभ-रूपी यशोदा के लिए प्रिय और आनंददायक कृष्ण और बलदेव से की गयी है ?

६. क. पोरस पर हमला करने के लिए किस राजा ने सिकंदर का आह्वान किया था ?

ख. सिकंदर और पोरस का युद्ध कहां हुआ था ?

७. क. भारत का वह कौन-सा राज्य है जिसकी आबादी पाकिस्तान या बांग्लादेश से अधिक है और एशिया में केवल चीन और इंडोनेशिया से कम है ?

ख. उक्त राज्य की आबादी उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के किन देशों से कम है ?

८. क. भारत में पहली बार 'विश्व सुंदरी' (मिस यूनीवर्स) का खिताब किसने जीता है ?

ख. इस प्रतियोगिता में कितने देश शामिल हुए थे ?

९. इस वर्ष निम्नलिखित पुरस्कार किसे मिले हैं ?— क. आर्चर सी. क्लार्क पुर. (आधुनिक तकनालोजी में विशेष योगदान के लिए)

ख. शरद जोशी व्यंग्य सम्मान ।

१०. क. इस वर्ष सिक्किम की किन चोटियों पर, जिन पर अब तक कोई नहीं चढ़ा था, किसने चढ़ने में सफलता प्राप्त की है ?

ख. कुल कितने पर्वतारोही चढ़ने में सफल रहे ?

११. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।

—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसरायल यहूदियों की जन्मस्थली और कर्मस्थली है। विदेशी आक्रमणकारियों ने उन्हें वहां से कई बार निर्वासित किया और उन पर निर्मम अत्याचार किये। उनके उपासना स्थलों को नष्ट किया और उन्हें गुलाम बनाकर बेचा। ईसा से पांच सौ वर्ष पहले बेबीलन की नदियों के किनारे बैठकर यहूदियों ने कसम खायी, "ओ ! यरुशलम मैं अगर तुझे भूल जाऊं, तुझे सर्वोच्च महत्त्व न दूं तो मेरा दाहिना हाथ काम करना बंद कर दे और मेरी जीभ तालू से चिपक जाए।" यरुशलम लौटने की इस उद्दाम भावना को हर पीढ़ी के यहूदियों ने दुहराया है। इसी ने आधुनिक इसरायल को जन्म दिया है।

आधुनिक इसरायल की स्थापना एक चमत्कार, एक अजूबा है। कठिनाइयों और बाधाओं पर संकल्प शक्ति और प्रतिबद्धता की विजय का शानदार उदाहरण है। रेगिस्तान को हरा-भरा करने, पहाड़ों को खोदकर नदियां और नहर निकालने और बंजर धरती पर नंदन-कानन बनाने की कहानी है।

प्रथम महायुद्ध के दौरान इसरायल में मात्र ८५ हजार यहूदी रहते थे। १९१९-१९३९ के बीच उनकी संख्या तीन लाख पंद्रह हजार हो गयी। द्वितीय महायुद्ध के दौरान नाजी जरमनी ने जरमनी और अधिकृत क्षेत्रों में यहूदियों का सामूहिक कत्ले-आम किया। इस कत्लेआम में ६० लाख यहूदी मारे गये। इनमें पंद्रह लाख बच्चे थे। बीसवीं शताब्दी में किसी भी समुदाय को इस किस्म के जाति संहार का सामना नहीं करना पड़ा।

इसरायल की स्थापना

द्वितीय महायुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र के एक प्रस्ताव के अंतर्गत फिलस्तीन का बंटवारा करके इसरायल की स्थापना की गयी। इस योजना को इसरायल के पड़ोसी अरब राष्ट्रों ने नहीं माना। उन्होंने इसरायल को नेस्तनाबूद करने की धमकी के साथ उस पर हमला कर दिया। एक ओर थे चार अरब राष्ट्र— इजिप्ट, जोर्डन, सीरिया और लेबनान और दूसरी तरफ था अकेला इसरायल। इसरायल को १९४८ से १९८२ तक अपनी अस्तित्व रक्षा के लिए अरब देशों के साथ पांच लड़ाइयां लड़नी पड़ीं। उसने अपने युद्ध कौशल से ये सभी लड़ाइयां जीतीं।

इसरायल और इजिप्ट ने १९७८ में युद्ध की स्थिति को समाप्त करने के लिए कैंप डेविड समझौता किया। इस समझौते में पश्चिम एशिया की सभी विवादग्रस्त समस्याओं को आपसी बातचीत से हल करने की व्यवस्था थी। इसी के अंतर्गत अब इसरायल और फिलस्तीनी मुक्ति संगठन पश्चिमी तट और गाजा पट्टी के अधिकृत क्षेत्रों को स्वायत्तता देने पर सहमत हुए

सदियों से दोहराती रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसरायल एक छोटा-सा देश जिसके नेताओं ने प्राकृतिक संसाधनों और जनशक्ति का पूरा उपयोग कर हर क्षेत्र में चमत्कारिक प्रगति की है। भारत के प्रति इसरायल में अत्यधिक सम्मान की भावना है।

पीढ़ियां केवल एक शपथ

● नवीन पंत

हैं। इसरायल ने युद्ध में वीरता और शांति में उदारता का परिचय देते हुए शांति समझौते को संभव बनाया है।

इसरायल : बीस विकसित देशों में एक

इसरायल एक छोटा-सा देश है। इतना छोटा कि उसे आप पूर्व से पश्चिम तक दो-तीन घंटे में और उत्तर से दक्षिण तक छह घंटे में कार से पार कर सकते हैं। उसका क्षेत्रफल २०,७७२ वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या ५१ लाख है। अधिकृत क्षेत्रों की जनसंख्या को मिलाकर यह ७० लाख हो जाती है।

इसरायल की प्रति व्यक्ति आय १३,००० डॉलर है, जबकि भारत की प्रति व्यक्ति आय ३५० डॉलर है। इसरायल की ३० कंपनियों के शेयर न्यूयार्क शेयर बाजार (स्टॉक एक्सचेंज)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में खरीदे और बेचे जाते हैं। उसकी वार्षिक विकास-दर ७ प्रतिशत है जो यूरोप और अमरीका के अनेक देशों की विकास दर से अधिक है। उसकी गणना विश्व के २० प्रमुख विकसित देशों में है।

जनशक्ति का पूरा उपयोग

इसरायल ने अपने सीमित भूमि और जनशक्ति का पूरा उपयोग करना सीखा है। इसरायल का अधिकांश क्षेत्र रेगिस्तानी और बंजर था। वहां सिंचाई की सुविधा भी नहीं थी। इसरायल ने 'ड्रिप' सिंचाई की व्यवस्था करके इस समस्या का समाधान किया। 'ड्रिप' सिंचाई में पानी की एक बूंद भी बरबाद नहीं होती। 'ड्रिप' सिंचाई के कारण इसरायल फलों, सब्जियों और फूलों का निर्यात करनेवाला अग्रणी देश बन गया है।

इसरायल सौर ऊर्जा का विकास और इस्तेमाल करनेवाला विश्व का अग्रणी देश है। वह आवाज की गति से तेज उड़ान कर सकनेवाले विमानों का निर्माण कर सकता है। इसरायल विश्व के उन आठ देशों में है जिनके उपग्रह विश्व का चक्कर लगाते हैं। पिछले पच्चीस वर्षों के दौरान इसरायल का कृषि उत्पादन बारह गुना बढ़ गया है।

भारत और इसरायल

भारत और इसरायल दोनों विश्व की दो प्राचीन महान सभ्यताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। दोनों देश बहुजातीय, बहुधर्मीय समाज व्यवस्था को स्वीकार करते हैं। दोनों देश लोकतंत्र में विश्वास करते हैं। दोनों देशों में अल्पसंख्यकों के साथ कोई भेदभाव नहीं बरता जाता। स्वतंत्रता के बाद दोनों देशों को धार्मिक कट्टरवाद का सामना करना पड़ा। दोनों देश अपने आदर्शों की रक्षा करते हुए प्रगति पथ पर बढ़ रहे हैं।

इसरायल की स्वतंत्रता के बाद उसे मान्यता प्रदान करनेवाले देशों में भारत भी था। लेकिन दोनों के बीच राजनयिक संबंध केवल दो वर्ष पूर्व स्थापित हुए। इसके बाद दोनों देशों में सहयोग बढ़ा है। १९९२ में दोनों देशों के बीच २० करोड़ डॉलर का व्यापार हुआ जो १९९३ में बढ़कर ३४ करोड़ डॉलर हो गया। आशा है कि इस वर्ष दोनों देशों का व्यापार ६० करोड़ डॉलर तक पहुंच जाएगा।

इसरायल का अमरीका, यूरोपीय समुदाय और यूरोप के कुछ अन्य देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौता है। इसका अर्थ यह है कि इसरायल में निर्मित सामान के इन देशों में प्रवेश पर कोई प्रतिबंध नहीं हैं। अतः भारतीय उद्यमी इसरायल में संयुक्त उद्यम लगाकर इन देशों को अपना निर्यात बढ़ा सकते हैं। इस दिशा में कुछ कार्य शुरू हो गया है। वीरशेवा में एक भारतीय उद्यमी कपड़ा मिल लगा रहे हैं। कुछ फास्फेट कारखाने लगाने पर भी विचार किया जा रहा है।

भारत में इसरायल के सहयोग से 'ड्रिप' सिंचाई, कृषि उत्पादन बढ़ाने और सौर ऊर्जा की परियोजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और हरियाणा के मुख्यमंत्रियों की इसरायल यात्रा के दौरान अनेक विकास योजनाओं पर सहमति हुई है।

दोनों देशों के बीच कृषि, सिंचाई और पशुपालन के क्षेत्र में सहयोग की असीमित संभावनाएं हैं। इसरायल ने कृषि क्षेत्र में नयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेक्नालॉजी विकसित कर और अपनाकर चमत्कारिक प्रगति की है । उसकी यह टेक्नालॉजी भारत-जैसे गरम देश के लिए अत्यंत उपयुक्त है । बारानी खेती के क्षेत्र में इसरायल का अनुसरण करके हम अपने ग्रामीण क्षेत्रों की कायापलट कर सकते हैं । पशुपालन के क्षेत्र में भी हम इसरायल से काफी कुछ सीख सकते हैं । वहां औसत गाय प्रतिदिन ४० लिटर दूध देती है ।

सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी इसरायल का योगदान महत्त्वपूर्ण है । वह अपनी ऊर्जा आवश्यकता का एक हिस्सा सौर ऊर्जा से प्राप्त करता है । भारत और इसरायल राजस्थान में ३४ मैगावाट का बिजली संयंत्र लगा रहे हैं । इसरायल रक्षा सामग्री की सप्लाई में भी हमारे साथ सहयोग करने को तैयार है । इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच सहयोग की उज्ज्वल संभावनाएं हैं ।

इसरायल में आर्थिक कारणों से कार बनाने का कोई कारखाना नहीं है । वह भारत से प्रतिवर्ष कुछ मारुति गाड़ियां खरीद रहा है । भारत का महिन्द्रा प्रतिष्ठान इसरायल में कार-जीप बनाने का संयुक्त उद्यम लगाने के लिए प्रयत्नशील है । इसरायली श्रम शक्ति का पांचवां हिस्सा अत्यधिक शिक्षित वैज्ञानिकों, शिल्पियों और इंजीनियरों का है ।

भारत के प्रति अत्यधिक सम्मान

इसरायल की जनता और वहां के नेता भारत का अत्यधिक सम्मान करते हैं । भारत विश्व के उन गिने-चुने देशों में है जहां यहूदियों पर कभी अत्याचार नहीं किये गये । इसरायल के राष्ट्रीय नेता और पहले प्रधानमंत्री डेविड बेन गुरियों का

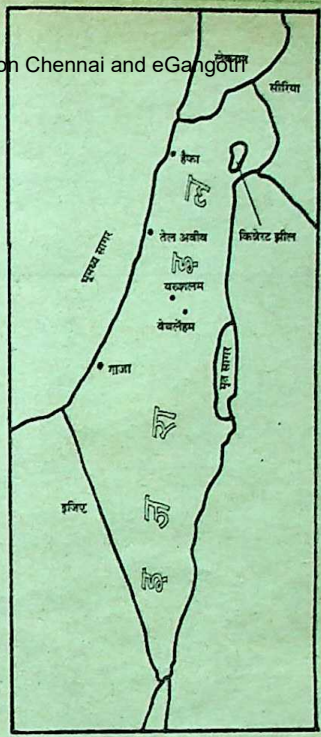

इसरायल

जनसंख्या : ५०,५७,०००
जूडिया, समरिया और गाजा के इजरायली प्रशसित निवासियों को छोड़कर

शहरी जनसंख्या : ४५,७५,०००
ग्रामीण जनसंख्या : ४,८४,०००
यहूदी : ४१,४५,०००
मुसलमान, ईसाई, द्रूज और अन्य : ९,१४,०००

मकान आज भी अपने पूर्व रूप में सुरक्षित है । उनके घर की दीवाल पर एक ही चित्र है— महात्मा गांधी का । इसरायल के विदेश मंत्री सिमोन पेरेज की नजर में 'भारत एक महाद्वीप नहीं एक महान आत्मा है । उसने अपना स्वतंत्रता संग्राम अहिंसा से लड़ा । अहिंसा सैनिक शक्ति से कम शक्तिशाली नहीं होती ।'

●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीरी-कहानी

आतंक-बीज

● अवतार कृष्ण राजदान

बात यहां से शुरू हुई कि उस दिन मैं कर्फ्यू लगते ही रास्ते में फंस गया। शहर में सुरक्षा-कर्मियों ने मुख्य ठिकानों पर मोरचे संभाले। सड़कें सुनसान पड़ गयीं। सुबह सात बजे तक यातायात बंद हो गया। इस बीच मैं समय पर घर नहीं पहुंच सका। किसी तरह तंग किंतु लंबी गली से गुजरकर, अगले दिन कर्फ्यू खुलने तक, मैंने अपने एक मित्र के घर में शरण ली। घर में तो समीना अकेली थीं। समीना ! हां वही, मेरी पत्नी ! किसी तरह वह रात काटकर, मैं वहां से चला। उस समय मेरा घर पहुंचने का क्या महत्त्व है ! शायद कुछ भी नहीं या शायद बहुत कुछ ! मिसाल के तौर पर मैं तेरह घंटे घर से बाहर रहा, इस कर्फ्यूस्तान के शहर में और मेरे पीछे...

किंतु ठहरिए, मैं आपको शुरू से पूरी घटना सुनाता हूं। मित्र के यहां से लौटकर, जब मैं सड़क पर आया, तो ऐसा लगा कि कुछ हुआ ही नहीं है। सब कुछ पहले की तरह सामान्य है। दूकानें खुली हैं, बाजार लगे हैं। लोग निर्भयता से सौदा-सुलफ कर रहे हैं। कल की वह सुनसान सड़कें जिन पर सुरक्षाकर्मियों के सिवाय कोई भी चल नहीं सकता था, आज उन्हीं पर खासी चहल-पहल है। मैं तो यही सोच रहा था कि किसी ने मुझे बुलाया। मुड़कर देखा, तो यह हमारी पड़ोसन खोतनधदी थी। बेचारी बुड्ढी ! अपने पहले पति के बच्चों को पालने-पोसने के लिए उसने न चाहने पर दूसरी शादी की थी। इस समय यहां सब्जी खरीदने आयी थी। आलू की टोकरी लेकर वह अपने घर की ओर जा रही थी।

'बेटा ! यह टोकरा मेरे घर तक ले चलो'। —खोतनधदी ने कहा।

मैंने झट से उसके हाथ से टोकरा ले लिया और मुसकराकर कहा—'क्यों नहीं।'

वह मेरे साथ चल दी और गली के नुक्कड़ तक पहुंचकर उसने आत्मीयता से पूछा—'समीना कहां है ?'

'वह तो घर में है।'—मेरा उत्तर।

'हां, उसको घर में ही रहना चाहिए। फिर भी आपको उसका पूरा पता है ?'

—खोतनधदी ने कुछ इस तरह कहा कि मैं शक में पड़ गया।

'आपके कहने का क्या मतलब है ?—मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछा।

'इस तरह भोले न बनो।' —खोतनधदी ने कड़ककर कहा।

इस समय मुझे खोतनधदी को देखते कुछ अजीब-सा लगा। मैंने एक बार फिर उसे पूछा—'मैं अब भी समझा नहीं।'

'बेटे, जमाना बदल गया है। कश्मीर तो ऋषि-वाटिका थी, किंतु आजकल यह राक्षस-वाटिका बन गयी है।' —उसने समझाते हुए कहा।

'इस राक्षस-वाटिका में क्या होता है ?' —मैंने यों ही पूछा।

उसने मेरी ओर ध्यान से देखा।

कहा—इसमें सभी जगह राक्षसों का नग्न-नृत्य होता है। अब तो यहां उन्हीं का राज चलता है और औरत...

'औरत का क्या होता है ?' —मेरा प्रश्न

'इनके राज में औरत औरत नहीं रही है। हां, वही, औरत ! ला, दे यह मेरा टोकरा। धन्यवाद।' —खोतनधदी ने हाथ बढ़ाते हुए कहा।

यह सुनकर मैं धक् से रह गया। मेरे विचारों के बारीक धागे एकदम उलझ गये। मेरे कदम ठहर गये और उसकी बातों के रहस्य की तह तक जाने के लिए मैंने उसे पूछा—'टोकरा तो मैं तब तक नहीं दे सकता, जब तक न आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुलकर कहोगी । समीना का इस बात से कोई संबंध है ?'

'मैं तो कुछ नहीं कह सकती मगर चेतावनी देना तो मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूं ।' —उसका उत्तर ।

'पर मैं पूछूंगा तो किससे ? आप ही बताइए न कि समीना के नारीत्व...' मेरा प्रार्थना-भरा स्वर ।

'नईमा से पूछो । मैं कुछ नहीं कह सकती ।' —यह कहते हुए उसने मेरे हाथ से टोकरा छीन लिया और फुर्ती से दूसरी गली की ओर जा घुसी । उस समय मुझे लगा कि वह बुड्डी नहीं, बल्कि जवानों की तरह चल रही है ।

इस समय मुझसे रहा न गया । असली बात क्या है —यह जानने के लिए मैं उत्सुक हो गया । नईमा करीब की गली को छोड़कर सड़क के दायें तरफ रहती थी । मैं तुरंत उसकी ओर चल दिया । सौभाग्य से वह घर पर ही थीं । चालीसी लांघकर भी वह अभी कुंवारी है । इसका प्रमुख कारण तो मैं हूं । उसने मुझे चाहा

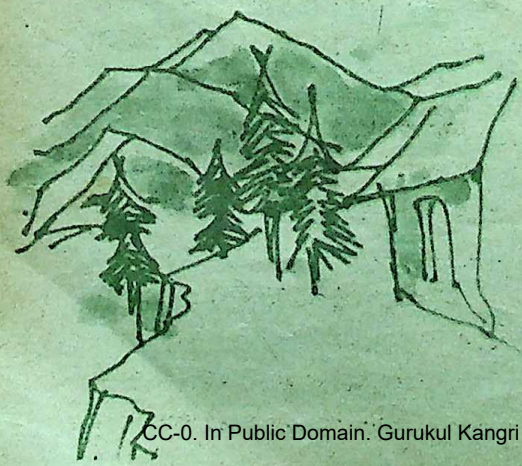

था किंतु अंत में मैंने उसके साथ शादी नहीं की । क्यों ? इसका तो मुझे इस समय भी पता नहीं चल सका है । मैंने सोचा कि प्रतिशोध के कारण वह मेरी पत्नी को बदनाम कर रही है । ज्यों ही मैं उसके कमरे में आया तो वह मेरी ओर आश्चर्यान्वित होकर देखने लगीं । मैंने दांत पीसकर उसे कहा—'आप मेरी पत्नी को इस तरह बदनाम क्यों कर रही हैं ?'

'मुझे आपकी बातें समझ में नहीं आतीं । आप क्या कहना चाहते हैं ?'—उसने कहा ।

'यही कि आप मेरी पत्नी को बदनाम कर रही है ।' —मैंने एक बार फिर कहा ।

'बदनाम नहीं कर रही हूं । यह तो सत्य है—नहीं है । यह तो निरपराध झूठ भी हो सकता है ।'

'खैर,कुछ भी हो । पर तुम यह सब किस आधार पर कहती हो ?' —मैंने पूछा ।

'आधार तो कुछ भी नहीं । पर रूबी भी इस बात से सहमत है ।' —उसका उत्तर ।

'आपको वह कब मिली ?' —मेरा प्रश्न ।

'वह तो मेरे पास आती रहती है । उसके नाम इस बैंक में पचास लाख रुपया जमा है । पैसा जमा भी करती है और निकालती भी है । कप्तान बाफ की पत्नी है न !' —उसने कहा ।

मेरे विचार हद से ज्यादा उलझ गये अब तक, मैं असली बात की तह तक पहुंचने में सफल नहीं हो सका । अथवा यूं कहूं कि बात का सिरा भी पकड़ नहीं सकता था ।

मैं उसी दम रूबी के घर गया । वहां वह किसी काम में व्यस्त थी । नया कालीन बुनने के लिए बुनकरों को इसके बुनने की तालीम दिला रही थी । उसने मेरी ओर देखा और संकेत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोफे पर बैठने को कहा ।

मैं तो बैठ गया और जब वह काम से निपट गयी, तब तक मैं बुनकरों का तमाशा देखता रहा ।

वह मेरे सामने बैठ गयी । कहा—'यह तो मेरा सौभाग्य है कि आज आप मेरे घर आ गये ।'

'आना नहीं चाहता था, मगर आने पर मजबूर हो गया' —तुनककर मेरा उत्तर ।

'क्यों ? क्या बात है ? आप तो मुझ पर नाराज हैं ? कारण ?' —उसने पूछा ।

'अरी कमीनी । यह तुम मेरी पत्नी के बारे में क्या ढोल पीट रही हो ?' —मेरा गुस्सा ।

उसने सुना और होंठों पर मुसकान बिखेर दी । इसे तो मेरा प्रश्न प्रश्न तक ही सीमित रहा । कहा—'मान लीजिए कि यह सत्य है । इसके विपरीत यदि यह हरकत किसी और ने की होती, तो आप क्या करते ? बता ?—उसने पूछा ।

मैं उसकी ओर आश्चर्य से देखता रहा । इसके बाद मैंने झट पूछा—'आपको किसने कहा ?'

'आईशा ने ।'—उसका उत्तर ।

यह सुनते ही मैं उसके घर से निकल गया । मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि समीना मेरे साथ धोखा कर सकती है । वह तो मुझसे दो दिल एक प्राण बनकर प्रेम करती है । मगर इस समय खोतनघदी और नईमा के प्रतिशोध ने हमारे प्रेम के बारीक धागे को काट दिया है ।

आईशा पास के एक बैंक में काम करती थीं । वह बला की खूबसूरत थीं । इसलिए आफिस में वह काम कम और बातें ज्यादा करती थीं ।

चालीसी लांघकर भी अभी वह कुंआरी ही है । इसका प्रमुख कारण तो मैं हूं । उसने मुझे चाहा था, किंतु अंत में मैंने उसके साथ शादी नहीं की । क्यों,इसका अभी मुझे इस समय भी पता नहीं चल सका है ।

'तो आपको क्या पड़ी है मेरी पत्नी को बदनाम करने की ?' —मेरे स्वर में कड़क थी ।

'मैंने ऐसा वह क्या कहा है जिससे आपकी पत्नी बदनाम हो गयी है ?'—उसके स्पष्ट शब्द ।

'यही कि बंदूक बरदार बदमाश उसके साथ उसके ही घर में इश्क फरमा रहे हैं ।' —मैंने तुनककर कहा ।

वह तो किसी की चेक पास कर रही थी । काम से निपट कर उसने अपना चश्मा उतारा और मेरी ओर देखने लगीं —'हां तो आप क्या कह रहे थे ?'

मैंने अपना प्रश्न दोहराया ।

'ताज्जुब है । क्या आप यह समझते हैं कि अपनी प्यारी सहेली के बारे में ऐसी गंदी बात कह दूं ।' —उसने कहा ।

'तो खोतनघदी झूठ कहती है ?' —मैंने पूछा ।

'नहीं, ऐसी बात नहीं । न खोतनघदी झूठ कहती है, न ही मैंने इस तरह की बात कही है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलबत्ता यह बात तो जरूर है कि मैंने बात सुनी है और हो सकता है कि मुझसे भी यह बात आगे बढ़ गयी हो ।' —उसने सविस्तार कहा ।

'वाह ! क्या कहने...' मेरा व्यंग्य ।

पर उसने मेरी बात को काटकर कहा—'मैंने खोतनधदी से कहा है कि इस किस्से में मेरा नाम न जोड़िए ।'

'तो फिर आप तक यह बात कहां पहुंची ?' —मैंने झट पूछा ।

'खुदा की कसम, मुझे कुछ पता नहीं । हां, रमजाना को सब कुछ पता है कि आपकी अनुपस्थिति में समीना के पास कौन आते हैं ?' —उसने बिलकुल स्पष्ट शब्दों में कहा ।

'रमजाना कौन है ?' —मैंने पूछा ।

'आप जानते नहीं ? यह तो इस शहर का मालदार आदमी है ।'—उसने कहा ।

हां, अब यह बिलकुल सत्य-सा लगता है कि समीना ने मुझसे धोखा किया है । बात तो यहां तक पहुंच गयी है और मुझे पता भी नहीं । जी चाह रहा है कि समीना का गला घोंट लूं पर मन यह मानने के लिए तैयार नहीं, क्योंकि समीना मुझे हद से ज्यादा प्यार करती है । आज तक मैंने उसको कभी पराये मर्द के साथ नहीं देखा है । फिर भी औरतजात पर कोई विश्वास नहीं । पराया मर्द और समीना...ऐसा क्या हो सकता है ?'

रमजाना साठ-सत्तर वर्षीय बूढ़ा है । बर्फ-सी सफेद दाढ़ी है उसकी और सिर पर कुराकली टोप पहने वह एक शानदार बंगले में रहते हैं । ज्यों ही मैंने उसके कमरे में प्रवेश किया तो वह सोफे पर बैठे सिगार पी रहे थे । मुझे देखकर उसने पासवाले सोफे पर बैठने के लिए कहा । ज्यों ही उसने मेरी ओर सिगार बढ़ाया तो मैंने उसे पूछा—'भाई साब, बता, उसका नाम क्या है ?'

'किसका ?' —उसका आश्चर्य ।

'मेरी अनुपस्थिति में मेरी पत्नी के पास जो आता है ।' —मैंने पूछा ।

यह सुनकर वह डर-सा गया, किंतु मुझे गुस्से ने अंदर ही से खा लिया था ।

'मुझे कुछ पता नहीं है यारा ।' —उसने कहा किंतु मैंने भी उसको छोड़ा नहीं । कहा—'आप झूठ कह रहे हैं । यदि इस संबंध में किसी को कुछ पता है तो वह आप ही हैं ।'

उसने कुछ नहीं कहा । मैं भी कुछ पल के लिए चुप हो गया । अंत में मैंने उसको इस तरह समझाया—'देखिए यदि ऐसी बात आपके साथ हुई होती, तो आप क्या करते ?'

उसने सिगार का कश खींचकर मेरी ओर ध्यान से देखा । अंत में कहने लगा—'देखिए, जमाना बदल गया है । बंदूक बरदारों ने हमारी जीभ सिल ली है । सच कहने पर आतंक की चिंगारियां फूट पड़ती हैं । निर्दोष लोगों के लिए जीना दूभर हो गया है । मैं कह नहीं सकता । फिर भी उसने मुझे बताया ।'

'किसने ?'—मेरा प्रतिवाद ।

'मोहम्मद सुल्तान ने ।' उसने कहा 'यह तो शायद उसका पड़ोसी है । मजदूर है । वैसे तो कई काम करता है । मेरे घर में भी काम करता है ।'

पहले मैं घर से निकला था और अंत में घर की ओर ही जाना पड़ा । किंतु घर में प्रवेश करने से पूर्व मैं मोहम्मद सुल्तान से मिला । यह सत्य है कि मोहम्मद सुल्तान मेरा पड़ोसी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर दिन मुझसे मिलता रहता है, किंतु उसने मुझे क्यों नहीं कहा ? उसने बात को इतना तूल क्यों दिया ? मुझसे कहने के बजाय उसने इस बात को जल्दी आग की तरह क्यों भड़काया । मुझे तो इस वक्त तक पता नहीं । जरा मैं इस निरक्षर से पूछ लूं कि वह क्या कहेगा । मैं तो यही सोच रहा था कि मुझे सड़क पर मोहम्मद सुल्तान मिला । मैंने उसको देखा और हाथ से संकेत कर अपनी ओर आने के लिए कहा । वह मेरे पास आया । मैंने उसकी ओर ध्यान से देखा । कहा—'बता मेरी अनुपस्थिति में समीना के पास कौन जंगजू बंदूक बरदार आते हैं । यदि आपने देखे हैं, तो मुझे क्यों नहीं बताया ?

—मेरा रोब ।

'मुझे क्या पता था कि आपको बताता ?'

—उसका उत्तर

'फिर आपको यह सब किसने बताया ?'

—मैंने पूछा ।

'आपकी बीवी समीना ने ।' —उसने एकदम कहा ।

मैंने सुना और उसके पास से खिसक गया । मेरे कदम डगमगा रहे थे । ऐसा लगने लगा कि जमीन पांव के नीचे से सरक रही है । जैसे-तैसे मैं घर पहुंचा और ज्यों ही अपने कमरे की ओर सरक गया, वहां मैंने अपने सोफे पर बीस वर्षीय युवक को बैठा देखा । उसकी दाढ़ी निहायत ही लंबी बनी थी । उसके दायें हाथ में 'ए. के. सैंतालीस' राइफल थी । ऐसा लग रहा था कि वह किसी का इंतजार कर रहा था । मैंने उसको देखा और थर-थर कांपने लगा । उसने भी मेरी ओर ध्यान से देखा । इतने में समीना ने कमरे में प्रवेश किया ।

'बोलो दीदी, लायी हो ? चार बजे कर्फ्यू लगेगा । मैं तो यहां बंद हो जाऊंगा ।'

—उसने एक साथ कहा ।

'मगर मैं कहां से लाऊंगी ? मुश्किल से पेट पालते हैं हम । आपके लिए एक लाख रुपया कहां से लाएंगे ?' —समीना का उत्तर ।

'जिस तरह खोतनधदी, नईमा, रूबी, रमजाना और मोहम्मद शेख ने लाये उन्हीं की तरह आप भी एक लाख रुपये का इंतजाम करें ।' —उसके स्पष्ट शब्द ।

'इनके पास तो रुपया है । मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं ।' —समीना ने कहा ।

'तो फिर किसी भी स्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार रहिए ।' —उसकी धमकी ।

इसके साथ ही उसने कमरे में ही दो-तीन फायर किये और गोलियां छत को चीरकर बाहर निकल गयीं ।

मैं कांप गया । उसको मैं देखते ही रह गया ।

'इस समय मैं जाता हूं । चार बजे कर्फ्यू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगेगा, तो मैं यहां फंस जाऊंगा । कल मैं यहां फिर आ जाऊंगा । तब तक पैसे तैयार रखना, नहीं तो जान का खतरा है ।' —उसके स्पष्ट शब्द ।

इतने में वह वहां से चला । समीना मेरी छाती से लग गयी । मैंने उसे पूछा—'यह कौन है ?'

'जानते नहीं इसे ? यह तो कश्मीर की तथाकथित 'आजादी' का संदेशवाहक है और मेरा भाई'—समीना ने कहा ।

'भाई ?' —मेरा आश्चर्य ।

'हां वही । मेरा भाई बिलाल । यही तो आठ वर्ष पूर्व घर से गायब हो गया था न ।' —समीना का उत्तर ।

यह सुनते ही मुझे एकदम याद आया । हां, यही तो समीना का भाई है । आठ साल पहले घर से गायब हो गया था । उस समय इनके ढूढ़ने के सारे प्रयत्न विफल रहे किंतु समझने में देर नहीं लगी । यह तो पाकिस्तान से बंदूक, बम और ग्रेनेड चलाने का प्रशिक्षण पाकर यहां आया है, और अब यहां की भोली-भाली जनता से तथाकथित 'आजादी' या 'कश्मीर बनेगा पाकिस्तान' का असफल मिशन लेकर फिर भीख मांग रहा है । बंदूक का भय दिखाकर इसने इनकी जीभ सिल ली है । इसी ने यहां आतंकवाद के बरगद की शाखाएं फैलायी हैं, किंतु इसने किस तरह जन्म लिया ? इसके उगाने का आतंक-बीज तो यही है । उस समय मैंने समीना से कह दिया था कि आपका यह सगा भाई आपसे मिलेगा नहीं । न वह आपसे मिलेगा, न ही आप इसे मिलना चाहेंगी ।

मगर वह इस समय समीना से मिलने आया था—बंदूक का भय दिखाकर, भीख मांगने के लिए ।

—६८/३, त्रिकूट नगर
जम्मू-१८००१

आयोडीन जिम्मेदार

सावधान ! शरीर में आयोडीन की कमी से केवल घेंघा रोग ही नहीं हो सकता, और भी अनेक शिकायतें आपके शरीर में स्थान बना सकती हैं । जैसे माताओं के शरीर में आयोडीन के अभाव से मृत शिशुओं का पैदा होना या पैदा होते ही मर जाना । और अगर शिशु जीवित भी रह जाता है तो वह दिमागी तौर से मंदबुद्धि हो सकता है । माताओं के अचानक गर्भपात होना भी एक आम शिकायत होती जा रही है ।

आयोडीन की कमी से होनेवाली बीमारियों के विशेषज्ञ डॉ. बेसेट एस. हेटजेल ने अभी हाल में ही बताया है कि आयोडीन की कमी के कारण बच्चों में मंदबुद्धि होने की शिकायतें पंद्रह वर्ष से कम आयु में पायी जा रही हैं । इस कमी को आयोडीनयुक्त नमक के उपयोग से पूरा किया जा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्माष्टमी के अवसर पर

ग्रीक कृष्णभक्त थे !

● शोभा वराडपांडे

प्राचीन ग्रीकों को भगवान कृष्ण का पहला साक्षात्कार तब हुआ, जब अलक्झेंडर की फौज का सामना करने के लिए वीर पौरव या पोरस की भारतीय सेना बड़े उत्साह से निकल पड़ी थी ।

कर्टिस ने अपने वृत्तांत में लिखा है—

पद्धतियों के अग्रभाग में हेराक्लिस की प्रतिमा लिए पोरस के सैनिक चल रहे थे । यह प्रतिमा वीरों का युद्धोत्साह बढ़ाने के लिए सबसे बड़ी प्रेरणा थी । इस प्रतिमा को त्यागकर रण से परावृत्त होना यह सबसे बड़ा फौजी अपराध माना जाता था और युद्धभूमि से यह प्रतिमा सकुशल वापस न लानेवालों को मृत्युदंड दिया जाता था । (इन्वेजन ऑव इंडिया बाय अलेक्झेंडर द ग्रेट ; मैकक्रिंडल)

भारतीय हरिकृष्ण का उल्लेख ग्रीकों ने कई स्थानों पर हेराक्लिस नाम से ही किया है । सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में नियुक्त ग्रीक राजदूत मेगॅस्थेनीज ने इंडिका नामक ग्रंथ लिखा था । इसमें वे लिखते हैं—

'पर्वतीय प्रदेश में रहनेवाले लोग डायनोसस (शिव) के पूजक हैं परंतु मैदानी इलाकों में रहनेवाले हेराक्लिस की पूजा करते हैं । उनका कहना है कि हेराक्लिस भारत का निवासी है । शौरसेनी लोग विशेष रूप से उसके भक्त हैं । शौरसेनी लोग जिस प्रदेश में रहते हैं वहां मथुरा और कृष्णपुरा (वृंदावन) नाम के दो बड़े नगर हैं और यमुना नाम की जलपर्यटन योग्य नदी ।'

इंडिका के इस परिच्छेद से श्रीकृष्ण को ही प्राचीन ग्रीक भारतीय हेराक्लिस मानते थे यह स्पष्ट होता है ।

प्राचीन ग्रीक वृत्तांतों के अनुसार ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में भारतीयों का एक दल आरमेनिया में जा बसा था जो किशन और दामोदर का पूजक था । किशन और दामोदर यह दोनों नाम भी श्रीकृष्ण के ही हैं ।

आज इस्कॉन के माध्यम से कृष्ण-भक्ति का प्रचार-प्रसार देश-विदेशों में हुआ है । परंतु यह प्रक्रिया हजारों वर्षों पूर्व ग्रीकों के साथ शुरू हुई थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्य की अनुभूति

ग्रीकों को अपने हेराक्लिस और भारतीय हरिकृष्ण में, संभवतः बहुत साम्य प्रतीत हुआ। मेगॅस्थेनीज ने लिखा है कि यह बात भारतीय भी मानते हैं कि उनके हेराक्लिस का थिबन हेराक्लिस से वेशभूषा आदि का साम्य है। शायद इसके परिणामस्वरूप भारत में आये ग्रीक कृष्ण-पूजक हो गये।

ग्रीक मुद्राओं पर अंकन

आज कृष्ण का सबसे प्राचीन रूपांकन ग्रीक मुद्राओं पर नजर आता है। श्रीकृष्ण और बलराम का सर्वाधिक पुरातन आलेखन तक्षशिला के ग्रीक राजा ॲगाथोक्लिस के (ई. स. पूर्व १८०-१६५) मुद्राओं पर देखने को मिलता है। यहां मुकुटधारी कृष्ण के पास उनका शस्त्र सुदर्शन-चक्र अंकित किया गया है और बलराम अपना आयुध हल लेकर खड़े हैं। यह बात प्राचीन ग्रीकों के श्रीकृष्ण विषयक पूज्य भाव की ही अभिव्यक्ति है। भारत में आकर भारतीयों के संपर्क से प्राचीन ग्रीक भी कृष्ण-भक्त हो गये।

इसका एक और प्रमाण वह गरुड़-स्तंभ है जो ईसा पूर्व १२६ में ग्रीक राजदूत हेलिओदोरस ने विदिशा के पास भगवान श्रीकृष्ण के सन्मानार्थ स्थापित किया था और जो अभी भी विद्यमान है।

कृष्णभक्त हेलिओदोरस शुंग राजा कौत्सीपुत्र भगभद्र के दरबार में राजदूत थे। गरुड़-ध्वज स्तंभ मंदिरों के सामने स्थापित करने की प्रथा थी। ऐसा लगता है कि जहां यह स्तंभ आज विद्यमान है वहां श्री वासुदेव-कृष्ण का कोई मंदिर भी उस समय रहा होगा। काल की विकराल गली में मंदिर तो बचा नहीं, परंतु श्रीकृष्ण भक्त ग्रीक राजदूत का स्थापित स्तंभ आज भी अचल खड़ा है। इस स्तंभ पर जो लेख खुदा हुआ है उसका अनुवाद कुछ इस प्रकार है।

मूल्यत्रयी का महत्त्व

'देवाधिदेव वासुदेव (कृष्ण) का यह गरुड़ध्वज है। इसे स्थापित किया है दियस के पुत्र तक्षशिलावासी भागवत हेलिओदोरस ने जो महाराज अंतलिकितस के यहां से यवन दूत होकर कौत्सीपुत्र त्राता महाराज भगभद्र के दरबार में आया है। उनके राज्याभिषेक के चौदहवें वर्ष में...अमोघ फल के तीन साधन, जिन पर आचरण करने से स्वर्ग प्राप्ति होती है, वे हैं दम (इंद्रिय-दमन), त्याग और अप्रमाद (विवेक)!'

दम, त्याग और अप्रमाद इस मूल्य-त्रयी का महत्त्व महाभारत में बार-बार बताया गया है, व्यास कहते हैं :

'दमस्त्यागोऽप्रमादश्च एतेष्वमृतमाहितम्'

गीता में भी इस मूल्यत्रयी का उल्लेख किया गया है। राजदूत हेलिओदोरस स्वयं को भागवत अर्थात कृष्ण-भक्त कहलवाते हैं। स्तंभ पर लिखे लेख से महाभारत से भी वे परिचित थे, यह भी स्पष्ट होता है। उस समय उनके—जैसे कई ग्रीक भारत में होंगे जो राजदूत की तरह कृष्ण-भक्त होंगे।

आज इस्कॉन के माध्यम से कृष्ण-भक्ति का प्रचार-प्रसार देश-विदेशों में हुआ है। परंतु यह प्रक्रिया हजारों वर्षों पूर्व ग्रीकों के साथ शुरू हुई।

—एफ-४२, ग्रीन पार्क
नयी दिल्ली-१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुरलीधर कृष्ण : प्राचीन ग्रीकों के भी वंदनीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

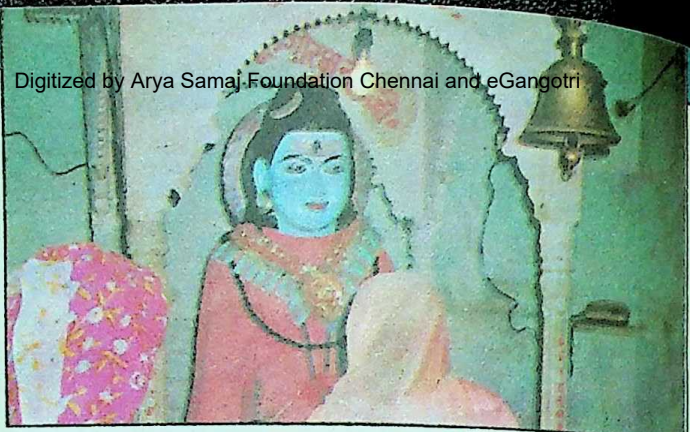

महायोगी गोरखनाथ की मूर्ति

आंगन के उत्तरी भाग में स्थित मंदिर में भगवती की मूर्ति

मंदिर का दक्षिण एवं पूर्व का

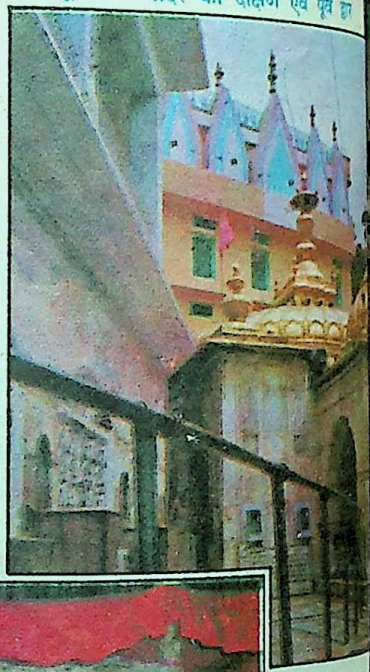

शैयाभवन-मंदिर में भगवती ज्वाला देवी की शैया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्था और श्रद्धा का ज्वालामुखी-धाम शक्तिपीठ

● अभिराज डॉ. राजेन्द्र मिश्र

री एक शिष्या कु. राजेश बहुत दिनों से हमीरपुर चलने का आग्रह कर रही थी, जहां उसके सेवानिवृत्त पिता पं. दीनानाथ शर्माजी सपरिवार रहते हैं । आचार्यजी से मेरा प्रचार इतना प्रचुर एवं प्रौढ़ हो चुका था कि क-दूसरे को कभी न देख पाने के बावजूद हम त्यंत अंतरंग बन गये थे । इसी बीच लाप के संदर्भ में जब राजेश ने बताया कि वा बालकनाथ एवं भगवती ज्वालामुखी का त्र पीठ हमीरपुर के अत्यंत समीप हैं' तो मैं काल यात्रा का निश्चय कर बैठा ।

और एक दिन हम बस से हमीरपुर के लिए पड़े । हिमाचल प्रदेश में अगस्त के दिन अत्यंत नयनाभिराम तथा सुखमय होते हैं । न ठिठुरनभरी शीत, न धारासार वर्षा का भय और न ही मैदानी इलाकों-जैसी जानलेवा उमस ! एक घंटे की घुमावदार पर्वतीय यात्रा के बाद ही सब-कुछ स्याह अंधेरे में विलीन हो गया । बस, पर्वतशिखरों एवं घाटियों में दमकते बिजली के बल्बों से ही वहां बस्ती होने का प्रमाण मिलता था ।

रात एक बजे हम हमीरपुर बस-स्टैंड पर पहुंचे । घर पहुंचकर भोजन के अनंतर भी हम लोग ढेर-सारी बातें करते रहे जिनका 'इंडेक्स' हमारे पत्रों में पहले से ही अंकित था । मुझे महाकवि भवभूति की एक पंक्ति याद हो

हमीरपुर के सम्पादक के साथ डॉ. राजेन्द्र एवं पं. दीनानाथ शर्माजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयी—

अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत् !

दो-तीन दिन बाद हम देवी ज्वालामुखी के यात्रापथ पर चल पड़े । चारों ओर प्रकृति-वधू की अनंत रूपराशि बिखरी पड़ी थी । हिमालय के पर्वतशिखर अब दूर होते जा रहे थे तथा समतल भूखंड उत्तरोत्तर पास आते जा रहे थे । अद्भुत दृश्य था ! सुवर्ण-सिकता-जैसी पियराई माटी में लहलहाती फसलों को देख मुझे अपने काशी-कोसल के जवार याद आ रहे थे । आम की घनी बागें दीखने लगी थीं ।

पुराण प्रसिद्ध शक्तिपीठ

नादौन कस्बे से आगे बढ़कर हमने विपाशा (व्यास) को पार किया और कुछ ही क्षणों में पहुंच गये भगवती ज्वालामुखी के धाम में ! बस स्टैंड से उत्तर दिशा में, मात्र एक फर्लांग की पहुंच के भीतर ही यह पुराण प्रसिद्ध शक्तिपीठ स्थित है । शक्तिपीठ के उत्तरी छोर पर स्थित पर्वत शिखर पर गाड़ा गया एक 'संयंत्र' भी दूर से ही दीखता है । दैवी रहस्यों से अनभिज्ञ, अनास्थालु अंगरेजों ने यहां पर्वत में खनिज गैस होने का परीक्षण किया था ! इस प्रकार आस्था-अनास्था, श्रद्धा-अश्रद्धा, विश्वास-अविश्वास, देवत्व तथा मानवत्व यहां आमने-सामने खड़े हुए मिले !

पौराणिक एवं लौकिक पृष्ठभूमि

भगवती ज्वालादेवी का शक्तिपीठ अपनी ज्वालारूपता के कारण अन्य शाक्त तीर्थों की अपेक्षा बहुत अधिक आकर्षण एवं विस्मय का केंद्र रहा है । इस तीर्थ की महिमा-गरिमा का विस्तृत वर्णन शिवपुराण, देवीभागवत तथा वाल्मीकि रामायण आदि प्राचीन ग्रंथों में ही, रुद्रमायलतंत्र-जैसे प्रख्यात आगम में भी उसका विस्तृत उल्लेख है ।

वस्तुतः शाक्त-पीठों की स्थापना का देवाधिदेव शिव तथा उनकी प्रथम अर्धांगिनी सती के साथ जुड़ा हुआ है । दक्ष प्रजापति की साठ कन्याएं थीं जिनमें से एक थीं देवी सती । सती का विवाह शिव से संपन्न हुआ था । दक्ष-प्रजापति अत्यंत अहंकारी तथा क्रुद्ध था । वह अवढरदानी दिगंबर शिव के पारमार्थिक व्यक्तित्व से अनभिज्ञ था तथा स्वभावतः द्रोह करता था । शिव का 'देवाधिदेव' अथवा 'महादेव' कहा जाना उसको सह्य नहीं था । वह सचमुच उन्हें अपवित्र तथा गुणहीन समझता था । शिव को अपमानित करने के ही उद्देश्य से, प्रजापति जाने के गर्व में डूबे दक्ष ने अपने यज्ञ में, उन्हें आमंत्रित नहीं किया ।

परंतु देवी सती संभवतः पिता और पति इस विवाद से पूर्ण परिचित नहीं थीं । फिर वह पिता के यज्ञोत्सव में जाने को उत्कंठित उठीं । शिव ने, अपने प्रति दक्ष के व्यवहार की चर्चा करते हुए, सती को भी वहां जाकर अपमानित न होने की सलाह दी । परंतु भवितव्यता प्रबल थी । सती की समझ में नहीं आया । वह अकेली ही जा पहुंचीं दक्ष-प्रजापति के यज्ञ में !

हुआ वही जो होना था ! शंभु-शिव ने अपनी ही बेटी सती से बात तक नहीं की । ने देखा कि उस यज्ञ में शिव का कोई स्थान निश्चित नहीं था, जबकि अन्यान्य सभी देवताओं के लिए यज्ञ-भाग (पुरोडाश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवती ज्वालादेवी का शक्तिपीठ अपनी ज्वाला रूपता के कारण अन्य शाक्त तीर्थों की अपेक्षा आकर्षण एवं विस्मय का केंद्र रहा है।

हविष्यान्न) सुरक्षित थे। महामहिमाशाली पति के इस घोर अपमान से सती क्षुब्ध हो उठीं। उन्होंने सूक्ष्मातिसूक्ष्म शिवतत्त्व को समझ पाने में असमर्थ, अपने अकारण द्रोही अहंकारी पिता को भरी सभा में लांछित एवं कदर्थित किया तथा प्रतिक्रियावश यज्ञवाट में ही योगाग्नि से अपनी देह को भस्मसात कर दिया !

सती के प्राणत्याग से विक्षुब्ध हुए रुद्र ने वीरभद्र आदि अपने गणों को दक्ष के यज्ञ को विध्वस्त कर देने के लिए भेजा। वीरभद्र ने यज्ञवाट को छिन्न-भिन्न कर दिया, महर्षि भृगु की दाढ़ी नोच डाली तथा दक्ष प्रजापति का शीश काट लिया। इस प्रकार अहंकारी तथा शिवद्रोही दक्ष का अंत हो गया।

हरदोई-दक्ष का यज्ञ-स्थल

इंद्रादि देवों के साथ प्रजापति ब्रह्मा ने नाना प्रकार की स्तुतियों से शिव को जैसे-तैसे प्रसन्न किया। आशुतोष शिव प्रसन्न हो गये। बकरे का सिर जोड़कर दक्ष को पुनर्जीवन प्रदान किया गया। दंडित दक्ष ने हरद्वार के समीप कनखल में, गंगा के तट पर नये सिरे से अपना यज्ञ संपन्न किया। जनश्रुति के अनुसार उत्तर प्रदेश का 'हरदोई' नगर ही दक्ष का प्रथम यज्ञस्थल था। 'हरद्रोही' शब्द ही बिगड़कर अब हरदोई बन गया है। यहीं से प्रकट होती है सई नदी, जो 'सती' शब्द का अपभ्रंश रूप है। सई नदी हरदोई, उन्नाव, रायबरेली, प्रतापगढ़ तथा जौनपुर जनपद को पार करती, जौनपुर जनपद में ही तिलवारी के समीप गोमती में विलीन हो जाती है। सई के तट पर शिव मंदिरों की भरमार होना तथा सई के जल से भगवान शिव का गंगाजल से भी अधिक परितुष्ट होना— उपर्युक्त पौराणिक आख्यान की पुष्टि करता है !

प्रियाविरही शिव का उन्माद !

प्राणप्रिया सती के वियोग में, महायोगी होते हुए भी, भगवान शिव अपना विवेक खो बैठे। मृत सती के शव को कंधे पर लादे उन्मादग्रस्त शिव चतुर्दिक पर्यटन करने लगे। शव का यह उन्माद देखकर तीनों लोकों में खलबली मच गयी। देवताओं ने सोचा कि जब तक सती का

ज्वालामुखी मंदिर का उत्तरी द्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

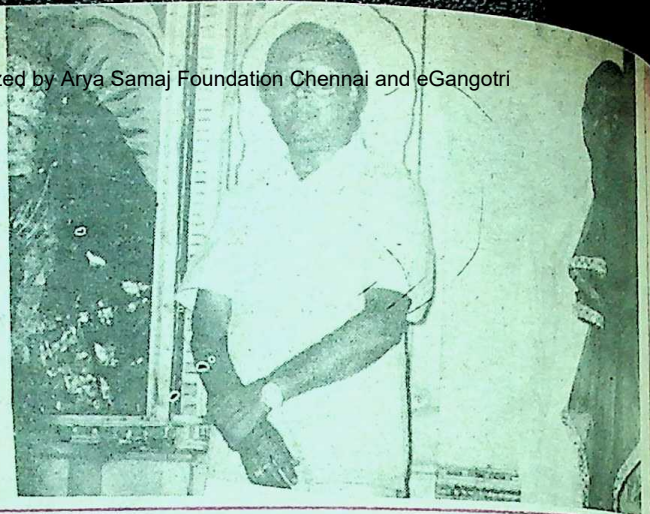

महालक्ष्मी की प्रतिमा के पास लेखक

शव बना रहेगा, शिव का तब तक न ही उन्माद कम होगा और न ही उनका मोह भंग होगा। उन्होंने इस संदर्भ में विष्णु से प्रार्थना की। देवताओं की प्रार्थना मानकर विष्णु अपने शार्ङ्ग नामक धनुष पर शर-संधान कर, सती-शरीर के अंगों को काट-काटकर गिराने लगे। इस प्रयास में ही, सती के विभिन्न अंग संपूर्ण भारत में ५२ स्थानों पर गिरे। जहां-जहां ये अंग गिरे वहीं-वहीं शक्तिपीठ की सृष्टि हुई !

तंत्रचूड़ामणि के प्रमाणानुसार ज्वालामुखी-क्षेत्र में देवी सती की महाजिह्वा गिरी थी। यहां भगवान शिव 'उन्मत्त भैरव' के रूप में प्रकट हुए थे—

ज्वालामुख्यां महाजिह्वा देव उन्मत्त भैरवः

शिवपुराण की कथा में यह भी बताया गया है कि दक्ष के यज्ञ में जब सती ने, यज्ञकुंड की धधकती आग में कूदकर प्राण विसर्जित कर दिये तब उनकी देह से एक भयावह ज्वाला उत्पन्न हुई। वह ज्वाला ऊर्ध्वमुख आकाश में उठी तथा बाद में एक पर्वतशिखर पर गिरी। वही अखंड, अक्षुण्ण अग्निज्वाला 'ज्वालामुखी' के नाम से प्रख्यात हुई !

ज्वालामुखि ! नमोऽस्तुते !

वर्तमान ज्वालामुखी-धाम, हिमाचल प्र राज्य के कांगड़ा जिले में, हमीरपुर-कांगड़ा राजमार्ग पर स्थित है। शिमला से वितस्ता हमीरपुर तथा नादौन होते हुए, पठानकोट से कांगड़ा होते हुए तथा चंडीगढ़ से होशिया गगरेट, भरवाई, चिंतपूर्णी तथा गोपीपुर-ठा होते हुए सरलता से ज्वालामुखी-धाम पहुं सकता है। बस-सेवाएं सदैव उपलब्ध रह हैं।

नैवेद्य, चुनरी, नारियल तथा चढ़ावे की अन्यान्य सामग्रियों से सजी लंबी-बीथी को करते हुए मंदिर के प्रांगण में पहुंचते हैं। का प्रवेशद्वार पूर्व दिशा में है। आंगन में करते ही तीन प्रमुख मंदिरों के दर्शन होते पश्चिमी भाग में प्रमुख मंदिर, जिसके गर्भ स्थित गहरे कुंड की दीवारों से ज्वालाएं प्रज्ज्वलित होती रहती हैं। कुंड के पीछे दीवार में भी एक अखंड ज्योति सुरक्षित है।

आंगन के उत्तरी भाग में स्थित मंदिर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु गोरखनाथ की 'डिब्बी' : एक खौलते हुए पानी का कुंड, पर सब मायामात्र ! कुंड का जल ठंडा है और भक्तों पर छिड़का जाता है। पुजारी द्वारा धूपबत्ती जलाते ही कुंड के जल पर एक बड़ी ज्योति प्रकट हो जाती है ।

भगवती दुर्गा का नयनाभिराम विग्रह है । यहीं पर सुरक्षित रखा है शहंशाह अकबर द्वारा भगवती को अर्पित किया गया सुवर्ण-छत्र ! प्रांगण के पूर्वी भाग में विद्यमान है भगवती ज्वालादेवी का शयनगृह ! इस भवन में बीचोंबीच एक संगमरमर की वेदी निर्मित है जिसके ऊपर आकर्षक चंद्रातप (चंदोवा) तना हुआ है । रात दस बजे शयन-आरती संपन्न होती है । तदनंतर भगवती ज्वालादेवी के शयनार्थ वस्त्र, श्रृंगार-प्रसाधन-सामग्री तथा प्रातःकालीन उपयोग के लिए जल तथा दातौन आदि वस्तुएं रख दी जाती हैं । इस शैयागृह में चारों ओर दश महाविद्याओं, महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती की सुंदर मूर्तियां स्थापित हैं । इसी भवन में सिक्खों के दशम गुरु गोविंद सिंह द्वारा स्थापित 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' की एक हस्तलिखित प्रति भी सुरक्षित है !

मुख्य मंदिर में ज्योतियों की संख्या घटती-बढ़ती रहती है । इनकी सर्वाधिक संख्या १४ तथा न्यूनतम संख्या तीन मानी जाती है जो कि चतुर्दश भुवन-निर्माण तथा गुणतंत्र (सत्त्व, रजस एवं तमस) की सृष्टि के लिए कारणभूत मानी जाती हैं । परंतु प्रत्यक्ष-दर्शन नौ ज्योतियों का ही होता है । इनमें से महालक्ष्मी, सरस्वती, अंबिका तथा अंजना नामक चार ज्वालाएं तो गहरे कुंड में अवस्थित हैं । ये चारों ज्योतियां क्रमशः धनधान्य, विद्या, संतति तथा आयुष्य-दात्री मानी गयी हैं । अन्य पांच ज्योतियां मंदिर की दीवार में हैं जिन्हें क्रमशः महाकाली, अन्नपूर्णा, चंडी, हिंगलाज भवानी तथा विंध्यवासिनी कहा जाता है । ये ज्वालाएं क्रमशः भुक्ति-मुक्ति, अन्नादिसमृद्धि, शत्रुक्षय, व्याधिक्षय तथा शोकमुक्ति प्रदान करनेवाली हैं ।

इन समस्त ज्योतियों में भी विशालतम ज्योति है कुंड के ऊपर पश्चिमी दीवार में प्रतिष्ठित ज्योति, जो कि चांदी से बनी एक जाली के भीतर सुरक्षित है । इसी ज्योति को 'महाकाली' कहा जाता है और यही पूर्णब्रह्म-प्रतीकभूता ज्योति 'ज्वालामुखी' के नाम से भी विख्यात है ।

गो कि फोटोग्राफी की सख्त मनाही है यहां । विशेषकर मुख्य मंदिर में ! परंतु मेरे परिचय एवं श्रद्धाभाव से प्रभावित पुजारी ने मुझे अनुमति दे दी कि मैं त्वरितगति से मात्र एक बार कैमरे का प्रयोग कर लूं !

गुरु गोरखनाथ की डिब्बी

नाथपंथी योगियों में गुरु गोरखनाथ का नाम बड़ी श्रद्धा से स्मरण किया जाता है ।

गुरु गोरखनाथ मूलतः 'शक्ति' के उपासक थे । उन्होंने ज्वालामुखी-तीर्थ में भी घोर तप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था । ज्वालामुखी मंदिर के पीछे ही थोड़ी ऊंचाई पर उनका एक भव्य मंदिर विद्यमान है जिसे 'गोरखनाथ की डिब्बी' कहा जाता है । इस मंदिर में कनफटे गोरखपंथी साधुओं का भारी जमघट दीखता है । गोरखनाथ की प्रतिमा के अतिरिक्त भगवती दुर्गा की भी एक प्रतिमा यहां स्थापित है ।

कहा जाता है कि गुरु गोरखनाथ ने अपने शिष्य नागार्जुन के साथ यहां तपस्या की । एक दिन वह बटलोई में पानी चढ़ाकर कहीं खिचड़ी मांगने गये, परंतु लौटे नहीं । फलतः डिब्बी का जल भी उबल नहीं सका । कुंड के आकार की वह डिब्बी (बटलोई) आज भी वहीं है । उसमें निरंतर पानी खौलता रहता है, परंतु है यह सब मायामात्र ! वस्तुतः जल ठंडा है और पुजारी वही जल समस्त भक्तों पर छिड़कता है । पुजारी द्वारा धूपबत्ती जलाते ही कुंड के जल पर एक बड़ी ज्योति प्रकट हो जाती है । यह एक विलक्षण तथ्य प्रतीत होता है ! इस डिब्बी को 'रुद्रकुंड' भी कहा जाता है । यह स्थान मुख्य मंदिर के परिक्रमा-पथ में बायीं ओर स्थित है !

शहंशाह अकबर का छत्र

जिन तीन मुसलिम शासकों के ज्वालामुखी आने का प्रमाण प्राप्त होता है वे हैं— फीरोजशाह तुगलक, सम्राट अकबर तथा औरंगजेब ! फीरोज ने ज्वालामुखी-धाम में बड़े अत्याचार किये, साधु-संतों को मारा, कांगड़ा के समृद्ध संस्कृत पुस्तकालय को लूट लिया और अंततः तोड़ने के उद्देश्य से भगवान दत्तात्रेय की मूर्ति पर गुर्ज (मुद्गर) से प्रहार किया । कहा जाता है कि तभी मूर्ति से अनंत मधुमक्खियां निकलीं और फीरोज के सैनिकों को प्राणहीन करने लगीं । भयभीत फीरोज भाग गया ।

औरंगजेब तो मंदिर-विध्वंस के लिए कुख्यात था ही ! परंतु इन्हीं मधुमक्खियों ने कांगड़ा पहुंचते ही उसकी सेना पर भी आक्रमण किया । अंततः भगवती ज्वालादेवी की शक्ति से आतंकित होकर वह भी कांगड़े से ही पीछे लौट गया ।

परंतु शहंशाह अकबर विवेकी तथा सहिष्णु था । फिर भी इस अनादि-ज्वाला को भगवती दुर्गा का प्रत्यक्ष-विग्रह मानने से पूर्व उसने विशाल जलधारा प्रवाहित कर ज्वाला को बुझाने का यत्न किया । परंतु यह प्रयास व्यर्थ सिद्ध हुआ । तब उसके सिपाहियों ने भारी-भरकम लोहे के मोटे-मोटे तवे रख दिये ज्योति पर ! परंतु तब भी ज्वाला उन तवों को छेदकर बाहर आ निकली ।

शहंशाह इस घटना से चमत्कृत हो उठा उसने जब ब्राह्मण विद्वानों से भगवती ज्वालामुखी का माहात्म्य सुना तो श्रद्धाभिभूत हो उठा और उसने प्रमाद का प्रायश्चित करने के उद्देश्य से, सवा मन शुद्ध सोने से निर्मित छत्र लेकर, उसे कंधे पर लादे, नंगे पांव मंदिर में पहुंचा ! जब वह छत्र को नीचे उतारने का यत्न कर ही रहा था कि (भगवती के कोपवश ?) छत्र गिरकर टूट गया तथा एक विचित्र धातु में परिवर्तित हो गया । वही खंडित छत्र आज भी मंदिर में सुरक्षित रखा है ।

अकबर ने भक्तिभाव में डूबकर ज्वालादेवी की आराधना की और मंदिर की उत्तम-व्यवस्था कर आगरा लौट आया ।

— हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता ने बालकपन में रक्षा की, भाई ने किशोरावस्था में, बुढ़ापे में रक्षा करने के लिए पुत्र की रक्षा का दायित्व वहन करने में को बड़ी ही सबला समझूं किंतु जैसा कि सम है, लोगों को रक्षा की बहुत चिंता है । ों की मीटिंगों, हफ़्तों की कार्यवाही, महीनों की

व्यंग्य

गार्ड रक्षित दफ़्तरे

● अलका पाठक

जना और जीवनभर का ख्वाब हकीकत कर सामने खड़ा है ।

हमेशा से उम्मीद-सी थी कि कोई तो दम-से-कदम मिलाकर चले । छाया बनकर चलूंगी का करार करना था, अच्छा हुआ किया । वरना फिजूल में वायदा खिलाफी पाप लगता । छाया बनने का सुख नहीं है । चिह्नों पर पांव रखते चलने का संजोग भी दिशाएं अलग ठहरीं । इधर एक है जो मेरे दो कदम का फासला रखकर चलता है । में पूछा जाता तो भारतेंदु की तर्ज पर बात बनती कि क्यों सखि साजन, नहीं सखी !

आजकल प्रतिष्ठा का प्रतीक चिह्न न घर पर डिश एंटीना है, न सामने खड़ी ११८ एन. लथ में सोने का कंगन झमकाने का भी देखे की, दिल में चाहते होंगे कि पाप कटे, जैसे कटे, जितना पहले कटे उतना अच्छा ! जिसका मोल मिट्टी के बराबर भी नहीं उसको बचाने के लिए पैसा मिट्टी हो रहा है । पैट्रोल पानी की तरह बहाया जा रहा है । जो ज्यादा बड़े उनके आगे गाड़ी, पीछे गाड़ी, दांये गाड़ी, बांये गाड़ी । वो तो ऊपर-नीचे संभव नहीं है, नहीं वह भी करके दिखा दें । ज्यादा बड़ों के लिए भन्नाता घूमता है हैलीकॉप्टर !

गाड़ी के आगे गाड़ी, पीछे गाड़ी, संग में खिड़कियों से बाहर ए. के. सैंतालीस जैसी राइफलें, स्टेनगनें ताने हुए काले बिलौटे ! भाषा संस्कृतनिष्ठ करनी हो तो ब्लैक कैट मायने श्याम मार्जरी ! खूसटों के भाग्य में मार्जरी कहां से आयी, उन्हें तो बिलौटे ही नसीब होंगे ।

खूसटों से भाग बड़े हैं गार्डों के । उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोंदियल और गंजी के संग-संग सुमुखियों का भी साथ मिला । इधर कई दिनों से देखा एक-एक सुंदर युवती के पीछे-पीछे एक पहलवाननुमा रोज चला आता है । सड़कों पर तो यह दृश्य आम है, किंतु कार्यालय के गलियारों में विशेष । तुरंत अपनी काया में समायी माता जागी । उस पहलवान को डपटने के लिए बुलाया । वह टस-से-मस नहीं हुआ । कन्या के पीछे ही चलता गया । अगले दिन देखा फिर वही गलियारे में घूम रहा है । पता चला कि वह बाला नहीं, आला अफसर है और बालक जो है सो उनका सिक्योरिटी गार्ड है !

तब से तमन्ना हुई कि मेरे पीछे-पीछे भी कोई इसी तरह चले । शानदार गाड़ी और कीमती साड़ी का वह रुतबा कहां जो इस पिस्तौलधारी का है । जो पूरी नहीं होती वह तमन्नाएं सपने बन जाती हैं । जो पूरे नहीं होते वह [illegible] जंजाल हो जाते हैं । कई जंजाल [illegible] में माला-से पड़े हैं । सितारों का [illegible] छमाछम बरसता सावन है, कांटों में [illegible] फूलों की छांह है, वहीं मुस्तैद सुरक्ष [illegible] में बिछे कोमल फूलों को अपने मजबू[illegible] रौंदता चला आ रहा है ! फूलों का [illegible] कीचड़भरी गली में बदल जाता है । [illegible] सहारे कीचड़ को टापते-फांदते चलते [illegible] जाऊं, पर पीछे चलनेवाला रुक गया [illegible] चेहरे पर विनम्रता के साथ दृढ़ता [illegible] है—

"रास्ता बहुत गंदा है"

"?"

"रिक्शा कर लीजिए !"

रिक्शा करने में दिक्कत है, गैर [illegible]

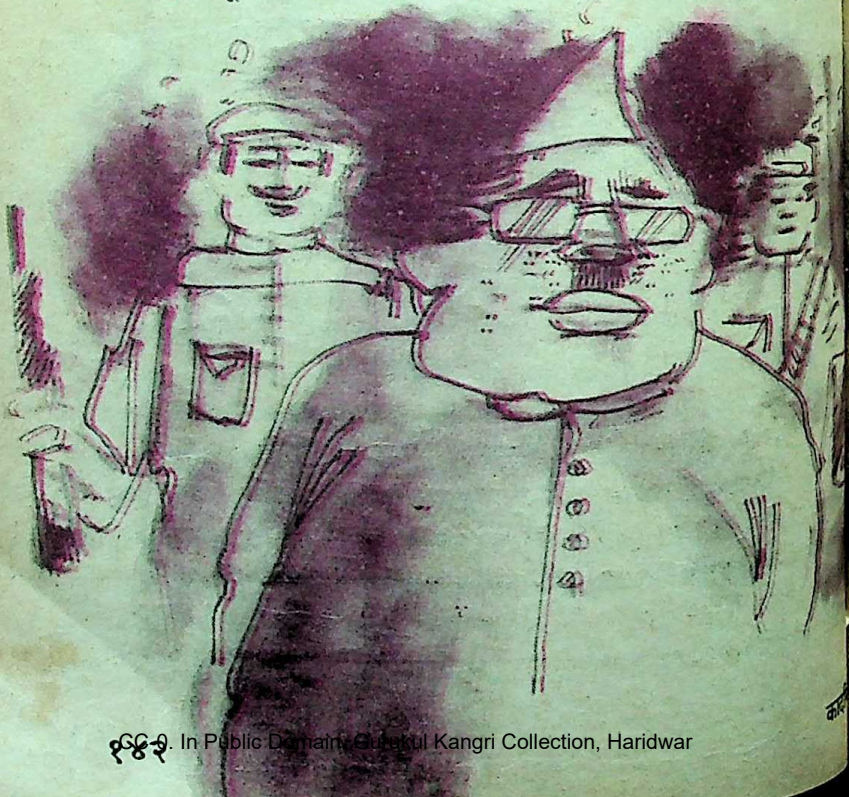

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे बैठकर जाएं, दो कदम तो पैसे खुलेंगे। सिक्योरिटीवाला क्यों खर्च करे। संग बैठकर जाओ तो सास सुनेगी देगी ताना ! जो ताना न देगी वह चाश्री में लपेट पूछेंगे— "कौन था ?"

एक जमाने में सुरैया के घर के आगे एक दीवाना बरसों धूनी रमाये था। एक मेरे घर के आगे बैठा है। अड़ौसी-पड़ौसी कुछ गलत न समझें इसलिए किसी के पूछने से पहले जवाब हवाओं के नाम कर दिया जाता है, "सिक्योरिटीवाले हैं।" पड़ोसन की आंखों से ईर्ष्या की लपटें निकलने लगती हैं। इसका तोड़ कहां से ढूंढ़े ?

सिक्योरिटी मिलने से दो बातें पक्की हो जाती हैं। जान कीमती है और कोई हैं जो उसे लेने पर तुले हैं। अधिक छानबीन करी जाए तो पता यह चले कि खतरा आतंकवादियों से नहीं है। उन लोगों से है जो रेडियो सुनते हैं, टी. वी. देखते हैं, चुनावों में जिनसे वायदे करके कभी पलट कर नहीं देखा, वही सब मारने को घूम रहे हैं। आतंकवादी शब्द एक बड़ी शरणस्थली है जो शरणागत की रक्षा करने में सक्षम है। इसमें आदमी के पाप छुप जाते हैं, आपसी रंजिशें समा जाती हैं। अकर्मण्यता ढांप ली जाती है, मारे चाहे कोई व्यक्ति की नालायकी, निकम्मेपन के कारण अंत में व्यक्ति शहादत को प्राप्त होता है। श्रद्धांजलि देनेवाले कहते हैं कि उन्होंने मूल्यों की रक्षा के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर लिए। प्राण उत्सर्ग करने से पहले वह सरकारी कार्यालय के गलियारों में ऐड़ियां रगड़ रहा था। कमरे-कमरे अपनी जान बचाने में सक्षम लोगों के सामने गिड़गिड़ाने-रिरियाने को अपॉइंटमेंट 'फिक्स' करने को पी. ए. लोगों को पान-सिगरेट अर्पित कर रहा था। चढ़ावा व्यर्थ गया। देवता नहीं मने। भवानी दाहिने नहीं आयीं, विधाता वाम रहे। और यों अंत में वह प्राण निछावर करने का सौभाग्य पा गया। जिसने उसको सुनने का समय न दिया था, उसके पास उसकी स्मृति में श्रद्धा अर्पित करने को समय का अकाल न था !

अकाल उन कांटों का भी नहीं है जो गैल में पांव से मिल सकते थे। गैल इसलिए नहीं चली जाती कि पांव में कांटा लगा है। न चल पाने का सबसे फैशनेबुल कारण है— सिक्योरिटी। शहर में कोई सांस्कृतिक आयोजन है, स्वाधीनता के प्रथम संग्राम में शहीद हुए सेनानियों को माला चढ़ानेवालों में नगर सेठ का भी नाम है। कार्यक्रम सुबह सवेरे है। नगर सेठ का विनम्र स्वर सुनायी देता है, "क्षमा करें, मैं इतनी सुबह नहीं पहुंच पाऊंगा ?"

"क्यों, देर से जागते हैं क्या ?"

"नहीं, मैं तो ब्रह्ममहूर्त में ही जाग जाता हूं !"

"फिर ?"— शंका अजब है। बिना कारवाला हो तो बात समझ में आती है कि 'गाड़ी लेने पहुंच जाएगी।' जैसे वाक्य को सुनने के लिए गढ़े गये वाक्य नहीं है यह ! बेचारे के पास खुद आधा दर्जन कारें हैं। इसको दिक्कत क्या है ?

'उसका असहाय-रिरियाता स्वर फोन से टपकता है, "मेरी सिक्योरिटी आठ बजे पहुंचती है, उससे पहले तो मैं मूव नहीं कर सकता !" सचमुच बड़ा कठिन प्रश्न है कि सिक्योरिटी के बिना मूवमेंट कठिन है उसके साथ ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेड़ियां राह में ही नहीं, घर-बाहर भी हैं, हिसाब में हर वह आदमी आ जाता है जो मिलने आता है । मुझसे मिलने कौन-कौन आया है, इसका हिसाब सिक्योरिटी वाले की कॉपी से कुछ यों मिलेगा— एक महरी आयी सवेरे साढ़े छह बजे, अखबारवाला सड़क से अखबार उछालकर फेंक गया जो छज्जे पर जा पड़ा ।

पिस्तौलधारी पीछे चल रहा है । अब आप कितने काम नहीं कर सकते ? बैंगनों के ढेर में-से काने बैंगन नहीं छांट सकते, आलू का भाव कम करने को झिकझिक नहीं कर सकते, यार-दोस्तों के बीच बैठकर निर्मल आनंद के लायक कोई सुभाषित नहीं उचार सकते । पिस्तौलधारी के आगे जानेवाली महिला रास्ते में रुककर छन्नू की बहू को कौन-सा महीना चढ़ा है यह, नहीं पूछ सकती, दालवालों की लड़की का रिश्ता हुआ कि नहीं यह भी मालूम नहीं कर सकती । हाथ में हथकड़ी नहीं दिखतीं, पांव की बेड़ियां जग-जाहिर हैं ।

बेड़ियां राह में ही नहीं, घर-बाहर भी हैं, हिसाब में हर वह आदमी आ जाता है जो मिलने आता है । मुझसे मिलने कौन-कौन आया है, इसका हिसाब सिक्योरिटी वाले की कॉपी से कुछ यों मिलेगा— एक महरी आयी सवेरे साढ़े छह बजे, अखबारवाला सड़क से अखबार उछालकर फेंक गया जो छज्जे पर जा पड़ा । मुटल्ली बिना अखबार पढ़े ही घर से निकल पड़ी वरना रास्ते में बताती चलती कि आतंकवादियों का ताजा स्कोर क्या है । मरनेवालों को सिक्योरिटी गार्ड मिला था कि नहीं, या तो तुम्हारा जाननेवाला तो नहीं था भइया ।

भइया मन ही मन उस आदमी को कोसता रहता जिसने उसकी ड्यूटी मेरे साथ लगा दी। पिस्तौल में जंग लग जाए और अंगुलियां ट्रिगर दबाना भूल जाएं ! इसको भला कौन मारेगा

उसके निरंतर कोसते रहने से क्या हर्ज है, चुभे तब भी कोई गले का सतलड़ा नहीं उतार फेंकता । वह तब भी प्रिय है । आजकल स्टेटस सिंबल वह है जो पिस्तौल जेब में डाले पीछे-पीछे चलता है । इच्छा तो हुई थी कि से निकाल और तानकर चले । पर चार कदम भी न चला गया कि बच्चों का गोल पीछे हो लिया । वह ताली बजाना शुरू करते कि कर कर भाग रही थी कि पकड़ ली गयी, कत्ल करा हो तो जेब काटी होगी... उससे पहले होश आ गया । वह तो उम्र न रही कि मेरा दीवाना लगे, अब तो ऐसा आलम है कि के लिए आता कोई कर्जदाता-सा लगता है अपना वजूद नजरबंद-सा ! नैनों की कोठरी पलकों की चिक डालकर रखनेवालों के रहे, पिता रक्षित कौमारे, भ्रातृ रक्षित यौवने बाद गार्ड रक्षित दफ़रे की इस अवस्था के भगवान को लाख-लाख धन्यवाद !

— सहायक केंद्र
विदेश प्रसारण
आकाशवाणी, नयी दिल्ली-११

कादम्बि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्ठा की प्रतिमूर्ति-प्रीति

● डॉ. मंजु ज्योत्सना

प्रीति निगोस्कर : अदम्य साहस, स्वप्न के प्रति एकाग्रता, निष्ठा की प्रतिमूर्ति ! जन्म से विकलांग प्रीति ने अपने शारीरिक दोष को न कला में बाधा बनने दिया और न अपनी कलात्मक अभिरुचियों की अभिव्यक्ति में कोई अवरोध बनने दिया । संभवतः शारीरिक दोष ने उसे जीवन में कुछ कर गुजरने की ही प्रेरणा दी ।

जन्म से ही प्रीति के एक कूल्हे में जोड़ नहीं था, फलतः जीवन की सहज स्वाभाविक क्रियाएं उसके लिए एक स्वप्न ही बनी रहीं । बाद में यद्यपि प्रीति के लिए एक कृत्रिम पैर की व्यवस्था कर दी गयी तथापि सहज स्वाभाविक जीवन का अभाव अनेक अनुभवों से वंचित कर गया । लेकिन अपनी व्यथा को प्रीति ने अपने संकल्प, अपने स्वप्नों पर हावी न होने दिया । उसने अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त करने के लिए रंगों को चुना । उसने चित्र बनाने शुरू किये । और चित्रकला की विधिवत शिक्षा ग्रहण की ।

प्रीति ने हायर सेकेंडरी की परीक्षा में सफल होने के बाद ग्वालियर फाइन आर्ट्स कॉलेज से प्रथम श्रेणी में चित्रकला में विशिष्टता प्राप्त की ।

पूना से फाइन आर्ट्स में प्रथम श्रेणी में एम.ए. करने के पश्चात अब विक्रम विश्वविद्यालय से ग्वालियर में 'आधुनिक चित्रकला के प्रणेता केलकर और उनका कृतित्व' विषय पर शोध कर रही हैं ।

२९ सितंबर १९५५ को जन्मी प्रीति निगोस्कर ने प्रथम पूना में राजा दिनकर केलकर संग्रहालय में डॉ. डी.वी. केलकर के संरक्षण में कार्य किया । इसके पश्चात उज्जैन में डॉ. वी.एस. वांकर के साथ भक्ति कला भवन में अपनी कला को परिमार्जित किया ।

राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल में भी प्रीति ने कार्य किया । आज प्रीति एक स्वतंत्र कलाकार के रूप में कार्य कर रही है । सन १९६९ से सन १९८६ के अंतराल में प्रीति ने पांच पुरस्कार अर्जित किये । प्रथम सन' ६९ में लायंस क्लब का कालिदास पुरस्कार, सन'७० में नूतन कला संगम रायपुर द्वारा मध्य प्रदेश का सर्वोत्कृष्ट बाल पुरस्कार, सन'७७ में कालिदास राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भाग लिया, सन'७८ में रायपुर में राष्ट्रीय प्रदर्शनी में विशेष योग्यता व सन'८६ में राष्ट्रीय कालिदास पुरस्कार से सम्मानित हुई । हाल ही में दिल्ली में प्रीति ने अपनी कला की प्रथम प्रदर्शनी आयोजित की है ।

पूना, बंबई, खैरगढ़, उज्जैन व भोपाल में सामूहिक प्रदर्शन प्रीति की कला के हो चुके हैं । भोपाल व ग्वालियर में क्रमशः सन'९३ व सन'९४ में एकल प्रदर्शन भी हुए हैं ।

प्रीति का पता है— ई-७, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी. रामचंद्र, अब केवल उनकी यादें ही रह गयी हैं । और रह गयी हैं उनकी बनायी मधुर धुनें । फिल्म जगत में जिस सी. रामचंद्र ने अपनी मधुर और लोकप्रिय धुनों से धूम मचा दी थी वह केवल संगीत निर्देशक ही नहीं, अच्छे गायक भी थे । 'सफर' में गाया था उन्होंने यह गीत—

कभी याद करके
गली पार करके
चली आना, हमारे अंगना...

यह गीत काफी लोकप्रिय हुआ था । इसी प्रकार फिल्म 'शहनाई' में अंगरेजी तर्ज पर बना उनका गाया गीत, *'आना मेरी जान संडे के संडे'* बहुत दिनों तक लोगों की जुबान पर थिरकता रहा । परंतु ये सभी गाने उन्होंने चितलकर के नाम से गाये थे, यही पूरा नाम था—संगीतकार सी. रामचंद्र का । इस नाम के पीछे भी एक मजेदार घटना है...

चितलकर को मिले । इसी फिल्म के गीत--'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' को मोह लिया था । यह डॉ. मुहम्मद इक्बाल की प्रसिद्ध रचना थी, जिसे फिल्म के लिए रामचंद्र चितलकर ने संगीतबद्ध किया था । उनकी पहली हिंदी फिल्म थी ।

इस फिल्म के संगीत की भारी सफलता के बाद निर्देशक जयंत देसाई ने उन्हें बुलाकर सौ रुपये माहवार पर अपने यहां संगीत निर्देशक के रूप में रख लिया । मगर उनको यह नाम पसंद नहीं था । उन्होंने कहा, 'अपना नाम बदलो । कोई स्क्रीन नेम रखो ।' रामचंद्र ने काफी विचार किया । उनके सामने व्ही. शांताराम का उदाहरण था । वणकुद्रे-जैसे उच्चारण के लिए कठिन नाम को उन्होंने सीधे-सादे व्ही. शांताराम में बदल लिया था । उन्होंने भी अपना नाम रख लिया—'सी.

धीरे से आ जा

पहली हिंदी फिल्म

प्रख्यात हास्य अभिनेता भगवान की रामचंद्र चितलकर से अच्छी मित्रता हो गयी थी । भगवान को हरिश्चंद्र राव कदम की हिंदी फिल्म 'सुखी जीवन' निर्देशित करने का प्रस्ताव आया । भगवान ने इसी शर्त पर निर्देशन स्वीकार किया कि उस फिल्म का संगीत रामचंद्र

रामचंद्र ।' गाना चितलकर के नाम से, [illegible] देना सी. रामचंद्र के नाम से । आज भी [illegible] लोगों को पता नहीं कि दोनों एक ही हैं ।

परंतु ख्याति के शिखर तक पहुंचने के [illegible] इस लोकप्रिय संगीतकार को काफी संघर्ष [illegible] पड़ा ।

महाराष्ट्र के पुणतांबे नामक गांव में [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

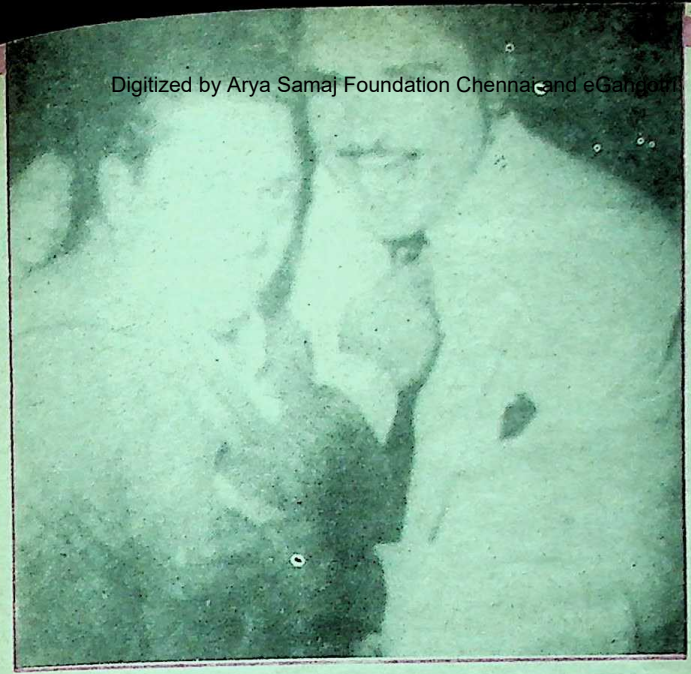

संगीतकार सी. रामचंद्र अपने परम मित्र भगवान के साथ

जा खियन में निंदिया

• सुभद्रा मालवी

का जन्म हुआ । इनके पुरखे पास ही चितली गांव से आकर यहां बस गये थे । इसलिए इनका सरनेम चितलकर पड़ा । जब रामचंद्र का जन्म हुआ तब उनकी माता बहुत दुःखी हुईं । क्योंकि इससे पहले भी लड़के ही हुए थे और रामचंद्र की माता को इस बार लड़की की आशा थी । यही कारण था कि माता को रामचंद्र से कभी स्नेह नहीं रहा । बालक रामचंद्र का लालन-पोषण उनकी सौतेली माता ने किया जो उसके पिता की पहली पत्नी थी । पिता को संगीत का बहुत शौक था । वे अपनी बेसुरी आवाज में नाटक मंडली में देखे-सुने गीतों को दोहराते रहते थे ।

रामचंद्र के पिता रेल विभाग में स्टेशन मास्टर थे । उन्हें अपनी नौकरी के सिलसिले में स्थान-स्थान पर जाना पड़ता था । रामचंद्र की पढ़ाई जैसी-तैसी ही चल रही थी । पढ़ाई में उनका मन भी नहीं लगता था । वे सभी विषयों में कच्चे थे । विशेषकर उसे अंगरेजी के स्पेलिंग कभी याद नहीं होते थे । वे 'अम्ब्रेला' की स्पेलिंग रटते-रटते थक गये, पर वह याद नहीं हुई । इस कमी के लिए उन्होंने काफी मार भी खायी । तभी उन्हें डोंगरगढ़ के अपने पड़ोसी, बूढ़े सज्जन की याद आयी । वे रोज सुबह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नातियों को कुछ इस तरह गिनती याद करवाते थे ।

भैंस के सींग--चार
खड़ा आदमी--पांच

यदि इस तरह गाने के सुर में , शब्दों की स्पेलिंग भी याद की जाए तो ? रामचंद्र को यह विचार अच्छा लगा । उन्होंने 'अम्ब्रेला' शब्द की कुछ इस प्रकार से धुन बनायी—

यू एम बी आर ई एल एल ए--अम्ब्रेला-छतरी
सा रे ग सा रे ग सा सा---धसारेसा-रेगरे

इस प्रकार याद की गयी स्पेलिंग रामचंद्र को आजीवन याद रही । इसी बीच पिता ने उन्हें श्री राम संगीत विद्यालय में दाखिल करवा दिया । धीरे-धीरे वे अच्छा गाने लगे । लोग उनका गाना सुनकर प्रशंसा करते । पढ़ाई में जो लड़का पिछड़ रहा था, वह बड़े मनोयोग से संगीत सीख रहा था ।

बंबई में

वे बड़े होने लगे और संगीत में विभिन्न उस्तादों के शिष्यत्व में निपुण भी । अब उन्हें अपना भाग्य आजमाने की इच्छा हुई । अब तक वे नाटकों में भी अभिनय करने लगे थे । कोल्हापुर की एक कंपनी के आमंत्रण पर वे वहां पहुंचे । उस समय कोल्हापुर फिल्म निर्माण का केंद्र था । परंतु बात कुछ जमी नहीं । पुणे आदि जगहों पर धक्के खाते रामचंद्र बंबई पहुंचे । वहां उन्होंने सुना कि सोहराब मोदी को

मिनर्वा मूवीटोन नामक अपनी नयी कंपनी के लिए कलाकारों की जरूरत है । रामचंद्र के पैसे नहीं थे । इसके पहले एक इंटरव्यू में साधारण कमीज आदि पहनकर जाने पर उन्हें हिकारतभरी नजर से देखा था, इसलिए ने अपनी मां से सोने का वह पदक मांगा, उन्हें गायन में निपुणता के लिए प्रशंसा-स्वरूप मिला था । पदक तोड़कर उन्होंने उसे बेच दिया । अठारह रुपये मिले । उनसे उन्होंने और सूत से बना मिश्रित कपड़ा खरीद कर फैशनेबल कोट बनवाया और चले मिनर्वा मूवीटोन के दफ़्तर की ओर । भरी गरमी के थे । वहां तक पहुंचते-पहुंचते राम पसीने उठे ।

वहां लंबी कतारें लगी थीं । रामचंद्र लाइन में जाकर खड़े हो गये । बहुत देर खड़े रहने के बाद उनकी बारी आयी । चुनने का कार्य स्वयं सोहराब मोदी कर गुलाबी रंग का शरीर, शुभ्र वस्त्रों में उस हस्ती को देखते ही रामचंद्र घबरा गये । जी ने कहा—"आओ ।" पास ही एक हारमोनियम रखा था । उन्होंने कहा, 'गाओ ।'

अब रामचंद्र की समझ में आया कि की परीक्षा ली जा रही है, अभिनय की राम ने हारमोनियम के सुर पर गाना शुरू किया । कुछ देर सुनते रहने के बाद मोदी ने कहा, "ठीक है ।"

इस परीक्षा में उत्तीर्ण उम्मीदवारों को कमरे में बिठाया गया था । रामचंद्र भी जाकर बैठ गये । जब उनकी बारी आयी सोहराब मोदी ने उन्हें बुलाकर कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवाज है । हमारे यहां रहोगे ?"

"जी',

"तनख्वाह क्या लोगे ?" उन्होंने पूछा ।

"आप ही कहिए ।"

"हर महीने पंद्रह रुपये दूंगा ।"

"पंद्रह ?"

"तब कितने ? न होगा दादर से शिवड़ी तक का तीसरे दरजे का रेल पास बनवा दूंगा ।"

इससे पहले रामचंद्र ने नागानंद नामक फिल्म में हीरो की भूमिका की थी । तब उन्हें पैंतालीस रुपये मिलते थे । उन्होंने उस फिल्म के चित्र निकालकर सोहराब मोदी को दिखाते हुए कहा; "मैंने हीरो का काम किया है । आप मुझे पंद्रह रुपये पर काम करने के लिए कह रहे हैं ?"

"हम इतना ही दे सकते हैं । तुम्हें ठीक लगे तो करो ।"

"नहीं, ठीक नहीं है ।"

"नहीं है, तो जाओ ।"

रामचंद्र झटके से बाहर निकल आये और सीधा घर पहुंचे । उस समय घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी । मां ने उन्हें इस प्रकार इनकार करके चले आने के लिए काफी भला-बुरा कहा, वे बोलीं, "भाई कमाता है और तू दोनों वक्त निगल लेता है । किसलिए करेगा काम ?"

मां के इन वचनों से रामचंद्र को बड़ा संताप हुआ । वे उलटे पैरों फिर से सोहराब मोदी के पास गये । वे भोजन कर रहे थे । रामचंद्र ने कहा, "साहब मुझसे भूल हुई । मैं पंद्रह रुपये में काम करने के लिए तैयार हूं ।"

सी. रामचंद्र अर्थात रामचंद्र चितलकर जिनकी बनायी मधुर धुनें आज भी लोगों को मुग्ध कर जाती हैं । सी. रामचंद्र को जीवन में सफलता आसानी से नहीं मिली । पग-पग पर उन्हें संघर्ष करना पड़ा ।

"ठीक है । मगर अब रेल का पास नहीं मिलेगा । केवल पंद्रह रुपये महीने ही मिलेंगे ।" उन्होंने कहा ।

"मुझे मंजूर है ।"

इस प्रकार रामचंद्र मिनर्वा के संगीत विभाग में काम करने लगे । परंतु वहां उनसे एक्सट्रा के रूप में काम करवाया जाता । सोहराब मोदी की दो फिल्में नाटक को ही फिल्म में परिवर्तित कर देने के कारण फ्लाप हो गयीं । कंपनी में लोगों की छंटनी होने लगी । रामचंद्र ने सोहराब मोदी से जाकर कहा, "साहब, मुझे मत निकालिए ।" उन्होंने कुछ विचार करने के बाद पूछा, "तुम्हें और क्या आता है ?"

"मुझे गाना आता है ।" यह तो उन्होंने प्रथम दिन ही सुनाकर बता दिया था । अभिनय को वे देख चुके थे । अब इस सवाल का रामचंद्र क्या उत्तर देते ? पास ही एक हारमोनियम पड़ा था । राम ने कहा, "साहब, मैं हारमोनियम बजा सकता हूं ।"

"ठीक है, तब आज से तुम म्युजिक में ही काम करो । हारमोनियम बजाना तुम्हारा काम ।"

इस प्रकार रामचंद्र के जीवन का असली अध्याय शुरू हुआ । उनके जीवन को सुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिला ।

संगीत का अध्ययन-अध्यापन

वहां उन्हें एक के बाद एक उस्ताद बुंदू खां, हबीब खां- जैसे संगीतकारों का साथ मिला । हबीब खां राम को संगीत सिखाते भी और उन्हें अपनी संगीत की कक्षाएं लेने के लिए भी कहते । इस प्रकार रामचंद्र के दिन-रात संगीतमय हो उठे । हबीब खां के बाद हूगन नामक संगीत निर्देशक बनकर आये । उनके साथ रामचंद्र की खूब जमी । वे उनकी बनायी धुनों को गुनगुनाते और कोई नयी बात सूझती तो उसे धुन में शामिल कर देते । हूगन अनजाने ही उस धुन को स्वीकृत कर देते । अब रामचंद्र का साहस बढ़ने लगा । वे महसूस करने लगे कि वे भी स्वतंत्र रूप से संगीत दे सकते हैं ।

इसी बीच एक घटना के कारण, उस समय के लोकप्रिय अभिनेता भगवान (जो बाद में प्रसिद्ध कॉमेडियन हुए) से राम की अच्छी मित्रता हो गयी । वे भगवान दादा के नाम से जाने जाते थे और माने हुए फिल्म निर्देशक थे । भगवान को मद्रास की एक फिल्म 'जयकोडी' (विजय पताका) निर्देशित करने के लिए मिली । उन्होंने फिल्म इसी शर्त पर ली कि रामचंद्र उस फिल्म का संगीत देंगे । इस प्रकार रामचंद्र संगीत निर्देशक बन गये ।

उन्होंने अनेक कंपनियों में काम किया । परंतु किसी न किसी कारण से उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी । जब उन्होंने जयंत देसाई प्रॉडक्शन का काम छोड़ा, तब एक दिन कवि प्रदीप भगवान के आफिस में आये । यहीं रामचंद्र की बैठक थी । उस समय कवि प्रदीप के, बांबे टॉकिज के लिए लिखे गीतों ने धूम मचा रखी थी । उन्होंने रामचंद्र से फिल्मिस्तान में चलने का आग्रह किया । हजार रुपये माहवार पर बात तय हो गयी । हिमांशु राय शिष्य शशधर मुखर्जी ने इस नयी संस्था का आरंभ किया था ।

लता मंगेशकर से भेंट

फिल्मिस्तान की 'शहनाई' फिल्म का 'संडे के संडे' बड़ा ही लोकप्रिय हुआ था । फिल्म के साथ ही सी. रामचंद्र का नाम संगीत निर्देशक के रूप में, भारतभर में जाने जाने लगा । 'शहनाई' के संगीत महोत्सव में पहली बार रामचंद्र का परिचय लता मंगेशकर नामक लड़की से कराया गया जो कोरस में थी । उसके कोकिल स्वर ने सी. रामचंद्र को तुरंत आकर्षित किया । उसके बाद तो लता-मंगेशकर ने सी. रामचंद्र के लिए अनेक वर्षों तक गीत गाये ।

सी. रामचंद्र ने हास्य अभिनेता ओमप्रकाश और उनके भाई के साथ मिलकर एक फिल्म निर्माण कंपनी भी बनायी जिसका नाम रखा 'साई प्रोडक्शंस', परंतु थोड़े दिनों के बाद उन्हें पता चला कि इस नाम से अन्य किसी ने पहले ही कंपनी की स्थापना कर ली है, तब उन्होंने अपनी कंपनी का नाम 'न्यू साई' रख लिया । इसकी पहली फिल्म का नाम रखा गया 'झांझर ।'

इसी बीच फिल्मिस्तान की 'अनारकली' के संगीत ने देशभर में धूम मचा दी थी । उसके गीत 'ये जिंदगी उसी की है...' तथा 'जमाना ने समझा कि हम पी के आये...' को लोग गुनगुनाने लगे थे ।

'झांझर' पूरी हो जाने पर रिलीज के लिए सी. रामचंद्र को अमृतसर जाना पड़ा । लता मंगेशकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी साथ थीं । लता और प्रसिद्ध गायिका नूरजहां में बहुत मित्रता थी । लता ने अमृतसर से नूरजहां को फोन मिलाया । भारत और पाकिस्तान की दो महान गायिकाओं का फोन पर वार्तालाप आरंभ हुआ । कुछ समय के बाद सुख-दुःख के हालचाल पूछना-बताना सब शेष हो गया । शब्द चुक गये । फिर इधर से धीरे से एक राग की गुनगुनाहट शुरू हुई । उधर से उसका उत्तर आया । इस प्रकार कितनी ही देर तक चलता रहा । आपरेटर्स भी उन्हें टोक नहीं रहे थे । उन्हें अनायास ही इस दुर्लभ युगलबंदी को सुनने का सुअवसर मिल गया था, वे क्यों रोकते भला ?

भारतवर्ष का विभाजन हो जाने पर देश दो टुकड़ों में बंट गया था । लोग एक-दूसरे के दुश्मन हो गये, परंतु कला जगत में विचरण करने वाली इन दो आत्माओं को इन सब बातों से कोई सरोकार नहीं था । काफी देर के बाद फोन रखकर लता ने कहा, "राम, अपने को जाना है ।"

"कहां ?"

"दावत पर ।"

"किसके यहां "

"नूरजहां के यहां ।"

"कहां ? लाहौर ?"

"हां ।"

"पाकिस्तान में ?"

"नहीं, वहां जाने से पासपोर्ट वगैरा के चक्कर में झंझट होगा ।"

"फिर ?"

"वे कह रही थीं हम नो मेंस लैंड पर मिलें ।"

और सच में ही दोनों उसी नो मेंस लैंड के छोटे-से भू-खंड पर जाकर एक-दूसरे से मिलीं । दोनों देशों की सीमा के बीच एक छोटा-सा हरा-भरा जमीन का टुकड़ा था । नूरजहां ने अपनी गाड़ी पाकिस्तानी सीमा में छोड़ी । हमारी गाड़ी भारत की सीमा में खड़ी रही । दोनों गायिकाएं उस भू-खंड पर जाकर एक-दूसरे से गले मिलीं । इस भेंट को देखकर सीमा पर खड़े प्रहरियों की आंखें भी डबडबा आयीं । सच है कला जगत में धर्म, जाति, देश, पंथ नहीं होता है । होता है तो केवल कलाकार, जो इन सबसे परे होता है । यह भेंट दो सहेलियों, दो कलाकारों की भेंट थी । नूरजहां के साथ उसके पति तथा अन्य आत्मीय जन भी आये थे ।

वह कुछ खाद्य पदार्थ बनाकर लायी थी । सभी ने मिलकर वनभोज का आनंद उठाया । नूरजहां ने लता को खिलाया । लता ने नूरजहां के मुंह में निवाला दिया । कला का अर्थ ही होता है प्रेम और अनुराग । कला की तरह ही कलाकार का मन भी विशाल होता है ।

अब वह समय आ गया था , जब सी. रामचंद्र को यशलक्ष्मी और धनलक्ष्मी दोनों ने गले लगा लिया था । उसने घर बना लिया । गाड़ी भी ले ली । वे एक के बाद एक हिट धुन बनाते चले जा रहे थे । तभी भारत और चीन में युद्ध शुरू हुआ । तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के सामने फिल्म जगत से संबंधित लोगों ने एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया । शब्दों के जादूगर कवि प्रदीप के गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों...' को सी. रामचंद्र ने बड़ी मेहनत और लगन से सुरों में ढाला । उतने ही दर्दभरे स्वर में इस गीत को लता मंगेशकर ने गाया भी । गीत सुनकर, पं. जवाहर लाल नेहरू के साथ ही सभी उपस्थित लोगों की आंखें, नम हो उठीं । इस गीत में नया प्रयोग किया गया था ।

यह अब तक प्रचलित देशभक्ति गीतों से अलग हटकर था । इसमें जवानों की पीड़ा , उनकी जांबाजी का वर्णन था । कार्यक्रम के बाद पंडितजी ने अलग से बुलाकर सी. रामचंद्र की भूरि-भूरि प्रशंसा की । यह संगीतकार सी. रामचंद्र के जीवन की चरम उपलब्धि थी । ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमिल कहानी

मोहक गुलाब की मनोरम सृष्टि

● डॉ. दयानंदन

शेखर उसे 'गुलाबी' कहकर ही पुकारता था। वह अवश्य ही उस नाम के योग्य थी। गोरी गुलाबी रंग की। उसके गालों में भी गुलाब की कोमलता भरी थी। वह गुलाबी रंग की साड़ी पहनकर शेखर के सामने उपस्थित होती तो उस समय शेखर एक 'गुलाबी संसार' का निवासी बन जाता था।

माता-पिता ने प्यार से उसका नामकरण किया था सरोजा। लाड़-प्यार से वे उसे 'सरो' बुलाते थे। शेखर मात्र उसे 'गुलाबी' ही पुकारता था। उसकी अपनी भी एक कहानी है...

उस समय शेखर सात वर्ष का भी नहीं हुआ था। तीसरी कक्षा में पढ़ रहा था। आवारा लड़कों के साथ खेलने में उसे एक विशेष आनंद मिलता था। उसके पिताजी यह बिलकुल पसंद नहीं करते थे। वे एक नामी पुरुष थे। मनुष्यों का मूल्यांकन वे कुल-गोत्र के आधार पर करते थे। ऐरे-गैरे बच्चों के साथ शेखर का खेलना उन्हें पसंद नहीं था।

शेखर कभी अपने अध्यापकों को धोखा नहीं देता था परंतु अपने पिताजी को अक्सर धोखा देता था। कहना चाहिए कि पिता ने ही उसे दूसरों की आंखों में धूल झोंकने की कला सिखायी थी। शाम को और छुट्टियों के दिनों में शेखर गली-कूचे के लड़कों से खेल-कूद न करता था तो वह खोया-खोया गुम-सुम रह जाता। समय काटना दूभर लगता था। उसको भी एक अच्छी साथिन को पाने के पश्चात...

एक दिन शेखर अपने मित्रों के साथ गली में शोर मचाते हुए खेल रहा था। तभी वह पहली बार सरोजा से मिला। वह अपनी माता के साथ दो दिनों के पहले ही उस गली में आयी थी।

सरोजा अपनी सहेलियों के साथ अपने घर के सामने पारिवारिक जीवन का खेल खेल रही थी। एक लड़की बालू-घर बना रही थी। दूसरी मिट्टी की रोटी बना रही थी। सरोजा अपनी गुड़िया की साज-सज्जा करके व्यस्त थी।

छोटे-छोटे लड़के आंख मिचौनी खेल रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

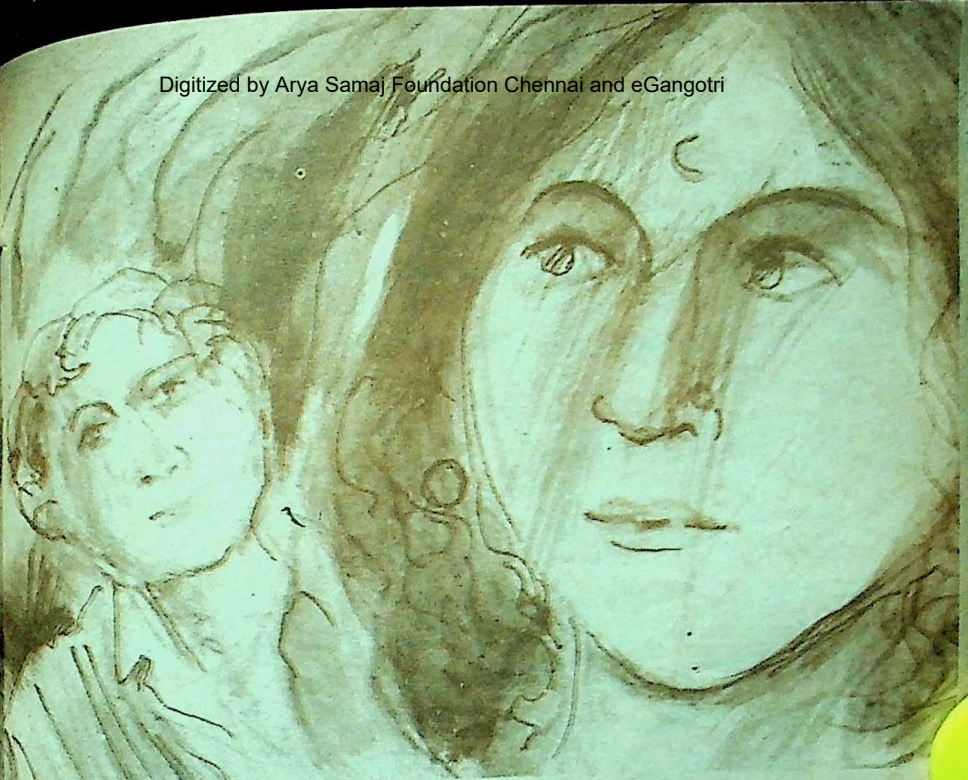

थे। उनमें पौरुष जागा। उस मिट्टी के घर को पैरों तले रौंदकर वे धूल उड़ाते भाग गये। अकेला शेखर पीछे रह गया। अपने दोस्तों का व्यवहार उसे पसंद नहीं आया। उन लड़कियों ने भागते हुए छोटे-छोटे लड़कों पर धूल ही नहीं बरसायी बल्कि गालियों की बौछार भी की। सरोजा को कुछ भी सूझा ही नहीं वह रोने लगी।

शेखर उसके पास आया। सरोजा ने उसकी ओर आंखों में आंसू भरकर देखा। एक लड़की चीखी, "अरी ! देखो। वह आ रहा है। अगर वह तंग करे तो हम उसकी अम्मा से शिकायत करेंगी" और एक लड़की ने उसकी ओर लाल-लाल आंखों से देखा। उस समय दोनों लड़कियां संपूर्ण पुरुष-वर्ग को खासकर शेखर की उम्र के सभी लड़कों को 'बदमाश' घोषित कर रही थीं।

सरोजा अपने आंसू पोंछती हुई बोली, "ना-ना ! वह कुछ भी ऊधम न करेगा।"

शेखर उसके सामने आ खड़ा हुआ।

उसने सरोजा से पूछा, "क्या मुझे भी खेल में मिला लेंगी।"

सरोजा ने स्वीकृति की मुद्रा में सिर हिलाया। फिर भी अपनी सहेलियों के मुख की ओर देखा। उसकी सहेलियां इस विचार में पड़ी कि वह कुटुंब के खेल के लिए जरूरी है या नहीं।

व्यवहार-कुशल श्यामला ने पूछा, "पहले अपने घर के आम के पेड़ से कच्चा आम ला— तभी"

मालिनी ने हामी भरी।

शेखर भागते हुए अपने बंगले में गया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार कच्चे आमों के साथ लौटा । सबने आपस में आमों को बांट लिया । चारों उन खट्टे आमों का रस लेने लगीं ।

श्यामला ने शेखर से पूछा, "नाम क्या है तेरा ?"

"शेखर"

शेखर ने सरोजा को मुखातिब करके पूछा, "गुड़िया, तेरा नाम ?"

उसने प्यार से उत्तर दिया, "सरोजा" ।

"सरोजा है या गुलाबी"

"नहीं मात्र सरोजा"

वह 'सरोजा' कहना चाहता था, लेकिन ऊपरी दो दांत तभी गिर पड़े थे । इसलिए वह 'स' का उच्चारण कर नहीं पाया । वह ... 'रोजा'-'रोजा' ही कह पाया । 'स' की ध्वनि हवा में लीन हो गयी । सरोजा और उसकी सहेलियां उसको बार-बार टोकने लगीं । "रोजा नहीं सरोजा है सरोजा ।" मालिनी उससे ठीक बुलवाना चाहती थी । लेकिन वह स्वयं 'जदोजा' ही कह पायी क्योंकि वह तब भी तुतलाती थी ।

उस दिन से शेखर उसे प्यार से 'गुलाबी' ही बुलाने लगा । सरोजा भी यही चाहती थी ।

शेखर को सरोजा से खेलते देखकर उसके बड़े भाई राजू ने पिता को उसकी सूचना दी । भाइयों में मिठाई के बंटवारे पर झगड़ा हुआ था । बड़े भाई ने छोटे भाई से बदला लिया ।

रंगनाथ अपने बंगले से जल्दी-जल्दी दौड़े आये और बेटे को गुस्से के साथ बुलाया, "रे शेखर ।"

खेल में मस्त शेखर ने कहा, "हूं"

"गधे, इधर आ !"

"क्या ?"

"आ न"

सरोजा ने शेखर की ओर देखा

अनमन होकर नफरत से शेखर उठकर पिता के पास पहुंचा ।

रंगनाथ ने उसकी पीठ पर दो-चार हाथ जमाये और अपने बंगले पर घसीट ले चले ।

"कितनी बार कहा है, उस लड़की के साथ न खेल । मैंने बताया नहीं । वह कौन है, हम कौन हैं । उसकी जाति क्या है ? हमारी जाति क्या है । वह तो वेश्या जाति में ही जन्मी है ।"

रंगनाथ ने शेखर को दो-चार थप्पड़ लगाये । वह रोने लगा । उसकी रुलाई की आवाज सुनकर सरोजा भी रोने-रोने को हो उठी ।

अगली बार सरोजा से मिलने के लिए शेखर पिताजी की आंखों में धूल झोंककर आया ।

"गुलाबी ! वेश्या जात माने क्या है ?" उसने सरोजा से पूछा ।

"मुझे क्या मालूम ?"

"क्या तुम उस जात की हो ?"

"मुझे क्या मालूम ?"

उस दिन रात को अपनी माता से सरोजा ने अपने मन की पहेली याने उस प्रश्न को पूछ ही लिया ।

"मां । वेश्या जात क्या होती है ?"

"अरी बिटिया तुझसे उससे क्या... छोड़ो ये बेकार की बातें । कल से तुम स्कूल जाओगी । मैंने दाखिले का इंतजाम किया है ।" मां ने बात बदल दी । परंतु सरोजा अपना प्रश्न नहीं भूली । उसने फिर पूछा, "मां, बतलाती क्यों नहीं ! हम सब क्यों वेश्या जात की हैं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब शेखर बाइस साल का युवक था । सरोजा भी उन्नीस साल की थी । वह मनोरम चित्र के समान मोहक लग रही थी । दस वर्षों के पहले उनके कोमल मन में लगाव का जो अंकुर था, वह बढ़ते-बढ़ते नयी कोपलें निकालने लगा ।

माता की आंखों से आंसू झरने लगे । सरोजा को गले लगाकर वह पुचकारते हुए सिसकने लगी ।

दूसरे दिन अपने दरजे में सरोजा को देखकर शेखर को एक ओर आश्चर्य हुआ तो दूसरी ओर अत्यंत आनंद भी ।

बड़प्पन के भाव ने दो कोमल हृदयों को तोड़-मरोड़कर अलग किया था परंतु पाठशाला ने दोनों के बीच ममता पैदा करके परस्पर मिलाने में सहायता की ।

एक दिन की बात है ।

उस दिन पता नहीं अध्यापक जरा ऐठे हुए थे । सख्त लगे । आखिरी बेंच में बैठे एक मोटे-तगड़े लड़के ने अपने पास बैठे अपने दोस्तों के कानों में फुसफुसाकर कहा, "मास्टरजी शायद अपनी बीवी की गालियां खाकर आये हैं ।" दूसरे ने दबे स्वर में कहा, "अरे ! वह नहीं । सबेरे एक कर्जदार ने उसे अपने चंगुल में फंसा दिया और बीच रास्ते में उनकी धज्जियां उड़ा दीं ।"

अध्यापक पाठ्यपुस्तक लेकर जल भुनकर कुछ पंक्तियां पढ़ा रहे थे । आठ-दस पंक्तियां भी पढ़ा नहीं पाये कि वे छात्रों से टेढ़े सवाल पूछने लगे ।

चार ही बेंच थे । उन पर बैठे सब लड़के उन प्रश्नों का उत्तर दे नहीं पाये । शेखर भी उनमें एक था,सब यंत्रवत एक-एक करके उठे और चुपचाप खड़े रहे ।

अध्यापक ने लड़कियों के बेंच की ओर नजर दौड़ायी । सरोजा से कठोर स्वर में कहा, "उत्तर दो" ।

कांपती हुई सरोजा ने किसी तरह सही उत्तर दे ही दिया ।

बीस छात्र-छात्राओं ने ठीक उत्तर नहीं दिया था । उन्हें पीटने के लिए अध्यापक ने मेज की दराज में से बेंत की छड़ी ढूंढ़ी । कंबख्त नहीं मिल रही थी । वह थोड़े ही उधर थी । मास्टरजी सोच में पड़े... बीसों को अपने हाथों से मारना कैसे संभव होगा ।" कुछ क्षण सोचकर एक निर्णय कर ही दिया ।

उन्होंने आज्ञा दी, "सरो, इन बेकार गधे-गधियों के सिर पर जोर से थप्पड़ लगाओ ।"

सरोजा कांप उठी । सकपका गयी ।

मास्टरजी गरज उठे, "हूं । जल्दी ।"

लाचार सरोजा का हाथ लड़कों के सिर पर एक-एक करके चला ।

शेखर को ठोंकने की बारी आयी । दोनों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

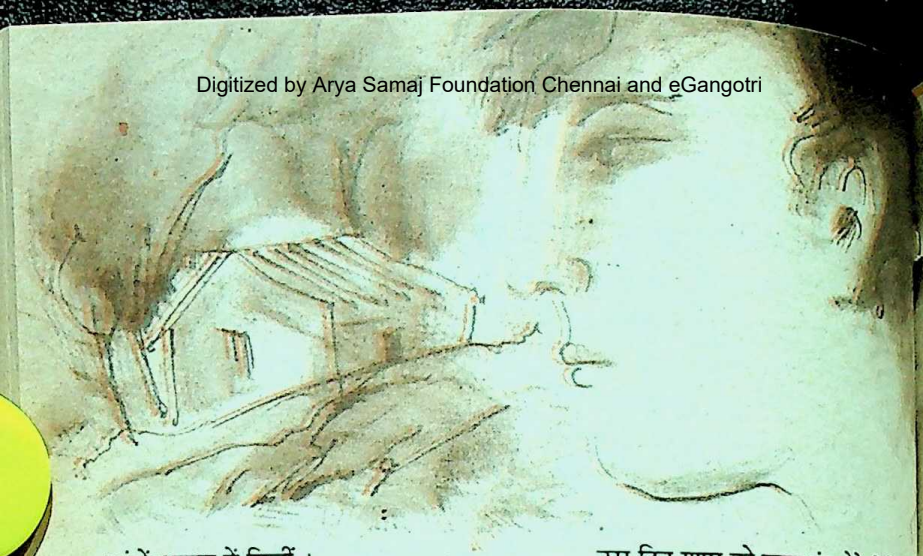

आंखें आपस में मिलीं ।

मास्टरजी बाहर कहीं देख रहे थे तो सरोजा ने सिर पर मुट्ठी चलाने का स्वांग किया । उसे एक लड़के ने ध्यान से देख ही लिया ।

तुरंत उसने मास्टरजी को सूचित ही कर दिया, "मास्टरजी ! सरोजा ने शेखर को मारने में जोर नहीं लगाया ।"

मास्टरजी ने सरोजा को बुलाया ! वह कांपती हुई पास गयी ।

"तुमने आज सबेरे क्या खाया ?"

"दलिया..."

"क्या जौ-बाजरा की दलिया खाती हो ? क्या मारने की ताकत नहीं है ? अच्छा देखो ऐसा मुक्का चलाना है । ... समझी !" यह कहते-कहते मास्टर ने सुंदर सरोजा के सिर पर जोर से थप्पड़ लगाया । वह तिलमिला गयी ।

अध्यापक ने हुक्म दिया, "अब ढंग से शेखर के सिर पर थप्पड़ लगाओ ।"

सरोजा ने शेखर के सिर पर दूसरी बार मारा । अब पहले से जरा जोर से था । परंतु अध्यापक के प्रहार के समान नहीं ।

उस दिन शाम को स्कूल बंद होते ही शेखर सरोजा के यहां पहुंचा । वह बोला, "गुलाबी मेरे कारण ही तुम्हें मार खानी पड़ी !"

सरोजा बोली, "भूल जाओ इस बात को ।"

समय पंख लगाकर उड़ा जा रहा था ।

□ □ □

अब शेखर बाईस साल का युवक था । सरोजा भी उन्नीस साल की थी । वह मनोरम चित्र के समान मोहक लग रही थी । दस वर्षों के पहले उनके कोमल मन में लगाव का जो अंकुर था, वह बढ़ते-बढ़ते नयी कोपलें निकालने लगा । उनका आकर्षण प्रेम में परिवर्तित हो गया ।

'गुलाबी-शेखर' का नाम तमिलनाडु भर में प्रसिद्ध हो गया । 'गुलाबी शेखर' के उपनाम से वह प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में जीवंत कहानियां लिखता था । प्रतिष्ठित लेखकों के बीच उसका स्थान था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉलेज की पढ़ाई अधूरी छोड़कर वह पूरी तरह लेखन से जुड़ गया । उसका यह जीवन, उसके माता-पिता को बिलकुल व्यर्थ लगा । वे उसे देखकर खिन्न होते ।

उस दिन शेखर अपने कमरे में बैठकर बड़ी तीव्रता से लिखता जा रहा था । रंगनाथ और उनका बड़ा लड़का राजू दूकानदारी के सिलसिले में शहर गये हुए थे ।

शेखर जल्दी-जल्दी एक कहानी लिख चुका और नयी कहानी लिखने को तैयार हुआ तो उसे लगा कि कोई पीछे खड़ा है । उसको पता लग गया कि वह और कोई नहीं उसकी अपनी सरोजा ही है ।

वह लिखने लगा, 'मैं कहानी लिखने बैठा तो मेरी पत्नी सरोजा मेरे पीछे आ खड़ी हुई ।'

उसे पढ़ती हुई सरोजा शेखर के कंधे को प्यार से थपथपाकर बोली, "धत्, यह क्या लिखते हो ।" उसके कोमल करों को पकड़कर वह हंसते-हंसते लोट-पोट गया ।

जब रंगनाथजी अपने बेटे राजू के साथ लौटे तो शेखर अपने कमरे में नहीं था । दरवाजा एकदम खुला पड़ा था । मेज पर वह जो नयी कहानी लिखने लगा था उसकी प्रथम पंक्तियों का कागज हवा में फड़फड़ाने लगा ।

उन्होंने उसे पढ़ा । 'नालायक', 'गधा', 'बेहया' शब्द अपने-आप फूट निकले ।

वे गुर्राने लगे, "सरोजा— उसकी पत्नी... बेसिर पैर की कल्पना । देखता हूं यह कैसे संबंध बनता है ।"

राजू भी अपनी प्रकृति के अनुसार हां में हां मिलाने लगा । "मैंने भी उसे कई बार समझाया । आप जोरदार ढंग से मना करें । नहीं तो हमारी मान-मर्यादा सब मिट्टी में मिल जाएगी ।"

कमरे में घुसते ही शेखर को पता चल गया कि अनुपस्थिति में पिता कमरे में आये होंगे और अब परिचित गाली-गलौज सुननी पड़ेंगी ।

रंगनाथ ने शेखर को प्रतिदिन की तरह 'बेहया' शब्द से संबोधित किया । शेखर-चुप्पी साधे पूरे आध घंटे तक पिता की डांट-डपट खाता रहा ।

अंत में रंगनाथ ने ऊंचे स्वर में घोषणा की, "देखो ! ढंग से रह सकते हो तो घर में रहना । अपनी जिद पर अड़े रहना है तो घर से निकल जाओ ।"

शेखर स्वाभिमानी था, सिद्धांत व आदर्श का पक्का ।

शीघ्र ही शेखर-सरोजा विधिवत पति-पत्नी बन गये । विवाह में कोई शान-शौकत नहीं । किफायत से पंजीकृत विवाह कर लिया ।

शेखर का विवाह जिस सप्ताह में संपन्न हुआ, उसी सप्ताह उसके भाई का विवाह धूम-धाम से संपन्न हुआ ।

□ □ □

दिन बीतते रहे ।

शेखर के लेखन से देश परिचित हुआ । लेकिन देश की प्रकृति व स्वभाव को उसने नहीं समझा । अगर समझता तो सिर्फ कलम पर निर्भर नहीं रहता । दो-चार तथाकथित महान लोगों के पैरों पड़ता । लेखकीय संसार के संप्रदाय के अनुरूप रेशमी-कुरता, आलीशान मोटर और बंगले आदि का स्वामी बनकर संपन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामी लेखक बनता।

शेखर को पुरस्कार स्वरूप जो पारिश्रमिक मिलता था, उसी से उसका जीवन चलता था। गाड़ी किसी तरह खिंच रही थी।

धीरे-धीरे पूरे नौ वर्ष गुजर गये। यही नहीं लगा कि रंगनाथ ने शेखर की कभी परवाह की हो।

राजू के विवाह के एक वर्ष के भीतर ही उसकी पत्नी बेटे सुंदर को जन्म देकर गुजर गयी। राजू पिता के साथ कष्ट उठाकर सुंदर का पालन-पोषण करता था।

दो वर्षों के भीतर वह भी हृदय की बीमारी से चल बसा।

रंगनाथ अपने पोते के साथ चार वर्ष से अपने बंगले पर रहते थे। सुंदर ही उनको तसल्ली देता था। उस पर रंगनाथजी एकदम फिदा थे। उसे देखे बिना व खेले बिना वे समय काट ही नहीं सकते थे।

खूब मोटा-तगड़ा बनकर सुंदर बढ़ता रहा परंतु छठे वर्ष की आयु में वह चेचक का शिकार हो, संसार से चल बसा।

रंगनाथ के शोक की सीमा ही नहीं रही। उनका मन गृहस्थी-संसार सब उजड़ गया। एकांत-एकांत, अकेलापन... कभी-कभी शेखर की याद आती थी तो सिहर उठते थे... रक्त-बंधन कैसे टूटता!

उस दिन सबेरे नौ बजे रंगनाथ भगवत गीता हाथ में लेकर और आराम कुरसी पर लेटकर पढ़ रहे थे। उसी समय उनके कानों में एक गीत सुनायी पड़ा था। वह महाकवि सुब्रह्मण्य भारती का बालगीत था।

"जाति नहीं होती... पुत्रा
गोत्र नीच कहना हीन पाप है—पुत्रा"

एक लड़के के गले से सुरीला स्वर निकल रहा था। वे गीत मात्र सुन पाये। उन्हें पता न लगा कि कौन गा रहा है। उनका अनुमान था कि कोई भिखारी गाता है। सोचते-सोचते वे बरामदे में आये। स्कूल के दो लड़के खड़े थे। उन्हें देखते ही वे दंग रह गये। लड़के गीत गाकर चुप रहे। एक लड़के को देखकर रंगनाथ चिल्ला उठे, 'सुंदर!'

उस लड़के ने तुरंत उत्तर दिया, "मेरा नाम शंकर है।"

"तुम हमारे सुंदर जैसे ही हो। अंदर आओ। अपने साथी को भी ले आओ।"

कहते-कहते वे दोनों लड़कों को बुला ले गये। उनके बंगले की बैठक के चित्र सोफे आदि को देखते-देखते लड़का कमरे के अंदर जा पहुंचा। रंगनाथजी ने कहा, "बैठो!"

दोनों लड़के लंबे सोफे पर एक-एक कर बैठे। बस्ता टटोला और कागज के दो छोटे बंडल निकाले।

रंगनाथ ने पूछा, "क्या है ये।"

दोनों लड़के एकसाथ कह उठे, "ये दान-रसीद बुक है।"

शंकर एक बंडल कागज उनकी ओर बढ़ाकर कहा, "पड़ोसी गांव में हमारी पाठशाला है। उसके भवन-निर्माण के लिए निधि-संग्रह कर रहे हैं। उसके लिए एक नाटक खेल रहे हैं अगले शनिवार को..."

लड़के बात पूरी नहीं कर पाये कि रंगनाथ बीच में पूछ बैठे, "नाटक का शीर्षक क्या है?"

लड़के बोले, "जातियां नहीं हैं पुत्रा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऐसा ! कौन नाटक खेलता है कौन-कौन लोग अभिनय कर रहे हैं" वे और कुछ पूछते कि शंकर ने कहा, "हमारी पाठशाला की नाट्य मंडली खेलती है । हम दोनों भी अभिनेता है ।"

दूसरे ने कहा, "शंकर ही नायक है ।"

तुरंत रंगनाथजी ने प्यार से लड़कों से कहा, "तब तो उस नाटक के एक दृश्य को प्रस्तुत करो ।"

तुरंत दोनों लड़के उछलकर अभिनय करने को तैयार हुए । शंकर के मुख की ओर रंगनाथ टकटकी लगाये बिना देख ही रहे थे ।

वे कुछ पूछना चाहते थे कि अभिनय प्रारंभ हुआ :

"जा रे जा ! दलित जाति की लड़की से शादी करी तो तुरंत दुम दबाकर भाग जा ! तुम्हारी संतान किस जाति की होगी ? हिम्मत हो तो बता ?"

"मेरी कोई जाति है ही नहीं । मेरी पत्नी और संतान किसी भी जाति की नहीं होंगी । परंतु आप पूछते हैं इसलिए बताता हूं । आपका प्रश्न यही है न कि मेरी संतान की जाति क्या होगी ? वह जाति-पांति आमूलनाशक जाति की होगी ।"

रंगनाथ ने कहा, "बस- बस !" फिर पूछा, "किसका लिखा नाटक है यह ?" तभी उन्होंने दान की रसीद देखी लिखा था, 'गुलाबी-शेखर रचित ।' इतने में शंकर ने गर्व से नाटककार का नाम लिया । दूसरे लड़के ने जल्दी-जल्दी कहा, "नाटककार शंकर के पिताजी हैं ।"

रंगनाथ ने गद्‌गद् होकर कहा, "ठीक है ! ठीक है । मुझे पता है ।" और वे प्यार से शंकर पर हाथ फेरने लगे ।

शंकर ने बड़ी उत्सुकता से पूछा, "क्या आप ये सारे टिकट खरीदेंगे ?"

रंगनाथ ने कहा, "क्यों नहीं ? जरूर लूंगा ।" यह कहकर वे पड़ोसी कमरे से रकम ले आने गये तो शंकर ने वहां रखे भक्ति ग्रंथ का एक पृष्ठ देखा और एक पद्य को गाने लगा—

जाति, धर्म, संप्रदाय की रीतियों में
शास्त्र संघर्ष में, गोत्र-संघर्ष में
आदि अभियान में मस्त आप व्यर्थ
अगल-बगल जा-जाकर जीवन क्यों खोते...

उन्हें देखते ही शंकर ने उस ग्रंथ को खुला ही छोड़कर छोटी मेज पर रख दिया ।

रंगनाथ ने शंकर के हाथों एक हजार रुपये का धनादेश देने के बाद पूछा, "मैं शनिवार को नाटक देखने आऊंगा । वहां क्या तुम्हारे पिताजी आएंगे ।" लड़कों ने "हां" भरते हुए सिर हिलाया और विदा हो गये । रंगनाथ उन्हें देखते रह गये । बहुत देर के बाद खुले ग्रंथ पर दृष्टि गड़ाकर पढ़ने लगे । इन पंक्तियों को ही वे अब तक पढ़ नहीं पाये थे ।

'जाति धर्म-संप्रदाय की रीतियों में...' दक्षिण के संतरामलिंगम् की इन पंक्तियों में वे खो गये ।

रूपांतर :
डॉ. पी. के. बालकृष्ण सुब्रह्मण्यम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक उत्साही युवक का संकल्प

सन १९६९ । सारे देश में राष्ट्रपिता गांधीजी की जन्मशती समारोहपूर्वक मनाने की तैयारियां की जा रही थीं । पटना में भी गांधीजी की जन्मशती के आयोजन को सफल बनाने के लिए अनेक प्रकोष्ठ गठित किये गये थे । समारोह समिति के एक प्रकोष्ठ का संयोजक एक ऐसे उत्साही नवयुवक को बनाया गया था, जो न केवल सुशिक्षित, प्रतिभासंपन्न वरन परिश्रमी एवं दृढ़ संकल्पवाला भी था । यों, वह युवक तब बेरोजगार था लेकिन बेरोजगारी को लेकर उसके मन में कहीं कोई निराशा नहीं थी। जिस प्रकोष्ठ का वह संयोजक था, उसका दायित्व था कि सिर पर मैला ढोने की घिनौनी प्रथा को समाप्त करने के लिए समाधान ढूंढ़ने के साथ-साथ वाल्मीकियों की अन्य समस्याओं का भी अध्ययन करे ।

उस युवक ने इस घिनौनी प्रथा को समाप्त करने के लिए एक कारगर समाधान ही नहीं ढूंढ़ा, वरन उसे एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन का भी रूप दे दिया ।

कौन था यह युवक ? विंदेश्वर पाठक—सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक, प्रसिद्ध समाजसेवी ।

डॉ. विंदेश्वर पाठक

उस बेरोजगार किंतु उत्साही युवक ने न केवल सदियों से चली आ रही एक कुप्रथा को समाप्त करने का व्यावहारिक समाधान ढूंढ़ा, वरन एक राष्ट्र-व्यापी आंदोलन का भी श्री गणेश किया ।

सदियों पुरानी

बिहार के वैशाली जिले के उच्च ब्राह्मण कुल में जन्मे डॉ. विंदेश्वर पाठक तब गांधीवाद का अर्थ नहीं जानते थे और न ही उनके विचारों को पूरी तरह समझ पाये थे । सिर पर मैला ढोनेवालों की मुक्ति के प्रकोष्ठ का प्रभारी होने के कारण इस समुदाय के लोगों से उनका संपर्क हुआ और वे उनकी परेशानियों से द्रवीभूत हुए । इस सिलसिले में उन्होंने देशभर का भ्रमण किया । उनकी बस्तियों को देखा, वहां जाकर रहे, उनकी आदतों और सामाजिक स्थिति को देखा, यहां तक की इसी समस्या को उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

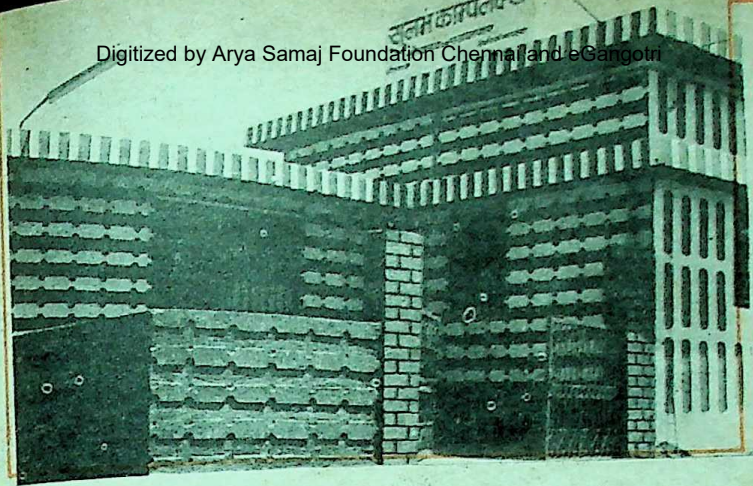

प्रियदर्शिनी नगर, भोपाल स्थित सुलभ शौचालय

अपने शोध का विषय भी बनाया और यह महसूस किया कि 'अपनी हीनता के कारण वे समाज की मुख्यधारा से कटते जा रहे हैं। इसलिए उनकी रक्षा करके ही हम राष्ट्र की अंतरात्मा की रक्षा कर सकते हैं।'

यही संस्था सुलभ इंटरनेशनल के नाम से चर्चित हुई।

सुलभ शौचालय तकनीक

सुलभ शौचालय तकनीक बहुत ही सरल है, जिसमें दो पिट होते हैं। एक पिट के भर

कुप्रथा का अंत

● सरिता नाथ

मात्र नारेबाजी नहीं

वाल्मीकि समुदाय की मुक्ति की समस्या सिर्फ नारेबाजी से दूर नहीं हो सकती थी। डॉ. पाठक ने इसके लिए एक ऐसी सुलभ तकनीक को विकसित किया, जो वाल्मीकियों की सिर पर मैला ढोने की समस्या के समाधान की निश्चित विकल्प बन गयी। उन्होंने सुलभ संस्थान के नाम से एक सामाजिक और स्वयंसेवी संगठन बनाया, जिसका उद्देश्य पैसे कमाने की बजाय गांधीवादी विचारधारा के साथ सुलभ तकनीक का समन्वय कायम करना था। आगे चलकर

जाने पर दूसरे का इस्तेमाल शुरू हो जाता है और पहले पिट में जमा मल खाद बनने लगता है। अतः इसमें समय-समय पर मल-जल की सफाई की जरूरत नहीं पड़ती। तह तरीका काफी सफल रहा है। साथ ही इसके निर्माण में खर्च भी कम आता है, अतः निम्न, मध्यम और निम्न आय वर्गीय लोग भी सुविधाजनक ढंग से इसे अपने यहां बनवा सकते हैं। इसी कारण भारत तथा ऐसे ही विकासशील देशों के लिए यह सर्वथा अनुकूल है और अपने यहां वर्तमान समय में २० राज्यों में सुलभ परियोजना कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रही है ।

सुलभ परियोजना की लोकप्रियता का मुख्य कारण यह है कि अपने नाम की तरह ही यह तकनीक सरल और सुविधाजनक है और काफी जांच-पड़ताल के बाद केंद्र तथा राज्य सरकारों ने इसका अनुमोदन कर दिया है । इतना ही नहीं, विश्व-स्वास्थ्य संगठन, अंतरराष्ट्रीय बाल सहायता कोष और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने भी इस तकनीक की उपयोगिता को स्वीकार कर लिया है ।

सुलभ तकनीक से बायोगैस

सुलभ तकनीक की लोकप्रियता का एक मुख्य कारण यह भी है कि इसके द्वारा मानव-मल से बायोगैस प्राप्त करने की विधि ने ऊर्जा के क्षेत्र में एक क्रांति ही ला दी है । सुलभ संस्थान के माध्यम से देशभर में ६० ऐसे बायोगैस संयंत्र कार्य कर रहे हैं, जिनके द्वारा पर्याप्त मात्रा में हमें ऊर्जा मिल रही है ।

सुलभ आंदोलन

सुलभ शौचालय संस्थान की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि सुलभ शौचालय तकनीक के द्वारा सिर पर मैला ढोने-जैसे कार्य को करने की आवश्यकता ही नहीं रही । निजी मकानों के साथ-साथ ये सुलभ शौचालय सार्वजनिक स्थानों पर भी बनवाये गये हैं, ताकि जनसाधारण को पर्याप्त सुविधा मिल सके । देश में ऐसे लगभग ६ लाख शौचालय बनवाये गये हैं जिनमें लगभग ३० हजार वाल्मीकि इस घृणित कार्य से मुक्त भी हो चुके हैं । इस प्रकार सुलभ शौचालय तकनीक के माध्यम से एक ऐसे सुलभ आंदोलन का जन्म हुआ है जिसके सहारे इस समुदाय के उत्थान की बात सोची गयी है और सुलभ संस्थान के प्रयासों से इसे पर्याप्त सफलता भी मिली है ।

सुलभ प्रशिक्षण केंद्र

सुलभ क्रांति का पहला चरण मुक्त हुए वाल्मीकियों के प्रशिक्षण और उनके पुनर्वास का है । मुक्त हुए वाल्मीकियों के लिए सुलभ संस्थान ने सुलभ प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किये हैं, जहां उन्हें टंकण, खिलौने बनाने, बेंत की चीजें बनाने, सिलाई-कढ़ाई, ड्राईविंग, बढ़ईगीरी तथा ऐसे ही अन्य हुनर सिखाये जाते हैं, ताकि रोजगार प्राप्ति की दौड़ में वे भी भाग ले सकें । ऐसे प्रशिक्षण केंद्र बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र और दिल्ली में चलाये जा रहे हैं । लगभग २० हजार से अधिक लोगों को अब तक रोजगार दिलाया जा चुका है ।

सुलभ शिक्षा अभियान

'शिक्षा प्रगति की कुंजी है और अशिक्षित समाज का भविष्य हमेशा अंधकारमय होता

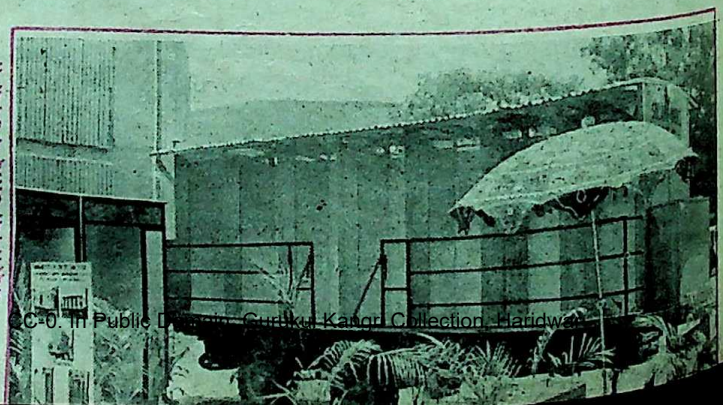

चलता-फिरता, पहियोंवाला सुलभ शौचालय, मेलों, प्रदर्शनियों आदि में उपयोगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी दिल्ली के प्रख्यात इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में वाल्मीकि-लड़कियों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग कार्यक्रम का एक दृश्य

है।' इस विचारधारा में विश्वास करनेवाले डॉ. विंदेश्वर पाठक की मान्यता है कि स्वच्छ समाज और पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने के लिए शिक्षित होना आवश्यक है और इसीलिए उन्होंने अपने आंदोलन में शिक्षा के महत्त्व को विशेष रूप से आत्मसात किया है। सुलभ स्कूल ऐसे ही शिक्षा संस्थान हैं, जहां मुक्त हुए वाल्मीकियों के बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। साथ ही उन्हें किताबें और पोशाक भी मुफ़्त मिलती हैं। इस तरह वाल्मीकियों के समुदाय में शिक्षा प्रसार इस आंदोलन का एक बड़ा उद्देश्य है। इन वाल्मीकियों के बच्चों को शुरू से ही इस तरह की शिक्षा दी जा रही है कि वे समाज के दूसरे अगरे वर्गों के साथ कदम मिलाकर चल सकें।

अपनत्व की डोर

मुक्त हुए वाल्मीकियों को समाज में सही दरजा दिलाने के लिए संपन्न लोगों के द्वारा उन्हें अपनाया जाना भी आवश्यक है। ये वाल्मीकि सदियों से अछूत माने जाते रहे हैं। उन्हें अपने साथ अपनाकर, उनके साथ मेलजोल बढ़ाकर, उनके समारोहों एवं अन्य आयोजनों में शामिल होकर तथा अपने आयोजनों में उन्हें उचित सम्मान देकर ही हम उनके साथ परस्पर छूआछूत की प्रथा को समाप्त कर सकते हैं। इसीलिए इस आंदोलन के तहत एक वाल्मीकि परिवार को अपनाये जाने की बात कही गयी है और देश के प्रतिष्ठित लोग इन्हें अपना भी रहे हैं।

सुलभ विकास कार्यक्रम

वाल्मीकियों के सामूहिक विकास के लिए सुलभ संस्थान ने ग्राम विकास आंदोलन भी छेड़ रखा है। इसके लिए दक्षिण-पश्चिम दिल्ली स्थित शाहबाद ग्राम को एक मॉडल गांव के रूप में अपनाया गया है, जहां वाल्मीकि परिवार की अधिकता है। यहां के लोगों के बीच पर्याप्त शिक्षा, स्वच्छता के प्रति जागरूकता, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के प्रति विशेष समर्पण की भावना जगाना ही इस आंदोलन का उद्देश्य है। साथ ही ग्रामीणों को प्रशिक्षित कर रोजगार उपलब्ध कराना भी है।

—आर. जेड.-एच. २/१२४ महावीर एंकलेव,
पालम डाबड़ी रोड, नयी दिल्ली-११००४५

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

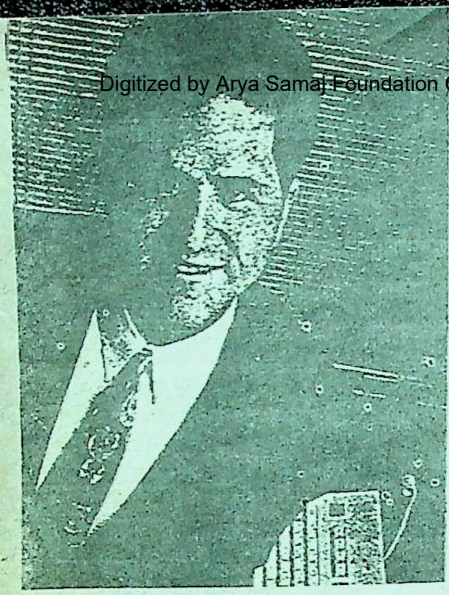

माइकेल डेल

आस्था के आयाम

कुछ नया करने की ललक

कभी-कभी सत्य कल्पना से अधिक आश्चर्यजनक ही नहीं, प्रेरणा का स्रोत भी सिद्ध होता है। यह जानकर सहसा विश्वास नहीं होता कि आज विश्वभर में प्रसिद्ध अनेक कंपनियां मोटर गैराजों, घरों के शयन-कक्षों अथवा अभ्यागत-कक्षों में शुरू हुई थीं।

पी. सी. अर्थात पर्सनल कंप्यूटर की निर्माता कंपनियों में डेल कंप्यटूर कार्पोरेशन का विशिष्ट स्थान है। आज इस कंपनी की कुल पूंजी दो विलियन डॉलर अर्थात २० अरब रुपये है। सन १९८४ में यह कंपनी मात्र एक हजार डॉलर की बचत की जमा पूंजी से शुरू की गयी थी। तब उसके स्वामी माइकेल डेल की योजना टेलीफोन-संपर्क द्वारा कंप्यूटर बेचने की थी। नौ-दस वर्षों में ही माइकेल डेल ने अपना काम बढ़ाया और कंप्यूटर निर्माण के साथ-साथ उनके सहायक उपकरण बेचने का कार्य शुरू कर दिया। आज उसकी कंपनी एक प्रमुख कंपनी के रूप में गिनी जाती है।

इसी तरह अठारह वर्ष पूर्व बीस वर्षीय स्टीव जॉब्स ने अपने एक बालसखा स्टीव वोजनिक के साथ अपने 'अभिभावकों' के घर में एक कंपनी की नींव रखी थी। नाम रखा—एपल कंप्यूटर्स। घर का शयन-कक्ष उनका कार्यालय था और गैराज निर्माण-स्थल। शुरू-शुरू में उनका उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिकी में दिलचस्पी रखनेवाले लोगों के लिए 'किट' फॉर्म में कंप्यूटर बनाना था। मात्र छह वर्षों बाद 'एपल' की गणना अमरीका की प्रमुख कंपनियों में की जाने लगी।

औद्योगिक प्रदेश की पहली कंपनी

गैराज में ५३८ डॉलर की पूंजी से स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के दो इंजीनियरिंग के छात्रों ने एक छोटी-सी कंपनी शुरू की। स्थान था—पालो आलटो। अमरीका में सिलिकन वैली के नाम से प्रसिद्ध इलेक्ट्रॉनिक औद्योगिक प्रदेश में स्थित यह स्थान इस कंपनी के कारण महत्त्वपूर्ण बन गया। इस औद्योगिक प्रदेश की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पहली कंपनी थी ।

दोनों मित्रों ने शीघ्र ही नये भागीदार बनाये और आज इस कंपनी की आय १४.५ बिलियन डॉलर से अधिक है ।

कुछ नया करने की ललक

वह एक इलेक्ट्रॉनिक कंपनी में काम करता था । उम्र थी इक्कीस वर्ष । पर वह कुछ नया करना चाहता था । ओसाका के अपने दो कक्षों के घर में उसने एक भागीदार के साथ एक दुकान खोली । कुछ दिनों बाद एक ग्राहक ने आकर उसके सामने एक मास के भीतर एक हजार 'फैन इंसुलेटर' की आपूर्ति करने का प्रस्ताव रखा । उसने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और एक मास के भीतर माल की आपूर्ति भी कर दी । इससे लाभ भी हुआ । उसके इंसुलेटर की मांग भी बढ़ी । धीरे-धीरे काम इतना बढ़ा कि उन्हें एक नया बड़ा मकान लेना पड़ा । आज यह कंपनी विश्व की प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक कंपनियों में से एक है । इस उत्साही, विवाहित युवक का नाम है—कोनोसुके मात्सुशिता ! और कंपनी का 'मात्सुशिता ग्रुप' । एशिया, यूरोप और उत्तरी अमरीका में इस कंपनी का कारोबार फैला हुआ है ।

इन सब उद्यमियों में जो गुण समान हैं, वे हैं—कुछ नया करने की ललक, कल्पना, शक्ति, साहस और परिश्रम में अगाध आस्था ।

भारत में भी ऐसे एक नहीं, अनेक उद्योगपति हैं, जिन्होंने बहुत छोटी-सी पूंजी के साथ, छोटे पैमाने पर कार्य शुरू किया और अपने परिश्रम, अध्यवसाय, लक्ष्य के प्रति अटूट समर्पण भाव के कारण शीघ्र ही न केवल सफल हुए वरन औरों के लिए भी प्रेरणा के स्रोत बने ।

नेतृत्व शक्ति आवश्यक

इन सभी में नेतृत्व का गुण भी है । बिना इस गुण के सफलता, समृद्धि पाना कठिन है । आप किसी व्यवसाय में क्यों न हों—सफलता के लिए अपने में नेतृत्व के गुणों का विकास कीजिए । कैसे ? कुछ आसान से संक्षिप्त सूत्र : सदैव विश्वास रखें :

- व्यवसाय या कंपनी का नेतृत्व करनेवाला सही काम, सही निर्णय करता है ।
- अपने उपक्रम के लिए आप जो भी स्वप्न देखते हैं, योजनाओं की कल्पना करते हैं, उन्हें लिखित रूप में सामने रखें । संगठन के अपने सहयोगियों से राय लें । उनकी भी सुनें ।
- अपने कर्मचारियों, ग्राहकों, संपर्क में आनेवाले लोगों से सदैव संवाद की स्थिति बनाये रखें । केवल आदेश भर न दें । जिन्हें आपके आदेशों का पालन करना है, उनकी भी सुनें ।
- रोजाना के ऐसे कामकाज में स्वयं को न उलझाए, जिन्हें आपके सहायक भी बखूबी कर सकते हैं ।
- हमेशा कुछ नया करने की सोचें ।
- यह धारणा बनाकर न बैठ जाएं कि आप निष्णात हो चुके हैं । अब कुछ सीखने को बाकी नहीं । यह धारणा गलत है । कुछ नया तो जिंदगीभर सीखा जा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेन लगाकर चैन की नींद सोयें

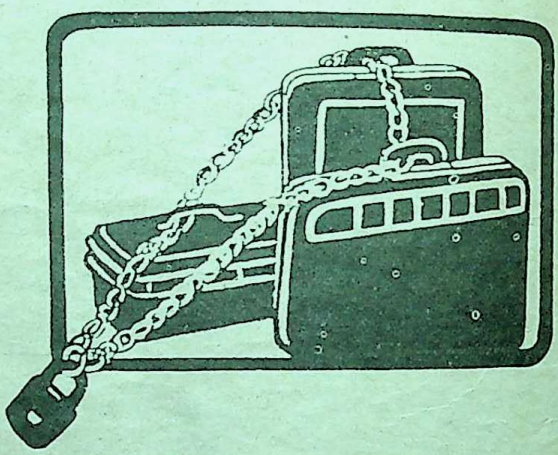

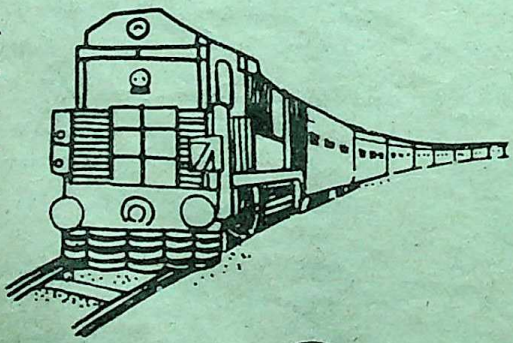

रेलयात्रा करते समय बेफिक्र रहें,
लापरवाह नहीं।
अपने सामान को सीट के नीचे
लगी चैन से बांधकर निश्चिंत रहें
और चैन से सोयें।

भारतीय रेल
उत्तर रेलवे

उत्तर रेलवे
– आप की सेवा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसकराहट भी करती है भय दूर

एक था राजा । राज-काज के बाद दिनभर का थका-हारा घर लौटा तो एक बूढ़े ने रास्ता रोक लिया और पूछा, "लौट क्यों आये ?"

राजा ने कहा, "मैं थक गया हूं । अब नहीं चला जाता ।"

बूढ़ा बोला, "यह क्या बात है । जो आराम करता है, उसका भाग्य भी आराम करता है । जो उठ खड़ा होता है उसका भाग्य भी उठ खड़ा होता है । जो आगे बढ़ता है, उसका भाग्य भी आगे बढ़ता है । तुम आगे बढ़ो, रुको मत ।"

यह राजस्थान की एक लोक कथा का संदेश है । कठिन परिश्रम ही इस प्रदेश की नियति है । प्रकृति की अनुदारता के कारण ही यहां के लोग कठोर श्रम करने तथा उद्यमी बनने के लिए प्रेरित हुए । इस बात से तो इनकार नहीं किया जा सकता कि जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर ली, वह समाज में सम्मान प्राप्त करने लगता है । राजस्थान के श्रेष्ठियों ने भी अपने अदम्य साहस और कठोर परिश्रम से सफलता और उसके फलस्वरूप सम्मान अर्जित किया है ।

सफल कौन ?

सफल व्यक्ति वह होता है जो सभी अर्थों में पूर्ण होता है । अपने जीवन में जो कोई लक्ष्य बनाकर उसे प्राप्त कर लेता है, उसे ही सफल कहते हैं । ऐसे व्यक्ति से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए सभी लोग लालायित रहते हैं । ऐसे व्यक्ति समाज के हर क्षेत्र में मिल जाएंगे । इन्होंने अपने लक्ष्य निर्धारित करके उनकी ओर बढ़ते हुए उन्हें प्राप्त करने में सफलता पायी ।

महान और सफल व्यक्तियों के जीवन का अध्ययन करने से हमें पता चल सकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि उन सबकी सफलता का रहस्य कुछ ऐसी बातों में निहित है, जो सब में समान रूप से पायी जाएंगी ।

- **सबने अपने जीवन का एक लक्ष्य निर्धारित किया और वे उसके लिए परिश्रमरत हो गये ।**
- **उन्होंने अपने चरित्र को इतना कठोर बना लिया कि अनेक मुसीबतों के बाद भी वे उनसे विचलित नहीं हुए ।**
- **प्रारंभ में उन्हें जो सफलता मिली, वे उससे संतुष्ट होकर नहीं बैठे रहे, बल्कि और भी ऊंचाइयां प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते रहे ।**
- **उन्होंने अपना समस्त ध्यान शिक्षा, अकादमिक या अन्य, की ओर लगाया, लगभग जिसमें वे पारंगत हुए ।**
- **सबने एक योजनाबद्ध विधि से काम किया, जिससे वे अपने लक्ष्य की ओर पहुंचने में सफल हुए ।**
- **कर्म और कठोर श्रम इनका व्यसन रहा, जिसके कारण अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए इन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी ।**
- **अंततः वे सभी प्रतिभासंपन्न व्यक्ति रहे— आवश्यक नहीं कि वे जन्मजात ऐसे रहे, उन्होंने स्वयं को इस प्रकार ढाल लिया । याद रखिए, प्रतिभासंपन्न बनने में ९० प्रतिशत श्रम होता है और १० प्रतिशत अंतःप्रेरणा ।**

गलतियां भी सिखाती हैं

प्रखर सहज बुद्धि, या कॉमनसेंस, भी इनकी एक विशेषता होती है, किंतु यह विशेषता दूसरों को देखकर वे स्वयं में विकसित करते हैं, यह उनमें जन्मजात होती है, यह आवश्यक नहीं । अपनी तथा दूसरों की गलतियों से भी वे सीखते हैं ।

सफलता और सफल व्यक्तियों के बारे में हम सबको कुछ-न-कुछ मालूम रहता है । किंतु हममें से अधिकतर लोग सफलता के बारे में एक भ्रम पाले हुए हैं । हम समझते हैं कि यदि हमने कोई अच्छी नौकरी प्राप्त कर ली, कोई विद्योपाधि हमें मिल गयी, कोई पुरस्कार हमने जीत लिया, या किसी प्रतियोगिता में सफल हो गये तो यह हमारी सफलता है । असली सफलता तो वह है जब हम अपने निर्धारित लक्ष्य से प्राप्त कर लें ।

आत्म-विश्वास बनाम सफलता

जिन लोगों में आत्मविश्वास की न्यूनता होती है वे प्रायः सफलता की सीढ़ी पर डगमगा जाते हैं । सफलता और विश्वास साथ-साथ चलते हैं । कुछ लोग कहते हैं कि आत्म-विश्वास केवल उनमें पाया जाता है, जिन्होंने पहले ही कोई सफलता प्राप्त कर ली हो । वे उदाहरण देकर आपको बताएंगे कि अपने लक्ष्य पर पहुंचनेवाला व्यक्ति ही वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महसूस करा सकता है कि उसमें आत्म-विश्वास था. तब ही वह यहां तक पहुंच सका है। ऐसे लोग सतही दृष्टि से सफलता को मापते हैं। यदि हम समस्त सफल लोगों का आकलन कर सकें तो हम पाएंगे कि उनमें आत्म-विश्वास का निर्माण किया गया था और उसके निर्माता वे स्वयं थे। और यही आत्म-विश्वास उन्हें उस दुर्ग को भेदने में सहायता देता है, जिसके लिए वे प्रयासरत थे।

स्वयं को तलाशिए

सिद्धार्थ में एक बुद्ध पहले से आसीन था। नरेन्द्र में विवेकानंद उपस्थित था। मोहनदास करमचंद गांधी में महात्मा अनुपस्थित नहीं थे। उन्होंने उनको खोज निकाला, जिससे वे महान बन गये। इसी तरह प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं को खोजना होता है। हम सबमें महानता के तत्त्व अवश्य होते हैं, किंतु **'जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ।'** इस तत्त्व को हम कितनी जल्दी और कितनी सुघड़ता से खोज लेते हैं इसी में हमारी सफलता है। इसमें कोई रहस्य या जादू नहीं है। विश्वास में कितनी शक्ति है, वह हम तब ही जान सकेंगे, जब अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने का प्रयास करेंगे। एक बार आप यह विश्वास प्राप्त भर कर पाएं कि आप इस कार्य को कर लेंगे तो फिर उसे करने में आपको अधिक समय नहीं लगेगा। विश्वास जाग्रत होने पर लक्ष्य का मार्ग स्वयं प्रशस्त होने लगता है।

असफलता का विचार ही न करें

विश्वास पैदा करने के लिए आप सफलता के बारे में ही सोचें, असफलता की बात ही न करें। असफलता की बात सोचने मात्र से परिणाम उल्टा ही निकलता है।

स्वयं से यह कहते रहने में कोई दोष नहीं है कि आप स्वयं को जितना सक्षम समझते हैं, उससे कहीं अधिक हैं। अपने दिल में कभी कोई संदेह न पालिए, और यदि उनकी तरफ ध्यान देंगे, तो आपका लक्ष्य धूमिल पड़ जाएगा।

लक्ष्य बनाम सफलता

हम स्वयं को सदा बड़ा क्यों न समझें ? आपके विश्वास का आधार ही आपकी सफलता के आकार को निर्धारित करता है। आपका लक्ष्य यदि छोटा होगा तो सफलता का आकार भी तो उसी के अनुपात में होगा। अतएव हम अपना लक्ष्य बड़ा क्यों न बनाएं, जिससे सफलता भी उसी आकार में मिले।

निर्भय बनिए

आपका निर्भय होना परमावश्यक है। भय किसी भी प्रकार का हो वह मनोवैज्ञानिक संक्रमण है, जो मनुष्य में आत्मविश्वास को पनपने से रोकता है। अपने जीवन में वह क्या करना चाहता है, इसे भय प्राप्त नहीं करने देता किंतु अपने भय से जीतने के लिए आपको करना क्या होगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके कई तरीके हैं । यदि आप में अपने व्यक्तिगत प्रकटन (चेहरे) के कारण हीन भावना है, तो अच्छे कपड़ों की सहायता से उसे सुधारने का प्रयास कर सकते हैं। यदि आपको डर है कि आपके किसी महत्त्वपूर्ण ग्राहक को कोई अन्य व्यापारी छीन लिए जा रहा है तो आप अपनी व्यापारिक सेवाओं में सुधार कीजिए । परीक्षा में असफलता का तो कोई डर होना ही नहीं चाहिए, क्योंकि अधिक अध्ययन से आप उसमें सफलता प्राप्त कर सकते हैं । कभी-कभी कुछ लोगों में कई अस्तित्वहीन से डर बैठ जाता है, जिसका कोई आधार नहीं होता । इसके लिए आप अपना हटाइए तथा समाधिस्थ होकर ध्यान कीजिए ।

विश्वास : जन्मजात नहीं, अर्जित किया जाता है

एक बात याद रखने की है कि समस्त विश्वास प्राप्त किये जाते हैं । कोई भी लेकर पैदा नहीं होता । इसके लिए स्वयं को प्रशिक्षित करना पड़ता है ।

अपने विश्वास को सुदृढ़ करने के कुछ और भी नुस्खे हैं । हममें से कई लोग बैठने में सुख अनुभव करते हैं । यही स्थिति सम्मेलनों और सभाओं में भी देखें है । आगे की सीटें छोड़कर हम पीछे बैठना अधिक पसंद करते हैं । यह हमारी हीन-भावना का परिचायक है । हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि, हम अपने

व्यथा कथा

(१)

सखियों ने झकझोरा...
पूछा फिर...गुमसुम उदास...ऐसे तू मौन है,
ऐसी मुद्राओं का मुद्रण कहां हुआ
कह तो सखि...मुद्रक कौन है ??

(२)

रहें सरताज उन्हें ऐसे कुछ मोहताज करें
रोयें वो याद में, फिर प्यार में इक ताज बनें

(३)

मजनूं की पीढ़ियां कहां से आ गयीं
मजनूं के बाप भी अनेक मिले
भटक रही है आज तक लैला
कहीं कभी तो कोई मजनूं उसे एक मिले

(● मजनूं उमर देखने लगे हैं—सं.)

(४)

आंख खुली तो खुली रह गयी
मुंह खोला तो,
रहा खुला सा
संबंधों की टूटन देखी,
पलट गया पलभर में पांसा
टूटे टुकड़े पुनः बटोरें,
चलो मूर्तियां फिर से गढ़ लें
अब नयनों में क्या लिखा है,
साक्षर हैं हम दोनों पढ़ लें

—डॉ. सरोजनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजबूत नहीं बना पाये हैं । आमने बैठने की आदत डालिए । यह सच है कि जब आप सामने बैठने लगेंगे तो सबकी आंखों में चढ़कर सुप्रकट हो जाएंगे, किंतु सफल बनने के लिए आपको सामने तो आना ही पड़ेगा ।

किसी से बात करते समय उसकी आंखों में जरूर देखिए । यदि आप आंखें चुराते हैं इसका तात्पर्य है कि आपमें विश्वास की कमी है । बात करते समय आंखें न मिलाना यह दर्शाता है कि आप उस व्यक्ति से शरमा रहे हैं, उससे कुछ छिपाना चाहते हैं, या कुछ बताने से डर रहे हैं । सामने, व्यक्ति से बातें करते समय उसकी आंखों में झांकते रहने से आपका विश्वास तो बढ़ेगा ही साथ ही आपको उसका भी विश्वास प्राप्त होगा ।

विश्वास-वृद्धि का विटामिन

जब कहीं अवसर मिले तो अपने आप ही कुछ कहने से मत चूकिए । जितना अधिक आप बोलने से बचेंगे उतना ही आप अपने रहे-सहे आत्म-विश्वास को भी खो बैठेंगे । अधिकाधिक बोलने का प्रयास कीजिए क्योंकि, यह विश्वास बढ़ाने का विटामिन है ।

चलते समय आपका शरीर किस प्रकार मुड़ता-घूमता है, इससे आपकी मानसिक स्थिति का पता चलता है । कुछ लोगों की चाल में थोड़ी तेजी इस तथ्य की परिचायक है कि ये आत्म-विश्वास के धनी हैं । इसलिए जिस गति से आप चलते हैं उसमें पच्चीस प्रतिशत तेजी ले आएं । इससे आपका आत्म-विश्वास स्वयं ही बढ़ जाएगा ।

मुसकराहट भी करती है भय दूर

हंसने से कभी मत चूकिए किंतु यदि केवल मुसकराने की जरूरत पड़े तो इस कदर जरूर मुसकराइए कि आपके दांत दिखायी दे जाएं । भारी मुसकराहट भय को दूर भगाती है, चिंता से मुक्ति दिलाती है तथा निराशा को आशा में परिवर्तित कर देती है । इन सबसे फिर आपका विश्वास बनता है । यदि आप मुसकराते रहेंगे तो अत्यधिक उदासी की स्थिति में भी आप तत्काल प्रसन्नता प्राप्त कर लेंगे ।

ये सब सफलता के सूत्र हैं । इनका अनुसरण करते रहेंगे तो आपका विश्वास बनेगा, जिससे आप विश्वास के साथ सफलता की सीढ़ियां चढ़ सकेंगे ।

लेकिन सफलता प्राप्त करने के लिए शक्ति, समर्पण, संकल्प, एकनिष्ठता और दृढ़ता का होना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है । सदा कार्यरत रहने से कार्य करते रहने की प्रवृत्ति बनी रहती है । आपने देखा होगा कि सफल व्यक्ति कभी निठल्ले नहीं बैठते । इनके साथ ही सत्यनिष्ठ होना भी हमारी सफलता के राज को प्रशस्त करता है । सत्यनिष्ठा स्वयं के प्रति तो होनी ही चाहिए, दूसरों के लिए कुछ अधिक होने से लाभ ही लाभ है ।

प्रस्तुति : अनंतराम गौड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन के चौबीस घंटों को पच्चीस कैसे बनाएं?

● प्रो. (डॉ.) जमनालाल बायती

एक बार अमरीकी दार्शनिक इमरसन से पूछा गया कि आपकी आयु क्या है ? इमरसन ने तुरंत उत्तर दिया—३६० वर्ष । प्रश्न पूछनेवाला आश्चर्य में डूब गया तथा बोला श्रीमान, आप तो ६० वर्ष के ही लगते हैं । इमरसन बोले, "दिनों की संख्या के अनुसार आप सही हो सकते हैं, पर सूझ-बूझ के साथ समय का विवेकपूर्ण नियोजन करके मैंने ३६० वर्षों में किये जा सकनेवाले काम निपटा दिये हैं और मेरे किये कार्यों को निपटाने में सामान्य व्यक्ति को ३६० वर्ष लग जाएंगे, और इस दृष्टि से मैं अपनी जगह सही हूं ।'

क्षण-क्षण का उपयोग

जीवन में सफलता पाने के लिए एक-एक क्षण का विचारपूर्ण सही उपयोग करना अत्यंत आवश्यक है । इन क्षणों में कठोर परिश्रम किया जाना चाहिए और कार्य पूर्व नियोजित तरीके से संपन्न किये जाने चाहिए । कई लोग शिकायत करते रहते हैं कि उनके पास समय नहीं है या उन्हें समय मिलता तो अमुक-अमुक काम और कर लेते । वास्तव में ऐसा कहनेवालों के पास अपने कामों को प्राथमिकताएं नहीं होती हैं, कौन-सा काम दूसरे किस काम को छोड़कर पहले किया जाना चाहिए, यह उन्हें [illegible] नहीं है । और जब सोचा ही नहीं है, [illegible] अनुसार काम करने का प्रश्न ही नहीं [illegible] यह भी संभव है कि दिनभर में निपटा[illegible] जानेवाले कामों की सूची ही नहीं है । [illegible] ठीक वैसे ही है जैसे कि कोई बिना [illegible] मीटिंग बुला ले ।

समाज के प्रत्येक व्यक्ति को दिन[illegible] किसी भेद भाव के २४ घंटे मिलते हैं [illegible] में यह माना जाता है कि दिनभर के [illegible] आप २५ घंटे नहीं बना सकते । [illegible] से सोचें तो २४ घंटे को २५ या २६ [illegible] अधिक घंटों में बदला जा सकता है [illegible] में २५ या २६ घंटों में किया जानेवाला [illegible] निपटाया जा सकता है । शर्त यही है कि [illegible] कार्य पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार [illegible] जाएं ।

कार्य टालें नहीं

यदि आप सदैव ७ घंटे या ६ घंटे [illegible] सोने की अवधि कम कर २५ घंटे [illegible] सकते हैं । पंडित नेहरू विषम परिस्थि[illegible] २२-२२ घंटे काम करते थे । यही [illegible] बार श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ भी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या सोने के समय में कमी करके कई अन्य जरूरी तथा महत्त्वपूर्ण कार्य निपटाती थीं । नींद से बचाया हुआ समय प्रकारांतर से दिन के २४ घंटों में वृद्धि ही है ।

यदि आप काम टालें नहीं, समय पर निर्णय ले लें तो इससे भी निपटाये जाने वाले काम के समय में वृद्धि की जा सकती है । काम टालने के बजाय किसी समस्या का हल खोजिए, निदान की ओर बढ़िए । असफलता के डर से काम आरंभ ही न करें—यह सराहनीय बात नहीं है । बीस कामों में से २-३ में असफलता भी मिल सकती है । असफलता ही आपको निरंतर काम करने के लिए सचेत एवं तत्पर बनाती है । जो भी स्थितियां आती हैं, उनका दृढ़ता से सामना कीजिए ।

समय की पाबंदी जरूरी

ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता जो समय की पाबंदी न करता हो, समय का पालन करना, समय का सही उपयोग करनेवाला ही जीवन में सफलता पाता है ।

नेपोलियन ने एक बार कई उच्च अधिकारियों को भोजन के लिए आमंत्रित किया । अधिकारीगण देर से पहुंचे, समय का पालन नहीं किया । नेपोलियन तथा अन्य उपस्थित लोगों ने भोजन स्थल पर भोजन आरंभ कर दिया । जब वे भोजन समाप्त करने ही वाले थे कि अधिकारी पहुंचे तो नेपोलियन ने कहा, "भोजन का समय तो समाप्त हो गया है । आइए, अब प्रशासन संबंधी सलाह-मशविरा कर लें ।"

उद्देश्यों का स्पष्ट ज्ञान

प्रत्येक व्यक्ति के सामने काम के माध्यम से प्राप्त किये जाने वाले उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिए, आप उन्हें दीर्घकालीन तथा अल्पकालीन उद्देश्यों में पद सोपानानुसार बांट सकते हैं । ऐसा करने से आप कोई कदम लेने में सहज-स्वाभाविक बने रहेंगे ।

स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, गणितज्ञ रामानुजम, परहित चिंतक घनश्यामदास बिड़ला, उद्योगपति जे. आर. डी. टाटा, हेनरी फोर्ड तथा महादेव गोविंद रानाडे आदि की सफलताओं का रहस्य उनके समय नियोजन में छिपा है । मैडम क्यूरी ने परिवार से तिरस्कार

वे साठ वर्ष के थे लेकिन अपनी उम्र ३६० वर्ष बताते थे । और उनका तर्क था कि वे सही हैं ! लेकिन क्या ऐसा होना संभव है ?

पाकर तथा शारीरिक कष्ट उठाकर प्रकृति के कितने मर्म उजागर किये, इसका श्रेय भी उनकी प्रभावी समय नियोजन की आदत को है । जो समय का सम्मान करता है, समय उसका सम्मान करता है, जो समय नष्ट करता है, समय उसे नष्ट करता है । इसी दृष्टि से शेक्सपीयर ने अपने एक पात्र सम्राट लियर से बड़ी पीड़ा के साथ कहलवाया, "उफ, पहले मैंने समय नष्ट किया, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है ।"

—वरिष्ठ संपादक, शिविरा,
७/१८२, मुक्ता प्रसाद नगर,
बीकानेर -४ (राजस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक समय था, जब आप किसी बड़े निगम या संस्थान में नौकरी शुरू करते थे । वे आपको प्रशिक्षित करते थे, संरक्षण देते थे और उनकी कसौटियों पर खरे उतरने पर आप शीर्षस्थ पद तक पहुंच सकते थे । कंपनी आपके हितों का पूरा ध्यान रखती थी । न्याय सर्वोपरि था । कठिन परिश्रम, लगन, समर्पण, धैर्य और निष्ठा की भावना आपकी सफलता की निश्चित गारंटियां थीं ।

पर यह सब कल की बात है ।

युवा-पीढ़ी में यह पुस्तक बेहद लोकप्रिय सिद्ध हुई है । और भारत में भी युवा प्रबंधकों और अधिकारियों को यह पुस्तक भा रही है । 'कादम्बिनी' के पाठकों के लिए यहां प्रस्तुत है इस पुस्तक के कुछ अंशों का सार—

एक पुराना सिद्धांत!

रेवरेंड नार्मन विंसेट पील की पुस्तक 'द पावर ऑव पाजिटिव थिंकिंग' ने अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है । हजारों लोगों ने इस पुस्तक को पढ़कर प्रेरणा पायी है । नार्मन विंसेट पील

सफलता के नये अमरीकी फारमूले

बनिए बिल्ली-सा चतुर : कुत्ते-सा स्वामिभक्त

आज गलाकाट प्रतिस्पर्धा-प्रतियोगिता का जमाना है । अब आप कंपनी के संरक्षण पर निर्भर नहीं कर सकते क्योंकि कंपनी ही इस बात के लिए आश्वस्त नहीं कि वह भी आपके हितों की रक्षा कर सकती है । अब आपको अपने हितों की रक्षा स्वयं करनी है ।

आगे कैसे बढ़ें

यह सार है एक बहुचर्चित पुस्तक 'हॉर्स सेंस— हाऊ टू पुल अहेड ऑन बिजनेस ट्रैक' की भूमिका का । लेखक हैं— एल राइस और जैक ट्राउट । अमरीका की महत्त्वाकांक्षी का कहना है कि आप हमेशा यही सोचते रहें कि आप सफल हो रहे हैं । दूसरे शब्दों में अपने में निहित प्रतिभा का, ऊर्जा का विस्तार कीजिए, उसे प्रस्फुटित कीजिए ।

अल राइस और जैक ट्राउट का कहना है कि आज की दुनिया में यह धारणा, यह सिद्धांत पुराना पड़ चुका है । जीवन में असली सफलता दूसरों पर विश्वास करने में है । दूसरे शब्दों में 'सवारी के लिए कोई घोड़ा तलाशिए ।' जब आप केवल अपने पर विश्वास रखते हैं तो आपके पास सफलता के लिए केवल एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न या एक 'घोड़ा' होता है । जब आप अपने क्षितिज का विस्तार करते हैं और दूसरों को उसमें शामिल करते हैं तो आपको सफलता के ज्यादा अवसर उपलब्ध हो जाते हैं । यानी कई घोड़े । आप अन्य संभावनाओं पर भी विचार करने लगते हैं । और ये लेखक द्वय आपके लिए 'घोड़ों' का परिचय भी देते हैं, जैसे— 'हार्ड वर्क हॉर्स', 'आई क्यू हॉर्स', 'एजूकेशन हॉर्स', 'क्रिएटिविटी हॉर्स', 'हॉबी हॉर्स', 'प्रॉडक्ट हॉर्स', 'आइडिया हॉर्स' आदि-आदि ।

परिश्रम ही सब-कुछ नहीं

एल राइस और जैक ट्राउट का कहना है कि अकेले परिश्रम के बल पर कोई कभी शीर्ष पद पर नहीं पहुंच सकता । परिश्रम आवश्यक है, पर सब-कुछ नहीं । इसी तरह अकेले बुद्धिमानी सफलता को सुनिश्चित नहीं बनाती । चतुराई आवश्यक है । यदि प्रतिभासंपन्न हैं तो अच्छी बात है, सफलता के लिए आवश्यक है कि दूसरे लोग भी आपकी प्रतिभा को पहचानें । आपकी सफलता के लिए ऐसे दूसरे लोगों का होना आवश्यक है, जो आपकी प्रतिभा को पहचानें ।

लेखक द्वय ने अपनी इस दिलचस्प पुस्तक में कुछ सलाहें भी दी हैं । मसलन वे कहते हैं कि बुद्धिमता की बजाय व्यक्तित्व अधिक महत्त्वपूर्ण है । सफलता के लिए एक अच्छा व्यक्तित्व निहायत जरूरी है ।

लोकतंत्र में भी समान अवसर नहीं

लेखक द्वय का कहना है कि विशुद्धतम लोकतंत्र में भी सबको समान अवसर नहीं प्राप्त होंगे । आपको उपयुक्त अवसरों की दूसरे शब्दों में अपने लिए 'सही घोड़े' की स्वयं तलाश करनी होगी । वे कहते हैं, सपने देखना छोड़िए, अवसर आते ही उसे लपककर थाम लीजिए । सपने अकसर यथार्थ नहीं होते । वे कल्पना की उपज हैं । इसी तरह 'कैरियर' की 'प्लानिंग' भी भ्रम मात्र है । इसे भूल जाइए । भविष्य को कोई नहीं जानता । इसलिए जो पास है, उसका पूरा-पूरा उपयोग कीजिए । कोई भी कार्य कभी भी किसी भी अवस्था में शुरू किया जा सकता है । ये न सोचिए कि अभी तो बहुत जल्दी है या अब तो बहुत देर हो चुकी । उठिए और अपनी सफलता के लिए उपयुक्त माध्यम यानी 'घोड़े' की तलाश कीजिए ।

एक बात और ध्यान रखिए । हो सकता है कि किसी बड़ी कंपनी में आपका कोई भविष्य न हो, पर यदि वह वाकई प्रतिष्ठित कंपनी है तो उसके कर्मचारी होने का लाभ और किसी नयी कंपनी में जाने के लिए उठा सकते हैं । एक बात और, यदि आप किसी 'डूबती कंपनी' को उबारने की भावना से उसमें नौकरी करना चाहते

जीवन में असली सफलता दूसरों पर विश्वास करने में है । दूसरे शब्दों में सवारी के लिए कोई घोड़ा तलाशिए । जब आप केवल अपने पर विश्वास रखते हैं तो आपके पास सफलता के लिए केवल एक माध्यम 'घोड़ा' होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई भी कार्य कभी भी किसी भी अवस्था में शुरू किया जा सकता है । ये न सोचिए कि अभी तो बहुत जल्दी है या अब तो बहुत देर हो चुकी । उठिए और अपनी सफलता के लिए उपयुक्त माध्यम यानी 'घोड़े' की तलाश कीजिए ।

हैं तो कोशिश कीजिए कि आपको अधिकारोंवाला पद मिले, जहां आप स्वतंत्र निर्णय लेकर कुछ कर सकें ।

दूसरों की मान्यता प्राप्त कीजिए

सफलता के लिए दूसरों की मान्यता अत्यंत आवश्यक है । यदि आप लेखक हैं, कवि हैं, चित्रकार हैं, गायक हैं, नर्तक हैं, तो अपनी प्रतिभा को मान्यता देनेवाले लोगों की तलाश में भी जुटिए । उनकी मान्यता ही आपको सफल बनाएगी ।

यदि आप 'सृजनात्मक' और 'सफल' होना चाहते हैं तो कुछ समय अपनी कला को दीजिए और कुछ समय स्वयं को लोगों के सामने लाने के लिए । और क्षेत्रों की तरह सृजन के क्षेत्र में भी वे और लोग ही होते हैं, जो आपको सफल घोषित करते हैं । एक आलोचक ही सफलता का सर्टिफिकेट देता है । इस काम में अपने अहम को आड़े मत आने दीजिए । दस में से नौ लोगों के मामले में यही अहम आड़े आता है । लोग अपनी सृजनात्मक प्रतिभा के बल पर मान्यता पाना चाहते हैं, अपनी 'विक्रय क्षमता' के आधार पर नहीं । पर स्वयं से पूछिए— 'क्या यह सब वाकई महत्त्वपूर्ण है ?'

कुछ लोगों के लिए यह अवश्य ही महत्त्वपूर्ण है । वे स्वयं पर विश्वास रखना चाहते हैं । वे 'सृजनकर्ता' होने का सुख अनुभव करना चाहते हैं । पर सिक्के का यह दूसरा है । यदि सकारात्मक विचार-प्रक्रिया का पहलू है तो अपने आप पर विश्वास न स्वयं को नष्ट कर देनेवाला दूसरा पहलू है

इस पचड़े में न पड़कर दूसरों की विश्वास रखिए । वे ही लोग आपको सफल बनाते हैं । आप अपने पर विश्वास रखें नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता ।

दूसरों की प्रतिभा भी पहचानिए

इसी तरह किसी और की प्रतिभा को पहचानकर उसका सही उपयोग भी आपकी सफलता का माध्यम बन सकता है ।

उदाहरण के लिए फोर्ड कंपनी की कार की अंतरराष्ट्रीय ख्याति है । फोर्ड डिजाइन केंद्र में सात मॉडल चयन के लिए गये थे । इनमें से एक मॉडल जो ओटेन हाल्डर मैन और एल. डेविड लैश ने था । यह एक अश्व का मॉडल था । इसे फोर्ड कंपनी के ली लाकोका ने चुना । उसका कहना था कि यही मॉडल गतिशील प्रतीक था । लाकोका ने इस मॉडल को प्रतीक रूप में चुन लिया और इस तरह 'मुस्टांग' का आविर्भाव हुआ । यह कार खूब बिकी लाकोका को फोर्ड कंपनी के प्रेसीडेंट के नियुक्त किया गया । लाकोका ने स्वयं नहीं बनाया था, पर उसने दूसरों की प्रतिभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहचाना ।

तरक्की के रास्ते

लेखक द्वय की एक और सलाह है, यदि आप किसी कंपनी में कार्यरत है और जल्दी से जल्दी शीर्षस्थ पद पर पहुंचना चाहते हैं तो आपके सामने दो विकल्प हैं, या तो आप उस सूची में शामिल होने का प्रयत्न कीजिए जो आपको गंतव्य तक ले जाए या फिर कंपनी ही छोड़ दीजिए । यदि आगे बढ़ने की कोई संभावना, कोई अवसर नहीं है तो उसे छोड़कर कहीं और प्रयत्न करना ज्यादा बेहतर है ।

निजी संबंध जरूरी

उन लेखकों ने अपने अनुभवों का हवाला देते हुए लिखा कि कंपनी के भीतर कार्य करनेवाला कोई भी व्यक्ति कंपनी के शीर्षस्थ अधिकारी के द्वारा अपने निजी संबंधों के बिना शीर्ष पर नहीं पहुंच सकता ।

वे कहते हैं, यदि आप शीर्षस्थ पद पर पहुंचना चाहते हैं तो बिल्ली की तरह चतुर बनिए और कुत्ते की तरह व्यवहार कीजिए । यानी स्वामि भक्त !

बिल्ली-कुत्ते से सीखें

बिल्ली और कुत्ते में अंतर है । जब आप घर पहुंचते हैं तब कुत्ता आपके स्वागत में प्रसन्नता से पूंछ हिलाता है, जबकि बिल्ली आपकी उपेक्षा करते हुए चुपचाप बैठी रहती है । उसकी अपनी प्राथमिकताएं हैं । निगमों में ऐसी ही प्रवृत्ति के लोग होते हैं । कुत्ते व्यग्र, उत्साही, अच्छे स्वभाववाले और सहयोगियों के साथ खेलते-कूदते हैं । बिल्ली शांत, योग्य, विचारशील और सम स्वभाववाली होती है ।

पदोन्नति किसकी होती है ? कुत्तों की !

इनके भी बयां जुदा-जुदा

माना कि तेरी दीद के काबिल नहीं हूं मैं
तू मेरा शौक देख मेरा इंतजार देख

— डॉ. इकबाल

यह सोचकर कोई निकले निजात की सूरत
तुम्हारे साथ भी कुछ दूर चलके देखते हैं

— बज़्मी तमन्नाई

वफा क़ैसी कहां का इश्क जब सर फोड़ना ठहरा
तो फिर ए संगदिल तेरा ही संगे आस्ता क्यूं हो

— गालिब

हंसना तो बड़ी शह है रोने भी नहीं देते
लम्हे तेरी यादों के कुछ ऐसे भी आते हैं

— वाहिद सहरी

आबला पा कोई इस दश्त में आया होगा
वरना आंधी में दिया किसने जलाया होगा

— मीना कुमारी

अगले वक्तों की कहानी को दोबारा लिखकर
हम फकत उसकी इबारत को बदल देते हैं

— नोईद मिर्जा

फिर यूं हुआ कि डूब गये आंसुओं में हम
एहसान बारिशों का गवारा नहीं हुआ

— शबनम रोमानी

रोकेगी क्या भला मुझे राहों की तीरगी
लाखों चिराग हैं मेरे अज़्मे सफर के साथ

— मुनीर कानपुरी

उसे कहो कि वह शब कट चुकी जो मुश्किल थी
गुजर गया वह लम्हा जो जां पे भारी था

— अशरफ यूसुफी

जवाज कुछ भी हो लेकिन हमारी बस्ती में
किसी पड़ोसी का रोना अजीब लगता है

— फहीम अहमद फहीम

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक आलोचक ही सफलता का सर्टिफिकेट देता है । इस काम में अपने अहम को आड़े मत आने दीजिए । दस में से नौ लोगों के मामले में यही अहम आड़े आता है । लोग अपनी सृजनात्मक प्रतिभा के बल पर मान्यता पाना चाहते हैं, अपनी 'विक्रय क्षमता' के आधार पर नहीं । पर स्वयं से पूछिए— 'क्या यह सब वाकई महत्त्वपूर्ण है ?'

चतुर कौन है ? यह सर्वमान्य तथ्य है कि बिल्ली कुत्तों से ज्यादा चतुर होती है । इसीलिए कहा गया है कि यदि शीर्षस्थ पद पर पहुंचना चाहते हैं तो बिल्ली की तरह चतुर बनिए और कुत्ते की तरह व्यवहार कीजिए । एक बात और, समझौता करना सीखिए । चाहे सिद्धांतों को लेकर ही क्यों न समझौता करना पड़े ।

अधिकांश भारतीय इन लेखकों की बातों से शायद सहमत नहीं होंगे । उनकी दृष्टि में यह सब अवसरवाद और अपने आपको गिराने की भांति होगा । यह भी कहा जा सकता है कि जो बात अमरीकी समाज में लागू है, वह भारतीय समाज में कैसे लागू हो सकती है । हमारे अपने जीवन-मूल्य हैं, कार्यशैली की एक परंपरा है, नैतिकता है । सफलता के ये नये सूत्र अमरीकी समाज को ही मुबारक हों ।

पर एक आशंका या संभावना भी है । 'ग्लोबनाइजेशन' के इस दौर में क्या हम-आप ऐसी विचारधारा से असंपृक्त रह सकते हैं ! ●

आहें भरना बुरा नहीं !

एक अध्ययन से यह प्रकट हुआ है कि जो लोग बीमारी के समय कराहते और आहें भरते हैं, वे खामोशी से दर्द बर्दाश्त करने वाले रोगियों की तुलना में जल्दी स्वस्थ हो जाते हैं ।

— मंजु आर. अग्रवाल

गोद लिए बच्चे ज्यादा बुद्धिमान होते हैं

ब्रिटेन की एक प्रसिद्ध संस्था— 'नेशनल चिल्ड्रंस ब्यूरो' ने अपने सर्वेक्षण के दौरान निष्कर्ष निकाले हैं कि गोद लिए बच्चे, अन्य दूसरे बच्चों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान और मेधावी होते हैं, वे वैध और अवैध दोनों प्रकार के बच्चों में कुशाग्र बुद्धि के धनी होते हैं ।

इस प्रकार का सर्वेक्षण बारह हजार बच्चों के ऊपर, नेशनल चिल्ड्रंस ब्यूरो ने किया है ।

— डॉ. विद्या श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सनसनीखेज कथा

पुनर्जन्म होता है !

● के. बी. स्वरूप

काल अपने पिता के साथ

राजस्थान की अजमेर नगरी से २२ किलोमीटर की दूरी पर ब्यावर मार्ग पर केसरपुरा नामक एक ग्राम स्थित है । इस ग्राम के रावत राजपूत परिवार में एक चार वर्ष का बालक बलराम उर्फ कालू है । हाल ही में कालू ने अपने पूर्वजन्म के विषय में सनसनीपूर्ण व रोचक तथ्यों को बताकर राज्य में ही नहीं, वरन् देशभर में तहलका मचा दिया है । कालू के अनुसार वह पूर्वजन्म में समीप के कोठड़ा ग्राम निवासी हालू सिंह की संतान था तथा उसका पूर्व नाम मदन सिंह था । मदन सिंह ट्रक पर मजदूरी किया करता था तथा उसका मित्र पांचू उसके साथ ट्रक चलाया करता था । मदन सिंह की आयु ३०-३२ वर्ष थी । १८ फरवरी, १९९० को अंधेरी रात्रि को पांचू के साथ मदन सिंह ट्रक चला रहा था । अजमेर ब्यावर मार्ग पर सराधना के समीप ट्रक का संतुलन बिगड़ने से दुर्घटना में पांचू की मृत्यु घटनास्थल पर हो गयी तथा कुछ ही समय पश्चात मदन सिंह ने दम तोड़ दिया । इस भयंकर हादसे में मदन सिंह के कान के अंदर लोहे का सरिया घुसने से उसकी मृत्यु हो गयी थी । अजमेर चिकित्सालय के दस्तावेजों से ज्ञात होता है कि मदन का उपचार किया गया था, जबकि उसके घनिष्ठ मित्र पांचू की देह घटना-स्थल से आयी थी ।

घटना की पुष्टि

पूर्वजन्म की इस अद्भुत घटना को लेकर केसरपुरा ग्रामवासियों ने भी पुनर्जन्म की घटना की पुष्टि की । तथ्यों की जानकारी के लिए कालू के घर का पता किया गया । विभिन्न पगडंडियों से होते हुए तीन किलोमीटर मार्ग तय करके, कालू के रावत खेड़ा में स्थित एक छोटे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान का पता चला । कालू के दो बड़े भाई हैं । मां घीसीबाई है । कालू के विषय में उसने बताया कि उसके पिता अजयसिंह हैं । कालू की मां घीसीबाई ने एक तथ्य का रहस्योद्घाटन किया । कालू जब मात्र छह मास का था तब उसने जोर-जोर से मां कहकर बोलने का प्रयत्न किया, परंतु इस पर न तो किसी ने कोई ध्यान दिया न ही उसको किसी ने भी बोलने के लिए प्रोत्साहित किया । उसकी मां के अनुसार विगत छह मास से, कालू जब अच्छे मूड में होता है, तब अपने पूर्व जन्म के तथ्यों के विषय में बताया करता है । कालू अपने आपको अपने पूर्व नाम मदन सिंह के नाम से बुलाना पसंद करता है । कालू की मां ने बताया कि दो माह पूर्व कालू अपने पिता अजय सिंह को समीप में स्थित अपने पूर्व निवास स्थान कोटड़ा ग्राम लेकर गया तथा रास्ते का मार्ग दर्शन करते हुए कालू ने अपने पूर्व परिवार के दो खेतों की ओर संकेत करते हुए अपने पिता से कहा कि एक खेत में मशीन लगी हुई है तथा दूसरे में नहीं है । कालू ने अपने वर्तमान पिता के साथ पूर्व पिता हालू सिंह, पूर्व पत्नी सीता तथा अपनी दो बहनों को पहचाना ।

सरिया कान में लगने से मृत्यु

कालू के पूर्व पिता ने भी इस तथ्य की पुष्टि की कि वह फरवरी १९९० में एक सड़क दुर्घटना में मारा गया । इस दुर्घटना में एक लोहे की सरिया उसके कान में घुस गयी थी, जिसका निशान उसके दायें कान पर आज भी मौजूद है । हालू सिंह ने बताया कि कालू (मदन सिंह) जब बच्चा था तब वह पत्थर तोड़ रहा था तो पत्थर के टुकड़े उसके पेट तथा टांगों पर लग गये, जिससे कि शरीर के उन भागों में स्थायी निशान बन गये । जब उसकी टांगों को देखा गया तो पाया कि घावों के निशान अब भी टांगों पर मौजूद हैं । उसकी पूर्व पत्नी सीता तो कालू को अपने परिवार में रखना चाहती है, परंतु वह अपने वर्तमान माता-पिता के पास ही रहना पसंद करता है । पूर्व पिता हालू सिंह ने कहा कि

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. बृहस्पति— पृथ्वी से १३१७ गुना बड़ा । पृथ्वी से ६४ करोड़ कि.मी. और सूर्य से ७७ करोड़ ८३ लाख कि. मी. दूर, ख. ९ घंटे ९२ सेकंड में, ग. १९८९ में अमरीका ने 'गैलीलियो' अंतरिक्ष-यान भेजा है (अगले वर्ष ग्रह के पास पहुंचने की संभावना), २. चीन के हेनान प्रांत में— हड्डियों के ढांचे का जीवाश्म (गत वर्ष उसके अंडों के जीवाश्ममिले थे), ३. क. इंगलिश चैनल के नीचे, ख. ब्रिटिश द्वीप को शेष यूरोप से, ४. यमुनोत्री के पास— सूर्यकुंड, ५. 'रामचरितमानस' में— जीह जसोमति हरि हलधर से (बालकांड), ६. क. तक्षशिला के राजा आम्भीक ने, ख. झेलम के तट पर, ७. क. उत्तर-प्रदेश (१४ करोड़), ख. संयुक्त राज्य अमरीका (उ. अम.) तथा ब्राजील (द. अम.), ८. क. १८-वर्षीया सुष्मिता सेन ने, ख. ७७ देश, ९. क. डॉ. यशपाल, ख. पद्मश्री गोपाल प्रसाद व्यास, १०. क. काराकोरम की चोटियों पर भारतीय सेना के पर्वतारोही दल ने, ख. ३ अलग-अलग चोटियों पर ३९ सैनिक चढ़े और सभी चोटियों पर ४ सैनिक, ११. साठ के दशक के मध्य में भारत में पाया कोको फल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे अपना पुत्र बनाकर रखना चाहती है तथा सारी संपत्ति उसके नाम करने की इच्छा रखता है। चूंकि मदन सिंह (वर्तमान कालू) एकमात्र उसका पुत्र था। कालू जब अपनी बहनों से मिला तो बहनों ने उसको पैसे देने चाहे तो कालू ने मना कर दिया तथा उनसे कहा कि मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूं, तथा उसने उनके सिर पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया। कालू अपने पूर्व परिवारजनों से मिलकर प्रसन्न होता है। वह समय-समय पर अपने पूर्व परिवार में जाता रहता है।

कालू बताता है कि विगत फरवरी १९९० में जब वह ट्रक चला रहा था, तब उसकी तथा उसके घनिष्ठ मित्र पांचू की मृत्यु हो गयी। कालू बताता है कि 'मृत्यु के पश्चात' मैं तथा पांचू अपने सूक्ष्म शरीर से साथ-साथ चलने लगे तथा कुछ आगे चलने के पश्चात मैं तो एक दुकान से टेप के मधुर राजस्थानी गाने के बोल सुनने के लिए रुक गया, जबकि पांचू रावलों के खेतों की ओर निकल गया। अभी तक यह ज्ञात नहीं हो सका कि पांचू का कहीं पुनर्जन्म हुआ है या नहीं। यह घटना १९-२० फरवरी, १९९० की है।

कालू की वर्तमान मां घीसीबाई का कहना है कि हमारे यहां टेप-रिकार्डर पर राजस्थानी गीत अकसर सुने जाते हैं। संभवतया कालू राजस्थानी गीत सुनने हमारे यहां प्रविष्ट हो गया हो। कालू के पिता को अपने इस बच्चे की जन्म तिथि का सही-सही ज्ञान नहीं है। अगस्त १९९० में कालू का जन्म हुआ था। कालू अपनी वर्तमान मां को मां नहीं मानता है। तथा कहता है कि मेरी मां की मृत्यु जाप के लड्डू खाने के पश्चात हो गयी थी। इस तथ्य की पुष्टि पूर्व जन्म के परिजनों से मिलकर की गयी। कालू की मां की मृत्यु बहुत पहले हो गयी थी। कालू अपने चार बड़े भाइयों को भी भाई नहीं मानता है।

पूर्वजन्म के पिता

कालू के पूर्वजन्म के पिता हालू सिंह उसे अपने पूर्व पुत्र के समान देखते हैं। उनका मदन सिंह के सिवाय कोई पुत्र नहीं था। वह उसे अपने पास रखने की इच्छा रखते हैं। जब कालू से पूछा गया कि तुम अपने पूर्व जन्म के परिजनों व पत्नी के पास जाने की इच्छा रखते हो, तब उसने इनकार कर दिया तथा कहा कि मैं इसी घर में रहूंगा।

कालू में कभी बाल सुलभ लक्षण दिखायी देते हैं तो कभी वयस्क होकर गंभीर बातें करता है तथा जवाब देता है। उसके हावभाव से वह चारों भाइयों से अधिक परिपक्व बुद्धिवाला दिखता है।

कालू के पुनर्जन्म की घटना वैज्ञानिकों व परामनोवैज्ञानिकों के शोध का एक गंभीर विषय है।

केसरपुरा ग्राम की चौपाल, पान की दूकान तथा मंदिर में सर्वत्र कालू के चमत्कारिक पुनर्जन्म की घटना की चर्चा जोरों पर है। इन पंक्तियों के लिखने तक देश के कोने-कोने से लोग इस दूरस्थ ग्राम केसरपुरा में कालू से मिलने आ रहे हैं। तथा इस ग्राम में मेले का-सा दृश्य होता जा रहा है।

—द्वारा : पो. ऑ. बॉक्स ३३३,
जयपुर-३०२००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिड़िया

सूरज की
किरण के साथ
दिनचर्या की
शुरूआत
पेट भरने का
अध्यवसाय
कमरतोड़ भागदौड़
फिर भी चपलता
चहकना/फुदकना
फिर अंधेरा घिरते ही
लौट आना
अपने नीड़ को
और...
लंबी तानकर
सो जाना

—नीलम खरे

शिक्षा : एम. ए. (इतिहास)
आत्मकथ्य : सामाजिक विषमता जब कचोटती है तो कविता स्वतः जन्म लेकर लेखनी के माध्यम से एक आकार ग्रहण कर लेती है ।
पता : कबीर चौक, मंडला, जिला—मंडला (म. प्र.) ४८१६६१

विलुप्त हम

जय और पराजय में
हम ऐसे उलझे कि
अंतरराष्ट्रीय होती इस दुनिया में
अपनी दुनिया इन दो शब्दों में
सिमटकर रह गयी
इनमें
लुप्त लगता है समाज
बेढब-सा स्वदेश
पराये से स्वजन
बागी से लगते सिद्धांत
कोशिशों की आग में तपाये मन
देशहित से समाहित
फिर जनहित
अब स्वहित की सीढ़ी पर रुके
स्वयं से बिछुड़े हुए हैं हम
जग की विशालता में तो न लीन हो सके
और न खो सके इसके विस्तार में
इन दो शब्दों में विलीन हो गये
जय का पर्याय बनने के लिए
विलुप्त हैं हम ।

● सीमा मिश्रि

शिक्षा : बी. एस. सी.
आत्मकथ्य : जब मन व मस्तिष्क का मंथन [illegible] तो अभिव्यक्ति कविता का रूप लेती हैं ।
पता : ए-११७ न्यू कॉलोनी
कालागढ़-२४६१४२
बिजनौर (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ान और अभिशाप

उड़ान मेरी नियति है
यह बात सही है
लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि
मैं आकाश से
धरती की ओर न देखूं
मैं अपने हाथों से
निगाहें फेर लूं
मैं अपनी डारों को भूल जाऊं
मैंने भोर में उड़ान भरी थी
संध्या जब भी आये
मुझे वापस लौटना है
क्योंकि वसुंधरा
मेरी शरण स्थली है
वसुंधरा न होती
तो उड़ान थी कहां संभव
पंछी जो भी हो
उसे यह ध्यान रहे कि
समय का पत्थर अकसर
पंख भेदता या तोड़ता नहीं है
बल्कि पंखों में घाव छोड़ जाता है
और फिर पंख होते हुए भी
न उड़ सकने की विवशता
क्या एक अभिशाप नहीं है ?

—शकील उद्दीन अहमद

शिक्षा : तीन विषयों में पोस्ट ग्रेजुएट
आत्मकथ्य : मन की झुंझलाहट, मुनि के समुंदर की भांति जीवन को होंठों से पी लेने की प्यास, लेखनी की धारा में एकत्रित हो जाती है ।
पता : द्वारा श्री अफरोज कुरेश
जी/एच १/३, चीता कैंप, ट्राम्बे बंबई ८८

सूरज से दीये तक

सभी अचंभित से
देखते ही रह गये ।
किसी ने सोचा भी न था
कि एक दिन
अचानक यों
भरी दुपहरी में
पूरे आसमान पर
चमकता सूरज गायब हो जाएगा
और
उनके लिए छोड़ जाएगा
अनंत अंधकार ।

अब सभी को
दीये की तलाश है
आभासी प्रकाश के लिए ।
क्या पता !
सुबह फिर सूरज निकल जाए
या फिर धर ले
दीया ही सूरज का रूप ।

—संदीप धामू

शिक्षा : अध्ययनरत, सीनियर हायर सैकेंडरी
पता : पोस्ट-परलीका, वाया-गोगामेड़ी
जिला—श्रीगंगानगर (राज.) ३३५५०४
आत्मकथ्य : पढ़ने व गृहकार्य के बाद लिखने को मन मचल उठता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप सफल उद्यमी बन सकते हैं ?

आमतौर पर लोग-बाग यही सोचते हैं कि उद्यमी या व्यवसायी बनने के लिए किसी व्यक्ति में एक प्रोफेसर जैसी विद्वता, दूरगामी भविष्य को देखने की एक ज्योतिषी जैसी दृष्टि, धनी व्यक्ति जैसा खूब पैसा, सेल्समैन-जैसा दूसरे को प्रभावित करनेवाला गुण, पैसे का जुगाड़ करने के लिए वित्तीय सूझ-बूझ, एक ऑडीटर की तरह नपा-तुला हिसाब-किताब, राजनेता जैसी शक्ति और फिल्म स्टार-जैसा चुंबकीय व्यक्तित्व होना चाहिए, लेकिन कितने सफल व्यवसायी हैं, जो इनमें से एक या दो विशेषताएं भी रखते हों। वस्तुतः एक सफल उद्यमी के लिए उपरोक्त गुणों की अपेक्षा आवश्यकता केवल एक बात की है, और वह है— जमकर काम करने की बात दृढ़ इच्छा-शक्ति।

यदि आप उद्यमी बनने को सोच रहे हैं तो पहले निम्नलिखित प्रश्नों द्वारा अपना परीक्षण कीजिए—

१. क्या आप अपने को इस योग्य पाते हैं कि अपने विचारों को आप दूसरों को बेच सकें ?
२. क्या आप स्वतंत्र रूप से काम करने में सक्षम हैं ?
३. क्या आप एक समय पर बहुत-से काम और समस्याओं का सामना कर सकते हैं ?
४. क्या आप अपने बॉस से कहीं अधिक चुस्त-दुरुस्त हैं ?
५. क्या आप में वह क्षमता है कि आप एक समस्या के कई वैकल्पिक हल निकाल सकें ?
६. क्या आप में वह क्षमता और इच्छा-शक्ति है कि आप कई-कई घंटे लगातार काम करते रह सकें ?
७. क्या आप में वह कार्य-कुशलता है कि जिसे दूसरे लोग सराह सकें ?
८. क्या आप में वह चाहत है कि आप अधिक से अधिक जान सकें, सीख सकें ?
९. क्या आप निरंतर प्रयासरत रहते हैं ?
१०. क्या आप ऐसा मानते हैं कि आपके जीवन की अधिकांश घटनाएं आपके स्वयं के निर्णय के अनुसार घटित हुई हैं ?

यदि आप इन दस प्रश्नों में से सात या इससे अधिक के उत्तर 'हां' में देने की स्थिति में हैं, तो उद्यम के क्षेत्र में उतरिए अन्यथा कोई और रास्ता चुनिए।

— कृष्णकांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

लौट आने का समय :

सीताकांत महापात्र समकालीन भारतीय साहित्य में एक प्रमुख नाम है। वे उड़िया मातृभाषा में लिखनेवाले भारतीय कवि हैं, जिनकी कविताओं में भारतीय मानस रूपायित हुआ है। वे जहां असीम से परिचित हैं, वहां वे जीव की सीमाओं से भी अवगत हैं। सीम-असीम, जीव-ब्रह्म, चर-अचर के बुनियादी सवालों से जूझती हुई उनकी ये कविताएं परे लोक की नहीं हैं, इस लोक की हैं। अपनी कविता 'लेखा-जोखा' में वे कहते हैं—

फिर भी दीर्घ फर्द की तफसील में/पूरे जोड़ का परिणाम शून्य होता है/ समझ नहीं पाता वह आदमी/वह किसका/किस अदृश्य हाथ का षड्यंत्र है कहीं इसी का नाम भाग्य या नियति तो नहीं/ ज्योतिषी और दादाजी के मुंह से/ जो शब्द सुनकर/ मन खड़ा था बचपन में हंसते-हंसते !

इसमें आदमी (और औरत) की स्मृतियां, दुःख और सुख, पछतावा और संकल्प के अतिरिक्त उसकी आशावादिता परिलक्षित है, जो भाग्य या नियति को ललकारती हुई आगे बढ़ती है। कविताओं का अनुवाद सुबोध और सरस है।

दीमक : डॉ. केशुभाई देसाई के प्रस्तुत उपन्यास का नामकरण कैसे हुआ ? लेखक को लगा कि भारतवर्ष की गरिमा को हिंदू-मुसलमान सांप्रदायिकता की दीमक लग गयी है और इससे हमारा जीवन पहले-जैसा सुखमय नहीं रह गया।

लौट आने का समय : मूल कवि : सीताकांत महापात्र; अनुवादक : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र; प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली-३। पृ. सं. : १८; मूल्य : सत्तर रुपये।

चिर-कल्याणी : बहुत से लोगों को यह पता नहीं होगा कि राजा दशरथ की एक बेटी भी थी यानी श्रीराम की एक बहन भी थी। उसका नाम शांता था। इधर हमारे भारतीय साहित्य में उपेक्षित पात्र-पात्राओं का विशद चित्रांकन हुआ है।

प्रस्तुत पौराणिक उपन्यास 'चिर-कल्याणी' में इसी दशरथ-नंदिनी और श्रीराम की भगिनी शांता को चित्रित किया गया है। लेखिका ने इस विषय का गहन अध्ययन कर और अपनी विशद कल्पना शक्ति का प्रयोग कर शांता के जीवन के माध्यम से उस युग के गहन सत्यों का उद्घाटन किया है।

यह कृति आद्योपांत पठनीय है।

चिर-कल्याणी— लेखिका : श्रीमती क्रांति त्रिवेदी, प्रकाशक : पांडुलिपि प्रकाशन, नयी दिल्ली-५१, पृ. सं. : २६४; मूल्य : एक सौ पचास रुपये।

कथानायक बचू ने कभी यह नहीं सोचा था कि देहात में विभिन्न धर्मावलंबी लोगों के साथ रहते-रहते ऐसा भी एक दिन आएगा, जब सब लोग सांप्रदायिक आग में झुलस उठेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक ने अपनी इस सफल कृति द्वारा देश की दुखती नस पर हाथ रखा है ।

दीमक : लेखक : डॉ. केशुभाई देसाई; प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली-३; पृ. सं. : १६३; मूल्य : नब्बे रुपये ।

सूरज उगने तक: प्रस्तुत कहानी-संकलन में चंद्रकांता की तेईस कहानियां दी गयी हैं, जिनमें से कुछ कहानियों में कश्मीर का आज का लहूलुहान चेहरा दिखायी देता है । वे कश्मीर में पैदा हुई थीं और उन्होंने इस वादी के पर्वतों, नदियों, चीड़, देवदार और झीलों से असीम प्रेम किया है । लेकिन इधर वहां जो कुछ हो रहा है, वह उनकी कुछ कहानियों में अनायास ही आ गया है । उनका मानना है कि इस संबंध में जो लोग चुप रहते हैं, वे बोलना सीखें । गलत बात पर मौन साध जाना गलत बात के विरुद्ध संघर्ष से विमुख होना है ।

उनकी कहानियों में विषय-वैविध्य है । आधुनिक मानव के क्षत-विक्षत चेहरे के कई पहलू हैं ।

सूरज उगने तक : लेखिका : चंद्रकांता; प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली-३; पृ. सं. : २७२; मूल्य : एक सौ पांच रुपये ।

हिंदू धर्म क्या है : आजकल हिंदुत्व या हिंदू धर्म को लेकर पूरे राष्ट्र-स्तर पर बहस चल रही है । इस बहस में कहीं-कहीं तो हिंदुत्व अपना सही स्वरूप छोड़कर संकीर्ण अर्थों में निरूपित हुआ है । इस विषय पर महात्मा गांधी के विचार थे ?

महात्मा गांधी के १२५वें जन्म-शती के अवसर पर उनके द्वारा 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' पत्रिकाओं में हिंदी और गुजराती में प्रकाशित लेखों के आधार पर चयनिका तैयार की गयी है । इसके पहले में ही स्पष्ट किया गया है कि महात्मा गांधी अनुसार हिंदू धर्म और कुछ नहीं, अहिंसा साधनों द्वारा सत्य की खोज है । उनके विचार अपने में ही बहुत कुछ है । इस के शेष बयालीस लेख उनके इस विचार सांगोपांग व्याख्या करते हैं ।

हिंदू धर्म क्या है ? — लेखक : महात्मा प्रकाशक : नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नयी दिल्ली-१६; पृ. सं. : ११३; मूल्य : मात्र

मोतीलाल जोत

खुशबू तो बचा ली जाए :

आज के वातावरण में जिस तरह की आपा-धापी, मारकाट के बीच लोग जी रहे हैं, उन भावनाओं को अभिव्यक्ति दे लक्ष्मीशंकर वाजपेयी की यह रचनाएं

सर छुपाए, अब कहां जाकर भला इनसान
गांवों में धीरे-धीरे जब लगा घुलने शहर

जो उसूलों से परेशान रहे
जिंदगीभर लहूलुहान रहे
जिसने खुशबू की इबारत लिख दी
लोग उस फूल से अनजान रहे

यह रचनाएं बगैर किसी लाग-लपेट सरल शब्दों में मन को छू जाती हैं । पढ़ने योग्य हैं ।

खुशबू तो बचा ली जाए; कवि :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

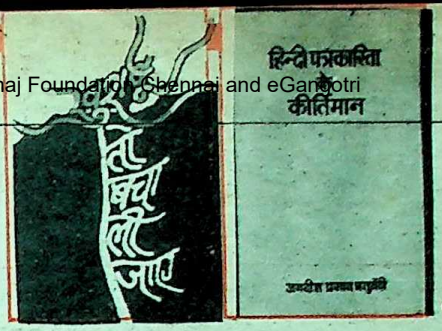

...यी, प्रकाशक : जगतराम एंड संस,
...८/२२१, मेन बाजार, गांधीनगर,
...ली-११००३१, मूल्य : चालीस रुपये ।

...ल्हा-ताला : वयोवृद्ध साहित्यकार श्री
...मनारायण चतुर्वेदी का नवीनतम उपन्यास है ।
...में उन्होंने प्रसिद्ध महाकाव्य 'आल्हा' के एक
...मुख्य पात्र ताला सैयद को केंद्र बिंदु बना
...हिंदू-मुसलिम एकता को रेखांकित किया है ।
...ला सैयद बनारस के एक वीर सरदार थे । वे
...ल्हा के पिता जस्सराज के दाहिने हाथ थे ।
...स्सराज के निधन के बाद उन्होंने ही
...ल्हा-उदल की परवरिश की थी । यही नहीं,
...अंत तक दोनों भाइयों के हितैषी बने रहे और
...उनके लिए अनेक लड़ाइयां लड़ीं । श्री चतुर्वेदी
...ताला सैयद के जीवन की कहानी रोबक शैली
...में लिखी है । उन्होंने आल्हा और ताला सैयद
...के संबंधों को हिंदू-मुसलिम एकता की अनूठी
...मिसाल के रूप में प्रस्तुत किया है ।

...ल्हा-ताला
...खक-रामनारायण चतुर्वेदी, प्रकाशक-अनिल
...काशन, ६७ लाजपत कुंज, आगरा-२,
...ल्य-तीस रुपये

...दी पत्रकारिता के कीर्तिमान : हिंदी
...त्रकारिता का प्रारंभ लगभग अड़सठ वर्ष पूर्व
...० मई १८८७ को हुआ था । तब से लेकर तो
...आज तक हिंदी पत्रकारिता ने देश और समाज
...के लिए बहुत कुछ किया है ।
...स्वाधीनता-आंदोलन के प्रचार-प्रसार में हिंदी

पत्रकारिता ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है और यही नहीं, सामाजिक कुरीतियों पर सशक्त प्रहार करने से भी वह कभी पीछे नहीं हटी है । प्रस्तुत पठनीय कृति में सुप्रसिद्ध पत्रकार पं. जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी ने ऐसे पैंतीस प्रखर संपादकों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है, जिनके बारे में हिंदी पत्रकारिता की नयी पीढ़ी के सदस्य भी शायद ही भलीभांति जानते हों । यह पुस्तक केवल संपादकों का परिचय मात्र नहीं, हिंदी पत्रकारिता का इतिहास भी कहा जा सकती है । पुस्तक में पृष्ठ-पृष्ठ पर ऐसे अनेक प्रेरक प्रसंग बिखरे पड़े हैं जिनसे एक ओर जहां पुरानी पीढ़ी के पत्रकारों के प्रति श्रद्धा और गर्व का अनुभव होता है तो दूसरी ओर प्रेरणा भी मिलती है ।

हिंदी का प्रथम पत्र 'उदंत मार्तंड' था, यह सभी जानते हैं, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि उसके संपादक-प्रकाशक पं. युगलकिशोर शुक्ल थे, जिन्होंने हिंदी पत्रकारिता की वे परंपराएं डालीं, जिनमें से कुछ पर तो भारत के स्वाधीन होने तक हिंदी समाचार-पत्र अमल करते रहे ।

हिंदी पत्रकारिता के कीर्तिमान :
लेखक—जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी,
प्रकाशक-साहित्य संगम, नया १००, लूकरगंज,
मूल्य दो सौ पच्चीस रुपये ।

— शैलेन्द्र सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोक्षदायिनी गंगा का राष्ट्रपति द्वारा लोकार्पण

नयी दिल्ली । मध्य प्रदेश खंडवा के रचनाकार श्री रामवरण ओझा की नवीनतम काव्यकृति मोक्षदायिनी गंगा का राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने लोकार्पण किया । इस अवसर पर राजधानी के अनेक साहित्यकार एवं पत्रकार उपस्थित थे । इनमें सर्वश्री राजेन्द्र अवस्थी, सुरेश नीरव, अनीस अहमद खान, अशोक रिछारिया तथा कादम्बिनी क्लब खंडवा के संयोजक श्री रमेश अबूहाड़ प्रमुख थे । कार्यक्रम का संचालन सुरेश नीरव ने किया । इस अवसर पर राष्ट्रपति महोदय ने कहा— मोक्षदायिनी गंगा भारतीय संस्कृति को जीवंत रखने का एक सार्थक काव्यात्मक प्रयास है और इस प्रकार की रचनाओं से संस्कृति और साहित्य के बीच एक रचनात्मक संतुलन कायम होता है ।

प्रस्तुति : रमेश चौधरी

कादम्बिनी क्लब की काव्य निशा

ग्वालियर कादम्बिनी क्लब के तत्वावधान में स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की पुण्य तिथि के अवसर पर एक काव्य निशा का आयोजन किया गया । लशकर पूर्व से विधायक डॉ. आर.के. गोयल कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि श्री रामप्रकाश अनुरागी ने की । इस समारोह में काव्य पाठ करनेवाले कवियों में मुख्य रूप से राम अनुरागी, कल्कि स्वामी, महेन्द्र पटु, लक्ष्मण कानडे, राम पंजवानी, यतीन्द्र स्वदेशी, मालती ग्वालियरी, कामिल, पीयूष चतुर्वेदी ने अपनी रचनाओं से देर रात्रि तक वातावरण को सरस बनाये रखा । कार्यक्रम का संचालन महेन्द्र पटु किया तथा अंत में कादम्बिनी क्लब के संयोजक राम प्रकाश चौधरी ने समस्त कवियों और श्रोताओं के प्रति आभार प्रदर्शित किया ।

'कादम्बिनी' में प्रकाशित रचनाओं पर विचार-विमर्श

गिरिडीह । 'कादम्बिनी' क्लब द्वारा नियमित रूप से गोष्ठी आयोजित की जाती है, जिसमें सदस्य न केवल अपनी रचनाओं का पाठ करते हैं, वरन सम सामयिक, सामाजिक, साहित्यिक सांस्कृतिक विषयों पर विचार-विमर्श भी करते हैं । हाल ही में इसी तरह की एक गोष्ठी संपन्न हुई, जिसमें क्लब के सदस्य श्री गोपेश्वरम के झारखंड समस्या पर प्रकाशित एक लेख पर चर्चा हुई । इस गोष्ठी में श्री राम किसुन सोनार एवं श्री कैलाश चंद्र ने काव्यपाठ किया । इस बैठक में 'कादम्बिनी' के लोकप्रिय स्तंभ 'कालचिंतन' के अलावा जून अंक में प्रकाशित लेखों, कहानियों और कविताओं पर विस्तार से चर्चा की गयी ।

मई में आयोजित गोष्ठी में क्लब के सदस्य सर्वश्री अशोक कुमार गुप्ता, राजेन्द्र कुमार 'चिरप्यासा', राम किसुन सोनार, डॉ. रामजी सिंह, कांचनकुमार मंडल एवं भोलानाथ ने काव्य-पाठ किया । पढ़ी गयी कुछ रचनाओं पर चर्चा भी हुई और उनमें संशोधनों का भी सुझाव दिया गया ।

— कैलाश चंद्र, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक समाचार

अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति का पंचम प्रकाशन

सिनसिनेटी, ओहायो । अमरीका में अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति द्वारा प्रकाशित रेणु गुप्ता का काव्य संग्रह 'प्रवासी स्वर' का लोकार्पण हुआ । लोकार्पण भारतीय विद्या भवन, न्यूयार्क के निदेशक एवं लेखक डॉ. पी. जयरामन द्वारा संपन्न हुआ । साथ ही कवि गोष्ठी का आयोजन हुआ । उसमें भारत से कवि श्री गुलाब खंडेलवाल एवं सिनसिनेटी, कोलंबस, डेयटन, लेकजिंगटन के अनेक कवियों ने कविता पाठ किया । डॉ. रवि प्रकाश सिंह (पूर्व अध्यक्ष) ने अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति का परिचय दिया । साथ में भविष्य की गतिविधियों से अवगत कराया । इसी अवसर पर सिनसिनेटी में हिंदी समिति की शाखा का शुभारंभ हुआ ।

स्व. मुन्नू गुरु की यादगार में स्मृति का अखिल भारतीय संगीत समारोह

कानपुर में गत दिवस शास्त्रीय गीत-संगीत एवं कथक नृत्य की सरस प्रवाह वाली संगीत यामिनी का आयोजन स्थानीय लाजपत भवन प्रेक्षागार में किया गया । सांस्कृतिक संस्था स्मृति के तत्वावधान में यह संगीत संगमन स्व. जितेन्द्र कुमार मिश्र मुन्नू गुरु की स्मृति में आयोजित किया गया था ।

इस चौदहवें अखिल भारतीय संगीत समारोह का प्रारंभ मां वाणी की सरस वंदना के साथ

कुमारी रचना शुक्ला द्वारा प्रस्तुत रचना 'वरदायिनी मृदुभाषनी' के साथ हुआ । बनारस घराने की कथक नृत्यांगना एवं नृत्याचार्य जितेन्द्र महाराज की शिष्याओं नलिनी-कमलिनी द्वारा प्रस्तुत शिव वंदना से संगमन का गरिमा से परिपूर्ण प्रारंभ हुआ । जितेन्द्र महाराज ने तीन ताल को अंग भाव के माध्यम से नवरसों को भावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया ।

इस संगीत यामिनी का उद्घाटन प्रसिद्ध संगीत साधिका काशीनाथ बोड्स ने प्रकाश पुंज प्रज्वलित करके किया । पंडित के.ए. दुबे पद्मेश ने इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन किया । कार्यक्रम का संचालन पं. सिद्धेश्वर अवस्थी ने किया । कार्यक्रम संयोजक राजेन्द्र मिश्र बब्बू ने स्वागत एवं आभार रामप्रकाश शुक्ल शतदल ने व्यक्त किया ।

□ रामेन्द्र सिंह चौहान

उदय भारती राष्ट्रीय पुरस्कार

मानव संसाधन विकास मंत्रालय नयी दिल्ली की योजनांतर्गत उड़ीसा की वर्णमाला संस्था द्वारा वर्ष १९९४ का उदय भारती राष्ट्रीय पुरस्कार सिंधी कविता के लिए इंदौर की युवा लेखिका रश्मि रमानी को दिया गया ।

उदय भारती राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित भारतीय भाषाओं के पंद्रह लेखकों को भुवनेश्वर में आयोजित एक समारोह में उड़ीसा के राज्यपाल श्री सत्यनारायण रेडडी ने एक प्रशस्ति-पत्र एवं पांच हजार रुपये प्रदान कर सम्मानित किया । इस अवसर पर आयोजित काव्य समारोह में रश्मि रमानी की कविता 'खामोशी' को चयनित किया गया ।

—रश्मि रमानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

● अजय भाम्बी

डॉ. नारायण तिवारी, उज्जैन

प्रश्न : क्या मेरा आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्त होगा ?

उत्तर : आध्यात्मिक दृष्टि से अच्छी उन्नति प्राप्त कर सकते हैं । प्रयासों में सघनता लायें ।

शीला शर्मा, दूरपुर (हि. प्र.)

प्रश्न : रोजगार का साधन क्या तथा कब तक ?

उत्तर : स्वरोजगार का प्रयास करें ।

नीरज सिंह विष्ट, किच्छा (नैनीताल)

प्रश्न : कुंडलिनी जागरण कब तक ? समय स्पष्ट करें ?

उत्तर : हाल-फिलहाल संभावना नहीं है ।

अरुण साहनी, दिल्ली

प्रश्न : विदेश व्यापार एवं भाग्योदय कब ?

उत्तर : आपकी कुंडली गलत है, दोबारा सही भेजें ।

नीलम महाजन, जम्मू

प्रश्न : बीमारी से कब छुटकारा होगा ?

उत्तर : १९९६ में ।

पी. शर्मा, गया

प्रश्न : पुत्री का विवाह कब होगा ?

उत्तर : जब केतु की महादशा प्रारंभ हो तब ।

कु. कृष्णा शर्मा, भानपुरा (म. प्र.)

प्रश्न : राजनीति में प्रवेश कब होगा ?

उत्तर : १९९७ में राजनीतिक प्रगति संभव है ।

रीता भड़ेल, हमीरपुर

प्रश्न : मेडिकल में दाखिला कब तक ?

उत्तर : अगले वर्ष ।

प्यारेलाल नौटियाल, टिहरी गढ़वाल

प्रश्न : व्यवसाय कब शुरू होगा ? प्रेमिका से शादी होगी या नहीं ?

उत्तर : व्यवसाय शुरू होने का योग चल रहा है । विवाह में अभी विलंब है ।

मीनाक्षी शर्मा

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : शीघ्र ही विवाह होने की संभावना है ।

धर्मेंद्र नाथ शर्मा, बरेली

प्रश्न : मकान निर्माण कब तक होगा ?

उत्तर : एक वर्ष के भीतर ।

रिछपाल मेहरा, रोहतक

प्रश्न : पुनः अधिकारी बनने का योग कब तक ?

उत्तर : अगले आठ महीने के भीतर ।

वीरेन्द्र कुमार, अहमदाबाद

प्रश्न : संतान योग कब ?

उत्तर : अगले वर्ष संभावना है ।

अशोक कुमार पाटनी, दीमापुर (नागालैंड)

प्रश्न : निजी व्यवसाय और बंबई में फ्लैट कब तक ?

उत्तर : निजी व्यवसाय नवम्बर के बाद तथा फ्लैट १९९६ में ।

कामिनी खरे, कानपुर

प्रश्न : कानपुर के लिए स्थानांतरण कब होगा ?

उत्तर : अगले वर्ष ।

कीर्ति वाजपेयी, मुरादनगर

प्रश्न : क्या डॉक्टर बनने का योग है ?

उत्तर : नहीं । इंजीनियरिंग या एकाउंट्स में प्रयत्न करें ।

अशोक कुमार पंचोली, इंदौर

प्रश्न : पत्नी के नाम से व्यवसाय करना चाहता हूं । कब से और किस चीज का ? सफल रहूंगा या नहीं ?

उत्तर : एजेंसी लें सफल रहेंगे ।

रामशंकर त्रिपाठी, मनकापुर (गोंडा)

प्रश्न : लेखक बनने का योग है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : अभी इंतजार करें ।

सचिन गुप्ता, दिल्ली

प्रश्न : कैरियर किस लाइन में ?

उत्तर : व्यवसाय में ।

ध्यानचंद्र रावत, मुरादाबाद

प्रश्न : यदि शेयर खरीद लूं तो लाभ या हानि ?

उत्तर : अभी लाभ लेकिन कुल मिलाकर हानि ।

स्नेहलता सिन्हा, भिलाई

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : जून '९५ से पूर्व ।

रामकृष्ण मिश्र, लखीमपुर-खीरी

प्रश्न : भूमि विवाद, मुकदमों का क्या परिणाम होगा ?

उत्तर : आपके पक्ष में रहेगा ।

पंकज निगम झांसी

प्रश्न : क्या रेलवे में सर्विस पा सकूंगा ?

उत्तर : जी हां ।

वी. के. मेहता, नयी दिल्ली

प्रश्न : नौकरी में अगला प्रमोशन कब ?

रत्न सुझायें ?

उत्तर : अगले वर्ष । पुखराज पहनें ।

उर्मिला अग्रवाल, सहारनपुर

प्रश्न : कर्ज से मुक्ति एवं भाग्योदय कब ?

उत्तर : दोनों ही कार्यों के लिए अभी इंतजार करें ।

गीता मिश्रा, पटना

प्रश्न : संतान योग कब है ?

उत्तर : १९९६ में ।

विपुल कौशिक, फैजाबाद

प्रश्न : इंजीनियरिंग में दाखिला कब तक ?

उत्तर : प्रयास करें सफलता मिलेगी ।

— 'नक्षत्र निकेत'
९४४/३, नाईवाला, फेज रोड,
करोलबाग नयी दिल्ली-११०००५

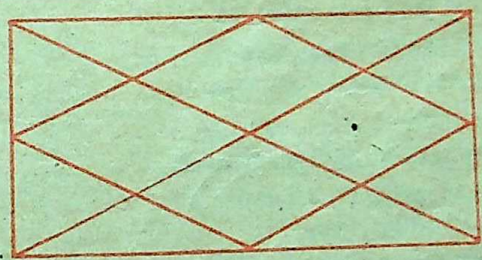

प्रविष्टि—१४९

नाम.....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना..... सन.....

जन्म-स्थान..... जन्म-समय .....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण.....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १४९) 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० अगस्त, १९९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

मतगणना के दौरान एक पत्रकार ने नेताजी से कहा, ''आपके विरोधी दल के उम्मीदवार मतगणना में आगे चल रहे हैं ।''

नेताजी बोले, ''सरकार हम ही बनाएंगे ।''

कुछ देर बाद पत्रकार ने कहा, ''आपके विरोधी दल को बहुमत प्राप्त हो गया है ।''

''सरकार हम ही बनाएंगे ।'' नेताजी बोले ।

अगले दिन पत्रकार ने कहा, ''आपके विरोधी दल ने सरकार बना ली है ।''

''फिर भी सरकार हम ही बनाएंगे । दरअसल ऐसा नहीं कहूंगा तो अनुशासनहीनता के आरोप में दल से निकाल दिया जाऊंगा ।'' नेताजी बोले ।

• • •

''राज्यपाल को हमारे दल को सरकार बनाने हेतु आमंत्रित करना चाहिए था'', नेताजी ने पत्रकार से कहा ।

''पर आपके दल का तो एक भी उम्मीदवार चुनकर नहीं आया । फिर आप सरकार कैसे बनाते ?'' पत्रकार ने पूछा ।

''फिर भी सरकार बनाने हेतु आमंत्रित करने में हर्ज ही क्या था ? हमारे दल की थोड़ी-बहुत इज्जत रह जाती'', नेताजी ने कहा ।

एक नेता और निर्दलीय विधायक में हाथापाई हो गयी । ''तुमने विधायक को चांटा क्यों मारा ?'' पुलिस अधिकारी ने नेताजी से पूछा । ''मैं इस निर्दलीय विधायक को अपने दल के लिए खरीदने हेतु पचास हजार रुपये दे रहा था, पर यह कंबख्त एक लाख रुपये मांगने लगा । मुझे गुस्सा आ गया ।'' नेताजी बोले ।

• • •

''आपकी सफलता का क्या राज है ?'' एक पत्रकार ने फिल्मी लेखक से पूछा । ''मैं फिल्म देखकर उपन्यास लिखता हूं और मेरे उपन्यास पर फिर फिल्म बन जाती है'', लेखक ने कहा ।

• • •

''आपकी दिनचर्या क्या है ?'' एक लेखक से पत्रकार ने पूछा ।

''सुबह नाश्ता करके सो जाता हूं । दोपहर को लंच लेकर सो जाता हूं और रात को डिनर लेकर सो जाता हूं'', लेखक ने कहा ।

''फिर आप लिखते कब हैं ?'' पत्रकार ने पूछा ।

''अगले दिन'', लेखक ने उत्तर दिया ।

—ललित [illegible]

कादंबि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंग

दहेज

उस वृद्धा भिखारन ने
अपनी सुपुत्री का विवाह
एक उच्च कुल के
भिखारी के साथ कर दिया,
और दहेज में
आई.टी.ओ. का व्यस्त चौराहा
अपने दामाद के नाम कर दिया ।

सौंदर्य

वह अपनी कोमल अंगुलियों को
कितने ध्यान से
रख-संवार रही है,
कहीं काली स्याही से
नाखूनों की लाली नष्ट न हो
इसलिए वह बिना वोट दिये ही
'पोलिंग-बूथ' से वापस आ रही है ।

—हरीश अरोड़ा

मुंडन

जब-जब पुत्र के
मुंडन-संस्कार का प्रस्ताव
मेरे सामने आता है
मुझे अपना मुंडन
साफ-साफ नजर आता है ।

बिंदिया

प्रेमिका की बिंदिया पर लट्टू प्रेमी को
अंकगणित समझ में आया
अंक-पत्र परीक्षाफल का
बिंदिया से जगमगाया ।

कवि

कारागार के एक कक्ष के
आठ में से सात कैदियों ने
अंततः आत्महत्या कर ली—
जेलर का संदेह शत-प्रतिशत सही था
आठवां कैदी कवि था ।

आज का रावण

पिता ने कहा—
बेटा, रावण का चित्र बनाओ ।
पुत्र ने प्राचीनता को नवीन रूप दिया—
किसी तथाकथित नेता का चित्र बना दिया !

प्रयोग

शिक्षा-जगत में अब
गजब ढाये जाते हैं
'ग' से 'गणेश' की बजाय
'गधा' पढ़ाये जाते हैं ।

—भागवत शरण झा 'अनिमेष'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यह महीना और आपका भविष्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : मास में उल्लेखनीय प्रगति होगी । संपत्ति अथवा न्यायालयीन कार्यों में श्रम साध्य सफलता मिलेगी । परोपकारी अथवा जोखिमपूर्ण कार्यों से हानि होगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी । वाहन आदि का प्रयोग सावधानी से करें ।

वृषभ : सामाजिक प्रभाव तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । परोपकारी कार्यों में धन व्यय होगा । न्यायालयीन कार्यों में मनोनुकूल सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों अथवा नवीन संपर्कों के माध्यम से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी, आजीविका संबंधी इच्छित परिवर्तन होगा । पारिवारिक दायित्वों की अधिकता से तनाव उपस्थित होगा । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करें, आमोद-प्रमोद में संयम बरतें ।

मिथुन : आजीविका की दिशा में अभीष्ट पूर्ति होगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु-पक्ष का शमन होगा । संपत्ति कार्यों की पूर्ति से उत्साहवृद्धि होगी, निकट जनों का सहयोग मिलेगा । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में विशिष्ट लाभ मिलेगा । यात्राओं की अधिकता से स्वास्थ्य अस्थिर रहेगा । वाणी पर संयम रखें ।

कर्क : परिस्थितियों के परिवर्तन से व्यर्थ मानसिक दुविधा होगी । उच्चाधिकारियों से संभाषण में संतुलन रखें । जीवनसाथी अथवा प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी । मास उत्तरार्द्ध में स्वजनों के सहयोग से आकस्मिक धन लाभ होगा । संपत्ति कार्यों में सफलता मिलेगी । विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा । योजनाओं में उल्लेखनीय प्रगति होगी ।

सिंह : मास में आध्यात्मिक अभिरुचि की अधिकता होगी । पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति से उत्साहवृद्धि होगी । संपत्ति के क्रय-विक्रय का कार्य पूर्ण होगा । सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों में व्यस्तता होगी । शत्रुओं की क्रियाशीलता से व्यर्थ तनाव होगा । उदर-विकार अथवा रक्तचाप से पीड़ा होगी । मासांत में सुखद समाचार मिलेगा ।

कन्या : मास में आर्थिक अस्थिरता की अधिकता होगी । आजीविका की दिशा में सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से वांछित परिवर्तन होगा । प्रवास में अकारण कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा ।

ग्रह स्थिति :

सूर्य १६ अगस्त से सिंह में, मंगल ७ से मिथुन में, बुध १४ से सिंह में, गुरु तुला में, शुक्र १ से कन्या में, शनि कुंभ में, राहु तुला में, केतु मेष में, हर्षल, नेप्चयून धनु में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोखिमपूर्ण कार्यों में, निकटजनों से पीड़ा होगी । जीवनसाथी के सहयोग से विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा, शत्रु-पक्ष का साहस से सामना करें ।

तुला : मास में नवीन संपत्ति संबंधी कार्य की पूर्ति होगी । आकस्मिक धन लाभ से विद्यमान आर्थिक समस्या का समाधान होगा । आजीविका की दिशा में मनोनुकूल परिवर्तन होगा । पुरुषार्थ तथा पराक्रम से उच्च वर्ग में प्रतिष्ठा बढ़ेगी । पारिवारिक वातावरण चिंतनीय होगा । निकटजनों का सहयोग मिलेगा ।

वृश्चिक : मास में व्यर्थ तनाव एवं अकारण विवादों की अधिकता होगी । शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से भयपूर्ण वातावरण का उदय होगा । परिश्रम तथा साहस से उच्चाधिकारियों पर प्रभाव वृद्धि होगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवृद्धि दायक होगा । संपत्ति कार्यों में विलंब हितकर होगा ।

धनु : मास में धीमी प्रगति होगी । पारिवारिक दायित्वों में व्ययाधिक्य होगा । नवीन मित्रों से समागम होगा । राजकीय अथवा न्यायालयीन कार्यों में धीमी प्रगति होगी । शत्रु-पक्ष के प्रभाव विफल होंगे । धार्मिक यात्रा अथवा सत्संग से मनोबल में वृद्धि होगी ।

मकर : रोजगार की दिशा में कार्यों की प्रगति होगी । वांछित पदोन्नति अथवा स्थानांतरण का योग उपस्थित होगा । शत्रु-पक्ष को पराभव का सामना करना होगा । पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । संपत्ति अथवा न्यायालयीन कार्यों में धीमी प्रगति होगी, रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों से यश वृद्धि होगी, प्रवास में स्वास्थ्य संबंधी सावधानी रखें ।

कुंभ : आजीविका संबंधी अस्थिरता होगी । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी, पारिवारिक दायित्वों की अधिकता से मानसिक तनाव होगा । नियमित कार्यों में व्यर्थ अवरोध उपस्थित होंगे ।

मीन : मास में आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । स्वजनों के सहयोग से लंबित योजना की पूर्ति होगी । विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से वांछित पद स्थापना अथवा परिवर्तन होगा । आत्म-विश्वास तथा साहसिक प्रयासों से महत्त्वपूर्ण कार्य पूर्ण होगा । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी । रक्त विकारों से सावधानी रखें ।

—ज्योतिषधाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर,
गोविंदपुरा, भोपाल (म. प्र.)

पर्व और त्यौहार

१. अगस्त श्रावण सोमवार, २. भौम व्रत, ३. कामदा एकादशी व्रत, ४. प्रदोष, ७. दर्श अमावस्या, ८. श्रावण सोमवार, ११. श्री नागपंचमी, १२. कलिक जयंती, १०. हरि तृतीया (हरियाली तीज) वैनायकी गणेश चतुर्थी, १३. गोस्वामी श्री तुलसी दास जयंती, १४. श्री दुर्गाष्टमी, १५. स्वतंत्रता दिवस, श्रावण सोमवार, १७. पुत्रदा एकादशी, १८. प्रदोष, २०. व्रत नारली पूर्णिमा, रक्षाबंधन, २४. कजलीतीज, संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, २७. हलषष्टी (ललही छट), २८. संत ज्ञानेश्वर जयंती, २९. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, ३०, गोकुलावटमी, गोगा नवमी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या पूर्ति-१७१

हम भी

प्रथम पुरस्कार

गिन-गिन काटे दिवस उजाले
और रात के पल तम भी
विगत साथ की यादें जागीं
जीये पी-पीकर गम भी
आना होगा आज बटोही
मनुहारों का मान निभे
सांझ-सबेरे राह निहारें
आजा आकुल हैं हम भी

— सुमेर सिंह शेखावत

चार्टर्ड अकाउंटेंट,
नीम का थाना -३३२७ १३

द्वितीय पुरस्कार

खुलने लगीं बेड़ियां मन की
दूर हो रहा तम भी
आशाओं के पंछी जागे
रही न दुविधा कम भी
जीवन के उन्मुक्त व्योम में
अब चहकेंगे हम भी

— श्रीमती सुमन गुप्ता

५५५च/१०, राम नगर, आलम बाग, लखनऊ

तृतीय पुरस्कार

कर में शक्ति, हृदय में ममता, नयनों में है प्यार
जननी, बहन, सहचरी का है जन्मजात अधिकार
नहीं किसी से ज्यादा हैं, तो नहीं किसी से कम भी
वीर प्रसूता इस धरती की प्यारी बेटी हम भी

— मृत्युंजय कुमार

द्वारा-श्री [illegible]
ग्राम-मीरपुर, पो. [illegible]
जि. पटना, [illegible]

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मासिक प्रकाशन • सितम्बर ९४

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म तो
किलिन ने किया

ोट तो देंगे :
ीतने नहीं देंगे !

प्रार्थना क्यों करते हैं ?

क्या हम सही दिशा में
जा रहे हैं ?

९ रुपए

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बड़ा सभा बामारिया से निबटने के लिए
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वयं चिकित्सक पुस्तकें'

● होमियोपैथी द्वारा स्वयं चिकित्सा

यह पुस्तक असंख्य मरीजों का इलाज करने वाले सफल चिकित्सक श्री राजीव शर्मा, जिनके लेख अनगिनत पत्रिकाओं एवं अखबारों में छपते हैं, के विशाल अनुभव का निचोड़ है। इसमें 75 से अधिक रोगों के लक्षण, परहेज व दवा संबंधी संपूर्ण जानकारी चित्रों सहित दी गई है। इसके अतिरिक्त सेक्स एवं नशे से संबंधित भ्रांतियों एवं रोगों को दूर करने की विधियां भी इस पुस्तक में दी गई हैं।

पृ. 256/- • मूल्य: 32/- • डाकखर्च : 6/-

● योग और भोजन द्वारा रोगों का इलाज

सुप्रसिद्ध योगाचार्य श्री सतपाल ग्रोवर के 40 वर्षों के अनुभव के आधार पर लिखित अनमोल पुस्तक। इसमें रोग-निवारण हेतु योगासन, ध्यान एवं शुद्धि क्रियाओं, जैसे-जल नेति, सूत्र नेति आदि का सचित्र वर्णन व प्राकृतिक उपचार, जिनसे सभी रोगों का इलाज किया जा सकता है, दिए गए हैं।

पृ. 160 • मूल्य: 28/- • डाकखर्च: 6/-

● दिल का दौरा: बचाव आपके हाथ में

एक हृदय रोगी द्वारा लिखी गई अत्यंत ही प्रामाणिक एवं प्रैक्टिकल पुस्तक। दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे इस रोग के प्रति सचेत कराते हुए आपके इन प्रश्नों का सहज ही उत्तर देने में सक्षम – दिल का दौरा पड़ने की बीमारी किन कारणों से होती है; इस बीमारी से कैसे बचा जा सकता है; दौरा पड़ने के बाद क्या सावधानियां आवश्यक हैं ताकि दूसरा दौरा न पड़े; खान-पान व रहन-सहन की खराब आदतें कैसे सुधारें? नवीनतम शोध निष्कर्षों की जानकारी।

पृ. 144 • मूल्य: 24/- • डाकखर्च: 6/-

● फल-सब्जी एवं मसालों द्वारा चिकित्सा

घर-घर में उपलब्ध दैनिक प्रयोग के फल-सब्जी एवं मसालों द्वारा विभिन्न रोगों के निवारण के सफल उपाय के साथ-साथ दूध, घी, आदि पदार्थों के लाभकारी प्रयोगों की अचूक विधियां भी इसमें हैं।

पृ. 120 • मूल्य: 20/- • डाकखर्च: 5/-

के रेलवे तथा बस-अड्डों पर स्थित बुक-स्टालों से खरीदें। न मिलने पर वी. पी. पी. द्वारा मंगाने हेतु इस पते पर लिखें:

क महल 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002 फोन: 3268292-93, 3279900

■ 22/2 मिशन रोड, बंगलोर-27 फोन: 2234025. ■ 23-25, जाओबा वाडी, ठाकुरद्वार, फोन: 2010941, 2053387 ■ [illegible] अशोक राजपथ, पटना-4 फोन: 653644

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

१. **परिष्कार**— क. शुद्धि, ख. व्यवस्था, ग. सजावट, घ. सवर्धन ।

२. **संस्तुति**— क. प्रार्थना, ख. प्रशंसा, ग. आवेदन, घ. विनय ।

३. **हुतात्मा**— क. मृत, ख. जो मारा गया हो, ग. जिसने संघर्ष में जीवन त्यागा हो, घ. शहीद ।

४. **दांभिक**— क. ढोंगी, ख. बनावटी, ग. शेखीखोर, घ. झूठा ।

५. **दांपत्य**— क. दोहरा, ख. विवाह संबंधी, ग. पति-पत्नी संबंधी घ. पक्का रिश्ता ।

६. **परिशिष्ट**— क. बचा हुआ, ख. जो छूट गया हो, ग. पूरा किया हुआ, घ. रक्षित ।

७. **अतिमति**— क. बुद्धिमानी, ख. शीघ्र निर्णय करनेवाला, ग. अहंकार, घ. हर बात में राय देनेवाला ।

८. **अतिरंजना**— क. अतिशयोक्ति, ख. बहुत रंगना, ग. आमोद-प्रमोद, घ. अधिक सजावट ।

९. **वर्जना**— क. शिकायत, ख. फटकारना, ग. रोकना, घ. झटकना ।

१०. **आलक्षित**— क. देखा हुआ, ख. समझा हुआ, ग. निर्दिष्ट, घ. दिखाया हुआ ।

११. **आच्छादन**— क. छत, ख. ढक्कन, ग. चादर, घ. पहनावा ।

१२. **तृष्णाक्षय**— क. प्यास का बुझना, ख. इच्छा का बना रहना, ग. इच्छा का अंत, घ. त्याग ।

१३. **तेजोमय**— क. ज्योतिर्मय, ख. उग्र तेज, घ. अग्निमय ।

१४. **दस्तंदाजी**— क. कब्जा, ख. हाथ बटाना, ग. सौंपना, घ. हस्तक्षेप ।

उत्तर

१. ग. सजावट, श्रृंगार । उत्सव को ध्यान में रखते हुए मंदिर का **परिष्कार** किया गया है । (व्युत्-परि, कृ)

२. ख. प्रशंसा, स्तुति । महापुरुषों की जनता द्वारा **संस्तुति** की जाती है । (व्युत्. -सम्, स्तु)

३. घ. शहीद । आजादी के लिए न जाने कितने देश-भक्तों को **हुतात्मा** होना पड़ा । (हुत+आत्मा)

४. क. ढोंगी । **दांभिक** व्यक्ति का कभी न कभी परदाफाश हो जाता है । (व्युत्. -दम्भ)

५. ग. पति-पत्नी संबंधी । **दांपत्य** सुख की कामना सभी करते हैं । (दंपती का विशेषण)

६. ख. जो छूट गया हो, संपूरक, किसी लेख या पुस्तक का पूरक अंश । पुस्तक में जो **परिशिष्ट** दिया होता है वह भी पठनीय है । (व्युत्. -परि, शिष्)

कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हो, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. ग. अहंकार । मनुष्य को **अतिमति** शोभा नहीं देती ।

८. क. अतिशयोक्ति, बढ़ा-चढ़ाकर कहना । साहित्य और कला में प्रायः **अतिरंजना** होती है । (व्युत्. –अति, रंज्)

९. ग. रोकना, निषेध करना । बच्चों को कभी-कभी **वर्जना** भी हितकर होता है । (व्युत्. –वृज्)

१०. क. देखा हुआ । ख. समझा हुआ । यह पाठ भली- भांति **आलक्षित** है ।

११. ख. ढक्कन, ओढ़ना । घ. पहनावा । यह **आच्छादन** शोभनीय नहीं है । (व्युत्. –आ, छद)

१२. ग. इच्छा का अंत, संतोष, मन की शांति । मानव-जीवन में **तृष्णाक्षय** होना दुष्कर है । (तृष्णा+क्षय)

१३. क. ज्योतिर्मय, तेज से परिपूर्ण । महान व्यक्तियों का व्यक्तित्व **तेजोमय** होता है । (व्युत्. –तेजस्)

१४. घ. हस्तक्षेप । इस काम में किसी की **दस्तंदाजी** बिलकुल बर्दाश्त नहीं है । (फारसी)

पारिभाषिक शब्द

Cost = लागत, परिव्यय
Production = उत्पादन
Producer = निर्माता
Constitution = संविधान/संघटन
Confederation = परिसंघ
Bottleneck = बाधा/मार्गावरोध
Approval = अनुमोदन
Disapproval = अननुमोदन
Remittance = प्रेषण/प्रेषित धन

ज्ञान-गंगा

मतिर्विकारमायाति कृतार्थस्य ।

(उत्तरराघवम् ४/२)

कार्य पूरा हो जाने पर व्यक्ति की मति में शिथिलता आ जाती है ।

उपचारः कर्तव्यो यावदनुत्पन्नसौहृदः पुरुषः ।
उत्पन्नसौहृदानामुपचारः कैतवं भवति ।

(नीतिद्विषष्टिका ४८)

जब तक मित्रता न हो, तब तक दिखाऊ शिष्टाचार रहता है तथा जिनमें सौहार्द उत्पन्न हो जाता है उनके लिए शिष्टाचार का प्रदर्शन छल होता है ।

यत्र सन्तः प्रवर्त्तन्ते तत्र दुःखं न बाधते ।
वर्त्तते यत्र मार्तण्डः कथं तत्र तमो भवेद् ॥

(बृहन्नारदीयपुराण ७/८५)

जहां संत होते हैं, वहां दुःख बाधित नहीं करता, जहां सूर्य हो, वहां अंधकार कैसे हो सकता है

ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः संदिग्धे कार्यवस्तुनि ।

(शिशुपालवध २/१२)

सारभूत तत्त्वार्थ को जाननेवाला व्यक्ति भी अकेला कर्त्तव्य कार्य में संदिग्ध रहता है ।

पादाविव प्रहरत्यन्यमन्यं कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः ।

(ऋग्वेद ६/४७/१५)

चलते समय जिस प्रकार एक के पीछे दूसरे पैर को बढ़ाया जाता है, उसी प्रकार इंद्र अपने बल से पीछे रहनेवालों को आगे बढ़ा देते हैं ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

गीत को समालोचकों की गंभीर सौंदर्य दृष्टि नहीं मिली

यूं तो जबसे 'कादम्बिनी' का जन्म हुआ है, तब से ही इसका पाठक रहा हूं। इसकी समय-समय पर प्रकाशित सामग्री से प्रभावित रहा हूं। यह एक प्रबुद्ध पाठक की ईमानदारी भी है। इस सबके होते हुए भी आज मेरा मन पत्र लिखने के लिए व्याकुल हो उठा। आज अगस्त अंक आया तो सवेरे से ही पढ़े जा रहा हूं। ऐसा कभी नहीं हुआ। इसका कारण बताऊंगा।

सबसे पहला : 'कालचिंतन' की ये पंक्तियां—'विश्व का नाश और विनाश धरती है, विश्व की चेतना का भागीरथ धरती है,...स्वीकारिए कि अंतरिक्ष की दीवार धरती है, महासागर की दीवार धरती है, धरती की कोई दीवार नहीं है, कोई दीवार है भी तो वह है—मर्यादा।'

उपर्युक्त पंक्तियां आज के मनुष्य के लिए सूत्र हैं। यह सशक्त कविता है 'संपादकोपदेशयुजे'।

दूसरा : 'येल्तसिन का जूता' (टिप्पणी) देश के स्वाभिमान की उपेक्षा करने के आदी नेताओं के लिए यह वाक्य पूर्ति चेतावनी है। आपने इस टिप्पणी से समयोचित, संपादकोचित एवं स्वाभिमानी मानवोचित उत्तर दिया है। (जो प्रधानमंत्री नहीं दे सके)।

तीसरा महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि इसमें स्व. नेपाली का स्मरण हुआ है मैं इस बात को इसलिए रेखांकित करता हूं क्योंकि लोग केवल श्री बच्चन को गीत का अंतिम पुरोधा मान बैठे हैं। बच्चनजी प्रारंभ से योजनाबद्ध कार्यक्रम के प्रति सचेष्ट रहे। आपको याद होगा मंच के गीतकार को पैसा दिलाने का सर्वप्रथम आयोजन बच्चनजी ने ही किया। बच्चनजी ने सबसे पहले ५१ रुपये प्राप्त किये और श्री निराला ने अपनी प्रकृति के अनुसार किसी वेश्या का नाम लिया जो एक रात का पचास रुपया लेती थी। इस धनाकर्षण ने गीत की क्या, मंच की प्रतिष्ठा को धक्का पहुंचाया। बच्चन के बाद गीत का साहित्यिक महत्त्व घट गया। गीत को समालोचकों की प्रखर तार्किकता और गंभीर सौंदर्य दृष्टि नहीं मिली। सत्य यह है कि नेपाली से बच्चन के गीत भी प्रभावित हुए (स्वयं बच्चन के अनुसार)। आज गीत की जो दशा है उससे सभी परिचित हैं। आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है, गीत के संदर्भ में फिर से नया दृष्टिकोण लेकर उसे साहित्यिक महत्त्व मिले। इस शृंखला में नेपाली, नरेंद्र शर्मा, रंग, शिशुपाल सिंह शिशु, जानकी वल्लभ शास्त्री, रामावतार त्यागी, दिनेश, कुंवर चंद्र प्रकाश तथा कुछ और गीतकार हैं, जिस पंक्ति को आज का साहित्यिक इतिहास भुला बैठा है। इसी प्रकार द्विवेदी युग के कई कवि हैं जिनकी सशक्त रचनाएं पाठकों तक नहीं पहुंचीं। मेरा निवेदन यह है कि आप अधिकारी विद्वानों से समालोचना के स्तर पर गीतकारों को चर्चित करें, यह हिंदी साहित्य के लिए उपलब्धि होगी।

मैं सन '४८ से गीत-यात्रा का प्रत्यक्षदर्शी हूं। इसलिए गीत की गंभीरता को उपेक्षित देखकर कष्ट होता है। आपकी यह पहल स्वागत योग्य है। पत्रकारिता की आचार-संहिता का पृष्ठ प्रारंभ हुआ है। मैं नहीं कह सकता आपकी भविष्य योजना क्या है?

—मधुर शास्त्री

५८/१ए, कालीबाड़ी मार्ग, गोल मार्केट, नयी दिल्ली।

अंगरेजी-प्रेम

'अंगरेजी बोलने पर जेल होगी' शीर्षक लेख पढ़ा। कई सौ वर्षों की गुलामी के असर से हम में हीन भावना आ गयी है। हम पश्चिमवालों को अपने से उत्कृष्ट समझते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है कि प्रशासन में जो अधिकारी बड़े पदों पर हैं, उन्हें अब भी वैसे ही प्रशिक्षण दिया जाता है, जो आजादी से पहले था। देहरादून में एक स्कूल है, जिसमें अफसरों को खाना खाने का तरीका सिखाया जाता है।

हर आदमी पहले रोटी-रोजी के बारे में सोचता है। हमारे अधिकारी जैसा चाहेंगे, वैसा करने से हमें नौकरी मिलेगी यह आम धारणा है। भारत में पांच प्रतिशत से अधिक लोग अंगरेजी नहीं जानते। परंतु अंगरेजी अखबार आदि वाले अधिक पैसा कमाते हैं।

मेरे भाई की शादी हुई। उसकी बीवी बी. ए. थी। पर अंगरेजी नहीं बोलती थी, मेरी माताजी ने कहा, 'हमें धोखा हुआ है। लड़की अनपढ़ है क्योंकि अंगरेजी नहीं बोलती।' इस पर मेरे भाई और भाभी आपस में अंगरेजी में बोलने लगे। उसे सुनकर माताजी बहुत खुश हुईं और सबसे कहने लगीं, कि उनकी बहू बहुत पढ़ी-लिखी है। सदा अंगरेजी में बात करती है।

—इंदर प्रकाश नयी दिल्ली

'अंगरेजी बोलने पर जेल होगी' शीर्षक लेख पर हमें इन पाठकों के भी पत्र प्राप्त हुए हैं : जगदीश ज्वलंत, उज्जैन, लक्ष्मीशंकर रा. यादव, अकोला, नवाब खान, बेतिया ; नीरज श्रीवास्तव, साईं खेड़ा नरसिंहपुर, साकिर राज, लखीमसराय, अनंत साहू पिण्डरिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्जन्म की चेतना

जुलाई अंक में प्रकाशित लेख 'पुनर्जन्म की चेतना' पढ़ा। इस लेख में ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म आदि के अस्तित्व की बातें कही गयी हैं और अन्य दार्शनिक भी इस पर विश्वास करते हैं किंतु एकमात्र चार्वाक-दर्शन वर्तमान जीवन के अलावा किसी अन्य जीवन के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता, इस विश्व को जड़ात्मक मानता है। ईश्वर पुनर्जन्म आदि में भी विश्वास नहीं करता है। यहां तक कि आत्मा के अस्तित्व को भी स्वीकार नहीं करता और शरीर तथा आत्मा दोनों को एक ही मानता है। चार्वाक का कथन है—"भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुतः" अर्थात एक बार शरीर के जलकर भस्म हो जाने के बाद इसका पुनर्जन्म कहां से होगा।

लेकिन आत्मा, ईश्वर पुनर्जन्म में नकारात्मक दृष्टिकोण रखनेवाले अपने समूचे जीवन को एक अनचाहे काल कोठरी में अनजाने कैद कर बैठते हैं।

—दिलेश्वर कुशवाहा
हजारीबाग

अस्मिता का सवाल है भाषा

जुलाई अंक में 'अस्मिता का सवाल है भाषा' पढ़ा। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतीयों के लिए मातृभाषा हिंदी दिन प्रतिदिन अजनबी-सी होती जा रही है। मातृभाषा हिंदी को अजनबी बनाने में देशवासियों की अल्प लेकिन राजनीतिज्ञों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। मातृभाषा का समर्थन या विरोध करके हर स्थिति में राजनीतिज्ञों ने हिंदी को मोहरा बनाकर राजनीति के शतरंजी मैदान में इस्तेमाल किया है। मातृभाषा किसी भी राष्ट्र का दर्पण होती है लेकिन आज भारत का दर्पण टूट रहा है और हम खामोश हैं।

—नवल भारतीय
अलीगढ़

'कादम्बिनी' : संजीवनी बूटी

'कादम्बिनी' मेरी प्रिय पत्रिका है। मैं इसका पाठक कैसे बना, इसकी भी एक रोचक कहानी है। मेरे एक प्रिय मित्र हैं। उनके यहां मेरा आना-जाना हुआ करता था। मेरे संवाद में बहुत त्रुटियां, अशुद्धियां हो जाया करती थीं, एक दिन मेरे मित्र ने मुझसे कहा "अमितजी, आप साहित्यिक पत्रिकाओं, पुस्तकों का अध्ययन किया करें, जिससे आपकी भाषा में सुधार होगा, मेरी मानें तो दिल्ली से एक मासिक पत्रिका 'कादम्बिनी' छपती है, इसे पढ़ा करें। इसके अध्ययन से आप में निःसंदेह सुधार होगा।" तभी से मैंने 'कादम्बिनी' पढ़ना आरंभ कर दिया। वास्तव में यह मेरे लिए संजीवनी बूटी सिद्ध हुई।

—ओमप्रकाश 'अमित',
ग्रा. पो. सीखड़,
जि. मिर्जापुर (उ. प्र.)

यद्यपि 'कादम्बिनी' के जून अंक में प्रकाशित परदेश से आमंत्रित समस्त कहानियां रोचक लगीं, जिसमें 'प्रधानमंत्री की प्रेमिका' ने बहुत प्रभावित किया, तथापि इसमें प्रकाशित 'काल-चिंतन' ने मेरे चिंतन का मंथन कर विषाद के कठिन दिनों में यथार्थ के धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच, आपने कितनी अंतरंग गहराई में उतरकर इतने यथार्थपरक (विषाद की जड़ बुद्धि है।) तथा मार्ग प्रशस्त करनेवाले सूत्र (दृष्टि हो तो दर्द में एक सुख है) को रच डाला है।

—राकेश साहू
जबलपुर

आखिर कब तक

'आखिर कब तक' स्तंभ बेहद प्रभावित करता है। जुलाई अंक में इस स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित 'बूंद-बूंद पानी को तरसते लोग' पढ़कर आंखों में पानी आ गया। नेताओं से जो भी पूछा जाए सदैव विचारणीय ही रहता है। एक ओर लोग बूंद-बूंद पानी को तरसते हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ लोगों ने अपने कुत्तों को नहलाने के लिए निजी स्विमिंग पूल तक बनवा रखे हैं।

—नीलम जैन अहमदाबाद

जुलाई अंक में 'आखिर कब तक' स्तंभ पढ़कर यह प्रतिक्रिया लिख रहा हूं। बहुजन समाज पार्टी के अध्यक्ष कांशीराम को आपने समझाया है कि वे यदि बहुजन समाज से हैं तो अल्पसंख्यक हैं—ब्राहमण, अतः सुविधाएं ब्राह्मणों को दी जानी चाहिए जिसकी कांशीराम स्वयं अपने लिए मांग कर रहे हैं। अब मेरी राय है कि कांशीराम ब्राह्मणों का हित सोचें न सोचें, कम से कम वजह-बेवजह ब्राह्मणों को कोसना और प्रत्येक सामाजिक बुराई का दायित्व उन्हीं के सर मढ़ना तो छोड़ दें, कांशीराम का ब्राह्मणों का हित सोचना इसलिए आवश्यक नहीं कि ब्राहमण युगों से बिना किसी अवांछित आरक्षण की बैशाखी के भी शान से जी रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे।

—देवेन,
कर्सियाग, दार्जिलिंग

जलियांवाला बाग

मई अंक में 'रेशमी खतों में छिपे गोपनीय संदेश' लेख पढ़ा। इस संबंध में मैं कहना चाहूंगा कि जलियांवाला बाग के जघन्य हत्याकांड में तीन मुख्य पात्र थे : सर माइकेल ओडयर लेफ्टिनंट गवर्नर पंजाब, लार्ड जेटलैंड, सेक्रेटरी ऑव स्टेट भारत में और ब्रिगेडियर जनरल आर. ई. एच. डायर, जो उस समय अमृतशहर के मालिक थे तथा जिन्होंने फायरिंग का आदेश दिया था। १३ मार्च सन १९४० को कैक्सटन हॉल में शहीद उधम सिंह ने सर माइकेल ओडयर को गोली मारी थी। वह जमीन में गिर पड़े तथा थोड़ी देर में उनकी मृत्यु हो गयी। लार्ड जेटलैंड भी जमीन पर गिर पड़े थे। यह दोनों सभा में एक साथ उपस्थित थे। ब्रिगेडियर जनरल आर. ई. एच. डायर उस समय तक पहले ही मर चुके थे।

अवधेश, इलाहाबाद

सफलता का कोई रहस्य नहीं है। वह केवल अत्यधिक परिश्रम चाहती है।
— हेलरी सी. क्रैक

सफलता का मूल रहस्य इसमें है कि साधनों को भी उतना ही महत्त्व दिया जाए जितना साध्य को।
— विवेकानंद

सफलता का रहस्य ध्येय की दृढ़ता है।
— डिसरैली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं का श्रेष्ठ पत्रिका

कादम्बिनी

वर्ष ३४, अंक

सितम्बर, १

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी

निबंध एवं लेख

कृष्णकांत
वोट तो देंगे : जीतने नहीं देंगे ---------- २०

डॉ. एन. राजगोपालन
खुल रहे हैं रहस्य मस्तिष्क के. ३०

सुधा पांडे
आत्मदर्शन ---------- ३५

अर्चना सौशिल्य
प्रार्थना क्यों करते हैं ? ---------- ४८

राधाकांत भारती
राजा भी आदमी होता है ! ---------- ५४

डॉ. रामनारायण सिंह
गणित और कविता ---------- ५७

राजकिशन नैन
कथा एक धार्मिक शोषण की ---------- ६४

ज्योति खरे
उज्जैन : यहां अमृत की बूंद गिरी थी ----- ६८

शैलेंद्र सिंह
गबन का 'दोषी' विश्वविख्यात लेखक ----- ८२

शिवशंकर अवस्थी
एक पुरुष साथी की चाह में ---------- ९०

महेंद्र सिंह लालस
सैंणी-बींजा ---------- ९६

डॉ. दिनेश वशिष्ठ
बालों का सफेद होना रोका जा सकता है १००

राजशेखर व्यास
गणपति देवता ही नहीं पद भी है ! ------ १०९

कुमार गिरी
कुत्ता बहुत नाराज है भगवान से ! ----- १

जगदीश पुरोहित
जिंदा अजायबघर ---------- १

अनीता पुरोहित
कुलधरा : जैसलमेर अतीत के खंडहर --- १

रामनाथ पसरीचा
वे बदकिस्मत लोग कौन थे ? -------- १

उषा वधवा
बार-बार कब्र टूटने का रहस्य --------- १

रमाकांत 'कांत'
स्त्री दुर्बलता का शिकार अर्जुन -------- १

डॉ. अरुण त्रिवेदी
एक थीं सिताला ---------- १

डॉ. अभिजित चट्टोपाध्याय
क्या हम सही दिशा में जा रहे हैं... १९८

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य—४, ज्ञान-गंगा—५, प्रतिक्रियाएं—६, कालचिंतन—१२, आखिर कब तक—१७, गोष्ठी—४५, विधि-विधान—८७, बुद्धि-विलास—१०८, इनके भी बयां जुदा-जुदा—१४७, तनाव से मुक्ति—१५३, प्रवेश—१६४, कला-दीर्घा—१६७, वैद्य की सलाह—१८४, ज्योतिष : समस्या और समाधान—१८६, नयी कृतियां—१८८, यह महीना आपका भविष्य—१९२, सांस्कृतिक समाचार—१९४,

आवरण (चित्र) : विजय अमन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

डॉ. एस. डी. एन. तिवारी
डर शेर से नहीं सियारों से लगता है....१७३

कहानियां एवं व्यंग्य

अशांत
पान की खेती----------४०
इंदिरा गोस्वामी
वंश बेल----------७४
राम सरूप अणखी
उल्टी सदी----------१०२
क्रांति त्रिवेदी
बेचारा----------११७
पुष्पा सक्सेना
क्षति पूर्ति----------१४०
अजय
प्रायश्चित.... १७६

कविताएं

डॉ. विजयन पी. व्ही.
शहर में चीता ---------- ३९
केशरीनाथ त्रिपाठी
आवर्तन ---------- ६१
पूरन सरमा/निर्मला सिंह 'निर्मल'
दोहे/झील और आंखें ---------- ६२
मोहन निराश/श्रीमोहन लहरी
सूर्य, स्थितियां, जंगल/किससे कहें-------- ६३
डॉ. आनंद कुमार
जख्मी गीत ----------१३९

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल,
मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल,
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज,
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश,
सुरेश नीरव, धनंजय सिंह,
प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार,
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी,
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त ।

संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि.,
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१ ।

फोन : ३३१८२०१/२८६
टेलेक्स : ३१-६६३२७,
फैक्स : ०११-३३२११८९

चंदे की दरें

मूल्य : ९५ रुपये; द्विवार्षिक : १९५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, भूटान और नेपाल; विमान से ३४० रुपये; समुद्री जहाज से १४० रुपये । अन्य सभी देशों के लिए : विमान से ५१० रुपये; समुद्री जहाज से १९० रुपये ।

शुल्क भेजने का पता :
प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि.,
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-चिंतन

विश्वास नहीं है तब भी अपेक्षाएं हैं उसमें । तब भी वह चाहता है, अपेक्षा तत्काल पूरी हों !

□

— आश्चर्य है मुझे इस दृष्टि से क्या मिलेगा ।

— दृष्टि यानी एक सोच, एक विचार । शून्यताहीन विचार सुविधाओं की नौकाएं नहीं बन सकते । बनाने का प्रयत्न करोगे तो नाव डूबेगी । नाव डूबती है तो दोष दृष्टि-लक्ष्य की ओर संकेतिक नहीं किया जा सकता । वह व्यक्ति की अपनी भूल है, बल्कि भूल नहीं निबुर्द्धि है ।

— भूल से जो क्षति होती है उसका दोषारोपण दूसरे पर नहीं थोपा जा सकता और न ही वह क्षति विकृति को सुधार सकती ।

— भूल हुई है तो घाव बनेगा ही । घाव भर भी जाए तो निशान शेष रहेगा ही ।

□

— छायादार वृक्ष के नीचे खड़े होकर उसी वृक्ष को कुल्हाड़ी से काटा जा रहा है और अपेक्षा की जाती है कि छाया बनी रहेगी ।

— कहा यह भी जा सकता है कि बीज बोया नहीं, अपेक्षा है वृक्ष निकलेंगे, कोपलें फूटेंगी, फूल आएंगे और अंततः फल मिलेंगे ।

— फूल और फल चाहिए तो पहले मूल क्रिया का संबल आवश्यक है, यानी बीज का ।

□

— बीज ही तो आस्था का पहला चरण है और यही चरण विश्वास है ।

— विश्वास की वास्तविक परिभाषा नहीं हो सकती । तब भी मैं उसमें तीन उपांग जोड़ना चाहूंगा :

□ अंधविश्वास

□ अंध-भक्ति, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

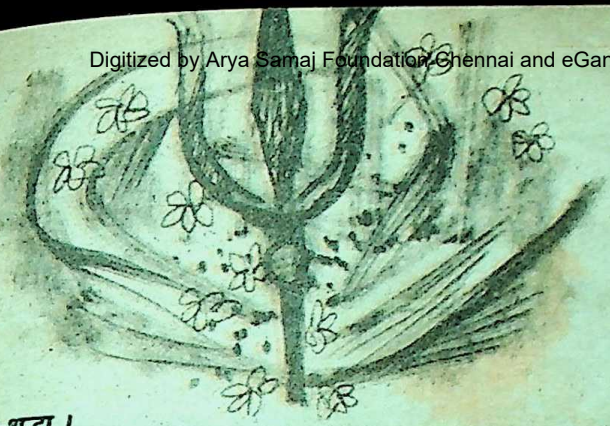

□ अंध-श्रद्धा ।

— इनके बिना विश्वास शब्द की सार्थकता नहीं है ।

— अंधविश्वास को परंपरागत ढंग से मत देखिए । शब्द-शक्ति को पानी पर तैरनेवाला तिनका मत समझिए—तिनका अपने आप में परोक्ष अर्थ रखता है और भारी शक्ति का बोध देता है ।

— अंधविश्वास का सतही अर्थ लेनेवाले अल्पज्ञानी मेरी बात नहीं समझेंगे । समझाना भी नहीं चाहता । ज्ञान की शर्त है कि उसे सुपात्र चाहिए । तथापि सही अर्थ में अंधविश्वास वृक्ष का मूलाधार है । विश्वास कर लिया तो प्रश्न कहां ? प्रश्न रहे तो विश्वास कच्चा फल है, उसे पकने दीजिए । जब वह परिपक्व हो जाएगा विश्वास का पारा अपने आप दिखायी देने लगेगा । विश्वास का यही पारा सार्थक है और अंध-विश्वास की व्याख्या इसी ओर इंगित है ।

अब दूसरा आयाम : अंध-भक्ति ।

— अंध-भक्ति समर्पण नहीं है ।

— अंध-भक्ति समयोजन है ।

— तुला के पल्लों को समतल रखने के लिए सूई को सीधे केंद्र में लेना होगा । सीधे भर नहीं, संपूर्ण स्थिर । ऐसा न हो कि गिलहरी की पूंछ का आभास हो, आभास हो ऐसा जैसे भयग्रस्त आत्मसात कछुए का मात्र दृढ़ आकार ।

— भयग्रस्त कहकर समयोजन को भय की सीमा में मैं नहीं लाना चाहता । यह तो समझने के लिए एक प्रतीक है ।

— समयोजन, जो अंध-भक्ति की सही व्याख्या है, पारस्परिक बंधन में आबद्ध है, वह समयातीत है और केंचुए-सा उसका गुणात्मक आधार है । धोखे से काट भी दो तो निष्पंद कोई नहीं होगा । जीवनीशक्ति में द्विगुणित वृद्धि हो जाएगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

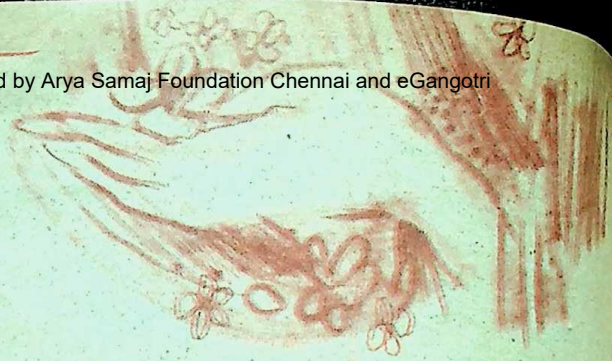

— अंध-भक्ति जिन दो तत्वों, व्यक्तियों अथवा अवयवों में होगी उनकी वैचारिकता से लेकर मांसलता भी समयोजित होगी । दो होकर वे एक होंगे, एक होकर वे दो का अस्तित्व बनाये रखेंगे । अतः विश्वास के लिए यही अंध-भक्ति श्रेयस्कर है ।

□

तृतीय आयाम : अंधश्रद्धा ।

— वास्तव में श्रद्धा अव्याख्यायित है । वह एक ऐसा अजन्मा फल है जिसका विभाजन संभव नहीं है ।

— श्रद्धा हमारे मन, धर्म, कर्म और बुद्धि का अक्षम शब्दकोष है ।

— श्रद्धा इसीलिए प्रश्नों के घेरे के बाहर है । फिर उसके पहले 'अंध' शब्द लगा दें तो उसकी शक्ति अंतरिक्ष की अंतआत्मा बन जाती है ।

— सहज रूप से कहा जा सकता है कि अंध-श्रद्धा, हमारी तीव्रतम इच्छा-शक्ति का पर्याय है ।

□

— तब, वापस आइए उसी केंद्र पर जहां से चले थे : यानी विश्वास ।

— विश्वास की तीन उपांग शक्तियां समझने के बाद शेष रह जाता है, उनकी परख । परख, स्वर्ण की परख का खरल है, हीरे की परख का उजास है और मोती की परख का जलवारिधि है ।

— विश्व का मूलाधार विश्वास था ।

— विश्वास टूटने लगा तो परखनलियां बनानी पड़ीं ।

— दुग्ध जैसे मृगछौने को परखना पड़ता है और तरलता में पानी का कितना प्रवाह है यह वैचारिक समीकरण से ही सहज-साध्य और संभव है ।

— विश्व का मूलाधार, मनुष्य जीवन का प्रथम क्रंदन है ।

— क्रंदन मंदिर की दिव्य घंटियों की तरह उद्घोषित करता है कि एक नये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन का अवतरण हुआ है ।

— अवतरण गोमुख है ।

— गोमुख के आगे विकसित होती पवित्र गंगा फिर पर्यावरण के प्रदूषण से घिरती है । उसी तरह मनुष्य का प्रथम क्रंदन अवतरण की घोषणा कर क्रमशः यह स्थिर करता है कि मनुष्य जन्म संघर्ष, संकट और राक्षसी-शक्तियों से निरंतर अपने को सुरक्षित करने के श्रम के लिए हुआ है । वह पुण्य का द्वार नहीं है । उसे पाप के अभिशप्त छत ने प्रतिक्षण नागफनी के नुकीले शरीर से रगड़ने के लिए बाध्य करते हैं ।

— नागफनी में फंसकर उससे निकले अपने रक्त को जो परम प्रसादमय स्वाद से पीकर उसका आनंद लेता है, वह अंततः समग्र सृष्टि या सृष्टि के आधार अंश को जीतता हुआ, जीवन के अंत में सम्राट बनकर अपना नाम शिलालेखों में छोड़ जाता है ।

□

— विस्तार भयावह है : पृथ्वी का हो, महासागर का हो, अंतरिक्ष का हो या गोलार्ध का ।

— हीरे-मोती से टंका अंतरिक्ष, रात में छत पर सोते हुए, मुझे लगता है कभी भी मेरे ऊपर सीधे टूट पड़ेगा । मैं उसका सौंदर्य देख सकता हूं, टूटने के भय को नहीं सम्हाल पाता ।

— कौन जाने कब, कौन, कहां, कैसे टूटे !

— इसीलिए विश्वास में जीना सीखिए, अविश्वास है तो अपेक्षाएं मत कीजिए । संपूर्ण समर्पण है तो भय क्यों ? आने-जाने के क्रम में इच्छाएं क्यों ?

राजेश अरोरा

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी का 'श्राद्ध दिवस' आ रहा है

कुछ समय पहले चीन की राजधानी पेइचिंग (पेकिंग) विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश सिंघल हमारे कार्यालय में आये थे। वे वहां दो वर्षों से कार्यरत हैं। उन्होंने बताया कि उनके विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़नेवाले मात्र दस छात्र हैं। पहले कभी अस्सी छात्र पढ़ा करते थे। चीन में इन दिनों उसी तरह का खुलापन प्रवेश कर रहा है, जो दुनियाभर में हो रहा है यानी अमरीकी संस्कृति और सभ्यता वहां भी अपना शिकंजा मजबूत कर रही है। उन्हें खेद था कि वहां पढ़नेवाले दस छात्र भी अंगरेजी का धड़ल्ले से प्रयोग करते हैं और हिंदी को गौण भाषा मानते हैं। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के नाम पर कोई भी अच्छी स्तरीय पत्रिका वहां नहीं पहुंचती। घटिया किस्म की पत्रिकाएं यहां से भेजी जाती हैं। मेरा प्रश्न था कि आखिर उनका चुनाव कौन करता है। मुझे अनुभव हुआ कि शायद श्री सिंघल को स्वयं इस बात की कोई जानकारी नहीं है। उन्होंने बताया कि वे भारतीय दूतावास से संपर्क कर चुके हैं, लेकिन दूतावास में भी कोई अधिकारी ऐसा नहीं है जो हिंदी समझता हो। मैंने सुझाव दिया कि आप भारत आये हैं तो यहां के विदेश मंत्रालय से इस संबंध में बातचीत करें। मैंने अनुभव किया कि श्री सिंघल का दृष्टिकोण अपने-आप में नकारात्मक है। मुझे खेद हुआ कि उन्हें रोजी-रोटी भारत सरकार की तरफ से दी गयी है और वे स्वयं मात्र वहां समय काट रहे हैं। हिंदी के प्रति किसी तरह की गंभीरता उनमें नहीं है। जब शिक्षक स्वयं गंभीर न हो तो छात्र कहां से गंभीर होगा। उन्होंने यह कहकर छुट्टी पा ली कि भारत सरकार का संस्कृति मंत्रालय भी अंगरेजी की पुस्तकें वहां भेजता है। मैं मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुन सिंह को अच्छी तरह जानता हूं। वे हिंदी प्रेमी हैं। यह बात यदि उनके सामने लायी जाती तो शायद बात ही कुछ और होती। मैं इस प्रसंग को लेकर श्री अर्जुन सिंह का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि वे इसे गंभीर मामला समझें और इसकी उचित जांच की जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसे हिंदी की उपेक्षा चीन में ही हो रही है, यह अकेली बात नहीं । मैंने मारीशस, सूरीनाम, यूरोप के अनेक देशों और यहां तक कि अफरीका के उन क्षेत्रों, जहां बहुत बड़ी संख्या में हिंदीभाषी रहते हैं, हिंदी का मात्र ढिंढोरा पीटा जाता है, गंभीरता से हिंदी का प्रचार और प्रसार शायद ही कहीं होता हो । हमारी अफसरशाही तो अंगरेजीदां है ही, हिंदी के नाम पर केवल कुछ विश्वविद्यालयों में गिनती के विद्यार्थियों को देखकर यह मान लेना कि विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार हो रहा है, अपने को शुतुरमुर्ग की तरह छिपाकर रखने की बात है । रूस और दूसरे साम्यवादी देशों में धीरे-धीरे हिंदी का विलोप हो रहा है और भारतीय राजभाषा अंगरेजी होती जा रही है ।

मैं चाहूंगा कि हमारी संसद के माननीय सदस्य जो हिंदी बोलकर वोट लेते हैं, इस तथ्य को पहचानें और जो कुछ दुनियाभर में हिंदी के नाम पर हो रहा है उसके लिए वे उचित कदम तो उठायें ही, हमारे देश में १४ सितम्बर को जो हिंदी का श्राद्ध तर्पण दिवस मनाया जाता है उस नाटक पर भी रोक लगवायें । हिंदी एक जीवित और सजग भाषा है । किसी भी जीवित का श्राद्ध नहीं मनाया जाता ।

हिंदी विरोधी : नैतिकता कहां है !

हिंदी को गाली देनेवाले टुटपुंजिये कॉलम-लेखक कम नहीं हैं । किसी महिला से कहीं का कैसा भी प्रसंग निकलवाकर उसे अपने हिंदी विरोधी नकाब पर पवित्रता की मोहर लगा देने की कोशिश करना शायद अपने बुढ़ापे को सहलाकर जवानी में बदलने का प्रयास है । एक ओर तो हिंदी को गाली देना और दूसरी ओर बाजारू अंगरेजी लिखकर एक बड़े अखबार से खासी रकम लेना और फिर उसी सामग्री का उपयोग उसी दिन अन्य दर्जनों अखबारों में करना कहां की नैतिकता है ।

वेंकटरमन और राष्ट्रपति भवन के गलियारे !

भूतपूर्व राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन की पुस्तक 'माइ प्रेसीडेंशियल इयर्स' ने खासा तहलका मचा कर रखा है । शायद यह पहली बार है कि राष्ट्रपति-जैसे सर्वोच्च सत्ताधारी व्यक्ति ने राष्ट्रपति भवन में होनेवाले हर नजारे को पेश किया है । निजी रूप से मैं इस पुस्तक का स्वागत करता हूं । वेंकटरमन में हिम्मत तो है कि उन्होंने निर्भय होकर उस आलीशान महल और उसके सर्वोच्च शासक के कार्यों को जनता के सामने रखा जो भारत के प्रजातंत्र का प्रतीक है ।

यह सच है कि हर जगह हर बात अच्छी हो, यह नहीं हो सकता और हर बात गलत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो यह भी नहीं हो सकता। यह तो व्यक्तिगत का दुस्साहस है, जो नीरक्षीर विवेक को परखकर दूध और दही दोनों की कटोरियां सामने रख सकता है। अखबारों में इस संबंध में इतना ज्यादा छप चुका है कि मैं उसे दोहराना नहीं चाहता। एक सलाह अवश्य दूंगा कि प्रकाशक को इस पुस्तक का हिंदी संस्करण भी बाजार में उपलब्ध कराना चाहिए। यह इसलिए भी कि यदि राष्ट्रपति-जैसा गरिमामय पद भी लीपापोतीवाला हो तो अंततः वह समस्त देश की अस्मिता का प्रतीक बन जाता है। इसे रोकना जरूरी है ताकि आज जिस अनैतिक और भ्रष्ट दौर से हमारा देश गुजर रहा है, वहां रोक लगे या न लगे बिजली का एक हल्का-सा करंट तो लगना ही चाहिए। आखिर ऐसी व्यवस्था कुकुरमुत्ते की तरह यदि पनपी है तो अभी तक गौरैया के घोंसले टूटे नहीं हैं। वेंकटरमन ने समय रहते एक चेतावनी दी है।

भारत में गोबर और लीद का आयात

भारत में आयात-निर्यात के सभी रास्ते खुल गये हैं। इसका लाभ उठाने के लिए भारत में गोबर और लीद के बाजार की संभावनाएं कहां तक हैं, इसके लिए नीदरलैंड की कंपनी का मालिक भारत पहुंच चुका है। सीस्वान कंपनी का यह मालिक मि. एच. पी. आर. प्रिंस जमीन तैयार कर रहे हैं। नीदरलैंड का गोबर और लीद भारत में किस कीमत पर बिक सकेगा। तर्क दिया जा रहा है कि भारत में रासायनिक खाद के बजाय गोबर की खाद आयात करना ज्यादा फायदेमंद है। इस दलील के साथ नीदरलैंड पर्यावरण संकट से मुक्ति पाएगा और भारत से ९०० करोड़ रुपये का सौदा भी पट जाएगा। सीस्वान कंपनी के मालिक मि. हांस प्रिंस होटल 'क्लेरिजिज' में ठहरे। उसके बाद राजकोट जाकर हिंद स्वराज्य मंडल के फैलो थाइस द'लाकू से उन्होंने मुलाकात की और इस संबंध में बातचीत की।

मिस्टर प्रिंस गोबर और लीद बेचने के लिए इसलिए उत्सुक हैं क्योंकि नीदरलैंड डेरी और पोल्ट्री उद्योगों में सबसे ज्यादा विकसित है। वहां डेढ़ से दो करोड़ टन लीद और गोबर निकलता है। इसमें सबसे ज्यादा है सुअर की लीद, फिर मुरगी की बीट, और सबसे कम है गाय का गोबर। नीदरलैंड आज से नहीं कई वर्षों से कोशिश कर रहा है कि वह अपनी गंदगी से मुक्ति पाये। यदि हमारे देश के खुलेपन में उसे यह सफलता मिल गयी तो गोबर और लीद द्रव अवस्था में टैंकों में भरकर कांडला और मांडोई बंदरगाहों में उतारे जाएंगे। इसे फिर गुजरात में सुखाया जाएगा और टिकिया बनाकर खाद के रूप में प्रयोग किया जाएगा। नीदरलैंड भारत को समझाना चाहता है कि इस तरीके से भारत में उपज में बेहद बढ़ोत्तरी होगी। देखना यह है कि यह सौदा कहां तक पटता है और हमें विदेशी लीद खाने का सुअवसर कब प्राप्त होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टी. एन. शेषन का समर्पण

आजकल टी. एन. शेषन के तेज-तर्रार तेवर ऐसे हैं कि वे न मंत्री को छोड़ते हैं न मुख्यमंत्री को और न शायद राष्ट्रपति (?) को। वे काम तो बहुत अच्छा कर रहे हैं यह हर कोई जानता है लेकिन शेषन साहब ने यह महारत हासिल कर ली है कि वे अफसरी तो जोरदार ढंग से कर ही रहे हैं आगे चलकर किसी पार्टी का नेतृत्व संभालने में भी पीछे नहीं हट सकते। जो आदमी इतना वजनदार काम करता है उसे अपने से ज्यादा वजनदार आदमी के सामने झुकना भी पड़ता है। कुछ समय पहले जब श्रृंगेरी पीठ के शंकराचार्य भारत आये थे तो सबके सामने बेहिचक दण्डवत की मुद्रा में टी. एन. शेषन ने आशीर्वाद प्राप्त करने का प्रयत्न किया। आशीर्वाद कितना मिला पता नहीं, उनके भारी-भरकम शरीर की दण्डवत मुद्रा हम सबके भीतर वह आस्था छोड़ गयी जहां महाकवि तुलसीदास ने लिखा है—

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ विधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥

आंसू आखिरी हथियार

औरतों के आंसुओं में गजब की ताकत होती है। ये उनका ऐसा आखिरी हथियार हैं जो कभी व्यर्थ नहीं जाता और इस बात की ताकीद की है प्रसिद्ध अमरीकी अभिनेत्री जेन फोंडा ने। महिलाओं को जेन फोंडा की सलाह है, 'जब भी संकट में पड़ें रोना शुरू कर दें। यदि आप ऐसी स्थिति में पड़ जाएं, जब लगे कि न कोई आपकी ओर ध्यान दे रहा है और न आपकी जरूरतें पूरी कर रहा है तो बस रोना शुरू कर दीजिए।' जेन फोंडा को दो बार ऑस्कर पुरस्कार मिल चुका है। आंसुओं में बड़ी ताकत होती है इसका पता उन्हें १९६२ में पहली बार लगा जब वे रूस गयी थीं। वे एक लिफ्ट में घुसीं। लिफ्ट का ऑपरेटर कोई पत्र पढ़ रहा था। उसने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। जब काफी देर हो गयी तो जेन फोंडा ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया। ऑपरेटर के मन में संवेदना ने जन्म लिया और उसने तत्काल लिफ्ट का बटन दबा दिया। इसी तरह जब एक रूसी रेस्तरां में उन्हें अपनी मनचाही चीज नहीं मिली तो उन्होंने रोना शुरू कर दिया और आनन-फानन में उनकी मुराद पूरी कर दी गयी।

—राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वोट तो देंगे : जीतने नहीं देंगे !

● कृष्णकांत

राज्यपाल, आंध्रप्रदेश

सन १९७२ की बात है । अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का एक सदस्य होने के नाते मैंने तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. शंकरदयाल शर्मा को,जो आज हमारे राष्ट्रपति हैं, एक पत्र लिखा था । इस पत्र में मैंने चुनावों में काले धन की भूमिका और इसके फलस्वरूप पुष्पित और पल्लवित होनेवाली काली अर्थव्यवस्था के बारे में विस्तार से लिखा था । मेरा कहना था कि इन सबके फलस्वरूप देश में एक भ्रष्ट राजनीति का जन्म हो रहा है । समूचे देश में मेरे इस पत्र से हलचल-सी मच गयी थी । मानो मैंने कोई महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय गोपनीय रहस्य उजागर कर दिया है । इसके बाद मैंने तीन लेख भी लिखे थे और समूचे देश को आनेवाले खतरों से आगाह किया था ।

परदे के पीछे धन की राजनीति

उन दिनों कांग्रेस में बड़े घरानों के एकाधिकार के खिलाफ एक लड़ाई छिड़ी हुई थी । भारतीय राजनीति पर बड़े घरानों के बढ़ते हुए असर से चिंता पैदा हो रही थी । कंपनियों द्वारा राजनीतिक लोगों और दलों को दान देने पर प्रतिबंध लगानेवाला एक कानून भी पास कर

आंध्र प्रदेश के राज्यपाल श्री कृष्णकांत ने अपने इस लेख में अनेक प्रश्न उठाये हैं । इनसे सहमत हुआ जा सकता है और असहमत भी । अतः इस लेख में व्यक्त विचारों पर हम चिंतनशील राजनेताओं, बुद्धिजीवियों और सुचिंत सामाजिक कार्यकर्ताओं के विचार संक्षेप में जानना चाहेंगे । उन्हें हम ठीक उसी तरह से प्रकाशित करेंगे । विचार संक्षेप में हों ।

— संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

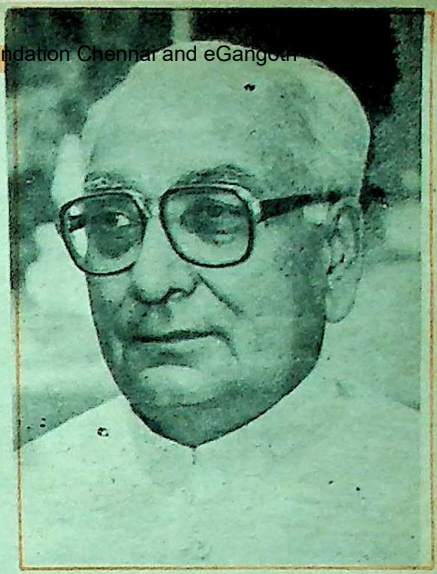

दिया गया था । पर इसका परिणाम उल्टा हुआ । पहले जो दान खुले तौर पर मिलता था अब वह चोरी-छिपे दिया जाने लगा । राजनीतिज्ञों और व्यवसायियों का गठजोड़ परदे के पीछे ओट में हो गया और उसका पता लगाना मुश्किल होने लगा । कंपनियों द्वारा खुले दान पर प्रतिबंध लगाने के कारण राजनीतिज्ञों ने धन इकट्ठा करने के लिए और भी खतरनाक रास्ते अपनाने शुरू कर दिये । इस तरह राजनीतिज्ञों और हर तरह का अवैध काम करनेवाले लोगों जैसे तस्करों, माफिया, कालाबाजारियों, और टैक्स बचानेवालों के बीच एक नया गठजोड़ शुरू हो गया । इस प्रणाली में बाद में अपराधी भी शामिल हो गये ।

धीरे-धीरे देश की राजनीतिक प्रणाली में अपराधियों की भूमिका सर्वमान्य होती गयी और वे राजनीति के अभिन्न अंग बन गये । समूचा देश असहाय होकर अपराधियों के राजनीतिकरण को यथार्थ में बदलता देखता रहा । अपराधी शक्तिशाली राजनेता बनने लगे । यह समाज के हर स्तर पर हुआ । ऐसे अपराधियों ने सोचा कि जब राजनेता उनके धनबल और बाहुबल पर जीवित रहते हैं, तो क्यों न वे स्वयं सत्ता हथियाएं और नेता बनें ।

मुझे याद आता है, सितम्बर १९८९ हमने एक सेमिनार किया था, जिसकी अध्यक्षता कांग्रेस के वरिष्ठ नेता स्व. कमलापति त्रिपाठी ने की थी । इस सेमिनार में हमने एक मुहावरा गढ़ा था—'राजनीति का अपराधीकरण'—'क्रिमिनिलाइजेशन ऑफ पॉलिटिक्स ।' आज यह सब हमारी आत्मा को झकझोरता नहीं । इस देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन का अभिन्न अंग मान लिया गया है । लेकिन १९७२ में हमारे इस मुहावरे ने एक सनसनी मचा दी थी । सातवें दशक में हमने काले धन और राजनीति के बीच बढ़ते गठजोड़ को असहाय होकर देखा । आठवें दशक में हमने राजनीति के अपराधीकरण को एक यथार्थ के रूप में स्वीकार करना शुरू कर दिया और यदि आज हम नहीं चेते तो आनेवाली पीढ़ियां हमें कभी क्षमा नहीं करेंगी ।

चुनाव : भ्रष्टाचार : असहाय

आज के चुनावों में खुलेआम कितना भ्रष्टाचार हो रहा है, हम सभी जानते हैं । चुनाव संबंधी प्रायः हर कानून की अवहेलना की जाती

अपराधियों ने सोचा कि जब राजनेता उनके धनबल और बाहुबल पर जीवित रहते हैं, तो क्यों न वे स्वयं सत्ता हथियाएं और नेता बनें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, लेकिन इन कारणों से कोई भी चुनाव अवैध नहीं ठहराया जाता । हम सभी जानते हैं कि विधानसभा या लोकसभा के किसी एक चुनाव क्षेत्र में आज चुनावों पर करोड़ों रुपये खर्च हो रहे हैं । यहां तक कि पंचायत स्तर तक के चुनावों में खर्च की कोई सीमा नहीं है । समस्या विकट ही नहीं हमारे समूचे लोकतंत्र को नष्ट कर देनेवाली है । फिर क्या किया जाए ?

राजनेता एक ही भाषा समझते हैं ?

इस समस्या के निराकरण के लिए कई उपाय सुझाये गये हैं । जैसे चुनावों का खर्चा सरकार वहन करे परंतु मेरे विचार से इससे भी समस्या हल नहीं होगी । इसी तरह और किसी प्रकार का कोई कानून बनाने से काम नहीं चलेगा । राजनीतिक अनुभव हमें यह बताता है कि राजनीति और राजनेता केवल एक ही भाषा समझते हैं और वह है जनता के विरोध की भाषा । इसलिए मैं कहता हूं कि इस तरह का कानून बनाया जाए कि लोगों को अपना विरोध, अपना आक्रोश, अपनी असहमति जताने का अवसर मिले । ऐसे ही कानूनों से देश को अराजकता की स्थिति से बचाया जा सकता है और सच्चाई तो यह है कि एक ओर जहां ऐसे कानून जनता को अपने भाग्य के निर्णय का अधिकार देते हैं, वहीं वे उसे परिपक्व भी बनाते हैं और राष्ट्र की आत्मा को शुद्ध करते हैं।

किसी भी निर्वाचन क्षेत्र में मतदाता को सभी उम्मीदवारों को नकारने के लिए वोट देने का अधिकार होना चाहिए ।

चुनाव क्यों ?

मैं सोचता हूं कि आज हम सबको स्वयं से यह मूलभूत प्रश्न करना चाहिए कि आखिर चुनाव क्यों ? क्या चुनाव सरकारें बनाने की एक निर्जीव प्रक्रिया मात्र हैं ? हमें आत्मालोचन करना चाहिए और स्वयं से पूछना चाहिए कि सरकारें मात्र शासन के लिए हैं या वे सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी हैं । क्या सरकार के लिए कोई नैतिक आयाम भी हैं या नहीं ?

हम सभी जानते हैं कि स्वाधीनता संग्राम और गांधीजी द्वारा चलाये गये आंदोलन केवल भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए नहीं थे, वे देश की सामाजिक और नैतिक स्वतंत्रता के लिए भी थे लेकिन आज जो कुछ हो रहा है उससे देश के विघटन का खतरा पैदा हो गया है ।

स्वाधीनता के पूर्व और उसके बाद भी कुछ समय तक जो राजनेता पूजे जाते थे आज वे उपेक्षा का शिकार बने हुए हैं । कभी-कभी ऊपरी तौर पर उनके प्रति आदर का दिखावा किया जाता है और वह भी केवल अपने स्वार्थ के लिए । आज का राजनेता शक्ति संपन्न है। लोगों के काम करा सकता है और इसीलिए लोग अपने स्वार्थ के कारण उसकी चापलूसी करते हैं, लेकिन उसके प्रति उनके मन में किसी प्रकार का आदर, किसी प्रकार की श्रद्धा नहीं होती । यदि हमारे राजनेताओं और राजनीतिक प्रणाली ने नैतिक शक्ति और विश्वसनीयता के साथ कार्य किया होता तो आये दिन होनेवाले असंतोषजन्य उपद्रवों को शांत करने के लिए सैनिक और अर्द्धसैनिक बलों की जरूरत नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समूचा देश असहाय होकर अपराधियों के राजनीतिकरण को यथार्थ में बदलता देखता रहा । ... अपराधियों ने सोचा कि जब राजनेता उनके धनबल और बाहुबल पर जीवित रहते हैं तो क्यों न वे स्वयं सत्ता हथियाएं और राजनेता बनें ।

होती । आज के हमारे सत्तारूढ़ वर्ग की नैतिकता में जो गिरावट आयी है, इसके फलस्वरूप ही राजनीति का पतन हुआ है और इसी के फलस्वरूप समाज के चार स्तंभों जैसे विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और 'मीडिया' की नैतिक सत्ता भी तिरोहित होती जा रही है । आज हिंसा और बंदूक सत्ता के समानांतर केंद्र बन गये हैं ।

क्या इन सबसे छुटकारा पाने का कोई रास्ता है । केवल राजनीतिज्ञों और राजनीतिक दलों को वोट देने से समस्या का समाधान नहीं होगा । हम सबको आत्मालोचन करना पड़ेगा । मैंने भी इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार किया और कुछ निष्कर्षों पर पहुंचा । इसके लिए मैं थोड़ा अतीत में जाना चाहूंगा ।

अंगरेजों ने सत्ता की जो मूलभूत प्रक्रिया हमें सौंपी, उसके दो तत्व थे : एक पृथक निर्वाचक मंडल और दूसरा 'फर्स्ट पास्ट दि पोस्ट' अर्थात चुनाव में जिस उम्मीदवार को अन्य उम्मीदवारों से अधिक मत मिलेंगे वही विजयी घोषित किया जाएगा । पृथक निर्वाचक मंडल की धारणा के फलस्वरूप देश का विभाजन हुआ और 'जो जीता वही सिकंदर' वाला सिद्धांत आज भी हमारे राष्ट्रीय जीवन को तहस-नहस कर रहा है ।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आज हमारी वर्तमान चुनाव प्रणाली में जो खतरे मौजूद हैं, उनके प्रति हम सबको सचेत हो जाना चाहिए । यदि हम यह जान लेते कि अन्याय को मिटाकर और सामाजिक भेदभाव और दमन को खत्म कर भी सत्ता प्राप्त की जा सकती है तो आज भारतीय समाज अधिक संगठित होता, उसमें बहुत अधिक हिंसा नहीं होती । यों तो जब-जब लंबे समय से चले आ रहे न्यस्त स्वार्थों को चोट पहुंचेगी, जब-जब उन्हें हटाने की कोशिश की जाएगी, तो थोड़ा बहुत संघर्ष और तनाव तो होगा ही । लेकिन अनुभव हमें यह बताता है कि यदि सामाजिक दीवारों को तोड़ने के काम को सत्ता की प्राप्ति के प्रयत्न से जोड़ दिया जाए तो फिर ऐसी दीवारों को तोड़ना आसान हो जाता है ।

यदि चुनाव कानून में ऐसा प्रावधान कर दिया जाए कि चुनावों में वही उम्मीदवार विजयी होगा जो किसी भी निर्वाचन क्षेत्र में दर्ज कुल मतों का पूर्ण बहुमत प्राप्त करेगा तो फिर जनता को संगठित करना अनिवार्य हो जाएगा । कुल दर्ज मतों का बहुमत प्राप्त करने का अर्थ यह होगा कि मतदान में पड़े मतों का अस्सी से पच्चासी प्रतिशत तक मत प्राप्त करना । इतने अधिक प्रतिशत मतों को प्राप्त करने के लिए उम्मीदवार जनता को एक सूत्र में बांधने के लिए विवश हो जाएंगे और ऐसी चुनाव प्रणाली में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक भेदभाव, धमकियों, जाली मतदान, घूसखोरी आदि के द्वारा चुनाव में विजय पाने की संभावना बिलकुल असंभव हो जाएगी । सत्ता की मूलभूत प्रक्रिया में इतना जबर्दस्त बदलाव आएगा कि उम्मीदवारों को अपने स्वार्थों के कारण ही विभिन्न जातियों और समुदायों में दरार डालने की बजाय उन्हें एक सूत्र में पिरोना, संगठित करना जरूरी हो जाएगा । मुझे संदेह है कि सभी राजनीतिक दल वर्तमान चुनाव प्रणाली को त्यागने के लिए तैयार हो जाएंगे, क्योंकि समाज को बांटकर चुनाव में विजय पाना और राजनैतिक सत्ता हथियाना ज्यादा आसान है ।

यह देखते हुए मैं एक सुझाव बार-बार देता हूं । इस सुझाव की मैंने देश के अनेक बुद्धिजीवियों, आप-जैसे लेखकों, चिंतकों आदि से चर्चा की है ।अपने इस सुझाव पर उनके विचार जानने चाहे हैं । इसे मैं जरा विस्तार से समझाऊंगा । मेरे सुझाव में दो मुख्य बातें हैं — एक : किसी भी चुनाव में विजयी होने के लिए कम-से-कम जितने मत जरूरी हों, वे मतदान में पड़े कुल मतों का पूर्ण बहुमत हों । मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी चुनाव क्षेत्र में वही उम्मीदवार विजयी घोषित किया जाए, जिसे मतदान में पड़े वोटों का पूर्ण बहुमत प्राप्त हो ।

मतदाता को नकारने का अधिकार हो

मेरे सुझाव की दूसरी महत्त्वपूर्ण और क्रांतिकारी बात यह है कि किसी भी निर्वाचन क्षेत्र में मतदाता को सभी उम्मीदवारों को नकारने के लिए वोट देने का अधिकार हो । अर्थात् यदि किसी चुनाव क्षेत्र में बहुमत मतदाता सारे उम्मीदवारों को अपने मतदान द्वारा नकारते हैं, तो फिर उस निर्वाचन क्षेत्र से कोई भी उम्मीदवार विजयी घोषित नहीं होगा ।

अब प्रश्न उठता है कि मतदाता उम्मीदवार या उम्मीदवारों को कैसे नकारे । मेरा कहना है कि मतदाता अपना मत देने जाएं, अपनी अंगुली पर निशान लगवाएं, मतपत्र लें और मतपेटिका के पास जाकर सारे उम्मीदवारों को नकारते हुए पूरे मतपत्र पर एक क्रास लगा दें और उसे मतपेटी में डाल दें । मैं जिस व्यवस्था की बात कर रहा हूं उसमें ऐसे मतपत्र अवैध घोषित नहीं किये जाएंगे जैसा कि आजकल होता है । आज भी कुछ मतदाता वर्तमान चुनाव प्रणाली के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए अपने मतदान पत्र में अपना असंतोष दर्ज कर देते हैं और मतगणना के समय ऐसे मतपत्र अवैध घोषित कर दिये जाते हैं । लेकिन मैं जिस चुनाव प्रणाली की बात कर रहा हूं, उसमें ऐसे मतपत्र अवैध नहीं माने जाएंगे । वे वैध ही घोषित किये जाएंगे । मैं चाहता हूं कि भारतीय मतदाता को सारे उम्मीदवारों को नकारने का अधिकार अवश्य मिले । उम्मीदवारों को नकारनेवाले ऐसे मत 'रिजेक्शन वोट' कहे जा सकते हैं या इसे हिंदी में 'नकारात्मक मत' भी कह सकते हैं ।

समाज को बांटकर चुनाव में विजय पाना और राजनैतिक सत्ता हथियाना ज्यादा आसान है ।

वोट को अवैध होने दीजिए

आज की चुनाव प्रणाली में मतदाता के पास यह मूलभूत अधिकार है ही नहीं । आज यदि आप किसी मतदान केंद्र में अपना मत देने जाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतदाता अपना मत देने जाएं मतपत्र लें और सारे उम्मीदवारों को नकारते हुए पूरे मतपत्र पर क्रास लगा, उसे मतपेटी में डाल दें। और ऐसे मतपत्र अवैध नहीं घोषित होने चाहिएं।

हैं, तो आपके पास मतदान पत्र में अंकित उम्मीदवारों में से किसी एक को वोट देने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचता। आप विवश हैं किसी-न-किसी को वोट देने के लिए। और यदि आप किसी भी उम्मीदवार को योग्य नहीं समझते हैं और उन्हें अपना मत नहीं देना चाहते हैं, तो आपके पास अपनी राय जाहिर करने के लिए और कोई विकल्प रहता ही नहीं। उम्मीदवारों की योग्यता, गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न लगाने के लिए आपके पास कोई उपाय नहीं है और यदि आप मतदान के जरिए राजनीतिकप्रणाली का विरोध करना चाहते हैं, तो आपके पास बहुत सीमित विकल्प हैं। एक तो यह कि आप घर में बैठे रहें और मन ही मन खीझते हुए यह सोचते रहें कि यह व्यवस्था तो आपको खाये जा रही है। अगर आप ऐसा करते हैं, तो लोकतंत्र में भागीदारी के अपने मूलभूत अधिकार का प्रयोग नहीं कर रहे। दूसरा विकल्प यह हो सकता है कि आप मतदान केंद्र जाएं और मतपत्र को समूचा काटकर मतपेटी में डाल दें और इस तरह अपना विरोध जताएं। (संविधान में इसकी व्यवस्था है। ऐसा करना संविधान का विरोध नहीं है।) आपका मत अवैध माना जाएगा। दोनों स्थितियों में आपका विरोध कारगर सिद्ध नहीं होगा, यद्यपि वर्तमान चुनाव प्रणाली में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है, जिसके द्वारा आप चुनाव प्रणाली के खिलाफ़ अपना विरोध प्रकट कर सकें। कभी-कभी तो आपके पास कोई विकल्प ही नहीं होता — नागनाथ को चुनें या सांपनाथ को।

सत्ता की मूलभूत प्रक्रिया को आमूलचूल न बदल पाने के कारण घोर निराशा होती है और समाज में सामाजिक तनाव, हिंसा आदि की घटनाएं बढ़ती जाती हैं। गांधीजी ने आशा की थी कि स्वतंत्र भारत में चुनाव प्रक्रिया खूनी क्रांति और सामूहिक सविनय अवज्ञा का विकल्प होगी। लेकिन अपने वर्तमान स्वरूप में वर्तमान चुनाव प्रणाली ज्यादा दमन, ज्यादा विभाजन, ज्यादा अन्याय का कारण बन गयी है। इसीलिए अपराधी राजनीति में छा रहे हैं और हमारी वर्तमान चुनाव प्रणाली भी उन्हें प्रश्रय दे रही है। मतदान का अधिकार और मतदान करने की विवशता आज ऐसी चुनाव प्रणाली को बनाये रखने के लिए बाध्य कर रही है जिससे अधिकांश लोग कट चुके हैं और उस पर से अपना विश्वास खो चुके हैं।

इसीलिए मैं कहता हूं 'रिजेक्शन वोट' या 'नकारात्मक मत' को भी वैध माना जाए। इससे हमें अहिंसक तरीके से एक सकारात्मक विरोध करने का अवसर मिलेगा।

'रिजेक्शन वोट' की व्यवस्था हो

यदि चुनाव प्रणाली में ऐसा प्रावधान कर दिया जाए तो किसी निर्वाचन क्षेत्र में बहुसंख्यक

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतदाता यदि चुनाव में खड़े सभी उम्मीदवारों और जिन राजनीतिक दलों ने उन्हें अपने प्रतिनिधि के रूप में चुना है, उन्हें अपने मतपत्र द्वारा नकारते हैं, तो वह उस निर्वाचन क्षेत्र का सामूहिक विरोध माना जाएगा और इसका अर्थ यह भी होगा कि ये मतदाता राजनीतिक दलों की ऐसी राजनीति का बहिष्कार करते हैं। यदि एक बार 'रिजेक्शन वोट' का सिद्धांत प्रभावी ढंग से अपना लिया जाता है तो फिर राजनीतिक दल या दूसरी संस्थाएं जनता के विरोध की उपेक्षा करने का साहस नहीं कर पाएंगे। मतदाताओं का यह बहिष्कार उन्हें आत्मालोचन के लिए विवश करेगा।

अमरीका में भी कुछ राज्यों में 'रिजेक्शन वोट' के सिद्धांत को अपनाया गया है। मैं एक उदाहरण द्वारा समझाना चाहूंगा कि रिजेक्शन वोट या नकारात्मक मत का सिद्धांत किस तरह कार्य करेगा।

मान लीजिए एक निर्वाचन क्षेत्र में सौ मतदाता हैं। इनमें से साठ प्रतिशत अर्थात साठ मतदाता अपने मतदान अधिकार का प्रयोग करते हैं। चुनाव में विजयी होने के लिए किसी भी उम्मीदवार को ३१ मत पाना जरूरी होगा। मान लीजिए बीस मतदाता 'रिजेक्शन वोट' के सिद्धांत का अनुसरण कर सभी उम्मीदवारों के खिलाफ मत देते हैं। ये बीस मत एक खास राजनीतिक विचार के प्रतीक होंगे और उन्हें वैध माना जाएगा। चुनाव में विजयी होने के लिए उम्मीदवार को चालीस मतों में से इकतीस मत प्राप्त करने ही होंगे। (६० में से २० घटाकर) यदि किसी को ३१ वोट नहीं मिलते तो सबसे अधिक मत पाने वाले दो उम्मीदवारों के बीच चुनाव का दूसरा दौर होगा। नकारात्मक वोट यानी 'रिजेक्शन वोट' और पूर्ण बहुमत अर्थात 'एब्सोल्यूट मेजारिटी' वाला सिद्धांत इस दूसरे दौर में भी लागू होगा। यदि नकारात्मक वोट अर्थात 'रिजेक्शन वोट' की गणना सभी उम्मीदवारों को पचास प्रतिशत से अधिक मत नहीं मिलते तो फिर एक निश्चित अवधि के बाद दोबारा से चुनाव किया जाएगा।

यदि दस प्रतिशत मतदाता रिजेक्शन वोट के अधिकार का प्रयोग करते हैं तो सबसे अधिक मत पानेवाले उम्मीदवारों को वैध मतों का पचास प्रतिशत प्राप्त करना होगा अर्थात २१ वोट। दूसरे दौर में उसे पांच अतिरिक्त मतदाताओं को समझाना पड़ेगा कि वे उसे वोट दें ताकि उसके वोटों की संख्या ३१ हो जाए। इसका अर्थ हुआ लोगों को संगठित करने के उसके प्रयत्नों में ८.६६ प्रतिशत की वृद्धि होनी ही चाहिए। यदि बीस प्रतिशत मतदाता 'रिजेक्शन वोट' का इस्तेमाल करते हैं तो उसे बारह मतदाताओं को समझाना पड़ेगा कि वे उसे अपना वोट दें। इसका अर्थ यह हुआ कि लोगों को संगठित करने के अपने प्रयत्नों में उसे १८.७५ की वृद्धि करनी पड़ेगी।

इस तरह 'रिजेक्शन वोट' और कुल मतदान में पूर्ण बहुमत प्राप्त करने के इन दोनों सिद्धांतों के कारण चुनाव में सफलता के लिए मतों के प्रतिशत में अपने आप वृद्धि हो जाएगी।

नकारात्मक वोट या रिजेक्शन वोट का सिद्धांत एक नया आयाम है और लोकतंत्र को नैतिक, मानवीय और जनता की भागीदारी योग्य बनाने के लिए उसका लोकतंत्र के सिद्धांतों में शामिल किया जाना जरूरी है। इस सिद्धांत के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रण दो स्तरों पर हमेशा बहस चलती रहेगी। ...स्तर सत्तारूढ़ वर्ग और आम जनता का ...गा जो पक्ष-विपक्ष में विभाजित हो सकती ...। दूसरा स्तर ऐसे वर्गों का होगा, जो एक नयी सामाजिक सहमति और चेतना का निर्माण करना चाहते हैं।

इस नयी चुनाव प्रणाली में सफल होने के लिए अंततः जितने अधिक मतों की आवश्यकता पड़ेगी, उतना ही अधिक उम्मीदवार एक समान कार्यक्रम के लिए लोगों को संगठित करने के लिए विवश होंगे। तब चुनाव में विजयी होने के लिए समाज को खंडित करने की कोशिश नहीं करनी पड़ेगी। राजनीतिक दलों को भी जनसाधारण को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर सहमत होने के लिए विवश होना पड़ेगा।

नकारात्मक मत या 'रिजेक्शन वोट' के सिद्धांत को यदि मैं एक वाक्य में कहना चाहूं तो कहूंगा कि भारतीय मतदाता यह घोषणा करें कि चुनाव में हम मतदान तो करेंगे, पर गलत उम्मीदवार को जीतने नहीं देंगे।

—राजभवन, हैदराबाद
(आंध्रप्रदेश)

कैंसर पर काबू पाने की ओर

स्क्रिप्स रिसर्च इंस्टीच्यूट कैलिफोर्निया के विश्वविख्यात शोधकर्ता डॉ. के. सी. निकोलाऊ एवं उनके साथियों ने ऐसे रसायनों को प्रयोगशाला में संश्लेषित किया है, जिनसे कैंसर के खिलाफ लड़ाई लड़ने में कुछ खास उम्मीदें बंधी हैं। निकोलाऊ ने जो रसायन डिजाइन किये हैं, उनकी खासियत यह है कि वे सामान्य कोशिकाओं के झुंड में मौजूद कैंसर ग्रस्त कोशिकाओं को ढूंढ़कर उन्हें नष्ट कर देते हैं, जबकि इस प्रक्रिया के दौरान सामान्य कोशिकाओं पर इनका कोई कुप्रभाव नहीं पड़ता।

इन नये रसायनों को डिजाइनर ईन-डाईस कहा जाता है। चूंकि ये प्राकृतिक ईन-डाईस जो कि एंटीबायोटिक है, को मोडिफाई करके डिजाइन की गयी हैं। जब ये कैंसर ग्रस्त कोशिकाओं को पहचानने के पश्चात उनके अंदर घुस पाते है, तब स्वतः फ्री रैडिकल्स में परिवर्तित हो जाते हैं, इसलिए मेजबान कोशिकाओं को मौत के घाट उतार देते हैं।

उपरोक्त रासायनिक पदार्थ प्रारंभिक चरणों में कुछ प्रचलित एंटी कैंसर दवाइयां जैसे—सिस्पलाटिन, डोकसट्यूबिसिन, बलोमाइसिन से भी अधिक कारगर साबित हुए हैं, और तो और ये हाल ही में अमरीका में भारतीय मूल के एक वैज्ञानिक द्वारा खोजी गयी दवा 'टैक्सोल' से भी बेहतर सिद्ध हुए हैं। ल्यूकीमिया यानी ब्लड कैंसर में तो ये खास तौर पर असरदार पाये गये हैं। जबकि विभिन्न प्रकार के कैंसरों में इनके फायदे का पता चला है।

— सुबोध सहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुल रहे रहस्य मस्तिष्क के

● डॉ. एन. राज गोपालन

वे मृत्यु के बाद अपने मस्तिष्क का दान करती हैं ताकि चिकित्सक और वैज्ञानिक मस्तिष्क के अभी तक अनसुलझे रहस्यों का पता लगा सकें। ये हैं 'सिस्टर्स ऑव मैनकाटो'। वे सब ७५ वर्ष से अधिक आयु की हैं और सौ वर्ष से अधिक जीना चाहती हैं। उनका जीवन चुनौतीपूर्ण है। वे स्वयं को स्वस्थ और प्रफुल्लित रखने के लिए कठिन से कठिन कार्य करने को तत्पर रहती हैं। विश्व में मस्तिष्क दान करनेवाले लोगों में वे सबसे अग्रणी हैं। अमरीकी राष्ट्रपति ने सदी के नौवें दशक को 'डिक्रेड ऑव द ब्रेन' अर्थात 'मस्तिष्क का दशक' घोषित किया था और इस दशक में अमरीका में सचमुच मस्तिष्क की संरचना, कार्यकलापों, उसके अनसुलझे रहस्यों और उसकी बीमारियों को लेकर तरह-तरह के शोध किये जा रहे हैं। शोधकर्ताओं का कहना है उन्हें अपनी हाल की खोजों से पता चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह के प्रमाण मिल रहे हैं कि मस्तिष्क किसी मांसपेशी की तरह कार्य करता है । जितना अधिक आप उससे काम लेंगे वह उतना विकसित होगा । पहले यह समझा जाता था कि मस्तिष्क अपरिवर्तनीय है, लेकिन नयी खोजों से पता चला है कि उसमें स्थितियों के अनुसार स्वयं को बदलने की क्षमता है । अतः वृद्धावस्था में पहुंचे लोगों के लिए ये नयी खोजें एक वरदान सिद्ध होंगी । वे वृद्धावस्था में भी अपने मस्तिष्क से मनचाहा कार्य ले सकते हैं । और बहुत सारे रोगों से दूर रह सकते हैं ।

मानसिक व्यायाम के द्वारा मस्तिष्क को और अधिक परिचालित किया जा सकता है और इसके फलस्वरूप मस्तिष्क कोशों में वृद्धि की जा सकती है ।

मस्तिष्क में परिवर्तन

मस्तिष्क संबंधी शोधों के लिए ख्यात एक अनुसंधान केंद्र के निदेशक एरनॉल्ड शेबेल का कहना है कि मस्तिष्क को एक विशाल स्मृति पुस्तिका या कंप्यूटर ही मानना चाहिए । इसके लिए बहुत सारी बातें की जा सकती हैं । मस्तिष्क में परिवर्तन लाया जा सकता है । इस धारणा ने कई आशाओं को जन्म दिया है । इसके कारण मस्तिष्क संबंधी अनेक रोगों की रोकथाम की जा सकती है । उनका इलाज किया जा सकता है । इससे पता चल सकता है कि कुछ लोगों में 'एल्जीमर' रोग के लक्षण देर से क्यों दिखायी देते हैं । पता चला है कि जो लोग शिक्षित हैं और मानसिक कार्य ज्यादा करते हैं उन्हें यह रोग होता ही नहीं या फिर देर से होता है । कारण यह है कि बौद्धिक कार्यकलाप मस्तिष्क में अत्यधिक उत्तकों की रक्षा करते हैं और वे इस रोग के कारण होनेवाली क्षति की पूर्ति कर देते हैं ।

अनुसंधान से पता चला है कि यदि पक्षाघात के कारण मस्तिष्क का कोई भाग क्षतिग्रस्त भी हो जाता है तो उस क्षेत्र के द्वारा किये जानेवाले कार्यों के लिए नया रास्ता खोला जा सकता है ।

कभी-कभी अपंग हो गये हिस्से में लोग दर्द का अनुभव करते हैं । वैज्ञानिकों का कहना है कि ऑपरेशन द्वारा काटे गये शरीर के भाग में दर्द का अनुभव होना मनोवैज्ञानिक कारणों से नहीं । इससे पता चलता है कि मस्तिष्क इतना

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

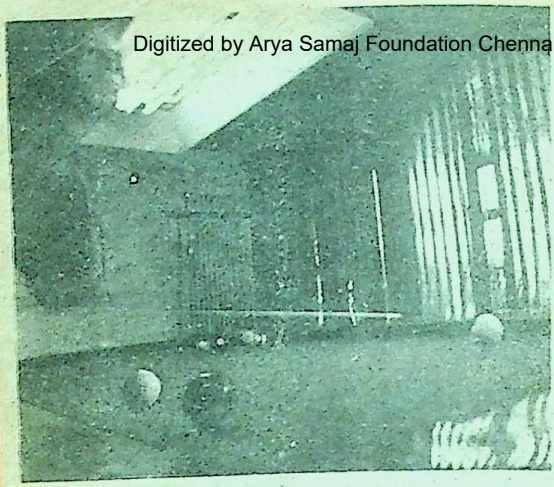

लचीला है कि उसके जो भाग अनुपयोगी हो जाते हैं, उनको कॉरटैक्स अर्थात मस्तिष्क के बाह्य आवरण के निकट के दूसरे क्षेत्र अपने अधिकार में ले लेते हैं । और इन सब शोधों में मैनकाटो में रहनेवाली ये वृद्धाएं महत्त्वपूर्ण सहायता दे रही हैं ।

ज्यादा दिन जिंदा

मैनकाटो में डेढ़ सौ से अधिक सेवानिवृत्त नन रह रही हैं । इनकी औसत आयु ८७ वर्ष है । इनमें से पच्चीस नब्बे वर्ष से अधिक आयु की हैं । इन्हें कोई बीमारी भी नहीं है । कैंटुकी विश्वविद्यालय में वृद्धावस्था के संबंध में शोध करनेवाले केंद्र के एक शोधकर्ता प्रो. डेविड स्नोडान वर्षों से इन ननों का अध्ययन कर रहे हैं और उनके अध्ययन का निष्कर्ष है जो लोग अपने मस्तिष्क द्वारा अधिक कार्य करते हैं, वे मात्र हाथ से काम करनेवाले अर्थात अपढ़ लोगों की तुलना में ज्यादा दिन जिंदा रहते हैं । मनुष्य के मस्तिष्क में प्रत्येक न्यूरोन के अंत में धागे के समान कुछ गुच्छे होते हैं जिन्हें 'एक्सोन' कहा जाता है । ये 'एक्सोन' अपने पास के न्यूरोनों को संकेत भेजते हैं । [illegible] दूसरे सिरे पर धागे के समान [illegible] जो अपने निकट स्थित कोशों से [illegible] करते हैं । उम्र बढ़ने के साथ-साथ [illegible] हैं किंतु प्रयोगों से पता चला है कि [illegible] कार्यकलाप से इनमें उसी तरह की [illegible] फूटती हैं, जैसे किसी बढ़ते हुए वृक्ष [illegible] इस तरह नये-नये संबंधों का एक [illegible] जाता है । एक बार जब व्यक्ति [illegible] चतुर हो जाता है तो अतिरिक्त [illegible] सकती हैं लेकिन मस्तिष्क की [illegible] तरह हुई है कि जरूरत पड़ने पर [illegible] भी की जा सकती हैं ।

स्नोडॉन और अन्य विशेषज्ञों का [illegible] कि ऐसे व्यक्ति जिनके मस्तिष्क में [illegible] अतिरिक्त शाखाएं बन जाती हैं, वे [illegible] रोग के कारण स्नायुमंडल में आये [illegible] बावजूद दूसरे स्नायविक मार्ग से संदेश [illegible] सकते हैं । पहले यह समझा जाता था [illegible] बाल्यकाल में ही मस्तिष्क के कुछ हिस्से [illegible] हो जाते हैं, लेकिन नये शोधों से पता [illegible] कि मस्तिष्क में बड़ी अवस्था में भी [illegible] सकता है । प्रो. स्नोडॉन का कहना है [illegible] मैनकाटो में सुशिक्षित ननों के मस्तिष्क [illegible] त्वचा कुछ अधिक होती है । इसी तरह [illegible] दूसरी कम शिक्षित ननों की बजाय [illegible] न्यूरोनों में अधिक शाखाएं उत्पन्न करने [illegible] क्षमता होती है । ये सुशिक्षित ननें [illegible] में आध्यात्मिक ध्यान संबंधी लेख [illegible] राजनीतिक स्तर पर महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों [illegible] पत्राचार करती हैं । पहेलियां बुझाती हैं [illegible] यह कि वे अपने मस्तिष्क से अधिक [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेती हैं ।

८१ वर्षीय हेनरी कार नामक एक वृद्ध घात के शिकार हुए हैं । चिकित्सकों को द है कि यदि उनका दिमाग संदेश भेजने के नये मार्ग ढूंढ़ निकालेगा तो उनको स्वस्थ की ज्यादा उम्मीद है । कार की चिकित्सा वाले डॉक्टर होले डे इसके लिए शील भी हैं ।

प्रत्येक हिस्से के लिए स्थान

एक अस्पताल का प्रसंग : कार का शरीर तरह निष्क्रिय है लेकिन उनके चेहरे पर दृढ़ ल्प की आभा है । उन्हें पोजीट्रान एमीशन ोग्राफ (पी.ई.टी.) स्कैनर के सामने रखा ा है । रेडियो सक्रिय जल से भरी सिरिंज से की बांह में सुई दी जाती है । रेडियो क्रियता के कारण स्कैनर पर संकेत उभरने ते हैं । डॉ. होले डे कार के बायें हाथ की ुलियों पर एक टूथब्रश रगड़ते हैं । वे पूछते कार क्या तुम्हें कुछ अनुभव हो रहा है ? ा बायां हाथ हिलाने की कोशिश करो । ी अंगुलियों को हिलाने की कोशिश ।' कार प्रयत्न करते हैं लेकिन पक्षाघात त बायें हाथ की बजाय अनजाने ही उनका हाथ मुट्ठी बांध लेता है । वैज्ञानिकों का ना है कि कार का दिमाग अपने बायें हिस्से उपयोग करने की कोशिश कर रहा है ताकि हाथ हिलाने के लिए नया स्नायुविक मार्ग जा सके । जैसा कि हम सभी जानते हैं कि ष्क का दायां हिस्सा शरीर के बायें हिस्से नियंत्रित करता है और बायां हिस्सा दायें को । एक अन्य वैज्ञानिक डॉ. लारेंस ब्रॉस कहना है कि पक्षाघात पीड़ित रोगियों का दिमाग अपने न्यूरोनों में नयी शाखाएं पैदा करता है ।

एक और प्रसंग । सन १९८५ में डेरेक स्टीन नामक एक युवक मोटर सायकिल दुर्घटना का शिकार हो गया और उसके बायें हाथ को काट देना पड़ा, लेकिन डेरेक स्टीन ने दूसरे हाथ से जूते के फीते बांधना और निशानेबाजी करना सीख लिया । पर डेरेक को अपने हाथ के कटे हुए हिस्से की जगह दर्द-सा अनुभव होता है । किसी को यह नहीं पता था कि जब वह अपने बायें गाल पर दाढ़ी बनाता था या बायें गाल पर ठंडी हवाएं लगती थीं तो उसका दर्द क्यों बढ़ जाता था । लेकिन अब वैज्ञानिकों ने इसका पता लगा लिया है । हमारे मस्तिष्क के बाह्य आवरण में शरीर के प्रत्येक हिस्से के महत्त्व के अनुसार प्रतिनिधित्व है । यह प्रतिनिधित्व उस हिस्से की संवेदनशीलता पर निर्भर करता है, जैसे कांधे की बजाय अंगुलियों को ज्यादा न्यूरोनों की जरूरत होती है । हमारे दिमाग के बाहरी आवरण के ये हिस्से अपने निकट के हिस्सों को भी नियंत्रित कर सकते हैं । पहले यह समझा जाता था कि हाथ या पैर काट देने के बाद मस्तिष्क में उससे संबंधित कोशिकाएं निष्क्रिय हो जाती थीं लेकिन नये शोधों से यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे जल्दी सीखते हैं !

कुछ लोगों की धारणा है कि बच्चों को दिमागी कसरतवाले काम नहीं सौंपना चाहिए । उन्हें खेलने-कूदने दिया जाए । पढ़ाई तो बाद में कर लेंगे । पर अनुभव बताता है कि यदि आपने बच्चों को बचपन में ही कुछ नहीं सिखाया तो फिर बड़े होने पर उन्हें कुछ सिखाना कठिन हो जाता है । संगीत, व्यायाम और शतरंज के शिक्षकों का अनुभव है कि बचपन से ही अभ्यास शुरू करने के अनेक लाभ हैं । बच्चे कोई भी नयी बात, नयी भाषा, कोई नयी कला जल्दी सीखते हैं । और इसका कारण भी है । बच्चों का दिमाग वयस्क लोगों की अपेक्षा अधिकाधिक स्नायुविक [illegible] जोड़ सकता है । दो वर्ष से ग्यारह वर्ष की उम्र [illegible] बीच दिमाग को मनचाहे ढंग से विकसित कि[illegible] सकता है ।

पता चला है कि ऐसा नहीं है ।

दूसरा न्यूरॉन जगह लेता है

सेंट डिएगो स्थित केलीफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो. वी. रामचंद्रन अपंग व्यक्तियों के मस्तिष्क का अध्ययन कर रहे हैं । गत वर्ष वे डेरेक स्टीन से भी मिले । उन्होंने स्टीन से आंखें बंद करने के लिए कहा और उसके गाल को छुआ । फिर उन्होंने पूछा, उसने कुछ अनुभव किया । स्टीन ने कहा कि उसे कटे हाथवाले हिस्से में सनसनी का अनुभव हुआ है ।

इसी तरह उन्होंने उसके जबड़े को एक रुई लगी लकड़ी से कुरेदा । स्टीन ने फिर अपने कटे हाथवाले हिस्से में सनसनी अनुभव की । रामचंद्रन को इससे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वे जानते हैं कि मस्तिष्क के बाहरी आवरण में चेहरे के लिए नियत न्यूरॉन हाथ के लिए नियत न्यूरॉन के पास ही है । जब स्टी[illegible] मस्तिष्क ने बांह से संकेत ग्रहण करना बंद [illegible] दिया, तब गाल को नियंत्रित करनेवाले न्यू[illegible] वह जगह ले ली । बाद में यह बात स्टीन [illegible] मस्तिष्क के चुंबकीय स्कैनिक से सिद्ध हो गयी ।

इस तरह के प्रमाण मिल रहे हैं कि मस्ति[illegible] किसी मांसपेशी की तरह कार्य करता है । जितना अधिक आप उससे काम लेंगे वह [illegible] विकसित होगा । पहले यह समझा जाता [illegible] मस्तिष्क अपरिवर्तनीय है, लेकिन नयी खो[illegible] पता चला है कि उसमें स्थितियों के अनुसार स्वयं को बदलने की क्षमता है । अतः वृद्धावस्था में पहुंचे लोगों के लिए ये नयी [illegible] एक वरदान सिद्ध होंगी । वे वृद्धावस्था में [illegible] अपने मस्तिष्क से मनचाहा कार्य ले सकते हैं [illegible] और बहुत सारे रोगों से दूर रह सकते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी विशेषाक

बर में दीपावली के अवसर पर
काशन के निरंतर ३५वें वर्ष का

ला अंक—

त्र विशेषांक

और

दिसम्बर में प्रस्तुत है—

बेहद लोकप्रिय और
उपयोगी—

स्वास्थ्य विशेषांक

विस्तृत विवरण अगले अंक में
'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव'
की श्रृंखला में अगला
महोत्सव—

य प्रदेश की संस्कारधानी जबलपुर में प्रतियोगिता ११ सितम्बर, १९९४
साइंस कालेज राइट टाउन जबलपुर, प्रातः दस बजे, पुरस्कार वितरण :
नांक १२ सितम्बर, १९९४ मानस भवन राइट टाउन, जबलपुर, समय :
सायं ५ बजे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम का एक पेड़

"नीम का एक पेड़
बाहर के ओसारे से लगे तो
गरमियों के दिन में
उसकी छांव में
बैठा करेंगे,
कड़ी होगी धूप
जाड़ों में जो सर पर
नीम की डालों से हम
परदा करेंगे।
पतझड़ों में सूखकर
पीले हुए पत्ते
'ओसारे-लॉन' पर जब
आ बिछेंगे,
सरसराहट-सी उठेगी
हवा सरकाएगी जब-तब
मर्मरी आवाज
आएगी, जो पत्तों पर चलेंगे।
हर वक्त कलरव
कोटरों में पक्षियों का,
किसलयों के रंग पर
कविता करेंगे,
नीम का एक पेड़
बाहर के ओसारे से लगे तो
हम सुबह से शाम तक
मौसम की रखवाली करेंगे।"

—मृदुला प्रधान
द्वारा श्री पी. एस. [illegible]
सलाहकार (एच. आर. डी.)
दूरसंचार विभाग, संचार [illegible]
कमरा नं. ११३,२० अशोक रोड, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपनिषद की कहानियां-७

"प्रायः प्रयास करके भी मनुष्य रात्रि में सो क्यों नहीं पाता ?" सूर्य के पौत्र शौर्यायणी ने यह प्रश्न अपने गुरु महर्षि पिप्पलाद से पूछा था । शौर्यायणी का यह प्रश्न और उसमें छिपी व्यथा आज के जीवन की भी एक त्रासदी है !

आत्मदर्शन

● डॉ. सुधा पांडे

(पूर्व कथा में आश्वलायन को पिप्पलाद द्वारा वर्णित प्राण की महत्त्वमयी अमृत विद्या का ऊर्ध्वगामी संदेश दिया गया था । अब इस आख्यान में सूर्य के पोते शौर्यायणी की जिज्ञासा और महर्षि पिप्पलाद द्वारा उसकी शांति)

महर्षि पिप्पलाद अन्य दिवसों की भांति एक दिन सायंकाल अपनी कुटिया में अध्यात्म चिंतन में लीन थे । अभी उनके पास आये जिज्ञासुओं ने उनसे विदा नहीं ली थी और उन्हें विश्वास था कि अभी अन्य तीनों ऋषिकुमार भी उनके समीप पहुंचेंगे । वे इतना विचार कर ही

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भगवन ! मैं यह जानना चाहता हूं कि कौन-सी शक्तियां हैं, जो सो जाती हैं और कौन सोने के बाद जागती हैं । इस पुरुष में कौन-सा वह देव है, जो इस पुरुष के भीतर बैठा स्वप्न देखता रहता है । किसको सुख होता और किसमें जाकर ये सब एक हो जाते हैं ।"

रहे थे कि उनके समीप शौर्यायणी गार्ग्य उपस्थित हुआ और प्रणाम करके चरणों के समीप बैठ गया ।

पिप्पलाद ने उससे कहा— "वत्स तुम्हारा ब्रह्मचर्य पूरा हो गया है अपने सभी साथियों की भांति तुमने भी आश्रम में रहकर सारी साधना पूरी कर ली है । मैंने पाया है, वेदशास्त्रों का परिशीलन तुम पूरी तरह कर चुके हो, फिर भी यदि किसी प्रसंग में कोई संदेह तुम्हें रह गया हो, तो तुम मुझसे पूछ सकते हो ।"

गार्ग्य मौन था, यद्यपि उसका मन पूर्णतः शांत नहीं था । वह विगत रात्रि ठीक से सो भी नहीं पाया था । वह आश्चर्यचकित था कि ब्रह्मचर्य का पालन करने के बाद भी वह ठीक से सो नहीं पाया था, इसी उधेड़बुन में वह गुरु से प्रश्न पूछना चाहता था कि 'प्रायः प्रयास करके भी मनुष्य रात्रि में सो क्यों नहीं पाता ?' महात्मा अंतर्यामी कहे जाते हैं । पिप्पलाद गार्ग्य की मुद्राएं देखकर उसकी स्थिति जान गये और स्वयं उन्होंने पूछा कि— 'वत्स गार्ग्य ! ऐसा प्रतीत होता है कि तुम रात्रि में सो नहीं सके हो । यह तुम्हारी मानसिक अस्थिरता की पहचान है । शायद ब्रह्मचर्य के नियमों से भी तुम विमुख रहे हो ।'

गुरु इस प्रकार प्रश्न पूछेंगे इसकी गार्ग्य को स्वप्न में भी आशंका नहीं थी । वह संकोच से गड़ गया पर विवश था और फिर गुरु की बात स्वीकार कर बोला— "भगवन ! आप ठीक ही कह रहे हैं, मैं विगत दो-तीन दिनों से अशांत हूं, मुझे यह भी पीड़ा होती रही है कि कुछ ही दिनों में यहां से लौटकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना पड़ेगा, और फिर संसार के नाना जंजालों में उलझनों में मन और अधिक उलझता गया और मैं बहुत प्रयास करके भी ठीक से न सो सका ।

अनेक प्रकार के कल्पित विचारों के अनुभव भी मुझे पूरी रात्रिभर होते रहे हैं । मुझे शीघ्र ही यहां तक आना था । मैं समझ नहीं पाया कि मुझे क्या करना चाहिए ।"

महर्षि पिप्पलाद ने उसे धैर्य बंधाते हुए कहा कि 'इंद्रियों समेत मन को बुद्धि और आत्मा के नियंत्रण में रखकर ही तुम गृहस्थाश्रम में सुख प्राप्त कर सकोगे ।' गार्ग्य अभी भी अशांत था उसने ऋषि प्रवर से पूछा—

"भगवन ! मैं यह जानना चाहता हूं कि कौन-सी शक्तियां हैं, जो सो जाती हैं और कौन सोने के बाद जागती हैं । इस पुरुष में कौन-सा वह देव है, जो इस पुरुष के भीतर बैठा स्वप्न देखता रहता है । किसको सुख होता और किसमें जाकर ये सब एक हो जाते हैं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिप्पलाद क्षणभर शांत रहकर बोले— "हे गार्ग्य ! तुमने अस्त होते हुए सूर्य को देखा है, तो जैसे अस्ताचल को जाते सूर्य की किरणें एकाकार होकर उसके तेजोमय मंडल में समा जाती हैं और प्रातःकाल उदय होने के समय वे फिर पूर्ववत फैल जाती हैं..."

गार्ग्य ने कहा— "गुरुदेव ऐसा ही होता है, मैंने दोनों दृश्य देखे हैं।" पिप्पलाद ने अपनी बात आगे बढ़ायी और बताया, "इसी प्रकार सोने के समय प्राणी की इंद्रियों रूपी किरणें मनरूपी सूर्य में समा जाती हैं अर्थात सारी इंद्रियां आत्मा में सिमट जाती हैं। इंद्रियां जब मन में एकाकार हो जाती हैं, तब पुरुष न तो सुनता है, न देखता है, न स्पर्श करता है, न सूंघता है, न बोलता है, न कुछ पकड़ता, न आनंद लेता है। तब लोग समझते हैं कि पुरुष सो रहा है, किंतु पुरुष नहीं सोता वरन इंद्रियां सोती हैं।"

"इंद्रियां सो जाती हैं, सोते हुए इनमें जागते कौन हैं ?"

पिप्पलाद ने उसे समझाया— "इंद्रियों के सो जाने पर प्राण जागते रहते हैं। प्राणों की अग्नि यों लगातार जागती रहती है, मानो वह मनुष्य के शरीर रूपी नगरी में पहरा दे रही हो। मैं अग्नियों के बारे में तुम्हें और अधिक स्पष्ट करके बताता हूं। तुमने देखा होगा कि प्रत्येक गृह में पंचाग्नि प्रज्वलित रहती हैं। गृह की अग्नि 'गार्हपत्य अग्नि' है : अपान वायु ही गार्हपत्य अग्नि है। यज्ञ में जिस अग्नि को लेकर भोजन आदि पकाया जाता है वह दक्षिणा अग्नि है। व्यान ही दक्षिणाग्नि है। गार्हपत्य अग्नि से जो अग्नि हवनकुंड में डाली जाती है वह आहवनीय है। यज्ञ में दी जानेवाली आहुतियों से जो धूम्र उठता है वह आहुतियों के सभी तत्वों को एक-एक करके सभी जगह समान कर देता है, यज्ञ की आहुतियों का कार्य 'समान' का प्रतिनिधि है। यज्ञ+दान कर्ता मनुष्य का मन पंचाग्नि यज्ञ में यजमान का कार्य करता है। यज्ञ में जिस फल की अभिलाषा की जाती है वह उदान है। उदान का कार्य है ऊपर ले जाना। पंचाग्नि यज्ञ द्वारा मनुष्य ऊंचे स्तर पर उठ जाता है। प्राणाग्नि जो उदान स्वरूप है वह मनुष्य को उन्नत बनाती है, ब्रह्मज्ञान के मार्ग पर ले जाती है।

गार्ग्य के मन के आवरण समाप्त होते जा रहे थे— पिप्पलाद ने उसे स्पष्ट कर दिया था कि ये पांचों प्राण पंचाग्नि की भांति हैं। जैसे अग्नि नहीं बुझती वैसे प्राण भी जागते रहते हैं, दिन-रात पुरुष को ब्रह्मज्ञान की प्रेरणा देते रहते हैं। गार्ग्य ने फिर प्रश्न किया— "भगवन ! स्वप्न की क्या स्थिति होती है ?" उन्होंने कुछ क्षण रुककर पुनः कहना प्रारंभ किया— "वत्स तुम जो स्वप्न देखनेवाले पुरुष की बात कर रहे थे, उसके बारे में सुनो, वह पुरुष आत्मा ही है वह स्वप्न में बाहर का कुछ भी नहीं देखता रहता है। जागरण के समय हमारी अनेक इच्छाएं अपूर्ण रह जाती हैं, मन उसे स्वप्न में पूर्ण करता है, जो अनुभूत नहीं है उसे मन अनुभूत की तरह स्वप्न में अनुभव करा देता है।" गार्ग्य की जिज्ञासा शांत हो चली थी। उसने आत्मा के आनंद का अनुभव प्राप्त करने के बारे में ऋषि से अंतिम प्रश्न पूछा कि 'भगवन ! मैं केवल यही और जानना चाहता हूं कि— कि यह मन ज्ञान के किस महा तेज में विलीन होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मानंद का अनुभव करता है ?'

जिस समय पिप्पलाद और गार्ग्य का वार्तालाप चल रहा था, सायंकाल पूरी तरह हो चला था. पक्षी पेड़ का आश्रय लेने के लिए लौट रहे थे । ऋषि पिप्पलाद ने गार्ग्य को बताया कि 'तुम देख रहे हो ये पक्षी सारा दिन इधर-उधर रहने के बाद अब शाम को अपने वृक्ष पर आकर चुपचाप बैठ रहे हैं । उसी प्रकार ब्रह्म प्राप्ति की अवस्था में मन के सभी विकार, सभी कामनाएं और मन के साथ लगातार चलनेवाला यह दृश्य संसार सब आत्मा में विलीन हो जाता है । सुषुप्ति की उस अवस्था में पांचों महाभूत भी उसी आत्मा में विलीन हो जाते हैं, इस अवस्था में स्वप्न नहीं आते । यह आत्मा की शांत, सुखद अवस्था है ।' उन्होंने आत्मलीनता का विस्तृत वर्णन करते हुए स्पष्ट किया कि 'यह आत्मा विज्ञानस्वरूप है यह सभी इंद्रियों को साथ लेकर प्राण और पंचमहाभूतों के साथ प्रतिष्ठित कर लेता है । यह आत्मा है दृष्टा है, यह स्पर्श करनेवाला है, यही रसग्राही है, यही मननशील है, यही बोद्धा (जाननेवाला) है, यही कर्ता है और यही विधाता है । छायारहित और अशरीरी इस आत्मा को जो जान लेता है वह सर्वज्ञ बन जाता है ।'

गार्ग्य के मुख पर अब संतोष झलकने लगा था, ऋषि प्रवर ने उससे कहा— "वत्स इस आत्मदर्शन के बाद तुम निश्चयेव स्थिर मन होकर उसे गृहस्थाश्रम में भी प्राप्त कर सकोगे ।"

गार्ग्य का अंतर्मन आनंद सागर में हिलोरें ले रहा था, ब्रह्मवर्चस के आत्मदर्शन से उसकी अवचेतना की तंद्राभग्न हो गयी थी और उसने अपने समक्ष ब्रह्म ज्ञान का स्वर्णिम आलोक पुंज बढ़ते देखा । आनंद और उल्लास से भरकर गार्ग्य महात्मा पिप्पलाद के श्रीचरणों में कृतार्थ होकर अपनी कुटिया की ओर प्रस्थान करने लगा ।

महर्षि ने उसे आशीर्वाद दिया तुम्हारा यह आह्लाद युग-युग तक प्रकाशित हो । गार्ग्य जब अपने साथियों के पास गया, तो उन सभी ने प्रसन्नतापूर्वक उसका स्वागत किया । गार्ग्य ने उन सभी को अपने मन की व्याकुलता और महात्मा पिप्पलाद द्वारा दिये आत्म प्रबोध की वार्ता उन्हें बता दी । गार्ग्य से प्राप्त जानकारी से उनके अंतर्मन भी और अधिक तेजस्वी बन गये । (प्रश्नोपनिषद् से)

— प्राचार्य,
एम. के. पी. (पी. जी.) कॉलेज, देहरादून

शैतान का चर्च

सान फ्रांसिस्को में एक ऐसा चर्च विद्यमान है, जिसे 'शैतान का चर्च' के नाम से जाना जाता है । इस चर्च में शैतान की पूजा होती है । इस चर्च की स्थापना १९६६ में 'एंटन स्जांडोर ला' नामक व्यक्ति ने की थी ।

—मंजु आर. अग्रवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

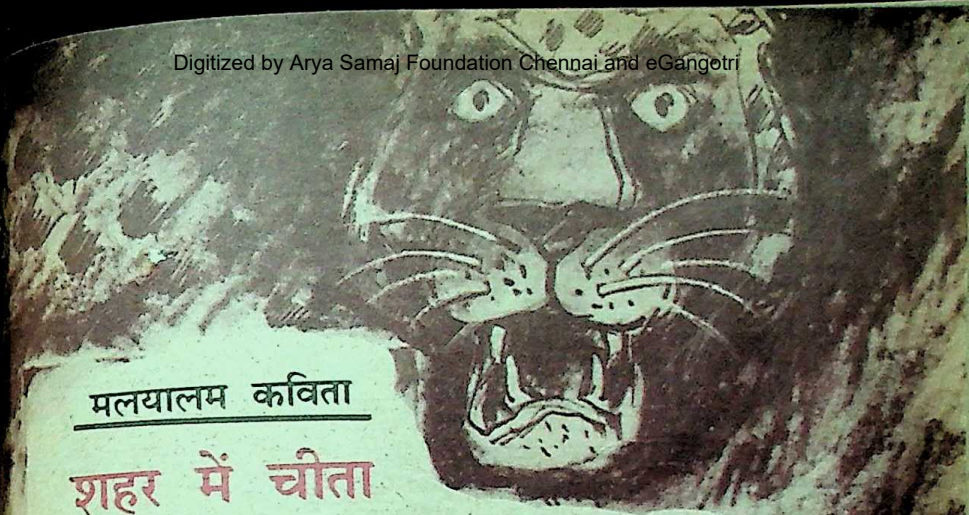

मलयालम कविता

शहर में चीता

अखबारों में खबर आयी
एक खतरनाक मेहमान
—एक जंगली चीता—
शहर में नजर आया है !
जंगली चीता शहर में
बाप रे यह क्या गजब हो गया !!
तड़के, पाखाना जाते एक बूढ़े ने
चीते की चमकती घूरती आंखें देखी
बूढ़े की कंजी आंखों में आंखें डाल
चीते ने पंजा मार दिया:
बूढ़ा चिल्लाया और बेहोश हो गया !
लेकिन चीता होश में था
लोगों की भगदड़ और चीख-पुकार से
चीता जान लेकर भागा
और पास के बंगले में घुस गया !
उस बंगले में कोई नहीं था
बंगलेवाले सभी जंगल में चले गये थे
सरकार की आंखें बचाकर
गांजे की खेती करने !
जंगली आग सी—
यह खबर फैल गयी
कि शहर में एक चीता घूमता है

बंदूकधारी पुलिस आयी
वन-विभाग के अफसर आये
जानवरों का डॉक्टर आया
कलक्टर नहीं तो क्या
उनके अपने आदमी कई आये
वन्य-प्राणियों के प्रेमी
समाज सेवी आये
हाथों में कैमरा लटकाये
अखबार वाले और
दूरदर्शन के लोग आये
फिर तो क्या था, बंगले के बाहर
मेले की भीड़ लगी
खबरें ये सब अखबारों में छपीं
लेकिन यह बात
अखबारों में कहीं नहीं थी
कि जंगल छोड़ चीता क्यों भागा था
और, कैसे भागा था
कटते पेड़ों
और जलते जंगलों को देखकर
चीते ने शहर की राह पकड़ी
यह खबर—
अखबारों में नहीं छपी

—डा. विजयन पी.व्ही.

अध्यक्ष, हिंदी विभाग कोचीन विश्वविद्यालय, कोचीन-६८२०२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

पान की खेती

● अशांत

गढ़मोरा के पहाड़ों की तलहटी में बांस की बारह-तेरह फुट ऊंची खपच्चियों से बना कोई सौ फुट लंबा, सौ फुट चौड़ा-वर्गाकार क्षेत्र घास-फूस से हलका आच्छादित था, ताकि सूर्य का हलका प्रकाश ही भीतर जा सके। इस विशाल ढांचे के भीतरी कक्ष को तेज धूप और हवा से बचाने के लिए पुख्ता प्रयास किये गये थे, ताकि भीतर पानी दें, तो वातावरण ठंडा और नम रहे। कक्ष के भीतर डेढ़-दो फुट की दूरी पर बेलों के चढ़ने के लिए खपच्चियों को तरतीब से सजाकर कक्ष की समान ऊंचाई में सहारे हेतु दीवारनुमा कतारें खड़ी की गयी थीं। इस विशाल गुमटीनुमा कक्ष में इन कतारों के साथ-साथ कोई एक फुट गहरे और इतने ही चौड़े खड्डे खोदे हुए थे। एक लंबा खड्डा और एक सहारे हेतु खड़ी की गयी लंबी बांस की दीवार मिलकर मानो एक कंपार्टमेंट था। हर कंपार्टमेंट में सौ के लगभग बेलें लगायी हुई थीं।

यह कक्ष ही पान का खेत है। इस खेत के बीच एक छोटा दरवाजा था, जो बांस और घास से बना हुआ था। गेट के पास शुद्ध पानी का जलाशय था। कहते हैं कि पान की बेल शुद्ध और ताजा पानी पीती है। जमीन की नमी, हलका प्रकाश, शीतल मंद हवा और शरीर के सुहाती उष्णता में बेल फलती है। उसके लंबे चिकने पात और ऊंची आकृति कुल मिलाकर बड़ा अच्छा चित्र उपस्थित करते हैं। जब वह फलती है तो बड़ी आकर्षक, बड़ी सुहावनी और बड़ी कमनीय लगती है।

पहाड़ के नीचे पान के खेत थे। कैलाशी अपने खेत में अपने पति शुभू के साथ क्यारियां तैयार कर रही थी। दोनों की अधिक उम्र नहीं थी। पिछले साल ही तो उनका विवाह हुआ था। पान की बेल के पत्ते-पत्तियों पर आयी चिकनाई—जैसी चिकनाई उनके शरीर पर छायी थी। कैलाशी के चेहरे को देखकर ऐसा लगता, मानो बेलों का यौवन कैलाशी को लग गया हो और पत्तियों का लावण्य मानो उसके चेहरे पर उतर आया हो। जैसा यह खेत था, वैसा ही शुभू का शरीर। ज्योंही कैलाशी की उस पर नजर पड़ी, वह सरककर उसके पास आ गयी। शुभू ने उसे देख लिया था। वह उसके निकट आ गया। बोला— "यह बेल कितनी अच्छी लगती है, कैलाशी ? कच्ची, हरी और अनछल ऊंची। बिलकुल तुम्हारी तरह। आओ, आज हम इस खेत में ऐसी ही नयी बेलें लगायें। मिलकर खेत बोयें।"

कैलाशी सुनकर सिहर उठी। वह उसके सीने से लग गयी। रोमानी उष्णता उमड़ पड़ी। शुभू बोला— "पानी और बीज का कितना अनुपम मेल है सृजन। ये पान, ये हम और यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

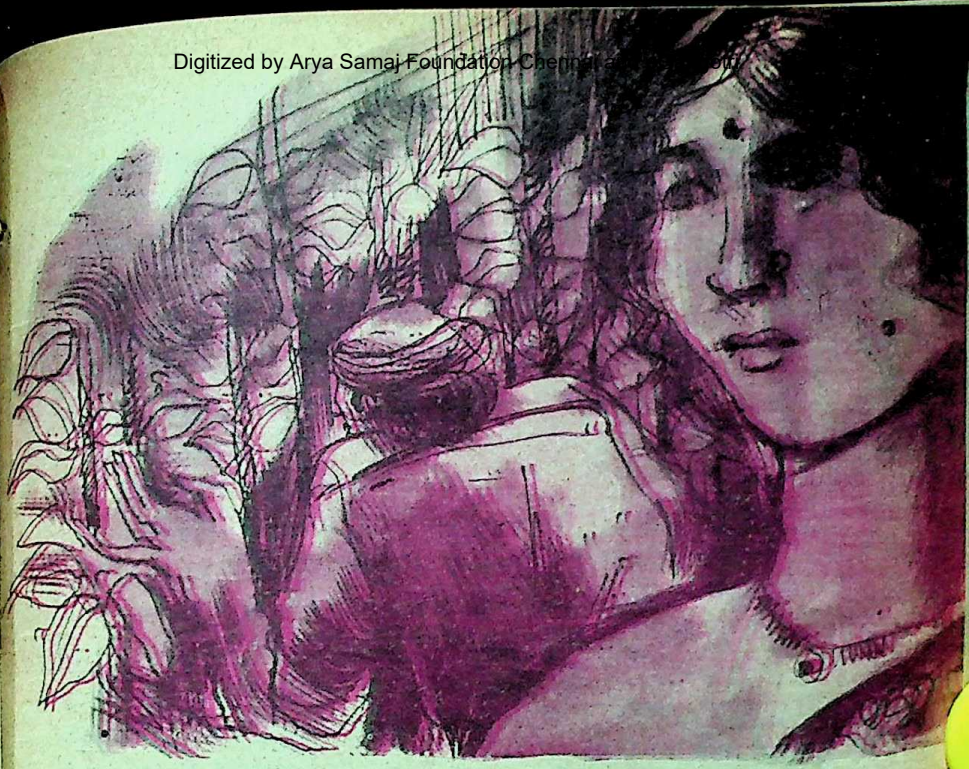

सृष्टि ।'' और वे खो गये । उन्हें देखकर बेलें विहंस उठीं । खेत खिलखिला उठा ।

बीज बढ़े ज्यों कैलाशी का तन बढ़े । सृजन आकार ले । प्रकृति रंग बदले । हवा-पानी और ऋतु में परिवर्तन हो । सब-कुछ सुहावना । शुभू बेलों की आवश्यकता का ख्याल रखे और कैलाशी की आवश्यकता का भी, चाहे वे तन की हों चाहे मन की ।

कैलाशी का मन ओपरा था । वह खुश थी— बेलों की भांति । शुभू यह सब देखता, तो फूले न समाता । वह कहता— ''इस बार पांच लाख से ऊपर की फसल लेंगे । एक क्यारी कम-से-कम पांच हजार रुपये देगी ।'' कैलाशी खुशी में भरकर आंखें मूंद लेती । उसने उसे सोने के कंगन बनाकर देने की बात शुभू से कही । शुभू बोला— ''तुम कहोगी तो मैं तुम्हें सोने से पीली कर दूंगा । मुझे कोई बोहरे थोड़े ही चुकाने हैं । बापू ने मेरे लिए कर्ज नहीं छोड़ा है, कुछ देकर ही गये हैं ।'' फिर वह गढ़मोरा के पहाड़ों की तरफ देखने लगा । बोला— ''कैलाशी, यह पहाड़ हम पर बहुत मेहरबान हैं । इनके हृदय से निकलनेवाला जल हमारे लिए वरदान है । और यह धरती जिस पर हम खड़े हैं, राजा मोरध्वज के तप से तपी हुई है । इन पहाड़ों के भीतर से निकलनेवाला उज्ज्वल-धवल निर्मल जल भले ही आदमी के पीने के काम न आये, परंतु यह जल इस धरती पर बसे आदमी को भूखे नहीं रहने देता । हम तंबोलियों के लिए यह जल वरदान है । इसी जल से इस मरुभूमि में पान की खेती होती है । तंबोली इस खेती से संपन्न हैं, अन्य लोग आम खेती से । इस पानी से अपनी जमीन सींचकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग खुशहाल हैं । तुमने पहाड़ के नीचे बना वह तालाब देखा है न ? कितना स्वच्छ है उसका पानी ! दस-ग्यारह फुट गहरा तल बिलकुल साफ दिखायी पड़ता है । जितना साफ यह पानी है, उतने ही साफ और निर्मल मन इस धरती के लोगों के हैं । कैलाशी, यह मन हमें विरासत में मिला है ।" इतना कहकर वह अतीत में खो गया । बोला— "तुम्हें याद होगा कैलाशी, इस पुण्य भूमि के राजा और रानी ने बिना आंसू छलकाये अपने बेटे को अपने ही हाथों से आरे से चीरकर साधु -महात्माओं के शेर को उसका भोजन दिया और महात्माओं को भोजन कराया । ये पान हमारे बेटे हैं । तुम देखती हो न, हम इन पानों को बिना पैसे लिये टोकरियों में भर-भरकर ऊरईवालों को भेज देते हैं । वे जो भी हमें देते हैं, हम ले लेते हैं । परंतु अब वे लोग पहले-जैसे नहीं रहे । वे लोग तंबोलियों को धोखा देने लगे हैं । उनके भीतर पाप जाग उठा है.... ।"

दोनों भावुक हुए खड़े थे । कैलाशी को लगा जैसे कोई ठग उससे उसके पान छीन रहा हो । वह चौंक उठी । बोली— "हमें उनका अधिक विश्वास नहीं करना चाहिए, शुभू । अब राजा मोरध्वज का जमाना नहीं है, कलियुग चल रहा है— आदमी-आदमी से बहुत बदल गया है.... ।"

"तुम ठीक कहती हो, कैलाशी । परंतु विश्वास नहीं करें, तो हम क्या करें ? वर्षों से ये ही लोग खरीददार रहे हैं । पहले वे आकर ले जाते थे, अब हम इन्हें टोकरियों मे भरकर रेल से भेज देते हैं । तुम्हें पता है, हमें कितनी तकलीफ होती है ! टोकरियों को उठाकर गंगापुर ले जाना पड़ता है । यहां तो रेल है नहीं, वहां जाकर रेल पार्सल करवाने पड़ते हैं ।" फिर उसने एक लंबी सांस लेकर कहा— "इसके बाद भी वे ही भाव करते हैं और वे ही बेचते हैं । जो पैसा वे भेज देते हैं, हम ले लेते हैं । हम तो राजा मोरध्वज की भांति अपने धर्म पर अटल हैं, परंतु इन खुदा के बंदों ने अपना धर्म छोड़ दिया है । पिछले साल रामप्रसाद को उन्होंने भारी नुकसान दिया था । उन्होंने अपना ईमान बेच दिया । रामप्रसाद की पूरी फसल खा गये । जब सबने सिर समाया, ऊंचा-नीचा लिया तो ईमान उठाकर आधे-अधूरे पैसे दिये और एक को गंदा बताकर सबने अपने आपको पाक कर लिया ।" उसने जोर देकर कहा— "अब हमें कोई और व्यवस्था करनी होगी ..... ।"

खेती फलती जा रही थी । कैलाशी फूलकर कुप्पा हो गयी, बिलकुल पान की बेल की तरह । खेती हरी-भरी थी और पान बड़े हो रहे थे ।

दोनों भावुक हुए खड़े थे । कैलाशी को लगा जैसे कोई ठग उससे उसके पान छीन रहा हो । वह चौंक उठी । बोली— "हमें उनका अधिक विश्वास नहीं करना चाहिए, शुभू । अब राजा मोरध्वज का जमाना नहीं है, कलियुग चल रहा है— आदमी-आदमी से बहुत बदल गया है.... ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभू के पास आज ऊरई के व्यापारी आये थे। उन्होंने शुभू के खेत को देखा। बेलों पर पलते लंबे पानों को देखकर उनके मुंह में पानी आ गया। उन्होंने कहा— "इस बार आप हमारे सिवाय किसी को पान नहीं देंगे ...। हम कानपुरवालों की तरह नहीं हैं, खुदा से डरते हैं। यह लो बीस हजार रुपये ! शेष हिसाब पूरी सप्लाई होने पर कर देंगे।"

कैलाशी उनकी बात सुन रही थी। शुभू कह रहा था— "पूरी फसल पांच लाख से ऊपर की होगी, इसके लिए बीस हजार रुपये बहुत कम हैं। इस रकम से सौदा तय नहीं हो सकता।" शुभू ने वह रकम उन्हें वापस कर दी। इस पर उनमें से एक बोला— "अरे जनाब, पहले तो हम बिना एडवांस के ही ले जाते रहे हैं !"

"आप जानते हैं कि वह बात अब नहीं रही। इस रकम के पेटे पांच लाख का माल अब नहीं भेजा जा सकता।"

दूसरा बोला— "जनाब। यह खेती बड़ी अमीर और रईसाना मिजाज की है। क्या पता मौसम का अंदाज बदल जाए और खुदा न करे इस चश्मेबद्दूर के नजर लग जाए। हम तो आज के हाल पर यह रकम दे रहे हैं।"

शुभू ने कहा— "हमें ईश्वर पर भरोसा है। हवा-पानी और मौसम का हमने पूरा इंतजाम कर रखा है, फिर कोई बात हुई, तो हम आपको आपकी रकम वापस देंगे। हमें केवल अपने माल के ही पैसे लेने हैं।"

जब वे अधिक ही आग्रह करने लगे, तो शुभू ने पचास हजार की अग्रिम रकम लेकर सौदा तय कर लिया और यह शर्त रखी कि सावे पर वे एक लाख रुपये की रकम उसे और भेज देंगे।

व्यापारियों ने शर्त मान ली और सौदा तय हो गया। शुभू और कैलाशी अपनी खेती में रम गये।

●

कैलाशी रोज अपने खेत में जाने से पहले पहाड़ पर मोरध्वज के महल के पास बने शिव मंदिर में जाती, जल चढ़ाती। अर्चना का यह जल मानो बूंद-बूंद उसकी खेती में जाता। वह हरी-भरी हो उठी। पान बढ़ने लगे। खेती पकने लगी। शुभू और कैलाशी पान तोड़-तोड़ टोकरियों में सजाने लगे और भर-भरकर व्यापारियों को भेजने लगे। गरमियों में पान के भाव चढ़ गये। सावे के समय व्यापारियों के वारे-न्यारे हो गये। शुभू के खेत के पान लंबे और अच्छी किस्म के थे। व्यापारियों के रोज पत्र आते और माल जल्दी भेजने का आग्रह करते। सावे के पहले ही दो लाख रुपये की सप्लाई हो चुकी थी। शुभू ने दाम भेजने का आग्रह किया, परंतु इसका उसे कोई जवाब नहीं मिला। केवल माल भेजने के तकादे-पर-तकादे आते रहे। मौसम देखकर शुभू ने सप्लाई नहीं रोकी, वह पान भेजता रहा। जब व्यापारियों ने वायदे के अनुसार रकम नहीं भेजी, तो कैलाशी ने एक दिन कहा— "आप ऊरई जाओ। हमने बड़ी मेहनत से बेलों को पाला है, तब यह पान आये हैं। मुझे दाल में काला दिखायी पड़ता है।"

शुभू दूसरे दिन ही ऊरई चला गया। व्यापारियों ने उसकी बड़ी आवभगत की, घुमाया-फिराया परंतु ज्योंही उसने पैसे की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की, तो उन्होंने साफ कह दिया— "माल खराब आया था। जिन पार्टियों को हमने माल भेजा, उनसे रिपोर्ट मिली कि पूरा माल खराब है। यह देखो पार्टियों के पत्र। हम तो बरबाद हो गये।"

शुभू बात समझ गया। वह बोला— "यह झूठ है। गढ़मोरा में इस बार मेरे खेत के सबसे अच्छे और बढ़िया किस्म के पान हुए हैं। वे खराब नहीं हो सकते। हम कोई नये तंबोली नहीं हैं, पीढ़ियों से यह धंधा कर रहे हैं। हमें पता है, पान कैसे खराब होते हैं। ये पत्र झूठे हैं।"

ऊरई और कानपुर वाले मिल गये। गढ़मोरा के तंबोलियों की मेहनत व्यर्थ चली गयी। जब शुभू घर लौटा, तो कैलाशी ने पूछा— "दाम ले आये ?"

शुभू कुछ देर मौन रहा, तो कैलाशी समझ गयी। वह कह रहा था— "ईमान का वास्ता देकर हमारी पूरी फसल निगल गये।" उसने लंबी सांस लेकर कहा— "हमारी शीतलता हमें ले डूबी... खेती का गर्भ गिर गया।"

कैलाशी सुनकर सुन्न रह गयी। शुभू को जब यह पता लगा कि कैलाशी के गर्भ में जो बच्चा था, वह उसके जाने के बाद पीछे से गिर गया, तो वह हतप्रभ रह गया। वे दोनों हाथों लुट गये। कैलाशी घायल हिरनी की भांति खड़ी शुभू की तरफ देख रही थी।

● ● ●

एक दिन रामप्रसाद शुभू के पास आया। बोला— "घबराओ मत ! काका ने यह निश्चय किया है कि हम मिलकर ऊरई और कानपुरवालों पर केस करेंगे। गांव वाले हमारे साथ हैं। काका कल ही कलेक्टर साहब से बात करके आया है। आज वे गढ़मोरा आनेवाले हैं। हमारा पैसा डूबेगा नहीं। यह कोई लाख-दो लाख की बात नहीं है, पूरे लाख का मसला है। काका ने वकील से लिया है। तुमसे अपने टोकरों की रेल रसीदें मंगवायी हैं। तुम उन्हें इकट्ठी कर लो। हम यह रकम डकारने नहीं देंगे। मुझे तो पिछले साल ही उन पर शंका हो गयी थी। आप सब उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गये और उन पर भरोसा कर बैठे। इस बार इन्होंने गढ़मोरा की पान की पूरी-की-पूरी फसल को डकार लिया है। इन लोगों का अब ईमान नहीं रहा। ये लोग धोखेबाज और बेईमान हो गये हैं....।"

शुभू बोला— "इनके भीतर का आदमी मर गया है रामप्रसाद।"

कैलाशी ने रामप्रसाद की बातें सुन लीं। उसकी बातों से उसके शरीर में जैसे नवजीवन का संचार हुआ। शुभू कह रहा था— "इस बार हम उन्हें गांव में नहीं घुसने देंगे। हम अपने पान कहीं भी बेच लेंगे।"

"अब ऐसा करना ही पड़ेगा। परंतु पहले सब मिलकर पैरों में लगी आग को बुझाओ।"

शुभू रामप्रसाद के साथ जा रहा था। कैलाशी दरवाजे पर खड़ी उन्हें देख रही थी। उसके खाली हाथ नीचे लटक रहे थे और पेट आंतों से चिपका हुआ था। वह भीतर आ गयी और पान की बेलों के बीज (पौध) संभालने लगी।

—३/३४३, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

संजय रावत, आगरा

प्र. : बहमनी सल्तनत का बिखरना कब शुरू हुआ था ?

□ लगभग १४९० में बहमनी सल्तनत का बिखरना शुरू हो गया था, और अंततः बीजापुर, बीदर, बरार, गोलकुंडा और अहमदनगर में विभाजित हो गयी थी । (स्रोत : चेम्बर्स एनसाइक्लपीडिया) ।

विजय मोहन चोरड़िया, कोटा

प्र. : सामान्य से बड़ी छिपकली कहां पायी जाती है ?

□ संसार की सबसे बड़ी छिपकली कोमोडो ड्रैगन है । यह तीन मीटर तक लंबी और वजन में १३५ किलोग्राम तक होती है । इसकी गरदन लंबी किंतु लचीली होती है । इसकी पूंछ शक्तिशाली और लंबी होती है किंतु पैर छोटे और मजबूत होते हैं । यह मनुष्य पर हमला करके उसे मारने में सक्षम है । यह कोमोडो द्वीप तथा इंडोनेशिया के कुछ द्वीपों में बहुतायत से मिलती है । (स्रोत : मैक्मिलंस एनसाइक्लपीडिया) ।

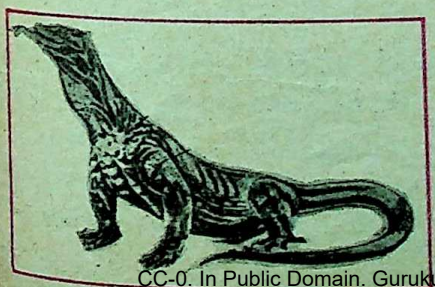

नरेश कुमार मेहता, जयपुर

प्र. : भोजन में मिर्च कितनी उपयोगी है ?

□ हमारे भोजन में मिर्च की उपयोगिता से इंकार नहीं किया जा सकता । मिर्च खाने से हमारी स्वाद कलिकाएं (टेस्ट बड्ज) उत्तेजित होकर अधिक लार बनाती हैं । हमारी लार में पाया जानेवाला एमाइलेस एंजाइम अनाज को जल्दी पचाने में सहायक है । मिर्च में विटामिन 'सी' की मात्रा संतरे, नींबू आदि से भी अधिक होती है ।

रामानुज श्रीवास्तव, इलाहाबाद

प्र. : क्या प्लास्टिक सर्जरी भारत की देन है ?

□ शल्य विज्ञान (सर्जरी) आयुर्वेद की एक प्रमुख शाखा रही है । इंद्र ने इसका ज्ञान धन्वंतरि वैद्य को दिया था, और धन्वंतरि के शिष्य सुश्रुत ने शल्य विज्ञान को 'सुश्रुत संहिता' के रूप में लिपिबद्ध किया था । इसी 'सुश्रुत संहिता' के सोलहवें अध्याय में कान, नाक और ओष्ठ की प्लास्टिक सर्जरी का उल्लेख मिलता है । अट्ठारहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में ईस्ट इंडिया कंपनी के डॉक्टरों ने महाराष्ट्र में वैद्यों को प्लास्टिक सर्जरी करते देखा था ।

दुर्गेश नंदन साहू, रतलाम

प्र. : भारत की राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय का निर्धारण कौन करता है ?

□ यह कार्य केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन द्वारा किया जाता है ।

ऋचा मालवीय, इलाहाबाद

प्र. : जीन चिकित्सा क्या है ?

□ जीन चिकित्सा का संबंध आनुवांशिक रोगों के निदान से है । इस बारे में भेषजीय वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि जन्म लेनेवाले प्रत्येक सौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों में से एक किसी न किसी आनुवांशिक रोग से ग्रस्त होता है। ये रोग बच्चे को शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग कर देते हैं। ऐसे बच्चों की मृत्यु भी हो सकती है। जीन चिकित्सा के अंतर्गत रोगी के दोषपूर्ण जीन को स्वस्थ जीन में बदलने का प्रयास किया जाता है।

कुबेर नाथ, बलिया

प्र. : भारत में पहले-पहल प्रेस सेंसरशिप कब शुरू हुई थी ?

☐ वारेन हेस्टिंग्स ने १७८२ में शुरू की थी। 'बंगाल गजट' इसी समय दबाया गया था।

रामेश्वर जालान, कलकत्ता

प्र. : 'ब्राह्मण' नामक साहित्यिक पत्र के संपादक कौन थे ?

☐ पं. प्रताप नारायण मिश्र।

गोविंद राम ग्रोवर, अंबाला

प्र. : सन १९३५ के भूकंप से सबसे अधिक तबाही किस शहर की हुई थी ?

☐ क्वेटा (अब पाकिस्तान) में।

जवाहरलाल जोगी, अजमेर

प्र. : पक्षियों के अंडे क्या सफेद के अतिरिक्त अन्य रंगों के भी होते हैं ?

☐ अंडे सफेद के अतिरिक्त भी होते हैं।

श्यामा प्रसाद, फैजाबाद

प्र. : कहते हैं कि तेज गेंदबाजों के विरुद्ध बल्लेबाजी करना पहले कठिन था, अब नहीं, क्यों ?

☐ पहले कठिन इसलिए था कि तेज गेंदबाजों के हमलों से अपने शरीर को बचाते हुए खिलाड़ी को बल्लेबाजी करनी होती थी, उसका ध्यान बंट जाता था। अब हलके हेल्मेट और बेहतर लेग-गार्ड आ जाने से खिलाड़ी इस ओर से निश्चिंत होकर बल्लेबाजी करता है।

सिकंदरजहां, आजमगढ़

प्र. : घड़ियों में ज्वेल क्या होते हैं ?

☐ स्फटिक-विहीन घड़ी में लगभग २११ पुर्जे होते हैं और इसकी आंतरिक यंत्र-व्यवस्था बहुत जटिल होती है। घड़ी के अंदर कुछ चक्र होते हैं जो घंटा, मिनट और सेकेंड की सुइयों को सरकाते हैं। इन चक्रों की धुरियां चूलों पर टिकी होती हैं। जब चक्र घूमते हैं, तब धुरी और चूल में घर्षण होता है जिससे ये पुर्जे घिस जाते हैं, जिनके कारण घड़ी सही समय नहीं देती। अतएव इस घिसाव को कम करने के लिए चूल के स्थान पर कड़ी, किंतु कठोर वस्तु इस्तेमाल की जाती है। यह वस्तु (ज्वेल) सामान्यतया माणिक और नीलम होते हैं। इन वस्तुओं (ज्वेल) पर चक्र की धुरियां बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घिसाव उत्पन्न किये बराबर चलती रहती हैं। ये ज्वेल चूंकि घिसते नहीं, इसलिए घड़ी भी ठीक समय देती रहती है।

सुरेश कुमार राय, बछवाड़ा

● मिट्टी के घड़े में पानी ठंडा क्यों हो जाता है ?

□ मिट्टी के घड़े में अनेकानेक सूक्ष्म छिद्र होते हैं जिनसे पानी रिसता रहता है तथा गरमी के कारण इस रिसते पानी का वाष्पीकरण होता है। जिस वस्तु का वाष्पीकरण होता है उसका तापमान गिर जाता है, और इस प्रकार घड़े के अंदर का पानी वाष्पीकरण के कारण ठंडा हो जाता है।

मोहन कुमार सरकार, भागलपुर

● प्रसिद्ध फुटबाल क्लब 'मोहन बागान' की स्थापना कब हुई थी ?

□ 'मोहन बागान' क्लब की स्थापना सन १८८९ में हुई थी। यह सबसे पुराना क्लब है।

नंद किशोर केशरी, कटिहार

● विश्व में सबसे बड़ा रेलवे प्लेटफार्म कहां है ?

□ विश्व का सबसे लंबा रेलवे प्लेटफार्म खड़गपुर (पश्चिम बंगाल) का है जिसकी लंबाई ८३३ मीटर है।

विवेक पाठक, शिवपुरी

● गुट निरपेक्ष आंदोलन में कितने देश शामिल हैं ?

□ इन देशों की सदस्य संख्या १०९ है। दक्षिण अफरीका इसका नवीनतम सदस्य है।

हरीश कुमार साहू, विदिशा

● बौद्ध स्तूप और बौद्ध चैत्य क्या होते हैं ?

□ बौद्ध स्तूप मूलतया बौद्ध भिक्षुओं के शारीरिक अवशेषों की समाधियां होती हैं। बौद्ध चैत्य प्रार्थनास्थल हैं। यद्यपि बौद्ध स्तूप भी बौद्ध तीर्थ बन जाते हैं।

शाकिर अली, लखनऊ

● संसार का सबसे बड़ा अस्पताल कहां है ?

□ शिकागो (संयुक्त राज्य अमरीका) का डिस्ट्रिक्ट मेडिकल सेंटर संसार का सबसे बड़ा अस्पताल है। यह लगभग १९५ हेक्टेयर भूमि में स्थित है।

अमित कौशल, दौसा

● भारत की प्रथम नाभिकीय पनडुब्बी का क्या नाम है ?

□ आई. एन. एस. चक्र।

कुंतल मेहरा, पाली (राज.)

● क्या धतूरा अधिक विषैला होता है, जिससे जान भी जा सकती है ?

□ धतूरे की पत्तियां, फूल, तने, फल, बीज और जड़ें विषैली होती हैं। इसकी कम मात्रा मस्तिष्क में मायाजाल या मतिविभ्रम (हालुसिनेशन) पैदा कर सकती है और अधिक मात्रा जान भी ले लेती है। इसका असर खाने के छह घंटों के भीतर ही हो जाता है।

रवि शेखर सेठी, उज्जैन

● पौराणिक परंपरा में भारत का प्रथम राजा कौन था ?

□ मनु स्वयंभू।

प्रशांत चौबे, ग्वालियर

● स्विट्जरलैंड की राजकीय भाषा क्या है ?

□ स्विट्जरलैंड की राजकीय भाषाएं तीन हैं : फ्रेंच, इतालवी और जरमन।

चलते-चलते

● ऐसा कौन है जो स्वतंत्रता का मूल्य नहीं समझ सकता ?

□ जिसका पेट खाली हो।

—सूत्रधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यंतु ना कश्चिद दुःखभाग भवेत
—उपनिषद

(सब लोग सुखी हों—सब लोग नीरोग रहें, सबका कल्याण हो, कोई दुखी न हो)

हमारी प्रार्थनाएं जन साधारण की भलाई के लिए होनी चाहिए, क्योंकि ईश्वर जानते हैं कि हमारे लिए कल्याणकर क्या है ।
—सुकरात

प्रार्थना क्यों करते हैं ?

● अर्चना सौशिल्य

प्रार्थना में छिपी शक्ति का हर काल में, हर जाति और धर्मों के लोगों ने अनुभव किया है । और यही कारण है कि प्रायः प्रत्येक धर्म में, संप्रदाय में प्रार्थना का विधान है । प्रार्थना की भाषा अलग हो सकती हैं, तरीके भिन्न हो सकते है किंतु उसका भाव प्रायः एक होता है । सर्वोच्च सत्ता अर्थात ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण और कल्याण की याचना । कभी अपने कल्याण की, कभी औरों के कल्याण की ।

महात्मा गांधी प्रार्थना को आत्म-शुद्धि का आह्वान, विनम्रता का द्योतक और पश्चाताप का चिह्न मानते थे । वे कहते थे, 'प्रार्थना हमारे अधिक शुद्ध होने की आतुरता को सूचित करती है ।' उन्होंने लिखा है, 'प्रार्थना के बिना मैं कब का पागल हो गया होता ।' शायद महात्मा गांधी के इन शब्दों में हम सबकी भावना व्यक्त होती है ।

प्रार्थना हम क्यों करते हैं ? इसलिए कि प्रार्थना हमें शक्ति देती है, संबल देती है, विवेक देती है ।

एक चिर प्रसिद्ध प्रार्थना है—

असतो मा सद् गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतं गमय
अर्थात

हे प्रभो, मुझे असत् से सत् की ओर ले चल । मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चल । मुझे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चल ।

संसार के प्रायः प्रत्येक धर्मावलंबी ने ईश्वर से इसी आशय की प्रार्थना की है । प्रार्थना क्या है ? वह जीवात्मा की परमात्मा की ओर उड़ान है । वह सृजित और सर्जक के मध्य वार्तालाप है, संवाद है ।

सुप्रसिद्ध दार्शनिक नीत्से ने कभी कहा था—'ईश्वर मर चुका है ।' और भौतिकवादी लोगों ने उस पर विश्वास भी कर लिया । अमरीका और अन्य देशों में भी इसी विश्वास को बल मिला । पर क्या सचमुच लोग यह मान सके कि ईश्वर मर चुका है । शायद नहीं ।

आज अमरीका के १० में से ९ व्यक्ति ईश्वर को मृत मानने से इनकार कर चुके हैं, क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

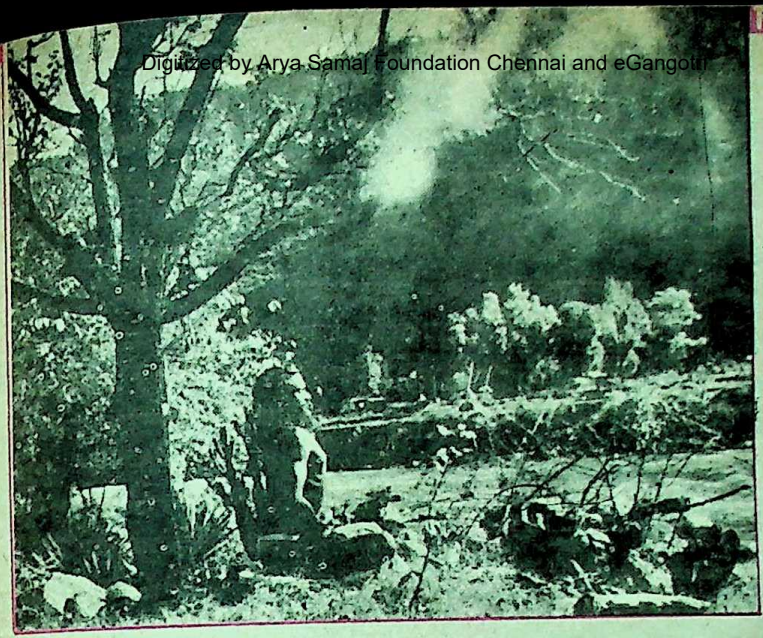

उन्होंने ईश्वर से बातें की हैं, ईश्वर ने उनकी प्रार्थनाएं सुनी हैं । उनके दर्द बांटे हैं, दुःखों में सहारा दिया है ।

ईश्वर की 'सलाह'

वियतनाम युद्ध में भाग लेने वाले सीनेटर जॉन मैकेन का कहना है कि

१९६८ में जब वियतनामियों ने उन्हें आजाद किया तो अपंग बनाकर । एक ऐसा व्यक्ति जिसके हाथ व पैर तोड़ दिये गये हों, युद्ध में बंदी बना दिया हो, मुक्त हो जाने पर अपने वतन लौटने की ही तमन्ना कर सकता है । किंतु अमरीका युद्ध नियमावली के अनुसार केवल बीमार और आहत युद्ध बंदी ही क्रमानुसार स्वदेश लौट सकते हैं । वियतनामियों ने वस्तुतः अमरीका को लज्जित करने के उद्देश्य से ही उन्हें मुक्त किया था क्योंकि जॉन मैकेन के पिता प्रशांत महासागर में अमरीकी नौ सेना फौज के कमांडर थे । जॉन मैकेन दुविधा में थे । क्या सुविधा का लाभ उठाकर घर चले जाएं । या देश के नियमों को मानें । आत्मविश्वास व संबल टूटकर घर जाने का लालच दे रहे थे । ऐसे निर्णायक क्षण में जॉन मैकेन को एक नयी दिशा मात्र उनका प्रभु ही दिखा सकता था ।

क्या प्रार्थना में कोई शक्ति होती है ? कुछ लोगों के लिए प्रार्थना मन की शांति का एक उपाय मात्र हो सकती है, पर अधिकांश लोगों ने प्रार्थना के माध्यम से अपनी मनोकामनाएं पूर्ण होते देखा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी प्रार्थना का जवाब भी मिला। जॉन मैकेन ने देश न लौटने का निर्णय किया क्योंकि यही भगवान की 'सलाह' थी।

प्रार्थना ने राह दिखायी

हेलेन टरनर को हत्या करने की कोशिश के आरोप में बंदी बनाया गया था। अकसर वे सोचतीं कि उनके पति की प्रेमिका, उनके वस्त्र पहनकर उनके ही बिस्तर पर सो रही है। वे सोचतीं, अब घर जाने से भी क्या लाभ ? एक दिन हेलेन ने भगवान से प्रार्थना की कि अगर वह आजाद हो गयीं तो अपनी सारी जिंदगी भगवान के नाम कर देंगी। और उसी दिन से उन्होंने पूजा व उपवास के साथ-साथ बाइबिल पढ़ना शुरू कर दिया। तीसरे दिन ही जेलर ने आकर उनसे कहा, "तुम जो कुछ कर रही हो करती जाओ क्योंकि अब तुम आजाद हो।" हेलेन ने मुक्त होकर भी बाइबिल पढ़ना नहीं छोड़ा। धीरे-धीरे लोगों ने उन्हें मसीहा समझना शुरू कर दिया। सभी अपनी मुक्ति हेतु, शांति हेतु उनके पास आने लगे। लोग बाइबिल न पढ़कर उन्हें पढ़ने लगे। लोग उनके अतीत को जानते थे। उन्हें विश्वास हो गया था कि प्रार्थना के कारण ही हेलेन के व्यक्तित्व में यह परिवर्तन हुआ है।

बदल गया जीवन

इसी तरह प्रार्थना ने जिम हिक्स के जीवन को बदल दिया। वह कहते हैं—'प्रार्थना ने उन्हें पूर्णरूपेण मानव बनाया है। संजीदगी, सहानुभूति, प्रेम की अनुभूतियों के साथ संपूर्ण मानव। उनकी नजर में प्रार्थना का अर्थ दूसरों में अपनी छवि देखना, अपनी बुराइयां देखना ही है।

प्रार्थना की विधि के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि जब उन्हें यह अहसास होता है कि कोई अमुक कार्य उनके वश का नहीं है तो वह प्रभु की मदद मांगते हैं और फिर वह करते हैं जो करने के लिए कहा जाता है। यही किया गया कार्य अपने आप में प्रार्थना होता है। बाइबिल का भी सार यही है। बाइबिल वस्तुतः इनसान व भगवान के संबंधों की गाथा है। भगवान हर इनसान में उपस्थित है और जब वह इनसानी जज्बात व भावना बांटते हैं, तब वहीं हमारी आराधना होती है। अर्चना व प्रार्थना कहलाती है।

एक सवाल

फुटबाल के विशेषज्ञ जो गिब्स का कहना है, 'मैं प्रतिदिन अपने आपसे एक सवाल पूछता हूं मेरे जीवन का श्रेय किसे जाता है ? हो सकता है मैं किसी दूसरे देश में पैदा हुआ होता या मानसिक रूप से विक्षिप्त भी हो सकता था। किंतु ऐसा नहीं हुआ अर्थात यह सारा श्रेय प्रभु को जाता है और तब मुझे प्रार्थना की महत्ता जान पड़ती है। और मैं मानसिक रूप से प्रार्थना करने वाले लिबास पहनकर हर बुराइयों से लड़ने को तैयार हो जाता हूं। इस आध्यात्मिक युद्ध में बाइबिल ही मेरा अस्त्र-शस्त्र होती है और प्रभु की आराधना से मुझे मेरे फल की प्राप्ति हो जाती है। मुझे विजय, यश व सफलता प्राप्त होता है।'

ध्यान ही प्रार्थना

एक प्रसंग २४ वर्षीय वेश्या जेराल्डिन रूसो का है। उसके पास प्रार्थना के लिए शब्द नहीं हैं किंतु भावनाओं से वह भगवान के प्रति श्रद्धा प्रकट करती है। बिस्तर पर लेटकर ही भगवान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ध्यान करना, चित्त एकाग्र करना ही उसके लिए प्रार्थना है और ईश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी भी है ।

अगाध आस्था

३६ वर्षीया कैंसर पीड़ित जूडी यंग की प्रार्थना में अगाध आस्था है । जब उन्हें दूसरी बार कैंसर के कारण केमोथेरापी के लिए कहा गया तो बेबसी से भगवान को पुकारकर रो पड़ीं, "हे प्रभु, तुझे इस जिंदगी के बदले क्या दूं ।" उन्होंने अपने संबंधियों से भगवान की शरण में रहने के लिए प्रार्थना की । डॉक्टरों ने उन्हें मां बनने से रोका किंतु भगवान से उन्होंने इसके लिए प्रार्थना की और पिछले साल सातवें बच्चे की मां बनीं । डॉक्टर के पुनः कहने पर कि उन्हें दुबार कैंसर हो गया है, जूडी यंग ने ईश्वर से एक सवाल पूछा, "तुमने ऐसा कैसे कर दिया ? मेरे बच्चों को मेरी जरूरत है ।" और एक बार पुनः वह स्वस्थ हो गयीं । आज जूडी यंग यह सच अपने साथ लेकर जी रही है । और उन्होंने अपने बच्चों को भी भगवान के अस्तित्व, प्रार्थना की महिमा के बारे में बताया है ।

भगवान से बातें

लास एंजिल्स के पचास वर्षीय लुइस रुडोल्फ ने भगवान से बातें की हैं । उन्हें एक भयंकर रोग था किंतु डॉक्टर को न बुलाकर उन्होंने रब्बी को बुलाया जिसने उन्हें भगवान से सीधे संबंध बनाने व बातें करने को कहा । लुइस प्रभु से जोर-जोर से बातें करने लगे और धीरे-धीरे उन्हें यह अहसास हुआ कि हमारी आकांक्षाएं ही हमारी खुशियों में बाधक बनती हैं । अतः उन्होंने कोई आशा-आकांक्षा करना छोड़ दिया

और जिंदगी के हर छोटे-मोटे कामों में मजा लेने लगे । किंतु रब्बी ने पुनः कहा कि वे भगवान से बातें नहीं कर रहे क्योंकि उसने उनसे कुछ मांगा नहीं । "भगवान के पास देने के लिए बहुत कुछ है और मुझे वह सब कुछ मिला जिसकी मुझे चाह थी । घर-परिवार, प्यार, संपन्नता । प्रभु की दया से, उनकी प्रार्थना से मुझे एक नयी जिंदगी मिली ।"

प्रार्थना क्यों ?

हॉकी खिलाड़ी कैली चेस प्रार्थना विजय पाने के लिए नहीं करते अपितु खेल के मैदान में किसी भी पक्ष के किसी भी खिलाड़ी को चोट न लगे, इसके लिए प्रार्थना करते हैं । चेस अपने आपको भक्त नहीं कहते, क्योंकि पिता की मृत्यु के समय उन्हें यह अहसास हुआ कि ईश्वर नहीं है । पर तब उनकी उम्र मात्र चौदह वर्ष थी । पर शीघ्र ही उन्हें यह अहसास हो गया कि प्रार्थना करने से सभी इच्छाएं पूरी हो जाएंगी, यह सोचना गलत है । किंतु उसके बावजूद वह बाइबिल पढ़ते हैं क्योंकि बाइबिल ही उन्हें अपने आपको समझने में मदद करती है ।

५३ वर्षीया महिला मेरी डिंस की व्यथा कथा अत्यंत हृदयस्पर्शी है । एक कैदी ने उनकी सास पेनी की हत्या कर दी । आक्रोश से भरी मेरी डिंस भगवान से नाराज हो गयीं । वे आहाते में जाकर चीखकर पूछतीं, 'मेरे साथ ऐसा क्यों किया ?" किंतु प्रार्थना ने उन्हें न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल उस हत्यारे कैदी को क्षमा देने में सफल बनाया अपितु एक नवशिशु भी गोद में दे दिया । मेरी को वह दिन याद है जब शिशु के जन्म लेने पर उन्हें यह अहसास हुआ कि असंख्य सितारे टिमटिमाकर एक कड़ी बना रहे हैं, कहीं से मधुर ध्वनि सुनायी दे रही है । वह पुनःजीवित हो उठी हैं ।

यह तो हुए अमरीकी नागरिकों के अनुभव । अपने देश में भी ऐसे अनेक लोग हैं, जिन्हें प्रार्थना पर अगाध आस्था है । वे उसे हर समस्या को दूर करने वाला उपाय मानते हैं । मेरी एक परिचित अध्यापिका हैं । उनका कहना है कि प्रार्थना एक रोशनी है जो अंतर्मन की अनंत गहराई में छुपे 'मैं' की खोज करती है । यह एक मनोवैज्ञानिक संतुष्टि है ।

दिल्ली की ८० वर्षीया वृद्धा इंद्रावती ने हर सांस में भगवान का नाम बसा लिया है । वृद्धावस्था के कारण वह बैठ नहीं सकतीं, बोल नहीं पातीं किंतु दीवार पर टंगे राम, सीता व लक्ष्मण के चित्रों से बातें करती हैं । उन्हें दो बार ऐसा अहसास हुआ कि भगवान उनके कमरे के बीच से होकर गुजरे हैं । भगवान से प्रार्थना करते समय वह कुछ नहीं मांगती, न ही मांगना चाहती है । बिस्तर पर लेटे-लेटे वह सांसों में प्रार्थना करती हैं, क्योंकि सांसों से बोलनेवाली आवाज अंदर जाती है और कंठ से बोलनेवाली आवाज बाहर आती है ।

'मानजी' का घर

पांच वर्षीय बालिका तान्या कुमार का कहना है कि उसके घर में कोई प्रार्थना नहीं करता । घरवाले कहते हैं, 'प्रभु क्या बात सुनेगा, जब वह अपने आपको मंदिर में नहीं बचा पाता । चोर उसकी चीज चुराकर ले जाते हैं ।' किंतु वह बालिका जब पौने दो वर्ष की थी, तभी अचानक होली के दिन उसने जिद पकड़ ली, 'मानजी के घर चलो', काफी प्रयास के बावजूद जब बालिका चुप नहीं हुई तो माता-पिता उसे घर से लेकर बाहर निकले किंतु उसके 'मानजी' का पता न चला । अचानक एक मंदिर के बंद दरवाजे के पास रोते-रोते उसने गाड़ी रोकने को कहा और बाहर निकलकर प्रार्थना के बाद माता-पिता के पास लौट आयी । आज भी वह बालिका प्रार्थना करती है ।

चोर का जीवन बदल गया

एक चोर रामनिवास ने कभी प्रार्थना नहीं की किंतु टूंडला का निवासी होने के कारण उसने रामाश्रम सत्संग की बात सुनी थी । सत्संग में आयी भीड़ में उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती थी, किंतु चोरी के दौरान वह जो भी आलमारी या बॉक्स खोलता, उसे एक सज्जन व महिला का सामने खड़े होने का अहसास होता और कोई कहता, 'मुझसे कुछ मांगो' । यही क्रम चलता रहा । अंततः एक दिन वह भी सत्संगियों के बीच जा बैठा, किंतु उसके आश्चर्य की सीमा न रही जब उसने उन्हीं दो तसवीरों की, हजारों लोगों द्वारा प्रार्थना करते देखा । पूछने पर पता चला कि उनकी तो कब की मृत्यु हो चुकी है ।

रामनिवास को यह एहसास हुआ कि प्रभु उसे किसी भी रूप में सही सहारा दे सकते हैं । अतः उसने अपने आप को पुलिस के हवाले कर दिया । अब प्रार्थना उसकी आधारशिला है ।

—द्वारा शालिनी पांडे
के-१०, मॉडल टाउन, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकड़ी के जाले से बुलेट प्रूफ़ जैकेट

मकड़ी जो जाला बुनती है उसका एक-एक तार इतना मजबूत क्यों है । मकड़ी का जाल दुनिया की सबसे मजबूत चीजों में से एक है । यहां तक कि अमरीकी फौज इन मकड़ियों के रेशों से बुलेट-प्रूफ जैकेट बनाती है । जरा सोचिए तो कहां मकड़ी का जाला और कहां बंदूक से छूटी गोली !

यह रेशा स्टील से दुगुनी ताकत रखता है । यानी अगर स्टील का उतना ही पतला तार खींचा जाए, तो वह रेशे से कमजोर होगा । वैज्ञानिक भाषा में इस रेशे पर अगर २ अरब न्यूटन प्रति वर्ग मीटर का बल लगे, तो ही यह टूटेगा । इतना मजबूत है, मगर दिलचस्प बात यह है कि इस रेशे को इसकी मूल लंबाई के लगभग ३० प्रतिशत तक खींचा जा सकता है और छोड़ने पर यह वापस अपनी मूल स्थिति में आ जाएगा । यानी यदि १ मीटर का रेशा लें और उसे १ मीटर ३० से.मी. की लंबाई तक खींचकर छोड़ दें तो कुछ नहीं होगा । छोड़ने के बाद कोई विकृति नहीं दिखेगी । स्टील को मात्र १ प्रतिशत तक खींचा जा सकता है । फिर यदि इस मकड़ी-रेशे को कार्बन रेशे के साथ मिश्रित रूप दिया जाए तो एक बहुत मजबूत पदार्थ बनता है, जो बहुत मुलायम भी रहता है । इस रेशे के कई उपयोग हैं । जैसे एक उपयोग तो यह है कि हड्डियों को आपस में जोड़नेवाले या मांसपेशियों को हड्डियों से जोड़नेवाले तंतु टूट जाने पर इस रेशे को वहां लगाया जा सकता है । मकड़ी का रेशा हमारे तंतुओं से २० गुना ज्यादा मजबूत है । तो ऐसे गुणोंवाला पदार्थ प्राप्त करने के प्रयास चल रहे हैं । जाल का रेशा प्रोटीन से बना है जो पानी में नहीं घुलता । मगर मकड़ी के शरीर के अंदर जब यह पदार्थ रहता है तब यह घुलनशील रहता है । यानी मकड़ी के शरीर से बाहर आते ही उसमें रासायनिक और भौतिक परिवर्तन तो होते हैं ।

धीरे-धीरे करके वैज्ञानिकों ने इस प्रोटीन की रचना खोज निकाली है । दरअसल प्रोटीन, अमीनो-अम्लों की एक लंबी श्रृंखला होते हैं । इस श्रृंखला को बनानेवाले जीन का भी अनुमान लगा लिया गया है । फिर इस जीन को एक बैक्टीरिया में फिट कर दिया गया । मगर वह बैक्टीरिया जो प्रोटीन बना रहा है, उसमें वे गुण नहीं हैं जो रेशे में हैं । कुल मिलाकर यह रेशा एक जबरदस्त पदार्थ सिद्ध हो रहा है । सभी लालायित हैं मगर आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं । नयी-नयी विधियां आजमायी जा रही हैं । उनका तो जो भी हश्र हो, मगर अब से कभी मकड़ी जाला बनाये तो जरा ध्यान से देखिएगा । वह एक ऐसा मजबूत पदार्थ बना रही है जो शायद किसी दिन आपके काम आये ।

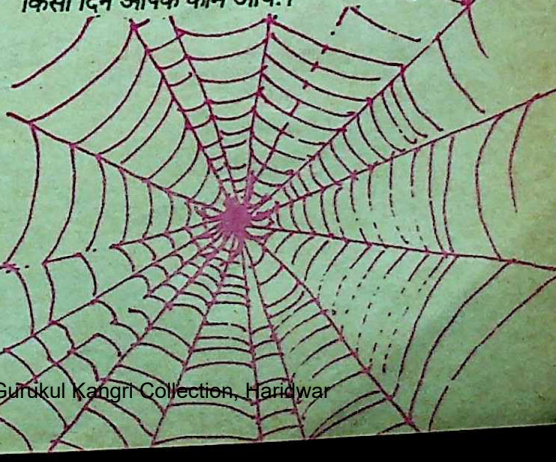

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा भी आदमी ही होता है!

● राधाकांत भारती

भारत में ब्रिटिश राज के समय की बात है। बिहार में एक छोटी-सी रियासत थी— सूर्यपुरा, जिसे कोर्ट ऑव वाड्स के अनुसार अंगरेज रीजेंट के अधीन रखा गया था। वहां से युवराज जब सुशिक्षित होकर ब्रिटेन से रियासत में लौटे, तो उन्हें गद्दी पर आसीन कर राजा की उपाधि दी गयी। नये राजा के मार्गदर्शन और सलाह के लिए वहां अंगरेज अफसर और सलाहकार रहते थे। उनकी कोशिश रहती थी कि नये राजा साहब अंगरेजी तरीके से रहें और उनका आचार-व्यवहार पूरा अंगरेजी ढंग का हो। ऐसी कोशिशों के बावजूद युवा राजा के मन में अपनी परंपरा और रियासत के लोगों के लिए अतिशय स्नेह था।

उस समय सूर्यपुरा कोई बड़ी जगह नहीं थी। वहां अधिक पढ़े-लिखे लोग भी नहीं थे। उस जमाने में जो कुछ अंगरेजी बोल सके और समझ सके उसे ही पढ़ा-लिखा समझा जाता था। ऐसी स्थिति में राजराजेश्वरी हाई स्कूल के नये शिक्षकगण के साथ राजा की भेंट होती रहती थी। स्कूल के प्रांगण में उस समय के अंगरेजी खेल बैडमिंटन का कोर्ट तैयार किया गया था, जहां हर शाम राजा तथा उनके मित्र बैडमिंटन खेलने पहुंचते थे। खेल के समय

"यह तो राजा है राजा, भला इसको किस बात की कमी है। मन में आता तो होगा तो भरपेट गुड़ ही खा लेता होगा।"

"इसी वजह से राजा में चुस्ती और फुरती भी खूब है।"

भोले मजदूर यह नहीं जानते हैं कि उनकी बातें राजा तक पहुंच जाएंगी और वह उन्हें बुलाएगा भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

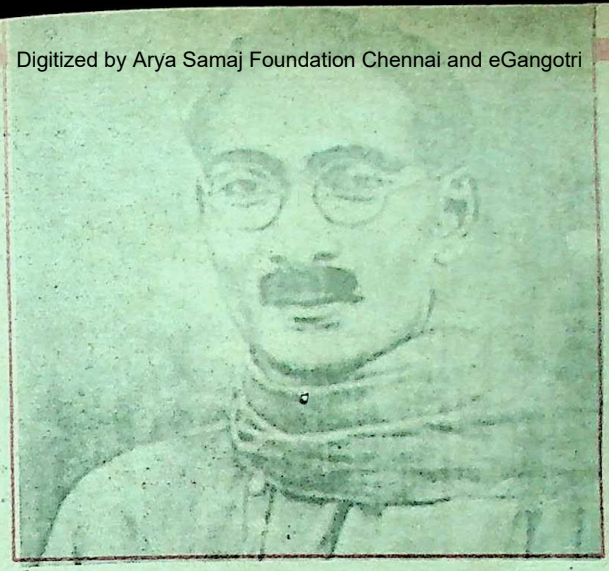

स्कूल के शिक्षकगण भी उपस्थित रहते थे और राजा उनसे साहित्यिक वार्तालाप किया करते थे।

उन्हीं दिनों की बात है, स्कूल भवन के एक भाग का निर्माण-कार्य चल रहा था। नजदीक के गांव के कई मजदूर वहां काम करने आते थे, दिनभर काम करके वे रात में अपने घर लौट जाते थे। इन्हीं में एक मजदूर था सोमारी। एक दिन बातचीत के दौरान गांव में उसके पड़ोसी छोटेलाल ने पूछा कि क्या उसने राजा को देखा है ? सोमारी ने हंसते हुए कहा, "अरे भाई, राजा साहब तो रोज स्कूल में आते हैं। मैं तो देखता ही रहता हूं।"

सोमारी की ऐसी बात सुनकर उसका पड़ोसी छोटेलाल आश्चर्यचकित हो बोला, "सोमारी भाई, मुझको भी एक दिन दिखा दो। मैं भी देखूं कि राजा कैसा होता है ?"

दोनों में बात तय हो गयी। दूसरे दिन सोमारी छोटेलाल को लेकर स्कूल आ गया। दिन के समय दोनों ने मिलकर वहां मजदूरी का काम किया। शाम होने पर स्कूल के बैडमिंटन कोर्ट के पास ही वे दोनों झाड़ियों के नीचे बैठ गये और राजा साहब के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

चमचमाती मोटरकार पर अपने साथियों के साथ राजा साहब स्कूल में पहुंचे। बैडमिंटन खेलने के लिए हाथ में रैकेट लिए सफेद पोशाक और उजले कैनवस जूते पहने उन्होंने खेल के मैदान में प्रवेश किया। झाड़ियों में छिपे मजदूर सोमारी ने तुरंत छोटेलाल को संकेत से बताया, 'देख, वही जो मैदान में आया— यहां का राजा है।' थोड़ी देर बाद अंधेरा होने पर खेल समाप्त हुआ। राजा साहब और उनके दोस्त मोटरगाड़ी में बैठकर वापस गये। वहां उपस्थित शिक्षकगण और अन्य लोग भी स्कूल से बाहर जाने के रास्ते पर चल दिये, साथ ही सोमारी और छोटेलाल भी।

रास्ते में चलते हुए सोमारी ने अपने साथी से पूछा, 'कहो छोटेलाल ! राजा को देख लिया, तुम्हें कैसा लगा ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने उत्तर दिया, 'हां, राजा को देख लिया, लेकिन वह भी तो आदमी-जैसा लगा उसके भी दो पांव और दो ही हाथ थे ।'

सोमारी बोला, "क्यां बात करता है, देखा नहीं राजा कैसा गोरा-गोरा है और पोशाक साफ दपादप, साथ-ही-साथ फुरतीला कितना है ? कैसा उछल-उछलकर खेल रहा था ।"

यह सुनकर छोटेलाल अपना सिर हिलाता हुआ बोला, "हां, सो तो है, अच्छा एक बात बतलाओ कि यह राजा साहब खाता क्या होगा ?"

उत्तर देने के पहले सोमारी कुछ देर तक ही-ही कर हंसता रहा, फिर गौर से उसकी ओर देखता हुआ बोला, "अरे भाई, यह तो राजा है राजा, भला इसको किस बात की कमी है । मन में आता होगा तो भर पेट गुड़ ही खा लेता होगा ।"

जवाब में छोटेलाल सिर हिलाता हुआ बोला, "हां, यही बात है, इसी वजह से राजा में चुस्ती-फुरती भी खूब है ।"

राजा साहब के बारे में इन दोनों का वार्तालाप साथ चलते हुए एक शिक्षक महोदय सुन रहे थे । दूसरे दिन जब राजा साहब सध्या समय स्कूल पधारे तो बातचीत के दौरान उसी शिक्षक ने राजा साहब से पूछा कि 'कहिए हजूर, आज कितना गुड़ खाकर आये हैं ?' अध्यापक से ऐसा सवाल सुनकर राजा साहब चौंक गये और प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा ।

बाद में उस शिक्षक ने मजदूरों का पूरा वार्तालाप राजा को ज्यों-का-त्यों सुना दिया । सहृदय और विनोदप्रिय राजा साहब सारी बात सुनकर हंसते रहे, फिर साथ में आये अपने मैनेजर से कहा कि गांव के इन दोनों मजदूरों को कल महल में हाजिर किया जाए । यह राजा थे— राधिकारमण प्रसाद सिंह ।

दूसरे दिन, दोपहर बीत चुका था, राजा साहब भोजन समाप्त कर आसन पर बैठे ही थे कि एक चौकीदार दो अधनंगे गरीब मजदूरों को पकड़कर ले आया । डर के मारे उन मजदूरों का बुरा हाल था, काटो तो खून नहीं । चौकीदार बोला, 'सरकार यही छोटेलाल और सोमारिया दुसाध हैं, जो इस स्कूल में मजदूरी करने आये हैं ।' भयातुर दोनों मजदूर रोते हुए फर्श पर लेट गये और बोले, 'दोहाई माई-बाप, अब हम कसूर नहीं करेंगे ।'

यह सब सुनकर राजा साहब खड़े हो गये और आगे बढ़कर मजदूरों के पास पहुंचे । उन्होंने स्वयं अपने हाथों से उन्हें पकड़कर उठाया । फिर आश्चर्यचकित खड़े चौकीदार को आदेश दिया कि इन्हें नहा-धुलाकर भरपेट गुड़ के लड्डू खिलायें और तब हाजिर करें ।

कुछ ही घंटों के बाद उन मजदूरों को फिर हाजिर किया गया । भरपेट भोजन करने के बाद भी वे सकपकाये हुए राजा साहब की ओर भयभीत नजरों से देख रहे थे ।

राजा साहब मुसकराये, फिर मजदूरों के समीप आकर बोले, "लो देखो, राजा भी आदमी ही होता है, तुम्हारी तरह का, वह कोई देव-दानव नहीं होता है । तुम्हें जब कभी गुड़ खाने का मन हो, तब मेरे यहां आ जाना ।" यह कहकर उन्होंने थालियों में पांच-पांच सेर गुड़ के लड्डू तथा नये कपड़े देकर उन दोनों को स्नेहपूर्वक विदा किया ।— एन-५२५, सैक्टर-१, आर. के. पुरम, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंतन

गणित और कविता

● डॉ. राम नारायण सिंह

कहत सबैं बिंदी दिये अंक दसगुनों होतु ।
तिय ललाट बिंदी दिये, अगणित बढ़त उदोतु ।।

बिहारी के इस दोहे के अनुसार गणित-शास्त्र में तो बिंदी (शून्य) के लगने से अंकों के मान केवल दस गुना बढ़ सकते हैं परंतु सौंदर्य-क्षेत्र में स्त्रियों के ललाट पर वही बिंदी रूप को अगणित व्यापकता प्रदान करती है । गणित और कविता के दो भेद यहां स्पष्ट होते हैं । प्रथम यह कि गणित में बिंदी अंकों के आगे लगती है । ये अंक, संवेदनहीन, भावना-रहित और अचेतन होते हैं, परंतु ये सुनिश्चित, एक और मात्र एक ही अर्थ रखते हैं । जबकि, कविता में बिंदी स्त्रियों के ललाट पर सुशोभित होती है । यहां पर विषयवस्तु यानी स्त्रियां रूप और सौंदर्य की प्रतीक हैं जो संवेदनशील और सचेतन हैं । कवि का विषय-वस्तु स्त्री के प्रति अपना आकर्षण और प्रेम की अभिव्यक्ति पाता है । परंतु गणितज्ञ का उसके विषयवस्तु से भावनात्मक आकर्षण उसके सृजन में अभिव्यक्त नहीं होता । दूसरा भेद यह है कि गणित में बिंदी अंक के मान को दस गुना ही बढ़ाती है, न कम न अधिक । यह तथ्य गणित में सत्यता की सुनिश्चितता व्यक्त करता है । कविता में बिंदी से सौंदर्य का मान अगणित बढ़ता है । ऐसी अभिव्यक्ति मनोहारी तो लगती है, परंतु सत्यता और सुनिश्चितता की कीमत पर व्यक्त होती है । अतः कविता में सत्य-सृजन मूल तत्व नहीं होता ।

दोनों विषय मानव-सृजन के ही विषय हैं । मानव-शरीर के अंगों से भी इनका विशेष संबंध है । जहां पर, कविता की उपज-स्थली हृदय में स्थित 'मन' या दिल है, वहीं पर गणित मस्तक में स्थित अपार-ज्ञान के निर्माता 'मस्तिष्क' से उपजती है । कविता प्रस्फुटित तो मन से होती है, लेकिन आकार व स्वरूप बुद्धि द्वारा मस्तिष्क से पाती है । कविता की भाषा और शैली का निर्माण भी मस्तिष्क ही करता है । हृदय में जीवन के अनुभव, प्रेम, अनुराग, अनुभूतियां निवास करती हैं और मस्तिष्क बुद्धिगत-कार्यों, तर्कों और नूतन-ज्ञान की खोजों का अद्भुत अनंत स्थल है । मनुष्य केवल समाधिस्थ अवस्था में ही मस्तिष्क-शून्य हो जाता है । जीवन के समस्त कार्यों— जैसे विवेकपूर्ण व्यवहार, सार्थक-लेख आदि मनुष्य मस्तिष्क के माध्यम से करता है । सार-तत्व यह है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक अंगों के हिसाब से कविता में हृदय और मस्तिष्क दोनों का बराबर मात्रा में उपयोग होता है, जबकि गणितीय अध्ययन एवं आविष्कारों में मात्र मस्तिष्क का उपयोग होता है।

मन की स्थिति भंडार-जैसी होती है। इसमें मनुष्य बाह्य-जगत में प्राप्त आघातों-प्रतिघातों को संजोता है। स्वयं की आंतरिक इच्छाओं-अपेक्षाओं को भी बटोरे रखता है। इसके अतिरिक्त अंतर्मन अंतःचेतना से प्रेरित होता है और अंतःचेतना अंर्तात्मा से प्रेरणा लेती है। कवि संयोग-वियोग, उल्लास-विषाद, कल्पना और यथार्थ का उद्बोधक होता है। भावनाओं तथा अनुभूतियों की उच्च पराकाष्ठा पर अभिव्यक्ति उसकी ललक और आकांक्षा रहती है। परंतु गणितज्ञ मानव अर्जित पूर्व-ज्ञान को तार्किक अनुभवों के दर्पण में निर्मित और विकसित करता है। गणित में शुद्ध- तार्किकता की उच्च पराकाष्ठा से चमत्कारिक एवं नूतन ज्ञान उद्घाटित होता है।

गणितीय-सिद्धांतों की संरचना

गणितीय-सिद्धांतों में चाहे वे अति प्राचीन हों या समकालीन, एक निरंतरता होती है। समस्त सिद्धांत देश-काल की सीमाओं में नहीं बंधते। ये सिद्धांत, चाहे भारत के हों या यूरोप के, दो हजार वर्ष पुराने हों या दो सौ वर्ष पुराने, उनकी संरचना एक निश्चित नियम से बंधी रहती है। इनके तीन अंग होते हैं— १. स्वयं-सिद्धियां (एग्जियम), उपकल्पनाएं (हाइपोथिसिस) +परिभाषाएं, २. प्रमेय (थियरम) +साध्य (प्रापोजीशन) +उपप्रमेय (कारोलरी) +पूर्वप्रमेय (लेमा), ३. अनेक उदाहरण। गणितीय संरचना की यह सुनिश्चितता अद्वितीय और अद्भुत है, जो अन्य विषयों में विद्यमान नहीं होती।

गणित के प्रत्येक सिद्धांत कुछ सामान्य अवधारणाओं या स्वयं-सिद्धियों पर आधारित होते हैं। ये स्वयं-सिद्धियां ही सभी सिद्धांतों की उपजीव्य होती हैं। प्रत्येक शोधकर्ता सर्वप्रथम अपनी स्वयं-सिद्धियों का आविष्कार करता है। तदुपरांत इनका सूत्रीकरण करता है। इनका आविष्कार मानव अर्जित पूर्व ज्ञान से उत्प्रेरित होता है। इस प्रकार के आविष्कार शुद्ध तौर पर बौद्धिक क्रियाओं का प्रतिफल होते हैं, जहां पर मन शांत एवं स्थिर अवस्था में रहता है। ऐसे आविष्कार के समय निजी इच्छा, चाह घृणा का कोई स्थान नहीं होता। केवल मन में ज्ञान और सत्य को प्रतिपादित करने की मूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बद्धता ही विद्यमान रहती है । कविता में अनुभूतियां आधार बनती हैं, तो गणित में स्वयं-सिद्धियों पर अवलंबन रहता है ।

गणितीय सिद्धांतों के प्रतिपादन की प्रक्रिया आश्चर्यजनक घटनाएं भी घटित होती हैं । शुद्ध तर्क से उपजे ये सिद्धांत ब्रह्मांड के शाश्वत सत्य सिद्ध हो जाते हैं । शुद्ध बौद्धिक चिंतन से यह किस प्रकार संभव हो जाती है ? गणितीय सिद्धांत प्रतिपादन के समय इस अभिप्राय से नहीं निकाले जाते कि विज्ञान में इनका उपयोग करना है । परंतु यह इनका नैसर्गिक गुण होता है कि ये भौतिक, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान की अन्य विधाओं में प्रयुक्त हो जाते हैं । शुद्ध तर्क किस प्रकार पदार्थ-जगत के सत्य बन जाते हैं, यह समझ और जान पाना एक अन्य शोध विषय है ।

गणित की एक अन्य विशेषता है, विज्ञान के अन्य विषयों, जैसे भौतिक-शास्त्र के आविष्कार हमेशा त्यागे जाने की संभावनाओं से घिरे रहते हैं । कभी भी कोई नया प्रयोग या आविष्कार इन सिद्धांतों को गलत सिद्ध कर सकता है । विज्ञान के इतिहास में इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिल चुके हैं । परंतु गणितीय सिद्धांत कभी भी गलत सिद्ध नहीं किये जा सकते । इन्हें प्रयोग तक असत्य सिद्ध नहीं कर सकते ।

शोध प्रक्रिया में स्वयं-सिद्धियों के आविष्कार एवं परिभाषाओं के निर्माण के उपरांत शोधकर्ता अपने निष्कर्षों को निकालता है । ये निष्कर्ष प्रमेयों, साध्यों, उपप्रमेयों के माध्यम से व्यक्त किये जाते हैं । इन्हें सिद्ध करने के लिए केवल प्रथम अंग का उपयोग किया जा सकता है । इन प्रमेयों के रूप में अद्भुत एवं आश्चर्यजनक तथ्य सामने आते हैं । कभी-कभी तो ऐसे सत्य उद्घाटित हो जाते हैं, जिनको शोधकर्ता, शोधकार्य प्रारंभ करने से पहले उम्मीद भी नहीं किये रहता । प्रमेयों का शाश्वत, सार्वभौमिक स्वरूप सर्वविदित है । जिनका पदार्थजगत के भौतिक विज्ञान, अन्य विज्ञानों एवं प्रौद्योगिकी में उपयोग किया जाता है । इस प्रकार, ये आविष्कार सर्वजन-हिताय सर्वजन-सुखाय, कार्य करते हैं ।

तृतीय अंग के रूप में शोधकर्ता अनेक उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो कि उसके प्रमेयों की प्रामाणिकता की पुष्टि करते हैं । इस प्रकार इन तीन अंगों के माध्यम से ही सिद्धांतों की सत्यता स्थापित होती है । इन्हीं अद्वितीय संरचनात्मक विशिष्टताओं एवं अद्भुत प्रमेयों के कारण गणित विज्ञान की रानी कही गयी है । प्राचीन भारतीय-शास्त्रों में भी गणित को विशेष महत्त्व की विद्या स्वीकार किया गया है । कवि के शब्दों में—

यथा शिखा मयूराणां नागानं मणयो यथा ।
तद् वेदांग शास्त्राणां गणित मुर्धनि स्थितम् ।।

काव्य संरचना :

काव्य निर्माण की प्रक्रिया को अंगों में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है । (१) अनुभूतियां (चेतना), (२) कल्पना तथा (३) अभिव्यक्ति का स्वरूप यानी भाषा-शैली । जब कवि, अनुभूति के प्रबल आवेग से प्रभावित होकर चिंतन करता है, तो उसकी कल्पनाएं असीम आयाम पा जाती हैं । परंतु, अभिव्यक्ति के स्वरूप के समय, कविता भाषा और शैली के माध्यम से सीमित रूप से व्यक्त होती है । यह कविता के सृजन का एक स्वरूप माना जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणितीय सिद्धांतों में, चाहे वे अति-प्राचीन हों या समकालीन, एक निरंतरता होती है । समस्त सिद्धांत देश-काल की सीमाओं में नहीं बंधते । ये सिद्धांत चाहे भारत के हों या यूरोप के, दो हजार वर्ष पुराने हों या दो सौ वर्ष पुराने उनकी संरचना एक निश्चित नियम से बंधी रहती है ।

सकता है । कविता की संरचना का एक अन्य स्वरूप इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

प्रकृति- - - सौंदर्य

- - - आनंद - - - स्थायी

भाव- - - विभावादि- - - रस ।

परंतु कविता की संरचना, कवि की आंतरिक अनुभूति पर अत्यधिक निर्भर करती है । इसको गणितीय-संरचना की तरह बिलकुल निश्चित नियम से नहीं बांधा जा सकता । क्योंकि कविता गणित की तरह मात्र तथ्यान्वेषण या तथ्याभिव्यक्ति नहीं होती । दोनों विषयों में विषय-वस्तु का भेद रहता है । गणित जड़, निर्जीव वस्तुओं एवं पदार्थ जगत की विद्या है, तो कविता चेतन, सजीव और जड़ किसी को भी अपना विषय बना सकती है ।

कवि के अपने मानसिक स्वप्न एवं कल्पनाएं होती हैं । समाज एवं प्रकृति का व्यापक प्रभाव रहता है । इसलिए, कविता कवि के अंतर्मन की भावना एवं बाह्य-जगत के प्रभाव से प्रस्फुटित होती है । यहां, गणित की कठोर नियमबद्धता तथा सत्य और केवल सत्य के लिए प्रतिबद्धता आवश्यक नहीं होती । गणितज्ञ शिवम् और सुंदरम् के दर्पण या आयामों में अपना मूल्यांकन नहीं करता । परंतु कवि, सत्यम् शिवम् सुंदरम् तीनों आयामों को अपना दर्पण बनाता है । वह कभी स्वांतः सुखाय लिखता है, तो कभी तमः शांतये । कभी यश, अर्थ और कभी लिए लिखता है, तो कभी भावना की निवृत्ति के लिए ।

जब कोई कवि, किसी व्यक्ति, वस्तु स्थिति के बारे में कविता लिखता है, तो केवल उसके बारे में ज्ञात समस्त सूचना जानकारियों एवं तथ्यों की अभिव्यक्ति करता, बल्कि उस वस्तु के प्रति अपने स्थित प्रेम, अनुराग, विराग, घृणा, आक्रोश-जैसे भावों को भी व्यक्त करता यहीं पर वह गणितज्ञ से भिन्न हो जाता है गणितज्ञ, अपनी अभिव्यक्ति में, निजी विराग को स्थान नहीं देता । वह मूल्य का ध्येय भी नहीं रखता । कविता में मूल्य-स्थापना कवि का बहुत महत्वपूर्ण रहता है । कवि, यथार्थ को कैसा होना की परिधि में अभिव्यक्ति प्रदान करता है अपने सृजन में, संवेदनात्मक अनुभूति अपनी चाह और घृणा भी व्यक्त करता गणितज्ञ, अपनी शुद्ध तार्किकता और अर्जित-ज्ञान के आधार पर सत्य उद्घाटित करता है ।

चिंतन की पराकाष्ठा में, गणितज्ञ रहस्यों में से ज्ञान का आविष्कार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद की अनुभूति करता है । वह जानता है कि शोध प्रक्रिया से निकला निष्कर्ष भौतिकी, प्रौद्योगिकी एवं समस्त मानव-जाति के कल्याण में अवश्य काम आएगा । यह विश्वास उसके मन में अपने पूर्ववर्ती शोधकर्ताओं के कार्यों के स्थापित उपयोग से प्राप्त होता है । पाइथागोरस के प्रमेयों का उपयोग वह देख चुका है । इसके अतिरिक्त शुद्ध-ज्ञान का आविष्कार भी उसे पर्याप्त कारण लगता है । बहुतों के लिए तो ज्ञान अपने में साध्य और साधन दोनों है । इसका उपयोगी होना अति-आवश्यक है ।

गणितज्ञ का आनंद बौद्धिक-क्रियाशीलता से प्राप्त होता है । वहीं पर, कवि सांसारिक-अनुभवों, प्राकृतिक- सौंदर्यों एवं काल्पनिक विचारों को आत्मसात कर, मन के प्रबल-भावों की सुंदर अभिव्यक्ति से आनंद प्राप्त करता है । सच है कि कविता कवि को उपयोगितारहित तो अवश्य परंतु आह्लादित एवं अनुपम आनंद प्रदान करती है । वहीं पर गणितीय शोध गणितज्ञ को उपयोगी, हितकारी एवं विकास-उत्प्रेरक आनंद प्रदान करता है । आनंद के ये दोनों स्वरूप भिन्न होते हुए भी अत्यंत निर्मल, पवित्र, उद्दाम एवं उत्कृष्ट होते हैं ।

—न्यू एल-२२ हैदराबाद कॉलोनी,
बी.एच.यू., वाराणसी-२२१००५

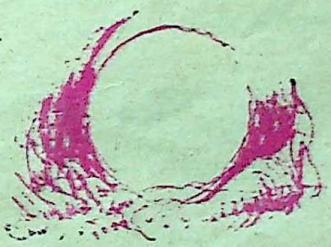

आवर्तन

सात घोड़ों पर सवार
वह रोज आता है और चला जाता है
उजाला अंधेरे में, अंधेरा उजाले में
समा जाता है
पूछो यह सवाल
कल के सवेरे से
कि आने और जाने का यह क्रम
क्यों चला आता है ?

संघर्ष है या पलायन परस्पर
धुरी पर धरा हो, या हो दिवाकर
रुकता नहीं यह चलता निरंतर
दिखाता, सुनाता मुझे भी बुलाकर
कैकेयी का हठ, सीता का क्रंदन
शय्या शरों की, गीता का दर्शन
पर तंद्रा को तोड़कर, निद्रा को छोड़कर
जब मैं खड़ा होता हूं
तो सुनहरे मृगछौनों की भीड़ में
मेरा गांडीव खो जाता है
शायद किसी कृष्ण की तलाश में
यह क्रम बार-बार आता है ।

—केशरी नाथ त्रिपाठी
१२ बी. डा लोहिया मार्ग, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

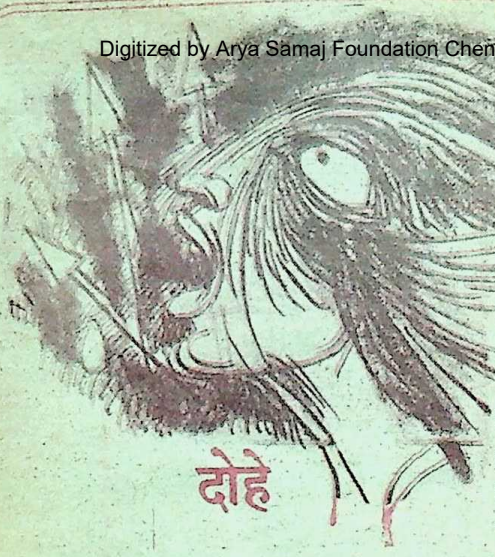

दोहे

गांव गली चौपाल पर फैल रहा आतंक ।
आदमियत को आदमी— मार रहा है डंक ।।

रोज चल रही गोलियां— रोज डकैती लूट ।
भेदभाव की आग से— देश रहा है टूट ।।

झगड़े फैले धर्म के— कुटिल समय की चाल ।
सीना ताने सामने— खड़े राम-इकबाल ।।

जरा-जरा से स्वार्थ हैं— जरा-जरा सी बात ।
हम आपस में कर रहे— एक दूजे से घात ।।

राजनीति ने बो दिये— जगह-जगह विष बीज ।
मूल्य हो गये आजकल— बस बिकने की चीज ।।

धर्म और ईमान भी— हुए आज नीलाम ।
चला झूठ का दौर है— अब तो आठों याम ।।

आजादी का अर्थ हम— भूल गये हैं आज ।
बरबादी के तीर पर— बैठा हुआ समाज ।।

—पूरन सरमा
१९५८/पं. शिवदीन का रास्ता,
जयपुर-३०२००३ (राज.) ।

झील और आंखें

तुम्हारी आंखों में
झील मैने देखी थी
उनमें और झील में
कोई अंतर न था
लेकिन
अब तुम्हारी आंखों की गहराई
बेहद बढ़ गयी है
रंग-बिरंगे सपने
तुम्हारी आंखों के
नीलेपन ने हड़प लिये हैं
निमग्न होने के भय से
चाहतों और अरमानों के
हंस भी उड़ गये हैं
अब तो मेरी मौजूदगी भी
तुम्हारी आंखों को
विह्वल और विचलित
नहीं करती है,
अब हर दम
अनजाने, अबूझे
हादसों का हृदय-विदारक
खौफ
तुम्हारी आंखों में
तैरता रहता है

—निर्मला सिंह 'निर्मल'
१८५ ए सिविल लाइन
बरेली-२४३००१ (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. सूर्य

सूर्य तुम गाओ !
सप्त रंग राग से भर दो सन्नाटे ।
अणु-अणु के नाभिक से खिले कमल
कि स्पंदित हो जाए
व्यक्त-अव्यक्त
समय हो जाए सतत् वर्त्तमान ।
गाओ, तुम सूर्य !

२. स्थितियां

जंजीरों में बंद
अथवा आवारागर्द
मात्र ये दो
कुत्ते की कोई तीसरी अवस्था नहीं होती
और आदमी की ?

३. जंगल

जंगल खांसता है
एक महा-दैत्य सा कुछ
उठा ले जाता है
जवां-साल क्वांरी
खामोशी
●
एक लकीर चीख
खून लिख देती है —
●
जंगल है
कभी-कभी खांसता है जंगल
या अकसर
●
जंगल साक्षी है

—मोहन निराश

'कश्मीरा' ए/४१, इंदिरा एंक्लेव, नेब सराय, नयी दिल्ली

किससे कहें ?

हम किससे क्या कहें, कौन
अपना इस दूर नगरिया में
रंग-रंग के नर-नारी
सपनों से सजी बजरिया में
रंग-बिरंगे रूप तपे
दिखते जीवन दोपहरिया में
तृष्णाओं की मृग-मरीचिका
नापी एक नजरिया में

प्रीति रीति में भीगी राधा
सिमटी देह चुनरिया में
धरती और आकाश समाये
लाखों श्याम संवरिया में

—श्रीमोहन लहरी

द्वारा आर.पी. शर्मा एडवोकेट
६७ राम नगर ईदगाह दिवस भोपाल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणवी संस्कृति का आंचल सदैव उज्ज्वल कीर्तिमानों से दीप्त रहा है। वैदिक एवं महाभारतकाल के अट्ठासी हजार ऋषि-मुनियों में से अधिकतर की यज्ञस्थली रहने का गौरव इसी धरा को प्राप्त है। प्राचीनकाल में इस भू-प्रदेश की सीमाएं बेहद विस्तृत थीं तथा महाभारतकालीन युद्ध में पूर्व व पश्चिम के अनेक आर्य और अनार्य राजा यहां एकत्र हुए थे। विगत की ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्त्व की घटनाओं के जर्जर स्मृति चिह्न प्रदेश-भर में किसी-न-किसी रूप में आज भी मौजूद हैं। भगवान शिव के महातेजस्वी पुत्र कार्तिकेय का समृद्ध नगर रोहितक, सम्राट हर्ष की वैभवपूर्ण राजधानी स्थाण्वीश्वर, महर्षि च्यवन की तपोभूमि नारनौल, दुर्वासा की कर्मभूमि दुबलधन, सांख्यदर्शन दृष्टा कपिल की तपस्थली कलायत तथा असंख्य राजाओं की वीर गाथाओं से जुड़े यहां के नगर देशभर में ख्याति प्राप्त हैं।

कथा एक धार्मिक शोषण की

● राजकिशन नैन

महाभारतकालीन जनपद

विगत की इस गौरवमयी संस्कृति के स्वर्णिम इतिहास में जनपद 'गुड़गांव' का भी विशिष्ट पुरातात्विक महत्त्व रहा है। किंवदंती है कि महाभारतकाल में धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने कुल-गुरु द्रोणाचार्य को 'खांडव वन' का यह क्षेत्र श्रद्धावश भेंट किया था। तब, यह इलाका दुर्जय व दुर्गम पहाड़ियों से घिरा था तथा दुर्लभ जातियों के असंख्य वन्य-प्राणी यहां निर्भय विचरते थे। पक्षियों में यहां 'मोरों' की एवं वृक्षों में जांडों (जांटों) की बहुलता थी। इस वृक्ष की लकड़ी पर्यावरण को शुद्ध करने एवं यज्ञ तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठानों हेतु श्रेष्ठ व उपयोगी मानी जाती रही है।

'खांडव वन' के उसी क्षेत्र में वर्तमान औद्योगिक जनपद 'गुड़गांव' व अन्य गांव बसे हैं। इन्हीं में 'झाड़सा' गांव भी है जहां एकलव्य ने गुरु द्रोण को अपना अंगूठा भेंट किया था। विगत में गुरु द्रोण के नाम पर ही इस जनपद का नाम 'गुरुग्राम' पड़ा था, गुड़गांव उसी का अपभ्रंश है। यह स्थल पांडवों व कौरवों की शिक्षा-स्थली के रूप में माना जाता रहा है। द्रोणाचार्य महाविद्यालय के पीछे, पुराने तालाब के किनारे आज भी गुरु द्रोण के आश्रम के अवशेष खंडहर रूप में यहां मौजूद हैं। भीमनगर महल्ले के मोड़ पर स्थित उस स्थल पर अब बाद में निर्मित एक मंदिर है, जिसमें भक्तजनों का तांता लगा रहता है। स्थानीय लोग अपने नये लाये दुधारू पशुओं के प्रथम ब्यांत का दूध यहां चढ़ाते हैं। लोगों की पुष्ट धारणा है कि ऐसा करने से पशु निरोग रहकर पूरा लाभ देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकवि सूरदास की कर्मभूमि

महाकवि सूरदास ने इसी जनपद के एक गांव में कृष्ण भक्ति से ओतप्रोत, ब्रज भाषा पदों की रचना की थी । यह जनपद की राजधानी से केवल दस कोस दूर है । दक्षिण में राजस्थान का विशाल भूखंड पश्चिम में हरियाणा के महेंद्रगढ़ एवं रोहतक हैं । यह जनपद तीन उपमंडलों, क्रमशः नूह व फिरोजपुर-झिरका में विभक्त है मशीनी उद्योग से अधिक 'धार्मिक ...शीतला माता के कारण दूर-दूर तक ख्यात है । जनपद में स्थित 'गुड़गांव छावनी' ढ़ मील दूर 'शीतला' का जर्जर एवं प्राचीन है । गुड़गांववासियों के अनुसार इस माता महत्ता अपार है तथा जिन सात माताओं की क्रमा का रिवाज देशभर में है, उनमें तला' भी एक है । इस माता को 'मसानी व 'ललिता माता' आदि नामों से भी करते हैं ।

मतभेद है । इसी से, मा का असल स्वरूप अभी भी रहस्य के आवरण में है । सरकारी अभिलेख भी इसके लिए चुप्पी साधे हुए हैं । लिखित प्रमाणों का भी अभाव है । माता का आगमन कब और कहां से हुआ, इसके साक्ष्य भी मौजूद नहीं हैं । किंतु भक्तजनों के अनुसार माता के चमत्कारों का दायरा विस्तृत है । अनेकानेक श्रुतियों व किंवदंतियों के अलावा स्थानीय लोग देवी के करिश्मों का अधिकाधिक बखान करते हैं ।

ऐसा माना जाता है कि शीतला का संबंध सती कृपई से है । कृपई कृपाचार्य की पुत्री एवं द्रोणाचार्य की अर्द्धांगिनी थी । युद्ध के समय जब द्रोणाचार्य मृत्यु को प्राप्त हुए तो कृपई ने पार्थिव शरीर के साथ सती होने का निश्चय किया । श्रृंगार आदि के उपरांत कृपई चिता पर बैठ गयी । उपस्थित जनसमूह ने अश्रुपूरित नेत्रों से उसे रोकना चाहा, किंतु दृढ़-प्रतिज्ञ कृपई बोली— "मेरा निश्चय अटल है...मृत्युपरांत

प्राचीनकाल में इस भू-प्रदेश की सीमाएं बेहद विस्तृत थीं तथा महाभारतकालीन युद्ध में पूर्व व पश्चिम के अनेक आर्य और अनार्य राजा यहां एकत्र हुए थे । विगत की ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्त्व की घटनाओं के जर्जर स्मृति चिह्न प्रदेश-भर में किसी-न-किसी रूप में आज भी मौजूद हैं ।

शीतला माता और कृपई

पहले इस मंदिर में माता की ठोस सोने की मूर्ति स्थापित थी । किंतु लगभग दस वर्ष असली मूर्ति चोरी हो गयी थी, तब से, गोल्ड की मूर्ति यहां रखी हुई है । चोरी हुई की स्थापना के बारे में स्थानीय लोगों में

मेरी चिता पर मंदिर बनवाकर एक मूर्ति की स्थापना करवा देना...मैं उस रूप में यहां सदैव रहूंगी ।" कृपई ने यह भी कहा यहां प्रत्येक व्यक्ति की मनोकामना पूर्ण होगी । लोगों ने कृपई की इच्छानुसार मंदिर बनवाया और मूर्ति स्थापित की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंधा जाट को देवी का दर्शन

किंतु बुजुर्ग लोगों का कथन है कि पचास पीढ़ी पूर्व इस गांव का सिंधा जाट अपने खेत में सोया हुआ था । सपने में बेहद तीव्र प्रकाश-पुंज के बीच उसने एक देवी को प्रगट होते देखा । उसे अपनी खाट उलटती प्रतीत हुई ।

पहली बार सिंधा ने इसे स्वप्न मात्र समझा, किंतु अगली रात पुनः वही घटित हुआ । तब, उसने इसे भ्रम या सपना न मानकर सच माना और परिजनों व आस-पड़ौस के लोगों को यह बात बतायी । तय हुआ कि यदि अबकी बार देवी आये, तो उससे आने का प्रयोजन पूछा जाए । जब देवी पुनः प्रगट हुई तो सिंधा ने विनम्रता से कहा— "आप कौन हैं व क्या इच्छा रखती हैं ?" देवी ने कहा— "तुम जहां सोते हो, वह स्थान मेरा है । प्रमाण जमीन खोदकर देख लो ।" इतना कह देवी अदृश्य हो गयी । सुबह खुदाई में लोगों को मूर्ति प्राप्त हुई, जिसे उन्होंने बतायी गयी जगह स्थापित कर मंदिर बनवा दिया । कुछ दिनों बाद सिंधा के सपने में वही देवी पुनः आयी और कहा कि मेरा मूल स्थान अन्यत्र है अतः मंदिर वहीं बनवाया जाए । वर्तमान मंदिर उसी दूसरी जगह पर है ।

राजा को देवी का आशीर्वाद

एक अन्य श्रुति है कि गुड़गांव की तपती हुई जमीन माता के आगमन से शीतल हुई थी, इसी से माता का नाम शीतला पड़ा । माता की ख्याति फैलने का एक कारण यह भी बताया जाता है कि पानी की कमी के दिनों गुड़गांव में अनेक जगह कुओं की खुदाई की गयी किंतु पानी नहीं मिला । तब, लोगों ने माता के नाम पर हवन व यज्ञ आदि करवाये तथा पुनः खुदाई करने पर उन्हें वांछित फल मिला ।

कहा जाता है कि जाट राजा भरतपुर (सन् १६५० ई.) को भी स्वप्न में देवी ने दिल्ली विजय हेतु आशीर्वाद दिया था । विजय के राजा ने कृतज्ञतावश जिस विशाल तालाब निर्माण मंदिर के बराबर में करवाया था, जो जर्जरावस्था में अब भी देखा जा सकता है ।

सच्चाई जो भी हो, इस माता के मन्दिर दर्शनार्थियों की भारी भीड़ सदैव रहती है । तो बारहों महीने यहां मेला रहता है, किंतु कार्तिक तक मेले का खूब जोर रहता है । दशहरे व नवरात्रों पर श्रद्धालु यहां दूर-दूर आते हैं । सरकारी आंकड़ों के अनुसार पचास लाख यात्री प्रतिवर्ष आते हैं, जिनमें नेपाल, पाकिस्तान, बांगलादेश, भूटान, अमरीका, बर्मा व इंगलैंड आदि देशों के भी अकसर दृष्टिगोचर होते हैं ।

बाहरी लोग यहां श्रद्धा के सुमन अर्पित करने आते हैं अथवा धार्मिक उन्माद की खींचने...ये वही जानते हैं । हां, गरीब देश यहां जाने-अनजाने पापों से मुक्ति पाने व पुण्य अर्जित करने ही आते हैं । उनका किसका हो पाता है ये तो वही जानें, पर मेले की शोषक और शोषित की पहचान यहां हर कर सकता है ।

नवविवाहित जोड़े यहां गठजोड़े की देने व महिलाएं बच्चों के मुंडन हेतु आती जात लगाने की दर यहां ग्यारह रुपये किंतु लूट-खसोट इससे कहीं अधिक होती

मंदिर में पैसा न देने पर लोगों को अपमानित किया जाता है । औरतों व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

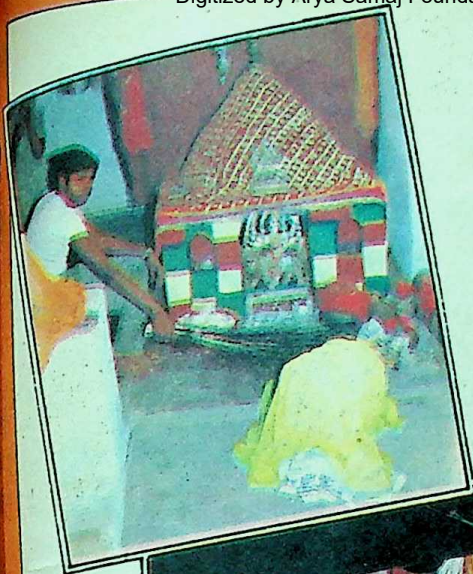

होती । स्वस्थ परंपराओं का यहां लोप हो चुका है तथा घिनौनी प्रथाएं उग्र रूप धारण कर रही हैं । लालफीताशाही और भ्रष्टाचार यहां के वातावरण को आये दिन और अधिक दूषित कर रहे हैं । रेलों, बसों, तांगों व रिक्शा आदि वाहनों पर माता के नाम पर टैक्स बटोरा जाता है । मंदिर में जगह-जगह मूर्तियां रखकर और माताओं की भीड़ इकट्ठी कर के लोगों को चढ़ावे के लिए बाध्य किया जाता है । छोटी

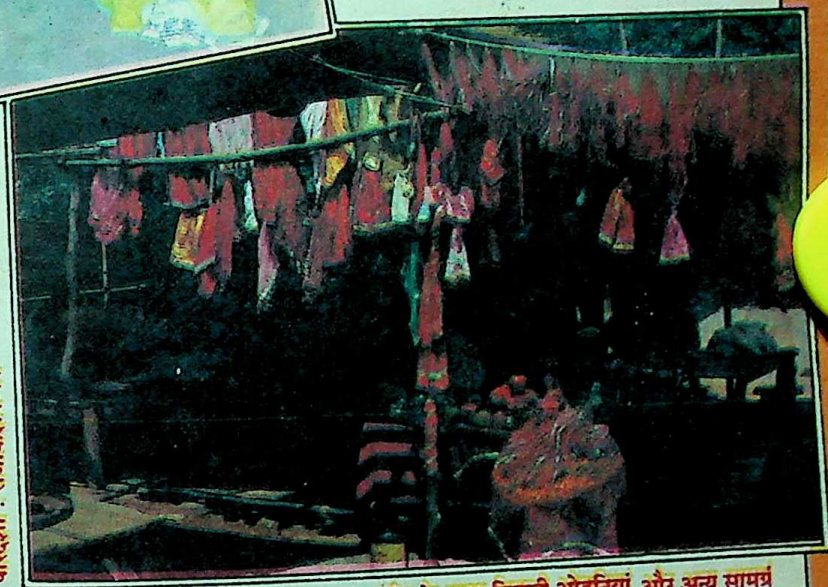

पारदर्शी : राजकिशन नैन

मंदिर के बाहर बिकती ओढ़नियां और अन्य सामग्रं

माताओं के वक्षस्थलों को दूध प्रदान करने का झाड़ा लगाने के नाम पर पैसे की लूट, महिलाओं से छेड़छाड़ और नवविवाहितों के अपहरण की घटनाएं भी यहां बढ़ रही हैं । ऐसा धंधा करनेवालों की पहुंच ऊपर तक होने के कारण उनके खिलाफ कोई कार्रवाई भी नहीं माता के मंदिर में भेंट के नाम पर सूअर काटकर चढ़ाये जाते हैं । चूनरी, प्रसाद आदि चढ़ाने के लिए जोर दिया जाता है, और कहते हैं इससे उन्हें मनचाहा लाभ मिलेगा ।

—ग्राम व पत्रालय : अजायब,
जनपद-रोहतक, हरियाणा-१२४५२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

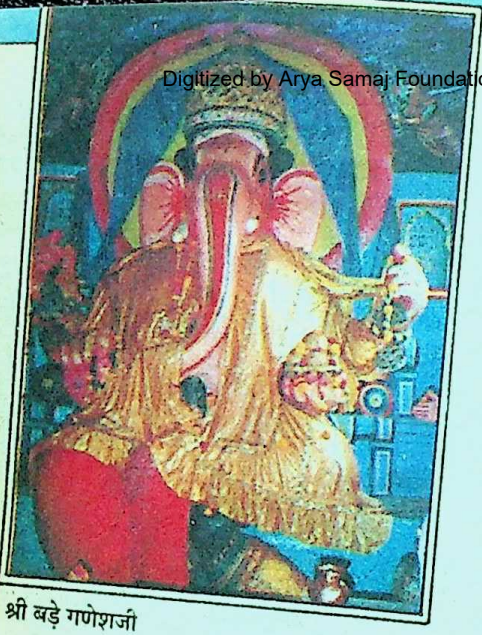

श्री बड़े गणेशजी

महाकालेश्वर मंदिर

महाकाल ज्योतिर्लिंग

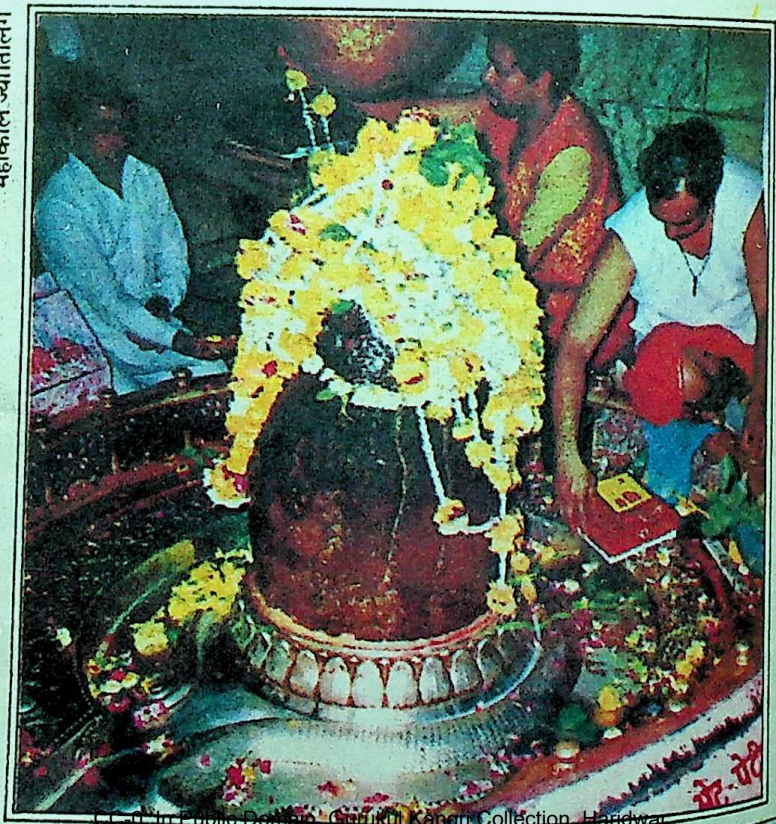

चित्र : ज्योति खरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उज्जैन : यहां अमृत की बूंद गिरी थी !

● ज्योति खरे

क्षिप्रा नदी के तट पर बसे उज्जैन को उज्जयिनी, अवंतिका, अमरावती, प्रतिकल्पा पदमावती एवं विशाला के नाम से भी जाना जाता है । उज्जैन उन पवित्र सात नगरियों में से एक है, जहां की यात्रा मोक्षदायिनी मानी जाती है । वे सात नगरियां हैं—अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, उज्जैन एवं द्वारिका । उज्जयिनी यशस्वी सम्राट विक्रमादित्य की राजधानी रही है । भारतीय परंपरा के अनुसार वे इतिहास के अद्वितीय पुरुष थे । राजनीति और सैन्य संबंधी महान योग्यता रखनेवाले महाराज विक्रमादित्य एक आदर्श शासक, न्यायशील, प्रजापालक, शूरवीर, कला, विद्या, साहित्य और संस्कृति के महासंरक्षक तथा परपीड़ा निवारक थे । इसलिए भारतीय इतिहास के कई राजाओं ने भी बड़े गर्व के साथ विक्रमादित्य की पदवी से अपने को विभूषित किया । लौकिक गुणों के अलावा उन्हें अलौकिक गुणों का स्वामी भी माना जाता था, जिनका वर्णन 'बेताल पच्चीसी' और 'सिंहासन-बत्तीसी' में आता है । 'वृहत कथा' में भी उनके कई चमत्कारिक कार्यों का उल्लेख है । कहा जाता है कि उनकी राजसभा में धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, संकु, बेताल भट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि नाम के नौ रत्न थे ।

महाभारत काल में उज्जैन में सांदीपनि आश्रम था, जहां भगवान श्रीकृष्ण तथा सुदामा साथ-साथ पढ़ते थे । बौद्ध परंपरानुसार इस नगरी का निर्माण अच्युतगामी शिल्पकार ने किया था । सबसे पहले यहां प्रद्योत वंश की राजधानी थी । गौतम बुद्ध के समय में चंड प्रद्योत यहां का राजा था । उसने कौशांबी के राजा उदयन को हराकर उज्जयिनी में बंदी बना लिया था । उदयन वीणा वादन में निपुण था । वह बंदीगृह में ही प्रद्योत की प्रिय दुहिता वासवदत्ता को संगीत की शिक्षा देता था । यहीं पर दोनों को आपस में प्रेम हो गया । यद्यपि उसके ऊपर कड़ा पहरा लगा रहता था फिर भी वह रक्षकों की नजरों से बचता हुआ कौशांबी भाग गया । अंत में उदयन व वासवदत्ता में विवाह हो गया । अशोक अपने पिता के शासनकाल में उज्जयिनी का राज्यपाल था । ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में यहां चष्टन राजवंश की राजधानी थी ।

उज्जयिनी राजगृह से पैठन जानेवाले राजमार्ग पर स्थित होने के कारण प्रसिद्ध व्यापारिक केंद्र भी था । यहां के व्यापारियों का संबंध वाराणसी, कौशांबी, भृगुकच्छ तथा मथुरा से था । उज्जयिनी से मखमल, सूती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्र, बहुमूल्य पत्थर, भृगुकच्छ के बंदरगाह द्वारा पश्चिमी देशों को भेजे जाते थे ।

बसंतसेना की नगरी

पांचवीं सदी के आरंभ में चंद्रगुप्त द्वितीय ने शकों का विनाश करके उज्जयिनी को गुप्त साम्राज्य से मिला लिया । गुप्तों के शासनकाल में उज्जयिनी इनकी राजधानी बनने के कारण व्यापार, विद्या, धर्म, संस्कृति, साहित्य, ललित कला, राजनीति का केंद्र बन गयी तथा यह नगर अति समृद्धशाली हो गया । वैष्णव, शैव, बौद्ध एवं जैन धर्म का केंद्र होने के कारण यह नगरी धर्म की समन्वय स्थली बन गया । इस नगर में गुप्त नरेशों की धार्मिक सहिष्णुता के कारण इसमें अनेक बौद्ध विहार, हिंदू देवालय, सरोवर, कूप आदि थे । गुप्तकाल में निर्मित महाकाल का मंदिर यहीं पर है । शूद्रक प्रणीत 'मृच्छकटिक' नाटक की नायिका बसंतसेना उज्जयिनी की प्रसिद्ध नगरवधू थी । बसंतसेना के भव्य भवन को देखकर लोगों का मन ललचा उठता था । इसकी दीवारें चंद्रमा की भांति धवल थीं तथा उसकी खूंटियों पर मोतियों की झालरें लटकायी जाती थीं ।

राजा विक्रमादित्य की प्रतिमा

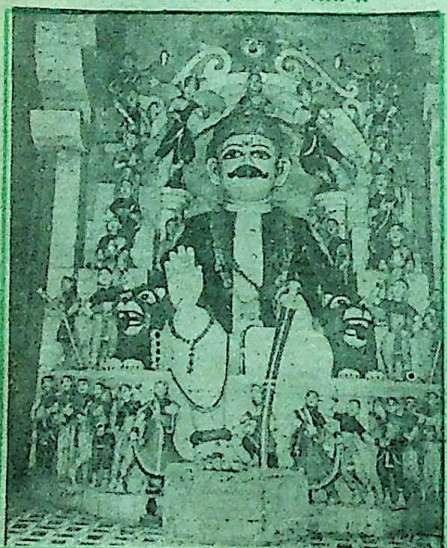

बाणभट्ट ने अपनी 'कादम्बरी' में भी उज्जयिनी का काव्यात्मक वर्णन किया है और इसको काशी नगरी के समान ही तीनों लोकों से न्यारी नगरी बताया है ।

महाकवि कालीदास ने भी अपनी रचना 'मेघदूत' में उज्जैन नगरी का सुंदर वर्णन किया है । उन्होंने महाकाल के मंदिर में होनेवाली आरती, पूजा और उसमें बजनेवाले नगाड़ों तथा वेश्याओं के नृत्य का भी बड़ा ही सुंदर वर्णन किया है । कालिदास ने लिखा है कि उज्जयिनी के सौंदर्य को देखने से ऐसा लगता था मानो विधाता ने अपने कला-कौशल की पराकाष्ठा का प्रदर्शन करने के लिए बड़ी ही सावधानी के साथ पृथ्वी पर 'रत्न' की भांति इस नगरी का निर्माण किया है ।

उज्जैन के महापर्व सिंहस्थ के संदर्भ में कथा प्रचलित है— एक बार देवता और दानवों ने रत्नों की प्राप्ति के लिए समुद्र का मंथन किया । सुमेरु पर्वत की मथनी और शेषनाग की रज्जु बनायी गयी । समुद्र से चौदह रत्न निकले थे, उनमें अमृत से भरा कुंभ भी था । अमृत के लिए देव तथा दानवों में छीना-झपटी हुई । कुंभ सूर्य से चंद्र, चंद्र से वृहस्पति आदि ग्रहों के हाथ में जाता रहा । अंत में इंद्र का पुत्र जयंत उसे देवलोक में ले गया । भागदौड़ में अमृत की कुछ बूंदें नासिक, उज्जैन, प्रयाग और हरिद्वार में गिरीं । इस प्रकार घड़े को रखनेवाले ग्रहों की गति विशेष के आधार पर उक्त चार स्थानों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

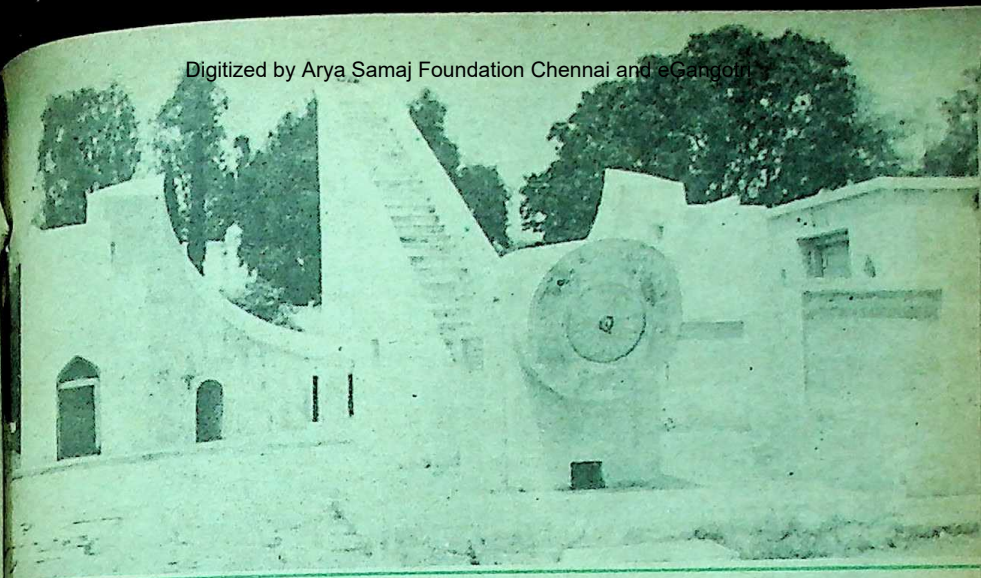

कुंभ पर्व मनाया जाता है । उज्जैन में प्रयाग की तरह कुंभ मेला माघ महीने में प्रति वर्ष तथा प्रति बारहवें वर्ष में महाकुंभ का मेला लगता है ।

महाकालेश्वर का नगर

उज्जैन का सुप्रसिद्ध स्थल है—भगवान महाकाल का मंदिर । भगवान महाकालेश्वर के लिंग की गणना भारत के द्वादश ज्योर्तिलिंगों में की जाती है । शिवलिंग के दक्षिणमुखी होने के कारण यह तांत्रिक साधना में विशेष महत्त्व रखता है । भारत के नाभि-स्थल में कर्क रेखा पर स्थित महाकाल का वर्णन रामायण, महाभारत, पुराण तथा संस्कृत के अनेक काव्यों में किया गया है । भोज के पुत्र उदयादित्य ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था । मध्यकाल में इसके नष्ट होने पर राणोजी सिंधिया के कार्यकर्ता रामचंद्र राव शेणवी ने सन १७३४ में इस मंदिर का सुधार करवाया ।

मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करते ही सम्मुख महाकालेश्वर का कलात्मक नागवेष्ठित रजत जलाधारी सह पर्याप्त विशाल शिवलिंग है । यह शिवलिंग स्वयंभू माना जाता है । कक्ष में ज्योतिर्लिंगों के अतिरिक्त गणेश, कार्तिकेय एवं पार्वती की श्वेत प्रतिमाएं हैं । मुख्य मंदिर तीन खंडों में निर्मित है । सबसे नीचे के खंड में महाकालेश्वर आसीन हैं, उसके ऊपर के खंड में ओंकारेश्वर शिव का मंदिर है तथा तीसरे खंड में नागचंद्रशेखर हैं, जिनके पट धार्मिक जनता के दर्शन हेतु वर्ष में सिर्फ एक बार नागपंचमी के दिन खोले जाते हैं ।

क्षिप्रा नदी एक अति पवित्र नदी मानी जाती है । पुराण कथा में वर्णित है कि नदी भगवान विष्णु के शरीर से उत्पन्न हुई है । नदी में पक्के कई घाट हैं, जिनमें 'रामघाट' प्रसिद्ध है । इस घाट पर स्नान करने का अधिक माहात्म्य है ।

रामघाट से महाकाल मंदिर के मार्ग में हरिसिद्धि देवी का मंदिर पड़ता है । यह देवी इक्यावन शक्ति पीठों में से एक है । यहां पर सती देह का कूर्पर (कुहनी) गिरा था । यही महाराज विक्रमादित्य की आराध्य देवी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकाल मंदिर के पास ही बड़े गणेशजी का मंदिर है, जिसमें गणपति की विशाल मूर्ति स्थापित है । मंदिर के भीतर एक द्वार है, जिसके भीतर पंच धातु की पंचमुखी हनुमान की मूर्ति है । उज्जैन का गोपाल मंदिर जिसका निर्माण महाराज दौलतराव शिंदे की महारानी बायलाबाई शिंदे ने कराया था, मंदिर में भगवान गोपालकृष्ण राधिकाजी की आकर्षक प्रतिमाएं हैं । इस मंदिर का मुख्यद्वार पन्ने के बहुमूल्य पत्थरों से बना है । कहा जाता है कि इस दरवाजे को सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर से गजनी ले गया । इसके बाद मोहम्मद शाह आबिद अली इसे लाहौर ले आया था । बाद में सिंधिया नरेश इसे यहां ले आये थे ।

कालिदास की देवी

उज्जैन नगर से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर गढ़कालिका का विशाल मंदिर है, जिसमें महाकाली की एक दिव्य मूर्ति प्रतिष्ठित है । कहा जाता है कि इन्हीं देवी की आराधना से कालिदास महाकवि हुए । मंदिर से कुछ ही दूरी पर क्षिप्रा नदी के तट पर एक बड़ी गुफा है, जिसको भर्तृहरि की गुफा कहते हैं ।

उज्जैन नगर से लगभग चार किलोमीटर की दूरी पर भैरवगढ़ बस्ती में नदी तट पर काल भैरव का मंदिर है । ये सिद्ध भैरव हैं । इसके पूर्व की ओर अर्थात क्षिप्रा नदी के दूसरे तट पर एक वट वृक्ष है, जिसको सिद्ध वट कहते हैं । लोग यहां पिंड दान करते हैं ।

उज्जैन स्थित सांदीपनी आश्रम में कृष्ण-बलराम-सुदामा ने विद्याध्ययन किया था । यहां सांदीपनी की गद्दी एवं कृष्ण, बलराम, सुदामा मंदिर है । महाप्रभु बल्लभाचार्य की ८४ बैठकों में यहां तिहत्तरवीं बैठक है ।

भैरवगढ़ के उत्तर में क्षिप्रा के तट पर एक भव्य प्रासाद है, जिसे कालियादह महल कहते हैं । कालियादह गांव के पास ही प्राचीन सूर्य मंदिर था । महल के पास में क्षिप्रा से एक नहर काटकर उसे ५२ कुंड में से होकर एक प्रपात के द्वारा ले जाया गया है । इसका पुराना नाम ब्रह्मकुंड है । मांडू के सुल्तान नासिरुद्दीन खिलजी ने इस महल को सोलहवीं शताब्दी में नया रूप दिया था । पारे की भस्म खाने के कारण वह इन कुंडों में पड़ा रहता था । सम्राट अकबर व जहांगीर भी यहां ठहरे थे । ग्वालियर के महाराजा माधवराव सिंधिया भी यहां निवास करते थे । श्रीमती विजयाराजे सिंधिया द्वारा अब यहां पुनः सूर्य मूर्ति की स्थापना की गयी है ।

उज्जैन में स्थित जंतर-मंतर (वेधशाला) का निर्माण सवाई राजा जयसिंह द्वारा सन १७२५ से १७३० के मध्य किया गया था । इस वेधशाला में सम्राट यंत्र, नाड़ी वलय यंत्र, दिगेश यंत्र तथा भित्ति यंत्र प्रमुख उपकरण हैं । इस वेधशाला का जीर्णोद्धार सन १९२३ में तत्कालीन महाराजा माधवराव सिंधिया द्वारा करवाया गया ।

उज्जैन में चिंतामण गणेश का मंदिर अत्यंत प्राचीन है । नगरकोट की रानी, रामजनार्दन मंदिर, पाटीदार राम मंदिर आदि भी दर्शनीय हैं ।

—आर.बी.-२/९९६/सी, रानी लक्ष्मीनगर
झांसी-२८४००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांव का महाजन पीतांबर अपने घर के सामने पेड़ के ठूंठ पर बैठा था । वह पचास को पार कर चुका था । कभी वह काफी हट्टा-कट्टा था, लेकिन अब उसे चिंता ने दुबला दिया था । उसकी ठुड्डी के नीचे की खाल ढीली पड़कर लटकने लगी थी । वह दूर निगाहें टिकाये एक बच्चे को देखे जा रहा था, जो अपनी बंसी की फंसी डोरी को छुड़ाने की कोशिश में था ।

एकाएक उसका ध्यान टूटा । गांव का पुजारी अपनी खड़खड़ाती आवाज में उससे कह रहा था, "तुम्हारा अपना तो कोई बच्चा है नहीं । तब तुम उस बच्चे को भूखी निगाहों से क्यों देखे जा रहे हो ?" फिर रुककर पूछा, "अब तुम्हारी पत्नी कैसी है ?"

"कई बार उसे शहर के अस्पताल में ले जा चुका हूं, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ । उसके सारे शरीर पर सूजन आ गयी है ।"

"तब तो उससे बच्चा होने की कोई उम्मीद नहीं । लगता है पीतांबर, तुम्हारा वंश चलानेवाला कोई नहीं रहेगा ।"

असमिया कहानी

वंशबेल

● इंदिरा गोस्वामी

थोड़ी देर तक चुप खड़े रहने के बाद अपनी छोटी-छोटी आंखों में धूर्तता की चमक लिये पुजारी ने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, "दूसरी शादी के बारे में क्या सोचा है तुमने ?"

पीतांबर अभी उत्तर देने ही वाला था कि वहां से गुजरती दमयंती पर उसकी निगाहें जा टिकीं । वह मठ के एक पुजारी की युवा विधवा थी । वर्षा के कारण भीगे कपड़े उसके शरीर से चिपक गये थे । उसकी जवान देह का रंग वैसा ही था, जैसा कि खौलते हुए गन्ने के रस के घने झाग का होता है । कद-काठ तो उसका अधिक नहीं था, पर थी वह बेहद आकर्षक । लोग उसके बारे में तरह-तरह की बातें करते थे । कुछ लोग तो उसे वेश्या कहते थे, ब्राह्मण वेश्या ।

'अरी दमयंती, कहां से आ रही है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

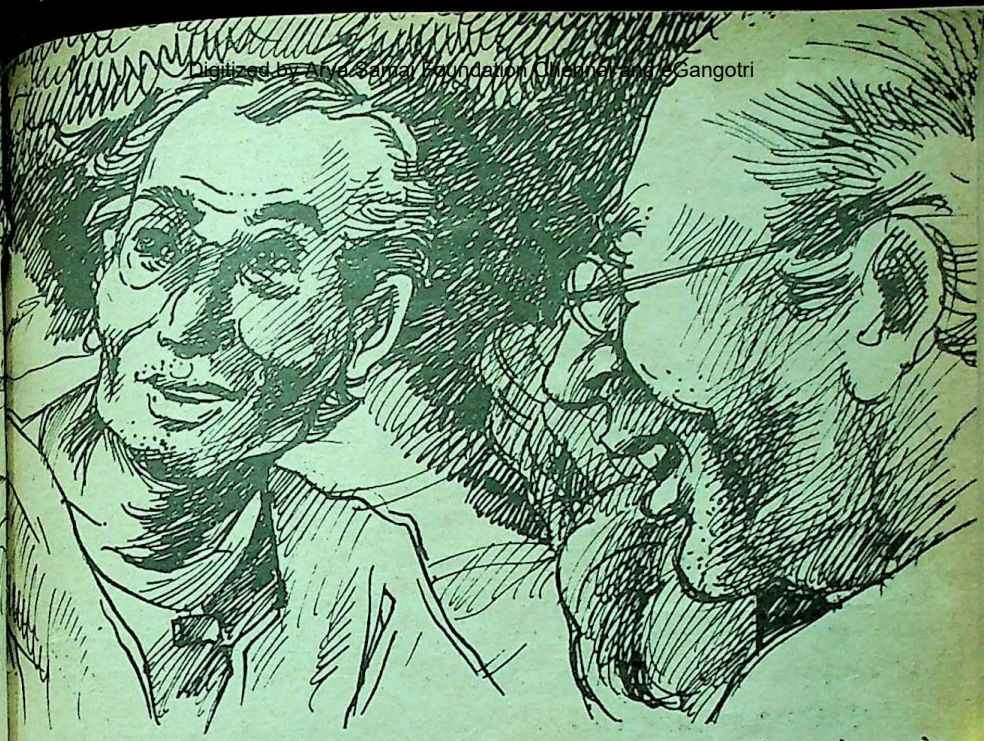

पुजारी ने आवाज लगाते हुए पूछा ।

"देख नहीं रहे हो तुम ये रेशम के कौवे ?"

"तो तुमने अब उन मारवाड़ी व्यापारियों से भी मेलजोल बढ़ाना शुरू कर दिया ?"

दमयंती चुप रही । उसने अपनी साड़ी की तहों को निचोड़कर पानी निकाला । वे दोनों उसे ललचायी नजरों से देखते रहे । जब वह चली गयी, तो पीतांबर ने कहा, 'सुना है कि वह गोश्त, मच्छी, सब कुछ खाती है ?"

"हां, इसने तो ब्राह्मणों की नाक कटवा दी है । विधवाओं के लिए जो विधान बना है, उसकी इसने रेड़ मारकर रख दी है । छीः, छीः ! कलियुग ! घोर कलियुग !"

"खैर, छोड़ो इसे, ये बताओ आपके यजमानों का क्या हाल है ?" पीतांबर ने पूछा ।

"सब कुछ तो तुम जानते हो, और फिर भी पूछ रहे हो ? मेरे बड़े भाई का मुझसे झगड़ा हो गया । ज्यादा काम तो उसी ने हथिया लिया । मैं तो बरबाद हो गया ।"

"पुजारीजी, आपको मंत्र पढ़ना तो ठीक से आते नहीं, संस्कृत आप जानते नहीं, इसीलिए तुम्हारे यजमान तुम से बिदक गये ।"

"ये बात नहीं है । आज जमाना ही बदल गया है । पहले तो हर यजमान के घर से हर महीने एक जनेऊ, दो धोतियां और पांच रुपये मिल जाते थे, पर अब तो कोई इन बातों को मानता ही नहीं । अपना खर्चा बचाने के लिए मेरा पुराना यजमान मणिकांत अपने दोनों बेटों को कामाख्या ले गया और वहीं उनका यज्ञोपवीत करवा आया । माइतानपुर के यजमानों ने अब अपने माता-पिता का श्राद्ध एक साथ ही करना शुरू कर दिया है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुजारी अपना रोना रोये जा रहा था और पीतांबर था कि दमयंती के ख्याल में खोया हुआ था। उसके दिमाग में तो, बस दमयंती का आकर्षक रूप चक्कर काट रहा था। ऐसा नहीं था कि उसने नारी देह की चमचमाहट पहले कभी न देखी हो। उसने दो-दो शादियां की थीं। जब पहली से बच्चा नहीं हुआ, तो उसने दूसरी खरीद ली जो अब वह गठिया रोग से ग्रस्त हो बिस्तर से लगी पड़ी है। उसका समूचा शरीर सूखकर ठठरी हो गया है।

पीतांबर को हर समय यही डर खाये जाता था कि वह निस्संतान ही मर जाएगा। उसकी वंशबेल खत्म हो जाएगी। उसका यह डर तब और बढ़ जाता, जब पुजारी या दूसरे लोग उसके सामने यही बात छेड़ देते। इस बात से उसकी दिमागी हालत भी कुछ गड़बड़ा गयी थी।

"पीतांबर, गांववाले तुम्हारे बारे में बेपर की उड़ा रहे हैं। कहते हैं कि तुम्हारा दिमाग चला गया है। तुम चिंता मत किया करो, इस दुनिया में ऐसे बेशुमार लोग हैं, जिनके तुम्हारी तरह बच्चा नहीं है। ये बच्चे-कच्चे, दुनियादारी सब माया है, प्रपंच है। छोड़ो इसे।"

पुजारी ने देखा पीतांबर की बीमार पत्नी बिस्तर पर लेटी है। उसकी आंखें ऐसे जल रही हैं, जैसे अंधियारे जंगल में किसी हिंसक जानवर की जलती हैं। लगता था जैसे वह यह जानने की कोशिश कर रही हो कि उसके पति और पुजारी में क्या बातचीत हो रही है। उसकी जलती आंखों की चमक इतनी तेज थी कि दूर से भी उसकी वेदना का एहसास दे रही थी।

पुजारी ने इधर-उधर देखकर पीतांबर के कान में फुसफुसाया, "मैं तुम्हें इस चिंता से छुटकारा दिला सकता हूं।"

"कैसे ?"

"इस बार गर्भपात का सवाल ही नहीं उठता। वह चार बार गर्भपात करा चुकी है और हर बार घर के पिछवाड़े बांस के झुरमुट में उसे दफना चुकी है।"

"तुम क्या दमयंती की बात कर रहे हो ?" पीतांबर में जैसे किसी आवेश की लहर उठी हो, बोला, "कहना क्या चाहते हो ?"

"यही कि अगर तुम चाहो तो दमयंती को अपना बना सकते हो ?"

पीतांबर उठ खड़ा हुआ। उसकी हालत ऐसी हो रही थी जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया हो।

पुजारी ने उसकी बीमार पत्नी की ओर एक बार फिर देखा। उसकी आंखें पूरी तरह बंद थीं। शायद, उसे दर्द का दौरा पड़ा था।

"मुझे दमयंती दिला दीजिए। मैं उसे हर तरह का सुख दूंगा।"

पुजारी के पोपले मुंह पर एक क्षण के लिए मक्कारीभरी मुसकान तैर गयी। "अच्छा, ठीक है। देखूंगा। उसकी दो छोटी बेटियां भी हैं। तुम्हें उनके बारे में भी सोचना होगा।"

पीतांबर ने अंदर जाकर रुपये निकाले और पुजारी के हाथ पर रख दिये। पुजारी गुनगुनाता हुआ आगे बढ़ गया।

* * *

इंतजार करते हुए एक सप्ताह गुजर गया। पीतांबर का समूचा अस्तित्व जैसे पुजारी पर टिक गया था। इस बीच उसने कई बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दमयंती को आते-जाते देखा । देखते ही उसके भीतर और खलबली मच जाती । वह उसके ख्याल में इतना डूब जाता था कि दमयंती उसे तरह-तरह की मुद्राओं में दिखायी देने लगती । वह हर वक्त घर के बाहर ही बैठा रहता । ये दिन भी ऐसे थे कि दमयंती सड़क के दोनों ओर बहनेवाले नालों के किनारे उग आयी कलमी और दूसरी वनस्पतियों को बटोरने आती थी । दमयंती के लंबे, भूरे बाल पीतांबर की आंखों में अटक जाते ।

एक दिन पीतांबर ने हिम्मत जुटा ही ली । दमयंती जब हरे पत्ते तोड़ रही थी, तो वह उसके निकट गया और बोला, "अगर तुम हर रोज इसी तरह कीचभरे पानी में खड़ी रहोगी, तो तुम्हें ठंड लग जाएगी ।"

दमयंती ने केवल एक बार उसकी ओर देखा । फिर काम में लग गयी । बोली कुछ भी नहीं ।

"मैं नौकर को भेज दूंगा । तुम उसे बता देना, जितनी वनस्पति चाहिए, वह इकट्ठी कर देगा । और..." पीतांबर ने फिर कहा ।

लेकिन उसका वादा अधूरा ही रहा । दमयंती ने हिकारतभरी तीखी नजरों से जैसे ही उसकी ओर देखा, वह तुरंत वहां से हट गया । उसने देखा कि उसकी पत्नी टूटे पंखोंवाले पक्षी की तरह फिर बिस्तर पर लुढ़क गयी है ।

इंतजार करते-करते पीतांबर का धैर्य जवाब दे ही रहा था कि तभी पुजारी आ पहुंचे । उन्हें देखकर वह पूछने लगा, "क्या खबर लाये हो मेरे लिए ? फटाफट बताओ ।"

पुजारी ने चारों तरफ अपनी नजर घुमायी । उसकी बीमार पत्नी लाश की तरह बिस्तर पर

उसकी जवान देह का रंग वैसा ही था, जैसा कि खौलते हुए गन्ने के रस के घने झाग का होता है । कद-काठ तो उसका अधिक नहीं था, पर थी वह बेहद आकर्षक । लोग उसे वेश्या कहते थे, ब्राह्मण वेश्या ।

पड़ी थी । पुजारी ने पीतांबर के कानों में फुसफुसाया, "ध्यान से सुनो । मुझे एक खबर मिली है । इस समय उसका पेट बिलकुल खाली है । अभी मुश्किल से एक महीना हुआ है, जब उसने अपनी पिछली करतूत का फल जमीन में दबाया है । मैंने उससे तुम्हारे बारे में बात की थी । वह एकदम लाल-पीली हो गयी । बल्कि उसने जमीन पर थूक दिया, कहने लगी, 'वह कुत्ता ! कैसे हिम्मत की उसने ऐसी बात मुझ तक पहुंचाने की ? वह जानता नहीं कि मैं यजमानी ब्राह्मण कुल से हूं और वह कीड़ा नीच जाति का महाजन ?' मैंने उससे कहा कि जब तू पाप की कीचड़ में लोट लगा ही रही है, तब ऊंची जाति क्या और नीची जाति क्या ? कोई ब्राह्मण लड़का तो तुझसे शादी करने से रहा । एक तो विधवा उस पर से दो-दो बेटियां । कम-से-कम वह तुमसे शादी करने को तैयार तो है । मैंने उसे साफ-साफ कह दिया कि तुम पंचायत की रजामंदी ले लोगे, और हवन करके विधिवत शादी कर लोगे । उसने तुम्हारी पत्नी के बारे में पूछताछ की । मैंने उसे बताया कि तुम्हारी पत्नी तो उस तिनके की तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जो हवा के झोंके से कभी भी उड़ सकता है ।

एकाएक उसने रोना शुरू कर दिया, बोली, 'मेरी तबियत ठीक नहीं रहती । मैं चाहती हूं कि मुझे ऐसा सहारा मिले, जो ठोस हो और बना रहनेवाला हो ।' मैंने उससे कहा, 'तुम्हारी तबियत ठीक कैसे रह सकती है ? मैंने सुना है कि तुमने अपने पेट से चार बार कचरा निकलवाया है । अगर पंचायत ने इस बात को पकड़ लिया, तो समझ लो, तुम्हारा जीना दुश्वार हो जाएगा । तुम अब तक इसलिए बची हुई हो कि तुम ब्राह्मण हो । लेकिन कब तक चलेगा यह ?' उसका कहना था, 'मैं कर भी क्या सकती हूं ? मुझे जिंदा भी तो रहना है । अब तो मेरे पास न कोई काम है न धंधा । सभी मुझे भ्रष्ट और पतित समझते हैं । और मेरे असामी ? वे सब चोट्टे हो गये । धान का मेरा हिस्सा भी नहीं देते । मेरी मजबूरी का फायदा उठाते हैं । ऐसी हालत में मैं इन दो नन्ही बच्चियों को लेकर कहां जाऊं ? मैंने लगान भी नहीं चुकाया । एक दिन मेरी जमीन की भी नीलामी हो जाएगी । बताओ मैं क्या करूं ?'

"खैर, मेरे प्रस्ताव का क्या हुआ ?"

"हां, हां, मैं उसी पर आ रहा हूं । वह तुमसे मिलना चाहती है । पूर्णमासीवाली रात को,

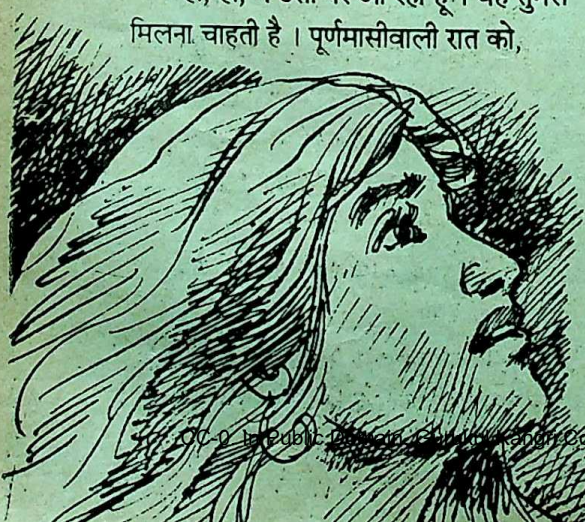

अपने ठिकाने पर, पिछवाड़ेवाले कोठे में ।

यह सुनते ही पीतांबर गद्गद हो गया । पुजारी ने इस मौके को हाथ से न जाने दिया । उसके कान में फुसफुसाया, "चलो, मेरे पास चालीस रुपये निकालो । मच्छरों ने नाक में दम कर रखा है । मैंने एक मच्छरदानी लानी है ।"

पीतांबर अब अपने घर के भीतर गया । उसने देखा कि उसकी पत्नी पूरी तरह जागी है । उसने उसकी चिंता किये बिना संदूकची से रुपये निकाले । वापस मुड़ा तो देखा कि वह टकटकी लगाये देखे जा रही है । एकाएक भड़क उठी, 'क्यों, मुझे इस तरह घूर रही है ? मैं तेरी आंखें नोच लूंगा ।'

पुजारी ने सुना तो सब कुछ समझ गया । पीतांबर से पैसे लेते हुए, "देखो, अगर यह ज्यादा घूरती हो, तो इसे थोड़ी अफीम दे दो" कहकर वह अपने दो दांतों को दिखाते हुए, पोपले मुंह से हंस दिया । फिर संजीदा होकर कहना शुरू किया, 'लेकिन उस कुतिया को तुम्हारी बहुत हूक है । अब सब तय हो गया है । तुम अब उसे उसके उसी ठिकाने पर दबोच सकते हो ।'

पीतांबर ने अपनी पत्नी की ओर एक नजर डाली । उतनी दूरी से भी वह देख सकता था कि उसके माथे पर पसीने की छोटी-छोटी बूंदें आयी हैं ।

★ ★ ★

अगस्त का महीना था । पूर्णमासी की रात । पीतांबर ने अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने । फिर आइना उठा अपना चेहरा निहारने लगा । चेहरे पर उसे वे झुर्रियां दिखायी दीं, जो एक-दूसरे को काट रही थीं । वह दमयंती के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर की ओर चल पड़ा । रास्ते में साल का घना जंगल पड़ता था । उसका घर जंगल के पार, गांव के बाहरी हिस्से में था । एक तरह से यह जगह बहुत ही उपयुक्त थी, क्योंकि दमयंती यहां निश्चिंत होकर जो मन में आये, कर सकती थी ।

साल के जंगल को पार करते उसे रास्ता काटता गीदड़ों का एक झुंड दिखायी दिया । वह दमयंती के घर के फाटक के पास पहुंचा और चुपके से उसके भीतर हो लिया । एक कमरे में मद्धिम-सी मिट्टी के तेल की ढिबरी जल रही थी । उसने भीतर झांका । दमयंती इंतजार करती पिछवाड़े के कोठे से पीतांबर की हर गतिविधि देख रही थी । उसने वहीं से पुकारा, "अरे, इधर । यहां !"

दमयंती कोठे की टूटी हुई दीवार से लगी खड़ी थी । पीतांबर उसकी आंखों में आंखें डालकर देखने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था । तभी उसने सुना, वह कह रही थी, 'पैसे लाये हो ?'

वह स्तब्ध रह गया । उसे उम्मीद नहीं थी कि उसका पहला सवाल पैसा ही होगा ।

"यह रहे । पकड़ो । मेरा जो कुछ है, सब तुम्हारा है ।" कहते हुए उसने अपनी कमर में खोंसा हुआ बटुआ निकाला और उसके हाथ पर रख दिया । दमयंती ने वह बटुवा अपने ब्लाउज में रख लिया । अब उसने दीया उठाया और उसे एक कमरे में ले गयी । वहां एक खटिया पड़ी थी । यह खटिया उसके पति को गोसाईं की अंत्येष्टि के समय मिली थी । फूंक मारकर उसने दीया बुझा दिया ।

★ ★ ★

दो माह बीत चुके थे इसी तरह पीतांबर को दमयंती के पास आते-जाते । पीतांबर उसके घर से निकला ही था कि, दमयंती अलसाती-सी कुएं की ओर बढ़ी और वहां नहाने लगी । ठीक उसी समय पुजारी आ पहुंचा और बड़े व्यंग्य से बोला, "उस ब्राह्मण लड़के का संग पाने के बाद तो तुम नहाती नहीं थी ? अब क्या हो गया है ?"

दमयंती ने कोई उत्तर नहीं दिया ।

"जानता हूं पीतांबर निचली जाति का है ! यही बात है न ?"

एकाएक दमयंती उठ दौड़ी । वह सहन के दूसरे कोने में पहुंची और वहां दुहरी होकर उल्टी करने लगी ।

पुजारी लपककर उसके पास पहुंचा और धीरे-से पूछा, "यह पीतांबर का ही होगा ।"

उसने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया ।

वाह ! कितनी बढ़िया खबर है । पीतांबर तो बच्चे के लिए तरस रहा है ।

दमयंती ने इस पर भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की ।

"अब मैं चलता हूं और उसे यह खबर देता हूं । अब वह तुमसे खुल्लमखुल्ला शादी कर सकता है ।"

फिर वह दमयंती के निकट आया और फुसफुसाता हुआ बोला, "तुम्हारे यहां जो कुछ चलता रहता है, लोग उससे परेशान हैं । बीच-बीच में बात भी होती रहती है, कि पंचायत बुलायी जाएं । और सुनो... !"

दमयंती ने कुछ नहीं सुना, वह उल्टियां करती रही ।

पुजारी कहता गया, "इस सब के बावजूद पीतांबर तुमसे शादी करने को तैयार है । देखो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं इस जनेऊ पर हाथ रखकर कसम खाता हूं कि अगर इस बार भी तुमने इस बच्चे को गिराया । तो तुम नरक की आग में जलोगी !''

★ ★ ★

पीतांबर को सारी खबर सुनाकर पुजारी बोला, ''अब लगता है तुम्हारा स्वप्न पूरा होने को है । अगर उसने इस बच्चे को न गिराया तो विश्वास रखो, वह तुमसे शादी कर लेगी ।''

पीतांबर का समूचा शरीर खुशी से थरथराने लगा, क्या यह वाकई सच है ? क्या दमयंती के पेट में बच्चा मेरा ही है ? होगा । पुजारी झूठ क्यों बोलेगा ? मेरा ही बच्चा होगा । ''देखना कहीं मेरी उम्मीद पर पानी न फिर जाए । तुम जानते ही हो, यदि यह बच्चा गिर गया, तो मेरी वंशबेल को आगे बढ़ानेवाला कोई नहीं रहेगा । अब तो दमयंती की मुट्ठी में ही मेरी जान है ।''

''तुम चिंता मत करो । जैसे एक गिद्ध लाश की चौकसी करता है, मैं भी उसी तरह दमयंती की चौकसी करूंगा । साथ ही उस बुढ़िया दाई को भी चेतावनी दे दूंगा कि बच्चा गिराने के लिए वह इसे कोई उल्टी-सीधी जड़ी-बूटी न दे । लेकिन, खेल सारा पैसे का है । इसके लिए मुझे ढेर सारी रकम चाहिए ।''

रकम लेने के लिए पीतांबर घर में दाखिल

लेखिका

हुआ । उसे फिर बीमार पत्नी की छेदती पैनी हुई आंखों का सामना करना पड़ा । उन आंखों में लांछना का भाव था, चाहे उसके लिए हो या पुजारी के लिए । वह जोर से गुर्राते हुए बोला, ''अरी, बांझ कुतिया । इस तरह मेरी तरफ क्या देख रही है ?''

★ ★ ★

पीतांबर अब हर समय अपने घर के बरामदे में बैठ दमयंती के पेट में पल रहे अपने बच्चे के बारे में सपने लेता रहता । कल्पना करता कि अब उसका बेटा अपनी पूरी जवानी में है, और उसे नदी के किनारे घुमाने ले गया है । फिर उसे ऐसे लगता कि उसकी वंश बेल उसे चमकदार भविष्य की ओर खींचे ले जा रही है ।

पांच महीने बीत गये । पीतांबर ने सुन रखा था कि पांच महीने का गर्भ नष्ट नहीं किया जा सकता । वह चाह रहा था कि किसी तरह दिन जल्दी-जल्दी बढ़ जाएं ।

एक दिन दोपहर को तेज अंधड़ आया । चारों ओर घुप्प अंधेरा छा गया । भारी वर्षा हुई । बादलों से बिजली गिरी और सहन का पेड़ को दो-फाड़ कर गयी ।

ऐसी घनघोर बरसाती रात में एकाएक पीतांबर के कानों में कोई स्वर सुनायी पड़ा । कोई उसे बुला रहा था । हाथ में लालटेन लेकर वह बाहर की ओर लपका । एक आकृति उसकी आंखों के सामने उभरी । वह आकृति पुजारी की थी । उसके मुंह से निकल पड़ा ''अरे, पुजारीजी तुम !''

पुजारी घबराया हुआ-सा बोला, ''पीतांबर, तुम्हारी पहली पत्नी अशुभ घड़ी में मरी थी न उसी की वजह से ये सब हो रहा है ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या हो रहा है ? क्या हुआ ?"

"शास्त्रों में कहा गया है कि जब किसी व्यक्ति की ऐसी अशुभ घड़ी में मृत्यु होती है, जैसी कि तुम्हारी पत्नी की हुई थी, तो घास का तिनका भी नहीं उपजता । बल्कि, जो होता भी तो वह भी जलकर राख हो जाता है । तुम्हारे लिए अब सब कुछ जलकर राख हो गया ।"

पीतांबर लगभग चीख पड़ा, "हुआ क्या है ? ईश्वर के लिए मुझे जल्दी बताओ ।"

"क्या कहूं । उसने बच्चे को नष्ट कर दिया । कहती थी कि वह किसी छोटी जातिवाले का बीज अपने भीतर नहीं पनपने दे सकती ।"

पीतांबर के साथ सपने में नदी किनारे टहलनेवाले युवक का पांव एकाएक फिसल गया और वह नदी में जा गिरा... ।

★ ★ ★

एक रोज आधी रात को दमयंती एकाएक चौंककर उठी । उसके पिछवाड़े जमीन खोदने की आवाज आ रही थी । जमीन वही थी, जहां कुछ रोज पहले दमयंती ने अपने भ्रूण को दबाया था । दमयंती ने देखा, पीतांबर पागलों की तरह जमीन खोदे जा रहा है । दमयंती का शरीर सर से पांव तक कांप गया । हिम्मत कर उसने आवाज दी, "ए महाजन ! अरे महाजन ! क्यों खोदे जा रहे हो जमीन ?"

पीतांबर ने कोई जवाब नहीं दिया । बस खोदता रहा ।

दमयंती पागलों की तरह चिल्लायी, "क्या मिलेगा तुझे वहां ? हां मैंने उसे दबा दिया है । वह नर ही था, पर वह मांस का एक लोथड़ा भर ही था ।

पीतांबर का चेहरा तमतमाया हुआ था और उसकी आंखें जल रहीं थीं, वह चीखकर बोला, "मैं उस लोथड़े को अपने इन हाथों से छूना चाहता हूं । वह मेरी वंशबेल की कड़ी थी, मेरे ही खून से बना था वह । मैं उसे एक बार जरूर छूकर देखूंगा ।"

—रूपांतर : श्रवण कुमार

लेखिका का पता—
डी-१९/२९-३१ छात्र मार्ग,
दिल्ली-११०००७

हड्डियां जोड़ने के लिए सींग का प्रयोग

त्रिवेंद्रम के डॉ. एम. भाष्कर सव ने एक प्रयोग के द्वारा यह पाया है कि मानव शरीर में टूटी हुई हड्डी को बदलने के लिए पशुओं के सींग बेहतर साबित होते हैं । क्योंकि धातु से बनी प्लेट, स्टेनलेस स्टील, छड़ या कोबॉल्ट आदि से बनी प्लेट अथवा छड़ शरीर के लिए धीरे-धीरे नुकसानदायक होती है । इसलिए उसको कुछ समय बाद बदलना पड़ता है ।

जबकि सींग को मानव शरीर में लंबे समय तक रहने के बावजूद धातुओं की अपेक्षा कम हानि होती है । सींगों में भी यदि हिरन का सींग उपलब्ध हो तो ज्यादा उत्तम है ।

— देवेन्द्र भूषण तिवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गबन का 'दोषी' विश्वविख्यात लेखक बना

● शैलेंद्र सिंह

अमरीकी साहित्य में तीन ऐसे बहुचर्चित तथा सर्वप्रिय लेखक हुए हैं, जिनकी पहचान उनके वास्तविक नाम से कम और उपनाम (लेखकीय नाम) से अधिक बनी है। ये तीन साहित्यकार हैं : मार्क ट्वेन, अंकल रेमज तथा ओ. हेनरी। ये तीनों उपनाम इतने प्रसिद्ध व चाहतपूर्ण हैं कि एक बार सोचना पड़ता है कि उनके वास्तविक नाम क्या थे।

ओ. हेनरी का वास्तविक नाम विलियम सिडनी पोर्टर था। इनका जन्म उत्तरी केरोलिना में ग्रींसबोरो के एक छोटे शहर में हुआ था। ओ. हेनरी के जीवन के प्रारंभिक बीस वर्ष इसी छोटे शहर में व्यतीत हुए। इन्हें तब तक स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं हो सकी, जब तक इनकी उम्र पंद्रह वर्ष की नहीं हो गयी। उसके बाद ओ. हेनरी ने यहीं रहते हुए अपने चाचा की दवा की

ओ. हेनरी का वास्तविक नाम विलियम सिडनी पोर्टर था। इनका जन्म उत्तरी केरोलिना में ग्रींसबोरो के एक छोटे शहर में हुआ था। ओ. हेनरी के जीवन के प्रारंभिक बीस वर्ष इसी छोटे शहर में व्यतीत हुए। इन्हें तब तक स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं हो सकी, जब तक इनकी उम्र पंद्रह वर्ष की नहीं हो गयी। उसके बाद ओ. हेनरी ने यहीं रहते हुए अपने चाचा की दवा की दूकान में बतौर लिपिक काम किया। दवा की दूकान पर काम करते हुए हेनरी की घनिष्ठता लगभग उस शहर के सभी लोगों से बढ़ने लगी। हेनरी जितना अधिक लोगों के करीब आते गये, उनके हृदय में व्याप्त सहानुभूति और मानवीय भावनाओं के प्रति गहरी संवेदना का आधार ठोस होता चला गया। हृदय में प्रज्वलित सहानुभूति और करुणा के इस प्रकाश ने उनके कहानी लेखन में भी एक नयी चमक पैदा की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूकान में बतौर लिपिक काम किया । दवा की दूकान पर काम करते हुए हेनरी की घनिष्ठता लगभग उस शहर के सभी लोगों से बढ़ने लगी । हेनरी जितना अधिक लोगों के करीब आते गये, उनके हृदय में व्याप्त सहानुभूति और मानवीय भावनाओं के प्रति गहरी संवेदना का आधार ठोस होता चला गया । हृदय में प्रज्ज्वलित सहानुभूति और करुणा के इस प्रकाश ने उनके कहानी लेखन में भी एक नयी चमक पैदा की ।

सन १८८२ का वर्ष था । हेनरी का स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता जा रहा था । स्वास्थ्य लाभ के लिए हेनरी टेक्सास गया । टेक्सास में रहते हुए हेनरी ने पशुशाला में गंवार पशुपालकों के बीच रहकर दो वर्षों तक नौकरी की । साथ ही वह अपने अध्ययन के लिए जेब में वेबस्टर शब्दकोष और टेनीसन की कविताएं लिये रहता और जब भी समय मिलता अपने को अध्ययन में व्यस्त रखता । इस पशुशाला में काम करते हुए हेनरी ने लेखन कार्य की शुरुआत की । समाचार-पत्रों के लिए लेख लिखना एवं हास्य-कथा पत्रिका का संपादन करना तथा एक बैंक के लिए मत-गणक का काम साथ-साथ चलता रहा । किंतु मत-गणक के काम ने हेनरी के जीवन में एक भाग्यपूर्ण विडंबना का सूत्रपात किया ।

ओ. हेनरी

लेखक कारावास में

हुआ यूं कि बैंक में खाता-बही, कागज-किताबें रखने की व्यवस्था अनियमित थीं । एक दिन बैंक में दो हजार डॉलर की राशि को अलग संचय कर रखने की बात का परदाफाश हुआ । हेनरी चूंकि मत-गणक के रूप में कार्यरत थे, इसलिए अधिकारियों ने इस राशि के गबन का दोषारोपण उन्हीं के सर मढ़ दिया । बेचारे हेनरी के सामने मानसिक असंतुलन और किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति पैदा हो गयी । ऐसे में जहां उन्हें इस दोषारोपण का विरोध करना था, वहीं उन्होंने टेक्सास छोड़कर भागने की एक बड़ी भूल कर दी । इस से बैंक अधिकारियों का उनके प्रति संदेह और मजबूत हो गया । टेक्सास छोड़कर हेनरी मध्य और दक्षिण अमरीका चले आये । सन १८६८ में हेनरी की पत्नी गंभीर रूप से बीमार पड़ी । पत्नी की देखभाल के लिए हेनरी जैसे ही अमरीका पहुंचे, उन्हें फौरन गिरफ़्तार कर लिया गया और पांच वर्ष के कारावास की सजा भी सुना दी गयी । फिर हेनरी को कोलंबस में फेडरल कारावास में लाया गया । हेनरी की शालीनता और अनुकरणीय व्यवहार के कारण बाद में सजा की अवधि कम करके तीन वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तीन महीने कर दी गयी ।

जेल में हेनरी को उसके शालीन व्यवहार के कारण अस्पताल और दवा की दूकान में रात्रि लिपिक की नौकरी मिली । हेनरी ने अपने रिक्त समय में कलम उठायी । किंतु इस बार अपने वास्तविक नाम से न लिखकर उन्होंने अपने लिए एक उपनाम का चयन किया । अपने आपको नेपथ्य में रखकर वे 'ओ. हेनरी' के नाम से लिखने लगे । उन दिनों हेनरी की कहानियां खूब चर्चित हुईं । सन १९०१ में जेल से बाहर आने के बाद ओ. हेनरी ने लेखन को ही अपनी जीविका का माध्यम बनाया ।

कुछ समय बाद हेनरी न्यूयार्क चले आये ।

ओ. हेनरी ने लघुकथाओं और कहानियों को सही मायने में मानवीयता प्रदान की ।

यहां इनके लेखन को अपार प्रसिद्धि मिली । हेनरी को यहां जितना सम्मान मिला, उतना बहुत ही कम लेखकों को मिला । आलोचकों ने हेनरी को 'मैनहॉटन द्वीप का राष्ट्र कहानीकार' करार दिया । न्यूयार्क में रहते हुए हेनरी का लेखन सफलता और प्रसिद्धि की सीमा पार करता रहा और एक स्थिति ऐसी भी आयी, जब न्यूयार्क की हर कहानी के लिए हेनरी की कहानियां मानदंड बन गयीं । हेनरी की कहानियों के आधार पर ही अन्य कहानियों का मूल्यांकन किया जाने लगा । सन १९०३ में हेनरी 'न्यूयार्क वर्ल्ड' के लिए काम करने लगे, जहां उन्हें रविवारीय परिशिष्ट के लिए एक कहानी नियमित रूप से लिखने का इकरारनामा लिख गया । यहां काम करते हुए हेनरी ने सैकड़ों कहानियों का सृजन किया और प्रत्येक कहानी के लिए उन्हें एक सौ डॉलर की राशि प्राप्त होती रही ।

हेनरी की श्रेष्ठ कहानियां

ओ. हेनरी की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी कहानियों के अंत का एक तो ज्ञान नहीं हो पाता, दूसरा कब कहानी का अंत रोमांच के साथ होगा, एक हंसी और गुदगुदाहट के साथ होगा या एक आश्चर्यजनक मोड़ पर छोड़ते हुए होगा, इसका कुछ भी पता नहीं चलता ।

वैसे तो हेनरी की कहानियों को चार खंडों में विभक्त किया जा सकता है, किंतु न्यूयार्क नगर वाले खंड में हेनरी की सर्वाधिक लोकप्रिय कहानियां संकलित हैं । इन चार खंडों को इस प्रकार निरूपित किया जा सकता है : पश्चिम की कहानियोंवाला खंड, दक्षिण की कहानियोंवाला, दक्षिण व मध्य अमरीकावाला और चौथा न्यूयार्क नगर की कहानियोंवाला खंड ।

न्यूयार्क नगर के प्रति हेनरी के हृदय में अगाध प्रेम था । न्यूयार्क ने हेनरी के जीवन को जितना प्रोत्साहित किया, उन्हें उतना ही रोमांचकारी भी बनाया । इसीलिए एक बार एक पत्रिका को साक्षात्कार देते हुए हेनरी ने कहा था, 'मैं न्यूयार्क की हर गली में अपना जीवन व्यतीत करना चाहता हूं । क्योंकि, न्यूयार्क के हर घर में एक नाटक के लिए संपूर्ण परिदृश्य उपस्थित है ।' एक बार अपने लेखन को मिलनेवाले प्रोत्साहन पर टिप्पणी करते हुए ओ. हेनरी ने अपनी पत्नी से कहा, 'मैं अशोभित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(उत्तर केरोलीना) की इन सुंदर-सुंदर पहाड़ियों और इनके सौंदर्य को सौ-सौ वर्षों तक निरंतर निहारता रह सकता हूं, किंतु इनके सौंदर्य से मैं लिखने के लिए अपने भीतर कोई विचार पैदा नहीं कर सकता । लेकिन न्यूयार्क में किसी भी छोटे स्थान पर खड़ा होकर मैं अपना वाक्य पकड़ सकता हूं और उसमें सुघढ़ता तलाश सकता हूं । सब-वे (भूमिगत रेल पथ, या पथ) के किनारे किसी व्यक्ति का चेहरा देखकर मैं कहानी लिखने के लिए कहानी का सूत्र प्राप्त कर सकता हूं ।' ऐसा था न्यूयार्क के प्रति हेनरी का प्रेम ।

ओ. हेनरी की कहानियों का अपना एक अलग अंदाज है । हेनरी की कहानियों का प्रारंभ एकदम अलग और सामान्य ढंग से होता है । ऐसा लगता है जैसे गली के किसी मोड़ पर हेनरी अकस्मात मिल गये हैं, और हमसे बातचीत कर रहे हैं । कहानियों में बोलचाल की भाषा का जितनी कुशलता से प्रयोग हेनरी कर लेते थे, वैसा सिर्फ उन्हीं की तरह का कोई कलाकार कर सकता है । किंतु इन्हीं बोलचाल वाली भाषा का उपयोग कर हेनरी संवादों को जितना प्रखर बना देते हैं, वह किसी भी मुहावरायुक्त भाषा के प्रयोग से कम प्रभावशाली नहीं होते । अपनी भाषा में सुंदर-सुंदर अलंकारों का प्रयोग इतनी कुशलता से हुआ है कि कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं होता कि हेनरी बेवजह हलके माहौल को गंभीर बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं या शब्दों का सहारा लेकर छोटे-छोटे विचारों की श्रृंखला को लंबाई देने का प्रयत्न कर रहे हैं ।

'द गिफ्ट ऑव द मागी' (मागी का तोहफा) नामक कहानी हेनरी की तमाम साहित्यिक उपलब्धियों में से एक है । इसमें एक स्थान पर हेनरी अपने पात्र से सिर्फ इतना कहलवाना चाहते हैं : 'आओ दूसरे विकल्प को देखते हैं ।' लेकिन यहां हेनरी अपने पात्र को और अधिक गंभीरता से विचार करने की छूट देते हैं, और कहलवाते हैं : 'आओ, दूसरी दिशा में कुछ परिणामविहीन प्रतिरोधों का भिन्न ढंग से सूक्ष्म परीक्षण करते हैं ।'

अब इस वाक्य को पढ़कर तो यही लगता है कि कहानी में एक ऐसा मोड़ आया है, जहां कहानीकार उन प्रतिरोधों के विकल्प की बात कहना चाहता है, जिन प्रतिरोधों से अंततः कोई उपलब्धि, कोई परिणाम प्राप्त करने की कोई संभावना नहीं है । किंतु ऐसी बात नहीं है । यही तो हेनरी की कहानियों की विशेषता है कि वे तत्काल कुछ ऐसे सुख-दुःख के संदर्भों को ऊंचाई दे देंगे कि हम जो सोच रहे हैं, वह कहीं नहीं होगा । या तो अंत आश्चर्यमिश्रित होगा या रोमांचकारी । यानी हर अवस्था में हमारी स्थिति किंकर्त्तव्यविमूढ़ ही होगी । या तो एक मुसकान होंठों पर ठहर जाएगी या एक रोमांच वदन को चीरकर निकल जाएगा । और तब लगेगा कि नहीं इस कहानी को इसी मोड़ तक आना था । कहानी को वहां तक पहुंचाने के लिए हेनरी का दृष्टिकोण हमेशा तार्किक और विश्वसनीय भी होता है, जिससे एक ही बात स्पष्ट होती है कि हेनरी की कहानियों का अंत सचमुच आश्चर्यमिश्रित ही होना चाहिए ।

ओ. हेनरी की कहानियों के इस तरह के अंत के पीछे भी एक कारण था । हेनरी के जीवनी लेखक सी. अलफांसो स्मिथ का मानना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि ओ. हेनरी एक लंबा उपन्यास लिखना चाहते थे। हेनरी की अधिकांश कहानियों का प्रारंभ उनके मस्तिष्क में व्याप्त इसी विचारधारा के साथ हुआ। किंतु, हर कहानी को बीच में ही किसी न किसी कारणवश रोक देना पड़ा। कभी संपादकों की तुरंत मांग पर और कभी किसी अन्य कारणवश। अब ऐसे में हेनरी कहानियों को जल्दी-जल्दी अंत देने में जुट जाते थे। और कहानियों का अंत ऐसा हो जाता था जिसकी उन्हें स्वयं उम्मीद नहीं होती थी।

बहरहाल, बतौर लेखक हेनरी की पाठकों में एक अतिसराहनीय अपील रही। वर्ष १९०४ तक ही हेनरी की कहानियों के संकलन की १० करोड़ प्रतियां बिक चुकी थीं। उनकी कहानियों का विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

मानवता के प्रति हेनरी के हृदय में दुर्लभ प्रेम था, जिसने उन्हें इस ऊंचाई तक पहुंचाया। हेनरी ने हर इनसान से प्रेम किया। हर वैसा इनसान जो बिना शिकायत अपने काम में संलग्न रहा, हेनरी का प्रेम पा सका। मात्र अमीर, सुसंस्कृत, मूल्यवान आभूषणवाले और आकर्षक जन ही नहीं, बल्कि हर इनसान को उन्होंने इनसान के रूप में देखा। और उनकी यही दृष्टि उनकी कहानियों को सहानुभूतिपूर्ण और करुणामय बनाने में सहायक बनी। दुःख-दर्द की व्याख्या उनकी कहानियों का एक अभिन्न अंग बनी रही। यह कोई संयोग नहीं था कि अपनी तमाम अच्छी पुस्तकों में से एक पुस्तक का नाम उन्होंने 'चार सौ करोड़' रखा। वे चाहते तो 'चार करोड़' भी रख सकते थे।

किंतु जो व्यापकता 'चार सौ करोड़' के साथ उद्भाषित हुई वह 'चार करोड़' के साथ कभी नहीं होती। और इस तरह हेनरी 'चार सौ करोड़' के साथ जुड़े न कि उन 'चार करोड़' के धन और सौंदर्य ने उन्हें बांधा। इसीलिए उनके जीवनी लेखक सी. अलफोंसो स्मिथ ने ठीक ही कहा कि ओ. हेनरी ने लघुकथाओं और कहानियों को सही मायने में मानवीयता प्रदान की।

—१४६ स्टाफ क्वार्टर्स
साउथ एवेन्यू, नयी दिल्ली-११०००१

एक बार एक गंजा युवक गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर से मिलने के लिए आया। गुरुदेव ने कहा, "चांद से मुखड़े कई बार देखे, पर चांद-सी खोपड़ी आज पहली बार देखी है।"

युवक ने कहा, "मेरे पिताजी की खोपड़ी भी ऐसी ही थी।"

गुरुदेव ने फौरन कहा, "बड़े आज्ञाकारी बेटे हो।"

— आलोक प्रभाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसीयत वैध है

रामगोपाल शर्मा, भीलवाड़ा : मेरी मां के देहांत के बाद उनके संदूक में से दस रुपये के स्टांप पेपर पर लिखी वसीयत मिली है, जिस पर मुहर सहित नोटरी के हस्ताक्षर हैं । दो गवाहों के भी दस्तखत हैं, जिनमें से एक गवाह अभी जिंदा है । यह वसीयत मां ने अपने पहले और तीसरे बेटे के पक्ष में लिखी है, जबकि हम चार भाई व दो बहनें हैं, पिताजी की मृत्यु तो पच्चीस साल पहले हो चुकी है । क्या यह वसीयत वैध मानी जाएगी ?

आपकी माताजी द्वारा की गयी वसीयत सभी वैधानिक औपचारिकता को पूरा करती है, इसलिए उस पर संदेह करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता । यदि यह वसीयत साधारण कागज पर होती और उस पर नोटरी द्वारा सत्यापन भी न होता, तब भी वह वैध होती । दो गवाहों में एक के न रहने पर वसीयत की वैधता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । वसीयतनामे के लिए स्टांप पेपर या नोटरी द्वारा सत्यापन नियमानुसार आवश्यक नहीं है ।

वसीयतनामा वस्तुतः उत्तराधिकार-पत्र है, जिसे संपत्ति का स्वामी किसी के भी पक्ष में लिख सकता है और उसकी मृत्यु के बाद उस संपत्ति का निपटारा वसीयत में लिखी इच्छानुसार किया जाना चाहिए ।

समय डिग्री वसूली का

राजेश कुमार, शिमला : मेरे पिताजी ने अपने एक मित्र को कुछ रकम उधार दी थी, जो उसने नहीं लौटायी । पिताजी ने उस पर दावा कर दिया । अदालत ने रकम-असल की मेरे पिताजी के पक्ष में डिग्री कर दी, परंतु ब्याज नहीं दिलवाया । अपील दायर कर मित्र ने अदालत के फैसले को चुनौती दी । अपील में लगभग तीन साल लग गये । आखिर में, फैसला पिताजी के पक्ष में ही हुआ । अब प्रश्न यह है कि पिताजी को डिग्री वसूल करने के लिए पहले न्यायालय के फैसले से समय मिलेगा या डिग्री वसूल करने के समय में अपील का समय भी लगाया जाएगा ।

डिग्री की इजरा (रकम वसूली की न्यायिक कार्यवाही) बारह वर्ष के अंदर की जानी चाहिए । बारह वर्ष की अवधि डिग्री होने के दिन से प्रारंभ होती है । किसी भी निर्णय के विरुद्ध पुनर्विचार याचिका या अपील होने की स्थिति में, अपील का निर्णय होने तक प्रथम न्यायालय का निर्णय लागू रहता है, परंतु अपील का निर्णय हो जाने के बाद अपील के निर्णय में ही पहले न्यायालय का निर्णय समादिष्ट हो जाता है और आगे के कार्यवाही अपील के निर्णय के आधार पर हो सकती है । ऐसी स्थिति में इजरा के लिए बारह वर्ष की अवधि अपील के निर्णय के दिन से लगायी जाती है ।

दुकान में तोड़फोड़

गुरमेल सिंह, लुधियाना : मैंने एक दुकान लगभग आठ वर्ष पूर्व किराये पर दी थी । किरायेदारी के समय किरायेदार ने दुकान में काफी तोड़फोड़ कर दी है । उसने दुकान के सामने के बरामदे को बंद कर उस पर दरवाजा लगा लिया है । इससे मेरी जायदाद की कीमत पर असर पड़ा है । मेरे कहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बावजूद किरायेदार ने दरवाजा नहीं हटाया । क्या मैं तोड़फोड़ करके दुकान को नुकसान पहुंचाने के आधार पर दुकान खाली करवा सकता हूं ।

आपने अपने पत्र में यह उल्लेख नहीं किया कि आपका किरायानामा इस संदर्भ में क्या कहता है । उसमें आपने किरायेदार को इस प्रकार का काम करने की अनुमति तो नहीं दे रखी । यदि आपने इस तरह की अनुमति नहीं दी है, तो आप अपने किरायेदार के विरुद्ध दुकान खाली कराने की कार्यवाही कर सकते हैं । आपको न्यायालय में यह प्रमाणित करना होगा कि किरायेदार को आपने ऐसी कोई अनुमति नहीं दी है तथा इससे आपकी दुकान के मूल्य और प्रयोग पर विपरीत प्रभाव पड़ा है ।

कहानी-संग्रह

नीरज सक्सेना, बरेली : मैं कहानियां लिखता हूं । मेरी कुछ कहानियां छप भी चुकी हैं । मैं चाहता हूं कि मैं एक कहानी-संग्रह छपवाऊं । संग्रह को अपने खर्चे पर छपवाना चाहता हूं, बिना किसी प्रकाशक की मदद लिये । क्या इसके लिए मुझे कहीं कोई रजिस्ट्रेशन कराना होगा ?

कहानियां लिखना और उसे छपवाना हर व्यक्ति का निजी निर्णय है । आप अपनी कहानियों का संग्रह स्वयं भी छाप सकते हैं । इसके लिए किसी प्रकाशक की सहायता लेना आवश्यक नहीं है और न कहीं किसी प्रकार के पंजीकरण कराने की आवश्यकता है । हां, संग्रह पर प्रकाशक के स्थान पर आपको अपना नाम छापना होगा ।

धोखाधड़ी किसकी ?

नीति, क्षमा, रीता सिंहा, श्रीमती शकुंतला, उमेश कुमार श्रीवास्तव, हिमांशु सिंहा, प्रीति सिंहा और प्रकृति मोवल,तेतरी बाजार (सिद्धार्थ नगर) उ.प्र. : हमलोगों को एक म्यूचुअल फंड की बैलेंसड फंड योजना के अंतर्गत एक कंपनी द्वारा भारतीय स्टेट बैंक की सभी शाखाओं पर समपूल्य पर देय इंटरिम डिविडेंड वारंट्स भेजे गये थे । इन वारंट्स को हम लोगों ने भारतीय स्टेट बैंक की नौगढ़ (सिद्धार्थ नगर) शाखा में अपने खातों में जमा कर दिया । बैंक ने हम से प्रत्येक की डिविडेंड की राशि तो हमारे खातों में जमा कर दी, साथ ही बैंक के आउट आफ पाकेट खर्च के नाम पर दस रुपये प्रति डेबिट कर दिया । । इस प्रकार हम लोगों को कंपनी द्वारा भेजे गये डिविडेंड समपूल्य पर न प्राप्त होकर कम मूल्य पर प्राप्त हुए । क्या, इस प्रकार पूरा पैसा देने के लिए कहकर कम पैसा देना धोखाधड़ी नहीं है ? यदि है, तो हमें क्या करना चाहिए ? इसमें बैंक दोषी है या कंपनी जिसने वारंट ईश्यू किये ।

कंपनी द्वारा आपको भेजे गये वारंट का बैंक को पूरा भुगतान करना चाहिए था । वारंट का पूरा पैसा अदा न करने का निर्णय बैंक का है, कंपनी का नहीं । इसका उत्तरदायित्व भी यदि किसी का होगा, तो वह बैंक का ही होगा । इसलिए कंपनी ने आपको कम पैसा भी अदा नहीं किया और न धोखाधड़ी ही की ।

आपको अपने बैंक से संपर्क करना चाहिए और उन्हें खर्चे के आधार पर पैसा नहीं काटने का आग्रह करना चाहिए । खर्चे के नाम पर काटी गयी रकम आपके खातों में वापस जमा करने का उत्तरदायित्व बैंक का है ।

तलाक भी नहीं मिला

अनाम, म.प्र. : सात वर्ष पूर्व मेरी शादी हुई । शादी के कुछ महीने के बाद हमारे संबंध खराब हो गये एवं पत्नी के मां-बाप आकर उसे ले गये तथा उसे वापस नहीं भेजा । अतः मैंने क्रूरता के आधार पर तलाक का मुकदमा जिला न्यायालय में किया, जिसे मैं जीत गया, किंतु पत्नी ने उच्च न्यायालय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपील की, जिसमें फैसला उलट गया अर्थात तलाक मंजूर नहीं हुआ । इसके बाद भी पत्नी नहीं आयी, जिससे मैंने उच्च न्यायालय के खंडपीठ में मुकदमा किया, जिसका फैसला अभी तक नहीं हुआ है । कृपया बताएं कि यदि तलाक मंजूर नहीं हुआ एवं उसके बाद भी पत्नी साथ रहने को तैयार नहीं हो, तो क्या कानूनी कार्यवाही की जा सकती है ? किसी व्यक्ति को फैसले का पालन के लिए अदालत कितना समय देती है एवं समय-सीमा के पश्चात उसके विरुद्ध क्या कार्यवाही की जा सकती है ।

न्यायालय ने आपके विरुद्ध निर्णय देकर संबंध-विच्छेद की अनुमति नहीं दी है । खंडपीठ में आपका मामला विचाराधीन है । अतः मामले का अंतिम निर्णय अभी नहीं हुआ है ।

आपकी संबंध-विच्छेद की याचिका अस्वीकृत होने के फलस्वरूप यह आवश्यक नहीं कि पत्नी आपके पास रहे । न्यायालय पति-पत्नी के मामले में दांपत्य संबंधों की पुर्स्थापना का आदेश दे सकती है परंतु उसको न्यायिक आदेश के द्वारा व्यावहारिक रूप देना संभव नहीं है ।

मकान पर कब्जा

नंदकिशोर केशरी, कटिहार : मैं अपने मकान में रहता हूं, लेकिन मेरे पिताजी के बनाये मकान में मेरे चाचा लोग कब्जा किये बैठे हैं । हिस्सा मांगने पर हिस्सा भी नहीं देते । क्या मैं उन पर कानूनी कार्रवाई कर सकता हूं ?

आपने अपने पत्र में पिताजी के बारे में कुछ नहीं लिखा । आपके पिताजी अपना हिस्सा मांगने के लिए बंटवारे का दावा कर सकते हैं । इस दावे में ही अपने हिस्से की संपत्ति का कब्जा दिलवाने की भी मांग कर सकते हैं । न्यायालय संपत्ति का बंटवारा करके आपके पिताजी का हिस्सा उनको दिलवा सकता है । यदि किसी कारणवश संपत्ति बंटवारा योग्य न हो, तो संपत्ति को बेचकर हिस्सा बांटा जा सकता है । हरेक स्थिति में आपके भाग की संपत्ति या उसके समकक्ष मूल्य आपको मिलेगा ।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ

— रामप्रकाश गुप्त

जातिवाचक नाम

सुधीर कुमार, सहरसा : हाईस्कूल में नाम लिखवाते समय मेरे पिताजी के नाम के साथ उनका जातिवाचक नाम छूट गया, जिसके कारण मुझे मैट्रिक व इंटर के परीक्षा फार्म पर पिताजी का नाम रामसेवक प्रसाद लिखना पड़ा, जबकि उनका पूरा नाम रामसेवक प्रसाद साहा है । मेरे सभी प्रमाण-पत्रों पर रामसेवक प्रसाद लिखा है, जबकि मेरे जाति व आवास प्रमाण-पत्र पर रामसेवक प्रसाद साहा लिखा है । इस कारण कहीं भविष्य में कोई परेशानी तो नहीं उठानी पड़ेगी ।

उपनाम या जाति सूचक नाम अपने नाम के पीछे लगाना आवश्यक नहीं है । पिछले समय में अनेक व्यक्तियों ने अपने उपनाम या जाति सूचक नाम छोड़ दिये हैं । आपके पिताजी के नाम के साथ जातिसूचक नाम न लिखा होने से आपके भविष्य पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा । यदि आवश्यकता पड़ ही जाए तो अपना जाति तथा आवासीय प्रमाण-पत्र ठीक करवाना अधिक आसान रहेगा । परेशानी की स्थिति में एक शपथ-पत्र जिसमें वस्तुस्थिति का उल्लेख करने के साथ यह लिखा जाए कि दोनों नाम एक ही व्यक्ति के हैं, दे देने से समस्या का समाधान हो सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

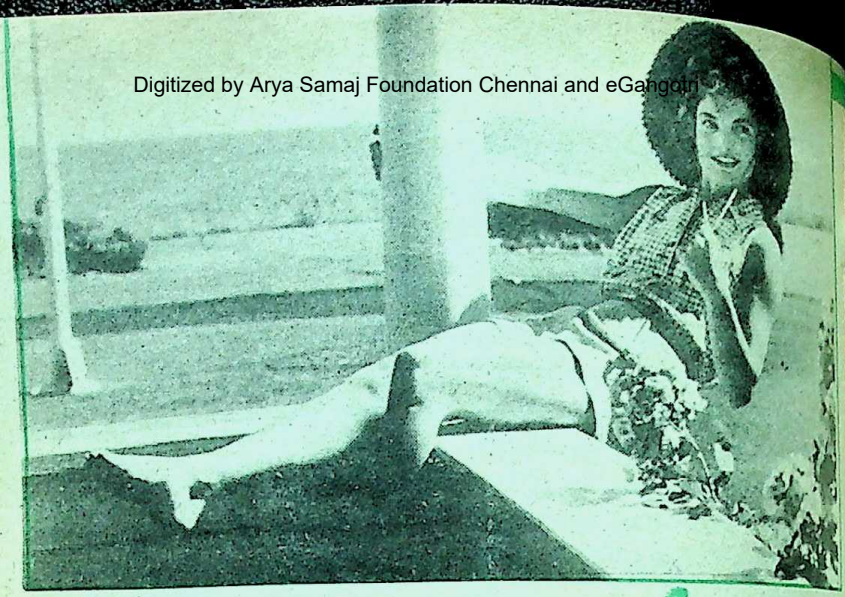

एक पुरुष साथी की चाह में

● शिव शंकर अवस्थी

जैकलिन विलक्षण प्रतिभा की धनी थी। वह पहले अमरीका के राष्ट्रपति जॉन कैनेडी की पत्नी रही, फिर उसने अपार संपत्ति के स्वामी ओनासिस को अपना पति बनाया। इतिहास में उसके-जैसा व्यक्तित्व शायद ही मिलेगा। वह अपने आप में कुछ नहीं थी, लेकिन आज भी वह याद की जाती है। इस वर्ष उसकी मृत्यु ने अतीत की स्मृतियों को जीवित कर दिया है।

सन १९६१ में जॉन कैनेडी अमरीका के राष्ट्रपति बने तब जैकलिन की आयु मात्र ३१ वर्ष की थी। अमरीका की प्रथम महिला के रूप में उसने शालीनता और गरिमा का ऐसा आवरण ओढ़ा कि लोग उसे रानी के रूप में देखने लगे।

जैकलिन का पहला काम व्हाइट हाऊस यानी अमरीकी राष्ट्रपति के आवास का सुधार करना था। यह सुधार अपने आप में अनूठा था। जैकलिन को पुरातन से प्रेम था। नयी आधुनिक सजावटों को उसने हटाया और उन्नीसवीं शताब्दी की तर्ज पर व्हाइट हाऊस को उसने एक नया रूप दिया। इसमें खर्चा तो बहुत हुआ, लेकिन रातों-रात जैकलिन कैनेडी अमरीका की राष्ट्रीय धरोहर की पोषक के रूप में प्रसिद्ध हो गयी।

व्हाइट हाऊस में जैकलिन कैनेडी रात्रि-भोज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अमरीका के प्रसिद्ध संगीतकारों, साहित्यकारों और कलाकारों को आमंत्रित किया करती थी। इन रात्रि-भोजों में राजसी ठाठ्बाट के दर्शन होते थे। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री हेरोल्ड मैकमिलन ने इस संबंध में जैकलिन की प्रशंसा करते हुए कहा था कि जैकलिन ने व्हाइट हाऊस में वह भव्यता ला दी है, जिसे ब्रिटेन बहुत पहले खो चुका है।

लेकिन राष्ट्रपति जॉन कैनेडी को यह सब पसंद नहीं था। साहित्य और संगीत से वह बहुत दूर थे। बैले उन्हें बोर करता था। उनकी केवल एक ही पसंद थी— कोमल नारी।

'सभी मर्द बेवफा होते हैं'— जैकलिन कहा करती थी। अपने पति के प्रेम-संबंधों से वह परिचित थी लेकिन, उन्हें रोकने का साहस उसमें न था। अतः एक असहाय नारी की सहज व्यथा को उसे भी झेलना पड़ा। जैकलिन के एक मित्र के अनुसार, 'कभी-कभी वह अपने आप को किसी दुर्घटनाग्रस्त हवाई जहाज के बचे हुए यात्री के समान तनावग्रस्त पाती थी। ऐसे समय उसे अपने पिता की याद आया करती

जैकलिन, जब तीन वर्ष की थी

थी जिनका चरित्र जॉन कैनेडी से मिलता था। उसके पिता भी नारियों से आकर्षित थे और इसी कारण से जैकलिन के घर में तनाव रहता था। जब जैकलिन ग्यारह साल की थी, उसके माता-पिता में तलाक हो गया था। जैकलिन के पिता को शराब की भी लत थी। जब जैकलिन की कैनेडी के साथ शादी हो रही थी, तब

कैनेडी के साथ जैकलिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन की घटनाओं ने जैकलिन को कठोर बना दिया था। भावनाओं पर नियंत्रण कर अपने-आप पर हंसाना उसकी आदत बन गयी थी। चटखारे लेकर वह अपने दोस्तों को बतलाया करती थी कि उसके पिता ने अपने हनीमून के दो दिन बाद ही विवाहेत्तर संबंध बना लिये थे।

उसका पिता अपने घर में शराब से बेहोश पड़ा था। और वह अपनी बेटी की शादी में शामिल नहीं हुआ था।

बचपन की दुर्घटनाएं

बचपन की इन घटनाओं ने जैकलिन को कठोर बना दिया था। भावनाओं पर नियंत्रण कर अपने-आप पर हंसना जैकलिन की आदत बन गयी। चटखारे लेकर वह अपने दोस्तों को बतलाया करती थी कि उसके पिता ने अपने हनीमून के दो दिन बाद ही विवाहेत्तर संबंध बना लिए थे।

चरित्र की कठोरता और भावनाओं पर नियंत्रण ने जैकलिन के व्यक्तित्व को एक अनूठी भव्यता प्रदान की थी। कृत्रिमता का आवरण भी सहज दिखने लगा था और जैकलिन ने अपने दोस्तों के समक्ष घोषणा की थी, 'मैं घर की चारदीवारी में बंद एक पत्नी बनकर नहीं रहूंगी।'

अपनी बच्ची के साथ खेलती हुई जैकलिन

जॉन कैनेडी भी शायद इस आवरण को समझ नहीं पाये थे। उस समय जैकलिन 'वाशिंगटन टाइम्स-हेरल्ड' में फोटोग्राफर के रूप में काम कर रही थी। उन्हें जैकलिन विलक्षण लगी थी और वह उसकी ओर खिंचे चले गये थे। दोनों के बीच रोमांस चला। लेकिन वह सपने में भी सोच नहीं सका था कि जैकलिन के पास बिलकुल भी धन नहीं है।

प्रेम के मामले में वह स्वयं ज्यादा रोमांटिक नहीं थे। जैकलिन को उन्होंने कभी प्रेम-पत्र नहीं लिखा, न ही कभी उपहार में फूल ही दिये।

सन १९५३ वर्ष का एक दिन। जैकलिन को एक तार मिला। तार लंदन से जॉन कैनेडी ने भेजा था। जैकलिन ने तार पढ़ा, 'मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं।' आशा के विपरीत जैकलिन ने कोई खुशी जाहिर नहीं की। उसने विवाह-प्रस्ताव स्वीकार कर लिया लेकिन अपने व्यक्तित्व में उसने एक अजीब तरह के अलगाव का प्रदर्शन किया, जिसे देख जॉन कैनेडी भी आश्चर्यचकित रह गये थे।

सर्वाधिक लोकप्रियता

समय-समय पर जैकलिन जॉन कैनेडी को छेड़ा करती थी। एक बार एक पार्टी में ब्रिटेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतपूर्व प्रधानमंत्री चर्चिल जॉन को पहचान पाये। घर लौटते हुए जैकलिन ने चुटकी शायद चर्चिल ने आपको वेटर समझ था।' कैनेडी के राष्ट्रपति बनने के बाद लिन ने एक शिष्टाचार-भोज में जाने से कार कर दिया था। इससे पहले जब कैनेडी रीकी सीनेट के सदस्य थे, तब जैकलिन ने था कि, 'मैं इन राजनीतिज्ञों को सुनते-सुनते गयी हूं।'

जॉन कैनेडी ने अमरीकी राष्ट्रपति के रूप में मिलाकर एक हजार दिन शासन किया। बीच में जैकलिन ने खूब विदेश यात्राएं कीं देश में इतनी लोकप्रियता प्राप्त की जितनी आज तक किसी राष्ट्रपति की पत्नी को नहीं ली। इससे स्वयं जॉन कैनेडी प्रभावित थे। के चुनाव-प्रचार में वह हमेशा साथ जाया ती थी।

फिर वह काला दिन आ गया, जिसने तेंतीस जैकलिन के जीवन को रौंद डाला। लिन को लगा, जैसे वह अभी तक सपना रही थी। और बंदूक की गोली की भयंकर वाज ने उसका सपना तोड़ दिया। अपने पति थ वह खुली कार में जा रही थी और एक र की गोलियों ने जॉन कैनेडी की छाती नी कर दी। हतप्रभ रह गयी थी जैकलिन। के शरीर से निकलते खून से उसके वस्त्र ग गये थे। कुछ क्षण वह तड़पे और फिर लिन विधवा बन गयी।

मौत के खूंख्वार क्षणों में

मौत के उन खूंख्वार क्षणों में भी जैकलिन ने जल्दी अपने को संभाल लिया था। न रोयी, न ही उसने आंसू बहाये। बड़ी

पुरुष साथी टेंपल्समान की छतरी के नीचे जैकलिन

शालीनता के साथ उसने उन दुखद क्षणों में नेतृत्व प्रदान किया। जॉन कैनेडी के शव को दफनाने के सभी निर्णय उसने लिए। अरलिंगटन नेशनल सीमीट्री में जॉन कैनेडी को दफनाया गया, जहां पर देश की रक्षा के लिए बलिदान होनेवाले सैनिक सोये पड़े थे। जॉन कैनेडी को उसी तरह दफनाया गया जैसे वर्षों पहले अब्राहिम लिंकन को दफनाया गया था। इस पूरे समय जैकलिन खून से रंगे कपड़े ही पहने रही, जिसे उसने राष्ट्रीय शर्म के प्रतीक के रूप में प्रचारित किया।

जॉन कैनेडी की मृत्यु के बाद कुछ समय तक जैकलिन राजनीति में सक्रिय रही। नये राष्ट्रपति जॉनसन की सहायता से उसने फ्लोरिडा में केप केनेवरल का नाम 'केप कैनेडी' रखवाया। वियतनाम युद्ध में बढ़ती हुई अमरीकी बर्बरता का उसने विरोध किया। एक दिन तो उसने अमरीकी प्रतिरक्षा मंत्री को सबके सामने घूंसे मारते हुए कहा, 'आपको ये हत्याएं

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

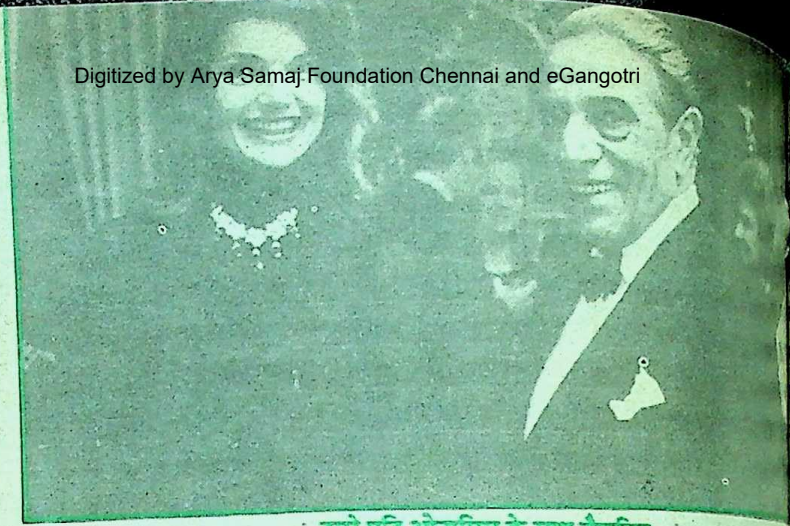

दूसरे पति ओनासिस के साथ जैकलिन

रोकनी होंगी ।'

काल का पहिया तेजी से घूम रहा था । अमरीकी समाज में कुछ नये परिवर्तन आने शुरू हो गये थे । यह आधुनिकीकरण या कि वियतनाम युद्ध में अमरीकी विभीषिका से या कुछ प्राकृतिक श्राप— कारण कुछ भी हो, अमरीकी समाज अत्यधिक हिंसक होता जा रहा था । इस हिंसक दौर से जैकलिन भी अछूती नहीं बची ।

रॉबर्ट कैनेडी और मार्टिन लूथर किंग मार दिये गये । जैकलिन अपने को असुरक्षित महसूस करने लगी ।

अमरीका में यह समाचार भी फैला कि कुछ लोग कैनेडी परिवार को समाप्त करने की कसम खाये हुए हैं । इसका मतलब था कि जैकलिन की संतानें भी उन नरभक्षियों द्वारा मिटा दी जाएंगी । निराशा के उन क्षणों में जैकलिन चिल्लायी, 'मैं इस देश से नफरत करती हूं ।' और जैकलिन ने एक ऐसा निर्णय लिया, जिसने न केवल अमरीकियों को स्तब्ध कर दिया, बल्कि पूरे विश्व को चौंका दिया । लोग चीख पड़े, 'नहीं ऐसा नहीं हो सकता । शालीनता प्रतीक जैकलिन अपनी सभ्यता नहीं खो सकती ।'

जैकलिन ने यूनान के जहाजी अरबपति अरिस्टोटल ओनासिस से शादी कर ली । ओनासिस शादीशुदा थे और उनकी दो अविवाहित पुत्रियां थीं । इस पर लोगों ने जैकलिन को भूखी शेरनी की उपाधि दी । उसे अमरीका की विकृत संस्कृति का प्रतीक माना, जहां मानवीय-मूल्य, धन और सैक्स पर बलिदान कर दिये जाते हैं । एक ऐसी कलुषित सभ्यता जो नग्नता को फैशन मानती है और जीवन का ध्येय वासना की अतृप्त चाह को पूरा करना, ऐसा समाज जहां लड़कियां बाजार के नियमों के अनुसार बिकनेवाली चीज बनकर रह जाती हैं ।

क्यों किया विवाह

जैकलिन ने ओनासिस से विवाह क्यों किया ? असुरक्षा, वासना या धन— क्या कारण था ? इस प्रश्न पर वह हमेशा चुप रही, लेकिन इतना जरूर था कि इस विवाह से वह अतृप्त ही रही । ओनासिस की दोनों लड़कियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए वह एक चालाक सौतेली मां थी, लोगों ने उसे कभी इज्जत नहीं दी ।

वृद्ध ओनासिस नहीं चाहते थे कि उनकी मृत्यु के बाद जैकलिन को आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़े । इसीलिए यूनानी संसद पर दबाव डालकर उन्होंने एक कानून पारित करवाया, जिसके अनुसार विधवा का अपने पति की जायदाद पर एक-चौथाई अंश का अधिकार था ।

सन १९७५ में ओनासिस की मृत्यु हो गयी । कानून के अनुसार जैकलिन को २६ करोड़ डॉलर मिले ।

जैकलिन अमरीका वापस आ गयी । ओनासिस की जायदाद से मिले धन को एक कुशल निवेशक की सहायता से उसने दस गुना कर लिया । उसने किताबों के संपादन का काम शुरू कर दिया । प्रसिद्ध लोगों को अपनी आत्मकथा लिखने पर उसने मजबूर किया । प्रसिद्ध गायक माइकल जेक्सन के 'मून वॉक' की प्रेरक वही थी । खुद वह प्रचार से दूर रहना चाहती थी, लेकिन कम से कम २२ पुस्तकें उसके जीवन पर लिखी गयीं ।

दो बार विधवा होने के पश्चात भी एक पुरुष साथी की चाह उसके अंदर हमेशा बनी रही । पिछले पंद्रह सालों से वह हीरों के एक व्यापारी मौरिस टेंपलस्मान के साथ रह रही थी, जिसने अपनी पत्नी से संबंध-विच्छेद कर लिए थे । प्रेस और पत्रकारों से वह हमेशा बचती रही और यही शिक्षा उसने अपने बच्चों को दी ।

जैकलिन का आत्मविश्वास उसका सबसे बड़ा साथी था । इसी के बल पर एक गरीब परिवार में जन्मी जैकलिन धन और प्रसिद्धि की ऊंचाइयों पर पहुंची ।

लेकिन उसके शरीर के अंदर तेजी से बढ़ रहे कैंसर को शायद यह सब पसंद नहीं था । जीवन के अंतिम दिनों में कैंसर ने उसे घोर कष्ट दिया और उसी के कारण अंत में जैकलिन ने हमेशा-हमेशा के लिए अपनी आंखें मूंद लीं । अपने प्रथम पति जॉन कैनेडी के साथ ही उसको दफन भी कर दिया गया ।

—वरिष्ठ प्राध्यापक,
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नेहरू नगर, नयी दिल्ली

खाना चबाने से कैंसर नहीं होता

जापान की डोशिशा यूनिवर्सिटी के कैंसर-विशेषज्ञों ने अपने महत्त्वपूर्ण अनुसंधान के बाद निष्कर्ष निकाले हैं कि यदि व्यक्ति चबा-चबाकर धीरे-धीरे भोजन ग्रहण करता है तो उसे कैंसर होने की संभावना कम हो जाती है ।

भोजन को धैर्यपूर्वक चबा-चबाकर खाने से मुंह की लार-ग्रंथियां (स्लाइवा) सुचारू रूप से काम करती हैं, और शरीर में पैदा केरसीनोजेन तत्व को प्रभावहीन बना डालती हैं । यह हानिकारक तत्व न्यूक्लिक एसिड पर घातक असर छोड़ता है ।

डॉ. विद्या श्रीवास्तव

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान का भूला-बिसरा प्रेमाख्यान

सैंणी-बींजा

● महेंद्र सिंह लालस

लोक साहित्य की पोटली जब भी खुलती है, कई मोती फिसल से जाते हैं। कड़कड़ाती ठंड में जब रेत बर्फ-सी ठंडी हो जाती है, बाहर खेजड़ियों के पत्ते बहती हवा में कड़-कड़ बजते हैं, तब अपने झोपड़े में कंबलों में सिमटे नन्हे-नन्हे बच्चे बुजुर्गों के मुंह से झरती 'बात' (किस्सा) सुनने के लिए उतावले हो बैठते हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी जबानों और कानों के जरिये सहेजी गयी राजस्थान की एक ऐसी ही प्रेम लोककथा है—सैंणी-बींजा।

बींजा एक अनाथ बच्चा। मां-बाप की शक्ल तक याद नहीं। गांववालों के पशु इकट्ठे कर चराने ले जाता। गजब का मधुर कंठ। पशु चरते रहते, बींजा गाता रहता। इधर-उधर से दो तूंबे और एक खोलते बांस को जोड़कर उसने एक 'जंतर' भी बनाया। गांववाले तो क्या सुनें, बस ढोर और पेड़-परबत उसके श्रोता।

समय बीता, बींजा जवान हुआ। कंठ पर तो जैसे सरस्वती आ बैठी। जंतर बजाये तो ऐसा कि एक बारगी तो जानवर भी जस के तस रह जाए। ढोरों को चराते-चराते एक दिन बींजा पड़ोस के गांव गोर विमाली पहुंचा। गांव में घुसते ही कुंआ दिखा। कुछ लड़कियां पानी रही थीं। बींजा ने अंजुलि मांढ़ी 'प्यासे को पानी पिलाना।'

मगर बींजा के ठीक सामने गांव के चौधरी बेदाजी चारण की रूपवती कन्या सैंणी खड़ी थी। ठौर-ठौर भटकता बींजा तो कहीं से नहीं। सैंणी रूप और सौंदर्य की प्रतिमा। इस कुरूप चरवाहे को भला पानी क्यों पिलाये? अपनी सखी से बोली, 'बहन, इसको पानी पिला, मुझे तो इसे देखकर ही लगता है।' बींजा अंजलि मौढ़े बस रूपवती को देखता ही रह गया और चार घूंट पानी गांव में चल पड़ा।

गोर विमाली गांव में आकर जमींदार के हाजरी बजानी तो जरूरी थी। बींजा हवेली पहुंचा और हाजरी बजायी। अपनी 'जंतर' एक तरफ टांग बींजा घड़ीभर सुस्ताया। बेदाजी ने याद किया, बींजा ने जंतर छेड़ा सुर मिलाया। सब मुग्ध। बींजा के गले में ताकत ही ऐसी! दरवाजे के पीछे ओट में सैंणी ने बींजा की आवाज सुनी तो दंग रह गयी। पश्चाताप से भर गयी। 'अरे, इस सारस्वती-पुत्र को मैंने कुरूप कहा, हतभाग्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

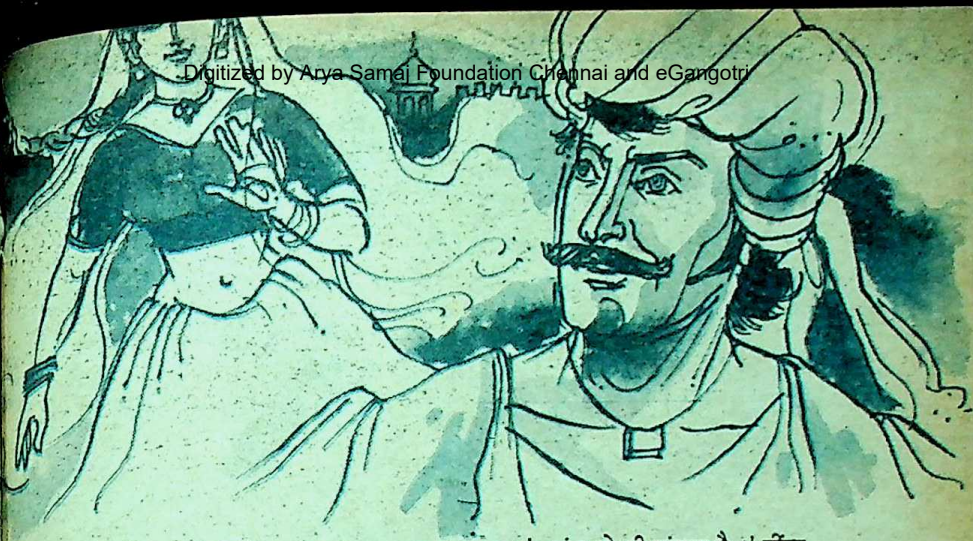

सान तो दूजा कोई होगा ही नहीं... ।' यह
चते-सोचते सैंणी की आंखों से डब-डब
आंसू झरने लगे । पलभर में सारा गुमान धुल
गया, आंसुओं में धुल गया ।

बींजा भोर होते ही चल पड़ा । बेदा ने सीख
दी और कहा, 'बींजा, तेरा कंठ गजब का
सुरीला है, गाहे-बगाहे गोर विमाली आकर हमें
आनंद से सरोबार करते रहना ।' बींजा ने हुंकारा
भरा । बींजा का तो गोर विमाली अब ठिकाना
हो गया । जब मन करता आता रहता ।

ओट में खड़ी सैंणी और वातावरण में
बिखरते बींजा के सुरों में जैसे मिलन-सा होता
था । बींजा ने सैंणी की आंखों में पश्चाताप और
प्रतिपल बढ़ते अनुराग की छाया देखी । गीतों
में इस भावना को ढाल वह गाता रहा । मगर
कहां बींजा जैसा गरीब, अनाथ, असुंदर
चरवाहा और कहां चांद का टुकड़ा, मालदार
जमींदार की कन्या ।

एक दिन बेदा बींजा के गाने से अत्यधिक
प्रभावित हुआ । बोला, 'बींजा तू हमें लंबे
अरसे से आनंदित करता आया है, मैं तुझसे
बहुत प्रसन्न हूं, मांग जो भी मांगता है ।' बींजा
नजरें झुकाये बैठा रहा । बेदा बोला, 'अरे, चुप
क्यों है ? बोल, जो भी मांगेगा, दूंगा, मेरे पास
किस चीज की कमी है ? गायों, भैंसों से आंगन
भरा है, रिद्धि-सिद्धि है, बोल तुझे क्या दूं ?'

बींजा ने सैंणी की आंखों में पश्चाताप और प्रतिपल बढ़ते अनुराग की छाया देखी । गीतों में इस भावना को ढालकर वह गाता रहा .....

बींजा बोला, 'हुकुम, मैं जो मांगूं आप दे न
सकेंगे ?' चौपाल पर बैठे सब लोग स्तब्ध थे
बींजा क्या कह रहा है ! बेदा फिर बोला,
'अच्छा तुझे वचन देता हूं, जो मांगेगा, दूंगा ।'

बींजा ने नजरें ऊंची की और बोला, 'हुकुम,
मुझे सैंणी दे दीजिए !'

बेदा पर तो जैसे घड़ों पानी गिरा हो, अवाक्
रह गया । कहां फूल-सी सैंणी और कहां ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्थर-सा बींजा ! मगर वचन भी तो दे डाला । बेदा को काटो तो खून नहीं ! कुछ पल तो वैसे ही बैठा रहा फिर बोला, 'ठीक है, ऐसा ही है तो आज से ठीक एक साल के अंदर एक सौ एक नौचंदी भैंसें, जिनके चारों पैर सफेद, पूंछ के आगे के बाल सफेद, एक-एक स्तन धवल, ललाट पर श्वेत तिलक हो और एक-एक आंख सफेद हो । ये ला दे तो सैंणी का हाथ तेरे हाथ में दे दूंगा ।'

बींजा बोला, 'जो हुक्म', अपना जंतर उठाया एक नजर दरवाजे की ओट पर डाली और चल पड़ा देस-परदेस, गांव-गांव, बस्ती-मुल्क की खाक छानने । जहां भी जाए नौचंदी भैंस के बारे में पूछे । कहीं भी खबर मिले तो भागा-भागा वहां जाए ।

दिन पर दिन बीतने लगे । सैंणी का आधा वक्त तो घर की देहरी पर गुजरे । गांव और गांव से बाहर सैंणी के सौंदर्य-व्यक्तित्व की ख्याति । छुटपन में ही उसने आजन्म अविवाहित रहने का प्रण ले रखा था । गांववाले तो सैंणी को 'सैंणीजी' कहकर जोगमाया का अवतार मानकर पूजते थे । साल होने को था, बींजा का कहीं पता नहीं ! सैंणी के मन की वो ही जाने ।

वरस वल्यां बादल वल्यां धरती लीलाणीं
बींजाणंद रे कारणै, सैंणी सूखाणी

अर्थात, बरस बीता, बादल बरसे, धरती हरी-भरी हुई, मगर बींजा के कारण सैंणी सूखी ही रही ।

करते-करते साल का आखिरी दिन आया । सुबह-सुबह सैंणी पीतल का कलश लेकर उसी कुएं पर गयी । पानी भरा और उसी डगर को टक-टक देखती रही, जिस राह से पहली बार बींजा आया था । पानी हाथ में लिए सोचती रही । आज बींजा आये तो अपने हाथों से जीभर के पानी पिलाऊं... । मगर बींजा उस डगर पर कहां ?

रास्ते में आते-आते गीली आंखें लिए, सैंणी ने पांडवों की तरह हिमालय जाकर स्वर्गारोहण का मानस बना लिया । सोच लिया, 'हिमालय की गोद में अपनी देह गला ही अपने प्राण दूंगी ।'

सब घरवालों ने समझाया । हिचकियां भरकर रोते पिता ने कहा, 'बेटी, उस बींजा जैसे लापरवाह इनसान के पीछे तू अपने प्राण देने क्यों उतावली है ? मैं तो तुझे किसी अच्छे ठिकाने ब्याह देना चाहता हूं ।'

सैंणी बोली, 'बींजे को छोड़कर बाकी सब चारण मेरे पिता समान हैं ।'

चारणिया लखचार बांधव कह बोलांदिये
बींजा री वरमाल, औरां गले ओपै नहीं

बींजा का नाम लेते-लेते सैंणी चल पड़ी । परबत भी उसका कष्ट देख नदियों के रूप में अपने आंसू बहाते रहे । हिमालय की गोद में देखते ही देखते सैंणी जा पहुंची । धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगी ऊपर झरते हिमकण, सर्द ठंडा बरफ । रेगिस्तान की सैंणी । एक जगह तलाशी और अपनी देह गलाने, बैठी । पर हिमालय किंकर्त्तव्यविमूढ़ । अखंड कुंआरी सैंणी की देह स्वीकारे भी तो कैसे ? सैंणी ने हिमालय से पूछा, 'हे पिता हिमालय ! हे स्वर्ग के द्वार ! स्वर्ग के द्वार !! अपनी गोदी में अपनी बेटी को जगह नहीं दोगे ?' सनसनाती करती बर्फीली हवा के जरिए हिमालय ने कहा दिया, 'तू कुंआरी है बेटी, अकेली है, तुझे कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुकारूं ?' तभी 'सैंणी', 'सैंणी' पुकारता बींजा आ पहुंचा । सैंणी के गले से शब्द फिसले, आ गया, बींजा !' 'मात्र एक दिन की देर हो गयी सैंणी, एक सौ एक नौचंदी भैंसें सौंपकर आ रहा हूं, चल सैंणी घर चल । मेरे घर ।' लंबी-लंबी सांस लेकर सैंणी बोली, 'अब तो हिमालय की शरण हूं बींजा, अब वापस कहां जाऊं ? बस, तू आ गया, प्राण आसानी से निकलेंगे । बस, एक ही इच्छा है बींजा अपनी गोद में सुलाकर एक कर अपना जंतर सुना दे ।'

आंसू पोंछकर बींजा ने जंतर छेड़ा । बर्फीली घाटियों में स्वर लहरियां गूंजने लगीं । बींजा की गोद में लेटी सैंणी ने पिता हिमालय को फिर पुकारा । बींजा की गोद में लेटी सैंणी को अब हिमालय ठुकराये भी तो कैसे ? शनैः-शनैः सैंणी की देह गलने लगी, हिमालय में समाने लगी । बींजा ने देखा, तो हाथ से जंतर छूट गया । हाथ से जंतर छूट गया और टन से उसका एक तार टूट गया । बींजा की कातर ध्वनि 'सैंणी', 'सैंणी' पूरे हिमालय में गूंजने लगी । बर्फीले परबत उसकी प्रतिध्वनियों को बींजा तक ही वापस लौटाने लगे ।

भारी हृदय लिए बींजा लौटा और जिंदगीभर गांव, नगर, बस्ती, डगर, बन, परबत में सैंणी की विरह-वेदना जंतर पर गाता रहा । और किसी ने उसकी कहानी सुनी न सुनी, लोककथाओं के पिटारे ने जरूर कान खोले और अपने भीतर सहेज लिया ।

— सी-७, आकाशवाणी कॉलोनी
हिरण नगरी, सेक्टर पांच
उदयपुर-३१३००१

पथरी के लिए ध्वनि -चिकित्सा

'कोलिलाइथायसिस' नामक पथरी की चिकित्सा के लिए सोवियत-विशेषज्ञों ने एक नयी विधि खोज निकाली है । ध्वनि की आघात-लहर से बुकनी करते हुए रोगियों के शरीर में से पथरी के कंकड़ निकाले जाते हैं । नाड़ियों का एक विद्युत जनरेटर जो 'लिथोटिएर' कहलाता है, इसे एक विशेष इकाई के रूप में प्रयोग में लाया जाता है ।

एक तरंग उस जल से गुजरती है, जो गाल ब्लैडर के लिए संचालक का काम करता है । कंकड़ों की एक्यूसटिक रेसिसटेंस उन्हें घेरनेवाली कोशिकाओं से अधिक होती है । इंटरफेज पर आघात तरंग अपनी ऊर्जा को मुक्त करती है और कंकड़ों की सतह पर दरारें पैदा करके उन्हें नष्ट कर देती है ।

कंकड़ के प्रकार पर आघात-तरंगों की संख्या निर्भर करती है । एक सत्र में कई सौ तथा हजार तक की विभिन्नता रखती है । यह पद्धति एक घंटे तक चलती है । जब तक कंकड़ कुचलकर रेत नहीं बन जाते । बाद में गाल ब्लैडर की स्वाभाविक-सिकुड़न के साथ पथरी, शरीर से पूर्णतः मुक्त हो जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों का सफेद होना रोका जा सकता है

● डॉ. दिनेश वशिष्ठ

उम्र के साथ बाल सफेद होना तो स्वाभाविक है परंतु असमय बालों का सफेद होना अधिक बाल झड़ना, गंजापन आदि रोग हैं। आजकल बालों की समस्या एक बढ़ती हुई समस्या है। नवयुवक एवं नवयुवतियां इन समस्याओं से अधिक प्रभावित हैं। इसके कई कारण हैं। एक तो वातावरण इतना प्रदूषित है कि मानव शरीर के प्राकृतिक सौंदर्य को भी दूषित करने से अछूता नहीं छोड़ा है। इसके आभ्यंतर व बाह्य दोनों कारण हो सकते हैं।

कारण :

असमय बाल गिरना या सफेद होना कई प्रकार के त्वचा रोग या कुछ अन्य रोगों के फलस्वरूप भी होता है। मानसिक तनाव और पुराना जुकाम रहने के कारण भी ये रोग हो जाते हैं।

खालित्य यानी बाल गिरना यदि लगातार रहे, तो कारण पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। वंशानुगत खालित्य (गंजापन) की स्थिति कष्टसाध्य होती है। कई बार जीर्ण रोग-जैसे आंत्रिक-ज्वर, क्षय आदि की अवस्था में बाल गिर जाते हैं उस अवस्था में स्थानिक प्रयोग के साथ-साथ अंतः प्रयोग के लिए भी पित्तशामक, शक्तिवर्धक औषधि एवं आहार की व्यवस्था करनी चाहिए।

कुछ स्थानिक कारणों से भी बाल झड़ने लग जाते हैं जैसे कपाल पर कृमि रोग यानी फंगल संक्रमण होने से एवं कई प्रकार के रासायनिक पदार्थों के लगने आदि से। पालित्य यानी असमय बालों का सफेद होना। अधिक चिंता एवं क्रोध से उत्पन्न हुई शारीरिक उष्णता के कारण भी असमय बाल पकने लगते हैं। बार-बार जुकाम होने से भी बाल सफेद होते देखे गये हैं। वंशानुगत पालित्य (बाल सफेद होना) की स्थिति भी मिलती है। आजकल केश धोने एवं केश प्रसाधन के इतने रासायनिक शैंपू, डाई आदि इस्तेमाल किये जाते हैं, जो शरीर के प्राकृतिक सौंदर्य को बदल डालते हैं और असमय ही बाल सफेद होने लगते हैं। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम अपने खाने-पीने एवं सौंदर्य प्रसाधनों में प्राकृतिक चीजों का इस्तेमाल अधिक से अधिक करें।

चिकित्सा के लिए

बाल गिरना, गंजापन या बाल सफेद होने इनकी चिकित्सा के लिए—

- प्रथम रोग उत्पन्न करने वाले कारणों को दूर करें।
- यदि किसी अन्य शारीरिक या मानसिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग के कारण हो, तो रोग का इलाज कराएं ।

- यदि पोषण की कमी है तो पौष्टिक आहार एवं दूध, घी, आंवला, शतावरी आदि का सेवन कराएं ।
- यदि पुराना जुकाम रहता है तो उसका इलाज करें ।
- यदि पेट के रोग, कब्ज आदि हों तो आंवला, त्रिफला आदि का सेवन करें । मिर्च, गुड़, खटाई, मद्य आदि का परहेज रखें, सो बाल जल्दी झड़ते या सफेद नहीं होते हैं ।

उपचार

यहां कुछ सामान्य प्रयोग बता रहे हैं जिनके प्रयोग करने से बालों के गिरने, झड़ने एवं सफेद होने से बचा जा सकता है एवं समयानुसार प्रयोग करने से ठीक किया जा सकता है ।

- शीर्षासन करें ।
- प्रातःकाल शौचादि से निवृत्त होकर एक नग आंवले का मुरब्बा, चांदी का वर्क लगाकर प्रतिदिन खाइए ।
- त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आंवला समभाग) रात को पानी में भिगोकर रखें । सुबह निहारमुंह पिएं ।
- शिकाकाई, सूखा आंवला, सरसों की खल, समान भाग लेकर कपड़छन चूर्ण करें और पानी में डालकर सिर धोने में काम लायें ।
- शिकाकाई और रीठा १००-१०० ग्राम मेथी और आंवले २००-२०० ग्राम एकत्र कर कपड़छन चूर्ण कर लें । इसे रात के समय दो-तीन चम्मच की मात्रा में लेकर १२५ मि.ली. ताजा पानी के साथ भिगो दें । और प्रातःकाल उबालकर छान लें । इस पानी से बाल धोने से वह स्वच्छ, चमकदार तथा काले होते हैं और उनका झड़ना भी रुक जाता है ।
- यदि बालों की जड़ें कमजोर हो गयी हों, बाल टूट-टूटकर गिरते हैं तो कागजी नींबू का रस, बालों की जड़ों पर प्रतिदिन लगाएं ।
- सिर में किसी स्थान पर बाल उगना रुक जाए या जूएं, कृमि आदि उत्पन्न हो जाएं तो राई के पानी से सिर धोएं । इसके प्रयोग से सिर पर जो छोटी-छोटी फुंसियां, बालों की जड़ों में हो जाती हैं, वह ठीक हो जाती हैं और बाल उगने लगते हैं ।

यदि सिर पर गंजापन हो रहा हो यानी बाल जड़ से गिर रहे हों तो

- अनार के पत्तों को पीसकर लगाएं ।
- कलौंजी के बीजों को पानी में पीसकर, छानकर सिर पर मलें ।
- हाथी दांत के बुरादे की निर्धूम भस्म बनाकर, उसमें रसौंट मिलाकर बकरी के दूध सहित मलें ।
- गुड़हल के फूलों को काली गाय के मूत्र में पीसकर लेप करें । गंज नष्ट होकर सुंदर घने बाल निकल आएंगे ।
- चुकंदर के पत्तों को हल्दी के साथ पीसकर लगाते रहने से सिर के बाल पुनः आ जाते हैं व संदर और मुलायम होते हैं ।

१०८६/८
गोबिंदपुरी एक्सटेंशन,
मेन मार्किट,
कालकाजी, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्टी सदी

● राम सरूप अणखी

मलवई जाटों के बारे में मशहूर है कि वे अपने खेत की चार अंगुली मिट्टी के लिए भी पड़ोसी का कत्ल कर देते हैं। ऐसे ही मेहर के बाप का कत्ल हो गया था। उनके खेत की मेंड़ पर बबूल का बड़ा वृक्ष था। मेंड़ सांझी थी और बबूल भी। पड़ोसी जाट मेंड़ की एक-एक अंगुली अपनी तरफ खरोंचता रहता और आखिर एक दिन बबूल को अपनी तरफ कर लिया। मेहर का बाप जहरीला आदमी था। गुस्सा चढ़ा तो उसने बबूल के ऊपर तक मेंड़ को जा खींचा। झगड़ा खड़ा हो गया। पड़ोसी भी आग की नलकी थे। मेहर के बाप का कत्ल हो गया। पड़ोसी जाट को उम्र कैद हुई।

मेहर के बाप सहित वे दो भाई थे। मेहर का बाप बड़ा था। दोनों एक ही गांव में एक ही घर ब्याहे हुए थे। मेहर की चची उसकी मौसी भी थी। चची क्यों मौसी थी। वह अपने चाचा थम्मण सिंह को चाचा कहता और चची सुरजीत कौर को मौसी। थम्मण सिंह के चार लड़के हुए। मेहर अकेला था। कोई बहन नहीं, कोई भाई नहीं। समय बीत जाने पर उसकी मां भी नहीं रही। मेहर बिलकुल अकेला रह गया। वह नजदीक के शहर में पढ़ा करता था। जिन लड़कों के साथ दसवीं पास की, उनके घरों में ही रातें काटता। उन घरों के कामकाज करता और बेगानी माताओं का पुत्र बनकर रहता। लोगों के घरों पर टुक्कर खाकर और मोटा-झोटा पहनकर वह कॉलेज की बी. ए. तक पढ़ाई कर गया।

उसे और कोई ऐब नहीं था, बस शराब की खोटी आदत थी। शहर की अच्छी-अच्छी शराब-पार्टियों में वह शामिल होता। युवा टोलियों के कार्यक्रम उसके बगैर अधूरे समझे जाते। प्रबंध के कामों में उसका बड़ा योगदान रहता। जो काम और कोई नहीं संभालता, वह उसे झट से हाथ में ले लेता। शहर के अनेक घर थे, जहां पर वह नौकरोंवाले काम करता। औरतें उसे दुलारतीं—"रे मेहर, मैं तो तुम्हारी कब से इंतजार कर रही हूं। तुम्हारे बगैर हम अंधे हुए बैठे हैं। जाना जरा दौड़कर बिजली दफ़र। तुम्हारे भाई को कितनी दफा कह चुकी हूं, पर फुरसत भी मिले दुकान से।"

किसी घर में एक ही नौजवान लड़का होता तो उसकी मां मेहर को अपना दूसरा पुत्र समझती। किसी और घर में दो लड़के होते तो मेहर को तीसरा पुत्र कहा जाता। दोस्तों की जवान बहनों का वह लाडला वीर था।

हर कोई चाहता था, मेहर शादी करा ले। पर वह पता नहीं किस मिट्टी का बना हुआ था। बत्तीस-तैंतीस वर्ष की आयु हो चुकी थी। शादी के बारे में सोचता ही नहीं। उसका कोई दोस्त उसके पास शादी की बात करता तो वह हंसकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

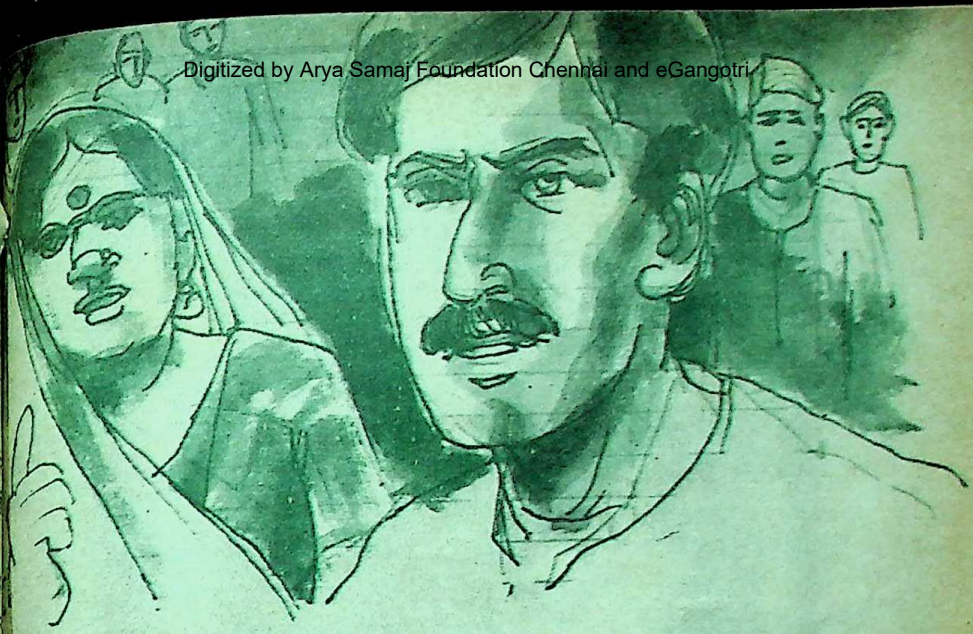

जवाब देता—"अब तो यार इसी तरह रहना सीख लिया। ऐसे ही ठीक है बस !"

वह कोई काम भी नहीं करता था। कमाई का साधन कोई नहीं था उसका। पर वह निठल्ला भी कब था। उसे तो लोगों के घरों की फिक्र ही मारे जाती। जैसे बस यही उसकी जिंदगी हो। यही एक व्यस्तता रह गयी हो उसकी। शरीफ और नेक इतना, कभी किसी लड़की को उसके ससुराल छोड़ने जा रहा है और कभी किसी लड़के की पत्नी लेने। यार लोगों ने उसका नाम 'बूढ़ा' रखा था। कहते—"राजू की घरवाली रूठकर मायके में बैठी है। उसके साथ तो आएगी नहीं। मेहर बूढ़े को भेजो। वही मनाकर लाएगा उसे।"

उसके हिस्से की गांववाली जमीन में उसके चाचा के लड़के खेती करते। वे चारों

कुएं के फट्टे उसके पांव के नीचे से निकाल लिये जाने थे और उसे रस्सी सहित लटक जाना था। तब तक लटकते रहना था, जब तक उसकी जान निकल नहीं जाती। उसकी गरदन ऊंट की गरदन की तरह लंबी हो जानी थी। मौसी ने ये सब बातें पहले सुन रखी थीं। वह एक बार फिर पागलों की तरह दौड़कर गयी और जज के सामने रोने-बिलखने लगी। कह रही थी—"मेरे छह पुत्र हैं। एक लड़का छोड़कर पांचों को फांसी दे दो बेशक। हम बहनें एक-सी रह जाएंगी। बहन का दीया नहीं बुझाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शादी-शुदा थे । मेहर उनसे कोई हिस्सा-ठेका नहीं लेकर आता । चाचा थम्मण जिंदा था और मौसी सुरजीत कौर भी । जब कभी साल-छह माह में मेहर गांव को जाता तो चाचा के पुत्र उसकी बहुत सेवा करते । उस दिन उसके लिए बकरे या मुरगे का मांस पकाया जाता । शराब की बोतलें हाजिर हो जातीं । सभी भाई इकट्ठे बैठकर दारू पीते और प्यार-मोहब्बत की बातें करते । सुरजीत कौर मेहर को पुच-पुच करती फिरती । भाभियां उससे मीठी मस्करी करतीं । शहर आते समय चाचा थम्मण उसकी जेब में रुपये डाल देता । कहता—"मेरे सिर पर ऐश करो पुत्तर । किसी चीज की कभी कमी नहीं मानना । चिड़ियों का दूध हाजिर कर सकता हूं मैं तुम्हारे लिए ।" मेहर हंसता चेहरा और आंखों में उदासी का पानी लिये शहर को आ जाता । अपने उसी संसार में, जहां पर रहकर उसका दिल लगता था, जहां पर वह खुश था ।

मेहर की उम्र अड़तीस वर्ष की हो गयी । अब तो शादी की उम्मीद भी कोई नहीं रह गयी थी । दोस्तों की घरवालियां और दोस्तों की बहनें मेहर पर तरस खातीं । वह सचमुच बूढ़ा लगता ।

कोई उस पर शक करता—"इसमें मरदोंवाली कोई बात है कि नहीं ? नहीं तो अब तक इसको कुंआरा कहां रहना था ।"

"घर नहीं, बार नहीं, बेचारे का कोई कोई रोजी-रोटी का साधन है । ब्याह तो का करा लेता; बेगानी बेटी को बिठाएगा कहां पर, खिलाएगा क्या ?" कोई दूसरा उसके भीतरी रोग की बात करता ।

वह गांव में जाता तो उसकी मौसी के उसकी इतनी आवभगत करते कि उसे यह ही जाता—उसको क्या कहना था और क्या मांगना था । मौसी के बेटे उसके ब्याह की कभी नहीं करते । उसकी जमीन के हिस्से बात छेड़ते ही नहीं । फसल-बाड़ी की—उसे कोई जरूरत ही नहीं थी । उसका कौन उसको क्या करना था फसल-बाड़ी ?

उसे लगता, उसकी मौसी के लड़के बहुत अच्छे हैं । उसको कितना मोह करते हैं । और मौसी उसे अपना पुत्र समझते हैं । चाचा कहा करता—"तुम तो मेरे पांचवें पांडव हो" अगर उसके ब्याह की बात नहीं चलती थी यह उसका अपना मसला था । उसका अपना दोष था । उसकी अपनी सुस्ती थी । अगर शादी कराना चाहे तो उसे कौन रोक सकता है ? मौसी के बेटे तो बल्कि खुश होंगे । और मौसी मां-बापवाले काज-व्यवहार करें ।

मेहर का दादा बात सुनाया करता था—पुराने समय में एक गांव के एक लड़के खेत की मेंड़ के कारण कत्ल कर दिया । अंगरेजों का जमाना था । मुकदमा चला तो लड़के को फांसी का हुक्म हो गया । उस हिंदू मुजरिम को उसी जगह पर खड़ा करके फांसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती, जिस जगह पर उसने कत्ल किया होता था।

वह लड़का मां का अकेला पुत्र था। बाप नहीं था। उसी गांव में उसकी मौसी थी। मौसी के छह पुत्र थे। कातिल लड़का मरता तो उनका खानदान खत्म था। जमीन को दूसरे परिवार ने संभाल लेना था। लड़के के बाप का नामो-निशान ही मिट जाना था। जैसे धरती से लकीर मिट जाती हो।

मौसी का घर दूसरे महल्ले में था। उसे दुःख था, जैसे उसका भानजा उसका अपना पुत्र हो, और वह उससे छीना जा रहा हो। उसका माथा टुकड़े हो-होकर गिरता। वह कुछ भी नहीं कर सकती थी। बहन का घर तबाह होकर रह जाना था।

फांसी के दिन वह हाथ बांधकर जज के सामने जा खड़ी हुई। बोली—"मेरी बहन का यह इकलौता बेटा है, माई-बाप ! इनका बेड़ा डूब जाएगा। इसे छोड़ दो, मेरे दो बेटों को फांसी पर चढ़ा दो। बहन की आग सुलगती रह जाएगी।"

बुढ़िया की बात किसी कानून में नहीं आती थी। जज लाचार था। सिर फेर दिया। बुढ़िया रो-धोकर दूर जा खड़ी हुई। दिल को थामा। फिर जज के सामने गयी। कहने लगी—"आप मेरे तीन बेटों को फांसी लगा दो। इसे छोड़ दो।" जज मुसकराया और फिर सिर हिला दिया। बोला—"बुढ़िया पागल है।"

कातिल लड़कों को कुएं के फट्टों पर खड़ा कर लिया गया। दो सीधी लकड़ी खड़ी करके एक लकड़ी दोनों लकड़ियों से बांध रखी थी। लेटी हुई लकड़ी से फांसी की रस्सी लटक रही थी। रस्सी अभी उसके गले में नहीं पड़ी थी। निश्चित समय रहता होगा। समय पर कुएं के फट्टे उसके पांव के नीचे से निकाल लिये जाने थे और उसे रस्सी सहित लटक जाना था। तब तक लटकते रहना था, जब तक उसकी जान निकल नहीं जाती। उसकी गरदन ऊंट की गरदन की तरह लंबी हो जानी थी। मौसी ने ये सब बातें पहले सुन रखी थीं। वह एक बार फिर पागलों की तरह दौड़कर गयी और जज के सामने रोने-बिलखने लगी। कह रही थी—"मेरे छह पुत्र हैं। एक लड़का छोड़कर पांचों को फांसी दे दो बेशक। हम बहनें एक-सी रह जाएंगी। बहन का दीया नहीं बुझाओ।"

जज नहीं माना। अर्दली ने कहा कि वह बुढ़िया को बांह से पकड़कर दूर कर दे। फांसी की कार्रवाई शुरू है। और फिर बुढ़िया को परे घसीटा जा रहा था। वह बेहोश हो गयी। नीचे गिर पड़ी। मौसी के सभी छह लड़के चुपचाप खड़े थे। जैसे उन पर कोई जादू-टोना कर दिया गया हो। कातिल लड़के की मां कहीं पर नहीं थी। वह तो घर पर ही कहीं जैसे मरी पड़ी थी। फांसी लग रहा पुत्र वह अपनी आंखों से कैसे देख पाती ?

दादा बताया करता—वह सतयुग था। लहू से लहू जलता था। भला वक्त था। अब कलियुग है। एक पुत्र देने को तैयार नहीं कोई, वह पांच को फाहे लगा रही थी।

एक दिन मेहर को उसके दोस्त घेरा डालकर बैठ गये। कहा—"शादी करा, साले ! नहीं तो पीटेंगे !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोस्तों की घरवालियां कहती थीं—"शादी नहीं कराते तो हमारे घर में मत आना।"

फंस गया मेहर ! तंग हो गया मेहर ! हंसता था—"यह आक भी चबाना पड़ेगा अब।"

एक लड़का अपनी बुआ की 'हां' ले आया। बुआ की लड़की वहां आती-जाती थी। छब्बीस-सत्ताईस वर्ष की उम्र। शरीर इकहरा। कद की लंबी और गोरी। मेहर ने उसे देखा हुआ था। लड़की भी मेहर को जानती थी। मेहर छुपी हुई उम्र का था। चालीस का होकर भी तीस का लगता। उसकी उम्र तो किसी ने पूछी ही नहीं। उसका मीठा, लड़कियों-जैसा मीठा नम्र स्वभाव ही उसकी उम्र थी। उसका सब कुछ, उसकी जायदाद, उसका स्वभाव। वैसे भी सबको पता था कि वह आधे हिस्से का मालिक है। बीस एकड़ का मालिक। बीस एकड़ जमीन बहुत होती है। फिर नहरी जमीन, सारी को पानी लगता था। गेहूं और चावल बहुत होता था।

मेहर के साथ पांच-सात लड़के गये और लड़की को ब्याह कर ले आये। सादा-सा ब्याह था। लड़कीवालों ने सामान कोई नहीं दिया। गरीब घर था। इसी कारण तो वह छब्बीस-सत्ताईस वर्ष की होकर बैठी हुई थी। खैर, मेहर और उसके दोस्तों को लड़की चाहिए थी, लड़की में अक्ल-शक्ल की कोई कमी न थी।

लड़कों ने शादी का जश्न मनाना चाहा। कहते थे—"मेहर ब्याहा गया, समझो दुनिया के सभी कुंआरे ब्याहे गये। मालवा होटल में शानदार फंक्शन रखा गया। खर्च का सारा प्रबंध मेहर के जिगरी दोस्तों ने किया। खुला निमंत्रण था—"मेहर उसे जानता हो, कोई भी आये।" शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार का बढ़िया खाना था। एक कमरे में शराब की बोतलों से अलमारी भरी हुई थी। लोग पी रहे थे और हंसते-खेलते भी। टोलियां खाना खाकर जा रही थीं। सारा शहर आया था। लड़कियां और बीवियां भी। बूढ़ी औरतें मेहर का माथा चूम रही थीं। बहू को छाती से लगातीं और शगुन के रुपये देतीं।

गांव से मेहर की मौसी के चारों बेटे आये लेकिन बुझा चेहरा लेकर। चाचा थम्मण और मौसी सुरजीत कौर चुपचाप बैठे हुए थे—जैसे उनका कोई मर गया हो। ऊपरी मन से खुश नजर आते थे—दांत निकालकर बात करते। मौसी कहती थी—"शुक्र है भाई, आज के दिन को।" थम्मण बोलता था—"मैं तो कब से कह रहा था, भई लड़के, शादी करा लो। मेरी तो बात मानी नहीं इसने। अब करा ली आखिर में।"

मौसी के लड़कों को दारू चढ़ती नहीं थी। थम्मण दारू पी रहा था जैसे कोई गम गलत कर रहा हो। वे सब थोड़ी देर ही ठहरे। रोटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाकर गांव को चले गये । बहुएं और उनके बाल-बच्चे नहीं आये थे ।

मेहर एक दोस्त के सूने मकान में रहने लगा । जरूरत का घरेलू सामान मित्रों ने ही लेकर दे दिया ।

एक दिन वह नयी-नवेली को लेकर गांव में गया । शादी के चार-पांच माह गुजर चुके थे । ग्रामियों ने तो आदर-मान बहुत किया । पड़ोसी बुढ़ियां शगुन देकर गयीं । मेहर की मां को याद करतीं और कहतीं—"जिंदा होती तो सौ शगुन मनाती । बहू का मुंह देखना नसीब नहीं हुआ बदकिस्मत को ।"

थम्मण सिंह और सुरजीत कौर के लिए जैसे वे बेगाने हों । पता नहीं कहां से आ गये थे उनके घर ? उन्होंने रात वहीं गुजारी । उस दिन ना तो मीट पका और ना ही दारू पी गयी । चाचे के लड़के उखड़ी-उखड़ी बातें कर रहे थे ।

सवेरे आते समय शरमाते-शरमाते मेहर ने थम्मण से कहा—"अब जमीन का करो चाचा कुछ । अब तो मैंने भी घर बना लिया ।"

"क्या ?" थम्मण को जैसे उसकी बात सुनायी नहीं पड़ी ।

"जमीन !"

"जमीन क्या ?"

"मेरी जितनी बनती है ।"

थम्मण सिंह के कान सुनने से इनकार कर रहे थे । जीभ पत्थर की बन गयी । आंखों के आगे अंधेरा छा गया । काफी देर बाद वह बोला—"हूं ?"

"फिर आऊंगा कभी मैं ।" मेहर ने बात को हवा में छोड़ दिया था ।

वह गांव से चला तो पीछे-जैसे थम्मण सिंह के आधे पुत्र मर गये हों । सारे परिवार के मुंह पर मुर्दनी छायी हुई थी ।

पंद्रह-बीस दिनों बाद मेहर अकेला ही गांव में गया । थम्मण सिंह पहले ही तीर छोड़ने को तैयार बैठा था । बोला—"पांचवां हिस्सा ले लो । इतने का ही हक है तुम्हारा । चार ये हैं, पांचवें तुम ! यह भी समझो भाईबंदी है । लोक-लाज मारती है मुझे, भई क्या कहेगा गांव । तुम्हारे बाप के कत्ल के बाद सारी जमीन मेरे नाम चढ़ गयी थी । कहीं से भी पता कर लो ।"

"मैं आधे का... ।"

"तुम अपने ननिहाल में पैदा हुए थे । यहां इस गांव में तुम्हारा कोई रिकार्ड नहीं । औरतों के नाम जमीन चढ़ने का कानून तो बाद में बना है ।"

"मैं ननिहाल से ले आता हूं अपने जन्म का रिकार्ड ।" मेहर घबराया हुआ बोल रहा था ।

"अदालतों में फिरने का कोई फायदा नहीं भाई । मारे जाओगे । चुपके से पांचवां हिस्सा ले लो । यह दे दूंगा मैं तुम्हें खरा दूध-सा ।" उसका कोरा जवाब था ।

मौसी मेहर के मुंह की तरफ झांकती और थम्मण की बात का हुंकारा भरती । उसके लिए मेहर कोई दूसरा था ।

गुस्से से भरा मेहर वहां से उठा और महल्ले में लोगों के घर चला गया । उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, किधर जाए ?

—कच्चा कॉलेज रोड
बरनाला-१४८१०१
(पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि विलास

१. क. १ में क्या जोड़ा जाए कि (—१) हो जाए ?

ख. १ में कितना घटाने पर (—१) रह जाएगा ?

२. क. सूर्य के भीतर कौन-सी क्रियाएं होती हैं ? उनके परिणामस्वरूप किन रूपों में ऊर्जा उत्पन्न होती है ?

ख. सूर्य के अध्ययन के लिए कौन-सा अंतरिक्ष-यान भेजा गया है ? वह कहां तक पहुंचा है ?

३. क. उज्जयिनी के अमीर ब्राह्मण चारुदत्त और प्रसिद्ध नर्तकी वसंतसेना की प्रेम-कथा संस्कृत के किस नाटक में वर्णित है ?

ख. उसके लेखक का क्या नाम है ?

४. भारत में मुद्रण के लिए देवनागरी टाइप तैयार करने का काम कब शुरू हुआ ?

५. क. वर्तमान लोकसभा तथा राज्यसभा के सदस्यों की संख्या कितनी है ?

ख. लोकसभा में सबसे अधिक सीटें क्रमशः किन-किन राज्यों की हैं ?

६. सन १८५३ ई. में कौन-से दो बड़े काम भारत में शुरू हुए ?

७. क. अंगरेजों के शासनकाल में देश की राजधानी पहले कहां थी ?

ख. राजधानी दिल्ली कब स्थानांतरित की गयी ?

८. क. रूस अब किस संगठन में शामिल हो गया है, जो पहले सोवियत संघ का प्रतिस्पर्धी संगठन था ?

ख. पूर्व संगठन का, जिसका सोवियत संघ सदस्य था, क्या नाम था ?

९. क. इस वर्ष गरमी में राजधानी के तापमान की क्या विशेषता रही ?

ख. पिछली शताब्दी में राजधानी का अधिकतम तापमान कितना और कब रहा था ?

ग. देश में अब तक सर्वाधिक तापमान किस जगह कब और कहां रहा है ?

१०. निम्नलिखित पुरस्कार पानेवाले कौन हैं ?

क. जापान का इम्पीरियल पुर. (१९९४)

ख. लोकमान्य तिलक पुर. (१९९४)

११. इस वर्ष फ्रेंच ओपन टेनिस चैंपियनशिप में महिलाओं का एकल खिताब किसने जीता और किसे हराकर ?

१२. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।

—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

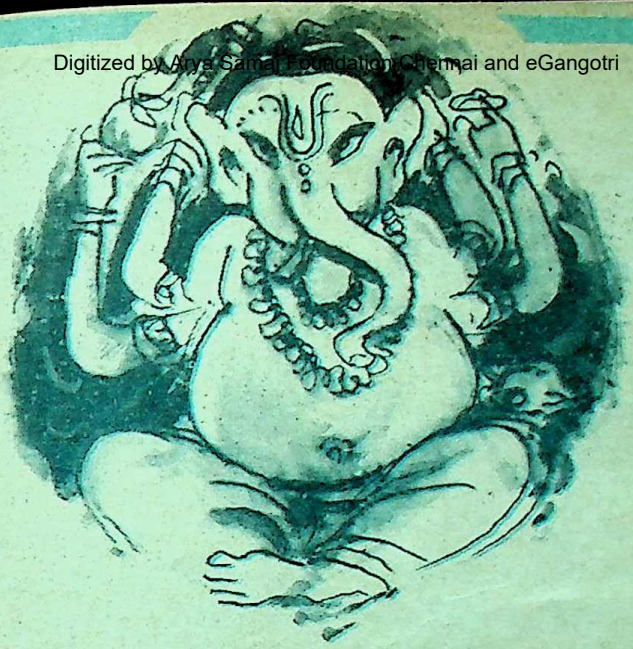

गणपति देवता ही नहीं पद भी है!

● राजशेखर व्यास

अनेक विद्वानों का अभिमत है कि गणेश का आर्यों के देवों के रूप में आरंभ में स्थान नहीं रहा है, बहुत समय के पश्चात ही वे हिंदुओं के प्रथम पूज्य बने हैं। वृहत्तर भारत के जावा, सुमात्रा, बाली आदि द्वीपों में भी गणेश की पुरातन प्रतिमाएं विभिन्न रूपों में उपलब्ध हैं। जावा की एक मूर्ति में गले में नरमुंडों की माला बनी हुई मिलती है। इसी तरह नेपाल के गणेश की पूजा में बलि प्रथा भी प्रचलित है। यह संभवतः किरातों के काल में प्रभावित हुई होगी। गणेशजी को शिवजी का पुत्र माना जाता है। यह भी विचारणीय है, कुछ पुरातन पुराणों एवं ग्रंथों में शिव का पुत्र स्कंद माना गया है और स्कंद का महावर्णन जितना विस्तार से हुआ है, उतना गणेश का नहीं, कहीं-कहीं तो केवल 'स्कंद' के ही शिव-पुत्र होने की चर्चा है, गणेश का उल्लेख भी नहीं है, मोहन जोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में शिव और मातृका प्राप्त हुई, परंतु आदि पूज्य गणेश का कोई चिह्न नहीं मिला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईसवी सन के पूर्व तक गणेश पूजा और उनकी आर्य मान्यता प्रचलित नहीं हुई थी, यह ईसवी सन के बाद ही हुई है ।

ईसा पूर्व निर्मित कालिदास के रघुवंश में भी कवि को शिव के एकमात्र पुत्र स्कंद ही विदित हैं, गणेश का पता नहीं ।

स्कंद और गणेश

जिन स्कंद की उमपा कालिदास ने की है, वे अपने पिता की इकलौती संतान रहे हैं । अवश्य ही गणपति शिव के पुत्र हों तब भी स्कंद के पहले नहीं थे, परंतु कालिदास ने इकलौती— स्कंद का ही उल्लेख किया है, इसलिए ई. सन के पूर्व यह स्थान गणेश को हिंदू धर्म में शायद प्राप्त नहीं हुआ होगा । आर्यत्व में वे दीक्षित न बनाये गये होंगे । यह तो हो नहीं सकता कि कालिदास के समय तक स्कंद ही उत्पन्न हुए और बाद में गणेश का जन्म हुआ होगा । लेकिन यह अवश्य माना जा सकता है कि ईसवी सन के पूर्व तक गणेश पूजा और उनकी आर्य मान्यता प्रचलित नहीं हुई थी, यह ईसवी सन के बाद ही हुई है । इससे भी कालिदास का काल ईसा पूर्व सिद्ध होता है, यदि पांचवीं शती (गुप्तकाल) में कालिदास माने जाएं तो गणेश उनसे कैसे अज्ञात रहते, ईसवी सन के पश्चात तो गणेश पूजा प्रचलित हो गयी थी, तब कालिदास को पता न होता यह संभव नहीं है । दूसरी महत्त्व की बात यह है कि वेदों में भी गणेश के मंत्र का उल्लेख हुआ है ।

सम्राट नहीं, सेनापति का महत्त्व

अवश्य ही इस मंत्र में गणपति का उल्लेख बहुत स्पष्ट है, किंतु जिस गणपति के रूप में वे उक्त मंत्र में सूचित देवता हैं और वैदिक काल में जिस रूप में पहचाने जाते रहे, वह रूप आज से सर्वथा भिन्न है । वैदिक गणपति का वर्तमान गणेश से कोई सामंजस्य नहीं हो पाता । स्कंद और गणेश का हम चरित्र पढ़ते देखते हैं, उनसे भी हम इसी नतीजे पर पहुंचते हैं कि स्कंद का जन्म पहले होना चाहिए और गणेश का उसके बाद । जिस समय भारत के सत्ताधारी शासक परचक्र के कारण असमर्थता अनुभव करने लगे तब देवों में और देश में राजा अथवा सम्राट का महत्त्व क्षीण हो गया होगा और सेना एवं सेनापति का महत्त्व बढ़ गया होगा । संभवतः ऐसी स्थिति में देवराज इंद्र को पीछे धकेलकर, भारतीयों ने सेनापति स्कंद की आराधना आरंभ कर दी होगी, यह हम कालिदास के पूर्व भी देख सकते हैं । शुंग-सम्राट पुष्यमित्र अपने को सम्राट के बजाय सेनापति ही घोषित कर प्रतिष्ठा अनुभव करता था । यह परंपरा बतलाती है कि शासक की अपेक्षा सेनापति का महत्त्व अधिक रहा है । आगे शक-कुषाण काल में भारतीय राजतंत्र में ही शिथिलता आ गयी थी, तब देश में राजा और सेनानी दोनों ही नहीं रहे थे । तब नेतृत्वहीन जनता ने गणपति की आराधना आरंभ की होगी और गणतंत्र के आदर्श का आश्रय लेकर शक-कुषाणों को समाप्त किया होगा ।

गणेश-निकुंभ भी एक नाम

गणपति शंकर के पुत्र होने से पूर्व शिवगणों का प्रभाव प्रमुख रहा है । संभवतः गणेश को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय 'निकुंभ' नाम से जाना जाता था। कालिदास के कुंभोदर नामक सिंह ने अपने निकुंभ नामक मित्र की चर्चा की है। वायु पुराण में एक वर्णन आया है, बतलाया है कि शंकर ने निकुंभ को आदेश दिया था कि काशी में जाकर श्मशान तैयार करे, वहां रहने की व्यवस्था करे। इस आदेश का निकुंभ ने तत्परता से पालन किया था। गणपति को विघ्नराज कहा जाता है। कथा सरित्सागर ११वीं शती के पार्वती-शिव संवाद से विदित होता है कि विघ्नराज एक अलग देवता था।

पार्वती ने शिव से पूछा था कि पुत्र प्राप्ति के प्रयासों में अधिक विघ्न क्यों उपस्थित हुए, तब शंकरजी ने कहा था कि तुमने विघ्नराज की पूजा नहीं की। इससे विदित होता है कि विघ्नराज पार्वती के लिए पूज्यनीय था। शंकर-पार्वती का वह पुत्र नहीं था।

गणपति को ही विघ्नराज कहने का अवसर आर्य धर्म पर आये हुए संकट के समय उपस्थित हुआ था। इस विषय में वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान— श्री सातवलेकरजी ने बताया है कि सिंधु दैत्य ने यह घोषणा की थी कि जो कोई देवता, ब्राह्मण और गौर की पूजा करेगा उसको मार दिया जाएगा। उसने स्वतः अपनी मूर्ति की पूजा करने का आदेश दिया था।

पूजा प्रथा का प्रचलन

ईरान में भी अलेक्जेंडर के पश्चात समाज पूजा प्रचलित हो गयी थी। वीर कॉस्टटाईन तक रोमन सम्राट पूजा के पक्षपाती थे। इनके प्रभाव से पश्चिम एशिया में यह पूजा प्रथा फैल गयी। यह प्रथा ग्रीक, पर्शियन, राजघरानों में, तथा भारत में भी प्रचलित हो गयी, ग्रीक आदि के सिक्कों पर सम्राट के चित्र अंकित किये जाते थे। इनके अनुकरण में बाद में भारतीय शासकों ने अपनी मुद्राएं ढलवायी थीं। इस परंपरा का विरोध गणतंत्र के गणपतियों ने ही किया। गणेश पुराण से भी इसका समर्थन होता है। इससे प्रतीत होता है कि गणपति और इसके गणतंत्र का विकास ईसवी सन के पश्चात हुआ है। जीवित राजा की पूजा या मूर्ति निर्माण इससे पूर्व नहीं हुआ था। मरण के बाद राजा की मूर्ति स्मरण मंदिर में रखी जाती थी। 'भास' के नाटक में भी इस तरह का उल्लेख मिलता है।

निश्चय ही देवगण और राक्षसगणों में जो गणाध्यक्ष होगा, वह राष्ट्रपति और सभापति की तरह गणपति नाम से पूजा गया होगा।

गणपति व्यक्ति नहीं पद था। गणेश नामक शिवजी के पुत्र ने कभी भी पद को सुशोभित किया होगा, वरना कालिदास-जैसे महाकवि रघुवंश में शिव-उमा के विवाहोपलक्ष्य में भी गणपति की आराधना क्यों करवाते। फिर यह गणपति कौन थे, इसमें दो मत नहीं कि अर्थववेद में गणानां त्वा जो व्यक्त हुआ है वह गणपति के गणतांत्रिक रूप को ही प्रकट करता है।

—ई-६०७, कर्जन रोड अपार्टमेंट,
नयी दिल्ली-११०००१

"किसी भी बहस में उसी को पराजित जानिए जो अधिक बुद्धिमान है, क्योंकि इस बहस को प्रारंभ में ही टालने के लिए उसने अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं किया।" — इलवर्ट हबर्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुत्ता बहुत नाराज है भगवान से !

● कुमार गिरी

गांधीजी के एक सहयोगी कहते हैं कि जब बापू ने नमक-कानून तोड़ने के लिए कूच दांडी किया था, तो एक कुत्ता भी उनके साथ हो लिया था, जो इस यात्रा के अंत तक उनके साथ रहा था। सरोजिनी नायडू ने भी इस बात की ताईद की है और अपनी खुशमिजाजी में उन्होंने पत्रकारों के सामने कुत्ते से यह प्रश्न भी पूछा था कि क्या तुझे भी गांधी की बीमारी लग गयी है कि अपने देश में हम अपना ही नमक खाएंगे ? सुनकर सब लोग हंसे और सबकी नजरें कुत्ते पर गड़ गयीं तो जैसे कुत्ते को भी अंतः प्रेरणा हुई और उसने सरोजिनी नायडू की साड़ी का पल्ला अपने मुंह में दबा लिया। घटना के इस अद्भुत मोड़ को देखकर सारा उपस्थित समाज खिलखिलाकर हंस पड़ा। कुत्ता शायद संकोच में पड़ गया। मजाक करनेवाले लोगों से पीछा छुड़ाने के लिए वह गांधीजी की ओर बढ़ गया और उनकी लाठी के साथ आगे-आगे चलने लगा। सरोजिनीजी ने फिर कहा--"इस देश के कुत्ते-बिल्लियों को भी पराया नमक पसंद नहीं है, मेरी समझ में नहीं आता कि हम भारतवासियों को क्यों अभी तक उससे ग्लानि नहीं हुई !

वहां एक अंगरेज कलेक्टर भी था। व्यंग्य का रस लेने के लिए उसने कहा--"मैडम, यहां तो सिर्फ कुत्ता ही है, आपने बिल्ली को कैसे जोड़ दिया ?" श्रीमती नायडू तो हाजिर-जवाबी में अद्वितीय थीं। छूटते ही बोलीं--"मैं जो हूं। मेरे से बड़ी बिल्ली आपको कहां मिलेगी ?" दूसरे अंगरेज मजिस्ट्रेट ने विनोद में पूछा--"महाशय, क्या आपको पैगम्बर मूसा की यह बात याद नहीं कि कुत्तों से स्वर्ग नहीं जीता जाता।" सरोजिनीजी ने प्रत्युत्तर का तीर मारा--"आपको संसार के ज्ञानसमुद्र 'महाभारत' का अध्ययन करना चाहिए। कुत्ते को लेकर ही तो युधिष्ठिर स्वर्ग पहुंचे थे।"

महाभारत में कथा है कि जब पांडव हिमालय गलने गये तो द्रौपदी-सहित चारों पांडव-बंधु---भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेवा---एक-एक करके रास्ते में प्राण छोड़ते गये। केवल युधिष्ठिर ही अपने कुत्ते के साथ स्वर्ग पहुंचे। स्वयं इंद्र स्वर्ग के द्वार पर उनकी अगवानी करने आये किंतु जब उन्होंने युधिष्ठिर को कुत्ता भी अंदर लाते देखा, तो उन्होंने कुत्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रोका । युधिष्ठिर अड़ गये कि कुत्ते के बिना मैं अकेला स्वर्ग में प्रवेश नहीं करूंगा । राजा इंद्र ने कई प्रकार से उन्हें समझाया, किंतु जब उनकी एक न चली, तो उन्होंने कुत्ते को भी स्वर्ग में जाने की अनुमति दे दी । असल में, वे युधिष्ठिर की परीक्षा ले रहे थे । कुत्ते का रूप धारण कर स्वयं धर्म युधिष्ठिर के साथ था । युधिष्ठिर ने स्वर्ग के लिए भी धर्म का परित्याग नहीं किया, धर्म के प्रति उनकी यह निष्ठा इंद्र को बहुत भायी ।

राजगोपालाचारी ने भी अपने 'महाभारत' में लिखा है कि कुत्ता तो साक्षात् धर्म है । जिस निष्ठा के साथ वह अपने मालिक के प्रति अनुरक्ति रखता है, वह प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण है । धर्म का इससे बड़ा विग्रह और क्या हो सकता है ? सब कुछ समर्पण के साथ जहां प्राण का मोल भी कुछ नहीं हो, धर्म वहां नहीं रहेगा, तो और कहां रहेगा ?

एक जंगल में पांच आदमी घोर तपस्या कर रहे थे । पहले को राजा से चिढ़ थी, वह शिवजी से दूसरा राजा मांग रहा था । दूसरे को प्रेयसियों ने धोखा दिया था, वह सच्ची छल-कपट से परे रहनेवाली प्रेयसी की तलाश में था । तीसरा व्यक्ति अपने मां-बाप से नाराज था । चौथा अपने मालिक से दुःखी था, उसका मालिक उसे बहुत कष्ट देता था । पांचवां दुनिया ही नहीं, ईश्वर से भी असंतुष्ट था । अपने आसपास की हर चीज उसे काटने दौड़ती थी ।

जब इन पांचों तपस्वियों को तप करते वहां काफी दिन गुजर गये तो शिव भील का रूप धर कर उधर से निकले । उनके साथ एक कुत्ता भी था । कुत्ते ने जब इन तपोलीन व्यक्तियों को देखा तो बड़े जोर से हंस पड़ा । बोला--"महामूर्खों, तप करने से कुछ नहीं होगा । यह आडंबर बंद करो ।" पांचों तपस्वियों ने कुत्ते को आकर घेर लिया । वे उस पर प्रहार करना ही चाहते थे कि कुत्ता बोला--'तप करने के बजाय यदि तुम सब मेरे जीवन का अनुकरण करो, तो तुम्हें जिंदगी में कोई शिकायत नहीं रहेगी ।' पांचों ने उतावले स्वर में पूछा--"सो कैसे ?"

कुत्ते ने सहज भाव से कहा--"यह भील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजगोपालाचारी ने भी अपने संस्मरण में लिखा है कि कुत्ता तो साक्षात धर्म है । जिस निष्ठा के साथ वह अपने मालिक के प्रति अनुरक्ति रखता है, वह प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण है । धर्म का इससे बड़ा विग्रह और क्या हो सकता है । सब कुछ समर्पण के साथ जहां प्राण का मोल भी कुछ नहीं हो, धर्म वहां नहीं रहेगा, तो और कहां रहेगा ।

मेरा मालिक है । मैं इसे अपना सर्वस्व मानता हूं । शरीर और प्राण मैंने इसके अर्पण कर दिये हैं । अब मेरा मेरे पास कुछ नहीं है, मैंने सब कुछ प्रेम के अर्पण कर दिया है, प्रेम के साथ मैं अनन्य हो गया हूं । तुम भी ऐसी ही निष्ठा के साथ प्रेम पालना सीख जाओ और अनन्य भाव से प्रेम के समर्पित हो जाओ । फिर तुम्हें जीवन से कोई शिकायत नहीं रहेगी । प्रेम, भक्ति में ही सुख है । बुद्धि से कुछ नहीं बनता । भक्ति या प्रेम को सब कुछ चढ़ा दोगे तो वही सब कुछ सुख-संतोष के रूप में तुम्हें मिल जाएगा ।

भागवत में कहा है

या यद् जनो भगवते
विदधीत मानं,
तच्चात्मनः प्रतिमुखस्य
यथा मुखश्री !

--हम जितना भगवान को देते हैं, उतना ही हमारा अपना होता है । दर्पण के सामने चेहरे का जितना हिस्सा बढ़ा दिया जाता है, उतने की ही आभा लौटकर आ जाती है ।

एक जरमन कहावत है कि धरती पर कुत्ता ही ऐसा जीव है, जो अपने से अधिक आपको प्यार करता है ।

वाल्तेयर कहता है कि जैसे-जैसे मनुष्य-स्वभाव का अनुभव हमारा बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे कुत्तों के प्रति भी प्रशंसा का भाव हमारा मुखर होता जाता है । संसार के सबसे बड़े धनकुबेर राकफेलर की चुनौती थी कि हम पैसे के बल पर अच्छे-से-अच्छा कुत्ता तो खरीद सकते हैं, किंतु दुनिया की सारी संपदा खर्च करके भी उसकी पूंछ नहीं हिला सकते, वह तो सिर्फ प्रेम से ही हिलती है । कुत्ते की नजर में प्यार के सामने सोने का पहाड़ भी मिट्टी का ढेर है ।

अबू बकर कहता है कि गधे और कुत्ते में यही फर्क है कि गधा प्रेम को पीठ पर ढोता फिरता है और कुत्ता अपने दिल में उसे उतारता है । रे मूढ़ गधे ! पीठ के जीभ कहां जो प्रेम चखे ? यह तो दिल की दौलत है !

इस प्रसंग में संस्कृत मे भी एक सूक्ति है। बेचारे गधे को कहीं भी चैन नहीं । मगर चैन आये भी कैसे ? जिसकी पीठ भारी हो और दिल खाली हो, उसे तो ब्रह्मा भी चैन नहीं दे सकता--

खरश्चंदनभारवाही भारस्य
वेता न तु चंदनस्य !

--गधा अपनी पीठ पर चंदन का बोझ तो अनुभव करता है, किंतु चंदन की महिमा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे अनुभव नहीं होता । शेख सादी ने फारसी में इसी बात को अपने व्यंग्य-कौशल में यों कहा है--

खरे ईसा गरश ब-मक्का बुरंद;
चूं बवायद हनूज खर बाशद !

--ईसा के गधे को मक्का ले जाइए, विश्वास रखिए कि जब वह वापस आएगा तो आपको गधे-का गधा ही मिलेगा ।

महमूद ताहिर कहता है कि दुनिया को आसानी से दो भागों में बांटा जा सकता है--एक किस्म गधे की , दूसरी कुत्ते की । ईश्वर की सृष्टि में कोई जीव ऐसा नहीं, जिसके भीतर किसी-न-किसी मिकदार में ये दोनों किस्में मौजूद न हों ।

मार्कट्वेन का कहना है कि आप एक भूखे कुत्ते को अपने घर ले जाएं और उसे खिला-पिलाकर पाल लें । निश्चय मानिए कि वह आपको काटेगा नहीं, किंतु इनसान के मामले में ऐसा नहीं है । दरअसल, मनुष्य और कुत्ते में यही फर्क है !

लाओत्जे कहता है कि कीर्ति के प्रति मोह का पालना जिंदगी के पिटारे में सांप को पालना है । इस सांप में बड़ी शक्ति होती है, किंतु इस लोभ में हमें यह याद नहीं रहता कि वह हमारी चेतना को निरंतर डसता रहता है । हां, जब हम अकेले होते हैं, अपने आप में होते हैं, तब पीड़ा में हम तिलमिलाने लगते हैं ।

'उत्तररामचरितम्' में भवभूति के राम का ऐसा एक उदाहरण है । राम अपनी तलवार से शम्बूक का वध करने को तैयार हैं । शम्बूक का वध करने से ब्राह्मण का बालक जीवित हो उठेगा, ऐसी शर्त राम के सामने है । किंतु राम का हाथ शम्बूक पर उठता नहीं । राजधर्म के पालन के लिए उनकी तलवार नहीं चल रही है । एक दिन राजधर्म की रक्षा के नाम पर उसी हाथ से उन्होंने सीता का परित्याग किया था । धर्म का यह अंधा आचरण उनके लिए भारी पड़ गया था । धर्म और सत्य में फर्क आ गया था । राम शम्बूक पर तलवार उठाते हैं, पर सीता के साथ धर्म की ज्यादती का उन्हें स्मरण हो आता है, हाथ जड़ हो जाता है । अपने-आपको धिक्कारते हुए वे कहते हैं—

हे हस्त दक्षिण ! मृतस्य शिशोर्द्विजस्य
जीवातवे विसृन शूद्रमुनौ कृपाणम्,
रामस्य बाहुरसि निर्भरगर्भ खिन्न-
सीताविवासनपटो : करुणा कुतस्ते !

--ओ मेरे दायें हाथ, मरे हुए ब्राह्मण बालक को फिर से जीवित करने के लिए शूद्र मुनि शम्बूक पर कृपाण चला ! क्या याद नहीं, तू तो राम का बाहु है, जिसने पूर्ण गर्भ से पीड़ित सीता का निष्करुण भाव से, कपट-प्रपंच से, परित्याग किया है । तेरे भीतर करुणा कहां से आ गयी ?

मिल्टन कहता है कि अक्ल का बिच्छु जब हमारी आत्मा पर डंक मारता है, तो हमें या तो अपनी ही रोशनी में अपने को देखने का मौका मिल जाता है, अथवा भीतर से हम ऐसे भटक जाते हैं कि फिर बुद्धि की ही शरण चले जाते हैं ।

कवि 'अदम' इस स्थिति को यों व्यक्त करता है--

किस तरह इसको निकालूं रूह से,
अक्ल का कांटा बहुत बारीक है !

संत धरनीदास का मत है कि प्रेम के बिना धर्म सूखा ठूंठ है और धर्म के बिना प्रेम भांग-भरी बावड़ी है । प्रेम और धर्म केवल नाम से ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भिन्न हैं, शब्दों में ही जुदा-जुदा हैं, अर्थ में दोनों एक ही हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद इसी अनुभूति में 'फानी' बदायूंनी कहते हैं—

दिल से तेरी ही गुफ़्तगू काफी है
तुझ से तेरी ही आरजू काफी है !

बृजभाषा के यशस्वी कवि बिहारीलाल भी सामीप्य के इसी रसानंद में डुबकियां लगाकर अपने आराध्य से मांगते हैं—

मोहूं दीजै मोषु ज्यों अनेक अधमनु दियौ;
जौ बांधे ही तोषु तौ बांधौ अपने गुनगु।

--हे प्रभो, आपने अनेक अधमों को बंधन से मुक्त किया है, मोक्ष दी है, सो मुझे भी दीजिए। लेकिन अगर आपको मेरा भव-बंधन नहीं काटना है, तो फिर मुझे अपने ही बंधन में, अपनी ही डोर में बांध लीजिए !

महाकवि 'मीर' की बेखुदी सार्थक हो गयी, विरहानल आनंद-पारावार बन गया, जब उनके अर्पण को आराध्य ने कबूल कर लिया--

बेकली, बेखुदी कुछ आज नहीं
एक मुद्दत से वह मिजाज नहीं।

किंतु कबीर का प्रेमार्पण इन सबसे अनूठा है, वे अपने प्रभु से कहते हैं—

कैसे दिन कटिहैं जतन बताये जइयो
एहि पार गंगा ओहि पार जमुना
बिचवां मुड़इया हमको छवाये जइयो;
अंचरा फारिकै कागज बनाइन
अपनी सुरतिया हियरे लिखाय जइयो;
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
बहियां पकरि के रहियां बताये जाइयो !

बात प्रेम की है, कुत्ते से शुरू हुई थी। कुत्ता तो स्वर्ग तक पहुंच गया, मगर बात जहां की तहां ही है और वह रहती भी जहां की तहां ही है, प्रेम की बात का कहीं छोर भी होता है क्या ? मगर, इस खयाल को हम सही नहीं मानते कि युधिष्ठिर कुत्ते को स्वर्ग ले गये थे, हकीकत तो यह है कि कुत्ता ही उन्हें स्वर्ग ले गया था।

हमारे यहां गांवों में मंदिर होते हैं, रोज शाम को वहां आरती होती है। होता यह है कि घंटे की धुन सुनकर कुत्ते जोर-जोर से रोने लग जाते हैं। एक दिन मित्रों ने पूछा कि क्यों रोते हैं--अपने हंसोड़ स्वभाव के अनुसार, शरत् बाबू ने कहा--"बड़े अफसोस की बात है कि आप लोगों को यह रहस्य अभी तक मालूम नहीं। कुत्ते रो-रोकर ईश्वर से कहते हैं कि तेरे इस जय-जयकार पर हमें रोना आता है। क्या तू नहीं समझता कि जो ये तेरा जय-जयकार कर रहे हैं वे मनुष्य क्या हमारे-जैसे ही भले हैं, अच्छे हैं, तेरे भक्त हैं ? हमें तो एक बार ही युधिष्ठिर ने छला था, तुझे तो ये पल-पल पर छलते हैं।" शरत् बाबू की बात सुनकर सारी मंडली हंस-हंस के लोट-पोट हो गयी। गनीमत है कि उस वक्त वहां हफीज जलंधरी मौजूद नहीं थे, नहीं तो उनकी जबान से बैसाख्ता निकल पड़ता--

जिसने इस दौर के इंसान किये हैं पैदा
वही मेरा भी खुदा हो, मुझे मंजूर नहीं !

—१२, फिरोज गांधी मार्ग, लाजपतनगर-३,
नयी दिल्ली—११००२४

***

यदि गलत और सही के अंतर जान लेना ही पर्याप्त होता तो देश की प्रत्येक जेल खाली होती।
—जे. एच. बोटेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीता, मामा के यहां आयी है । दो ही दिन हुए हैं, अतः वहां की दिनचर्या की अभ्यस्त नहीं है, सो उठने में आज भी देर हो गयी । वह अपने कमरे से निकली और जल्दी-जल्दी उस घर के भोजन कक्ष की ओर जाने लगी । बरामदे के कोनेवाली कुरसी पर कोई बैठा दिखा तो उसने और भी जल्दी पैर बढ़ा दिये । मीता उसके सामने से निकली तो वह उठ खड़ा हुआ था और नमस्ते की । मीता को पीले हो आये सफेद कुरते और मटमैली धोती की झलक दिखी थी । मीता ने अपने मिलनसार स्वभाव के अनुसार नमस्ते का प्रत्युत्तर दिया और आगे बढ़ गयी । मामा गजाधर पांडे की इच्छा रहती थी कि सुबह नाश्ते के समय सब मेज पर हों । इसी समय उन्हें अवकाश रहता था कि वह सबकी सुनें और अपनी कहें ।

कहानी

बेचारा

● क्रांति त्रिवेदी

जारी वार्तालाप रोककर मामा ने अपनी प्रिय भांजी से कहा, "आओ मीता, मैं इन सबको राजनीति के विषय में समझा रहा हूं और इन्हें इतवार की पिकनिक की ज्यादा चिंता है ।"

मीता ने मुसकराते हुए प्याले में चाय डाली और प्लेट में नमकीन रखकर नौकर को पकड़ाते हुए कहा, "बाहर बरामदे में कोनेवाली कुरसी पर जो सज्जन बैठे हैं, उन्हें दे आओ ।"

नौकर जा भी नहीं पाया था कि नितिश बोल उठा, "तो यह आपके परिचित हैं ।"

मीता ने सहास्य उत्तर दिया, "नहीं तो, मैंने इन्हें आज ही देखा है ।"

नितिश गंभीर रहा, 'फिर यह खातिर क्यों ?'

मीता फिर भी हंसी, 'कोने में बैठा वह बड़ा बेचारा-सा लग रहा है !'

भर्त्सना का मौका पाकर पांडेजी बोले, 'मीता तुम्हारी तरह मूर्ख तो है नहीं । वह जानती है कि राजनेता के घर में जो भी आये उसका यथोचित सत्कार होना चाहिए और एक तुम लोग हो कि केवल उसका मजाक उड़ाना जानते हो ।'

मीता उत्सुक हुई, 'क्या यह अकसर यहां आते हैं ।'

पांडेजी के यहां नाश्ते के समय प्रजातंत्र लगा रहता था । सबको अपना मत व्यक्त करने की स्वतंत्रता रहती थी ।

इस बार परेश बोला, 'अकसर क्यों, रोज ही आते हैं । इधर दो दिन से अनुपस्थित थे, आज फिर प्रगट हो गये हैं । अब चाय नाश्ता मिलने लगा है तब तो रोज आना निश्चित है ।'

इस बार पांडेजी बोले थे, उनके शब्दों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे अस्पष्ट क्रोध था, ''अच्छा अब उसका पीछा छोड़ो, कोई अन्य चर्चा करो ।''

अगले दिन जब मीता को वह फिर उसी स्थान पर बैठा मिला और फिर उसने खड़े होकर नमस्ते की तो मीता भी सोच उठी, 'व्यर्थ ही यह बला गले लगा ली, लेकिन अब यह चाय भेजने का नियम चलाया है तो चलाते जाना होगा ।'

तीसरे दिन कुछ ज्यादा देर हो गयी थी, पांडेजी नाश्ता करके जा चुके थे । स्पष्ट था कि जाते समय वह उससे मिले होंगे । तो अब वह क्यों बैठा है ?

कमरे में पैर रखते ही नितिश की मंडली का सामूहिक आक्रमण हुआ, ''दीदी, तुम्हारा वह बेचारा बैठा है ।''

परेश ने परिहास किया, ''दीदी, गरम-गरम चाय भिजवाना और साथ में पकौड़े भी । दि देखना वह कभी एब्सेंट नहीं होगा ।''

छोटी-सी बिंदु तक बोल उठी, ''कैसा कागभगौड़े-जैसा तो है । जाने दीदी को क्यों अच्छा लगता है ।''

परेश बोला, ''वह दीदी को अच्छा लगे न लगे । उसने पता चला लिया होगा कि पापा की लाड़ली है —अब तो...''

मीता ने भी हंसते हुए कहा, ''...हां, ह लोगों ने जो नाम दिया वह ठीक है, मैं उसे अपना बेचारा मानती हूं ।''

फिर मन में निश्चय किया, ''अब तो मुझे मोरचा छोड़ना ही नहीं है ।''

यही कारण था कि उस दिन जब पांडेजी मीटिंग के लिए दिल्ली गये तो मीता ने उसे चाय-नाश्ता ही नहीं भिजवाया, बल्कि कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें भी कीं ।

नाम था अखंडप्रताप ।

सुनकर मीता ने बड़ी कठिनाई से मुसकान को रोका । आंखों से कुछ प्रगट न हो इसलिए पलकें भी तनिक नीची कर लीं, पर मन की किल्लोल थी कि रोके नहीं रुक रही थी । वहां हंसी का फव्वारा उछल रहा था ।

लगता है, फूंकने से उड़ जाएंगे और नाम है अखंडप्रताप । वाह !

शीघ्रता से जो सूझा वह पूछ बैठी, "आप क्या छुट्टी पर हैं ?"

वह मुसकराया । मुसकराहट बड़ी सौम्य थी ।

"नहीं दीदी, मैं वैसा कुछ काम नहीं करता हूं, इसलिए छुट्टी का कोई प्रश्न नहीं है । वैसे सबका सेवक हूं । आपको कुछ काम कराना हो तो बताइएगा ।"

"यहां तो आपके लिए कुछ काम नहीं होगा ।"

उसने कनखियों से इधर-उधर देखा, फिर स्वर को तनिक धीमा कर बोला, "मुझे लगता है, यहां पांडेजी और अब आपके अतिरिक्त मुझे कोई पसंद नहीं करता है ।"

उसके स्पष्ट कथन से मीता तनिक अप्रतिभ हुई थी, लेकिन उसे शिष्टाचार निभाना खूब आता था, सो एक वैसी झूठ बोल गयी जो शिष्टाचार के अंतर्गत सच मानी जाती है ।

"नहीं, नहीं ऐसी बात नहीं है, वह सब तो बच्चे हैं ।"

अति नम्र स्वर में वह बोला, "दीदी, आप परेशान न हों । मैं तो यों ही कह गया था । मुझे तो पांडेजी की सेवा करनी है, और यदि वह मुझे मीरसद करते तो यहां बैठने की अनुमति न देते ।"

उसका अवलोकन कितना सच था । चौथे दिन नाश्ते के समय, नितिश ने पकौड़ियों की प्लेट मीता की ओर बढ़ायी, फिर वापस करते हुए बोला, "दीदी, पहले थोड़ी-सी मैं ले लूं । तुम तो सब वहीं भेज दोगी ।"

नितिश की हंसती आंखों की पुतलियां बरामदे की दिशा में ऐसे घूमी मानो वह दिशा निर्देशक उपकरण हों ।

नितिश के इंगित का अर्थ सभी समझ गये और हंस पड़े ।

मीता ने मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया कि नितिश का स्वर धीमा था, और उसका स्वर वहां तक नहीं पहुंचा होगा जहां वह बेचारा बैठा था ।

बेचारा ! उसका बेचारा ! दीदी का बेचारा ! यही नामकरण तो किया था उन लोगों ने । मामी ने डांटा था, "तो अब बेचारा मात्र कहते हैं ।"

छोटे तो छोटे, बड़े नितिश को इस मजाक में शामिल पाकर मीता को भी धुन आ गयी थी ।

अब तो वह हंसकर उत्तर दे लेती है, "हां, हां, वह बेचारा एक प्याला चाय और चार-छह पकौड़ियों की प्रतीक्षा कर रहा होगा, और तुमने उसका बहाना लेकर सारी प्लेट ही साफ कर दी । मामी, मैं चली जाऊंगी तो इनकी बातों पर ध्यान न देना, उसे एक प्याला चाय भिजवा दिया करना ।"

मीता अपने पति के साथ अमरीका जा रही है, इसीलिए मामा से मिलने आयी है ।

मीता के मामा, देश की प्रमुख राजनीतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात यह है कि आगामी चुनाव के प्रत्याशियों की लिस्ट मुझे देनी है । हम लोगों की दृष्टि में प्रत्याशी की सबसे प्रमुख योग्यता होती है उसका हमारा भक्त होना । तुमने तो एकदम निशाने पर चोट की है ।

पार्टी के सदस्य हैं । उनके यहां बहुत लोगों का आना-जाना लगा रहता है ।

मीता जानती थी कि उनके यहां आने-जानेवाले लोग प्रायः तीन तरह के होते हैं, एक तो काम लेकर आनेवाले, दूसरे चाटुकारी के लिए, तीसरे केवल उपस्थिति का प्रदर्शन कर दूसरों पर रोब गांठनेवाले ।

मीता को यह नहीं मालूम था कि वह किस श्रेणी का विजिटर है, न उसने जानना चाहा था ।

दिल्ली से लौटकर, उसी दिन दोपहर के समय पांडेजी ने मीता को अपने कमरे में बुलवाया । मीता ने सोचा, अब वह जा रही है, तो मामा लाड़ कर रहे हैं ।

उसे आशा थी कि अब वह विस्तार से सब कुछ जानना चाहेंगे, लेकिन हुआ बम-विस्फोट-सा जब उन्होंने पहली बात कही,

"मैं सोच रहा हूं, इस बार लोकसभा का टिकट अखंडप्रताप को दिलवा दूं ।"

मीता के पेट में वैसी ही हंसी उमड़ी जैसी पहली बार उसका नाम सुनकर उमड़ी थी, इस बार कुछ चेहरे पर भी आ गयी थी ।

"मीता, मैं तुम्हारी राय जानना चाहता हूं । सुना है, इधर तुमने उसे काफी संरक्षण दिया है ।"

"आपका भक्त है न, इसलिए..."

पांडेजी प्रसन्न हो उठे, "बस मीता, तुमने निर्णायक वाक्य कह दिया । अब मेरे मन में ऊहापोह नहीं रह गयी । बात यह है कि आगामी चुनाव के प्रत्याशियों की लिस्ट मुझे देनी है । हम लोगों की दृष्टि में प्रत्याशी की सबसे प्रमुख योग्यता होती है —उसका हमारा भक्त होना । तुमने तो एकदम निशाने पर चोट की है ।"

अनायास मिली इतनी प्रशंसा सुनकर मीता के कान लाल हो गये ।

मीता समझ गयी थी कि उसके बेचारे के भाग्य के द्वार खुल गये हैं क्योंकि जब मीता वापस जाने लगी थी तो पांडेजी ने उसे सावधान किया था, "देखो, अभी किसी को बताना नहीं ।"

सुबह वह अपने स्थान पर दिखा था । मीता को देखकर खड़ा हो गया, नित्य-जैसा सौम्य भाव लिए, नम्रता से झुककर प्रणाम किया और कहा, "मीता दीदी, आज रात तो आप जा रही हैं ।"

मीता को प्रतीत हुआ कि यह कहते हुए उसकी आंखों में एक नये प्रकार की चमक आ गयी थी और कृतज्ञता की छाया भी ।

इतना तो मीता समझ सकती थी कि पांडेजी मामा ने उसे गोपनीयता के बंधन में बांधा है तो इसको भी बांधा होगा ।

वह आगे बढ़ने को हुई तो उसने तपाक से

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे बढ़कर पैर छू लिए ।

"अभी के लिए आपसे बिदा ले लूं फिर कभी भेंट होगी —मैं अभी स्टेशन ही जा रहा हूं, वहीं चाय पी लूंगा ।"

"आप कहां जा रहे हैं ।"

"दिल्ली ! पांडेजी ने कुछ काम बताया है ।"

"अच्छा तो फिर मिलेंगे । आपने चाय पी ?"

"आप नहीं थीं तो कौन भिजवाता ।"

"अच्छा मैं भिजवा रही हूं, तनिक रुकिए ।"

अब तो निश्चित हो गया था । मीता का दिमाग आश्चर्य से चकरा उठा था । उसका मन हो रहा था, अन्य सबको यह सूचना देकर उनके चेहरों के भाव देखे और अपने माथे का बोझ हलका करे, किंतु स्नेही मामा से विश्वासघात कैसे कर सकती थी । लेकिन आज उसने उन सबको दिखाते हुए नाश्ते की प्लेट में मिठाई भी रख दी ।

सबने देखा, पर शायद आज वह अपने पर बरबस नियंत्रण रख रहे थे, क्योंकि मीता जा रही थी, किंतु दो मिनट ही बीते होंगे कि उद्दंड परेश बोल उठा, "जाते-जाते अपने बेचारे का लाड़ कर रही हैं ।"

इस पर समाचार की धमाकेदार घोषणा करने को मीता का मन कुलबुलाया था, किंतु वह मुसकराकर चुप रही ।

परेश की हिम्मत और बढ़ी और वह बोला, "कल से वह रोएगा ।"

इस पर मीता ने निर्णय लिया कि इतना कहना सुरक्षित है । "देखना, अब वह कभी नहीं रोएगा । उसे मेरा आशीर्वाद प्राप्त है ।"

इतनी देर से रुका नितिश बोल उठा, "जीजाजी देखते तो उन्हें ईर्ष्या होने लगती ।"

मीता ने इस बार किंचित कठोर स्वर में कहा, "बस नितिश मजाक की एक सीमा होती है । तुम लोगों के बदले में मैं शिष्टाचार निभा रही थी, इतना भी नहीं समझे ।"

विदाई में मामी ने कीमती साड़ी दी । मीता समझ गयी कि यह मामा की प्रसन्नता का फल है ।

***

चार वर्ष अमरीका में बिताकर मीता लौटी तो कर्त्तव्य मानकर मामा से मिलने गयी, क्योंकि उन्हीं के प्रयत्न से रमेन्द्र को अमरीका जाने को मिला था ।

पारिवारिक संबंधों में कृतज्ञता जुड़ गयी थी ।

पांडेजी ने मकान बदल लिया था, और भी बहुत कुछ बदल गया था । नितीश मेडिकल कॉलेज में पढ़ रहा था । बिंदु, परेश भी बड़े हो गये थे किंतु परिवर्तन का कारण यह नहीं थे ।

मीता को अमरीका में ही पता चल गया था कि पांडेजी की पार्टी चुनाव में बुरी तरह हार गयी थी, और साथ में पांडेजी भी । राजनीति का बाजार मंदा था इसलिए घर पर भी चहल-पहल कम थी । काफी कुछ बदल गया था लेकिन पांडेजी का नाश्ते पर सबका एकत्र होना नहीं बदला था ।

नाश्ते के लिए सब आ चुके थे । परेश भी आया हुआ था, इसलिए मीता के कमरे में प्रवेश करते ही उसी पुराने मूड में आकर बोल उठा, "दीदी, तुम अपने बेचारे को खोज रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा, अब वह यहां नहीं आता है ।''

स्वाभाविक था कि मीता ने कारण जानना चाहा ।

उत्तर दिया पांडेजी ने, ''तुम्हें किसी ने नहीं लिखा ? नहीं । तो सुनो एक आश्चर्यजनक घटना घटी । जनमानस की विपरीत लहर के कारण हमारी पार्टी में से दो-चार लोग ही विजयी हुए थे, और उनमें से एक था अखंडप्रताप ।''

मीता को इतना आश्चर्य हुआ कि मुंह में जो चाय थी, उसे भूलकर वह 'अरे', उच्चार बैठी, तो शब्द के साथ मुंह में भरी चाय पुनः प्याले में आ गिरी ।

विस्मय विस्फारित आंखों से उसने मामा की ओर देखा ।

मीता की दशा देख वह मुसकराकर बोले, ''राजनीति के खेल में ऐसा ही होता है । अखंड तो अब दिल्ली में रहता है, देखे से पहचाना नहीं जाता ।''

मीता बौड़म की तरह पूछ बैठी, ''दिल्ली में ?''

''हां भई, लोकसभा का सदस्य क्या यहां बरामदे में बैठेगा ।''

सब हंसे पर मीता नहीं हंसी ।

''तब तो मैं सच में उसे नहीं पहचानी, न उसने मुझे पहचाना । यहां आने से पहले हम लोग दिल्ली गये थे । जनपथ की सांध्य धूप एक हंसवत् श्वेत वस्त्रधारी मुझसे टकरा गया था । मैंने उसे देखा था और सॉरी कहकर आगे बढ़ ली थी । आगे जाकर यह विचार अवश्य आया था कि इस व्यक्ति को कहीं देखा है ।''

परेश बोला, ''अब तो वह 'बेचारा' नहीं रहा न दीदी ।''

पांडेजी फिर मुसकराये, ''किसी भी तरह नहीं । अब तो वह टैक्सी में घूमता है, चेहरे पर लाली है ।''

''संसद बंद होने पर यहीं आता होगा ?''

अब पांडेजी का चेहरा कुछ म्लान हुआ, ''केवल यही दुःख है कि वह मुझे भी भूल गया ।''

मीता को भी इसका बहुत दुःख था । दुनिया कैसी हो गयी है । क्या कृतज्ञता नाम का कोई भाव ही नहीं रहा ।

मीता को राजनीति से ही घृणा हो गयी । अखबार में किसी नेता अथवा पार्टी का नाम आता तो वह दृष्टि घुमा लेती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक साल बाद फिर चुनाव हुए । इस बार मानो पांसा ही पलट गया हो । पांडेजी की पार्टी को बहुमत मिला ।

इस विजय के लिए बधाई देने के लिए वहां तक जाने की योजना मीता ने बनायी किंतु कोई न कोई बाधा आती रही, और कई महीने बीत गये । अंत में उसने एक दिन के लिए जाने में सफलता पा ली ।

बहुत सुबह वहां पहुंची थी । स्टेशन पर परेश आया था । रास्ते में उसने बताया इस बार पांडेजी का मंत्रिमंडल में आना सुनिश्चित है ।

मीता ने सोचा, अच्छा हुआ जो वह समय से आ गयी, नहीं तो सब सोचते मंत्री बने हैं इसलिए आयी है ।

कमरे तक पहुंचाकर परेश ने कहा, "दीदी, अभी बहुत समय है । एक नींद ले लो । मैं खुद आधी नींद में हूं ।"

परेश के परामर्श के अनुसार मीता सोयी नहीं, नहा-धोकर तैयार हो गयी । वह नाश्ते के समय को खोना नहीं चाहती थी । बाद में मामा से जाने मिल पाये अथवा नहीं । जो समय है, उसमें मामा-मामी से गपशप हो सकती है ।

लग रहा था सभी सो रहे हैं अतः स्नानोत्तर प्रसन्नता से भरी मीता गुनगुनाती भोजनकक्ष की ओर चली ।

"अरे यह क्या ?"

उसके पैर स्वयं थम गये ।

बरामदे में कोनेवाली कुरसी पर, उसी पुरानी मुद्रा में उसके बेचारे का नवीन संस्करण बैठा था ।

मीता को लगा, अब वह उठ रहा है, और नमस्ते करेगा । मीता ने स्वयं को झटका दिया । मन में वितृष्णा भरे भय ने उसके पैरों को अभिनव गति दे दी थी ।

अब न जाने उसके किस रूप से परिचय हो । वह अब उसे किसी भी रूप में नहीं पहचानना चाहती थी ।

—आर १२/३, राजनगर,
गाजियाबाद

एक आइरिश कहावत के अनुसार संसार में तीन प्रकार के व्यक्ति धृष्टतम होते हैं : बूढ़े का उपहास करनेवाले नवयुवक, किसी विकलांग को चिढ़ानेवाला सक्षम व्यक्ति और किसी मूर्ख का मजाक उड़ानेवाला बुद्धिमान व्यक्ति ।

* * *

यह सदा याद रखने की बात है कि सफलता एक सीढ़ी है जिस पर आपको स्वयं चढ़ना होता है, यांत्रिक सीढ़ी नहीं जो आपको स्वयं चढ़ा ले जाती है ।

* * *

नयनजी ने पशु चिकित्सक से आश्चर्यचकित लहजे में कहा, "पता नहीं मेरी बिल्ली के बच्चे कैसे हो गये, मैंने तो इन्हें कभी बाहर ही नहीं जाने दिया ।" चिकित्सक ने अगियारी के पास नर बिल्ली को देखकर पूछा, "और यह कौन है ?" नयनजी ने उत्तर दिया, "कुछ शरम कीजिए, डॉक्टर, यह तो इस बिल्ली का भाई है ।"

—प्रस्तुति : अ.रा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिंदा अजायबघर

● जगदीश पुरोहित

राजस्थान के पश्चिम में पाकिस्तान की सीमा पर स्थित एक प्यारा-सा छोटा-सा परंपरागत रूप से बसा कलात्मक शहर है—जैसलमेर ! वही शहर जिसे डॉ. रामकुमार वर्मा ने कभी ऊंघता हुआ शहर लिखा था, लगता है आज जग गया है ।

यह कलात्मक शहर जो कि, स्वर्ण नगरी के नाम से विख्यात है, को यदि झरोखों का शहर या हवेलियों का शहर कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । यहां के पीले मुलायम पत्थर, जिसके कारण इसे स्वर्ण नगरी कहा जाता है, पर किया गया महीन नक्काशी का कार्य इतना सजीव जान पड़ता है मानो कलाकार स्वयं इस कारीगरी में जीवन बनकर विचरण कर रहा है । इस 'सेंड-स्टोन' पर बनायी गयी जालियां, फूल पत्तियां, हाथी, घोड़े, जैन मंदिरों की मूर्तियां, इस नगर को बसानेवाली भाटी राजपूतों एवं निवासियों की कलाप्रियता एवं कला पोषक होने का प्रमाण है । यह कलात्मकता बरबस ही राह चलते राहगीर को ठिठकने व देखने के लिए विवश-सा, कर देती है, तभी तो पिछले दस वर्षों से यहां देशी-विदेशी पर्यटकों का हुजूम उमड़ रहा है । राजस्थान में उदयपुर-जयपुर-पुष्कर- माऊंट आबू के बाद इसी भव्य शहर ने विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया है ।

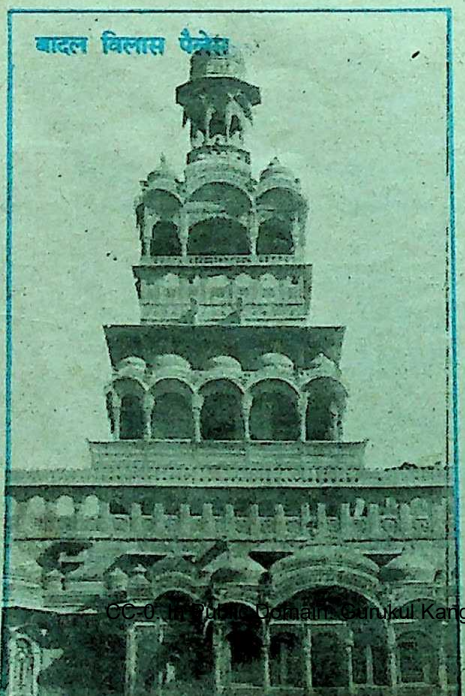

पर्यटकों की प्रेरक स्थली

यहां की परंपरागत जीवन शैली, रेत के टीबों में बिताया जाने वाला कठोर जीवन, १२वीं शताब्दी का किला, हवेलियां, कलात्मक झरोखे और जैन मंदिर पर्यटकों को बार-बार आने के लिए प्रेरित करते हैं ।

दर्शनीय स्थलों में प्रमुख यहां का किला है । त्रिकूट पहाड़ी पर बने ९९ बुर्जों के इस किले में जनता के आवासीय मकान हैं । भारत के किलों में जनता के रहने की सुविधा विरले ही उपलब्ध है । पूर्व से उदित सूर्य रश्मियां प्रातःकाल में आभास कराती हैं मानो यह किला स्वर्ण निर्मित है । इस भव्य किले से प्रभावित होकर महान फिल्मकार सत्यजित रे ने अपनी अनुपम कृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसलमेर

'सोनार किला' निर्मित की थी, जो बांग्लाभाषी पर्यटकों को इस तिलस्मी किले को देखने आने के लिए प्रेरित करती रहती है । इसकी प्राचीरों पर तीनों दिशाओं में भारी-भरकम तोपें लगी हैं जो प्राचीन शासकों की सुरक्षा के प्रति सजगता को प्रकट करती हैं । किले में ही विशाल कलात्मक जैन-मंदिर बने हैं जिसमें पुराने इतिहास की पांडुलिपियां भी सुरक्षित रखी गयी हैं । इसके अतिरिक्त किले में अनेक हिंदू मंदिर हैं, जो यहां की धर्मपरायण जनता के गौरव का प्रतीक है । किले की योजना, बनावट, प्राचीन टॉयलेट व्यवस्था, प्राचीन सुरक्षा व्यवस्था, राज प्रासाद दर्शनीय व विचारणीय है ।

स्थापत्यकला के उत्कृष्ट नमूने

किले से बाहर पुराना शहर है, इस शहर की पतली व संकरी गलियों में स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने हैं, हवेलियों व घरों की बनावट प्रकट करती है कि यहां के मूलवासी यहां के गरम लू एवं आंधियों से युक्त वातावरण से सुरक्षा हेतु किस प्रकार सुरक्षात्मक शैली में मकान निर्मित करवाते थे । शहर की तीन

पर्यटन व्यवसाय में लगे लोगों का मानना है कि यहां के आकर्षक भवन, झरोखे, छतरियां, मंदिर, रेत के टीबे, अभी अनेक वर्षों तक पर्यटकों को आकर्षित कर पाएंगे, तभी तो तारांकित होटलों का जाल-सा बिछने लगा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

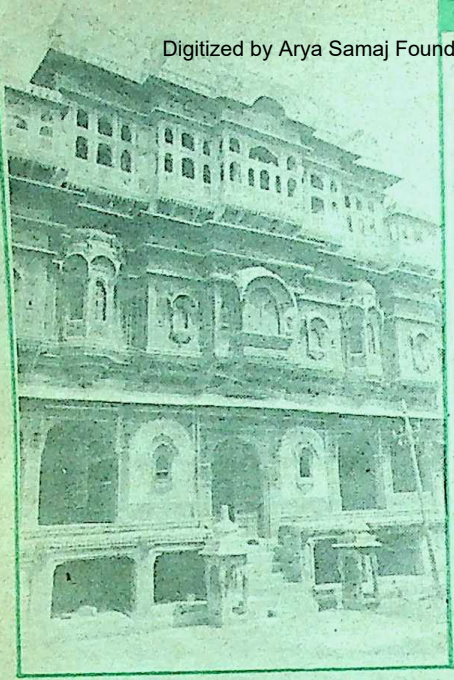

दीवान नथमल की हवेली

हवेलियां इस शहर के कलात्मक जीवन का प्राण है—पटुओं की हवेली, दीवान नथमल की हवेली और दीवान सालिम सिंह की हवेली । इसके अतिरिक्त लगभग सभी प्राचीन घरों में पत्थर पर नक्काशी के उत्कृष्ट झरोखे देखे जा सकते हैं, और इस दृष्टिकोण से यह शहर किसी अजायबघर से कम नहीं है । शहर के मकानों एवं प्रासादों की निर्माण शैली इतनी मजबूत है कि उत्तरकाशी में आये भूकंप की तीव्रता से आये सन १९९२ के भूकंप से यहां के मकान अप्रभावित रहे ।

पटुओं की हवेली पर की गयी बारीक नक्काशी के कार्य को देखकर अमरीकी पर्यटकों के मुख से प्रायः निकलता है कि जब हमारा राष्ट्र अस्तित्व में ही नहीं था, तब आपके देश में इतनी उम्दा कला मौजूद थी । गुमानचंद पटुआ द्वारा १९वीं शताब्दी के पहले दशक में निर्मित ६ मंजिल की पांच हवेलियां ६६ झरोखे, सुरंगदार खंभे, धूप के लिए एवं बाहरी दृश्य के लिए बनी भव्य खिड़कियों से दर्शनीय बन पड़ी है । पर्यटक घंटों इसकी कला को निहारते हैं एवं विभिन्न कोणों से फोटो खींचते रहते हैं ।

निर्दयी स्वभाव के कला प्रेमी दीवान का कलात्मक अनुराग दीवान सालिम सिंह की हवेली में प्रतिबिंबित होता है । दीवानी परंपरा के अनुसार हवेली के ओटे पर हांथी बने हैं, इसकी आकृति जहाज के समान है अतः इसे जहाजमहल भी कहा जाता है ।

१८८५ ए.डी. में निर्मित दीवान नथमल की हवेली का मुख्य प्रवेश द्वार इंजिन, साईकिल, सिपाहियों, घोड़ों, हाथियों की कलात्मक आकृतियों से सुसज्जित है । इस हवेली की मुख्य विशेषता है कि इसके आधे हिस्से की कलात्मक आकृतियों का दूसरे आधे भाग में दोहराव नहीं है । इसके मोल के पास पहरेदारों की दो आकृतियां निर्मित की गयी हैं, चोपदार व छड़ीदार ।

झील और कलात्मक झरोखे

शहर में किले व हवेलियों के अतिरिक्त मुख्य दर्शनीय स्थल गड़ीसर तालाब है, जो कि पुराने शहर का मुख्य पीने के पानी का स्रोत था । इस छोटी झील के किनारे व बीच में भी अनेक कलात्मक झरोखे व बंगलियां बनी हैं । इसके मुख्य प्रवेश पर एक कलात्मक पोल बनी है जो 'टीलों' नाम की तत्कालीन गणिका ने महाराजा से जिद में आकर बनवायी थी । सरदियों में अनेक पक्षी झील में देखे जा सकते हैं, वर्षा से भरा होने पर पर्यटक आजकल इसमें नहाने का लुत्फ उठाते हैं । पर्यटन विभाग नावें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी चलाने लगा है वर्षा न होने पर इंदिरा गांधी नहर से इस झील को भरे जाने की व्यवस्था भी गत दो वर्षों में की गयी है ।

कारीगरी का श्रेष्ठ नमूना

शहर से १०-१५ कि.मी. की दूरी में अनेक दर्शनीय स्थल हैं जिनमें बड़ा बाग, अमरसागर, बैशाखी व लोद्रवा प्रमुख हैं । बड़ा बाग राजा-महाराजाओं की स्मृति में बनायी गयी कलात्मक छतरियों एवं आमों के बगीचों के लिए विख्यात है, तो अमर सागर जैन मंदिर और शाही बगीचे के अवशेषों के लिए दर्शनीय बन पड़ा है । लोद्रवा जैसलमेर रियासत की पुरानी राजधानी है । यह भव्य व कलात्मक जैन मंदिर कल्पवृक्ष और मूमल-महेंद्रा की अमर प्रेमकथा के लिए प्रसिद्ध है । काक नदी के किनारे १६१५ ए.डी. में सेठ यहास शाह ने वर्तमान मंदिर का निर्माण कराया । इसमें 'कसौटी' पत्थर पर मूर्ति बनी है, और प्रवेश का तोरण द्वार कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना है ।

एकता का प्रतीक

पूर्व रियासत के महारावल के निवास में बना बादल विलास हिंदू-मुसलिम एकता का प्रतीक है, इसकी आकृति ताजियानुमा है । छठी मंजिल के इस दर्शनीय भवन में कमरे व संकरे बरामदे बने हैं और कलात्मक बालकॉनी से इसे सजाया गया है ।

बंगाली व विदेशी पर्यटकों को यहां का थार रेगिस्तान खूब लुभाता है । विदेशी पर्यटक शहर के पास के आकर्षक स्थल एवं रेत के टीबों का

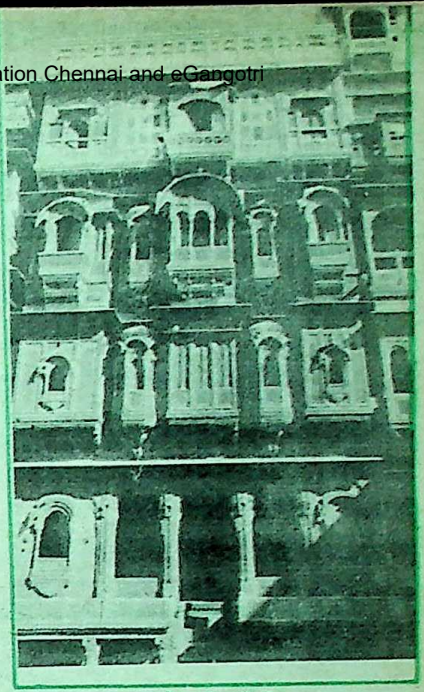

पटुवों की हवेली

लुत्फ उठाने के लिए तीन-चार दिन तक ऊंट से भ्रमण करते हैं जिसे 'केमल सफारी' कहा जाता है । केमल सफारी का आनंद लिए बिना विदेशी पर्यटकों का जैसलमेर भ्रमण पूरा नहीं माना जाता । देशी पर्यटक सम गांव के रेत के टीबों पर ऊंट की सवारी का आंनद लेते हैं ।

पर्यटन व्यवसाय में लगे लोगों का मानना है कि यहां के आकर्षक भवन, झरोखे, छतरियां, मंदिर, रेत के टीबे, अभी अनेक वर्षों तक पर्यटकों को आकर्षित कर पाएंगे, तभी तो तारांकित होटलों का जाल-सा बिछने लगा है ।

— व्याख्याता : राजकीय महाविद्यालय जैसलमेर

दुनिया समझ रही थी कि बरसात है मगर
मौसम भी मेरे हाल पर रोया तेरे बगैर

—शकील सागर

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलधरा : जैसलमेर : अतीत के खंडहरों से

● अनीता पुरोहित

जैसलमेर से सम रोड पर, जीप द्वारा, कच्ची-पक्की सड़क की कुछ मुश्किल मंजिल को तय करने के बाद दिखायी देता है एक उजड़ा-सा वीरान गांव 'कुलधरा' 'सुनहरी नगरी' से करीब ४५ किलोमीटर के फासले पर बसा यह गांव वर्षों से अपनी उसी स्थिति में खड़ा दर्शनाभिलाषियों की बाट जोहता प्रतीत होता है। इस उजड़े गांव के खंडहरों के बीच जीवन का कोई चिह्न शेष दिखायी नहीं देता। मगर टूटे-फूटे एक मकान के कमरे में चुपचाप-गुमसुम पड़ी चक्की/रसोई में चूल्हे में पड़ी अधजली लकड़ियां। औंधे पड़े माटी के घड़े, टूटे-फूटे बरतन अपनी कहानी आप कहते हैं। कमरे के किसी खूंटे पर लटकी मरदाना धोती और तार पर लटके जनाना कपड़े बताते हैं कि किस तरह यहां के रहवासी अपनी संपदा जल्दबाजी में बटोरकर बाकी सामान जस का तस छोड़कर यहां से पलायन कर गये।

प्राचीन ऐतिहासिक नगरी

'कुलधरा' पालीवाल ब्राह्मणों की प्राचीन ऐतिहासिक नगरी थी। जैसलमेर रियासत के सबसे संपन्न इस तबके को महारावल मूलराजजी द्वितीय के शासनकाल में उनके मंत्री सालम सिंह के अत्याचारों से पीड़ित हो एक ही रात में अपना सब कुछ समेटकर पलायन करना पड़ा। यही नहीं 'कुलधरा' और उसके आस-पास बने सभी चौरासी गांवों में बसे पालीवाल ब्राह्मणों ने अपनी बेटियों की आन की रक्षा की खातिर एक ही रात में सारे गांव खाली कर दिये। जाने से पहले अपने हाथों में नमक और पानी ले द्वार पर थूक कर कभी भी वहां न लौटने का प्रण किया। एक सदी से ऊपर गुजर गया। गांव खंडहरों में तब्दील हो गये। पालीवाल कहीं और जा बसे और उनका वह प्रण आज तक नहीं टूटा।

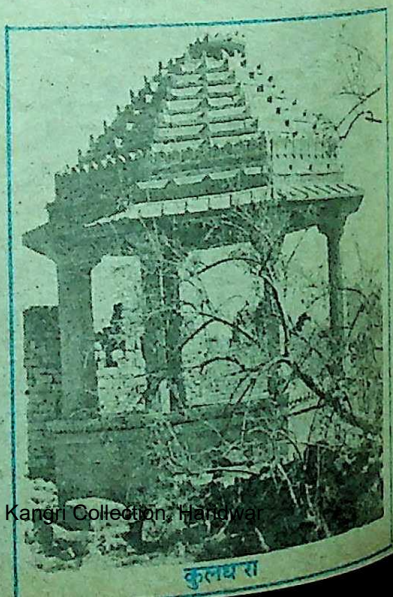

कुलधरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

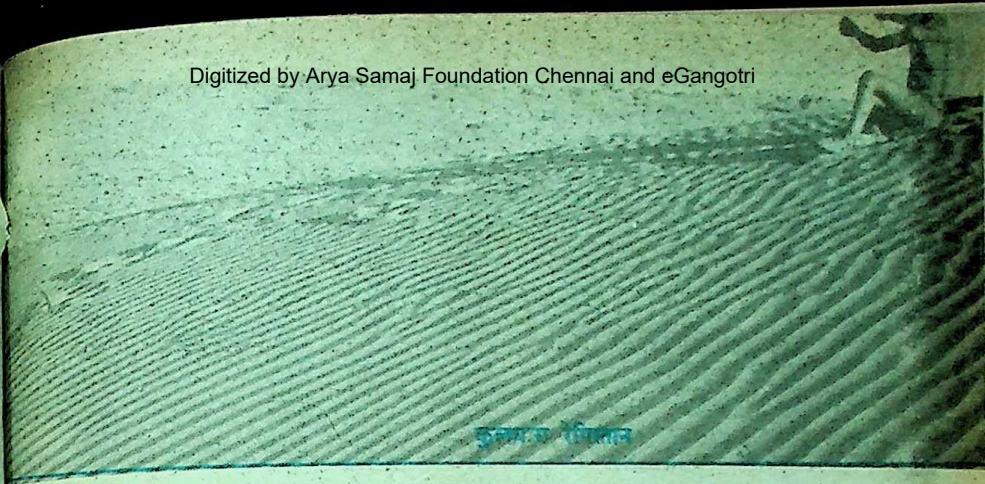

कुलधरा के वीरान

अतीत के झरोखे से झांककर देखें और बंद आंखों से इस उजड़े गांव कुलधरा के उजड़े शरीर पर बसे उसके निखरे रूप की तो केवल कल्पना ही की जा सकती है । हां, यहां-वहां बिखरे संकेतों के माध्यम से उन आकारों को पढ़ा भी जा सकता है । गांव की बनावट और घरों की रचना देखकर उस समय की भवन निर्माण कला के एक अनूठे रूप के दर्शन होते हैं । गलियां चौड़ी, मकान सुव्यवस्थित और जैसलमेर की प्राचीन प्रस्तर कला को उजागर करते हैं । गांव का हर निर्माण इस बात का आभास देता है कि इसकी विस्तार योजना कितनी सुगठित और व्यवस्थित थी ।

गांव के मध्य में स्थित मंदिर ही अब तक ठीक हालत में है, शेष गांव खंडहर बन चुका है । हालांकि इस मंदिर से देवता की मूर्ति नदारद है, लेकिन इसकी कला और योजना अपने आप में बेजोड़ है । मंदिर का प्रमुख द्वार पश्चिम की ओर खुलता है । पालीवालों के समस्त चौरासी गांवों की नगर योजना एक ही समान थी । सभी के मध्य में ऐसे ही मंदिर थे, जिनमें समान आकार और संख्या की सीढ़ियां थी । दोनों तरफ खिड़कियां और गोखड़े थे । सभी मंदिरों की लंबाई-चौड़ाई और ऊंचाई समान थी । कुलधरा को छोड़ शेष सभी मंदिर अब ध्वस्त हो चुके हैं ।

गांव के पासवाली छोटी पहाड़ी पर एक मंदिर भी दिखायी देता है जिसमें देवी की मूर्ति स्थापित है । संभवतः यहां पालीवालों की कुलदेवी रही हो । मंदिर के चारों तरफ एक परकोटा-सा दिखायी देता है जिसे देखकर लगता है कि यहां शायद कभी गांव का मुखिया

कुलधरा के उन वीराने खंडहरों के बीच जीवन का भयमुक्त चेहरा क्या फिर कभी दिखायी देगा ? शायद कभी नहीं । सोचती हूं इतिहास के पुराने धूमिल रंगों के बीच हमारे आज के रंगों के धब्बे उनसे कितने अलग होंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या किसी अन्य प्रमुख व्यक्ति का किलेनुमा मकान रहा होगा । एक टूटा-फूटा पानी का टांका भी दिखायी देता है । गौर से देखने पर यहां के समस्त अवशेष किसी छोटे-से पुराने किले के होने का आभास देते हैं । पहाड़ी के ऊपर से देखने पर पूरा गांव करीब एक किलोमीटर क्षेत्र के दायरे में बिखरा दिखायी देता है । जो कि अन्य गांवों के मुकाबले कुछ बड़ा है । इससे यह सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि कुलधरा अन्य सभी गांवों का मुख्य केंद्र बिंदु रहा होगा ।

असुरक्षित समृद्ध भंडार

जब से यह स्थान जैसलमेर पर्यटन के मानचित्र पर उभरा है तबसे कई पर्यटक इसे देखने यहां आते हैं लेकिन २०-२५ किलोमीटर का कच्चा रास्ता बड़ा असुविधाजनक होता है उनके लिए । इसके पहले पक्की सड़क होने के कारण खाबा गांव तक पहुंचना पर्यटकों के लिए आसान है । यदि कुलधरा के लिए एक पक्की सड़क का निर्माण कर दिया जाए तो यहां के लिए ज्यादा पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है ।

आज कुलधरा गांव में किसी तरह का जीवन शेष नहीं, लेकिन गांव के पूर्वी छोर पर भील और मेघवाल जाति के कोई दस-बारह परिवार झोंपड़ी बनाकर रह रहे हैं । एक खास बात और ध्यान में आनेवाली है वो ये कि गांव में चौड़ी गलियों के दोनों ओर मकानों में जो खुदाई के पत्थर लगे थे उन्हें किसी ने निकालकर गलियों के किनारे रख दिया है । ऐसा लगता है कि मौका लगते ही इन्हें भी गाड़ी में लादकर कोई उठा ले जाना चाहता है । सुनने में आया है कि पहले भी ऐसे कई पत्थर यहां से चोरी करके ले जाए जा चुके हैं । अतः प्राचीनकला के इस समृद्ध भंडार के संरक्षण के पुख्ता उपाय भी किये जाने चाहिए ताकि ऐसी घटनाएं दुबारा न हों ।

पालीवालों के पलायन की दर्दभरी दास्तां सुनानेवाले ये खंडहर सत्ता के मद के नशे के वीभत्स चेहरे को उकेरते हैं । आज भी वो चेहरा हमारे आस-पास दिखायी देता है । जैसलमेर की तवारीख हालांकि खुलकर सालमसिंह के अत्याचारों की कहानी नहीं कहती, लेकिन वहां के जनमानस पर आज भी उसके आतंक की कहानी अंकित है ।

कुलधरा के उन वीरान खंडहरों के बीच जीवन का भयमुक्त चेहरा क्या फिर कभी दिखायी देगा ? शायद कभी नहीं । सोचती हूं इतिहास के पुराने धूमिल रंगों के बीच हमारे आज के रंगों के धब्बे उनसे कितने अलग होंगे ।

— आर ३/६ पहली मंजिल
आर.एस.ई.बी. कॉलोनी
सेक्टर ४, जवाहर नगर जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

, Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे बदकिस्मत लोग कौन थे ?

● रामनाथ पसरीचा

रात के अंधेरे को चीरती हुई बस हल्द्वानी की ओर चल पड़ी । कुछ देर बाद मुसाफिरों ने अपने शरीर बस की सीट के मुताबिक समेटे,या यूं कहें कि वह सिमट गये तो सभी को ऊंघ आ गयी । रास्ते में बस जहां भी रुकती मुसाफिर टांगें सीधी करने के लिए बाहर आ जाते और चाय की दुकानों पर जाकर चाय या ठंडा पीते । हल्द्वानी से आगे रास्ता पहाड़ी था । पौ फट रही थी । साफ हवा में सांस लेने का मजा ही कुछ और था । दस बजे के करीब बस अल्मोड़ा पहुंची । तब तक बादल बर्फ की चोटियों को ढक चुके थे और गंदा, धूल और धुएं भरा बस अड्डा हर रोज की तरह यात्रियों की सेवा में तत्पर था ।

बादल चिपके थे

अल्मोड़ा में हमें ग्वालदम जानेवाली बस मिली । आगे कौसानी, गरुड़ और बैजनाथ नाम के सुंदर और ऐतिहासिक स्थान हैं । कौसानी से हिमालय की सुंदरता देखते ही बनती है । पर बादल तो उन पर चिपके पड़े थे । ग्वालदम पहुंचकर हमने आरामगाह में सामान रखा ही था कि तेज ठंडी हवा चली और पल भर में मूसलाधार बारिश होने लगी । गरम कपड़े पहन बरामदे में आ कुछ देर उस दृश्य को देखा ।

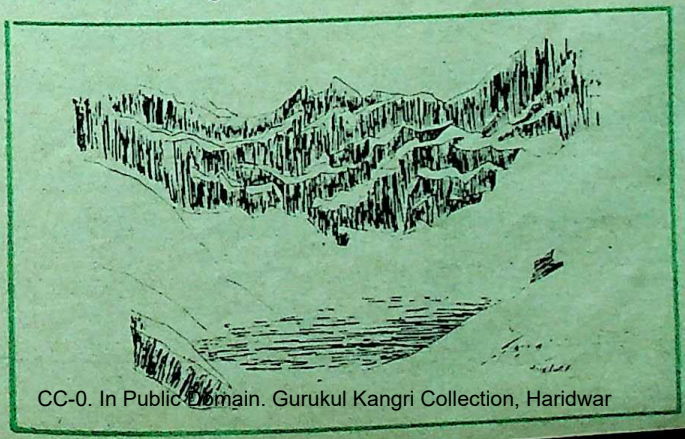

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर बारिश में ही बाहर निकलकर ढाबे पर खाना खाया और वापस आकर बिस्तर में जा घुसे ।

बारिश रातभर हुई । अगले दिन सड़कें कीचड़ से सनी पड़ी थीं । लगभग नौ बजे बारिश रुकी तो तीन बोझी मिल गये । लेकिन वह अगले पड़ाव देबल तक ही जाने के लिए राजी हुए । पता चला रूप कुंड जाने के लिए दूसरे बोझी देबल में मिलेंगे । इस उम्मीद के सहारे हमने अपने पिठू पीठ पर बांधे और रास्ते पर हो लिए । कुछ दूर जाने पर रास्ते ने ढलान पकड़ी तो कदम तेज हुए । बरसात से धुले जंगलों से गुजरती हुई पगडंडी पर मजे-मजे में हम आगे बढ़ने लगे । पेड़ों पर पक्षी पर सुखाने आ बैठे थे और रंगबिरंगी तितलियां हमें छू जातीं । थक जाते तो पगडंडी के किनारे पड़ी किसी चट्टान पर बैठकर सुस्ता लेते । इस तरह दोपहर होते हम पिंजर नदी को पार कर देबल जा पहुंचे । बस की सड़क कर्णप्रयाग से होती हुई देबल तक थी । आगे लोहानी तक जीपें चलती थीं । वहीं ढाबे पर खाना खाते समय बोझियों की चर्चा छिड़ी तो ढाबेवाले ने गांव में संदेसा भेज दिया । थोड़ी देर में तीन लड़के आ पहुंचे और सामान उठाने और खाना बनाने के

लिए राजी हो गये । जीपवाले से तय किया कि अगले दिन हमें और हमारा सामान लोहानी पहुंचा देगा । अब हम बेफिक्र थे । हमने रात का खाना ढाबे में ही खाया और वन विभाग के बंगले में जाकर सो गये ।

लड़कियां हंसने लगीं

दूसरे दिन पलक झपकते ही जीप ने लोहानी पहुंचा दिया । मगर तभी बारिश ने आ दबोचा । तेज बरसात में भीगते-भीगते लोहाजंज की चढ़ाई चढ़ी और मंडल की आरामगाह में जाकर ही दम लिया । शाम के समय बरसात रुकी तो

उधर वादियों में छुपे बादल दिनभर की मूसलाधार बरसात के बाद थके-से, धीरे-धीरे सिमटने शुरू हो गये थे और जंगलों से लदे काले-नीले पहाड़ डूबते सूरज की गुलाबी रोशनी में तरोताजा लग रहे थे । वादी में पैर लटकाये हम जी भरकर इस दृश्य को देखते रहे । हम हिमालय के दृश्यों को अपने में समेट लेने के लिए ही तो आये थे ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्म कमल

पारदर्शी : समीर पसरीचा

एक पहाड़ी बाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदा देवी की यात्रा पर

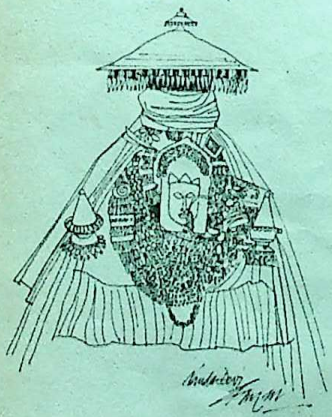

टोंस घाटी की एक किशोरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम बाहर आये । मंदिर के पास नल पर गांव की लड़कियां पानी भर रही थीं । वह हमें देखकर हंसने लगीं । कभी कभार नजर आनेवाले हमारे-जैसे शहरी लोगों को देखकर थोड़ी खिल्ली उड़ाना तो स्वाभाविक था ।

कहते हैं भगवती हर साल शिवजी से मिलने इसी रास्ते से कैलाश जाती हैं । एक बार यहां लोहाजंग नाम का दानव उनका रास्ता रोककर खड़ा हो गया और परेशान करने लगा । तब भगवती और दानव के बीच युद्ध हुआ । दानव मारा गया । वहीं आज मंदिर खड़ा है । पास देवदार का एक बहुत पुराना पेड़ है । उस पर एक घंटा टंगा है । आते-जाते मुसाफिर उसे बजाते हैं तो उसकी आवाज दूर-दूर तक वादियों में गूंज जाती है । उधर वादियों में छुपे बादल दिनभर की मूसलाधार बरसात के बाद थके-से, धीरे-धीरे सिमटने शुरू हो गये थे और जंगलों से लदे काले-नीले पहाड़ डूबते सूरज की गुलाबी रोशनी में तरोताजा लग रहे थे । वादी में पैर लटकाये हम जी भरकर इस दृश्य को देखते रहे । हम हिमालय के दृश्यों को अपने में समेट लेने के लिए ही तो आये थे ।

लोहाजंग से आगे वान तक रास्ता घने जंगलों से गुजरता है । रास्ता ढलानवाला और सुहाना था । जब पगडंडी किसी झरने के पास जाकर पुल की शक्ल ले लेती तो हम पुल पर खड़े होकर झरने की कविता सुनते और बौछार को अपने ऊपर पड़ने देते । वहां पानी में सड़ रहे पत्तों की गंध भी अच्छी लगती । पिछली बार जब मैं वान आया था तब वहां नवरात्रि का मेला लगा था, जिसे देखने के लिए मैं वहीं स्कूल में ही रुक गया था । तब वान के दीवानसिंह और उसके साथियों ने हमारा सामान ढोया था । तभी मैंने केदारसिंह और राधा नाम की एक औरत के रूपचित्र बनाये थे । उन दोनों से मिलने की बड़ी इच्छा थी । दोनों रूपचित्रों की नकलें मेरे पास थीं जो मैं उन्हें देना चाहता था । मगर दोनों ही नहीं मिले । हां चायवाले से उनके बारे में पूछा तो वह उन दोनों को पहचान गया और उसने यकीन दिलाया कि वह रूपचित्र उन तक पहुंचा देगा ।

घंटिया बज उठतीं

गांव से होकर हम महकमा जंगलात के बंगले की ओर चल पड़े । देवदार के घने जंगल के बीच बने इस बंगले के आंगन में बैठकर सुस्ताने का एक अलग ही मजा था । बंगले के पास ही लाडो देवता का मंदिर है जो पत्थर और लकड़ी का बना है । मंदिर बहुत सादा है, मगर

उन अस्थिपंजरों को यात्रियों ने लगभग ५० साल पहले देखा था । जब वैज्ञानिकों ने उन पर खोज की तो पता लगा कि वह तकरीबन ६०० साल पुराने थे । तब गढ़वाल के एक राजा ने रूप कुंड से दो दिन और आगे होम कुंड की यात्रा आरंभ की थी । वह यात्रा अब भी हर बारह साल बाद की जाती है । कहा जाता है गढ़वाल में चार सींघवाला एक मेंढ़ा पैदा होता है जो यात्रा की अगवानी करता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके अहाते में उगे देवदार के पेड़ों की शाखों पर टंगी घंटियां उसकी शोभा को चार चांद लगाती हैं । हवा के झोंकों के साथ घंटिया रह-रहकर बज उठतीं तो बहुत अच्छा लगता । इन घंटियों को श्रद्धालुओं ने अपनी मनोकामनाएं पूरी होने पर मंदिर में चढ़ाया था । पिछली बार मंदिर का पुजारी मेरे साथ गांव से यहां आया था । उसने आगाह कर दिया था कि मैं मंदिर के अंदर जाने या खिड़कियों से अंदर झांकने की कोशिश न करूं । मंदिर में लाडो देवता लिंग के रूप में विराजमान हैं और सांप और बिच्छू उस लिंग की रक्षा करते हैं । पुजारी ने बताया था कि लाडो देवता कन्नौज का एक ब्राह्मण था । वह बहुत रहमदिल था । जंगल में से होकर कैलाश जाती हुई भगवती को उसने कई बार रास्ता दिखाया था । इससे लोग उनका आदर करते थे । एक बार लाडो देवता को प्यास लगी । देखा सामने एक झोंपड़ी थी । उसमें बैठी बुढ़िया से पानी मांगा तो उसने पास पड़े दो घड़ों की ओर इशारा कर दिया । उनमें से एक में पानी था और दूसरे में शराब । बदकिस्मती से घड़ा जिससे उसने लोटा भरा और पिया उसमें शराब थी । गलती का एहसास होते ही लाडो देवता ने आत्महत्या कर ली । जहां उनका शरीर गिरा एक लिंग बन गया । कहते हैं जो कोई मंदिर के अहाते में बैठकर उनका ध्यान करता है उसकी मनोकामना पूरी हो जाती है ।

देवी के पास बुग्याल

वान से कुछ दूर चलकर हम खड्ड में उतरे । नीचे नील गंगा बह रही थी । उस पर बने पुल से गंगा को पार किया तो सामने चढ़ाई थी । जंगल जिसमें से पगडंडी गुजर रही थी बेहद खूबसूरत जगह थी । पर चढ़ाई कठिन थी । हमारा दम फूलने लगता और हम रह-रहकर रुकते और दम साधते । हम इसी तरह कई घंटे चले । जब जंगल कम होने लगा तब पेड़ों की जगह लंबी घास ने ले ली । फिर रह गयी चट्टानें । वहीं एक सपाट मैदान में एक छोटी-सी झील दिखायी दी जिसके किनारे नंदादेवी का छोटा मगर खूबसूरत मंदिर था । वहां बने लकड़ी के दो कैबिनों में से हमने एक में सामान रखा और दृश्य देखने बाहर आ गये । मंदिर में रखी मूर्तियां बहुत पुरानी और बेहद खूबसूरत थीं । यह जगह बैदनी बुग्याल के नाम से जानी जाती है । पहली बार लगातार पानी बरसने की वजह से मुझे यहीं से लौटना पड़ा था ।

अगले दिन हम बगुबासा नाम की गुफा की तरफ चल पड़े । रास्ता चढ़ाई का था इसलिए हमारा दम फूल रहा था । हम लगभग एक घंटा चले थे । हमारे सामने बड़ी-बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चट्टानें और एक गुफा थी। यह स्थान पत्थर नचानी नाम से जाना जाता है। वहीं हमें धुंध और बादलों ने आ घेरा। आगे कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। फिर भी हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। हलकी-हलकी बारिश होने लगी। फिर वह मूसलाधार में बदल गयी। बर्फानी हवा में खून जमता-सा लग रहा था। हम ठिठुर रहे थे और हमारे दांत किटकिटा रहे थे। लगा एक बार फिर रूप कुंड पहुंचने से पहले ही लौटना पड़ेगा। तब आपस में सलाह की और एक-दूसरे की हिम्मत बढ़ायी। फिर चलना आरंभ कर दिया।

कुछ देर बाद गणेशजी की काले पत्थर की एक पुरानी मगर खूबसूरत मूर्ति दिखायी दी। वहीं चढ़ाई खत्म हो गयी। मौसम भी सुधरा। बारिश रुक गयी। पहाड़ के पीछे पगडंडी समतल थी। ओट होने की वजह से हवा से भी छुटकारा मिला। हमारे कदम खुदबखुद तेज उठने लगे और पलभर में हम बगुबासा जा पहुंचे। गुफाएं साफ न थीं पर हमारे बोझी वहीं टिक गये और हमने सामने खुले में तंबू लगा लिया।

बादल छट गये थे और खिली धूप में ब्रह्मकमल के फूल जिनसे पहाड़ अटे पड़े थे देखकर मन भी खिल उठा था। नीले आकाश के नीचे बर्फ से ढकी चांदी-सी चमकती चोटियों का दृश्य स्वर्ग की झलक से कम न था। हमारी दिनभर की तकलीफ बेकार नहीं गयी थी।

नीलकंठ और चौखंबा

ठंड बहुत बढ़ गयी थी। बोझियों ने खाना बनाया, जिसे खाकर हम तंबू में जा, स्लीपिंग बैगों में घुस उनकी गरमाहट का मजा लेने लगे। दिनभर के थके थे। कुछ ही समय में नींद आ गयी। लगभग दो बजे ठंड से नींद खुली तो तंबू का परदा उठाकर बाहर देखा। बाहर गहरे नीले आसमान में बड़े-बड़े सितारे चमक रहे थे, जिनकी लौ में चौखंबा और नीलकंठ पर्वत दिखायी दिये तो उन पर नजर टिक गयी।

हम सुबह बहुत जल्दी उठ गये और मुंह-हाथ धो, नाश्ता ले रूपकुंड की ओर चल पड़े। हमने अपना सामान बगुबासा में छोड़ दिया, जिससे चलने में आसानी होनी चाहिए थी, मगर हम लगभग १६००० फुट की ऊंचाई पर थे, जिससे ऑक्सीजन की कमी महसूस हो रही थी। दम फूल रहा था और चलना आसान नहीं था। हमारे चारों तरफ पहाड़ों पर पड़ी बर्फ बहुत सुंदर लग रही थी और बर्फानी नदियां रह-रहकर हमारे रास्ते में आ जातीं। उनकी हलकी गुनगुनाहट हमारे मन को उत्साह देनेवाली खुशी दे रही थी और कदम उठते जा रहे थे। नंदाघुंटी पर्वत के नीचे पगडंडी ने मोड़ लिया और हम धरती पर पड़ी बर्फ के ऊपर अपने पांव के निशान बनाते हुए रूप कुंड के सामने जा पहुंचे। झील पर बर्फ की मोटी तह जमी थी इसलिए उसके पानी के नीचे पड़ी हड्डियां और अस्थिपंजर हम देख न पाये। वहां बेहद खामोशी थी।

मगर वे बदकिस्मत लोग कौन थे।

देवी के शाप से पत्थर

उन अस्थिपंजरों को यात्रियों ने लगभग ५० साल पहले देखा था। जब वैज्ञानिकों ने उन पर खोज की तो पता लगा कि वह तकरीबन ६०० साल पुराने थे। तब गढ़वाल के एक राजा ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप कुंड से दो दिन और आगे होम कुंड की यात्रा आरंभ की थी । वह यात्रा अब भी हर बारह साल बाद की जाती है । कहा जाता है गढ़वाल में चार सींघवाला एक मेंढ़ा पैदा होता है जो यात्रा की अगवानी करता है । वान में एक लोकगीत प्रचलित है । गीत के अनुसार कन्नौज के एक राजा ने गढ़वाल की राजकुमारी वालीपा से ब्याह किया था । जब वह इस यात्रा पर वालीपा को साथ लेकर आया तो वालीपा गर्भवती थी । उसके साथ कई नाचनेवालियां भी थीं और सभी चमड़े के जूते पहने थे । बगुबासा की गुफाओं के सामने वालीपा सुलेदा नाम का पत्थरों का एक अहाता है जिसे राजा के सिपाहियों ने तैयार किया था । वहीं वालीपा ने एक बालक को जन्म दिया था । बैदनी से आगे सभी स्थान नंदादेवी के पवित्र स्थान हैं । जब वह इस प्रकार अपवित्र हो गये तब देवी ने राजा को सजा देनी चाही । तब राजा अपने साथियों के साथ रूप कुंड के बराबरवाले पहाड़ पर चढ़ होम कुंड की ओर बढ़ रहा था तभी तूफान आया और ओले पड़ने लगे । वह सब तूफान में घिर गये और ओलों की मार से मरकर पहाड़ से लुढ़ककर रूप कुंड में जा गिरे । पाथर नचानी की चट्टानें वह सभी नाचनेवालियां हैं जो देवी के शाप से पत्थर बन गयी थीं ।

हम बहुत देर तक रूप कुंड के किनारे बैठे रहे !

वापसी आसान थी । अब ढलान हमारा साथ दे रही थी । बगुबासा में खाना तैयार था । खाया, सामान उठाया और बैदनी की ओर चल पड़े जहां हम शाम होते-होते पहुंच गये ।

हमारी नींद ढोल और तुरही के स्वरों से खुल गयी । देखा सुबह के सूरज की किरणों के साथ एक जलूस बैदनी की ओर चला आ रहा है । मालूम हुआ वह नंदादेवी की वार्षिक यात्रा थी । जल्दी से कैमरे साध हम जलूस के साथ हो लिए । देवी की पालकी को कंधों पर उठाये, झूमते हुए यात्री झील के किनारे पहुंचे और पालकी को मंदिर के सामने उतार दिया । फिर देवी की स्नान और पूजा हुई ।पूजा के बाद देवी पुजारी में प्रवेश कर गयी । पुजारी नाचने लगा ।

यात्री हाथ जोड़कर खड़े हो गये । उन्होंने देवी के सामने अपनी समस्याएं रखीं । पुजारी में विराजमान देवी ने उनकी समस्याओं के समाधान सुझाये । बकरे की बलि चढ़ायी गयी और बलि का प्रसाद बंटा । यात्रा समाप्त हुई और यात्री पालकी को कंधों पर उठाये नाचते हुए वापस चले गये । साफ मौसम में नंदादेवी और त्रिशूल पर्वत झील के ऊपर सर उठाये इस यात्रा का आनंद लेते रहे और हम उन पर्वतों का भी जिनसे हमने विदा लेनी थी ।

उस दिन हम वान में आकर रुक गये और दोपहर बंगले के सामनेवाले जंगल में बिताई । पत्थरों के तकिये बनाकर खिली धूप में नरम घास पर लेटे हुए हमने हवा से झूमती पेड़ों की शाखाओं के बीच से नीले आकाश को देखा जिसका अंत नहीं था मगर जो हल्द्वानी पहुंचने पर गंदला जाएगा और दिल्ली में तो उसका दिखायी दे जाना बड़ी बात होगी ।

—ई-५६, आनंद निकेतन
नयी दिल्ली-११००१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

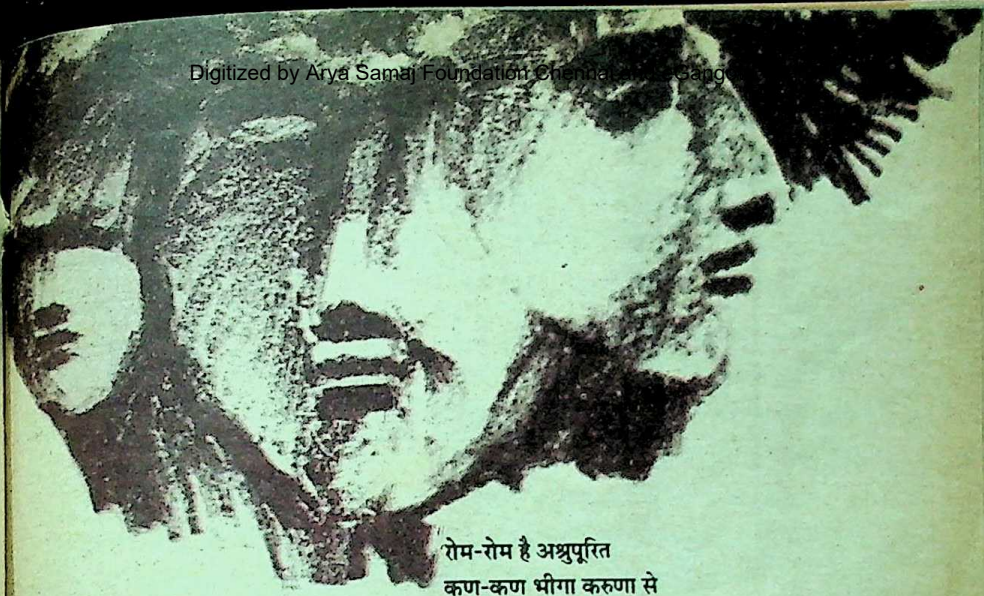

जख्मी गीत

देह, नेह, मनुहार राग सब
पानी के परनाले सा
कभी-कभी तो ठहरा दिखता
कभी-कभी बहा ले जा

सुख की सीमा घनीभूत है
दुख की काली-चादर में
इंद्रधनुष-सा कभी है दिखता
कभी मकड़ी के जाले सा

पीड़ा अनहद नाद बने जब
सारे साज बेगाने दीखते
सुख का सुर जब टूटा दीखता
दुख का राग भी गा ले जा

रोम-रोम है अश्रुपूरित
कण-कण भीगा करुणा से
पछतावे की बात करें क्यों
जब जमता आंसू पाले सा

तन पर पहरा मन का रहता
आंख थकी भिनसारे में
कदम-कदम पर बिखर रहा जब
जब तक चले संभाले जा

चारों तरफ से ताने पड़ते
मर्म अहं रुई सा धुनता
धुन-धुन लो कोई भी मन में
गाते चल मतवाले सा

कदम-कदम पर चोट लगी जब
तन है प्राणों तक जख्मी
अपनी बात है वृथा सुनानी
खुद जख्मों को सहला ले जा

—डॉ. आनंद कुमार

के.ई.एच. स्कूल रोड
काशीपुर समस्तीपुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहानी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्षति-पूर्ति'

पुष्पा सक्सेना

'देखलेना गीता तो पहले ही मनमानी कर हमारी नाक कटा चुकी, अब नीता की बारी है । दोनों लड़कियां हमें मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ेंगी ।' आखिरी बात कहते-कहते मम्मी का गला भर आया था ।

हमेशा की तरह पापा मुंह नीचा किये मम्मी की बात सुनते रहे । जीवन के बाइस बरस उन्होंने मम्मी के आक्षेप सुनते ही तो काटे हैं । विदेश में पापा ने उनके लिए सारी सुख-सुविधाएं जुटा दीं, पर मम्मी अपने निर्वासन का रोना ही रोती रहीं । कभी दोनों बेटिओं ने मिलकर मम्मी को समझाना चाहा, तो वह बिसूरना शुरू कर देतीं ।

'तुम लोग क्या जानो, अकेलापन तो मुझे डंसता है । तुम सबकी अपनी-अपनी दुनिया है । रह गयी मैं अकेली, तो तुम्हें मेरे मरने जीने से क्या ?'

'पर मम्मी ये अकेलापन तो आपका अपना ही ओढ़ा हुआ है न ? यहां ढेर सारी आंटी लोग भी तो भारत से आयी थीं, उन्होंने अपने को कितनी अच्छी तरह एडजस्ट कर लिया है । आप भी क्यों नहीं उनकी तरह ...'

गीता की बात काट, मम्मी नाराज हो उठतीं 'रहने दे और आंटियों की बात । अगर उनकी तरह किटी पार्टियों में जाकर मजे उड़ाती, तो आज तुम दोनों अनाथ की तरह पलतीं ।'

'अच्छा होता, उनकी तरह हम भी खुली हवा में सांस तो ले पाते । क्या कमी है उनकी जिंदगी में ? शैली, सोनिया, मोनिका सब कितनी खुश रहती हैं । यहां हमारे घर में हर समय पटना-पुराण ही चलता रहता है ।'

'छिः बेटी, ऐसी बातें नहीं करते ।' पापा धीमी आवाज में गीता का आक्रोश शांत करना चाहते ।

'तुम रहने दो जी, तुम्हारी ही शह पर ये लड़कियां इतनी उदंड हो गयी हैं । अगर मेरे यहां रहने से सबको तकलीफ होती है, तो मुझे पटना भेज दो । वहां मेरे भाई-भतीजे हैं, सुख से रहूंगी — सिर आंखों लेंगे सब कुछ ।'

'भाई-भतीजे तुम्हारी गिफ़्ट्स के कारण तुम्हें मान देते हैं मम्मी वर्ना ... गीता की बात अधूरी रह जाती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हर बात घूम फिरकर उसी प्वाइंट पर आ जाती । कभी उनकी बीमारी में पापा को आफिस जाना पड़ गया था, मम्मी उस बात का जब-तब हवाला दे, पापा को दुखी करती रही हैं । न जाने क्यों, वर्षों बाद भी मम्मी अपने को यहां अजनबी बनाये हुए हैं । यहां पहुंचने पर पापा ने उन्हें कार चलाना सिखाना चाहा था, ताकि वह कहीं भी आ जा सकें

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या कहा वे लालची हैं ? मेरे उपहारों के भूखे हैं ? जानती नहीं बड़े भइया का वहां कितना बड़ा कारोबार है । तेरे पापा जैसे दस इंजीनियर उनके पांव तले पड़े हैं ।'

'बस करो मम्मी, तुम तो हद कर देती हो । पापा, जैसे जीनियस इंजीनियर मामा पांव तले रखकर तो दिखायें ... ।' छोटी बेटी नीता तमक उठती ।

इतना सब सुनने के बावजूद भी पापा का निःशब्द बाहर चले जाना दोनों बेटियों को खल जाता था । यहां का ऐश्वर्यपूर्ण जीवन क्या भारत में सहज ही पाया जा सकता था ? खुद मम्मी बताती हैं पापा को वहां बस ढ़ाई-सौ रुपयों की नौकरी मिली थी । मारीशस के विकास में सड़कों, घरों आदि के निर्माण के लिए इंजीनियरों की जरूरत थी । पापा को यहां न केवल अच्छी नौकरी मिली, बल्कि अपने काम से उन्हें बहुत नाम भी मिला । आज पापा को देश में हर जगह जाना जाता है, पर मम्मी आज बाइस वर्षों बाद भी अपनी जगह जमीन से ही जुड़ी रह गयी

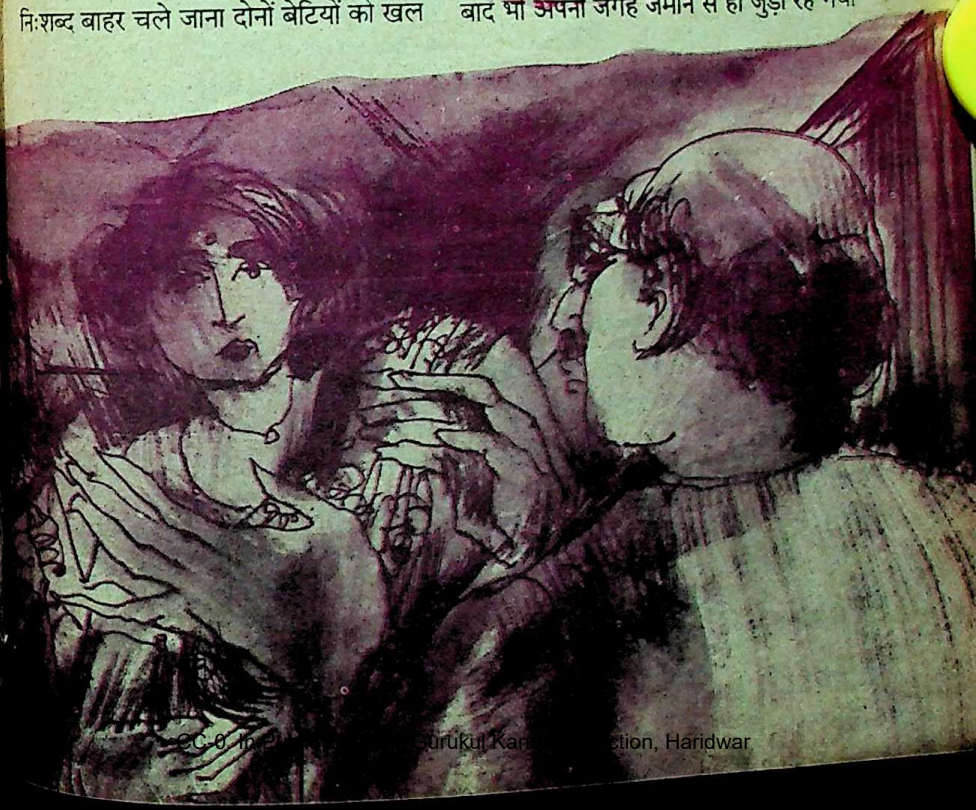

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हैं । यह देश उन्हें हमेशा बेगाना लगता है । पापा से झगड़ा करने के लिए मम्मी को रोज कोई बहाना चाहिए ।

'आज ड्राइवर नहीं आया, मैं मार्केट तक नहीं जा पायी' ।

'तुम फोन कर देतीं, तो मैं आ जाता' दबे स्वर में कही गयी पापा की बात मम्मी को और उत्तेजित कर देती ।

'हां-हां, मेरे लिए तो आपके पास वक्त ही वक्त है । जब मर रही थी, तब तो एक दिन घर पर रुके नहीं, अब खरीददारी कराएंगे । इतना ही ख्याल था, तो क्यों यहां लाकर डाल दिया । न जाने क्या पाप किये थे, जो काले-पानी की सजा भुगत रही हूं ।'

हर बात घूम फिरकर उसी प्वाइंट पर आ जाती । कभी उनकी बीमारी में पापा को आफिस जाना पड़ गया था, मम्मी उस बात का जब-तब हवाला दे, पापा को दुखी करती रही हैं । न जाने क्यों, वर्षों बाद भी मम्मी अपने को यहां अजनबी बनाये हुए हैं । यहां पहुंचने पर पापा ने उन्हें कार चलाना सिखाना चाहा था, ताकि वह कहीं भी आ जा सकें । स्कूल में उन्हें आसानी से नौकरी मिल रही थी, पर मम्मी ने तो हर उस काम को न करने की क़सम खा रखी थी, जिससे पापा को थोड़ी सी भी खुशी मिल पाती । कालेज में एन.सी.सी. की कैडेट मम्मी ने यहां पहुंचते ही अपने को एकदम समेट-सिकोड़ लिया था । घर की सबसे छोटी लाड़ली बेटी मम्मी, श्वसुर-गृह की जिम्मेदार बहू नहीं बन सकीं ।

पति और बच्चों के भरे-पूरे घर में भी मम्मी अपना पटना का घर ही खोजती रहीं । इस देश को उन्होंने कभी अपना नहीं माना । कभी, तो लगता उन्हें बेटियों से भी वैसा लगाव नहीं रहा, शायद इसलिए कि वे मारीशस में जन्मी थीं ।

गीता ने जब घर में राहुल से अपनी शादी की घोषणा की, तो मम्मी कई पल अवाक ताकती रह गयी थीं । अंततः उनके अपने रक्त ने ही उन्हें धोखा दिया । विदेशी युवक से विवाह करेगी, उनकी अपनी बेटी ... ?

'राहुल विदेशी कैसे हुआ मम्मी ? उसका ओरिजिन तो भारतीय ही है । उसके परदादा तुम्हारे पटना के ही किसी गांव से यहां आये थे, समझीं ।' अपनी बात सपाट शब्दों में रख, गीता अपने निर्णय पर अडिग रही थी ।

'अरे बंधुआ मजदूर थे उसके परदादा, उसे हमारी बराबरी में ला रही है तू ?'

'तुम्हारी बराबरी में नहीं, उन्हें मैं तुमसे बहुत ऊपर रखती हूं मम्मी । वह विजेता थे, अन्याय का प्रतिकार कर उन्होंने विजय पायी थी ।'

मम्मी बेहोश हो गयी थीं, पापा मम्मी के मुंह पर पानी के छींटें डाल रहे थे ।

'रहने दीजिए पापा, कुछ देर तो घर में शांति रहेगी ।' गीता ने क्षुब्ध स्वर में कहा था ।

'छिः बेटी, ऐसे नहीं कहते, वह तुम्हारी मां है ।'

'बस इसीलिए उन्हें किसी का अपमान करने का अधिकार नहीं है पापा । खासकर मेरे पति-गृह के किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध अगर उन्होंने कभी कुछ कहा, तो मेरा उनसे कोई संबंध नहीं रहेगा ।'

'ये बात तूने कहां से — किससे सीखी गीता ?' बेटी के वाक्यों ने उन्हें विस्मित कर दिया था ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

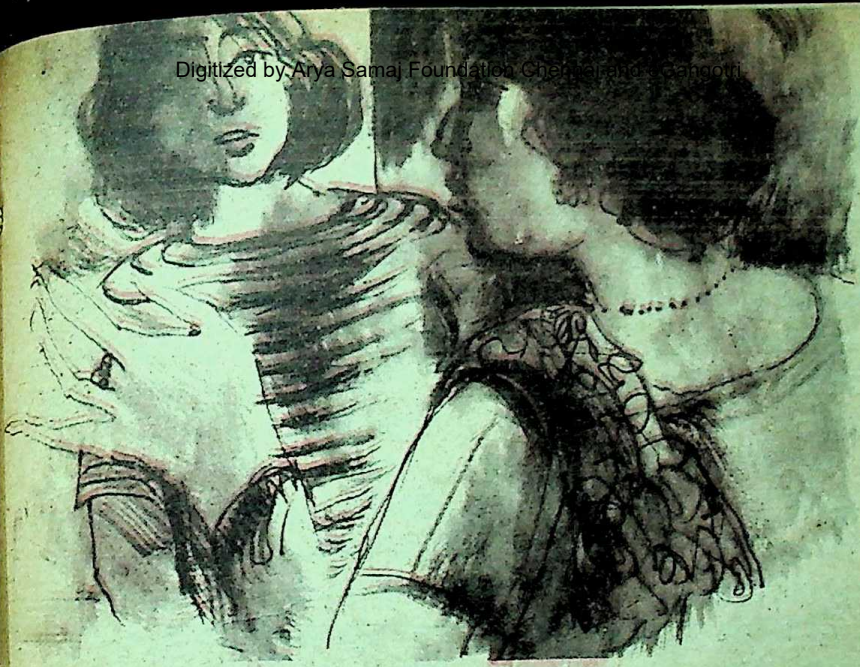

'क्यों पापा आपको ताज्जुब हो रहा है ? ये बातें तो हर भारतीय लड़की घुट्टी में पीकर बड़ी होती है न ?'

'पर तूने ... मेरा मतलब तुझे ये घुट्टी किसने पिलायी है बेटी ?'

चाहकर भी पापा स्पष्ट शब्दों में अपनी बात नहीं पूछ पा रहे थे । शादी के बाद से अपनी धन-संपत्ति का बखान करती मम्मी ने, सरस्वती के धनी पापा को नीचा दिखाने में कब कसर छोड़ी थी । दादी को भी मम्मी के कितने व्यंग्य-वाक्य सुनने पड़ते थे । पापा को धन का कभी मोह नहीं रहा, पर मम्मी के तानों से तंग आकर ही शायद उन्होंने विदेश में नौकरी का निर्णय लिया था । पापा के इस निर्णय को भी मम्मी ने अपने निर्वासन की सजा कह, नकार दिया था ।

'अगर इनमें काबलियत थी, तो क्या भारत में अवसरों की कमी थी ? यहां अनपढ़ मजदूरों के देश में अंधों में राजा बन बैठे हैं ।'

कुछ देर शांत बैठे पापा ने गीता के सिर पर हाथ धर, धीमे शब्दों में कहा था —

'आज अभी तूने जो कुछ कहा, उसे मत भुलाना गीता । भगवान तुझे सुखी रखें ।'

गीता की शादी में मम्मी ने बेहद रोना-धोना मचाया, पर पापा ने शांत रह उनका हर प्रतिरोध व्यर्थ कर दिया । पूरे विवाह समारोह में मम्मी की नकारात्मक भूमिका को पापा अकेले झेलते गये । विदा के समय गीता पापा के सीने से चिपट बिलख उठी थी ।

'पापा अपना ख्याल रखिएगा । जब जी चाहे हमारे पास चले आइएगा ।'

'ठीक है बेटी ... तू चिंता मत कर ।'

'तुम परेशान न हो दीदी, पापा को देखने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लिए मैं जो हूं ।' नीता की उस बात ने गीता को सहारा दिया या नहीं, पर मम्मी का क्रोध चरम सीमा को छू गया था ।

'हां-हां मैं तो जीते जी सबके लिए मर गयी हूं न । जो जिसके जी आये करो ।'

'गीता के चले जाने से घर में और ज्यादा सन्नाटा घिर आया था । वक्त बे वक्त गीता को याद करती मम्मी, उस घड़ी को कोसतीं, जब उनकी कोख से उस करमजली ने जन्म लिया था ।

'पढ़ने जाने के बहाने स्कूल में रास रचा रही थी कंबख्त ।'

आज नीता के साथ राज को आते देख मम्मी का क्रोध उबल पड़ा था ।

'देख नीता एक बहिन तो हमारे मुंह पर कालिख पोत गयी, अब तेरे ये ढंग नहीं चलेंगे समझीं ।'

'वाह गीता दीदी सा भाग्य मेरा कहां ? दीदी तो राज कर रही हैं । सच क्या ठाठ हैं, उनके । जीजाजी बेचारे उनका मुंह ही देखते रहते हैं ।'

'अगर तूने भी वैसा ही करने की ठानी है, तो मैं कहे देती हूं मैं जहर खा लूंगी, बाद में बैठी रोती रहना ।'

'तुम तो मम्मी बात-बेबात शोर मचाये रहती हो । अगर राज मेरे साथ यहां तक आ गया, तो क्या हुआ ? आखिर हम दोनों साथ पढ़ते हैं ।'

'हां-हां मैं जानती हूं, गीता को भी तो वह घर छोड़ने ही आता था ना, हे भगवान इससे तो अच्छा मुझे मौत दे दे ।'

उन्हीं दिनों पापा को माइल्ड हार्ट अटैक पड़ चुका था । मम्मी का रोना-झींकना बदस्तूर जारी था । मम्मी के चीखते-चिल्लाने से पापा विचलित हो उठते ।

'ठीक है मम्मी एक स्टाम्प पेपर पर वसीयत किये देती हूं, तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं करूंगी । जहां जिससे कहोगी, उसी से विवाह करूंगी बस ।'

'सच तू मेरे मनपसंद लड़के से विवाह करेगी, मेरी बात मानेगी ?'

'हां — कह जो दिया, पर एक शर्त है आज से पापा से लड़ाई नहीं करोगी उन्हें ताने नहीं दोगी वर्ना ... ।'

'ठीक है, कुछ नहीं कहूंगी बस । अब देखना मैं कैसा सुंदर सजीला दामाद लाती हूं ।

उस दिन से मम्मी का मूड ही बदल गया । फोन पर अपने बड़े भइया से नीता के लिए लड़का खोजने की बात मम्मी बार-बार दोहरातीं ।

'हां-हां सात-आठ लाख तक तो हम खर्च करेंगे ही, आखिर अच्छा घर-वर मुफ़्त में तो नहीं मिलता । मेरी ही शादी में उस समय तुमने चार-पांच लाख से क्या कम खर्च किये थे भइया ?'

'देखो मम्मी अगर तुमने मेरी शादी के लिए दूल्हा खरीदने की कोशिश की तो मैं शादी नहीं करूंगी । पापा का पैसा मिट्टी में बहाने के लिये नहीं है ।'

'अरे वाह, तू हमारे रीति-रिवाज क्या जाने । हमें जो करना है, करेंगे । बिना दहेज वही लड़की ससुराल जाती है, जिसके मां-बाप कंगाल हों । हमें किस बात की कमी है ।'

अंततः मम्मी ने पटना से एक राजकुमार खोज निकाला था । अभी-अभी मेडिकल की पढ़ाई पूरी कर निकला राजेश, सचमुच बेहद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालीन और सुंदर था। उसे देख माता पा न नहीं कर सकी थी।

मम्मी ने स्वप्न देखने शुरू कर दिये थे। नीता के पटना रहने से उनका भारत से टूटा संपर्क जुड़ने जा रहा था। राजेश को पटना में क्लीनिक खोलने के लिए मम्मी ने चुपचाप कितनी रकम दी, पापा भी नहीं जान सके। बड़े भइया को मारुति कार और सारे घर को सामान खरीदने की जिम्मेदारी दे, मम्मी उत्साह से भर उठी थीं।

उनका खिला मुंह, हंसी-मजाक देख पापा और नीता भी उत्साहित हो उठे थे। सचमुच अपनी जमीन से कट जाना, मम्मी की त्रासदी थी। भाई-भतीजों के बीच हंसती-खिलखिलाती मम्मी, सब पर अपना प्यार बरसातीं परितृप्त दिखती थीं। उनका यह रूप नीता के लिए सर्वथा नया था। मम्मी के मोहल्ले-टोले की पोपले मुंहवाली उनकी चाची-ताई, उन्हें सीने से लगा धार-धार रो उठी थीं —

'वहां जाकर हमें एकदम बिसरा दिया बिटिया ?'

उनके कंधे पर सिर धर, मम्मी जी भर रोयी थीं। अपनी पुरानी सखी-सहेलियों को पा, मम्मी अपने बीते कई वर्ष फलांग, बच्ची बन गयी थीं। मम्मी ने तो अब हल्के स्वर में पापा से भारत वापसी की बातें भी शुरू कर दी थीं

'देखो जी, बहुत दिन काले-पानी की सजा भुगत ली, अब नीता की शादी निबटा हम अपने घर वापिस आ जाएंगे। हम दोनों को और क्या चाहिए ?'

भारत इतना सुंदर है, इस बार ही नीता जान सकी। मामा-चाचा के घर सब बेहद अपनेपन से मिले। नीता की शादी के लिए सब मम्मी-पापा की तरह ही उत्साहित थे। परिवार की स्त्रियों ने नीता को दो दिन पहले पीली साड़ी पहिना हल्दी-तेल की रस्म शुरू कर दी थी। पूरी रात ढोलक पर गाये जानेवाले गीत नीता के मन को गुदगुदा जाते। गीता दीदी की शादी में वो सब उत्साह कहां था। कितनी सूनी थी, वह शादी।

पापा ने शादी के लिए जब होटल लेने की बात कही, तो बड़े मामा नाराज हो उठे थे —

'ये क्या कह रहे हैं। क्या नीता हमारी बेटी नहीं ? इतना बड़ा घर रहते होटल की क्या दरकार है ?'

मामा-चाचा ने शादी का पूरा इंतजाम अपने हाथ में ले, पापा को चिंता मुक्त कर दिया था।

धूमधाम से नीता का विवाह हुआ था। श्वसुर-गृह से कोई मांग न रहने पर भी मम्मी-पापा ने दहेज जी खोलकर दिया था।

हनीमून के लिए राजेश ने प्रस्ताव रखा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हम मारीशस ही क्यों न चलें ? वहां के सी-बीच देखने की बरसों से तमन्ना थी ।'

'उहूंक, हमें नहीं जाना है मारीशस — हम वहां नया क्या देखेंगे ? तुम्हें भी तो हजार बार जाना ही होगा, हमें लाने-पहुंचाने, ठीक कहा न ?' नीता ने मचल कर कहा था ।

'आपका हुक्म सिर-आंखों । चलिए शिमला चलते हैं, पहाड़ तो आपको नये लगेंगे न ।'

खुशी और उमंग में एक महीना कब बीत गया, पता ही नहीं चला । श्वसुर-गृह में नीता सबकी दुलारी बहूरानी थी । घर के सारे सदस्य उसकी छोटी से छोटी जरूरतों के प्रति सजग थे । एक दिन हल्का बुखार आने पर सब परेशान हो उठे थे । सास उसके पलंग के पास से नहीं हटी थीं । माथे पर उनका प्यार भरा हाथ नीता को कितनी शांति दे रहा था ।

बीमारी में नीता को मारीशस याद आया था वहां सबका जीवन कितना व्यस्त है, रिश्तों में भी औपचारिकता का निर्वाह भर होता है । पुत्र-जन्म के समय गीता की हालत बहुत गंभीर हो उठी थी । उस स्थिति में भी गीता की सास बाहरवालों की तरह उसे देखने आने की औपचारिकता भर निभाती रही थीं । मम्मी पापा ने ही सब सम्हाला था । यहां तो घर के दास-दासियां भी उसे परिवार-जनों की तरह स्नेह देते हैं । शादी के बाद मुहल्ले-टोले में जहां भी गयी, सबने उसके आंचल में मिठाई-फल डाल, सुखी रहने के आशीर्वाद दिये थे । कहीं कोई बनावट उसने महसूस नहीं की थी ।

मम्मी-पापा के कई फोन आ चुके थे । नीता के साथ राजेश को मारीशस जाना था । मम्मी अपने भारतीय दामाद से सबका परिचय कराने को उत्सुक थीं ।

उन्हें लेने पापा-मम्मी दोनों एयरपोर्ट आये हुए थे । नीता का प्रसन्न चेहरा देख दोनों के चेहरों पर आश्वस्ति उभर आयी थी । पापा के साथ कार की अगली सीट पर बैठा राजेश मुग्ध दृष्टि से मारीशस का सौंदर्य निहार रहा था ।

दस-पंद्रह दिन पार्टियों में घूमने-घुमाने में बीत गये । राजेश तो जैसे सागर-स्नान का दीवाना हो उठा था । उसे समुद्र से बाहर खींच पाना कठिन होता था । नीता को भी जबरन खींच, राजेश खिलखिला उठता था ।

'सुनो, बहुत दिन एंज्वाय कर लिया । अब हमें घर लौटना चाहिए । मां-पिताजी हमारा इंतजार कर रहे होंगे ।' नीता को अपना श्वसुर-गृह सचमुच याद आने लगा था ।

'तुम्हें एक सरप्राइज देना है, खुशी से उछल पड़ोगी ।' राजेश ने पहेली बुझायी थी ।

'सरप्राइज ?'

'हां, यहां मुझे बहुत अच्छा ऑफर मिला है । अब तुम्हें अपना देश नहीं छोड़ना पड़ेगा ।'

'क्या तुम यहां सेटल होना सोच रहे हो राजेश ?'

'सौ फीसदी ... तुम्हीं कहो अपने देश में मेरा क्या भविष्य है — तीन-चार हजार रुपल्ली से शुरू करके पूरी जिंदगी बर्बाद करो । जानती हो यहां मुझे बीस हजार का स्टार्ट मिल रहा है, साथ में प्राइवेट प्रैक्टिस की भी परमीशन है ।'

'नहीं राजेश तुम यह ऑफर एक्सेप्ट नहीं कर सकते ...'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्यों नहीं कर सकती — तुम्हें तो इस ऑफर से खुशी होनी चाहिए । तुम नहीं जानतीं वहां के दकियानूसी लोगों के बीच तुम्हें एडजस्ट करना कितना कठिन होगा ।'

'तुम्हें मेरी चिंता करने की जरूरत नहीं है, मैं वहां खुश रह लूंगी पर ...'

'मैं तो आलरेडी डिसाइड भी कर चुका हूं । कल फाइनल एक्सेप्टेंस भी दे दूंगा ।'

'तो मेरी बात भी सुन लो, मैं यहां नहीं रहूंगी ... मुझे भारत में ही रहना है । तुमसे शादी की यही शर्त थी राजेश ।'

'कमाल करती हो । चार दिन बाद जब वहां की असलियत खुलेगी, तो सिवा फ्रस्टेशन कुछ नहीं मिलने वाला है । किसी भी कीमत पर मैं यह चांस नहीं छोड़ सकता क्या मिलेगा भारत जाकर ... ।'

'वही जो खोकर मम्मी ने पापा को कभी माफ नहीं किया । नहीं राजेश, तुम नहीं समझोगे, पर हम यहां नहीं रह सकते ... ।'

'एक सच तुम भी सुन लो नीता, तुमसे शादी करने के लिए मैं इसलिए तुरंत तैयार हुआ था, क्योंकि मुझे पता था, इस देश में मेरा भविष्य है । अब तुम्हें निर्णय लेना है, तुम यहां मेरे साथ रहोगी या भारत जाना है ?'

'मैं अकेली ही भारत जाऊंगी राजेश, क्योंकि मैं वो सब पा लेना चाहती हूं, जो मम्मी ने यहां आकर खोया था । मुझे उनकी क्षति-पूर्ति करनी है, राजेश । मुझे वापिस जाना ही होगा ... जाना ही होगा ।'

राजेश को स्तब्ध खड़ा छोड़, नीता कमरे से बाहर चली गयी थी ।

के-९२, श्यामली, रांची-८३४००२

इनके भी बयां जुदा-जुदा

वह मुझको छोड़ गया तो मुझे यकीं आया
कोई भी शख्स जरूरी नहीं किसी के लिए
—सैयद अल्ला शाह

हम वह स्याह नसीब है 'तारिक' कि शहर में
खोलें दुकान कफ़न की तो सब मरना छोड़ दें
—तारिक अज़ीज़

मेरे इस अहदे कयामत में मेरा दोस्त मुझे
कितना नादान है कि जीने की दुआ देता है
—नाजिश अजीमाबादी

मैं अकेली ही चला था जानिबे मंजिल मगर
लोग साथ आते गये और कारवां बनता गया
—मजरूह सुलतानपुरी

मुझको तो होश नहीं तुमको खबर हो शायद
लोग कहते हैं कि तुमने मुझे बर्बाद किया
—जोश मलीहाबादी

गजरी से सब दूध लिया और वहीं किया खैरात
समझ सकी न फिर भी पगली मेरे मन की बात
—ताज सईद

मुझ से मत पूछ क्या सुबह लिखा शाम लिखा
घर की दीवार पे हर रोज तेरा नाम लिखा
—निसार अकबराबादी

जहां तक दिल का शीराज फराहम करता जाता हूं
यह महफिल और दरहम और बरहम होती जाती है
—जिगर मुरादाबादी

दिल के दरिया को किसी रोज उतर जाना है
इतना बेसिम्त न चल लौट के घर जाना है
—अमजद इस्लाम अमजद

मेरी मजबूरियां क्या पूछते हो
कि जीने के लिए मजबूर हूं मैं
—हफीज जलंधरी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

एज खाक-ए-सादी-ए-शीराज़ बू-ए-इश्क आयद
हजार साल पस ऐ मर्ग एज मरेज़ ए बूए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सादी शीराजी की खाक से भी इश्क की (सु) गंध आती है। उसके मरने के हजार साल बाद भी वह इसी तरह 'सुगंध का कोना' बना रहेगा।

फारसी के मशहूर शायर शेख सादी का यह इश्क उस चिरंतर सत्य ईश्वर से था, जिसके इश्क में हमारे भक्त कवियों ने भी अपना जीवन अर्पण किया है। अंतर केवल इतना है कि जहां हमारे देश के कवियों ने स्वयं को 'राम की बहुरिया' के रूप में देखा, फारसी शायरों ने उस परम आत्मा को स्त्री रूप में देखा। उनके विचार में 'जो विश्व का सबसे महान सत्य है, वह 'परम सौंदर्य से जरा-सा कम' नहीं हो सकता। अतः वह स्त्री रूप में ही होगा।'

सैलानी शायर शेख सादी

बार-बार कब्र टूटने का रहस्य

● उषा वधवा

शेख सादी का नाम हम भारतीयों के लिए अपरिचित नहीं है। उनका जन्म लगभग ६०६ हिजरी अर्थात सन ११८४ में शीराज में हुआ था एवं मृत्यु सन १२९१ में। शेख सादी का पूरा नाम शेख मशरफ अलदीन और पिता का नाम अब्दुला था। अपना 'सादी' उपनाम उन्होंने अपने प्रिय शाह अब्बु बकर सैयद के नाम पर रखा था। वास्तव में सही फारसी उच्चारण सादी न होकर 'सअदी' है। उनके पिता शीराज के उच्चकुलीन शिक्षित वर्ग के थे। अतः उन्होंने बेटे को प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात बगदाद भेज दिया, जो उस समय क्षेत्र का सबसे मशहूर एवं महत्त्वपूर्ण शिक्षा केंद्र था।

यायावरी प्रवृत्ति

शेख सादी स्वभाव से ही घुमक्कड़ तबीयत के थे। शिक्षा समाप्ति के बाद उन्होंने चालीस वर्ष तक देश-विदेश का खूब भ्रमण किया। शायर की बेचैन रूह मानो उन्हें कहीं टिककर बैठने ही न देती थी। ईराक, फिलिस्तीन, चीन, अरब, दक्षिण अफरीका, सीरिया, तुर्की, बल्ख कश्मीर इत्यादि अनेक जगह घूमे। उन्हें संपूर्ण मानवता से प्रेम था। वह हर प्रकार के लोगों से मिलते, उनके दुःख-दर्द के भागीदार बनते। ऐसा नहीं कि उन्हें सब जगह स्वागत-सत्कार ही मिला। कई जगह कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा। अनेक खट्टे-मीठे अनुभव भी हुए। सीरिया में ईसाइयों एवं मुसलमानों के एक मजहबी युद्ध में ही उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। पर यह कठिनाइयां उनकी शायराना रूह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को खामोश नहीं कर पायीं । अपितु नये-नये तजुरबे उन्हें अनुभव-संपन्न ही बना गये । उनके इन अनुभवों की झलक उनकी सबसे मशहूर दो पुस्तकों 'गुलस्तान' (फूलों का बगीचा) एवं 'बुस्तान' (फलों का बगीचा) में स्पष्ट देखी जा सकती है । बुस्तान पूरा पद्य संग्रह है, पर गुलस्तान में छोटी-बड़ी अनेक प्रेरणास्पद और मार्गदर्शक कहानियां भी हैं । सादी की ११०० पृष्ठों के विस्तार की कुल बारह पुस्तकें हैं । उन्होंने काव्य की हर विधा में प्रयोग किये । उनके एक विशेष किस्म के काव्य को 'कुलयात' के नाम से जाना जाता है । इसके अतिरिक्त कसीदा, गजल, तेयबात भी हैं । इनमें से गुलस्तान और बुस्तान ने सर्वाधिक प्रसिद्धि पायी है ।

शायरी : एक दरिया

उनका काव्य एक बड़ा दरिया है, जिसमें हर वाक्य का एक गूढ़ अर्थ है । वह न केवल एक शायर थे वरन् दार्शनिक, विद्वान एवं समाज शास्त्र के ज्ञाता भी थे । भारतीय शायर अल्ताफ हुसैन हाली के शब्दों में—

उन्हें गद्य और पद्य दोनों के लिखने में महारत हासिल थी । उनके गद्य में ख्याल की बुलंदी, बयान की सादगी और सोच की गहराई है । किसी धर्माधिकारी की तरह वह अपनी दास्तानों द्वारा आदर्श प्रस्तुत करते चलते हैं, दुःखी व परेशान व्यक्ति को शांति का संदेश देते हैं और मार्गदर्शन भी करते हैं ।'

गुलस्तान और बुस्तान में उनका यह रूप पूरी तरह उभरकर आया है । तुर्की में यह लंबे काल तक पाठ्य-पुस्तक के रूप में पढ़ायी जाती रही । भारत में भी बादशाह अकबर, जहांगीर और औरंगजेब ने स्वयं इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ा और अपने शहजादों के लिए भी पढ़ना अनिवार्य किया, ताकि वह दुनियादारी में कुशल हो सके । इन पुस्तकों में जिंदगी की सच्चाई, समझदारी, व्यवहार-कुशलता, राजनीति, दुनियादारी सब कुछ है । यह ज्ञान का भंडार है एवं हिकमाना जुमलों से भरपूर है— यथा,

खुशबू सूंघकर परखी जाती है, न कि अत्तार के कहने से—

हुनरमंद जहां भी जाएगा, कद्र पाएगा और सदर की कुरसी पर बैठेगा

बेहुनर बचे टुकड़े पाएगा और सख्ती का सामना करेगा—

शिक्षक तो एक ही होता है, विद्यार्थी उसे (अपने-अपने-सा सामर्थ्यानुसार) अलग-अलग रूप में ग्रहण करते हैं—

भाई का द्वार बंद हो तो भी अपना और
गैर का खुला द्वार भी अपना नहीं

गजलों की परंपरा

यह सब सरल काव्य में होने से मन में बस ही जाते हैं । अनुवाद में लय और तुक तो समाप्त हो जाती है । केवल आशय ही देखा जा सकता है । सादी से पहले कसीदा पढ़नेवालों का बोलबाला था । सादी ने कसीदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्रशंसात्मक काव्य) की अहमियत घटाकर सुरूचिपूर्ण गजल लिखने की परंपरा की शुरुआत की । सादी ने कोरी आशिकाना मिजाज की शायरी में नीति एवं चारित्रिक उच्चता का पुट दिया । वह गहन गूढ़ विचारों को सरल शब्दों में व्यक्त करने में समर्थ थे । उनकी कुलियात जिंदगी का आइना व दिल के एहसास का तजुर्मा हैं । दिल जिसमें गम और खुशी, सर बुलंदी व शर्मसारी दोनों हैं । वह मनुष्य हृदय के हर रहस्य के जानकार हैं और उससे हमदर्दी रखते हैं । आत्मप्रशंसा, स्वार्थ, दगा, नेकी व बदी को इतनी खूबसूरती से वर्णन किया है ।

सादी और हाफिज

डॉ. फखरलदीन शादमान ने सादी की तुलना फारसी के अन्य अत्यंत लोकप्रिय शायर के साथ करते हुए लिखा है कि

'हाफिज अपने में मस्त, कोने में बैठा, पुस्तकों में खोया लगता है । उसकी गज़ल रूह की आवाज से सीधे आसमान से उतरती है, जबकि सादी के अनेक रूप हैं । कभी वह दोस्तों के साथ नदी किनारे बात करता, खिलखिलाता है, कभी वह बगदाद के हुक्मरानों के साथ बहस मुबाहसा करता दिखाई देता है, कभी बुतखाने, काबे में मुल्लाओं के साथ सलाह-मशविरा कर रहा लगता है । उसके इश्क के स्वर शिराज से तमाम दुनिया में गूंजते लगते हैं, स्वयं सादी के शब्दों में—

कस न नालीद दर इन अहद चूं मन बर दर दुस्त
कि बाउफाक सुखन मीरवद एज शीराज

—कोई अपने प्रिय के दर पर इतना नहीं रोया होगा, जितना कि मैं और मेरे स्वर शीराज से उठकर आकाश के चारों कोनों में पहुंच रहे हैं ।

विश्व-भ्रमण के कारण सादी की शोहरत उनके जीवनकाल ही में चारों ओर फैल गयी थी । सैलानी इतिहासकार इब्नबतूता सादी की मृत्यु के ५५ वर्ष बाद चीन पहुंचा, तो वहां के अमीर को सादी का प्रेमी एवं उसकी गजल गाते हुए सुना । पटना के खुदाबक्श पुस्तकालय में सादी का पूरा दीवान सुरक्षित है जो या तो स्वयं सादी का लिखा हुआ है अथवा उसी के जीवनकाल में किसी अन्य द्वारा लिखा गया है पर अंत में स्वयं सादी के हस्ताक्षर हैं । लेनिनग्राद में गुलस्तान की नौ प्रतिलिपियां सुरक्षित हैं जो सादी की मृत्यु के २७ वर्ष पश्चात की लिखी हुई हैं । इसके अतिरिक्त आयरलैंड, स्पेन, पेरिस और लंदन के पुस्तक संग्रहालयों में भी उसकी पुस्तकें रखी हैं । यूरोप में वह अन्य फारसी कवियों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय है । फ्रांसीसी, जरमनी, अंगरेजी में उनकी कृतियों के अनुवाद हो चुके हैं ।

भारत, चीन, तुर्की में तो खैर उनके जीवनकाल में ही अनुवाद हो चुके थे । इसके अतिरिक्त सादी ने अपने समकालीन एवं बाद में आनेवाले शायरों को बहुत प्रभावित किया । अमीर खुसरो पर सादी की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है ।

सादी ने वाइज और जाहद (धार्मिक शिक्षक) का परदाफाश किया है । बेशक यह परंपरा उमर खैयाम ने प्रारंभ की, पर इसे चरम उत्कर्ष पर पहुंचाया सादी ने ही । सादी की नाजुक बयानी ने प्यार के जज्बे को बहुत खूबसूरती से निबाहा है । उनके प्रेम में पवित्रता है, तभी तो वह आज सात सौ वर्षों के पश्चात भी उसी तरह गाये-सराहे जाते हैं । उनकी स्वप्न की घुमक्कड़ वृत्ति की ही भांति उनके काव्य में प्रवाह है, दर्द और सोज है, कल्पना की ऊंची उड़ान है और हास्य का पुट भी है । आजाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया से बहुत कुछ सीख, उसे बहुत कुछ बांट, यह आजाद पंछी, थका सैलानी आखिर १२५८ में अपनी जन्मभूमि शीराज लौटा, ठीक उसी तरह जैसे लंबे अंतराल के पश्चात बिछड़ा बालक मां की गोद में आ बैठा हो।

पंछी की भांति वह जीवनभर घूमते रहे। मस्त योगी की तरह उस सर्वशक्तिमान का गुणगान करते रहे। सब कुछ होते हुए भी फकीरों की तरह जिंदगी बितायी। यहां तक कि पैरों में पहनने को जूते भी न रहते।

एक जगह वह लिखते हैं,

मेरे पास पहनने को जूते नहीं थे, पास में पैसे भी नहीं थे पर मैं जमाने के दौर पर रोया नहीं। आसमान से (भाग्य से) शिकवा भी नहीं किया। पैर में जूते नहीं थे तो मन जरूर कुछ उदास था पर तभी एक व्यक्ति को देखा जिसके कि पैर ही नहीं थे तो सब्र कर लिया और खुदा का शुक्रिया अदा किया कि उसने कम से कम मेरे पैर तो सलामत रखे हैं।

पशु-पक्षियों के साथ भोजन

दुनिया से बहुत कुछ सीख, उसे बहुत कुछ बांट, यह आजाद पंछी, थका सैलानी आखिर १२५८ में अपनी जन्मभूमि शीराज लौटा, ठीक उसी तरह जैसे लंबे अंतराल के पश्चात बिछड़ा बालक मां की गोद में आ बैठा हो। पर अब उसे दुनिया से पूर्ण वैराग्य हो चुका था। शहर के बाहर दिलगुशा नामक बगीचे में (यह बगीचा आज भी इसी नाम से जाना जाता है) अपना स्थायी डेरा डाला। उसकी गजलों का स्वर, गजलों में रची-बसी इश्क की महक सब ओर महकने लगी। सुलतान और उलेमा मिलने आते। देर तक बातचीत, सलाह-मशविरा होता। शहर में बढ़िया घर में रहने की जिद करते पर सादी को प्रकृति का वह कोना बहुत प्रिय था। ऊपर नीला आसमान, फूलों की पंखुड़ियों समान उड़ते पंछी, साथ बहती नदी की धारा। कहते हैं सादी के दस्तर ख्वान (भोजन करने की चादर) पर उपवन के पशु-पक्षी भी साथ देते थे। उनका यह निवास स्थान अन्य कवियों, शायरों, विद्वानों के लिए ज्यारतगाह (पूजा स्थली) बन गया था। सादी ने इच्छा व्यक्त की कि मृत्यु के बाद उसी जगह दफनाया जाऊं।

इब्नबतूता जो सादी की मृत्यु के ५७ वर्ष पश्चात शीराज आया था, उसने अपनी किताब में सादी की आरामगाह का जिक्र यूं किया है—

'शीराज के उत्तर-पूर्व में दो ओर से पहंदज नाम की कम ऊंची पहाड़ी के आंचल में सादी की आरामगाह है, जो फारसी का सबसे बड़ा शायर है, आगे बगीचा और साथ में नदी बहती है। सादी ने अपने हाथ-पैर धोने के लिए संगमरमर का एक हौज बना रखा था जो अभी भी विद्यमान है।

कब्र की बदकिस्मती

एक अन्य इतिहासकार अमीर दौलतशाह समरकंदी ने भी इस आरामगाह का जिक्र किया है। पर सादी को मृत्यु के पश्चात यूं आराम से सोने नहीं दिया गया। अनेक बार उसकी कब्र 'दुर्घटनावश' टूट जाती और काव्य, कला प्रिय राजाओं द्वारा फिर बनवा दी जाती। शाह अब्बास, करीमखान जंद द्वारा अपने समय में बनवायी गयी।। सन १७८६ के एक अंगरेज सैलानी ने कब्र पर सोने की एक परत और उस पर सादी की शायरी खुदी होने का जिक्र किया है, जो सम्राट करीम खान जंद द्वारा बनवायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी थी पर उसके बाद वह फिर दुर्घटनावश टूट गयी । क्या है यूं बार-बार दुर्घटनावश टूट जाने का रहस्य ?

कटु सत्य यह है कि शायरी की बुलंदियों को छूने एवं बुद्धिजीवियों, काव्य पारखियों द्वारा पूरी मान्यता प्राप्त करने पर भी सादी अपने वतन के चंद धर्मांध व्यक्तियों का शिकार रहे हैं, जिन्हें यह शिकायत थी कि सादी मन से 'सुन्नी मुसलमान' हो गये हैं जब कि ईरानवासी शिया हैं । अतः मौका पाते ही ये लोग उनकी कब्र तोड़ देते हैं । यही कारण है कि वह जनसाधारण में उतनी लोकप्रियता एवं स्नेह नहीं प्राप्त कर पाये, जितनी इनके बाद आनेवाले हाफिज ने की ।

बहरहाल आधुनिक आरामगाह सन १९५२ में अंतिम शाह मोहम्मद शाह रजा ने फ्रांस के इंजीनियर द्वारा बनवायी एवं उद्घाटित की । उसी पहलेवाली जगह में ही यह ४ हजार वर्ग में फैली है जिसका २६१ वर्गमीटर बना हुआ और शेष लंबा-चौड़ा बगीचा है । रंगीन पत्थरों से बनी वह आरामगाह सादी चौरस आकार की है । जिसके खंबों, दरवाजों, महराबों पर सादी की शायरी अमर कर दी गयी है और बगीचे के मुख्य द्वार पर सादी का मशहूर शेर है—

सादी की खाक से भी इश्क की.....

शायर प्रायः ही अपने बारे में कुछ न कुछ कहते हैं और इतने जागरूक, पैनी नजरवाले होने के कारण स्वयं का सही आकलन भी कर ही लेते हैं । बतर्ज गालिब के 'अंदाजे बयां और.....)।' अनेक शायरों ने स्वयं के बारे में कहा है । सादी ने एक जगह यूं लिखा है—

'बर हदीस मन व हुसन तू नीफजायद कस
हद हमीन अस्त सुखनगोई व जीबाई रा

मेरी शायरी व तुम्हारे हुसन से बढ़कर कोई न हो सका । अभिव्यक्ति और हुस्न की बस यही सीमा है ।

और सादी के विषय में तो कम से कम यह बात एकदम सही ही है ।

—जी. १० मसजिद मोठ
नयी दिल्ली-११००५

जिस मनुष्य से आप वार्तालाप कर रहे हैं उसमें पूर्ण ध्यान देने में ही सफल व्यवसाय (का गुर) निहित है ।

— इलियट

जीवन में सफलता पाना प्रतिभा और अवसर की अपेक्षा एकाग्रता और निरंतर प्रयास पर कहीं अधिक आबलंबित है ।

— सी. डबलयू. यैंडेल

निःस्वार्थता की मात्रा के अनुपात में सफलता की मात्रा रहती है ।

— विवेकानंद

प्रत्येक सफल मनुष्य के जीवन में एक अटूट निष्ठा, तीव्र प्रामाणिकता का कोई-न-कोई केंद्र अवश्य रहता है और वही उसके जीवन में सफलता का मूल स्रोत होता है ।

— विवेकानंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

नापते समय डर

प्रकाश गुप्ता, कर्सियांग (दार्जिलिंग) : आयु ३९ वर्ष । मेरी कपड़े की दुकान है । समस्या यह है कि मैं कपड़ा नापते समय डरता हूं । २-३ वर्ष पूर्व से ग्राहकों के कहने पर कि ठीक से नापिएगा । कम न हो जाए या फिर पूरा नापकर दिया होगा । जैसी बातों से खिन्न हो जाता हूं । क्रोध से ग्राहक से संबंध-विच्छेद होने का डर होता है । ग्राहक आते ही कपड़ा नापने का भय आरंभ हो जाता है । एकाग्रता, शक्ति की कमी, अवसाद आदि दोष भी हैं । पत्नी गठिया रोग से पीड़ित है । बचपन से ही आत्मीयजनों से सहयोग की कमी है । संवेदनशील महत्वाकांक्षी हूं । कृपया कोई उपाय सुझाएं ।

आपको न तो दुकान में जाना बंद करना चाहिए, न कपड़ा नापना बंद । क्योंकि जैसे ही आप यह बंद करेंगे, भय कम नहीं होगा । अपितु और बढ़ जाएगा । इसलिए आवश्यक है कि कार्यशील रहें । ऐसा सोचिए कि ग्राहक व दुकानदार के बीच कोई बातचीत तो होगी ही । व्यवसाय में यह होता ही है । चुपचाप मशीन या रोबोट की भांति व्यवसाय संभव नहीं । वास्तव में लोग आपको न तो दोषी ठहरा रहे हैं, न ही आपकी नियत पर शक कर रहे हैं । वह केवल कुछ बातचीत कर रहे हैं । ऐसा सोचकर अवश्य ही आप अपनी समस्या पर काबू पा सकेंगे ।

लोग पागल कहते हैं !

सतीश कौशिक, फैजाबाद : आयु १७ वर्ष है । इंटर का छात्र हूं । मेरी प्रवृत्ति बड़ी विचित्र है । ज्यादा किसी से संबंध नहीं रखता । अकेला रहना सदैव पसंद करता हूं । आधुनिकता व फैशन का शौक बिलकुल नहीं । खेलों में रुचि नहीं । शास्त्रीय संगीत से बेहद प्रेम है । पढ़ाई में काफी तेज हूं । घरवालों से भिन्न तथा इस प्रवृत्ति से सनकी या पागल कहलाया जाता हूं । क्या मैं सही हूं या गलत ?

हरेक व्यक्ति एक समान हो, ऐसा नहीं । कुछ लोग अंतर्मुखी होते हैं तो कुछ बर्हिमुखी । दोनों एक-दूसरे को गलत समझते हैं । हां बर्हिमुखी लोग चूंकि बातचीत अधिक करते हैं इसलिए अपनी बात को जोर देकर कहते हैं । तथा अपने को सही जताते हैं । वास्तव में दोनों प्रकार के गुणों का संतुलन अच्छा है । आप अपने मित्रगण शास्त्रीय संगीत के प्रेमी व पढ़ाई में तेज़ होकर भी बना सकते हैं । आप न तो सनकी हैं, न पागल, न गलत । हां, थोड़ी सामाजिकता अपनायें । हीन भावना व कुंठा न पालें ।

सर में दर्द

शिवशंकर, छपरा : मेरी आयु २० वर्ष है । २-३ वर्ष से पेट में दर्द था । सर्जन ने अपेंडिक्स का दर्द कहा, दवाई दी फिर ऑपरेशन करने को कहा । किसी अन्य डाक्टर को दिखाया तो उसने कीड़े की दवा दी । आज तक दर्द नहीं हुआ । परन्तु दो बार १९९३ में बेहोश हुआ । इससे डॉक्टरों ने मिरगी का रोग बताया । दुबला-पतला हूं । क्या मिरगी का रोगी हूं—या यह रोग सदमे से है । पढ़ने में मन नहीं लगता । सर में दर्द है ।

पेट के कीड़ों के कारण इस प्रकार का दर्द भी होता है । कई बार इस आयु में मिरगी के लक्षण भी पनप जाते हैं, क्योंकि कीड़े अंडे देते हैं और यह अंडे 'सिस्ट' की शक्ल में दिमाग में पहुंच जाएं तो इससे मिरगी का रोग हो सकता है । या कारण भी बन सकता है । आप स्नायु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विशेषज्ञ द्वारा जांच कराकर कुछ खास तरह के 'एक्सरे' करने की यदि वह सलाह दे तो करा लें। सही इलाज निदान से ही संभव है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नींद आना

मोहन कटिहार, बिहार : १७ वर्ष का छात्र हूं। रात को ८-१० घंटे सोता हूं, फिर भी पढ़ते समय हमेशा नींद आती है। कृपया समस्या पर सुझाव दें।

सही नींद लेने के पश्चात भी पढ़ते समय नींद आने का अर्थ है कि आप पढ़ाई से भागना चाहते हैं। पढ़ने में किसी खास विषय में रुचि न होना अथवा पढ़ाई का परीक्षा से संबंध होने के कारण तनाव का उत्पन्न होना भी इसका कारण हो सकता है। पहले आपको चाहिए कि कुछ रुचिवाली पुस्तकें पढ़ें। जैसे रोमांचकारी उपन्यास, नॉवल आदि। इस प्रकार धीरे-धीरे पढ़ने की आदत डालें। फिर जब आदत पड़ जाए, तब अपनी पुस्तकें पढ़ें। साथ ही अपने विषय को रुचिपूर्वक बनायें तथा प्रतिस्पर्धा से न घबरायें। धीरे-धीरे पढ़ाई का समय बढ़ाएं। एक साथ सारा बोझ अपने मस्तिष्क पर न डालें। जो पढ़ रहे हैं, उसी पर एकाग्रचित रहें तथा जो विषय या कोर्स अभी रहता है, उसके बारे में ने सोचें।

कहानी ने ज़हर घोला

अ. ब. स. बेगुसराय : २० वर्ष की हूं। ८ माह पूर्व मेरी शादी हुई। एक बार पति ने बताया कि उनका कॉलेज में किसी लड़की को लेकर आकर्षण हुआ। पत्र-व्यवहार भी हुआ, संबंध यहीं तक सीमित रहा। दोनों का अलग-अलग विवाह हुआ। अब कुछ नहीं है। मैंने उनकी बात पर विश्वास किया तथा मेरी चाह पर उसका कोई प्रभाव न हुआ। समस्या तब आयी, जब मेरे मन में विचार आया कि यदि यह मेरी जगह होते तो क्या मुझसे नफरत करते अथवा पूर्ववत् प्रेम।

इस संभ्रम के संदर्भ में अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें।

—संपादक

जिज्ञासावश मैंने एक मनगढ़ंत कहानी सुनायी कि मेरा दस वर्ष की आयु में बलात्कार हुआ। शुरू में तो चाहत वैसे ही थी, परंतु अब स्वभाव में परिवर्तन है। वह दूसरे दिन ही अपनी नौकरी पर चले गये। मैं ससुराल में ही हूं। पत्रोत्तर नहीं देते। बड़ी उलझन में हूं। इनके अविश्वास का एक और कारण यह है कि प्रथम मिलन पर मुझे रक्त नहीं आया था। यह शक उनके मन में था, परंतु मुझे बताया न था। रक्त का आना यदि आवश्यक है तो ऐसा मेरे साथ क्यों हुआ। मैं तनाव में हूं कि जहां खेल-खेल में भयानक भूल कर बैठी वहीं भय भी है कि क्या मैं असामान्य हूं अथवा रोगी। कृपया मदद करें।

वास्तव में बहुत कम पुरुष हैं जो अपनी पत्नी के प्रेम-प्रसंग या शारीरिक संबंधों को खुली दृष्टि से देखते हैं। चाहे वह शादी से पूर्व के क्यों न हों। आपके पति दूसरे ही दिन अपनी नौकरी पर चले गये। ऐसी स्थिति में आपसे मिलकर बातचीत करने का मौका न मिला, इससे भ्रम और मजबूत हो गया। वास्तव में आपसे दूर वह आपकी याद कर अपना समय बिताते होंगे परंतु उस याद के साथ इस बात को भी याद करते होंगे। आपके पति को गलतफहमी है कि प्रथम मिलन पर रक्त आना आवश्यक है। ऐसा प्रचलित अंधविश्वास है, और कुछ नहीं। आप पहले मौके पर ही मिलकर पूरी बात खुलकर समझा दें तथा उनकी गलतफहमी भी दूर कर दें। आशा है शीघ्र ही आप इस समस्या से छुटकारा पा लेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कु. ने. सिं., प्रतापगढ़ (उ. प्र.) : २५ वर्ष की एल. एल. बी. की छात्रा हूं। पढ़ाई में सदैव अच्छी रही। हर बात को बहुत गहराई से लेती हूं। अत्यधिक भावुक हूं। मन में हर समय कोई न कोई बात उमड़ती रहती है। परीक्षा के समय यह बढ़ जाता है। इससे एकाग्रचित नहीं हो पाती। हर वस्तु व हर बात से जुड़ी कोई न कोई घटना दिमाग में आती रहती है। इस कारण मुझे परीक्षा छोड़नी पड़ी और आत्मविश्वास को धक्का लगा। कहां सोचा था कुछ करके दिखाऊंगी, पर अब लगता है कुछ नहीं कर सकती। इसके साथ ही एक और बीमारी से पीड़ित हूं। अवचेतन मन में कैंसर का भय है। एकाग्रचित होकर बैठती हूं तो मन में तरंगें उठती हैं जो कहती हैं—मुझे कैंसर हो जाए। पूजा के समय भी ऐसे विचार आते हैं। मेरी मानसिक हालत ने मुझे असामान्य बना दिया है। मन नहीं लगता। हंसना भूल गयी हूं। क्या करूं, दिल्ली में इलाज कहां उपलब्ध है ?

वास्तव में आपकी दोनों समस्याएं एक ही रोग के लक्षण हैं 'ऑवसेसिव कंपलसिव डिसऑर्डर', अवसाद भी ऐसे रोग में हो जाता है। कैंसर का भय भी इसी रोग का लक्षण है। परीक्षा जैसी तनावपूर्ण स्थिति में यह रोग बढ़ जाता है। आजकल इस रोग का इलाज है तथा यदि आप दिल्ली आकर इलाज कराना चाहें तो सभी दिल्ली के अस्पतालों में इसकी व्यवस्था है। उत्तर प्रदेश में भी मनोचिकित्सक द्वारा इलाज संभव है।

क्या मुझे एड्स है ?

सु. कु. नवादा, बिहार : इंटर का छात्र हूं। आयु १७ वर्ष है। तीन साल से हस्तमैथुन की बुरी लत है। लगता है मुझे एड्स हो गया, क्योंकि लिंग के अगले भाग में वीर्य हमेशा अल्प मात्रा में रहता है। क्या इतने दिनों से रोज हस्तमैथुन से एड्स हुआ है ? शारीरिक संबंध कभी नहीं किया। मेरे जीवित रहने से कहीं रोग न फैल जाए। इसलिए डाक्टर साहब, क्या मुझे आत्महत्या कर लेनी चाहिए ?

आजकल एड्स की चर्चा अधिक है, इसलिए आपको इस बीमारी का डर बैठ गया है। वास्तव में एड्स के रोगी आप कदापि नहीं। आपका शारीरिक संबंध किसी से नहीं हुआ। यदि कोई किसी ऐसे स्त्री या पुरुष से शारीरिक संबंध जोड़ता है, जिसमें एड्स के कीटाणु हैं, तभी यह संभव है, या फिर खून द्वारा अथवा टीके द्वारा। हस्तमैथुन से यह रोग नहीं होता, न ही आपको एड्स के कोई लक्षण हैं। हां सैक्स को लेकर आपको कई गलत धारणाएं हैं। ऐसा लगता है कि सैक्स संबंधी समस्याओं को लेकर मानसिक तनाव है। यूं तो हस्तमैथुन सामान्य स्वाभाविक क्रिया है—सभी स्त्री-पुरुष करते हैं, परंतु संयम बरतना आवश्यक है।

किसी कठिन कार्य में सफल हो जाना आत्म-विश्वास के लिए संजीवनी के समान है।

— प्रेमचंद

वही सफल होता है जिसका काम उसे निरंतर आनंद देता रहता है।

— थोरो

आप अपना जो मूल्य आंकते हैं, सफलता उसी का साकार रूप है।

— एलबर्ट हवर्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-दुर्बलता का शिकार अर्जुन

● रमाकांत 'कांत'

द्रौपदी की आकांक्षा थी कि उसे अर्जुन-जैसा धनुर्धारी वर मिले। स्वयंवर में जीत लेने के बाद, जब उसे ज्ञात हुआ कि वह अर्जुन है, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुई। उसने उसके साथ राजसी ठाठ-बाट के बिना वन में रहना भी सहर्ष स्वीकार कर लिया।

मगर अनजाने में ही एक अकल्पनीय घटना घट गयी। उसे कुंती द्वारा अनजाने में ही पांचों भाइयों की पत्नी बन जाने का आदेश दे दिया गया। जब उसे वस्तुस्थिति का ज्ञान हुआ, तो अत्यंत क्षोभ हुआ। वह बोली—"मैंने कभी मिथ्याभाषण नहीं किया है। मेरे इस वचन ने मुझे धर्म-संकट में डाल दिया है। बेटा, (धर्मराज युधिष्ठिर) मुझे अधर्म से बचा।"

"धर्मपूर्वक तुमने पांचाली को प्राप्त किया है, अतः तुम इससे विवाह करो"—धर्मराज ने अर्जुन को कहा।

"बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह करना अधर्म है। आप मुझे अधर्म हेतु प्रेरित नहीं करें। द्रौपदी के साथ आपका विवाह करना उचित है"—अर्जुन ने नम्रतापूर्वक प्रतिवाद किया।

युधिष्ठिर ने देखा, कि सभी भाई द्रौपदी के अलौकिक सौंदर्य पर मुग्ध हैं। सभी उसे प्राप्त करना चाहते हैं। उन्होंने कहा—"माता के सत्य की रक्षा के लिए हम पांचों भाई इससे विवाह करेंगे। यह महाभागा हम सबकी समान रूप से पत्नी होगी।"

महाराजा द्रुपद ने पांडवों के पीछे-पीछे धृष्टद्युम्न को उनका वास्तविक परिचय जानने के लिए गुप्त रूप से भिजवाया था। उससे उनको वास्तविकता का ज्ञान हुआ। वे यह तो जान चुके थे कि ब्राह्मणकुमारों के वेश में वे पांचों पांडव हैं तथा स्वयंवर विजेता स्वयं धनुर्धारी अर्जुन था। पर पांचों भाइयों की पत्नी बनने की बात न द्रुपद को स्वीकार्य थी और न ही स्वयं द्रौपदी को।

पांचाली का ग्रहण

उधर कृष्ण पांडवों से आ मिले थे। उन्होंने द्रौपदी को समझा दिया था कि उसका पांचों पांडवों के साथ विवाह करना उचित है। चूंकि पांचों पांडवों में पांच देवताओं (धर्मराज, वायु, इंद्र एवं अश्विनी कुमार) का अंश था और द्रौपदी स्वयं अग्निसुता, थी अतः उनके ओज को समा पाने की सामर्थ्य केवल उसमें ही निहित थी। कृष्ण के तर्कों एवं सम्मति को सुनकर वह सहमत हो गयी।

महाराजा द्रुपद को भगवान व्यास ने आकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

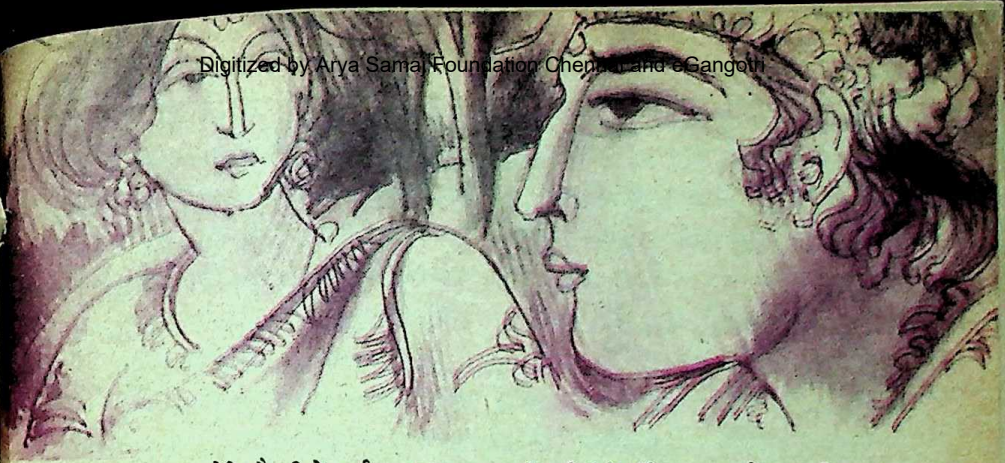

समझाया । जब उन्होंने द्रौपदी के पूर्वजन्म का चरित बताकर समझाया, तो द्रुपद ने भी यह बात स्वीकार कर ली । इसके बाद विधिपूर्वक क्रमशः एक-एक दिन पांचों भाइयों ने पांचाली का पाणिग्रहण किया ।

पांचों भाइयों के सम्मुख यह सांसारिक प्रश्न उपस्थित हो गया कि पांचाली, पांचों भाइयों की समान रूप से पत्नी कैसे बनी रहे, ताकि किसी तरह विवाद और विग्रह की स्थिति नहीं बने । वह किसी पांडु पुत्र की दुर्बलता साबित नहीं हो और न ही किसी की असामान्य ताकत बनकर विध्वंस की कारण बने । अतः इस प्रच्छन्न किंतु मार्मिक संकट का हल अति आवश्यक था ।

पांडव किसी सर्वमान्य हल को ढूंढ़ पाते, इससे पूर्व ही देवर्षि नारद भू-लोक का विचरण करते हुए वहां आ गये । निवेदन करने पर उन्होंने 'सुंदउपसन्द' की घटना सुनाकर यह व्यवस्था सुझायी कि द्रौपदी एक-एक वर्ष के लिए 'अकल्मष भाव' (रजोनियमानुसार) से क्रमानुसार प्रत्येक भाई के साथ सहचर्य करे । यदि कोई भाई, भूलवश भी, किसी अन्य भाई के साथ अनुरक्त द्रौपदी को देख ले तो उसे दोषी माना जाए । पश्चातापस्वरूप दोषी भाई को ब्रह्मचर्य नियमाधीन बारह वर्ष का वनवास भुगतना होगा । नारद द्वारा सुझाये गये नियमों को सभी भाइयों ने बिना किसी अपवाद के स्वीकार कर लिया ।

दैवयोगवश घटनाक्रम इस तरह घटित हुआ

महाराज द्रुपद ने पांडवों के पीछे-पीछे धृष्टद्युम्न को उनका वास्तविक परिचय जानने के लिए गुप्त रूप से भिजवाया था । उससे उनको वास्तविकता का ज्ञान हुआ । वे यह तो जान चुके थे कि ब्राह्मणकुमारों के वेश में वे पांचों पांडव हैं, तथा स्वयंवर-विजेता स्वयं धनुर्धारी अर्जुन था । पर पांचों भाइयों की पत्नी बनने की बात न द्रुपद को स्वीकार्य थी और न ही स्वयं द्रौपदी को ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कि एक बार यह नियम टूट गया। इस नियम को तोड़नेवाला स्वयं अर्जुन था। हुआ यह कि अपने लुटते हुए गोधन को बचाने के लिए एक विप्र ने अर्जुन से प्रार्थना की। विप्र की रक्षा याचना की अवमानना क्षत्रिय धर्म के अनुकूल नहीं थी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विप्र-याचना की रक्षा

पर अर्जुन के लिए यह घड़ी गंभीर संकट की थी। उसका गांडीव एवं शस्त्रास्त्र उस कक्ष में रखे हुए थे जहां द्रौपदी, नियमाधीन युधिष्ठिर के साथ समासीन थी। अर्जुन के सम्मुख दो ही विकल्प थे, या तो धर्म की अवहेलना कर ब्राह्मण से क्षमायाचना कर ले अथवा परिणाम की परवाह किये बिना कक्ष से शस्त्रास्त्र प्राप्त कर याचक के गोधन की रक्षा करे।

इस द्वंद्वात्मक स्थिति ने क्षणभर तो अर्जुन को हतबुद्धि किया, किंतु उसने अविलंब क्षत्रिय धर्म की रक्षा करना निश्चित किया। ऐसा अनुचित भी नहीं था। वह बेधड़क उस प्रकोष्ठ में प्रवेश कर गया, जहां द्रौपदी के साथ युधिष्ठिर एकांतवास में लीन थे।

यद्यपि लक्ष्यदृष्टा अर्जुन का एकमेव लक्ष्य शस्त्रास्त्र प्राप्त करना था न कि द्रौपदी के रूप-लावण्य का अवलोकन करना और न ही उसका ध्येय युधिष्ठिर-द्रौपदी के एकांतवास में व्यवधान पहुंचाना था। वह अंदर प्रविष्ट हुआ और क्षणभर में ही शस्त्रास्त्र उठाकर लौट आया। परिणाम की परवाह किये बिना अर्जुन ने द्विज के गो-धन की रक्षा की।

प्रतिज्ञानुसार अर्जुन को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वन-गमन का निर्णय स्वीकार करना पड़ा। मगर नियति को तो कुछ और ही स्वीकार था। बहिर्गमन आदेश की अनुपालना करते हुए अर्जुन ब्रह्मचर्य व्रत का पालना नहीं कर सका। कालांतर में जहां द्रौपदी उसके लिए असामान्य ताकत साबित हुई वहीं तीन-तीन स्त्रियां उसकी दुर्बलता बनकर प्रकट हुईं। इसीलिए ब्रह्मचर्य पालन के स्थान पर वह विवाहेत्तर संबंधों का दोषी साबित हुआ।

तीर्थाटन करते हुए जब अर्जुन हरिद्वार पहुंचा, तब स्नानार्थी अर्जुन का अपहरण नागकन्या उलूपी ने कर लिया। काम पीड़िता उलूपी ने अर्जुन से अनुरक्त होने की प्रार्थना की। अर्जुन ने ब्रह्मचर्य से प्रतिज्ञाबद्ध होने की बात बतायी।

मगर उलूपी ने मर्मभेदी तीर से अर्जुन को आहत करते हुए उसे अपने प्रति अनुरक्त होने के लिए समझाते हुए कहा—"द्रौपदी के कारण आप पांचों भाइयों में कोई वितंडावाद पैदा नहीं हो जाए, इसीलिए ब्रह्मचर्य और वन-गमन का नियम बनाया गया था। यह नियम केवल द्रौपदी से विरक्त रहने के लिए है, न कि मुझ-जैसी निरपेक्ष नारी को निराश करने के लिए। यदि ब्रह्मचर्य व्रत भंग होने से कुछ अधर्म होता भी है तो हे धनुर्धर, मेरी स्त्रियेच्छा शांत करने से तुमको इतने धर्म-कर्म की प्राप्ति होगी कि उस अधर्म की प्रतिपूर्ति स्वयं हो जाएगी।"

"यदि स्त्री काम-पीड़ित हो, किसी योग्य पुरुष से स्त्रियेच्छा शांति के लिए प्रार्थना करे, तो यह उसका पुरुषोचित कर्त्तव्य है कि वह उसे अंगीकार करे। हे वीर पुरुष, मैं तो तुम्हारी सहचरी बनने के लिए न जाने कब से आतुर हूं। अतः तुम मेरी प्रार्थना स्वीकार करो और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुग्रहित करो ।"

नागलोक में विचरण

स्त्री-दौर्बल्य का शिकार हो, अर्जुन ने उलूपी की याचना को स्वीकार कर लिया । वह दो वर्ष नाग-लोक में रहा । उलूपी के साथ पतित्व का निर्वाह करते हुए उसने उसे मातृत्व का वांछित सुख प्रदान किया । अर्जुन के संयोग से उलूपी ने 'इरावान' नामक पुत्र को जन्म दिया । तत्पश्चात उलूपी से विदा लेकर अर्जुन आगे प्रस्थान कर गया ।

आगे परिभ्रमण जारी रखते हुए अर्जुन उत्तर-पूर्व दिशा की ओर बढ़ गया । वह, वहां से मणिपुर नगर पहुंच गया । वहां के राजा चित्रवाहन की सुपुत्री चित्रांगदा अत्यंत सुंदर एवं गुणशीला थी । चित्रांगदा को देखकर अर्जुन कामासक्त हो गया । चूंकि वह स्त्री दुर्बलता का शिकार होकर उलूपी के सम्मुख ब्रह्मचर्य का आवरण त्याग चुका था, इसीलिए चित्रांगदा से प्रेम-याचना करने में अब कोई परेशानी नहीं थी ।

उसने अपना परिचय देते हुए राजा चित्रवाहन से चित्रांगदा की याचना की । योग्य वर पाकर चित्रवाहन प्रसन्न था । पर उसने उसके साथ एक शर्त रखी कि चित्रांगदा से उत्पन्न संतान तुम मुझे गोद दे दोगे, क्योंकि वह स्वयं निःसंतान था ।

उसने राजा चित्रवाहन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया । चित्रांगदा से विवाह कर, वह वहां रहने लगा । वह तीन वर्ष मणिपुर रहा । इस अवधि में उसके एक पुत्र हुआ, जिसका नाम बभ्रुवाहन रखा गया । वह राजा चित्रांगद का दत्तक पुत्र बनकर कालांतर में मणिपुर का राजा बना ।

सुभद्रा का हरण

वहां से घूमते-फिरते अर्जुन द्वारिका पहुंच गया । द्वारिका में उसकी काम-दृष्टि की अगली शिकार कृष्ण की बहन सुभद्रा हुई । दोनों एक दृष्टि में ही परस्पर चाहने लगे । कृष्ण इन दोनों के विवाह के लिए सहमत थे । पर, बलराम, सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से कर देना चाहते थे । यह राजनीतिक रूप से भी अर्जुन के अनुकूल नहीं था । इसीलिए कृष्ण की सलाह एवं परामर्श पर उसने सुभद्रा का हरण कर लिया ।

कृष्ण ने बलराम का क्रोध शांत किया, तब वह अर्जुन और सुभद्रा को स्वीकार कर सके । तत्पश्चात अर्जुन एक वर्ष तक द्वारिका रहा । यह भी उल्लेख मिलता है कि अर्जुन ने सुभद्रा के साथ अवशिष्ट प्रवास काल पुष्कर तीर्थ पर व्यतीत किया ।

इस तरह अर्जुन ने क्षात्र धर्म का निर्वाह करते हुए द्विज के गोधन की रक्षा के लिए बारह वर्ष का वन गमन एवं तीर्थाटन स्वीकार किया । मगर वह न ब्रह्मचर्य का पालन कर सका और न ही एक पत्नीनिष्ठ रह पाया । स्त्री-दुर्बलता का शिकार होकर उसने विवाहेत्तर संबंध स्वीकारे । हां, यह अवश्य है कि कालांतर में ये संबंध पांडवों की राजनीतिक शक्ति साबित हुए ।

—जी.एच. १३/५९८, पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-११००४१

मेरा विश्वास है कि किसी व्यवसाय में सफलता पाने का ठीक मार्ग उस व्यवसाय का अपने को पूर्ण ज्ञाता बना लेना है ।
— कारनेगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक थीं सिताला

● डॉ. अरुण त्रिवेदी

सिताला समाज की विधवा-नियति का सबसे 'बोल्ड-स्ट्रोक' थीं, शील और सौंदर्य नहीं, प्रकृति तूलिका का जो शक्ति-संघात है, सिताला उसी से बनी थीं। वह गांव की गलियों में एक हंगामे की तरह उठा करती थीं और उनकी जोरदार ठहाके-भरी आवाज आधे गांव में एक साथ सुनायी देती थी। दरअसल वह कुछ ऊंचा सुनती थीं, इसी से उनकी आवाज भी काफी ऊंची हो गयी थी। वह बाद में पहुंचती थीं, पर उनकी आवाज गंतव्य तक काफी पहले पहुंच जाया करती थी। सिताला-रूपी आंधी का आवाज-रूपी झोंका पायलट की तरह उनके आगमन की सूचना बहुत पहले वितरित कर देता था—बा-अदब, बामुलाहिजा होशियार, कच्ची-पक्की बात सुनने को तैयार, सिताला आ रही हैं।

यह आजादी से थोड़ा पहले का भारत था, उन दिनों अवध के गांवों में विधवा औरतें बहुतायत से दिखायी देती थीं, शायद ही ऐसा कोई घर रहा हो, जहां कोई विधवा औरत न हो। ये औरतें प्रायः बाल-विधवा हुआ करती थीं, इसका एक कारण तो यह था, कि उन दिनों आदमी की उम्र काफी कम हुआ करती थी, आखिर गुलाम देश का आदमी कितने दिन जिये, दूसरे ये गरीब ब्राह्मणों की बेटियां प्रायः बूढ़ों को ब्याही जाती थीं और ये बूढ़े इन्हें वैधव्य के सलीब पर लटकाकर जल्दी ही इस दुनिया से कूच कर जाया करते थे। तब ये अपने सलीब उठाये अपने मायके आ जाती थीं, जहां पिता के दायित्व और मां के आंचल की छाया जब तक नसीब होती थी, इनकी जिंदगी किसी तरह कट जाती थी, फिर तो भाई के निर्जीव कर्त्तव्य-बोध और भौजाइयों के तानों के बीच इसी जीवन में इन्हें नर्क के अधिकांश का परिज्ञान हो जाता था।

मायके में रहनेवाली इन विधवा औरतों को 'बुआ' का संबोधन सहज ही प्राप्त था। इन बुआओं की इतनी भरमार थी, कि चाचाओं, भाइयों और भौजाइयों का न लगकर गांव उन दिनों बुआओं का लगा करता था। पारिवारिक जीवन में इनका चाहे जितना तिरस्कार होता रहा हो, पर सामाजिक जीवन में इनका बहुत अधिक महत्त्व था, एक प्रकार से ये तत्कालीन सामाजिकता की प्रमुख संवाहिका थीं। घर के शादी-ब्याह या मुंड़ना-मड़चटना रहे हों अथवा गांव के नाटक-रामलीला, इनका नेतृत्व सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं उपयोगी था, इसीलिए उत्सव-त्यौहारों से लेकर बाग-बगीचे और खेत-खलिहान तक सब कहीं ये सिताला, फूलमती, जगराना, रमदेई, रामरती और रामकली आदि छायी रहती थीं, यही नामावली उन दिनों फैशन में थी। इससे बेहतर व्यक्तिवादी संज्ञाओं की रचना तत्कालीन पुरोहित नहीं कर पाते थे, और कर भी पाते थे, तो एकाध अमीर घरों के लिए कर भी देते थे।

सिताला की उम्र उतनी नहीं थी, जितनी बड़ी उनकी हैसियत थी, दर-असल गांव में उनसे बड़ा कोई था ही नहीं। वह हमारे कुनबे की उस शाखा में जन्मी थीं, जो बहुत बाद तक बच्चे पैदा कर रही थी। तब नियोजन का जमाना नहीं था और तीन-तीन पीढ़ियां भी बड़े मजे से बच्चे जना करती थीं। चाचा-भतीजे ही नहीं बाबा-पोते भी एक साथ पैदा होते थे। फिर बड़ा कुनबा था, बच्चे कहीं-न-कहीं तो पैदा होते ही रहते थे, पर उनके रिश्ते वही होते थे, जो होने चाहिए। यद्यपि सिताला की उम्र हमारी दादी की उम्र से भी काफी कम थी, पर रिश्ते में वह हमारी परदादी की ननद लगती थीं। इस तरह सिताला हमारे कुनबे के केंद्र में थीं। समय ने पारिवारिक संबंधों का सूप कुछ इस तरह पछोरा था, कि भारी जिंस की तरह सिताला सूप में धरी थीं और हलके पछोरन की तरह हम लोग उड़े-उड़े फिरते थे। सिताला को अपनी इस स्थिति और दायित्व दोनों का ही भान था, इसीलिए वे सब पर बराबर स्नेह प्रकट करती थीं, एक-एक बच्चे को पहचानती थीं, प्यार करती थीं और पैसे भी खर्च करती थीं। पैसा उनकी भौतिक महत्ता का सबसे भारी पहलू था।

सिताला मालदार औरत थीं, इसलिए नहीं कि ससुराल से काफी माल लेकर आयी थीं, वरन इसलिए कि वह धन के लिए स्वयं उद्यम करती थीं। मैंने उन्हें गहनों से जड़ा हुआ ही देखा, उनके गौर-वर्ण और तीखे नाक-नक्श वाले चेहरे को सोने की हंसली स्पष्ट रेखांकित करती थी। तब सोने की हंसली कोई-कोई ही पहनता था, पर सिताला ने उसे कभी उतारा हो, मुझे याद नहीं।

मध्यप्रदेश के किसी गांव में सिताला की कुछ जमीन-जायदाद थी, कुछ लेन-देन का धंधा भी वह करती थीं। यह सिलसिला संभवतः उनके पति का बनाया हुआ था, जिसे वह अपने बूते पर चलाये हुए थीं। इस तरह उन्हें पर्याप्त धन मिल जाया करता था, पर यह धन उनके किसी काम नहीं आया, क्योंकि वह नितांत अकेली थीं। पारिवारिक स्तर पर अपना कहने को हमारे गांव में बस उनका एक भतीजा था। भतीजा कुछ करता नहीं था, वस्तुतः उसके पास कोई काम था ही नहीं, इसी से उसने सिताला का धन खर्चने का काम अख्तियार कर

सिताला अकेली थीं, पर अकेली होकर भी अकेली नहीं थीं, वह पूरे कुनबे को साथ लेकर चलीं और पूरा कुनबा उनके साथ था, उनके सुख-दुख में शरीक था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया था, इसके लिए वह पानी और मिठाई-खटाई से लेकर दोहरा-सुपारी तक सब रास्ते उसने खोल लिये थे।

अपनी खेती-बारी और लेन-देन का हिसाब करने जब सिताला मध्यप्रदेश जाती थीं, तो उनके भतीजे देवप्रसाद गांव की अपनी जायदाद का कोई-न-कोई हिस्सा या तो बेच देते थे अथवा गिरवी रख देते थे। देवप्रसाद को विश्वास रहा करता था कि सिताला आकर उसे अवश्य छुड़ा लेंगी। होता यहां तक था, कि सिताला बिकी हुई जमीन-जायदाद काफी धन देकर वापस ले लिया करती थीं। उनका जोर सारे गांव पर था, पर देवप्रसाद पर नहीं था, क्योंकि वह उनके पारिवारिक स्नेह-कोष के एकमात्र अधिकारी थे, एक तरह से वह सिताला की कमजोरी बन चुके थे, क्योंकि अपना कहने को एक वही तो थे उनके। बहरहाल जब तक सिताला जीवित रहीं, यह सिलसिला चलता रहा, एक तरह से वह दोनों ही इसके अभ्यस्त बन गये थे। इस संदर्भ में गांव के लोग एक कहावत कहा करते थे—जेतना अंधरऊ बरैं वतना पड़उनू चबांय (अंधा जितनी बटता था, पाड़ा उतनी रस्सी चबा जाता था) इस तरह देवप्रसाद सिताला की धन-रज्जु को चबाते रहे, लोगों का तो यहां तक कहना है, कि चबाते-चबाते वह एक दिन सिताला को ही चबा गये।

आखिर एक दिन वह भी आया, जब सिताला का पौरुष थका, उन्होंने मध्यप्रदेश की जमीन-जायदाद बेच दी, लेन-देन का पैसा भी काफी डूब गया। अब वह स्थायी रूप से गांव में ही रहने लगीं, आमदनी का मूल स्रोत बंद हो चुका था, इसलिए धीरे-धीरे देवप्रसाद ने रहने का घर छोड़कर गांव का सब-कुछ बेच लिया और इस तरह वह फुरसत में हो गये।

सिताला गांव की गलियों में बुढ़ाने तक घूमती रहीं, लोगों का हाल-चाल पूछती रहीं। यह हो ही नहीं सकता था, कि कोई उन्हें मिले और वह कुछ न कहें। बरगद के तने को कुरेदिए तो थोड़ा-सा दूध छलछला आता है। सिताला कुरेदती थीं, तो थोड़ा-बहुत अपनत्व हर किसी में छलछला पड़ता था, यही सिताला का प्राप्तव्य था, इससे ज्यादा उन्होंने कभी किसी से कुछ नहीं चाहा। गांव में ऐसा कोई नहीं था, जिसने सिताला की गाली न खायी हो, स्नेहपूर्ण रोष न झेला हो, पर यह सब उस कुदाल-जैसा था, जो जल की तलाश में उठायी जाती है, कुएं में एक दिन जल निकल ही आता है, सिताला इसी स्नेह-जल से आचमन किया करती थीं।

सिताला भद्दी-से-भद्दी गाली देने में भी संकोच नहीं करती थीं, पर गालियां दे लेने के बाद वह शांत और सुस्थिर हो जाती थीं, जैसे सारे तनाव से उपरत हो गयी हों। वस्तुतः सिताला का जीवन करूणा-जल-जैसा था, पर उन्होंने वीर और रौद्र को धारण कर लिया था। वह कहीं भी स्नेह-शिथिल होकर वात्सल्य छलका देती थीं, कोई मजाक का रिश्ता मिल जाए, तो श्रृंगार की सीमा तक चली जाती थीं, वस्तुतः वे नौ रसों की छलकती हुई गागर थीं।

जब सिताला किसी आंगन में प्रवेश करती थीं, तो औरतों के चेहरे खिल उठते थे, दरअसल वह सिताला से ज्यादा सिताला की गालियों का इंतजार करती थीं। सिताला की गालियां औरतों को सिताला से भी कहीं ज्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिताला का प्रेमपूर्ण मन कभी भरता ही नहीं था, वह बराबर प्यार तलाशती रहीं, हर तरह का प्यार । वह उन्हें मिला कि नहीं, यह तो पता नहीं, पर उनका प्यार हर किसी को मिला और भरपूर मिला । वह बराबर तन-मन-धन खर्चती रहीं और खर्चते-खर्चते एक दिन दुनिया से खर्च हो गयीं ।

अच्छी लगती थीं, जिन्हें वे आशीर्वाद की तरह लूट लिया करती थीं । पूरा आंगन खिलखिलाहटों से गूंज जाया करता था, खटिया-मचिया बिछ जाती थी और शरबत-पानी का इंतजाम होने लगता था । काम-काज का घर, औरतें सिताला को घेर लेती थीं, मगर सिताला की तरह उनकी आचरण-संहिता और 'प्रोटोकाल' भी जबरदस्त थे, वे लड़कियों को भगा देती थीं और फिर मुक्त भाव से श्रृंगार के वीभत्स आभास तक व्यक्त करती थीं ।

नयी वधू को गालियों भरे आशीर्वाद देने में सिताला कभी नहीं चूकीं और न यह बताना भूलीं, कि जब उस वधू की सास वधू बनकर आयी थी, तब भी वह उसे देखने आयी थीं और पुत्र होने का आशीर्वाद दे गयी थीं । आशीर्वाद पर उनका खास जोर होता था, औरतें घटना की ताईद करती थीं और यह सिद्ध हो जाता था, कि यदि सिताला आशीर्वाद न देतीं, तो इस नयी बहू का पति जन्मता ही नहीं । फिर सिताला रोम-रोम से आशीर्वाद लुटाती हुई चली जाती थीं और बड़ी देर तक उस आंगन में सिताला के व्यक्तित्व का शोर होता रहता था ।

अपने संबंधों और संदर्भों के तार जोड़ती हुई, बातों-बातों में सिताला पूरे कुनबे का इतिहास खास-खास पात्रों और घटनाओं के साथ बड़ी रोचकता से बयान करती थीं । इस संवाद के मध्य उनका चेहरा कुल-दर्प से उद्दीप्त हो जाता था, और वह नसीहत की ढेर-सारी बातें पारिवारिक संस्कृति के घरेलू-संविधान के साथ बड़ी कुशलता से कह जाया करती थीं ।

सिताला अकेली थीं, पर अकेली होकर भी अकेली नहीं थीं, वह पूरे कुनबे को साथ लेकर चलीं और पूरा कुनबा उनके साथ था, उनके सुख-दुख में शरीक था । सिताला ने मर्द की तरह कमाया और मर्द की तरह खर्च किया, पर थीं तो औरत ही, भाव-भाव टूटी और कल्पना-कल्पना खंडित, चूर-चूर वह सामाजिक-मातृत्व का हिमालय थीं, जब पिघलती थीं, तो गांव की गलियों में बाढ़ आ जाती थी, पर वह थीं, कि बराबर पिघलती ही रहीं, न कभी सिमटीं, न संकुचित हुईं ।

सिताला का प्रेमपूर्ण मन कभी भरता ही नहीं था, वह बराबर प्यार तलाशती रहीं, हर तरह का प्यार । वह उन्हें मिला कि नहीं, यह तो पता नहीं, पर उनका प्यार हर किसी को मिला और भरपूर मिला । वह बराबर तन-मन-धन खर्चती रहीं और एक दिन दुनिया से खर्च हो गयीं ।

—४३, पुलिस लाइन रोड, सीतापुर
(उ.प्र.)-२६१००१

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

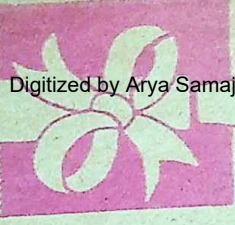

नियंत्रण

"आज जीवन में प्रथम बार,
ढ़लक आये दो अश्रुकण
मेरी सदियों से सूखी बांझ
पलकों के किनारों तक ।
कुछ दरकता-सा
महसूस हुआ हृदय में
जैसे कोई विशाल बांध
एक ही बार में, भरभराकर
टूट गया हो ।
अब कुछ भी नियंत्रण
में नहीं है मेरे ।
शायद स्वयं के साथ
की गयी रूक्ष कठोरता
का परिणाम है यह ।

—मनोज कुमार शर्मा 'मनु'

शिक्षा: स्नातक (वाणिज्य)

आत्मकथ्य :
जीवन के तमाम रूपों से जब स्वयं का तुलनात्मक अध्ययन करता हूं तो बरबस कविता के रूप में निष्कर्ष निकल जाता है ।

पता: एस:२/१८, गवर्नमेंट क्वार्टर
पो. साउईपाड़ा (बाली)
डी. हावड़ा (प. बंगाल)
पी. ७११२२७

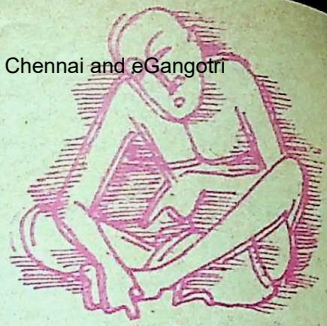

भूख

सकताहट
होती है जब
फूट जाता है बुलबुला
उतर जाती हैं स्मृतियां
दरारों में
और
काठ को राख होते
देखकर
बापू की तरह
क्षणिक लगता है सब
लेकिन
सनातन क्यों है
बढ़ती हमारी भूख !

—कैलाश

शिक्षा: वाणिज्य स्नातक

आत्मकथ्य: नितांत अव्यवस्थित हूं और क्रमहीन इस अव्यवस्था को कविता का नाम थोप दिया है मैंने ।

पता : ९६/६, अशोक नगर, उदयपुर
(राजस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान

मेरी यादों में
जब भी तुम आते हो,
लगता है मन की कोई
खिड़की खुल जाती है,
धीरे-धीरे ये खिड़की
बढ़कर दरवाजा बन जाती है,
पर तब तक तुम्हारी यादें
धुंधला-सी जाती हैं,
बेबस-सी मैं
आकुल-व्याकुल होकर
छटपटाती रह जाती हूं
हर बार सोचती हूं
उस खिड़की में ही तुम्हें
कैद कर लूंगी
पर पता नहीं क्यों
खिड़की से ज्यादा
दरवाजा ही भाया है मुझे
यादों की इक खिड़की
तो संभाली नहीं जाती मुझसे
फिर तुम्हारी यादों का
मकान बनाने का
मोह क्यों है मुझे ?

—रश्मि तिवारी

शिक्षा: बी.ए. आनर्स (दर्शन शास्त्र)

आत्मकथ्य : संघर्षरत जीवन में कटु यथार्थ झेलते हुए मन जब कल्पनाओं में विचरने लगता है तब उसे कागज पर उतार लेती हूं ।

पता: १५१ बड़गांव
गोंडा, उ.प्र.-२७१००२

ढहती इमारत

मेरे बचपन ने/
अपने भोलेपन में/
अपनी-भोली आकांक्षाओं/
और साधारण-सी महत्त्वाकांक्षाओं/
के ईंट और गारे को जोड़कर/
एक छोटी-सी इमारत बनायी थी/
धीरे-धीरे कर उस इमारत का/
एक-एक कोना ढहता गया/
और मैं निःसहाय खड़ी/
उसका ढहना देखतीं रही/

समाज

एक अच्छा समाज/
स्वच्छ समाज/
इंसानियत से सराबोर समाज/
प्यार की लालिमा से सुर्ख समाज/
जहां नफरतों के कैक्टस नहीं/
मुहब्बत की लालिमा से भरपूर/
गुलाब ही गुलाब हों/
बस ऐसा ही समाज तो चाहती हूं मैं !

—सुनीता

शिक्षा : स्नातकोत्तर (हिंदी) (अध्ययनरत)

आत्मकथ्य: जब मनुष्य को स्वार्थसिद्धि के लिए बद से बदतर स्तर तक गिरता हुआ देखती हूं, अपने को रोक नहीं पाती । और मेरे अंदर की वेदना शब्दों का जामा पहन कविता का रूप धारण कर लेती है ।

पता : क.सं. ३५
प्रियदर्शिनी छात्रावास
विश्वविद्यालय इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने सूरज को देखा है!

रोटी की शक्ल में
आटे को तब्दील करता हुआ सूरज
मैंने अंगीठी में देखा है
धान की शक्ल में
फसलों को पोसता सूरज
मैंने तैरता हुआ देखा है—
नदी की लहरों में । रात को जब
नहीं होता है—सूरज
उसका प्रतिनिधि चंद्रमा
अपने प्रकाश की बुलंदियों से
काट रहा होता है
धरती का अंधेरा,
ठीक वैसे ही जैसे
पिछवाड़े की पुरानी खाट पर
आंखों-आंखों में रातभर बूढ़े बाबा
काट रहे होते हैं अपनी जर्जर उम्र ।
थोड़ा-सा सूरज
मां की बिंदी की चमक में है,
थोड़ा-सा पिताजी की आंखों में ।
मैं अपने भविष्य की
अभिलाषाओं का सूरज
अकसर तुम्हारी आंखों में देखती हूं ।

—देवेन्द्र कौर

शिक्षा : बी. ए. (हिंदी प्रतिष्ठा) द्वितीय खंड

पता : द्वारा सरदार गुरजीत सिंह, कमल साड़ी शो रूम, मोतीझील, मुजफ्फरपुर-८४२००१

आत्मकथ्य : कविताएं मेरी मनःस्थितियों के विभिन्न रंग-रूप हैं, जिनमें मैंने हमेशा अपने अकेलेपन का साथी ढूंढ़ा है ।

सोच

एक टहनी पर बैठी हुई गोरैया
सोचने लगती है आकाश पर
देखने लगती है आकाश को
छू देने की ताकत का
संचरण महसूस करती है
पुलकित थे उसके पंख
फड़कने लगते हैं
झूम जाती है—और
उसके पैर कस लेते हैं
टहनी को ।
गोरैया—
अपनी सोच में खो जाती है
आकाश पर ही सो जाती है
एक मध्यम
तेज हवा का झोंका
झकझोर देता है
उसकी सोच को
तोड़ देता है,
उसकी चेतना को
अस्थिर स्थिति में
आ जाती है—गोरैया,
और... हम समझ लेते हैं
झूम रहीं है—गोरैया

—पंकज कुमार वसंत

शिक्षा : एम. ए. (अध्ययन) समाज शास्त्र

आत्मकथ्य : आह, चोट, दर्द, अनुभूतियां, मेरे और मेरे वर्तमान पर होता प्रहार—इनसे उबरने की कोशिश मात्र हैं मेरी कविताएं

पता : द्वारा श्री मदन मोहन प्रसाद वर्मा, ग्राम : सौरा (मुंशी टोला) पत्रालय : रामनगर (जिला—सीतामढ़ी ८४३३११)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रभानु के अनूठे चित्र

ललित कला अकादेमी की रवींद्र कला दीर्घा में एक अनूठी और महत्वपूर्ण प्रदर्शनी लगायी थी कलकत्ता के प्रतिभाशाली सैंतीस वर्षीय युवा चित्रकार चित्रभानु मजूमदार ने। चित्रभानु का कहना है कि 'मैं नित्यप्रति के जीवन में जो कुछ घट रहा है, उसे चित्रित करने का प्रयास कर रहा हूं, लेकिन मेरे चित्रों में आपको कोई कथा-सूत्र नहीं मिलेगा। आप चित्र की जो भी चाहे व्याख्या कर सकते हैं, क्योंकि मैं चित्र बनाने से पहले कुछ नहीं सोचता कि मुझे क्या बनाना है और क्या नहीं।' चित्रभानु के चित्र इतने प्रभावशाली और सृजनात्मक प्रतिभा संपन्न हैं कि उन्हें विक्टोरिया मेमोरियल ने अपने दरबार हाल में चित्रों की प्रदर्शनी के लिए आमंत्रित किया था, जबकि अब तक दो ही चित्रकार—एम. एफ. हुसैन व विकास भट्टाचार्य को यह सम्मान मिला है। चित्रभानु के चित्र तीस-तीस फीट लम्बे हैं, जो रवींद्र दीर्घा की सारी मंजिलों को घेरे हुए थे।

चित्रभानु अपने एक चित्र के साथ

एक स्वतंत्र विधा : रेखाचित्र

आइफैक्स कला दीर्घा में दिल्ली की एक व्यावसायिक गैलरी स्पेस की एक महत्पूर्ण प्रदर्शनी—ड्राइंग '९४। गैलरी स्पेस ने योजनाबद्ध तरीके से देशभर के जाने-माने अस्सी चित्रकारों से रेखाचित्र बनवाये और कुछ के पहले से बने बनाये रेखाचित्रों को संकलित कर एक कला-समीक्षक से चयन कराकर प्रदर्शित किया। कोशिश यह रही कि यह प्रदर्शनी में एक दस्तावेजी प्रदर्शनी बने। बनी भी, लेकिन आधी-अधूरी, क्योंकि ऐसे बहुत से नामी-गिरामी चित्रकार इस प्रदर्शनी मौजूद नहीं थे, जिन्हें होना ही चाहिए था। हां, इस आयोजन से रेखाचित्रों को भी एक व्यापक पैमाने पर चित्रों की भांति एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित होने का एक अवसर मिला है।

भ्रामक इतिहास बनाती चित्र प्रदर्शनी

नेशनल गैलरी आफ मोडर्न आर्ट ने अपने संग्रह में से सन १९३० के बाद के बने चित्र में से चयन कर एक महत्वपूर्ण प्रदर्शनी लगायी—'एक पुनावलोकन आधुनिक कला संग्रहालय के संग्रह से।' इन कृतियों का भी चयन एक कला-समीक्षक ने किया। चयन स्पष्ट बताया है कि चयनकर्ता ने एक गुट को ही प्रमुखता देकर उभारने की कोशिश की है। निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण कई नाम छोड़ दिये गये हैं और ऐसे लोगों को स्थान दिया गया जिनकी अभी तक कोई पहचान नहीं बन पायी है। यह प्रदर्शनी अधूरी और गलत तस्वीर सामने लाती है। गुटबंदी के तहत एकतरफा यह चयन भारत की आधुनिक कला के इतिहास को भ्रामक बना सकता है। — ज. चं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

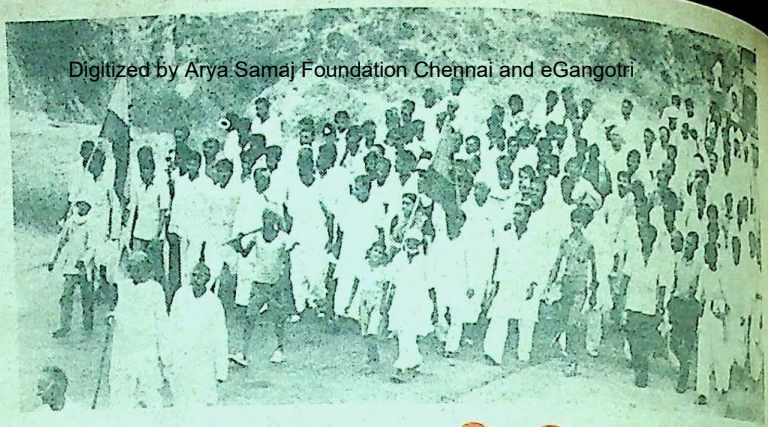

क्या हम सही दिशा में जा रहे हैं ?

● डॉ. अभिजित चट्टोपाध्याय

'क्या हम सही दिशा में जा रहे हैं ?' यह प्रश्न शाश्वत प्रतीत होता है। कारण, समाज में जीवन-शैली और मूल्यों में परिवर्तन की प्रक्रिया सतत चलती रहती है और इसीलिए यह प्रश्न भी रह-रहकर उपस्थित होता रहता है कि क्या हम सही दिशा में जा रहे हैं ? एक तरह से यह प्रश्न समाज के जीवंत होने की निशानी भी है और आत्मालोचन के लिए प्रतिबद्ध किसी समाज के मानस का भी प्रतीक है। यह प्रश्न बेहद व्यापक है और उसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सभी पक्षों का समावेश हो जाता है।

कौन-सी दिशा सही है, और कौन-सी गलत, यह कौन तय करेगा। उदाहरण के लिए आज से कुछ वर्षों पूर्व तक समाजवाद, राष्ट्रीयकरण और सार्वजनिक क्षेत्र में उद्यमों की स्थापना को देश की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं का इलाज माना जाता था। मिश्रित अर्थव्यवस्था अपना कर देश के अधिकांश उद्योगों यथा बैंक, जीवन बीमा, बिजली, इस्पात, सीमेंट, चीनी, परिवहन आदि को अधिकाधिक सरकारी नियंत्रण में लाया गया ताकि उपभोक्ता को सही सेवाएं और सुविधाएं मिल सकें। और कुछ समय तक यह नीति लाभदायक भी सिद्ध हुई। लेकिन आज वह इलाज रोग से ज्यादा खतरनाक माना जा रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र में लगे कारखाने 'सफेद हाथी' मान लिए गये हैं और निजी क्षेत्र के हाथों में अधिकाधिक उद्योगों की बागडोर सौंपी जा रही है। क्या राष्ट्रीयकरण की नीति गलत थी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकसर यह प्रश्न किया जाता है कि क्या हम सही दिशा में जा रहे हैं। सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, परंपरागत नैतिक मूल्यों में हो रहे परिवर्तनों, नयी आर्थिक नीति के फलस्वरूप उदारीकरण के दौर के कारण भी इस तरह के प्रश्न सहज स्वाभाविक हो गये हैं। विचारणीय तथ्य यह है कि सही दिशा की परिभाषा कौन तय करेगा।

शायद नहीं। गलत थी वह मनोवृत्ति जिसने राष्ट्रीयकरण को निजी, दलीय स्वार्थ साधने का हथियार बना दिया था। कुशल और ईमानदार नेतृत्व के अभाव ने अनुशासनहीनता, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार का वह आलम पैदा कर दिया है कि अब राष्ट्रीयकरण तमाम बुराइयों की जड़ समझा जाने लगा है।

इस तरह कल तक जो राष्ट्रीयकरण उज्जवल भविष्य का प्रशस्त मार्ग था, वही आज अंधकार का सूचक बन गया है। वास्तविकता तो यह है कि जब व्यक्तिगत स्वार्थ सर्वोपरि हो जाता है तो अच्छे से अच्छा सिद्धांत भी अमृत की बजाय विष के गुणधर्म अपना लेता है।

देश की वर्तमान दशा

आज कॉफी हाऊसों, घरों के बैठकखानों, रेल-बस की यात्राओं में जब कभी देश की वर्तमान दशा पर चर्चा चलती है, तो कुछ मुद्दों पर आम सहमति बरती जाती है। ये मुद्दे हैं :—

* देश में सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है।
* परंपरागत नैतिक मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है।
* समाज पर असामाजिक तत्व हावी हो गये हैं। अपराधी नेता ही नहीं, सत्ताधीश भी बन गये हैं। अपराधियों का राजनीतिकरण हो गया है।
* धर्म को राजनीतिक लाभ अर्थात सत्ता हथियाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है, फलतः सांप्रदायिकता देश और समाज को विघटन के कगार पर ले जा रही है।
* स्वाधीनता-संग्राम और समाज-सुधार के क्षेत्र में पत्रकारों ने अहम भूमिका निभायी थी। आज उस परंपरा को निभानेवाले बहुत कम पत्रकार बचे हैं। आज पत्रकार 'सत्ता के दलाल' और राजनेताओं के 'जनसंपर्क माध्यम' बन गये हैं।
* नौकरशाही के स्तर में भी गिरावट आ रही है। वह जातिवाद, प्रांतीयतावाद, भाषावाद का शिकार हो गयी है, फलतः प्रशासनिक ढांचा चरमराने लगा है।
* मनोरंजन के नाम पर अश्लीलता और फूहड़पन नयी पीढ़ी को गुमराह कर रहा है।
* आनन-फानन में अमीर बन, संपन्न बन जाने की लालसा तस्करी, डकैती, अपहरण आदि को बढ़ावा दे रही है।
* किसी भी क्षेत्र में चाहे राजनीतिक हो या आर्थिक अथवा सामाजिक, सही और समर्थ नेतृत्व का अभाव है।
* बौद्धिक वर्ग भी अपनी अस्मिता खोता जा रहा है।
* सृजनात्मक क्षेत्र के व्यक्ति भी पारस्परिक ईर्ष्या और व्यावसायिकता के कारण दिग्भ्रमित हैं।
* न्यायपालिका और विधायिका भी समाज में व्याप्त इस प्रदूषण से नहीं बच पायी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब यदि मुद्दों पर पृथक-पृथक विचार किया जाए तो उनसे असहमति का कोई कारण नहीं दीखता । ऐसी स्थिति क्यों उत्पन्न हुई ? इसके एक नहीं अनेक कारण हैं । लेकिन हमारे विचार से मूल कारण यही है कि हमने स्वाधीनता-पूर्व के 'बहुजन हिताय—बहु जन सुखाय' को त्यागकर उसके स्थान पर 'निज हिताय-निज सुखाय' को ही आदर्श बना दिया है । यही कारण है कि भ्रष्टाचार के निराकरण की हर कोशिश आग से जलते लाल तवे पर पानी के छींटों की तरह हवा में लोप हो जाती है ।

विडंबना यह है कि बहुसंख्यक समुदाय ने ऐसा जीवन जीने की विवशता को अपनी नियति मान लिया है ।

टेलीफोन क्यों नहीं करतीं !

भ्रष्टाचार किस सीमा तक समाज की रगों में पैठ गया है, इसके दो उदाहरण—एक महिला अपने विदेश स्थित पति से टेलीफोन पर देर तक बात किया करती थीं क्योंकि उसे पता था कि उसे 'काल' की दर का भुगतान सरकारी रेट से नहीं, ऑपरेटर के रेट से करना होता है । और यह रेट सरकारी रेट की तुलना में नगण्य हुआ करता है । बाद में शायद उन्हें बोध हुआ कि यह गलत काम है और उन्होंने अपने पति को टेलीफोन करना कम कर दिया । लेकिन उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब एक

यात्र ऑपरेटर ने उनसे पूछा कि 'मैडम, आजकल आप टेलीफोन नहीं कर रही हैं ? कीजिए न, आपके टेलीफोन करने से तो हमारा 'चाय-पानी' का खर्च निकलता है ।'

यह 'चाय-पानी' देश की अर्थव्यवस्था को कितना चौपट कर रही है, इसकी किसी को फिक्र नहीं । आप शिकायत कीजिए तो उत्तर मिलेगा, 'क्या करें । आजकल ऐसा ही चलन है ।'

मीटर रीडर का गणित

एक और उदाहरण—एक मीटर-रीडर ने एक उपभोक्ता को सलाह दी कि आप क्यों बिजली का इतना सारा बिल जमा करते हैं । मुझे 'परसंटेज' दे दीजिए, मैं मीटर की सील तोड़कर उसे बाजिव कर दूंगा । और जब उसकी शिकायत उच्चाधिकारियों से की गई तो पता चला कि कुछ क्षेत्रों में तबादले के लिए मीटर रीडर तीन-तीन लाख तक की रिश्वत देते हैं । क्यों, इसका भी एक अंकगणित है । पद की नीलामी, पोस्टिंग पर बोली तो जग जाहिर है । कुछ वर्ष पूर्व तक भ्रष्टाचार के आरोप किसी सिपाही, क्लर्क या मध्यम श्रेणी के सरकारी अधिकारी तक ही लगते थे, आज आम आदमी भी किसी मुख्यमंत्री या यहां तक प्रधानमंत्री पर लगे भ्रष्टाचार के आरोप को सहज-स्वाभाविक मानकर चुप रह जाता है ।

निजी स्वार्थ सर्वोपरि

बोफोर्स-कांड, प्रतिभूति घोटाला, चीनी घोटाला—ये सब घोटाले देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर करनेवाले सिद्ध हुए हैं और उनके कारण चाहे नीतिगत विसंगतियां हों या सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, पर मूल में वही स्वार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह देश महान है । विश्व की प्रमुख महाशक्ति बनने का सारा सामर्थ्य उसके पास है । यही कारण है कि विदेशी ताकतें इस देश की जनता को धर्म, जाति, भाषा, प्रांतीयता के विवादों में उलझाये रखना चाहती हैं ।

है, जो दिनों-दिन निजी आर्थिक साम्राज्य के विस्तार के लिए प्रेरित और उत्साहित करती है । और इसी निजी स्वार्थ ने राजनीतिज्ञों और अपराधियों के आपसी रिश्तों को पुख्ता किया है । ये रिश्ते इसलिए भी मजबूत हो गये हैं कि आज चुनावों में जीतने के लिए बाहु-बल और धन-बल दोनों की जरूरत पड़ती है । कल तक जिस अपराधी को पुलिस अफसर हथकड़ी लगाता था, आज उसे ही उसे सलाम करना पड़ता है । फिल्म 'अर्द्ध-सत्य' के नायक की व्यथा, उसका आक्रोश, कई ईमानदार अफसरों की व्यथा और आक्रोश है ।

नौकरशाही की भूमिका

लेकिन वे अल्पमत में हैं । इसलिए अन्य सब निर्भय हैं, स्वतंत्र हैं । फल यह हुआ है कि अपने आचरण के लिए कोई भी किसी के प्रति जवाबदेह नहीं है । सत्ता की उखाड़-पछाड़ में आज नौकरशाही सक्रिय भूमिका अदा करती है । एक समय था, जब नौकरशाही प्रशासन के परंपरागत सिद्धांतों के अनुसार आचरण करती थी । पर अब स्थितियां बदल गयी हैं । सामाजिक हित के प्रति प्रतिबद्धता दलीय या व्यक्ति-विशेष के प्रति प्रतिबद्धता में बदल गयी है और उसके मूल में वही व्यक्तिगत स्वार्थ है, जो नौकरशाह और राजनीतिज्ञों के कार्यकलापों को परिचालित करता है । पहले समाजवाद के प्रति प्रतिबद्धता के सिद्धांत ने नौकरशाही की कार्यप्रणाली बदली और अब उसका स्थान जातिवाद ने ले लिया है । और इसे हवा दी है, आरक्षण के सिद्धांत ने । आरक्षण का सिद्धांत बुरा नहीं हो सकता, पर जब राजनेता या राजनीतिक दल अपने स्वार्थों के लिए उसका उपयोग करते हैं और इस प्रक्रिया में जातिवाद को खुले आम बढ़ावा देते हैं तो स्थिति खतरनाक बन जाती है । नौकरशाही का यह आलम है, तो न्यायपालिका भी जनता की अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर रही और विधायिका यानी विधान सभाएं और संसद ! इनमें चलनेवाली कार्रवाइयों और घटनाओं के बारे में तो दैनिक समाचार-पत्र पढ़कर ही बहुत कुछ जाना जा सकता है ।

समस्या का मूल कारण

इन सारी स्थितियों के लिए काल-विशेष या वर्ग विशेष को दोष देना व्यर्थ है । इन स्थितियों के बीज तो द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ही पड़ गये थे, पर उस समय देश में आजादी के लिए सरफरोशी की तमन्ना थी । एक छोटा-सा वर्ग था, नैतिकता को ताक में रखकर रिश्वतखोरी, अपने स्वार्थ साधन में तल्लीन था । आजादी के बाद उसने अपनी जमात में राजनीतिज्ञों को भी शामिल कर लिया । नौकरशाही का एक वर्ग तो पहले ही उसके साथ था । आजादी के बाद भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्धकालीन राशन-परमिट की व्यवस्था चलती रही और इसी कारण कालाबाजारियों की जमात भी बढ़ी । आजादी के बाद जनसंख्या में भयंकर विस्फोट हुआ और उसके कारण विकास के परिणाम बहुसंख्यक समाज तक नहीं पहुंच पाये । साक्षरता बढ़ी लेकिन शिक्षा के स्तर में पतन भी हुआ, लेकिन वह व्यापक भी बनी । नये-नये विषयों, नयी-नयी तकनीक से देश की नयी पीढ़ी का साक्षात्कार हुआ । अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी देश ने आशातीत प्रगति की । अब समय आ गया है कि निजी और दलीय स्वार्थ से ऊपर उठकर सत्ता का मोह त्यागकर सभी राजनीतिक दलों के वे लोग एकजुट हों, जो अभी भी व्यक्तिगत स्वार्थ की बजाय सार्वजनिक हित को वरीयता देते हैं । राजनीतिक मतभेद भुलाकर ऐसे लोग संगठित हों, देश की नयी पीढ़ी को नयी दिशा दें । नेतृत्व की पुरानी पीढ़ी ही राजनीतिक दावपेचों और सत्ता के उखाड़-पछाड़ में ज्यादा लगी है । आज जरूरत तात्कालिक हितों की उपेक्षा कर वृहत्तर और दीर्घकालिक हितों के लिए संगठित होने की है । यह देश संसार की महाशक्ति बनने का सारा सामर्थ्य रखता है । संसार की अन्य महाशक्तियां भी इस तथ्य को जानती हैं और इसीलिए उनकी कोशिश ही नहीं, षड्यंत्र भी है कि यह महान देश, उसकी जनता धर्म, जाति, भाषा, प्रांतीयता के विवादों में ही उलझी रहे । विज्ञान, प्रौद्योगिकी, तकनीक, चिकित्सा के क्षेत्र में देश ने विस्मयकारी प्रगति की है । उस पर हर भारतीय को गर्व है । पर यह सारी उपलब्धियां राजनीतिज्ञों की पद-लोलुपताजन्य विसंगतियों के कारण नजरों से ओझल हो जाती हैं । देश का भविष्य अंधकारमय लगता है !

लेकिन क्या सचमुच भविष्य अंधकारमय है ? शायद नहीं ।

वर्षों पहले मैंने श्री मोरारजी देसाई से यही प्रश्न पूछा था कि 'मोरारजी भाई, क्या हम सही दिशा की ओर जा रहे हैं ? इस देश के भविष्य के बारे में आप क्या सोचते हैं ?'

मोरारजी भाई को उस समय उपप्रधानमंत्री पद से हटना पड़ा था । मेरा खयाल था कि उनका जवाब तल्खी भरा होगा । वे उस समय चरखा कात रहे थे । मेरा प्रश्न सुनकर उन्होंने चरखा कातना रोक दिया और बोले—

"मुझे तो इस देश का भविष्य बेहद उज्ज्वल दिखायी देता है । यह देश महान है, और महान रहेगा । जो अभी चल रहा है, उसे देखकर जो निराशा हो रही है, और जिसके कारण ये सब प्रश्न उठते हैं, वह सब अस्थायी है । किसी देश के जीवन में दस-बीस-तीस बरस कोई मायने नहीं रखते । मुझे तो इस देश के भविष्य पर पूरा विश्वास है ।"

अकसर यह प्रश्न किया जाता है कि क्या हम सही दिशा में जा रहे हैं । सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, परंपरागत नैतिक मूल्यों में हो रहे परिवर्तनों, नयी आर्थिक नीति के फलस्वरूप उदारीकरण के दौर के कारण भी इस तरह के प्रश्न सहज स्वाभाविक हो गये हैं । विचारणीय तथ्य यह है कि सही दिशा की परिभाषा कौन तय करेगा ।

यह देश महान है । विश्व की प्रमुख महाशक्ति बनने का सारा सामर्थ्य उसके पास है । यही कारण है कि विदेशी ताकतें इस देश की जनता को धर्म, जाति, भाषा, प्रांतीयता के विवादों में उलझाये रखना चाहती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मित्र कुछ भयभीत दशा में, जो दूसरे जिले में पदस्थ थे, मुझसे मिलने आये। आने का कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि वे अपनी 'सी. आर.' (गोपनीय प्रतिवेदन) में विपरीत टिप्पणी रद्द कराने के लिए राजधानी आये थे। उन्होंने कहा कि उनके पदोन्नति का समय पास है और अब उन्हें डर शेर से नहीं वरन सियारों (सी. आर. ओ.) से है। चर्चा दिलचस्प रही पर उन्होंने जो कहा शत प्रतिशत सत्य है।

डर शेर से नहीं बल्कि सियारों से लगता है

● डॉ. एस. डी. एन. तिवारी

कर्मचारियों के पूरे वर्ष के कार्य कलापों का मूल्यांकन मार्च महीने के अंत में उनके उच्च अधिकारी द्वारा गोपनीय प्रतिवेदन के रूप में उनके ऊपर के स्तर या शासन के सचिवालय तक निर्धारित कार्यालयों की मांग से भेजी जाती है। इसी प्रतिवेदन पर उनके स्थायीकरण, पदोन्नतियां, कभी-कभी स्थानांतरण भी होते हैं। समझदार कर्मचारी व अधिकारी अपने उच्च अधिकारी को जनवरी माह से ही अधिक सलामी देने लगते हैं। अधिक शिष्टता, सेवा व कार्य में तत्परता दिखाते हैं। इस वर्ग में वे लोग अधिक हैं, जिनके माता-पिता अथवा रिश्तेदार शासकीय सेवा में हैं या रहे हैं और जिनको इस प्रतिवेदन की गुणवत्ता पर चेतावनी दी जा चुकी होती है। उनको बता दिया जाता है कि काम करो या मत करो, परंतु गोपनीय प्रतिवेदन किसी भी प्रयास से अच्छी लिखाते रहो। कई उच्च अधिकारी अपने बेटों या रिश्तेदारों की बढ़िया सी. आर. लिखवाने के लिए स्वयं प्रयासरत रहते हैं। कुछ लोग अधिकारियों को कुछ दे दिलाकर अच्छी सी. आर. लिखवाते हैं। एक बार मैंने एक अधिकारी की विशेष रूप से अच्छी लिखी गयी सी. आर. देखी। जिज्ञासावश, मैंने उस अधिकारी के बारे में यहां-वहां से जानकारी प्राप्त की। पता चला कि उसने प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा सी. आर. लिखनेवाले अधिकारी पर जोर डलवाया था। अधिकांश लोग जो ग्रामीण या व्यापारी वर्ग से आते हैं, वे तभी जागते हैं, जब उन्हें शासन द्वारा भेजी विपरीत टिप्पणी की प्रतिलिपि प्राप्त होती है। तब वे इतने दुखी हो जाते हैं कि वे शासकीय प्रणाली पर भद्दी टिप्पणियां करते हैं, व लिखनेवाले अधिकारी पर दोषारोपण करते हुए लिखा-पढ़ी करते हैं। लिखा-पढ़ी में कुछ लोग इतने धुरंधर होते हैं कि उनकी लिखा-पढ़ी पेपर बाजी व गुमनाम शिकायतों के डर से सी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर. लिखनेवाले अधिकारी उनके विरुद्ध टिप्पणी लिखने से डरते हैं और उन्हें 'सामान्य' मूल्यांकन देकर अपनी जान बचाते हैं । कभी-कभी शासन द्वारा विपरीत टिप्पणी की प्रति संबंधित अधिकारी को नहीं भेजी जाती है । जब उनकी पदोन्नतियां रूक जाती हैं, वे यहां-वहां पता लगाते फिरते हैं, तब उन्हें पता चलता है कि विपरीत/खराब सी. आर. की वजह से उनकी पदोन्नति रूक गयी है । कई लोगों को तो मैंने कई साल पुरानी खराब सी. आरों की प्रतियां दीं व उन्हें उस पर अभ्यावेदन देने का अवसर दिया । कुछ की ऐसी टिप्पणियां भी नियमानुसार काट दी । कई अधिकारियों की सी. आर. पदोन्नति समिति की बैठक के पूर्व गायब कर दी जाती हैं । ये सब दोष संबंधित कार्यालय के कर्मचारियों का है, पद्धति का नहीं ।

हर स्तर के कर्मचारी व अधिकारी की सी. आर. जिन-जिन माध्यमों से भेजी जाती है, वह निर्धारित है । सी. आर. की विपरीत टिप्पणी संबंधित व्यक्ति को नियमानुसार भेजी जाती है, परंतु वह टिप्पणी किसके द्वारा व किन कारणों से लिखी गयी है, यह नहीं बताया जाता । इस प्रकार विपरीत टिप्पणी के विरुद्ध अभ्यावेदन लिखने में कठिनाई होती है । अधिकांश अधिकारी सी. आर. भेजने में अत्यंत विलंब करते हैं । कुछ व्यक्तियों के स्थानांतरण वर्ष में दो-तीन बार हो जाते हैं, अतः उनकी सी. आर. दो-तीन अधिकारियों को लिखनी पड़ती है ।

अधिकांश अधिकारी शासन के आदेश की अवहेलना करते हुए एक-दो लाइन की सी. आर. लिखते हैं । कुछ अधिकारी भाषा का ध्यान भी नहीं रखते । अतः वे जो लिखते हैं, उसका अर्थ क्या लिया जा सकता है, वे नहीं समझते । कुछ पहले अच्छा लिखते हैं, पर 'किंतु' लगाकर बाद में बुरा लिख देते हैं ।

गोपनीय प्रतिवेदन किस प्रकार लिखना चाहिए, उसके लिए शासन ने निर्देश व नियम बनाये हुए हैं, अतः इनका पालन न करनेवाले अधिकारी को उसके उच्चाधिकारी द्वारा दोबारा सी. आर. लिखने के लिए कहा जाता है ।

मुझे यह स्थिति बड़ी अन्यायपूर्ण दिखती है क्योंकि, जब अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से अच्छे काम की आशा करता है तब उसे वर्ष के अंत में सही मूल्यांकन करना चाहिए । एक बार एक वनमंडल अधिकारी ने अपने अधीनस्थ पांचों वन परिक्षेत्राधिकारियों की विपरीत सी. आर. लिख दी । इस अधिकारी व इसके परिक्षेत्राधिकारियों का कार्य मैं स्वयं देख चुका था, उनका कार्य ठीक था । ये अधिकारी अपनी अच्छी सी. आर. की आशा रखते थे । मैंने उन्हें कार्यालय में बुलाकर पूछा

वे अपनी 'सी. आर.' में विपरीत टिप्पणी रद्द कराने के लिए राजधानी आये थे । उन्होंने कहा कि उनके पदोन्नति का समय पास है और अब उन्हें डर शेर से नहीं वरन सियारो (सी. आर. ओ.) से है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वन का सभी कार्य परिक्षेत्राधिकारी द्वारा होता है और यदि उनका कार्य ठीक नहीं था, तो उनके वनमंडल का कार्य अच्छा कैसे कहा जा सकता है । दूसरे, यदि अपने अधीनिस्थों की खराब सी. आर. देने की उनकी आदत है, तो कौन कर्मचारी उनके साथ काम करना चाहेगा । तीसरे फिर मैं कहां से उच्चकोटि के कर्मचारी उनके लिए ढूंढ़कर लाऊंगा ? गुस्से में मैंने उसके लिखे प्रतिवेदन उसे वापस कर दिये व उससे कहा कि पांचों में से एक-दो अधिकारी अच्छे तो अवश्य होंगे, कुछ मध्य स्तर के व एक या दो निम्न स्तर के हो सकते हैं ।

इस अधिकारी के विरुद्ध हमेशा छद्म नाम से मेरे पास शिकायतें आती रहती थीं, जबकि वह काफी समझदार अधिकारी था । उन पर मेरी हिदायत का असर हुआ और उनकी आदत में सुधार हुआ और फिर उसके विरुद्ध ऊटपटांग शिकायतें भी आनी बंद हो गयीं । अंततः वह सेवानिवृत्त होने के पहले उच्च स्तर पर पहुंच गया ।

सी. आर. तो गोपनीय रहती है, पर उसे कैसे लिखा जाए—ये निर्देश गोपनीय नहीं है । इसी सिद्धांत पर मैंने सभी अधिकारियों की बैठक बुलाकर उन्हें सी. आर. के दूरगामी परिणामों के बारे में बताया व निर्देश दिये । मामला बहुत कुछ सुधर गया ।

लिपिक वर्ग व निम्नस्तर के कर्मचारियों की सी. आर. जानबूझकर दबायी जाती है या गायब कर दी जाती है । सी. आर. गायब करनेवाले कर्मचारी को शायद ही कभी दंड मिला हो, परंतु जिसकी सी. आर. गुमती है, उसे दंड मिल जाता है । एक बार ऐसा ही किस्सा मेरे कार्यालय में हुआ । कई वर्षों से विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक नहीं हो रही थी । पद खाली पड़े थे । मैंने निर्देश दिये कि जिसकी सी. आर. गुमेगी, उसकी सी. आर. ठीक समझी जाएगी व वह व्यक्ति पदोन्नति के लिए उपयुक्त समझा जाएगा । जब उसकी सी. आर. मिल जाएगी, तब उस पर पुनः विचार किया जाएगा । इसका यह असर हुआ कि फिर किसी की सी. आर. गुम नहीं हुई ।

सी. आर. भेजने का समय निर्धारित है, पर आज तक किसी अधिकारी से सी. आर. देर से भेजने पर शायद ही कभी जवाब-तलब हुआ हो । सही समय पर सी. आर. न मिलने के कारण सैकड़ों पद रिक्त पड़े रहते हैं व अधिकारियों व कर्मचारियों की पदोन्नतियां रूकी रहती हैं ।

—'समय',
प्रोफेसर्स कॉलोनी,
भोपाल-४६२००२

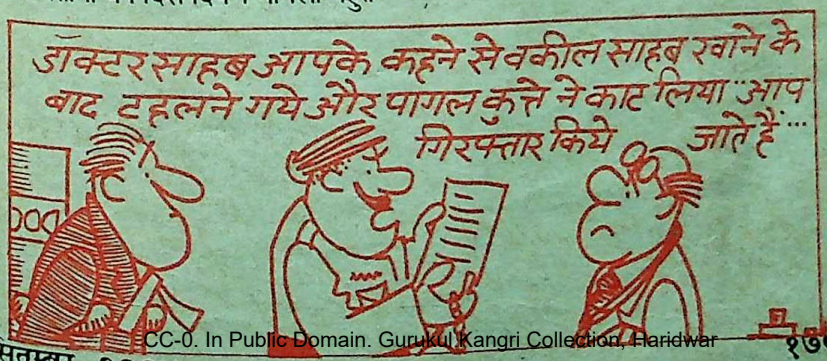

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रायश्चित

● अजय

जब से आकाश को पता चला था कि अर्चना को उसके पति के पास भेज दिया गया है, तब से उसका संसार ही सूना हो गया। उसे न रात को नींद आती, न दिन में चैन। अकसर वह अर्चना की तसवीर सामने रखकर दीवानों की भांति निहारता रहता था। यह तसवीर स्वयं उसने बनायी थी।

अर्चना उसके जीवन का पहला प्यार थी, उसी ने उसके हृदय को पहली कोमल थपकी दी थी। वह सचमुच ऐसी सौंदर्यमयी नारी थी, जिसे देखकर कोई भी कलाकार उसे अपनी कला में साकार करने के लिए उत्सुक हो जाता। आकाश भी चाहता था कि वह अर्चना को एक खूबसूरत तसवीर में ढाल दे और इसी वजह से उसने उससे संपर्क भी बढ़ाया था। अपनी भाभी श्रुति के माध्यम से, क्योंकि अर्चना श्रुति की सहेली जो थी।

"श्रुति कह रही थी, आप मेरी एक तसवीर बनाना चाहते हैं। क्या मैं पूछ सकती हूं कि आप किस भाव से प्रेरित होकर मेरी तसवीर बनाना चाहते हैं।"

"अर्चनाजी, एक बात कहूं। आप बुरा तो नहीं मानेंगी।"

"मैं जानती हूं, आप बुरा माननेवाली—जैसी कोई बात कहेंगे ही नहीं, फिर भी आप कहिए।" अर्चना मुसकराकर बोली।

"सच पूछिए तो आपने जो सौंदर्य पाया है और उसे जिस सादगी के साये में सजाकर रखती हैं, उसे देखकर किसी के भी मन में आपके प्रति श्रद्धा ही जागती होगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप गलत कह रहे हैं, आकाशबाबू। नारी या नारी का सौंदर्य किसी पुरुष के लिए कभी श्रद्धा की वस्तु नहीं बन सकता। यह केवल आप— जैसे भावुक हृदयवाले व्यक्ति की सोच हो सकती है।"

"नहीं, अर्चनाजी, आपके सौंदर्य में सादगी का जो समावेश है, वह पहली नजर में ही श्रद्धा पैदा करता है।"

"आपकी नजर में मैं क्या हूं ?"

"मेरी नजर में ! आप पहली नजर में ही प्रेम और श्रद्धा का पात्र बन गयी थीं ! जहां तक नारी सौंदर्य की बात है, नारी सौंदर्य के प्रति लोगों के हृदय में श्रद्धा तब जागती है, जब उसमें आकर्षण के साथ-साथ सादगी, सरलता, सहजता और स्वाभाविकता हो। मेरी समझ में अगर नारी सौंदर्य बनाव-श्रृंगार के द्वारा आकर्षण की वस्तु बना दी जाए तो उसकी वास्तविक महत्ता घट जाती है। फिर वह मात्र किसी के मन को लुभानेवाली वस्तु बनकर रह जाती है।"

* * *

देखते ही देखते दोनों के मिलने की रफ़्तार तेज होती गयी। अर्चना को देखकर ऐसा लगता था, जिस तरह आकाश उससे मिलने के लिए बेचैन रहता है, वह भी उससे मिलने के लिए बेचैन रहती है। जब भी दोनों मिलते, दोनों देर तक बातें करते रहते। मन में मिलन की चाहत बसाये रहते।

तभी एक दिन अचानक आकाश को पता चला कि अर्चना उसके पति के पास भेज दी गयी है।

"भाभीजी, क्या अर्चना सचमुच इस शहर को छोड़कर अपने पति के पास चली गयी है ?"

"हां, वह अपने पति के पास चली गयी है।"

"पर क्यों चली गयी ?"

"वह भटक रही थी। आकाशबाबू, उसके

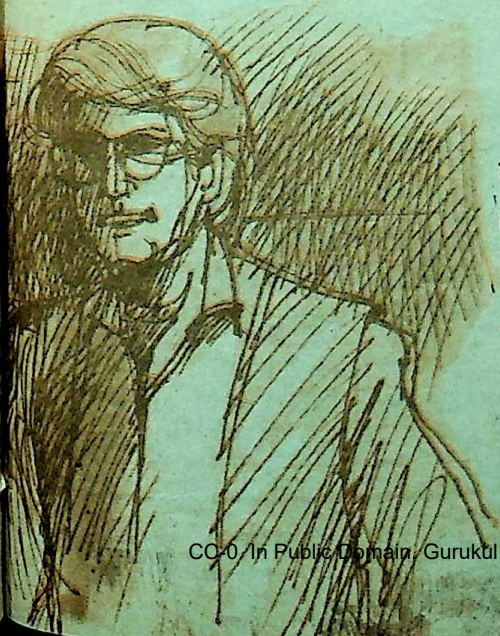

सच पूछो तो राठौर, तुम्हारे चेहरे से ज्यादा मुझे अपने चेहरे से नफरत हो गयी है क्योंकि मेरे दोष के सामने तुम्हारा दोष कुछ भी नहीं है। अपने पति की हत्या की सबसे बड़ी जिम्मेदार मैं ही हूं। अब मैं प्रायश्चित करूंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांव डगमगा रहे थे। वह डगमगाकर गिर पड़ती, इससे पहले मैंने उसके परिवारवालों को बता दिया कि अर्चना का अब यहां रहना ठीक नहीं है।

बस, उसके परिवारवालों ने उसे उसके पति के पास भेज दिया।''

''यह आपने अच्छा नहीं किया, भाभीजी।''

''आप कितना अच्छा कर रहे थे, देवरजी ! घर में बीवी बाल-बच्चों के होते हुए, उनका प्यार छीनकर, अपना प्यार किसी परायी औरत में बांटने की कोशिश कर रहे थे। यह जानते हुए भी कि वह किसी की पत्नी है, किसी की इज्जत-आबरू है। आपको शर्म आनी चाहिए थी, पर आप तो निरे बेशर्म निकले। मैं तो समझती थी कि आपके पास एक कलाकार का दिल है, सौंदर्य को कला में पिरोना आपका धर्म है, सो मैंने आपकी सहायता की थी ! पर मैं नहीं जानती थी कि आप इतने गिरे हुए हैं।''

''नहीं भाभीजी, मैं इतना गिरा हुआ नहीं हूं। पहले मेरी बात तो सुनिए, फिर जो जी में आये कहिएगा।''

''कहने के लिए अब आपके पास है ही क्या ? आकाश बाबू ! रही अर्चना की बात, वह अब यहां से चली गयी है। आइंदा, आप मुझसे उसके बारे में कोई भी बात नहीं करेंगे। बस !''

* * *

''यह सब क्या हो गया अर्चना। यह सब कैसे हो गया ?''

''मैं विधवा हो गयी श्रुति। मैं विधवा हो गयी। ईश्वर ने मेरे किये का फल मुझे विधवा बनाकर दे दिया।''

''पर यह सब हुआ कैसे ? क्या तुम्हारे पति की किसी के साथ दुश्मनी थी ?''

''नहीं श्रुति, नहीं ! उनकी दुश्मनी किसके साथ हो सकती है ? वे तो इनसान के रूप में देवता थे। ये सब जो कुछ हुआ, मेरी बदौलत हुआ।''

''मुझे अपने सौंदर्य पर लोगों का आकर्षित होना बहुत अच्छा लगता था। जब कोई मेरी तरफ हसरतभरी निगाहों से देखता, तो मैं समझती थी, मेरे रूप का बाण चल गया है। और मैं बहुत खुश होती थी। उस वक्त अपने रूप पर मुझे घमंड-सा हो जाता था। पुरुष को अपने रूप के बाण से घायल करने में मुझे आनंद-सा मिलता था। और फिर मेरी ये आदत-सी बन गयी थी। जब यहां से कॉलेज छोड़कर गयी तो मेरे पति ने चंद महीनों में मेरा दामन अपने प्यार से इतना भर दिया कि मैं उसकी दीवानी हो गयी। उठते-बैठते, सोते-जागते वे मुझे इतना सुख, इतना आनंद, इतना प्यार देते थे कि मानो वे अपने डेढ़ साल का प्यार जो वे मुझे अपनी नौकरी की मजबूरी के कारण नहीं दे पाये थे, उसकी क्षतिपूर्ति कर रहे हों।''

''मैं गद्‌गद् थी, विभोर थी, भूली हुई-सी थी अपने आपको उसके प्यार में, कि एक दिन उनका बॉस राठौर घर आया। मेरे नहीं चाहने पर भी उन्होंने मेरी मुलाकात उनसे करवायी।

''मैं उस दिन सजी-संवरी जरूर थी, पर उस दिन मेरे मन में कोई घमंड नहीं था। किसी को आकर्षित करने का कोई विचार भी नहीं था। मैं बॉस के सामने गयी, उसे नमस्कार किया, देखा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर वही पुनरावृत्ति हो रही है । बस मुझे मंत्रमुग्ध-सा हुआ देख रहा है । एक पल के लिए मैं तिलमिला-सी गयी, चाहा भागकर अपने कमरे में चली जाऊं । तब तक वह अपने आपको संयत कर चुका था । मेरे नमस्कार का जवाब देते हुए उसने कहा, 'माफ कीजिएगा, मैं कहीं खो गया था । यह कहकर उसने अपना सर झुका लिया था । उस वक्त उसे देखने से ऐसा लगता था कि वास्तव में वह अपने किये पर शरमिंदा है ।'

"समृद्ध तो वह था ही, साथ-साथ आकर्षक व्यक्तित्व का मालिक भी था । जवान था, खूबसूरत था, साथ ही साथ कपटी भी था । बातें ऐसी करता था, जैसे बेहद सरल हृदय का व्यक्ति हो ।"

"उस दिन के बाद से वह अकसर मेरे घर पर आने लगा और अपने क्रिया-कलापों से जताने लगा कि वह मेरा दीवाना हो गया है । आदत अपनी क्रिया कभी नहीं भूलती है । वह समय और वातावरण के अनुकूल मिलने पर अपना प्रभाव दिखा ही देती है, मेरी आदत भी वातावरण पाकर फिर से सजग हो गयी ।"

"अकसर मैं राठौर के साथ उसकी लंबी-चौड़ी कार में बैठकर क्लब, होटल, पार्टी में जाने लगी । इन जगहों पर प्रकाश मेरे साथ कम होते और राठौर ज्यादा, क्योंकि, राठौर ने उसे शराब पीना सिखा दिया था । वे ऐसे शराबी बन गये थे कि जब तक अपनी सुख-बुध नहीं खो देते, तब तक शराब से अलग नहीं होते । मैं प्रकाश की इस हरकत से हर जगह अकेली पड़ जाती थी । ऐसी हालत में राठौर मुझे संभालता, प्रकाश को संभालता । वह ऐसी आत्मीयता जताता था, जिसे देखकर लगता कि वह हृदय से हमारा शुभचिंतक है । पर सचमुच लोभ विनाश की जड़ होता है और कभी-कभी स्वार्थ मनुष्य को अंधा बना देता है । मैं सुख पाने के लोभ में अपनी औकात ही भूल गयी । भूल गयी कि मेरी औकात क्लब, पार्टी और होटल— जैसी जगहों पर जाने की नहीं है । इस बात को भी जानने की जरूरत नहीं समझी कि राठौर हमारे पीछे अपने पैसे को पानी की तरह क्यों बहा रहा है ।

एक दिन मुझे पाने के लिए अंधे होकर राठौर ने प्रकाश की शराब में जहर मिलवा दिया

और प्रकाश उस शराब को पीने के बाद सदा के लिए सो गया । उस दिन प्रकाश का निष्प्राण शरीर मेरी आंखों के सामने पड़ा था । मैं रो भी नहीं रही थी । विष के प्रभाव से मलीन हुए उसके चेहरे को देखकर लगता जैसे मेरी सारी बुराइयों का जहर शराब के माध्यम से उसके खून में घुल-मिल गया है । मैं सोच रही थी कि मैं अपने कुविचारों के हाथ खुद लुट गयी, बरबाद हो गयी । उस वक्त मुझे अपने आप से नफरत हो गयी, अपने चेहरे से नफरत हो गयी । जी चाहता था कि मैं इस रूप को ही नष्ट कर दूं । मैं अपने आपको नष्ट करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

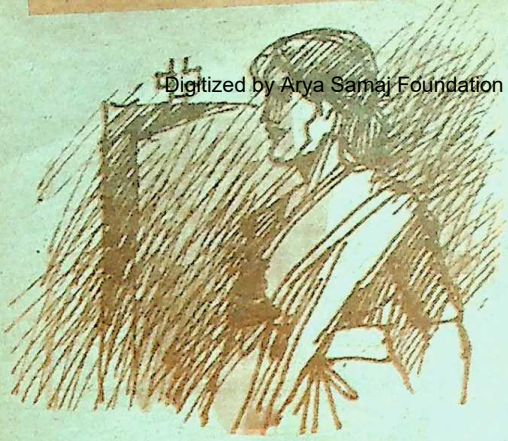

उद्यत भी हुई परंतु प्रकाश के निष्प्राण शरीर ने मुझे ऐसा करने से रोक लिया । मानो वह कह रहा हो, 'अर्चना तुझे प्रायश्चित करना होगा ।'

"अभी प्रकाश को गुजरे हुए एक माह भी पूरा नहीं हुआ था कि एक दिन राठौर मेरे घर आया । मुझसे बेहद आत्मीयता जताते हुए बोला 'मिसेज वर्मा, प्रकाश की मौत से मुझे काफी अफसोस है । आपके दुख से मैं भी दुखी हूं पर होनी को कोई नहीं टाल सकता है, मिसेज वर्मा । इसलिए मैं आपके दुख में भागीदार बनने आया हूं । अगर आपको कोई एतराज न हो, तो मैं आपके लिए कोई अच्छी-सी नौकरी तलाश दूं ।"

"मैं अंदर ही अंदर जल रही थी । मेरी आत्मा मुझे धिक्कार कर रही थी कि तूने इस मक्कार को, जो तुम्हारे पति का हत्यारा है, उसे अपने घर के अंदर कैसे घुसने दिया । अचानक ही मैं फूट पड़ी, 'राठौर मैं तुम्हारे इरादों से भली-भांति परिचित हूं । और तुम्हारे घृणित कुकर्म से भी । तुम मेरे दुख में शामिल होने के लिए नहीं आये हो, बल्कि मेरी जिंदगी में शामिल होने का नाटक करने के लिए आये हो । तुम क्या समझते हो कि नारी तुम मर्दों की तरह इतनी गिरी होती है कि आज एक मर्द के साथ सुख भोग लिया, तो कल दूसरे मर्द के साथ सुख भोगने के लिए तैयार हो जाएगी ?

"रही मेरे जीने-मरने की बात, मैं इसकी चिंता खुद कर लूंगी । तुम्हें इसकी चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है । एक बात कान खोलकर सुन लो, राठौर । आज के बाद दोबारा तुम मेरे घर में कदम नहीं रखोगे और न ही अपना मनहूस चेहरा मुझे कभी दिखाओगे ।

"और सच पूछो तो राठौर, तुम्हारे चेहरे से ज्यादा मुझे अपने चेहरे से नफरत हो गयी है क्योंकि मेरे दोष के सामने तुम्हारा दोष कुछ भी नहीं है । अपने पति की हत्या की सबसे बड़ी जिम्मेदार मैं ही हूं । अब मैं प्रायश्चित करूंगी । अपने इस रूप को अपने शरीर से ज्यादा दिन तक चिपकाये हुए नहीं रखूंगी । राठौर !"

"श्रुति मैं सचमुच इस रूप को नष्ट कर दूंगी ।"

* * *

"डॉक्टर, मैं मिसेज अर्चना वर्मा से मिलना चाहती हूं ।"

"आप उनकी कौन हैं ?"

"मैं उनकी अंतरंग सहेली हूं ।"

"लेकिन वह किसी से मिलने-जैसी हालत में नहीं हैं ।"

"मैं उसे केवल एक नजर देखना चाहती हूं डॉक्टर । मैं वायदा करती हूं मैं उससे कोई बात नहीं करूंगी ।"

"नर्स, इन्हें रूम नं. १२१ में ले जाओ और ध्यान रहे, मरीज किसी से बात करने की कोशिश न करे ।"

"तू आ गयी श्रुति ! अच्छा हुआ तू आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी । देख, अब मैं अपनी इस दशा पर बेहद खुश हूं । आज मैंने उस भूल को ही जला डाला जो मेरी बरबादी का कारण बनी थी । जिसके कारण मेरे मन में अहंकार उत्पन्न होता था । अब कोई इसकी ओर देखेगा भी नहीं । जिस दिन मैं अपनी आंखों से लोगों को अपने चेहरे से नफरत करते देख लूंगी मैं समझ लूंगी कि मैंने अपने पाप का सही प्रायश्चित कर लिया है ।''

''चुप हो जाओ अर्चना, चुप हो जाओ । तुम आज और अभी ही समझ लो कि तुमने अपने पाप का प्रायश्चित कर लिया ।''

''जहर ही जहर को मारता है, श्रुति । मेरे हृदय की जलन मेरे चेहरे के झुलसन की जलन को पी गया है, श्रुति ।''

''अब तुम चुप हो जाओ नहीं तो मैं चली जाऊंगी ।''

''नहीं श्रुति, तुम नहीं जाना । हां, कल जब आना तो आकाश को अपने साथ जरूर लेती आना । मैं उसे अपने इस झुलसे हुए चेहरे की तसवीर बनाने को कहूंगी क्योंकि, उसे मेरी तसवीर बनाने का बहुत शौक था ।''

''अब बस भी करो अर्चना । लो मैं जा रही हूं ।'' अर्चना की हालत देखकर श्रुति का दिल फटा जा रहा था । इससे पहले कि वह रो पड़ती, कमरे से बाहर निकल गयी ।

* * *

श्रुति पागल-सी बनी कभी आकाश को देख रही थी, तो कभी बेड पर पड़ी सफेद चादर से ढकी अर्चना की लाश को । फिर अचानक अपने दोनों हाथों से आकाश का गिरेबान पकड़कर वह फफककर रो पड़ी और बोली. 'यह सब क्या हो गया आकाश, यह सब क्यों हो गया ? अर्चना क्यों मर गयी ? उसने कौन-सा ऐसा पाप किया था, जिसकी इतनी बड़ी सजा उसने स्वयं को दे डाली ।'

''मैडम, यह आपके नाम का लेटर है जो पेशेंट ने लिख छोड़ा था ।'' नर्स श्रुति के हाथ में पत्र देती हुई बोली ।

श्रुति ने पत्र खोलकर पढ़ना शुरू किया—

श्रुति,

तुम्हारे जाने के बाद मैं सो गयी थी । सपने में देखा मेरा प्रकाश मुझे बुला रहा है । कह रहा है, अर्चना मैं बिलकुल अकेला पड़ गया हूं, मेरे पास चली आओ । उस धोखेबाज, स्वार्थी संसार को छोड़कर चली आओ । हम दोनों यहां बहुत खुश रहेंगे । इसीलिए मैं जा रही हूं ।

श्रुति, सच पूछो तो मैं जीना चाहती थी । जी कर अपने कलंक को धोना चाहती थी । हर खूबसूरत इनसान को अपने झुलसे चेहरे के माध्यम से सबक देना चाहती थी कि इस खूबसूरत चेहरे का कभी घमंड नहीं करना । लेकिन मजबूर हूं । प्रकाश का बुलावा आ गया है । मैं जा रही हूं श्रुति, मुझे माफ करना ।

मेरी एक अर्ज है तुम से । आकाश से कहकर मेरे झुलसे हुए चेहरे की एक तसवीर जरूर बनवा देना और उससे कहना कि वह हर चित्र प्रदर्शनी में उस तसवीर को जरूर भेजे और तसवीर के नीचे लिख दे कि इसने अपने रूप पर घमंड किया था ।

बस, मेरी यही आखिरी इच्छा है और यही प्रार्थना ।

—एम. ४५, प्राइवेट कॉलोनी, श्रीनिवासपुरी, दिल्ली-११००६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Give a Gift that will grow with your child.

Mamta

DEPOSIT SCHEME

This is one of the happiest days of my life said my 20-year old daughter as she unwrapped her gift.

Mamta, is a gift that expresses your care and concern for your loving child.

Indeed, a deposit scheme tailor-made to brighten your child's future

All you do is deposit a minimum of Rs. 100/ per month for 5 years.

Your total contribution is Rs. 6000/-. After 20 years your child will receive a lumpsum amount of Rs. 34,279/-, which is 5.71 times, your initial contribution! The more your deposit the bigger your gift grows.

This gift could be very useful to take care of your child's higher education, profession or marriage expenses.

Now when you watch your child well settled you feel contented.

For details, contact the nearest branch of Bank of India.

Bank of India

The Bank that cares...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसिकाएं

समस्या-पूर्ति १८०

गिरगिट

इस समस्या-पूर्ति के लिए प्राप्त प्रविष्टियों में से कोई भी प्रविष्टि पुरस्कार-योग्य नहीं समझी गयी । अतः इस बार किसी प्रविष्टि को पुरस्कृत नहीं किया जा रहा है ।—संपादक

निष्ठा

वे-तो
देवदास की सी मुद्राएं
भुनाने में पारंगत
कुछ चंद्रमुखियां दुखी-कुछ दिवंगत

जोड़-तोड़

हिसाब का अध्यापक छात्रों को
जमा का सवाल समझा रहा था
तभी छात्र ने देखा बाहर
नवदंपति जा रहा था...
देखते ही उसने हंसकर कहा
सर ! यहां यह जोड़ा जा रहा है
वहां— वह जोड़ा जा रहा है

परिभाषा

विद्युतीकरण के बारे में वह कहने लगे
रूपसी ने कुछ ऐसे बिजली गिराई
कि सारे शहर में झटके लगे

राशि

जिंदगी तुम्हीं पर खत्म होगी
तुम्हीं से शुरू—
तुम्हीं मेरे राहु केतु शनीचर
तुम्हीं गुरु

उपमा

उसके सौंदर्य पर टिप्पणी दी हंसकर
'सोने जैसा रूप तुम्हारा— और मैं तस्कर'

मुद्रा

सखियों ने पूछा
जब से आयी है गुमसुम उदास... मौन है
ऐसी मुद्राओं का मुद्रण कहां हुआ
मुद्रक कौन है ??

— डॉ. सरोजनी प्रीतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

ज्योति तिवारी, जबलपुर

प्रश्न : दीदी की उम्र ३० साल, विवाहिता हैं । श्वेत-प्रदर से १५ साल से भयंकर रूप से पीड़ित हैं । भूख कम लगती है— कमर दर्द, समरण-शक्ति कमजोर है ।

उत्तर : पुष्यानुगचूर्ण साठ ग्राम, मुक्ताशुक्ति मात्र पंद्रह ग्राम इनकी साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा पानी से लें । सुपारीपाक एक-एक चम्मच रात दूध से लें । अशोकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें ।

ज्ञान विलास सरस्वती, दरभंगा

प्रश्न : उम्र ७२ वर्ष । रात में ६-७ बार पेशाब के लिए उठना पड़ता है । नींद में विघ्न पड़ता है । चिकित्सक प्रोस्टेट बढ़े बताते हैं पर ऑपरेशन की जरूरत नहीं बताते ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच रात में दूध से लें ।

नरेंद्र कुमार सोनी, सीकर

प्रश्न :उम्र २२ साल । ५ वर्ष से मेरी नाक से खून बहता है । गरमी के मौसम में ज्यादा निकलता है । सभी तरह के इलाज कराये, लाभ नहीं है ।

उत्तर : मुक्ताशुक्ति पिष्टी दस ग्राम, प्रवालपिष्टी दस ग्राम, इनकी साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम आंवले के मुरब्बे के साथ लें । उशीरासव दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

शांति देवी, धार

प्रश्न :उम्र ४० साल । नवंबर ९३ में बच्चेदानी निकलवा दी । डॉक्टर की सलाह पर तीन माह गुप्तांग जीभ से मसाज किया । पेट दर्द है— अब कमर दर्द भी रहने लगा है । कब्ज बना रहता है ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक-एक वटी, सुबह-शाम गरम पानी से लें, काकायन वटी दो-दो वटी भोजन के बाद पानी से लें ।

हरिमोहन, बादला

प्रश्न :उम्र ४९ साल । मुंह में छाले, भूख नहीं लगती । आमाशय में तनाव, जलन, साथ में मधुमेह का रोगी हूं ।

उत्तर : आंवलाचूर्ण आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच दोपहर-रात पानी से लें ।

पप्पू, मेरठ

प्रश्न :दो साल से हाथ-पैर की अंगुली में तथा तलवों में छाले हो जाते हैं । पानी निकलता है, खुजली बहुत होती है । स्वास्थ्य प्रतिदिन गिरता जा रहा है ।

उत्तर : रसमाणिक्य दस ग्राम, गंधक रसायन तीस ग्राम, गिलोयसत्व दस ग्राम, अस्सी मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा सारिवाद्यासव दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

श्रीमती लक्ष्मी, सरदार शहर

प्रश्न :उम्र ३० साल । विवाह हुए ५ वर्ष हो गये चिकित्सीय जांच में मैं व पति सभी कुछ सामान्य हैं । डॉक्टर मुझे शुक्राणुओं की एलर्जी बताते हैं । उचित उपचार लिखें ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी तीस ग्राम, शतावर चूर्ण पंद्रह ग्राम, साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम दूध से लें । अशोकारिष्ट दो चम्मच, इयमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

भगवान सिंह, कोटा बाग

प्रश्न :उम्र ३९ साल । रीढ़ की हड्डी में चलने पर दर्द । बार-बार पेशाब आता है । कभी-कभी जलन होती है । दिन-पर-दिन कमजोर हो रहा हूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन संतान ।

उत्तर : महायोगराज गुग्गल एक वटी, चंद्रप्रभावटी एक वटी, सुबह-शाम गरम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

सुमन सिन्हा, बीहट

प्रश्न :उम्र ३० साल । तीन संतान, शादी के दो-तीन माह पूर्व विकोलाय हो गया था, १५ साल से मुझे परेशान किये है । पेशाब में जलन, सिर में चक्कर, हल्का-हल्का बुखार, हाथ-पांव, पीठ में दर्द, श्वास फूलता है ।

उत्तर : चंदनादिलोह १५ ग्राम, गोदंती मात्र तीस ग्राम, साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । सितोपलादिचूर्ण तीस ग्राम, मालती बसंत दो ग्राम, गिलोयसत्व पांच ग्राम, तीस मात्रा बनायें, दोपहर एक मात्रा शहद से लें । चंद्रासाभ दो चम्मच, द्राक्षासव दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

नित्यानंद प्रसाद, जशपुर नगर

प्रश्न :जुलाई ६६ में दाहिने अंग में लकवा मार गया था । पूरा अंग सुन्न हो गया । उसमें तो कुछ लाभ है, किंतु इसमें अकड़न है और भारीपन है । मधुमेह का रोगी हूं ।

उत्तर : योगराज गुग्गल २० ग्राम, चंद्रप्रभावटी २० ग्राम, गोक्षुरादि गुग्गल २० ग्राम, बमत्त कुसमाकर ५ ग्राम, सभी औषधियों की अस्सी मात्रा बनायें, एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से लें । शिलजूतवादि वटी एक-एक वटी दिन में दो बार पानी से लें ।

रमेश चंद, खुरजा

प्रश्न :पत्नी की उम्र ४२ साल, २० साल से सिरदर्द रहता है । पहले पूरे सिर में खुजली शुरू होती है । ब्लड प्रेशर कम हो जाता है, उल्टी होती है । काफी परेशान हैं ।

उत्तर : स्वणमुतशेखरा पांच ग्राम, शिरशलाविवज्ररस दस ग्राम, रसराजरस तीन ग्राम, रसमाणिक्य दस ग्राम, अस्सी मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच समभाग पानी मिलाकर भोजन बाद पीयें । ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

बी ५/७, कृष्णानगर,
दिल्ली-११००५१

प्रख्यात ग्रीक कवि फिलेटास काफी नाटे कद के थे । पैरों में बहुत भारी जूते वे इस डर से सदैव पहने रहते थे कि हल्के होने के कारण कहीं हवा में न उड़ जाएं ।

अमरीका में 'मैमथ' नामक एक विलक्षण प्राकृतिक गुफा है । इस गुफा में सुंदर डिजाइनों से युक्त सैकड़ों खंभे और बड़े-बड़े कमरे हैं ।इसका सबसे आश्चर्यजनक भाग इसकी दीवारें हैं, जो अत्यधिक ऊंची हैं । गुफा को देखने पर ऐसा लगता है मानो इसे किसी अत्यंत कुशल इंजीनियर ने बनाया हो, पर यह सत्य है कि इसे प्रकृति ने बनाया है ।

—जी. रमण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

—अजय भाम्बी

मुकेश कुमार, दरबाड़ा (बिजनौर)
प्रश्न : क्या मैं भविष्य में सफल राजनीतिज्ञ बन पाऊंगा ?
उत्तर : यदि बहुत लंबी प्रतीक्षा करने की तैयारी है तब ।

पवन कुमार, संजौली-(शिमला)
प्रश्न : क्या विश्व ख्याति का योग है ?
उत्तर : अच्छी ख्याति का योग है ।

विजय भाम्बी, नयी दिल्ली
प्रश्न : नौकरी कब ठीक होगी ?
उत्तर : फरवरी से पूर्व ।

हरिहर प्रसाद गुप्ता, वाराणसी
प्रश्न : हाईकोर्ट से पैसे का ऑर्डर कब मिलेगा ?
उत्तर : जल्दी मिल जाएगा ।

कमल किशोर सिन्हा, गया
प्रश्न : तनाव से मुक्ति कब तक ? रत्न बतलायें ?
उत्तर : पन्ना पहनें, शांति प्राप्त होगी ।

एस. गुप्ता, बंबई
प्रश्न : ऋण मुक्ति एवं व्यापार शिखर पर कब तक ?
उत्तर : अभी प्रतीक्षा करें ।

मधु त्यागी, मुजफ्फरनगर
प्रश्न : शादी कब होगी और वर कैसा होगा ?
उत्तर : शादी १९९६ में होगी ।

इला श्रीवास्तव, लखनऊ
प्रश्न : संतान कब तक ? सन बतायें ? रत्न भी बतायें ?
उत्तर : अगले वर्ष संतान होने की संभावना है, पुखराज धारण करें ।

केशरी चन्द्र, असगौली (अल्पोड़ा)
प्रश्न : पदोन्नति कब होगी ? अधिकारी पद कब तक मिलेगा ?
उत्तर : पदोन्नति मार्च' ९६ तक ।

श्वेता सिंह, ऋषिकेश
प्रश्न : क्या आई.पी.एस. में चयन होगा ? जीवन कैसा ?
उत्तर : आपकी कुंडली में मंगल 'नीच भंग राजयोग' में परिणित हो चुका है, अतः प्रयास करें, सफलता मिलेगी ।

सुरेन्द्रकांत वर्मा, सिसवां कला (सिवान)
प्रश्न : क्या चार्टर्ड एकाउंटेंट बनने का योग है ?
उत्तर : सहज ही बन जाएंगे, प्रयास करें ।

आनंद कुमार, नयी दिल्ली
प्रश्न : तलाक कब हो जाएगा ?
उत्तर : अगले वर्ष ।

भरत प्रसाद, धनबाद
प्रश्न : क्या इस वर्ष नयी मारुति कार खरीदने का योग है ?
उत्तर : कोशिश करें तो खरीद सकते हैं ।

सुमन श्रीवास्तव, झांसी
प्रश्न : टी.वी. सीरियल में काम कब से मिलेगा ?
उत्तर : प्रयास करें, सफलता मिलेगी ।

हेमलता, जोधपुर
प्रश्न : पुनर्विवाह कब होगा ? पति कैसा मिलेगा ?
उत्तर : विवाह १९९६ में और पति अच्छा होगा ।

राजेन्द्र पाराशर, ऋषिकेश
प्रश्न : अपना मकान कब तक ?
उत्तर : शुक्र की अंतर्दशा में मकान बन जाएगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतोष टावरी, कटनी

प्रश्न : स्वयं का व्यवसाय या सरकारी नौकरी कब तक ?

उत्तर : व्यवसाय ज्यादा ठीक रहेगा ।

अजय कुमार, सम्भल

प्रश्न : पुत्र जन्म होगा या नहीं ? अगर होगा तो कब तक ? उपाय बतायें ?

उत्तर : अगले ढाई वर्ष के भीतर पुत्र पैदा हो जाएगा ।

हिम्मत सिंह, देवतरा (पाली)

प्रश्न : क्या राजस्थान प्रशासनिक सेवा में जाने का योग है ?

उत्तर : अभी तो मुश्किल पेश आएगी ।

गिरधारी लाल, चंडीगढ़

प्रश्न : विभागीय मुकदमे का फैसला पक्ष में या विपक्ष में ?

उत्तर : अक्तूबर के बाद फैसला आपके पक्ष में हो जाएगा ।

अखिलेश कुमार, आदमपुर (वैशाली)

प्रश्न : क्या मैं स्नातक इंजीनियर (बी.ई.) बन सकता हूं ? कृपया उपाय बतायें ।

उत्तर : बन जाएंगे, पुखराज भी पहनें ।

मुक्ता, जयपुर

प्रश्न : विवाह कब ? कैसा ?

उत्तर : १९९६ के उत्तरार्द्ध में ।

श्याम सुंदर, गाजियाबाद

प्रश्न : दिमाग की हालत व व्यवहार कब तक ठीक होगा ?

उत्तर : ज्योतिष की दृष्टि से कोई समस्या नहीं है । मानसिक चिकित्सक को दिखायें ।

चैतन्य कुमार, भोपाल

प्रश्न : वांछित जगह पर स्थानांतरण कब तक ? उपाय, रत्न सुझायें ।

उत्तर : अगले वर्ष हो जाएगा, मूंगा पहनें ।

—'नक्षत्र-निकेत' ९४४/३, नाईवाला, फेज रोड, करोलबाग नयी दिल्ली-११०००५

प्रविष्टि—१५०

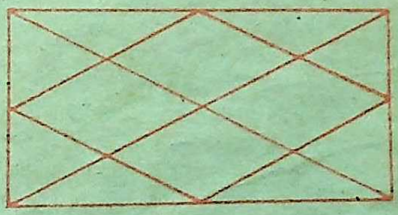

नाम ----------

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ---------- महीना ----------सन ----------

जन्म-स्थान----------जन्म-समय----------

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण ----------

पता ----------

आपका एक प्रश्न ----------

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें ----------

संपादक (ज्योतिष विभाग)—प्रविष्टि १५०) 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० सितम्बर, १९९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व यात्रा की श्रेष्ठतम कृति

हिंदी में यायावरी साहित्य इतना अधिक नहीं है, और जो है भी उसमें पर्यटकों की सुविधा के लिए विवरण मात्र मिलते हैं । राहुल सांकृत्यायन ने जिस प्रकार विभिन्न देशों की यात्रा करके संबंधित देशों के जनजीवन का गहन अध्ययन किया था, उसके बाद साहित्य का यह क्षेत्र लगभग सूना पड़ गया था । श्री राजेन्द्र अवस्थी ने अपने यात्रा विवरणों से उस कमी को पूरा किया है । संसार का कदाचित ही कोई देश होगा जहां अवस्थीजी का प्रवेश नहीं हुआ हो । हिंदी जगत में यह सर्वविदित है कि श्री राजेन्द्र अवस्थी एक स्वाभाविक यायावर हैं जो देशों की आधुनिक इमारतों और उनकी ऐतिहासिक धरोहरों को ही देखकर नहीं चले आते अपितु उसके जनजीवन का गहन अध्ययन करते हैं, क्योंकि प्रत्येक देश की संस्कृति और उसकी सभ्यता का प्रतिबिंब उसकी जनता में ही मिलता है ।

'दुनिया के अजनबी दोस्त'

पुस्तक में अवस्थीजी ने २५ से अधिक देशों का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है । पूर्व में जापान से लेकर पश्चिम में अमरीका तक लगभग सभी प्रमुख देशों के जनजीवन की झांकी इस प्रकार प्रस्तुत की गयी है कि पाठक को अनुभव होता है कि उस परिवेश में वह स्वयं उपस्थित है । अफरीकी देशों का यात्रा वृत्तांत इस पुस्तक को और महत्त्वपूर्ण बना देता है ।

जापान की यात्रा में एक रुमाल के माध्यम से लेखक ने उस देश की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास तथा उसके जन की अनुभूतियों को सजीव प्रस्तुत किया है । यह अपने-आप में एक गद्य-काव्य है जिसमें जापान की आत्मा के दर्शन होते हैं ।

ट्रिनिडाड एवं टोबेगो तथा सूरीनाम 'लघु भारत' या भारत के विस्तार हैं । इन देशों में हुए हिंदी सम्मेलनों में अवस्थीजी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया । स्थानीय भारतीयों ने अपने मूल देश से आये अतिथियों का जिस प्रकार स्वागत किया, उसका चित्रण लेखक ने जिस प्रकार किया है उससे आंखें सजल हुए बिना नहीं रहतीं ।

अमरीका में प्रवासी भारतीयों की संख्या बढ़ती जा रही है । इन प्रवासी भारतीयों की युवा पीढ़ी अपने देश को भुला चुकी है । उनके माता-पिता अब भी उसकी याद संजोये हुए हैं और चाहते हैं कि उनके बच्चे परिवेश के परिवर्तन के बाद भी उसी प्रकार व्यवहार करें जैसे भारत में करते हैं । वे स्वच्छंद हो गये हैं और हमारी परिपाटी से हटकर आचरण करने की जिद करते हैं तथा टोकने पर पूछते हैं कि इसमें 'गलत क्या है ?' लेखक ने उलटकर उनसे ही पूछा है कि 'कौन बता सकता है कि गलत क्या है और सही क्या है । गलत और सही की परिभाषा न तो संसार बनने के साथ स्थापित हुई थी और न अंत तक स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी ।'

चेकोस्लोवाकिया पहले कभी एक देश था । अब, कम्युनिज़्म के पराभव के बाद, स्वतः दो देश हो गये हैं— चेक और स्लोवाकिया । यायावर राजेन्द्र अवस्थी ने इस (संयुक्त) देश को 'यूरोप का हृदय' बताया है । इसकी राजधानी प्राहा, अवस्थीजी के अनुसार, संसार के सुंदरतम शहरों में है । इस देश की साहित्यिक परंपरा समृद्ध है । उन्होंने लिखा है कि 'उन्नीसवीं सदी में चेक साहित्यकार भारतीय साहित्य से बहुत प्रभावित हुए थे । हमारे संस्कृत ग्रंथों का प्रभाव उन पर स्पष्ट है ।' प्राहा में एक प्रकाशन-गृह ने अवस्थीजी के एक उपन्यास 'जंगल के फूल' का स्थानीय भाषा में अनुवाद भी प्रकाशित किया है ।

रूस, ब्रिटेन, स्काटलैंड, फिनलैंड, ग्रीनलैंड, इराक, ईरान, मिस्र तथा पश्चिमी यूरोप के अनेकानेक देशों का श्री राजेन्द्र अवस्थी ने अनेक बार भ्रमण किया है । पुस्तक में मात्र वर्णन नहीं मिलता, वहां की आत्मा झलकती है । निश्चय ही यात्रा साहित्य पर यह अपने तरह की अकेली पुस्तक है, जब लेखक कहते हैं, 'मेरा वश चलता तो मैं बैलगाड़ी बैठकर सारी दुनिया को देखता ।'

दुनिया के अजनबी दोस्त
लेखक : राजेन्द्र अवस्थी
प्रकाशक : हिमाचल पुस्तक भंडार
सरस्वती भंडार, गांधी नगर, दिल्ली-११००३१
मूल्य : अस्सी रुपये ।

किताबों में पड़े फूल : इस संग्रह की कविताएं सरल शब्दों में मन के अंदर उतर जाती हैं । कहीं-कहीं लंबी कविता में संप्रेषण वह प्रभाव नहीं छोड़ता जो छोटी-छोटी कविताओं के माध्यम से छोड़ता है ।

जैसे—

कतरा-कतरा
तुम्हारा भीतर समाना,
कतरा-कतरा
मेरा बाहर को आना
यही तो प्यार है शायद !
भीतर ही/कविता/उफनती है/बनती है/मिटती है/झरने की तरह द्रुत

इसी प्रकार इतने सरल शब्दों में 'अहं' को अभिव्यक्त किया है—

आंखों से/टूटा था बांध/
होंठों तक/पहुंचा तूफान
कसकर/अहं की डोरी से
पलकों पर उसको/टांग लिया है
इस बाढ़ को/मैंने बांध लिया है ।

इस संग्रह की कविताएं कवयित्री की क्षमताओं को पूरी तरह सामने नहीं लाती हैं, परंतु कविता करने की संभावनाओं को अवश्य बताती हैं ।

किताबों में पड़े फूल :
कवयित्री : सुनीता शर्मा, प्रकाशक : विद्या विहार, १६८५ कूचा दखनीराय, दरियागंज, नयी दिल्ली-२, मूल्य : पचास रुपये ।

दीमक : डॉ. केशुभाई देसाई के प्रस्तुत उपन्यास का नामकरण कैसे हुआ ? लेखक को लगा कि भारतवर्ष की गरिमा को हिंदू-मुसलमान सांप्रदायिकता की दीमक लग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी है और इससे हमारा जीवन पहले-जैसा सुखमय नहीं रह गया ।

कथानायक बचू ने कभी यह नहीं सोचा था कि देहात में विभिन्न धर्मावलंबी लोगों के साथ रहते-रहते ऐसा भी एक दिन आएगा, जब सब लोग सांप्रदायिक आग में झुलस उठेंगे ।

लेखक ने अपनी इस सफल कृति द्वारा देश की दुखती नस पर हाथ रखा है ।

दीमक :

लेखक : डॉ. केशुभाई देसाई,

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली-३; पृ.सं. : १६३; मूल्य : नब्बे रुपये ।

—मोतीलाल जोतवाणी

उर्मि : समाजसेवी साहित्यकार श्री ओमप्रकाश भार्गव की गत पचास-साठ वर्षों में लिखित सत्तर कविताओं का संकलन है । संकलन के प्रथम खंड में प्रकृति व परिवेश से संबंधित कविताएं हैं तो दूसरे 'पारिवारिक' शीर्षक खंड में परिवारजन को संबोधित कर लिखी गयी कविताएं संकलित हैं । श्री भार्गव की इन कविताओं के बारे में 'आमुख' में श्री शिवमंगल सिंह सुमन ने सही लिखा है कि जीवन की आपाधापी में आकंठ आमग्रहित होते हुए भी सुकुमार भावनाओं के संचयन और भाषा के प्रति व्यापक संवेदनाओं को कवि ने किस प्रकार अपने आत्माभिव्यंजन प्राणवंत हृदय ग्राही बनाया है, उसके लिए वह हम सबके साधुवाद का पात्र हैं ।

उर्मि, कवि : ओमप्रकाश भार्गव, प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, मूल्य : पचास रुपये

मोक्षदायिनी गंगा : गंगा ने इस देश के जनजीवन को ही नहीं, संस्कृति और साहित्य को भी प्रभावित किया है । गंगा से प्रेरणा लेकर अनेक साहित्यकारों ने उत्कृष्ट रचनाएं की हैं । श्री रामवरण ओझा ने भी अपनी प्रथम काव्य कृति में गंगा को वर्ण्य विषय बनाया है । तपस्या, यात्रा, प्रवाह, त्रिवेणी, परिणय, सह यात्री, ऋतु-विन्यास शीर्षक खंडों में बंटी यह काव्य कृति गंगा के सौंदर्य एवं पावन महत्व का समग्र परिचय कराती है ।

मोक्षदायिनी गंगा

कवि : रामवरण ओझा, प्रकाशक : सापेक्ष प्रकाशन, ४०/१ गोल मार्केट, नयी दिल्ली, मूल्य : चालीस रुपये ।

प्रतिबोध : कला के क्षेत्र में चित्रों का स्थान जिस प्रकार महत्त्वपूर्ण होता है वैसे ही साहित्य की विधाओं में भी चित्रों के माध्यम से कथाओं एवं भावों को अभिव्यक्ति दी जाती है । चित्रों की एक अपनी भाषा होती है जिसके द्वारा अनबोले ही वे बहुत कुछ कह जाते हैं । विगत वर्षों में 'जैन भारती' पत्रिका के मुखपृष्ठ पर जो चित्र छपे थे वे पाठकों को रुचिकर लगे तथा जैन धर्म-दर्शन की संवाहक बोधकथाओं और प्रेरक दिशाबोध को अभिव्यक्ति देनेवाले ये चित्र संग्रह के योग्य पाये गये । अतः उनका एक संग्रह प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया ।

इन समस्त चित्रों का चित्रांकन 'जैन भारती' की संपादक, मुमुक्ष डॉ. शांता जैन, ने चित्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अपनी कल्पना के आधार पर करवाया था। अब 'प्रतिबोध' में इन चित्रों को डॉ. शांता जैन ने वाणी दी है, भाव दिया है, अर्थ दिया है। उनका यह प्रयास प्रशंसनीय है जिनसे, आशा है, पाठक प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

प्रतिबोध
लेखिका : मुमुक्ष डॉ. शांता जैन
प्रकाशक : जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा, ३ पोर्चगीज़ स्ट्रीट कलकत्ता
मूल्य : एक सौ पच्चीस रुपये

रंगारंग हास्य कवि सम्मेलन : हास्य-व्यंग्य के ३९ कवियों की १०० से अधिक रचनाओं का यह संग्रह मनोरंजन का बढ़िया साधन है। इसमें कुछ जाने-माने कवियों की वे प्रसिद्ध रचनाएं भी हैं जिन्हें श्रोता बार-बार सुनाने का आग्रह उन कवियों से करते रहे हैं। इसकी 'चल गई' कविता जहां हास्य रस से परिपूर्ण है वहीं छोटी-छोटी व्यंग्य रचनाएं गंभीर घाव भरने में समर्थ हैं।

संयोजक : प्रेम किशोर 'पटाखा', प्रकाशक : पुस्तक महल, एफ-२/१६ अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२, मूल्य : १५ रुपये।

चित्रकूट (खंड काव्य) : राम के प्रति अपने अनुराग, शांति की प्रतिमूर्ति सीता के प्रति अपनी श्रद्धा और विवेक स्वरूप लक्ष्मण के प्रति अपने आदर को सफलतापूर्वक श्री हरि शर्मा ने अपने इस खंड काव्य 'चित्रकूट' के माध्यम से व्यक्त किया है।

रचनाकार : हरि शर्मा, प्रकाशक : हरि प्रकाशन, ३१ फायर स्टेशन स्ट्रीट, फतेहगढ़, भोपाल, मूल्य : पचास रुपये।

नूतन दोहावली : कवि ने मानव जीवन के सामान्य विषयों और मनुष्य के कर्त्तव्यों को मुखरित करने के लिए काव्य का सहारा लिया है। उसका यह संदेश सर्वमान्य होगा।

मात-पिता गुरुदेव हैं, ब्रह्मा-विष्णु-महेश।
'नूतन' पद-नत शीश हूं, ये ही मम हृदयेश॥

रचनाकार : स्व. सुबोध चंद्र शर्मा 'नूतन', संपादक : डॉ. महेशचंद्र 'दिवाकर', प्रकाशक : सुमन प्रकाशन, ए/४२ अशोक नगर, दिल्ली-४३, मूल्य : सौ रुपये।

—अनंतराम गौड़

कई बरस के बाद : समीक्ष्य कृति डॉ. मधुरिमा सिंह की इकसठ लोकप्रिय गजलों का संग्रह है। गजल-संसार की भावभूमि रसोत्पत्ति और भाषा को नया स्वरूप देनेवाली इन गजलों में कल्पना और सहजता तथा अनुभूतियों की अपनी विशिष्टता है। मिलन-विरह, सुख-दुःख जीवंत क्षणों के वैविध्य तथा सार्थक अनुभूतियों का कवयित्री ने भावों तथा शब्द वैचित्र्य से अद्भुत श्रृंगार किया है। स्मृतियों की मोहकता, भाव प्रवणता, अतीत का व्यामोह इन गजलों का प्राणतत्व है, जिन्हें सजाने-संवारने में कवयित्री ने विशिष्ट काव्य कौशल का परिचय दिया है। अधिकांश गजलों में ग्राम्यांचल की ललक तथा आध्यात्मिकता की झलक है। कवयित्री की भाव-यात्रा अनंत की शीर्ष उपलब्धियों का स्पर्श करती है। कुछ गजलों में प्रकृति तथा मानव के रागात्मक संबंधों का अद्भुत समन्वय हैं।

कई बरस के बाद (गजल संकलन)
कवयित्री : डॉ. मधुरिमा सिंह, प्रकाशक : पद्मा प्रकाशन सिविल लाइंस, सिद्धार्थनगर उ.प्र., पृष्ठ : ८३, मूल्य : पचहत्तर रुपये

—चक्रधर नलिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यह महीना और आपका भविष्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : मास में प्रतिकूल स्थितियों में विजय मिलेगी, आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु पक्ष पर विजय मिलेगी। रचनात्मक एवं सामाजिक कार्यों से यश वृद्धि होगी। संपत्ति कार्यों में लंबित विवादों में विलंब हितकर होगा। शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से सतर्कता हितकर होगी। प्रियजन की अस्वस्थता पर व्यय तथा चिंता होगी।

वृषभ : नवीन दायित्वों की अधिकता होगी। पारिवारिक एवं मांगलिक कार्यों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी। धर्म आध्यात्म की यात्राओं से उत्साह वृद्धि होगी। संपत्ति कार्यों में आकस्मिक सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से शत्रु पक्ष का शमन होगा। आय के नवीन संसाधनों का योग उपस्थित होगा। विलासितादायी वस्तु के क्रय से ऋण भार होगा।

मिथुन : उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से नवीन पद अथवा परिवर्तन का योग उपस्थित होगा। आजीविका संबंधी कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा। न्यायालयीन कार्यों व शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से सतर्क रहें। आध्यात्मिक सत्संग से मानसिक संतोष होगा। स्वजनों के सहयोग से आकस्मिक धन लाभ होगा। प्रवास के उन्नत अवसर मिलेंगे। परोपकारी प्रयासों से पीड़ा होगी।

कर्क : मास में विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। भौतिक प्रयासों के सार्थक होने के अनुकूल अवसर हैं। न्यायालयीन कार्यों में विजय मिलेगी। रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों से यश वृद्धि होगी। रक्त संबंधियों से व्यर्थ तनाव एवं विवाद का सामना करना होगा। साहस तथा पुरुषार्थ से विजय मिलेगी।

सिंह : पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी। अस्वस्थता पर व्यय होगा। प्रवास से पीड़ा होगी। स्वजनों के सहयोग से संपत्ति समस्या का समाधान होगा। उच्चाधिकारियों से संतुलित संभाषण करें। अकारण विवाद टालना हितकर होगा। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी।

कन्या : मास में प्रतिकूल स्थितियों पर विजय मिलेगी। शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से व्यर्थ तनाव होगा। विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी। पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी। स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी। वाहनादि का प्रयोग सावधानी से करें।

ग्रह स्थिति— सूर्य १६ सितम्बर से कन्या में, मंगल २३ से कर्क में, बुध २१ से तुला में, गुरु तुला में, शुक्र तुला में, शनि कुंभ में, राहु तुला में, केतु मेष में, हर्षल नेप्चून धनु में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुला : उच्च पदाधिकारियों के कारण जोखिमपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। आपकी मानसिक क्षमता के कारण सत्ता अथवा राजनीतिक व्यक्ति से लाभ मिलेगा। आध्यात्मिक सत्संग से उत्साहवृद्धि होगी।

वृश्चिक : मास में विरोधाभास की अधिकता होगी। शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से तनाव उत्पन्न होगा। उच्च अधिकारियों से व्यर्थ संभाषण टालना हितकर होगा। संपत्ति के कार्यों में अवरोधक स्थितियों का उदय होगा।

धनु : व्यवसाय अथवा रोजगार की दिशा में वांछित परिवर्तन होगा। स्वजनों के सहयोग से लंबित समस्याओं का समाधान होगा। जीवनसाथी का सहयोग उत्साहदायी होगा। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में नेतृत्व का अवसर मिलेगा। परोपकारी कार्यों में व्यर्थ परेशानियों का सामना करना होगा। रक्त संबंधियों से मतांतर होंगे। व्यर्थ तनाव टालना स्वास्थ्य के लिए हितकर होगा।

मकर : पारिवारिक सहयोग से लंबित समस्याओं का समाधान होगा। जोखिमपूर्ण कार्य लाभदायी होंगे। शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता न्यून होगी। उच्चाधिकारियों की अनुकूलता से वांछित पद-परिवर्तन का योग उपस्थित होगा। सहकर्मियों से व्यर्थ संभाषण टालना हितकर होगा। उदर अथवा रक्त विकार से पीड़ा होगी।

कुंभ : आजीविका की दिशा में अनुकूल परिवर्तन होंगे। विशिष्ट व्यक्ति की सहायता से लंबित धनराशि मिलेगी। उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु पक्ष पर विजय मिलेगी। संपत्ति अथवा विलासितादायी वस्तु पर व्यय होगा। आर्थिक अस्थिरता के बावजूद कार्यों की पूर्ति होगी। परोपकारी कार्यों से यशवृद्धि होगी। प्रवास से प्रतिष्ठा वृद्धि होगी।

मीन : मास में अपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। उच्चाधिकारी अथवा राजनेता के द्वारा लाभ मिलेगा। दायित्वों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा। प्रवास में कार्यों की अधिकता से पीड़ा होगी। पारिवारिक कार्यों की पूर्ति होगी। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। न्यायालयीन कार्यों में निकटजनों का सहयोग मिलेगा। शत्रु पक्ष से सुलह की स्थिति का उदय होगा।

— ज्योतिष धाम पत्रिका
१२/४ ओल्ड सुभाष नगर,
गोविंदपुरा, भोपाल (म.प्र.)।

पर्व और त्यौहार

१. जया एकादशी स्मार्त, २. जया एकादशी वैष्णव, ३. शनि प्रदोष, ४. अघोर चतुर्दशी, ५. कुशोत्पारनी अमावस्या, ६. हरितालिका, ९. वैनायकी श्री गणेशचतुर्थी, १०. ऋषिपंचमी, ११. लोकार्क षष्ठी, १२. मुक्तामरण सदायी महालक्ष्मी व्रतारंभ, १३. श्री चंद्र नवमी, १४. दशावतार, १५. पदमा एकादशी, १६. वामन द्वादसी, १७. शनि प्रदोष विश्वकर्मा पूजा, १८. अनंत चतुर्दशी, १९. पूर्णिमा, महालयारंभ, २१ अशून्य शयन व्रत, २३. संकटी श्री गणेश चतुर्थी, २७. जीवत्पुत्रिका व्रत, २८. महालक्ष्मी व्रतसमापन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बायें से दायें भारत के उच्चायुक्त श्री प्रवीण लाल गोयल से पुस्तकें प्राप्त करते हुए सेंट्रल आर्य समाज के महासचिव श्री दूधनाथ, साथ में हैं अताशे (हिंदी व संस्कृति) श्रीमती राजकुमारी देव ।

उच्चायुक्त ने हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाया

हिंदी के प्रचार-प्रसार में और तेजी लाने के लिए भारत के उच्चायुक्त श्री प्रवीणलाल गोयल ने पिछले दिनों सैंट्रल आर्य समाज, गयाना को हिंदी का एक टाईपराइटर, हिंदी शिक्षण सामग्री तथा हिंदी की अन्य पुस्तकें जैसे उपन्यास, कहानी, नाटक तथा विविध प्रकार का साहित्य भेंट किया । इसके लिए उच्चायुक्त के कार्यालय में एक छोटा-सा समारोह आयोजित किया गया था ।

उसी अवसर पर 'इस्लामिक मिशनरीज गिल्ड इंटरनेशनल' नामक एक संस्था को कुछ धार्मिक पुस्तकें भी भेंट की गयी । ये पुस्तकें उक्त संस्था की विशेष मांग पर 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद' से मंगवायी गयी थीं ।

हिंदी की पुस्तकें श्री दूधनाथ प्रसाद, महासचिव सैंट्रल आर्य समाज ने प्राप्त की । इसलाम की धार्मिक पुस्तकें श्री एम. इदरिज कार्यकारी अध्यक्ष, इस्लामिक मिशनरीज गिल्ड इंटरनेशनल ने प्राप्त कीं ।

श्री हंसराज भारद्वाज एवं संस्था के प्रधान श्री रामप्रकाश गुप्त बच्चे को कैलीपर प्रदान करते हुए ।

विकलांगों की सेवा

केंद्रीय विधि, न्याय व कंपनी मामलों के मंत्री श्री हंसराज भारद्वाज ने कहा कि विकलांगों की सेवा स्वयं नारायण की सेवा-जैसी है और इस कार्य में अग्रसर सोसाइटी फार दी रिहैबिलिटेशन ऑव फिजीकली हैंडीकैप्ड नयी दिल्ली, एक महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है ।

विकलांग व्यक्ति की योग्यता बढ़ाने के लिए तथा उसका आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए समाज को अपनी भूमिका निभानी चाहिए । श्री भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली शहर के निकट के इलाकों में इस सेवा का विस्तार किया जाना चाहिए । श्री हंसराज भारद्वाज विकलांगों को लाने ले जाने के लिए नयी बस सेवा का उद्घाटन कर रहे थे । श्री भारद्वाज का स्वागत करते हुए सोसायटी के अध्यक्ष श्री राम प्रकाश गुप्ता ने बताया कि सोसायटी फार दी रिहैबिलीटेशन ऑव फिजीकली हैंडीकैप्ड एंड मेंटली बैकवर्ड विकलांगों की क्षमता में विश्वास करती है तथा यह मानती है कि उनके मन में देश सेवा की भावना किसी आम नागरिक के बराबर है तथा वह राष्ट्र के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाने के लिए उत्सुक रहते हैं ।

दिल्ली के समाज कल्याण विभाग के निदेशक एवं सचिव श्री एच. ए. आर. पी. ने कहा कि केंद्रीय सरकार का समाज कल्याण विभाग के साथ व गैर सरकारी समाज सेवी संस्थाओं का समाज कल्याण विभाग के साथ लगातार संपर्क बना रहना चाहिए ।

संस्था के विकलांग बच्चों ने राष्ट्र भक्ति के गीत प्रस्तुत किये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

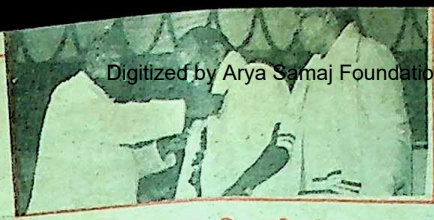

'पद्मेश प्राच्य विद्यापीठ' पुरस्कार

कानपुर । उत्तर प्रदेश के राज्यपाल,श्री मोतीलाल वोरा ने 'भारतीय भवन निर्माण योजना' के लेखक नंद किशोर झाझरिया को 'पद्मेश प्राच्य विद्यापीठ पुरस्कार १९९४' प्रदान करते हुए कहा कि प्राच्य विद्याओं की उपेक्षा एक लंबे समय से हो रही है, उसके पुर्नउत्थान में यह पुरस्कार मील का पत्थर है । संस्थापक अध्यक्ष श्री के. ए. दुबे पद्मेश ने कहा कि १९८० से पद्मेश प्राच्य विद्यापीठ सम्मान प्राच्य विद्याओं के लिए प्रदान कर रही है । इसमें ११ हजार रुपये, नारियल, शाल, प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है । इस वर्ष तीन विद्वानों को 'पद्मेश प्राच्य विद्यापीठ पुरस्कार १९९४' से अलंकृत किया जा रहा है । इनमें सर्वश्री नंद किशोर झाझरिया, रामसागर शुक्ल समाचार संपादक लखनऊ दूरदर्शन एवं वाई. एन. चतुर्वेदी संवाददाता आकाशवाणी कानपुर को इस वर्ष के पुरस्कार राज्यपाल श्री वोरा ने मर्चेंट चेंबर सभागार में प्रदान किये ।

पुष्पा का कला प्रदर्शन

भारत सरकार के उपक्रम माइका ट्रेडिंग कार्पोरेशन लिमिटेड की सुश्री पुष्पा सिन्हा ने इस्पात नगरी जमशेदपुर में अपने एकल प्रदर्शन में बहुआयामी सांस्कृतिक प्रतिभा से दर्शकों को भाव विभोर कर दिया ।

'एक शाम : पुष्पा के नाम' नामक इस सांस्कृतिक आयोजन में पुष्पा ने कई शास्त्रीय नृत्य, स्वयं द्वारा लिखे व स्वरबद्ध गीत व गजलों तथा एकल अभिनय का मनोरम प्रदर्शन किया । कार्यक्रम का आयोजन सामाजिक संस्था 'मनीषा कला मंडपम' के तत्वावधान में किया गया था ।

कादम्बिनी क्लब समाचार

कादम्बिनी क्लब पेटलावद (झाबुआ) द्वारा नगर से पांच कि. मी. दूर स्थित हनुमान मंदिर (रूपगढ़) में वृक्षारोपण का अभिनव आयोजन किया गया । प्रथम चरण में पीपल, बट, नीम, आंवला एवं गुलमोहर के पौधे लगाये गये । इस आयोजन में संयोजक श्री शीतला प्रसाद गुप्ता सहित सर्वश्री प्रकाश भंडारी, प्रदीप सवाई, अरुण प्रकाश गौड़, हरीश पंवार, श्रीमती प्राची सवाई, कु. ज्योति पटवा एवं कई पर्यावरण प्रेमियों ने भाग लिया ।

क्लब के इस प्रयास की सभी ने प्रशंसा की । वृक्षों की रक्षा का भार संयोजक ने क्लब के सदस्य प्रकाश भंडारी को सौंपा ।

— शीतला प्रसाद गुप्ता

हैदराबाद में कादम्बिनी क्लब

हैदराबाद : नवगठित साहित्यिक संस्था 'कादम्बिनी क्लब' द्वारा मांपमली में पहली गोष्ठी का आयोजन हुआ । इस अवसर पर संयोजिका डॉ. अहिल्या मिश्रा ने 'कादम्बिनी क्लब' के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला ।

गोष्ठी में मलयालम भाषी हिंदी, कवियत्री, श्रीमती ऐलिजाबेथ कूरियन 'मोना' की पठित रचनाओं पर चर्चा हुई, जिसमें श्री बृजभूषण बजाज, श्रीमती सुनीता मोथा, श्रीमती पवित्रा अग्रवाल आदि ने भाग लिया ।

इस अवसर पर एक कवि गोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. अहिल्या मिश्रा, नेहपाल सिंह वर्मा, डॉ. प्रतिभा गर्ग, नरेन्द्र राय, जी. राजेन्द्र कुमार, पुष्पा वर्मा, डॉ. सीलम वेंकटेश्वर राव, गोविंद सिंह 'अक्षय' एवं श्रीमती मीना गुप्ता ने काव्यपाठ किया ।

नष्ट होता पर्यावरण

सीतामढ़ी । 'कादम्बिनी क्लब' ने एक गोष्ठी में 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर 'प्रदूषण से नष्ट होता पर्यावरण' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचर्चा की शुरुआत कराते हुए क्लब के सदस्य श्री विजय सुंदरका ने बढ़ते हुए प्रदूषण के लिए आम नागरिकों की अज्ञानता को सर्वाधिक जिम्मेदार ठहराया । उन्होंने नागरिकों को प्रदूषण की हानि से अवगत कराने के लिए सरकारी प्रयास को नाकाफी बताते हुए स्वयंसेवी संस्थाओं को अत्यधिक सक्रिय किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया ।

क्लब के सदस्य तथा हिंदी साप्ताहिक 'सिटी संदेश' के संपादक श्री अजय विद्रोही ने प्रदूषण की गति को रोकने के लिए कठोर तथा प्रभावी कानून बनाने की जरूरत पर जोर दिया ।

अध्यक्षीय भाषण में क्लब की संयोजिका आशा प्रभात ने कहा कि प्रदूषण को नियंत्रित करने का प्रयास तब तक सफल नहीं होगा, जब तक प्रत्येक बुद्धिजीवी अपने आसपास रहनेवाले नागरिकों को इससे होनेवाली हानि से अवगत कराने का संकल्प न लें ।

परिचर्चा की समाप्ति पर श्री जयप्रकाश मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन दिया । परिचर्चा में सर्वश्री जगदीश प्रसाद, सत्यनारायण सिंह एवं डॉ. कृष्ण चंद्र मिश्र दीपक कुमार तिवारी, मुर्तजा अंसारी, अवध बिहारी शरण 'हितेंद्र', विपुल कुमार 'बादल', विनोद शर्मा, श्याम नंदन तथा सुश्री वंदना आदि ने भाग लिया ।

क्लब स्थापना दिवस

मेवाड़ की गौरवशाली धरती पर स्थित राजनीति, खेल एवं साहित्य की नगरी मावली जं. में 'कादम्बिनी-क्लब' का स्थापना दिवस समारोह गत दिनों संपन्न हुआ ।

समारोह में मुख्य अतिथि युवा साहित्यकार व्याख्याता श्री वसंत त्रिपाठी थे, अध्यक्षता कवि एवं गीतकार श्री पुरुषोत्तम देवपुरा ने की तथा संचालन युवा रचनाकार प्राध्यापक श्री तरुण कुमार दाधीच द्वारा संपन्न हुआ ।

समारोह के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम देवपुरा ने मावली में कादम्बिनी क्लब की स्थापना करने के लिए कादम्बिनी के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी का आभार व्यक्त किया ।

098874

दर्द, मूल निवासी है

समस्या अब कुंवारी नहीं है
वह मां बन गयी है
उसकी कोख से
निकल पड़ी है नौनिहाली किलकारी
दर्द, अपनी मां के साथ प्रसन्न है
वह धीरे-धीरे आंगन में
घुटने-घुटने चलने लगा है
समाज का आंगन दूर-दूर तक
हर दिशा में फैला है
पर उसे पता नहीं
कहां तक मैला है ?
दर्द चलने लगा है, अंगुली पकड़कर
अपने बाप भ्रष्टाचार की
शहर की आम सड़कों तक
दर्द घूम आता है
उसकी तरुणाई झुग्गियों में
फल-फूल रही है
गरीबों का घर भाता है उसे बहुत
संप्रदाय उसका पड़ौसी है
बुलाने पर अवश्य चला जाता है
समस्या विवाहित नहीं/कुंवारी भी नहीं है
रखैल है, समाज के धन्ना सेठों की
सत्ता प्रेमी मजनुओं की
दर्द की मां है/बाप भी मगर
बाप का नाम परदे में है
दर्द, समाज का/देश का वयस्क नागरिक है
इस देश का मूल निवासी है

—प्रदीप सोनी 'शून्य'
६/३४, गांधी बाजार, बेगमगंज जिला रायसेन (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

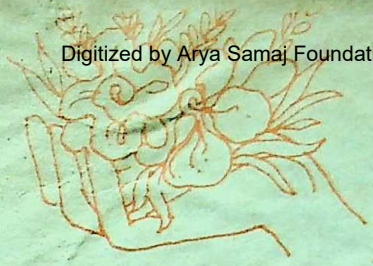

स्वागत आगत का कर लें

गत की बात भुलाकर सादर
आगत का स्वागत कर लें
नव विहान का नव प्रकाश हो
सृजन-शक्ति का नव विकास हो
भेद-भाव हर लें । स्वागत आगत का कर लें
नये वर्ष में नया हर्ष हो
नया रंग हो नयी तरंगें
नवल कल्पनाएं लहराये
नये भाव हों नयी उमंगें
अभिनंदन स्वागत आगत का कर लें
जीवन-बगिया मह-मह महके
मन का कोकिल कल-कल कुहके
हृदय कलश भर लें । आगत का स्वागत कर लें
विगत वर्ष में बहुत विगोये
संप्रदाय का बिरवा बोये
प्रेम और सद्भाव-सलिल से
मन के कल धो लें । आगत का स्वागत कर लें
नव संकल्पों के अनुदिन अब
नव-नव फूल खिलायें
झुग्गी-झोपड़ियों में भी
आशा के अब दीप जलायें
समरस रस घोलें
गत की बात भुलाकर सादर
स्वागत आगत का कर लें

—चन्द्रदेव मिश्र

सदस्य
कादम्बिनी क्लब, भटनी, देवरिया ।

गीत

कैसे लौट जाऊं मीत
पुनः गांव में
होने लगे हैं छेद अब
नदी की नाव में
उठ रहा है धुंआ
किसी ढंकी आग का
बांसूरी के स्वर लगे
फुफकार नाग का
जलने लगे हैं तन-मन
पीपल की छांव में
घोल रही पुरवाई
विष तालाब में
आदमियत बह गयी
बहशी सैलाब में
खिलने लगे हैं फूल भी
अब पेंच-दाव में
आने लगी है गंध—
विनाशी चौपाल से
पनघट नहीं है खाली
मौसम दलाल से
डूब गयी अमराई
कांव-कांव में
सरसों के छंद बंद
होंठ सिल गये
पगडंडी धूलों को
पंख मिल गये
उठने लगे फफोले
मेंहदी के पांव में ।

—नरेश कुमार विकल

बहादुरपुर (पेट्रोल पंप के सामने)
समस्तीपुर-८४८१०१ (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. क. (—२), ख. (२), २. क. शक्तिशाली नाभिकीय अभिक्रियाएं, जिनसे ऊष्मा व प्रकाश रूपों में ऊर्जा उत्पन्न होती है, ख. यूरोपीय अंतरिक्ष यान 'यूलीसिस प्रोब', १५ करोड़ कि.मी. की दूरी तय कर सूर्य के दक्षिणी ध्रुव के निकट पहुंच गया, साढ़े ३ वर्ष लगे (अगले साल सूर्य के उत्तरी ध्रुव तक पहुंचने की आशा), ३. क. 'मृच्छकटिकम्', ख. शूद्रक, ४. १९वीं सदी में पहले कलकत्ता में, विस्तृत रूप से प्रचार का श्रेय बंबई के जावजी दादाजी को है (बंबइया टाइप), ५. क. लोकसभा-५३१, राज्यसभा-२४०, ख. (उत्तर प्रदेश-८५, बिहार-५४, महाराष्ट्र-४८), ६. पहली रेलवे लाइन (बंबई व थाना के बीच), तार-प्रणाली (टेलीग्राफ़), ७. क. ख. १९११ में, ८. क. उत्तरी अतल संगठन (नाटो), ख. वारसा संधि अधिकतम तापमान में पिछले ५० साल तोड़ दिया— ३० मई को ४६ डिग्री सेल्सि जून को ४६.२ डिग्री, ख. २ जून १८८९ ४७.८ डिग्री, ग. ५०.६ डिग्री, १० मई १९ अलवर में, १०. क. भारतीय वास्तुशिल्पी कोरिया (कम खर्च में सुंदर घरों का निर्मा श्री अटल बिहारी वाजपेयी (समाजसेवा) स्पेन की अरांचा सांचेज ने फ्रांस की मेरी हराकर, १२. कटलस मछली को सुख निर्यात किया जा रहा है।

श्री अमन सिंह आत्रेय पुरस्कार योजना

भारत वर्ष के समस्त विश्व विद्यालयों द्वारा स्वीकृत केवल हिन्दी शोध प्रबन्ध, पुरस्कार हेतु आमंन्त्रित है।

शोध ग्रन्थ की चार प्रति ३० सितम्बर १९९४ तक संस्थान कार्यलय चाहिये। निर्धारित तिथि के पश्चात् प्राप्त शोध ग्रन्थ को पुरस्कार सम्मिलित न कर सकेगे।

शोध प्रबन्ध भेजने के लिए निम्नलिखित नियमों पर ध्यान दें।

१. शोध प्रबन्ध का प्रकाशन- काल अप्रैल १९८९ से जून १९९४ तक हो।
२. शोध मार्ग दर्शक का प्रमाण पत्र (अगर जीवित है) अथवा आवश्यक विवरण नाम व पता।
३. पूर्ण विवरण सहित प्रकाशक का प्रमाण पत्र।
४. निर्णायक मंडल का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा।
५. पुरस्कार राशि केवल सात हजार एक रूपया (७००१) मात्र।

डा० कमला आत्रेय
अध्यक्षा
श्री अमन सिंह आत्रेय हिन्दी विकास संस्थान, ६१ए, साकेत, मेरठ

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइ
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या-पूर्ति—१८२

-पूर्ति साहित्य की पुरानी विधा है । हमने उसे फिर से जीवित किया है । यहां प्रकाशित
का ध्यान से देखिए और नीचे का शीर्षक पढ़िए, इसे लेकर आपको सिर्फ छंदबद्ध ही
ा, अतुकांत कविता भी हो सकती है, लिखनी है, उसमें भावों का गांभीर्य आवश्यक है ।
बना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो । समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के
अनुसार चित्र के नीचे दिये शब्द कविता के अंत में ही आने चाहिए ।

१. समस्या-पूर्ति केवल पोस्टकार्ड पर ही भेजें ।
२. समस्या-पूर्ति संपादक के व्यक्तिगत नाम से नहीं भेजें ।
३. एक बार पुरस्कृत व्यक्ति की रचना छह माह तक दोबारा पुरस्कृत नहीं की जाएगी ।

पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है—

प्रथम—१२५ रु., द्वितीय—१०० रु. और तृतीय—७५ रु.

अंतिम तिथि : २० सितम्बर १९९४

छाया: जयतेग सिंह अनंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

07883

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया कुश्ती चैम्पियन सुपर एम

सरवई, अगस्त 1994, हमारे विशेष खाद्यदाता द्वारा: "आखिर मेरी सुपर शक्ति का मजा उसने बख्श ही दिया" भरजते हुए बोला सुपर ने सर्किस सुल्तान को आखिरी बेंजती तक जमीन पर दबोचकर जब वह बनो जगा कुश्ती चैम्पियन. अपनी जीत की सलामी में उसने सुपर मिल्क बिस्किट का पैकेट निकाला और मजे से मुंह में बिस्किट दबाया. फिर अपने सुपर अंदाज में बोला "बेताज सुपर मिल्क की सुपर शक्ति और सुपर स्वाद से बिल्कुल अजनबी था वर्ना" फिर अपनी विजयी मुस्कान को दबाते हुए बोला "अगली बार पूरी तैयारी करना, फिर मैदान में आना चैलेंज के साथ!"

573
113 96
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar